

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

صحیح بخاری

सहीह बुखारी

मय तर्जुमा व तफसीर

जिल्द : पाँच

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस सैयदुल फ़ुक़हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी



प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअत

जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

© सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित

अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज (रह.) के खलीफा नज़ीर अहमद बिन मुहम्मद दाऊद राज ने सहीह बुखारी की उर्दू शरह के हिन्दी अनुवाद सम्बंधित समस्त अधिकार जमीयत अहले हदीस जोधपुर (प्रकाशक) के नाम कर दिये हैं। इस किताब में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है। कोई व्यक्ति/संस्था/समूह/प्रकाशन आदि इस पुस्तक की आंशिक अथवा पूरी सामग्री किसी भी रूप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्जे-खर्चे के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब	: सहीह बुखारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीर)
मुरत्तिब (अरबी)	: अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह	: अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-शरही	: सलीम ख़िलजी
तफ़्हीह (Proof Checking)	: जमशेद आलम सलफ़ी

कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाईनिंग	: ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.)
एवं लेज़र टाइपसेटिंग	khaleejmedia78@yahoo.in #91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग	: मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन	: मुहम्मद निसार ख़िलजी, बिलाल ख़िलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव	: फैसल मोदी

ता'दाद पेज	(जिल्द-5)	: 608 पेज
प्रकाशन	(प्रथम संस्करण)	: सफ़र 1433 (दिसम्बर 2011)
ता'दाद	(प्रथम संस्करण)	: 2400
कीमत	(जिल्द-5)	: 450/-
प्रिण्टिंग	: अनमोल प्रिण्ट्स, जोधपुर (0291-2742426)	
प्रकाशक	: जमीयत अहले हदीस जोधपुर (राज.)	

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़
तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1
(फ़ोन): 99296-77000, 92521-83249,
93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशनल
जामिया नगर, नई दिल्ली-25
(फ़ोन): 011-6986973
93125-08762

फ़ेहरीस्ते-मज़ामीन

मज़मून

सफ़ा नं.

मज़मून

सफ़ा नं.

ग़ार वालों का किस्सा

14 13

किताबुल मनाकिब

अल्लाह तआला का सूरह हज़रत में इशार्द	29
कुरैश की फ़ज़ीलत का बयान	33
कुआन का कुरैश की ज़बान में नाज़िल होना	37
यमन वालों का हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद होना	38
अस्लम मुजेना वगैरह कबाइल का बयान	40
एक मर्दे क़हत्तानी का तज़किरा	43
जाहिलियत की सी बातें करना मना है	43
कबील-ए-ख़ुजाआ का बयान	44
हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी का कुबूले इस्लाम	46
ज़मज़म का वाकिआ	48
अरब क़ौम की जाहिलियत का बयान	51
अपने मुसलमान या ग़ैर मुस्लिम बाप दादा की तरफ़...	51
किसी क़ौम का भान्जा.....	53
हब्शा के लोगों का बयान	54
जो शख्स ये चाहे कि उसके बाप-दादा को कोई बुरा न कहे	54
रसूलुल्लाह (ﷺ) के नामों का बयान	55
आँहज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना	56
नबी-ए-अकरम (ﷺ) की वफ़ात का बयान	57
रसूले-करीम (ﷺ) की कुन्नियत का बयान	58
मुहरे नबुव्वत का बयान	59
नबी करीम (ﷺ) के हुलिये और	
अख़्लाके फ़ाज़िला का बयान	60
नबी करीम (ﷺ) की आँखें ज़ाहिर में सोती थीं....	70
आँहज़रत (ﷺ) के मुअज्जज़ों यानी.....	71
सूरह बकरह में एक इशार्द बारी तआला	111
युसुफ़ीन का आँहज़रत (ﷺ) से कोई निशानी चाहना	112

किताब फ़ज़ाइले अस्हाबुन्नबी (ﷺ)

नबी करीम (ﷺ) के सहाबा की फ़ज़ीलत का बयान	119
मुहाजिरीन के मनाकिब और फ़ज़ाइल का बयान	121
नबी करीम (ﷺ) का हुक्म फ़र्माना कि हज़रत अबू बकर...	123
नबी करीम (ﷺ) के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक.....	124
हज़रत अबू हफ़स उमर बिन ख़त्ताब क़रशी.....	140
हज़रत अबू अम्र उष्मान बिन अफ़फ़ान क़रशी.....	149
हज़रत उष्मान (रज़ि.) से बैअत का वाकिआ.....	154
हज़रत अबुल हसन अली बिन अबी तालिब क़रशी.....	161
हज़रत ज़अफ़र बिन अबी तालिब हाशमी की फ़ज़ीलत..	166
हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब की फ़ज़ीलत....	167
हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के रिश्तेदारों के फ़ज़ाइल.....	168
हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान	168
हज़रत जुबैर बिन अक्वाम (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान	170
हज़रत तल्हा बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) का तज़किरा.....	172
हज़रत सअद बिन अबी वक्कास अज़्ज़ुहरी के फ़ज़ाइल	173
नबी करीम (ﷺ) के दामादों का बयान	175
रसूले करीम (ﷺ) के गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिषा....	176
हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) का बयान	177
हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब के फ़ज़ाइल	180
हज़रत अम्मार और हुज़ैफ़ा के फ़ज़ाइल	181
हज़रत अबू उबैदा बिन ज़रह (रज़ि.) के फ़ज़ाइल	183
हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि.) का बयान	184
हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) के फ़ज़ाइल	184
हज़रत अबू बकर (रज़ि.) के मौला हज़रत बिलाल.....	186
हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास का ज़िक्रे ख़ैर	187
हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान	188
हज़रत अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के मौला सालिम (रज़ि.)....	188
हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्क़द (रज़ि.) के फ़ज़ाइल	189

फेहरिस्ते-मज़ामीन

मजमून

सफा नं.

मजमून

सफा नं.

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफियान (रज़ि.) का बयान 191

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल 192

हज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान 192

15 किताब मनाकिबुल अन्सार

अन्सार (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान 197

नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मांना कि अगर मैंने मक्का..... 199

नबी करीम (ﷺ) अन्सार और मुहाजिरीन के दरमियान.... 200

अन्सार से मुहब्बत रखने का बयान 202

अन्सार से नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मांना कि तुम लोग... 203

अन्सार के ता'बेदार लोगों की फ़ज़ीलत 204

अन्सार के घरानों की फ़ज़ीलत का बयान 204

नबी करीम (ﷺ) का अन्सार से ये फ़र्मांना कि तुम सन्न से.. 207

नबी करीम (ﷺ) का दुआ करना कि ऐ अल्लाह अन्सार व 208

मुहाजिरीन पर करम फ़र्मां 208

आयत 'व यूषिरून अला अन्फुसिहिम' की तफ़सीर 209

नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मांना कि अन्सार के नेक लोगों .. 210

हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के फ़ज़ाइल 212

उसैद बिन हुज़ैर और उबादा बिन बिश्र की फ़ज़ीलत 214

मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) के फ़ज़ाइल 214

हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत 215

उबय बिन कअब (रज़ि.) के फ़ज़ाइल 216

हज़रत ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) के फ़ज़ाइल 217

हज़रत अबू तल्हा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल 218

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) के फ़ज़ाइल 219

हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की शादी... 220

जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) का बयान 221

हुज़ैफ़ा बिन यमान अबसी (रज़ि.) का बयान 223

हिन्दा बिनत उतबा बिन रबीआ (रज़ि.) 224

हज़रत ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल का बयान 225

कुरैश ने जो कअबा की मरम्मत की थी उसका बयान 228

जाहिलिय्यत के ज़माने का बयान 228

ज़मान-ए-जाहिलिय्यत की क़सामत का बयान 234

नबी करीम (ﷺ) की बेअषत का बयान 239

नबी करीम (ﷺ) और सहाबा किराम (रज़ि.) ने मक्का में .. 240

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक के इस्लाम कुबूल करने का बयान 243

हज़रत सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) के 244

इस्लाम कुबूल करने का बयान 15 244

जिन्नों का बयान 245

हज़रत अबू ज़र के इस्लाम कुबूल करने का बयान 246

सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) 247

का इस्लाम कुबूल करना 247

हज़रत इमर बिन ख़ताब के इस्लाम लाने का वाकिआ 249

घाँद के फट जाने का वाकिआ 253

मुसलमानों का हब्शा की तरफ़ हिजरत..... 254

हब्शा के बादशाह नज़्जारी की वफ़ात का बयान 259

नबी करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ मुशिरक़ीन का अहदो-पैमान 261

अबू तालिब का वाकिआ 261

बैतुल-मुक़द्दस तक जाने का वाकिआ 263

मेअराज का बयान 264

मक्का में नबी करीम (ﷺ) के पास अन्सार के वुफूद का... 270

हज़रत आइशा (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) का निकाह... 273

नबी करीम (ﷺ) और आप के अस्हाबे किराम का मदीना.. 275

हज की अदायगी के बाद मुहाजिरीन का 308

इस्लामी तारीख़ कब से शुरू हुई? 308

नबी करीम (ﷺ) की दुआ कि ऐ अल्लाह मेरे अस्हाब की... 309

नबी करीम (ﷺ) ने अपने अस्हाब के दरमियान..... 311

जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपके पास 314

हज़रत सलमान फ़ारसी के ईमान लाने का वाकिआ 316

किताबुल मज़ाज़ी

ग़ज्वा अशीरह या उस्सैरह का बयान 319

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.	मज़मून	सफ़ा नं.
बद्र की लड़ाई में फलों....	320	ग़ज़्व-ए-अहज़ाब से नबी करीम (ﷺ) का वापस लौटना	432
ग़ज़्व-ए-बद्र का बयान	322	ग़ज़्व-ए-ज़ातुरिकाअ का बयान	437
सूरह अन्फ़ाल की एक आयत शरीफ़ा	324	ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलक़ का बयान	443
जंगे-बद्र में शरीक़ हाने वालों का शुमार	326	ग़ज़्व-ए-अन्मार का बयान	445
कुप्फ़ारे-कुरैश शौबा, उत्बा.....	327	वाकिअ-ए-इफ़क़ का बयान	446
अबू ज़हल का क़त्ल होना	328	ग़ज़्व-ए-हुदैबिया का बयान	459
बद्र की लड़ाई में हाज़िर होने वालों की फ़ज़ीलत का बयान	337	क़बाइल अकल व उरेना का वाकिआ	475
जंगे-बद्र में फ़रिश्तों का शरीक़ होना	346	ज़ाते किर्द की लड़ाई का बयान	478
बतर्तीब हुरूफ़े तहज़्ज़ी उन अस्हाब के नाम.....	364	ग़ज़्व-ए-ख़ैबर का बयान	479
बनू नज़ीर के यहूदियों के वाकिआ का बयान	366	नबी करीम (ﷺ) का ख़ैबर वालों पर तहज़ीलदार मुकर्रर...	504
कअब बिन अशरफ़ यहूदी के क़त्ल का वाकिआ	373	ख़ैबर वालों के साथ नबी करीम (ﷺ) का मामला तै करना	505
अबू राफ़ेअ यहूदी अब्दुल्लाह बिन अबी.....	376	एक बकरी का गोश्त जिसमें नबी करीम (ﷺ) को	505
ग़ज़्व-ए-उहद का बयान	384	ग़ज़्व-ए-ज़ैद बिन हारिषा का बयान	505
आयते शरीफ़ा 'इज़ हम्मत ताइफ़तान' की तफ़्सीर	389	उमर-ए-क़ज़ा का बयान	506
आयते शरीफ़ा 'इन्नल लज़ीना तवल्तौ मिन्कुम'		ग़ज़्व-ए-मौता का बयान	511
अलअख़ की तफ़्सीर	396	नबी करीम (ﷺ) का उसामा बिन ज़ैद को हरक़ात के	
आयते शरीफ़ा 'इज़ तुस्इदून व ला तल्वून'		मुकाबले पर भेजना	515
अलअख़ की तफ़्सीर	397	ग़ज़्व-ए-फ़त्हे मक्का का बयान	518
आयते शरीफ़ा 'बुम्म अन्ज़ल अलैकुम मिम बअदिल गम्मि'		ग़ज़्व-ए-फ़त्हे मक्का का बयान जो रमज़ान	
अलअख़ की तफ़्सीर	398	सन् 8 हिजरी में हुआ था	520
आयते शरीफ़ा 'लैस लक़ मिनल अम्मि शौआ'		फ़त्हे मक्का के दिन नबी करीम (ﷺ) ने झण्डा.....	523
अलअख़ की तफ़्सीर	399	नबी करीम (ﷺ) का शहर के बालाई.....	528
हज़रत उम्मे सुलैत (रज़ि.) का तज़्किरा	400	फ़त्हे मक्का के दिन क़यामे नबवी का बयान	530
हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुतलिब (रज़ि.)		फ़त्हे मक्का के ज़माने में	534
की शहादत का बयान	401	जंगे हुनैन का बयान	543
ग़ज़्व-ए-उहद के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ).....	404	ग़ज़्व-ए-औतास का बयान	551
आयत 'अल्लजीनस्तजाबू लिल्लाहि वरसूल' की तफ़्सीर	406	ग़ज़्व-ए-ताइफ़ का बयान	552
जिन मुसलमानों ने ग़ज़्व-ए-उहद में शहादत पाई.....	407	नज्द की तरफ़ जो लश्कर.....	563
इशादि नबवी कि उहद पहाड़ हमसे.....	410	नबी करीम (ﷺ) का ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को	
ग़ज़्व-ए-रजीअ का बयान	411	बनी ख़ुज़ैमा.....	563
ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ का बयान	421	अब्दुल्लाह बिन हुआफ़ा सहमी (रज़ि.).....	565

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून

सफ़ा नं.

मज़मून

सफ़ा नं.

हज्जतुल विदाअ से पहले आँहजरत (ﷺ) का	
हजरत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.)	566
हज्जतुल विदाअ से पहले अली बिन अबी तालिब और	
ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.)	571
ग़च्च-ए-जुलखुल्सा का बयान	575
ग़च्च-ए-ज़ातुल सलासिल का बयान	578
हजरत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) का यमन	
की तरफ़ जाना	579
ग़च्च-ए-सैफुल बहर का बयान	580
हजरत अबू बकर (रज़ि.) का लोगों के साथ	583
बनी तमीम के वुफूद का बयान	584

मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि उयैयना बिन हज़ीन	585
वफ़द अब्दुल कैस का बयान	586
वफ़द बनू हनीफ़ा और शुमामा बिन उल्लाल के वाकिआत	590
अस्वद अन्सी का बयान	594
नज़रान के अन्सारी का किस्सा	596
इमान और बहरैन का किस्सा	598
कबीला अशअर और अहले यमन की आमद का बयान	599
कबीला दौस और तुफ़ैल बिन अम्र दौसी का बयान	603
कबीला तै के वफ़द और अदी बिन हातिम का किस्सा	604

फ़ेहरीस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून

सफ़ा नं.

मज़मून

सफ़ा नं.

ग़ारवालों के मुतअल्लिक एक तशरीह	13
मज़ीद वज़ाहत अज़ फ़तहुल बारी	15
दर्ज-ए-सिद्दीकीन के बारे में एक वज़ाहत	15
हक्कीकते वसीला का बयान	16
शौर ख़वार बच्चे का हमकलाम होना	17
ज़िक्रे ख़ैर हज़रत अमीर मुआवि्या बिन सुफ़ियान (रज़ि.)	18
एक मर्दे ख़ूवार बख़शा गया	19
गाय का कलाम करना	20
ताज़न के बारे में	21
हज़रत नूह का एक वाक़िआ	23
कुरैश नज़र बिन किनाना की औलाद को कहते हैं	33
कुरैश और ख़िलाफ़ते इस्लामी का बयान	34
जम्अे कुआन मज़ीद पर एक तशरीह	38
जअली शेख़-सय्यदों के बारे में	39
पाँच ताक़तवर क़बाइल का बयान	40
अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक के बारे में	44
मक्का में बुत परस्ती का आगाज़ कैसे हुआ	44
ताघ़ीराते आबे ज़मज़म का बयान	48
ख़तमे नबूव्वत का बयान	56
मुस्से नबूव्वत की कुछ तफ़्सीलात का बयान	59
हज़रत हसन के फ़ज़ाइल का बयान	60
हज़रत उसामा बिन ज़ैद के बारे में एक तशरीह	65
कुछ फ़सादी सरमाएदार यहूदियों के बारे में	67
तरावीह की आठ रकआत सुन्नते नबवी हैं	70
मेअराजे जिस्मानी हक़ है	71
इमाम हसन बसरी (रह.) का एक ईमान अफ़रोज़ बयान	83
मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम की एक तक्रीर दिल पज़ीर	83

मर्दूद ख़ारजियों पर एक तब्सरा	97
बाज़ मुन्किरीने हदीष के एक कौले बातिल की तर्दीद	102
अल्लाह के सिवा किसी को ग़ैबर्दाँ मानना कुफ़्र है	106
आँहज़रत (ﷺ) भी ग़ैबर्दाँ नहीं थे	108
बुजुगानि इस्लाम तक्लीदे ज़ामिद के शिकार नहीं थे	115
हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के बारे में	118
बिदअते हस्ना और सय्या के बारे में	120
सिद्दिके अकबर (रज़ि.) के मुता'ल्लिक जुम्हूरे उम्मत का अक़ीदा	124
ख़िलाफ़ते सिद्दीकी पर एक इशारा-ए-नबवी	126
वफ़ाते-नबवी पर सिद्दिके अकबर (रज़ि.) का ख़िताबे अज़ीम	131
ख़ादिमे बुखारी हज़रत इब्मान ग़नी (रज़ि.) के मरक़द पर	138
चारों ख़लीफ़ा एक दिल एक जान थे	139
लफ़्ज़े मुहद्दिष की वज़ाहत	146
हज़रत इमर के ख़ौफ़े इलाही का बयान	148
हज़रत इब्मान ग़नी का नसब नामा	149
शहादते इमर का तफ़्सीली तज़्किरा	160
हज़रत अली के फ़ज़ाइल पर एक बयान	161
रवाफ़िज़ की तशरीहे मज़ीद	165
क़राबते नबवी पर एक तशरीही बयान	168
आँहज़रत (ﷺ) आलिमुल ग़ैब नहीं थे	170
हज़रत उसामा बिन ज़ैद पर एक बयान	178
मदीना में हज़रत बिलाल की एक अज़ान का बयान	187
बड़ों की एक लज़्ज़िश का बयान	191
एक रकअत वित्र का बयान	192
जंगे सिफ़फ़ीन की एक तौजीह	194

फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

मजमून

सफा नं.

मजमून

सफा नं.

लफ्जे अन्सार की तारीखी तहकीक	197	हिजरत की वज़ाहत	276
जंगे बोआष का बयान	198	फज़ीलते सिद्दीकी पर एक बयान	278
हज़रत इमाम बुखारी मुज्ताहिदे मुत्तलक थे	202	हदीषे हिजरत की तफ़्सीलात	286
कबीला-ए-बनू नज्जार का बयान	205	हज़रत अस्मा (रज़ि.) के हालात	288
अन्सारी बिरादरी पर एक नोट	207	हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के हालात	290
उल्टा तर्जुमा	215	वाकिआ हिजरत से मुताल्लिक चन्द उमूर	292
जुल्लुल्ला जिल्दा की बर्बादी	223	हज़रत इमर (रज़ि.) का एक कौले मुबारक	292
मुश्रिकीन मुसलमान की मज़म्मत	225	शदाद बिन अस्वद का एक मर्षिया	299
कब्ले इस्लाम के एक मर्दे मुवहिहद का बयान	227	बनू नज्जार का एक ज़िक्रे ख़ैर	302
मशहूर शाइर हज़रत लुबैद का ज़िक्रे ख़ैर	233	हज़रत इमर (रज़ि.) की एक ख़फ़ी का बयान	304
झूठी कसम खाने का नतीजा	237	एक इब्रतनाक हदीष मज़ तशरीह	305
एक बन्दर और बन्दरिया के रजम होने का वाकिआ	238	इस्लामी तारीख़ पर एक तशरीह	308
हुजूर (ﷺ) का नसबनामा	239	तारीख़ पर इब्ने जौज़ी की तशरीह	309
हज़रत सिद्दीके अकबर एक बुत खाने में	244	हज़रत सज़द बिन अबी वक्रकास का एक वाकिआ	311
लफ्जे जिन्न की लुग्वी तहकीक	245	यहूद से मुताल्लिक एक इशदि नबवी (ﷺ)	315
जिन्नात का वजूद बरहक है	246	हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) का कुबूले इस्लाम	317
शहादते हज़रत इम्रान ग़नी (रज़ि.)	249	ग़च्चाते नबवी का आगाज़	319
शहादते हज़रत इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.)	250	उमैया के क़त्ल की पेशीनगोई	322
एक फ़रासते फ़ारुकी का बयान	252	मक़ामे बद्र के कुछ हालात	322
हज़रत इमर (रज़ि.) का मुसलमान होना	252	जंगे बद्र का ज़िक्र कुर्आन में	323
मुअज़ज़ा-ए-शक्कुल क़मर के बारे में	253	जंगे बद्र क्यों पेश आई?	325
नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना का प्रबूत	259	जंगे बद्र में नुज़ूले मलाइका का ज़िक्रे ख़ैर	325
कुछ मेअराज की तफ़्सीलात	264	जंगे बद्र में फ़रीक़ैन की ता' दाद	326
हदीषे मेअराज को 28 सहाबियों ने रिवायत किया है	264	कुफ़ारे कुरैश की हलाक़त का बयान	327
लफ्जे बुराक़ की तहकीक	268	मोमिन का आखिरी कामयाब हथियार क्या है?	327
बैतुल मा' मूर की तशरीह	269	क़ातिलीने अबू ज़हल के अस्माए-गिरामी	329
वाकिआ मेअराज पर शाह वलीउल्लाह (रह.) की तशरीह	269	जंगे बद्र में पहल करने वालों का बयान	330
बैअते उक्ब़ा की तफ़्सीलात	271	हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	331
बारह नकीबों के अस्मा-ए-गिरामी	271	सिमाज़े-मौता पर एक बहस	336
सवानेह हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.)	273	अहले बिदअत की तदीद	337

फ़ैहरीस्त तशरीहे-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
हज़रत इमर (रज़ि.) की एक सियासी राय	339	हज़रत हमज़ा (रज़ि.) की शहादत का तफ़्सीली बयान	405
एक जंगी उसूल का बयान	340	जंगे अहज़ाब की तफ़्सीलात	422
जंगे उहद में शिकस्त के अस्बाब	340	जंगे ख़न्दक का आख़िरी मन्ज़र	427
दस शुहदाए-इस्लाम का ज़िक्रे-ख़ैर	345	अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	430
हज़रत ख़ुबैब बिन अदी की शहादत का बयान	346	एक मुबारक तारीख़ी दुआ	433
बद्र में फ़रिश्तों की मार पहुँचाई जाती थी	348	बनू कुरैज़ा पर चढ़ाई के अस्बाब	435
आँहज़रत (ﷺ) ग़ैबदौं नहीं थे	352	इख़्तिलाफ़े उम्मत का एक वाकिआ	435
नअतिया अशआर का सुनना-सुनाना जाइज़ है	352	ग़च्चा-ए-ज़ातुरिकाअ की वजहे तस्मीया	440
हज़रत अली (रज़ि.) की क़ैदनियों का वाकिआ	353	रसूल करीम (ﷺ) के अल्लाह पर तवक्कुल का बयान	444
तकबीराते जनाज़ा पर इज्माए-उम्मत	354	अज़ल के मुताल्लिक़ एक हदीस	445
हालात हज़रत कुदामा बिन मज़ऊन (रज़ि.)	357	नमाज़े वित्र को शुफ़अ बनाने का बयान	467
बटाई की एक खास सूत जो जाइज़ है	357	कुछ डाकुओं के क़त्ल का बयान	476
ज़िक्रे-ख़ैर हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब	360	क़सामा की एक तफ़्सील का बयान	477
क़ौमी कैच-नीच शौवा-ए-अबू जहल है	362	मुसलमानों का डाकुओं से मुकाबला और	
बद्रो सहाबा और बद्रियों से अफ़ज़ल है	362	हज़रत सलमा बिन अक्वा	479
हज़रत जुबैर बिन मुतइम का कुबूले इस्लाम	363	हज़रत सैफ़ा (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	483
बनू नज़ीर के यहूद	367	नाम निहाद सूफ़ियों पर एक इशारा	487
वराज़ते नबवी के मुताल्लिक़ एक तफ़्सीली बयान	373	हज़रत इमर (रज़ि.) की एक दूर अन्देशी का बयान	499
एहतारामे हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के मुताल्लिक़	374	हज़रत सिद्दीक के हाथ पर हज़रत अली का बैअत करना	503
कअब बिन अशरफ़ यहूदी के क़त्ल का वाकिआ	376	एक यहूदी औरत जिसने आँहज़रत (ﷺ) के लिए गोश्त ...	505
अबू राफ़ेअ यहूदी का क़त्ल	382	जैशे उसामा का बयान	506
क़बाइल औस व ख़ज़रज के बाहमी रकाबत का बयान	382	हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा के चन्द अशआर	506
तफ़्सीलात जंगे उहद का बयान	383	ज़िक्रे ख़ैर हज़रत जअफ़र तय्यार (रज़ि.)	512
हदीस वालों से दुश्मनी रखना मौज़िबे बदबख़्ती है	385	हज़रत उसामा (रज़ि.) की एक ग़लती का बयान	516
अन्सार का पहला मुजाहिद जो शहीद हुआ	389	उल्माए-इस्लाम से एक ज़रूरी गुज़ारिश	516
मौलाना वहीदुज्जमाँ की एक तकरीर दिल पज़ीर	389	ग़च्चा-ए-फ़ते मक्का के अस्बाब	518
हालात हज़रत जाबिर (रज़ि.)	391	हज़रत हातिब बिन बलत्ता (रज़ि.)	
हज़रत सअद के लिए एक दुआ-ए-नबवी	393	का ख़त बनाम मुश्रिकीने मक्का	519
मुन्किरीने हदीस का इस्तेदलाल ग़लत है	395	हालात हज़रत अबू सूफ़ियान (रज़ि.)	525
हज़रत इब्मान (रज़ि.) पर बाज़ इल्ज़ाम की तर्दीद	398	लफ़्जे ख़ैफ़ की तशरीह	526

फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
इब्ने खतल मर्दूद का बयान	527	वाकिआ बाला पर अल्लामा इब्ने कय्थिम का तब्सरा	564
कअबा शरीफ की कुन्जी कयामत तक के लिए	529	खिलाफे शरअ किसी की इताअत जाइज नहीं है	566
ज़ादुल मआद हाफिज़ इब्ने कय्थिम का एक बयान	530	यमनी बुजुर्गों से इन्हारे अक़ीदत मुतर्जिम	567
इलूमे इस्लामी की हज़रत फ़ारूके आज़म की निगाह में	532	हमारे ज़माने के बाज़ शयातीन का बयान	574
मौलाना वहीदुज्जमाँ की एक तक्रीर दिल पज़ीर	532	हिन्दुस्तान के मुस्लिम बादशाहों का ज़िक्रे ख़ैर	576
हालात हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर असदी कुरैशी (रज़ि.)	533	एक हदोष की शरह फ़तुलबारी में	578
तफ़्सीलात फ़त्हे मक्का मुकर्रमा	534	मफ़्ज़ूल की इमामत अफ़ज़ल के लिए जाइज है	579
नाबालिग़ की इमामत का बयान	537	समन्दर की मुर्दा मछली का खाना दुस्त है	583
एक इस्लामी क़ानून का बयान	538	हज़रात शैख़ेन के मुताल्लिक़ ग़लत बयानी	586
मुजाकरात अहादीषे नबवी (ﷺ) कुरूने ख़ैर में	540	गाँव में जुम्आ के मुताल्लिक़ एक देवबन्दी फ़त्वा	589
फ़त्हे मक्का पर अल्लामा इब्ने कय्थिम का तब्सरा	542	इस बारे में एक मुफ़्फ़सल, मुदल्लल बयान	589
जंगे हुनैन की तफ़्सीलात	544	हज़रत धुमामा बिन उप्प़ाल का ज़िक्रे ख़ैर	591
अख़लाक़े नबवी से एक बयान	545	किस्सा धुमामा पर हाफिज़ साहब का तब्सरा	592
जंगे हुनैन की मज़ीद तफ़्सीलात	550	किस्सा नज़्दान पर हाफिज़ साहब का तब्सरा	596
एक बेअदब ग़वार का बयान	555	हालात हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन अब्दुल्लाह.....	597
हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम का ज़िक्रे ख़ैर	557	हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) क़बीला बनू दौस से थे	603
हज़रत हिशाम बिन उर्वा का बयान	559	तुफ़ैल बिन अम्र दौसी (रज़ि.) के लिए	
हज़रत सुलेमान बिन हरब का बयान	559	एक दुआ-ए-नबवी (ﷺ) का बयान	604
हज़रत ख़ालिद की एक इज्तिहादी ग़लती का बयान	564	हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि.) के कुछ हालात	605

तकरीज़

अल्हम्दुलिल्लाह वस्सलामु वस्सलामु अला मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह खातिमुन्नबिय्यीन व सय्यिदुल मुर्सलीन व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन, अम्मा बअद!

कुर्आन मजीद के बाद सबसे सहीहतरीन किताब सहीह बुखारी शरीफ और सहीह मुस्लिम शरीफ हैं। इन्हें सहीहैन यानी दो सहीह किताबें कहते हैं। इनके बारे में उम्मत का इज्माअ है। इसमें किसी भी तरह की तन्कीझ करने वालों को उलम-ए-उम्मत ने फ़ासिक़ करार दिया है। हकीक़त ये है कि दीने इस्लाम जो अल्लाह तआला का आखिरी और सबसे अफ़ज़ल और वाहिद मक़बूल दीन है। वो कुर्आन करीम और प्यारे रसूल (ﷺ) के फ़र्मूदात और अफ़ज़ाल और आपकी मौजूदगी में हुई बातों और कामों को जिसे आपने बरकरार रखा हो, उनके मजमूअे का नाम है।

इसलिए अइम्म-ए-किराम और मुहहिशीने-इज़ाम रहिमहुल्लाह ने इसकी हिफ़ाज़त और किताबत और तदवीन और नशरो-इशाअत में अपनी ज़िन्दगी सफ़र कर दी और इसकी अहमियत के पेशेनज़र ही उन्होंने इस क़दर जाँफ़िशानी और मुहब्बत और कुर्बानी दी कि इसकी मिशाल नहीं मिलती। उन्होंने एक-एक हदीष की छानबीन की, इसमें ज़िन्दगी खपा दी और किसी भी ज़ईफ़ और झूठ और ग़फ़लत के शिकार राखी की रिवायत को कुबूल नहीं किया। इस सिलसिले में सबसे ज़्यादा मेहनत और बेदार मराज़ी और एहतियात से इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने काम लिया। इसलिए उम्मत ने इन दोनों किताबों, खुसूसन सहीह बुखारी को हाथों हाथ लिया और इन्हें कुबूलियते आम्मा हासिल हुई। उस वक़्त के अइम्म-ए-हदीष ने सहीह बुखारी के मुअल्लिफ़ को अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष का ख़िताब दिया और उनकी किताब को अल्लाह तआला ने ऐसी कुबूलियते-आम्मा अता की कि कुर्आन के बाद सबसे ज़्यादा एहतियाम के साथ इसे पढ़ा गया, शरहें लिखी गईं, इसके फ़वाइद और इसके मुताल्लिफ़ हर हैषियत से एअतिनाअ किया गया और इसकी हर हैषियत से ख़िदमत की गई।

उलम-ए-अहले हदीष ने हर दौर में खुसूसन इसे हर्जें जाँ बनाया और इसकी नशरो-इशाअत से लेकर हर तरह की ख़िदमत और वफ़ा का हक़ अदा किया। अल्लाम दाऊद राज़ (रह.) साबिक़ नाज़िम मर्कज़ी जमीअत अहले हदीष हिन्द ने इसका उर्दू तर्जुमा किया और ज़रूरी व मुफ़ीद हवाशी वन्त फ़र्माई। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीष हिन्द ने इसे शाए फ़र्माया है।

अब इसका हिन्दी तर्जुमा जमीअत अहले हदीष जोधपुर-राजस्थान शाए कर रही है। इसकी पाँचवीं जिल्द जो मनाकिब व फ़ज़ाइले सहाबा और किताबुल मराज़ी पर मुश्तमिल है, के लिए ये सुतूरे तकरीज़ उनकी त़लब पर लिखे जा रहे हैं। अल्लाह तआला हमारी इस सूबाई जमीअत के ज़िम्मेदारान और मेम्बरान और तमाम मुताल्लिफ़ीन को जज़ा-ए-ख़ैर दे और जमइय्यत व जमाअत और कुर्आन व हदीष की मजीद ख़िदमत की तौफ़ीके अरज़ानी फ़र्माए, आमीन! और नबी-ए-आखिरुज्जमाँ, अफ़ज़लुल बशर (ﷺ) की प्यारी व महबूब अहादीष पर अमलपैरा होने के साथ क़यामत के दिन आप (ﷺ) की शफ़ाअत नसीब फ़र्माए और पूरी दुनिया को इस रहमतुललिल आलमीन के फ़र्मूदात से मुस्त्फ़ीद होने की तौफ़ीक़ अता करे, आमीन! व सल्लल्लाहु अला रसूलिहिल करीम!

असगर अली इमाम महदी सलफ़ी,

नाज़िमे-इमूमी, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीष हिन्द

तक़चीज़

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन वससलामु अला अशरफ़िल अंबियाइ वल
मुसलीन, अम्मा बअद!

शरीअते इस्लामी की बुनियाद दो चीज़ों पर है, एक किताबुल्लाह और दूसरी सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) और दोनों की तशरीही हैषियत एक है। फ़र्मानि रसूल (ﷺ) है, मैं तुम्हारे लिए दो चीज़ें छोड़ जा रहा हूँ। तुम जब तक उन्हें मज़बूती के साथ पकड़े रहोगे, गुमराह नहीं होगे। एक अल्लाह की किताब और दूसरी मेरी सुन्नत।

इसी बिना पर सहाब-ए-किराम रिज़वानुल्लाहिल अज्मईन से लेकर ताबेईन, अइम्मा-ए-दीन व मुहदिप्पीन ने ज़िन्दगी के हर मैदान में कुआन व सुन्नत को हाकिम व क़ाज़ी माना और ताहयात उसी पर अमल पैरा रहे और इन दोनों उसूलों की ख़िदमत में अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी। जिसके नतीजे में बेशुमार कुतुबे तफ़ासीर और अहदादीष और उनसे मुताल्लिक इलूम व फ़ुनून के मजमूअे वजूद में आए कि जिसे देखकर दुनिया मह्वे-हैरत है कि दीन की इतनी बड़ी ख़िदमत मज़हबो-मिल्लत में नहीं हो पाई और जिस उसूल पर पाबन्द रह कर उन उमूर को अंजाम दिया गया। इनमें ख़ामी निकालना तो दूर की बात, अल्लाह ने अग़यार से भी इस दीन की ख़िदमत करवाई।

बहरहाल अल्लाह के बन्दों से ये मुहतरम काम जारी था, जारी है और जारी रहेगा, इंशाअल्लाह! इसी सिलसिले की एक कड़ी ये सहीह बुखारी का हिन्दी तर्जुमा है। ये लाइके तहसीन अमल, जिसकी ज़रूरत एक अर्से से महसूस की जा रही थी, जमीअत अहले हदीष जोधपुर-राजस्थान के हक में आया जिसका हर फ़र्द ने इस अमर में अपना-अपना तआवुन पेश फ़र्माकर इस जलीलुल क़द्र काम को पायः-ए-तक़मील तक पहुँचाया। खुसूसन तर्जुमा का काम, जो एक बड़ी ज़िम्मेदारी का काम होता है बिरादरम सलीम ख़िलजी हफ़िज़हुल्लाह के हाथों अंजाम पाया। अल्लाह तआला उन्हें और जमीअत के ज़िम्मेदारान, अराकीने जमीअत और इस कारे ख़ैर में जिसका भी जैसा तआवुन रहा हो, बेहतरीन सिला अता फ़र्माए और मज़ीद दीने हनीफ़ की ख़िदमत का मौक़ा अता करे, आमीन! तक्ब्बल या रब्बल आलमीन!

दुआगो,

मुहम्मद ख़ालिद जमील मक्की

मुम्बई

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

चौदहवां पारा

बाब 3 : गार वालों का क्रिसा

53- بَابُ حَدِيثِ الْغَارِ

तशरीह : पारा नम्बर 13 के ख़ात्मे पर अस्हाबे कहफ़ का वाक़िया बयान किया गया। इसलिये मुनासिब हुआ कि पारा नम्बर 14 को गार वालों के ज़िक्र से शुरू किया जाए। कुछ उलमा ने आयते शरीफ़ा, अम हसिब अत्र अस्हाबल्कहफ़ि वर्क़ीमि कानू (अल कहफ़ : 9) में रक़ीम वालों से ये लोग जिनका बयान इस हदीष में है ये मुराद लिये, वाक़िया बहुत ही अजीब है मगर इन्नाल्लाहा अला कुल्लि शैइन क़दीर के तहत कुदरते इलाही से कुछ दूर भी नहीं है। मज़ीद तफ़सील आगे आ रही है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, अकिबल्मुसन्निफ़ किस्मत अस्हाबल्कहफ़ि बिहदीषिलगारि इशारतन इला मा वरद अन्नहू क़द क़ील अन्नरक़ीमल्मज़कूर फी कौलिही तआला अम हसिब अन्न अस्हाबल्कहफ़ि वर्क़ीमि हुवल्लाग़ुल्लज़ी असाब फीहिः प्रलाषतु मा असाबहुम व ज़ालिक फीम अख़जहुल्बज़्ज़ार वत्तब्रानी बिइस्नादिन हसनिन अनिन्नुअमानि बिन बशीर अन्नहू मअन्नबिथिय (ﷺ) यज़कूररक़ीम काल इन्तलक़ प्रलाषतुन फ़कानु फी कहफ़िन फवफ़अल्जबलु अला बाबिल्कहफ़ि फऔसद अलैहिम फज़करल्हदीष (फ़तहुल्बारी) या'नी हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने अस्हाबे कहफ़ के बयान के बाद हदीषे गार का ज़िक्र किया जिसमें आपने इशारा फ़र्माया कि आयते करीमा, अम हसिब अत्रा अस्हाबल्कहफ़ि वर्क़ीमि में रक़ीम वालों से वो गार वाले मुराद हैं जो तीन थे और अचानक वो पहाड़ की चट्टान गिरने से उस मुसीबत में फंस गये थे जैसा कि बज़्ज़ार व तब्रानी ने सनदे हसन के साथ नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत की है कि उन्होंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) से आप रक़ीम वालों का ज़िक्र फ़र्मा रहे थे कि तीन साथी चले जा रहे थे। उन्होंने जब एक गार में पनाह ली तो उन पर पहाड़ की एक चट्टान गिरी और उनको वहाँ बन्द होना पड़ा। फिर अल्लाह ने उनकी दुआओं को कुबूल किया और वहाँ से उनको नजात बख़शी।

3465. हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, उन्हें डबैदुल्लाह बिन उमर ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, पिछले ज़माने में (बनी इस्राईल में से) तीन आदमी कहीं रास्ते में जा रहे थे कि अचानक बारिश ने उन्हें आ लिया। वो तीनों पहाड़ के एक कोह (गार) में घुस गये (जब वो अंदर चले गये) तो गार का मुँह बन्द हो गया। अब तीनों आपस में यूँ कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमें इस मुसीबत से अब तो सिर्फ़ सच्चाई ही नजात दिलाएगी। बेहतर ये है कि अब हर शख़्स अपने किसी ऐसे अमल को बयान करके दुआ करे

3465- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ غُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ وَغُنَيْمٍ أَنَّ اللَّهَ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : ((يَتِمُّ ثَلَاثَةُ نَفَرٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ يَمْشُونَ إِذْ أَصَابَهُمْ مَطَرٌ، فَأَوُوا إِلَى غَارٍ فَانْطَبَقَ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ : إِنَّهُ وَاللَّهِ يَا مَوْلَانَا لَا يَنْجِيكُمْ إِلَّا

जिसके बारे में उसे यकीन हो कि वो खालिस अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के लिये किया था। चुनोंचे एक ने इस तरह दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझे खूब मा'लूम है कि मैंने एक मज़दूर रखा था जिसने एक फ़रक़ (तीन साअ) चावल की मज़दूरी पर मेरा काम किया था लेकिन वो शख़्स (गुस्स में आकर) चला गया और अपने चावल छोड़ गया। फिर मैंने उस एक फ़रक़ चावल को लिया और उसकी काश्त की। उससे इतना कुछ हो गया कि मैंने पैदावार में से गाय-बैल ख़रीद लिये। उसके बहुत दिन बाद वही शख़्स मुझसे अपनी मज़दूरी मांगने आया। मैंने कहा कि ये गाय-बैल खड़े हैं, उनको ले जा। उसने कहा कि मेरा तो सिर्फ़ एक फ़रक़ चावल तुम पर होना चाहिये था। मैंने उससे कहा कि ये सब गाय-बैल ले जा क्योंकि उसी एक फ़रक़ की आमदनी है। आख़िर वो गाय-बैल लेकर चला गया। पस ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि ये ईमानदारी मैंने सिर्फ़ तेरे डर से की थी तो तू गार का मुँह खोल दे। चुनोंचे उसी वक़्त वो पत्थर कुछ हट गया। फिर दूसर ने इस तरह दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझे खूब मा'लूम है कि मेरे माँ-बाप जब बूढ़े हो गये तो मैं उनकी ख़िदमत में रोज़ाना रात में अपनी बकरियों का दूध लाकर पिलाया करता था। एक दिन इत्तिफ़ाक़ से मैं देर से आया तो वो सो चुके थे। इधर मेरे बीबी और बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे लेकिन मेरी आदत थी कि जब तक वालिदैन को दूध न पिला लूँ, बीबी-बच्चों को नहीं देता था। मुझे उन्हें बेदार करना भी पसन्द नहीं था और छोड़ना भी पसन्द न था (क्योंकि यही उनका शाम का खाना था और उसके न पीने की वजह से वो कमज़ोर हो जाते) पस मैं उनका वहीं इत्तिज़ार करता रहा यहाँ तक कि सुबह हो गई। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये काम तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल दूर कर दे। उस वक़्त वो पत्थर कुछ और हट गया और अब आसमान नज़र आने लगा। फिर तीसरे शख़्स ने यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने एक बार उससे सुहबत करनी चाही, उसने इंकार किया मगर उस शर्त पर तैयार हुई कि मैं उसे सौ अशरफ़ी लाकर दे दूँ। मैंने ये रक़म हासिल करने के लिये

الصَّدَقِ، فَلْيَذْغِ كُلَّ رَجُلٍ مِنْكُمْ بِمَا يَغْلُمُ أَنَّهُ قَدْ صَدَقَ بِهِ.. فَقَالَ وَاحِدٌ مِنْهُمْ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي أَجْرٌ عَمِلَ لِي عَلَى فَرْقٍ مِنْ أَرْزٍ، فَلَنَهَبَ وَتَرَكْتُهُ، وَأَتَى عَمَدَتِي إِلَى ذَلِكَ الْفَرْقِ فَوَزَعْتُهُ، فَصَارَ مِنْ أَمْرِهِ أَنِّي اشْتَرَيْتُ مِنْهُ بَقَرًا، وَأَنَّهُ أَتَانِي بِطَلَبِ أَجْرِهِ، فَقُلْتُ لَهُ : اغْبِذْ إِلَى بَيْتِكَ الْبَقَرِ فَسُقْهَا، فَقَالَ لِي : إِنَّمَا لِي جِدَلٌ لَفَرْقٍ مِنْ أَرْزٍ. فَقُلْتُ لَهُ : اغْبِذْ إِلَى بَيْتِكَ الْبَقَرِ، فَإِنَّهَا مِنْ ذَلِكَ الْفَرْقِ. فَسَأَلَهَا. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ غَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاعَتْ عَنْهُمْ الصَّغْرَةُ. فَقَالَ الْآخَرُ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ كَانَ لِي أَبَوَانِ شَبَعَانِ كَبِيرَانِ، فَكُنْتُ آتِيَهُمَا كُلَّ لَيْلَةٍ يَلْتَمِسُ هَؤُمَ لِي، فَأَبْنَاتُ عَلَيْهِمَا لَيْلَةً، فَجِئْتُ وَقَدْ رَقَدَا، وَأَهْلِي وَعِيَالِي يَصْطَاغُونَ مِنَ الْجُوعِ، فَكُنْتُ لَا أَسْتَقِيمُهُمْ حَتَّى يَشْرَبَ أَبَوَايَ، فَكَرِهْتُ أَنْ أَوْقِظَهُمَا، وَكَرِهْتُ أَنْ أَدْعُهُمَا فَيَسْكَبَا لِشَرَبَتِهِمَا، فَلَمَّ أَرَلْتُ أَنْتَظِرُ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنْ فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ غَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاعَتْ عَنْهُمْ الصَّغْرَةُ حَتَّى نَظَرُوا إِلَى السَّمَاءِ. فَقَالَ الْآخَرُ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي بَنَةٌ عَمٌّ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَأَتَى بِأَوْدَتِهَا عَنْ نَفْسِهَا فَأَبَتْ إِلَّا أَنْ آتِيَهَا

कोशिश की। आखिर वो मुझे मिल गई तो मैं उसके पास आया और वो रकम उसके हवाले कर दी। उसने मुझे अपने नफ्स पर कुदरत दे दी। जब मैं उसके ग्रेन करीब बैठ चुका तो उसने कहा कि अल्लाह से डर और मुहर को बगैर हक के न तोड़। मैं (ये सुनते ही) खड़ा हो गया और सौ अशरफी भी वापस नहीं ली। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये अमल तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल आसान कर दे। अल्लाह तआला ने उनकी मुश्किल दूर कर दी और वो तीनों बाहर निकल आए।

(राजेअ: 2215)

بِمَاةٍ دِينَارٍ، فَطَلَبَهَا حَتَّى قَنَرَتْ، فَأَتَتْهَا بِهَا فَدَفَعَتْهَا إِلَيْهَا، فَأَمْكَنَتِي مِنْ نَفْسِهَا، فَلَمَّا قَعَدْتُ بَيْنَ رِجْلَيْهَا فَقَالَتْ أَيْ اَللّٰهُ وَلَا تَفْضُ الْخَائِمَ إِلَّا بِحَقِّهِ، فَقُمْتُ وَتَرَكْتُ الْبَاةَ دِينَارًا. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَيْ فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ غَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا، فَفَرِّجْ اَللّٰهُ عَنْهُمْ فَخَرَجُوا)).

[راجع: 2215]

तशीह: इस हदीष के जेल में हाफिज़ इब्ने हजर (रह) फ़र्माते हैं, व फ़ीहि फ़जलुल्लइख़लासि फ़िलअमलि व फ़जलु बिरिल्लवालिदैनि व ख़िदमतिहा व ईशारिहिमा अलल्लवलदि व तहम्मूलल्मशक्कति लिअजलिहिमा व क्रद इस्तश्कल तर्कुहू औलादहुस्सिगार यब्कून मिनल्जुड तूल लैलतिहिमा मअ कुदरतिही अला तस्कीनि जूइहिम फ़कील कान शर्दहुम तन्नदीमु नफ़कतिन गैरहुम व क़ील यहतमिलु अन्न बुकाअहुम लैस अनिल्लजुड क्रद तक्रहम मा यरूहुहू व क़ील लअल्लहुम कानू यत्लुबून ज़ियादत अला सहरिमकि व हाज़ा औला व फ़ीहि व फ़जलुल्लइफ़फ़ति वल्इनकाफ़ि अनिल्लहरामि मअल्कुदरति व अन्न तर्कल्मअसियति यम्हू मुक्रहमाति तलबिहा व अन्नत्ताबत तजिबु मा क्रब्लहा व फ़ीहि जवाज़ुलज़ाज़ति बिन्नआमिल्यअलूमि बैनल्मुताजिरीन व फ़जलु अदाइल्अमानति व इब्बातिल्करामति लिस्सालिहीन (फ़तहुल्बारी) या'नी इस हदीष से अमल में इख़लास की फ़ज़ीलत प्राबित हुई और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक की और ये कि माँ-बाप की रज़ाजूई के लिये हर मुम्किन मशक्कत को बर्दाश्त करना औलाद का फ़ज़ है। उस शख़्स ने अपने बच्चों को रोने दिया और उनको दूध नहीं पिलाया, उसकी कई वुजूहात बयान की गई हैं। कहा गया है कि उनकी शरीअत का हुकम ही ये था कि ख़र्च में माँ-बाप को दूसरों पर मुक्रहम रखा जाए। ये भी अन्देशा है कि उन बच्चों को दूध थोड़ा ही पिलाया गया इसलिये वो रोते रहे, और इस हदीष से पाकबाज़ी की भी फ़ज़ीलत प्राबित हो गई और ये भी मा'लूम हुआ कि तौबा करने से पहली ग़लतियाँ भी मुआफ़ हो जाती हैं और उससे ये भी जवाज़ निकला कि मज़दूर को तज़ाम की उजरत पर भी मज़दूर रखा जा सकता है और अमानत की अदायगी की भी फ़ज़ीलत प्राबित हुई और स़ालिहीन की करामतों का भी इब्बात हुआ कि अल्लाह पाक ने उन स़ालेह बन्दों की दुआओं के नतीजे में उस पत्थर को चट्टान के मुँह से हटा दिया और ये लोग वहाँ से नजात पा गये। रहिमहुमुल्लाह अज़्मईन। नीज़ हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) फ़र्माते हैं कि इमाम बुखारी (रह) ने वाक़िया अइहाबे कहफ़ के बाद हदीषे गार का ज़िक्र फ़र्माया जिसमें इशारा है कि आयते कुआनी अम्हसिब्ब अन्ना अइहाबल कहफ़ि वरक्कीम (अल कहफ़: 9) में रक्कीम से यही गार वाले मुराद हैं जैसा कि तबरानी और बज़ार ने सनदे इसन के साथ नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना। रक्कीम का बयान फ़र्माते हुए आपने उन तीनों शख़्सों का ज़िक्र फ़र्माया जो एक गार में पनाह गुजी हो गये थे और जिन पर पत्थर की चट्टान गिर गई थी और उसने गार का मुँह बन्द कर दिया था। तीनों में मज़दूरी पर ज़राअत का काम कराने वाले का ज़िक्र है। इमाम अहमद की रिवायत में उसका किस्सा यूँ मज़कूर है कि मैंने कई मज़दूर उनकी मज़दूरी ठहराकर काम पर लगाए। एक शख़्स दोपहर को आया मैंने उसको आधी मज़दूरी पर रखा लेकिन उसने इतना काम किया जितना औरों ने सारे दिन में किया था। मैंने कहा कि मैं उसको भी सारे दिन की मज़दूरी दूँगा। इस पर पहले मज़दूरों में से एक शख़्स गुस्से में हुआ। मैंने कहा भाई! तुझे क्या मतलब है, तू अपनी मज़दूरी पूरी ले ले। उसने गुस्से में अपनी मज़दूरी भी नहीं ली और चल दिया। फिर आगे वो हुआ जो रिवायत में मज़कूर है। क़स्तालानी (रह) ने कहा कि उन तीनों में अफ़ज़ल तीसरा शख़्स था। इमाम ग़ज़ाली (रह) ने कहा शहवत आदमी पर बहुत ग़लबा करती है और जो शख़्स सब सामान होते हुए महज़ अल्लाह के डर से बदकारी से बाज़ रह गया उसका दर्जा सिद्दीक़ीन

में होता है। अल्लाह पाक ने हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को सिद्दीक़ इसीलिये फ़र्माया कि उन्होंने जुलैखा के शदीद इस्सारा पर भी बुरा काम करना मंज़ूर नहीं किया और दुनिया की सख़्त तकलीफ़ बर्दाश्त की। ऐसा शख्स बमौजिब नज़्से कुआनी ज़न्नती है जैसा कि इर्शाद है, **وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَ نَهْنَأَ نَفْسَ اَنِئِلْهَ وَ فِئِنْ لَّجَنَّتْ هِیْلُمَا وَ (अन् नाज़िआत : 40-41) या'नी जो शख्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डर गया और अपने नफ़्स को हराम ख़्वाहिशात से रोक लिया तो जन्नत उसका ठिकाना है। जअल्नल्लाहु मिन्हुम आमीन.**

इस हदीस से ये भी मा'लूम हुआ कि वसीला के लिये आमाले सालिहा को पेश करना जाइज़ तरीका है और दुआओं में बतौर वसीला वफ़ातशुदा बुजुर्गों का नाम लेना ये दुरुस्त नहीं है। अगर दुरुस्त होता तो ये ग़ार वाले अपने अंबिया व औलिया के नामों से दुआ करते मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया बल्कि आमाले सालिहा का ही वसीला में पेश किया। इस वाकिये से नज़ीहत हासिल करते हुए उन लोगों को जो अपनी दुआओं में अपने वलियों, पीरों और बुजुर्गों का वसीला दूँदते हैं, ग़ौर करना चाहिये कि वो ऐसा अमल कर रहे हैं जिसका कोई पुबूत किताबो-सुन्नत और बुजुर्गाने इस्लाम से नहीं है। आयते शरीफ़ा या अय्युहल्लज़ीन अमानुत्तकुल्लाह वब्तगू इलैहिल्वसीलत (अल माइदा : 35) में भी वसीला से मुराद आमाले सालिहा ही हैं।

बाब : 45

باب - ٥٤

3466. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़िनाद ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि एक औरत अपने बच्चे को दूध पिला रही थी कि एक सवार (नाम नामा'लूम) उधर से गुज़रा, वो उस वक़्त भी बच्चे को दूध पिला रही थी (सवार की शान देखकर) औरत ने दुआ की ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को उस वक़्त तक मौत न देना जब तक कि उस सवार जैसा न हो जाए। उसी वक़्त (बहुदरते इलाही) बच्चा बोल पड़ा, ऐ अल्लाह! मुझे उस जैसा न बनाना। और फिर वो दूध पीने लगा। उसके बाद एक (नाम नामा'लूम) औरत को उधर से ले जाया गया, उसे ले जाने वाले उसे घसीट रहे थे और उसका मज़ाक़ उड़ा रहे थे। माँ ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को इस औरत जैसा न करना, लेकिन बच्चे ने कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे उसी जैसा बना देना। फिर तो माँ ने पूछा, अरे ये क्या मामला है? उस बच्चे ने बताया कि सवार तो काफ़िर व ज़ालिम था और औरत के बारे में लोग कहते थे कि तू ज़िना कराती है तो वा जवाब देती हस्बियल्लाह (अल्लाह मेरे लिये काफ़ी है, वो मेरी पाकदामनी जानता है) लोग कहते कि तू चोरी करती है तो वो जवाब देती हस्बियल्लाह (अल्लाह मेरे लिये काफ़ी है और वो मेरी पाकदामनी जानता है)।

(राजेअ : 1206)

٣٤٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((بَيْنَا امْرَأَةٌ تُرْضِعُ ابْنَهَا إِذْ مَرَّ بِهَا رَاكِبٌ وَهِيَ تُرْضِعُهُ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لَا تُبَيِّتْ ابْنِي حَتَّى يَكُونَ مِثْلَ هَذَا. فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلَنِي مِثْلَهُ. ثُمَّ رَجَعَ فِي اللَّذِي. وَفَرَّ بِامْرَأَةٍ تُجَرِّزُ وَيَلْعَبُ بِهَا، فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلَنِي مِثْلَهَا. فَقَالَ: اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِثْلَهَا. فَقَالَ: أَمَا الرَّاكِبُ فَإِنَّهُ كَافِرٌ، وَأَمَا الْمَرْأَةُ فَإِنَّهُمْ يَقُولُونَ لَهَا: تَزْنِي، وَيَقُولُونَ: حَسْبِيَ اللَّهُ. وَيَقُولُونَ: تَسْرِقُ، وَيَقُولُونَ: حَسْبِيَ اللَّهُ)).

[راجع: ١٢٠٦]

दूध पीते बच्चे का ये कलाम करना कुदरते इलाही के तहत हुआ। बच्चे ने उस ज़ालिम व काफ़िर सवार से इज़हारे बेज़ारी और मोमिना व मज़लूम औरत से इज़हारे हमदर्दी किया। उसमें हमारे लिये बहुत से दर्स पोशीदा हैं। उसमें दीनदार व मुत्तक़ी लोगों के लिये हिदायत है कि वो कभी भी दुनियादारों के ऐशो-आराम और उनकी तरक्कियाते दुनयवी से अपर न लें बल्कि समझें कि उन बददीनियों के लिये ये अल्लाह की तरफ़ से मुहलत है। एक दिन मौत आएगी और ये सारा खेल खत्म हो जाएगा। इस्लाम बड़ी भारी दौलत है जो कभी भी ज़ाइल (नष्ट) न होगी।

3467. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे जरीर बिन हाज़िम ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने और उन्हें मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बयान फ़र्माया कि एक कुत्ता एक कुँए के चारों तरफ़ चक्कर काट रहा था जैसे प्यास की शिहत से उसकी जान निकल जाने वाली हो कि बनी इस्राईल की एक जानिया औरत ने उसे देख लिया। उस औरत ने अपना मौज़ा उतारकर कुत्ते को पानी पिलाया और उसकी मग़्गिरत उसी अमल की वजह से हो गई। (राजेअ: 3321)

٣٤٦٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ تَلَيْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَنْحَا كُلُّ يَطِيفٍ بِرُكْبَةٍ كَأَن يَفْتَلُهُ الْقَطْشُ إِذْ رَأَتْهُ نَبِيًّا مِنْ بَنَاتِ نَبِيٍّ إِسْرَائِيلَ، فَتَرَعَتْ مَوْقَهَا فَسَقَتْهُ، فَغَفِرَ لَهَا)). [راجع: ٣٣٢١]

मा'लूम हुआ कि जानवर को भी पानी पिलाने में प्रयास है। ये खुलूस की बरकत थी कि एक नेकी से वो बदकार औरत बख़्श दी गई।

3468. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्होंने मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से सुना एक साल जब वो हज्ज के लिये गये हुए थे तो मिम्बरे नबवी पर खड़े होकर उन्होंने पेशानी के बालों का एक गुच्छा लिया जो उनके चौकीदार के हाथ में था और फ़र्माया ऐ मदीना वालों! तुम्हारे उलमा किधर गये मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने इस तरह (बाल जोड़ने की) मुमानअत फ़र्माई थी और फ़र्माया था कि बनी इस्राईल पर बर्बादी उस वक़्त आई जब (शरीअत के खिलाफ़) उनकी औरतों ने इस तरह बाल संवारने शुरू कर दिये थे।

(दीगर मक़ाम: 3488, 5932, 5938)

٣٤٦٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ: سَمِعَ مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِي سُفْيَانَ - غَامَ حَجَّ - عَلَى الْمُنْبَرِ، لِنَسْأَلِ قُصَّةَ مِنْ شَعْرٍ - كَانَتْ فِي يَدَيْ حَرَسِيٍّ - فَقَالَ: يَا أَهْلَ الْمَدِينَةِ، أَيْنَ عُلَمَاؤُكُمْ؟ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَنْهَى عَنْ مِثْلِ هَذِهِ وَيَقُولُ: ((إِنَّمَا هَلَكْتَ بَنُو إِسْرَائِيلَ حِينَ اتَّخَذَ هَذِهِ نِسَاءَهُمْ)).

[أطرافه في: ٣٤٨٨, ٥٩٣٢, ٥٩٣٨]

तशरीह: तुम्हारे उलमा किधर गये या'नी क्या तुमको मना करने वाले उलमा खत्म हो गये हैं। मा'लूम हुआ कि मुंकिरात पर लोगों को मना करना उलमा का फ़र्ज़ है। दूसरों के बाल अपने सर में जोड़ना मुराद है। दूसरी हदीष में ऐसी औरत पर ला'नत आई है। मुआविया (रज़ि.) का ये खुल्बा 61 हिजरी के बारे में है। जब आप अपनी खिलाफ़त में आखिरी हज्ज करने आये, अक़्बर उलमा सहाबा इतिक़ाल फ़र्मा चुके थे। हज़रत अमीर ने जिहालत के ऐसे अफ़आल को देखकर ये अफ़सोस

ज़ाहिर फ़र्माया। बनी इस्राईल की शरीअत में भी ये हाराम था मगर उनकी औरतों ने उस गुनाह का इर्तिकाब किया और ऐसी ही हरकतों की वजह से बनी इस्राईल तबाह हो गये। मा'लूम हुआ कि मुहर्रमात के उमूमी इर्तिकाब से कौमें तबाह हो जाती हैं।

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफयान (रज़ि.) कुरैशी और उमवी हैं। उनकी वालिदा का नाम हिन्द बिन इत्बा है। हज़रत मुआविया खुद और उनके वालिद फ़तहे मक्का के दिन मुसलमान हुए। ये मुअल्लफ़तुल कुलूब में दाख़िल थे। बाद में आँहज़रत (ﷺ) के मुरासिलात लिखने की ख़िदमत उनको सौंपी गई। अपने भाई यज़ीद के बाद शाम के हाकिम मुकर्रर हुए। हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने से वफ़ात तक हाकिम ही रहे। ये कुल मुद्दत बीस साल है। हज़रत उमर (रज़ि.) के दौरे ख़िलाफ़त में तक़रीबन 4 साल और हज़रत उम्रमान (रज़ि.) की पूरी मुद्दते ख़िलाफ़त और हज़रत अली (रज़ि.) की पूरी मुद्दते ख़िलाफ़त और उनके बेटे हज़रत हसन (रज़ि.) की मुद्दते ख़िलाफ़त ये कुल बीस साल हुए। उसके बाद हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) ने 41 हिजरी में ख़िलाफ़त उनके सुपुर्द कर दी तो हुकूमत मुकम्मल तौर पर उनको हासिल हो गई और मुकम्मल बीस साल तक सल्तनत उनके हाथ में रही। बमुकामे दमिश्क रजब सन 60 हिजरी में 84 साल की उम्र में उनका इतिक़ाल हो गया। आख़िर उम्र में लकवे की बीमारी हो गई थी। अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में फ़र्माया करते थे, काश मैं वादी-ए-जीतुबा में कुरैश का एक आदमी होता और ये हुकूमत वग़ैरह कुछ न जानता। उनकी ज़िन्दगी में बहुत से सियासी इंक़िलाबात आते जाते रहे। इतिक़ाल से पहले ही अपने बेटे यज़ीद को हुकूमत की बाग़डोर सौंपकर सुबुकदोश हो गये थे। मगर यज़ीद बाद में उनका कैसा जानशीन प्राबित हुआ ये दुनिया-ए-इस्लाम जानती है, तफ़्सील की ज़रूरत नहीं। हज़रत मुआविया (रज़ि.) की वालिदा माजिदा हज़रत हिन्दा बिनते इत्बा बड़ी आक़िला ख़ातून थीं। फ़तहे मक्का के दिन दूसरी औरतों के साथ उन्होंने भी आँहज़रत (ﷺ) के दस्ते मुबारक पर इस्लाम की बेअत की तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करोगी और न चोरी करोगी तो हिन्दा ने अर्ज़ किया कि मेरे शौहर अबू सुफयान हाथ रोककर खर्च करते हैं जिससे तंगी लाहिक़ होती है तो आपने फ़र्माया कि तुम इस क़दर ले लो जो तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिये हस्बे दस्तूर काफ़ी हो। आपने फ़र्माया कि और ज़िना न करोगी, तो हिन्दा ने अर्ज़ किया कि क्या कोई शरीफ़ औरत ज़िनाकार हो सकती है? आपने फ़र्माया कि अपने बच्चों को क़त्ल न करोगी तो हिन्दा ने अर्ज़ किया कि आपने हमारे सब बच्चों को क़त्ल करा दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के ज़माने में वफ़ात पाई। इसी रोज़ हज़रत अबू क़हाफ़ा (रज़ि.) अबूबक्र (रज़ि.) के वालिदे माजिद का इतिक़ाल हुआ। रहिमहुमुल्लाह अज्मईन।

3469. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे अबू सलमान ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गुज़िश्ता उम्मतों में मुहदष लोग हुआ करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा है तो वो उमर बिन ख़त्ताब हैं। (दीगर मक़ाम : 3689)

٣٤٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَنِيِّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّهُ قَدْ كَانَ فِيمَا مَضَى قَبْلَكُمْ مِنَ الْأُمَمِ مُحَدَّثُونَ، وَإِنَّهُ إِنْ كَانَ فِي أُمَّتِي هَذِهِ مِنْهُمْ لَإِنَّهُ عَمْرُو بْنُ الْخَطَّابِ)). [طرفه ٣ : ٣٦٨٩].

लफ़्जे मुहदष दाल के फ़तह के साथ है। अल्लाह की तरफ़ से उसके वली के दिल में एक बात डाल दी जाती है। हज़रत उमर (रज़ि.) को ये दर्जा कामिल तौर पर हासिल था। कई बातों में उन ही की राय के मुताबिक़ वद्व नाज़िल हुई। इसलिये आपको मुहदष कहा गया।

3470. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا

मुहम्मद बिन अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अबू सिद्दीक़ नाजी बक्र बिन क्रैस ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बनी इस्राईल में एक शख्स था (नामनामा 'लूम) जिसने निज़ावेनाहक़ खून किये थे फिर वो (नादिम होकर) मसला पूछने निकला। वो एक दुर्वेश के पास आया और उससे पूछा, क्या उस गुनाह से तौबा कुबूल होने की कोई मूरत है? दुर्वेश ने जवाब दिया कि नहीं। ये सुनकर उसने उस दुर्वेश को भी क़त्ल कर दिया (और सौ खून पूरे कर दिये) फिर वो (दूसरों से) पूछने लगा। आखिर उसको एक दुर्वेश ने बताया कि फ़लाँ बस्ती में चला जा (वो आधे रास्ते भी नहीं पहुँचा था कि) उसकी मौत बाक़ेअ हो गई। मरते मरते उसने अपना सीना उस बस्ती की तरफ़ झुका दिया। आखिर रहमत के फ़रिश्तों और अज़ाब के फ़रिश्तों में बाहम झगड़ा हो गया। (कि कौन इसे ले जाएगा) लेकिन अल्लाह तआला ने उस नसरह नामी बस्ती को (जहाँ वो तौबा के लिये जा रहा था) हुक्म दिया कि उसकी नअश से करीब हो जाए और दूसरी बस्ती को (जहाँ से वो निकला था) हुक्म दिया कि उसकी नअश से दूर हो जा। फिर अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से फ़र्माया कि अब दोनों का फ़ासला देखो और (जब नापा तो) उस बस्ती को (जहाँ वो तौबा के लिये जा रहा था) एक बालिशत नअश से नज़दीक पाया इसलिये वो बख़श दिया गया।

जिस बस्ती की तरफ़ वो जा रहा था उसका नाम नसरह बताया गया है। वहाँ एक बड़ा दुर्वेश रहता था मगर वो क़ातिल उस बस्ती में पहुँचने से पहले रास्ते ही में इतिक़ाल कर गया। महीह मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि रहमत के फ़रिश्तों ने कहा ये शख्स तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजूअ होकर निकला था। अज़ाब के फ़रिश्तों ने कहा, उसने कोई नेकी नहीं की। इस हदीष से उन लोगों ने दलील ली है जो क़ातिल मोमिन की तौबा की कुबूलियत के काइल हैं। जुम्हूर का यही कौल है। क़ाल अयाज़ व फीहि अन्नतौबत तन्फ़ुड मिनल्लक़त्लि कमा तन्फ़ुड मिन साइरिज़्जुनूबि (फ़तहुलबारी) या 'नी क़त्ले नाहक़ से तौबा करना ऐसा ही नफ़ाबख़श है जैसा कि और दूसरे गुनाहों से।

3471. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ पढ़ी फिर लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया एक शख्स (बनी इस्राईल का) अपनी गाय हाँके

مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَادَةَ عَنْ أَبِي الصَّدِّيقِ النَّاجِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : «كَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ قَتَلَ سِتْعَةً وَبَسِغِينَ إِنْسَانًا، ثُمَّ خَرَجَ يَسْأَلُ، فَأَتَى رَجُلًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ لَهُ : هَلْ مِنْ تَوْبَةٍ؟ قَالَ : لَا، فَقَتَلَهُ : فَجَعَلَ يَسْأَلُ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ أَنْتَ قَرِيبٌ كَذًا وَكَذًا؟ فَأَذْرَكَ الْمَوْتَ فَمَا بَصَدْرِهِ نَحْوَهَا، فَانْتَصَمَتْ فِيهِ مَلَائِكَةُ الرَّحْمَةِ وَمَلَائِكَةُ الْغَذَابِ، فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَى هَلِوِ أَنْ تَقْرُبِي، وَأَوْحَى إِلَى هَلِوِ أَنْ تَبْعِدِي، وَقَالَ : قِيسُوا مَا بَيْنَهُمَا، فَوُجِدَ إِلَى هَلِوِ أَقْرَبَ بِشِيرٍ، فَلَفِيَ لَهُ».

٣٤٧١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الصُّبْحِ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ

लिये जा रहा था कि वो उस पर सवार हो गया और फिर उसे मारा। उस गाय ने (बकुदरते इलाही) कहा कि हम जानवर सवारी के लिये नहीं पैदा किये गये, हमारी पैदाइश तो खेती के लिये हुई है। लोगों ने कहा सुब्हानल्लाह! गाय बात करती है। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उस बात पर ईमान लाता हूँ और अबूबक्र और उमर (रज़ि.) भी। हालाँकि ये दोनों वहाँ मौजूद नहीं थे। उसी तरह एक शख्स अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि एक भेड़िया आया और रेवड़ में से एक बकरी उठाकर ले जाने लगा। रेवड़ वाला दौड़ा और उसने बकरी को भेड़िये से छुड़ा लिया। उस पर भेड़िया (बकुदरते इलाही) बोला, आज तो तुमने मुझसे उसे छुड़ा लिया लेकिन दरिन्दे वाले दिन मैं (कुर्बे क़यामत) उसे कौन बचाएगा जिस दिन मेरे सिवा और कोई उसका चरवाहा न होगा? लोगों ने कहा, सुब्हानल्लाह! भेड़िया बातें करता है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तो उस बात पर ईमान लाया और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) भी। हालाँकि वो दोनों उस वक़्त वहाँ मौजूद न थे। इमाम बुखारी (रह) ने कहा और हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा, हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उन्होंने मिस्र से, उन्होंने सअद बिन अब्राहीम से, उन्होंने अबू सलमा से रिवायत किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यही हदीस बयान की।

(राजेअ : 2324)

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) को हज़रते शैखेन (रज़ि.) की कुव्वते इमानी पर यकीन था। इसीलिये आपने उनको उस पर ईमान लाने में शरीक फ़र्माया। बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर है। उसने गाय को और भेड़िये को कलाम करने की ताक़त दे दी। इसमें दलील है कि जानवरों का इस्तेमाल उन ही कामों के लिये होना चाहिये जिनमें बतौर आदत वो इस्तेमाल किये जाते रहते हैं। (फ़तहूल बारी)

3472. हमसे इस्हाक़ बिन नज़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुर्रज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक शख्स ने दूसरे शख्स से मकान ख़रीदा और मकान के ख़रीददार को उस मकान में एक घड़ा मिला जिसमें सोना था। जिससे वो मकान उसने ख़रीदा था उससे उसने कहा भाई घड़ा ले जा क्योंकि मैंने तुमसे घर ख़रीदा है सोना नहीं ख़रीदा था लेकिन पहले मालिक ने कहा कि मैंने घर को उन तमाम चीज़ों समेत तुम्हें बेच दिया था जो उसके अंदर मौजूद हों।

فَقَالَ : ((بَيْنَا رَجُلٌ يَسُوقُ بَقْرَةً إِذْ رَكِبَهَا فَمَضَرَبَهَا، فَقَالَتْ: إِنَّا لَمْ نَخْلُقْ لِهَذَا، إِنَّمَا خَلَقْنَا لِلْحَرْثِ، فَقَالَ النَّاسُ: مَسْخَانٌ اللَّهُ، بَقْرَةٌ تَكَلِّمُ؟ فَقَالَ: فَإِنِّي أَوْمِنُ بِهَذَا أَنَا وَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ. وَمَا هُمَا ثُمَّ. وَبَيْنَمَا رَجُلٌ فِي غَنَمِهِ إِذْ عَدَا الذَّنْبُ فَذَهَبَ مِنْهَا بِشَاةٍ، فَطَلَبَ حَتَّى كَانَهُ اسْتَقْدَمًا مِنْهُ، فَقَالَ لَهُ الذَّنْبُ: هَذَا اسْتَقْدَمَتْهَا مِنِّي، فَمَنْ لَهَا يَوْمَ السَّيِّعِ، يَوْمَ لَا رَاعِيَ لَهَا غَيْرِي؟ فَقَالَ النَّاسُ: مَسْخَانٌ اللَّهُ، ذَنْبٌ يَتَكَلَّمُ؟ قَالَ: فَإِنِّي أَوْمِنُ بِهَذَا أَنَا وَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ. وَمَا هُمَا ثُمَّ)). وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَسْقَرٍ عَنْ مَعْدٍ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِثْلِهِ.

[راجع: ٢٣٢٤]

٣٤٧٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ أَخْبَرَنَا عَنْ الرِّزَاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((اشْتَرَى رَجُلٌ مِنْ رَجُلٍ غَقَارًا لَهُ، فَوَجَدَ الرَّجُلُ الَّذِي اشْتَرَى الْمَقَارَ فِي غَقَارِهِ جَرَّةً فِيهَا ذَهَبٌ، فَقَالَ لَهُ الَّذِي اشْتَرَى الْمَقَارَ: خُذْ ذَهَبَكَ مِنِّي، إِنَّمَا

ये दोनों एक तीसरे शख्स के पास अपना मुकद्दमा ले गये। फ़ैसला करने वाले ने उनसे पूछा क्या तुम्हारे कोई औलाद है? उस पर एक ने कहा कि मेरे एक लड़का है और दूसरे ने कहा कि मेरी एक लड़की है। फ़ैसला करने वाले ने उनसे कहा कि लड़के का लड़की से निकाह कर दो और सोना उन्हीं पर खर्च कर दो और ख़ैरात भी कर दो।

(राजेअ : 2365)

اِخْتَرْتُمْ مِنْكَ الْأَرْضَ. وَلَمْ أَنْبَغْ مِنْكَ
الذَّكَبَ. وَقَالَ الَّذِي لَهُ الْأَرْضُ: إِنَّمَا
بِعْتُكَ الْأَرْضَ وَمَا فِيهَا، فَتَحَاكَمَا إِلَى
رَجُلٍ. فَقَالَ الَّذِي تَحَاكَمَا إِلَيْهِ: أَلَكُمَا
وَلَدٌ؟ قَالَ أَحَدُهُمَا: لِي غُلَامٌ، وَقَالَ
الْآخَرُ: لِي جَارِيَةٌ، قَالَ: أَنْكِحُوا الْغُلَامَ
الْجَارِيَةَ، وَأَنْفِقُوا عَلَى أَنْفُسِهِمَا مِنْهُ،
وَتَصَدَّقَا. (راجع: ٢٣٦٥)

क़स्तलानी (रह) ने कहा कि शाफ़िइया का मज़हब ये है कि अगर कोई ज़मीन बेचे फिर उसमें से ख़जाना निकले तो वो बायेअ ही का होगा जैसे घर बेचे उसमें कुछ अस्बाब हो तो वो बायेअ ही को मिलेगा मगर मुश्तरी शर्त कर ले तो दूसरी बात है।

3473. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने ने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुकदिर और इमर बिन अब्दुल्लाह के मौला अबुन नज़्ज़ ने, उनसे आमिर बिन सअद बिन अबी वक्रास ने बयान किया और उन्होंने (आमिर ने) अपने वालिद (सअद बिन अबी वक्रास रजि) को उसामा बिन ज़ैद (रजि.) से ये पूछते सुना था कि त़ाऊन के बारे में आपने आँहज़रत (ﷺ) से क्या सुना है? उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, त़ाऊन एक अज़ाब है जो पहले बनी इस्राईल के एक गिरोह पर भेजा गया था या आपने ये फ़र्माया कि एक गुज़िशता उम्मत पर भेजा गया था। इसलिये जब किसी जगह के बारे में तुम सुनो (कि वहाँ त़ाऊन फैला हुआ है) तो वहाँ न जाओ लेकिन अगर किसी ऐसी जगह ये वबा फैल जाए जहाँ तुम पहले से मौजूद हो तो वहाँ से मत निकलो। अबुन नज़्ज़ ने कहा या'नी भागने के सिवा और कोई ग़र्ज़ न हो तो मत निकलो।

(दीगर मक़ाम : 5728, 6974)

٣٤٧٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ
قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ
السُّنْكَدَرِ. وَعَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ
عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِي
وَقَّاصٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَسْأَلُ أَسَامَةَ بْنَ
زَيْدٍ: مَاذَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي
الطَّاعُونَ؟ فَقَالَ أَسَامَةُ؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ
ﷺ: ((الطَّاعُونَ رِجْسٌ أُرْسِلَ عَلَى طَائِفَةٍ
مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ - أَوْ عَلَى مَنْ كَانَ
قَبْلَكُمْ - فَإِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بَارِضٍ فَلَا
تَقْدَمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَعَ بَارِضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا
فَلَا تَخْرُجُوا لِإِرَاؤِهِ)) قَالَ أَبُو النَّضْرِ:
((لَا يَخْرُجُكُمْ إِلَّا لِإِرَاؤِهِ)).

[طرفاء في : ٥٧٢٨، ٦٩٧٤]

तशरीह : मा'लूम हुआ कि तिजारात, सौदागरी, जिहाद या दूसरी ग़र्ज़ों के लिये त़ाऊनज़दा मक़ामात (प्लेग ग्रस्त जगहों) से निकलना जाइज़ है। हज़रत अबू मूसा अशअरी (रजि.) से मन्कूल है कि वो त़ाऊन के ज़माने में अपने बेटों को देहात में ख़ाना कर देते। हज़रत अमर बिन आस (रजि.) ने कहा जब त़ाऊन आए तो पहाड़ों की खाइयों, जंगलों, पहाड़ों की चोटियों में फैल जाओ, शायद उन सहाबा को ये हदीस न पहुँची होगी। हज़रत इमर (रजि.) शाम को जा रहे थे मा'लूम हुआ

कि वहाँ त्राऊन है, वापस लौट आए। लोगों ने कहा आप अल्लाह की तकदीर से भागते हैं। हज़रत इमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हम अल्लाह की तकदीर से अल्लाह की तकदीर ही की तरफ भागते रहे हैं। त्राऊन में पहले शदीद बुखार होता है फिर बग़ल या गर्दन में गिल्टी निकलती है और आदमी मर जाता है। त्राऊन की मोत शहादत है।

3474. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे दाऊद बिन अबी फुरात ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन यज़मर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से त्राऊन के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि ये एक अज़ाब है, अल्लाह तआला जिस पर चाहता है भेजता है लेकिन अल्लाह तआला ने उसको मोमिनों के लिये रहमत बना दिया है। अगर किसी शख्स की बस्ती में त्राऊन फैल जाए और वो सन्न के साथ अल्लाह की रहमत से उम्मीद लगाए हुए वहीं ठहरा रहे कि होगा वही जो अल्लाह तआला ने किस्मत में लिखा है तो उसे शहीद के बराबर ज़वाब मिलेगा।

(दीगर मक़ाम : 5734, 6619)

3475. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि मख़ज़ूमिया ख़ातून (फ़ातिमा बिनते अस्वद) जिसने (ग़ज़व-ए-फ़तह के मौक़े पर) चोरी कर ली थी, उसके मामले ने कुरैश को फ़िक्र में डाल दिया। उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि उस मामले पर आँहज़रत (ﷺ) से बातचीत कौन करे? आख़िर ये तै पाया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) आपको बहुत अज़ीज़ हैं। उनके सिवा और कोई उसकी हिम्मत नहीं कर सकता! चुनौचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से इस बारे में कुछ कहा तो आपने फ़र्माया। ऐ उसामा! क्या तू अल्लाह की हुदूद में से एक हद के बारे में मुझसे सिफ़ारिश करता है? फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया (जिसमें) आपने फ़र्माया। पिछली बहुत सी उम्मतें इसलिये हलाक हो गई कि जब उनका कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते और अल्लाह की क़सम! अगर

۳۴۷۴- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفَرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرْنِدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرٍ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ : ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونَ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ عَذَابٌ يُعْطَاهُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، وَأَنَّ اللَّهَ جَعَلَ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، لَيْسَ مِنْ أَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُونَ فَيَمُوتُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا مُخْتَصِبًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا يَصِيبُهُ إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ إِلَّا كَانَ لَهُ بِفُلٍّ أُخِرَ شَهِيدًا)). [طرفاه 3 : ۵۷۳۴، ۶۶۱۹].

۳۴۷۵- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، أَنَّ قُرَيْشًا أَمَنَهُمْ شَانِ السَّامِرَةِ الْمَخْزُومِيَّةِ الَّتِي سَرَقَتْ، فَقَالُوا: وَمَنْ يُكَلِّمُ فِيهَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ؟ فَقَالُوا : وَمَنْ يَخْتَرِيهِ عَلَيْهِ إِلَّا أَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَهُ أَسَامَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ خُدُودِ اللَّهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَاتَّخَطَبَ، ثُمَّ قَالَ : ((إِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِينَ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الضَّعِيفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ. وَإِيمَ اللَّهِ! لَوْ أَنَّ لَطِيعَةَ ابْنِ

फातिमा बिनते मुहम्मद (ﷺ) भी चोरी करे तो मैं उसका भी हाथ

काट डालूँ। (राजेअ: 2638)

مُحَمَّدٌ سَرَقَتْ لَفَطْتُ يَدَهَا)).

[راجع: ٢٦٤٨]

इस हदीस की शरह किताबुल हूद में आएगी। चोर का हाथ काट डालना शरीअते मूसवी में भी था। जो कोई उस सज़ा को वहशियाना बताए वो खुद वहशी है और जो कोई मुसलमान होकर उस सज़ा को खिलाफ़े तहज़ीब कहे वो काफ़िर और इस्लाम के दायरे से खारिज है। (वहीदी) हज़रत उसामा रसूलुल्लाह (ﷺ) के बड़े ही चहेते बच्चे थे क्योंकि उनके वालिद हज़रत ज़ैद बिन हारिषा की परवरिश रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की थी। यहाँ तक कि कुछ लोग उनको रसूले करीम (ﷺ) का बेटा समझते और उसी तरह पुकारते मगर आयते करीमा उदरुहुम लिआबाइहिम (अल अहज़ाब: 5) ने उनको इस तरह पुकारने से मना कर दिया।

3476. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया, कहा कि मैंने नज़ाल बिन सबरह हिलाली से सुना और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने एक सहाबी (अमर बिन आस) को कुआन मजीद की एक आयत पढ़ते सुना। वही आयत नबी अकरम (ﷺ) से उसके खिलाफ़ किरात के साथ मैं सुन चुका था, इसलिये मैं उन्हें साथ लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे ये वाक़िया बयान किया लेकिन मैंने औहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर उसकी वजह से नाराज़ी के आघार देखे। आपने फ़र्माया तुम दोनों अच्छा पढ़ते हो। आपस में इख़ितलाफ़ न किया करो। तुमसे पहले लोग इसी किस्म के झगड़ों से तबाह हो गये। (राजेअ: 2410)

٣٤٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّزَالَ بْنَ سَبْرَةَ الْهَلَالِيَّ عَنْ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلًا قَرَأَ آيَةً وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ خِلَافَهَا، فَجِئْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكِرَاهِيَةَ وَقَالَ: كِلَاكُمَا مُخْسِنٌ، وَلَا تَخْتَلَفُوا، فَإِنْ مِنْ كَانَ قَبْلَكُمْ اخْتَلَفُوا فَهَلَكُوا)).

[راجع: ٢٤١٠]

तशरीह: या'नी कुआन मजीद में जो इख़ितलाफ़े किरात है, उसमें हर आदमी को इख़ितयार है जो किरात चाहे वो पढ़े। इस अमर में लड़ना झगड़ना मना है। ऐसे ही फुरूई और क़यासी मसाइल में लड़ना झगड़ना मना है और ख़ामख़वाह किसी को क़यासी मसाइल के लिये मजबूर करना कि वो सिर्फ़ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) या सिर्फ़ हज़रत इमाम शाफ़िई (रह) के इज्तिहाद पर चले ये नाहक़ का तह्वाकुम और जबर और जुल्म है।

3477. हमसे उमर बिन हफ़स ने बयान किया, कहा हमसे मेरे बाप हफ़स बिन गयास ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा मैं गोया नबी करीम (ﷺ) को इस वक़्त देख रहा हूँ। आप बनी इस्राईल के एक नबी का वाक़िया बयान कर रहे थे कि उनकी क़ौम ने उन्हें मारा और ख़ून आलूद कर दिया। लेकिन वो नबी ख़ून झाफ़ करते जाते और ये दुआ करते कि, ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम की मग़ि़रत फ़र्मा। ये लोग जानते नहीं हैं। (दीगर मक़ाम: 6929)

٣٤٧٧- حَدَّثَنَا عُمرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الْأَنْبِيَاءِ ضَرْبَةَ قَوْمِهِ فَأَذْمُوهُ، وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ ائْزِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ)). [طرقه ي: ٦٩٢٩].

तशरीह: कहते हैं किये हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का वाक़िया है मगर उस सूत में हज़रत इमाम बुखारी (रह) इस हदीस

को बनी इस्राईल के बाब में न लाते तो ज़ाहिर है कि ये बनी इस्राईल के किसी पैगम्बर का जिक्र है। मुसलमानों को चाहिये कि इस हदीष से नसीहत लें, खुसूसन आलिमों और मौलवियों को जो दीन की बातें बयान करने में डरते हैं। हालाँकि अल्लाह की राह में लोगों की तरफ से तकालीफ़ बर्दाश्त करना पैगम्बरों की मीरास है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व क़द ज़कर मुस्लिमुन बअद तख़रीजि हाज़लहदीषि हदीषु अन्नहू (ﷺ) क़ाल फ़ी क़िस्सति उहुद कैफ़ युम्लिहु कौमुन दमू वजह नबिथिहिम फ़अन्ज़लल्लाहु लैसलक मिनल अमि शैआ व मिन प्रम्म क़ालल्कुर्तुबी अन्नन्नबिथ्य (ﷺ) अल्हाक़ी वल्मुहकी कमा सयाती व अम्मन्नववी फ़क़ाल हाज़न्नबिथ्यु (ﷺ) अल्लज़ी जरा लहु मा हकाहुन्नबिथ्यु (ﷺ) मिनल्मुतक़द्दीमीन व क़द जरा लिनबिथ्यिना नहव ज़ालिक यौम उहुद (फ़तुल्बारी) या 'नी इमाम मुस्लिम (रह) ने इस हदीष की तख़रीज के बाद लिखा है कि उहुद के वाकिये पर जबकि आपका चेहर-ए-मुबारक खून आलूद हो गया था, आपने फ़र्माया था कि वो कौम कैसे फ़लाह पाएंगे जिसने अपने नबी का चेहरा खून आलूद कर दिया। अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि ऐ नबी! आपको इस बारे में मुख़्तार नहीं बनाया गया या 'नी करीब है कि यही लोग हिदायत पा जाएँ (जैसा कि बाद में हुआ) उस जगह कुर्तुबी (रह.) ने कहा कि इस वाकिये के हाकी और महकी खुद औहज़रत (ﷺ) ही हैं। गोया आप अपने ही बारे में ये हिकायत नक़ल कर रहे हैं। इमाम नववी (रह) ने कहा कि आपने ये किसी गुज़िशता नबी ही की हिकायत नक़ल की है और हमारे नबी मुहतरम (ﷺ) के साथ भी जंगे उहुद में यही माजरा गुज़रा। बहरहाल इस हदीष से बहुत से इमान अफ़रोज़ नतीजे निकलते हैं। मदर्नि राहे खुदा का यही तरीक़ा है कि वो जानी दुश्मनों को भी दुआ-ए-ख़ैर ही से याद फ़र्माया करते हैं। सच है, व मा युलक्काहा इल्लल्लज़ीन सबरु व मा युलक्काहा इल्लल्ला हज़्ज़िन अजीम (हामीम सप्दा : 35)

3478. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे इब्बा बिन अब्दुल ग़ाफ़िर ने, उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने कि गुज़िशता उम्मतों में एक आदमी को अल्लाह तआला ने ख़ूब दौलत दी थी। जब उसकी मौत का वक़्त आया तो उसने अपने बेटों से पूछा, मैं तुम्हारे हक़ में कैसा बाप प्राबित हुआ? बेटों ने कहा कि आप हमारे बेहतरीन बाप थे। उस शख़्स ने कहा लेकिन मैंने उम्र भर कोई नेक काम नहीं किया। इसलिये जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना, फिर मेरी हड्डियों को पीस डालना और (राख को) किसी सड़त औंधी के दिन हवा में उड़ा देना। बेटों ने ऐसा ही किया। लेकिन अल्लाह पाक ने उसे जमा किया और पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया? उस शख़्स ने अज़र्ज किया कि परवरदिगार तेरे ही डर से। चुनौचे अल्लाह तआला ने उसे अपने साथे रहमत में जगह दी। इस हदीष को मुआज़ अम्बरी ने बयान किया कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उन्होंने इब्बा बिन अब्दुल ग़ाफ़िर से सुना, उन्होंने अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (दीगर मक़ाम : 6481, 7508)

٣٤٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ عَبْدِ الْغَافِرِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَأَى رَجُلًا كَانَ قَبْلَكُمْ رَغْسَةً اللَّهُ مَالًا، فَقَالَ لِبَنِيهِ لَمَّا خَضِرَ: أَيُّ أَبِي كُنْتُ لَكُمْ؟ فَنَالُوا: خَيْرَ أَبِي. قَالَ: فَإِنِّي لَمْ أَغْمَلْ خَيْرًا قَطُّ، فَإِذَا مِتُّ فَأَخْرِقُونِي، ثُمَّ اسْحَقُونِي ثُمَّ ذَرُونِي فِي يَوْمٍ غَاصِفٍ. فَفَعَلُوا. فَخَمَقَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فَقَالَ: مَا خَمَلْتُ؟ قَالَ: مَخَافَتُكَ. فَتَلَقَّاهُ بِرَحْمَتِهِ)). وَقَالَ قَتَادَةُ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عَقْبَةَ بْنَ عَبْدِ الْغَافِرِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((

[طرمه ن : ٦٤٨١، ٧٥٠٨.]

3479. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने,

٣٤٧٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ

उनसे अब्दुल मलिक बिन अमर ने, उनसे रिब्ई बिन हिराश ने बयान किया कि इब्ना बिन अमर अबू मसऊद अंसारी ने हुजैफह (रज़ि.) से कहा कि आपने नबी करीम (ﷺ) से जो हदीसे सुनी हैं वो आप हमसे क्यों बयान नहीं करते? हुजैफा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आहज़रत (ﷺ) को ये कहते सुना था कि एक शख्स की मौत का वक़्त जब करीब हुआ और वो ज़िन्दगी से बिल्कुल नाउम्मीद हो गया तो अपने घरवालों को वसियत की कि जब मेरी मौत हो जाए तो पहले मेरे लिये बहुत सी लकड़ियाँ जमा करना और उससे आग जलाना। जब आग मेरे जिस्म को राख बना चुके और सिर्फ हड्डियाँ बाक़ी रह जाएँ तो हड्डियों को पीस लेना और किसी सख्त गर्मी के दिन में या (यूँ फ़र्माया कि) सख्त हवा के दिन में मुझको हवा में उड़ा देना लेकिन अल्लाह तआला ने उसे जमा किया और पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया था? उसने कहा कि तेरे ही डर से। आखिर अल्लाह तआला ने उसको बख़्श दिया।

इब्ना (रज़ि.) ने कहा कि मैंने भी आहज़रत (ﷺ) को फ़र्माते हुए ये हदीस सुनी है। हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक ने बयान किया और कहा कि इस सिवायत में फ़ी यौमि राह है (सिवा शक के) उसके मा'नी भी किसी तेज़ हवा के दिन के हैं। (राजेअ : 3452)

तशरीह : कुछ रिवायतों में उसको कफ़न चोर बतलाया गया। बहरहाल उसने अपने ख्याले बातिल में उखरी अज़ाबों से बचने का ये रास्ता सोचा था मगर अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। उसने उस राख के ज़र्रे ज़र्रे को जमा करके उसको हिसाब के लिये खड़ा कर दिया। ऐसे तवाह्मुमाते बातिला सरासर फ़ितरते इंसानी के खिलाफ़ हैं।

3480. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अलैहित तहिय्यतु व तस्लीम ने फ़र्माया, एक शख्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था, और अपने नौकरों को उसने ये कहकर रखा था कि जब तुम किसी मुफ़्लिस को पाओ (जो मेरा क़र्ज़दार हो) तो उसे मुआफ़ कर दिया करो। मुफ़किन है अल्लाह तआला भी हमें

عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عَمْرِو بْنِ رَبِيعٍ بْنِ حِرَاشٍ قَالَ: قَالَ عُثْبَةُ لِحَذَفَةَ: أَلَا نَحْذِثُكَ مَا سَمِعْتَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((إِنْ رَجُلًا خَضَرَةُ الْمَوْتِ لَمَّا آتَى مِنَ الْحَيَاةِ أَوْصَى أَهْلَهُ: إِذَا مِتُّ فَاجْتَمِعُوا لِي خَطْبًا كَثِيرًا، ثُمَّ أَوْزُوا نَارًا، حَتَّى إِذَا أَكَلَتْ لَحْمِي وَخَلَصَتْ إِلَى عَظْمِي فَخَذُّوهُمَا فَاطْحَنُوهُمَا فَتَرَوْهُ فِي النَّارِ يَوْمَ حَارٍّ - أَوْ رَاحٍ - فَجَمَعَهُ اللَّهُ فَقَالَ: لِمَ فَعَلْتَ؟ قَالَ: مِنْ خَشْيَتِكَ. فَعَفَّرَ لَهُ)).

قَالَ عُثْبَةُ: وَأَنَا سَمِعْتُهُ يَقُولُ. حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ وَقَالَ: ((فِي يَوْمٍ رَاحٍ)).

[راجع: ٣٤٥٢]

٣٤٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُثْبَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عُثْبَةَ عَنْ أَبِي مُرَبْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((كَانَ الرَّجُلُ يُدَايِنُ النَّاسَ، لَكَانَ يَقُولُ لِقَاءَهُ: إِذَا آتَيْتَ مُعْبِرًا

मुआफ़ कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वो अल्लाह तआला से मिला तो अल्लाह ने उसे बख़्श दिया। (राजेअ : 2078)

3481. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक शख्स बहुत गुनाह किया करता था, जब उसकी मौत का वक़्त करीब आया तो अपने बेटों से उसने कहा कि जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला डालना फिर मेरी हड्डियों को पीसकर हवा में उड़ा देना। अल्लाह की क्रसम! अगर मेरे रब ने मुझे पकड़ लिया तो मुझे इतना सख़्त अज़ाब देगा जो पहले किसी को भी उसने नहीं दिया होगा। जब वो मर गया तो (उसकी वसियत के मुताबिक़) उसके साथ ऐसा ही किया गया। अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म फ़र्माया कि अगर एक ज़र्रा भी कहीं उसके जिस्म का तरे पास है तो उसे जमा करके ला। ज़मीन हुक्म बजा लाई और वो बन्दा अब (अपने रब के सामने) खड़ा हुआ था। अल्लाह तआला ने पूछा, तूने ऐसा क्या किया? उसने अर्ज़ किया कि ऐ रब! तरे डर की वजह से। आख़िर अल्लाह तआला ने उसकी मफ़िरत कर दी। अबू हुरैरह (रज़ि.) के सिवा दूसरे सहाबा ने इस हदीस में लफ़ज़ ख़श्यतक के बदल मुखाफ़तुक कहा है (दोनों लफ़ज़ों का मतलब एक ही है)।

(दीगर मक़ाम : 5706)

हाफ़िज़ साहब (रह) फ़र्माते हैं कि अल्फ़ाज़ लइन क़दरल्लाहु अलव्य उस शख्स ने ख़ौफ़ व दहशत के ग़लबे की वजह से ये अल्फ़ाज़ जुबान से निकाले जब कि वो हालते ग़लत और निस्थान में था इसीलिये ये अल्फ़ाज़ उसके लिये काबिले मुवाख़ज़ा नहीं हुए।

3482. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि (बनी इस्राईल की) एक औरत को एक बिल्ली की वजह से अज़ाब दिया गया था जिसे उसने कैद कर रखा था जिससे वो बिल्ली मर गई थी और उसकी सज़ा में वो औरत दोज़ख़ में गई। जब वो औरत बिल्ली को बाँधे हुए थी तो उसने उसे खाने के लिये कोई चीज़ न दी, न पीने के लिये और न उसने बिल्ली

فَعَجَّازَ عَنْهُ، لَعَلَّ اللَّهَ أَنْ يَفْعَّازَ عَنْهُ.
قَالَ: فَلِلَّهِ اللَّهُ فَعَجَّازَ عَنْهُ.))

[راجع: 2078]

3481- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ يُسْرِفُ عَلَى نَفْسِهِ، فَلَمَّا خَضَرَهُ الْمَوْتُ قَالَ لِبَنِيهِ: إِذَا أَنَا مِتُّ فَأَخْرِقُونِي، ثُمَّ اطْحَنُونِي، ثُمَّ ذَرُونِي فِي الرِّيحِ، فَوَ اللَّهِ لَئِنْ قَدَّرَ اللَّهُ عَلَيَّ لَيُعَذِّبَنِي عَذَابًا مَا عَذَّبَهُ أَحَدًا. فَلَمَّا مَاتَ فُعِلَ بِهِ ذَلِكَ، فَأَمَرَ اللَّهُ تَعَالَى الْأَرْضَ فَقَالَتْ: اجْنَمِي مَا فِيكَ مِنْهُ، فَفَعَلَتْ، فَإِذَا هُوَ قَائِمٌ، قَالَ: مَا حَمَلْتُكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ قَالَ: مَخَافَتِكَ يَا رَبِّ حَمَلْتَنِي. فَفَعَلَ لَهُ)) وَقَالَ غَيْرُهُ: ((خَشِيتُكَ يَا رَبِّ)).

[طرفه في: 5706].

3482- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((عَذِّبَتْ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ سَجَنَتَهَا حَتَّى مَاتَتْ فَدَخَلَتْ فِيهَا النَّارُ، لَا هِيَ أَطْعَمَتَهَا وَلَا سَقَتَهَا إِذْ

को छोड़ा ही कि वो ज़मीन के कीड़े-मकोड़े ही खा लेती।

حَسَنَتَهَا وَلَا هِيَ تَرَكَّتْهَا تَأْكُلُ مِنْ عَشَائِهِ
(الأرضي:)

कुछ देवबन्दी तराजिम में यहाँ घास-फूस का तर्जुमा किया गया है जो ग़ालिबन लफ़्ज़ हशाश हायहती का तर्जुमा है मगर मुशाहिदा ये है कि बिल्ली घास-फूस नहीं खाती। इसलिये यहाँ लफ़्ज़ हशाश भी सहीह नहीं, और ये तर्जुमा भी। वल्लाहु अलम बिस्सवाबा

3483. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे जुहैर ने, कहा हमसे मंसूर ने बयान किया, उनसे रिब्ई बिन हिराश ने, कहा हमसे अबू मसऊद बिन इक्बा बिन अमर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, लोगों ने अगले पैगम्बरों के कलाम जो पाए उनमें ये भी है कि जब तुझमें हया न हो तो फिर जो जी चाहे करा (दीगर मक़ाम: 3474, 6120)

٣٤٨٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ عَنْ
زُهَيْرٍ حَدَّثَنَا مَنصُورٌ عَنْ رَبِيعٍ بْنِ حِرَاشٍ
حَدَّثَنَا أَبُو مَسْعُودٍ غَفَةً قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ
ﷺ: ((إِنْ مِمَّا أَذْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلَامِ
النُّبُوَّةِ: إِذَا لَمْ تَسْتَخِيْ فَافْعَلْ مَا شِئْتَ)).
[طرمه في: ٣٤٨٤, ٦١٢٠]

3484. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने रिब्ई बिन हिराश से सुना, वो अबू मसऊद अंसारी (रज़ि.) से रिवायत करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगले पैगम्बरों के कलाम में से लोगों ने जो पाया ये भी है कि जब तुझमें हया न हो फिर जो जी चाहे कर। (राजेअ: 3473)

٣٤٨٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ
مَنصُورٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَبِيعَ بْنَ حِرَاشٍ
يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ
ﷺ: ((إِنْ مِمَّا أَذْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلَامِ
النُّبُوَّةِ: إِذَا لَمْ تَسْتَخِيْ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ)).
[راجع: ٣٤٨٣]

तशरीह: फ़ारसी में इसका तर्जुमा यूँ है। बेहया बाश हर चे ख्वाही कुन। मतलब ये है कि जब हया शर्म ही न रही हो तो तमाम बुरे काम शौक़ से करता रह। आखिर एक दिन ज़रूर अज़ाब में गिरफ़्तार होगा। इस हदीष की सनद में मंसूर के सिमाअ की रिब्ई से सराहत है। दूसरे इफ़अल की जगह इस्नअ है। लिहाज़ा तक़ारार बे फ़ायदा नहीं है।

3485. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने ख़बर दी और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक शख्स तकबुर की वजह से अपना तहबन्द ज़मीन से घसीटता हुआ जा रहा था कि उसे ज़मीन में धँसा दिया और अब वो क़यामत तक यूँ ही ज़मीन में धँसता चला जाएगा। यूनुस के साथ इस हदीष को अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने भी जुहरी से रिवायत किया है।

(दीगर मक़ाम: 5790)

٣٤٨٥- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا
عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ
أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ
ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ يَجُرُّ إِزَارَهُ مِنَ
الْخِيَلَاءِ خُسِيفَ بِهِ، فَهُوَ يَتَجَلَجَلُ فِي
الْأَرْضِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). ثَابِتٌ عَنْ
الرَّحْمَنِ بْنِ خَالِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ.
[طرمه في: ٥٧٩٠]

इस रिवायत में क़ारून मुराद है जिसके घंसाए जाने का ज़िक्र कुर्आन मजीद में भी है।

3486. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन तारूस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हम (दुनिया में) तमाम उम्मतों के आखिर में आए। लेकिन (क़यामत के दिन) तमाम उम्मतों से आगे होंगे। सिर्फ़ इतना फ़र्क है कि उन्हें पहले किताब दी गई और हमें बाद में मिली और यही वो (जुम्हा का) दिन है जिस के बारे में लोगों ने इख़ितलाफ़ किया। यहूदियों ने तो उसे उसके दूसरे दिन (हफ़ता को) कर लिया और नज़ारा ने तीसरे दिन (इतवार को)।

(राजेअ: 238)

3487. पस हर मुसलमान को हफ़्ते में एक दिन (या'नी जुम्हा के दिन) तो अपने जिस्म और सर को धो लेना लाज़िम है।

(राजेअ: 897)

3488. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर बिन मुरह ने, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, आपने बयान किया कि मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) ने मदीना के अपने आख़िरी सफ़र में हमें ख़िताब किया और (ख़ुत्बा के दौरान) आपने बालों का एक गुच्छा निकाला और फ़र्माया, मैं समझता हूँ कि यहूदियों के सिवा और कोई इस तरह न करता होगा और नबी करीम (ﷺ) ने इस तरह बाल संवारने का नाम अज़्ज़ूर (फ़रेब व झूठ) रखा है। आपकी मुराद, विसाल फ़िश़अर से थी। या'नी बालों में जोड़ लगाने से थी (जैसे अक़र और मस्नूई बालों में जोड़ किया करती हैं) आदम के साथ इस हदीष को शुन्दर ने भी शुअबा से रिवायत किया है। (राजेअ: 3467)

۳۴۸۶- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَنَحْنُ الْآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، يَبْدَأُ كُلُّ أُمَّةٍ أَوَّلُ الْكِتَابِ مِنْ قَبْلِنَا وَأَوَّلُنَا مِنْ نَعْمِهِمْ. فَهَذَا الْيَوْمَ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ، فَدَنَا لِلْيَهُودِ، وَتَقَدَّمَ غَدًا لِلنَّصَارَى)). [راجع: ۲۳۸]

۳۴۸۷- ((عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمٌ يَغْسِلُ رَأْسَهُ وَجَسَدَهُ)).

[راجع: ۸۹۷]

۳۴۸۸- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا غَمْرُو بْنُ مُرَّةٍ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((قَدِمَ مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ الْمَدِينَةَ آخِرَ قَدَمَةٍ قَدِمَهَا فَخَطَبَنَا فَأَخْرَجَ كَبَةً مِنْ شَعَرٍ فَقَالَ: مَا كُنْتُ أَرَى أَنْ أَحَدًا يَفْعَلُ هَذَا غَيْرَ الْيَهُودِ، وَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمَاءَ الزُّوَرِ. يَغْنِي الْوَصَالَ فِي الشَّعْرِ)). تَابَعَهُ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ.

[راجع: ۳۴۶۸]

औरत का ऐसे मस्नूई बालों से जीनत (श्रंगार) करना मना है। इमाम बुखारी (रह) ने यहाँ पर किताबुल अंबिया को ख़त्म कर दिया जिसमें अह्लादीषे मर्फूआ और मुकररात और तअलीकात वगैरह मिलकर सबकी ता'दाद दो सौ नौ (209) अह्लादीषे हैं। अहले इल्म तफ़्सील के लिये फ़तहूल बारी का मुतालआ करें।

61. किताबुल मनाक़िब

किताब फ़ज़ीलतों के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हाफ़िज़ साहब (रह) फ़र्माते हैं अक़बर नुस्खों में बाबुल मनाक़िब है किताब का लफ़्ज़ नहीं है और यही सहीह मा'लूम होता है। ये अलग बाब नहीं बल्कि उसी किताबुल अंबिया में दाख़िल है जिसमें ख़ातिमुल अंबिया के हालात मज़कूर हैं, जैसे पिछले बाबों में पिछले पैग़म्बरों के हालात मज़कूर थे। फिर हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल अंबिया को ख़त्म करते हुए ज़नाब रसूले करीम (ﷺ) की ज़िन्दगी पर रोशनी डालने के लिये ये अब्बाब मुनअकिद फ़र्माए जिसमें इब्तिदा से इतिहा तक बहुत से कवाइफ़ का तज़क़िरा हुआ है। मज़लन पहले आपका नसब शरीफ़ ज़िक्र में आया और अन्साब के बारे में उमूर का ज़िक्र किया। फिर क़बाइल का ज़िक्र आया। फिर फ़ख़र बिल अन्साब पर रोशनी डाली, फिर आँहज़रत (ﷺ) के शमाइल व फ़ज़ाइल को बयान किया गया फिर फ़ज़ाइले सहाबा का ज़िक्र हुआ। फिर हिज़रत से पहले मक्की ज़िन्दगी के हालात, मुब्अर्रे इस्लाम सहाबा, हिज़रते हब्शा, मेअराज और वफूदुल अंसार, फिर मदीना के लिये हिज़रत के वाक़ियात मज़कूर हुए। फिर तर्तीब से मगाज़ी का ज़िक्र आया, फिर बफ़ाते नबवी का ज़िक्र हुआ। फ़हाज़ा आखिरू हाज़लल्बाबि व हुब मिन जुम्लति तराजिमिल्अम्बियाइ (ﷺ) (फ़तुहलबारी)

बाब 1 : अल्लाह तआला का सूरह हुजुरात में इर्शाद

ऐ लोगों! मैंने तुम सबको एक ही मर्द आदम और एक ही औरत हव्वा से पैदा किया है और तुमको मुखतलिफ़ क़ौमों और ख़ानदान बना दिया है ताकि तुम ब़तौरै रिश्तेदारी एक दूसरे को पहचान सको। बेशक तुम सबमें से अल्लाह के नज़दीक मुअज़्ज़ज वो है जो ज़्यादा परहेज़गार हो, और अल्लाह तआला का सूरह निसा में इर्शाद, और अल्लाह से डरो जिसका नाम लेकर तुम एक-दूसरे से मांगते हो और नाता तोड़ने से डरो। बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर निगराँ है, और जाहिलियत की तरह बाप-दादाओं पर फ़ख़र करना मना है, उसका बयान शुक्रब शअब की जमा है जिससे ऊपर का ख़ानदान मुराद है और क़बीला उससे उतरकर नीचे का या'नी उसकी शाख़ मुराद है।

١ - بَابُ وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ ﴾ [الحجرات: ١٣]. وَقَوْلِهِ: ﴿ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ، إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۚ ﴾ [النساء: ١].

وَمَا يَنْهَىٰ عَنْ دَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ. الشُّعُوبُ النَّسَبُ الْبَعِيدُ، وَالْقَبَائِلُ ذَوْنُ ذَلِكَ.

ये तबरानी ने निकाला मुजाहिद से मसलन अंसार एक शुअब है या कुरैश एक शुअब है या खबीआ या मुजर एक शुअब है। हर एक में कई एक कबीले हैं जैसे कुरैश मुजर का एक कबीला है। हिन्दुस्तानी इस्तिलाह में शुअब पाल के मा'नी में है और कबीला गोत (गौत्र) के मा'नी में है। यहाँ की अकसर नौ मुस्लिम कौमों में गोत और पाल की भारतीय कौमी तंज़ीम के कुछ कुछ आधार अब तक मौजूद हैं। शिमाली हिन्द (दक्षिण भारत) के इलाकों में गोत और पाल की इस्तिलाह बहुत नुमायाँ हैं।

3489. हमसे खालिद बिन यज़ीद अल्काहिली ने बयान किया, कहा हमसे अबूबक्र बिन अयाश ने बयान किया, उनसे अबू हुसैन (उम्रान बिन आसिम) ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने आयत वजअलना कुम शुअब व कबाइल के बारे में फ़र्माया कि शुअब बड़े कबीलों के मा'नी में है और कबाइल से किसी बड़े कबीले की शाखें मुराद हैं।

3490. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अबैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा पूछा गया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! सबसे ज़्यादा शरीफ़ कौन है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो सबसे परहेज़गार हो। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हमारा सवाल उसके बारे में नहीं है। उस पर आपने फ़र्माया कि फिर (नसब की रू से) अल्लाह के नबी यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) सबसे ज़्यादा शरीफ़ थे। (राजेअ : 3349)

3491. हमसे क्रैस बिन हफ़स ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे कुलैब बिन वाइल ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैनब बिनते अबी सलमा (रज़ि.) ने बयान किया जो नबी करीम (ﷺ) की ज़ेरे परवरिश रह चुकी थी। कुलैब ने बयान किया कि मैंने ज़ैनब से पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) का ता'ल्लुक कबील-ए-मुजर से था? उन्होंने कहा फिर किस कबीले से था? यक़ीनन आँहज़रत (ﷺ) मुजर की बनी नज़र बिन किनाना की औलाद में से थे। (दीगर मक़ाम : 3492)

और नज़र बिन किनाना एक शाख़ है मुजर की, क्योंकि किनाना ख़ुज़ैमा का बेटा था और ख़ुज़ैमा मुदरका का और मुदरका इल्य़ास का और इल्य़ास मुजर का बेटा था। इस तरह आँहज़रत (ﷺ) का नसब ता'ल्लुक ख़ानदाने मुजर से साबित हुआ। हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की बेटी हैं। ये मुल्के हब्शा में पैदा हुईं, बतौर खबीबा आँहज़रत (ﷺ) के ज़ेरे तर्बियत रहने का शर्फ़ हासिल किया। उनके शौहर का नाम अब्दुल्लाह बिन ज़म्आ है। अपने ज़माने की औरतों में सबसे

٣٤٨٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ الْكَاهِلِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ عَنْ أَبِي حَصَيْنٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: «وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا» قَالَ: الشُّعُوبُ الْقَبَائِلُ الْعِظَامُ. وَالْقَبَائِلُ الْبُطُونُ».

٣٤٩٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عُمَيْدٍ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: «(أَنْفَاهُمْ)». قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ: «(يُؤَسِّفُ نَبِيُّ اللَّهِ)».

[راجع : ٣٣٤٩]

٣٤٩١- حَدَّثَنَا قُسَيْبُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا كُلَيْبُ بْنُ وَايِلٍ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْنَةُ النَّبِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: قُلْتُ لَهَا: «أَرَأَيْتَ النَّبِيَّ ﷺ أَكَانَ مِنْ مُضَرَ؟» قَالَتْ: «فَمِمَّنْ كَانَ إِلَّا مِنْ مُضَرَ؟ مِنْ بَنِي النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ».

[طرفه ب : ٣٤٩٢]

ज्यादा फकीहा हैं। उनसे एक जमाअत ने हदीष की रिवायत की है।

3492. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अब्दुल वाहिद ने, कहा हमसे कुलैब ने बयान किया और उनसे खबीब-ए-नबी करीम (ﷺ) ने, मेरा खयाल है कि उनसे मुराद जैनब बिनते अबी सलमा (रज़ि.) हैं, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दुब्बा, हन्तुम, मुकथ्थिर और मुज़फ़फ़त के इस्ते'माल से मना फ़र्माया था और मैंने उनसे पूछा था कि आप मुझे बताइये कि आँहज़रत (ﷺ) का ता'ल्लुक किस कबीले से था? क्या वाकई आपका ता'ल्लुक मुज़र से था? उन्होंने कहा कि फिर और किससे हो सकता है यज़ीनन आपका ता'ल्लुक उसी कबीले से था। आप नज़र बिन किनाना की औलाद में से थे।

٣٤٩٢- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا الْوَاحِدُ حَدَّثَنَا كُلَيْبٌ حَدَّثَنَا رَبِيعُ النَّبِيِّ - وَأَطْنَهَا زَيْنَبٌ - قَالَتْ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ اللَّبَاءِ وَالْحَتَمِ وَالْمَقْتَرِ وَالْمَزْفَرِ. وَقُلْتُ لَهَا: أَخْبِرْنِي، النَّبِيُّ ﷺ مِمَّنْ كَانَ، مِنْ مَضَرَ كَانَ؟ قَالَتْ: لِمِمَّنْ كَانَ إِلَّا مِنْ مَضَرَ، كَانَ مِنْ وَلَدِ النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ.

तशरीह: दुब्बा कदू के तूम्बे, हन्तुम सब्ज लाखी बर्तन, नकीर लकड़ी का कुरैदा हुआ बर्तन और मुज़फ़फ़त रोगानी बर्तन, ये चारों शराब के बर्तन थे जिसमें अरब शराब बनाया और रखा करते थे। जब शराब की मुमानअत नाज़िल हुई तो उन बर्तनों के इस्ते'माल से भी उन लोगों को रोक दिया गया।

3493. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें अम्मारा ने, उन्हें अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम इंसानों को कान की तरह पाओगे (भलाई और बुराई में) जो लोग जाहिलियत के ज़माने में बेहतर और अच्छी सिफ़ात के मालिक थे वो इस्लाम लाने के बाद भी बेहतर और अच्छी सिफ़ात वाले हैं बशर्ते वो दीन का इल्म भी हासिल करें और हुकूमत और सरदारी के लायक़ उसको पाओगे जो हुकूमत और सरदारी को बहुत नापसन्द करता हो। (दीगर मक़ाम : 3496, 3588)

٣٤٩٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((تَجِدُونَ النَّاسَ مَعَادِينَ: خَيْرَهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خَيْرَهُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا فُهِمُوا، وَتَجِدُونَ يَرِ النَّاسَ فِي هَذَا الشَّانِ أَشَدَّهُمْ لَهُ كِرَاهِيَةً)).

[طرفاء في : ٣٤٩٦, ٣٥٨٨.]

3494. और आदमियों में सबसे बुरा उसको पाओगे जो दोरुखा (दोगला) हो। उन लोगों में एक मुँह लेकर आए, दूसरों में दूसरा मुँहा (दीगर मक़ाम : 6057, 7179)

٣٤٩٤- ((وَتَجِدُونَ شَرَّ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ: الَّذِي يَأْتِي هَؤُلَاءِ بِوَجْهِهِ، وَيَأْتِي هَؤُلَاءِ بِوَجْهِهِ)).

[طرفاء في : ٧١٧٩, ٦٠٥٨.]

3495. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुगीरह बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने,

٣٤٩٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ عَنْ أَبِي الزَّنَادِ عَنِ الْغَرَجِ عَنْ

उनसे अउरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस (ख़िलाफ़त के) मामले में लोग कुरैश के ताबेअ हैं। आम मुसलमान कुरैशी मुसलमानों के ताबेअ हैं जिस तरह उनके आम कुफ़्फ़ार, कुरैशी कुफ़्फ़ार के ताबेअ रहते चले आए हैं।

3496. और इंसानों की पिछाल कान की तरह है। जो लोग जाहिलियत के दौर में शरीफ़ थे वो इस्लाम लाने के बाद भी शरीफ़ हैं जबकि उन्होंने दीन की समझ भी हासिल की हो तुम देखोगे कि बेहतरीन और लायक़ वही साबित होंगे जो ख़िलाफ़त व इमारत के ओहदे को बहुत ज़्यादा नापसन्द करते रहे हों, यहाँ तक कि वो उसमें गिरफ़्तार हो जाएँ। (राज़ेअ : 3493)

मा'लूम हुआ इस्लाम में शराफ़त की बुनियाद दीनी उलूम और उनमें फ़ुक्काहत हासिल करना है जो मुसलमान आलिमे दीन और फ़कीह हों वही अल्लाह के नज़दीक़ शरीफ़ हैं। दोनी फ़ुक्काहत से किताब व सुन्नत की फ़ुक्काहत मुराद है। राय व क़यास की फ़ुक्काहत महज़ इब्लीसी तरीक़-ए-कार है। औलादे आदम के लिये किताब व सुन्नत के होते हुए इब्लीसी तरीक़-ए-कार की ज़रूरत नहीं।

3497. हमसे मुसइद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यहाा बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे ताऊस ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, इल्लल् मवहता फ़िल् कुर्बा के बारे में (ताऊस ने) बयान किया कि कुरैश की कोई शाख़ ऐसी नहीं थी जिसमें औहज़रत (ﷺ) की क़राबत न रही हो और उसी वजह से ये आयत नाज़िल हुई थी कि मेरा मुतालबा सिर्फ़ ये है कि तुम लोग मेरी और क़राबतदारी का लिहाज़ करो।

(दीगर मक़ाम : 4818)

इस हदीष की मुनासबत बाब के तर्जुमा से मुश्किल है। शायद चूँकि इस हदीष में रिश्तेदारी का बयान है और रिश्तेदारी का पहचानना नसब के पहचानने पर मौकूफ़ है। इसलिये इमाम बुखारी (रह) ने इस बाब में ये हदीष बयान की। (वहीदी)

3498. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने और उनसे अबू मस्ऊद (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि आपने फ़र्माया, इसी तरफ़ से फ़िल्ने उठेंगे या'नी मश्रिक़ से और बेवफ़ाई और सख़्त दिली उन लोगों में है जो कैटों और गायों की दुम के पास चलाते

أَبِي مُرَّةٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : « النَّاسُ تَبِعَ لِقُرَيْشٍ فِي هَذَا الشَّانِ مُسْلِمُهُمْ تَبِعَ لِمُسْلِمِهِمْ، وَكَافَرُهُمْ تَبِعَ لِكَافِرِهِمْ ».

٣٤٩٦- (وَالنَّاسُ مَعَادِنٌ: خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا فَهِمُوا، تَجِدُونَ مِنْ غَيْرِ النَّاسِ أَشَدَّ النَّاسِ كِرَاهِيَةً لِهَذَا الشَّانِ حَتَّى يَقَعُ فِيهِ).

[راجع: ٣٤٩٣]

٣٤٩٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا «إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرَيْشِ» قَالَ: فَقَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ: لَقَرْتِي مُحَمَّدٌ ﷺ، فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ نَظَنٌ مِنْ قُرَيْشٍ إِلَّا وَلَهُ فِيهِ قَرَابَةٌ، لَنَزَلَتْ عَلَيْهِ، إِلَّا أَنْ تَصُولُوا قَرَابَةً بَنِي وَتَنَكُّمُ». [طرحه في: ٤٨١٨].

٣٤٩٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ يَتْلُو بِه النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: «مِنْ هَذَا جَاءَتِ الْفِتْنُ نَحْوُ الْمَشْرِقِ، وَالْجَفَاءِ وَغِلْظُ الْقُلُوبِ فِي الْقَدَائِنِ

रहते हैं या'नी रबीआ और मुज़र के लोगों में।

(राजेअ: 3302)

أَهْلُ الْوَبَرِ عِنْدَ أَصُولِ أَذْنَابِ الْإِبِلِ
وَالْبَقَرِ فِي رِبْعَةٍ وَمُضَرٍّ.

[راجع: ٣٣٠٢]

तशरीह: रबीआ और मुज़र क़बीले के लोग बहुत मालदार और ज़राअत-पेशा (किसान) थे। ऐसे लोगों के दिल सख्त और बेरहम होते हैं। इस हदीष और उसके बाद वाली हदीष की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से ये है कि इस हदीष में रबीआ और मुज़र की बुराई बयान की तो दूसरे क़बीले वालों की तारीफ़ निकली और बाद वाली हदीष में यमन वालों और बक़रियों वालों की तारीफ़ है और ये बाब का तर्जुमा है (वहीदी)। फ़र्माने नबवी के मुताबिक़ आइन्दा ज़मानों में मशरिकी मुमालिक से इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ जो भी फ़ितने उठे वो तफ़्सील त़लब हैं जिन्होंने अपने दौर में इस्लाम को शदीद तरीन नुक़सानात पहुँचाए। स़दक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)।

3499. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि फ़ख़र और तक़ब्बुर उन चीखने और शोर मचाने वाले ऊँट वालों में है और बकरी चराने वालों में नरमदिली और मलाइमत होती है और ईमान तो यमन में है और हिक़मत (हदीष) भी यमनी है। अबू अब्दुल्लाह या'नी इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि यमन का नाम यमन इसलिये हुआ कि ये का'बा के दाएँ जानिब है और शाम को शाम इसलिये कहते हैं कि ये का'बा के बाएँ जानिब है, अल मशामति बाएँ जानिब को कहते हैं। बाएँ हाथ को अश्शूमा कहते हैं और बाएँ जानिब को अल अशाम कहते हैं। (राजेअ: 3301)

٣٤٩٩ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ
عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ
عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ:
«الْفَخْرُ وَالْخِيَلَاءُ فِي الْفُلْدَائِينَ أَهْلِ
الْوَبَرِ، وَالسُّكِينَةُ فِي أَهْلِ الْقَعَمِ، وَالْإِيمَانُ
يَمَانٌ وَالْحِكْمَةُ يَمَانِيَّةٌ». قَالَ : أَبُو عَبْدِ
اللَّهِ: سَمِعْتُ الْيَمَنَ لَأَنَّهَا عَنْ يَمِينِ
الْكَعْبَةِ، وَالشَّامَ عَنْ يَسَارِ الْكَعْبَةِ،
وَالْمَشَامَةُ الْمَيْسَرَةُ، وَالْيَدُ الْيُسْرَى :
الشُّؤْمَى، وَالْجَانِبُ الْإِيْسَرُ الْأَشَام.

[راجع: ٣٣٠١]

जैसे सूरह बलद में है, वल्लज़ीन कफ़रु बिआयातिना हुम अस्हाबुलमशअमति (अल बलद: 19) या'नी जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे बाएँ जानिब वाले हैं। जिनको बाएँ हाथ में नामा-ए-आमाल मिलेगा। दौरे आख़िर में यमन में उस्ताज़ुल असातिज़ा हज़रत अल्लामा इमाम शौकानी (रह.) पैदा हुए जिनके ज़रिये से फ़त्ने हदीष की वो ख़िदमात अल्लाह पाक ने अंजाम दिलाई जो रहती दुनिया तक यादगारे ज़माना रहेंगी। नैलुल औतार आपकी मशहूरतरीन किताब है जो शरहे हदीष में एक अज़ीम दर्जा रखती है। ग़फ़रल्लाह लहू।

बाब 2 : कुरैश की फ़ज़ीलत का बयान

٢ - بَابُ مَنَاقِبِ قُرَيْشٍ

तशरीह: कुरैश नज़र बिन किनाना की औलाद को कहते हैं और कल्बी से मन्कूल है कि मक्का के रहने वाले अपने आपकी कुरैश समझते और नज़र की औलाद को कुरैश न जानते। जब आँहज़रत (ﷺ) से पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि नज़र बिन किनाना की औलाद भी कुरैश में है, अक़प्पर उलमा का यही क़ौल है। कहते हैं कुरैश एक दरियाई जानवर का

नाम है जो दरिया के दूसरे सब जानवरों को खा लेता है। ये उन सबका सरदार है। इसी तरह कुरैश भी अरब के सब कबीलों के सरदार थे। इसलिये उनका नाम कुरैश हुआ। कुछ ने कहा कि जब कुसय ने खुजाआ के लोगों को हरम से बाहर किया तो बाक़ी लोग सब उनके पास जमा हुए इसलिये उनका नाम कुरैश हुआ जो तकरश से निकला है जिसके मा'नी जमा होने के हैं। कुरैश की वजह तस्मिया से मुता'ल्लिक कुछ और भी अक्वाल हैं जिनको अल्लामा इब्ने हज़र (रह) ने फ़तहूल बारी में बयान फ़र्माया है। मगर ज़्यादा मुस्तनद क़ौल वही है जो ऊपर मज़कूर हुआ। दौरे हाज़िर में हिन्दुस्तान में कुरैश बिरादरी ने अपनी अज़ीम तन्ज़ीम के तहत मुसलमानाने हिन्द में एक बेहतरीन मुक़ाम पैदा कर लिया है। जुनूबी हिन्द में ये लोग काफ़ी ता'दाद में आबाद हैं। शिमाली हिन्द में भी कम नहीं हैं। उनके डील-डोल हुलिया वगैरह से कुरैशे अरब की याद ताज़ा हो जाती है। जहाँ तक तारीख़ी हक़ाइक़ का ता'ल्लुक है कुरैश के कुछ लोग शुरू ज़मान-ए-इस्लाम में इस्लामी कुव्वतों के साथ हिन्दुस्तान आए और यहीं उन लोगों ने अपना वतन बना लिया और बेशतर ने यहाँ के हालात के तहत हलाल चौपायों का तिजारती धंधा इख़्तियार कर लिया। नीज़ ऐसे ही हलाल जानवरों का ज़बीहा करके उनके गोश्त को तिजारत को अपना लिया इस्लामी नुक्त्त-ए-नज़र से ये कोई मज़मूम पेशा न था बल्कि मुसलमानाने हिन्द की एक शदीद ज़रूरत थी जिसे अल्लाह ने उन लोगों के हाथों अंजाम दिलाया और अल्लहुमु लिज़िल्लाह आज तक ये लोग उसी ख़िदमत के साथ मुल्क में मिल्ली हैप्पियत से बेहतरीन इस्लामी ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं। अल्लाहुम्म जिद फ़जिद आमीन

2500. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुरैब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम बयान करते थे कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) तक ये बात पहुँची जब वो कुरैश की एक जमाअत में थे कि अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आज़ (रज़ि.) ये हदीष बयान करते हैं कि अन्करीब (कुर्बे क़ायामत में) बनी क़हतान से एक हुक्मरान उठेगा। ये सुनकर हज़रत मुआविया (रज़ि.) गुस्से हो गये। फिर आप खुत्बा देने उठे और अल्लाह तआला की उसकी शान के मुताबिक़ हम्दो प़ना के बाद फ़र्माया, लोगों! मुझे मा'लूम हुआ है कि कुछ लोग ऐसी अह्दाइष बयान करते हैं जो न तो कुर्आन मजीद में मौजूद हैं और न रसूलुल्लाह (ﷺ) से मन्कूल हैं। देखो! तुममें सबसे जाहिल यही लोग हैं। उनसे और उनके ख़यालात से बचते रहो जिन ख़यालात ने उनको गुमराह कर दिया है। मैंने नबी करीम (ﷺ) से ये सुना है कि ये ख़िलाफ़त कुरैश में रहेगी और जो भी उनके साथ दुश्मनी करेगा अल्लाह तआला उसको सर के बल औंधा कर देगा जब तक वो (कुरैश) दीन को कायम रखेंगे। (दीगर मक़ाम : 7139)

٣٥٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: كَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جَبْرِ بْنِ مُطْعِمٍ يُحَدِّثُ أَنَّهُ بَلَغَ مُعَاوِيَةَ - وَهُوَ عِنْدَهُ فِي وَقْدٍ مِنْ فَرْتِشٍ - أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ بْنَ الْغَاصِرِ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَيَكُونُ مَلِكٌ مِنْ لُحْطَانٍ، فَطُصِبَ مُعَاوِيَةُ، فَقَامَ فَأَتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: أَمَا بَعْدُ فَإِنَّهُ يُلْفِي أَنْ رِجَالًا مِنْكُمْ يَتَخَذُونَ أَحَادِيثَ لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللَّهِ، وَلَا تُؤْتَى عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَأُولَئِكَ جُهَاكُم، لِأَيَّاكُمْ وَالْأَمَانِ إِلَى تَصِلُ أَهْلُهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ هَذَا الْأَمْرَ فِي فَرْتِشٍ، لَا يُعَادِيهِمْ أَحَدٌ إِلَّا كَذَبَ اللَّهُ عَلَى وَجْهِهِ، مَا أَقَامُوا الدِّينَ)).

[طرفه ب: ٧١٣٩].

तशरीह : कुरैश जब दीन और शरीअत को छोड़ देंगे तो उनमें से ख़िलाफ़त भी जाती रहेगी। आपने जैसा फ़र्माया था वैसा ही हुआ। पाँच छः सौ बरस तक ख़िलाफ़त बनू उमय्या और बनू अब्बासिया में कायम रही जो कुरैशी थे। जब उन्होंने शरीअत पर चलना छोड़ दिया तो उनकी ख़िलाफ़त छिन गई और दूसरे लोग बादशाह बन गये। तबसे आज तक फिर कुरैश को ख़िलाफ़त और सरदारी नहीं मिली। अब्दुल्लाह बिन अमर ने जो हदीष रिवायत की है वो उसके ख़िलाफ़ नहीं है। इस हदीष का मतलब

ये है कि क़ायामत के करीब एक क़ह्तानी अरब का बादशाह होगा। अबू हुरैरह (रज़ि.) से भी ऐसा ही मरवी है। ज़ी मुख़िब हब्शी से भी मरफूअन मरवी है कि हुक्मत कुरैश से पहले हिमयर में थी और फिर उनमें चली जाणी। उसको अहमद और तबरानी ने निकाला है। क़ह्तान यमन में एक मशहूर क़बीला है हज़रत मुआविया (रज़ि.) को मुहम्मद बिन जुबैर वाली हदीष का इल्म न था, इसलिये उन्हे शुब्हा हुआ और उन सख़्त लफ़्ज़ों में उस पर नोटिस लिया मगर उनका ये नोटिस सहीह न था क्योंकि ये हदीष सहीह है और रसूलुल्लाह (ﷺ) से सनद सहीह के साथ प्राबित है जैसा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने भी उसको रिवायत किया है।

3501. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना और उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ये ख़िलाफ़त उस वक़्त तक कुरैश के हाथों में बाक़ी रहेगी जब तक कि उनमें दो आदमी भी बाक़ी रहें।

(दीगर मक़ाम : 7140)

तशरीह : इमाम नववी (रह) ने कहा है कि इस हदीष से साफ़ निकलता है कि ख़िलाफ़त कुरैश से ख़ास है और क़ायामत तक सिवा कुरैशी के ग़ैर कुरैशी से ख़िलाफ़त की बेअत करना दुरुस्त नहीं और सहाबा के ज़माने में इस पर इज्माअ हो चुका है और अगर किसी ज़माने में कुरैशी के सिवा और किसी क़ौम का शख़्स बादशाह बन बैठा है तो उसने कुरैशी ख़लीफ़ा से इजाज़त ली है और उसका नाइब बन कर रहा है। (वहीदी)

3502. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने मुसय्यिब ने और उनसे जुबैर बिन मुत्तइम ने बयान किया कि मैं और उम्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) दोनों मिलकर आँहज़रत (ﷺ) के पास गये और हमने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! बन्नु मुत्तलिब को तो आपने अत्ता किया और हमें (बनी उमय्या को) नज़र अंदाज़ कर दिया हालाँकि आपके लिये हम और वो एक ही दर्जे के हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, (ये सहीह है) मगर बनी हाशिम और बन्नु मुत्तलिब एक ही हैं।

(राजेअ : 3140)

3503. और लैष ने बयान किया कि मुझसे अबुल अस्वद मुहम्मद ने बयान किया और उनसे इव्वान बिन जुबैर ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) बनी जुह्रा के चन्द लोगों के साथ हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास गये। हज़रत आइशा (रज़ि.) बनी जुह्रा के साथ बहुत अच्छी तरह पेश आती थीं क्योंकि उन लोगों की रसूलुल्लाह (ﷺ) से क़राबत थी। (दीगर मक़ाम : 3505, 6073)

बन्नु उमय्या और बन्नु मुत्तलिब दोनों एक ही क़बीला की दो शाखें हैं। आँहज़रत (ﷺ) की वालिदा माजिदा आमना का ता'ल्लुक बनी जुह्रा से है। आपका नसब नामा ये है। आमना बन्ते वहब बिन अब्दे मुनाफ़ बिन जुह्रा बिन किलाब बिन मुरह।

۳۵۰۱- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا غَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَزَالُ هَذَا الْأَمْرُ فِي قُرَيْشٍ مَا بَقِيَ مِنْهُمْ أَتَانِ)). [طرفه ي : ۷۱۴۰]

۳۵۰۲- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: مَشَيْتُ أَنَا وَعُغْمَانُ بْنُ عَفَّانٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغَطَيْتَ بَنِي الْمُطَّلِبِ وَتَرَكْتَنَا، وَإِنَّمَا نَحْنُ وَهُمْ مِنْكَ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو الْمُطَّلِبِ شَيْءٌ وَاحِدٌ)).

[راجع : ۳۱۴۰]

۳۵۰۳- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ مُحَمَّدٌ عَنْ غُرْوَةَ بْنِ الرَّبِيعِ قَالَ: ذَهَبَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الرَّبِيعِ مَعَ أَنَسٍ مِنْ بَنِي زُهْرَةَ إِلَى غَابِسَةَ، وَكَانَ أَرْقَى شَيْءٍ عَلَيْهِمْ، لِقَرَابَتِهِمْ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. [طرفه ي : ۳۵۰۵، ۶۰۷۳]

3504. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफयान ने बयान किया और उनसे सअद बिन इब्राहीम ने (दूसरी सनद) यअकूब बिन इब्राहीम ने कहा कि हमारे वालिद ने हमसे बयान किया और उनसे उनके वालिद ने, कहा मुझसे अब्दुरहमान बिन हुर्मज़ अल अअरज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया कुरैश, अंसार, जुहैना, मुज़ैना, असलम, अश्जआ और ग़िफ़ार इन सब कबीलों के लोग मेरे ख़ैर-ख़वाह हैं और उनका भी अल्लाह और उसके रसूल के सिवा कोई हिमायती नहीं है। (दीगर मक़ाम: 3512)

दूसरी सनदे मज़क़ूरा से ये हदीस नहीं मिलती अल्बत्ता मुस्लिम ने उसको रिवायत किया है यअकूब से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने स़ालेह से, उन्होंने अअरज से।

3505. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैस बिन सअद ने, कहा कि मुझसे अबुल अस्वद ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) के बाद अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) से आइशा (रज़ि.) को सबसे ज़्यादा मुहब्बत थी। हज़रत आइशा (रज़ि.) की आदत थी कि अल्लाह तआला की तरफ़ से जो रिज़क़ भी उनको मिलता वो उसे स़दक़ा कर दिया करती थीं। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने (किसी से) कहा उम्मुल मोमिनीन को उससे रोकना चाहिये (जब हज़रत आइशा रज़ि. को उनकी बात पहुँची) तो उन्होंने कहा, क्या अब मेरे हाथों को रोका जाएगा। अब अगर मैंने अब्दुल्लाह से बात की तो मुझ पर नज़र वाजिब है। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने (हज़रत आइशा रज़ि. को राज़ी करने के लिये) कुरैश के चन्द लोगों और ख़ास तौर से रसूलुल्लाह (ﷺ) के नानिहाली रिश्तेदारों (बनू जुह्रा) को उनकी ख़िदमत में मुआफ़ी की सिफ़ारिश के लिये भेजा लेकिन हज़रत आइशा (रज़ि.) फिर भी न मानीं। उस पर बनू जुह्रा ने जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के मामूँ होते थे और उनमें अब्दुरहमान बिन अस्वद बिन अब्दे यगूष और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) भी थे, अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) से कहा कि जब हम उनकी इजाज़त से वहाँ जा बैठें तो तुम एक ही दफ़ा आकर पर्दा में घुस जाओ। चुनौचे उन्होंने ऐसा ही किया।

३५०४- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ ح. قَالَ يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ أَبِيهِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ هُرْمَزٍ الْأَعْرَجُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((قُرَيْشٌ وَالْأَنْصَارُ وَجُهَيْنَةُ وَمُزَيْنَةُ وَأَسْلَمٌ وَأَشْجَعٌ وَغِفَارٌ مُوَالِيٌّ، لَيْسَ لَهُمْ مُوَالِيٌّ دُونَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ)).

[طرفه ب: ३५१२]

३५०५- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: ((كَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ أَحَبَّ الْبَشَرِ إِلَى عَائِشَةَ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ، وَكَانَ أَبَرَّ النَّاسِ بِهَا، وَكَانَتْ لَا تُنْسِكُ شَيْئًا مِمَّا جَاءَهَا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ تَصَدَّقَتْ. فَقَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ: يَنْبَغِي أَنْ يُؤْخَذَ عَلَى يَدَيْهَا، فَقَالَتْ: أَيُؤْخَذُ عَلَى يَدَيَّ؟ عَلَيَّ نَذْرٌ إِنْ كَلِمَتُهُ. فَاسْتَشْفَعَ إِلَيْهَا بِرَجَالٍ مِنْ قُرَيْشٍ، وَبِأَحْوَالِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاصَّةً، فَامْتَنَعَتْ فَقَالَ لَهُ الزُّهْرِيُّونَ أَخْوَالُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- مِنْهُمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْأَسْوَدِ بْنُ عَبْدِ يَهُوثَ وَالْمِنْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ- إِذَا امْتَأَذْنَا

(जब हज़रत आइशा रज़ि. खुश हो गई तो) उन्होंने उनकी खिदमत में दस गुलाम (आज़ाद कराने के लिये बतौर कफ़र-ए-क़सम) भेजे और उम्मुल मोमिनीन ने उन्हें आज़ाद कर दिया। फिर आप बराबर गुलाम आज़ाद करती रहीं, यहाँ तक कि चालीस गुलाम आज़ाद कर दिये फिर उन्होंने कहा काश मैंने जिस वक़्त क़सम खाई थी (मन्नत मानी थी) तो मैं कोई ख़ास बयान कर देती जिसको करक मैं फ़ा़ि हो जाती। (राज़ेज़ : 3503)

[راجع : 3503]

या'नी स़ाफ़ यूँ नज़र मानती कि एक गुलाम आज़ाद करूँगी या इतने मिस्कीनों को खाना खिलाऊँगी तो दिल में तरदुद न रहता। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने मुब्हम मन्नत मानी और कोई तफ़्सील बयान नहीं की, इसलिये एहतिyातन चालीस गुलाम आज़ाद किये। उससे कुछ इलमा ने दलील ली है कि मन्हूल नज़र दुरुस्त है मगर वो उसमें एक क़सम का कफ़रा काफ़ी समझते हैं। ये अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.), हज़रत आइशा (रज़ि.) की बड़ी बहन हज़रत अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) के बेटे हैं लेकिन उनकी ता'लीम व तर्बियत बचपन ही त उनकी सगी ख़ाला हज़रत आइशा (रज़ि.) ने की थी।

बाब 3 : कुआन का कुरैश की जुबान में नाज़िल होना ۳- بَابُ نَزْلِ الْقُرْآنِ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ

या'नी कुरैश जो अरबी मादरी तौर पर जिस मुहावरे और जिस लव व लहजा के साथ बोलते हैं उसी तर्ज़ पर कुआन शरीफ़ नाज़िल हुआ। ये इसलिये भी कि खुद रसूलुल्लाह (ﷺ) अरबी कुरैशी हैं। लिहाज़ा ज़रूरी हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर खुद उनकी मादरी ज़बान में कलामे इलाही नाज़िल किया जाए ताकि पहले वो खुद उसे बखूबी समझें फिर सारी दुनिया को अहसन तरीक़ पर समझा सकें। ऐसा ही हुआ जैसा कि ह्याते नबवी को बतौर शहादत पेश किया जा सकता है।

3506. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि हज़रत इम्रान (रज़ि.) ने ज़ैद बिन षाबित, अब्दुल्लाह बिन जुबैर, सईद बिन आस और अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम (रज़ि.) को बुलाया (और उनको कुआन मजीद की किताबत पर मुक़रर फ़र्माया। चुनाँचे उन हज़रत ने) कुआन मजीद को कई मुइहफ़ों मेन क़ल फ़र्माया और हज़रत इम्रान (रज़ि.) ने (उन चारों में से) तीन कुरैशी सहाबा से फ़र्माया था कि जब आप लोगो का ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) से (जो मदीना मुनव्वरा के रहने वाले थे) कुआन के किसी मुक़ाम पर (उसके किसी मुहावरे में) इख़ितलाफ़ हो जाए तो उसको कुरैश के मुहावरे के मुताबिक़ लिखना क्योंकि कुआन शरीफ़ कुरैश के मुहावरे में नाज़िल हुआ है। उन्होंने ऐसा ही किया।

(दीगर मक़ाम : 4984, 4987)

3506- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَرِيرِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسٍ: ((أَنَّ عُثْمَانَ دَعَا زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ وَعَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْخَارِثِ بْنِ هِشَامٍ فَنَسَخَوْهَا فِي الْمَصَاحِفِ، وَقَالَ عُثْمَانُ لِلرُّهْطِ الْقُرَشِيِّينَ الثَّلَاثَةِ: إِذَا اخْتَلَفْتُمْ أَتَمُّ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ فِي شَيْءٍ مِنَ الْقُرْآنِ فَاتَّبِعُوهُ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ لِإِنَّمَا نَزَلَ بِلِسَانِهِمْ. فَفَعَلُوا ذَلِكَ)).

[طرفاه ي : 4984, 4987]

तशरीह:

हुआ ये कि कुआन हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की खिलाफत में तमाम सहाबा के इतिफाक से जमा हो चुका था, वही कुआन हजरत उमर (रज़ि.) की खिलाफत में उनके पास रहा जो हजरत उमर (रज़ि.) की वफात के बाद उम्मुल मोमिनीन हजरत हफ़सा (रज़ि.) के पास था। हजरत इम्वान ने वही कुआन हजरत हफ़सा (रज़ि.) से मंगवाकर उसकी नक़लें मज़कूर बाला लोगों से लिखवाई और एक एक नक़ल इराक़, मिस्र, शाम और ईरान वगैरह मुल्कों में ख़ाना कर दी। हजरत इम्वान (रज़ि.) को जो जामेअ कुआन (कुआन को जमअ करने वाले) कहते हैं वो उसी वजह से कि उन्होंने कुआन की नक़लें सफ़ा ख़र्ता से लिखवाकर मुल्कों में ख़ाना की, ये नहीं कि कुआन उनके वक़्त में जमा हुआ। कुआन औहजरत (ﷺ) के ज़माने में ही जमा हो चुका था जो कुछ मुतफ़रि़क रह गया था वो हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की खिलाफत में सब एक जगह जमा कर दिया। यहाँ बाब का मक़सद कुरैश की फ़ज़ीलत बयान करना है कि कुआन मजीद उनके मुहावरे के मुताबिक़ नाज़िल हुआ।

बाब 4 : यमन वालों का हजरत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद में होना

क़बीला ख़ुजाआ की शाख़ बनू असलम बिन अफ़्सा बिन हारिषा बिन अमर बिन अमिर अहले यमन में से हैं।

3507. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इबैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) क़बीला असलम के सहाबा की तरफ़ से गुज़रे जो बाज़ार में तीरंदाज़ी कर रहे थे तो आपने फ़र्माया ऐ औलादे इस्माईल! ख़ूब तीरंदाज़ी करो कि तुम्हारे बाबा हजरत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी तीरंदाज़ थे और आपने फ़र्माया मैं फ़लाँ जमाअत के साथ हूँ। ये सुनकर दूसरी जमाअत वालों ने हाथ रोक लिये तो आपने दरयाफ़्त किया कि क्या बात हुई? उन्होंने अज़्र किया कि जब आप दूसरे फ़रीक़ के साथ हो गये तो फिर हम कैसे तीरंदाज़ी करें? औहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम तीरंदाज़ी जारी रखो। मैं तुम सबके साथ हूँ।

(राजेअ : 2899)

ये तीरंदाज़ी करने वाले बाशिन्दगाने यमन से थे। रसूले करीम (ﷺ) ने नसब के लिहाज से उन्हें हजरत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ मन्सूब किया। इसी से बाब का मतलब प्राबित हुआ कि अहले यमन औलादे इस्माईल (अलैहिस्सलाम) हैं। इस हदीष की रू से आजकल बन्दूक की निशानेबाज़ी और दूसरे जदीद अस्लहा का इस्तेमाल सीखना मुसलमानों के लिये उसी बशारत में दाख़िल है। मगर ये फ़साद और ग़ारतगरी और बगावत के लिये न हो। इन्नाह ला युहिबुल्मुफ़्फ़िदीन

बाब : 5

3508. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन वाक्रिद ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या बिन यअमर ने बयान किया, उनसे अबुल अस्वद देली ने बयान किया

4- بَابُ نِسْبَةِ الْيَمَنِيِّ إِلَى إِسْمَاعِيلَ
مِنْهُمْ أَسْلَمَ بْنُ الصَّمَى بْنُ خَدْرَةَ بْنِ
عَمْرِو بْنِ غَامِرٍ مِنْ خُرَازْمَةٍ.

3507- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ
يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُ قَالَ. حَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى
قَوْمٍ مِنْ أَسْلَمَ يَتَنَاضِلُونَ بِالسُّوقِ فَقَالَ:
(ارْمُوا بَنِي إِسْمَاعِيلَ، فَإِنَّ أَبَاكُمْ كَانَ
رَايِمًا، وَأَنَا مَعَ بَنِي فَلَانٍ - لِأَخِي
الْفَرِيقَيْنِ - فَأَمْسَكُوا بِأَيْدِيهِمْ. فَقَالَ: مَا
لَهُمْ؟) قَالُوا: وَكَيْفَ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَ بَنِي
فَلَانٍ؟ قَالَ: ((ارْمُوا، وَأَنَا مَعَكُمْ كُلِّكُمْ)).

[راجع: 2899]

5- بَابُ

3508- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ
الْوَارِثِ عَنْ الْحُسَيْنِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ
بُرَيْدَةَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَعْمَرَ أَنَّ أَبَا

और उनसे अबू जर (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि जिस शख्स ने भी जान बूझकर अपने बाप के सिवा किसी और को अपना बाप बनाया तो उसने कुफ़्र किया और जिस शख्स ने भी अपना नसब किसी ऐसी क़ौम से मिलाया जिससे उसका कोई (नसबी) ता'ल्लुक नहीं है तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (दीगर मक़ाम: 6045)

الْأَسْوَدُ الدَّائِلِيُّ حَدَّثَنَا عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَنْسَ مِنْ رَجُلٍ ادَّعَى لِفَخْرٍ أَبِيهِ - وَهُوَ يَغْلُمُهُ - إِلَّا كَفَرًا، وَمَنْ ادَّعَى قَوْمًا لَنْسَ لَهُ فِيهِمْ نَسَبٌ فَلْيَتَّبِعُوا مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

[طرفه ٦: ١٠٤٥]

मुराद वह शख्स है जो ऐसा करना दुरुस्त समझे या ये बतौर तस्लीज़ के है। या कुफ़्र से नाशुक्री मुराद है। वल्लाहु आलाम।

3509. हमसे अली बिन अयाश ने बयान किया, कहा हमसे जरिर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल बाहिद बिन अब्दुल्लाह नसरी ने बयान किया, कहा कि मैंने बाबिला बिन अस्क़आ (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे बड़ा बोहतान और सख़्त झूठ ये है कि आदमी अपने बाप के सिवा किसी और को अपना बाप कहे या जो चीज़ उसने ख़्वाब में नहीं देखी, उसके देखने का दा'वा करे। या रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ ऐसी हदीष मन्सूब करे जो आपने न फ़र्माई हो।

٣٥٠٩ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ هِشَامٍ حَدَّثَنَا خَرِيزٌ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ النَّصْرِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ وَائِلَةَ بْنَ الْأَسْفَعِ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَكْظَمِ الْفَوْرِ أَنْ يَدَّعِيَ الرَّجُلُ إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ، أَوْ يُرَى عَيْنُهُ مَا لَمْ يَرَ، أَوْ يَقُولَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مَا لَمْ يَقُلْ)).

तशरीह: झूठा ख़्वाब बयान करना बेदारी में झूठ बोलने से बढ़कर गुनाह है क्योंकि ख़्वाब नुबुव्वत के हिस्सों में से एक हिस्सा है। झूठा ख़्वाब बयान करने वाला गोया अल्लाह पर बोहतान लगाता है। यही हाल झूठी हदीष बयान करने वाले का है, जो रसूलुल्लाह (ﷺ) पर इल्ज़ाम लगाता है। ऐसा शख्स अगर तौबा न करे तो वो जिन्दा दोज़खी है। आजकल बहुत से लोग शैख, सय्यद, पठान फ़र्ज़ी तौर पर बन जाते हैं उनको इस इशदि नबवी पर ग़ौर करना चाहिये कि ये कितना बड़ा गुनाह है।

3510. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़्द रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हमारा ता'ल्लुक क़बीला रबीआ से है और हमारे और आपके दरम्यान (रास्ते में) कुफ़्रारे मुज़र का क़बीला पड़ता है। इसलिये हम आपकी ख़िदमत अक्दस में सिर्फ़ हुर्मत के महीनों में ही हाज़िर हो सकते हैं। मुनासिब होता अगर आप हमें ऐसे अहकाम बतला देते जिन पर हम खुद भी मज़बूती से क़ायम रहें और जो लोग हमारे पीछे रह गये हैं उन्हें भी बता दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार चीज़ों का हुक्म देता हूँ और चार

٣٥١٠ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَدِمَ وَلَدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ هَذَا الْخَفِي مِنْ رِبِيعَةٍ، قَدْ خَالَتَ نَيْسًا وَتَيْنَكَ كَفَّارُ مُضَرَ، فَلَسْنَا نَخْلُصُ إِلَيْكَ إِلَّا فِي كُلِّ شَهْرٍ حَرَامٍ، فَلَوْ أَمَرْتَنَا بِأَمْرٍ نَأْخُذُهُ عَنْكَ، وَتُبَلِّغُهُ مَنْ وَرَاءَنَا. قَالَ ﷺ: ((أَمْرُكُمْ

चीजों से रोकता हूँ। अब्बल अल्लाह पर ईमान लाने का। या'नी उसकी गवाही देना कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और नमाज़ क़ायम करने का और ज़कात अदा करने का और इस बात का कि जो कुछ भी तुम्हें माले ग़नीमत मिले उसमें से पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह को (या'नी इमामे वक़््त के बैतुलमाल को) अदा करो और मैं तुम्हें दुब्बा, हन्तुम, नकीर और मुज़फ़फ़त (के इस्ते'माल) से मना करता हूँ।

بَارِعَ وَأَنهَآكُمْ عَنِ الرِّبَاحِ: الْإِيمَانُ بِاللَّهِ
شَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَإِقَامُ الصَّلَاةِ،
وَالْعِيَاءُ الزَّكَاةِ، وَأَنْ تَزِدُّوا إِلَى اللَّهِ مَخْصَنَ
مَا غَنِمْتُمْ. وَأَنهَآكُمْ عَنِ الذَّهَابِ، وَالْحَقْنِ،
وَالْبَغْيِ، وَالْمَرْفَاطِ.

[راجع: ٥٣]

ये हदीष किताबुल ईमान में गुजर चुकी है और इसी किताबुल मनाकिब के शुरू में इस हदीष का कुछ हिस्सा और उसके अल्फ़ाज़ के मआनी व मतालिब भी आ चुके हैं। बाब की मुनासबत ये है कि आखिर अरब के लोग या तो रबीआ की शाख हैं, या मुजर की और ये दोनों हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद हैं। बाद में ये तमाम कबीले मुसलमान हो गये थे।

5511. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप मिम्बर पर फ़र्मा रहे थे। आगाह हो जाओ इस तरफ़ से फ़साद फूटेगा। आपने मश्रिक की तरफ़ इशारा करके ये जुम्ला फ़र्माया, जिधर से शैतान का साँग तुलूअ होता है। (राजेअ: 3104)

٣٥١١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ
عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ
عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ:
سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ عَلَى
الْمِصْبَرِ: ((أَلَا إِنَّ الْفِتْنَةَ مَا هَذَا - يَشِيرُ
إِلَى الْمَشْرِقِ - مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قُرُونُ
الشَّيْطَانِ)). [راجع: ٣١٠٤]

शैतान तुलूअे आफ़ताब (सूर्योदय) के वक़््त अपना सर उस पर रख देता है ताकि सूरज के पुजारियों का सज्दा शैतान के लिये ग़े जाए। उलमा ने लिखा है, ये हदीष इशारा है तुर्कों के फ़साद का जो चंगेज़ खाँ के ज़माने में हुआ। उन्होंने मुसलमानों को बहुत तबाह किया, बग़दाद को लूटा और ख़िलाफ़ते इस्लामी को बर्बाद कर दिया। (वहीदी)

बाब 6 : असलम, जुहैना, ग़िफ़ार और अश्जअ
कबीलों का बयान

٦- بَابُ ذِكْرِ أَسْلَمَ وَغِفَارَ وَمُزَيْنَةَ
وَجُهَيْنَةَ وَأَشْجَعَ

तशरीह:

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह) फ़र्माते हैं कि ये पाँचों कबीले अरब में बड़े जोरदार कबीले थे और दूसरे कबीलों से पहले यही इस्लाम लाए। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनको फ़ज़ीलत अता फ़र्माई। ऐसे जोरावर कबीलों के इस्लाम कुबूल करने से अरब में इशाअत इस्लाम का दरवाज़ा खुल गया और दूसरे छोटे कबीले खुशी खुशी इस्लाम कुबूल करते चले गये क्योंकि अ़वाम अपने बड़ों के क़दम-ब-क़दम चलने वाले होते हैं। सच है, यदख़लून फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा (अन् नसर: 2)

3512. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुमुज़ अउरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुरैश, अंसार, जुहैना, मुज़ैना,

٣٥١٢- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ
عَنْ سَعْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزٍ عَنْ
أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ

असलम, गिफ़ार और अज़ज़ मेरे ख़ैर ख़्वाह हैं और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के सिवा और कोई उनका हिमायती नहीं। (राजेअ: 3504)

النَّبِيُّ ﷺ: «لَرُبُّنَا وَالْأَنْصَارُ وَجَهَنَّةُ وَمَرْزَنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ وَأَجْجَعُ مَوَالِي، لَنْ لَهْمُ مَوَالِي دُونَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ».

[ر.م: 3504]

यहाँ ब-सिलसिल-ए-तज़क़िरा क़बीला आपने कुरैश का ज़िक्र मुक़दम फ़र्माया। इससे भी कुरैश की बरतरी साबित होती है।

3513. हमसे मुहम्मद बिन गुरैर जुहरी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़कूब बिन इब्राहीम ने बयान किया। उनसे उनके वालिद ने, उनसे सलैह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मिय़बर पर फ़र्माया, क़बीला गिफ़ार की अल्लाह तआला ने मफ़िरत फ़र्मा दी और क़बीला असलम को अल्लाह तआला ने सलामत रखा और क़बीला इज़य्या ने अल्लाह तआला की और उसके रसूल की नाफ़रमानी की।

3513- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ صَالِحٍ حَدَّثَنَا نَافِعٌ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ أَخْبَرَهُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ عَلَى الْجَبْرِ: «غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا، وَأَسْلَمُ سَأَلَهَا اللَّهَ، وَغَصِيَّةُ غَصَتْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ».

क़बीला गिफ़ार वाले अहदे जाहिलियत में हाजियों का माल चुराते, चोरी करते। इस्लाम लाने के बाद अल्लाह तआला ने उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया और क़बीला इज़य्या वाले वो लोग हैं जिन्होंने आहज़रत (ﷺ) से अहद करके ग़द्दारी की और बीरे मज़ना वालों को शहीद कर दिया। शुहदा बीरे मज़ना के हालात किसी दूसरे मुक़ाम पर तफ़्सील से मज़कूर हो चुके हैं।

3514. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल वहहाब बक्रफ़ी ने ख़बर दी, उन्हे अब्यूब ने, उन्हें मुहम्मद ने, उन्हें अबू हुरैर (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने बयान किया कि क़बीला असलम को अल्लाह तआला ने सलामत रखा और क़बीला गिफ़ार की अल्लाह तआला ने मफ़िरत फ़र्मा दी।

3514- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «أَسْلَمُ. سَأَلَهَا اللَّهَ، وَغِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا».

3515. हमसे क़बीला ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह) ने कहा और मुझसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरहमान बिन महदी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अब्दुल मलिक बिन इमैर ने, उनसे अब्दुरहमान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके वालिद अबूबक्र (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बताओ, क्या जुहना, मुज़ैना, असलम और गिफ़ार के क़बीले बनी तमीम, बनी असद, बनी अब्दुल्लाह बिन ग़त्फ़ान और

3515- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنِي ابْنُ مَهْدِيٍّ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «رَأَيْتُمْ أَنْ كَانَ جَهَنَّةُ وَمَرْزَنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ غَيْرًا مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَبَنِي أَسَدٍ وَمِنْ بَنِي عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

बनी आमिर बिन सअसआ के मुकाबले में बेहतर हैं? एक शख्स (अकरआ बिन हाबिस) ने कहा कि वो तो तबाह व बर्बाद हुए। आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ ये चारो क़बीले बनू तमीम, बनू असद, बनू अब्दुल्लाह बिन ग़त्फ़ान और बनू आमिर बिन सअसआ के क़बीलों से बेहतर हैं। (दीगर मक़ाम: 3516, 6635)

عُطْفَانٌ وَمِنْ بَنِي غَامِرٍ بْنِ صَفْصَعَةَ؟))
لَقَالَ رَجُلٌ: خَابُوا وَخَسِرُوا. لَقَالَ: ((هُمْ
خَيْرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَمِنْ أَسَدٍ وَمِنْ بَنِي
عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُطْفَانٍ وَمِنْ بَنِي غَامِرٍ بْنِ
صَفْصَعَةَ)). (طرفاء ٣: ٣٥١٦, ٦٦٣٥).

जाहिलियत के ज़माने में जुहैना, मुज़ैना, असलम और ग़िफ़ार के क़बीले बनी तमीम, बनी असद, बनी अब्दुल्लाह बिन ग़त्फ़ान और बनू आमिर बिन सअसआ वग़ैरह क़बीलों से कम दर्जा के समझे जाते थे। फिर जब इस्लाम आया तो उन्होंने उसे कुबूल करने में पेशक़दमी की, इसलिये शफ़े फ़ज़ीलत में बनू तमीम वग़ैरह क़बीलों से ये लोग बढ़ गये।

3516. मुझसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी यअक़ूब ने बयान किया, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र से सुना, उन्होंने अपने वालिद से कि अकरआ बिन हाबिस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया कि आपसे उन लोगों ने बेअत की है कि जो हाजियों का सामान चुराया करते थे। या'नी असलम और ग़िफ़ार और मुज़ैना के लोग। मुहम्मद बिन अबी यअक़ूब ने कहा कि मैं समझता हूँ कि अब्दुर्रहमान ने जुहैना का भी ज़िक्र किया। शुअबा ने कहा कि ये शक़ मुहम्मद बिन अबी यअक़ूब को हुआ। आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया बतलाओ, असलम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और मैं समझता हूँ जुहैना को भी कहा ये चारो क़बीले बनी तमीम, बनी आमिर और असद और ग़त्फ़ान से बेहतर नहीं है? क्या ये (मुवज़िज़रुज्ज़िक़) ख़राब और बर्बाद नहीं हुए? अकरआ ने कहा हाँ, आप (ﷺ) ने फ़र्माया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, ये उनसे बेहतर हैं। (राजेअ: 3515)

٣٥١٦ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا
عُندَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ أَبِي
يَعْقُوبَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ
أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ الْأَقْرَعَ بْنَ أَبِي
حَاسِبٍ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّمَا تَابَعْتُ سُرَاقَ
الْحَجِيجِ مِنْ أَسْلَمَ وَغِفَارٍ وَمُزَيْنَةَ -
وَأَخِيهِ وَجُهَيْنَةَ، ابْنُ يَعْقُوبَ شَكَّ -
قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرَأَيْتَ أَنْ كَانَ أَسْلَمَ
وَغِفَارٌ وَمُزَيْنَةُ وَأَخِيهِ وَجُهَيْنَةُ خَيْرًا مِنْ
بَنِي تَمِيمٍ وَمِنْ بَنِي غَامِرٍ وَأَسَدٍ وَعُطْفَانٍ
خَابُوا وَخَسِرُوا؟ قَالَ: نَعَمْ. وَالَّذِي نَفْسِي
بِيَدِهِ إِنَّهُمْ لَخَيْرٌ مِنْهُمْ)). (راجع: ٣٥١٥)

3517. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला असलम, ग़िफ़ार, और मुज़ैना और जुहैना के कुछ लोग या उन्होंने बयान किया कि मुज़ैना के कुछ लोग या (बयान किया कि) जुहैना के कुछ लोग अल्लाह तआला के नज़दीक या बयान किया कि क़यामत के दिन क़बीला असद, तमीम, हवाज़िन और ग़त्फ़ान से बेहतर होंगे।

٣٥١٦ م - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ
عَنْ حَمَّادٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ: أَسْلَمَ
وَغِفَارٌ وَشَيْءٌ مِنْ مُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ، أَوْ قَالَ
شَيْءٌ مِنْ جُهَيْنَةَ أَوْ مُزَيْنَةَ - خَيْرٌ عِنْدَ
اللَّهِ - أَوْ قَالَ: يَوْمَ الْقِيَامَةِ - مِنْ أَسَدٍ
وَتَمِيمٍ وَهَوَارِثٍ وَعُطْفَانٍ)).

बाब 7 : एक मर्दे कहतानी का तज्किरा

3518. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे प्रौर बिन ज़ैद ने, उनसे अबुल ग़ौज़ ने और उनसे अबू हुसैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि क़बीला क़हतान में एक ऐसा शख़्स पैदा नहीं होगा जो लोगों पर अपनी लाठी के ज़ोर से हुकूमत करेगा। (दीगर मक़ाम : 7117)

7- بَابُ ذِكْرِ قَحْطَانَ

3518- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ عَنْ قَوْرِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْفَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاةٍ)).
[طرنه 3 : 7117].

उस क़हतानी शख़्स का नाम मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में बहजाह मज़कूर हुआ है। कहते हैं कि ये क़हतानी हज़रत इमाम महदी के बाद निकलेगा और उन्हीं के क़दम ब क़दम चलेगा जैसे कि अबू नुएम ने फ़ितन में रिवायत किया है। (वहीदी)

कुछ नुस्खों में ये बाब और बाद के चन्द अब्बाब ज़मज़म के किस्से के बाद बयान हुए हैं।

बाब 8 : जाहिलियत की सी बातें करना मना है

8- بَابُ مَا يُنْهَى مِنْ دَعْوَى

الْجَاهِلِيَّةِ

3518. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुखलद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा हमें इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अमर बिन दीनार ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ जिहाद में शरीक थे। मुहाजिरीन बड़ी ता'दाद में आपके पास जमा हो गये। वजह ये हुई कि मुहाजिरीन में एक स़ाहब थे बड़े दिल्लगी करने वाले, उन्होंने एक अंसारी के सुरीन पर ज़र्ब लगाई। अंसारी बहुत सख़्त गुस्सा हुआ। उसने अपनी बिरादरी वालों को मदद के लिये पुकारा और नौबत यहाँ तक पहुँची कि उन लोगों ने या'नी अंसारी ने कहा, ऐ क़बाइले अंसार! मदद को पहुँचो! और मुहाजिरीन ने कहा, ऐ मुहाजिरीन! मदद को पहुँचो! ये शोर सुनकर नबी करीम (ﷺ) (ख़ैमे से) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया क्या बात है? ये जाहिलियत की पुकार कैसी है? आपके सूरतेहाल दरयाफ्त करने पर मुहाजिर स़हाबी के अंसारी स़हाबी को मार देने का वाक़िया बयान किया गया तो आपने फ़र्माया, ऐसी जाहिलियत की नापाक बातें छोड़ दो और अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल

3518- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا مُخَلَّدُ بْنُ يَزِيدَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: عَرَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ تَابَ مَعَهُ نَاسٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ حَتَّى كَثُرُوا، وَكَانَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلٌ لَقَابٌ فَكَسَعَ أَنْصَارِيًّا، فَمَضِبَ الْأَنْصَارِيُّ غَضَبًا شَدِيدًا حَتَّى تَدَاعَوْا، وَقَالَ الْأَنْصَارِيُّ: يَا لِلْأَنْصَارِ وَقَالَ الْمُهَاجِرِيُّ يَا لِلْمُهَاجِرِينَ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا بَالُ دَعْوَى أَهْلِ الْجَاهِلِيَّةِ؟ ثُمَّ قَالَ: مَا شَأْنُهُمْ؟)) فَأَخْبِرْ بِكَسَفَةِ الْمُهَاجِرِيِّ الْأَنْصَارِيَّ. قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعُوهَا لِإِنِّهَا

(मुनाफ़िक़) ने कहा कि ये मुहाजिरिन अब हमारे खिलाफ़ अपनी क़ौम वालों को दुहाई देने लगे। मदीना पहुँचकर हम समझ लेंगे। इज़तदार, ज़लील को यकीनन निकाल बाहर कर देगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़त्ल करना चाहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम उस नापाक पलीद अब्दुल्लाह बिन उबइ को क़त्ल क्यों न कर दें? लेकिन आपने फ़र्माया ऐसा न होना चाहिये कि लोग कहें कि मुहम्मद (ﷺ) अपने लोगों को क़त्ल कर दिया करते हैं। (दीगर मक़ाम : 4905, 4907)

غَيْبَةً)). وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي اَنَسٍ سَمِعْتُ اَبَا ذَرٍّ يَقُولُ: اَلَمْ يَدْعُوا عَلَيْنَا؟ لَانْ رَجَعْنَا اِلَى الْمَدِينَةِ كَمُخْرَجِنِ الْاَعْرُ مِنْهَا الْاَدْلَى. فَقَالَ هَمْرٌ: اَلَا نَقْتُلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا الْغَيْبُ؟ لَقَدْ اَبَى اللَّهُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا يَخْبَرُ النَّاسُ اَنَّهُ كَانَ يَقْتُلُ اصْحَابَهُ)).

(طراه : 1 : 4905, 4907).

तशरीह : गो अब्दुल्लाह बिन उबई मर्दूद मुनाफ़िक़ था मगर ज़ाहिर में मुसलमानों में शरीक रहता। इसलिये आपको ये ख़याल हुआ कि उसके क़त्ल से ज़ाहिर बीन लोग जो असल हकीक़त से वाक़िफ़ नहीं हैं ये कहने लगेंगे कि पैग़म्बर साहब अपने हो लोगों को क़त्ल कर रहे हैं और जब ये मशहूर हो जाएगा तो दूसरे लोग इस्लाम कुबूल करने में ताम्मुल करेंगे। इसी मुनाफ़िक़ और उसके हवारीयों के बारे में कुआन पाक में सूरह मुनाफ़िक़ून नाज़िल हुई जिसमें उस मर्दूद का ये क़ौल भी मन्कूल है कि मदीना पहुँचकर इज़त वाला ज़लील लोगों (या) नी मक्का के मुहाजिर मुसलमानों को निकाल देगा। अल्लाह तआला ने खुद उसी को हलाक करके तबाह कर दिया और मुसलमान ब फज़िलही तआला फ़ातेहे मदीना क़रार पाए। इस वाक़िये से ये भी प्राबित हुआ कि मस्लिहत अंदेशी भी हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। इसीलिये कहा गया है। दरोज़ मस्लिहत आमेज़ ब अज़रास्ती फ़िल्ता अंगेज़।

3519. हमसे प्राबित बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनमे आ'मश ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मुरह ने. उनसे मसरूक ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। और सुफ़यान ने जुबैद से, उन्होंने इब्राहीम से, उन्होंने मसरूक से और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, वो शख़्स हममें से नहीं है जो (नोहा करते हुए) अपने रुख़सार पीटे, गिरेबान फाड़ डाले और जाहिलियत की पुकार पुकारे। (राजेअ : 1294)

٣٥١٩- حَدَّثَنِي قَابُثُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْوَةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. وَعَنْ سَفْيَانَ عَنْ زَيْدٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْحَذُودَ وَشَقَّ الْجُبُوبَ وَدَعَا بِذَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ)). [راجع: ١٢٩٤]

अगर उन कामों को दुरुस्त जानकर करता है तो वो इस्लाम से ख़ारिज है वरना ये तज़लीज़ के तौर पर फ़र्माया कि वो मुसलमानों की रविश पर नहीं है।

बाब 9 : क़बीला ख़ुजाआ का बयान

٩- بَابُ قِصَّةِ خُرَاعَةَ

तशरीह : ख़ुजाआ अरब का एक मशहूर क़बीला है। उनके न सब में इख़्तिलाफ़ है मगर उस पर इतिफ़ाक़ है कि वो अम् बिन लुहय की औलाद हैं। उनका चचा असलम था जो क़बील-ए-असलम का जदे आला है। इब्ने इस्लाम की रिवायत में यँ है उसी ने बुतों को नसब किया। सायबा छुड़वाया, बहीरा और वसीला और हाम निकाला। कहते हैं कि ये अम् बिन लुहय शाम के मुल्क में गया। वहाँ के बुतपरस्तों से एक बुत मांग लाया और उसे का'बा में लाकर खड़ा किया, उसी का नाम सुहेल था और एक शख़्स असाफ़ नामी ने नायला नामी एक औरत से ख़ास का'बा में ज़िना किया। अल्लाह तआला ने

उनको संगसार कर दिया। अम्र बिन लुहय ने उनको लाकर का'बा में खड़ा कर दिया। जो लोग का'बा का तवाफ करते वो असाफ के बोसे से शुरू करते और नायला के बोसे पर खत्म करते, कुछ कहते हैं, एक शैतान जिन अबू धुमामा नामी अम्र बिन लुहयी का रफीक था, उसने अम्र बिन लुहय से कहा कि जिद्दा में जाओ वहाँ से बुत उठा लाओ और लोगों से कहो कि वो उनकी पूजा किया करें, वो जिद्दा गया। वहाँ उन बुतों को पाया जो हज़रत इदरीस (अलैहिस्सलाम) और हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में पूजे जाते थे या'नी वह और सुवाअ और यगूष और यरूक और नसर उनको मक्का उठा लाया। लोगों से कहा उनकी पूजा करो। इस तरह अरब में बुतपरस्ती जारी हुई। अल्लाह की मार उस बेवकूफ पर। खुद भी आफत में पड़ा और क़यामत तक हज़ारों लोगों को आफत में फंसाया। अगर आँहज़रत (ﷺ) की ज़ाते गिरामी अरब में बुहूर न करती तो अरब भी अब तक बुतपरस्ती में गिरफ्तार रहते। (वहीदी)

इस्लामी दौर में शुरू से अब तक हिजाज़े मुकद्दस बुतपरस्ती से पाक रहा है। मगर कुछ अज़ा पहले हिजाज़ खुसूसन हरमैन शरीफ़ेन में कुबूरे बुजुर्गान की परसतिश का सिलसिला जारी था वहाँ के बहुत से मुअल्लिम लोग हाजियों को ज़ियारत के बहाने से महज़ अपने मफाद के लिये कब्रों पर ले जाते और वहाँ नज़र व न्याज़ का सिलसिला जारी होता। अल्हम्दुलिल्लाह आज सऊदी हुकूमत ने हरमैन शरीफ़ेन को इस किस्म की तमाम शिकंया ख़ुराफ़ात और बिदआत से पाक करके वहाँ ख़ालिस तौहीद की बुनियाद पर इस्लाम को इस्तिहकाम बख़शा है। अल्लाहुम्म अय्यदहु बिनस्त्रिकल्अज़ीज़ आमीन

3520. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमको इसाईल ने ख़बर दी, उन्हें अबू हुसैन ने, उन्हें अबू मालेह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अम्र बिन लुहय बिन क्रमआ बिन खुन्दफ़ क़बीला ख़ुज़ाआ का बाप था।

3520- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي خَصْبَةَ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((عُمَرُو بْنُ لُحَيٍّ بْنُ قُثَيْبَةَ بْنِ خَيْدِ بْنِ أَبِي عُرَاحَةَ)).

3521. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने बयान किया कि बहीरा वो कैंटनी जिसके दूध की मुमानअत होती थी, क्योंकि वो बुतों के लिये वक्रफ़ होती थी। इसलिये कोई भी शख्स इसक दूध नहीं दुहता था और सायबा उसे कहते जिसको वो अपने मा'बूदों के लिये छोड़ देते और उन पर कोई बोझ न लादता और न कोई सवारी करता। उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने अम्र बिन लुहय ख़ुज़ाई को देखा कि जहन्नम में वो अपनी अंतड़ियाँ घसीट रहा था और यही अम्र वो पहला शख्स है जिसने सायबा की रस्म निकाली। (दीगर मक़ाम : 4623)

3521- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((الْبَحِيرَةُ الَّتِي يُنْتَعَفَقُهَا لِلطَّوْغِغِيَةِ وَلَا يَحْلِبُهَا أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ وَالسَّائِبَةُ الَّتِي كَانُوا يُسَيِّبُونَهَا لِأَلْبَتِهِمْ فَلَا يُخْمَلُ عَلَيْهَا شَيْءٌ)). قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ عُمَرُو بْنَ غَامِرِ بْنِ لُحَيٍّ الْخَزَاعِيَّ يَخْرُو قَصَبَهُ فِي النَّارِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَنْ سَبَّ السَّوَائِبَ)).

[طرمه في : 1623]

तशरीह : जाहिल मुसलमानों में ऐसी बुरी रस्में आज भी प्रचलित हैं कि अपने नामोनिहाद पीरों और मुर्शिदों के नाम पर जानवर छोड़ देते हैं जैसे ख्वाजा के नाम का बकरा। बड़े पीर के नाम की देग। फिर उनके लिये ऐसे ही ख़ास रसूम

प्रचलित हैं कि उनको फ़लों खाए और फ़लों न खाए। ये सब जिहालत और ज़लालत की बातें हैं। अल्लाह पाक ऐसे नामो-निहाद मुसलमानों को नेक समझ अज़ा करे कि वो कुफ़र की इस तक्लीद से बाज आएँ।

बाब 10 : हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) के इस्लाम लाने का बयान

١٠ - بَابُ إِسْلَامِ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ

عَنْهُ

3522. मुझसे अमर बिन अब्बास ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन महदी ने, कहा हमसे मुषन्ना ने, उनसे अबू हमज़ा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अबू ज़र (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) की नुबुव्वत के बारे में मा'लूम हुआ तो उन्होंने अपने भाई अनीस से कहा मक्का जाने के लिये सवारी तैयार कर और उस शख्स के बारे में जो नबी होने का मुहूर्त है और कहता है कि उसके पास आसमान से ख़बर आती है, मेरे लिये ख़बरें हासिल करके ला। उसकी बातों को ख़ुद ग़ौर से सुनना और फिर मेरे पास आना। उनके भाई वहाँ से चले और मक्का हाज़िर होकर औहज़रत (ﷺ) की बातें ख़ुद सुनीं फिर वापस होकर उन्होंने अबू ज़र (रज़ि.) को बताया कि मैंने उन्हें ख़ुद देखा है, वो अच्छे अख़लाक़ का लोगों को हुक्म करते हैं और मैंने उनसे जो कलाम सुना वो शे'र नहीं है। इस पर अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा जिस मक्क़सद के लिये मैंने तुम्हें भेजा था मुझे उस पर पूरी तरह तशक्की नहीं हुई, आख़िर उन्होंने ख़ुद तौशा बाँधा, पानी से भरा हुआ एक पुराना मशकीज़ा साथ लिया और मक्का आए, मस्जिदुल हुराम में हाज़िरी दी और यहाँ नबी करीम (ﷺ) को तलाश किया। अबू ज़र (रज़ि.) औहज़रत (ﷺ) को पहचानते नहीं थे और किसी से आप (ﷺ) के बारे में पूछना भी मुनासिब नहीं समझा, कुछ रात गुज़र गई कि वो लेटे हुए थे। हज़रत अली (रज़ि.) ने उनको इस हालत में देखा और समझ गये कि कोई मुसाफ़िर है, अली (रज़ि.) ने उनसे कहा कि आप मेरे घर पर चलकर आराम कीजिए। अबू ज़र (रज़ि.) उनके पीछे-पीछे चले गये लेकिन किसी ने एक-दूसरे के बारे में बात नहीं की। जब सुबह हुई तो अबू ज़र (रज़ि.) ने अपना मशकीज़ा और तौशा उठाया और मस्जिदुल हुराम में आ गए। ये दिन भी वही गुज़र गया और वो नबी करीम (ﷺ) को न देख सके। शाम हुई तो सोने की तैयारी करने लगे। अली (रज़ि.) फिर वहाँ से गुज़रे और समझ

٣٥٢٢ - حَدَّثَنِي عُمَرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَنْهُ الرُّحْمَنُ بْنُ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى عَنْ أَبِي جَمْرَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا بَلَغَ أَبَا ذَرٍّ مَبْعَثُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِأَخِيهِ: ارْكَبْ إِلَى هَذَا الْوَادِي فَاعْلَمْ لِي عِلْمَ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ يَأْتِيهِ الْخَبَرُ مِنَ السَّمَاءِ، وَاسْمَعْ مِنْ قَوْلِهِ ثُمَّ انْبِئِي. فَانْطَلَقَ الْأَخُ حَتَّى قَدِمَهُ وَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَبِي ذَرٍّ فَقَالَ لَهُ: رَأَيْتُهُ يَأْمُرُ بِمَكَارِمِ الْأَخْلَاقِ، وَكَلَامًا مَا هُوَ بِالشُّعْرِ. فَقَالَ: مَا شَفِيعِي مِمَّا أَرَدْتُ. فَتَرَوُدُ وَحَمَلْتُ شَيْئًا لَهُ فِيهَا مَاءٌ حَتَّى قَدِمْتُ مَكَّةَ، فَاتَى الْمَسْجِدَ. فَالْتَمَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَعْرِفُهُ، وَكَرِهَ أَنْ يَسْأَلَ عَنْهُ، حَتَّى أَذْرَكَهُ بَعْضُ اللَّيْلِ اضْطَجَعَ فَرَأَاهُ عَلَيْهِ، فَعَرَفَ أَنَّهُ غَرِيبٌ، فَلَمَّا رَأَاهُ نَبِيَّهُ، فَلَمْ يَسْأَلْ وَاحِدًا مِنْهُمَا صَاحِبَهُ عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أَصْبَحَ، ثُمَّ اخْتَمَلَ قُرْبَتَهُ وَزَادَهُ إِلَى الْمَسْجِدِ، وَظَلَّ ذَلِكَ الْيَوْمَ، وَلَا يَرَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَمْسَى فَعَادَ إِلَى مَضْجَعِهِ، فَمَرَّ بِهِ عَلَيْهِ فَقَالَ: أَمَا نَالَ لِلرَّجُلِ أَنْ يَعْلَمَ مَنْزِلَهُ؟

गये कि अभी अपने ठिकाने जाने का वक़्त उस शख्स पर नहीं आया, वो उन्हें वहाँ से फिर अपने साथ ले आए और आज भी किसी ने एक-दूसरे से बातचीत नहीं की, तीसरा दिन जब हुआ और अली (रज़ि.) ने उनके साथ यही काम किया और अपने साथ ले गये तो उनसे पूछा क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यहाँ आने का बाज़िब क्या है? अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम मुझसे पुछता वा'दा कर लो कि मेरी रहुमाई करोगे तो मैं तुमको सब कुछ बता दूँगा। अली (रज़ि.) ने वा'दा कर लिया तो उन्होंने उन्हें अपने ख़यालात की ख़बर दी। अली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि बिला शुब्हा वो हक़ पर हैं और अल्लाह के सच्चे रसूल (ﷺ) हैं, अच्छा सुबह को तुम मेरे पीछे पीछे मेरे साथ चलना। अगर मैं (रास्ते में) कोई ऐसी बात देखूँ जिससे मुझे तुम्हारे बारे में कोई ख़तरा हो तो मैं खड़ा हो जाऊँगा। (किसी दीवार के करीब) गोया मुझे पैशाब करना है, उस वक़्त तुम मेरा इंतज़ार न करना और जब मैं फिर चलने लगूँ तो मेरे पीछे आ जाना ताकि कोई समझ न सके कि ये दोनों साथ हैं और इस तरह जिस घर में, मैं दाख़िल होऊँ तुम भी दाख़िल हो जाना। उन्होंने ऐसा ही किया और पीछे पीछे चले यहाँ तक कि अली (रज़ि.) के साथ वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँच गये, आप (ﷺ) की बातें सुनीं और वहीं इस्लाम ले आए। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया अब अपनी क़ौम ग़िफ़ार में वापस जाओ और उन्हें मेरा हाल बताओ ताकि जब हमारे ग़ल्बे का इल्म तुमको हो जाए (तो फिर हमारे पास आ जाना) अबू ज़र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं इन कुरैशियों के मज़्मअे में पुकार कर कलिम-ए-तौहीद का ऐलान करूँगा। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) के यहाँ से वापस वो मस्जिद हिराम मे आए और बुलन्द आवाज़ से कहा कि, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये कि मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। ये सुनते ही सारा मज़्मअा टूट पड़ा और इतना मारा कि ज़मीन पर लिटा दिया। इतने में अब्बास (रज़ि.) आ गये और अबू ज़र (रज़ि.) के ऊपर अपने को डालकर कुरैश से कहा अफ़सोस! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि ये शख्स क़बीला ग़िफ़ार स है और शाम जाने वाले तुम्हारे ताजिरी का रास्ता उधर ही से पड़ता

فَاللّٰهُ، فَذَهَبَ بِهِ مَعَهُ، لَا يَسْأَلُ وَاحِدًا مِنْهُمَا صَاحِبَةً عَنْ شَيْءٍ، حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ الثَّلَاثِ فَعَادَ عَلَيَّ مِنْ ذَلِكَ، فَأَقَامَ مَعَهُ ثُمَّ قَالَ : إِلَّا تُخَذِّلُنِي مَا الَّذِي أَقْدَمَكَ؟ قَالَ : إِنْ أُعْطِيتُنِي عَهْدًا وَمِثَاقًا لَتُرِيدَنِي فَعَلْتُ، فَفَعَلْتُ، فَأَخْبَرَهُ، قَالَ : فَإِنَّهُ حَقٌّ، وَهُوَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا أَصْبَحْتَ فَاتَّبِعْنِي، فَإِنِّي إِنْ رَأَيْتُ شَيْئًا أَخَافُ عَلَيْكَ قُمْتُ كَأَنِّي أَرِيقُ الْمَاءَ، فَإِنْ مَضَيْتُ فَاتَّبِعْنِي حَتَّى تَدْخُلَ مَذْحِجِي، لَفَعْلٍ، فَانْطَلَقَ بِقَفْوِهِ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَدَخَلَ مَعَهُ فَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ وَأَسْلَمَ مَكَانَهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((ارْجِعْ إِلَى قَوْمِكَ فَأَخْبِرْهُمْ حَتَّى يَأْتِيَكَ أَمْرِي)). قَالَ : وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَأُصْرِّخَنَّ بِهَا بَيْنَ ظَهْرَانِهِمْ. فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى الْمَسْجِدَ، فَنَادَى بِأَعْلَى صَوْتِهِ : أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ. ثُمَّ قَامَ الْقَوْمُ فَضَرَبُوهُ حَتَّى اضْجَعُوهُ. وَاتَّى الْعَبَّاسُ فَأَكْبَ عَلَيْهِ قَالَ : وَيَلَكُمْ، أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ مِنْ غِفَّارٍ، وَأَنَّ طَرِيقَ تِجَارِكُمْ إِلَى الشَّامِ؟ فَانْقَضَ مِنْهُمْ. ثُمَّ عَادَ مِنَ الْقَدْرِ لِمِثْلِهَا فَضَرَبُوهُ وَثَارُوا إِلَيْهِ، فَأَكْبَ الْعَبَّاسُ عَلَيْهِ)).

है। इस तरह से उनसे उनको बचा लिया। फिर अबू जर (रज़ि.) दूसरे दिन मस्जिदुल हुराम में आए और अपने इस्लाम का इज़हार किया। क्रौम बुरी तरह उन पर टूट पड़ी और मारने लगे। उस दिन भी अब्बास (रज़ि.) उन पर आँधे पड़ गये। (राजेज़: 3522)

बाब 11 : ज़मज़म का वाक़िया

١١ - بَابُ بَيْئَةِ زَمْزَمَ

कुछ नुस्खों में यँ है, बाबु किस्साति इस्लामि अबी ज़रिर्लिफ़ारी और यही मुनासिब है क्योंकि सारी हदीष में उनके मुसलमान होने का किस्सा मज़कूर है। चूँकि हज़रत अबू जर (रज़ि.) मक्का में एक अज़ा तक सिर्फ़ ज़मज़म के पानी पर गुजारा करते रहे और उस मुबारक पानी ने उनको खाने व पीने दोनों का काम दिया। इस अहमियत के पेशेनज़र ज़मज़म के किस्से का बाब मुनअकिद किया गया। दर हकीकत ज़मज़म के पानी पर इस तरह गुजारा करना भी हज़रत अबू जर (रज़ि.) की ज़िन्दगी का एक अहमतीन वाक़िया है। कुछ रिवायात में है कि वे इस तरह मुसलसल ज़मज़म पीने से ख़ूब मोटे ताज़े हो गये थे। फ़िल वाक़ेअ अल्लाह तआला ने उस मुकद्दस पानी में यही ताज़ीर रखी है। राकिमुल हुरूप (लेखक) ने अपने ताना हज़्ज के मौकों पर बारहा उसका तजुबा किया है कि अली अलसबाह (सुबह-सुबह) उस पानी को ताज़ा ब ताज़ा ख़ूब शिकमसैग होकर पिया और दिन भर तबीअत को सुकून और फ़रहत हासिल रही। अल्लाह तआला हर मुसलमान को ये मौक़ा नसीब करे। दौरे हाज़िरा में हुकूमत सज़ुदिया ने चाहे ज़मज़म पर ऐसे ऐसे बेहतरीन इतिज़ाम कर दिये हैं कि हर हाज़ी मर्द हो या औरत जब जी चाहे आग़ानी से ताज़ा पानी पी सकता है। फ़िल वाक़ेअ ये हुकूमत ऐसी मिशाली हुकूमत है जिसके लिये जिस क़दर दुआएँ की जाएँ कम हैं। अल्लाह पाक इस सज़ुदी हुकूमत को मज़ीद इस्तिहक़ाम और तरक्की अज़ा फ़र्माए, आमीन!

3522. हमसे ज़ैद ने जो अख़ज़म के बेटे हैं, बयान किया, कहा हमसे अबू कुतैबा सलम बिन कुतैबा ने बयान किया, उनसे मुषत्रा बिन सईद कैसर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू जम्ह ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैं अबू जर (रज़ि.) के इस्लाम का वाक़िया नहीं सुनाऊँ? हमने अर्ज किया ज़रूर सुनाइये। उन्होंने बयान किया कि अबू जर (रज़ि.) ने बतलाया, मेरा ता'ल्लुक क़बील-ए-शिफ़ार से था, हमारे यहाँ ये ख़बर पहुँची थी कि मक्का में एक शख्स पैदा हुए हैं जिनका दा'वा है कि वो नबी हैं (पहले तो) मैंने अपने भाई से कहा कि उस शख्स के पास मक्का जा, उससे बातचीत कर और फिर उसके सारे हालात आकर मुझे बता। चुनौचे मेरे भाई ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए और आँहज़रत (ﷺ) से मुलाक़ात की और वापस आ गये। मैंने पूछा कि क्या ख़बर लाए? उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैंने ऐसे शख्स को देखा है जो अच्छे कामों के लिये कहता है और बुरे कामों से मना करता है। मैंने कहा कि तुम्हारी बातों से तो मेरी तशफ़फ़ी नहीं हुई। अब मैंने तौशा का थैला और

٣٥٢٢- حَدَّثَنَا زَيْدٌ هُوَ ابْنُ أَخَزَمَ قَالَ أَبُو قَتَيْبَةَ سَلَّمَ بْنُ قَتَيْبَةَ حَدَّثَنِي مَشَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَصِيرُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو جَمْرَةَ قَالَ: ((قَالَ لَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ: أَلَا أَخْبِرُكُمْ بِإِسْلَامِ أَبِي ذَرٍّ؟ قَالَ: قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: قَالَ أَبُو ذَرٍّ: كُنْتُ وَجَلًا مِنْ غِمَارٍ، فَلَبَّغْنَا أَنْ رَجَلًا قَدْ خَرَجَ بِمَكَّةَ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ، فَقُلْتُ لِأَخِي: انْطَلِقْ إِلَى هَذَا الرَّجُلِ، كَلِّمُهُ وَأَتَيْنِي بِخَبْرِهِ. فَانْطَلَقَ فَلَقِيَهُ ثُمَّ رَجَعَ، فَقُلْتُ: مَا عِنْدَكَ؟ فَقَالَ: وَاللَّهِ لَقَدْ رَأَيْتُ رَجُلًا يَأْمُرُ بِالْخَيْرِ، وَيَنْهَى عَنِ الشَّرِّ. فَقُلْتُ لَهُ: لَمْ تَشْفَعْهُ مِنْ لَخْمٍ، فَأَخَذْتُ جَرَابًا وَغَصًّا. ثُمَّ أَتَيْتُ إِلَى مَكَّةَ

छड़ी उठाई और मक्का आ गया। वहाँ मैं किसी को पहचानता नहीं था और आपके बारे में किसी से पूछते हुए भी डर लगता था। मैं (सिर्फ) ज़मज़म का पानी पी लिया करता था और मस्जिदे हाराम में ठहरा हुआ था। उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा अली (रज़ि.) मेरे सामने से गुज़रे और बोले मा'लूम होता है कि आप इस शहर में मुसाफिर हैं। उन्होंने बयान किया कि मैंने कहा जी हाँ। बयान किया कि तो फिर मेरे घर चलो। फिर वो मुझे अपने घर साथ ले गये। बयान किया कि मैं आपके साथ साथ गया। न उन्होंने कोई बात पूछी और न मैंने कुछ कहा। सुबह हुई तो मैं फिर मस्जिदे हाराम में आ गया ताकि आँहज़रत (ﷺ) के बारे में किसी से पूछूँ लेकिन आपके बारे में कोई बताने वाला नहीं था। बयान किया कि फिर हज़रत अली (रज़ि.) मेरे सामने से गुज़रे और बोले कि क्या अभी तक आप अपने ठिकाने को नहीं पा सके हैं? बयान किया, मैंने कहा कि नहीं। उन्होंने कहा कि अच्छा फिर मेरे साथ आइये। उन्होंने बयान किया कि फिर हज़रत अली (रज़ि.) ने पूछा, आपका मतलब क्या है। आप इस शहर में क्यों आए? उन्होंने बयान किया कि मैंने कहा, आप अगर ज़ाहिर न करें तो मैं आपको अपने मामले के बारे में बताऊँ। उन्होंने कहा कि मैं ऐसा ही करूँगा। तब मैंने उनसे कहा, हमें मा'लूम हुआ है कि यहाँ कोई शख्स पैदा हुए हैं जो नुबुव्वत का दावा करते हैं। मैंने पहले अपने भाई को उनसे बात करने के लिये भेजा था लेकिन जब वो वापस हुए तो उन्होंने मुझे कोई तशफ़्फ़ी बख़्श ख़बरें नहीं दीं। इसलिये मैं इस इरादे से आया हूँ कि उनसे खुद मुलाक़ात करूँ। अली (रज़ि.) ने कहा कि आपने अच्छा रास्ता पाया कि मुझसे मिल गये, मैं उन्हीं के पास जा रहा हूँ। आप मेरे पीछे पीछे चलें, जहाँ मैं दाख़िल होऊँ आप भी दाख़िल हो जाएँ। अगर मैं किसी ऐसे आदमी को देखूँगा जिससे आपके बारे में मुझे ख़तरा होगा तो मैं किसी दीवार के पास खड़ा हो जाऊँगा, गोया कि मैं अपना जूता ठीक कर रहा हूँ, उस वक़्त आप आगे बढ़ जाएँ। चुनौते वो चले और मैं भी उनके पीछे हो लिया और आख़िर में वो एक मकान के अंदर गये और मैं भी उनके साथ नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अंदर दाख़िल हो गया। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से अज़ा किया कि इस्लाम के उमूल व

فَجَعَلْتُ لَا أَعْرِفُهُ، وَأَخْرَجَهُ أَنْ أَسْأَلَ عَنْهُ، وَاشْرَبْتُ مِنْ مَاءِ زَمْزَمَ وَأَكُونُ فِي الْمَسْجِدِ. قَالَ : فَمَرَّ بِي عَلِيُّ فَقَالَ : كَأَنَّ الرَّجُلَ غَرِيبٌ؟ قَالَ : قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ : فَانْطَلِقْ إِلَى الْمَنْزِلِ. قَالَ : فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ لَا يَسْأَلُنِي عَنْ شَيْءٍ وَلَا أَخْبِرُهُ. فَلَمَّا أَصْبَحْتُ غَدَوْتُ إِلَى الْمَسْجِدِ لَأَسْأَلَ عَنْهُ، وَلَيْسَ أَحَدٌ يُخْبِرُنِي عَنْهُ بِشَيْءٍ. قَالَ : فَمَرَّ بِي عَلِيُّ فَقَالَ : أَمَا نَالَ لِلرَّجُلِ يَغْرِفُ مَنَزِلَهُ بَعْدَ؟ قَالَ : قُلْتُ : لَا. قَالَ : انْطَلِقْ مَعِي، قَالَ : فَقَالَ : مَا أَمْرُكَ، وَمَا أَقْدَمَكَ هَذِهِ الْبَلَدَ؟ قَالَ : قُلْتُ لَهُ : إِنْ كُنْتُ عَلَيَّ أَخْبَرْتُكَ. قَالَ : فَإِنِّي أَفْعَلُ. قَالَ : قُلْتُ لَهُ : تَلَعْنَا أَنَّهُ قَدْ خَرَجَ هَا هُنَا رَجُلٌ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ، فَأَرْسَلْتُ أَخِي لِيَكْتُمَهُ، فَرَجَعَ وَلَمْ يَشْفِقْنِي مِنَ الْخَبَرِ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَلْقَاهُ. فَقَالَ لَهُ : أَمَا إِنَّكَ قَدْ رَضَدْتَ. هَذَا وَجْهِي إِلَيْهِ، فَأَتَيْتَنِي. أَذْخُلُ حَيْثُ أَذْخُلُ، فَإِنِّي إِنْ رَأَيْتُ أَحَدًا أَحَالَهُ عَلَيْكَ قُمْتُ إِلَى الْحَائِطِ كَأَنِّي أَصْلِحُ نَفْلِي، وَامْضِ أَنْتَ. فَمَضَى وَمَضَيْتُ مَعَهُ، حَتَّى دَخَلْتُ وَدَخَلْتُ مَعَهُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ لَهُ : اغْرِضْ عَلَيَّ الْإِسْلَامَ، فَمَرَضَهُ، فَاسْتَمْتُ مَكَابِي. فَقَالَ لِي : ((يَا أَبَا ذَرٍّ اكْتُمْ هَذَا الْأَمْرَ، وَارْجِعْ إِلَى

अरकान मुझे समझा दीजिए। आपने मेरे सामने उनकी वज़ाहत फ़र्मा दी और मैं मुसलमान हो गया। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अबू ज़र! इस मामले को अभी पोशीदा रखना और अपने शहर को चले जाना। फिर जब तुम्हें हमारे ग़लबा का हाल मा'लूम हो जाए तब यहाँ दोबारा आना। मैंने अर्ज़ किया उस जात की क्रसम! जिसने आपको हक़ के साथ मब्रूज़ किया है मैं तो उन सबके सामने इस्लाम के कलिमे का ऐलान करूँगा। चुनाँचे वो मस्जिदे हुराम में आए। कुरैश के लोग वहाँ मौजूद थे और कहा, ऐ कुरैश की जमाअत! (सुनो) मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। (ﷺ) कुरैशियों ने कहा कि इस बददीन की ख़बर लो। चुनाँचे वो मेरी तरफ़ लपके और मुझे इतना मारा कि मैं मरने के करीब हो गया। इतने में हज़रत अब्बास (रज़ि.) आ गये और मुझ पर गिरकर मुझे अपने जिस्म से छुपा लिया और कुरैशियों की तरफ़ मुतवज्जह हुए, अरे नादानों! क़बील-ए-ग़िफ़ार के आदमी को क़त्ल करते हो। ग़िफ़ार से तो तुम्हारी तिजारत भी है और तुम्हारे क़ाफ़िले भी उस तरफ़ से गुज़रते हैं। इस पर उन्होंने मुझे छोड़ दिया। फिर जब दूसरी सुबह हुई तो फिर मैं मस्जिदे हुराम में आया और जो कुछ मैंने कल पुकारा था उसी को फिर दोहराया। कुरैशियों ने फिर कहा, पकड़ो इस बददीन को। जो कुछ उन्होंने मेरे साथ कल किया था वही आज भी किया। इत्तिफ़ाक़ से फिर अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) आ गये और मुझ पर गिरकर मुझे अपने जिस्म से उन्होंने छुपा लिया और जैसा उन्होंने कुरैशियों से कल कहा था वैसा ही आज भी कहा। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) के इस्लाम कुबूल करने की इब्तिदा इस तरह से हुई थी। (दीगर मक़ाम : 3861)

بَلَدِكَ، فَإِذَا بَلَغْتَ ظَهْرَنَا فَأَقْبِلْ)).
فَقُلْتُ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَأَصْرُخَنَّ
بِهَا بَيْنَ أَظْهُرِهِمْ. فَجَاءَ إِلَى الْمَسْجِدِ
وَقَرِئَتْ فِيهِ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ،
إِنِّي أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ فَقَالُوا: قُومُوا
إِلَى هَذَا الصَّابِي، فَقَامُوا: فَضَرَبَتْ
لَأُمُوتَ، فَأَذْرَكْنِي الْعَبَّاسُ فَأَكْتُبْ عَلَيَّ.
ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ: وَيْلَكُمْ، تَقْتُلُونَ
رَجُلًا مِنْ غِفَارٍ، وَمَنْحَرُكُمْ وَمَنْعَرُكُمْ
عَلَى غِفَارٍ؟ فَأَقْلَعُوا عَنِّي. فَلَمَّا أَنْ
أَصْبَحْتُ الْفَدَ رَجَعْتُ فَقُلْتُ مِثْلَ مَا
قُلْتُ بِالْأَمْسِ. فَقَالُوا: قُومُوا إِلَى هَذَا
الصَّابِي، فَصَنَعَ بَيْنِي مِثْلَ مَا صَنَعَ
بِالْأَمْسِ، وَأَذْرَكَنِي الْعَبَّاسُ فَأَكْتُبْ عَلَيَّ
وَقَالَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ بِالْأَمْسِ. قَالَ: لَكَانَ
هَذَا أَوَّلَ إِسْلَامِ أَبِي ذَرٍّ رَحِمَهُ اللَّهُ)).

[طرمه بی : 3861]

तशरीह : कुरैश के लोग हर साल तिजारत और सौदागरी के लिये मुल्के शाम जाया करते थे और रास्ते में मक्का और मदीना के दरम्यान ग़िफ़ार की क़ौम पड़ती थी। हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने उनको डराया कि अगर तुम इसको मार डालोगे

तो सारी शिफार क़ौम खिलाफ़ हो जाएगी और हमारी सौदागरी और आमद व रफ्त में खलल हो जाएगा।

बाब 12 : अरब की क़ौम की जिहालत का बयान

باب جهل العرب - 12

इस्लाम से पहले अहले अरब बहुत सी जिहालतों में मुब्तला थे, इसलिये उस दौर को जाहिलियत से ता'बीर किया गया है। यहाँ इस बाब के ज़ैल में उनकी कुछ ऐसी ही जिहालतों का ज़िक्र किया गया है।

3523. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला असलम, शिफार, और मुज़ैना और जुहैना के कुछ लोग या उन्होंने बयान किया कि मुज़ैना के कुछ लोग या (बयान किया कि) जुहैना के कुछ लोग अल्लाह तआला के नज़दीक या बयान किया कि क़यामत के दिन क़बीला असद, तमीम, हवाज़िन और ग़त्फ़ान से बेहतर होंगे।

3523- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَسْلَمَ وَغِفَارُ شَيْءٍ مِنْ مُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ - أَوْ قَالَ شَيْءٍ مِنْ جُهَيْنَةَ أَوْ مُزَيْنَةَ خَيْرٌ عِنْدَ اللَّهِ أَوْ قَالَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ أَسَدٍ وَتَمِيمٍ وَهَوَازِنَ وَعُظْفَانَ.

कुछ नुस्खों में ये हदीष और बाद की कुछ हदीषें बाब किस्स-ए-ज़मज़म से पहले मज़कूर हुई हैं और वही सहीह मा'लूम होता है क्योंकि उन हदीषों का ता'ल्लुक इस किस्से से पहले ही की हदीषों के साथ है।

3524. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे बिशर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि अगर तुमको अरब की जिहालत मा'लूम करना अच्छा लगे तो सूरह अन्आम में एक सौ तीस आयतों के बाद ये आयतें पढ़ लो, यक्कीनन वो लोग तबाह हुए जिन्होंने अपनी औलाद को नादानी से मार डाला, से लेकर वो गुमराह हैं, राह पाने वाले नहीं तक।

3524- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو غَرَانَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِذَا سُرَّكَ أَنْ تَعْلَمَ جَهْلَ الْقُرْبِ فَأَقْرَأْ مَا فَوْقَ الثَّلَاثِينَ وَمِائَةٍ فِي سُورَةِ الْأَنْعَامِ: قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ - إِلَى قَوْلِهِ - قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ)).

तशरीह: या'नी सूरह अन्आम में अरब की सारी जिहालतें मज़कूर हैं, उनमें सबसे बड़ी जिहालत ये थी कि कमबख्त अपनी बेटियों को अपने हाथों से क़त्ल करते, बुतपरस्ती और राहज़नी (डकैती) उनका रात दिन का शौवा था। औरतों पर बहुत सितम ढाते और मज़ाज़ अल्लाह जानवरों की तरह समझते। ये सब बलाएँ अल्लाह पाक ने आँहज़रत (ﷺ) को भेजकर दूर कराई। कुछ नुस्खों में यूँ है, बाबु किस्स-ए-ज़मज़म व जहलुल अरब मगर इस बाब में ज़मज़म का किस्सा बिलकुल मज़कूर नहीं है, इसलिये सहीह यही है जो नुस्खा यहाँ नक़ल किया गया है।

उसके अलावा हदीष नम्बर 3523 जो इससे पहले (3516) के तहत गुजर चुकी है, शैख फ़व्वाद वाले नुस्खे में दोबारा मौजूद है। जबकि हिन्दुस्तानी नुस्खों में इस बाब के तहत सिर्फ़ अबुन नोअमान रावी की हदीष मौजूद है।

बाब 13 : अपने मुसलमान या ग़ैर-मुस्लिम बाप

باب من انتسب إلى آباءه في - 13

दादों की तरफ अपनी निस्बत करना

الإسلام والجاهلية

या'नी ये बयान करना कि मैं फ़लाँ की औलाद में से हूँ अगरचे वो आबा व अज्दाद ग़ैर—मुस्लिम ही क्यों न हों मगर ऐसा बयान करना जाइज है। ये इस्लाम की वो ज़बरदस्त अख़लाक़ी ता'लीम है जिस पर मुसलमान फ़ख़र कर सकते हैं। हिन्दुस्तान की बेशतर क़ौमें नव-मुस्लिम हैं। वो भी अपने ग़ैर—मुस्लिम आबा व अज्दाद का ज़िक्र करें तो शरअन उसमें कोई क़बाहत नहीं है बशर्त कि ये ज़िक्र हदूदे शरई के अंदर हो।

और अब्दुल्लाह बिन उमर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन य़अक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम ख़लिलुल्लाह (अलैहिस्सलाम) थे। और बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ الْكَرِيمَ ابْنَ الْكَرِيمِ ابْنَ الْكَرِيمِ ابْنَ الْكَرِيمِ ابْنَ الْكَرِيمِ يُونُسُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلِ اللَّهِ)). وَقَالَ الْبَرَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)).

आँहज़रत (ﷺ) ने अपने आपको अब्दुल मुत्तलिब की तरफ़ मन्सूब किया इससे बाब का मतलब साबित हुआ।

3525. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा उनसे अम्म बिन मुरह ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (सूरह शुअरा की) ये आयत उतरी, ऐ पैग़म्बर! अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ तो नबी (ﷺ) ने कुरैश के क़रीबी रिश्तेदारों को डराया, तो नबी (ﷺ) ने कुरैश के मुखतलिफ़ क़बीलों को बुलाया, ऐ बनी फ़हर! ऐ बनी अदी! जो कुरैश के ख़ानदान थे। (राजेअ: 1394)

٣٥٢٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾ [الشعراء: ٢١٤] جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا بَنِي فِهْرٍ، يَا بَنِي عَدِيَّ)), يُطَوِّنُ قَوْلَهُ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3526. (हज़रत इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि हमसे क़बीसा ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें हबीब बिन अबी साबित ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये, उतरी तो आँहज़रत (ﷺ) ने अलग अलग क़बीलों को (दीने इस्लाम की) दा'वत दी। (राजेअ: 1394)

٣٥٢٦- وَقَالَ لَنَا قَبِيصَةُ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي قَابَسٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُوهُمْ قَبَائِلَ قَبَائِلَ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3527. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमको अबुज़िनाद ने ख़बर दी, उन्हें

٣٥٢٧- أَخْبَرَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي

अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अब्दे मुनाफ़ के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह से ख़रीद लो (या'नी नेक काम करके उन्हें अल्लाह तआला के अज़ाब से बचा लो) ऐ अब्दुल मुतलिब के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह तआला से ख़रीद लो। ऐ जुबैर बिन अल्वाम की वालिदा! रसूलुल्लाह (ﷺ) की फूफी, ऐ फ़ातिमा बिनते मुहम्मद! तुम दोनों अपनी जानों को अल्लाह से बचा लो। मैं तुम्हारे लिये अल्लाह की बारगाह में कुछ इख़्तियार नहीं रखता। तुम दोनों मेरे माल में जितना चाहो मांग सकती हो। (राजेअ: 2753)

مَرْثُوةٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللَّهِ. يَا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللَّهِ. يَا أُمَّ الزُّبَيْرِ بِنَ الْعَوَامِ عَمَّةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، يَا فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ، اشْتَرِيَا أَنْفُسَكُمَا مِنَ اللَّهِ، لَا أَتِلِكُ لَكُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا سَلَّيْنِي مِنْ مَالِي مَا شِئْتُمَا)). [راجع: 2753]

तशरीह: बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन ख़ानदानों को उनके पुराने आबा व अज्दाद ही के नामों से पुकारा, मा'लूम हुआ कि ऐसी निस्बत अल्लाह के नज़दीक मअयूब (बुरी) नहीं है जैसे यहाँ के बेशतर मुसलमान अपने पुराने ख़ानदानों ही के नाम से अपनी पहचान कराते हैं। दूसरी रिवायत में यूँ है ऐ आइशा! ऐ हप्सा! ऐ उम्मे सलमा! ऐ बनी हाशिम! अपनी अपनी जानों को दोज़ख से छुड़ाओ। मा'लूम हुआ कि अगर ईमान न हो तो पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) की रिश्तेदारी क़यामत में कुछ काम न आएगी। इस हदीष से इस शिक्रिया शिफ़ाअत का बिलकुल रद्द हो गया जो कुछ नाम के मुसलमान अंबिया और औलिया की निस्बत ये ए'तिकाद रखते हैं कि जिसके दामन को चाहेंगे पकड़कर अपनी शिफ़ाअत कराके बख़्शवा लेंगे, ये अक़ीदा सरासर बातिल है।

बाब 14 : किसी क़ौम का भांजा या आज़ाद किया हुआ गुलाम भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है

3528. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को ख़ास तौर से एक मर्तबा बुलाया, फिर उनसे पूछा क्या तुम लोगों में कोई ऐसा शख़्स भी रहता है जिसका ता'ल्लुक तुम्हारे क़बीले से न हो? उन्होंने अज़ा किया कि सिर्फ़ हमारा एक भांजा ऐसा है। आपने फ़र्माया कि भांजा भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है।

١٤ - بَابُ ابْنِ أُخْتِ الْقَوْمِ، وَمَوْلَى الْقَوْمِ مِنْهُمْ

٣٥٢٨ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الْأَنْصَارَ فَقَالَ: ((مَنْ لَيْكُمْ أَحَدٌ مِنْ غَيْرِكُمْ؟)) قَالُوا: لَا إِلَّا ابْنُ أُخْتٍ لَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ)).

तशरीह: अंसार के इस बच्चे का नाम नोअमान बिन मुकरिन था। इमाम अहमद की रिवायत में उसकी सराहत है। बाब का तर्जुमा में मौला का ज़िक्र है लेकिन इमाम बुखारी मौला (आज़ादकर्दा गुलाम) को कोई हदीष नहीं लाए। कुछ ने कहा उन्होंने मौला के बाब में कोई हदीष अपनी शर्त पर नहीं पाई होगी। हाफ़िज़ ने कहा ये सहीह नहीं है क्योंकि इमाम बुखारी (रह) ने फ़राइज़ में ये हदीष निकाली है कि किसी क़ौम का मौला भी उन ही में दाख़िल है और मुम्किन है कि इमाम बुखारी (रह) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया हो जिसको बज़्ज़ार ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला है। उसमें मौला और हरीफ़ और भांजे तीनों मज़कूर हैं। तैसीर में है कि हनीफ़ा ने उसी हदीष से दलील ली है कि जब अज़बा और जुल्फ़ुरुज़ न हों तो भांजा मामू का वारिष होगा।

बाब 15 : हब्शा के लोगों का बयान और उनसे नबी (ﷺ) का ये फ़र्मान कि ऐ बनी अरफ़िदह

3529. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक्लील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि अबूबक्र (रज़ि.) उनके यहाँ तशरीफ़ लाए तो वहाँ (अंसार की) दो लड़कियाँ दुफ़्र बजाकर गा रही थीं। ये हज़रत के अय्यामे मिना का वाक़िया है। नबी करीम (ﷺ) रूए मुबारक पर कपड़ा डाले हुए लेटे हुए थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उन्हें डांटा तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपने चेहरा मुबारक से कपड़ा हटाकर फ़र्माया अबूबक्र! उन्हें छोड़ दो। ये ईद के दिन हैं, ये मिना में ठहरने के दिन थे।

(राजेअ: 454)

3530. और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) मुझको पर्दा में रखे हुए हैं और मैं हब्शियों को देख रही थी जो नेज़ों का खेल मस्जिद में कर रहे थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उन्हें डांटा। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उन्हें छोड़ दो। बनी अरफ़िदह तुम बेफ़िक्र होकर खेलो। (राजेअ: 949)

तशरीह : ये हदीष इस बाब में मौसूलन मज़कूर है। अरफ़िदह हब्शियों के जद्दे आला (पूर्वज) का नाम था। कहते हैं हब्शी हब्श बिन कोश बिन हाम बिन नूह की औलाद में से हैं। एक ज़माने में ये सारे अरब पर ग़ालिब हो गये थे और उनके बादशाह अब्हा ने का'बा को गिरा देना चाहा था। यहाँ ये खेल हब्शियों का जंगी ता'लीम और मश्क़ (प्रेक्टिस) के तौर पर था। इससे इस रक़्स की इबाहत पर दलील सहीह नहीं जो महज़ लह्व व लज़्ब के तौर पर हो। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको बनू अरफ़िदह कहकर पुकारा यही मज़सूदे बाब है।

बाब 16 : जो शख़्स ये चाहे कि उसके बाप दादा को कोई बुरा न कहे

3531. मुझसे उम्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हस्सान बिन षाबित (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से मुश्किन (कुरैश) की हिज्व करने की इजाज़त चाही तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि

١٥- بَابُ قِصَّةِ الْحَبَشِ، وَقَوْلِ

النَّبِيِّ ﷺ: ((يَا بَنِي أَرْفَدَةَ))

٣٥٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ دَخَلَ عَلَيْهَا جَارِعَتَانِ فِي أَيَّامِ مِنَى تَذَلُّفَانِ وَتَضْرِبَانِ، وَالنَّبِيُّ ﷺ مُتَغَشٍّ بِبُوبِهِ، فَانْتَهَرَهُمَا أَبُو بَكْرٍ، فَكَشَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ: ((دَعُهُمَا يَا أَبَا بَكْرٍ، فَإِنَّهَا أَيَّامٌ عِيدٌ. وَتِلْكَ الْأَيَّامُ أَيَّامُ مِنَى)).

[راجع: ٤٥٤]

٣٥٣٠- وَقَالَتْ عَائِشَةُ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْتُرُنِي وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى الْحَبَشَةِ وَهُمْ يَلْعَبُونَ فِي الْمَسْجِدِ، فَزَجَرَهُمْ عُمَرُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعُهُمْ، أَمَّا بَنِي أَرْفَدَةَ))، (بَعْنَى بِالْأَمْنِ)). [راجع: ٩٤٩]

١٦- بَابُ مَنْ أَحَبَّ أَنْ لَا يُسَبَّ

نَسَبُهُ

٣٥٣١- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ عَنْ وَشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اسْتَأْذَنَ حَسَنُ النَّبِيِّ ﷺ فِي هِجَاءِ الْمُشْرِكِينَ،

फिर मैं भी तो उन ही के खानदान से हूँ। इस पर हस्सान (रज़ि.) ने अर्ज किया कि मैं आपको (शे'र में) इस तरह साफ निकाल ले जाऊँगा जैसे आटे में से बाल निकाल लिया जाता है और (हिशाम ने) अपने वालिद से रिवायत किया कि उन्होंने कहा, हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ मैं हस्सान (रज़ि.) को बुरा कहने लगा तो उन्होंने फ़र्माया, उन्हें बुरा न कहो, वो नबी करीम (ﷺ) की तरफ़ से मुदाफ़िअत किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4145, 6150)

قَالَ : كَيْفَ يَنْسِي؟ فَقَالَ : لَأَسْلُتَكَ مِنْهُمْ
كَمَا نُسِلُ الشُّعْرَةَ مِنَ الْمَجِينِ))
وَعَنْ أَبِيهِ قَالَ : ((ذَقَبْتُ أَسْبُ حَسَّانَ
عِنْدَ غَابِثَةٍ فَقَالَتْ : لَا تَسْبُهُ، فَإِنَّهُ كَانَ
يُنَافِحُ عَنِ نَبِيِّيَّ (ﷺ)).

[طَرَفُهُ نِي : ٤١٤٥ ، ٦١٥٠]

तशरीह : हज़रत हस्सान (रज़ि.) एक मौक़े पर बहक गये थे। या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने वालों के हम नवा हो गये थे बाद में ये ताईब हो गये मगर कुछ दिलों में ये वाक़िया याद रहा मगर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने खुद उनकी मदद (ता'रीफ़) की और उनको अच्छे लफ़्ज़ों से याद किया जैसा कि यहाँ मज़कूर है। मुशिकीन जो आँहज़रत (ﷺ) की बुराइयाँ करते हज़रत हस्सान उनका जवाब देते और जवाब भी कैसा कि मुशिकीन के दिलों पर सांप लौटने लग जाता। हज़रत हस्सान (रज़ि.) के बहुत से क़सोदे मज़कूर हुए हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुशिकीने कुरैश की बिला ज़रूरत हिज्व को पसन्द नहीं फ़र्माया यही ज़ाब का मक़सद है।

बाब 17 : रसूलुल्लाह (ﷺ) के नामों का बयान

और अल्लाह तआला का सूरह अहज़ाब में इर्शाद कि, मुहम्मद (ﷺ) तुममें से किसी मर्द के बाप नहीं हैं और अल्लाह तआला का सूरह फ़तह में इर्शाद कि, मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वो कुफ़्रार के मुकाबले में इतिहाई सख़्त होते हैं और सूरह सफ़फ़ में अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, मिम् बअदी इस्मुहू अहमद

तशरीह : ये हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का क़ौल है कि मेरे बाद आने वाले रसूल का नाम अहमद होगा। बाब का मतलब यँूषाबित हुआ कि यहाँ आयतों में आपके नाम मुहम्मद और अहमद मज़कूर हुए (ﷺ)। कुफ़्रार से हबी काफ़िर जो बाज़ाब्ता इस्लाम और मुसलमानों के इस्तिहासाल (शोषण) के लिये जारेहाना हमलावर हों। मुराद है कि ऐसे लोगों के हमले का मुदाफ़िअाना जवाब देना और सख़्ती के साथ फ़साद को मिटाकर अमन कायम करना ये सच्चे मुहम्मदियों की ख़ास अलामत है।

3532. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मअन ने कहा, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्तइम ने और उनसे उनके वालिद (जुबैर बिन मुत्तइम (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पाँच नाम हैं। मैं मुहम्मद, अहमद और माही हूँ (या'नी मिटाने वाला हूँ) कि अल्लाह तआला मेरे ज़रिये कुफ़्र को मिटाएगा

١٧- بَابُ مَا جَاءَ فِي أَسْمَاءِ رَسُولِ

اللَّهِ ﷺ

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى ﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ﴾ الْآيَةُ وَقَوْلُهُ ﴿مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ﴾، وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ﴾ [الفتح : ٢٩] . وَقَوْلُهُ : ﴿مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ﴾ [الصف : ٦]

٣٥٣٢- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُثَنِّيرِ قَالَ : حَدَّثَنِي مَعْنٌ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((لِي خَمْسَةُ أَسْمَاءَ : أَنَا مُحَمَّدٌ،

और मैं हाशिर हूँ कि तमाम इंसानों का (क़यामत के दिन) मेरे बाद हसर होगा और मैं आक्रिब हूँ या'नी ख़ातिमुन्नबिय्यीन हूँ, मेरे बाद कोई नया पैग़म्बर दुनिया में नहीं आएगा। (दीगर मक़ाम : 4896)

وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَمْحُو
اللَّهُ بِهِ الْكُفْرَ، وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ
النَّاسُ عَلَى قَدَمِي، وَأَنَا الْعَاقِبُ۔

[طرفه ي : ٤٨٩٦]

इस हदीष से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह है कि आप (ﷺ) के बाद कोई भी नुबुव्वत का दा'वा करे वो झूठा दज़ाल है।

3533. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अबुज्जिनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ता'जुब नहीं होता कि अल्लाह तआला कुरैश की गालियों और ला'नत मलामत को किस तरह दूर करता है, मुझे वो मुज़म्मम कहकर बुरा कहते, उस पर ला'नत करते हैं। हालाँकि मैं तो मुहम्मद हूँ। (ﷺ)

٣٥٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا
سُفْيَانُ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ
أَبِي مُرْزُوقَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَلَا تَعْجَبُونَ كَيْفَ
يَصْرِفُ اللَّهُ عَنِّي شَتْمَ قُرَيْشٍ وَلَعْنَهُمْ؟
يَشْتَمُونَ مُذَمَّمًا، وَيَلْعَنُونَ مُذَمَّمًا، وَأَنَا
مُحَمَّدٌ)).

तशरीह : अरब के काफ़िर दुश्मनी से आपको मुहम्मद (ﷺ) नहीं कहते बल्कि उसकी ज़िद में मुज़म्मम नाम से आपको पुकारते या'नी मज़म्मत किया हुआ बुरा। आपने फ़र्माया कि मुज़म्मम मेरा नाम ही नहीं है। जो मुज़म्मम होगा उसी पर उनकी गालियाँ पड़ेगी। हाफ़िज़ (रह) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के और भी नाम वारिद हुए हैं जैसे रऊफ़, रहोम, बशीर, नज़ीर, मुबीन, दाई इलल्लाह, सिराज, मुनीर, मुज़किर, रहमत, नेअमत, हादी, शहीद, अमीन, मुज़म्मिल, मुहम्मिर, मुतवक्किल, मुख्तार, मुस्तफ़ा, शफ़ीअ, मुस्फ़िआ, सादिक, मसदूक वगैरह वगैरह, कुछ ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के नाम भी अस्माउल हुस्ना की तरह नित्रावे तक पहुँचते हैं, अगर मज़ीद तलाश किये जाएँ तो सौ तक मिल सकेंगे (ﷺ)। मुबारक नाम मुहम्मद (ﷺ) के बारे में हाफ़िज़ (रह) फ़र्माते हैं, अय अल्लज़ी हमिद मरतिन बअद मरतिन औ अल्लज़ी तकामलत फीहिल्ख़िसालुल्महमूदतु क़ाल अयाज़ कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) अहमद क़ब्ल अय्यकून मुहम्मद कमा वक़अ फिल्वुजूदि लिअन्न तस्मियत अहमद वक़अत फिल्कुतुबिस्सालिफ़ति व तस्मियतु मुहम्मद वक़अत फिल्कुअनिलअज़ीम व ज़ालिक अन्नहू हमिद रब्बहू क़ब्ल अय्युहम्मिदहुन्नासु व क़ज़ालिक फिल्आख़िरति बिहम्दि रब्बिही फयशफउहू फयहमिदुहुन्नासु व क़द खस्स बिसूरतिल्हम्दि व बिलवाइल्हम्दि व बिल्मक़ामिल्महमूदि व शरअ लहुल्हम्द बअदलअविल वशुर्बि व बअदहुआइ व बअदल्कुदूमि मिनस्सफ़रि व सुम्मियत उम्मतुहू अल्हम्मादीन फजुमिअत लहू मअानिल्हम्दि व अन्वाउहू (ﷺ)। (फ़तहल बारी)

बाब 18 : आँहज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना

١٨- بَابُ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ﷺ

तशरीह : आँहज़रत (ﷺ) पर अल्लाह तआला ने सिलसिल-ए-नुबुव्वत ख़त्म कर दिया, अब क़यामत तक कोई और नबी नहीं हो सकता न ज़िल्ली हो सकता है न बरौज़ी, न हक्कीकी हो सकता है, न मजाज़ी। आप क़यामत तक के लिये आख़िरी नबी हैं जैसे सूरज निकलने के बाद किसी चराग़ की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। आप ऐसे कामिल व मुकम्मल नबी हैं कि अब न किसी नई शरीअत और नये पैग़म्बर की ज़रूरत है और न अब कुआन के बाद किसी नई किताब की ज़रूरत है। ये वोअक़ीदा है जिस पर चौदह सौ बरस से पूरी उम्मत का इतिफ़ाक़ है मगर सद अफ़सोस कि इस मुल्क में पंजाब में मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस अक़ीदे के ख़िलाफ़ अपनी नुबुव्वत का चर्चा किया और वह्य व इल्हाम के मुद्दे हुए और वो आयात व अह्दादीज़ जिनसे आँहज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना प्राबित होता है उनकी ऐसी ऐसी दूर अज़्कार तावीलाते फ़ासिदा कीं कि फ़िल्वाक़ेअ

दजल का हक अदा कर दिया। उलमा-ए-इस्लाम बिल खुसूसन हमारे उस्ताज़ मरहूम हज़रत मौलाना षनाउल्लाह साहब अमृतसरी ने उनके दा'वा-ए-नुबुव्वत की तदीद में बहुत सी फजिलाना किताबें लिखी हैं। ऐसे मुद्दियाने नुबुव्वत इन अह्दादीषे नबवी के मिस्दाक हैं जिनमें आपने खबर दी है कि मेरी उम्मत में कुछ ऐसे दज्जाल लोग पैदा होंगे जो नुबुव्वत का दा'वा करेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसे गुमराहकुन लोगों के खयालाते फासिदा से महफूज़ रखे आमीन।

3534. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैम ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया और उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी और दूसरे अंबिया की मिमाल ऐसी है जैसे किसी शख्स ने कोई घर बनाया, उसे खूब आरास्ता पैरास्ता करके मुकम्मल कर दिया। सिर्फ़ एक ईंट की जगह ख़ाली छोड़ दी। लोग उस घर में दाख़िल होते और ता'जुब करते और कहते काश ये एक ईंट की जगह ख़ाली न रहती तो कैसा अच्छा मुकम्मल घर होता।

۳۵۳۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِينَانٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمٌ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلِي وَمَثَلُ الْأَنْبِيَاءِ كَرَجُلٍ بَنَى دَارًا فَأَكْمَلَهَا وَأَحْسَنَهَا، إِلَّا مَوْضِعَ لَبْنَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَدْخُلُونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ وَيَقُولُونَ: لَوْ لَا مَوْضِعَ اللَّبْنَةِ)).

मेरी नुबुव्वत ने उस कमी को पूरा कर दिया। अब मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

3535. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे अबू सालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी और मुझसे पहले की तमाम अंबिया की मिमाल ऐसी है जैसे एक शख्स ने एक घर बनाया और उसमें हर तरह की ज़ीनत पैदा की लेकिन एक कोने में एक ईंट की जगह छूट गई। अब तमाम लोग आते हैं और मकान को चारों तरफ़ से घूमकर देखते हैं और ता'जुब करते हैं लेकिन ये भी कहते जाते हैं कि यहाँ पर एक ईंट क्यों न रखी गई? तो मैं ही वो ईंट हूँ और मैं खतिमुन्नबियीन हूँ।

۳۵۳۵- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ مَثَلِي وَمَثَلِ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بَيْتًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ، إِلَّا مَوْضِعَ لَبْنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِهِ وَيَتَعَجَّبُونَ لَهُ وَيَقُولُونَ: هَلَّا وَضِعَتْ بِهِ اللَّبْنَةُ؟ قَالَ: فَإِنَّا اللَّبْنَةُ؛ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ)).

बाब 19 : नबी अकरम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

3536. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने 63 साल की उम्र में वफ़ात पाई और इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने इसी तरह बयान किया।

۱۹- بَابُ وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ
۳۵۳۶- حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ غَقِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرَّةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَوَفَّى وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ)). وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسْتَبِيرِ بِمِثْلِهِ.

(दीगर मक़ाम : 4466)

[طرح ٢ : ٤٤٦٦]

बाब 20 : रसूले करीम (ﷺ) की कुन्नियत का बयान**٢٠ - بَابُ كُنْيَةِ النَّبِيِّ ﷺ**

नाम के अलावा अपने लिये कोई बतौर इशारा-किनाया नाम रखे तो उसको कुन्नियत कहते हैं। इशारे किनाए के नाम हर क़ौम में और हर जुबान में रखे जाते हैं। अरब में ऐसा दस्तूर था। आँहज़रत (ﷺ) की मशहूर कुन्नियत अबुल क़ासिम है। अक़षर ये कुन्नियत औलाद की निस्बत से रखी जाती है। आपके भी एक फ़रज़न्द का नाम क़ासिम बतलाया गया है जिससे आप अबुल क़ासिम (ﷺ) कहलाए।

3537. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हमैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बाज़ार में थे कि एक साहब की आवाज़ आई, या अबुल क़ासिम! आप उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए (मा'लूम हुआ कि उन्होंने किसी और को पुकारा है) इस पर आपने फ़र्माया, मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्नियत मत रखो। (राज़ेअ: 2120)

3538. हमसे मुहम्मद बिन क़प्पीर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी उन्हें मंसूर ने, उन्हें सालिम बिन अबी अल ज़अद ने और उन्हें हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे नाम पर नाम रखा करो लेकिन मेरी कुन्नियत न रखा करो। (राज़ेअ: 3114)

3539. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने सीरीन ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्नियत न रखा करो। (राज़ेअ: 110)

हाफ़िज़ (रह) ने कहा कुछ के नज़दीक ये मुत्लक़न मना है। कुछ ने कहा कि ये मुमानअत आप (ﷺ) की ज़िन्दगी तक थी। कुछ ने कहा जमा करना मना है या'नी मुहम्मद अबुल क़ासिम नाम रखना। कौले पानी को तरजीह है।

बाब 21**٢١ - بَابُ**

3540. मुज़से इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको फ़ज़ल बिन मूसा ने ख़बर दी, उन्हें जुएद बिन अब्दुर्रहमान ने कि मैंने साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) को चौरानवे साल की उम्र में देखा

٣٥٣٧ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ فِي السُّوقِ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ، فَأَلْفَتِ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلَا تَكْتُمُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: ٢١٢٠]

٣٥٣٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تَسَمُّوا بِاسْمِي، وَلَا تَكْتُمُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: ٣١١٤]

٣٥٣٩ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلَا تَكْتُمُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: ١١٠]

٣٥٤٠ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى عَنِ الْجَعْفَرِيِّ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: رَأَيْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ

कि खाला मुझे बरकत है। उन्होंने कहा कि मुझे यकीन है कि मेरे कानों और आँखों से जो मैं नफा हासिल कर रहा हूँ वो सिर्फ रसूलुल्लाह (ﷺ) की दुआ की बरकत है। मेरी खाला मुझे एक मर्तबा आपकी खिदमत में ले गई और अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये मेरा भांजा बीमार है, आप इसके लिये दुआ कर दें। उन्होंने बयान किया कि आपने मेरे लिये दुआ फ़र्माई। (सजेअ: 190)

हज़रत साइब बिन यज़ीद की खाला ने हज़र (ﷺ) के सामने बच्चे का नाम नहीं लिया बल्कि इन्हे उखती कहकर पेश किया। तो प्रामाणिक हुआ कि किनाया की एक सूत ये भी है यही इस अलेहदा बाब का मक़सद है कि कुत्रियत बाप और बेटा दोनों तरह से इस्तेमाल की जा सकती है।

बाब 22 : मुहरे नुबुव्वत का बयान (जो आपके दोनों कंधों के बीच में थी)

٢٢- بَابُ خَاتَمِ النُّبُوَّةِ

3541. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे जुऐद बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्होंने साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना कि मेरी खाला मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में लेकर हाज़िर हुई और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये मेरा भांजा बीमार हो गया है। इसपर आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे सर पर दस्ते मुबारक फेरा और मेरे लिये बरकत की दुआ की। उसके बाद आपने वुजू किया तो मैं ने आपके वुजू का पानी पिया, फिर आपकी पीठ की तरफ़ जाकर खड़ा हो गया और मैंने मुहरे नुबुव्वत को आपके दोनों कंधों के बीच देखा। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि हज़ला, हज़िलल फ़रस से मुश्तक़ है जो घोड़े की उस सफ़ेदी को कहते हैं जो उसकी दोनों आँखों के बीच में होती है। अब्राहीम बिन हम्ज़ा ने कहा मिज़लुर रज़ुल हिज़लति या'नी राय महमला पहले फिर ज़ाए मुअज्जमा। इमाम बुखारी (रह) ने कहा कि सहीह ये है कि राय महमला पहले है। (सजेअ: 190)

٣٥٤١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ الْجَعْفَرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ قَالَ: ((دَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ ابْنَ أَخِي وَقَعَ، لَمْ تَسَحْ رَأْسِي، وَذَعَا لِي بِالنُّزْكَةِ، وَتَوَضَّأَ فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ، ثُمَّ قَعْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ النُّبُوَّةِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ الْجَحَلَةَ)). قَالَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ: الْحَجَلَةُ مِنْ حَجَلِ الْفَرَسِ الَّذِي بَيْنَ عَيْنَيْهِ. قَالَ: إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ: ((مِثْلُ زُرِّ الْحَجَلَةِ)). وَقَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ الْمُصَنِّعُ الرَّاءُ قَبْلَ الرَّاءِ. [راجع: ١٩٠]

तशरीह: हाफ़िज़ साहब (रह) कहते हैं कि ये मुहर विलादत के वक़्त आपकी पीठ पर न थी जैसे कुछ ने गुमान किया है बल्कि शक्के सद्र (सीना चाक किये जाने) के बाद फ़रिश्तों ने ये अलामत कर दी थी। ये मज़मून अब दाऊद त्रियालिसी और हारिष बिन उसामा ने अपनी मुसन्दों में और नईम ने दलाईलुन नुबुव्वत में और इमाम अहमद और बैहकी ने रिवायत किया है। मिज़लुर रज़ुल हिज़लति का लफ़्ज़ अक़्बर नुस्खों में हदीष में नहीं है और सहीह ये है क्योंकि अगर हदीष में न होता तो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह इस लफ़्ज़ की तपसौर क्यूँ बयान करते। और कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है जैसे हिज़ला का अण्डा और हिज़ला एक

परिन्दा है जो कबूतर से छोटा होता है। जब तक्रदीम मुअजमा पर आए महमला या बतक्रदीम राय महमला बजाए मुअजमा या नी रज़ दोनों तरह से मन्कूल है। रज़ से मुराद अण्डा है। इब्राहीम बिन हम्ज़ा की रिवायत को खुद इमाम बुखारी (रह) ने किताबुत त़िब्ब में वारिद किया है। हाफ़िज़ ने कहा मुझको साइब बिन यज़ीद की खाला का नाम मा'लूम नहीं हुआ। हाँ उनकी माँ का नाम अल्बा बन्ते शुरैह था।

बाब 23 : नबी करीम (ﷺ) के हुलिया और

अख़लाक़े फ़ाज़िला का बयान

۲۳- بَابُ صِفَةِ النَّبِيِّ ﷺ

इस बाब के तहत इमाम बुखारी (रह) तक्रीबन 28 अहदादीष लाए हैं जिनसे आप (ﷺ) के हुलिये मुबारक और आप (ﷺ) की सीरते त़य्यिबा और अख़लाक़े फ़ाज़िला पर रोशनी पड़ती है।

3542. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इमर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे इब्ने बा बिन हारिष ने कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अज़र की नमाज़ से फ़ारिग होकर मस्जिद से बाहर निकले तो देखा कि हज़रत हसन बच्चों के साथ खेल रहे हैं। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उनको अपने कंधे पर बिठा लिया और फ़र्माया कि मेरे बाप तुम पर कुर्बान हों तुममें नबी करीम (ﷺ) की शबाहत है, अली की नहीं। ये सुनकर हज़रत अली (रज़ि.) हंस रहे थे (खुश हो रहे थे)। (दीगर मक़ाम : 3750)

۳۵۴۲- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعْدٍ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((صَلَّى أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ الْفَصْرَ ثُمَّ خَرَجَ يَمْشِي، فَرَأَى الْحَسَنَ يَلْعَبُ مَعَ الصَّبْيَانِ، فَحَمَلَهُ عَلَى عَاتِقِهِ وَقَالَ: يَا بِي، شَبِيهُ بِالنَّبِيِّ، لَا شَيْءَ بَعْلِي، وَعَلَى يَمِينِكَ)). (طَرَفُهُ ۳ : ۳۷۵۰).

तशरीह

हज़रत हसन (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के बहुत मुशाबह थे। हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत में है कि हुसैन (रज़ि.) बहुत मुशाब थे उन दोनों में इडितलाफ़ नहीं है। मुशाबिहत की वजहें मुवतलिफ़ होंगी। कुछ ने कहा कि हज़रत हसन निस्फ़ आला बदन में मुशाबह थे और हज़रत हुसैन निस्फ़ अस्फ़ल में। गर्ज़ ये कि दोनों भाई आँहज़रत (ﷺ) की पूरी तस्वीर थे। इस हदीस से राफ़ज़ियों का भी रह हुआ जो जनाब अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) का दुश्मन और मुखालिफ़ ख़याल करते हैं क्योंकि ये किस्सा आपकी वफ़ात के बाद का है, कोई बेवकूफ़ भी ऐसा ख़याल नहीं कर सकता। अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) जब तक ज़िन्दा रहे आँहज़रत (ﷺ) और आपकी आल व औलाद के खैर ख़वाह और जाँ निज़ार बनकर रहे। (रज़ि.)

3543. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुबैर ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया और उनसे अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को मैंने देखा था। हज़रत हसन (रज़ि.) में आपकी पूरी मुशाबिहत मौजूद थी। (दीगर मक़ाम : 3544)

۳۵۴۳- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَكَانَ الْحَسَنُ يَمْشِيهِ)). (طَرَفُهُ ۳ : ۳۵۴۴).

3544. मुझसे अमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा है,

۳۵۴۴- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ سَمِعْتُ أَبَا جَعْفَرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:

हसन बिन अली (रज़ि.) में आपकी मुशाबिहत पूरी तरह मौजूद थी। इस्माईल बिन अबी खालिद ने कहा, मैंने अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से अर्ज किया कि आप आँहज़रत (ﷺ) की सिफ़त बयान करें। उन्होंने कहा आप सफ़ेद रंग के थे, कुछ बाल सफ़ेद हो गये थे और आपने हमें तेरह कैंटों के दिये जाने का हुक्म दिया था, लेकिन अभी हमने उन कैंटों को अपने क़ब्ज़े में भी नहीं लिया था कि आपकी वफ़ात हो गई। (राजेअ: 3543)

3545. हमसे अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे वहब ने, उनसे अबू जुहैफ़ा सिवाई (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा, आपके निचले होंठ मुबारक के नीचे ठोढ़ी के कुछ बाल सफ़ेद थे।

अनफ़का ठोढ़ी और निचले होंठ के दरमियानी हिस्से को कहते हैं।

3546. हमसे असाम बिन खालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हरीज़ बिन उम्मान ने बयान किया और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) के सहाबी अब्दुल्लाह बिन बुस् (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) बूढ़े हो गये थे? उन्होंने कहा कि आपकी ठोढ़ी के चन्द बाल सफ़ेद हो गये थे।

तशरीह: इन बयान की गईं तमाम अह्दादीष में किसी न किसी वस्फ़े-नबवी का ज़िक्र हुआ है, इसीलिये इन अह्दादीष को इस बाब के ज़ेल में लाया गया है।

3547. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैथ ने बयान किया, उनसे खालिद ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे रबीआ बिन अब्दुरहमान ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने नबी करीम (ﷺ) के औस्राफ़े मुबारका बयान करते हुए बतलाया कि आप दरम्याना क़द थे, न बहुत लम्बे और न छोटे क़द वाले, रंग खिलता हुआ था (सुख़ व सफ़ेद) न ख़ाली सफ़ेद थे और न बिलकुल गन्दुमी। आपके बाल न बिलकुल मुड़े हुए सख़्त क्रिस्म के थे और न सीधे लटकते हुए ही थे। नुजूल वहा के वक़्त आपकी उम्र चालीस साल थी। मक्का में आपने दस साल तक क़याम फ़र्माया और इस पूरे अर्से

((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَكَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ يُشَبِّهُهُ. قُلْتُ لِأَبِي جُحَيْفَةَ: صِفْهُ لِي. قَالَ: كَانَ أَيْضًا قَدْ شَمِطَ. وَأَمَرَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِثَلَاثَ عَشْرَةَ قَلُوصًا. قَالَ فَقَبِضَ النَّبِيُّ ﷺ قَبْلَ أَنْ نَقْبِضَهَا)). [راجع: ٣٥٤٣]

٣٥٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ وَهْبِ أَبِي جُحَيْفَةَ السُّوَّائِيِّ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَرَأَيْتُ يَاحَا مِنْ تَحْتِ شَفْوَيْهِ السُّفْلَى الْعَفْقَةَ)).

٣٥٤٦- حَدَّثَنَا عَصَامُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا حَرِيزُ بْنُ عُفْمَانَ أَنَّهُ سَأَلَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ بُسْرِ صَاحِبَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ شَيْخًا؟ قَالَ: كَانَ لِي عَفْقَتُهُ شَعْرَاتٍ بَيْضَ)).

٣٥٤٧- حَدَّثَنِي ابْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ عَنْ خَالِدٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلَالٍ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ بِمِثْلِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ يَصِفُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: كَانَ رُبْعَةً مِنَ الْقَوْمِ، لَيْسَ بِالطَّوِيلِ وَلَا بِالْقَصِيرِ، أَزْهَرُ اللَّوْنِ، لَيْسَ بِأَبْيَضَ أَمْهَقَ وَلَا أَدَمَ، لَيْسَ بِجَفَدٍ قَطِيطٍ وَلَا سَبْطَ رَجُلٍ. أُنْزِلَ عَلَيْهِ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ، فَلَيْثَ

में आप पर वह्य नाज़िल होती रही और मदीना में भी आपका क्रयाम दस साल तक रहा। आपके सर और दाढ़ी के बीस बाल भी सफ़ेद नहीं हुए थे। रबीआ (रावी हदीस) ने बयान किया कि फिर मैंने आप (ﷺ) का एक बाल देखा तो वो लाल था मैंने उसके बारे में पूछा तो मुझे बताया गया कि ये खुशबू लगाते लगाते लाल हो गया है। (दीगर मक़ाम : 3547, 5900)

بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ، وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرَ سِنِينَ، وَقَبَضَ وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلَحْيَيْهِ عَشْرُونَ شَعْرَةً بَيْضَاءَ. قَالَ رَبِيعَةُ : فَرَأَيْتُ شَعْرًا مِنْ شَعْرِهِ فَإِذَا هُوَ أَحْمَرٌ، فَسَأَلْتُ، فَقِيلَ : أَحْمَرٌ مِنَ الطَّيِّبِ)).

[طرمه في : 3548, 5900].

औहज़रत (ﷺ) पर वह्य के शुरू होने के बाद तक्रीबन तीन साल ऐसे गुजरे जिनमें आप पर वह्य का सिलसिला बन्द हो गया था, उसे फ़तरा का ज़माना कहते हैं। रावी ने बीच के उन सालों को हज़फ़ कर दिया जिनमें सिलसिल-ए-वह्य के शुरू होने के बाद वह्य नहीं आई थी आपकी नुबुव्वत के बाद क्रयामे मक्का की कुल मुद्त तेरह साल है।

3548. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) न बहुत लम्बे थे और न छोटे क़द के, न बिलकुल सफ़ेद थे और न गन्दुमी रंग के, न आपके बाल बहुत ज़्यादा घुंघराले सख़्त थे और न बिलकुल सीधे लटके हुए। अल्लाह तआला ने आपको चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत दी और आपने मक्का में दस साल तक क्रयाम किया और मदीना में दस साल तक क्रयाम किया। जब अल्लाह तआला ने आपको वफ़ात दी तो आपके सर और दाढ़ी के बीस बाल भी सफ़ेद न थे।

(राज़ेअ : 3547)

3548 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ : ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْبَائِنِ وَلَا بِالْقَصِيرِ، وَلَا بِالْأَبْضِ الْأَمْهَقِ وَلَيْسَ بِالْأَدَمِ، وَلَيْسَ بِالنَّجْدِ الْقَطِطِ وَلَا بِالسَّبْطِ. بَعَثَهُ اللَّهُ عَلَى رَأْسِ أَرْبَعِينَ سَنَةً، فَأَقَامَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ بِالْمَدِينَةِ عَشْرَ سِنِينَ فَتَوَفَّاهُ وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلَحْيَيْهِ عَشْرُونَ شَعْرَةً بَيْضَاءَ)).

[راجع : 3547]

3549. हमसे अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हुस्न व ज़माल में भी सबसे बढ़कर थे और अज़लाक़ में भी सबसे बेहतर थे। आपका क़द न बहुत लम्बा था और न छोटा (बल्कि दरम्याना था)।

3549 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ الْبَرَاءَ يَقُولُ : ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا، وَأَحْسَنَهُ خَلْقًا، لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْبَائِنِ وَلَا بِالْقَصِيرِ)).

3550. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कभी ख़िज़ाब भी इस्ते'माल किया था? उन्होंने कहा कि आपने कभी ख़िज़ाब नहीं लगाया, सिर्फ़ आपकी दोनों कनपटियों पर (सर में) चन्द बाल सफ़ेद थे। (दीगर मक़ाम: 5894, 5895)

मगर अबू रम्षा की रिवायत में जिसको हाकिम और अस्हाबे सुनन ने निकाला है, ये है कि आपके बालों पर मेहन्दी का ख़िज़ाब था। इब्ने इमर (रज़ि.) की रिवायत में है कि आप ज़र्द (पीला) ख़िज़ाब करते थे और अन्देशा है कि आपने मेहन्दी बत्तरीक़ ख़ुशबू लगाई हो, इसी तरह ज़ा'फ़रान भी। उन लोगों ने उसको ख़िज़ाब समझा। ये भी अन्देशा है कि अनस (रज़ि.) ने ख़िज़ाब न देखा हो।

3551. हमसे हफ़स बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दरम्याना क़द के थे। आपका सीना बहुत कुशादा और खुला हुआ था। आपके (सर के) बाल कानों की लौ तक लटकते रहते थे। मैंने आँहज़रत (ﷺ) को एक मर्तबा एक सुख़ जोड़े में देखा। मैंने आपसे बढ़कर हसीन किसी को नहीं देखा था। यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने अपने वालिद के वास्ते से, इला मन्किबयहि बयान किया (बजाय लफ़ज़ शहमत उज़ुनयहि के) या'नी आपके बाल मूँढ़ों तक पहुँचते थे। (दीगर मक़ाम: 5848, 5901)

यूसुफ़ के तरीक़ को खुद मुअल्लिफ़ ने भी निकाला मगर मुख़्तसर तौर पर। उसमें बालों का ज़िक्र नहीं है। कुछ रिवायतों में आपके बाल कानों की लौ तक, कुछ रिवायतों में मूँढ़ों तक, कुछ रिवायतों में उनके बीच तक मज़कूर हैं। उनका इख़ितलाफ़ यूँ दूर हो सकता है कि जिस वक़्त आप तैल डालते, कँधी करते तो बाल मूँढ़ों तक आ जाते, ख़ाली वक़्तों में कानों तक या दोनों के बीच में रहते।

3552. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि किसी ने बराअ (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) का चेहरा तलवार की तरह (लम्बा पतला) था? उन्होंने कहा नहीं, चेहरा मुबारक चाँद की तरह (गोल और ख़ूबसूरत) था।

गोल से ये गर्ज़ नहीं कि बिलकुल गोल था बल्कि क़द्रे गोलाई थी। अरब में ये हुस्न में दाख़िल है। उसके साथ आपके रुख़सार फूलें न थे बल्कि सफ़ाफ़ थे जैसे दूसरी रिवायत में है। दाढ़ी आपकी गोल और घनी हुई, करीब थी कि सीना ढांप ले, बाल बहुत स्याह, आँखें सुस्मगीं, उनमें लाल डोरा था। अल गर्ज़ आप हुस्ने मुजस्सम थे। (ﷺ)

3553. हमसे अबू अली हसन बिन मंसूर ने बयान किया, कहा

۳۵۵۰- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: ((سَأَلْتُ أَنَسًا: هَلْ خَضَّبَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: لَا، إِنَّمَا كَانَ شَيْءٌ فِي صَدْغَيْهِ)).

[طرفاء في: ۵۸۹۴، ۵۸۹۵].

۳۵۵۱- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ مَرَبُوعًا بَعِيدَ مَا بَيْنَ الْمَنْكِبَيْنِ، لَهُ شَعْرٌ يَبْلُغُ شِخْمَهُ أَذُنَيْهِ، وَأَيْتُهُ فِي خَلْفِهِ خُمْرَاءٌ لَمْ أَرْ شَيْئًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ)). وَقَالَ يُوسُفُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِيهِ ((إِلَى مَنْكِبَيْهِ)).

[طرفاء في: ۵۸۴۸، ۵۹۰۱].

۳۵۵۲- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: ((مِثْلُ الْبَرَاءِ: أَكْبَانُ وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلُ السَّيْفِ؟ قَالَ: لَا، بَلْ مِثْلُ الْقَمَرِ)).

۳۵۵۳- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مَنْصُورٍ أَبُو

हमसे हज्जाज बिन मुहम्मद अल अज़वर ने मुसैसा (शहर में) बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हकम ने बयान किया कि मैंने अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दोपहर के वक़्त सफ़र के इरादे से निकले। बत्हाअ नामी जगह पर पहुँचकर आपने वुजू किया और जुहूर की नमाज़ दो रकअत (क़स्र) पढ़ी फिर अम्र की भी दो रकअत (क़स्र) पढ़ी। आपके सामने एक छोटा सा नेज़ा (बत्तौर सुतरह) गड़ा हुआ था। औन ने अपने वालिद से इस रिवायत में ये ज़्यादा किया है कि अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने कहा कि इस नेज़े के आगे से आने जाने वाले आ जा रहे थे। फिर महाबा आपके पास और आपके मुबारक हाथों को थामकर अपने चेहरों पर फेरने लगे। अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने भी आपके दस्ते मुबारक को अपने चेहरे पर रखा। उस वक़्त वो बर्फ़ से भी ज़्यादा ठण्डा और मुश्क से भी ज़्यादा खुशबूदार था। (राजेअ: 187)

عَلَيْ حَدَّثَنَا خُجَاعُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْأَعْمُرُ بِالْمُصَنِّعَةِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا حُحَيْفَةَ قَالَ: ((خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْهَاجِرَةِ إِلَى الْبَطْحَاءِ قَتَوْنَا ثُمَّ صَلَّى الظُّهْرَ رَكَعَتَيْنِ وَالْعَصْرَ رَكَعَتَيْنِ وَتَمَّ يَدِيهِ غَزْرَةً)). قَالَ: شُعْبَةُ: وَزَادَ فِيهِ غَوْنٌ عَنْ أَبِيهِ أَبِي حُحَيْفَةَ قَوْلَهُ: ((كَانَ يَمُرُّ مِنْ وَزَائِلِهَا الْمَرْأَةُ. وَقَامَ النَّاسُ فَيَقُولُوا يَأْخُذُونَ يَدَيْهِ فَيَمْسَحُونَ بِهِمَا وَجُوهَهُمْ)). قَالَ: فَأَخَذْتُ يَدَيْهِ فَوَضَعْتُهَا عَلَى وَجْهِهِ. فَإِذَا هِيَ أَبْرَدُ مِنَ النَّارِ وَأَطْيَبُ رَائِحَةً مِنَ الْمِسْكِ)).

[راجع: ١٨٧]

तशरीह: एक रिवायत में है, आपने एक डोल पानी में कुल्ली करके वो पानी कुँऐ में डाल दिया तो कुँऐ में से मुश्क जैसी खुशबू आने लगी। उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने आपका पसीना जमा करके रखा, खुशबू में मिलाया तो वो दूसरी खुशबू से ज़्यादा मुअत्तर (सुगन्धित) था। अबू यअला और बज़ार ने सहीह सनदों से निकाला कि आप जब मदीना के किसी रास्ते से गुज़रते तो वो महक जाता। एक ग़रीब औरत के पास ख़ूशबू न थी। आपने शीशी में अपना थोड़ा सा पसीना उसे दे दिया तो उससे सारे मदीना वाले मुश्क की सी ख़ूशबू पाते। उसके घर का नाम बैतुल मुतय्यबीन पड़ गया था। (अबू यअला, त़बरानी)

3554. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे ज़्यादा सख़ी थे और रमज़ान में जब आप (ﷺ) से जिब्रईल (ﷺ) की मुलाक़ात होती तो आपकी सख़ावत और भी बढ़ जाया करती थी। जिब्रईल (ﷺ) रमज़ान की हर रात में आपसे मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाते और आपके साथ कुआन मजीद का दौर करते। उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ैर व भलाई के मामले में तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़्यादा सख़ी हो जाते थे। (राजेअ: 6)

٣٥٥٤ -- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي غُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ، وَأَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ حِينَ يَلْقَاهُ جِبْرِيلُ، وَكَانَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَلْقَاهُ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فَيُدَارِسُهُ الْقُرْآنَ، فَلَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَجْوَدُ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسَلَةِ)). [راجع: ٦]

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) के बेशुमार औसाफ़े हस्ना में से यहाँ आपकी सिफ़ते सखावत का ज़िक्र है। इस हदीष को इसीलिये इस बाब के तहत लाए। बाब और हदीष में यही मुताबकत है।

3555. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने ज़ुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें उर्वाने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके यहाँ बहुत ही ख़ुश ख़ुश दाख़िल हुए, ख़ुशी और मुसरत से पेशानी की लकीरें चमक रही थीं। फिर आपने फ़र्माया, आइशा! तुमने सुना नहीं मुदलिजी ने ज़ैद व उसामा के सिर्फ़ क़दम देखकर क्या बात कही? उसने कहा कि एक के पाँव दूसरे के पाँव से मिलते हुए नज़र आते हैं। (दीगर मक़ाम: 3731, 6770, 6771)

۳۵۵۵- حَدَّثَنَا يَحْيَىٰ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ: أَخْبَرَنِي أَنَّ شِهَابَ بْنَ غَزْوَةَ عَنْ غَابِثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: (رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا مُسَرُّورًا تَبَرَّقَ اسْتَبْرَأَ وَجْهَهُ فَقَالَ: أَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالَ الْمَذَلِجِيُّ يُزِيدُ وَأَسَافَةُ - وَرَأَى الْقَدَامَتَيْنِ: إِنْ بَغَضَ هَذِهِ الْأَقْدَامَ مِنْ بَغْضٍ).

[أطرافه في: ۳۷۳۱، ۶۷۷۰، ۶۷۷۱].

तशरीह: हुआ ये था कि ज़ैद गोरे थे और उसामा स्याह फ़ाम (सांवले)। कुछ मुनाफ़िक़ शुब्हा करते थे कि उसामा ज़ैद के बेटे नहीं हैं। एक बार बाप-बेटे चादर ओढ़े हुए सो रहे थे मगर पाँव खुले हुए थे। मुदलिजी ने जो अरब का बड़ा क़याफ़ा-शनास था, पाँव देखकर कहा ये पाँव एक-दूसरे से मिलते हैं या एक-दूसरे में से हैं। इमाम शाफ़िई ने इस हदीष से क़याफ़ा को सहीह समझा है। यहाँ इस हदीष के लाने से ये साबित करना मंज़ूर है कि आपकी पेशानी में लकीरें थीं। इस हदीष में आपकी फ़रहत व मुसरत का ज़िक्र है जो आपके अछलाके फ़ाज़िला के बारे में है। इसीलिये हदीष को यहाँ लाए।

3556. हमसे यह्या बिन बुक़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन क़अब ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन क़अब ने बयान किया कि मैंने क़अब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना। आप ग़ज़व-ए-तबूक़ में अपने पीछे रह जाने का वाक़िया बयान कर रहे थे, उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने (तौबा कुबूल होने के बाद) हाज़िर होकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को सलाम किया तो चेहरा मुबारक ख़ुशी से चमक रहा था। जब भी हुज़ूर (ﷺ) किसी बात पर ख़ुश होते तो उनका चेहरा मुबारक चमक उठता, ऐसा मा'लूम होता जैसे चाँद का टुकड़ा हो और आपकी ख़ुशी को हम उसी से पहचान जाते थे। (राजेअ: 2757)

۳۵۵۶- حَدَّثَنَا يَحْيَىٰ بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ نُبُوكَ قَالَ: فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ تَبَرَّقَ وَجْهَهُ مِنَ السُّرُورِ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا سُرَّ اسْتَبْرَأَ وَجْهَهُ حَتَّى كَأَنَّهُ قِطْعَةٌ قَمَرٍ، وَكُنَّا نَعْرِفُ ذَلِكَ مِنْهُ).

[راجع: ۲۷۵۷]

3557. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अमर बिन अबी

۳۵۵۷- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَمْرِو عَنْ

अमर ने, उनसे सईद मक्बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुसैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं (हज़रत आदम से लेकर) बराबर आदमियों के बेहतर क़र्नों में होता आया हूँ (या'नी शरीफ़ और पाकीज़ा नस्लों में) यहाँ तक कि वो क़र्न (ज़माना) आया जिसमें मैं पैदा हुआ।

سَعِيدُ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((بُعِثْتُ مِنْ خَيْرِ قُرُونِ بَنِي آدَمَ قُرُونًا فَفَرَّقْنَا حَتَّى كُنْتُ مِنَ الْقُرُونِ الَّتِي كُنْتُ مِنْهَا)).

तशरीह:

मतलब ये है कि आदम (अलैहिस्सलाम) के बाद आँहज़रत (ﷺ) के नसब के जितने भी सिलसिले हैं वो सब आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से बेहतरीन ख़ानदान गुजरे हैं। आपके अज्दाद में हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं, फिर हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) हैं, जो अबुल अरब हैं। उसके बाद अरबों के जितने सिलसिले हैं। उन सब में आपका ख़ानदान सबसे ज़्यादा शरीफ़ और रफ़ीअ था। आपका ता'ल्लुक इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद की शाख़ बनी किनाना से, फिर कुरैश से, फिर बनी हाशिम से हैं। क़र्न की मुद्दत चालीस साल से एक सौ बीस साल तक बतलाई गई है कि ये एक क़र्न होता है। वल्लाहु आलम।

3558. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (सर के आगे के बालों को पेशानी पर) पड़ा रहने देते थे और मुसिकीन की ये आदत थी कि वो आगे के सर के बाल दो हिस्सों में तक्सीम कर लेते थे (पेशानी पर पड़ा नहीं रहने देते थे) और अहले किताब (यहूद व नसारा) सर के आगे के बाल पेशानी पर पड़ा रहने देते थे। आँहज़रत (ﷺ) उन मामलात में जिनके बारे में अल्लाह तआला का कोई हुक्म आपको न मिला होता, (उनमें) अहले किताब की मुवाफ़क़त पसन्द फ़र्माते (और हुक्म नाज़िल होने के बाद वहा पर अमल करते थे) फिर हुज़ूर (ﷺ) भी सर में मांग निकालने लगे। (दीगर मक़ाम: 3944, 5917)

٣٥٥٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَسْدِلُ شَعْرَهُ، وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ يَفْرُقُونَ رُؤُوسَهُمْ فَكَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدِلُونَ رُؤُوسَهُمْ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُجِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ فِيمَا لَمْ يُؤْمَرْ فِيهِ بِشَيْءٍ، ثُمَّ فَرَّقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رَأْسَهُ)).

[طروحه لي: ٣٩٤٤، ٥٩١٧]

और पेशानी पर लटकाना छोड़ दिया। शायद आपको हुक्म आ गया होगा।

3559. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बद जुबान और लड़ने झगड़ने वाले नहीं थे, आप फ़र्माया करते थे कि तुममें सबसे बेहतर वो शाख़्स है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों (जो लोगों से कुशादा पेशानी से पेश आए)।

٣٥٥٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ فَاجِشًا وَلَا مُتَفَحِّشًا، وَكَانَ يَقُولُ: ((إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحْسَنَكُمْ أَخْلَاقًا)).

3560. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उर्बा बिन जुबैर ने और उनसे आइशा (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से जब भी दो चीजों में से किसी एक के इख्तियार करने के लिये कहा गया तो आपने हमेशा उसी को इख्तियार फ़र्माया जिसमें आपको ज़्यादा आसानी या लूम हुई बशर्ते कि उसमें कोई गुनाह न हो। क्योंकि अगर उसमें गुनाह का कोई अंदेशा भी होता तो आप उससे सबसे ज़्यादा दूर रहते और आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी ज़ात के लिये कभी किसी से बदला नहीं लिया। लेकिन अगर अल्लाह की हुर्मत को कोई तोड़ता तो आप उससे ज़रूर बदला लेते थे। (दीगर मक़ाम : 6126, 6876, 6853)

[أطرافه في: ٦٠٣٥، ٦٠٣٩، ٣٧٥٩] ٣٥٦٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((مَا خَيَّرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلَّا أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا، فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ، وَمَا اتَّقَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِنَفْسِهِ، إِلَّا أَنْ تَتَهَلَّكَ حُرْمَةُ اللَّهِ فَيَنْتَقِمَ اللَّهُ بِهَا)).

[أطرافه في: ٦١٨٥٣، ٦٧٨٦، ٦١٢٦]

तशरीह: अब्दुल्लाह बिन हज़ल या उर्बा बिन अबी मुईत या अबू राफ़ेअ यहूदी या कअब बिन अशरफ़ को जो आपने क़त्ल करवाया वो भी अपनी ज़ात के लिये न था बल्कि उन लोगों ने अल्लाह के दीन में खलल डालना, लोगों को बहकाना और फ़ितना व फ़साद भड़काना अपना रात-दिन का खेल बना लिया था। इसलिये क़यामे अमन के वास्ते उन फ़साद पसन्दों को ख़त्म कराया गया। वरना ये बात रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह है कि अगर आप अपनी ज़ात के लिये बदला लेते तो उस यहूदन को ज़रूर क़त्ल कराते जिसने दा'वत देकर बकरी के गोश्त में ज़हर मिलाकर आपको क़त्ल करना चाहा था, या उस मुनाफ़िक़ को क़त्ल कराते जिसने माले ग़नीमत की तक्सीम पर आपकी दयानत पर शक किया था मगर उन सबको मुआफ़ कर दिया गया। जान से प्यारे चचा हज़रत हम्ज़ा (रजि.) को बेददी से क़त्ल करने वाला वहशी बिन हर्ब जब आपके सामने आया तो आपको सख़्त तकलीफ़ होने के बावजूद न सिर्फ़ ये कि आपने उसे मुआफ़ी दी बल्कि उसका इस्लाम भी कुबूल किया और फ़तहे मक्का के दिन तो आपने जो कुछ किया उस पर आज तक दुनिया हैरान है।

3561. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अब्बाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रजि.) ने बयान किया कि न तो नबी करीम (ﷺ) की हथेली से ज़्यादा नरम व नाज़ुक कोई हरीर व दीबाज मेरे हाथों ने कभी छुआ और न मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की खुशबू या आपके पसीने से ज़्यादा बेहतर और पाकीज़ा कोई खुशबू या इत्र सूँघा। (राजेअ: 1191)

3562. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अब्दुल्लाह इब्ने अबी इत्बा ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर्दा नशीन कुंवारी लड़कियों से भी

٣٥٦١ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَا مَسَسْتُ حَرِيرًا وَلَا دِيبَاجًا أَلَيْنَ مِنْ كَفِّ النَّبِيِّ ﷺ، وَلَا شَمِعْتُ رِيحًا فُطً - أَوْ عَرَفًا فُطً - أَطْيَبَ مِنْ رِيحِ - أَوْ عَرَقِ - النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: ١١٤١]

٣٥٦٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي غَثَبَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَشَدَّ حَيَاءً مِنْ

ज़्यादा शर्मीले थे। (दीगर मक़ाम : 6102, 6119,)

الْعَدْرَاءُ فِي خِدْرَاهَا)).

[طرماء في : ٦١٠٢, ٦١١٩].

हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे यहा बिन सईद क़ज़ान और इब्ने महदी दोनों ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने इसी तरह बयान किया (उस ज़्यादाती के साथ) कि जब आप किसी बात को बुरा समझते तो आपके चेहरे पर उसका अंश ज़ाहिर हो जाता।

خَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَىٰ وَابْنُ مَهْدِيٍّ قَالَا : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ مِثْلَهُ : ((وَإِذَا كَرِهَ شَيْءٌ عَرَفَ فِي وَجْهِهِ)).

बज़ार की रिवायत में है कि आपका कभी किसी ने सतर नहीं देखा।

3563. मुझसे अली बिन ज़अदि ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला, अगर आपको मरगूब (पसन्द) होता तो खाते वरना छोड़ देते। (दीगर मक़ाम : 5409)

٣٥٦٣- خَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ أَبِي خَارِمْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا قَطُّ، إِنْ اشْتَهَاهُ أَكَلَهُ، وَإِلَّا تَرَكَهُ)). [طرفه في : ٥٤٠٩].

अल्लाह वालों की यही शान होती है, बरख़िलाफ़ उसके दुनिया परस्त, शिकम-परस्त (पेट-पुजारी) लोग खाना खाने बैठते हैं और हर लुप्त में ऐब निकालना शुरू कर देते हैं। अल्लाह पाक हर मुसलमान को उस्व-ए-रसूल पर अमल की तौफ़ीक़ बख़शे। (आमीन)

3564. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे बक्र बिन मुज़र ने बयान किया, उनसे ज़ा'फ़र बिन रबीआ ने, उनसे अअरज ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना असदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब सज्दा करते तो दोनों हाथ पेट से अलग रखते यहाँ तक कि आपकी बगलें हम लोग देख लेते। इब्ने बुकैर ने बक्र से रिवायत की उसमें यूँ है, यहाँ तक कि आपकी बगलों की सफ़ेदी दिखाई देती थी।

٣٥٦٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مَصْرٍ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ زَبِيْعَةَ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ الْأَسَدِيِّ قَالَ : ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا سَجَدَ فَرَجَ بَيْنَ يَدَيْهِ حَتَّى يَرَىٰ إِبْطِيَهُ)). قَالَ : وَقَالَ ابْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا بَكْرٌ : ((يَبَاضُ إِبْطِيَهُ)). [راجع : ٣٩٠]

(राजेअ : 390)

3565. हमसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद ने बयान किया उन्होंने क़तादा से, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दुआए इस्तिस्का के सिवा और किसी दुआ में (ज़्यादा कँचे) हाथ नहीं उठाते थे। इस दुआ में आप इतने कँचे हाथ उठाते कि बग़ल मुबारक की सफ़ेदी दिखाई देती थी।

٣٥٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ خَمَادٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ دُعَائِهِ إِلَّا فِي اسْتِسْقَاءٍ فَإِنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يَرَىٰ بَيَاضَ إِبْطِيهِ)).

(राजेअ : 1031)

[रामे : 1031]

इस हदीस के लाने की गर्ज यहाँ ये है कि आपकी बगलें बिल्कुल सफेद और साफ थीं ।

3566. हमसे हसन बिन सब्बाह बज़ार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग्वल ने बयान किया, कहा कि मैंने और बिन अबी जुहैफ़ा से सुना, वो अपने वालिद (अबू जुहैफ़ा रज़ि.) से नक़ल करते थे कि मैं सफ़र के इरादे से नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप अब्तह में (मुहम्मद में) ख़ैमा के अंदर तशरीफ़ रखते थे। कड़ी दोपहर का वक़्त था, इतने में बिलाल (रज़ि.) ने बाहर निकलकर नमाज़ के लिये अज़ान दी और अंदर आ गये और हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने ओहज़रत (ﷺ) के वुजू का बचा हुआ पानी निकाला तो लोग उसे लेने के लिये टूट पड़े। फिर हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने एक नेज़ा निकाला और ओहज़रत (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए, गोया आपकी पिण्डलियों की चमक अब भी मेरी नज़रों के सामने है। बिलाल (रज़ि.) ने (सुतरा के लिये) नेज़ा गाड़ दिया। आपने जुहूर और अम्र की दो दो रक़अत क़स्र नमाज़ पढ़ाई, गंधे और औरतें आपके सामने से गुज़र रही थीं। (राजेअ : 187)

बर्ही सुतरा के तौर पर आपके आगे गाड़ दी गई थी। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आपकी पिण्डलियाँ निहायत ख़ूबसूरत और चमकदार थीं।

3567. मुझसे हसन बिन सब्बाह बज़ार ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे इब्ना ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) इस क़द्र ठहर ठहरकर बातें करते कि अगर कोई शख़्स (आप ﷺ के अल्फ़ाज़) गिन लेना चाहता तो गिन सकता था। (दीगर मक़ाम : 3568)

3568. और लैष ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे इब्ना बिन जुबैर ने ख़बर दी और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू फ़लाँ (हज़रत अबू हुदैर रज़ि.) पर तुम्हें ता'जुब नहीं हुआ, वो आए और मेरे हुज़े के एक कोने में बैठकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की अहादीस मुझे सुनाने के लिये बयान करने लगे। मैं उस वक़्त नमाज़ पढ़ रही थी। फिर वो मेरी नमाज़ ख़त्म होने से पहले ही उठकर चले

3566- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَوْنَ بْنَ أَبِي جَحْفَةَ ذَكَرَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((دُفِعْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ بِالْأَبْطَحِ فِي قُبَّةٍ كَانَ بِهَا جَرَّةٌ، فَخَرَجَ بِلَالٌ فَنَادَى بِالصَّلَاةِ، ثُمَّ دَخَلَ فَأَخْرَجَ فَضْلَ وَضَوْءَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَوَقَعَ النَّاسُ عَلَيْهِ يَأْخُذُونَ مِنْهُ، ثُمَّ دَخَلَ فَأَخْرَجَ الْفَنَزَةَ، وَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبَيْصِ سَاقِيهِ، فَوَكَزَ الْفَنَزَةَ ثُمَّ صَلَّى رَكَعَتَيْنِ، وَالْفَضْرَ رَكَعَتَيْنِ، يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْهِ الْجَمَارُ وَالْمَرْأَةُ)). [رَامِئ : 187]

3567- حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبَزَّازُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُحَدِّثُ حَدِيثًا لَوْ غَدَا الْعَادُّ لِأَخْصَاءَهُ)). [طَرَفُهُ فِي : 3568]

3568- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّهَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ: ((أَلَا يُعْجِبُكَ أَبُو فَلَانٍ جَاءَ فَجَلَسَ إِلَيَّ جَانِبِ حُجْرَتِي يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يُسْمِعُنِي ذَلِكَ، وَكُنْتُ أَسْتَحْ، فَلَقَامَ قَبْلَ

गये। अगर वो मुझे मिल जाते तो मैं उनकी खबर लेती कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारी तरह यूँ जल्दी जल्दी बातें नहीं किया करते थे। (राजेअ: 3567)

أَنْ أَفْصِي سَخِي، وَلَوْ أَذْرَكْتَهُ لَرَدَدْتُ عَلَيْهِ، إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمْ يَكُنْ يَسْرُدُ الْحَدِيثَ كَسَرْدِكُمْ)) [راجع: 3567]

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की तेज़ बयानी और झुल्लते लिसानी (जल्दी कहने) पर इंकार किया था और इशारा ये था कि आँहज़रत (ﷺ) की बातचीत बहुत आहिस्ता आहिस्ता हुआ करती थी कि सुनने वाला आपके अल्फ़ाज़ को गिन सकता था। गोया इसी तरह आहिस्ता आहिस्ता कलाम करना और कुआँन व हदीष सुनाना चाहिये। लेकिन मज्मअ-ए-आम और खुत्बा में ये कैद नहीं लगाई जा सकती क्योंकि सहीह अहदीष से साबित है कि जब आँहज़रत (ﷺ) तौहीद का बयान करते या अज़ाबे इलाही से डराते तो आपकी आवाज़ बहुत बढ़ जाती और गुस्सा ज़्यादा हो जाता वगैरह। यहाँ ये नतीजा निकालना कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायते हदीष पर ए'तिराज़ किया, ये बिल्कुल बातिल है और तौजीहुल्कौलि बिमा ला यज़ा बिहिल्काइलु में दाखिल है या 'नी किसी के क़ौल की ऐसी ता'बीर करना जो खुद कहने वाले के ज़हन में भी न हो।

बाब 24 : नबी करीम (ﷺ) की आँखें ज़ाहिर में सोती थीं लेकिन दिल गाफ़िल नहीं होता था

उसकी रिवायत सईद बिन मीनाअने जाबिर (रज़ि.) से की है और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

3569. हमसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे सईद मक्बरी ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्होंने आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रमज़ान शरीफ़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ (तहज़ुद या तरावीह) की क्या कैफ़ियत होती थी? उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) रमज़ान मुबारक या दूसरे किसी भी महीने में ग़्यारह रकआत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे (उन ही को तहज़ुद कहो या तरावीह) पहले आप चार रकआत पढ़ते, वो रकआतें कितनी लम्बी होती थीं, कितनी उसमें खूबी होती थी उसके बारे में न पूछो। फिर आप चार रकआत पढ़ते। ये चारों भी कितनी लम्बी होतीं और उनमें कितनी खूबी होती। उसके बारे में न पूछो। फिर आप तीन रकआत वित्र पढ़ते। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप वित्र पढ़ने से पहले क्यूँ सो जाते हैं? आपने फ़र्माया मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल बेदार रहता है। (राजेअ: 1147)

٢٤- بَابُ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ تَنَامُ عَيْنُهُ وَلَا يَنَامُ قَلْبُهُ

رَوَاهُ سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

٣٥٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: كَيْفَ كَانَ صَلَاةُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي رَمَضَانَ؟ قَالَتْ: مَا كَانَ يَزِيدُ فِي رَمَضَانَ وَلَا غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً: يُصَلِّي أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ فَلَا تَسْأَلُ عَنْ حُسَيْنٍ وَطَوِيلِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلَا تَسْأَلُ عَنْ حُسَيْنٍ وَطَوِيلِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلَاثًا فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ تَنَامُ قَلْبُكَ أَنْ تَوْبُو؟ قَالَ: ((تَنَامُ عَيْنِي وَلَا يَنَامُ قَلْبِي)).

[راجع: 1147]

तशरीह:

रमज़ान शरीफ़ में इसी नमाज़ को तरावीह के नाम से मौसूम किया गया और ग़ैर रमज़ान में ये नमाज़ तहज़ुद के नाम से मशहूर हुई। उनको अलग अलग क्रार देना सहीह नहीं है। आप रमज़ान हो या ग़ैर रमज़ान तरावीह या

तहज्जुद प्यारह रकआत से ज्यादा नहीं पढ़ते थे जिनमें आठ रकअत नफल नमाज़ और तीन वित्र शामिल होते थे। उस साफ़ और सरीह हदीष के होते हुए आठ रकआत तरावीह को खिलाफ़े सुन्नत कहने वाले लोगों को अल्लाह नेक समझ अता फ़र्माए कि वो एक प्राबितशुदा सुन्नत के मुंकिरीन बनकर फ़साद बरपा करने से बाज़ रहें, आमीन! बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है।

3570. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई (अब्दुल हमीद) ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो मस्जिदे हुराम से नबी करीम (ﷺ) की मेअराज का वाक़िया बयान कर रहे थे कि (मेअराज से पहले) तीन फ़रिश्ते आए। ये आप पर वहा नाज़िल होने से भी पहले का वाक़िया है, उस वक़्त आप मस्जिदे हुराम में (दो आदमियों हज़रत हम्ज़ा और जा'फ़र बिन अबी तालिब के दरम्यान) सो रहे थे। एक फ़रिश्ते ने पूछा, वो कौन हैं? (जिनको ले जाने का हुक्म है) दूसरे ने कहा कि वो दरम्यान वाले हैं। वही सबसे बेहतर हैं, तीसरे ने कहा कि फिर जो सबसे बेहतरीन हैं उन्हें साथ ले चलो। उस रात सिर्फ़ इतना ही वाक़िया होकर रह गया। फिर आपने उन्हें नहीं देखा लेकिन फ़रिश्ते एक और रात में आए। आप दिल की निगाह से देखते थे और आपकी आँखें सोती थीं पर दिल नहीं सोता था और तमाम अंबिया की यही कैफ़ियत होती है कि जब उनकी आँखें सोती हैं तो दिल उस वक़्त भी बेदार होता है। गर्ज़ कि फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आपको अपने साथ लिया और आसमान पर चढ़ा ले गए। (दीगर मक्क़ाम : 4969, 5610, 6571, 5717)

٣٥٧٠ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَلِيمَانَ عَنْ شَرِيكَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَمْرٍ: ((سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُنَا عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَّ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ مَسْجِدِ الْكَفَّةِ. جَاءَهُ ثَلَاثَةُ نَفَرٍ قَبْلَ أَنْ يُوحَى إِلَيْهِ - وَهُوَ نَائِمٌ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ - فَقَالَ أُولَئِهِمْ - أَيُّهُمْ هُوَ؟ فَقَالَ أَوْسَطُهُمْ: هُوَ خَيْرُهُمْ. وَقَالَ آخِرُهُمْ: حُدُّوا خَيْرَهُمْ فَكَانَتْ تِلْكَ. فَلَمْ يَزَمْ حَتَّى جَاؤُوا لَيْلَةً أُخْرَى فِيمَا يَرَى قَلْبُهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ نَائِمٌ عَيْنَاهُ وَلَا يَتَأَمَّ قَلْبُهُ، وَكَذَلِكَ الْأَنْبِيَاءُ تَنَامُ أَعْيُنُهُمْ وَلَا تَنَامُ قُلُوبُهُمْ فَتَوَلَّاهُ جِبْرِيلُ، ثُمَّ عَرَّجَ بِهِ إِلَى السَّمَاءِ)). [إطرافه في : ٤٩٦٤، ٥٦١٠، ٦٥٨١، ٥٧١٧]

तशीह : उसके बाद वही किस्सा गुजरा जो मेअराज वाली हदीष में ऊपर गुजर चुका है। इस रिवायत से उन लोगों ने दलील ली है जो कहते हैं कि मेअराज सोते में हुआ था। मगर ये रिवायत शाज़ है, सिर्फ़ शरीक ने ये रिवायत किया है कि आप उस वक़्त सो रहे थे। अब्दुल हक्क ने कहा कि शरीक की रिवायत मुंफरिद व मजहूल है और अक़्बर अहले हदीष का इस पर इतिफ़ाक़ है कि मेअराज बेदारी में हुआ था (वहीदी)। मुतर्जिम कहता है कि इस हदीष से मेअराजे जिस्मानी का इंकार प्राबित करना कजफ़हमी है। रिवायत के आख़िर में साफ़ मौजूद है, लाम अरजा बिही इलस्समाई या'नी जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आपको जिस्मानी तौर से अपने साथ लेकर आसमान की तरफ़ चढ़े। हाँ उस वाक़िया का आगाज़ ऐसे वक़्त में हुआ कि आप मस्जिदे हुराम में सो रहे थे। बहरहाल मेअराजे जिस्मानी हक़ है जिसके कुर्आन व हदीष में बहुत से दलाइल हैं। उसका इंकार करना सूरज के वजूद का इंकार करना है जबकि वो निस्फुन्नहार में चमक रहा हो।

बाब 25 : आँहज़रत (ﷺ) के मुअजज़ों या'नी
नुबुव्वत की निशानियों का बयान

٢٥ - بَابُ غَلَامَاتِ النُّبُوَّةِ فِي
الإِسْلَامِ

तशरीह:

मुअज्जिज़ाते नबवी की बहुत तवील फ़ेहरिस्त है। इलमाने उस इन्वान पर मुस्तकिल किताबें लिखी हैं। उस बाब के ज़ेल में इमाम बुखारी (रह) बहुत सी अह्दाइय लाए हैं और हर हदीस में कुछ न कुछ मुअज्जिज़ाते नबवी का बयान है। कुछ खर्क आदात (आदात के विपरीत) हैं और कुछ पेशीनगोइयाँ हैं जो बाद के ज़मानों में हर्फ़ ब हर्फ़ ठीक षाबित होती चली आ रही हैं। मक़ामे रिसालत को समझने के लिये इस बाब का ग़ौरो ख़ौज़ के साथ मुतालआ करना ज़रूरी है।

3571. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कदा हमसे सलम बिन ज़ुरैर ने बयान किया, उन्होंने अबू रज़ाअ से सुना कि हमसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे, रात भर सब लोग चलते रहे जब सुबह का वक़्त करीब हुआ तो पड़ाव किया (चूँकि हम थके हुए थे) इसलिये सब लोग इतनी गहरी नींद सो गये कि सूरज पूरी तरह निकल आया। सबसे पहले अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) जागे। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) को, जब आप सोते होते तो जगाते नहीं थे। यहाँ तक कि आप खुद ही जागते, फिर इमर (रज़ि.) भी जाग गये। आखिर अबूबक्र (रज़ि.) आपके सरे मुबारक के करीब बैठ गये और बुलन्द आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहने लगे। उससे आँहज़रत (ﷺ) भी जाग गये और वहाँ से कूच का हुक्म दे दिया। (फिर कुछ दूरी पर तशरीफ़ लाए) और यहाँ आप उतरे और हमें सुबह की नमाज़ पढ़ाई, एक शख्स हमसे दूर कोने में बैठा रहा। उसने हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी। आँहज़रत जब नमाज़ से फ़ारिग हुए तो आपने उससे फ़र्माया कि ऐ फ़लाँ! हमारे साथ नमाज़ पढ़ने से तुम्हें किस चीज़ ने रोका? उसने अर्ज़ किया कि मुझे गुस्ल की हाज़त हो गई है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे हुक्म दिया कि पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो (फिर उसने भी तयम्मूम के बाद) नमाज़ पढ़ी। हज़रत इमरान (रज़ि.) कहते हैं कि फिर आँहज़ूर (ﷺ) ने मुझे चन्द सवारों के साथ आगे भेज दिया। (ताकि पानी तलाश करें क्योंकि) हमें सख़्त ध्यास लगी हुई थी। अब हम इसी हालत में चल रहे थे कि हमें एक औरत मिली जो दो मशकों के दरम्यान (सवारी पर) अपने पाँव लटकाए हुए जा रही थी हमने उससे कहा कि पानी कहाँ मिलता है? उसने जवाब दिया कि यहाँ पानी नहीं है। हमने उससे पूछा कि तुम्हारे घर से पानी कितने फ़ासले पर है? उसने जवाब दिया कि एक दिन एक रात की दूरी है। हमने उससे कहा कि अच्छा तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में चलो। वो बोली रसूलुल्लाह (ﷺ) के क्या मा'नी हैं? इमरान (रज़ि.) कहते

۳۵۷۱- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا سَلَمُ بْنُ زُرَيْرٍ سَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَسِيرٍ فَأَذْلَجُوا لَيْلَهُمْ، حَتَّى إِذَا كَانَ وَجْهُ الصُّبْحِ عَرُسُوا، فَلَبِثَهُمْ أَعْيُنُهُمْ حَتَّى ارْتَفَعَتِ الشَّمْسُ، فَكَانَ أَوَّلَ مَنْ اسْتَيْقَظَ مِنْ مَنَامِهِ أَبُو بَكْرٍ - وَكَانَ لَا يُوقِظُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ مَنَامِهِ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ - فَاسْتَيْقَظَ عُمَرُ، فَتَعَدَّ أَبُو بَكْرٍ عِنْدَ رَأْسِهِ فَجَعَلَ يُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ صَوْتَهُ حَتَّى اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَزَلَّ وَصَلَّى بِنَا الْغَدَاةَ، فَأَعْتَزَلَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ لَمْ يُصَلِّ مَعَنَا، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((يَا فَلَانُ مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تُصَلِّيَ مَعَنَا؟)) قَالَ: أَصَابَنِي جَنَابَةٌ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَتِمَّمَ بِالصُّعَيْدِ ثُمَّ صَلَّى، وَجَعَلَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَكُوبٍ بَيْنَ يَدَيْهِ وَقَدْ غَطَّيْنَا غَطًّا شَدِيدًا، فَيَنْمُو نَحْنُ نَسِيرُ إِذَا نَحْنُ بِامْرَأَةٍ سَادِلَةٍ رَجُلَيْهَا بَيْنَ مَزَادَتَيْنِ، فَلَقْنَا لَهَا: أَيْنَ الْمَاءُ؟ فَقَالَتْ: إِنَّهُ لَا مَاءَ. فَلَقْنَا: كَمْ

हैं आखिर हम उसे आँहुज़र (ﷺ) की खिदमत में लाए। उसने आपसे भी वही कहा जो हमसे कह चुकी थी। हौं इतना और कहा कि वो यतीम बच्चों की माँ है (इसलिये वाजिबुरहम है) आँहुज़रत (ﷺ) के हुक्म से उसके दोनों मशकीज़ों को उतारा गया और आपने उनके दहानों पर दस्ते मुबारक फेरा। हम चालीस प्यासे आदमियों ने उसमे से ख़ूब सैरा ा होकर पिया और अपने तमाम मशकीज़े और बाल्टियाँ भी भर लीं सिर्फ़ हमने ऊँटों को पानी नहीं पिलाया, उसके बावजूद उसकी मशकें पानी से इतनी भरी हुई थीं कि मा'लूम होता था अभी बह पड़ेगी। उसके बाद आँहुज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कुछ तुम्हारे पास है (खाने की चीज़ों में से हो) मेरे पास लाओ। चुनाँचे उस औरत के सामने टुकड़े और खजूरें लाकर जमा कर दी गईं। फिर जब वो अपने क़बीले में आई तो अपने आदमियों से उसने कहा कि आज मैं सबसे बड़े जादूगर से मिलकर आई हूँ या फिर जैसा कि (उसके मानने वाले) लोग कहते हैं, वो वाक़ई नबी है। आखिर अल्लाह तआला ने उसके क़बीले को उसी औरत की वजह से हिदायत दी। वो खुद भी इस्लाम लाई और तमाम क़बीले वालों ने भी इस्लाम कुबूल कर लिया।

(राजेअ: 344)

بَيْنَ أَهْلِكَ وَبَيْنَ الْمَاءِ؟ قَالَتْ: يَوْمَ وَثِيلَةٍ. فَقُلْنَا: انْطَلِقِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَتْ: وَمَا رَسُولُ اللَّهِ؟ قُلْنَا: لَمْ نَمْلِكْهَا مِنْ أَمْرِهَا حَتَّى اسْتَقْبَلَنَا بِهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَدَّثَنِي بِمِثْلِ الَّذِي حَدَّثْتَنَا، غَيْرَ أَنَّهُ حَدَّثَنِي أَنَّهُ مُؤَمَّمَةٌ، فَأَمَرَ بِمَزَادَتِهَا فَمَسَحَ فِي الْعَرْلَانِ، فَشَرِبْنَا عِطَاشًا أَرْبَعِينَ رَجُلًا حَتَّى رَوَيْنَا، فَلَمَّا كُنَّا قُرْبَ مَعْنَا وَإِدَاوَةَ غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ نَسْقِ بَعِيرًا، وَهِيَ تَكَادُ تَبْصُ مِنْ الْجَلْدِ. ثُمَّ قَالَ: هَاتُوا مَا عِنْدَكُمْ، فَجَمَعَ لَهَا مِنَ الْكَبَرِ وَالنَّمْرِ حَتَّى أَتَتْ أَهْلَهَا فَقَالَتْ: لَقِيتُ أَسْحَرَ النَّاسِ، أَوْ هُوَ لَيْ كَمَا زَعَمُوا؟. فَهَدَى اللَّهُ ذَلِكَ الصَّرْمَ بِعِلْكَ الْمَرْأَةِ، فَأَسْلَمَتْ وَأَسْلَمُوا)).

[راجع: 344]

तशरीह: इस किस्से के बयान में इख़ितलाफ़ है। मुस्लिम मे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है कि ये वाक़िया ख़ैबर से निकलने के बाद पेश आया और अबू दाऊद में इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि ये वाक़िया उस वक़्त हुआ जब रसूले करीम (ﷺ) हुदैबिया से लौटे थे और मुसन्नफ़ अब्दुरज़ाक में है कि ये तबूक के सफ़र का वाक़िया है और अबू दाऊद में एक रिवायत की रू से इस वाक़िये का ता'ल्लुक ग़ण्व-ए-ज़ैशुल उमरा से मा'लूम होता है। एक जमाअते मुअरिख़ीन ने कहा है कि उस एक नौइयत का वाक़िया मुख्तलिफ़ औकात में पेश आया है यही उन रिवायात में तत्बीक है (तौशीह).... यहाँ आपकी दुआ से पानी में बरकत हो गई। यही मुअजज़ा बाब से मुताबक़त की वजह है।

3572. मुझसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में एक बर्तन हाज़िर

٣٥٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَى النَّبِيَّ

किया गया (पानी का) औहजरत (ﷺ) उस वक़्त (मदीना के नज़दीक) मक़ामे ज़वरा में तशीरीफ़ रखते थे। आपने उस बर्तन में हाथ रखा तो उसमें से पानी आपकी उँगलियों के दरम्यान में से फूटने लगा और उसी पानी से पूरी जमाअत ने वुजू किया। क़तादा ने कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा, आप लोग कितनी ता'दाद में थे? उन्होंने फ़र्माया कि तीन सौ होंगे या तीन सौ के करीब होंगे (राजेअ: 169)

3573. हमसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, अज़्र की नमाज़ का वक़्त हो गया था और लोग वुजू के पानी की तलाश कर रहे थे लेकिन पानी का कहीं पता नहीं था, फिर औहजरत (ﷺ) की ख़िदमत में (बर्तन के अंदर) वुजू का पानी लाया गया आपने अपना हाथ उस बर्तन में रखा और लोगों से फ़र्माया कि इसी पानी से वुजू करें। मैंने देखा कि पानी आपकी उँगलियों के नीचे से उबल रहा था चुनौचे लोगों ने वुजू किया और हर शाख़्स ने वुजू कर लिया। (राजेअ: 169)

3574. हमसे अब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हज़म बिन मेहरान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इमाम हसन बसरी से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) किसी सफ़र में थे और आपके साथ कुछ सहाबा किराम भी थे। चलते चलते नमाज़ का वक़्त हो गया तो वुजू के लिये कहीं पानी नहीं मिला। आख़िर जमाअत में से एक स़ाहब उठे और एक बड़े से (प्याले में थोड़ा सा पानी लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुए। नबी करीम (ﷺ) ने उसे लिया और उसके पानी से वुजू किया। फिर आपने अपना हाथ प्याले पर रखा और फ़र्माया कि आओ वुजू करो। पूरी जमाअत ने वुजू किया और तमाम आदाब व सुन्नत के साथ पूरी तरह कर लिया ता'दाद में सत्तर या अस्सी के लगभग थे।

صلى الله عليه وسلم يأتى وهو بالزوراء، فوضع يده في الإناء فجعل الماء ينبع من بين أصابعه، فتوضأ القوم. قال قاتدة قلت لأنس: كم كنتم؟ قال: ثلاثمائة، أو رهاء ثلاثمائة.

[راجع: ١٦٩]

٣٥٧٣- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَحَاطَتْ صَلَاةُ الْقَوْمِ، فَالْتَمَسَ الْوُضُوءَ فَلَمْ يَجِدُوهُ، فَأَتَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِوَضُوءٍ فَوَضَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَهُ فِي ذَلِكَ الْإِنَاءِ فَأَمَرَ النَّاسَ أَنْ يَتَوَضَّؤُوا مِنْهُ، فَرَأَيْتُ الْمَاءَ يَنْبُعُ مِنْ تَحْتِ أَصَابِعِهِ، فَتَوَضَّأَ النَّاسُ حَتَّى تَوَضَّؤُوا مِنْ عِنْدِ أَخِيرِهِمْ)). [راجع: ١٦٩]

٣٥٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَبْرُكٍ حَدَّثَنَا خُزَيْمٌ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ وَضِيَّ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بَعْضِ مَخَارِجِهِ وَمَعَهُ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَانْطَلَقُوا يَسِيرُونَ، فَحَضَرَتْ الصَّلَاةُ فَلَمْ يَجِدُوا مَاءً يَتَوَضَّؤُونَ، فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَجَاءَ بِقَدَحٍ مِنْ مَاءٍ يَسِيرٍ، فَأَخَذَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَتَوَضَّأَ، ثُمَّ مَدَّ أَصَابِعَهُ الْأَرْبَعِ عَلَى الْقَدَحِ، ثُمَّ قَالَ: قُومُوا فَتَوَضَّؤُوا، فَتَوَضَّأَ الْقَوْمُ حَتَّى بَلَّغُوا فِيمَا يُرِيدُونَ مِنْ

(राजेअ: 169)

الوضوء، وَكَانُوا مُتَعِينَ أَوْ نَحْوَهُ).

[راجع: ١٦٩]

3575. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने यज़ीद बिन हारून से सुना, कहा कि मुझको हुमैद ने ख़बर दी और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नमाज़ का वक़्त हो चुका था। मस्जिदे नबवी से जिनके घर करीब थे उन्होंने तो वुजू कर लिया लेकिन बहुत से लोग बाक़ी रह गये। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पत्थर की बनी हुई एक लगन लाई गई, उसमें पानी था। आपने अपना हाथ उस पर रखा लेकिन उसका मुँह इतना तंग कि आप उसके अंदर अपना हाथ फैलाकर नहीं रख सकते थे चुनौचे आपने उँगलियाँ मिला लीं और लगन के अंदर हाथ को डाल दिया फिर (उसी पानी से) जितने लोग बाक़ी रह गये थे सबने वुजू किया। मैंने पूछा कि आप हज़रात की ता'दाद क्या थी? अनस (रज़ि.) ने बताया कि अस्सी आदमी थे। (राजेअ: 169)

٣٥٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ يَزِيدَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((حَضَرَتِ الصَّلَاةُ، فَقَامَ مَنْ كَانَ قَرِيبَ الدَّارِ مِنَ الْمَسْجِدِ يَتَوَضَّأُ، وَبَقِيَ قَوْمٌ. فَأَتَى النَّبِيُّ ﷺ بِمِخْضَبٍ مِنْ حِجَارَةٍ فِيهِ مَاءٌ، فَوَضَعَ كَفَّهُ فَصَغَّرَ الْمِخْضَبَ أَنْ يَسْتَطِيعَ فِيهِ كَفَّهُ، فَضَمَّ أَصَابِعَهُ فَوَضَعَهَا فِي الْمِخْضَبِ، فَتَوَضَّأَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ خَمِيغًا. قُلْتُ: كَمْ كَانُوا؟ قَالَ: ثَمَانُونَ رَجُلًا)). [راجع: ١٦٩]

ये चार हदीषें हज़रत अनस (रज़ि.) की इमाम बुखारी (रह) ने बयान की हैं और हर एक में एक अलैहदा वाकिया का जिक्र है। अब उनमें जमा करने और इख़्तिलाफ़ दूर करने के लिये तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं है (वहीदी)। चारों अह्दादीष में आपके मुअज़्ज़ा का तज़िकरा है। इसीलिये इस बाब के ज़ेल उनको लाया गया।

3576. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे हुसैन ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी अल जअदि और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुलह हुदेबिया के दिन लोगों को प्यास लगी हुई थी नबी करीम (ﷺ) के सामने एक छागल रखा हुआ था आपने उससे वुजू किया। इतने में लोग आपके पास गये आपने फ़र्माया क्या बात है? लोगों ने कहा कि जो पानी आपके सामने है, उस पानी के सिवा न तो हमारे पास वुजू के लिये कोई दूसरा पानी है और न पीने के लिये। आपने अपना हाथ छागल में रख दिया और पानी आपकी उँगलियों के दरम्यान में से चश्मे की तरह फूटने लगा और हम सब लोगों ने उस पानी को पिया भी और उससे वुजू भी किया। मैंने पूछा आप लोग कितनी ता'दाद में थे? कहा कि अगर हम एक लाख भी होते तो वो पानी काफ़ी होता। वैसे हमारी ता'दाद उस वक़्त पन्द्रह सौ थी।

٣٥٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْحَفَدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((عَطِشَ النَّاسُ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ وَالنَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ يَدَيْهِ رُكْوَةٌ، فَتَوَضَّأَ فَجَهَشَ النَّاسُ نَحْوَهُ فَقَالَ: ((مَا لَكُمْ؟)) قَالُوا: لَيْسَ عِنْدَنَا مَاءٌ تَتَوَضَّأُ وَلَا نَشْرَبُ إِلَّا مَا بَيْنَ يَدَيْكَ. فَوَضَعَ يَدَهُ فِي الرُّكْوَةِ، فَجَعَلَ الْمَاءُ يَتَوَرَّدُ بَيْنَ أَصَابِعِهِ كَأَمْثَالِ الْعَيُونِ. فَشَرِبْنَا وَتَوَضَّأْنَا. قُلْتُ: ((كَمْ كُنْتُمْ؟)) قَالَ: لَوْ كُنَّا مِائَةً أَلْفٍ لَكُنَّا، كُنَّا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً)).

(दीगर मक्काम : 4152, 4153, 4154, 4840, 5639)

[أطرافه في : ٤١٥٤ ، ٤١٥٣ ، ٤١٥٢]

[٤٨٤٠ ، ٥٦٣٩].

क्योंकि आपकी उँगलियों से अल्लाह तआला ने चश्मा जारी कर दिया, फिर पानी की क्या कमी थी। ये आपका मुअज्जा था। (ﷺ)

3577. हमसे मालिक बिन इसमाईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि मुलहे हुदैबिया के दिन हम चौदह सौ की ता'दाद में थे। हुदैबिया एक कुँए का नाम है हमने उससे इतना पानी खींचा कि उसमें एक क़तरा भी बाक़ी न रहा (जब रसूले करीम ﷺ) को उसकी ख़बर मा'लूम हुई तो आप तशरीफ़ लाए) और कुँए के किनारे बैठकर पानी की दुआ की और उस पानी से कुल्ली की और कुल्ली का पानी कुँए में डाल दिया। अभी थोड़ी देर भी नहीं हुई थी कुँआ फिर पानी से भर गया, हम भी उससे ख़ूब सैर हुए और हमारे कैंट भी सैराब हो गये, या पानी पीकर लौटे। (दीगर मक्काम : 4150, 4151)

٣٥٧٧- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: ((كُنَّا يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً، وَالْحُدَيْبِيَّةُ بَنُو، فَتَوَخَّاهَا حَتَّى لَمْ نَقْرَأْ فِيهَا فُطْرَةً، فَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى شَفِيرِ الْبَيْرِ، لَدَعَا بِمَاءٍ فَمَضْمَضَ وَمَجَّ فِي الْبَيْرِ، فَمَكَّنَا غَيْرَ تَجْدٍ، ثُمَّ اسْتَقْنَا حَتَّى رَوَيْنَا وَرَوَتْ - أَوْ صَدَرَتْ - رَكَائِشُنَا)). [أطرافه في : ٤١٥٠ ، ٤١٥١].

रावी को शक है कि खत रकाइबुना कहा या सदरत रकाबुना मफ़हूम दोनों का एक ही है। ये भी औहज़रत (ﷺ) का मुअज्जा था, इसीलिये इस बाब के ज़ेल इसे ज़िक्र किया गया।

3578. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि अबू तलहा (रज़ि.) ने (मेरी वालिदा) उम्मे सुलैम (रज़ि.) से कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की आवाज़ सुनी तो आपकी आवाज़ में बहुत ज़ुअफ़ मा'लूम हुआ। मेरा ख़याल है कि आप बहुत भूखे हैं क्या तुम्हारे पास कुछ खाना है? उन्होंने कहा जी हाँ। चुनाँचे उन्होंने जौ की चन्द रोटियाँ निकालीं फिर अपनी ओढ़नी निकाली और उसमें रोटियों को लपेटकर मेरे हाथ में छुपा दिया और उस ओढ़नी का दूसरा हिस्सा मेरे बदन पर बाँध दिया, उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मुझे भेजा। मैं जो गया तो आप मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे, आपके साथ बहुत से सहाबा भी बैठे हुए थे। मैं आपके पास खड़ा हो गया तो आपने फ़र्माया क्या अबू तलहा ने तुम्हें भेजा है? मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ, आपने दरयाफ़्त

٣٥٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ ((قَالَ أَبُو طَلْحَةَ لَأُمِّ سَلِيمٍ: لَقَدْ سَمِعْتُ صَوْتَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ضَعِيفًا أَعْرَفَ فِيهِ الْجَوْعَ، فَهَلْ جِئْتُكَ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ. فَأَخْرَجَتْ أَقْرَاصًا مِنْ خَبِيرٍ، ثُمَّ أَخْرَجَتْ خِمَارًا لَهَا فَلَقَتْ الْخَبَرَ بِنَغْصِيهِ، ثُمَّ دَسَتْهُ تَحْتَ يَدَيَّ وَلَا تَنِي بِنَغْصِيهِ ثُمَّ أَرْسَلْتَنِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، قَالَ: فَدَعَيْتُ بِهِ فَوَجَدْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي الْمَسْحِدِ وَمَعَهُ النَّاسُ، فَقُمْتُ عَلَيْهِمْ،

किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क्रमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मुअज्जात को हम तो बाज़िषे बरकत समझते थे और तुम लोग उससे डरते हो। एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे और पानी तक्रीबन ख़त्म हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कुछ भी पानी बच गया हो उसे तलाश करो। चुनौचे लोग एक बर्तन में थोड़ा सा पानी लाए। आपने अपना हाथ बर्तन में डाल दिया और फ़र्माया, बरकत वाला पानी लो और बरकत तो अल्लाह तआला ही की तरफ़ से होती है। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की डँगलियों के दरम्यान में से पानी फ़व्वारे की तरह फूट रहा था और हम तो आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में खाते वक़्त खाने की तस्बीह सुनते थे।

عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: ((كُنَّا نَعُدُّ الْآيَاتِ بَرَكَةً، وَأَنْتُمْ تَعُدُّونَهَا تَخَوُّفًا، كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي سَفَرٍ فَقُلَّ الْمَاءُ، فَقَالَ: ((اطْلُبُوا فَضْلَةً مِنْ مَاءٍ)). فَجَاؤُوا بِإِنَاءٍ فِيهِ مَاءٌ قَلِيلٌ، فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِي الْإِنَاءِ ثُمَّ قَالَ: ((حُمِّي عَلَى الطُّهُورِ الْمُبَارَكِ، وَالتَّبَرَكَةُ مِنَ اللَّهِ)). فَلَقَدْ رَأَيْتُ الْمَاءَ يَتَّبِعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَلَقَدْ كُنَّا نَسْمَعُ تَسْبِيحَ الطَّعَامِ وَهُوَ يُؤْكَلُ)).

तशरीह : ये रसूलुल्लाह (ﷺ) का मुअज्जा था कि सहाब-ए-किराम अपने कानों से खाने वगैरह में से तस्बीह की आवाज़ सुन लेते थे। वरना हर चीज़ अल्लाह पाक की तस्बीह बयान करती है। जैसा कि फ़र्माया, व इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व ला किल्ला तफ़्क़हुन तस्बीहुहुम (बनी इस्राईल : 44) हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह बयान करती है लेकिन तुम उनकी तस्बीह को समझ नहीं पाते। इमाम बैहकी (रह) ने दलाइल में निकाला है कि आपने सात कंकरियाँ लीं, उन्होंने आपके हाथ में तस्बीह कही उनकी आवाज़ सुनाई दी। फिर आपने उनको अबूबक्र (रज़ि.) के हाथों में रख दिया। फिर उमर (रज़ि.) के हाथ में फिर उप्मान (रज़ि.) के हाथ में, हर एक के हाथ तस्बीह कही। हाफ़िज़ ने कहा शक़के कमर तो कुआन और सहीह अहादीष से प्राबित है और लकड़ी का रोना भी सहीह हदीष से और कंकरियों की तस्बीह सिर्फ़ एक तरीक़ से जो ज़ईफ़ है। बहरहाल ये रसूले करीम (ﷺ) के मुअज्जात हैं जो जिस तरह प्राबित हैं इसी तरह उन पर ईमान लाना ज़रूरी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के कौल का मतलब ये है कि तुम हर निशानी और ख़क़ आदत को तख़वीफ़ समझते हो, ये तुम्हारी ग़लती है। अल्लाह की कुछ निशानियाँ तख़वीफ़ भी होती हैं जैसे ग्रहण वगैरह और कुछ निशानियाँ जैसे खाने पीने में बरकत ये तो इनायत और फ़ज़ले इलाही है।

3580. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, कहा कि मुझसे आमिर ने, कहा कि मुझसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके वालिद (अबुल्लाह बिन अम्र बिन हुराय, जंगे उहुद में) शहीद हो गये थे और वो मक़रूज़ थे। मैं रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मेरे वालिद अपने ऊपर क़र्ज़ छोड़ गये। इधर मेरे पास सिवा उस पैदावार के जो खज़ूरों से होगी और कुछ नहीं है और उसकी पैदावार से तो बरसों में क़र्ज़ अदा नहीं हो सकता, इसलिये आप मेरे साथ तशरीफ़ ले चलिये ताकि क़र्ज़ ख़वाह आपको देखकर ज़्यादा मुँह न फाड़ें। आप तशरीफ़ लाए (लेकिन वो नहीं माने) तो आप खज़ूर के जो ढेर लगे हुए थे पहले उनमें से एक के चारों तरफ़ चले और

٣٥٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا قَالَ: حَدَّثَنِي غَابِرٌ قَالَ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ: ((أَنَّ أَبَاهُ تَوَفَّى وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: إِنَّ أَبِي تَرَكَ عَلَيَّ دَيْنًا، وَلَيْسَ عِنْدِي إِلَّا مَا يُخْرِجُ نَحْلَهُ، وَلَا يَنْلُغُ مَا يُخْرِجُ سَبِينَ مَا عَلَيْهِ، فَاَنْطَلِقُ مَعَهُ بِكَمِّي لَا يَفْجِشُ عَلَيَّ الْفُرْمَاءُ. فَمَشَى حَوْلَ بَيْتِهِ مِنْ بَيَادِرِ الصُّمْرِ فَدَعَا، ثُمَّ آخَرَ، ثُمَّ جَلَسَ عَلَيْهِ فَقَالَ: ((أَنْزِعُوهُ))، فَأَوْفَاهُمْ

दुआ की। उसी तरह ढेर के भी। फिर आप उस पर बैठ गये और फर्माया कि खजूरें निकालकर उन्हें दो। चुनौचे सारा क़र्ज़ अदा हो गया और जितनी खजूरें क़र्ज़ में दी थीं उतनी ही बच भी गई।

(राजेअ: 2127)

आपकी दुआ-ए-मुबारक से खजूरों में बरकत हो गई। बाब और हदीष में यही मुताबक़त की वजह है।

أَلَدِي لَهُمْ، وَبَقِيَ مِثْلُ مَا أُعْطَاهُمْ)۔

[راجع: ٢١٢٧]

3581. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अबू इब्म़ान नहदी ने बयान किया और उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि सुफ़्फ़ा वाले मुहताज और ग़रीब लोग थे और नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया था कि जिसके घर में दो आदमियों का खाना हो तो वो एक तीसरे को भी अपने साथ लेता जाए और जिसके घर चार आदमियों का खाना हो वो पाँचवाँ आदमी अपने साथ लेता जाए या छठे को भी या आपने उसी तरह कुछ फ़र्माया (रावी को पाँच और छः में शक है) ख़ैर तो अबूबक्र (रज़ि.) तीन अस्हाबे सुफ़्फ़ा को अपने साथ लाए और आँहज़रत (ﷺ) अपने दस अस्हाबे सुफ़्फ़ा को ले गये और घर में मैं था और मेरे माँ-बाप थे, अबू इब्म़ान ने कहा मुझको याद नहीं अब्दुर्रहमान ने ये भी कहा, और मेरी औरत और खादिम जो मेरे और अबूबक्र (रज़ि.) दोनों के घरों में काम करता था। लेकिन खुद अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के साथ खाना खाया और इशा की नमाज़ तक वहीं ठहरे रहे (मेहमानों को पहले ही भेज चुके थे) इसलिये उन्हें इतना ठहरना पड़ा कि आँहज़रत (ﷺ) ने खाना खालिया। फिर अल्लाह तआला को जितना मंज़ूर था इतना हिस्सा रात का जब गुजर गया तो आप घर वापस आए, उनकी बीवी ने उनसे कहा। क्या बात हुई, आपको अपने मेहमान याद नहीं रहे? उन्होंने पूछा, क्या मेहमानों को अब तक खाना नहीं खिलाया? बीवी ने कहा कि मेहमानों ने आपके आने तक खाने से इंकार किया। उनके सामने खाना पेश किया गया था लेकिन वो नहीं माने। अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैं तो जल्दी से छुप गया (क्योंकि अबूबक्र गुस्सा हो गये थे) आपने डांटा, ऐ पाजी! और बहुत बुरा भला कहा फिर (मेहमानों से) कहा चलो अब खाओ और खुद क़सम खा ली कि मैं तो कभी न

٣٥٨١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ حَدَّثَنَا أَبُو عَثْمَانَ أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ أَصْحَابَ الصُّفَّةِ كَانُوا أَنَاثًا فَقَرَاءَ، وَأَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَرَّةً مَنْ كَانَ عِنْدَهُ طَعَامٌ اثْنَيْنِ فَلْيَذْهَبْ بِثَلَاثٍ، وَمَنْ كَانَ عِنْدَهُ طَعَامٌ أَرْبَعَةً فَلْيَذْهَبْ بِخَمْسٍ أَوْ سَادِسٍ أَوْ كَمَا قَالَ. وَإِنْ أَبَا بَكْرٍ جَاءَ بِثَلَاثَةٍ، وَأَنْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ بِعَشْرَةٍ، وَأَبُو بَكْرٍ ثَلَاثَةً. قَالَ: فَهُوَ أَنَا وَأَبِي وَأُمِّي، وَلَا أَذْرِي هَلْ قَالَ أَمْرًا يَ وَخَادِمِي يَسُ بِنَا بَيْتَ أَبِي بَكْرٍ، وَأَنَا أَبَا بَكْرٍ نَغْشَى عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ لَبِثَ حَتَّى صَلَّى الْعِشَاءَ، ثُمَّ رَجَعَ فَلَبِثَ حَتَّى نَغْشَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَجَاءَ بَعْدَ مَا مَضَى مِنَ اللَّيْلِ مَا شَاءَ اللَّهُ. قَالَتْ لَهُ أَمْرَانِ مَا حَسْبُكَ عَنْ أَصْبَاكَ - أَوْ صَبِيكَ؟ - قَالَ: أَوْعِشْتِهِمْ؟ قَالَتْ: أَبَا حَتَّى نَحْيَا، قَدْ غَرَضُوا عَلَيْهِمْ فَلَئِمُّهُمْ. فَذَهَبْتُ فَاحْتَبَأْتُ. فَقَالَ: يَا غَثْرُ - فَجَذَعُ وَسَبُّ - وَقَالَ: كُلُوا.

खाऊंगा। अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! फिर हम जो लुक्मा भी (इस खाने में से) उठाते तो जैसे नीचे से खाना और ज़्यादा हो जाता था (इतनी उसमें बरकत हुई) सब लोगों ने पेट भर कर खाया और खाना पहले से भी ज़्यादा बच रहा। अबूबक्र (रज़ि.) ने जो देखा तो खाना ज्यों का त्यों था या पहले से भी ज़्यादा। उस पर उन्होंने अपनी बीवी से कहा, ऐ बनी फ़रास की बहन! (देखो तो ये क्या मामला हुआ) उन्होंने कहा, कुछ भी नहीं। मेरी आँखों की ठण्डक की क़सम, खाना तो पहले से तीन गुना ज़्यादा मा'लूम होता है। फिर वो खाना अबूबक्र (रज़ि.) ने भी खाया और फ़र्माया कि ये मेरा क़सम खाना तो शैतान का अड़वा था। एक लुक्मा खाकर उसे आप आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ले गए वहाँ वो मुबह तक रखा रहा। इतिफ़ाक़ से एक काफ़िर क़ौम जिसका हम मुसलमानों से मुआहिदा था और मुआहिदे की मुहत्त ख़त्म हो चुकी थी, उनसे लड़ने के लिये फ़ौज जमा की गई। फिर हम बारह टुकड़ियाँ हो गये और हर आदमी के साथ कितने आदमी थे अल्लाह मा'लूम मगर इतना ज़रूर मा'लूम है कि आपने उन नक़ीबों को लश्कर वालों के साथ भेजा। हासिल ये कि फ़ौज वालों ने उसमें से खाया। या अब्दुर्रहमान ने कुछ ऐसा ही कहा। (राजेअ : 602)

قَالَ: لَا أَطْعَمُهُ أَبَدًا. قَالَ: وَابِمِ اللَّهِ مَا كُنَّا نَأْخُذُ مِنَ اللَّقْمَةِ إِلَّا رَتَا مِنْ أَسْفَلِهَا أَكْثَرَ مِنْهَا، حَتَّى شَبِعُوا وَصَارَتْ أَكْثَرُ مِمَّا كَانَتْ قَبْلُ. فَنَظَرَ أَبُو بَكْرٍ فَإِذَا شَيْءٌ أَوْ أَكْثَرُ، فَقَالَ لِمَرْأَتِهِ: يَا أَمْتُ بَنِي فِرَاسٍ، قَالَتْ لَا وَلَوْ بِعَيْنِي، لَهِيَ الْآنَ أَكْثَرُ مِمَّا قَبْلُ بِثَلَاثِ مَرَّاتٍ. فَأَكَلَ مِنْهَا أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ: إِنَّمَا كَانَ الشَّيْطَانُ - بَعْنِي بِمَنْعِهِ - ثُمَّ أَكَلَ مِنْهَا لَقْمَةً، ثُمَّ حَمَلَهَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَاصْتَبَعَتْ مِنْهُ. وَكَانَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِ عَهْدٍ، لَمَعْنِي الْأَجَلَ فَفَرَقْنَا اثْنَا عَشَرَ رَجُلًا مَعَ كُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ أُنَاسٌ اللَّهُ أَعْلَمُ كَمْ مَعَ كُلِّ رَجُلٍ، غَيْرَ أَنَّهُ بَعَثَ مِنْهُمْ، قَالَ: أَكَلُوا مِنْهَا أَجْمَعُونَ، أَوْ كَمَا قَالَ.

[راجع: ٦٠٢]

हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की उस बीवी को उम्मे रूमान कहा जाता था। उम्मे रूमान फ़रास बिन ग़नम बिन मालिक बिन किनाना की औलाद में से थीं। अरब के मुहावरा में जो कोई किसी क़बीले से होता है उसको उसका भाई कहते हैं। इस हदीष में भी आप (ﷺ) के एक अज़ीम मुअजज़ा का ज़िक्र है। यही मुताबक़ते बाब है। इस हदीष के ज़ेल में मौलाना वहीदुज्जमा मरहूम लिखते हैं। हुआ ये होगा कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने शाम को खाना आँहज़रत (ﷺ) के घर खा लिया होगा मगर आँहज़रत (ﷺ) ने न खाया होगा। इशा के बाद आपने खाया होगा। इस हदीष के तर्जुमा में बहुत से इश्काल हैं और बड़ी मुश्किल से मा'नी जमते हैं वरना तकरार बेफ़ायदा लाज़िम आती है और मुम्किन है रावी ने अल्फ़ाज़ में ग़लती की हो। चुनौचे मुस्लिम की रिवायत में दूसरे लफ़्ज़ ताशा के बदल हत्ता नअस है या'नी आँहज़रत (ﷺ) के पास इतना ठहरे कि आप कैधने लगे। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा यही ठीक है। कुछ रावियों ने फतफ़रवना इब्ना अशर रज़ुलन नक़ल किया है जिसके मुताबिक़ यहाँ तर्जुमा किया गया और कुछ नुस्खों में फ़फ़रक़ना या'नी हमारी बारह टुकड़ियाँ हो गईं, हर टुकड़ी एक आदमी के तहत में थी। कुछ नुस्खों में यूँ है कि बारह आदमियों को मुसलमानों ने नक़ीब बनाया। कुछ में फ़क़रैना है। या'नी हमने बारह आदमियों की ज़ियाफ़्त की। हर आदमी के साथ कितने आदमी थे ये अल्लाह ही को मा'लूम है। इस हदीष शरीफ़ में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की करामत मज़कूर है मगर औलिया अल्लाह की करामत उनके पैग़म्बर का मुअजज़ा है क्योंकि पैग़म्बर ही की ताबेदारी की बरकत से उनको ये दर्जा मिला है, इसलिये बाब का मतलब हासिल हो गया। ये हदीष ऊपर गुज़र चुकी है। (वहीदी)

किया, उनसे अब्दुल अजीज ने और उनसे अनस (रजि.) ने और हम्माद ने इस हदीस को यूनुस से भी रिवायत किया है। उनसे प्राबित ने और उनसे अनस (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के जमाने में एक साल क़हत पड़ा। आप जुम्आ की नमाज़ के लिये खुत्बा दे रहे थे कि एक शख्स ने खड़े होकर कहा या रसूलुल्लाह! धोड़े भूख से हलाक हो गये और बकरियाँ भी हलाक हो गई। आप अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि वो हम पर पानी बरसाए। आँहज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ उठाए और दुआ की। हज़रत अनस (रजि.) ने बयान किया कि उस वक़्त आसमान शीशे की तरह (बिलकुल साफ़) था, इतने में हवा चली, उसने अब को उठाया फिर उस अब के बहुत से टुकड़े जमा हो गये और आसमान ने गोया अपने दहाने खोल दिये। हम जब मस्जिद से निकले तो घर पहुँचते पहुँचते पानी में डूब चुके थे। बारिश यूँ ही दूसरे जुम्आ तक बराबर होती रही। दूसरे जुम्आ को वही साहब या कोई दूसरे फिर खड़े हुए और अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मकानात गिर गये, दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला बारिश को रोक दे। आँहज़रत (ﷺ) मुस्कराए और फ़र्माया। ऐ अल्लाह! अब हमारे चारों तरफ़ बारिश बरसा (जहाँ उसकी ज़रूरत हो) हम पर न बरसा। हज़रत अनस (रजि.) कहते हैं कि मैंने जो नज़र उठाई तो देखा कि उसी वक़्त अब फटकर मदीना के इर्द-गिर्द सरपेच की तरह हो गया था। (राजेअ : 932)

عَبْدُ الْغَزِيرِ عَنْ أَنَسٍ وَعَنْ يُونُسَ عَنْ نَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((أَصَابَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ قَحْطٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نَبَاتًا هُوَ يَخْطُبُ يَوْمَ جُمُعَةٍ إِذْ قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلَكْتَ الْكُرَاعُ، وَهَلَكْتَ الشَّاءُ، فَادْعُ اللَّهَ يَسْقِنَا فَمَدَّ يَدَيْهِ وَدَعَا. قَالَ أَنَسٌ : وَإِنَّ السَّمَاءَ كَمِثْلِ الرَّجَاجَةِ. فَهَاجَتْ رِيحٌ أَثَارَتِ سَحَابًا، ثُمَّ اجْتَمَعَ، ثُمَّ أُرْسِلَتْ السَّمَاءُ غَرَالِيهَا، فَخَرَجْنَا نَحْوُضِ الْمَاءِ حَتَّى أَتَيْنَا مَزَارِنَا، فَلَمْ نَزَلْ نَمَطِرُ إِلَى الْجُمُعَةِ الْآخَرَى. فَقَالَ إِلَيْهِ ذَلِكَ الرَّجُلُ - أَوْ غَيْرُهُ - فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، تَهَدَّمَتِ الْبُيُوتُ، فَادْعُ اللَّهَ يَخْبِتْهُ. فَنَبَسَ ثُمَّ قَالَ ((حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا)). فَظَهَرَتْ إِلَى السَّحَابِ تَصَدُّعٌ خَوْلَ الْمَدِينَةِ كَأَنَّهُ إِكْلِيلٌ)).

[راجع : 932]

3583. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू गस्सान यह्या बिन क़प्पीर ने बयान किया, उन्होंने हमसे अबू हम्मर से जिनका नाम इमर बिन अलाअ है और जो अबू अमर बिन अलाअ के भाई हैं, बयान किया, कहा कि मैंने नाफ़ेअ से सुना और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन इमर (रजि.) से कि नबी करीम (ﷺ) एक लकड़ी का सहारा लेकर खुत्बा दिया करते थे, फिर जब मिम्बर बन गया तो आप खुत्बा के लिये इस पर तशरीफ़ ले गये। इस पर उस लकड़ी ने बारीक आवाज़ से रोना शुरू कर दिया। आखिर आप उसके करीब तशरीफ़ लाए और अपना हाथ उस पर फेरा। और अब्दुल हमीद ने कहा कि हमें इम्रान बिन इमर ने खबर दी, उन्हें मुआज़ बिन अलाअ ने खबर दी और उन्हें नाफ़ेअ ने इसी

3583- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ كَثِيرٍ أَبُو عَسَّانٍ حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ وَاسْمُهُ عُمَرُ بْنُ الْعَلَاءِ أَخُو أَبِي عُمَرَ بْنِ الْعَلَاءِ، قَالَ : سَمِعْتُ نَافِعًا عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ إِلَى جِذْعٍ، فَلَمَّا اتَّخَذَ الْمَنْزِلَ تَحْوُلَ إِلَيْهِ، فَخَرَّ الْجَذْعُ، فَاتَّاهُ فَمَسَحَ يَدَهُ عَلَيْهِ)). وَقَالَ عَبْدُ الْحَمِيدِ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ

हदीष की और उसकी रिवायत अबू आसिम ने की, उनसे अबू रवादा ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से।

الْعَلَاءُ عَنْ نَافِعٍ بِهَذَا. وَرَوَاهُ أَبُو عَاصِمٍ
عَنِ ابْنِ أَبِي رَوَادٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तशरीह: हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) ने कहा कि मा'लूम नहीं ये अब्दुल हमीद नामी रावी कौन हैं? मुजी ने कहा कि ये अब्द बिन हुमैद हाफ़िज़ मशहूर हैं, मगर मैंने उनकी तफ़सीर और मुस्नद दोनों में ये हदीष तलाश की तो मुझको नहीं मिली। अल्बत्ता दारमी ने उसको निकाला है उम्मान बिन उमर से आखिर तक इसी इस्नाद से। (वहीदी)

3584. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, और उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह से कि नबी करीम (ﷺ) जुम्आ के दिन ख़ुत्बा के लिये एक पेड़ (के तने) के पास खड़े होते, या (बयान किया कि) खजूर के पेड़ के पास। फिर एक अंसारी औरत ने या किसी सहाबी ने कहा, या रसूलल्लाह! क्यूँ न हम आपके लिये एक मिम्बर तैयार कर दें? आपने फ़र्माया, अगर तुम्हारा जी चाहे तो कर दो, चुनाँचे उन्होंने आपके लिये मिम्बर तैयार कर दिया। जब जुम्आ का दिन हुआ तो आप उस मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये। इस पर उस खजूर के तने से बच्चे की तरह रोने की आवाज़ आने लगी। आँहज़रत (ﷺ) मिम्बर से उतरे और उसे अपने गले से लगा लिया, जिस तरह बच्चों को चुप काने के लिये लोरियाँ देते हैं, आँहज़रत (ﷺ) ने भी इसी तरह उसे चुप कराया। फिर आपने फ़र्माया कि ये तना इसलिये रो रहा था कि वो अल्लाह के इस ज़िक्र को सुना करता था जो उसके करीब होता था। (राजेअ: 449)

अब वो इससे महरूम हो गया इसलिये कि मैं उससे दूर हो गया।

3585. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलेमान बिन बिलाल ने, उनसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्हें हफ़स बिन अब्दुल्लाह बिन अनस बिन मालिक ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि मस्जिद नबवी की छत खजूर के तनों पर बनाई गई थी। नबी करीम (ﷺ) जब ख़ुत्बा के लिये तशरीफ़ लाते तो आप उनमें से एक तने के पास खड़े हो जाते लेकिन जब आपके लिये मिम्बर बना दिया गया तो आप उस पर तशरीफ़ लाए। फिर हमने उस तने से इस तरह की रोने की आवाज़

٣٥٨٤ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ
الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي عَنْ
جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ
النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُومُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَى
شَجَرَةٍ أَوْ نَخْلَةٍ، فَقَالَتْ امْرَأَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ
- أَوْ رَجُلٌ - يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا نَجْعَلُ
لَكَ مِثْرًا؟ قَالَ: إِنْ شِئْتُمْ. فَجَعَلُوا لَهُ
مِثْرًا. فَلَمَّا كَانَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ دَفِعَ إِلَى
الْمِثْرِ، فَصَاحَتِ النَّخْلَةُ صِيَاحَ الصَّبِيِّ،
ثُمَّ نَزَلَ النَّبِيُّ ﷺ فَضَمَّهُ إِلَيْهِ، تَنُّ أَيْنٍ
الصَّبِيِّ الَّذِي يُسْكُرُ. قَالَ: كَانَتْ تَبْكِي
عَلَى مَا كَانَتْ تَسْمَعُ مِنَ الذِّكْرِ عِنْدَهَا)).

[راجع: ٢٤٩]

٣٥٨٥ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي
أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ
سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ أَنَّ
بْنَ أَنَسٍ بْنَ مَالِكٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ
اللَّهِ يَقُولُ: ((كَانَ الْمَسْجِدُ مَسْتَقْوًى عَلَى
جُذُوعٍ مِنْ نَخْلٍ، فَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا
خَطَبَ يَقُومُ إِلَى جَذَعٍ مِنْهَا، فَلَمَّا صَغَ لَهُ

सुनी जैसी बवक्ते विलादत कैटनी की आवाज़ होती है। आखिर जब आँहजरत (ﷺ) ने उसके करीब आकर उस पर हाथ रखा तो वो चुप हुआ। (राजेअ : 449)

الْمِنْزُ وَكَانَ عَلَيْهِ لَسْمَعًا لِذَلِكَ
الْجَذْعَ صَوْتًا كَصَوْتِ الْعِشَارِ، حَتَّى جَاءَ
النَّبِيُّ ﷺ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهَا، فَسَكَتَ.

[راجع : ٤٤٩]

तशरीह : सहाबा ने ये आवाज़ सुनी। दूसरी रिवायत में है, आपने आकर उसको गले लगा लिया और वो लकड़ी खामोश हो गई। आपने फ़र्माया अगर मैं ऐसा न करता तो वो क़यामत तक रोती रहती। इमाम हसन बसरी (रह) जब इस हदीष को बयान करते तो कहते मुसलमानों! एक लकड़ी आँहजरत (ﷺ) से मिलने के शौक़ में रोई और तुम लकड़ी के बराबर भी आपसे मिलने का शौक़ नहीं रखते। दारमी की रिवायत में है कि आपने हुक्म दिया कि एक गड्ढा खोदा गया और वो लकड़ी उसमें दबा दी गई। अब नूएम की रिवायत में है आपने सहाबा से फ़र्माया तुमको उस लकड़ी के रोने पर ता'जुब नहीं आता, वो आए, उसका रोना सुना, खुद भी बहुत रोये। मुसलमानों! एक लकड़ी को आँहजरत (ﷺ) से ऐसी मुहब्बत हो और हम लोग जो अशरफ़ुल मख़लूक़ात हैं अपने पैग़म्बर से इतनी भी उल्फ़त न रखें, रोने का मुक़ाम है कि आपकी हदीष को छोड़कर अबू हनीफ़ा और शाफ़ि'ई के क़ौल की तरफ़ दौड़ें, आपकी हदीष से तो हमको तसल्ली न हो और क़हिस्तानी और कैदानी जो नामा'लूम किस बाग़ की मूली थे उनके क़ौल से तशफ़्फ़ी हो जाए। ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह। फिर इस्लाम का दा'वा क्यूँ करते हो जब पैग़म्बर इस्लाम की तुमको ज़रा भी मुहब्बत नहीं। (मौलाना वहीदुज्जम मरहूम)

3586. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, (दूसरी सनद) कहा मुझसे बिशर बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने, उनसे शुअबा ने, उनसे सुलैमान ने, उन्होंने अबू वाइल से सुना, वो हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से बयान करते थे कि इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने पूछा, फ़ित्ना के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीष किस को याद है? हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बोले कि मुझे ज़्यादा याद है जिस तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था। इमर (रज़ि.) ने कहा फिर बयान करो (माशाअल्लाह) तुम तो बहुत ज़री हो। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान की एक आजमाइश (फ़ित्ना) को उसके घर, माल और पड़ोस में होता है जिसका कफ़फ़ारा, नमाज़, रोज़ा, स़दका और अम्र बिल मअरूफ़ और नही अनिल मुंकर जैसी नेकियाँ बन जाती हैं। इमर (रज़ि.) ने कहा कि मैं उसके बारे में नहीं पूछता, बल्कि मेरी मुराद उस फ़ित्ना से है जो समुन्दर की तरह (ठाठें मारता) होगा। उन्होंने कहा कि इस फ़ित्ने का आप पर कोई अ़र नहीं पड़ेगा। आपके और उस फ़ित्ने के दरम्यान बन्द दरवाज़ा है। हज़रत इमर (रज़ि.) ने पूछा वो दरवाज़ा खोला जाएगा या तोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा नहीं, बल्कि तोड़ दिया जाएगा। हज़रत इमर ने उस पर फ़र्माया कि

٣٥٨٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ نَشْرٍ حَدَّثَنَا
ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ ح حَدَّثَنِي بِشْرُ
بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ
سُلَيْمَانَ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يُحَدِّثُ عَنْ
حُذَيْفَةَ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُ قَالَ: أَيْكُمْ يَحْفَظُ قَوْلَ رَسُولِ اللَّهِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْفِتْنَةِ؟ فَقَالَ
حُذَيْفَةُ: أَنَا أَخْفَظُ كَمَا قَالَ: قَالَ: هَاتِ،
إِنَّكَ لَجَرِيءٌ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ
وَجَارِهِ تُكْفَرُهَا الصَّلَاةُ وَالصَّدَقَةُ وَالْأَمْرُ
بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ)). قَالَ:
لَيْسَتْ هَذِهِ، وَلَكِنْ أَيْ تَمْوِجُ كَمْوَجِ
الْبَحْرِ، قَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لَا بَأْسَ
عَلَيْكَ مِنْهَا، إِنَّ بَيْنَكَ وَبَيْنَهَا بَابٌ مُغْلَقٌ

फिर तो बन्दन हो सकेगा। हमने हुजैफ़ा (रज़ि.) से पूछा, क्या उमर (रज़ि.) उस दरवाज़े के बारे में जानते थे? उन्होंने फ़र्माया कि उसी तरह जानते थे जैसे दिन के बाद रात के आने को हर शख्स जानता है। मैंने ऐसी हदीष बयान की जो ग़लत नहीं थी। हमें हज़रत हुजैफ़ा (रज़ि.) से (दरवाज़े के बारे में) पूछते हुए डर मा'लूम हुआ। इसलिये हमने मसरूक से कहा जब उन्होंने पूछा कि वो दरवाज़ा (से मुराद) कौन साहब हैं? तो उन्होंने बताया कि वो खुद उमर (रज़ि.) ही हैं। (राजेअ: 525)

قَالَ: يُفْتَحُ الْبَابُ أَوْ يُكْسَرُ؟ قَالَ: لَا، بَلْ يُكْسَرُ، قَالَ: ذَلِكَ أَحْوَى أَنْ لَا يُفْلَقَ. قُلْنَا: عَلِمَ الْبَابُ؟ قَالَ: نَعَمْ، كَمَا أَنَّ ذَوْنَ غَدِ اللَّيْلَةِ. إِنِّي خَذْتُهِ حَدِيثًا لَيْسَ بِالْأَعْيُنِ. فَهَبْنَا أَنْ نَسْأَلَهُ، وَأَمَرْنَا مَسْرُوقًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ: ((مَنْ الْبَابُ؟ قَالَ: عُمَرُ)).

[راجع: ٥٢٥]

तशरीह: ये हदीष शरह के साथ ऊपर गुजर चुकी है। इमाम बुखारी (रह) इस बाब में इसको इसलिये लाए हैं कि आँहज़रत (ﷺ) का एक मुअज्ज़ा है। इससे ये साबित हुआ है कि हज़रत उमर (रज़ि.) जब तक ज़िन्दा रहे कोई फ़ित्ना और फ़साद मुसलमानों में नहीं हुआ। उनकी वफ़ात के बाद फ़ित्नों का दरवाज़ा खुल गया तो आपकी पेशीनगोई पूरी हुई। जरकशी ने कहा कि हुजैफ़ा (रज़ि.) अगर उस दरवाज़े को हज़रत उम्रमान (रज़ि.) की ज़ात कहते तो दुरुस्त होता उनकी शहादत के बाद फ़ित्नों का दरवाज़ा खुल गया (बल्कि हज़रत उम्रमान रज़ि. की मज़्लूमाना शहादत भी फ़ित्नागरों के हाथों हुई)। राक़िम (लेखक) कहता है कि ये जरकशी की खुशफ़हमी है। फ़ित्नों का दरवाज़ा तो हज़रत उम्रमान (रज़ि.) की हयात में खुल गया था फिर वो दरवाज़ा कैसे हो सकते हैं। हुजैफ़ा (रज़ि.) एक जलीलुल क़द्र सहाबी और आँहज़रत (ﷺ) के महरमे राज़ थे। उन्होंने जो अम्प करार दिया, जरकशी को इस पर ए'तिराज़ करना ज़ेबा नहीं था (वहीदी)। अहल व माल के फ़ित्ने से मुराद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल होना और दिल पर ग़फ़लत का पर्दा आना है।

3587. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज्जिनाद ने बयान किया, उनसे अउरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़ायमत उस वक़्त तक नहीं क़ायम होगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम के साथ जंग न कर लो जिनके जूते बाल के हों और जब तक तुम तुकों से जंग न कर लो, जिनकी आँखें छोटी होंगी, चेहरे सुर्ख होंगे, नाक छोटी और चपटी होगी, चेहरे ऐसे होंगे जैसे तह ब तह ढाल होती है। (राजेअ: 2928)

٣٥٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقَاتِلُوا قَوْمًا بَعَالَهُمُ الشَّعْرُ، وَحَتَّى تَقَاتِلُوا التُّرُكَ صِفَارَ الْأَعْيُنِ حَمَرَ الْوُجُوهِ ذُلْفَ الْأَنْفِ كَانَ وَجُوهُهُمُ الْمَجَانُ الْمِطْرَقَةَ)).

[راجع: ٢٩٢٨]

3588. और तुम हुकूमत के लिये सबसे ज़्यादा बेहतर शख्स उसे पाओगे जो हुकूमत करने को बुरा जाने (या) नी उस मंसब को खुद के लिये नापसन्द करे) यहाँ तक कि वो उसमें फंस जाए। लोगों की मित्राल कान की सी है जो जाहिलियत में शरीफ़ थे, वो इस्लाम लाने के बाद भी शरीफ़ हैं। (राजेअ: 3493)

٣٥٨٨- ((وَتَجِدُونَ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ أَشَدَّهُمْ كِرَاهِيَةً لِهَذَا الْأَمْرِ حَتَّى يَقَعَ فِيهِ وَالنَّاسُ مَعَادُونَ: خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَةِ خِيَارُهُمْ فِي الْإِسْلَامِ)). [راجع: ٣٤٩٣]

3589. और तुम पर एक ऐसा दौर भी आने वाला है कि तुममें से कोई अपने सारे घर बार और माल व दौलत से बढ़कर मुझको देख लेना ज्यादा पसन्द करेगा।

۳۵۸۹- «وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَى أَحَدِكُمْ زَمَانٌ لَا يَرَانِي أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَهُ مِثْلُ أَهْلِهِ وَمَالِهِ».

तशरीह: इस हदीष में चार पेशीनगोइयाँ हैं, चारों पूरी हुई। आँहज़रत (ﷺ) के आशिक सद्दाबा और ताबेईन में बल्कि उनके बाद वाले लोगों में भी हमारे ज़माने तक कुछ ऐसे गुजरे हैं कि माल औलाद सबको आपके एक दीदार पर तसद्दुक (कुर्बान) कर दें। माल व दौलत क्या चीज़ है जान हज़ार जाने आप पर से तसद्दुक करना फ़ख़र और सज़ादते दारैन समझते रहे हर दो आलम क़ीमत गुफ़्ता नरख बाला कुन कि अरज़ानी हुनूज़। (वहीदी)

3590. मुझसे यद्दा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने और उनसे हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि तुम ईरानियों के शहर ख़ूज़ और क़िरमान वालों से जंग न कर लोगे। चेहरे उनके सुर्ख होंगे। नाक चपटी होगी, आँखें छोटी होंगी और चेहरे ऐसे होंगे जैसे तह ब तह ढाल होती है और उनके जूते बालों वाले होंगे। यद्दा के अलावा इस हदीष को औरों ने भी अब्दुर्रज़ाक़ से रिवायत किया है। (राजेअ: 2928)

۳۵۹۰- حَدَّثَنِي يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقَاتِلُوا خَوْزًا وَكِرْمَانَ مِنَ الْأَعَاجِمِ، خُمْرُ أَلْوَجُوهٍ فُطَسَ الْأَنْوَابُ صِغَارِ الْأَعْيُنِ كَانَ وَجُوهُهُمُ الْمَجَانِ الْمِطْرَقَةِ، يَغَالَهُمُ الشَّمَرُ».

[راجع: ۲۹۲۸]

3591. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने बयान किया, कहा कि इस्माईल ने बयान किया मुझको कैस ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हम अबू हुरैरह (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुट्टबत में तीन साल रहा हूँ, अपनी पूरी उम्र में मुझे हदीष याद करने का इतना शौक़ कभी नहीं हुआ जितना उन तीन सालों में था। मैंने आँहज़रत (ﷺ) को फ़र्माते सुना, आपने अपने हाथ से यूँ इशारा करके फ़र्माया कि क़यामत के करीब तुम लोग (मुसलमान) एक ऐसी क़ौम से जंग करोगे जिनके जूते बालों के होंगे (मुрад यही ईरानी हैं) सुफ़यान ने एक मर्तबा व हुवा हाज़ल बरिज़ के बजाय लफ़ज़ वहुम अहलुल बरिज़ नक़ल किये (या'नी ईरानी, या कर्दी, या दैलम वाले लोग मुराद हैं)।

۳۵۹۱- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: قَالَ إِسْمَاعِيلُ أَخْبَرَنِي قَيْسٌ قَالَ: «وَأَتَانَا أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: صَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَ سِنِينَ لَمْ أَكُنْ فِي سِتْرٍ أَحْرَصَ عَلَى أَنْ أَعْمِيَ التَّحْلِيثَ مِنِّي لِيَهْنُ، سَبْعُهُ يَقُولُ - وَقَالَ هَكَذَا يَدِيهِ - : «بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ يُقَاتِلُونَ قَوْمًا يَغَالَهُمُ الشَّمَرُ، وَهُوَ هَذَا الْبَارِزِ» وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً: وَهُمْ أَهْلُ الْبَارِزِ».

[راجع: ۲۹۲۸]

(राजेअ: 2928)

3592. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे जरिर बिन हाजिम ने बयान किया, कहा मैंने हसन से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अमर बिन तगुलिब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, क़यामत के करीब तुम एक ऐसी क़ौम से जंग करोगे जो बालों का जूता पहनते होंगे और एक ऐसी क़ौम से जंग करोगे जिनके चेहरे तहब तहब ठालों की तरह होंगे। (राजेअ : 2928)

3593. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि तुम यहूदियों से एक जंग करोगे और उसमें उन पर ग़ालिब आ जाओगे, उस वक़्त ये कैफ़ियत होगी कि (अगर कोई यहूदी जान बचाने के लिये किसी पहाड़ में भी छुप जाएगा तो) पत्थर बोलेगा कि ऐ मुसलमान! ये यहूदी मेरी आड़ में छुपा हुआ है, इसे क़त्ल कर दे। (राजेअ : 2529)

तशरीह : ये उस वक़्त होगा जब ईसा (अलैहिस्सलाम) उतरेंगे और यहूदी लोग दज्जाल के लश्करी होंगे। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) बाब लद के पास दज्जाल को मारेंगे और उसके लश्कर वाले जा बजा मुसलमानों के हाथों क़त्ल होंगे।

3594. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि जिहाद के लिये फ़ौज जमा होगी, पूछा जाएगा कि फ़ौज में कोई ऐसे बुजुर्ग भी हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत पाई हो? मा'लूम होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ की जाएगी। फिर एक जिहाद होगा और पूछा जाएगा, क्या फ़ौज में कोई ऐसे बुजुर्ग हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के किसी सहाबी की सुहबत उठाई हो? मा'लूम होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ मांगी जाएगी। फिर उनकी दुआ की बरकत से फ़तह होगी।

(राजेअ : 2897)

3595. मुझसे मुहम्मद बिन हकम ने बयान किया, कहा हमको

۳۵۹۲- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَازِمٍ سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَغْلِبٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ تُقَاتِلُونَ قَوْمًا يَتَعَلَّوْنَ الشُّعْرَ، وَتُقَاتِلُونَ قَوْمًا كَانَ وَجْهُهُمْ الْمَجَانُّ الْمِطْرَقَةَ)).

[راجع: ۲۹۲۷]

۳۵۹۳- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((تُقَاتِلُكُمُ الْيَهُودُ، فَتَسْلُطُونَ عَلَيْهِمْ، يَقُولُ الْخَجَرُ: يَا مُسْلِمُ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَأَيْتُ فِائِضَهُ)). [راجع: ۲۵۲۹]

۳۵۹۴- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَفْرَوْنَ، فَيَقَالُ: فَيَكُمُ مِنْ صَحْبِ الرَّسُولِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ عَلَيْهِمْ. ثُمَّ يَفْرَوْنَ فَيَقَالُ لَهُمْ: هَلْ فَيَكُمُ مِنْ صَحْبِ مَنْ صَحِبَ الرَّسُولَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ)).

[راجع: ۲۸۹۷]

۳۵۹۵- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحَكَمِ

नज़र ने ख़बर दी, कहा हमको इस्राईल ने ख़बर दी, कहा हमको सअद तार्ई ने ख़बर दी, उन्हें महल बिन खलीफ़ा ने ख़बर दी, उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक साहब आए और आँहज़रत (ﷺ) से फ़क्रो-फ़ाक्रा की शिकायत की। फिर दूसरे साहब आए और रास्तों की बदअम्नी की शिकायत की। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अदी! तुमने मुक़ामे हीरा देखा है? (जो कूफ़ा के पास एक बस्ती है) मैंने अर्ज़ किया कि मैंने देखा तो नहीं, अल्बत्ता उसका नाम मैंने सुना है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुम्हारी ज़िन्दगी कुछ और लम्बी हुई तो तुम देखोगे कि होदज़ में एक औरत अकेली हीरा से सफ़र करेगी और (मक्का पहुँचकर) का'बा का तवाफ़ करेगी और अल्लाह के सिवा उसे किसी का भी डर न होगा। मैंने (हैरत से) अपने दिल में कहा, फिर कबीला तै के उन डाकुओं का क्या होगा जिन्होंने शहरों को तबाह कर दिया, फ़साद की आग सुलगा रखी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुम कुछ और दिनों तक ज़िन्दा रहे तो किसरा के ख़ज़ाने (तुम पर) खोले जाएँगे। मैं (हैरत में) बोल पड़ा किसरा बिन हुर्मुज़ (ईरान का बादशाह) आपने फ़र्माया, हाँ किसरा बिन हुर्मुज़! और अगर तुम कुछ दिनों तक और ज़िन्दा रहे तो ये भी देखोगे कि एक शख्स अपने हाथ में सोना-चाँदी भरकर निकलेगा। उसे किसी ऐसे आदमी की तलाश होगी (जो उसकी ज़कात) कुबूल कर ले लेकिन उसे कोई ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जो उसे कुबूल कर ले। अल्लाह तआला से मुलाक़ात करेगा कि दरम्यान में कोई तर्जुमान न होगा (बल्कि परवरदिगार उससे बिला वास्ता बातें करेगा) अल्लाह तआला उससे दरयाफ़्त करेगा। क्या मैंने तुम्हारे पास रसूल नहीं भेजे थे जिन्होंने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया हो? वो अर्ज़ करेगा, बेशक तू ने भेजा था। अल्लाह तआला दरयाफ़्त करेगा क्या मैंने माल और औलाद तुम्हें नहीं दी थी? क्या मैंने उनके ज़रिये तुम्हें फ़ज़ीलत नहीं दी थी? वो ज़वाब देगा बेशक तू ने दिया था। फिर वो अपनी दाहिनी तरफ़ देखेगा तो सिवा जहन्नम के उसे और कुछ

أَخْبَرَنَا النَّظَرُ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ أَخْبَرَنَا
سَعْدُ الطَّائِي أَخْبَرَنَا مُجَلُّ بْنُ خَلِيفَةَ عَنْ
عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا عِنْدَ
النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أَنَاءَ
رَجُلٌ فَشَكَا إِلَيْهِ الْفَاقَةَ، ثُمَّ أَنَاءَ آخَرَ
فَشَكَا إِلَيْهِ قَطْعَ السَّبِيلِ، فَقَالَ: ((يَا
عَدِيُّ، هَلْ رَأَيْتَ الْحَيْرَةَ؟)) قُلْتُ: لَمْ
أَرَهَا، وَقَدْ أَتَيْتُ عَنْهَا. قَالَ: ((لَإِنْ
طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ لَتَرَيْنَ الطَّيْفَةَ تَرْتَجِلُ
مِنَ الْحَيْرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لَا
تَحَافُ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ)) - قُلْتُ: فِيمَا
بَيْنِي وَبَيْنَ نَفْسِي فَأَيْنَ دُعَاؤُ طَيْفِ
الْبَيْنِ قَدْ سَفَرُوا الْيَلَادَ؟ - ((وَلَئِنْ
طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ لَتَفْتَحَنَّ كَنْزُ
كَسْرَى)) قُلْتُ: كَسْرَى بْنُ هُرْمَزٍ؟
قَالَ: كَسْرَى بْنُ هُرْمَزٍ. وَلَئِنْ طَالَتْ
بِكَ حَيَاةٌ لَتَرَيْنَ الرَّجُلَ يُخْرِجُ مِلَّةً كَفَّهُ
مِنْ دَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ يَطْلُبُ مِنْ يَقْبَلُهُ مِنْهُ
وَلَا يَجِدُ أَحَدًا يَقْبَلُهُ مِنْهُ. وَلَيَلْقَيْنَ اللَّهَ
أَحَدَكُمْ يَوْمَ يَلْقَاهُ وَلَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ
تَرْجُمانٌ يَرْجُمُ لَهُ، فَيَقُولَنَّ لَهُ: أَلَمْ
أَبْعَثْ إِلَيْكَ رَسُولًا قَبْلُكَ. فَيَقُولَنَّ:
بَلَى. فَيَقُولَنَّ: أَلَمْ أُعْطِكَ مَالًا وَأَفْضَلَ
عَلَيْكَ؟ فَيَقُولَنَّ: بَلَى. فَيَنْظُرُ عَنْ يَمِينِهِ
فَلَا يَرَى إِلَّا جَهَنَّمَ، وَيَنْظُرُ عَنْ شِمَالِهِ
فَلَا يَرَى إِلَّا جَهَنَّمَ)). قَالَ عَدِيُّ:
سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

नज़र न आया फिर वो बाईं तरफ देखेगा तो इधर भी जहन्नम के सिवा और कुछ नज़र नहीं आया। अदी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि जहन्नम से डरो, अगरचे खजूर के एक टुकड़े के ज़रिये हो। अगर किसी को खजूर का एक टुकड़ा भी मयस्सर न आ सके तो (किसी से) एक अच्छा कलिमा ही कह दे। हज़रत अदी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने होदज में बैठी हुई एक अकेली औरत को तो खुद देख लिया कि हीरा से सफ़र के लिये निकली और (मक्का पहुँचकर) उसने का'बा का तवाफ़ किया और उसे अल्लाह के सिवा और किसी (डाकू वगैरह) का (रास्ते में) डर नहीं था और मुजाहिदीन की उस जमाअत में तो मैं खुद शरीक था जिसने किसरा बिन हुरमुज़ के खज़ाने फ़तह किये। और अगर तुम लोग कुछ दिनों और ज़िन्दा रहे तो वो भी देख लोगे जो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक शख्स अपने हाथ में (ज़कात का सोना-चाँदी) भरकर निकलेगा (लेकिन उसे लेने वाला कोई नहीं मिलेगा) मुझे से अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा हमको सअदान बिन बिशर ने ख़बर दी, उनसे अबू मुजाहिद ने बयान किया, उनसे मुहिल बिन खलीफ़ा ने बयान किया और उन्होंने अदी (रज़ि.) से सुना कि मैं नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर था। फिर यही हदीस नक़ल की जो ऊपर गुज़र चुकी है। (राजेअ: 1413)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के ज़माने में माल व दौलत की फ़रावानी की पेशीनगोई भी पूरी हुई कि मुसलमानों को अल्लाह ने बहुत दौलतमन्द बना दिया था कि कोई ज़कात लेने वाला न था। हाफ़िज़ ने कहा कि हीरा अरब के उन बादशाहों का पाय-ए-तख़्त था जो ईरान के मातहत थे।

3596. मुझे से सईद बिन शुरहबील ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन हबीब ने, उनसे अबुल खैर ने, उनसे उक्ब बा बिन आमिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक दिन मदीना से बाहर निकले और शुहदा-ए-उहुद पर नमाज़ पढ़ी जैसे मय्यत पर पढ़ते हैं उसके बाद आप मिय़बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैं (हौज़े कौषर पर) तुमसे पहले पहुँचूंगा और क़यामत के दिन तुम्हारे लिये मीरे सामान बनूंगा, मैं तुम पर गवाही दूँगा और अल्लाह की क़सम! मैं अपने हौज़े कौषर को इस वक़्त भी देख रहा हूँ। मुझे रूए ज़मीन के खज़ानों की चाबियाँ दी गई हैं और क़सम अल्लाह की मुझे तुम्हारे बारे में ये डर नहीं कि तुम शिर्क

يَقُولُ: ((اَتْلُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقَةِ تَمْرَةٍ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ حِقَّةَ تَمْرَةٍ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ)). قَالَ عَدِيٌّ: فَرَأَيْتُ الطَّيْمِنَةَ تَرْتَجِلُ مِنَ الْحِيزَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لَا تَعَاظُ إِلَّا اللَّهَ، وَكُنْتُ لِمَنْ افْتَحَ كَنْزَ كِسْرَى بْنِ هُرْمُزٍ، وَلَكِنْ طَأَتْ بِكُمْ حَيَاةٌ لَقَرُونَ مَا قَالَ النَّبِيُّ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُخْرِجُ مِلَّةَ كَفٍّ)). حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُو غَاصِمٍ أَخْبَرَنَا مَعْدَانُ بْنُ بَشِيرٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُجَاهِدٍ حَدَّثَنَا مُجِلُّ بْنُ خَلِيفَةَ سَمِعْتُ عَدِيًّا: ((كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[راجع: 1413]

3596- حَدَّثَنِي مَعْدَانُ بْنُ بَشِيرٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ يَزِيدَ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ غَامِرٍ: ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ خَرَجَ يَوْمًا فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ أَخَذَ صَلَاتَهُ عَلَى الصَّغِيرَةِ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمُنَبْرِ فَقَالَ: إِنِّي لَرَطُّكُمْ، وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ. إِنِّي وَاللَّهِ لَأَنْظَرُ إِلَى حَوْصِي الْآنَ، وَإِنِّي لَقَدْ أَغْطَيْتُ خَزَائِنَ مَفَاتِيحِ الْأَرْضِ، وَإِنِّي

करने लगोगे मैं तो इससे डरता हूँ कि कहीं दुनियादारी में पड़कर एक-दूसरे से रश्क व हसद न करने लगे। (राजेअ: 1344)

وَاللَّهُ مَا أَخَافُ بَعْدِي أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنْ أَخَافُ أَنْ تَنَالُوا فِيهَا)).

[راجع: ١٣٤٤]

तशरीह: आपकी ये पेशीनगोई बिल्कुल सच प्राबित हुई, मुसलमानों को बड़ा डरूज हासिल हुआ। मगर ये आपस के रश्क और हसद से खराब हो गये। तारीख बतलाती है कि मुसलमानों को खुद अपनों ही के हाथों जो तकलीफें हुई वो गैरों के हाथों से नहीं हुई। मुसलमानों के लिये गैरों की रीशा दवानियों और बुरे मंसूबों में भी बेशतर ग़दार मुसलमानों का हाथ रहा है।

3597. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, उनसे सुफयान बिन इययना ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) एक मर्तबा मदीना के एक बुलन्द टीले पर चढ़े और फ़र्माया, जो कुछ मैं देख रहा हूँ क्या तुम्हें भी नज़र आ रहा है? मैं फ़िल्तों को देख रहा हूँ कि तुम्हारे घरों में वो इस तरह गिर रहे हैं जैसे बारिश की बून्दें गिरा करती हैं। (राजेअ: 1787)

٣٥٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أُسَامَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أَطْمٍ مِنَ الْأَطَامِ فَقَالَ: ((هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى؟ إِنِّي أَرَى الْفِتْنَ تَقَعُ خِلَالَ بُيُوتِكُمْ مَوَالِغَ الْقَطْرِ)). [راجع: ١٨٧٨]

हज़रत उस्मान (रज़ि.) की शहादत के बाद जो फ़ितने बरपा हुए उन पर ये इशारा है। उन फ़िल्तों ने ऐसा सर उठाया कि आज तक उनके तबाहक़न अपरात बाक़ी हैं।

3598. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, कहा कि मुझसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया, उनसे ज़ैनब बन्ते अबी सलमा ने बयान किया, उनसे उम्मे हबीबा बन्ते अबी सुफयान (रज़ि.) ने बयान किया कि हमको ज़ैनब बन्ते अबी जहश (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) उनके घर तशरीफ़ लाए तो आप बहुत परेशान नज़र आ रहे थे और ये फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, अरब के लिये तबाही इस शर से आएगी जिसके वाक़ेअ होने का ज़माना क़रीब आ गया है, आज याजूज माजूज की दीवार में इतना शिगाफ़ पैदा हो गया है और आपने उँगलियों से हलक़ा बनाकर उसकी वज़ाहत की। उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें नेक लोग होंगे फिर भी हम हलाक कर दिये जाएंगे? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ जब ख़बायतें बढ़ जाएँगी (तो ऐसा होगा) (राजेअ: 3346)

٣٥٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ حَدَّثَتْهُ أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ بِنْتَ أَبِي سَفْيَانَ حَدَّثَتْهَا عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا فَرِغًا يَقُولُ: ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَتَلَّى لِلْعَرَبِ مِنْ شَرِّ قَدِ الْقُرْآنِ: قُبْحَ الْيَوْمِ مِنْ رَدَمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلَ هَذَا. وَخَلَقَ يَاصْبُوهَ وَبِأَيْتِي نَبِيَّهَا)). فَقَالَتْ زَيْنَبُ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا كَثُرَ النِّعَتُ)).

[راجع: ٣٣٤٦]

3599. और जुहरी से रिवायत है। उनसे हिन्द बन्तुल हारिष ने

٣٥٩٩- وَعَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي هِنْدٌ

बयान किया, उन्होंने कहा कि हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बेदार हुए तो फ़र्माया, सुबहानल्लाह! कैसे कैसे ख़ज़ाने उतरे हैं (जो मुसलमानों को मिलेंगे) और क्या क्या फ़ित्ने व फ़साद उतरे हैं। (राजेअ: 115)

بُنْتُ الْخَارِثِ أَنْ أُمَّ سَلَمَةَ قَالَتْ: اسْتَيْقِظَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللَّهِ مَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْغَوَائِبِ، وَمَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْفِتَنِ)). [راجع: ١١٥]

जिनमें मुसलमान मुब्तला होंगे। फ़ुतूहाते इस्लामी और बाहमी झगड़े दोनों के लिये आपने पेशानगोई फ़र्माई जो हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई।

3600. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा बिन माजिशून ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी सअसआ ने, उनसे उनके वालिद ने कहा, उनसे हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं देख रहा हूँ कि तुम्हें बकरियों से बहुत मुहब्बत है और तुम उन्हें पालते हो तो तुम उनकी निगाहदाश्त अच्छी किया करो और उनकी नाक की सफ़ाई का भी ख़याल रखा करो क्योंकि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि लोगों पर ऐसा ज़माना गुज़रेगा कि मुसलमान का सबसे इम्दा माल उसकी बकरियाँ होंगी जिन्हें लेकर वो पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ जाएगा या (आपने शअफ़ल जिबाल के लफ़्ज़ फ़र्माए) वो बारिश गिरने की जगह में चला जाएगा। इस तरह वो अपने दीन को फ़ित्नों से बचाने के लिये भागता फ़िरेगा। (राजेअ: 19)

٣٦٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيرِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ الْمَاجِشُونِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَغَصَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي: إِنِّي أَرَاكَ تُحِبُّ الْغَنَمَ وَتَتَّخِذُهَا، فَاصْلَحْهَا وَأَصْلِحْ رُعَاتَهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ تَكُونُ الْغَنَمُ فِيهِ خَيْرَ مَالِ الْمُسْلِمِ يَتَّبِعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ - أَوْ شَعَفَ الْجِبَانِ - فِي مَوَاقِعِ الْقَطْرِ، يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ)). [راجع: ١٩]

अहदे नुबुव्वत के बाद जो खानगी फ़ित्ने मुसलमानों में पैदा हुए उनसे हज़ूर (ﷺ) की पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह प्राबित होती है।

3601. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया। उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे सल्लेह बिन कीसान ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्नुल मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़ित्नों का दौर जब आएगा तो उसमें बैठने वाला खड़ा रहने वाले से बेहतर होगा। खड़ा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा जो उसमें झांकेगा फ़ित्ना उसे भी उचक लेगा और उस वक़्त जिसे जहाँ भी पनाह मिल जाए बस वहीं पनाह पकड़ ले ताकि अपने दीन को फ़ित्नों से बचा सके। (दीगर मक़ाम: 8071, 8072)

٣٦٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيرِ الْأَوْسِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ ابْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَتَكُونُ فِتْنٌ الْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ، وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي، وَالسَّاعِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي، وَمَنْ يُشْرَفْ لَهَا تَشْرَفْهُ، وَمَنْ وَجَدَ مَلْحًا أَوْ مَعَادًا فَلْيَمْدُ بِهِ)). [طرماء ١: ٧٠٨١, ٧٠٨٢]

3602. और इब्ने शिहाब से रिवायत है, उनसे अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन मुत्तीअ बिन अस्वद ने और उनसे नौफ़िल बिन मुआविया ने अबू हुसैरह (रज़ि.) की उसी हदीष की तरह अल्बत्ता अबूबक्र (रावी हदीष) ने इस रिवायत में इतना और ज्यादा बयान किया कि नमाज़ों में एक नमाज़ ऐसी है कि जिससे वो छूट जाए गोया उसका घर बार सब बर्बाद हो गये। (और वो अम्र की नमाज़ है)

3603. हमसे मुहम्मद बिन क़बीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें आ'यश ने, उन्हें ज़ैद बिन वहब ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे बाद तुम पर एक ऐसा ज़माना आएगा जिसमें तुम पर दूसरों को मुक़द्दम किया जाएगा और ऐसी बातें सामने आएंगी जिनको तुम बुरा समझोगे, लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! उस वक़्त हमें आप क्या हुक्म फ़र्माते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो हुक्क़ तुम पर दूसरों के वाजिब हों उन्हें अदा करते रहना और अपने हुक्क़ अल्लाह ही से मांगना। (या'नी स ब्र करो और अपना हक़ लेने के लिये ख़लीफ़ा और हाकिमे वक़्त से बग़ावत न करना)। (दीगर मक़ाम : 7052)

3604. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू मअमर इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे हज़रत अबू हुसैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इस क़बील-ए-कुरैश के कुछ आदमी लोगों को हलाक व बर्बाद कर देंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐसे वक़्त के लिये आप हमें क्या हुक्म देते हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, काश! लोग उनसे बस अलग ही रहते। महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया कि हमसे अबू दाऊद तियालिसी ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अबुत तियाह ने, उन्होंने अबू ज़रआ से सुना। (दीगर मक़ाम : 3605, 7057)

3605. मुझसे अहमद बिन मुहम्मद मक्की ने बयान किया, कहा हमसे अम बिन यह्या बिन सईद उमवी ने बयान किया, उनसे उनके

३६०२- وَعَنْ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرٍ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُطِيعٍ بْنِ الْأَسْوَدِ عَنْ نَوْفَلِ بْنِ مُعَاوِيَةَ مِثْلَ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ هَذَا، إِلَّا أَنَّ أَبَا بَكْرٍ يَقُولُ: ((مِنْ الصَّلَاةِ صَلَاةٌ مِنْ لَاتَةِ لَكَأَنَّمَا وَبَرَ أَخْلَهُ وَمَالَهُ)).

३६०३- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ عَنْ ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((سَتَكُونُ أُمَّةٌ وَأُمُورٌ تُتَكَبَّرُونَهَا. قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: تَوَدُّونَ الْحَقَّ الَّذِي عَلَيْكُمْ، وَتَسْأَلُونَ اللَّهَ الَّذِي لَكُمْ)).

[طرمه في : 7052]

३६०४- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي النَّيَّاحِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يُهْلِكُ النَّاسَ هَذَا الْحَقُّ مِنْ قُرَيْشٍ. قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: لَوْ أَنَّ النَّاسَ اعْتَرَلُوهُمْ)). قَالَ مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا وَأَبُو دَاوُدَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي النَّيَّاحِ سَمِعْتُ أَبَا زُرْعَةَ. [طرمه في : 3605, 7057]

३६०५- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَكِّيُّ حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ

दादा ने बयान किया कि मैं मरवान बिन हकम और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ था, उस वक़्त मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने सच्चों के सच्चे रसूले करीम (ﷺ) से सुना है, आप फ़र्मा रहे थे कि मेरी उम्मत की बर्बादी कुरैश के चन्द लड़कों के हाथों पर होगी। मरवान ने पूछा, नौजवान लड़कों के हाथ पर? इस पर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम चाहो तो मैं उनके नाम भी ले दूँ कि वो बनी फ़लौ और बनी फ़लौ होंगे। (राजेअ : 3604)

الْأُمَوِيُّ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: كُنْتُ مَعَ مَرْوَانَ وَأَبِي مُرَيْزَةَ فَسَمِعْتُ أَبَا مُرَيْزَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ الصَّادِقَ الْمَصْنُوقَ يَقُولُ: ((هَلَاكَ أُمِّي عَلَى يَدَي غِلْمَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ)). فَقَالَ مَرْوَانُ، غِلْمَةٌ؟ قَالَ أَبُو مُرَيْزَةَ: إِنْ شِئْتَ أَنْ أَسْمِيَهُمْ، بَنِي فَلَانٍ وَبَنِي فَلَانٍ)). (راجع: ٣٦٠٤)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) ने उनके नाम भी बतलाये होंगे तभी तो अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते थे कि 60 हिजरी से या अल्लाह! मुझको बचाए रखना और छोक़रों की हुकूमत से बचाना। यही साल यज़ीद के बादशाह होने का है। अक़्बुर नौजवान तजुर्बात से नहीं गुज़रने पाते, इसलिये बसा औकात सयादत व क़यादत में वो मुख़िब या नी खराबियाँ पैदा करने वाले प्राबित होते हैं। यही वजह है कि अक़्बुर रसूलों को मुक़ामे रिसालत चालीस साल की उम्र के बाद ही दिया गया है।

3606. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने जाबिर ने, कहा कि मुझसे बुसर बिन अब्दुल्लाह हज़री ने, कहा कि मुझसे अबू इदरीस ख़ौलानी ने बयान किया, उन्होंने हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि दूसरे सहाबा किराम तो रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़ैर के बारे में सवाल किया करते थे लेकिन मैं शर के बारे में पूछता था इस डर से कि कहीं मैं उनमें न फंस जाऊँ। तो मैंने एक मर्तबा रसूले करीम (ﷺ) से सवाल किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम जाहिलियत और शर के ज़माने में थे। फिर अल्लाह तआला ने हमें ये ख़ैरो-बरकत (इस्लाम की) अता की, अब क्या इस ख़ैर के बाद फिर शर का कोई ज़माना आएगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। मैंने सवाल किया, और उस शर के बाद फिर ख़ैर का कोई ज़माना आएगा? आपने फ़र्माया कि हाँ, लेकिन उस ख़ैर पर कुछ धुँआ होगा। मैंने अर्ज़ किया वो धुँआ क्या होगा? आपने जवाब दिया कि ऐसे लोग पैदा होंगे जो मेरी सुन्नत और तरीक़े के अलावा दूसरे तरीक़े इख़्तियार करेंगे, उनमें कोई बात अच्छी होगी कोई बुरी। मैंने सवाल किया, क्या उस ख़ैर के बाद कोई शर का कोई ज़माना आएगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, जहन्नम के दरवाज़ों की तरफ़ बुलाने वाले पैदा होंगे, जो उनकी बात कुबूल करेगा उसे वो जहन्नम में फेंक देंगे। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह

٣٦٠٦- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ جَابِرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي بُسْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْخَضْرَمِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلَانِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ حَدِيثَ بَنِي الْهَمَانِ يَقُولُ: كَانَ النَّاسُ يَسْأَلُونَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْخَيْرِ، وَكُنْتُ أَسْأَلُهُ عَنِ الشَّرِّ مَخَافَةَ أَنْ يَذَرَكَنِي. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا كُنَّا فِي جَاهِلِيَّةٍ وَشَرٍّ، فَجَاءَنَا اللَّهُ بِهَذَا الْخَيْرِ، فَهَلْ بَعْدَ هَذَا الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قُلْتُ: وَهَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الشَّرِّ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالَ: ((نَعَمْ وَفِيهِ دَعْوَى)). قُلْتُ: وَمَا دَعْوَاهُ؟ قَالَ: ((قَوْمٌ يَهْتَدُونَ بِغَيْرِ هَدْيٍ، تَعْرِفُ مِنْهُمْ وَتُنْكِي)). قُلْتُ: فَهَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: ((نَعَمْ دُعَاةٌ إِلَى أَبْوَابِ جَهَنَّمَ، مَنْ أَجَابَهُمْ إِلَيْهَا

(ﷺ)! उनके औसाफ़ भी बयान कर दीजिए। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो लोग हमारी ही क़ौम व मज़हब के होंगे, हमारी ही जुबान बोलेंगे। मैंने अर्ज़ किया, फिर अगर मैं उन लोगों का ज़माना पाऊँ तो मेरे लिये आपका हुक्म क्या है? औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम के ताबेअ रहियो। मैंने अर्ज़ किया अगर मुसलमानों की कोई जमाअत न हो और न उनका कोई इमाम हो। आपने फ़र्माया कि फिर उन तमाम फ़िक्रों से अपने को अलग रखना, अगरचे तुझे उसके लिये किसी पेड़ की जड़ चबानी पड़े, यहाँ तक कि तेरी मौत आ जाए और तू उसी हालात पर हो (तो ये तेरे हक़ में उनकी सुहबत में रहने से बेहतर होगा)। (दीगर मक़ाम: 3607, 7083)

قَدْوَهُ فِيهَا)). قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْهُمْ لَنَا. فَقَالَ: ((مَنْ مِنْ جَلَدِنَا وَتَكَلَّمُونَ بِالسِّيَةِ)). قُلْتُ: فَمَا تَأْمُرُنِي إِنْ أَدْرَكْتَنِي ذَلِكَ؟ قَالَ: ((تَلْزَمُ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَإِمَامَهُمْ)). قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ جَمَاعَةٌ وَلَا إِمَامٌ؟ قَالَ: ((فَاعْتَزِلْ بِلَاكِ الْفِرَاقِ كُلِّهَا، وَلَوْ أَنْ تَقُصَّ بِأَصْلِ شَجَرَةٍ حَتَّى يَذْرُوكَ الْمَوْتَ وَأَنْتَ عَلَى ذَلِكَ)).

[طرفاء ي: 3607, 7083]

3607. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या बिन सईद ने, उन्होंने इस्माईल से, कहा मुझसे कैस ने बयान किया, उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे साथियों ने (या'नी सहाबा रज़ि. ने) तो औहज़रत (ﷺ) से भलाई के हालात सीखे और मैंने बुराई के हालात दर्याफ़्त किये। (राजेअ: 3606)

٣٦٠٧ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ السُّنِّي حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنْ حَدِيقَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((تَعَلَّمْتُ أَصْحَابِي الْخَيْرَ، وَتَعَلَّمْتُ الشَّرَّ)). [راجع: ٣٦٠٦]

तशरीह: हदीष में ऐसे लोगों का ज़िक्र आया है जो हदीषे नबवी पर नहीं चलेंगे। उनकी कोई बात अच्छी होगी कोई बुरी। इस पर हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ साहब लिखते हैं। ये ज़माना गुज़र चुका। मुसलमान नेक काम करते थे, नमाज़ पढ़ते थे मगर उसके साथ इतिबाअे सुन्नत का ख़याल नहीं रखते थे, बहुत सी बिदाअतों में गिरफ़्तार थे और सबसे बढ़कर बात ये है कि उन्होंने कुआन व हदीष को पीठ पीछे डाल दिया था। वो ये समझते थे कि अब कुआन व हदीष की हाज़त नहीं रही, मुज्ताहिदों ने सब छान डाला है और जो निकालना था वो निकाल लिया है। कुआन कभी तीजा या दहुम में बतौर तबर्क पढ़ लेते, तरावीह में कुआन के लफ़्ज़ सुन लेते, हदीष भी कभी बतौर तबर्क पढ़ लेते, अमल करने की निय्यत से नहीं पढ़ते, बाकी सारी उम्र हिदाया और शरह वक़ाया और कंज़ और कुदूरी और शरहे मवाहिब और शरहे अक़ाइद में सफ़र करते। अरे अल्लाह के बन्दों! उन सब किताबों से क्या फ़ाइदा? कुआन और सहीह बुखारी अपने बच्चों को समझकर पढ़ाते तो ये दोनों किताबें तुमको काफ़ी थीं। इस हदीष में कुछ ओर लोगों की निशानदेही की गई है जो बज़ाहिर इस्लाम ही का नाम लेंगे मगर बातिन में दोज़ख के दाई होंगे। या'नी दिल में पक्के काफ़िर और मुल्हिद होंगे उनसे वो मस्बिज़दा लोग भी मुराद हो सकते हैं जो इस्लाम का नाम लेने के बावजूद मस्बिबी तहज़ीब के दिलदादा हैं और इस्लाम पर हंसी उड़ाते हैं। इस्लाम को दकियानूसी मज़हब और कुआन को दकियानूसी किताब कहते हैं। दिन रात मस्बिबी तहज़ीब की खूबियों के गीत गाते रहते हैं और सर से पैर तक अंग्रेज़ बनने को फ़ख़्र समझते हैं, उन ही की तरह खाते हैं और उनकी तरह खड़े पैशाब करते हैं। अल्फ़ार्ज तहज़ीबे जदीद के ये दिलदादा जिन्होंने इस्लाम को क़तल छोड़ दिया है फिर भी इस्लाम का नाम लेते हैं ये सौ फ़ौसदी इस हदीष में वारिद वईदे शदीद के मिसदाक़

हैं (शरह वहीदी)। इस हदीस में पेशीनगोई का एक खास ता'ल्लुक खवारिज से है जो हज़रत अली (रज़ि.) के खिलाफ़ बगावत का झण्डा बुलन्द करके खड़े हो गये थे और जो बज़ाहिर कुआन मजीद का नाम लेते और आयत, इनिल हुक्मु इल्ला लिल्लाह (अल अन्आम : 57) पढ़कर हज़रत अली (रज़ि.) की तक्फ़ीर करते थे। उन लोगों ने इस्लाम को शदीद नुक़सान पहुँचाया और उन लोगों ने भी जो हज़रत अली (रज़ि.) की मुहब्बत में गुलू करके ग़लततरीन अक्राइद में मुब्तला हो गये।

3608. हमसे हक़म बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझे अबू सलमा ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक दो जमाअतें (मुसलमानों की) आपस में जंग न कर लें और दोनों का दा'वा एक होगा (कि वो हक़ पर हैं)। (राजेअ : 85)

۳۶۰۸- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَقْتُلَ قِتَانٌ قِتَانًا دَعَاؤُهُمَا وَاحِدَةً)).

[راجع: ۸۵]

तशरीह : दोनों ये दा'वा करेंगे कि हम मुसलमान हैं और हक़ पर लड़ते हैं अगरचे नफ़सुल अम्र में एक हक़ पर होगा और दूसरा नाहक़ पर। ये पेशीनगोई आपने उस लड़ाई की फ़र्माई जो हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत मुआविया (रज़ि.) में हुई। दोनों तरफ़ वाले मुसलमान थे और हक़ पर लड़ने का दा'वा करते थे।

और खुद हज़रत अली (रज़ि.) से मन्कूल है कि उन्होंने हज़रत मुआविया (रज़ि.) और उनके गिरोह के बारे में खुद फ़र्माया कि वो हमारे भाई हैं जिन्होंने हम पर बगावत की, वो काफ़िर या फ़ासिक नहीं हैं (वहीदी)। उन वाक़ियात में आज के नामोनिहाद ड़लमा के लिये भी सबक़ है जो ज़रा ज़रा सी बातों पर आपस में तक्फ़ीर व तपसरीक़ के गोले फेंकने लग जाते हैं। इस तरह उम्मत के शीराज़े को मुंतशिर करते हैं। अल्लाह पाक ऐसे मुहईयाने इल्म को फ़हम व फ़रासत अज़ा करे कि वो वक़्त का मिज़ाज पहचानें और शीराज़-ए-मिल्लत को समेटने की कोशिश करें। अगर ऐसा न किया गया तो वो वक़्त आ रहा है कि उम्मत की तबाही के साथ ऐसे उम्मत के नामो-निहाद रहनुमा भी फ़ना के घाट उतार दिये जाएंगे और मिल्लत की बर्बादी का गुनाह उनके सरो' पर होगा। आज 22 शव्वाल 1391 हिजरी को मस्जिद अहले हदीस हिरलापुर हरीहर में ये नोट क़लम के हवाले किया गया। रब्बना तक्रब्बल मित्रा इन्नक़ अन्तस्समीड़लअलीम आमीन!

3609. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हममाम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक दो जमाअतें आपस में जंग न कर लें। दोनों में बड़ी भारी जंग होगी, हालाँकि दोनों का दा'वा एक ही होगा और क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तक्रबीबन तीस झूठे दज़ाल पैदा न हो लें। उनमें हर एक का यही गुमान होगा कि वो अल्लाह का नबी है।

۳۶۰۹- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَقْتُلَ قِتَانٌ قِتَانًا دَعَاؤُهُمَا مَقْتَلَةً عَظِيمَةً، دَعَاؤُهُمَا وَاحِدَةٌ، وَلَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَبْقَى دَجَالُونَ كَذَابُونَ قَرِيبًا مِنْ ثَلَاثِينَ، كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ)).

(राजेअ : 85)

[راجع: ۸۵]

उनमें से अक़्बर पैदा हो चुके हैं जिनका ज़िक्र तवारीख़े इस्लाम के सफ़हात पर मौजूद है। एक स़ाहब हिन्दुस्तान में भी पैदा हो चुके हैं जिन्होंने नुबुव्वत व रिसालत का दावा करके एक ख़ल्के कषीर को गुमराह कर डाला था। अल्लाहुम्महिदिहिम दो जमाअतों का इशारा जंगे सिफ़्फ़ीन की तरफ़ है जो दो मुस्लिम जमाअतों ही के दरम्यान हुई थी जैसा कि अभी बयान हुआ है।

3610. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझको अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद थे और आप (जंगे हुनैन का माले गनीमत) तब्रसीम फ़र्मा रहे थे इतने में बनी तमीम का एक शख़्स जुलूख़वेसिर नामी आया और कहने लगा कि या रसूलुल्लाह! इंस़ाफ़ से काम लीजिए। ये सुनकर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! अगर मैं ही इंस़ाफ़ न करूँगा तो दुनिया में फिर कौन इंस़ाफ़ करेगा। अगर मैं ज़ालिम हो जाऊँगा जब तो मेरी भी तबाही और बर्बादी हो जाए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया हज़ूर! उसके बारे में मुझे इजाज़त दें मैं इसकी गर्दन मार दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे छोड़ दो। उसके जोड़ के कुछ लोग पैदा होंगे कि तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ के मुक़ाबले में (बज़ाहिर) हक़ीर समझोगे और तुम अपने रोज़ों को उनके रोज़ों के मुक़ाबिल नाचीज़ समझोगे। वो कुआन की तिलावत करेंगे लेकिन वो उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। ये लोग दीन से इस तरह निकल जाएँगे जैसे ज़ोरदार तीर जानवर से पार हो जाता है। इस तीर के फल को अगर देखा जाए तो उसमें कोई चीज़ (खून वग़ैरह) नज़र न आएगी फिर उसके पट्टे को अगर देखा जाए तो छड़ में उसके फल के दाख़िल होने की जगह से ऊपर जो लगाया जाता है तो वहाँ भी कुछ न मिलेगा, उसके नज़ी (नज़ी तीर में लगाई जाने वाली लकड़ी को कहते हैं) को देखा जाए तो वहाँ भी कुछ निशान नहीं मिलेगा। इसी तरह अगर उसके पर को देखा जाए तो उसमें भी कुछ नहीं मिलेगा हालाँकि गंदगी और खून से वो तीर गुज़रा है। उनकी अलामत एक काला शख़्स होगा। उसका एक बाज़ू औरत के पिस्तान की तरह (उठा हुआ) होगा या गोश्त के लोथड़े की तरह होगा और हरकत कर रहा होगा। ये लोग

۳۶۱۰- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَهُوَ يَقْسِمُ قَسْمًا - إِذْ أَتَاهُ ذُو الْخُوَيْصِرَةِ وَهُوَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ اغْدِلْ. فَقَالَ : ((وَيْلَكَ، وَمَنْ يَغْدِلُ إِذَا لَمْ اغْدِلْ، قَدْ خَبِثَ وَخَسِرَتْ إِنْ لَمْ أَكُنْ أَغْدِلْ)). فَقَالَ عُمَرُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّكَ لَمِنْ فِيهِ فَأَضْرِبْ عَنْقَهُ، فَقَالَ : ((دَعْنِي فَإِنَّ لَهُ أَصْحَابًا يَحْقِرُ أَحَدَكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ صَلَاتِهِمْ، وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِمْ، يَقْرَأُونَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السُّهْمُ مِنَ الرَّمِيَةِ، يُنْظَرُ إِلَى نَصْبِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى رِصَافِهِ فَمَا يُوْجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى نَصْبِهِ - وَهُوَ قَدْ ذُو - فَلَا يُوْجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى قَدْذِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، قَدْ سَبَقَ الْقَرْثُ وَالذَّمُّ، آيَتُهُمْ رَجُلٌ أَسْوَدُ اخْتَذَى عُضْدِيهِ مِثْلَ لَذِي الْمَرَاةِ، أَوْ مِثْلَ الْبَضْعَةِ تَلْتَوِي، وَيَخْرُجُونَ عَلَى حَبْنٍ فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ)). قَالَ أَبُو سَعِيدٍ : فَأَشْهَدُ أَنِّي سَمِعْتُ هَذَا

मुसलमानों के बेहतरीन गिरोह से बग़ावत करेंगे। हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने ये हदीष रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने उनसे जंग की थी (या'नी ख़्वारिज़ से) उस वक़्त मैं भी हज़रत अली (रज़ि.) के साथ था और उन्होंने उस शख़्स को तलाश कराया (जिसे आँहज़रत ﷺ ने उस गिरोह की अलामत के तौर पर बतलाया था) आख़िर वो लाया गया। मैंने उसे देखा तो उसका पूरा हुलिया बिलकुल आँहज़रत (ﷺ) के बयान किये हुए औसाफ़ के मुताबिक़ था। (राजेज़: 3344)

الْحَدِيثُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَشْهَدُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ قَاتَلَهُمْ وَأَنَا مَعَهُ، فَأَمَرَ بِذَلِكَ الرَّحْلَ فَالْتَمِسْ بِهِ، حَتَّى نَظَرْتُ إِلَيْهِ عَلَى نَعْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي بَعَثَهُ.

(راجع: ٣٣٤٤)

तशरीह: या'नी जिस तरह एक तीर कमान से निकलने के बाद शिकार को छेदता हुआ गुज़र जाने पर भी बिलकुल साफ़ शफ़ाफ़ नज़र आता है हालाँकि उससे शिकार ज़ख्मी होकर ख़ाक व खून में तड़प रहा है। चूँकि निहायत तेज़ी के साथ उसने अपना फ़ासला तै किया है इसलिये खून वगैरह का कोई अप्रर उसके किसी हिस्से पर दिखाई नहीं देता। इसी तरह वो लोग भी दीन से बहुत दूर होंगे लेकिन बज़ाहिर बेदीनी के अपरात उनमें कहीं नज़र न आएँगे। ये मर्दूद ख़ारजी थे जो हज़रत अली (रज़ि.) और मुसलमानों के खिलाफ़ उठ खड़े हुए थे। ज़ाहिर में अहले कूफ़ा की तरह बड़े नमाज़ी परहेज़गार, अदना अदना बात पर मुसलमानों को काफ़िर बनाना उनके बाई हाथ का करतब था, हज़रत अली (रज़ि.) ने उन मर्दूदों को मारा, उनमें का एक ज़िन्दा न छोड़ा। मा'लूम हुआ कि कुआन को जुबान से रटना, मतालिब व मअ़ानी में ग़ौर न करना ये ख़ारजियों का शैवा है और आयाते कुरानिया का बेमहल इस्ते'माल करना भी बदतरीन हरकत है। अल्लाह की पनाह।

3611. हमसे मुहम्मद बिन कबीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी उन्हें आ'मश ने, उन्हें खैषमाने, उनसे सुवैद बिन ग़फ़ला ने बयान किया कि हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा, जब तुमसे कोई बात रसूलुल्लाह (ﷺ) के हवाले से मैं बयान करूँ तो ये समझो कि मेरे लिये आसमान से गिर जाना उससे बेहतर है कि मैं आँहज़रत (ﷺ) पर कोई झूठ बाँधूँ। अल्बत्ता जब मैं अपनी तरफ़ से कोई बात तुमसे कहूँ तो लड़ाई तो तदबीर और फ़रेब ही का नाम है (उसमे कोई बात बनाकर कहूँ तो मुम्किन है)। देखो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे कि आख़िर ज़माने में कुछ लोग ऐसे पैदा होंगे जो छोटे छोटे दांतों वाले, कम अक्ल और बेवकूफ़ होंगे। बातें वो कहेंगे जो दुनिया की बेहतरीन बात होगी, लेकिन इस्लाम से इस तरह साफ़ निकल चुके होंगे जैसे तीर जानवर के पार निकल जाता है। उनका ईमान उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, तुम उन्हें जहाँ भी पाओ क़त्ल करो। क्योंकि उनके क़त्ल से क़ातिल के लिये क़यामत के दिन प्रवाब मिलेगा।

٣٦١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ خَيْثَمَةَ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ غَفْلَةَ قَالَ قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِذَا حَدَّثْتُكُمْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ فَلَا تَنْجُرُوا مِنَ السَّمَاءِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَكْذِبَ عَلَيْهِ. وَإِذَا حَدَّثْتُكُمْ فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ فَإِنَّ الْحَرْبَ خِذْعَةٌ. سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: (يَأْتِي فِي آخِرِ الزَّمَانِ قَوْمٌ خَدَاءُ الْإِنْسَانِ، سَفَهَاءُ الْأَخْلَامِ، يَقُولُونَ مِنْ خَيْرِ قَوْلِ الثَّوْبَةِ. يَمُرُّونَ مِنَ الْإِسْلَامِ كَمَا يَمُرُّوْنَ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَةِ لَا يَجَاوِزُ إِيْمَانُهُمْ حَنَاحَهُمْ فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ. فَإِنَّ قَتْلَهُمْ أَجْرًا لِمَنْ قَتَلَهُمْ

(दीगर मक़ाम : 5057, 6930)

يوم القيامة) (طراه في : ١٥٥٧، ٦٩٣٠].

तफ़रीह : कहेंगे कुआन पर चलो, कुआन की आयतें पढ़ेंगे, उनका मा'नी गलत करेंगे, उनसे खारजी मर्दूद मुराद हैं। ये लोग जब निकले तो हज़रत अली (रज़ि.) से कहते थे कि कुआन पर चलो, अल्लाह तआला फ़र्माता है इनिलहुक्मु इल्ला लिल्लाहि (अल अन्आम : 57) तुमने आदमियों को कैसे हक़म मुकर्रर किया है और उस बिना पर मुआविया और हज़रत अली (रज़ि.) दोनों की तक्फ़ीर करते थे। हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, कलिमतु हक्किन उरीद बिहल्बातिल या'नी आयते कुआन तो बरहक़ है मगर जो मतलब उन्होंने समझा है। वो ग़लत है। जितने गुमराह फ़िर्के हैं वो सब अपनी दानिस्त में कुआन से दलील लाते हैं मगर उनकी गुमराही उससे खुल जाती है कि कुआन की तफ़सीर इस तरह नहीं करते जो आँहज़रत (ﷺ) और सहाबा किराम से माधूर है जिन पर कुआन उतरा था और जो अहले जुबान थे। ये कल के लौण्डे कुआन समझ गये और सहाबा और ताबेईन और खुद पैगम्बर सहाब जिन पर कुआन उतरा था उन्होंने नहीं समझा, ये भी कोई बात है। आजकल के अहले बिदअत का भी यही हाल है जो आयाते कुआनी से अपने अक्राइदे बातिला के इष्बात के लिये दलाइल पेश करके आयाते कुआनी के मा'नी व मतालिब मसख़ करके रख देते हैं। (वहीदी)

3612. मुझसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, कहा हमसे कैस ने बयान किया, उनसे हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शिकायत की। आप उस वक़्त अपनी एक चादर पर टेक दिये का'बा के साये में बैठे हुए थे। हमने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप हमारे लिये मदद क्यों नहीं त़लब करते, हमारे लिये अल्लाह से दुआ क्यों नहीं मांगते (हम काफ़िरों की ईज़ादेही से तंग आ चुके हैं) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया (ईमान लाने की सज़ा में) तुमसे पहली उम्मतों के लोगों के लिये ग़ड्ढा खोदा जाता और उन्हें उसमें डाल दिया जाता। फिर उनके सर पर आरा रखकर उनके दो टुकड़े कर दिये जाते फिर भी वो अपने दीन से न फिरते। लोहे के कैंधे उनके गोश्त में धंसाकर उनकी हड्डियों और पुट्टों पर फेरे जाते फिर भी वो अपना ईमान न छोड़ते। अल्लाह की क्रसम कि ये अमर (इस्लाम) भी कमाल को पहुँचेगा और एक ज़माना आएगा कि एक सवार मक़ामे सनआ से हज़रे मौत तक सफ़र करेगा (लेकिन रास्तों के पुरअमन होने की वजह से) उसे अल्लाह के सिवा और किसी का डर नहीं होगा। या सिर्फ़ भेड़िये का डर होगा कि कहीं उसकी बकरियों को न खा जाए लेकिन तुम लोग जल्दी करते हो।

(दीगर मक़ाम : 3752, 6943)

٣٦١٢ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا قَيْسُ عَنْ خَابِبِ بْنِ الْأَرْتِ قَالَ: شَكَوْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَهُوَ مُوسِدٌ بُرْدَةٌ لَهُ فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ - قُلْنَا لَهُ: أَلَا تُنْصِرُنَا. أَلَا تَدْعُو اللَّهَ لَنَا؟ قَالَ: ((كَانَ الرَّحْلُ فِيمَنْ قَبْلَكُمْ يُحَقِّرُ لَهُ فِي الْأَرْضِ فَيُخَلُّ فِيهِ، فَيَجَاءُ بِالْمِشَارِ فَيُوضَعُ عَلَى رَأْسِهِ فَيَشُقُّ بِأَتْنَيْنِ، وَمَا يَصُدُّهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ، وَيَمْتَشِطُ بِأَمْشَاطِ الْحَدِيدِ مَا ذُوْنَ لَحْيِهِ مِنْ عَظْمٍ أَوْ غَضَبٍ. وَمَا يَصُدُّهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ. وَاللَّهُ لَيُثْمِنَ هَذَا الْأَمْرَ حَتَّى يَسِيرَ الرَّايِبُ مِنْ صُعَاءَ إِلَى حَضَرٍ مَوْتٍ لَا يَخَافُ إِلَّا اللَّهَ، أَوْ الدَّبَّ عَلَى غَنَمِهِ، وَلَكِنَّكُمْ تَسْتَعْجِلُونَ)).

[طراه في : ٣٨٥٢، ٦٩٤٣].

आँहज़रत (ﷺ) की ये पेशानगोई भी अपने वक़्त पर पूरी हो चुकी है और आज सज़्ज़दी दौर में भी हिजाज़ में जो अमन व अमान है वो भी इस पेशानगोई का मिस्दाक़ करार दिया जा सकता है। अल्लाह तआला उस हुक्मत को कायम व दायम रखे आमीन।

3613. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अज़हर बिन सअद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उन्हें मूसा बिन अनस ने ख़बर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) को एक दिन प्राबित बिन कैस (रज़ि.) नहीं मिले तो एक सहाबी ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपके लिये उनकी ख़बर लाता हूँ। चुनौचे वो उनके यहाँ आए तो देखा कि अपने घर में सर झुकाए बैठे हैं। उसने पूछा कि क्या हाल है? उन्होंने कहा कि बुरा हाल है। उनकी आदत थी कि नबी करीम (ﷺ) के सामने आँहज़रत (ﷺ) से भी ऊँची आवाज़ में बोला करते थे। उन्होंने कहा इसीलिये मेरा अमल ग़ारत हो गया और मैं दो ज़ख़ियों में हो गया हूँ। वो सहाबी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) को ख़बर दी कि प्राबित (रज़ि.) यूँ कह रहे हैं। मूसा बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया, लेकिन दूसरी मर्तबा वही सहाबी प्राबित (रज़ि.) के पास एक बड़ी खुशख़बरी लेकर वापस हुए। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया था कि प्राबित के पास जाओ और उससे कहो कि वो अहले जहन्नम में से नहीं हैं बल्कि वो अहले जन्नत में से हैं। (दीगर मक़ाम : 4846)

तशरीह : प्राबित बिन कैस बिन शमास मशहूर सहाबी हैं। आँहज़रत (ﷺ) के सच्चे ज़ौनिषारों में से थे। कुछ अफ़राद की बुलन्द आवाज़ से बात करने की आदत होती है। प्राबित (रज़ि.) की ऐसी ही आदत थी। उसकी मुताबक़त बाब के तर्जुमे से यूँ है कि जैसी आँहज़रत (ﷺ) ने प्राबित (रज़ि.) को बशारत दी वो सच्ची हुई। प्राबित (रज़ि.) जंगे यमामा में शहीद होकर दर्ज-ए-शहादत को पहुँचे। (रजियल्लाहु अन्हु व अज़ाहू)

3614. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि एक सहाबी (उसैद बिन हुज़ैर रज़ि.) ने (नमाज़ में) सूरह कहफ़ की तिलावत की, उसी घर में घोड़ा बैधा हुआ था, घोड़े ने उछलना कूदना शुरू कर दिया। (उसैद ने इधर-उधर न किया उसको अल्लाह के सुपुर्द किया) उसके बाद जब उन्होंने सलाम फेरा तो देखा कि बादल के एक टुकड़े ने उनके सारे घर पर साया कर रखा है। इस वाक़िया का बयान उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि कुआँन पढ़ता ही रह क्योंकि ये सकीना है जो कुआँन की वजह से नाज़िल हुई या (उसके बजाय रावी ने) तनज़ज़लत लिल कुआँन के अल्फ़ाज़ कहे।

٣٦١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِزْهَرُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيُونٍ قَالَ: أَخْبَأَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَفْقَدَ ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ. فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا أَغْلَمُ لَكَ عِلْمَهُ فَإِنَّهُ فُوجِدَ جَالِسًا فِي بَيْتِهِ مُكَبِّيًا رَأْسَهُ. فَقَالَ: ((مَا شَأْنُكَ؟)) فَقَالَ شَرٌّ، كَانَ يَوْعُ صَوْتَهُ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَدْ خَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الدَّارِ فَأَتَانِي الرَّجُلُ فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ قَالَ كَذِبًا وَكَذِبًا. فَقَالَ مُوسَى بْنُ أَنَسٍ: فَرَجَعَ الْمَرْءُ الْآخِرَةَ بِبَشَارَةٍ عَظِيمَةٍ. فَقَالَ: اذْهَبْ إِلَيْهِ فَقُلْ لَهُ: ((إِنَّكَ لَسْتَ مِنْ أَهْلِ الدَّارِ، وَلَكِنْ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)). [طرمه ٣: ١٤٨٦]

٣٦١٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعْتُ ثَوْرًا بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَرَأَ رَجُلٌ الْكَهْفَ وَفِي الدَّارِ الدَّابَّةُ، فَجَعَلَتْ تَنْفِرُ، فَسَلَّمَ، فَإِذَا صَبَابَةٌ أَوْ سَحَابَةٌ عَشِيْنَةٌ. فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((اقْرَأْ فَلَانٌ، فَإِنَّهَا السَّكِينَةُ نَزَلَتْ الْقُرْآنَ، أَوْ نَزَلَتْ لِلْقُرْآنِ)).

(दीगर मक़ाम: 4839, 5011)

[طوافه في: ٤٨٣٩، ٥٠١١]

दोनों का मफ़हूम एक ही है। सकीना की तशरीह किताबुत तफ़सीर में आएगी ईशाअल्लाह।

3615. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमसे अहमद बिन यज़ीद बिन इब्राहीम अबुल हसन हिरानी ने, कहा हमसे जुहैर बिन मुआविया ने, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया और उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि) मेरे वालिद के पास उनके घर आए और उनसे एक पालान ख़रीदा, फिर उन्होंने मेरे वालिद से कहा कि अपने बेटे के ज़रिये उसे मेरे साथ भेज दो। हज़रत बराअ (रज़ि.) ने बयान किया चुनौचे मैं उस कजावे को उठाकर आपके साथ चला और मेरे वालिद उसकी क़ीमत के रुपये पर ख़वाने लगे। मेरे वालिद ने उनसे पूछा ऐ अबूबक्र! मुझे वो वाक़िया सुनाओ जब तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ारे घ़ौर से हिजरत की थी तो आप दोनों ने वो वक़्त कैसे गुज़ारा था? उस पर उन्होंने बयान किया कि जी हाँ रात भर तो हम चलते रहे और दूसरे दिन सुबह को भी लेकिन जब दोपहर का वक़्त हुआ और रास्ता बिल्कुल सुनसान पड़ गया कि कोई भी आदमी गुज़रता हुआ दिखाई नहीं देता था तो हमें एक लम्बी चट्टान दिखाई दी, उसके साये में धूप नहीं थी। हम वहाँ उतर गये और मैंने खुद नबी करीम (ﷺ) के लिये एक जगह अपने हाथ से ठीक कर दी और एक चादर वहाँ बिछा दी, फिर मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप यहाँ आराम फ़र्माएं मैं निगरानी करूंगा। ओहज़रत (ﷺ) सो गये और मैं चारों तरफ़ हालात देखने के लिये निकला। इत्तिफ़ाक़ से मुझे एक चरवाहा मिला। वो भी अपनी बकरियों के रेवड़ को उसी चट्टान के साये में लाना चाहता था जिसके तले मैंने वहाँ पड़ाव डाला था, वही उसका भी इरादा था, मैंने उससे पूछा कि तू किस क़बीले से है? उसने बताया कि मदीना या (रावी ने कहा कि) मक्का के फ़लाँ शख़्स से। मैंने उससे पूछा, क्या तेरी बकरियों से दूध मिल सकता है? उसने कहा कि हाँ। मैंने पूछा, क्या हमारे लिये तू दूध निकाल सकता है? उसने कहा

٣٦١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يَزِيدَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ أَبُو الْحَسَنِ الْخُرَاسِيُّ حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ يَقُولُ: ((جَاءَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِلَى أَبِي فِي مَنْزِلِهِ فَاشْتَرَى مِنْهُ رَحْلاً، فَقَالَ لِعَازِبٍ: ابْعَثْ ابْنَكَ يَحْمِلُهُ مَعِيَ، قَالَ: فَحَمَلْتُهُ مَعَهُ، وَخَرَجَ أَبِي يَتَقَفَّدُ نَحْمَهُ، فَقَالَ لَهُ أَبِي: يَا أَبَا بَكْرٍ حَدَّثَنِي كَيْفَ صَنَعْتُمَا حِينَ سَرَّيْتُمْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: نَعَمْ، اسْتَرَيْنَا لَيْلَتَنَا وَمِنْ الْعَدَبِ حَتَّى قَامَ قَائِمُ الطَّهْرِ، وَحَلَّ الطَّرِيقُ لَا يَمُرُّ فِيهِ أَحَدٌ، فَرَفَعْتُ لِي صَخْرَةً طَوِيلَةً لَهَا طَلٌّ لَمْ تَأْتِ عَلَيْهِ الشَّمْسُ فَرَزْنَا عَنْدَهُ، وَسَوَّيْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَانًا بِيَدِي يَنَامُ عَلَيْهِ، وَبَسَطْتُ فِيهِ قَرُونَ وَقُلْتُ: سَمِ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَأَنَا أَنْقَضُ لَكَ مَا حَوْلَكَ. فَمَامَ وَخَرَجْتُ أَنْقَضُ مَا حَوْلَهُ. فَإِذَا أَنَا بِرَاعٍ مُقْبِلٍ بِغَنَمِهِ إِلَى الصَّخْرَةِ يُرِيدُ مِنْهَا مِثْلَ الَّذِي أَرَدْنَا فَقُلْتُ: لِمَنْ أَنْتَ يَا غَلَامُ؟ فَقَالَ: لِرَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ - أَوْ مَكَّةَ - قُلْتُ: أَفِي غَنَمِكَ لَبَنٌ؟ قَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ: أَتَحْلِبُ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَأَخَذَ شَاةً،

कि हौं, चुनौंचे वो एक बकरी पकड़ के लाया। मैंने उससे कहा कि पहले थन को मिट्टी, बाल और दूसरी गंदगियों से झाफ़ कर ले। अबू इस्हाक़ रावी ने कहा कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) को देखा कि उन्होंने अपने एक हाथ को दूसरे पर मारकर थन को झाड़ने की मूरत बयान की। उसने लकड़ी के एक प्याले में दूध निकाला। मैंने आँहज़रत (ﷺ) के लिये एक बर्तन अपने साथ रख लिया था, आप उससे पानी पिया करते थे और वुजू भी कर लेते। फिर मैं आँहज़रत (ﷺ) के पास आया (आप सो रहे थे) मैं आपको जगाना पसन्द नहीं करता था लेकिन बाद में जब मैं आया तो आप बेदार हो चुके थे, मैंने पहले दूध के बर्तन पर पानी बहाया जब उसके नीचे का हिस्सा ठण्डा हो गया तो मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! दूध पी लीजिए। उन्होंने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने दूध नोश फ़र्माया जिससे मुझे खुशी हासिल हुई। फिर आपने फ़र्माया कि अभी कूच करने का वक़्त नहीं आया? मैंने अर्ज़ किया कि आ गया है। उन्होंने कहा कि जब सूरज ढल गया तो हमने कूच किया। बाद में सुराक़ा बिन मालिक हमारा पीछा करता हुआ यहीं पहुँचा। मैंने कहा हुज़ूर! अब तो ये हमारे करीब ही पहुँच गया है। आपने फ़र्माया कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। आपने फिर उसके लिये बद्दुआ की और उसका घोड़ा उसे लिये हुए पेट तक ज़मीन में धंस गया। मेरा ख़याल है कि ज़मीन बड़ी सख़्त थी, ये शक़ (राबी हदीष) जुहैर को था। सुराक़ा ने कहा, मैं समझता हूँ कि आप लोगों ने मेरे लिये बद्दुआ की है, अगर अब आप लोग मेरे लिये (इस मुसीबत से नजात की) दुआ कर दें तो अल्लाह की क़सम मैं आप लोगों की तलाश में आने वाले तपाथ लोगों को वापस कर दूँगा। चुनौंचे आँहज़रत (ﷺ) ने फिर दुआ की तो वो नजात पा गया। फिर तो जो भी उसे रास्ते में मिलता उससे वो कहता था कि मैं बहुत तलाश कर चुका हूँ, क़तई तौर पर वो इधर नहीं हैं। इस तरह जो भी मिलता उसे वो वापस अपने साथ ले जाता। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि उसने हमारे साथ जो वा'दा किया था उसे पूरा किया।

(राजेअ: 2439)

فَقُلْتُ: انْقَضِ الصُّرْعُ مِنَ التُّرَابِ وَالشَّعَرِ وَالْقَذَى. قَالَ: قَرَأْتُ الْبَرَاءَ يَضْرِبُ إِحْدَى يَدَيْهِ عَلَى الْأُخْرَى يَنْقُضُ. فَحَلَبَ فِي قَعَبٍ كَثْبَةٍ مِنْ لَبَنٍ، وَمَعِيَ إِذَاوَةٌ حَمَلَتْهَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْتَوِي مِنْهَا يَشْرَبُ وَيَتَوَضَّأُ، فَاتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَكَرِهْتُ أَنْ أَوْقِظَهُ، فَوَافَقَنِي حِينَ اسْتَيْقَظَ، فَصَبَّيْتُ مِنَ الْمَاءِ عَلَى اللَّيْنِ حَتَّى تَرَدَّ أَسْفَلُهُ، فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيْتُ. ثُمَّ قَالَ: ((أَلَمْ يَأْنِ لِلرَّحِيلِ؟)) قُلْتُ: بَلَى.

قَالَ: فَأَرْتَحَلْنَا بَعْدَ مَا مَالَتِ الشَّمْسُ، وَاتَّبَعْنَا سِرَاقَةَ بَنِي مَالِكٍ، فَقُلْتُ: أَتَيْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ: ((لَا تَحْزَنَ، إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا)). فَذَعَا عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَرْتَطَمْتُ بِهِ فَرَسُهُ إِلَى بَطْنِهَا - أَرَى فِي جِلْدِهِ مِنَ الْأَرْضِ، بِشَكِّ زُهَيْرٍ - فَقَالَ: إِنِّي أَرَاكُمْ قَدْ دَعَوْتُمْ عَلِيَّ، فَادْعُوا اللَّهَ لِي، فَإِنَّ اللَّهَ لَكُمْ أَنْ أَرُدَّ عَنْكُمْ الْطَّلَبَ. فَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَجَدَّ. فَجَعَلَ لَا يَلْقَى أَحَدًا إِلَّا قَالَ: كَفَيْتُكُمْ مَا هُنَا، فَلَا يَلْقَى أَحَدًا إِلَّا رَدَّهُ، قَالَ: (وَوَفَى لَنَا).

(راجع ١٢٤٣٩)

हिजरत के वाकिये में आँहजरत (ﷺ) से बहुत से मुअज्जात का जुहूर हुआ जिनकी तफ्सीलात मुख्तलिफ़ रिवायतों में नक़ल हुई हैं। यहाँ भी आपके कुछ मुअज्जात का ज़िक्र है जिससे आपकी सदाक़त और हिकायत पर काफ़ी रोशनी पड़ती है। अहले बसीरत के लिये आपके रसूले बरहक़ होने में एक ज़र्रा बराबर भी शक व शुब्हा करने की गुंजाइश नहीं और दिल के अँधों के लिये ऐसे हज़ार निशानात भी नाकाफ़ी हैं।

3616. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुख्तार ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इकिरमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) एक अअराबी की अयादत के लिये तशरीफ़ ले गये। आप जब भी किसी मरीज़ की अयादत के लिये तशरीफ़ ले जाते तो फ़र्माते कोई हर्ज नहीं, इंशा अल्लाह ये बुखार गुनाहों को धो देगा। आपने उस अअराबी से भी यही फ़र्माया कि, कोई हर्ज नहीं इंशा अल्लाह गुनाहों को धो देगा। उसने उस पर कहा। आप कहते हैं गुनाहों को धोने वाला है। हर्गिज़ नहीं। ये तो निहायत शदीद किस्म का बुखार है या (रावी ने) तबूर कहा (दोनों का मफ़हूम एक ही है) कि बुखार एक बूढ़े खूसट पर जोश मार रहा है। जो क़न्न की ज़ियारत कराए बग़ैर नहीं छोड़ेगा, आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा तो फिर यँही होगा। (दीगर मक़ाम: 5656, 5662, 7470)

3616 - حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَى أَغْرَابِيٍّ يَمُودُهُ، قَالَ: وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ عَلَى مَرِيضٍ يَمُودُهُ قَالَ: ((لَا بَأْسَ، طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ)). فَقَالَ لَهُ: ((لَا بَأْسَ، طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ)). قَالَ: قُلْتُ: طَهُورٌ؟ كَلَّا، بَلْ هِيَ حُمَى تَقُورُ - أَوْ تَقُورُ - عَلَى شَيْخٍ كَبِيرٍ، تُزِيلُهُ الْقُبُورُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَنَعْمَ إِذَا)).

[أطراف 3: 5662, 5666, 7470].

तशरीह: या'नी तू इस बीमारी से मर जाएगा। हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने इस हदीष को लाकर उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसको तबरानी ने निकाला, उसमें ये है कि दूसरे रोज़ वो मर गया। जैसा आपने फ़र्माया था वैसा ही हुआ।

3617. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष्ठ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख्स पहले ईसाई था, फिर वो इस्लाम में दाख़िल हो गया था। उसने सूरह बक़र: और आले इमरान पढ़ ली थी और वो नबी करीम (ﷺ) का मशो बन गया लेकिन फिर वो शख्स मुर्तद होकर ईसाई हो गया और कहने लगा कि मुहम्मद (ﷺ) के लिये जो कुछ मैंने लिख दिया है उसके सिवा उसे और कुछ भी मा'लूम नहीं। फिर अल्लाह तआला की हुक्म से उसकी मौत वाक़ेअ हो गई और उसके आदमियों ने उसे दफ़न कर दिया जब मुबह हुई तो उन्होंने देखा कि उसकी लाश क़न्न से निकलकर ज़मीन के ऊपर पड़ी है। ईसाई लोगों ने कहा कि ये मुहम्मद (ﷺ) और उसके साथियों का काम है। चूँकि उनका दीन

3617 - حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ نَصْرَانِيًّا فَاسْلَمَ وَتَلَّى الْبَقْرَةَ وَآلَ عِمْرَانَ، فَكَانَ يَكْتُبُ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَعَادَ نَصْرَانِيًّا، فَكَانَ يَقُولُ: مَا يَذَرِي مُحَمَّدٌ إِلَّا مَا كَتَبْتُ لَهُ، فَأَمَاتَهُ اللَّهُ، فَذَنَّبُوهُ، فَأَصْبَحَ وَقَدْ لَقِظَتْهُ الْأَرْضُ، فَقَالُوا: هَذَا فِعْلُ مُحَمَّدٍ وَأَصْحَابِهِ لَمَّا هَرَبَ مِنْهُمْ نَبَشُوا عَنْ صَاحِبِنَا فَأَلْقَوْهُ، فَحَفَرُوا لَهُ فَأَغْمَقُوا، فَأَصْبَحَ وَقَدْ لَقِظَتْهُ

उसने छोड़ दिया था इसलिये उन्होंने उसकी क़ब्र खोदी है और लाश को बाहर निकालकर फेंक दिया है। चुनौचे दूसरी क़ब्र उन्होंने खोदी जो बहुत ज़्यादा गहरी थी। लेकिन जब सुबह हुई तो फिर लाश बाहर थी। इस मर्तबा भी उन्होंने यही कहा कि ये मुहम्मद (ﷺ) और उनके साथियों का काम है चूँकि उनका दीन उसने छोड़ दिया था इसलिये उसकी क़ब्र खोदकर उन्होंने लाश बाहर फेंक दी है। फिर उन्होंने क़ब्र खोदी और जितनी गहरी उनके बस में थी करके उसे उसके अंदर डाल दिया लेकिन सुबह हुई तो फिर लाश बाहर थी। अब उन्हें यकीन आया कि ये किसी इंसान का काम नहीं है। (बल्कि ये मय्यत अल्लाह के अज़ाब में गिरफ्तार है) चुनौचे उन्होंने उसे यूँ ही (जमीन पर) डाल दिया।

ये उसके इर्तिदाद की सज़ा थी और तौहीने रिसालत की कि ज़मीन ने उसके बदतरीन लाश को बहुक्मे अल्लाह बाहर फेंक दिया। आज भी रसूल (ﷺ) के गुस्ताखों को ऐसी ही सज़ा मिलती रहती हैं। लौ कानू यअलमून

3618. हमसे यद्दा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्थिब ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब किसरा (शाहे ईरान) हलाक हो जाएगा तो फिर कोई किसरा पैदा नहीं होगा और जब कैसर (शाहे रूम) हलाक हो जाएगा तो फिर कोई कैसर पैदा नहीं होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्जे में मुहम्मद (ﷺ) की जान है तुम उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ज़रूर ख़र्च करोगे। (राजेअ: 3027)

الْأَرْضُ، فَقَالُوا: هَذَا بَغْلٌ مُحْتَمِلٌ وَأَصْحَابِهِ نَبَشُوا عَنْ صَاحِبِهِ لَمَّا هَرَبَ مِنْهُمْ فَأَلْفَوْهُ، فَخَفَرُوا لَهُ وَأَعْمَقُوا لَهُ فِي الْأَرْضِ مَا اسْتَطَاعُوا، فَأَصْبَحَ قَدْ لَفَظَتْهُ الْأَرْضُ، فَعَلِمُوا أَنَّهُ لَيْسَ مِنَ النَّاسِ فَأَلْفَوْهُ)).

۳۶۱۸- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: وَأَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: (إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلَا كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرٌ فَلَا قَيْصَرٌ بَعْدَهُ. وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَتَنْفِقُنَّ كَتُورُهُمَا فِي سَبِيلِ

اللَّهِ)). [راجع: ۳۰۲۷]

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) ने जो फ़र्माया था हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह प्रामित हुआ जैसा कि तारीख़ शाहिद है। रिवायत में हज़रत इब्ने शिहाब से मुराद मशहूर ताबेई हज़रत इमाम जुहरी मुराद हैं जो जुहुरा बिन किलाब की नस्ल से हैं इसीलिये उनको जुहरी कहा गया है। उनकी कुत्रियत अबूबक्र और नाम मुहम्मद है। अब्दुल्लाह बिन शिहाब के बेटे हैं। कुछ मुंकिरीने हदीष तमज़ा अमादी जैसों ने उनके जुहुरा बिन किलाब की नस्ल से होने का इन्कार किया है जो सरासर ग़लत है, ये फ़िलवाक़ेअ जुहरी हैं। बड़े मुहद्दिष और फ़कीह, जलीलुलक़दर ताबेई हैं, उलूमे शरीअत के इमाम हैं, उनके शागिदों में बड़े-बड़े अइम्म-ए-हदीष दाख़िल हैं। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह) ने कहा कि मैं अपने दौर में उनसे बढ़कर कोई आलिम नहीं पाता हूँ। 124 हिजरी बमाहे रमज़ान इतिक़ाल फ़र्माया। रहमतुल्लाहि रहमतन वासिआ आमीन!

3619. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया,

۳۶۱۹- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ

जब किसरा हलाक हुआ तो उसके बाद कोई किसरा पैदा नहीं होगा और जब कैसर हलाक हुआ तो कोई कैसर फिर पैदा नहीं होगा और रावी ने (पहली हदीस की तरह इस हदीस को भी बयान किया और) कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम उन दोनों के ख़जाने अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे। (राज़ेज़: 3121)

3620. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी हुसैन ने, उनसे नाफ़ेअ बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मुसैलमा कज़ाब मदीना में आया और ये कहने लगा कि अगर मुहम्मद (ﷺ) अम् (या'नी ख़िलाफ़त) को अपने बाद मुझे सौंप दें तो मैं उनकी इत्तिबाअ के लिये तैयार हूँ। मुसैलमा अपने बहुत से मुरीदों को साथ लेकर मदीना आया था। रसूलुल्लाह (ﷺ) उसके पास (उसे समझाने के लिये) तशरीफ़ ले गये। आपके साथ प्राबित बिन कैस बिन शम्मास (रज़ि.) थे और आपके हाथ में ख़जूर की एक छड़ी थी। आप वहाँ ठहर गये जहाँ मुसैलमा कज़ाब अपने आदमियों के साथ मौजूद था तो आपने उससे फ़र्माया अगर तू मुझसे छड़ी भी मांगे तो मैं तुझे नहीं दे सकता (ख़िलाफ़त तो बड़ी चीज़ है) और परवरदिगार की मज़ी को तू टाल नहीं सकता अगर तू इस्लाम से पीठ फेरेंगा तो अल्लाह तुझको तबाह कर देगा। और मैं समझता हूँ कि तू वही है जो मुझे (ख़वाब में) दिखाया गया था।

(दीगर मक्काम: 4273, 7033, 7261)

3621. (इब्ने अब्बास रज़ि. ने कहा कि) मुझे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था, मैं सोया हुआ था कि मैंने (ख़वाब में) सोने के दो कंगन अपने हाथों में देखे। मुझे उस ख़वाब से बहुत फ़िक्र हुआ, फिर ख़वाब में ही वह्य के ज़रिये मुझे बतलाया गया कि मैं उन पर फूँक मारूँ। चुनाँचे जब मैंने फूँक मारी तो वो दोनों उड़ गये, मैंने उससे ये ता'बीर ली कि मेरे बाद दो झूठे नबी होंगे। पस उनमें से एक तो अस्वद अनसी है और दूसरा यमामा का मुसैलमा कज़ाब था।

رَفَعَهُ قَالَ: ((إِذَا مَلَكَ كِسْرَى فَلَا كِسْرَى بَعْدَهُ وَإِذَا مَلَكَ قَيْصَرٌ فَلَا قَيْصَرَ بَعْدَهُ - وَذَكَرَ وَقَالَ: - لَتَنْفِقُنَّ كُتُورَهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ)).

[راجع: 3121]

3620 - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: قَالَ: ((قَدِمَ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَجَعَلَ يَقُولُ: إِنْ جَعَلَ لِي مُحَمَّدٌ الْأَمْرُ مِنْ بَعْدِهِ تَبَعْتُهُ، وَقَدِمَهَا فِي بَشَرٍ كَثِيرٍ مِنْ قَوْمِهِ، فَأَقْبَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ بْنُ شَمَّاسٍ - وَفِي - يَدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قِطْعَةً خَرِيدٍ - حَتَّى وَقَفَ عَلَى مُسَيْلِمَةَ فِي أَصْحَابِهِ فَقَالَ: لَوْ سَأَلْتَنِي هَذِهِ الْقِطْعَةَ مَا أَعْطَيْتُكَهَا، وَلَنْ تَعْدُو أَمْرَ اللَّهِ فَيْتُكَ، وَلَنْ أَذْبُرْتَ لِتَغْفِرَنَّكَ اللَّهُ، وَإِنِّي لَأَرَاكَ الَّذِي أَرَيْتُ فَيْتُكَ مَا رَأَيْتُ)). [أصروا في: 4273, 7033, 7261].

3621 - فَأَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ فِي يَدَيَّ سَوَارِيرَ مِنْ ذَهَبٍ فَأَهْمَيْتَنِي شَأْنُهُمَا، فَأَوَجَّيْتُ إِلَيْهِ فِي الْمَنَامِ أَنْ انْفُخْهُمَا، فَمُحِطْتُهُمَا، فَطَارَا. فَأَوَّلَتْهُمَا كَذَابَيْنِ يَخْرُجَانِ بَعْدِي. فَكَانَ أَحَدُهُمَا الْغُسَيْفِيُّ، وَالْآخَرُ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ صَاحِبُ

(दीगर मक़ाम : 4373, 4375, 4379, 7034, 7037)

الْهَيْمَامَةِ)). [أَطْرَافُهُ فِي: ٤٣٧٤, ٤٣٧٥,

٤٣٧٩, ٧٠٣٤, ٧٠٣٧.]

अल्लाह ने दोनों को हलाक कर दिया। इस तरह आँहजरत (ﷺ) ने जो फ़र्माया था वो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हुआ। ये भी आपकी नुबुव्वत की दलील है। यहाँ पर कुछ बुखारी शरीफ़ का तर्जुमा करने वालों ने यूँ तर्जुमा किया है कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मुसैलमा कज़ाब पैदा हुआ था, ये तर्जुमा सहीह नहीं है बल्कि उसका तर्जुमा मदीना में आना मुराद है जैसा कि आगे साफ़ मज़कूर है।

3622. मुझसे मुहम्मद बिन अला ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने। मैं समझता हूँ (ये इमाम बुखारी रह. का क़ौल है कि) मुहम्मद बिन अला ने यूँ कहा कि ऐसी ज़मीन की तरफ़ हिजरत कर रहा हूँ जहाँ खज़ूर के बाग़ात हैं। इस पर मेरा ज़हन उधर गया कि ये मुक़ाम यमामा या हिज्ज होगी, लेकिन वो यज़िब, मदीना मुनव्वरा है और उसी ख़्वाब में मैंने देखा कि मैंने तलवार हिलाई तो वो बीच में से टूट गई, ये उस मुसीबत की तरफ़ इशारा था जो उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को उठानी पड़ी थी। फिर मैंने दूसरी मर्तबा उसे हिलाया तो वो पहले से भी अच्छी सूत में हो गई। ये उस वाक़िये की तरफ़ इशारा था कि अल्लाह तआला ने मक्का की फ़तह दी और मुसलमान सब इकट्ठे हो गये। मैंने उसी ख़्वाब में गाएँ देखीं और अल्लाह तआला का जो काम है वो बेहतर है। उन गायों से उन मुसलमानों की तरफ़ इशारा था जो उहुद की लड़ाई में शहीद किये गये थे और ख़ैर व भलाई वो थी जो हमें अल्लाह तआला से सच्चाई का बदला बदर की लड़ाई के बाद अज़ा फ़र्माया था।

(दीगर मक़ाम : 3987, 4071, 7035, 7041)

٣٦٢٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ أَسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى أَرَاهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ فِي السَّمَاءِ أَنِّي أَهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا تَخْلُ، فَدَخَبْتُ وَهَلَيْتُ إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرَ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَتْرُوبُ، وَرَأَيْتُ فِي رُؤْيَايَ هَذِهِ أَنِّي هَزَزْتُ سَيْفًا فَانْقَطَعَ صَدْرُهُ، فَإِذَا هُوَ مَا أَصِيبَتْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ، ثُمَّ هَزَزْتُهُ بِأُخْرَى فَعَادَ أَحْسَنَ مَا كَانَ، فَإِذَا هُوَ مَا جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْفَتْحِ وَاجْتِمَاعِ الْمُؤْمِنِينَ. وَرَأَيْتُ فِيهَا يَقْرَأُ وَاللَّهُ خَيْرٌ، فَإِذَا هُمْ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ أُحُدٍ. وَإِذَا الْحَيَرُ مَا جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْخَيْرِ وَثَوَابِ الصَّدَقِ الَّذِي آتَانَا اللَّهُ بَعْدَ يَوْمِ بَدْرٍ)). [أَطْرَافُهُ فِي: ٣٩٨٧, ٤٠٨١, ٧٠٣٥, ٧٠٤١.]

3623. हमसे अबू नुरैम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, उनसे फ़िरास ने, उनसे आमिर ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) आई, उनकी चाल में नबी करीम (ﷺ) की चाल से बड़ी मुशाबिहत थी। आपने फ़र्माया बेटी आओ मरहबा! उसके बाद आपने उन्हें अपनी दाई तरफ़ या बाई तरफ़ बिठाया, फिर

٣٦٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا عَنْ فِرَاسٍ عَنْ عَامِرٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((أَقْبَلَتْ فَاطِمَةُ تَمْشِي كَأَنَّ مِشْيَهَا مِشْيَةُ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَرْحَبًا يَا ابْنَتِي))

उनके कान में आपने चुपके से कोई बात कही तो वो रोने लगीं। मैंने उनसे कहा कि आप रोती क्यों हो? फिर दोबारा आँहज़रत (ﷺ) ने उनके कान में कुछ कहा तो वो हंस दीं। मैंने उनसे कहा आज ग़म के फ़ौरन बाद ही खुशी की जो कैफ़ियत मैंने आपके चेहरे पर देखी वो पहले कभी नहीं देखी थी। फिर मैंने उनसे पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) ने क्या फ़र्माया था? उन्होंने कहा कि जब तक रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़िन्दा हैं मैं आपके राज़ को किसी पर नहीं खोल सकती। चुनौचे मैंने आपकी वफ़ात के बाद पूछा।

(दीगर मक़ाम : 3625, 3715, 4433, 6285)

ثُمَّ اجْلَسَهَا عَنْ يَمِينِهِ - أَوْ عَنْ شِمَالِهِ -
ثُمَّ أَسْرَ إِلَيْهَا خَدَّيْنِهَا فَبَكَتْ، فَقُلْتُ لَهَا:
لِمَ تَبْكِينَ؟ ثُمَّ أَسْرَ إِلَيْهَا خَدَّيْنِهَا
فَضَحِكَتْ، فَقُلْتُ: مَا رَأَيْتُ كَأَنِّيَوْمِ قَرَحَا
الْقُرْبَ مِنْ حُزْنٍ، فَسَأَلْتُهَا عَمَّا قَالَتْ.
فَقَالَتْ: مَا كُنْتُ لِأَنْفُسِي سِرٌّ وَرَسُولِ اللَّهِ
(ﷺ)، حَتَّى قُبِضَ النَّبِيُّ (ﷺ) فَسَأَلْتُهَا)).

[أطرافه في: 3715, 3716, 4433]

[6285]

3624. तो उन्होंने बताया कि आपने मेरे कान में कहा था कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) हर साल कुआन मजीद का एक दौर किया करते थे लेकिन इस साल उन्होंने दो मर्तबा दौर किया है। मुझे यक़ीन है कि अब मेरी मौत करीब है और मेरे घराने में सबसे पहले मुझसे आ मिलने वाली तुम होगी। मैं (आपकी इस ख़बर पर) रोने लगी तो आपने फ़र्माया कि तुम उस पर राज़ी नहीं कि जन्नत की औरतों की सरदार बनोगी या (आपने फ़र्माया कि) मोमिना औरतों की, तो उस पर मैं हंसी थी।

(दीगर मक़ाम : 3626, 3716, 4434, 6286)

3624 - ((قَالَتْ: أَسْرَ إِلَيَّ أَنْ جِبْرِيلُ
كَانَ يُغَارِضُنِي الْقُرْآنَ كُلَّ سَنَةٍ مَرَّةً، وَإِنَّهُ
غَارِضُنِي الْيَوْمَ مَرَّتَيْنِ وَلَا أَرَاهُ إِلَّا حَضَرَ
أَجْلِي، وَإِنَّكَ أَوَّلُ أَهْلِ بَيْتِي لِحَاقًا بِي،
فَبَكَتْ. فَقَالَ: أَمَا قَرَضَتَيْنِ أَنْ تَكُونِي
سَيِّدَةً نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ! أَوْ نِسَاءِ
الْمُؤْمِنِينَ - فَضَحِكَتْ لِذَلِكَ)).

[أطرافه في: 3716, 3717, 4434]

[6286]

तशरीह: दूसरी रिवायतों में यूँ है कि पहले आपने ये फ़र्माया कि मेरी वफ़ात नज़दीक है तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) रोने लगीं फिर ये फ़र्माया कि तुम सबसे पहले मुझसे मिलोगी तो वो हंसने लगीं। इस हदीष से हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत प्रबित होती है। फ़िल् वाक़ेअ आप आँहज़रत (ﷺ) की लख्ते ज़िगर, नूरे-नज़र हैं इसलिये हर फ़ज़ीलत की अव्वलीन हक़दार हैं।

3625. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने ज़माने मर्ज़ में अपनी माहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाया और चुपके से फिर कोई बात फ़र्माई तो वो हंसीं। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से उसके बारे में पूछा।

3625 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا
إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَعَا النَّبِيُّ
(ﷺ) فَاطِمَةَ ابْنَتَهُ فِي شَكْوَاهِ الَّذِي قُبِضَ
لَيْهِ، فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبَكَتْ، ثُمَّ دَعَاَهَا
فَسَارَّهَا فَضَحِكَتْ، قَالَتْ فَسَأَلْتُهَا عَنْ

(राजेअ: 3623)

3626. तो उन्होंने बताया कि पहली मर्तबा जब आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे आहिस्ता से बातचीत की थी तो उसमें आपने फ़र्माया था कि आपकी उस मर्ज़ में वफ़ात हो जाएगी जिसमें वाकई आपकी वफ़ात हुई, मैं उस पर रो पड़ी। फिर दोबारा आपने आहिस्ता से मुझसे जो बात कही उसमें आपने फ़र्माया कि आपके अहले बेत में, मैं सबसे पहले आपसे जा मिलूंगी। मैं उस पर हंसी थी।

(राजेअ: 3624)

जैसा आपने फ़र्माया था वैसा ही हुआ। वफ़ाते नबवी के छः माह बाद हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का विसाल हो गया और इस हदीस से हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत निकलती है।

3627. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबी बिअर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने। उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब इब्ने अब्बास (रज़ि.) को अपने पास बिठाते थे। इस पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से शिकायत की कि उन जैसे तो हमारे लड़के भी हैं। लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि ये महज़ उनके इल्म की वजह से है। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से आयत, इजा जाआ नज़रुल्लाहि वल फ़त्ह के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात थी जिसकी ख़बर अल्लाह तआला ने आपको दी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया जो तुमने समझा है मैं भी वही समझता हूँ।

(दीगर मक़ाम: 4294, 4430, 4969, 4970)

बाब के तर्जुमे से मुताबकत ज़ाहिर है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) को जो बात बतलाई गई थी कि आपकी वफ़ात करीब है वो पूरी हुई। अल्लाह जब चाहे किसी बन्दे को कुछ आगे की बातें बतला देता है मगर ये ग़ैबदानी नहीं है। अल्लाह तआला के सिवा किसी को भी ग़ैबदौ कहरना कुफ़्र है जैसा कि उलम-ए-अहनाफ़ ने सराहत के साथ लिखा है। ग़ैबदौ सिर्फ़ अल्लाह है। अंबिया व औलिया सब अल्लाह के इल्म के भी मुहताज हैं। बग़ैर अल्लाह के बतलाए वो कुछ भी बोल नहीं सकते।

3628. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन सुलैमान बिन हज़ला बिन ग़सील ने बयान किया, उनसे इकिस्मा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर

ذَلِكَ)). (راجع: 3623)

3626- ((قَالَتْ: سَارَتِي النَّبِيَّ ﷺ. فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يَقْبَضُ فِي وَجْهِهِ الَّذِي تَوَفَّى فِيهِ لَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَتِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِ نَبِيِّهِ أَتِيَهُ لَمَضَجَتِ)).

(راجع: 3624)

3627- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غُرَيْرَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُذْنِبُ ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: إِنْ لَنَا أَنْبَاءٌ مِثْلُ؛ فَقَالَ: إِنَّهُ مِنْ حَيْثُ نَعْلَمُ، فَسَأَلَ عُمَرُ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ هَذِهِ الْآيَةِ: ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ﴾ فَقَالَ: أَجَلُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَغْلَمُهُ أَيُّهُ، فَقَالَ مَا أَغْلَمُ مِنْهَا إِلَّا مَا نَعْلَمُ)). (أطرافه في: 4294, 4430, 4969, 4970)

[4970, 4969, 4430, 4294]

3628- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ حَظَلَةَ ابْنِ الْقَيْلِ حَدَّثَنَا عِكْرَمَةُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ

तशरीफ लाए, आप एक चिकने कपड़े से सरे मुबारक पर पड़ी बाँधे हुए थे। आप मस्जिदे नबवी में मिम्बर पर तशरीफ फर्मा हुए फिर जैसे होनी चाहिये अल्लाह तआला की हम्दो प्रना की, फिर फर्माया अम्मा बअद! (आने वाले दौर में) दूसरे लोगों की ता'दाद बहुत बढ़ जाएगी लेकिन अंसार कम होते जाएंगे और एक ज़माना आएगा कि दूसरों के मुक़ाबले में उनकी ता'दाद इतनी कम हो जाएगी कि खाने में नमक होता है। पस अगर तुममें से कोई शख्स कहीं का हाकिम बने और अपनी हुकूमत की वजह से वो किसी को नुक़सान और नफ़ा भी पहुँचा सकता हो तो उसे चाहिये कि अंसार के नेक लोगों (की नेकियों) को कुबूल करे और जो बुरे हों उनसे दरगुजर कर दिया करे। ये नबी करीम (ﷺ) की आखिरी मज्लिसे वा'ज़ थी। (राजेअ: 927)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ بِجِلْحَفَةٍ قَدْ عَصَبَ بِعَصَابَةٍ دَسْمَاءَ حَتَّى جَلَسَ عَلَى الْمَنْبَرِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ النَّاسَ يَكْتُمُونَ وَيَقْلُ الْأَنْصَارَ، حَتَّى يَكُونُوا فِي النَّاسِ بِمَنْزِلَةِ الْمِلْحِ فِي الطَّعَامِ، فَمَنْ وَلِيَ مِنْكُمْ شَيْئًا يَضُرُّ فِيهِ قَوْمًا وَيَنْفَعُ فِيهِ آخَرِينَ فَلْيَقْلُ مِنْ مُخِيبِهِمْ وَيَتَجَاوَزْ عَنْ مُسِيئِهِمْ. فَكَانَ آخِرَ مَجْلِسٍ جَلَسَ فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ».

((راجع: ٩٢٧))

आपको मा'लूम था कि अंसार को ख़िलाफ़त नहीं मिलेगी इसलिये उनके हक़ में नेक सुलूक करने की वसियत फर्माई। बाब से इस हदीस को मुताबकत ज़ाहिर है।

3629. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुसैन जुअफ़ी ने बयान किया, उनसे अबू मूसा ने, उनसे इमाम हसन बसरी ने और उनसे हज़रत अबूबक्र (रज़ि) ने कि नबी करीम (ﷺ) हसन (रज़ि.) को एक दिन साथ लेकर बाहर तशरीफ लाए और मिम्बर पर उनको लेकर चढ़ गये। फिर फर्माया, मेरा ये बेटा सच्यद है और उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिये से मुसलमानों की दो जमाअतों में मिलाप करा देगा।

(राजेअ: 2704)

٣٦٢٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ الْجُفَيْيُّ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي نَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَخْرَجَ النَّبِيُّ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ الْحَسَنَ فَصَعِدَ بِهِ عَلَى الْمَنْبَرِ فَقَالَ: «إِنِّي هَذَا مَيْدٌ، وَلَقُلَّ اللَّهُ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِتْنَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ».

((راجع: ٢٧٠٤))

तशरीह: आपकी ये पेशीनगोई पूरी हुई। हज़रत हसन (रज़ि.) ने वो काम किया कि हज़ारों मुसलमानों की जान बच गई, आपने हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) से लड़ना पसन्द न किया और ख़िलाफ़त उन ही को दे दी। हालाँकि सत्तर हज़ार आदमियों ने आपके साथ जान देने पर बेअत की थी, इस तरह से आँहज़रत (ﷺ) की ये पेशीनगोई सच प्रामित हुई और यहाँ पर यही मक्सद बाब है।

3630. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किया नबी करीम (ﷺ) ने जा'फ़र बिन अबी त़ालिब और ज़ैद बिन

٣٦٣٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

हारिषा (रज़ि.) की शहादत की खबर पहले ही महाबा को सुना दी थी। उस वक्त आपकी आँखों से आंसू जारी थे।

(राजेअ: 1246)

«أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَفَى جَنْفَرًا وَزَيْنَةً قَبْلَ أَنْ يَجِيءَ غَزْوُهُمْ، وَغَنَاءُ قَذِرْلَانِ».

[راجع: ١٢٤٦]

तशरीह: आपका रसूले बरहक होना इस तौर पर साबित हुआ कि आपने वहा के जरिये से एक दूर-दराज़ मुकाम पर होने वाला वाकिया इतिलाअ आने से पहले ही बयान कर दिया। सदाक रसूलुल्लाह (ﷺ)। अगर अहले बिदअत के ख्याल के मुताबिक आप आलिमुल गैब होते तो सफ़रे जिहाद पर जाने से पहले ही उनको रोक देते और मौत से बचा लेते मगर आप ग़ैबदौं नहीं थे। आयते शरीफ़ा, लौ कुन्तु आलमुल्ग़ैब लअस्तवशर्तु मिनल्ख़ैर (अल आराफ़: 188) का यही मतलब है। वहा इलाही से ख़बर देना ये अम्र दीगर है उसको ग़ैबदानी से ता' बीर करना उन लोगों का काम है जिनको फ़हम व फ़िरासत से एक ज़रा भी नज़ीब नहीं हुआ है। कुतुबे फ़क़ह में साफ़ लिखा हुआ है कि जो आँहज़रत (ﷺ) को ग़ैबदौं जानकर किसी अम्र पर गवाह बनाए तो उसकी ये हरकत उसे कुफ़्र तक पहुँचा देती है।

3631. हमसे अम्र बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन महेदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान श़री ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुकदिर ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि (उनकी शादी के मौक़े पर) नबी करीम (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि क्या तुम्हारे पास क़ालीन हैं? मैंने अर्ज़ किया, हमारे पास क़ालीन कहाँ? (हम ग़रीब लोग हैं) इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया याद रखो एक वक़्त ऐसा आया कि तुम्हारे पास उमदह उमदह क़ालीन होंगे। अब जब मैं उससे (अपनी बीवी से) कहता हूँ कि अपने क़ालीन हटा ले तो वो कहती है कि क्या नबी करीम (ﷺ) ने तुमसे नहीं फ़र्माया था कि एक वक़्त आया जब तुम्हारे पास क़ालीन होंगे, चुनौचे मैं उन्हें वहीं रहने देता हूँ (और चुप हो जाता हूँ)। (दीगर मक़ाम: 5161)

٣٦٣١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبْسٍ حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلْ لَكُمْ مِنْ أَنْطَاطٍ؟)) قُلْتُ: وَأَنْتَ يَكُونُ لَنَا الْأَنْطَاطُ قَالَ: ((أَنَا إِنَّهُ سَيَكُونُ لَكُمْ أَنْطَاطٌ. فَأَنَا أَقُولُ لَهَا - يَغِيثُ امْرَأَتَهُ - أُخْرَى عَنِ الْأَنْطَاطِ، فَقُولِي: أَلَمْ يَقُلِ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّهَا سَتَكُونُ لَكُمْ الْأَنْطَاطُ، فَأَذْغَهَا)).

[طرف ١: ٥١٦١]

इस रिवायत में नबी करीम (ﷺ) की एक पेशीनगोई का ज़िक्र है जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हुई। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने खुद इस सदाक़त (सच्चाई) को देखा। ये अलामाते नुबुक्वत में से एक अहम अलामत है। यही हदीष और बाब में मुताबक़त की वजह है।

3632. हमसे अहमद बिन इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अम्र बिन मैमून ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) उमरह की नियत से (मक्का) आए और अबू सफ़वान उमय्या बिन ख़लफ़ के यहाँ उतरे। उमय्या भी शाम जाते हुए (तिजारत वग़ैरह के लिये) जब मदीना से गुज़रता

٣٦٣٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَوْسَى حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرٍو بْنِ مَتْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَمَلُّونَ سَعْدَ بْنَ مَعَاذٍ مَغْشُورًا، قَالَ: فَزَلَّ عَلَى أُمِّةٍ بَنٍ خَلَفَ أَبِي صَفْوَانَ،

तो हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के यहाँ क्रयाम किया करता था। उमय्या ने हज़रत सअद (रज़ि.) से कहा, अभी ठहरो, जब दोपहर का वक़्त हो जाए और लोग ग़ाफ़िल हो जाएँ (तब तवाफ़ करना क्योंकि मक्का के मुशरिक मुसलमानों के दुश्मन थे) सअद (रज़ि.) कहते हैं, चुनाँचे मैंने जाकर तवाफ़ शुरू कर दिया, हज़रत सअद (रज़ि.) अभी तवाफ़ कर ही रहे थे कि अबू जहल आ गया और कहने लगा, ये का'बा का तवाफ़ कौन कर रहा है? हज़रत सअद (रज़ि.) बोले कि मैं सअद हूँ। अबू जहल बोला, तुम का'बा का तवाफ़ ख़ूब अमन से कर रहे हो हालाँकि मुहम्मद (ﷺ) और उसके साथियों को पनाह दे रखी है। सअद (रज़ि.) ने कहा हाँ ठीक है। इस तरह दोनों में बात बढ़ गई। फिर उमय्या ने सअद (रज़ि.) से कहा, अबुल हक़म (अबू जहल) के सामने ऊँची आवाज़ से न बोलो, वो इस वादी (मक्का) का सरदार है। इस पर सअद (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर तुमने मुझे बैतुल्लाह के तवाफ़ से रोका तो मैं भी तुम्हारी शाम की तिजारत खाक में मिला दूँगा (क्योंकि शाम जाने का सिर्फ़ एक ही रास्ता है जो मदीना से जाता है) बयान किया कि उमय्या बराबर सअद (रज़ि.) से यही कहता रहा कि अपनी आवाज़ ऊँची न करो और उन्हें (मुकाबले से) रोकता रहा। आख़िर सअद (रज़ि.) को उस पर गुस्सा आ गया और उन्होंने उमय्या से कहा। चल परे हट मैंने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से तेरे बारे में सुना है। आपने फ़र्माया था कि तुझको अबू जहल ही क़त्ल कराएगा। उमय्या ने पूछा, मुझे? सअद (रज़ि.) ने कहा हाँ तुझको। तब तो उमय्या कहने लगा, अल्लाह की क़सम मुहम्मद (ﷺ) जब कोई बात कहते हैं तो वो ग़लत नहीं होती फिर वो अपनी बीवी के पास आया और उससे कहा तुम्हें मा'लूम नहीं, मेरे यज़िबी भाई ने मुझे क्या बात बताई है? उसने पूछा, उन्होंने क्या कहा? उमय्या ने बताया कि मुहम्मद (ﷺ) कह चुके हैं कि अबू जहल मुझको क़त्ल कराएगा। वो कहने लगी, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद (ﷺ) ग़लत बात जुबान से नहीं निकालते। फिर ऐसा हुआ कि अहले मक्का बद्र की लड़ाई के लिये रवाना होने लगे और उमय्या को भी बुलाने वाला आया तो उमय्या से उसकी बीवी ने कहा, तुम्हें याद नहीं रहा तुम्हारा यज़िबी भाई तुम्हें क्या ख़बर दे गया था। बयान किया कि उस याद-देहानी पर उमय्या ने चाहा कि इस जंग में शिर्कत न करे। लेकिन अबू जहल ने कहा, तुम वादी-

وَكَانَ أَمِيَّةٌ إِذَا انْطَلَقَ إِلَى الشَّامِ فَمَرَّ بِالْمَدِينَةِ نَزَلَ عَلَى سَعْدٍ، فَقَالَ أَمِيَّةٌ لِسَعْدٍ: انتظر حتى إذا اتصف النهار وغفل الناس انطلقت فطقت؟ فبينما سعد يطوف إذا أبو جهل، فقال: من هذا الذي يطوف بالكعبة؟ فقال سعد: أنا سعد. فقال أبو جهل: تطوف بالكعبة أمنا وقد آوتيتُم محمداً وأصحابه، فقال: نعم. ففلاحاً بينهما. فقال أَمِيَّةٌ لِسَعْدٍ: لا ترفع صوتك على أبي الحَكَم، فإنه سيد أهل الوادي ثم قال سعد: والله لئن منعني أن أطوف بالبيت لأقطعن متجرك بالشام. قال: فجعل أَمِيَّةٌ يقول لسعد: لا ترفع صوتك - وجعل يمشي به - فقضب سعد فقال: دغنا عنك، فإني سمعتُ محمداً صلى الله عليه وسلم يزعم أنه قال: قال: إياي؟ قال: نعم. قال: والله ما يكذبُ محمدٌ إذا حدث. فرجع إلى امرأته فقال: أما تعلمين ما قال لي أخي اليثري؟ قالت: وما قال؟ قال: زعم أنه سمع محمداً أنه قال: قالت: فوالله ما يكذبُ محمدٌ. قال: فلما خرجوا إلى بدر وجاء الصريخ قالت له امرأته: أما ذكرت ما قال لك أخوك اليثري؟ قال: فأراد أن لا يخرج فقال له أبو جهل: إنك من أشرف الوادي، فسر يوماً أو يومين، فسارَ معهم، فقتله الله.

[طرفه ۳ : ۳۹۵۰]

ए- मक्का के रईस हो। इसलिये कम अज़् कम एक या दो दिन के लिये ही तुम्हें चलना पड़ेगा। इस तरह वो उनके साथ जंग में शिकर के लिये निकला और अल्लाह तआला ने उसको क़त्ल करा दिया। (दीगर मक़ाम : 3950)

ये पेशीनगोई पूरी हुई। उमय्या जंगे बद्र में जाना नहीं चाहता था मगर अबू जहल ज़बरदस्ती पकड़कर ले गया, आखिर मुसलमानों के हाथों मारा गया। अलामाते नुबुव्वत में इस पेशीनगोई को भी अहम मुकाम हासिल है। पेशीनगोई की सदाक़त ज़ाहिर होकर रही। हदीष के लफ़्ज़ अन्नहू कातलक में ज़मीर का मरज़अ अबू जहल है कि वो तुझको क़त्ल कराएगा। कुछ मुतर्जिम हज़रात ने इन्नहू की ज़मीर का मरज़अ रसूले करीम (ﷺ) को करार दिया है लेकिन रिवायत के सियाक़ व सबाक़ और मुक़ाम व महल के लिहाज़ से हमारा तर्जुमा भी सहीह है। वल्लाहु आलम।

3633. हमसे अब्बास बिन वलीद नरसी ने बयान किया, कहा हमसे सुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैं ने अपने वालिद से सुना, उनसे अबू इम्मान ने बयान किया कि मुझे ये बात मा'लूम कराई गई कि हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के पास आए और आपसे बातें करते रहे। उस वक़्त औहज़रत (ﷺ) के पास उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) बैठी हुई थीं। जब हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) चले गये तो औहज़रत (ﷺ) ने उम्मे सलमा (रज़ि.) से फ़र्माया, मा'लूम है ये कौन साहब थे? या ऐसे ही अल्फ़ाज़ इशाद फ़र्माए। अबू इम्मान (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मे सलमा ने जवाब दिया कि ये दहिया कल्बी (रज़ि.) थे। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया अल्लाह की क़सम! मैं समझे बैठी थी कि वो दहिया कल्बी (रज़ि.) हैं। आख़िर जब मैंने औहज़रत (ﷺ) का ख़ुत्बा सुना जिसमें आप हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) (की आमद) की ख़बर दे रहे थे तो मैं समझी कि वो हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) ही थे। या ऐसे ही अल्फ़ाज़ कहे। बयान किया कि मैंने अबू इम्मान से पूछा कि आपने ये हदीष किससे सुनी? तो उन्होंने बताया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुनी है। (दीगर मक़ाम : 4970)

हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) का आप (ﷺ) की ख़िदमत में हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.) की सूत में आना मशहूर है। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को ये ताक़त बख़शी है कि वो जिस सूत में चाहें आ सकते हैं। इस हदीष से औहज़रत (ﷺ) का रसूले बरहक़ होना प्राबित हुआ।

3634. मुझसे अब्दुरहमान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरहमान बिन मुगीरह ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मूसा बिन इब्रबा ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह

۳۶۳۳- حَدَّثَنَا غَسَّاسُ بْنُ الْوَلِيدِ التُّرَيْسِيُّ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو غَثَمَانَ قَالَ: أَتَيْتُ أَنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدَهُ أُمُّ سَلَمَةَ فَجَعَلَ يَحَدِّثُ نَمَ فَمَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَأَمَّ سَلَمَةَ: ((مَنْ هَذَا)) - أَوْ كَمَا قَالَ - قَالَتْ: هَذَا وَخِيَّةٌ. قَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: أَيْمَ اللَّهُ بِمَا خَبَيْتُهُ إِلَّا بِإِيَّاهُ، حَتَّى سَمِعْتُ خُطْبَةَ نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُخْبِرُ عَنْ جِبْرِيلَ، أَوْ كَمَا قَالَ: قَالَ: فَقُلْتُ لِأَبِي غَثَمَانَ: مِمَّنْ سَمِعْتَ هَذَا؟ قَالَ: مِنْ أَسَمَةَ بْنِ زَيْدٍ.

[طرفه ۳ : ۴۹۸۰]

۳۶۳۴- حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ

(ﷺ) ने फर्माया, मैंने (ख्वाब में) देखा कि लोग एक मैदान में जमा हो रहे हैं। उनमें से हज़रत अबूबक्र (रज़ि) उठे और एक कुँए से उन्होंने एक या दो डोल पानी भरकर निकाला, पानी निकालने में उनमें कुछ कमज़ोरी मा'लूम होती थी और अल्लाह उनको बख़्शे। फिर वो डोल हज़रत उमर (रज़ि.) ने सम्भाला, उनके हाथ में जाते ही वो एक बड़ा डोल हो गया मैंने लोगों में उन जैसा शहज़ोर पहलवान और बहादुर इंसान उनकी तरह काम करने वाला नहीं देखा (उन्होंने इतने डोल खींचे) कि लोग अपने ऊँटों को भी पिला पिलाकर उनके ठिकानों में ले गये। और हम्माम ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के वास्ते से बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने दो डोल खींचे।

(दीगर मक्काम: 3676, 3682, 7019, 7020)

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّاسَ مُجْتَمِعِينَ فِي صَعِيدٍ فَقَامَ أَبُو بَكْرٍ فَتَرَعَ ذَنْبًا أَوْ ذَنْبَيْنِ وَفِي بَعْضِ نَزْعِهِ ضَعْفٌ وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ، ثُمَّ اخْتَذَاهَا عَمْرٌ فَاسْتَحَالَتْ بِيَدِهِ غَرْبًا. فَلَمْ أَرْ عَثَرًا فِي النَّاسِ يَقْرِي فَرْيَهُ، حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بَعْطَنَ)). وَقَالَ هَمَّامٌ: عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((تَرَعَ أَبُو بَكْرٍ ذَنْبَيْنِ)).

[أطرافه في: 3676, 3682, 7019, 7020]

[7020]

तर्ज़ीह:

इस हदीष की ता'बीर ख़िलाफ़त है, या'नी पहले हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को ख़िलाफ़त मिलेगी। वो हुक्मत तो करेंगे लेकिन उमर (रज़ि.) की सी कुव्वत व शौकत उनको हासिल न होगी। उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में मुसलमानों की शौकत व अज़मत बहुत बढ़ जाएगी, आपने जैसा ख्वाब देखा था वैसा ही ज़ाहिर हुआ। ये भी अलामाते नुबव्वत में से एक अहम निशान है जिनको देख और समझकर भी जो शख्स आपके रसूले बरहक होने को न माने उससे बढ़कर बदनसीब कोई नहीं है। (ﷺ)

बाब 26 : अल्लाह तआला का सूरह बक्र: में ये इर्शाद कि अहले किताब इस रसूल को

उस तरह पहचान रहे हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं और बेशक उनमें से एक फ़रीक़ के लोग हक़ को जानते हैं फिर भी वो उसे छुपाते हैं।

तौरात व इंजील में आँहज़रत (ﷺ) का ज़िक्र ख़ैर खुले लफ़्ज़ों में मौजूद था जिसे अहले किताब पढ़ते और आप (ﷺ) को रसूले बरहक मानते थे मगर अल्लाह तआला ने उनको इस्लाम कुबूल करने से बाज़ रखा। बहरहाल आँहज़रत (ﷺ) का रसूले बरहक साबित करना बाब का मक्सद है।

3635. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि यहूद, रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको बताया कि उनके यहाँ एक मर्द और एक औरत ने ज़िना किया है। आपने उनसे फ़र्माया, रजम के बारे में तौरात में क्या हुक्म है? वो बोले ये कि हम उन्हें रुस्वा करें और उन्हें कोड़े लगाए जाएँ। इस पर अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा कि तुम लोग झूठे हो। तौरात में रजम का हुक्म मौजूद है।

26- باب قول الله تعالى:

﴿يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ [البقرة: 146]

3635- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ بْنُ أَنَسٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ الْيَهُودَ جَاؤُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَذَكَرُوا لَهُ أَنَّ رَجُلًا مِنْهُمْ وَامْرَأَةً زَنَيَا. فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَا تَجِدُونَ فِي التَّوْرَةِ

तौरात लाओ। फिर यहूदी तौरात लाए और उसे खोला। लेकिन रजम के बारे में जो आयत थी उसे एक यहूदी ने अपने हाथ से छुपा लिया और उससे पहले और उसके बाद की इबारत पढ़ने लगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा कि ज़रा अपना हाथ तो उठाओ जब उसने हाथ उठाया तो वहाँ आयते रजम मौजूद थी। अब वो सब कहने लगे कि ऐ मुहम्मद! अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने सच कहा। बेशक तौरात में रजम की आयत मौजूद है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से उन दोनों को रजम किया गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रजम के वक़्त देखा, यहूदी मर्द उस औरत पर झुका पड़ता था, उसको पत्थरों की मार से बचाता था। (राजेअ: 1329)

لِي شَانِ الرُّجْمِ؟) فَقَالُوا: نَقْضُحُهُمْ وَيُخْلَنُونَ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: كَذَبْتُمْ، إِنَّ فِيهَا الرُّجْمُ - فَأَتَوْا بِالتَّوْرَةِ فَشَرَوْهَا، فَوَضَعَ أَحَدُهُمْ يَدَهُ عَلَى آيَةِ الرُّجْمِ، فَقَرَأَ مَا قَبْلَهَا وَمَا بَعْدَهَا. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: ارْفَعْ يَدَكَ، فَوَضَعَ يَدَهُ، لِإِذَا فِيهَا آيَةُ الرُّجْمِ، فَقَالُوا: صَدَقَ يَا مُحَمَّدُ، فِيهَا آيَةُ الرُّجْمِ. فَأَمَرَ بِهِمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَرُجِمَا. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَرَأَيْتِ الرُّجُلَ يَخُنَا عَلَى الْمَرْأَةِ بِقِيَمِهَا (الْحِجَارَةُ). (راجع: 1329)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) यहूद के बहुत बड़े आलिम थे जिनको यहूदी बड़ी इज़्जत की निगाह से देखते थे मगर मुसलमान हो गये तो यहूदी उनको बुरा कहने लगे। इस्लाम में उनका बड़ा मुक़ाम है।

बाब 28 : मुश्रिकीन का आँहज़रत (ﷺ) से कोई निशानी चाहना और आँहज़रत (ﷺ) का मुअजज़ा शक़ूल क्रमर दिखाना

٢٨ - بَابُ سُؤَالِ الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُرِيَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ آيَةً، فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ

तशरीह : ये कितना बड़ा मुअजज़ा है कि किसी पैग़म्बर को ऐसा मुअजज़ा नहीं दिया गया। जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है कि शक़ूल क्रमर आँहज़रत (ﷺ) का एक बड़ा मुअजज़ा था। गो इसका वकूअ क़यामत की भी निशानी था। जैसे हक़ तआला ने कुआन मजीद में फ़र्माया, इक्तरबतिस्साअतु वन्शक्कल्क़मर (अल् क़मर: 1) जिन लोगों ने इन्शक्क का मा'नी ये रखा है या'नी क़यामत में चाँद फटेगा बाब की अह्दादीष से उनकी तर्दीद होती है। हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) ने लिखा है कि काफ़िरो ने अल्लाह की कुदरत की निशानी मांगी थी जो खिलाफ़े आदत हो चूँकि चाँद के फटने का ज़माना आ पहुँचा था इसलिये आपने भी यही निशानी दिखलाई। चूँकि आप पहले से उसकी ख़बर दे चुके हैं इसलिये उसको मुअजज़ा कह सकते हैं। एक रिवायत में है कि चाँद फटकर दो टुकड़े हो गया बाक़ी बहष इशाअल्लाह किताबुत तफ़सीर में आएगी। आजकल चाँद पर जाने वालों ने मुशाहिदा के बाद बताया कि चाँद की सतह पर एक जगह बहुत तवील व अमीक़ (गहरी) एक दरार है, मुबस्सिरीने हक़ का कहना है कि ये वही दरार है जो मुअजज़ा शक़ूल क्रमर की शक़ल में चाँद पर वाक़ेअ हुई है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

3636. हमसे स़दका बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान बिन उययना ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी नजीह ने, उन्हें मुजाहिद ने, उन्हें अबू मज़मर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

٣٦٣٦ - حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُثَيْمَةَ عَنْ ابْنِ أَبِي لَجِينٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ

(ﷺ) के ज़माने में चाँद के फटकर दो टुकड़े हो गये थे और औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों इस पर गवाह रहना।
(दीगर मक़ाम : 3869, 3870, 4864, 4865)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: انشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى
عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ شَقَّتَيْنِ، فَقَالَ النَّبِيُّ
ﷺ: ((اشْهَدُوا)). [أطرافه في: 3869, 3870, 4864, 4865].

3637. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुसन्दी ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने (दूसरी रिवायत) इमाम बुखारी (रह) ने कहा और मुझसे खलीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन जुअ ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मक्का वालों ने रसूले करीम (ﷺ) से कहा था कि उन्हें कोई मुअज़्ज़ा दिखाएँ तो आपने शक्कुल क़मर का मुअज़्ज़ा या'नी चाँद का फट जाना उनको दिखाया। (दीगर मक़ाम : 3868, 4867, 4868)

3637- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ
حَدَّثَنَا يُونُسُ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ
أَنْسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ح. وَقَالَ
لِي خَلِيفَةُ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا
سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنْسِ أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ:
«أَنَّ أَهْلَ مَكَّةَ سَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنْ
يُرِيَهُمْ آيَةً، فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ».

3638. मुझसे खलफ़ बिन ख़ालिद कुरशी ने बयान किया, कहा हमसे बक्र बिन मुज़र ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे इराक़ बिन मालिक ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में चाँद के दो टुकड़े हो गये थे। (दीगर मक़ाम : 3870, 4866)

3638- حَدَّثَنِي خَلْفُ بْنُ خَالِدٍ الْقُرَشِيُّ
حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رِيعَةَ
عَنْ عِمْرَانَ بْنِ مَالِكٍ عَنْ غَيْبِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ
اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا: «أَنَّ الْقَمَرَ انشَقَّ فِي زَمَانِ النَّبِيِّ
ﷺ». [أطرافه في: 3870, 4866].

कुफ़ारे मक्का का ख़याल था कि ये या'नी मुहम्मद (ﷺ) अपने जादू के ज़ोर से ज़मीन पर अज़ायबात दिखला सकते हैं, आसमान पर उनका जादू न चल सकेगा। इसी ख़याल की बिना पर उन्होंने मुअज़्ज़ा शक्कुल क़मर तलब किया। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनको ये दिखला दिया।

बाब 28 :

इस बाब के तहत मुख्तलिफ़ अहदादीष हैं जिनमें मुअज़्ज़ाते नबी के बारे में कोई न कोई वाक़िया किसी न किसी पहलू से मज़कूर है।

3639. मुझसे मुहम्मद बिन मुज़ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे मुआज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की मज्लिस से दो इहाबी (उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. और अब्बाद बिन बिशर रज़ि.) उठकर (अपने घर) वापस हुए। रात अंधेरी थी लेकिन दो चराग़ की तरह की कोई चीज़

3639- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى
حَدَّثَنَا مُعَاذٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ
حَدَّثَنَا أَنْسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: «رَأَى رَجُلَانِ
مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ خَرَجَا مِنْ عِنْدِ
النَّبِيِّ ﷺ فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ وَمَعَهُمَا مِثْلُ

बिन यस्त्रामिर यहाँ मौजूद हैं, जो कह रहे हैं कि उन्होंने मुआज़ (रज़ि.) से सुना कि ये लोग शाम के मुल्क में हैं। (राजेअ: 71)

[راجع: 71]

तशरीह: हज़रत मुआविया (रज़ि.) भी शाम में थे। उनका मतलब ये था कि अहले शाम इस हदीष से मुराद हैं। मगर ये कोई खुसूसियत नहीं है। मतलब औहज़रत (ﷺ) का ये है कि मेरी उम्मत के सब लोग एकदम गुमराह हो जाएँ ऐसा न होगा बल्कि एक गिरोह तब भी ज़रूर बिल ज़रूर हक़ पर कायम रहेगा और ये अहले हदीष का गिरोह है। इमाम अहमद बिन हंबल ने यही फ़र्माया है और भी बहुत से इलमाने सराहत से लिखा है कि इस पेशीनगोई के मिस्दाक़ वो लोग हैं जिन्होंने क़ील व क़ाल और आरा-ए-रिजाल से हटकर सिर्फ़ ज़ाहिर नुसूस किताब व सुन्नत को अपना मदारे अमल करार दिया और सहाबा ताबेईन व मुहद्दिषीन व अइम्म-ए-मुज्ताहिदीन के तर्ज़े अमल को अपनाया। ज़ाहिर है कि मज़क़ूर बुजुर्गाने इस्लाम मौजूदा तक्लीदे जामिद के शिकार न थे न उनमें मसालिक के नामों पर मुख्तलिफ़ गिरोह थे जैसा कि बाद में पैदा हुए कि का'बा शरीफ़ तक को चार मुसल्लों में तक्सीम कर दिया गया। शुक्र है अल्लाह पाक का कि जमाअते अहले हदीष की मेहनतों के नतीजे में आज मुसलमान फिर किताब व सुन्नत की तरफ़ आ रहे हैं।

3642. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन उययना ने ख़बर दी, कहा हमसे शबीब बिन गरक़दह ने बयान किया कि मैंने अपने क़बीले के लोगों से सुना था, वो लोग इर्वा से नक़ल करते थे (जो अबुल ज़अदिके बेटे और सहाबी थे) कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें एक दीनार दिया कि वो उसकी एक बकरी ख़रीदकर ले आएँ। उन्होंने उस दीनार से दो बकरियाँ ख़रीदीं, फिर एक बकरी को एक दीनार में बेचकर दीनार भी वापस कर दिया और बकरी भी पेश कर दी। औहज़रत (ﷺ) ने इस पर उनकी तिजारत में बरक़त की दुआ फ़र्माई। फिर तो उनका ये हाल हुआ कि अगर मिट्टी भी ख़रीदते तो उसमें उन्हें नफ़ा हो जाता। सुफ़यान ने कहा कि हसन बिन अम्पारा ने हमें ये हदीष पहुँचाई थी शबीब बिन गरक़दह से। हसन बिन अम्पारा ने कहा कि शबीब ने ये हदीष ख़ुद इर्वा (रज़ि.) से सुनी थी। चुनाँचे में शबीब की ख़िदमत में गया तो उन्होंने बताया कि मैंने ये हदीष ख़ुद इर्वा से सुनी थी, अल्बत्ता मैंने अपने क़बीले के लोगों को उनके हवाले से बयान करते सुना था।

٣٦٤٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا شَيْبٌ بْنُ غَرْقَدَةَ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَيَّ يُخْبِرُونَ عَنْ غُرُوزَةٍ: ((إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَطْعَمَ دِينَارًا يَشْتَرِي لَهُ بِهِ شَاةً، فَأَشْتَرَى لَهُ بِهِ شَاتَيْنِ، فَبَاعَ إِحْدَاهُمَا بِدِينَارٍ، فَجَاءَ وَشَاةً، فَدَعَا لَهُ بِالْبُرْكََةِ فِي بَيْعِهِ، وَكَانَ لَوْ اشْتَرَى التُّرَابَ لَرَبِحَ فِيهِ)). قَالَ سُفْيَانُ كَانَ الْحَسَنُ بْنُ عِمْرَةَ حَاضِرًا بِهَذَا الْحَدِيثِ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ شَيْبٌ عَنْ غُرُوزَةٍ، فَأَتَيْتُهُ، فَقَالَ: إِنِّي لَمْ أَسْمَعْ مِنْ غُرُوزَةٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْحَيَّ يُخْبِرُونَهُ عَنْهُ)).

3643. अल्बत्ता ये दूसरी हदीष ख़ुद मैंने इर्वा (रज़ि.) से सुनी है वो बयान करते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया ख़ैर और भलाई घोड़ों की पेशानी के साथ क़यामत तक के लिये बैधी हुई है। शबीब ने कहा कि मैंने हज़रत इर्वा (रज़ि.) के घर में सत्तर घोड़े देखे। सुफ़यान ने कहा कि हज़रत इर्वा (रज़ि.)

٣٦٤٣- وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْخَيْرُ مَغْفُودٌ بِنَوَاصِي الْخَيْلِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)), قَالَ: وَقَدْ رَأَيْتُ فِي دَارِهِ سَبْعِينَ فَرَسًا. قَالَ سُفْيَانُ:

ने हज़ुरे अकरम (ﷺ) के लिये बकरी खरीदी थी शायद वो कुर्बानी के लिये होगी। (राजेअ: 2850)

((يُسْتَبْرَى لَهُ شاةٌ كَانَتْهَا اضْحِيَّةً)).

[راجع: ٢٨٥٠]

तरीह:

यहाँ ये ए' तिराज़ हुआ है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह) को इर्वा की कौनसी हदीस मकसूद है, अगर घोड़ों की हदीस मकसूद है तो वो बेशक मौसूल है मगर उसको बाब से मुनासबत नहीं है और अगर बकरी वाली हदीस मकसूद है तो वो बाब के मुवाफ़िक़ है क्योंकि उसमें आँ हज़रत (ﷺ) का एक मुअजज़ा या 'नी दुआ का कुबूल होना मकसूर है मगर वो मौसूल नहीं है, शबीब के क़बीले वाले मजहूल हैं। जवाब ये है कि क़बीले वाले मुतअहिद लोग थे, वो सब झूठ बोलें, ये नहीं हो सकता तो हदीस मौसूल और सहीह हो गई। घोड़ों वाली हदीस में एक पेशीनगोई है जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह प्रामित हो रही है, ये भी इस तरह बाब के बारे में है कि उसमें आपकी सदाक़त की दलील मौजूद है।

3644. हमसे मुसइद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो-बरकत बाँध दी गई है। (राजेअ: 2849)

٣٦٤٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ غَيْبِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ مَقْفُودَةٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى

يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). [راجع: ٢٨٤٩]

इसमें भी पेशीनगोई है जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह है और यही बाब का तर्जुमा है। आज जदीद अस्लहा की फ़रावानी के बावजूद भी फौज में घोड़े की अहमियत है।

3645. हमसे क्रैस बिन हफ़स ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने बयान किया और उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि घोड़े की पेशानी के साथ बरकत बाँध दी गई है। (राजेअ: 2851)

٣٦٤٥- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ خَفْصٍ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي الْتِيَّاحِ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ مَقْفُودَةٌ فِي نَوَاصِيهَا

الْخَيْرُ)). [راجع: ٢٨٥١]

मुराद माले ग़नीमत है जो घोड़े सवार मुजाहिदीन को फ़तह के नतीजे में हासिल हुआ करता था। आज भी घोड़ा फौजी ज़रूरियात के लिये बड़ी अहमियत रखता है।

3646. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा कअम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अबू सलालेह सिमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, घोड़े तीन आदमियों के लिये हैं। एक के लिये तो वो बाअिषे प्रवाब हैं और एक के लिये वो मुआफ़ या 'नी मुबाह हैं और एक के लिये वो वबाल हैं। जिसके लिये घोड़ा बाअिषे प्रवाब है ये वो शख्स है जो जिहाद के लिये उसे पाले और चरागाह या बाग़ में उसकी रस्सी को (जिससे वो बाँधा होता है)

٣٦٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((الْخَيْلُ لثَلَاثَةٍ: لِوَجَلِّ أَجْرٍ، وَلِوَجَلِّ سَبَرٍ، وَعَلَى رَجُلٍ وَزَرَ. فَأَمَّا الَّذِي لَهُ أَجْرٌ

खूब दराज कर दे तो वो अपने इस तूल व अर्ज में जो कुछ भी चरता है वो बस उसके मालिक के लिये नेकियाँ बन जाती हैं और अगर कभी वो अपनी रस्सी तुड़ाकर दो चार कदम दौड़ ले तो उसकी लीद भी मालिक के लिये बाअिषे प्रवाब बन जाती है और कभी अगर वो किसी नहर से गुजरते हुए उसमें से पानी पी ले अगरचे मालिक के दिल में उसे पहले से पानी पिलाने का खयाल भी न था, फिर भी घोड़े का पानी पीना उसके लिये प्रवाब बन जाता है। और एक वो आदमी जो घोड़े को लोगों के सामने अपनी हाजत, पर्दापोशी और सवाल से बचे रहने की गर्ज से पा ले और अल्लाह तआला का जो हक उसकी गर्दन और उसकी पीठ में है उसे भी वो फ़रायोश न करे तो ये घोड़ा उसके लिये एक तरह का पर्दा होता है और एक शख्स वो है जो घोड़े को फ़ाड़ और दिखावे और अहले इस्लाम की दुश्मनी में पा ले तो वो उसके लिये बबाले जान है और नबी करीम (ﷺ) से गधों के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि इस जामेअ आयत के सिवा मुझ पर गधों के बारे में कुछ नाज़िल नहीं हुआ कि, जो शख्स एक ज़रा के बराबर भी नेकी करेगा तो उसका भी वो बदला पाएगा और जो शख्स एक ज़रा के बराबर भी बुराई करेगा तो वो उसका भी बदला पाएगा। (राजेअ : 2371)

فَوَجَلَّ رَبَطُهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَأَطَاعَ لَهَا فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْضَةٍ، وَمَا أَصَابَتْ فِي طِيلِهَا مِنَ الْمَرْجِ أَوْ الرَّوْضَةِ كَانَتْ لَهُ حَسَنَاتٍ، وَلَوْ أَنَّهَا قَطَعَتْ طِيلَهَا فَاسْتَنْتَ شَرًّا أَوْ شَرَفَيْنِ كَانَتْ أَرْوَاهَا حَسَنَاتٍ لَهُ، وَلَوْ أَنَّهَا مَرَّتْ بِنَهْرٍ فَشَرِبَتْ وَلَمْ يُرِدْ أَنْ يَسْقِيَهَا كَانَ ذَلِكَ لَهُ حَسَنَاتٍ. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا تَعْنِيًا وَتَسْتَرًا وَتَغْلُفًا وَلَمْ يَنْسَ حَقَّ اللَّهِ فِي رِقَابِهَا وَطُغُورِهَا، فَبُهِتَ لَهُ كَذَلِكَ سِتْرًا. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا فُغْرًا وَرَبَاءَ وَبَوَاءَ لَأَهْلِ الْإِسْلَامِ فَبُهِتَ وَرَزَّ. وَسُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْخُمْرِ فَقَالَ: (رَمَا أَنْزَلَ عَلَيَّ فِيهَا إِلَّا هَذِهِ الْآيَةُ الْجَامِعَةُ الْفَادَةُ: ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا، يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا، يَرَهُ﴾. [الزُّلْفَةُ: ٧-٨].

[راجع: ٢٣٧١]

तशरीह : आज के दौर में घोड़ों की जगह लॉरियों और ट्रकों ने ले ली है जिनकी दुनिया के हर मैदान में ज़रूरत पड़ती है। जंगी मौकों पर हुकूमतें कितनी पब्लिक लॉरियों और ट्रकों को हासिल कर लेती हैं और ऐसा करना हुकूमतों के लिये ज़रूरी हो जाता है। हदीस में मज़कूर तीन लोगों का इत्लाक़ ऊपर बयान की गई तफ़्सील के मुताबिक़ आज लॉरी व ट्रक रखने वाले मुसलमानों पर भी हो सकता है कि कितनी गाड़ियाँ कुछ दफ़ा बेहतरीन मिस्ली मफ़ाद के लिये इस्तेमाल में आ जाती हैं। उनके मालिक मज़कूर अजरो-प्रवाब के मुस्तहक़ होंगे। व ज़ालिक फ़ज़लुल्लाहि यूतीहि मय्यशाउ घोड़ों की तफ़्सीलात आज भी कायम हैं।

3647. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ख़ैबर में सुबह सवेरे ही पहुँच गये। ख़ैबर के यहूदी उस वक़्त अपने फावड़े लेकर (खेतों में काम करने के लिये) जा रहे थे कि उन्होंने आपको देखा और ये कहते हुए कि मुहम्मद लश्कर

٣٦٤٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : ((صَحَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خَيْرَ بُكْرَةٍ وَقَدْ خَرَجُوا بِالْمَسَاحِي، فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا :

लेकर आ गये, वो क़िला की तरफ भागे। उसके बाद औहज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ उठाकर फ़र्माया, अल्लाहु अकबर ख़ैबर तो बर्बाद हुआ कि जब हम किसी क़ौम के मैदान में (जंग के लिये) उतर जाते हैं तो फिर डराए हुए लोगों की मुबह बुरी हो जाती है। (राजेअ: 371)

مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ، فَأَجَلُوا إِلَى الْجَمْعِ يَسْتَقُونَ، فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ وَقَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ، خَرَّتْ خَيْرٌ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحِلَةٍ فَوْرَ فَنَاءَ صَبَاحِ الْمُنْدَرِينَ)).

[راجع: 371]

इस हदीष की मुनासबत बाब से ये है आपने ख़ैबर फ़तह होने से पहले ही फ़र्मा दिया था कि ख़ैबर ख़राब हुआ और फिर यही जुहूर में आया। ये जंगे ख़ैबर का वाक़िया है जिसकी तफ़सीलात अपने मौक़े पर बयान होगी।

3648. मुझसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा मुझसे मुहम्मद बिन इस्माईल इब्ने अबिल फुदैक ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान इब्ने अबी ज़िब ने, उनसे सईद मक्बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अज़्र किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने आपसे बहुत सी अह्दादीष अब तक सुनी हैं लेकिन मैं उन्हें भूल जाता हूँ। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि अपनी चादर फैलाओ, मैंने चादर फैला दी और आपने अपने हाथ से उसमें एक लप भरकर डाल दी और फ़र्माया कि उसे अपने बदन से लगा लो, चुनौचे मैंने लगा लिया और उसके बाद कभी कोई हदीष नहीं भूला। (राजेअ: 118)

٣٦٤٨ - حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُزِيرٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الْقَدَّاحِ عَنْ ابْنِ أَبِي ذَنْبٍ عَنْ الْمُسْقَرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي سَمِعْتُ مِنْكَ حَدِيثًا كَثِيرًا فَأَنْسَاءُ قَالَ ﷺ ((الْبَسْ رِدَاءَكَ)), قَبَسْتُهُ، فَعَرَفْتُ بِيَدِهِ فِيهِ ثُمَّ قَالَ: ((ضُمَّهُ)), فَضَمَمْتُهُ، فَمَا نَسِيتُ حَدِيثًا بَعْدَ)).

[راجع: 118]

तशरीह: आपकी दुआ की बरकत से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का हाफ़ज़ा तेज़ हो गया। चादर में आपने दुआओं के साथ बरकत को गोया लप भरकर डाल दिया। उस चादर को हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने अपने सीने से लगाकर बरकतों से अपने सीने को मज़मूर कर लिया और पाँच हज़ार से भी ज़्यादा अह्दादीष के हाफ़िज़ करार पाये। तुफ है उन लोगों पर जो ऐसे जलीलुल क़द्र हाफ़िज़ुल हदीष सहाबिये रसूलुल्लाह (ﷺ) को हदीष फ़हमी में नाक़िस करार देकर खुद अपनी हिमाक़त का इज़हार करते हैं। ऐसे इलमा व फुकहा को अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिये कि एक सहाबिये रसूल की तौहीन की सज़ा में गिरफ़्तार होकर कहीं वो ख़सिरहुनिया वल्आख़िरति के मिस्दाक़ न बन जाएँ। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का मक़ामे रिवायत और मुक़ामे दिरायत बहुत आला व अफ़ा है व लिच्छप्सीलि मक़ामुन आख़र

अलामाते नुबुव्वत का बाब यहाँ ख़त्म हुआ, अब हज़रत इमाम बुखारी (रह) अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ज़ाइल का बयान शुरू फ़र्मा रहे हैं। जिस क़दर रिवायात मज़कूर हुई हैं सब में किसी न किसी तरह से अलामाते नुबुव्वत का पुबूत निकलता है और यही इमाम बुखारी का मंशा है।

62. किताब फ़ज़ाइले अस्हाबुन्नबी (ﷺ)

नबी-करीम (ﷺ) के सहाबा की फ़ज़ीलत

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : नबी करीम (ﷺ) के सहाबियों की फ़ज़ीलत का बयान

(इमाम बुखारी (रह) ने कहा कि) जिस मुसलमान ने भी आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत उठाई या आपका दीदार उसे नज़ीब हुआ हो वो आप (ﷺ) का सहाबी है।

۱- بَابُ فَضَائِلِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ

وَمَنْ صَحِبَ النَّبِيَّ ﷺ أَوْ رَأَاهُ

مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَهُوَ فِي أَصْحَابِهِ

तशरीह : जुम्हूर इलमा का यही कौल है कि जिसने अपनी ज़िन्दगी में आँहज़रत (ﷺ) को एक बार भी देखा हो वो सहाबी है बशर्ते कि वो मुसलमान हो। बस आँहज़रत (ﷺ) को एक बार देख लेना ऐसा शर्फ़ है कि सारी उम्र का मुजाहिदा उसके बराबर नहीं हो सकता। कुछ ने कहा कि औलिया अल्लाह जिन सहाबा के मर्तबे को नहीं पहुँच सकते उनसे मुराद वो सहाबा हैं जो आपकी सुहबत में रहे और आपसे इस्तिफ़ादा किया और आपके साथ जिहाद किया, मगर ये कौल मरजुह है। हमारे पीर व मुशिद महबूब सुब्हानी हज़रत सय्यद ज़ीलानी (रह) फ़र्माते हैं कि कोई बली अदना सहाबी के मर्तबे के बराबर नहीं पहुँच सकता है। (वहबीदी)

3649. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया और उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ज़माना आएगा कि अहले इस्लाम की जमाअतें जिहाद करेंगी तो उनसे पूछा जाएगा कि क्या तुम्हारे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) के कोई सहाबी भी हैं? वो कहेंगे कि हाँ हैं। तब उनकी फ़तह होगी। फिर एक ऐसा ज़माना आएगा कि मुसलमानों की जमाअतें जिहाद करेंगी और उस मौक़े पर ये पूछा जाएगा कि क्या यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी की सुहबत उठाने वाले (ताबेई) भी मौजूद हैं?

۳۶۴۹- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا

سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ

عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ

قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَأْتِي عَلَى

النَّاسِ رَمَاتٌ فَيَعُزُّو فِتْنًا مِنَ النَّاسِ،

فَيَقُولُونَ: فَيَكُمُ مِنْ صَاحِبِ رَسُولِ اللَّهِ

ﷺ فَيَقُولُونَ لَهُمْ: نَعَمْ، فَيَفْتَحُ لَهُمْ.

ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ رَمَاتٌ فَيَعُزُّو فِتْنًا مِنَ

النَّاسِ فَيَقُولُ: هَلْ فَيَكُمُ مِنْ صَاحِبِ

जवाब होगा कि हाँ हैं और उनके ज़रिये फ़तह की दुआ मांगी जाएगी। उसके बाद एक ज़माना ऐसा आएगा कि मुसलमानों की जमाअतें जिहाद करेंगी और उस वक़्त सवाल उठेगा कि क्या यहाँ कोई बुजुर्ग ऐसे हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा के शागिदों में से किसी बुजुर्ग की सुहबत में रहे हों? जवाब होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ मांगी जाएगी फिर उनकी फ़तह होगी।

(राजेअ : 2897)

[راجع: ٢٨٩٧]

तशरीह : आँहज़रत (ﷺ) ने उन तीन ज़माने वालों की फ़ज़ीलत बयान की गोया वो ख़ैरुल कुरुन ठहरे। इसीलिये इलमा ने बिदअत की ता'रीफ़ ये करार दी है कि दीन में जो काम नया निकाला जाए जिसका वजूद इन तीन ज़मानों में न हो। ऐसी हर बिदअत गुमराही है और जिन लोगों ने बिदअत की तक्सीम की है और हस्ना और सय्या को तरफ़, उनकी मुराद बिदअत से बिदअते लग्वी है। हमारे मुशिंद शैख़ अहमद मुजहिद सरहिन्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं तो किसी बिदअत में सिवाय जुल्मत और तारीकी के मुत्लक नूर नहीं पाता। (वहीदी)

3650. मुझे से इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमसे नज़्ज़ ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अबू जमरह ने, कहा मैंने ज़हदम बिन मुज़रब से सुना, कहा कि मैंने हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी उम्मत का सबसे बेहतरीन ज़माना मेरा ज़माना है। फिर उन लोगों का जो इस ज़माने के बाद आएँगे, फिर उन लोगों का जो उस ज़माने के बाद आएँगे। हज़रत इमरान (रज़ि.) कहते हैं कि मुझे याद नहीं कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने दौर के बाद दो ज़मानों का ज़िक्र किया या तीन का। फिर आपने फ़र्माया कि तुम्हारे बाद एक ऐसी क़ौम पैदा होगी जो बग़ैर कहे गवाही देने के लिये तैयार हो जाया करेगी और उनमें ख़यानत और चोरी इतनी आम हो जाएगी कि उन पर किसी क्रिस्म का भरोसा बाक़ी नहीं रहेगा, और नज़्ज़े मानेंगे लेकिन उन्हें पूरा नहीं करेंगे (हराम माल खा खाकर) उन पर मोटापा आम हो जाएगा। (राजेअ : 2651)

[راجع: ٢٦٥١]

ख़ैरुल कुरुन के बाद होने वाले दुनियादार नामो-निहाद मुसलमानों के बारे में ये पेशगोई है जो अख़लाक़ और आमाल के ए'तिबार से बदतरीन क्रिस्म के लोग होंगे। जैसा कि इश्आद हुआ है कि झूठ और बद दयानती और दुनियासाज़ी उनका रात दिन का मशाला होगा। अल्लाहुम्म ला तजअल्ला मिन्हुम, आमीन।

3651. हमसे मुहम्मद बिन क़बीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ब़ौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे इब्बैदा बिन क़ैस सलमानी ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेहतरीन

أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ. فَيَفْتَحُ لَهُمْ. ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِتْنًا مِنَ النَّاسِ فَيَقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحِبٌ مِنْ صَاحِبِ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيَفْتَحُ لَهُمْ))

٣٦٥٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ سَمِعْتُ زُهْدَمَ بْنَ مُضَرَّبٍ سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((خَيْرُ أُمَّتِي قُرْبِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ)) قَالَ عِمْرَانُ : فَلَا أَذْرِي أَذْكَرَ بَعْدَ قُرْبِي قُرْنَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا. ثُمَّ إِنْ بَعْدَكُمْ قَوْمًا يَشْهَدُونَ وَلَا يُشْتَهَدُونَ وَيَخُونُونَ وَلَا يُؤْتَمَنُونَ، وَيَنْذَرُونَ وَلَا يُقَوَّنَ، وَيُظْهَرُ فِيهِمُ السَّمَنُ))

٣٦٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ غَبِيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ

ज़माना मेरा ज़माना है। फिर उन लोगों का जो इस ज़माने के बाद आएँगे फिर उन लोगों का जो उसके बाद आएँगे। उसके बाद एक ऐसी क़ौम पैदा होगी कि गवाही देने से पहले क़सम उनकी जुबान पर आ जाया करेगी और क़सम खाने से पहले गवाही उनकी जुबान पर आ जाया करेगी। इब्राहीम ने बयान किया कि जब हम छोटे थे तो गवाही और अहद (के अल्फ़ाज़ जुबान पर लाने) की वजह से हमारे बड़े बुजुर्ग हम को मारा करते थे। (राजेज़: 2652)

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَالَ: «خَوَّرَ النَّاسَ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ تَسْبِقُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِينَهُ، وَيَمِينُهُ شَهَادَتُهُ». قَالَ: إِبْرَاهِيمُ: وَكَانُوا يَضْرِبُونَ عَلَى الشَّهَادَةِ وَالْمَهْدِ وَنَحْنُ صِبَاؤٌ.

[راجع: ٢٦٥٢]

मज़लब ये है कि उनको खुद अपने दिमाग पर और अपनी जुबान पर काबू हासिल न होगा, झूठी गवाही देने और झूठी क़सम खाने में वो ऐसे बेबाक होंगे कि फ़िल् फ़ोर (अनायास) ही ये चीज़ें उनकी जुबानों पर आ जाया करेंगी। बग़ौर देखा जाए तो आज आम अहले इस्लाम का हाल यही है। इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 2 : मुहाजिरीन के मनाक़िब

और फ़ज़ाइल का बयान

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) या'नी अब्दुल्लाह बिन अबी क़हाफ़ा तैमी (रज़ि.) भी मुहाजिरीन में शामिल हैं और अल्लाह तआला ने (सूरह ह़शर) में उन मुहाजिरीन का ज़िक्र किया, उन मुफ़्लिस मुहाजिरीयों का ये (खास तौर पर) हक़ है जो अपने घरों और अपने मालों से जुदा कर दिये गये हैं जो अल्लाह का फ़ज़ल और रज़ामन्दी चाहते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करने को आए हैं, यही लोग सच्चे हैं।

और (सूरह तौबा में) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, अगर तुम लोग उनकी (या'नी रसूल की) मदद न करोगे तो उनकी मदद तो खुद अल्लाह कर चुका है, आख़िर आयत इब्रल्लाह मज़ना तक। हज़रत आइशा, अबू सईद ख़ुदरी और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ (हिजरात के वक़्त) ग़ारे ब़ौर में रहे थे।

वो मुसलमान जो कुफ़र के मक्का के सताने पर अपना वतन मक्का शरीफ़ छोड़कर मदीना जा बसे यही मुसलमान मुहाजिरीन कहलाए जाते हैं। लफ़्ज़े हिजरात इस्लाम के लिये तर्क वतन करने को कहा गया है।

3652. हमसे अब्दुल्लाह बिन रज़ाअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे हज़रत

٢- بَابُ مَنَاقِبِ الْمُهَاجِرِينَ

وَفَضْلِهِمْ

مِنْهُمْ أَبُو بَكْرٍ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي قُحَافَةَ التَّيْمِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَسْتَغْنُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ﴾ [الحشر: ٨].

وَقَالَ: ﴿إِلَّا تَصْرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ - إِلَى قَوْلِهِ - إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْكَافِرِينَ﴾ [التوبة: ٤٠]. قَالَتْ عَائِشَةُ وَأَبُو سَعِيدٍ وَابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ: «وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْغَارِ».

٣٦٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا

إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الرَّاءِ قَالَ:

बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने (उनके वालिद) हज़रत आज़िब (रज़ि.) से एक पालान तेरह दिरहम में ख़रीदा। फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने आज़िब (रज़ि.) से कहा कि बराअ (अपने बेटे) को कहो कि वो मेरे घर ये पालान उठाकर पहुँचा दें इस पर हज़रत आज़िब (रज़ि.) ने कहा ये उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक आप वो वाक़िया बयान न करें कि आप और रसूलुल्लाह (ﷺ) (मक्का से हिज़रत करने के लिये) किस तरह निकले थे, हालाँकि मुश्किनी आप दोनों को तलाश भी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मक्का से निकलने के बाद हम रात भर चलते रहे और दिन में भी सफ़र जारी रखा। लेकिन जब दोपहर हो गई तो मैंने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई कि कहीं कोई साया नज़र आ जाए और हम उसमें कुछ आराम कर सकें। आख़िर एक चट्टान दिखाई दी और मैंने उसके पास पहुँच कर देखा कि साया है। फिर मैंने नबी करीम (ﷺ) के लिये एक फ़र्श वहाँ बिछा दिया और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप अब आराम फ़र्माएँ। चुनाँचे आप (ﷺ) लेट गये। फिर मैं चारों तरफ़ देखता हुआ निकला कि कहीं लोग हमारी तलाश में न आए हों। फिर मुझको बकरियों का एक चरवाहा दिखाई दिया जो अपनी बकरियाँ हॉकता हुआ उसी चट्टान की तरफ़ आ रहा था। वो भी हमारी तरह साये की तलाश में था। मैंने बढ़कर उससे पूछा कि लड़के तू किस का गुलाम है। उसने कुरैश के एक शख़्स का नाम लिया तो मैंने उसे पहचान लिया। फिर मैंने उससे पूछा, क्या तुम्हारी बकरियों में दूध है। उसने कहा जी हाँ। मैंने कहा, क्या तुम दूध दुह सकते हो? उसने कहा कि हाँ। चुनाँचे मैंने उससे कहा और उसने अपने रेवड़ की एक बकरी बाँध दी। फिर मेरे कहने पर उसने उसके थन के गुबार को झाड़ा। अब मैंने कहा कि अपना हाथ भी झाड़ ले। उसने यूँ अपना एक हाथ दूसरे पर मारा और मेरे लिये थोड़ा सा दूध दूहा। ओहज़रत (ﷺ) के लिये एक बर्तन मैंने पहले ही से साथ ले लिया था और उसके मुँह को कपड़े से बन्द कर दिया था (उसमें ठण्डा पानी था) फिर मैंने दूध पर वो पानी (ठण्डा करने के लिये) डाला इतना कि वो नीचे तक ठण्डा हो गया तो उसे आपकी ख़िदमत में लेकर

(اشترى أبو بكر رضي الله عنه من عازب رجلًا بِلَاةٍ عَشْرَ دِرْهَمًا، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ لِعَازِبٍ: مَرِ الْبَرَاءَ فَلْيُخِمِلْ إِلَيَّ رَحْلِي، فَقَالَ عَازِبٌ: لَا، حَتَّى نَخْدُثَا كَيْفَ صَنَعْتَ أَنْتَ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ هَوَّجْتُمَا مِنْ مَكَّةَ وَالْمُشْرِكُونَ يَطْلُبُونَكُمْ. قَالَ: ارْتَحَلْنَا مِنْ مَكَّةَ فَأَخْبَيْنَا - أَوْ سَرَيْنَا - لَيْلَتَنَا وَيَوْمَنَا حَتَّى أَظْهَرْنَا وَقَامَ قَائِمُ الظُّهَيْرِ، فَرَمَيْتُ بِبَصْرِي هَلْ أَرَى مِنْ ظِلٍّ فَأَوَيْ إِلَيْهِ، فَإِذَا صَخْرَةٌ أَتَيْتَهَا، فَظَلَّتْ بَقِيَّةَ ظِلِّ لَهَا فَسَوَّيْتُه، ثُمَّ فَرَشْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فِيهِ، ثُمَّ قُلْتُ لَهُ: اضْطَجِعْ يَا نَبِيَّ اللَّهِ، فَاضْطَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ، ثُمَّ انْطَلَقْتُ أَنْظُرَ مَا حَوْلِي: هَلْ أَرَى مِنَ الطَّلَبِ أَحَدًا؟ فَإِذَا أَنَا بِرَاعِي عَنَمٍ يَسُوقُ عَنَمَهُ إِلَى الصَّخْرَةِ، يُرِيدُ مِنْهَا الَّذِي أَرَدْنَا، فَسَأَلْتُهُ فَقُلْتُ لَهُ: لِمَنْ أَنْتَ يَا غَلَامٌ؟ قَالَ لِرَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ سَمَاءَ فَعَرَفْتُهُ، فَقُلْتُ: هَلْ فِي عَنَمِكَ مِنْ لَبَنٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، قُلْتُ: فَهَلْ أَنْتَ خَالِبٌ لَنَا؟ قَالَ: نَعَمْ، فَأَمَرْتُهُ فَأَعْتَقَلَ شَاةً مِنْ غَنَمِهِ، ثُمَّ أَمَرْتُهُ أَنْ يَنْقُصَ صَرْعَهَا مِنَ الْغَبَارِ، ثُمَّ أَمَرْتُهُ أَنْ يَنْقُصَ كَفِّهِ فَقَالَ هَكَذَا، صَرَبَ بِخَدِّي كَفِّهِ بِالْأُخْرَى فَحَلَبَ لِي كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ، وَقَدْ حَلَبْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِذَاوَةَ عَلَى فَمِهَا حَرْقَةٌ، فَصَبَّيْتُ عَلَى اللَّبَنِ حَتَّى يَرُدَّ اسْفَلُهُ، فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ

हज़िर हुआ। आप भी बेदार हो चुके थे। मैंने अर्ज़ किया-दुष्ट पी लीजिए। अपने इतना पिया कि मुझे खुशी हासिल हो गई। फिर मैंने अर्ज़ किया कि अब कूच का वक़्त हो गया है या रसूलुल्लाह! आपने फ़र्माया हाँ ठीक है, चलो। चुनौचे हम आगे बढ़े और भँका वाले हमारी तलाश में थे लेकिन सुराका बिन मालिक बिन ज़अशम के सिवा हमको किसी ने नहीं पाया। वो अपने घोड़े पर सवार था। मैंने उसे देखते ही कहा कि या रसूलुल्लाह! हमारा पीछा करने वाला दुश्मन हमारे करीब आ पहुँचा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि फ़िक्र न करो। अल्लाह तआला हमारे साथ है। (रज़ेज़ : 2439)

वाक़िय-ए-हिज़रत हयाते नबवी का एक अहम वाक़िया है जिसमें आपके बहुत से मुअज़िज़ात का जुहूर हुआ यहाँ भी चन्द मुअज़िज़ात का बयान हुआ है चुनौचे बाब मुहाज़िरिन के फ़ज़ाइल के बारे में है, इसलिये उसमें हिज़रत के इब्तिदाई वाक़ियात को बयान किया गया है। यही बाब और हदीस का ता'ल्लुक है।

3653. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे बाबित ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने और उनसे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम ग़ारे शौर में छुपे थे तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया कि अगर मुश्रीकीन के किसी आदमी ने अपने क़दमों पर नज़र डाली तो वो ज़रूर हमको देख लेगा। उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबूबक्र! उन दो का कोई क्या बिगाड़ सकता है जिनके साथ तीसरा अल्लाह तआला है। (दीगर मक़ाम : 3922, 4663)

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का हुक्म फ़र्माना कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के दरवाज़े को छोड़कर (मस्जिदे नबवी की तरफ़ के) तमाम दरवाज़े बन्द कर दो. ये हदीस हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है.

3654. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर ने बयान किया, उनसे फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे सालिम अबुन नज़र ने बयान किया, उनसे

عَفُوْفَتُهُ قَدْ اسْتَفْظَ، فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَشَرِبَ حَتَّى رَحِيتُ. ثُمَّ قُلْتُ: لَيْسَ أَنْ الرَّحِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: ((بَلَى)). فَأَرْتَعَلْنَا وَالْقَوْمُ يَطْلُبُونَنَا، فَلَمْ يُدْرِكْنَا أَحَدٌ مِنْهُمْ غَيْرَ سُرَاقَةَ بْنِ مَالِكٍ وَابْنِ جُنَشٍ عَلَى فَرَسٍ لَهُ، فَقُلْتُ: هَذَا الطَّلَبُ لَنَا لِحَقِّنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ: ((لَا تَحْزَنَ، إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا)) «تَرْيَعُونَ»

[राजि: 2439]

۳۶۵۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ ثَابِتِ بْنِ أَبِي الْيَاسَنِ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَنَا فِي الْغَارِ: لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ نَظَرَ تَحْتَ قَدَمَيْهِ لَأَبْصَرَنَا. فَقَالَ: ((مَا ظَنُّكَ يَا أَبَا بَكْرٍ بِالنَّبِيِّ ﷺ تَأْتِلُهُمَا)).

[طوافه في: 3922, 4663]

۳- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَدُّوا الْأَبْوَابَ إِلَّا بَابَ أَبِي بَكْرٍ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

۳۶۵۴- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ عَنْ بُسَيْرِ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ

बुस्स बिन सईद ने और उनसे हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खुत्बा दिया और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को दुनिया में और जो कुछ अल्लाह के पास आख़िरत में है उन दोनों में से किसी एक का इख़्तियार दिया तो उस बन्दे ने इख़्तियार कर लिया जो अल्लाह के पास था। उन्होंने बयान किया कि इस पर अबूबक्र (रज़ि.) रोने लगे। अबू सईद कहते हैं कि हमको उनके रोने पर हैरत हुई कि आँहज़रत (ﷺ) तो किसी बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे इख़्तियार दिया गया था। लेकिन बात ये थी कि खुद आँहज़रत (ﷺ) ही वो बन्दे थे जिन्हें इख़्तियार दिया गया था और (वाक़िअतन, वास्तव में) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हममें सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। आँहज़रत (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया कि अपनी सुहबत और माल के ज़रिये मुझ पर अबूबक्र का सबसे ज़्यादा एहसान है और अगर मैं अपने ख़ब के सिवा किसी को जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र को बनाता, लेकिन इस्लाम का भाईचारा और इस्लाम की मुहब्बत उनसे काफी है, देखो मस्जिद की तरफ़ तमाम दरवाज़े (जो सहाबा के घरों की तरफ़ खुलते थे) सब बन्द कर दिये जाएँ सिर्फ़ अबूबक्र (रज़ि.) का दरवाज़ा रहने दो। (राज़ेअ: 466)

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को एक मुस्ताज़ मुक़ाम अता फ़र्माया और आज तक मस्जिदे नबवी में ये तारीख़ी जगह महफूज़ रखी गई है।

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की दूसरे सहाबा पर फ़ज़ीलत का बयान

3655. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने ही में जब हमें सहाबा के दरम्यान इतिख़ाब के लिये कहा जाता तो सबमें अफ़ज़ल और बेहतर हम अबूबक्र (रज़ि.) को क़रार देते, फिर उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को फिर उम्रान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) को।

(दीगर मक़ाम : 3697)

أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ النَّاسَ وَقَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ عَبْدًا بَيْنَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ ذَلِكَ الْعَبْدُ مَا عِنْدَ اللَّهِ)). قَالَ فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ، فَمَجِنَا لِبَكَائِهِ أَنْ يُخْبِرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ عَبْدِ خَيْرٍ، فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيْرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ أَعْلَمَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنْ مِنْ أَمْنِ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَالِهِ أَمَا بَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّجِدًا خَلِيلًا غَيْرَ رَبِّي لَاتَّخَذْتُ أبا بَكْرٍ، وَلَكِنْ أَخُوهُ الْإِسْلَامِ وَمَوَدَّتُهُ، لَا يَنْفَقِينَ فِي الْمَسْجِدِ بَابٌ إِلَّا سُدَّ، إِلَّا بَابَ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: ٤٦٦]

٤- بَابُ فَضْلِ أَبِي بَكْرٍ

بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ

٣٦٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا نَخِيرُ بَيْنَ النَّاسِ لِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَخَيْرُ أبا بَكْرٍ، ثُمَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، ثُمَّ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ)).

[طرفه في: ٣٦٩٧]

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने मजहबे जुम्हूर की तरफ़ इशारा किया है कि तमाम सहाबा में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को फ़ज़ीलत हासिल है। अक़्बर सलफ़ का यही क़ौल है और ख़ल्फ़ में से भी अक़्बर ने यही कहा है।

कुछ मुहक़िकीन ऐसा भी कहते हैं कि ख़ुलफ़-ए-अरब़आ को बाहम एक दूसरे पर फ़ज़ीलत देने में कोई नस्से क़तई नहीं है, लिहाज़ा ये चारों ही अफ़ज़ल हैं। कुछ कहते हैं कि तमाम सहाबा में ये चारों अफ़ज़ल हैं और उनकी ख़िलाफ़त जिस तर्तीब के साथ मुनअक़िद हुई, उसी तर्तीब से वो हक़ और सहीह हैं और उनमें बाहम फ़ज़ीलत इसी तर्तीब से कही जा सकती है। बहरहाल जुम्हूर के मज़हब को तरज़ीह हासिल है।

बाब 5 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि अगर मैं किसी को जानी दोस्त बनाता तो अबूबक्र (रज़ि.)

को बनाता

ये अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से मरवी है।

5- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ : ((لَوْ

كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا))

قَالَ : أَبُو سَعِيدٍ

इस बाब के जेल में बहुत सी रिवायात दर्ज की गई हैं जिनसे किसी न किसी तरह से हज़रत सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकलती है। इस नुक्ते को समझ कर नीचे लिखी रिवायतों का मुतालआ करना निहायत ज़रूरी है।

3656. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इकिमा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर अपनी उम्मत के किसी फ़र्द को अपना जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र को बनाता लेकिन वो मेरे दीनी भाई और मेरे दोस्त हैं। (राजेअ : 487)

3656- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ أُمَّتِي خَلِيلًا لَاتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ وَلَكِنْ أَخِي وَصَاحِبِي)). [راجع: 467]

3657. हमसे मुअल्ला बिन असद और मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने (यही रिवायत) कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मैं किसी को जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र (रज़ि.) को बनाता। लेकिन इस्लाम का भाईचारा क्या कम है? (राजेअ : 487)

3657- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ وَمُوسَى بْنُ قَالَةَ حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ وَقَالَ : ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا لَاتَّخَذْتُهُ خَلِيلًا وَلَكِنْ أَخُوهُ الْإِسْلَامِ أَفْضَلُ)).

[راجع: 467]

हमसे कुतैबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल वट्टहाब ने और उनसे अय्यूब ने ऐसी ही हदीष बयान की।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ أَيُّوبَ.. مِثْلَهُ.

3658. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमको हम्माद बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने बयान किया कि कूफ़ा वालों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को दादा (की मीराष के सिलसिले में) सवाल लिखा तो आपने उन्हें जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था, अगर इस उम्मत में किसी को मैं अपना जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र (रज़ि.) को बनाता। (वही) अबूबक्र (रज़ि.) ये फ़र्माते थे कि दादा बाप की तरह

3658- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ : كَتَبَ أَهْلُ الْكُوفَةِ إِلَى ابْنِ الزُّبَيْرِ فِي الْحَجَّةِ، فَقَالَ : أَمَّا الَّذِي قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ خَلِيلًا لَاتَّخَذْتُهُ،

है (य'नी जब मय्यत का बाप ज़िन्दा न हो तो बाप का हिस्सा दादा की तरफ लौट जाएगा या'नी बाप की जगह दादा वारिष होगा)।

3659. हमसे हुमैदी और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि एक औरत नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में आई तो आपने उनसे फ़र्माया कि फिर आइयो। उसने कहा, अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो? गोया वो वफ़ात की तरफ़ इशारा कर रही थी। आपने फ़र्माया कि अगर तुम मुझे न पा सको तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास चली आना। (दीगर मक्काम : 7220, 7360)

तशरीह : इस हदीस से ये निकलता है कि आपको बज़रिये वद्य मा'लूम हो चुका था कि आपके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आपके ख़लीफ़ा होंगे। तब रानी ने अस्मा बिन मालिक से निकाला, हमने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपके बाद अपने मालों की ज़कात किसको दें? आपने फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को देना, उसकी सनद ज़ईफ़ है। मुअज्जम में सहल बिन अबी खुबैमा से निकाला कि आपसे एक ग़वार ने बेअत की और पूछा कि अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो मैं किसके पास आऊँ? फ़र्माया, अबूबक्र के पास। उसने कहा अगर वो मर जाएँ तो फिर किसके पास? फ़र्माया इमर (रज़ि.) के पास। इन रिवायतों से शियाओं का रह होता है जो कहते हैं कि औहज़रत (ﷺ) अपने बाद अली (रज़ि.) को ख़लीफ़ा मुकर्रर कर गये थे।

3660. हमसे अहमद बिन अबी तथ्यब ने बयान किया, कहा हमसे इस्माइल बिन अबी मुजालिद ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने कहा, उनसे वबह बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे हम्माम ने बयान किया कि मैंने हज़रत अम्मार (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस वक़्त देखा है जब आपके साथ (इस्लाम लाने वालों में स़िफ़) पाँच गुलाम, दो औरतों और अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के सिवा और कोई न था। (दीगर मक्काम : 3857)

गुलाम ये थे बिलाल, ज़ैद बिन हारिषा, आमिर बिन फुहैरा, अबू फकीह और उबैद बिन ज़ैद हब्शी, औरतें हज़रत खदीजा और उम्मे ऐमन थीं या सुमय्या। ग़र्ज़ आज़ाद मर्दों में सबसे पहले हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) ईमान लाए। बच्चों में हज़रत अली (रज़ि.) और तो में हज़रत खदीजा (रज़ि.)।

3661. मुझसे हिशाम बिन अम्मार ने बयान किया, कहा हमसे स़दक्रा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन वाकिद ने बयान किया, उनसे बुस्र बिन उबैदुल्लाह ने, उनसे आइज़ुल्लाह अबू इदरीस ने और उनसे हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर था कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अपने कपड़े का किनारा पकड़े हुए, घुटना खोले हुए आए।

أَنزَلَهُ أَبَا، يَغْنَى أَبَا بَكْرٍ)).

3659- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَا: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((رَأَيْتُ امْرَأَةَ النَّبِيِّ ﷺ قَامَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ، قَالَتْ: أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ - كَأَنِّي تَقُولُ الْمَوْتَ - قَالَ ﷺ: ((إِنْ لَمْ تَجِدْنِي فَاذْهَبِي إِلَى أَبِي بَكْرٍ)). (طرفه ي : 7220, 7360).

3660- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي الْغُبَيْرِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُجَالِدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُشَيْرٍ عَنْ وَبَرَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَمَّارًا يَقُولُ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَمَا مَعَهُ إِلَّا خَمْسَةُ أَهْلٍ وَامْرَأَتَانِ وَأَبُو بَكْرٍ)). (طرفه ي : 3857).

3661- حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَاقِدٍ عَنْ بَسْرِ بْنِ عُيَيْنَةَ عَنْ عَائِلَةَ اللَّهِ أَبِي إِدْرِيسَ عَنْ أَبِي الثَّوْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ

आँहज़रत (ﷺ) ने ये हालत देखकर फ़र्माया, मा'लूम होता है तुम्हारे दोस्त किसी से लड़कर आए हैं। फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने हाज़िर होकर सलाम किया और अज़्र किया था रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे और उमर बिन ख़त्ताब के दरम्यान कुछ तकरार हो गई थी और इस सिलसिले में मैंने जल्दी में उनको सख़्त लफ़ज़ कह दिये लेकिन बाद में मुझे सख़्त नदामत हुई तो मैंने उनसे मुआफ़ी चाही, अब वे मुझे माफ़ करने के लिये तैयार नहीं हैं। इसीलिये मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। आपने फ़र्माया ऐ अबूबक्र! तुम्हें अल्लाह माफ़ करे। तीन मर्तबा आपने ये जुम्ला इश्राद फ़र्माया। हज़रत उमर (रज़ि.) को भी नदामत हुई और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के घर पहुँचे और पूछा क्या अबूबक्र घर पर मौजूद हैं? मा'लूम हुआ कि नहीं, तो आप भी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सलाम किया। आँहज़रत (ﷺ) का चेहरा मुबारक गुस्से से बदल गया और अबूबक्र (रज़ि.) डर गये और घुटनों के बल बैठकर अज़्र करने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह की क़सम ज़्यादाती मेरी ही तरफ़ से थी। दो मर्तबा ये जुम्ला कहा। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह ने मुझे तुम्हारी तरफ़ नबी बनाकर भेजा था और तुम लोगों ने मुझसे कहा था कि तुम झूठ बोलते हो लेकिन अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा था कि आप सच्चे हैं और अपनी जान व माल के ज़रिये उन्होंने मेरी मदद की थी, तो क्या तुम लोग मेरे दोस्त को सताना छोड़ते हो या नहीं? आपने दो बार यही फ़र्माया। आपके ये फ़र्माने के बाद फिर अबूबक्र (रज़ि.) को किसी ने नहीं सताया। (दीगर मक़ाम : 4640)

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. إِذَا أَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ آخِذًا بِطَرَفِ ثَوْبِهِ حَتَّى أَبْدَى عَنْ رُكْبَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَا صَاحِبُكُمْ فَقَدْ غَامَرَ))، فَلَمْ يَقَالَ: إِنِّي كَانَ يَتَنَبَّأُ وَيَتَنَبَّأُ ابْنُ الْخَطَّابِ شَيْءٌ. فَاسْرَعْتُ إِلَيْهِ ثُمَّ نَبَيْتُ، فَسَأَلَنِي أَنِ يَغْفِرَ لِي فَأَبَى عَلَيَّ، فَأَقْبَلْتُ إِلَيْكَ. فَقَالَ: ((يَغْفِرُ اللَّهُ لَكَ يَا أَبَا بَكْرٍ (ثَلَاثًا)). ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ نَدِمَ، فَأَتَى مَنْزِلَ أَبِي بَكْرٍ فَسَأَلَ: أَأَنْتَ أَبُو بَكْرٍ؟ فَقَالُوا: لَا. فَأَتَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَلَسَّمَهُ عَلَيْهِ، فَجَعَلَ وَجْهُ النَّبِيِّ ﷺ يَتَمَعَّرُ، حَتَّى أَشْفَقَ أَبُو بَكْرٍ فَجِئَا عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَاللَّهِ أَنَا كُنْتُ أَظْلِمَ (مَرَّتَيْنِ). فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ لَكُمْ، فَقُلْتُمْ: كَذَبْتَ، وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: صَدَقَ، وَوَأَسَانِي بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ، فَهَلْ أَنْتُمْ تَارِكُوا لِي صَاحِبًا؟ (مَرَّتَيْنِ). فَمَا أَوْذَى بَعْدَهَا)).

[طرمه ي : ٤٦٤٠]

तशहीह: अबू यज़ला की रिवायत में है कि जब उमर (रज़ि.) रसूल करीम (ﷺ) के पास आए तो आपने मुँह फेर लिया। दूसरी तरफ़ से आए तो इधर से भी मुँह फेर लिया, सामने बैठे तो उधर से भी मुँह फेर लिया आखिर उन्होंने सबब पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) ने तुमसे मज़हज़रत की और तुमने कुबूल न की। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं कि इस हदीष से अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की फ़ज़ीलत तमाम सहाबा पर निकली। हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उनका ख़िताब सिद्दीक आसमान से उतरा। इस हदीष से शिया हज़रात को सबक लेना चाहिये। जब आप हज़रत उमर (रज़ि.) पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के लिये इतने गुस्से हुए हालाँकि पहले ज़्यादाती अबूबक्र ही की थी मगर जब उन्होंने माफ़ी चाही तो हज़रत उमर (रज़ि.) को फ़ौरेन माफ़ करना चाहिये था। फिर शिया हज़रात किस मुँह से आँहज़रत (ﷺ) के यारे ग़ार को बुरा भला कहते हैं उन लोगों को अल्लाह से डरना चाहिये। देखा गया है कि हज़रात शैख़ेन पर तबर्रा (बुराई) करने वालों का बुरा हज़र हुआ है।

3662. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا

अब्दुल अजीज़ बिन मुख्तार ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, कहा हमसे अबू इम्रान से बयान किया, कहा कि मुझसे हज़रत अमर बिन आस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें ग़ज़्व-ए-ज़ातुस्सलासिल के लिये भेजा (अमर रज़ि. ने बयान किया कि) फिर मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा कि सबसे ज़्यादा मुहब्बत आपको किससे है? आपने फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.) से। मैंने पूछा, और मर्दों में? फ़र्माया कि उसके बाप से। मैंने पूछा, उसके बाद? फ़र्माया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से। इस तरह आपने कई आदमियों के नाम लिये। (दीगर मक़ाम : 4357)

3663. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अबू सहल बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि भेड़िया आ गया और रेवड़ से एक बकरी उठा कर ले जाने लगा, चरवाहे ने उससे बकरी छुड़ानी चाही तो भेड़िया बोल पड़ा। दरिन्दों वाले दिन में इसकी रखवाली करने वाला कौन होगा जिस दिन मेरे सिवा और कोई चरवाहा न होगा। इसी तरह एक शख्स बैल को उस पर सवार होकर लिये जा रहा था। बैल उसकी तरफ़ मुतवज्जा होकर कहने लगा कि मेरी पैदाइश उसके लिये नहीं हुई है, मैं तो खेती बाड़ी के कामों के लिये पैदा किया गया हूँ। वो शख्स बोल पड़ा सुब्हानल्लाह! (जानवर और इंसानों की तरह बातें करे) और हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उन वाक़ियात पर ईमान लाता हूँ और अबूबक्र और उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी। (राजेअ : 2324)

عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنِ الْمُخْتَارِ قَالَ خَالِدُ الْحَذَاءِ حَدَّثَنَا عَنْ أَبِي عَفْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ الْكَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَهُ عَلَى جَيْشٍ ذَاتِ السَّلَاسِلِ، فَأَتَيْتُهُ قُلْتُ: أَيُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: ((عَائِشَةُ)). فَقُلْتُ مِنَ الرِّجَالِ فَقَالَ: ((أَبُوهَا)). قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ((ثُمَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، فَقَدْ رَجَلًا)). [ظرفه في : ٤٣٥٨].

٣٦٦٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَمَا رَاعٍ فِي غَنَمِهِ عَدَا عَلَيْهِ الذَّنْبُ فَأَخَذَ شَاةً، فَطَلَبَهُ الرَّاعِي، فَانْقَسَتْ إِلَيْهِ الذَّنْبُ فَقَالَ: مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّيْعِ، يَوْمَ لَيْسَ لَهَا رَاعٍ غَيْرِي؟ وَبَيْنَمَا رَجُلٌ يَسُوقُ بَقْرَةً قَدْ حَمَلَ عَلَيْهَا، فَانْقَسَتْ إِلَيْهِ فَكَلَمَتْهُ فَقَالَتْ: إِنِّي لَمْ أَخْلُقْ لِهَذَا، وَلَكِنِّي خُلِقْتُ لِلْحَرْثِ. قَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللَّهِ، قَالَ: النَّبِيُّ ﷺ: فَإِنِّي أَوْمِنُ بِذَلِكَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ. رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا)).

[راجع : ٢٣٢٤]

तशरीह : दरिन्दों के दिन से क़यामत का दिन मुराद है जबकि खुद गडरिये अपनी बकरियों की रखवाली छोड़ देंगे सबको अपने नफ्स की फ़िक्र लग जाएगी। ये हदीष ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें इतना और ज़्यादा था कि अबूबक्र और उमर वहाँ मौजूद न थे। हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने इस हदीष से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकाली। आपने अपने बाद उनका नाम लिया, आपको उन पर पूरा भरोसा था और आप जानते थे कि वो दोनों इतने रासिखुल अक़ीदा हैं कि मेरी बात

को वो कभी रह नहीं कर सकते।

3664. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें यूनस ने, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझको इब्नुल मुसय्यिब ने खबर दी और उन्होंने हजरत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैं सो रहा था कि ख़वाब में मैंने अपने आपको एक कुँए पर देखा जिस पर डोल था। अल्लाह तआला ने जितना चाहा मैंने उस डोल से पानी खींचा, फिर उसे इब्ने अबी क्रह्माफ़ा (हज़रत अबूबक्र रज़ि.) ने ले लिया और उन्होंने एक या दो डोल खींचे। उनके खींचने में कुछ कमजोरी सी मा'लूम हुई। अल्लाह उनकी इस कमजोरी को माफ़ फ़र्माए। फिर इस डोल ने एक बहुत बड़े डोल की मूरत इख़्तियार कर ली और उसे इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अपने हाथ में ले लिया। मैंने ऐसा शहज़ोर पहलवान आदमी नहीं देखा जो इमर (रज़ि.) की तरह डोल खींच सकता। उन्होंने इतना पानी निकाला कि लोगों ने अपने ऊँटों को हौज़ से सैराब कर लिया। (दीगर मक्राम: 7021, 7022, 7475)

तशरीह: ये ख़िलाफ़ते इस्लामी को सम्भालने पर इशारा है। जैसा कि वफ़ाते नबवी के बाद हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) ने दो द्वाइस साल सम्भाला बाद में फ़ारूक़ी दौर शुरू हुआ और आपने ख़िलाफ़त का हक़ अदा कर दिया कि फ़तुहाने इस्लामी का सैलाब दूर दूर तक पहुँच गया और ख़िलाफ़त के हर हर शुअबे में तरक़ियात के दरवाज़े खुल गये। आँहज़रत (ﷺ) को ख़वाब में ये सारे हालात दिखलाए गये।

3665. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मूसा बिन इब्रबा ने ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख्स अपना कपड़ा (पाजामा या तहबन्द वगैरह) तकब्बुर और गुरूर की वजह से ज़मीन पर घसीटता चले तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ़ नज़रे रहमत से देखेगा भी नहीं। इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अज़्र किया कि मेरे कपड़े का एक हिस्सा लटक जाया करता है। अल्बत्ता अगर मैं पूरी तरह ख़याल रखूँ तो वो नहीं लटक सकेगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आप तो ऐसा तकब्बुर के ख़याल से नहीं करते (इसलिये आप इस हुक्म में दाख़िल नहीं हैं) मूसा ने कहा कि मैंने सालिम से पूछा, क्या हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने इस

۳۶۶۴- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَنْ يُونُسَ بْنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي عَلَى قَلْبٍ عَلَيْهَا دَلْوٌ، فَتَرَعْتُ مِنْهَا مَا شَاءَ اللَّهُ. ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ فَتَرَعُ بِهَا ذُنُوبًا أَوْ ذُنُوبَيْنِ، وَلَمْ يَزَعْجِهِ ضَعْفٌ، وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ ضَعْفَهُ. ثُمَّ اسْتَحَالَتْ غَرَبًا فَأَخَذَهَا ابْنُ الْخَطَّابِ، فَلَمْ أَرْ غَرْفًا مِنَ النَّاسِ يَتَرَعُ نَزْعَ غَمَرٍ، حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطْفَيْنِ)). [أطرافه في : ۷۰۲۱، ۷۰۲۲، ۷۴۷۵].

۳۶۶۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ خِيَلًا لَمْ يَنْظُرِ اللَّهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)). قَالَ أَبُو بَكْرٍ : إِنَّ أَحَدَ شَقَائِي لَوْ بِي يَسْتَرْخِي، إِلَّا أَنْ أَتَاهَا ذَلِكَ مِنْهُ. فَقَالَ : رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِنَّكَ لَسْتَ تَصْنَعُ ذَلِكَ خِيَلًا)). قَالَ مُوسَى : فَقُلْتُ لِسَالِمٍ أَذْكَرَ عَبْدُ اللَّهِ : ((مَنْ جَرَّ إِزَارَةً؟)) قَالَ :

हदीस में ये फ़र्माया था कि जो अपनी इज़ार घसीटते चले। तो उन्होंने कहा कि मैंने तो उनसे यही सुना कि जो कोई अपना कपड़ा लटकाए। (दीगर मक़ाम : 5783, 5791, 6062)

لَمْ أَسْمَعْهُ ذَكَرَ إِلَّا ((نَوْبَهُ)).

[أطرافه في : 5783, 5791, 6062]

तशरीह : मा'लूम हुआ कि इन्नमलआमालु बिन्निय्यात, अगर कोई अपनी इज़ार टखने से ऊँची भी रखे और मगरूर हो तो उसकी तबाही यक़ीनी है। अगर बिला क़स्द और बिला निय्यते ग़ुरूर लटक जाए तो वो इस वर्ईद में दाखिल न होगा। ये हर कपड़े को शामिल है। इज़ार हो या पाजामा या कुर्ता की आस्तीन बहुत बड़ी बड़ी रखना, अगर गुरूर की राह से ऐसा करे तो सख़्त गुनाह और इस्लाम है। आज के दौर में अज़राहे किन्न व गुरूर कोट पतलून इस तरह पहनने वाले इसी वर्ईद में दाखिल हैं।

3666. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे ह मीद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में किसी चीज़ का एक जोड़ा ख़र्च किया (मसलन दो रुपये, दो कपड़े, दो घोड़े अल्लाह तआला के रास्ते में दिये) तो उसे जन्नत के दरवाज़ों से बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! इधर आ, ये दरवाज़ा बेहतर है पस जो शख़्स नमाज़ी होगा उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो शख़्स मुजाहिद होगा उसे जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। जो शख़्स अहले स़दक्का में से होगा उसे स़दक्का के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स रोज़ेदार होगा उसे स़ियाम और स़यान (सैराबी) के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया जिस शख़्स को इन तमाम ही दरवाज़ों से बुलाया जाएगा फिर तो उसे किसी क्रिस्म का डर बाक़ी नहीं रहेगा और पूछा क्या कोई शख़्स ऐसा भी होगा जिसे उन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाएगा रसूलल्लाह! आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ और मुझे उम्मीद है तुम भी उन्हीं में से होंगे ऐ अबूबक्र! (राज़ेअ : 1897)

٣٦٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَوْفٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((مَنْ أَتَّفَقَ زَوْجَيْنِ مِنْ شَيْءٍ مِنَ الْأَشْيَاءِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ دُعِيَ مِنْ أَبْوَابٍ - يَعْنِي الْجَنَّةِ - يَا عَبْدَ اللَّهِ هَذَا خَيْرٌ. فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلَاةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلَاةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الْجِهَادِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصِّيَامِ وَبَابِ الرِّيَّانِ)). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا عَلَى هَذَا الَّذِي يُدْعَى مِنْ بِلَاقِ الْأَبْوَابِ مِنْ ضَرُورَةٍ. وَقَالَ : هَلْ يُدْعَى مِنْهَا كُلُّهَا أَحَدٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ : ((نَعَمْ، وَأَرْجُوا أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ يَا أَبَا بَكْرٍ)).

[راجع : ١٨٩٧]

3667. मुझसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन

٣٦٦٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ

उर्वा ने, उनसे उर्वा बिन जुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की जोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आहज़रत (ﷺ) की जब वफ़ात हुई तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उस वक़्त मक़ामे सनह में थे। इस्माईल ने कहा या'नी अवाली के एक गाँव में। आपकी ख़बर सुनकर हज़रत उमर उठकर ये कहने लगे कि अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात नहीं हुई। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) कहा करते थे अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मेरे दिल में यही ख़याल आता था और मैं कहता था कि अल्लाह आपको ज़रूर इस बीमारी से अच्छा करके उठाएगा और आप उन लोगों के हाथ और पाँव काट देंगे (जो आपकी मौत की बातें करते हैं)। इतने में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तशरीफ़ ले आए और अंदर जाकर आपकी नअशे मुबारक के ऊपर से कपड़ा उठाया और बोसा दिया और कहा, मेरे बाप और माँ आप पर फिदा हों, आप ज़िन्दगी में भी पाकीज़ा थे और वफ़ात के बाद भी और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अल्लाह तआला आप पर दो मर्तबा मौत हर्गिज़ तारी नहीं करेगा। उसके बाद आप बाहर आए और उमर (रज़ि.) से कहने लगे ऐ क़सम खाने वाले! ज़रा ताम्मुल कर। फिर जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बातचीत शुरू की तो हज़रत उमर (रज़ि.) खामोश होकर बैठ गये। (राजेअ: 1241)

3668. हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने पहले अल्लाह की हम्दो-बना बयान की। फिर फ़र्माया लोगों देखो अगर कोई मुहम्मद (ﷺ) को पूजता था (या'नी ये समझता था कि वो आदमी नहीं हैं, वो कभी नहीं मरेंगे) तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की वफ़ात हो चुकी है और जो शख्स अल्लाह की पूजा करता था तो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा है उसे मौत कभी नहीं आएगी (फिर अबूबक्र रज़ि. ने सूरह जुमर की ये आयत पढ़ी) ऐ नबी! तुम भी मरने वाले हो और वो भी मरेंगे। (अन् नज़्म: 30) और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि मुहम्मद (ﷺ) सिर्फ़ एक रसूल हैं। इससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं। पस क्या अगर वो वफ़ात पा जाएँ या उन्हें शहीद कर दिया जाए तो तुम इस्लाम से फिर जाओगे और जो शख्स अपनी ऐड़ियों के बल फिर जाए तो वो अल्लाह को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा और अल्लाह अन्करीब शक्रगुज़ार बन्दों का बदला देने वाला है। (आले इमरान

غُرُوة قَالَ: أَخْبَرَنِي غُرُوةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ (رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَاتَ وَأَبُو بَكْرٍ بِالسُّح - قَالَ إِسْمَاعِيلُ: يَغْنِي بِالْعَالِيَةِ - فَقَامَ عُمَرُ يَقُولُ: وَاللَّهِ مَا مَاتَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. قَالَتْ وَقَالَ عُمَرُ: وَاللَّهِ مَا كَانَ يَقَعُ فِي نَفْسِي إِلَّا ذَلِكَ، وَلَيَتَعَنَّهُ اللَّهُ فَلَيَقْطَعَنَّ أَيْدِي رِجَالٍ وَأَرْجُلَهُمْ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَكَشَفَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَبَّلَهُ فَقَالَ: يَا بِي أَنْتَ وَأُمِّي، طِبْتَ حَيًّا وَمَيِّتًا، وَاللَّهِ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يُدْبِقُكَ اللَّهُ السَّمَوَتَيْنِ أَبَدًا. ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ: أَيُّهَا الْخَالِفُ، عَلَى رِسْلِكَ، فَلَمَّا تَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ جَلَسَ عُمَرُ)). (راجع: 1241)

٣٦٦٨ - ((فَحَمِدَ اللَّهُ أَبُو بَكْرٍ وَأَتَى عَلَيْهِ وَقَالَ: أَلَا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ وَقَالَ: ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ﴾ [الزمر: ٣٠]. وَقَالَ: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ، أَإِنَّا مَاتَ أَوْ قُبِّلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ؟ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقْبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا، وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ﴾ [آل عمران: ١٤٤]. قَالَ:

: 144) रावी ने बयान किया कि ये सुनकर लोग फूट फूटकर रोने लगे। रावी ने बयान किया कि अंसार सक्रीफा बनी साएदा में सअद बिन इब्बादा (रज़ि.) के पास जमा हो गये और कहने लगे कि एक अमीर हममें से होगा और एक अमीर तुम (मुहाजिरीन) में से होगा। (दोनों मिलकर हुक्मत करेंगे) फिर अबूबक्र (रज़ि.), उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) और अबू इब्बादा बिन जराह (रज़ि.) उनकी मजलिस में पहुँचे। उमर (रज़ि.) ने बातचीत करनी चाही लेकिन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे खामोश रहने के लिये कहा। उमर (रज़ि.) कहा करते थे कि अल्लाह की क्रसम मैंने ऐसा सिर्फ़ इस वजह से किया था कि मैंने पहले ही से एक तक्ररीर तैयार कर ली थी जो मुझे बहुत पसन्द आई थी, फिर भी मुझे डर था कि अबूबक्र (रज़ि.) की बराबरी उससे भी नहीं हो सकेगी। आखिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने इतिहाई बलागत के साथ बात शुरू की। उन्होंने अपनी तक्ररीर में फ़र्माया कि हम (कुरैश) उमरा हैं और तुम (जमाअते अंसार) वज़ीर हो। इस पर हज़रत हुबाब बिन मुज़िर (रज़ि.) बोले कि नहीं अल्लाह की क्रसम! हम ऐसा नहीं होने देंगे, एक अमीर हममें से होगा और एक अमीर तुममें से होगा। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नहीं हम उमरा हैं तुम ख़ुज़रा हो (वजह ये है कि) कुरैश के लोग सारे अरब में शरीफ़ ख़ानदान शुमार किये जाते हैं और उनका मुल्क (या'नी मक्का) अरब के बीच में है तो अब तुमको इख़्तियार है या तो उमर (रज़ि.) से बेअत कर लो या अबू इब्बादुल्लाह बिन जराह (रज़ि.) से। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, नहीं हम आपसे ही बेअत करेंगे, आप हमारे सरदार हैं, हममें सबसे बेहतर हैं और रसूले करीम (ﷺ) के नज़दीक आप हम सबसे ज़्यादा महबूब हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनका हाथ पकड़ लिया और उनके हाथ पर बेअत कर ली फिर सब लोगों ने बेअत की। इतने में किसी की आवाज़ आई कि सअद बिन इब्बादा (रज़ि.) को तुम लोगों ने मार डाला। उमर (रज़ि.) ने कहा, उन्हें अल्लाह ने मार डाला। (राजेअ: 1242)

فَنَشَجَ النَّاسُ يَنْكُونَ. قَالَ: وَاجْتَمَعَتِ الْأَنْصَارُ إِلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فِي مَقِيفَةِ نَبِيِّ سَاعِدَةٍ فَقَالُوا: مِنَّا أَمِيرٌ وَمِنْكُمْ أَمِيرٌ، فَلَهَبَ إِلَيْهِمْ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَأَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجُرَّاحِ، فَلَهَبَ عُمَرُ يَتَكَلَّمُ، فَاسْكَنَهُ أَبُو بَكْرٍ، وَكَانَ عُمَرُ يَقُولُ: وَاللَّهِ مَا أَرَدْتُ بِذَلِكَ إِلَّا أَنِّي قَدْ هَيَّאתُ كَلَامًا قَدْ أَغْنَيْتَنِي خَشِيتُ أَنْ لَا يَتَلَفَّهَ أَبُو بَكْرٍ. ثُمَّ تَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ فَكَتَلَمَ أَبْلَغَ النَّاسِ، فَقَالَ لِي كَلَامُهُ: نَعْنُ الْأُمَرَاءُ وَأَنْتُمْ الْوُزَرَاءُ. فَقَالَ خُبَابُ بْنُ الْمُنْذِرِ: لَا وَاللَّهِ لَا نَفْعَ لَنَا مِنَّا أَمِيرٌ وَمِنْكُمْ أَمِيرٌ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: لَا، وَلَكِنَّا الْأُمَرَاءُ وَأَنْتُمْ الْوُزَرَاءُ. هُمْ أَوْسَطُ الْعَرَبِ دَارًا وَأَعَزُّهُمْ أَحْسَانًا، فَبَايَعُوا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَوْ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجُرَّاحِ: فَقَالَ عُمَرُ: بَلْ لَبِيفُكِ أَنْتَ، فَأَنْتَ سَيِّدُنَا وَخَيْرُنَا وَأَحَبُّنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَأَخَذَ عُمَرُ بِيَدَيْهِ فَبَايَعَهُ وَبَايَعَهُ النَّاسُ. فَقَالَ قَائِلٌ: قَبِلْتُمْ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ، فَقَالَ: عُمَرُ: قَتَلَهُ اللَّهُ)).

[راجع: ١٢٤٢٥]

3669. और अब्दुल्लाह बिन सालिम ने जुबेदी से नक़ल किया कि अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उन्हें क़ासिम ने ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

٣٦٦٩- وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَالِكٍ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْقَاسِمِ: أَخْبَرَنِي الْقَاسِمُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

(ﷺ) की नज़र (घफ़ात से पहले) उठी और आपने फ़र्माया ऐ अल्लाह! मुझे रफ़ीक़े आला में (दाख़िल कर) आपने ये जुम्ला तीन मर्तबा फ़र्माया और पूरी हदीष बयान की। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत अबूबक्र और उमर (रज़ि.) दोनों ही के ख़ुत्बों से नफ़ा पहुँचा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने लोगों को धमकाया क्योंकि उनमें कुछ मुनाफ़िक़ीन भी थे। इसलिये अल्लाह तआला ने इस तरह (ग़लत अफ़वाहें फैलाने से) उनको बाज़ रखा। (राजेअ: 1241)

3670. और बाद में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जो हक़ और हिदायत की बात थी वो लोगों को समझा दी और उनको बतला दिया जो उन पर लाज़िम था (या'नी इस्लाम पर कायम रहना) और वो ये आयत तिलावत करते हुए बाहर आए, मुहम्मद (ﷺ) एक रसूल हैं और उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं। अश्शाकिरीन तका (राजेअ: 1242)

तशरीह: हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इस अज़ीम ख़ुत्बा ने उम्मत के शीराज़े को मुंतशिर होने (बिखरने) से बचा लिया। अंसार ने जो दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ पेश की थी वो सहीह नहीं थी क्योंकि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रखी जा सकती। रिवायत में हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) के लिये हज़रत उमर (रज़ि.) की बद दुआ मज़कूर है। वही दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ लेकर आए थे। अल्लाह न करे इस पर अमल होता तो नतीजा बहुत ही बुरा होता। कहते हैं कि हज़रत उबादा उसके बाद शाम के मुल्क को चले गये और वहाँ आपका इतिहाल हुआ। इस हदीष से नसबे खलीफ़ा का वुजुब प्राबित हुआ क्योंकि सहाबा किराम (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की तज्हीज़ व तक्फ़ीन पर भी उसको मुक़दम रखा, सद्द अफ़सोस कि उम्मत ने जल्द ही इस फ़र्ज़ को फ़रामोश कर दिया। पहली ख़राबी ये पैदा हुई कि ख़िलाफ़त की जगह मलूकियत आ गई, फिर जब मुसलमानों ने क़त्तार आलम में क़दम रखा तो मुख़्तलिफ़ अक्वामे आलम से उनका साबिका पड़ा जिसे मुताप्पिर होकर वो इस फ़रीज़-ए-मिल्लत को भूल गए और इतिशार का शिकार हो गये। आज तो दौर ही दूसरा है अगरचे अब भी मुसलमानों की काफ़ी हुकूमतें दुनिया में कायम हैं मगर ख़िलाफ़ते राशिदा की झलक से अक़सर महरूम हैं। अल्लाह पाक इस पुरफ़ितन दौर में मुसलमानों को बाहमी इतिफ़ाक़ नसीब करे कि वो मुत्तहिदा तौर पर जमा होकर मिल्लते इस्लामिया की ख़िदमत कर सकें। आमीन।

3671. हमसे मुहम्मद बिन क़प्पीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान प्रौरी ने ख़बर दी, कहा हमसे जामेअ बिन अबी राशिद ने बयान किया, कहा हमसे अबू यअला ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन हनीफ़ा ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद (अली रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल सहाबी कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि अबूबक्र (रज़ि.) मैंने पूछा फिर कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि उसके बाद उमर (रज़ि.) हैं। मुझे इसका अंदेशा हुआ कि अब (फिर मैंने पूछा कि उसके बाद? तो कह देंगे कि उष्मान (रज़ि.)। इसलिये मैंने ख़ुद कहा, उसके बाद आप हैं? ये सुनकर बोले कि मैं तो

قَالَ: ((شَخْرَمَ بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: لِي الرَّبِّيُّ الْأَعْلَى (ثَلَاثًا) وَلَعَنَ الْخَدِيثَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: لَمَّا كَانَ مِنْ خُطْبَيْهِمَا مِنْ خُطْبَةٍ إِلَّا نَفَعَ اللَّهُ بِهَا، لَقَدْ عَرَفْتُ عَمْرُ النَّاسِ وَإِنْ لَيْسَ لَهُمْ لَيْفَالًا لَوْنُهُمُ اللَّهُ بِذَلِكَ)). (راجع: 1241)

3670- ((ثُمَّ لَقَدْ بَعَثَ أَبُو بَكْرٍ النَّاسَ الْهَدَى، وَعَرَفَهُمُ الْحَقُّ: الَّذِي عَلَيْهِمْ، وَخَرَجُوا بِهِ يَتْلُونَ: هُوَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ - إِلَى الشَّاكِرِينَ)). (راجع: 1242)

3671- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ: حَدَّثَنَا جَامِعُ بْنُ أَبِي رَاشِدٍ: حَدَّثَنَا أَبُو يَعْقَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَقِيقَةِ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي: أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَبُو بَكْرٍ، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ عُمَرُ. وَخَشِيتُ أَنْ يَقُولَ: عُثْمَانُ، قُلْتُ: ثُمَّ أَنْتَ؟ قَالَ: مَا أَنَا إِلَّا رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ.

सिर्फ़ आम मुसलमानों की जमाअत का एक शख्स हैं।

तशीह: हज़रत अली (रज़ि.) के इस क़ौल से उन लोगों ने दलील ली है जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल कहते हैं फिर उनके बाद हज़रत उमर (रज़ि.) को जैसे जुम्हूर अहले सुन्नत का क़ौल है। अब्दुर्रज़ाक़ मुहदिष्ठ फ़र्माते हैं कि हज़रत अली (रज़ि.) ने खुद शौख़ेन को अपने ऊपर फ़ज़ीलत दी है लिहाज़ा मैं भी फ़ज़ीलत देता हूँ वरना कभी फ़ज़ीलत न देता। दूसरी रिवायत में हज़रत अली (रज़ि.) से मन्कूल है कि जो कोई मुझको शौख़ेन के ऊपर फ़ज़ीलत दे मैं उसको मुफ़्तरी की हद लगाऊँगा। इससे उन सुन्नी हज़रात को सबक लेना चाहिये जो हज़रत अली (रज़ि.) की तफ़ज़ील के काइल हैं जबकि खुद हज़रत अली (रज़ि.) ही उनको मुफ़्तरी करार दे रहे हैं।

3672. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले जब हम मुक़ामे बैदा या मुक़ामे ज़ातुल जैश पर पहुँचे तो मेरा एक हार टूटकर गिर गया। इसलिये हुज़ुरे अकरम (ﷺ) उसकी तलाश के लिये वहाँ ठहर गये और सहाबा भी आपके साथ ठहरे लेकिन न उस जगह पर पानी था और न उनके साथ पानी था। लोग हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि आप मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या किया, हुज़ुरे अकरम (ﷺ) को यहीं रोक लिया है। इतने सहाबा आपके साथ हैं, न तो यहाँ पानी है और न लोग अपने साथ लिये (पानी) हुए हैं। उसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर आए। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त अपना सरे मुबारक मेरी रान पर रखे हुए सो रहे थे। वो कहने लगे, तुम्हारी वजह से आँहज़रत (ﷺ) को और सब लोगों को रुकना पड़ा। अब न यहाँ कहीं पानी है और न लोगों के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझ पर गुस्सा किया और जो कुछ अल्लाह को मंज़ूर था उन्होंने कहा और अपने हाथ से मेरी कोख में कचूके लगाने लगे। मैं ज़रूर तड़प उठती मगर आँहज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था। आँहज़रत (ﷺ) सोते रहे। जब सुबह हुई तो पानी नहीं था और उसी मौक़े पर अल्लाह तआला ने तयम्मूम का हुक्म नाज़िल फ़र्माया और सबने तयम्मूम किया, इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ आले अबूबक्र (रज़ि.) तुम्हारी कोई पहली

۳۶۷۲- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((عَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَصْفَارِهِ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالنِّدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَنَّةِ - انْقَطَعَ عَقْدِي لِي، فَأَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى الْيَمَامَةِ، وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ، وَلَيَسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَأَتَى النَّاسُ أَبَا نَكْرٍ فَقَالُوا: أَلَا تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ؟ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ مَعَهُ، وَلَيَسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَجَاءَ أَبُو نَكْرٍ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَاصْبَغَ رَأْسَهُ عَلَى فُحْدِي قَدْ نَامَ، فَقَالَ: حَسْبَتْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَالنَّاسُ، وَلَيَسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. قَالَتْ: فَعَاتَبَنِي وَقَالَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُولَ، وَجَعَلَ يَطْعَنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي فَلَا يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلَّا مَكَانَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلَى فُحْدِي، فَنَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَتَّى أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ آيَةَ النِّمْمِ ﴿فَيَمْمُوا﴾ [النساء: ۴۳]، فَقَالَ أَسِيدُ بْنُ الْحَضَرِ

बरकत नहीं है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने उस ऊँट को उठाया जिस पर मैं सवार थी तो हार उसी के नीचे हमें मिला। (राजेअ: 334)

مَا مِ بَاوِلَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَبِي بَكْرٍ :
فَقَالَ غَابِطَةُ : فَبَغْتَا الْبَيْتَ الَّذِي كُنْتَ
عَلَيْهِ فَوَجَدْنَا الْبَيْتَ تَحْتَهُ).

[راجع: ٣٣٤]

तशरीह: गुम होने वाला हार हज़रत अस्मा (रज़ि.) का था, इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) को और भी ज्यादा फ़िक्र हुआ, बाद में अल्लाह तआला ने उसे मिला दिया। हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) के कौल का मतलब ये है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की औलाद की वजह से मुसलमानों को हमेशा फ़वाइद व बरकात मिलते रहे हैं। ये हदीष किताबुत तयम्मूम में भी मज़कूर हो चुकी है। यहाँ पर उसके लाने से ये गर्ज़ है कि इस हदीष से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ख़ानदान की फ़ज़ीलत प्राबित होती है। उसैद (रज़ि.) ने कहा। **मा हिया बिअव्वलि बर्कतिकुम या आल अबीबक्र.**

3673. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा मैंने ज़क्वान से सुना और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे अज़्हाब को बुरा भला मत कहो। अगर कोई शाख़्स उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना (अल्लाह की राह में) खर्च कर डाले तो उनके एक मुद अनाज के बराबर भी नहीं हो सकता और न उनके आधे मुद के बराबर। शुअबा के साथ इस हदीष को जरीर, अब्दुल्लाह बिन दाऊद, अबू मुआविया और मुहाज़िर ने भी आ'मश से रिवायत किया है।

٣٦٧٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا
شُعْبَةُ بْنُ الْأَعْمَشِ قَالَ : سَمِعْتُ ذَكَوَانَ
يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((لَا تَسُبُّوا
أَصْحَابِي، فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ
ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفَهُ)).
ثَابِتُ بْنُ جُرَيْجٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدَ وَأَبُو
مُغَاوِيَةَ وَمُحَاطَبٌ عَنْ الْأَعْمَشِ.

तशरीह: इससे आम तौर पर सहाबा किराम (रज़ि.) की फ़ज़ीलत प्राबित होती है ये वो बुजुर्गाने इस्लाम हैं। जिनको दीदारे रिसालत पनाह (ﷺ) नज़ीब हुआ। इसलिये उनकी अल्लाह के नज़दीक बड़ी अहमियत है। जरीर (रह.) की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और मुहाज़िर की रिवायत को अबुल फ़तह ने अपने फ़वाइद में और अब्दुल्लाह बिन दाऊद की रिवायत को मुसद्द ने और अबू मुआविया की रिवायत को इमाम अहमद ने वस्ल किया है। ख़िदमते इस्लाम में सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अन्हुम अज्मईन की माली कुर्बानियों को इसलिये फ़ज़ीलत हासिल है कि उन्होंने ऐसे वक़्त में खर्च किया जब सख़्त ज़रूरत थी, काफ़िरों का ग़ल्बा था और मुसलमान मुहताज थे। मक्सूद मुहाज़िरीने अव्वलीन और असार की फ़ज़ीलत बयान करना है। उनमें अबूबक्र (रज़ि.) भी थे, लिहाज़ा बाब की मुताबक़त हासिल हो गई। ये हदीष आपने उस वक़्त फ़र्माई जब ख़ालिद बिन वलीद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) में कुछ तकरार हुई। ख़ालिद ने अब्दुर्रहमान को कुछ सख़्त कहा आपने ख़ालिद (रज़ि.) को मुखातब करके ये फ़र्माया। कुछ ने कहा कि ये ख़िताब उन लोगों की तरफ़ है जो सहाबा के बाद पैदा होंगे। उनकी मौजूदा फ़र्ज़ करके उनकी तरफ़ ख़िताब किया। मगर ये कौल सहीह नहीं है क्योंकि ख़ालिद (रज़ि.) की तरफ़ ख़िताब करके आपने ये हदीष फ़र्माई थी और ख़ालिद (रज़ि.) खुद सहाबा में से हैं।

3674. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हस्सान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे शुरैक बिन अबी नमर ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, कहा मुझको अबू मूसा अशअरी

٣٦٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ أَبُو
الْحَسَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانٍ حَدَّثَنَا
سُلَيْمَانُ عَنْ شُرَيْكٍ بْنِ أَبِي نَمِرٍ عَنْ

(रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने एक दिन अपने घर में वुजू किया और इस इरादे से निकले कि आज दिन भर रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ न छोड़ूंगा। उन्होंने बयान किया कि फिर वो मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए और आँहज़रत (ﷺ) के बारे में पूछा तो वहाँ मौजूद लोगों ने बताया कि हुज़ूर (ﷺ) तो तशरीफ़ ले जा चुके हैं और आप उस तरफ़ तशरीफ़ ले गये हैं। चुनाँचे मैं आपके बारे में पूछता हुआ आपके पीछे पीछे निकला और आखिर मैंने देखा कि आप (कुबा के क़रीब) बीरे अरीस में दाख़िल हो रहे हैं। मैं दरवाज़े पर बैठ गया और उसका दरवाज़ा ख़जूर की शाखों से बना हुआ था। जब आप क़ज़ा-ए-हाज़त कर चुके और वुजू भी कर लिया तो मैं आपके पास गया। मैंने देखा कि आप बीरे अरीस (उस बाग़ के कुँए) की मुँडेर पर बैठे हुए हैं, अपनी पिण्डलियाँ आपने खोल रखी हैं और कुँए में पाँव लटकाए हुए हैं। मैंने आपको सलाम किया और फिर वापस आकर बाग़ के दरवाज़े पर बैठ गया। मैंने सोचा कि आज रसूलुल्लाह (ﷺ) का दरबान रहूँगा। फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और दरवाज़ा खोलना चाहा तो मैंने पूछा कि कौन साहब हैं? उन्होंने कहा कि अबूबक्र! मैंने कहा थोड़ी देर ठहर जाइये। फिर मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि अबूबक्र (रज़ि.) दरवाज़े पर मौजूद हैं और अंदर आने की इजाज़त आपसे चाहते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की बशारत भी। मैं दरवाज़े पर आया और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि अंदर तशरीफ़ ले जाइये और रसूले करीम (ﷺ) ने आपको जन्नत की बशारत दी है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर दाख़िल हुए और उसी कुँए की मेंढ़ पर आँहज़रत (ﷺ) की दाहिनी तरफ़ बैठ गये और अपने दोनों पाँव कुँए में लटका लिये, जिस तरह आँहज़रत (ﷺ) लटकाए हुए थे और अपनी पिण्डलियों को भी खोल लिया था। फिर मैं वापस आकर अपनी जगह पर बैठ गया। मैं आते वक़्त अपने भाई को वुजू करता हुआ छोड़ आया था। वो मेरे साथ आने वाले थे, मैंने अपने दिल में कहा, काश! अल्लाह तआला फ़लों को ख़बर दे देता, उनकी मुराद अपने भाई से थी और उन्हें यहाँ पहुँचा देता। इतने मैं किसी

سَيِّدِي نَبِي الْمَسْتَبِي قَالَ: ((اخْبَرَنِي أَبُو مُوسَى الْأَشْعَرِيُّ أَنَّهُ تَوَضَّأَ فِي بَيْتِهِ ثُمَّ خَرَجَ فَقُلْتُ: لِلرَّيْضِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا تُكُونَنَّ مَعَهُ نَوْمِي هَذَا. فَجَاءَ الْمَسْجِدَ فَسَأَلَ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: خَرَجَ وَوَجْهُهُ هَا هُنَا، فَخَرَجْتُ عَلَى إِثَرِهِ اسْتَأْنَسْتُ حَتَّى دَخَلْتُ بَيْتَ أَبِي رَيْسٍ، فَجَلَسْتُ عِنْدَ الْبَابِ - وَبَيْنَهَا مِنْ جَرِيدٍ - حَتَّى قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجَتَهُ قَرَضًا، فَقُمْتُ إِلَيْهِ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ عَلَى بَيْتِ أَبِي رَيْسٍ وَتَوَسَّطَ قَفْهَا وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ وَذَلَّاهُمَا فِي الْبُيْرِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ انصَرَفْتُ فَجَلَسْتُ عِنْدَ الْبَابِ فَقُلْتُ: لَا تُكُونَنَّ بَوَّابَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْيَوْمَ، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَدَفَعَ الْبَابَ، فَقُلْتُ مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: أَبُو بَكْرٍ. فَقُلْتُ: عَلَى رِسْلِكَ، ثُمَّ ذَهَبْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ هَذَا أَبُو بَكْرٍ يَسْتَأْذِنُ، فَقَالَ: ((اِنَّكَ لَأَنْتَ وَبَشْرُهُ بِالْجَنَّةِ)). فَأَقْبَلْتُ حَتَّى قُلْتُ لِأَبِي بَكْرٍ: ادْخُلْ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَشْرُكَ بِالْجَنَّةِ. فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَجَلَسَ عَنْ يَمِينِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مَعَهُ فِي الْقَفِّ وَذَلَّى رِجْلَيْهِ فِي الْبُيْرِ كَمَا صَنَعَ النَّبِيُّ ﷺ وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ. ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ وَقَدْ تَوَكَّتُ أَخِي يَتَوَضَّأُ وَيَلْحَقْنِي، فَقُلْتُ: إِنْ يَرُدُّ اللَّهُ بَقْلَانِ خَيْرًا - يُرِيدُ أَحَاةً - يَأْتِي بِهِ. فَإِذَا

साहब ने दरवाजे पर दस्तक दी, मैंने पूछा कौन साहब हैं? कहा कि इमर बिन खज़ाब (रज़ि.)। मैंने कहा कि थोड़ी देर के लिये ठहर जाइए। चुनौचे मैं आप (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और मलाम के बाद अर्ज किया कि इमर बिन खज़ाब (रज़ि.) दरवाजे पर खड़े अंदर आने की इजाज़त चाहते हैं। आपने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की बशारत भी पहुँचा दो। मैं वापस आया और कहा कि अंदर तशरीफ़ ले जाइए और आपको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जन्नत की बशारत दी है। वो भी दाखिल हुए और आपके साथ उसी मेंढ पर बाई तरफ़ बैठ गये और अपने पाँव कुँए में लटकालिये। मैं फिर दरवाजे पर आकर बैठ गया और सोचता रहा कि काश अल्लाह तआला फ़लाँ (आपके भाई) के साथ ख़ैर चाहता और उन्हें यहाँ पहुँचा देता। इतने में एक और साहब आए और दरवाजे पर दस्तक दी, मैंने पूछा, कौन साहब हैं? बोले कि इम्रान बिन अफ़फ़ान। मैंने कहा थोड़ी देर के लिये रुक जाइए, मैं आपके पास आया और आपको उनकी ख़बर दी। आपने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और एक मुस्लीबत पर जो उन्हें पहुँचेगी जन्नत की बशारत दे दो। मैं दरवाजे पर आया और उनसे कहा कि अंदर तशरीफ़ ले जाइये। हुज़ुरे अकरम (ﷺ) ने आपको जन्नत की बशारत दी है एक मुस्लीबत पर जो आपको पहुँचेगी। वो जब दाखिल हुए तो देखा खबूतरे पर जगह नहीं है इसलिये वो दूसरी तरफ़ आँहज़रत (ﷺ) के सामने बैठ गये। शुरैक ने बयान किया कि सईद बिन मुसय्यिब ने कहा मैंने उससे उनकी क़ब्रों की तावील ली है (कि इसी तरह बनेंगी)।

(दीगर मक़ाम : 3639, 3690, 6216, 7092, 7262)

إِنْسَانٌ يُحْرَلُ الْبَابَ. فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، فَقُلْتُ عَلَى رِسْلِكَ ثُمَّ جِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقُلْتُ: هَذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسْأَلُكَ. فَقَالَ: ((الَّذِينَ لَهُمْ أَثَرٌ فِي الْجَنَّةِ)) لَجِئْتُ فَقُلْتُ: ادْخُلْ وَتَبَشِّرْكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْجَنَّةِ. فَدَخَلَ فَجَلَسَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَى الْكُفِّ عَنْ يَسَارِهِ وَذَلِي رِجْلَيْهِ فِي الْبُغْرِ. ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ فَقُلْتُ: إِنْ يُرِيدُ اللَّهُ بِفُلَانٍ عَمَلًا يَأْتِي بِهِ. فَجَاءَ إِنْسَانٌ يُحْرَلُ الْبَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: عُفْمَانُ بْنُ عُفَانَ. فَقُلْتُ: عَلَى رِسْلِكَ. فَجِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((الَّذِينَ لَهُمْ أَثَرٌ فِي الْجَنَّةِ)) بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيبُهُ، فَجِئْتُ فَقُلْتُ لَهُ: ادْخُلْ، وَتَبَشِّرْكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيبُكَ. فَدَخَلَ فَوَجَدَ الْكُفَّ فُلْذَمِيًّا، فَجَلَسَ وَجَافَهُ مِنَ الشَّقِّ الْأَخْرِ. قَالَ: شَرِيكَ قَالَ: مَعِيذُ بْنُ الْمُسَيَّبِ: فَأَوْتَتْهَا قُبُورُهُمْ)).

[أطرافه في : 3693, 3695, 3696]

[7092, 7262]

ये सईद बिन मुसय्यिब की कमाल दानाई थी हक़ीक़त में ऐसा ही हुआ। हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) तो आँहज़रत (ﷺ) के पास दफ़न हुए और हज़रत इम्रान (रज़ि.) आपके सामने बक़ीअ गरक़द में। सईद का मतलब ये नहीं है कि अबूबक्र और उमर (रज़ि.) आपके दाएँ-बाएँ दफ़न होंगे क्योंकि ऐसा नहीं है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की क़ब्र आँहज़रत के बाई तरफ़ है। आँहज़रत (ﷺ) की उन मुबारक निशानियों की बिना पर मुता'ल्लिक़ा तमाम हज़राते सहाब-ए-किराम (रज़ि.) का जन्नती होना यकीनी अम्र है। फिर भी उम्मत में एक ऐसा गिरोह मौजूद है जो हज़राते शैख़ने किराम की तौहीन करता है। उस गिरोह से इस्लाम को जो नुक़सान पहुँचा है वो तारीख़े माज़ी के औराक़ (अतीत के पत्रों) पर मुलाहिज़ा किया जा सकता है। हज़रत इम्रान ग़नी (रज़ि.) की बाबत आपने उनकी शहादत की तरफ़ इशारा फ़र्माया जो अल्लाह के यहाँ मुक़द्दर थी और वो वक़्त आया कि

खुद इस्लाम के फ़रज़न्दों ने हज़रत उस्मान (रज़ि.) जैसे जलीलुल क़द्र ख़लीफ़-ए-राशिद के खिलाफ़ बगावत का झण्डा बुलन्द किया, आखिर उनको शहीद करके दम लिया। 1390 हिजरी के हज के मौके पर बक्रीअे गरक़द मदीना में जब हज़रत उस्मान की क़ब्र पर हाज़िर हुआ तो देर तक माज़ी के तसव्वुरात में खोया हुआ आपकी जलालते शान और मिल्लत के कुछ लोगों की ग़द्दारी पर सोचता रहा। अल्लाह पाक इन तमाम बुजुर्गों को हमारा सलाम पहुँचाए और क़यामत के दिन सबसे मुलाक़ात नसीब करे आमीन। मज़क़ूर अरीस मदीना के एक मशहूर बाग़ का नाम था। उस बाग़ के कुँए में आँहज़रत (ﷺ) की अंगूठी जो हज़रत उस्मान (रज़ि.) की उँगली में थी। गिर गई थी जो बहुत तलाश करने के बावजूद न मिल सकी। आजकल ये कुँआ मस्जिदे कुबा के पास खण्डहर की शक्ल में खुशक मौजूद है। उसी जगह ये बाग़ वाक़ेअ था।

3675. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ), अबूबक्र, उमर और उस्मान (रज़ि.) को साथ लेकर उहुद पहाड़ पर चढ़े तो उहुद कांप उठा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उहुद! क़रार पकड़कर कि तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(दीगर मक़ाम : 3686, 3699)

आँहज़रत (ﷺ) की ये मुअजिज़ाना पेशीनगोई थी जो अपने वक़्त पर पूरी हुई और हज़रत उमर और हज़रत उस्मान (रज़ि.) दोनों ने जामे शहादत नोश फ़र्माया। मज़सूद इससे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की फ़ज़ीलत बयान करना है। उहुद पहाड़ का कांप उठना बरहक़ है जो रसूले करीम (ﷺ) के एक मुअजज़ा के तौर पर जुहूर में आया। इससे ये भी ज़ाहिर है कि कुदरत की हर-हर मख़लूक अपनी हृद के अंदर शज़रे ज़िन्दगी रखती है। सच है व इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही (बनी इस्राईल : 44)

3676. मुझसे अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमसे सख़र ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं एक कुँए पर (ख़बाब में) खड़ा उससे पानी खींच रहा था कि मेरे पास अबूबक्र और उमर (रज़ि.) भी पहुँच गये। फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने डोल ले लिया और एक या दो डोल खींचे। उनके खींचने में जुअफ़ था और अल्लाह तआला उनकी मग़्फ़िरत करेगा। फिर अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ से डोल उमर (रज़ि.) ने ले लिया और उनके हाथ में पहुँचते ही वो एक बहुत बड़े डोल की शक्ल में हो गया। मैंने कोई हिम्मत वाला और बहादुर इंसान नहीं देखा जो इतनी हुस्ने तदबीर और मज़बूत कुव्वत के साथ काम करने का आदी हो। चुनौचे उन्होंने इतना पानी खींचा कि लोगों ने ऊँटों को

۳۶۷۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَبَدَ أَخْذًا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَغُفْثَانُ، فَوَجَفَ بِهِمْ، فَقَالَ: ((أَبَتْ أَخْذًا، فَإِنْ عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ)).

[طرفاء ي : ۳۶۸۶، ۳۶۹۹]

۳۶۷۶- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا صَخْرٌ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((يُنْزَا أَنَا عَلَى بَنِي أَلَزْغُ مِنْهَا جَاءَنِي أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ الدَّلْوَ فَنَزَعَ دَنُونًا أَوْ دَنُونَيْنِ، وَلَمْ يَزَعْهُ ضَعْفٌ، وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ. ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ الْحَطَّابِ مِنْ يَدِ أَبِي بَكْرٍ فَاسْتَحَالَتْ فِي يَدِهِ عَرَبًا، فَلَمْ أَرِ عَبْرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَفْرِي فَرِيَةً، فَنَزَعَ حَتَّى

पानी पिलाने की जगहें भर लीं। वहब ने बयान किया कि, अल अतन ऊंटों के बैठने की जगह को कहते हैं। अरब लोग बोलते हैं ऊंट सैराब हुए कि (वहीं) बैठ गये। (राजेअ: 3634)

مَرْبِ النَّاسِ بِعَطْنٍ)). قَالَ وَهَبُ: الْعَطْنُ مَرْكُ الْإِبِلِ، يَقُولُ: حَتَّى رَوَيْتَ الْإِبِلَ فَأَنَاحَتْ. [راجع: 3634]

ये हदीष पहले भी गुजर चुकी है और हज़रत सिद्दीक (रज़ि.) की ये नातवानी कोई ऐब नहीं है जो उनके लिये खल्लकी थी। इस नातवानी के बावजूद डोल उन्होंने पहले सम्भाला, इसी से हज़रत उमर (रज़ि.) पर उनकी फ़ौकियत प्रामित हुई।

3677. हमसे वलीद बिन मालेह ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनस ने बयान किया, कहा हमसे उमर बिन सईद बिन अबिल हुसैन मक्की ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उन लोगों के साथ खड़ा था जो उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) के लिये दुआएँ कर रहे थे। उस वक़्त उनका जनाज़ा चारपाई पर रखा हुआ था, इतने में एक साहब ने मेरे पीछे से आकर मेरे शानों पर अपनी कोहनियाँ रख दीं और (उमर रज़ि. को मुख़ातब करके) कहने लगे कि अल्लाह पाक आप पर रहम करे। मुझे तो यही उम्मीद थी कि अल्लाह तआला आपको आपके दोनों साथियों (रसूलुल्लाह ﷺ और अबूबक्र रज़ि.) के साथ (दफ़न) कराएगा। मैं अक़्बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को यै फ़र्माते सुना करता था कि मैं और अबूबक्र और उमर थे, मैंने और अबूबक्र और उमर ने ये काम किया, मैं और अबूबक्र और उमर गये। इसलिये मुझे यही उम्मीद थी कि अल्लाह तआला आपको उन ही दोनों बुजुर्गों के साथ रखेगा। मैंने जो मुड़कर देखा तो वो हज़रत अली (रज़ि.) थे। (दीगर मक़ाम: 3685)

3677- حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِي الْحُسَيْنِ الْمَكِّيِّ عَنْ ابْنِ أَبِي مَلِيكَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((إِنِّي لَوَاقِفٌ فِي يَوْمٍ فَدَعَرْنَا اللَّهَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ - وَقَدْ وَضِعَ عَلَى مَرْبَرِهِ - إِذَا رَجَلَ مِنْ خَلْفِي قَدْ وَضَعَ مِرْقَهُ عَلَى مَنْكِبِي يَقُولُ: رَحِمَكَ اللَّهُ، إِنْ كُنْتُ لَأَرْجُو أَنْ يَجْعَلَكَ اللَّهُ مَعَ صَاحِبَيْكَ، لِأَنِّي كَثِيرًا مَا كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُنْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَلَعَلْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَأَنْطَلَقْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَإِنْ كُنْتُ لَأَرْجُو أَنْ يَجْعَلَكَ اللَّهُ مَعَهُمَا. فَأَنْفَتُ فَبَإِذَا هُوَ عَلَيَّ مِنْ أَبِي طَالِبٍ)).

[طبره 1: 3685]

तशरीह: सुब्हानल्लाह ये चारों खलीफ़ा एक दिल और एक जान थे और एक-दूसरे के ख़ैर-ख़्वाह और पना ख़्वाँ थे और जिसने ये गुमान किया कि ये आपस में एक दूसरे के मुख़ालिफ़ और बदख़्वाह थे वो मर्द मर्दूद खुद बद बात़िन और मुनाफ़ि़क़ है। अल्मर्बु य़कीसु अला नफ़िसही का मिस्दाक़ है। सच है,

चे निस्बत खाक रा बआलमे पाक

कुजा ईसा कुजा दज्जाल नापाक

हाफ़िज़ ने कहा कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) सिल का शिकार हुए, वाक़दी ने कहा कि उन्होंने सर्दी में गुस्त किया था, पन्द्रह दिन तक बुखार हुआ। कुछ ने कहा कि यहूदियों ने उनको ज़हर दे दिया था। 13 बमाहे जमादिल आख़िर उन्होंने इंतिक़ाल फ़र्माया, उनकी ख़िलाफ़त दो बरस तीन माह और चन्द दिन रही। आँहज़रत (ﷺ) की तरह उनकी उम्र भी इंतिक़ाल के वक़्त 63 साल की थी। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु व हशरनल्लाहु फ़ी खुदामिही।

3678. मुझसे मुहम्मद बिन यज़ीद कूफी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने, उनसे यज़्ना बिन अबी क़बीर ने, उनसे मुहम्मद बिन इब्नाहीम ने और उनसे इब्ना बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से मुश्रिकीने मक्का की सबसे बड़ी ज़ालिमाना हरकत के बारे में पूछा जो उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ की थी तो उन्होंने बतलाया कि मैंने देखा कि इब्ना बिन अबी मुईज़ और हज़रत (ﷺ) के पास आया। आप उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे, उस बदबख़्त ने अपनी चादर आपकी गर्दन मुबारक में डालकर खींची जिससे आपका गला बड़ी सख़्ती के साथ फंस गया। इतने में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और उस बदबख़्त को दूर किया और कहा क्या तुम एक ऐसे शख्स को क़त्ल करना चाहते हो जो ये कहता कि मेरा परवरदिगार अल्लाह तआला है और वो तुम्हारे पास अपने परवरदिगार की तरफ़ से खुली हुई दलीलें भी लेकर आया है।

(दीगर मक़ाम: 3856, 4815)

۳۶۷۸- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الْكُوفِيُّ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ الْأَزْهَرِيِّ عَنْ أَبِي كَبِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ خُرُوفَةَ بْنِ الرَّثَمِ قَالَ: سَأَلْتُ عَنْهُ اللَّهُ بْنُ خُرُوفَةَ عَنْ أَحَدٍ مِمَّا صَنَعَ الْمُشْرِكُونَ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، لَأَن «رَأَيْتُ ظُفَّةَ بْنَ أَبِي مُعَيْطٍ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يُصَلِّي، فَوَضَعَ رِجْلَهُ فِي حَبِيْبِهِ فَسَقَطَ بِهِ خَتَمًا شَدِيدًا، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى دَفَعَهُ عَنْهُ فَقَالَ: «اتَّقُوا رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّي اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ» [غالب: ۲۸].

[طرفاء: ۳۸۵۶، ۴۸۱۵].

इन तमाम अह्दादीष के नक़ल करने से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के मनाकिब बयान करना मक़सूद है।

बाब 6 : हज़रत अबू हफ़्स इमर बिन ख़त्ताब कुरशी अदवी (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

۶- بَابُ مَنَاقِبِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ أَبِي حَفْصٍ الْقُرَشِيِّ الْعَدَوِيِّ

तशीह: हज़रत इमर (रज़ि.) का नसबनामा ये है इमर बिन ख़त्ताब बिन नुफ़ैल बिन अब्दुल इब्ना बिन रबाह बिन अब्दुल्लाह बिन कुत़्ब बिन ज़राह बिन अदी बिन कअब बिन लोय बिन ग़ालिब। तो वो कअब में आहज़रत (ﷺ) के नसब से मिल जाते हैं, उनका लक़ब फ़ारूक़ था जो आहज़रत (ﷺ) ने दिया था, कुछ ने कहा हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ये लक़ब लेकर आए थे। गर्ज़ अदालत और इल्म, सियासते मुदुन और हुस्ने तदबीर और इतिज़ामे मुल्की में अपना नज़ीर नहीं रखते थे। उनकी सीरते तय्यिबा पर दुनिया की बेशतर जुबानों में तवील और मुख़्तसर काफ़ी किताबें लिखी गई हैं। उनके मनाकिब के बारे में यहाँ जो कुछ मज़कूर है वो मुश्ते नमूना अज़ ख़रवारे है।

3679. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ माजिशून ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया और उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं (ख़वाब में) जन्नत में दाख़िल हुआ तो वहाँ मैंने अबू तलहा (रज़ि.) की बीवी रुमैसा को देखा और मैंने क़दमों की आवाज़ सुनी तो मैंने पूछा, ये कौन साहब हैं? बताया गया कि ये

۳۶۷۹- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِهَالٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمَاجِشُونِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّبِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «رَأَيْتُي دَخَلْتُ الْجَنَّةَ، فَإِذَا أَنَا بِالرُّمَيْصَاءِ امْرَأَةِ أَبِي تَلْحَةَ، وَسَمِعْتُ خَشْفَةَ قُلْتُ مَنْ

बिलाल (रज़ि.) हैं और मैंने एक महल देखा उसके सामने एक औरत थी, मैंने पूछा ये किसका महल है? तो बताया कि ये उमर (रज़ि.) का है। मेरे दिल में आया कि अंदर दाखिल होकर उसे देखूँ, लेकिन मुझे उमर की गैरत याद आई (और इसलिये अंदर दाखिल नहीं हुआ) इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने रोते हुए कहा मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं आपसे गैरत करूँगा। (दीगर मक़ाम: 5226, 7024)

मज़क़ूर ख़ातून रुमैज़ा नामी हज़रत अनस (रज़ि.) की बालिदा हैं। ये लफ़्ज़ रमस से है। रमस आँख के मैल को कहते हैं, उनकी आँखों में मैल रहता था, इसलिये वो इस लक़ब से मशहूर थीं।

3680. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको लैस ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं सोचा हुआ था कि मैंने ख़्वाब में जन्नत देखी, मैंने देखा कि एक औरत एक महल के किनारे वुजू कर रही है। मैंने पूछा ये महल किसका है? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि उमर (रज़ि.) का। फिर मुझे उनकी गैरत व हमिय्यत याद आई और मैं वहीं से लौट आया। इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) रो दिये और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं आप पर गैरत करूँगा? (राजेअ: 3242)

3681. मुझसे अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन सल्ल कूफ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनस ने, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझको हम्ज़ा ने ख़बर दी और उन्हें उनके बालिद (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि.) ने किरसूलल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने ख़्वाब में दूध पिया, इतना कि मैं दूध की ताज़गी देखने लगा जो मेरे नाखुन या नाखुनों पर बह रही है। फिर मैंने प्याला उमर (रज़ि.) को दे दिया, सहाबा ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस ख़्वाब की ता'बीर क्या है? आपने फ़र्माया कि इसकी ता'बीर इल्म है।

(राजेअ: 82)

هَذَا؟ فَقَالَ: هَذَا بِلَالٍ. وَرَأَيْتُ قَصْرًا بِقَنْتَاهِ جَارِيَةً فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا؟ فَقَالَ لِعُمَرَ. فَأَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَهُ فَأَنْظُرَ إِلَيْهِ، فَلَذَكَّرْتُ غَيْرَتَكَ. فَقَالَ عُمَرُ: يَا أَبَايَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ. أَعَلَيْكَ أَغَارٌ؟

[طرفاه بی: ۵۲۲۶، ۷۰۲۴]

۳۶۸۰- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِذْ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ، فَإِذَا امْرَأَةٌ تَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ قَالُوا: لِعُمَرَ، فَلَذَكَّرْتُ غَيْرَتَهُ فَوَلَّيْتُ مُذْبِرًا. فَبَكَى عُمَرُ وَقَالَ: أَعَلَيْكَ أَغَارٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟)). [راجع: ۳۲۴۲]

۳۶۸۱- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ أَبُو جَعْفَرٍ الْكُوفِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَمْرَةُ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ شَرِبْتُ - يَعْنِي اللَّبَنَ - حَتَّى أَنْظُرَ إِلَى الرَّيِّ يَجْرِي فِي ظَفْرِي - أَوْ فِي أَظْفَارِي - ثُمَّ نَأَوْتُ عُمَرَ. قَالُوا: فَمَا أَوْلَتْهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: الْعِلْمُ)). [راجع: ۸۲]

3682. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बिशर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबूबक्र बिन सालिम ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं एक कुँए से एक अच्छा बड़ा डोल खींच रहा हूँ, जिस पर चरख लकड़ी का लगा हुआ है। लकड़ी का चरख। फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और उन्होंने भी एक या दो डोल खींचे मगर कमज़ोरी के साथ और अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत करे। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) आए और उनके हाथ में वो डोल एक बहुत बड़े डोल की शक्ल इख़्तियार कर गया। मैंने उन जैसा मज़बूत और बा अज़मत शख्स नहीं देखा जो इतनी मज़बूती के साथ काम कर सकता हो। उन्होंने इतना खींचा कि लोग सैराब हो गये और अपने कैंटों को पिलाकर उनके ठिकानों पर ले गये। इब्ने जुबैर ने कहा कि अब्बक्रिय्यु का मा'नी इम्दह और ज़राबी और अब्बक्रिय्यु सरदार को भी कहते हैं (हदीष में अब्बक्रिय्यु से यही मुराद है) यहा बिन ज़ियाद फ़रय ने कहा, ज़राबिय्य उन बिछौनों को कहते हैं जिनके हाशिये बारीक, फैले हुए बहुत क़रत से होते हैं। (राजेअ: 3634)

ये तर्जुमा इस सूत में है जब हदीष में लफ़्ज़ बकरह फ़तह बा और काफ़ हो या'नी वो गोल लकड़ी जिससे डोल लटका देते हैं, अगर बकरह सुकूने काफ़ हो तो तर्जुमा यूँ होगा, वो डोल जिससे ज़वान कैंटनी को दूध पिलाते हैं।

3683. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिदने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको अब्दुल हमीद बिन अब्दुरहमान ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन सअद बिन अबी वक्रास ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद (हज़रत सअद बिन अबी वक्रास रज़ि) ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे अब्दुल अजीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल हमीद बिन अब्दुरहमान बिन ज़ैद ने, उनसे मुहम्मद बिन सअद बिन अबी वक्रास ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अंदर आने की इज़ाज़त चाही। उस

٣٦٨٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَرٍ حَدَّثَنَا غَيْثُ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((أَرَيْتَ لِي الْمَنَامَ أَنِّي أَنْزَعُ بِذَلْوٍ بَكْرَةً عَلَى قَلْبِي، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ نَزْعًا ضَعِيفًا وَاللَّهُ يَغْفِرُ لَهُ. ثُمَّ جَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَامْتَحَلَتْ غَرَّتَا، فَلَمْ أَوْعَقِرْهُمَا يَفْرِي فَرِيَهُ، حَتَّى رَوَى النَّاسُ وَضَرَبُوا بِعَطْفٍ)). قَالَ ابْنُ جَبْرِ: الْغَتَقِيُّ عِنَاقُ الزَّرَابِيِّ. وَقَالَ يَحْيَى: الزَّرَابِيُّ الطَّلَاسُ لَهَا خَمْلٌ رَلِقٌ. مَثَلُهُ: كَثِيرَةٌ.

[راجع: ٣٦٣٤]

٣٦٨٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْحَمِيدُ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ سَعْدٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَاهُ قَالَ قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِي وَقَاصٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: اسْتَأْذَنَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَلَى

वक्त आपके पास कुरैश की चन्द औरतें (उम्माहातुल मोमिनीन में से) बैठी बातें कर रही थीं और आपकी आवाज़ से भी बुलन्द आवाज़ के साथ आपसे नान नफ़का में ज़्यादाती की दसख्वास्त कर रही थीं, ज्यों ही हज़रत उमर (रज़ि.) ने इजाज़त चाही तो वो तमाम खड़ी होकर पर्दे के पीछे जल्दी से भाग खड़ी हुई। आखिर आँहज़रत (ﷺ) ने इजाज़त दी और वो दाखिल हुए तो आँहज़रत (ﷺ) मुस्कुरा रहे थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला आपको हमेशा खुश रखे। आपने फ़र्माया, मुझे उन औरतों पर हंसी आ रही है जो अभी मेरे पास बैठी हुई थीं लेकिन तुम्हारी आवाज़ सुनते ही सब पर्दे के पीछे भाग गईं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! डरना तो उन्हें आपसे चाहिये था। फिर उन्होंने (औरतों से) कहा ऐ अपनी जानों की दुश्मनों! तुम मुझसे तो डरती हो और हुजूर अकरम (ﷺ) से नहीं डरतीं। औरतों ने कहा कि हाँ, आप ठीक कहते हैं। हुजूर अकरम (ﷺ) के मुकाबले में आप कहीं ज़्यादा सख़्त हैं। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने खत्ताब! उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर कभी शैतान तुमको किसी रास्ते पर चलता देख लेता तो उसे छोड़कर वो किसी दूसरे रास्ते पर चल पड़ता। (राजेअ: 3294)

आपने दुआ फ़र्माई थी या अल्लाह! इस्लाम को उमर या फिर अबू जहल के इस्लाम से इज़्जत अता कर। अल्लाह ने हज़रत उमर (रज़ि.) के हक़ में आपकी दुआ कुबूल फ़र्माई। जिनके मुसलमान होने पर मुसलमान का 'बा' में ए' लानिया नमाज़ पढ़ने लगे और तब्लीगी इस्लाम के लिये रास्ता खुल गया, उनके इस्लाम लाने का वाक़िया मशहूर है।

3584. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे क्रैस ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम लाने के बाद फिर हमें हमेशा इज़्जत हासिल रही। (दीगर मक़ाम: 3863)

3685. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमसे उमर बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) को कहते सुना कि जब उमर (रज़ि.) को (शहादत के बाद) उनके बिस्तर पर रखा

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَعِنْدَهُ نِسْوَةٌ مِّنْ قُرَيْشٍ يَّكَلِّمُهُ وَيَسْتَكْبِرُتُهُ. غَايَةً أَصَوَاتُهُنَّ عَلَى صَوْبِهِ فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَمَنْ قَبِادُونَ الْحِجَابِ، فَأَذِنَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَدَخَلَ عُمَرُ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَضْحَكُ، فَقَالَ عُمَرُ: أَضْحَكَكَ اللَّهُ مِنْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((عَجِبْتُ مِنْ هَؤُلَاءِ اللَّاحِي كُنَّ عِنْدِي، فَلَمَّا سَمِعْنَ صَوْتَكَ ابْتَدَرْنَ الْحِجَابَ))، فَقَالَ عُمَرُ: فَأَلْتَ أَحَقُّ أَنْ يَهْنَى يَا رَسُولَ اللَّهِ. ثُمَّ قَالَ عُمَرُ: يَا غَدَوَاتِ أَنْفُسِهِنَّ، أَنْتِهْنِي وَلَا تَهْنَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ فَقُلْنَ: نَعَمْ، أَنْتَ أَظُّ وَأَغْلَطُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّهَا يَا ابْنَ الْخَطَّابِ، وَاللَّيْلِ نَفْسِي بِيَدِهِ، مَا لَيْكَ الشَّيْطَانُ سَالِكًا فَبَجًا قَطُّ إِلَّا سَلَكَ فَبَجًا غَيْرَ فَبَجِكَ)). (راجع: 3294)

3684- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا قَيْسٌ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: ((مَا زِلْنَا أَعْرَءَ مَعَدَّ أَسْلَمَ عُمَرُ)). (طرفه في: 3863)

3685- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: وَضِعَ عُمَرُ

गया तो तमाम लोगों ने नअशे मुबारक को घेर लिया और उनके लिये (अल्लाह से) दुआ और मरफ़िरत तलब करने लगे। नअश अभी उठाई नहीं गई थी, मैं भी वहीं मौजूद था। उसी हालत में अचानक एक साहब ने मेरा शाना पकड़ लिया, मैंने देखा तो वो अली (रज़ि.) थे। फिर उन्होंने इमर (रज़ि.) के लिये दुआ-ए-रहमत की और (उनकी नअश को मुखातब करके) कहा, आपने अपने बाद किसी भी शख्स को नहीं छोड़ा कि जिसे देखकर मुझे ये तमन्ना होती कि उसके अमल जैसा अमल करते हुए मैं अल्लाह से जा मिलूँ और अल्लाह की क्रसम! मुझे तो (पहले से) यक़ीन था कि अल्लाह तआला आपको आपके दोनों साथियों के साथ ही रखेगा। मेरा ये यक़ीन इस वजह से था कि मैंने अक़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) की जुबान से ये अल्फ़ाज़ सुने थे कि मैं अबूबक्र और इमर गये। मैं, अबूबक्र और इमर दाख़िल हुए। मैं, अबूबक्र और इमर बाहर आए। (राजेज़: 3677)

3686. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) फ़र्माते हैं और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सवाअ और कहमस बिन मिन्हाल ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) उहुद पहाड़ पर चढ़े तो आपके साथ अबूबक्र, इमर और इम्रान (रज़ि.) भी थे। पहाड़ लरज़ने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपने पाँव से उसे मारा और फ़र्माया, उहुद! ठहरा रह कि तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद ही तो हैं। (राजेज़: 3675)

ख़ुलफ़ा की फ़ज़ीलत में आँहज़रत (ﷺ) ने बतौर पेशगी फ़र्माया। शहीदों से हज़रत इमर और इम्रान (रज़ि.) मुराद हैं।

3687. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमर बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने मुझसे अपने वालिद हज़रत इमर

عَلَى سَرِيرِهِ، فَكَتَفَهُ النَّاسُ يَدْعُونَ وَيُصَلُّونَ قَبْلَ أَنْ يُرْفَعَ - وَأَنَا فِيهِمْ - فَلَمْ يُرْعَضْ إِلَّا وَجَلَّ أَحَدٌ مِنْكُمُ، فَإِذَا عَلِمُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ، فَرَحَّمَ عَلَى عَمَرٍ وَقَالَ: مَا خَلَفْتَ أَحَدًا أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ أَلْقَى اللَّهَ بِمِثْلِ عَمَلِهِ مِنْكَ. وَإِنَّ اللَّهَ إِنْ كُنْتَ لِأَعْلَنُ أَنْ يَجْعَلَكَ اللَّهُ مَعَ صَاحِبِكَ، وَخَسِبْتُ أَنِّي كَثِيرًا أَسْمَعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ ((ذَهَبْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَدَخَلْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَخَرَجْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ)). [راجع: 3677]

3686 - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ قَالَ. وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَوَّاءٍ وَكُثَيْبُ بْنُ الْمُنْهَالِ قَالَا: حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ أَحَدًا وَمَنْعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَغُثَمَانُ، فَرَجَفَ بِهِمْ، فَطَرَبَهُ بِرِجْلِهِ وَقَالَ: ((أَبْتُ أَحَدًا، فَمَا عَلَيْكَ إِلَّا نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدَانِ)). [راجع: 3675]

3687 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ هُوَ ابْنُ مُحَمَّدٍ أَنَّ زَيْدَ بْنَ أَسْلَمَ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((سَأَلَنِي ابْنُ عُمَرَ عَنْ بَعْضِ

(रज़ि.) के कुछ हालात पूछे, जो मैंने उन्हें बता दिये तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद मैंने किसी शख्स को दीन में इतनी ज्यादा कोशिश करने वाला और इतना ज्यादा सखी नहीं देखा और ये खसाइल हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) पर खत्म हो गये।

मुराद ये है कि अपने अहदे खिलाफत में हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) बहुत बड़े दिलदार, बहुत बड़े सखी और इस्लाम के अज़ीम सुतून थे। मन्कबत का जहाँ तक ता'ल्लुक है हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का मुकाम तमाम सहाबा से आला व अरफ़ज़ है।

3688. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ब्राबित ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक साहब (जुल खुवेसिर या अबू मूसा) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से क्रयामत के बारे में पूछा कि क्रयामत कब क्रायम होगी? इस पर आपने फ़र्माया, तुमने क्रयामत के लिये तैयारी क्या की है? उन्होंने ने अर्ज किया कुछ भी नहीं, सिवा उसके कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता हूँ। अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम्हारा हशर भी उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें कभी इतनी खुशी किसी बात से भी नहीं हुई जितनी आपकी ये हदीष सुनकर हुई कि तुम्हारा हशर उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि मैं भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से और हज़रत अबूबक्र व उमर (रज़ि.) से मुहब्बत रखता हूँ और उनसे अपनी इस मुहब्बत की वजह से उम्मीद रखता हूँ कि मेरा हशर उन्हीं के साथ होगा, अगरचे मैं उन जैसे अमल न कर सका। (दीगर मक़ाम: 167, 6171, 7153)

हज़रत अनस (रज़ि.) के साथ मुतर्जिम व नाशिर की भी यही दुआ है।

3689. हमसे यह्या बिन कज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमाने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे पहले उम्मतों में मुहद्वष हुआ करते थे, और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख्स है तो वो उमर हैं। ज़करिया बिन ज़ायदा ने अपनी रिवायत में सअद से ये बढ़ाया

شَاهِدٌ - يَعْنِي عُمَرَ - فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا قَطُّ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مِنْ حِينَ قُبِضَ كَانَ أَجْدًا وَأَجْوَدَ حَتَّى انْتَهَى مِنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ)).

3688 - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ السَّاعَةِ فَقَالَ: مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: ((وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟)) قَالَ: لَا شَيْءَ، إِلَّا أَنِّي أَحْبَبُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ: ((أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ؟)) قَالَ: أَنَسٌ. فَمَا فَرَحْنَا بِشَيْءٍ فَرَحْنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. قَالَ أَنَسٌ: فَإِنَّا أَحْبَبُ النَّبِيَّ ﷺ وَأَنَا بِكَرٍّ وَعُمَرَ، وَأَرْجُوا أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ بِحَبِّي إِيَّاهُمْ، وَإِنْ لَمْ أَغْمَلْ بِغَمَلٍ أَغْمَلِيَهُمْ)).

[أَطْرَافُهُ: ١٦٧، ٦١٧١، ٧١٥٣].

3689 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قُرْعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الْأُمَمِ نَاسٌ مُخَدَّنُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عُمَرُ)) رَأَى زَكْرِيَّا بْنُ أَبِي

कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले बनी इस्राईल की उम्मतों में कुछ लोग ऐसे हुआ करते थे कि नबी नहीं होते थे और उसके बावजूद फ़रिश्ते उनसे कलाम किया करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख्स हो सकता है तो वो हज़रत उमर हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने पढ़ा, मन नबियि वला मुहद्दिष। (राजेअ: 3469)

زائدة عن سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ نَبِيِّ إِسْرَائِيلَ رَجُلَانِ يُكَلِّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ)).

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((مَنْ نَبِيٍّ وَلَا مُحَدِّثٍ)). [راجع: 3469]

तथरीह: मुहद्दिष वो जिस पर अल्लाह की तरफ से इल्हाम हो और हक़ उसकी जुबान पर जारी हो जाए या फ़रिश्ते इससे बात करें या वो जिसकी राय बिलकुल सहीह साबित हो। मुहद्दिष वो भी हो सकता है जो साहिबे कशफ़ हो जैसे हज़रत ईसा (रज़ि.) की उम्मत में हज़रत यूहन्ना हवारी गुजरे हैं जिनके मकाशिफ़ात मशहूर हैं। यकीनन हज़रत उमर (रज़ि.) भी ऐसे ही लोगों में से हैं। रिवायत के आखिर में मज़कूर है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) सूरह हज्ज की इस आयत को यूँ पढ़ते थे, वमा अर्सलना मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन व ला नबियिन व ला मुहद्दिषुन अलख़.

3690. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने बयान किया कि हमने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि एक भेड़िये ने उसकी एक बकरी पकड़ ली। चरवाहे ने उसका पीछा किया और बकरी को उससे छुड़ा लिया। फिर भेड़िया उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर बोला। दरिन्दों के दिन उसकी हिफ़ाज़त करने वाला कौन होगा, जब मेरे सिवा उसका कोई चरवाहा न होगा। सहाबा (रज़ि.) इस पर बोल उठे सुब्हानल्लाह! ओ हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उस वाक़िये पर ईमान लाया और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) भी। हालाँकि वहाँ अबूबक्र व उमर (रज़ि.) मौजूद नहीं थे। (राजेअ: 2324)

٣٦٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَا: سَمِعْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((بَيْنَمَا رَاعٍ فِي غَنَمِهِ عَدَا الذَّنْبُ فَأَخَذَ مِنْهَا شاةً، فَطَلَبَهَا حَتَّى اسْتَقْلَبَهَا، فَالْتَمَتْ إِلَيْهِ الذَّنْبُ فَقَالَ لَهُ: مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبْعِ، لَيْسَ لَهَا رَاعٍ غَيْرِي؟ فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللَّهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: فَإِنِّي أَوْمِنُ بِهِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ. وَمَا تَمَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ)). [راجع: 2324]

ये हदीष ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें गाय का भी ज़िक्र था। इससे भी हज़रते शैख़ेन की फ़ज़ीलत साबित हुई।

3691. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील बिन हनीफ़ ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैंने ख़्वाब में देखा

٣٦٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو أَمَامَةَ بْنُ سَهْلٍ بْنُ خُنَيْسٍ عَنْ

कि कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये जो क़मीस पहने हुए थे। उनमें से कुछ की क़मीस सिर्फ़ सीने तक थी और कुछ की उससे भी छोटी और मेरे सामने उमर पेश किये गये तो वो इतनी बड़ी क़मीस पहने हुए थे कि चलते हुए घसीटती थी। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने उसकी ता'बीर क्या ली? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि दीन मुराद है। (राजेअ: 23)

أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ عَرَضُوا عَلَيَّ وَعَلَيْهِمْ قُمْصٌ، فَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ الْكُفَيْ، وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ دُونَ ذَلِكَ، وَعَرَضَ عَلَيَّ عُمَرُ وَعَلَيْهِ قُمْصٌ اجْتَرَهُ)). قَالُوا: أَلَمَّا أَوَّلَتْهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: ((الدِّينُ)). [راجع: ٢٣]

मा'लूम हुआ कि हज़रत उमर (रज़ि.) का दीन व ईमान बहुत क़वी था, उससे उनकी फ़ज़ीलत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) पर लाज़िम नहीं आती क्योंकि इस हदीस में उनका ज़िक्र नहीं है।

3692. हमसे सुलत बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे मिस्वर बिन मखरमा ने बयान किया कि जब हज़रत उमर (रज़ि.) ज़ख्मी कर दिये गये तो आपने बड़ी बेचैनी का इज़हार किया। उस मौक़े पर इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने आपसे तसल्ली के तौर पर कहा कि या अमीरल मोमिनीन! आप इस दर्जा घबरा क्यों रहे हैं? आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत में रहे और हुज़ूर (ﷺ) की सुहबत का पूरा हक़ अदा किया और फिर जब आप आँहज़रत (ﷺ) से अलग हुए तो हुज़ूर (ﷺ) आपसे ख़ुश और राज़ी थे उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) की सुहबत उठाई और उनकी सुहबत का भी आपने पूरा हक़ अदा किया और जब अलग हुए तो वो भी आपसे ख़ुश थे। आख़िर में मुसलमानों की सुहबत आपको हासिल रही, उनकी सुहबत का भी आपने पूरा हक़ अदा किया और अगर आप उनसे जुदा हुए तो इसमें कोई शक़ नहीं कि उन्हें भी आप अपने से ख़ुश और राज़ी ही छोड़ेंगे। इस पर उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, इब्ने अब्बास! तुमने जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत का और आँहज़रत (ﷺ) की रज़ा व ख़ुशी का ज़िक्र किया है तो यक़ीनन ये सिर्फ़ अल्लाह तआला का एक फ़ज़ल और एहसान है जो उसने मुझ पर किया है। इसी तरह जो तुमने अबूबक्र (रज़ि.) की सुहबत और उनकी ख़ुशी का ज़िक्र किया है तो ये भी अल्लाह तआला का मुझ पर फ़ज़ल व एहसान था। लेकिन जो घबराहट और परेशानी मुझ पर तुम तारी देख रहे हो वो तुम्हारी वजह से और तुम्हारे

٣٦٩٢- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمُسَوَّرِ بْنِ مَخْرَمَةَ قَالَ: ((لَمَّا طَعِنَ عُمَرُ جَعَلَ يَأْلَمُ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ - وَكَانَهُ يُجَزِّعُهُ -: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، وَلَيْنَ كَانَ ذَاكَ، لَقَدْ صَحِبْتَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْسَنْتَ صُحْبَتَهُ، ثُمَّ فَارَقْتَهُ وَهُوَ عَنْكَ رَاضٍ، ثُمَّ صَحِبْتَ أَبَا بَكْرٍ فَأَخْسَنْتَ صُحْبَتَهُ، ثُمَّ فَارَقْتَهُ وَهُوَ عَنْكَ رَاضٍ، ثُمَّ صَحِبْتَ صُحْبَتَهُمْ فَأَخْسَنْتَ صُحْبَتَهُمْ، وَلَيْنَ فَارَقْتَهُمْ لَفَارَقْتَهُمْ وَهُمْ عَنْكَ رَاضُونَ. قَالَ: أَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ صُحْبَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَرِضَاهُ فَإِنَّمَا ذَاكَ مِنْ اللَّهِ تَعَالَى مَنْ بِهِ عَلَيَّ، وَأَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ صُحْبَةِ أَبِي بَكْرٍ وَرِضَاهُ فَإِنَّمَا ذَاكَ مِنْ اللَّهِ جَلَّ ذِكْرُهُ مَنْ بِهِ عَلَيَّ، وَأَمَّا مَا تَرَى مِنْ جَزَعِي فَهُوَ مِنْ أَجْلِكَ

साथियों की फ़िक्र की वजह से है। और अल्लाह की कसम! अगर मेरे पास ज़मीन भर सोना होता तो अल्लाह तआला के अज़ाब का सामना करने से पहले उसका फ़िदया देकर उससे नजात की कोशिश करता। हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि मैं इमर (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ। फिर आख़िर तक यही हदीस बयान की।

तशरीह: इब्ने अबी मुलैका के कौल को इस्माईली ने वस्ल किया, इस सनद के बयान करने से ये गर्ज़ है कि इब्ने अबी मुलैका ने अपने और इब्ने अब्बास (रज़ि.) के दरम्यान कभी मिस्वर का ज़िक्र किया है जैसे अगली रिवायत में है कभी नहीं किया जैसे इस रिवायत में है। शायद ये हदीस उन्होंने मिस्वर के वास्ते से बयान नहीं की। यहाँ हज़रत इमर (रज़ि.) की बेकरारी का ये दूसरा सबब बयान किया। या'नी एक तो तुम लोगों को फ़िक्र है दूसरे अपनी नजात की फ़िक्र। सुबहानल्लाह! हज़रत इमर (रज़ि.) ईमान। इतनी नेकियाँ होने पर और आँहज़रत (ﷺ) की क़तई बशारत रखने पर कि तुम बहिस्तो हो अल्लाह का डर उनके दिल में इस क़दर था क्योंकि अल्लाह करीम की ज़ात बेपरवाह और मुस्तम्नी है। जब हज़रत इमर (रज़ि.) के से आदिल और मुन्ज़िफ़ और हक़ परस्त और शरअ के ताबेअ रहने वाले और सहाबी और खलीफ़तुरसूल को अल्लाह का इतना डर हो तो अफ़सोस हमारे ह्राल पर कि सर से पैर तक गुनाहों में गिरफ़्तार हैं तो हमको कितना डर होना चाहिये। (वहीदी)

3693. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि मुझसे उप्मान बिन गयास ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू उप्मान नहदी ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मदीना के एक बाग़ (बीरे अरीस) में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था कि एक साहब ने आकर दरवाज़ा खुलवाया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनके लिये दरवाज़ा खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत दे दो। मैंने दरवाज़ा खोला तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) थे। मैंने उन्हें नबी करीम (ﷺ) के फ़र्मान के मुताबिक़ जन्नत की बशारत सुनाई तो उन्होंने इस पर अल्लाह की हम्द की। फिर एक और साहब आए और दरवाज़ा खुलवाया। हज़ूर (ﷺ) ने इस मौक़े पर भी यही फ़र्माया कि दरवाज़ा उनके लिये खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत सुना दो, मैंने दरवाज़ा खोला तो हज़रत इमर (रज़ि.) थे। उन्हें भी जब हज़ूर (ﷺ) के इश़ाद की ख़बर सुनाई तो उन्होंने भी अल्लाह की हम्द-घना बयान की। फिर एक तीसरे और साहब ने दरवाज़ा खुलवाया। उनके लिये भी हज़ूर अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि दरवाज़ा खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत सुना दो, उन मसाइब और अज़माइशों के बाद जिनसे उन्हें (दुनिया में) वास्ता पड़ेगा। वो हज़रत उप्मान (रज़ि.) थे। जब मैंने उनको हज़ूर

وَأَجَلَ أَصْحَابِكَ. وَاللّٰهُ لَوْ أَنَّ لِيْ بِلَاغِ الْأَرْضِ ذَهَبًا لَا تُفْدِيْتُ بِهِ مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ غُرًّا وَجَلَّ قَتْلُ أَنْ أَرَاهُ)). قَالَ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ ((دَخَلْتُ عَلَى عُمَرَ)) بِهَذَا.

۳۶۹۳- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ النَّهْدِيُّ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي خَائِطٍ مِنْ حَيْطَانِ الْمَدِينَةِ، فَجَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَفْتَحَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اِفْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَفَتَحْتُ لَهُ، فَإِذَا هُوَ أَبُو نَكْرٍ فَبَشَّرْتُهُ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَمِدَ اللَّهَ. ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَفْتَحَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اِفْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَفَتَحْتُ لَهُ فَإِذَا هُوَ عُمَرُ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَمِدَ اللَّهَ. ثُمَّ اسْتَفْتَحَ رَجُلٌ،

(ﷺ) के इर्शाद की इज्जिला दी तो आपने अल्लाह की हम्दो-प्रना के बाद में फ़र्माया कि अल्लाह तआला ही मदद करने वाला है। (ये हदीष पहले भी गुजर चुकी है)। (राजेअ : 3674)

3694. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे हयवह बिन शुरैह ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अबू अकील जुहरा बिन मअबद ने बयान किया और उन्होंने अपने दादा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) से सुना था, उन्होंने बयान किया कि हम एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के साथ थे। आप उस वक़्त हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का हाथ अपने हाथ में लिये हुए थे।

(दीगर मक़ाम : 6264, 6632)

पूरी हदीष आगे बाबुल अयमान व नुज़ूर में मज़कूर होगी। इससे आपकी बहुत इनायत और मुहब्बत उमर (रज़ि.) पर मा'लूम होती है।

बाब 7 : हज़रत अबू अम्र व उष्मान बिन अफ़फ़ान अल् कुरशी उमवी (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जो शख्स बीर रूमा (एक कुँआ) को ख़रीद कर सबके लिये आम कर दे उसके लिये जन्नत है। तो हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने उसे ख़रीदकर आम कर दिया था और आँ हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जो शख्स जेशे इसरह (ग़ज़व-ए-तबूक के लश्कर) को सामान से लैस करे उसके लिये जन्नत है तो हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने ऐसा किया था।

तशरीह : हज़रत उष्मान (रज़ि.) का नसबनामा ये है, उष्मान बिन अफ़फ़ान बिन अबुल आस बिन उमय्या बिन अब्द शम्स बिन अब्द मुनाफ़, अब्द मुनाफ़ में वो आँ हज़रत (ﷺ) के नसब से मिल जाते हैं। कुछ ने कहा कि उनकी कृत्रियत अबू अब्दुल्लाह थी। अब्दुल्लाह उनके साहबजादे हज़रत रुकय्या से थे जो छः बरस की उमर में फ़ौत हो गये थे। हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया उष्मान को आसमान वाले ज़िन्नरैन कहते हैं। सिवा उनके किसी के पास नबी की दो बेटियाँ जमा नहीं हुई, आँ हज़रत (ﷺ) उनको बहुत चाहते थे। फ़र्माया अगर मेरे पास तीसरी बेटी होती तो उसको भी मैं तुझसे ब्याह देता। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाह)

जैशे उस्सह वाली हदीष को खुद इमाम बुखारी (रह) ने किताबुल मग़ाज़ी में वस्ल किया है। हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने जंगे तबूक के लिये एक हज़ार अशरफ़ियाँ लाकर आँ हज़रत (ﷺ) की गोद में डाल दी थीं। आप उनको गिनते जाते और फ़र्मति अब उष्मान (रज़ि.) को कुछ नुक़सान होने वाला नहीं वो कैसे ही अमल करे? उस जंग में उन्होंने 950 ऊँट और पचास घोड़े भी दिये थे। सद अफ़सोस कि ऐसे बुजुर्गतराइन सहाबी की शान में आह! कुछ लोग तन्कीस की मुहिम चला रहे हैं जो खुद उनकी अपनी तन्कीस है।

فَقَالَ لِي: «افتح لك وبشرة بالحجة على نلوى تعيية» فإذا هو غفمان، فأخبرته بما قال رسول الله صلى الله عليه وسلم، فحمد الله، ثم قال: الله المستعان»۔ [راجع: 3674]

3694 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي خُوَيْرَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عَقِيلٍ زُهْرَةُ بْنُ مَقْبَرٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَدَّهُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ هِشَامٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ. [طرفاء ب: 6264, 6632]

۷- بَابُ مَنَاقِبِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانٍ

أَبِي عَمْرٍو الْقُرَشِيُّ ﷺ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «مَنْ يَخْفِرْ بَنُو زَوْجَةٍ فَلَهُ الْجَنَّةُ». فَخَفَرَهَا عُثْمَانُ وَقَالَ: «مَنْ جَهَّزَ جَيْشَ الْفُسْرَةِ فَلَهُ الْجَنَّةُ». فَجَهَّزَهُ عُثْمَانُ.

गर न बीनद बरोज शपर-ए-चश्म

चश्म-ए-आफ़ताब रा चे कनाह

3695. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू यूसुब ने, उनसे अबू इब्मन ने और उनसे हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक बाग़ (बीरे अरीस) के अंदर तशरीफ़ ले गये और मुझसे फ़र्माया कि मैं दरवाज़ा पर पहरा देता रहूँ। फिर एक साहब आए और इजाज़त चाही। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की खुशख़बरी भी सुना दो। वो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) थे। फिर दूसरे एक और साहब आए और इजाज़त चाही। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें भी इजाज़त दे दो और जन्नत की खुशख़बरी सुना दो। वो हज़रत उमर (रज़ि.) थे। फिर तीसरे एक और साहब आए और इजाज़त चाही। हज़ूर थोड़ी देर के लिये ख़ामोश हो गये फिर फ़र्माया कि उन्हें भी इजाज़त दे दो और (दुनिया में) एक आजमाइश से गुज़रने के बाद जन्नत की बशारत भी सुना दो। वो इब्मन ग़नी (रज़ि.) थे। (राजेज़: 3674)

हम्माद बिन सलमा ने बयान किया, हमसे आसिम अहवल और अली बिन हक़म ने बयान किया, उन्होंने अबू इब्मन से सुना और वो अबू मूसा से इसी तरह बयान करते थे। लेकिन आसिम ने अपनी इस रिवायत में ये ज़्यादा किया है कि नबी करीम (ﷺ) उस वक़्त एक ऐसी जगह बैठे हुए थे जिसके अंदर पानी था और आप अपने दोनों घुटने या एक घुटना खोले हुए थे लेकिन जब इब्मन (रज़ि.) दाख़िल हुए तो आपने अपने घुटने को छुपा लिया था।

इस रिवायत को तबरानी ने निकाला, लेकिन हम्माद बिन ज़ैद से न कि हम्माद बिन सलमा से। अल्बत्ता हम्माद बिन सलाम ने सिर्फ़ अली बिन हक़म से रिवायत की है। उसको इब्ने अबी खुषैमा ने तारीख़ में निकाला। आपने हज़रत इब्मन की शर्म व हया का ख़याल करके घुटना ढाँक़ लिया था। अगर वो सतर होता तो हज़रत अबूबक्र व उमर (रज़ि.) के सामने भी खुला न रखते।

3696. हमसे अहमद बिन शबीब बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको इर्वा ने ख़बर दी, उन्हें इब्बैदुल्लाह बिन अदी बिन ख़यार ने ख़बर दी कि मिस्वर बिन मख़रमा और अब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अब्दे यगूष (रज़ि.) ने उनसे कहा कि तुम हज़रत इब्मन (रज़ि.) से उनके भाई वलीद

۳۶۹۵- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي غَفَّانٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : « أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ خَائِطًا وَأَمْرِي بِحِفْظِ بَابِ الْخَائِطِ، فَجَاءَ رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فَقَالَ: «الَّذِنَ لَهُ وَبَشْرَةٌ بِالْجَنَّةِ»، فَإِذَا أَبُو بَكْرٍ. ثُمَّ جَاءَ آخَرُ يَسْتَأْذِنُ فَقَالَ: «الَّذِنَ لَهُ وَبَشْرَةٌ بِالْجَنَّةِ»، فَإِذَا عُمرُ. ثُمَّ جَاءَ آخَرُ يَسْتَأْذِنُ، فَسَكَتَ هُنَيْئَةً ثُمَّ قَالَ: «الَّذِنَ لَهُ وَبَشْرَةٌ بِالْجَنَّةِ عَلَى تَلَوَى سَمْعِيَّةَ»، فَإِذَا غَفَّانُ بْنُ غَفَّانٍ.

[راجع: ۳۶۷۴]

قَالَ حَمَّادٌ وَحَدَّثَنَا عَاصِمُ الْأَحْوَلُ وَعَلِيُّ بْنُ الْحَكَمِ سَمِعَا أَبَا غَفَّانٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي مُوسَى يَنْخَوِرُ، وَزَادَ فِيهِ عَاصِمٌ « أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ قَاعِدًا فِي مَكَانٍ فِيهِ مَاءٌ قَدْ انْكَشَفَ عَنْ رُكْبَتَيْهِ - أَوْ رُكْبَتَيْهِ - فَلَمَّا دَخَلَ غَفَّانُ غَطَّاهَا ».

۳۶۹۶- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ شَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَتِيدَ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ بْنِ الْخَبَّارِ أَخْبَرَهُ « أَنَّ الْمُسَوِّزَ بْنَ مَخْرَمَةَ وَعَتِيدَ الرَّحْمَنِ بْنِ

के मुकद्दमा में (जिसे हजरत इब्मान रज़ि. ने कूफ़ा का गवर्नर बनाया था) क्यूँ बातचीत नहीं करते, लोग उससे बहुत नाराज़ हैं। चुनाँचे में हजरत इब्मान (रज़ि.) के पास गया और जब वो नमाज़ के लिये बाहर तशरीफ़ लाए तो मैंने अर्ज़ किया कि मुझे आपसे एक ज़रूरत है और वो है आपके साथ एक ख़ैर-ख़वाही! इस पर इब्मान (रज़ि.) ने फ़र्माया, भले आदमी तुमसे (मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ) इमाम बुखारी (रह) ने कहा। मैं समझता हूँ कि मअमर ने यूँ रिवायत किया, मैं तुमसे अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। मैं वापस उन लोगों के पास आ गया। इतने में हजरत इब्मान (रज़ि.) का क़ासिम मुझको बुलाने के लिये आया, मैं जब उसके साथ हजरत इब्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने दरयाफ़्त किया कि तुम्हारी ख़ैर-ख़वाही क्या थी? मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा और उन पर किताब नाज़िल की आप भी उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की दा'वत को कुबूल किया था। आपने दो हिजरतें कीं, हुजुरे अकरम (ﷺ) की सुहबत उठाई और आपके तरीक़े और सुन्नत को देखा, लेकिन बात ये है कि लोग वलीद की बहुत शिकायतें कर रहे हैं। हजरत इब्मान (रज़ि.) ने इस पर पूछा, तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुछ सुना है? मैंने अर्ज़ किया कि नहीं, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) की अह्दादीष एक कुंवारी लड़की तक को उसके तमाम पदों के बावजूद जब पहुँच चुकी हैं तो मुझे क्यूँ न मा'लूम होती। इस पर हजरत इब्मान ने फ़र्माया, अम्मा बअद! बेशक अल्लाह तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा और मैं अल्लाह और उसके रसूल की दा'वत को कुबूल करने वालों में ही था। हुजुरे अकरम (ﷺ) जिस दा'वत को लेकर भेजे गये थे मैं उस पर पूरे तौर से ईमान लाया और जैसा कि तुमने कहा दो हिजरतें भी कीं, मैं हुजुरे अकरम (ﷺ) की सुहबत में भी रहा हुआ हूँ और आपसे बेअत भी की है। पस अल्लाह की क़सम! मैंने कभी आप (ﷺ) के हुक्म से सरताबी नहीं की और न आप (ﷺ) के साथ कभी कोई धोखा किया, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आपको वफ़ात दी। उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) के साथ भी मेरा यही मामला रहा। और हजरत उमर (रज़ि.) के साथ भी यही मामला रहा। तो क्या जबकि मुझे उनका जानशीन बना दिया गया है तो मुझे वो हुक्क़ हासिल नहीं होंगे जो उन्हें थे? मैंने

الْأَمْرُ لِي مِنْ هُنَا نَفَرْتُ لَأَنَا مَا يَنْتَفِلُ
أَنَا نَقَلْتُ خَلِيفَةً لِأَخِيهِ الرَّبِّ لَمْ أَطْر
الْأَمْرُ لِي هُنَا فَتَعَدْتُ لِقَائَهُ مِنْ خُرُجِ
إِلَى الْعَدَاةِ لَكِنِّي إِذَا لِي إِلَيْكَ حَاجَةٌ
وَمِنْ نَمِيحَةٍ لَكَ لَكِنِّي لَا أَتِيكَ الْفَرْدَ
بَلَنِي - فَإِنْ تَقَرَّرَ أَرَأَيْتَ لَأَنْ أَلْهَوْهُ
بِأَمْرٍ بَلَنِي - فَأَنْتَرَفْتُ فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ
إِلَى خَدِّهِ وَتَوَلَّى خَفَانًا فَاتَّبَعْتُهُ فَقَالَ مَا
نَمِيحَتُكَ فَقُلْتُ إِنْ أَلَيْكَ شَيْعَانَةٌ فَتَعَدْتُ
نَحْنُ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْمَنْبِغُ
وَأَتَى عَلَيْهِ الْكِتَابُ وَتَحَنَّنْتُ بِمَنْ
اِنتَقَبَ لَهُ وَلِزْنَ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ فَهَاجَرْتُ الْهَيْمَرَتَيْنِ وَحَضَرْتُ
رَمْلُونَ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَوَأَتَيْتُ
هَذِهِ وَلَمْ أَطْرُقْ النَّاسَ فِي خِلَابِ الْوَلِيِّ
فَأَنْ : أَتَرَفْتُ رَمْلُونَ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَكِنِّي لَا وَلَكِنْ عَلَيْنِ
الَّذِي مِنْ جِلْمٍ مَا يَخْلَعُ إِلَى الْفَلَاةِ فِي
سَبْرًا فَإِنْ : أَتَا نَقْدَ لِيَابِ اللَّهِ بِخِيَةِ
نَحْنُ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْحَقُّ
فَقُلْتُ بِمَنْ اِنتَقَبَ لَهُ وَلِزْنَ عَلَيْهِ
عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَحَنَّنْتُ بِمَا نَمَتُ
بِهِ وَهَاجَرْتُ الْهَيْمَرَتَيْنِ - تَعَدْتُ لَكِنِّي -
وَحَضَرْتُ رَمْلُونَ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَبَاقِيَتُهُ فَمِنْ اللَّهِ مَا عَمِيحَتُهُ وَلَا
عَمِيحَتُهُ حَتَّى تَرَفَّاهُ اللَّهُ ثُمَّ أَوْ تَكْرُ
مَنْ ثُمَّ خَرَّ مَنَدًا ثُمَّ اِنتَقَبْتُ

अर्ज किया कि क्यों नहीं, आपने फर्माया कि फिर उन बातों के लिये क्या जवाज़ रह जाता है जो तुम लोगों की तरफ से मुझे पहुँचती रहती हैं लेकिन तुमने जो वलीद के हालात का जिक्र किया है, इंशाअल्लाह हम उसकी सज़ा जो वाजिबी है उसको देंगे। फिर हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) को बुलाया और उनसे फर्माया कि वलीद को हद लगाएँ। चुनौचे उन्होंने वलीद को अस्सी कोड़े हद के लगाए। (दीगर मक़ाम: 3872)

أَلَيْسَ لِي مِنَ الْحَقِّ مِثْلُ الَّذِي لَهُمْ ؟
قُلْتُ : بَلَى . قَالَ : لَمَّا هَدَيْهِ الْإِخْوَانُ
الَّذِي تَبْلَغُنِي عَنْكُمْ ؟ أَمَا مَا ذَكَرْتَ مِنْ
شَأْنِ الْوَلِيدِ فَسَتَأْخُذُ بِهِ بِالْحَقِّ إِنْ شَاءَ
اللَّهُ تَعَالَى . ثُمَّ دَعَا عَلِيًّا فَأَمَرَهُ أَنْ
يَجْلِدَهُ ، فَجَلَدَهُ ثَمَانِينَ .

[طرفه 3 : 3872]

तशरीह : वलीद हज़रत इब्मान (रज़ि.) का रज़ाई भाई था। हुआ ये था कि सअद बिन अबी वक्कास को जो अशर-ए-मुबशशरह में थे हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने कूफ़ा का हाकिम मुक़र्रर किया था। उनमें और अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) में कुछ तकरार हुई तो हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने वलीद को वहाँ का हाकिम मुक़र्रर कर दिया और सअद (रज़ि.) को मअज़ूल कर दिया। वलीद ने बड़ी बे ए' अतिदालियाँ शुरू कीं। शराबखोरी, जुल्म-ज्यादती की। लोग हज़रत इब्मान (रज़ि.) से नाराज़ हुए कि सअद जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी को मअज़ूल करके हाकिम किसको बनाया? वलीद को, जिसकी फ़ज़ीलत कुछ भी न थी और उसका बाप इक्बाल बिन अबी मुईज़ मलूक़ था जिसने आँहज़रत (ﷺ) का गला घोंटा था। आप पर नमाज़ में ओझड़ी डाली थी। ख़ैर अगर वलीद कोई बुरा काम न करता तो बाप के आमाल से बेटे को गुर्ज़ न थी मगर वमौजिब अल्वलदु सिरून लिअबीहि वलीद ने भी हाथ पाँव पेट से निकाले। (वहीदी)

3697. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब उहुद पहाड़ पर चढ़े और आपके साथ अबूबक्र, उमर और इब्मान (रज़ि.) भी थे तो पहाड़ कांपने लगा। आपने उस पर फर्माया उहुद ठहर जा। मेरा ख़याल है कि हुज़ूर ने उसे अपने पाँव से मारा भी था कि तुझ पर नबी, एक सिद्दीक़ और दो शुहदा ही तो हैं।

(राजेअ: 3675)

٣٦٩٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ : حَدَّثَنَا يَحْيَى ، عَنْ
سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ : أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
حَدَّثَهُمْ قَالَ : صَعِدَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدًا وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَ
عُثْمَانُ فَرَجَعَتْ فَقَالَ : «اسْكُنْ أَحَدًا -
أَطْنَةُ ضَرْبَةٍ بِرَجُلِهِ - فَلَيْسَ عَلَيْكَ إِلَّا نَبِيٌّ
وَصِدِّيقٌ وَ شَهِيدَانِ» . [راجع : ٣٦٧٥]

3698. मुझसे मुहम्मद बिन हातिम बिन बज़ीअ ने बयान किया, कहा हमसे शाज़ान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा माजिशून ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के अहद में हम हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के बराबर किसी को नहीं क़रार देते थे। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) को फिर हज़रत इब्मान (रज़ि.) को। उसके बाद हुज़ूरे

٣٦٩٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ بِنِ
بَرْبَعٍ حَدَّثَنَا شَاذَانٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ
أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُونِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ
نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ :
«كُنَّا فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ لَا نَعْبُدُ بِأَبِي
بَكْرٍ أَحَدًا ، ثُمَّ عُمَرُ ثُمَّ عُثْمَانُ ، ثُمَّ تَرَكْنَا

अकरम (ﷺ) के सहाबा पर हम कोई बहस नहीं करते थे और किसी को एक-दूसरे पर फज़ीलत नहीं देते थे। इस हदीस को अब्दुल्लाह बिन सलालेह ने भी अब्दुल अज़ीज़ से रिवायत किया है। इसको इस्माईली ने वस्ल किया है। (राजेज़ : 3130, 3655)

3699. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने, कहा हमसे इब्मान बिन मौहब ने बयान किया कि मिस्र वालों में से एक नाम नामा'लूम आदमी आया और हज़्जे बैतुल्लाह किया, फिर कुछ लोगों को बैठे हुए देखा तो उसने पूछा कि ये कौन लोग हैं? किसी ने कहा कि ये कुरैशी हैं। उसने पूछा कि उनमें बुजुर्ग कौन साहब हैं? लोगों ने बताया कि ये अब्दुल्लाह बिन उमर हैं। उसने पूछा, ऐ इब्ने उमर! मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ। उम्मीद है कि आप मुझे बताएँगे। क्या आपको मा'लूम है कि उब्मान (रज़ि.) ने उहूद की लड़ाई से राहें फ़रार इख़्तियार की थी? इब्ने उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ ऐसा हुआ था। फिर उन्होंने पूछा, क्या आपको मा'लूम है कि वो बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं हुए थे? जवाब दिया कि हाँ ऐसा हुआ था। उसने पूछा क्या आपको मा'लूम है कि वो बेअते रिज़्वान में भी शरीक नहीं थे। जवाब दिया कि हाँ ये भी सहीह है। ये सुनकर उसकी जुबान से निकला अल्लाह अकबर! तो इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि क़रीब आ जाओ, अब मैं तुम्हें इन वाक़ियात की तफ़्सील समझाऊँगा। उहूद की लड़ाई से फ़रार के बारे में गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला ने उन्हें मुआफ़ कर दिया है। बद्र की लड़ाई में शरीक न होने की वजह ये है कि उनके निकाह में रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबज़ादी थीं और उस वक़्त वो बीमार थीं और हज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुम्हें (मरीज़ा के पास ठहरने का) उतना ही अज़्रो-प्रवाब मिलेगा जितना उस शख़्स को जो बद्र की लड़ाई में शरीक होगा और उसी के मुताबिक़ माले ग़नीमत से हिस्सा भी मिलेगा और बेअते रिज़्वान में शरीक न होने की वजह ये है कि उस मौक़े पर वादी-ए-मक्का में कोई भी शख़्स (मुसलमानों में से) इब्मान (रज़ि.) से ज़्यादा इज़्जत वाला और बा अघ़र होता तो हज़ूरे अकरम (ﷺ) उसी को उनकी जगह वहाँ भेजते। यही वजह हुई थी कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें (कुरैश से बातें करने के लिये) मक्का भेज दिया था और जब बेअते रिज़्वान हो रही थी तो इब्मान

أصحاب النبي ﷺ لا تفاضل بينهم)).
تابعه عبد الله الصالح عن عبد العزيز.

[راجع: 3130, 3655]

3699- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَّانَةَ حَدَّثَنَا غُثْمَانُ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ: ((رَجَاةٌ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ بَعْثِ النَّبِيِّ، فَرَأَى قَوْمًا جُلُوسًا فَقَالَ: مَنْ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ قُرَيْشٌ. قَالَ: لِمَنِ الشَّيْخُ فِيهِمْ؟ قَالُوا: عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ. قَالَ: يَا ابْنَ عُمَرَ إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ فَحَدَّثَنِي عَنْهُ: هَلْ تَعْلَمُ أَنَّ غُثْمَانَ قَرِيبٌ يَوْمَ أَحَدٍ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَقَالَ: تَعْلَمُ أَنَّهُ تَعَبٌ عَنْ بَدْرٍ وَلَمْ يَشْهَدْ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ تَعْلَمُ أَنَّهُ تَعَبٌ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَمْ يَشْهَدْ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ. قَالَ ابْنُ عُمَرَ: تَعَالَى أَمِينُ لَكَ. أَمَّا فِرَارُهُ يَوْمَ أَحَدٍ فَلَا شَكَّ أَنَّ اللَّهَ عَفَا عَنْهُ وَغَفَرَتْ لَهُ. وَأَمَّا تَعَبُهُ عَنْ بَدْرٍ فَإِنَّهُ كَانَ تَحْتَ بَيْتِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَتْ مَرِيضَةً، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمَهُ)). وَأَمَّا تَعَبُهُ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَوْ كَانَ أَحَدٌ أَعَزَّ بِطَرَفٍ مَكَّةَ مِنْ غُثْمَانَ لَبَيْعَتْهُ مَكَانَهُ، فَبَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غُثْمَانَ، وَكَانَتْ بَيْعَةُ الرِّضْوَانِ بَعْدَ مَا ذَهَبَ غُثْمَانُ إِلَى مَكَّةَ، فَقَالَ رَسُولُ

(रज़ि.) मक्का जा चुके थे, उस मौके पर हुजूर अकरम (ﷺ) ने अपने दाहिने हाथ को उठाकर फर्माया था किये इब्मान का हाथ है और फिर उसे अपने दूसरे हाथ पर हाथ रखकर फर्माया था किये बेअत इब्मान की तरफ से है। उसके बाद इब्ने उमर (रज़ि.) ने सवाल करने वाले शख्स से फर्माया कि जा, इन बातों को हमेशा याद रखना।

हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब उहुद पहाड़ पर चढ़े और आपके साथ अबूबक्र, उमर और इब्मान (रज़ि.) भी थे तो पहाड़ कांपने लगा। आपने उस पर फर्माया उहुद ठहर जा। मेरा खयाल है कि हुजूर ने उसे अपने पाँव से मारा भी था कि तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद ही तो हैं।

बाब 8 : हज़रत इब्मान (रज़ि.) से बेअत का किस्सा और आपकी ख़िलाफ़त पर सहाबा का इत्तिफ़ाक़ करना और इस बाब में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की शहादत का बयान.

3700. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अबाना ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे अमर बिन मैमून ने बयान किया, कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को ज़ख़मी होने से चन्द दिन पहले मदीना में देखा कि वो हुज़ैफ़ा बिन यमान और इब्मान बिन हनीफ़ (रज़ि.) के साथ खड़े थे और उनसे ये फ़र्मा रहे थे कि (इराक़ की अराज़ी के लिये, जिसका इत्तिज़ाम ख़िलाफ़त की जानिब से उनके सुपुर्द किया गया था) तुम लोगों ने क्या किया है? क्या तुम लोगों को ये अंदेशा तोनहीं है कि तुमने ज़मीन का इतना महसूल (लगान) लगा दिया है जिसकी गुंजाइश न हो। उन लोगों ने जवाब दिया कि हमने उन पर ख़िराज का उतना ही भार डाला है जिसे अदा करने की ज़मीन में त़ाक़त है, उसमें कोई ज़्यादती नहीं की गई है। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि देखो फिर समझ लो कि तुमने ऐसी जमा तो नहीं लगाई है जो ज़मीन की त़ाक़त से बाहर हो।

اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدِي الْيَمْنَى: ((عَلَيْهِ يَدُ عُثْمَانَ)). فَضَرْبَ يَدِي يَدِي فَقَالَ: ((عَلَيْهِ لِعُثْمَانَ)). فَقَالَ لَهُ إِنَّ عُمَرَ: أَذْهَبَ بِهَا الْآنَ مَعَكَ.

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ مَجْدٍ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ أَحَدًا وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ، فَرَجَفَ، فَقَالَ: ((اسْكُنْ أَحَدًا - أَطْلَعُ حُرَّتَهُ بِرَجْلِهِ - فَلَيْسَ عَلَيْكَ إِلَّا نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ)).

8- بَابُ قِصَّةِ الْبَيْعَةِ وَالْإِتِّفَاقِ عَلَى

عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ

وَبِهِ مَقْتُلُ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا

3700- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَّانَةَ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ عُمَرَ بْنَ الْغَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَبْلَ أَنْ يُصَافَ بِأَيَّامِ الْمَدِينَةِ وَقَفَ عَلَى خُلَيْفَةِ بْنِ الْيَمَانِ وَعُثْمَانَ بْنِ حُنَيْفٍ قَالَ: كَيْفَ فَعَلْتُمَا أَنْتَ خَالِدَانِ أَنْ تَكُونَا قَدْ حَمَلْتُمَا الْأَرْضَ مَا لَا تُطِيقُ؟ قَالَا: حَمَلْنَاهَا أَمْرًا هِيَ لَهُ مُطِيقَةٌ. مَا فِيهَا كَثِيرٌ فَضَّلِ. قَالَ: انْظُرَا أَنْ تَكُونَا حَمَلْتُمَا الْأَرْضَ مَا لَا تُطِيقُ. قَالَ: قَالَا: لَا فَقَالَ عُمَرُ: لَيْنَ

रावी ने बयान किया कि उन दोनों ने कहा कि ऐसा नहीं होने पाएगा। उसके बाद उमर (रज़ि.) ने फर्माया कि अगर अल्लाह तआला ने मुझे जिन्दा रखा तो मैं इराक़ की बेवा औरतों के लिये इतना कर दूँगा कि फिर मेरे बाद किसी की मुहताज नहीं रहेगी। रावी अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि अभी इस बातचीत पर चौथा दिन ही आया था कि उमर (रज़ि.) ज़ख़मी कर दिये गये। अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि जिस सुबह को आप ज़ख़मी किये गये, मैं (फ़ज़्र की नमाज़ के इतिज़ार में) सफ़ के अंदर खड़ा था और मेरे और उनके दरम्यान अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के सिवा और कोई नहीं था हज़रत उमर की आदत थी कि जब सफ़ से गुज़रते तो फ़र्माते जाते कि सफ़ों सीधी कर लो और जब देखते कि सफ़ों में कोई खलल नहीं रह गया है तब आगे (मुसल्ले पर) बढ़ते और तक्बीर कहते। आप (फ़ज़्र की नमाज़ की) पहली रकअत में अमूमन सूरह यूसुफ़ या सूरह नहल या इतनी ही लम्बी कोई सूरत पढ़ते यहाँ तक कि लोग जमा हो जाते। उस दिन अभी आपने तक्बीर ही कही थी कि मैंने सुना, आप फ़र्मा रहे हैं कि मुझे क़त्ल कर दिया या कुत्ते ने काट लिया। अबू लूलू ने आपको ज़ख़मी कर दिया था। उसके बाद वो बदबख़्त अपना दो धारीदार खंजर लिये दौड़ने लगा और दाएँ और बाएँ जिधर भी फिरता तो लोगों को ज़ख़मी करता जाता। इस तरह उसने तेरह आदमियों को ज़ख़मी कर दिया, जिनमें सात हज़रात ने शहादत पाई। मुसलमानों में से एक साहब (हज़ान नामी) ने ये सूरतहाल देखी तो उन्होंने उस पर अपनी चादर डाल दी। उस बदबख़्त को जब यक़ीन हो गया कि अब पकड़ लिया जाएगा तो उसने खुद अपना भी गला काट लिया। फिर उमर (रज़ि.) ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) का हाथ पकड़कर उन्हें आगे बढ़ा दिया (अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि) जो लोग उमर (रज़ि.) के करीब थे, उन्होंने भी वो सूरतहाल देखी जो मैं देख रहा था लेकिन जो लोग मस्जिद के किनारे पर थे (पीछे की सफ़ों में) तो उन्हें कुछ मा'लूम नहीं हो सका। अल्बत्ता चूँकि उमर (रज़ि.) की क़िरात (नमाज़ में) उन्होंने नहीं सुनी तो सुबहानल्लाह! सुबहानल्लाह! कहते रहे। आख़िर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने लोगों को बहुत हल्की नमाज़ पढ़ाई। फिर जब लोग वापस होने लगे तो उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, इब्ने अब्बास (रज़ि.)! देखो मुझे किसने ज़ख़मी किया

سَلَّمَنِي اللَّهُ لَأَدْعُنَ أَرَامِلَ أَهْلِ الْبَرَاءِ لَا يَخْتَجِنَ إِلَى رَجُلٍ بَعْدِي أَبَدًا. قَالَ : كَمَا أَنْتَ عَلَيْهِ إِلَّا أَرْبَعَةٌ حَتَّى أَمِيبَ. قَالَ : إِنِّي لَقَالِمٌ مَا بَنِي وَتَمَنَى إِلَّا عَهْدُ اللَّهِ بِنِ عَاسٍ عِدَاةُ أَمِيبَ - وَكَانَ إِذَا مَرَّ بَيْنَ الصَّفَّيْنِ قَالَ : اسْتَوُوا، حَتَّى إِذَا لَمْ يَرِ فِيهِمْ خَلَلًا تَقَدَّمَ لَكَبْرًا، وَرَبَّمَا قَرَأَ سُورَةَ يُوسُفَ أَوْ النُّحْلَ أَوْ نَحْوَ ذَلِكَ فِي الرُّكْعَةِ الْأُولَى حَتَّى يَخْضَعَ النَّاسُ لِمَا هُوَ إِلَّا أَنْ كَبُرَ فَسَبَّحَهُ يَقُولُ : قَلْبِي - أَوْ أَكَلَنِي - الْكَلْبُ، حِينَ طَعَنَهُ، فَطَارَ الْعِلْجُ بِسِكِّينٍ ذَاتِ طَرَفَيْنِ، لَا يَمُرُّ عَلَى أَحَدٍ بَيْنَنَا وَلَا شِمَالًا إِلَّا طَعَنَهُ، حَتَّى طَعَنَ ثَلَاثَةَ عَشَرَ رَجُلًا مَاتَ مِنْهُمْ مَبْتَةً. فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ طَرَحَ عَلَيْهِ بُرْنَسًا، فَلَمَّا طَنَّ الْعِلْجُ أَنَّهُ نَاغُوذٌ نَحَرَ نَفْسَهُ. وَتَنَاولَ عُمَرُ يَدَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ فَقَطَعَهُ، فَمَنْ يَلِي عُمَرَ فَقَدْ رَأَى الَّذِي أَرَى، وَأَمَّا نَوَاحِي الْمَسْجِدِ فَإِنَّهُمْ لَا يَنْزَوْنَ غَيْرَ أَنَّهُمْ قَدْ فَقَدُوا صَوْتَ عُمَرَ وَهُمْ يَقُولُونَ: مَبْتَحَانِ اللَّهُ. فَصَلَّى بِهِمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ صَلَاةَ خَفِيفَةٍ، فَلَمَّا انْصَرَفُوا قَالَ: يَا أَيُّهَا عَاسٍ، انْظُرْ مَنْ قَلْبِي. فَجَالَ سَاعَةً، ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: غُلَامٌ الْمُبِيرَةِ. قَالَ: الصَّغْعُ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَاتَّلَهُ اللَّهُ، فَقَدْ أَمَرْتُ بِهِ مَعْرُوفًا، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَجْعَلْ

है? इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने थोड़ी देर घूम-फिरकर देखा और आकर फ़र्माया कि मुगीरह (रज़ि.) के गुलाम (अबू लल) ने आपको ज़ख़मी किया है। उमर (रज़ि.) ने दरयाफ़्त किया, वही जो कारीगर है? जवाब दिया कि जी हाँ। इस पर उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, अल्लाह उसे बर्बाद करे मैंने तो उसे अच्छी बात कहो थी (जिसका उसने ये बदला दिया) अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने मेरी मौत किसी ऐसे शख्स के हाथों नहीं मुक़द्दर की जो इस्लाम का मुद्दई हो। तुम और तुम्हारे वालिद (अब्बास रज़ि.) उसके बहुत ही ख़्वाहिशमन्द थे कि अजमी गुलाम मदीना में ज़्यादा से ज़्यादा लाए जाएँ। यूँ भी उनके पास गुलाम बहुत थे। इस पर इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने अर्ज किया, अगर आप फ़र्माए तो हम भी कर गुज़रें, मक़सद ये था कि अगर आप चाहें तो हम (मदीना में मुक़ीम अजमी गुलामों को) क़त्ल कर डालें। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, ये इतिहाई ग़लत फ़िक्र है। खुसूसन जबकि तुम्हारी जुबान में वो बातचीत करते हैं, तुम्हारे क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ अदा करते हैं और तुम्हारी तरह हज्ज करते हैं। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) को उनके घर उठाकर लाया गया और हम आपके साथ साथ आए। ऐसा मा'लूम होता था जैसे लोगों पर कभी इससे पहले इतनी बड़ी मुसीबत आई ही नहीं थी। कुछ तो ये कहते थे कि कुछ नहीं होगा (अच्छे हो जाएँगे) और कुछ कहते थे कि आपकी जिन्दगी ख़तर में है। उसके बाद खज़ूर का पानी लाया गया और आपने उसे पिया तो वो आपके पेट से बाहर निकल आया। फिर दूध लाया गया, उसे भी ज्यों ही आपने पिया ज़ख़म के रास्ते वो भी बाहर निकल आया। अब लोगों को यक़ीन हो गया कि आपकी शहादत यक़ीनी है। फिर हम अंदर आ गये और लोग आपकी ता'रीफ़ बयान करने लगे। इतने में एक नौजवान अंदर आया और कहने लगा या अमीरल मोमिनीन! आपको खुशख़बरी हो अल्लाह तआला की तरफ़ से आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत उठाई। इब्तिदा में इस्लाम लाने का शफ़र् हासिल किया जो आपको मा'लूम है। फिर आप ख़लीफ़ा बनाए गए और आपने पूरे इंसान के साथ हुकूमत की फिर शहादत पाई। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं तो इस पर भी खुश था कि इन बातों की वजह से बराबर पर मेरा मामला ख़त्म हो जाता, न प्रवाब होता और न अज़ाब। जब वो नौजवान जाने लगा तो उसका तहबन्द (इज़ार) लटक रहा था। उमर (रज़ि.)

میں نے ایک رجل مدعی الاسلام، لڑ کھنٹا
اُنت واپوک تجان ان تکثر الفلوج
بالمدينة، وكان الناس اکثرهم زلفا.
فقال: ان كنت قلت - اي ان كنت
قلنا. قال: كذبت، بغد ما تكلموا
بلسانكم، واصلوا قلوبكم، وخبوا
خبيكم؟ فاحتمل إلى بيته، فانطلقا معه،
وكان الناس لم يصيبهم مصيبة قبل
يومئذ: فقايل يقول: لا بأس، وقايل
يقول: احاف عليه. فاني بيني فشريه،
فخرج من جوفه. ثم ابي بلبن فشريه،
فخرج من جرحه، فعلموا انه ميت،
فدخلنا عليه، وجاء الناس يشون عليه.
وجاء رجل شاب فقال: ابشیر یا امیر
المؤمنین بيشری الله لك، من صحبة
رسول الله صلى الله عليه وسلم، وقدم
في الإسلام ما قد علمت، ثم وثقت
فعدلت، ثم شهادة. قال: وددت ان
ذلك كفاف لا علي ولا لي. فلما أدبر
إذا إزاره يمس الأرض، قال: زدوا علي
الغلام. قال: ابن أخي، ارفع قلبك، فإنه
أبقى لقلبك وأبقى لقلبك. يا عبد الله بن
عمر انظر ماذا علي من الدين. فحسبوه
فوجدوه ستة وثمانين ألفا أو نحوه. قال
: ان ولي له مال آل عمر فأدوه من
أموالهم، وإلا فسل في بني عدي بن
كعب، فإن لم تنف أموالهم فسل في

ने फ़र्माया उस लड़के को मेरे पास वापस बुला लाओ (जब वो आए तो) फ़र्माया, मेरे भतीजे! ये अपना कपड़ा ऊपर उठाये रखो कि उससे तुम्हारा कपड़ा भी ज्यादा दिना चलेगा और तुम्हारे रब से तक्वा का भी बाअिष है। ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! देखो मुझ पर कितना क़र्ज़ है? जब लोगों ने आप पर क़र्ज़ का शुमार किया तो तक़रीबन छियासी हजार निकला। उमर (रज़ि.) ने उस पर फ़र्माया कि अगर ये क़र्ज़ आले उमर (रज़ि.) के माल से अदा हो सके तो उन्हीं के माल से इसको अदा करना, वरना फिर बनी अदी बिन कअब से कहना, अगर उनके माल के बाद भी अदायगी न हो सके तो कुरैश से कहना, उनके सिवा किसी से इमदाद न तलब करना और मेरी तरफ़ से इस क़र्ज़ को अदा कर देना। अच्छा अब उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) के यहाँ जाओ और उनसे अर्ज़ करो कि उमर (रज़ि.) ने आपकी ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया है। अमीरुल मोमिनीन (मेरे नाम के साथ) न कहना क्योंकि अब मैं मुसलमानों का अमीर नहीं रहा हूँ। तो उनसे अर्ज़ करना कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अपने दोनों साथिया के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाही है। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने (आइशा रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर) सलाम किया और इजाज़त लेकर अंदर दाख़िल हुए, देखा कि आप बैठी रो रही हैं, फिर कहा कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने आपको सलाम कहा है और अपने दोनों साथियों के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाही है। आइशा (रज़ि.) ने कहा, मैंने उस जगह को अपने लिये मुंतख़ब कर रखा था लेकिन आज मैं उन्हें अपने पर तरजीह दूंगी। फिर जब इब्ने उमर (रज़ि.) वापस आए तो लोगो ने बताया कि अब्दुल्लाह आ गए तो उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुझे उठाओ। एक साहब ने सहारा देकर आपको उठाया। आपने दरयाफ़्त किया! क्या ख़बर लाए? कहा कि जो आपकी तमन्ना थी या अमीरुल मोमिनीन! हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया अल्हम्दुलिल्लाह, इससे अहम चीज़ अब मेरे लिये कोई नहीं रह गई थी। लेकिन जब मेरी वफ़ात हो चुके और मुझे उठाकर (दफ़न के लिये) ले चलो तो फिर मेरा सलाम उनसे कहना और अर्ज़ करना कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने आपसे इजाज़त चाही है। अगर वो मेरे लिये इजाज़त दे दें तब तो वहाँ दफ़न करना और अगर इजाज़त न दें तो मुसलमानों के

قُرَيْشٍ وَلَا تَعْدُهُمْ إِلَى غَيْرِهِمْ، فَأَذَّ عَوْ
هَذَا الْمَالِ.

انْطَلِقْ إِلَى عَاشَةِ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ فَقُلْ : يَقْرَأُ
عَلَيْكَ غَمْرُ السَّلَامِ - وَلَا تَقُلْ أَمِيرُ
الْمُؤْمِنِينَ، فَإِنِّي لَسْتُ الْيَوْمَ لِلْمُؤْمِنِينَ
أَمِيرًا - وَقُلْ : يَسْتَأْذِنُ غَمْرُ بْنُ الْخَطَّابِ
أَنْ يُدْفَنَ مَعَ صَاحِبِهِ. فَسَلَّمَ وَاسْتَأْذَنَ،
ثُمَّ دَخَلَ عَلَيْهَا فَوَجَدَهَا قَاعِدَةً تَبْكِي فَقَالَ :
يَقْرَأُ عَلَيْكَ غَمْرُ بْنُ الْخَطَّابِ السَّلَامَ
وَيَسْتَأْذِنُ أَنْ يُدْفَنَ مَعَ صَاحِبِهِ. فَقَالَتْ :
كُنْتُ أُرِيدُهُ لِنَفْسِي، وَلَأَوْفَرْتُهُ بِهِ الْيَوْمَ
عَلَى نَفْسِي. فَلَمَّا أَقْبَلَ قِيلَ : هَذَا عَبْدُ
اللَّهِ بْنِ غَمْرٍ قَدْ جَاءَ. قَالَ : ارْفَعُونِي.
فَأَسْتَدَّ رَجُلٌ إِلَيْهِ فَقَالَ : مَا لَنَيْكَ؟ قَالَ :
الَّذِي تُحِبُّ يَا أَمِيرُ الْمُؤْمِنِينَ، أَذْنْتُ.
قَالَ : الْحَمْدُ لِلَّهِ، مَا كَانَ مِنْ شَيْءٍ أَهَمُّ
إِلَيَّ مِنْ ذَلِكَ، فَإِذَا أَنَا قَضَيْتُ
فَأَحْبَلُونِي، ثُمَّ سَلَّمَ فَقُلْ : يَسْتَأْذِنُ غَمْرُ
بْنُ الْخَطَّابِ. فَإِنْ أَذْنْتُ لِي فَأَذْجَلُونِي،
وَإِنْ رَدُّنِي رُدُّونِي إِلَى مَقَابِرِ الْمُسْلِمِينَ.
وَجَاءَتْ أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ حَفْصَةُ وَالنَّسَاءُ
تَسِيرُ مَعَهَا، فَلَمَّا رَأَيْنَهَا قَمَلَتْ فَوَلَّجَتْ
عَلَيْهِ فَكُنْتُ عَنْدَهُ سَاعَةً، وَاسْتَأْذَنَ
الرِّجَالُ، فَوَلَّجَتْ دَاخِلًا لَهُمْ، فَسَمِعْنَا
نُكَّاءَهَا مِنَ الدَّائِلِ. فَقَالُوا : أَوْصِي يَا أَمِيرُ
الْمُؤْمِنِينَ، اسْتَخْلِفْ. قَالَ : مَا أَجِدُ أَحَقَّ
بِهَذَا الْأَمْرِ مِنْ هَؤُلَاءِ النَّفَرِ - أَوْ الرُّهْطِ

क़ब्रिस्तान में दफ़न करना। उसके बाद उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा (रज़ि.) आई, उनके साथ कुछ दूसरी ख़वातीन भी थीं। जब हमने उन्हें देखा तो उठ गये। आप उमर (रज़ि.) के करीब आई और वहाँ थोड़ी देर तक आंसू बहाती रहीं। फिर जब मदों ने अंदर आने की इजाज़त चाही तो वो मक़ान के अंदरूनी हिस्स में चली गई और हमने उनके रोने की आवाज़ सुनी फिर लोगों ने अज़ा किया अमीरुल मोमिनीन! ख़िलाफ़त के लिये कोई वसियत कर दीजिए। फ़र्माया कि ख़िलाफ़त का मैं उन हज़रत से ज़्यादा और किसी को मुस्तहिक नहीं पाता कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी वफ़ात तक जिनसे राज़ी और खुश थे फिर आपने अली, इम्रान, जुबैर, तलहा, सअद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का नाम लिया और ये भी फ़र्माया कि अब्दुल्लाह बिन उमर को भी सिर्फ़ मश्वर की हद तक शरीक रखना लेकिन ख़िलाफ़त से उन्हें कोई सरोकार नहीं रहेगा, जैसे आपने इब्ने उमर (रज़ि.) की तस्क़ीन के लिये ये फ़र्माया हो। फिर अगर ख़िलाफ़त सअद को मिल जाए तो वो उसके अहल हैं और अगर वो न हो सकें तो जो शख़्स भी ख़लीफ़ा हो वो अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में उनका तआवुन हासिल करता रहे क्योंकि मैंने उनको (क़ूफ़ा की गवर्नरी से) नाअहली या किसी ख़यानत की वजह से मअज़ूल नहीं किया है और उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को मुहाजिरीन अब्बलीन के बारे में वसियत करता हूँ कि वो उनके हुक्क पहचाने और उनके एहतिराम को मल्हूज़ रखे और मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को वसियत करता हूँ कि वो अंसार के साथ बेहतर मामला करे जो दारुल हिजरत और दारुल ईमान (मदीना मुनव्वरा) में (रसूलुल्लाह ﷺ की तशरीफ़ आवरी से पहले से) मुक़ीम हैं। (ख़लीफ़ा को चाहिये) कि वो उनके नेकों को नवाज़े और उनके बुरों को मुआफ़ कर दिया करे और मैं होने वाले ख़लीफ़ा को वसियत करता हूँ कि शहरी आबादी के साथ भी अच्छा मामला रखे कि ये लोग इस्लाम की मदद, माल जमा करने का ज़रिया और (इस्लाम के) दुश्मनों के लिये एक मुसीबत हैं और ये कि उनसे वही वसूल किया जाए जो उनके पास फ़ाज़िल हो और उनकी खुशी से लिया जाए और मैं होने वाले ख़लीफ़ा को बदवियों के साथ भी अच्छा सलूक करने की वसियत करता हूँ कि वो

— الَّذِينَ تَوَلَّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَنْهُمْ رَاضٍ: فَسَمَى عَلِيًّا وَعُثْمَانَ وَالزُّبَيْرَ وَطَلْحَةَ وَمَعْقِدًا وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ، وَقَالَ: يَشْهَدُكُمْ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، وَلَيْسَ لَهُ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ — كَهَيْئَةِ التَّغْزِيَةِ لَهُ — لِإِنْ أَصَابَتْ الْإِمْرَةَ مَعْقِدًا فَهُوَ ذَاكَ، وَإِلَّا فَلْيَسْتَعِينْ بِكُمْ مَا أُمِرَ بِهِ، فَإِنِّي لَمْ أَهْزِلْهُ عَنْ عَجْزٍ وَلَا عِيَانَةٍ. وَقَالَ: أَوْصِي الْخَلِيفَةَ مِنْ بَعْدِي بِالْمُهَاجِرِينَ الْأَوَّلِينَ، أَنْ يَغْرِفَ لَهُمْ حَقَّهُمْ، وَيَحْفَظَ لَهُمْ حُرْمَتَهُمْ. وَأَوْصِيهِ بِالْأَنْصَارِ خَيْرًا، الَّذِينَ تَوَلَّوْا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ، أَنْ يُقْبَلَ مِنْ مُخْصِيهِمْ، وَأَنْ يُقْبَى عَنْ مُسِيئِهِمْ. وَأَوْصِيهِ بِالْأَهْلِ الْأَنْصَارِ خَيْرًا، فَإِنَّهُمْ رِثَةُ الْإِسْلَامِ، وَجِبَاةُ السَّعَالِ وَغِيْطُ الْعُدُوِّ، وَأَنْ لَا يُؤْخَذَ مِنْهُمْ إِلَّا فَعْلُهُمْ عَنْ رِضَاهُمْ. وَأَوْصِيهِ بِالْأَغْرَابِ خَيْرًا، فَإِنَّهُمْ أَصْلُ الْقُرْبِ، وَمَادَّةُ الْإِسْلَامِ، أَنْ يُؤْخَذَ مِنْ خَوَاشِي أَمْوَالِهِمْ، وَتُرَدَّ عَلَى قَرَابَتِهِمْ. وَأَوْصِيهِ بِبَيْمَةِ اللَّهِ وَبَيْمَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنْ يُؤَلَّى لَهُمْ بِعَدَمِهِمْ، وَأَنْ يُقَاتَلَ مِنْ وَرَائِهِمْ، وَلَا يَكْلَفُوا إِلَّا طَائِفَتَهُمْ. فَلَمَّا قُبِعَ خَرَجْنَا بِهِ فَاذْهَبْنَا نَمْشِي فَسَلَّمَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ قَالَ: يَسْتَأْذِنُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ. قَالَتْ: ادْخُلُوهُ، فَأَدْخِلْ، فَوَضَعَ هُنَالِكَ مَعَ

असल अरब हैं और इस्लाम की जड़ हैं और ये कि उनसे उनका बचा-खुचा माल वसूल किया जाए और उन्हीं के मुहताजों में बांट दिया जाए और मैं होने वाले खलीफा को अल्लाह और उसके रसूल के अहद की निगाहदास्त की (जो इस्लामी हुकूमत के तहत गैर-मुस्लिमों से किया है) वसियत करता हूँ कि उनसे किये गये अहद को पूरा किया जाए, उनकी हिफाजत के लिये जंग की जाए और उनकी हैषियत से ज्यादा उन पर बोझ न डाला जाए। जब उमर (रजि.) की वफात हो गई तो हम वहाँ से उनको लेकर (आइशा रजि.) के हुजे की तरफ आए। अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) ने सलाम किया और अर्ज किया कि उमर बिन खत्ताब (रजि.) ने इजाजत चाही है। उम्मुल मोमिनीन ने कहा इन्हें वहाँ दफन किया जाए। चुनौचे वो वहीं दफन हुए। फिर जब लोग दफन से फारिग हो चुके तो वो जमाअत (जिनके नाम उमर रजि. ने वफात से पहले बताया थे) जमा हुई अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने कहा, तुम्हें अपना मामला अपने ही में से तीन आदमियों के सुपुर्द कर देना चाहिये इस पर जुबैर (रजि.) ने कहा कि मैंने अपना मामला अली (रजि.) के सुपुर्द किया। तलहा (रजि.) ने कहा कि मैं अपना मामला उस्मान (रजि.) के सुपुर्द करता हूँ। और सअद बिन अबी वक्रास (रजि.) ने कहा मैंने अपना मामला अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रजि.) के सुपुर्द कर दिया। उसके बाद अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रजि.) ने (उस्मान और अली रजि. को मुखात्तब करके) कहा कि आप दोनों हज़रात में से जो भी खिलाफ़त से अपनी बरात जाहिर करे हम उसी को खिलाफ़त देंगे और अल्लाह उसका निगरा व निगाहबान होगा और इस्लाम के हुक्क की ज़िम्मेदारी उस पर लाज़िम होगी, हर शख्स को ग़ौर करना चाहिये कि उसके ख़याल में कौन अफ़ज़ल है, उस पर ये दोनों हज़रात इस इत्तिख़ाब की ज़िम्मेदारी मुझ पर डालते हैं। अल्लाह की क़सम कि मैं आप हज़रात में से उसी को मुंतख़ब करूँगा जो सब में अफ़ज़ल होगा। उन दोनों हज़रात ने कहा कि जी हाँ। फिर आपने उन दोनों में से एक का हाथ पकड़ा और फ़र्माया कि आपकी क़राबत रसूलुल्लाह (ﷺ) से है और इब्तिदा में इस्लाम लाने का शर्फ़ भी, जैसा कि आपको खुद ही मा'लूम है। पस अल्लाह आपका निगरा है कि अगर मैं आपको खलीफ़ा बना दूँ तो क्या आप अदल व इम्नाफ़ से काम लेंगे और

صاحبتيه. فَلَمَّا فُرِغَ مِنْ ذَوْبِهِ اجْتَمَعَ مَوْلَاهُ الرَّفِطُ، فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: اجْعَلُوا أَمْرَكُمْ إِلَى ثَلَاثَةِ مِنْكُمْ. فَقَالَ الزُّبَيْرُ: قَدْ جَعَلْتُ أَمْرِي إِلَى عَلِيٍّ. فَقَالَ طَلْحَةُ: قَدْ جَعَلْتُ أَمْرِي إِلَى عُثْمَانَ، وَقَالَ سَعْدُ: قَدْ جَعَلْتُ أَمْرِي إِلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: أَيُّكُمْ تَبْرَأُ مِنْ هَذَا الْأَمْرِ فَتَجْعَلُهُ إِلَيَّ، وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَالْإِسْلَامُ لَيَنْظُرُنَ أَفْضَلَهُمْ فِي نَفْسِهِ؟ فَاسْتَبَيَّتِ الشُّيُخَانُ. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: أَتَجْعَلُونَهُ إِلَيَّ وَاللَّهِ عَلَيَّ أَنْ لَا أَلُو عَنْ أَفْضَلِكُمْ؟ قَالَا: نَعَمْ. فَأَخَذَ بِيَدِ أَحَدِهِمَا فَقَالَ: لَكَ قِرَاءَةٌ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْقَدَمُ فِي الْإِسْلَامِ مَا قَدْ عَلِمْتَ، فَأَلِّهِ عَلَىكَ لَيْنَ أَمْرَتِكَ لَعْدِلَيْنِ، وَلَكِنْ أَمَرْتُ عُثْمَانَ لَقَسَمْتُ وَلَطِيفَيْنِ. ثُمَّ خَلَا بِالْآخَرِ فَقَالَ: مِثْلَ ذَلِكَ. فَلَمَّا أَخَذَ السَّيْفَ قَالَ: أَوْفَعُ يَدَكَ يَا عُثْمَانُ، فَبَابِقَهُ، وَتَابَعَ لَهُ عَلِيٌّ، وَوَلَّحَ أَهْلُ الدَّارِ فَبَابِقُوهُ)).

[راجع: 1392]

अगर इप्मान (रज़ि.) को खलीफ़ा बना दूँ तो क्या आप उनके अहकाम को सुनेंगे और उनकी इताअत करेंगे? उसके बाद दूसरे साहब को तन्हाई में ले गये और उनसे भी यही कहा और जब उनसे वा'दा ले लिया तो फ़र्माया, ऐ इप्मान! अपना हाथ बढ़ाइये। चुनाँचे उन्होंने उनसे बेअत की और अली (रज़ि.) ने भी उनसे बेअत की। फिर अहले मदीना आए और सबने बेअत की। (राजेअ : 1392)

तशरीह :

हज़रत उमर (रज़ि.) की शहादत का वाक़िया बहुत ही दिल दहलाने वाला है। हज़रत मुगीरह (रज़ि.) के अजमी गुलाम अबू लूलू नामी मर्दूद ने तीन ज़बर् उस ज़हरीले खंजर के लगाए जिसको उसने तैयार किया था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने हाथ से इशारा किया और फ़र्माया उस कुत्ते को पकड़ लो उसने मुझे मार डाला। हुआ ये था कि मर्दूद बड़ा कारीगर था, लोहार भी था, नक्काश भी और बढ़ई भी। मुगीरह ने उस पर सौ दिरहम माहाना जिज़्या के मुकर्रर किये थे। उसने हज़रत उमर (रज़ि.) से शिकायत की कि मेरा जिज़्या बहुत भारी है उसमें कुछ तख़फ़ीफ़ की जाए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि जब तू इतना हुनर जानता है तो हर महीने सौ दिरहम तुझ पर ज़्यादा नहीं है। उस पर इस मर्दूद को गुस्सा आया। एक बार हज़रत उमर (रज़ि.) को रास्ते में मिला, हज़रत उमर (रज़ि.) ने पूछा, मैंने सुना है कि तू हवा की चक्की बना सकता है। उसने कहा, मैं तुम्हारे लिए एक ऐसी चक्की बनाऊँगा जिसका लोग हमेशा ज़िक्र करते रहेंगे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये सुनकर अपने साथियों से कहा कि उस गुलाम ने मुझको डराया। चन्द ही रातों के बाद उस मर्दूद ने ये किया। मुस्लिम ने मअदान से निकाला कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने शहादत से पहले खुल्बा सुनाया, फ़र्माया कि एक मुग़ ने मुझको तीन चोंचें मारीं ख़वाब में और मैं समझता हूँ मेरी मौत आ पहुँची चुनाँचे ज़ख़मी होने के कई दिनों बाद आपका इंतिक़ाल हो गया और हज़रत सुहैब (रज़ि.) ने उन पर नमाज़ पढ़ाई। क़ब्र में कहते हैं अबूबक्र (रज़ि.) का सर आँहज़रत (ﷺ) के काँधे के बराबर है और हज़रत उमर (रज़ि.) का सर अबूबक्र (रज़ि.) के काँधे के बराबर है। कुछ ने कहा कि अबूबक्र (रज़ि.) की क़ब्र आँहज़रत (ﷺ) के सर के मुक़ाबिल है और हज़रत उमर (रज़ि.) की क़ब्र आपके पाँव के बराबर। बहरहाल तीनों साहब हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे में मदफून हैं जिनकी क़ब्रों का मक़ाम अब तक बाहमी तौर पर महफूज़ है और क़यामत तक इशाअल्लाह महफूज़ रहेगा। बाक़ी सहाबा और अहले बैत और अज़्वाजे मुतहहरात बक़ीअ में मदफून हैं। मगर बक़ीअ में कई बार तूफ़ान और बारिश और वाक़ियात की वजह से क़ब्रों के निशान मिट गये। अंदाज़े से कुछ लोगों ने गुम्बद वग़ैरह बना दिये थे। उनके मुक़ामात यक़ीनी तौर से महफूज़ नहीं हैं। इतना तो यक़ीन है कि ये सब बुजुर्ग बक़ीअ मुबारक में हैं। रहे नाम अल्लाह का। उन फ़ज़ी गुम्बदों को सज़्ज़ी हुकूमत ने ख़त्म कर दिया है। अय्यदल्लाहु बिनरिहिलअज़ीज़

हज़रत उमर (रज़ि.) ने ख़िलाफ़त का मसला तै करने के लिये जो जमाअत नामज़द फ़र्माई उसमें अपने साहबज़ादे अब्दुल्लाह (रज़ि.) को सिर्फ़ बतौर मुशाहिद हाज़िर रहने के लिये कहा। या'नी अब्दुल्लाह (रज़ि.) के लिये इतना भी जो कहा कि वो मश्वरा वग़ैरह मे तुम्हारे साथ शरीक रहेगा, ये भी उनको तसल्ली देने के लिये, वो अपने वालिद के सख़्त रंज में थे। इतना फ़र्माकर गोया कुछ उनके आंसू पोंछ दिये। तबरी और इब्ने सअद वग़ैरह ने रिवायत किया, एक शख्स ने कहा अब्दुल्लाह को खलीफ़ा कर दीजिए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तुझको तबाह करे। मैं हक़ तअाला को क्या मुँह दिखाऊँगा? सुब्हानल्लाह! पाक नफ़्सी और इसाफ़ की हद हो गई। ऐसे लायक और फ़ाज़िल बेटे का वो भी मरते वक़्त ज़रा भी ख़याल न किया और जब तक ज़िन्दा रहे अब्दुल्लाह को उसामा बिन जैद से भी कम मआश देते रहे। सहाबा ने सिफ़ारिश भी की कि अब्दुल्लाह उसामा से कम नहीं हैं जिन लड़ाइयों में उसामा आँहज़रत (ﷺ) के साथ शरीक हुए हैं अब्दुल्लाह भी शरीक हुए हैं। फ़र्माया कि उसामा के बाप को आँहज़रत (ﷺ) अब्दुल्लाह के बाप से ज़्यादा चाहते थे तो मैंने आँहज़रत (ﷺ) की मुहब्बत को अपनी मुहब्बत पर मुक़दम रखा। अब्दुल्लाह हज़रत उमर (रज़ि.) की सारी ख़िलाफ़त मे कमी मआश की कमी और क़षरत अहलो-अयाल से परेशान ही रहे मगर एक गाँव की तहसीलदार या हुकूमत उनको न दी। आख़िर परेशान होकर सूबा यमन के हाकिम के पास गये। उनसे अपनी तकलीफ़ का हाल बयान किया। उन्होंने बयान

किया कि तुम जानते हो जैसे तुम्हारे वालिद सख्त आदमी हैं, मैं बैतुल माल से तो एक पैसा भी तुमको नहीं दे सकता। अल्बत्ता कुछ रुपया मदीना खाना करना है। तुम ऐसा करो उसका कपड़ा यहाँ खरीद लो और मदीना पहुँचकर माल बेचकर असल रुपया अपने वालिद के पास दाखिल कर दो और नफ़ा तुम ले लो तो अब्दुल्लाह ने उसी की गनीमत समझा। जब मदीना आए, हज़रत उमर (रज़ि.) को ख़बर पहुँची तो फ़र्माया असल और नफ़ा दोनों बैतुल माल में दाखिल करो। ये माल तुम्हारा या तुम्हारे बाप का न था। सहाबा ने बहुत सिफ़ारिश की कि आखिर ये इतनी दूर से आए हैं और पैसा अपनी हिफ़ज़त में लाए हैं, उनको कुछ उजरत मिलना चाहिये और हम सब राज़ी हैं कि आधा नफ़ा दिया जाए। उस वक़्त हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि ख़ैर तुम्हारी मज़ी में तो यूँ ही इस्साफ़ समझता हूँ कि कुल नफ़ा बैतुल माल में दाखिल कर दिया जाए। अफ़सोस स़द अफ़सोस जो शिया हज़रत उमर (रज़ि.) को बुरा कहते हैं। अगर ज़रा अपने गिरेबान में मुँह डालें तो समझ लें कि हज़रत उमर (रज़ि.) की एक एक बात ऐसी है जो उनकी फ़ज़ीलत और इस्साफ़-पसन्दी और हक़ शनासी की काफ़ी और रोशन दलील है। व मल्लम यज़्ज़लिल्लुहु लहु नुरन फमा लहु मिन नूर (खुलासा वहीदी)

बाब 9 : हज़रत अबुल हसन अली बिन अबू तालिब

۹- باب مناقب علي بن أبي طالب القرشي

अल क़ुरशी अल हाशमी (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

الهاشمي أبي الحسن رضي الله عنه

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था हज़रत अली (रज़ि.) से कि तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ और हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी वफ़ात तक उनसे राज़ी थे।

وقال النبي ﷺ لعلي: «أنت مني وأنا منك» وقال عمر: توفي رسول الله ﷺ وفور عنه راض.

तशरीह:

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) चौथे ख़लीफ़-ए-राशिद हैं। आपकी कुत्रियत अबुल हसन और अबू तुराब है। आठ साल की उम्र में इस्लाम कुबूल किया और ग़ुच्च-ए-तबूक के सिवा तमाम ग़ुच्चात में शरीक हुए। ये गन्दुमी रंग वाले, बड़ी रोशन, ख़ूबसूरत आँखों वाले थे। तवीलुल कामत न थे। दाढ़ी बहुत भरी हुई थी। आखिर में सर और दाढ़ी दोनों के बाल सफ़ेद हो गये थे। हज़रत उमरान (रज़ि.) की शहादत के दिन जुम्आ को 18 जिल्हिज्ज 35 हिजरी में ताजे ख़िलाफ़त उनके सर पर खा गया और 18 रमज़ान 40 हिजरी में जुम्आ के दिन अब्दुर्रहमान बिन मुलज्जम मुरादी ने आपके सर पर तलवार से हमला किया जिसके तीन दिन बाद आपका इंतिकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊना आपके दोनो सहाब ज़ादों हज़रत हसन और हज़रत हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ाफ़र (रज़ि.) ने आपको गुस्त दिया। हसन (रज़ि.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। सुबह के वक़्त आपको दफ़न किया गया। आपकी उम्र 63 साल की थी। मुदते ख़िलाफ़त चार साल, नौ माह और कुछ दिन हैं।

बाब के इन्वान में हज़रत अली (रज़ि.) के बारे में हदीष अन्त मिन्नी व अना मिन्क मज़कूर है। या'नी तुम मुझसे और मैं तुमसे हूँ। आँहज़रत (ﷺ) जब जंगे तबूक में जाने लगे तो हज़रत अली (रज़ि.) को मदीना में छोड़ गये उनको रंज हुआ, कहने लगे आप मुझको औरतों और बच्चों के साथ छोड़े जाते हैं, उस वक़्त आप (ﷺ) ने ये हदीष फ़र्माई या'नी जैसे हज़रत मूसा (रज़ि.) को हे तूर को जाते हुए हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) को अपना जानशीन कर गये थे, ऐसा ही मैं तुमको अपना कायम मुक़ाम करके जाता हूँ। इससे ये मतलब नहीं है कि मेरे बाद मुत्तसलन तुम ही मेरे ख़लीफ़ा होगे क्योंकि हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की हयात में गुजर गये थे। दूसरी रिवायत में इतना और ज़्यादा है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि मेरे बाद कोई नबी न होगा।

3701. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जंगे ख़ैबर के मौक़े पर बयान फ़र्माया कि कल मैं एक ऐसे शख्स को इस्लामी अलम (झण्डा) दूँगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआला

۳۷۰۱- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا

عَبْدُ الْغَنِيِّ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ

سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ

قَالَ: ((أَعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلًا يَفْتَحُ

फ़तह इनायत फ़र्माएगा। रावी ने बयान किया कि रात को लोग ये सोचते रहे कि देखिए अलम किसे मिलता है। जब सुबह हुई तो औहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में सब हज़रत (जो सरकदा थे) हाज़िर हुए। सबको उम्मीद थी कि अलम उन्हें ही मिलेगा। लेकिन हज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, अली बिन अबी तालिब कहाँ हैं? लोगों ने बताया कि उनकी आँखों में दर्द है। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उनके यहाँ किसी को भेजकर बुलवा लो। जब वो आए तो औहज़रत (ﷺ) ने उनकी आँख में अपना धूक लगाया और उनके लिये दुआ की। इससे उन्हें ऐसी शिफ़ा हासिल हुई जैसे कोई मर्ज़ पहले था ही नहीं। चुनाँचे आपने अलम उन्हीं को इनायत फ़र्माया। हज़रत अली (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं उनसे इतना लड़ूँगा कि वो हमारे जैसे हो जाएँ (या'नी मुसलमान बन जाएँ) आपने फ़र्माया, अभी यूँ ही चलते रहो। जब उनके मैदान में उतरो तो पहले उन्हें इस्लाम की दा'वत दो और उन्हें बताओ कि अल्लाह के उन पर क्या हुक्म वाजिब हैं। अल्लाह की क्रसम अगर तुम्हारे ज़रिये अल्लाह तआला एक शख्स को भी हिदायत दे दे तो वो तुम्हारे लिये सुख़ क़ैदों (की दौलत) से बेहतर है। (राजेअ: 2942)

औहज़रत (ﷺ) का मक्सद ये था कि जहाँ तक मुम्किन हो लड़ाई की नौबत न आने पाए। इस्लाम लड़ाई करने का हामी नहीं है। इस्लाम अमन चाहता है। उसकी जंग सिर्फ़ मुदाफ़िआना (रक्षात्मक) है।

3702. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे हातिम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अब्बा (रज़ि.) ने बयान किया, कि हज़रत अली (रज़ि.) ग़ज़व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) के साथ आँख दुखने की वजह से नहीं आ सके थे। फिर उन्होंने सोचा, मैं हज़ूर (ﷺ) के साथ ग़ज़वा में शरीकन हो सकूँ! चुनाँचे घर से निकले और आपके लश्कर से जा मिले। जब उस रात की शाम आई जिसकी सुबह को अल्लाह तआला ने फ़तह इनायत फ़र्माई थी तो औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कल मैं एक ऐसे शख्स को अलम दूँगा, या (आप ﷺ ने यूँ फ़र्माया कि कल) एक ऐसा शख्स अलम को लेगा जिससे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को मुहब्बत है या आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला उसके हाथ पर फ़तह इनायत फ़र्माएगा। इतिफ़ाक़ से हज़रत

اللّٰهُ عَلَىٰ يَدَيْهِ)۔ قَالَ قَبَاتُ النَّاسِ يَدُوْكَوْنَ لِيَتَّخِذُوْهُمُ اِيْهَمُ يَغْطَاها۔ فَلَمَّا اَصْبَحَ النَّاسُ غَدَوْا عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ كُلُّهُمْ يَرْجُوْ اَنْ يَغْطَاها، فَقَالَ: ((اَيْنَ عَلِيُّ بْنُ اَبِي طَالِبٍ؟)) فَقَالُوْا: يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ. قَالَ: ((فَارْمِلُوْا اِلَيْهِ فَاَتَوْنِيْ)). فَلَمَّا جَاءَ بَصَقَ فِيْ عَيْنَيْهِ وَدَعَا لَهُ، قَرَأَ حَتّٰى كَانَ لَمْ يَكُنْ بِوَجْعَةٍ، فَاغْطَاهُ الرَّايَةُ، فَقَالَ عَلِيٌّ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَقْبَلْهُمْ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مِثْلًا. فَقَالَ: ((اِنْفُذْ عَلٰی رِسَالِكَ حَتّٰى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ اِذْعُهُمْ اِلٰى الْاِسْلَامِ، وَاخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللّٰهِ فِيْهِ، فَوَ اللّٰهِ لَآنْ يَهْدُوْا اللّٰهُ بِكَ رَجُلًا وَّاحِدًا خَيْرٌ لِّكَ مِنْ اَنْ يَكُوْنَ حُمْرُ النَّعَمِ)). [راجع: 2942]

۳۷۰۲۔ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ اَبِي غَيْبٍ عَنْ سَلَمَةَ قَالَ : كَانَ عَلِيٌّ قَدْ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَيْبَرَ وَكَانَ بِوَرَمٍ فَقَالَ : اَنَا اَتَخَلَّفُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ ؟ فَخَرَجَ عَلَيَّ لِلْحَقِّ بِالنَّبِيِّ ﷺ. فَلَمَّا كَانَ مَسَاءَ اللَّيْلِ اَتَيْتِي فَتَحَهَا فِي صَبَاحِهَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: ((اَعْطِيْنِ الرَّايَةَ - اَوْ لِيَاخُذَنَّ الرَّايَةَ - غَدًا رَجُلًا يُحِبُّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ)) - اَوْ قَالَ: ((يُحِبُّ اللّٰهُ وَرَسُوْلَهُ - يَفْتَحُ اللّٰهُ

अली (रज़ि.) आ गये हालाँकि उनके आने की हमें उम्मीद नहीं थी। लोगों ने बताया कि ये हैं अली (रज़ि.) और हज़रत (ﷺ) ने अलम इन्हीं को दे दिया, और अल्लाह तआला ने उनके हाथ पर ख़ैबर फ़तह करा दिया। (राजेज़: 2975)

हज़रत अली (रज़ि.) से बेअते ख़िलाफ़त ज़िलहिज्ज 35 हिजरी में हुई थी जिसे जुम्हूर मुसलमानों ने तस्लीम किया।

3703. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि एक शख्स हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) के यहाँ आया और कहा कि ये फ़लाँ शख्स, उसका इशारा अमीरे मदीना (मरवान बिन हकम) की तरफ़ था, बरसरे मिय़बर हज़रत अली (रज़ि.) को बुरा भला कहता है। अबू हाज़िम ने बयान किया कि हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) ने पूछा क्या कहता है? उसने बताया कि उन्हें अबू तुराब कहता है। इस पर हज़रत सहल हंसने लगे और फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! ये नाम तो उनका रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रखा था और ख़ुद हज़रत अली (रज़ि.) को इस नाम से ज़्यादा अपने लिये और कोई नाम पसन्द नहीं था। ये सुनकर मैंने इस हदीज़ के जानने के लिये हज़रत सहल (रज़ि.) से ख़्वाहिश ज़ाहिर की और अज़्र किया ऐ अबू अब्बास! ये वाक़िया किस तरह से है? उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के यहाँ आए और फिर बाहर आकर मस्जिद में लेटे रहे। फिर आँ हज़रत (ﷺ) ने (फ़ातिमा रज़ि. से) दरयाफ़्त किया, तुम्हारे चचा के बेटे कहीं हैं? उन्होंने बताया कि मस्जिद में हैं। आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए, देखा तो उनकी चादर पीठ से नीचे गिर गई है और उनकी कमर पर अच्छी तरह से ख़ाक लग चुकी है। आप मिट्टी उनकी कमर से साफ़ फ़र्माने लगे और बोले, उठो ऐ अबू तुराब! उठो (दो मर्तबा आपने फ़र्माया)।

(राजेज़: 441)

3704. हमसे मुहम्मद बिन राफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन ने, उनसे ज़ायदा ने, उनसे अबू हुसैन ने, उनसे सअद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि एक शख्स अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) की ख़िदमत में आया और हज़रत इब्म़ान (रज़ि.) के बारे में पूछा

عَلَيْهِ، لَإِذَا نَحْنُ بِعَلِيٍّ وَمَا نَرْجُوهُ، فَقَالُوا: هَذَا عَلِيٌّ، فَأَعْطَاهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الرِّايَةَ فَفَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ. [راجع: 2975]

۳۷۰۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَارِمٍ عَنْ أَبِيهِ ((أَنَّ رَجُلًا جَاءَ إِلَى سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ فَقَالَ: «هَذَا فَلَانٌ - الْأَمِيرِ الْخَدِيعَةِ - يَذْغُو عَلِيًّا عِنْدَ الْمَبْرِ. قَالَ يَقُولُ مَاذَا؟ قَالَ: يَقُولُ لَهُ أَبُو تَرَابٍ، فَضَحِكَ. قَالَ: وَاللَّهِ مَا سَمَاءَ إِلَّا النَّبِيُّ ﷺ، وَمَا كَانَ لَهُ اسْمٌ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْهُ، فَاسْتَطَقَمْتُ الْخَدِيعَةَ سَهْلًا وَقُلْتُ: يَا أَبَا عَبَّاسٍ كَيْفَ؟ قَالَ: دَخَلَ عَلِيٌّ عَلَى فَاطِمَةَ، ثُمَّ خَرَجَ فَاسْتَطَقَعَ فِي الْمَسْجِدِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهُنَّ عَمَلِكُ؟ قَالَتْ: فِي الْمَسْجِدِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ فَوَجَدَ رِذَاءَهُ قَدْ سَقَطَ عَنْ ظَهْرِهِ وَخَلَصَ التُّرَابُ إِلَى ظَهْرِهِ. فَبَقِلَ يَمْسَحُ التُّرَابَ عَنْ ظَهْرِهِ فَيَقُولُ: ((اجْلِسْ أَبَا تَرَابٍ)). مَرَّتَيْنِ.

[راجع: 441]

۳۷۰۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ عَنْ زَائِدَةَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ غَيْثَةَ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى ابْنِ عَمْرِو فَسَأَلَهُ عَنْ عُثْمَانَ، فَذَكَرَ عَنْ

इब्ने उमर (रज़ि.) ने उनके महासिन का ज़िक्र किया। फिर कहा कि शायद ये बातें तुम्हें बुरी लगी होंगी। उसने कहा जी हाँ, हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तेरी नाक खाक आलूद करे। फिर उसने हज़रत अली (रज़ि.) के बारे में पूछा, उन्होंने उनके भी महासिन ज़िक्र किये और कहा कि हज़रत अली (रज़ि.) का घराना नबी करीम (ﷺ) के खानदान का निहायत इम्दा घराना है। फिर कहा कि शायद ये बातें भी तुम्हें बुरी लगी होंगी। उसने कहा कि जी हाँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बोले अल्लाह तेरी नाक खाक आलूद करे, जा और मेरा जो बिगाड़ना चाहे बिगाड़ लेना कुछ कमी न करना। (राजेअ: 3130)

पूछने वाला नाफेअ नामी खारजी था जो हज़रत उम्मान और हज़रत अली (रज़ि.) दोनों को बुरा समझता था। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) की खानदानी शराफत का भी ज़िक्र किया मगर खारजियों ने सब कुछ भुलाकर हज़रत अली (रज़ि.) के खिलाफ़ खुर्रुज किया और ज़लालत व गुमराही का शिकार हुए।

3705. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हकम ने, उन्होंने इब्ने अबी लैला से सुना, कहा हमसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने (नबी करीम ﷺ से) चक्की पीसने की तकलीफ़ की शिकायत की। उसके बाद आँ हज़रत (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) आपके पास आई लेकिन मौजूद नहीं थे, हज़रत आइशा (रज़ि.) से उनकी मुलाक़ात हो सकी तो उनसे उसके बारे में उन्होंने बात की जब हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के आने की ख़बर दी। उस पर आँ हज़रत (ﷺ) खुद हमारे घर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त हम अपने बिस्तरों पर लट चुके थे। मैंने चाहा कि खड़ा हो जाऊँ ले किन आपने फ़र्माया कि यूँ ही लेटे रहो। उसके बाद आप हम दोनों के दरम्यान बैठ गये और मैंने आपके क़दमों की ठण्डक अपने सीने में महसूस की। फिर आपने फ़र्माया कि तुम लोगों ने मुझसे जो त़लब किया है क्या मैं तुम्हें उससे अच्छी बात न बताऊँ। जब तुम सोने के लिये बिस्तर पर लेटो तो 34 मर्तबा अल्लाहु अकबर, 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह और 33 मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ लिया करो। ये अमल तुम्हारे लिये किसी ख़ादिम से बेहतर है।

(राजेअ: 3113)

مَحْسِن عَلَيْهِ، قَالَ: لَقُلْ ذَلِكَ يَسْؤُكَ؟
قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَأَرْغَمَ اللَّهُ بِأَنْفِكَ. ثُمَّ
سَأَلَهُ عَنْ عَلِيٍّ، فَذَكَرَ مَحْسِنَ عَلَيْهِ
قَالَ: هُوَ ذَلِكَ، بَيْنَهُ أَوْسَطُ بَيُوتِ النَّبِيِّ
ﷺ. ثُمَّ قَالَ: لَقُلْ ذَلِكَ يَسْؤُكَ؟ قَالَ:
أَجَلٌ. قَالَ: فَأَرْغَمَ اللَّهُ بِأَنْفِكَ، انْطَلِقْ
فَاجْهَدْ عَلَيَّ جَهْدَكَ)).

[راجع: 3130]

3705 - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا
غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ : سَمِعْتُ
ابْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ فَاطِمَةَ
عَلَيْهَا السَّلَامُ شَكَتْ مَا تَلْقَى مِنْ أَثَرِ
الرَّحَى. فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ سَبْعًا، فَأَنْطَلَقَتْ،
فَلَمْ تَجِدْهُ، فَوَجَدَتْ عَائِشَةَ فَأَخْبَرَتْهَا.
فَلَمَّا جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ عَائِشَةُ
بِمَجِيئِهَا فَاطِمَةَ، فَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْنَا -
وَلَقَدْ أَخَذْنَا مَصَاجِفَنَا، فَلَقَبْتِ لَأَقْرَبَ
لِقَالٍ: ((عَلَى مَكَائِكُنَا)). فَقَعَدَ بَيْنَنَا حَتَّى
وَجَدْتُ بَرْدَ لَدُنِّي عَلَى صَدْرِي، وَقَالَ:
((أَلَا أَعْلَمُكُمْ غَيْرًا مِمَّا سَأَلْتُمَنِي؟ إِذَا
أَخَذْتُمَا مَصَاجِعَكُمَا تَكْبِرَانِ أَرْبَعًا
وَتَلَاوَيْنِ، وَتَسَبَّحَانِ ثَلَاثًا وَتَلَاوَيْنِ،
وَتَحْمَدَانِ ثَلَاثًا وَتَلَاوَيْنِ، فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمَا
مِنْ خَادِمٍ)).

[راجع: 3113]

तशरीह : इमाम इब्ने तैमिया (रह) फ़र्माते हैं कि जो शख्स सोते वक़्त इस हदीस पर अमल करेगा वो अपने अंदर थकन महसूस नहीं करेगा।

3706. मुझसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद ने, उन्होंने इब्राहीम बिन सअद से सुना, उनसे उनके व लालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि क्या तुम उस पर खुश नहीं हो कि तुम मेरे लिये ऐसे हो जैसे हज़रत मूसा (अलैहि.) के लिए हज़रत हारून (अलैहि.) थे। (दीगर मक़ाम : 4416)

۳۷۰۶- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ قَالَ : سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ بْنَ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِي: «أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى؟»

[طرفه ۳ : ۴۴۱۶]

या'नी हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और हज़रत हारून (अलैहि.) का जैसा नसबी रिश्ता है ऐसा ही मेरा और तुम्हारा है।

3707. हमसे अली बिन जअद ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी उन्हें अय्यूब ने, उन्हें इब्ने सीरीन ने, उन्हें अबैदह ने कि हज़रत अली (रज़ि.) ने इराक़ वालों से कहा कि जिस तरह तुम पहले फ़ैसला किया करते थे अब भी किया करो क्योंकि मैं इख़ितलाफ़ को बुरा जानता हूँ। उसी वक़्त तक कि सब लोग जमा हो जाएँ या मैं भी अपने साथियों (अबूबक्र व उमर रज़ि.) की तरह दुनिया से चला जाऊँ। इब्ने सीरीन (रह) कहा करते थे कि आम लोग (रवाफ़िज़) जो हज़रत अली (रज़ि.) से रिवायात (शैख़ेन की मुख़ालफ़त में) बयान करते हैं वो क़तल झूठी हैं।

۳۷۰۷- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَجَفِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «الْفُتُوأُ كَمَا كُنْتُمْ تَقْضُونَ، فَإِنِّي أَكْرَهُ الْأَخْتِلَافَ، حَتَّى يَكُونَ لِلنَّاسِ جَمَاعَةٌ، أَوْ أَمُوتَ كَمَا مَاتَ أَصْحَابِي».. فَكَانَ ابْنُ سِيرِينَ يَرَى أَنَّ عَامَّةَ مَا يُرَوَّى عَنْ عَلِيٍّ الْكُذِبُ.

तशरीह : लफ़्ज़ राफ़ज़ी, रफ़ज़ से मुश्तक़ है। मुहक्किकीन कहते हैं कि उन शियाओं का नाम राफ़ज़ी इसलिये हुआ कि लिअन्नहम रफ़ज़ू ज़ैदब्न अलिथ्यिब्नलहुसेनि ब्नि अलिथ्यिब्न अबी तालिब बिअदमि तबस्क़इही मिन अबी बक्र व उमर वाक़िया ये हुआ था कि हज़रत ज़ैद बिन अली बिन हुसैन (रज़ि.) कूफ़ा तशरीफ़ लाए और लोगों को तबलीग़ की। बहुत से लोगों ने उनसे बेअत की मगर एक जमाअत ने कहा कि जब तक आप अबूबक्र व उमर को बुरा न कहेंगे, हम आपसे बेअत न करेंगे। हज़रत ज़ैद ने उनकी इस बात को मानने से इंकार कर दिया और वो अम्मे हक़ पर कायम रहे। उस वक़्त उस जमाअत ने ये नारा बुलन्द किया नहनु नरफ़ज़ुकहम तुमको छोड़ते हैं। उस वक़्त से ये गिरोह राफ़ज़ी के नाम से मौसूम हुआ। हज़रत पीर जीलानी (रह) ने इस गिरोह की सख़्त मज़म्मत की है। इस गिरोह के मुकाबिला पर ख़ारजी हैं जिन्होंने हज़रत अली (रज़ि.) पर ख़ुलूज किया और मिम्बर पर उनकी बुराई शुरू की। दोनों फ़रीक़ गुमराह हैं। ए'तिदाल का रास्ता अहले सुन्नत का है जो सब सहाबा (रज़ि.) की इज्जत करते हैं और किसी के ख़िलाफ़ लब कुशाई नहीं करते। उनकी लज़िशीं को अह्लाह के हवाले करते हैं। तिलक उम्मतुन क़द ख़लत लहा मा कसबत व लकुम मा कसबतु व ला तुस्अलून अम्मा कानू यअमलून

रिवायत में मज़कूर बुजुर्ग़ अबैदा (रज़ि.) इराक़ के क़ाज़ी थे। हज़रत उमर (रज़ि.) का कौल ये था कि उम्मे वलद की बेअदुस्त नहीं है। हज़रत अली (रज़ि.) का ख़याल था कि उम्मे वलद की बेअदुस्त है। अबैदा ने ये अर्ज़ किया कि अबूबक्र व उमर (रज़ि.) के ज़माने से तो हम उम्मे वलद की बेअत की नाजवाज़ी का फ़त्वा देते रहे हैं। अब आप (रज़ि.) का क्या हुक्म है उस वक़्त हज़रत अली (रज़ि.) ने ये फ़र्माया कि अब भी वही फ़ैसला करो।

बाब 10 : हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब हाशमी (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया था कि तुम मूसर और सीरत में मुझसे ज़्यादा मुशाबेह हो।

तशरीह :

हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) हज़रत अली (रज़ि.) से दस साल बड़े थे। उनका लक़ब जुल जनाहेन है। इस्लाम कुबूल करते हुए उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के बाई तरफ़ खड़े होकर नमाज़ अदा की थी। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जैसे तुमने मेरे साथ मिलकर नमाज़ पढ़ी है अल्लाह पाक तुमको जन्नत में दो बाज़ू अत्ता फ़र्माएगा और तुम जन्नत में उड़ते फिरोगे। ब इम्र 41 साल जंगे मौता 8 हिजरी में जाये शहादत नोश फ़र्माया। उनकी छाती में तलवारों और नेज़ों के 90 ज़ख़म पाए गए थे।

3708. हमसे अहमद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन दीनार अबू अब्दुल्लाह जुहनी ने बयान किया। उनसे इब्ने अबी ज़िब ने, उनसे सईद मख़बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि अबू हुरैरह (रज़ि.) बहुत अहादीथ बयान करता है। हालाँकि पेट भरने के बाद मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हर वक़्त रहता था, मैं ख़मीरी रोटी न खाता और न इम्दा लिबास पहनता था (या'नी मेरा वक़्त इलम के सिवा किसी दूसरी चीज़ के हासिल करने में न जाता) और न मेरी ख़िदमत के लिये कोई फ़लों या फ़लानी थी बल्कि मैं भूख की शिद्दत की वजह से अपने पेट से पत्थर बाँध लिया करता। कुछ वक़्त मैं किसी को कोई आयत इसलिये पढ़कर उसका मतलब पूछता था कि वो अपने घर ले जाकर मुझे खाना खिला दे, हालाँकि मुझे इस आयत का मतलब मा'लूम होता था। मिस्कीनों के साथ सबसे बेहतर सुलूक करने वाले हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) थे। हमें अपने घर ले जाते और जो कुछ भी घर में मौजूद होता वो हमको खिलाते। कुछ औकात तो ऐसा होता कि सिर्फ़ शहद या घी की कुप्पी ही निकालकर लाते और उसे हम फाड़कर उसमें जो कुछ होता उसे ही चाट लेते।

(दीगर मक़ाम : 5432)

3709. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उन्हें शअबी ने ख़बर दी कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) हज़रत जा'फ़र (रज़ि.)

١٠- بَابُ مَنَاقِبِ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ الْهَاشِمِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ : ((أَشَبَّهْتَ عَلِيًّا وَعَلِيًّا))

٣٧٠٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْرَافِيلَ بْنِ وَهَّابٍ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ الْجَعْفَرِيُّ عَنْ ابْنِ أَبِي ذُئْبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : ((أَنَّ النَّاسَ كَانُوا يَقُولُونَ: أَكْتَرُ أَبُو هُرَيْرَةَ، وَإِنِّي كُنْتُ أَلْزِمُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِشَيْءٍ نَطْبِي حَتَّى لَا أَكُلَ الْخَبِيرَ وَلَا أَلْبَسَ الْخَبِيرَ وَلَا يَخْنُقْنِي فَلَانٌ وَلَا فَلَانَةٌ، وَكُنْتُ أَلْبَسُ نَطْبِي بِالْخَصْبَاءِ مِنَ الْجُوعِ، وَإِن كُنْتُ لَأَسْتَفْرِئُ الرَّجُلَ الْآيَةَ هِيَ مَعِيَ كَمَا يَنْقَلِبُ بَيْنَ لُطْعِمَتَيْنِ. وَكَانَ أَخِيرَ النَّاسِ لِلْمُسْكِينِ جَعْفَرُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ كَانَ يَنْقَلِبُ بَيْنَا فَيَطْعِمُنَا مَا كَانَ فِي بَيْتِهِ، حَتَّى إِنْ كَانَ لَيُخْرِجُ إِلَيْنَا الْعُكَّةَ الْبَيْتِ لَيْسَ فِيهَا شَيْءٌ، فَنَشْفِهَا فَنَعْلَقُ مَا فِيهَا)). [طرفه في : ٥٤٣٢]

٣٧٠٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ عَنْ الشَّعْبِيِّ ((أَنَّ ابْنَ عَمَرَ رَضِيَ

के साहबजादे को सलाम करते तो यूँ कहा करते अस्सलामु अलैयका या इब्ने ज़िलु जनाहैन। ऐ दो परों वाले बुजुर्ग के साहबजादे तुम पर सलाम हो। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह) ने कहा हदीस में जो जनाहैन का लफ्ज़ है इससे मुराद गोशे हैं (दो कोने)। (दीनार मक़ाम : 4264)

اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ إِذَا سَلَّمَ عَلَى ابْنِ جَعْفَرٍ
قَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ دُؤَى
الْمُتَنَاحِينَ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: بِهَذَا كُنْ
لِي جَنَاحِي كُنْ لِي لَاحِقِي كُلِّ جَالِسٍ
جَنَاحَانِ. [طرفه ن : 4264].

उनके वालिद हज़रत जा'फ़र बिन अबी त़ालिब जंगे मौता में शहीद हुए। औ'हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने उनको ज़न्नत में देखा उनके जिस्म पर दो बाज़ू लगे हुए हैं। वो फ़रिश्तों के साथ उड़ते फिरते हैं। इसीलिये उनको जा'फ़र तय्यार कहा गया।

बाब 11 : हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब
(रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

۱۱- بَابُ ذِكْرِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ
الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

तशरीह : हज़रत अब्बास (रज़ि.) औ'हज़रत (ﷺ) से दो तीन बरस बड़े थे और आपके हकीक़ी चचा थे। कहते हैं कि मदीना में एक बार सख़्त क़ह़त हुआ। क़अब बिन मालिक (रह) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा कि बनी इस्राईल पर जब क़ह़त पड़ा था वो उनके पैग़म्बरों की औलाद का वसीला लिया करते, अल्लाह तज़ाला पानी बरसाता, हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा हमारे यहाँ भी अब्बास (रज़ि.) मौजूद हैं वो हमारे पैग़म्बर (ﷺ) के चचा हैं। चचा बाप की तरह होता है। फिर उनके पास गये और उनको साथ लेकर मिम्बर पर आकर दुआ की। अल्लाह ने ख़ूब पानी बरसाया। बावजूद उसके कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) को इतनी फ़ज़ीलत हासिल थी मगर हज़रत उमर (रज़ि.) ने अहले शूरा या'नी अरकाने मजलिस में जिनमें मुहाजिरीन अव्वलीन शरीक थे उनको दाख़िल नहीं किया क्योंकि वो फ़तहे मक्का तक मुसलमान नहीं हुए थे, उसके बाद मुसलमान हुए।

3710. हमसे हसन बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे अबू अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने बयान किया, उनसे शुमामा बिन अब्दुल्लाह बिन अनस ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) क़ह़त के ज़माने में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) को आगे बढ़ाकर बारिश की दुआ कराते थे और कहते कि ऐ अल्लाह! पहले हम अपने नबी (ﷺ) से बारिश की दुआ करते थे और तू हमें सैराबी अत्ता करता था और अब हम अपने नबी के चचा के ज़रिये बारिश की दुआ करते हैं। इसलिये हमें सैराबी अत्ता फ़र्मा। राबी ने बयान किया कि उसके बाद ख़ूब बारिश हुई।

(राजेअ : 1010)

۳۷۱۰- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ
حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ
حَدَّثَنِي أَبِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُثَنَّى عَنْ
ثَمَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسِ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ
كَانَ إِذَا قَطَطُوا اسْتَسْقَى بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ
الْمُطَّلِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ
إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا ﷺ فَتَسْقِنَا، وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ
بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا، قَالَ: فَيَسْقُونَ)).

[راجع : ۱۰۱۰]

तशरीह : हज़रत अब्बास (रज़ि.) रसूले करीम (ﷺ) के मुहतरम चचा हैं। उमर में आपसे दो साल बड़े थे। उनकी मौ'नमर बन्ते क़ासित वो ख़ातून हैं जिन्होंने सबसे पहले ख़ाना का'बा को ग़िलाफ़ से मुजय्यन किया। हज़रत अब्बास (रज़ि.) क़ुरैश के बड़े सरदारों में से थे। मुजाहिद (रह.) का बयान है कि उन्होंने अपनी मौत के वक़्त सत्तर गुलाम आज़ाद किये। बरोजे जुम्'आ 12 रजब 32 हिजरी में 88 साल की उम्र में वफ़ात पाई।

बाब 12 : हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के रिश्तेदारों के फ़ज्ज़ाइल और हज़रत फ़ातिमा बिनतुन्नबी (रज़ि.) के फ़ज्ज़ाइल का बयान और आँहज़रत (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि फ़ातिमा (रज़ि.) जन्नत की औरतों की सरदार हैं

आपकी वालिदा माजिदा हज़रत खदीजतुल कुबरा (रज़ि.) हैं। रमजान 2 हिजरी में उनका निकाह हज़रत अली (रज़ि.) से हुआ। ज़िलहिज्ज में रुख़सती अमल में आई। हज़रत हसन व हुसैन (रज़ि.) आप ही के बतने मुबारक से पैदा हुए। 28 साल की उम्र में आँहज़रत (रज़ि.) की वफ़ात के छः माह बाद आपने इंतिकाल फ़र्माया, रजियल्लाहु अन्हुमा व अरज़ाहा।

हाफ़िज़ (रह) ने कहा कि बाब का मतलब इसी फ़िक्रे (कराबत) से निकलता है और यहाँ कराबत वालों से अब्दुल मुत्तलिब की औलाद मुराद है। मर्द हों या औरतें जिन्होंने आँहज़रत (रज़ि.) को देखा या आपकी सुहबत में रहे जैसे हज़रत अली (रज़ि.) और उनकी औलाद, हज़रत हसन (रज़ि.), हज़रत हुसैन (रज़ि.), हज़रत मुहसिन (रज़ि.), हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.), उनकी साहबज़ादी उम्मे कुल्सुम (रज़ि.) जो हज़रत उमर (रज़ि.) की बीवी थीं। हज़रत जा'फ़र और उनकी औलाद अब्दुल्लाह और औन और मुहम्मद। कहते हैं एक बेटा और भी था अहमद। अक़ील और उनकी औलाद मुस्लिम बिन अक़ील, उम्मे हानी; हज़रत अली की बहन उनकी औलाद। इम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब उनकी औलाद यज़ला, इम्दह, उमामा। अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब उनके बेटे फ़ज़ल, अब्दुल्लाह, क़ज़म, उबैदुल्लाह, हारिष, सईद, अब्दुर्रहमान, क़पीर, औन। तमाम उनकी बेटियाँ उम्मे हबीबा, आमना, सफ़िया। अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अब्दुल मुत्तलिब, उनकी औलाद जा'फ़र, नौफ़िल, उनके बेटे मुगीरह, हारिष। अब्दुल मुत्तलिब की बेटियाँ अक़ीला, उमैमा, अरवा, सफ़िया ये सब लोग और उनकी औलाद क़यामत तक आँहज़रत (रज़ि.) की कराबत वालों में दाख़िल हैं (वहीदी)

3711. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा हमसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के यहाँ अपना आदमी भेजकर नबी करीम (ﷺ) से मिलने वाली मीराज़ का मुतालबा किया जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को फ़ैकी सूत में दी थी। या'नी आपका मुतालबा मदीना की उस जायदाद के बारे में था जिसकी आमदनी से आँहज़रत (रज़ि.) मज़ारिफ़े ख़ैर में ख़र्च करते थे और इसी तरह फ़दक की जायदाद और ख़ैबर के ख़ुमुस का भी मुतालबा किया। (राजेअ: 3092)

3712. हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) खुद फ़र्मा गए हैं कि हमारी मीराज़ नहीं होती। हम (अंबिया) जो कुछ छोड़ जाते हैं वो स़दका होता है और ये कि आले मुहम्मद के अज़राजात

۱۲- بَابُ مَنَاقِبِ قَرَابَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَمَنْقِبَةِ فَاطِمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَاطِمَةُ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ))

۳۷۱۱- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي غُرُوةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ أَرْسَلَتْ إِلَى أَبِي بَكْرٍ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ لِيَمَّا أَلَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ تَطْلُبُ صَدَقَةَ النَّبِيِّ ﷺ النَّبِيِّ بِالْمَدِينَةِ وَفَدَكَ، وَمَا بَقِيَ مِنْ خُمْسٍ خَيْرٍ)). (راجع: ۳۰۹۲)

۳۷۱۲- فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: ((إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا نَوَرَتْ، مَا تَوَرَّكْنَا لَهُوَ صَدَقَةٌ، إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ مِنْ هَذَا

उसी माल में से पूरे किये जाएँ मगर उन्हें ये हक़ नहीं होगा कि खाने के अलावा और कुछ तसर्फ़ करें और मैं, अल्लाह की क़सम हज़ूर के स़दके जो आपके ज़माने में हुआ करते थे उनमें कोई रद्दोबदल नहीं करूँगा बल्कि वही निज़ाम जारी रखूँगा जैसे हज़ूर (ﷺ) ने क़ायम फ़र्माया था। फिर हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आए और कहने लगे, ऐ अबूबक्र (रज़ि.)! हम आपकी फ़ज़ीलत व मर्तबे का इक़रार करते हैं। उसके बाद उन्होंने हज़ूर (ﷺ) से अपनी क़राबत का और अपने हक़ का ज़िक्र किया। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है आँ हज़रत (ﷺ) की क़राबत वालों से सुलूक करना मुझको अपनी क़राबत वालों के साथ सुलूक करने से ज़्यादा पसन्द है। (राजेअ: 3093)

3713. मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वट्टहाब ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने बयान किया, उनसे वाकिद ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना। वो हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान करते थे, वो अबूबक्र (रज़ि.) से कि उन्होंने कहा, आँ हज़रत (ﷺ) का ख़याल आपके अहले ब़ैत में रखो। (दीगर मक़ाम: 3751)

या'नी उनसे मुहब्बत व एहतिराम से पेश आओ और उनका ध्यान रखो।

3714. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़ातिमा (रज़ि.) मेरे जिस्म का टुकड़ा है। इसलिये जिसने उसे नाहक़ नाराज़ किया, उसने मुझे नाराज़ किया।

3715. हमसे यह्या बिन कुज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपनी साहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) को अपने उस मर्ज़ के मौक़े पर बुलाया जिसमें आपकी वफ़ात हुई, फिर आहिस्ता से

النَّاسَ - يَغِي مَالُ اللَّهِ - لَيْسَ لَهُمْ أَنْ يَزِيدُوا عَلَى الْمَالِ). وَإِنِّي وَاللَّهِ لَا أُخَيِّرُ شَيْئًا مِنْ صَدَقَةِ النَّبِيِّ ﷺ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهَا فِي عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، وَلَا أُعْمَلُنَ فِيهَا بِمَا عَمِلَ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. فَشَهِدْتُ عَلَى نَفْسِي أَنِّي لَأَقْدَرُ عِرْقًا يَا أَبَا بَكْرٍ فَصَلِّتُكَ - وَذَكَرَ قَرَأْتُهُمْ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَخَفِئَهُمْ - فَكَلَّمْتُ أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: وَاللَّهِ نَفْسِي بَيْنَهُ لِقَرَابَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَحَبُّ إِلَيَّ إِنْ أَصَلَ مِنْ قَرَابَتِي)).

[راجع: 13093]

3713- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ وَالْبِدِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي عَمْرِو بْنِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ: ((ارْقُبُوا مُحَمَّدًا ﷺ فِي أَهْلِ بَيْتِهِ)).

[طهره في: 3751].

3714- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ الْمُسَوِّبِ بْنِ مَخْرَمَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي، فَمَنْ أَغْضَبَهَا أَغْضَبَنِي)).

3715- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ ابْنَتَهُ فِي شُكْرَاهُ الَّذِي قُبِضَ

कोई बात कही तो वो रोने लगी फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बुलाया और आहिस्ता से कोई बात कही तो वो हँसने लगी। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उनसे उसके बारे में पूछा।

(राजेज़: 3623)

3716. तो उन्होंने बताया कि पहले मुझसे हज़ूर (ﷺ) ने आहिस्ता से ये फ़र्माया था कि हज़ूर (ﷺ) अपनी इसी बीमारी में वफ़ात पा जाएंगे, मैं उस पर रोने लगी। फिर मुझसे हज़ूर (ﷺ) ने आहिस्ता से फ़र्माया कि आप (ﷺ) के अहले बैत में सबसे पहले मैं आपसे जा मिलूँगी। इस पर मैं हँसी थी। (राजेज़: 3624)

तशरीह:

जैसा आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था वैसा ही हुआ कि आपकी वफ़ात के तक्रीबन छः माह बाद हज़रत फ़ातिम तुज़ाह्रा (रज़ि.) का इतिक़ाल हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने ये ख़बर वझे इलाही के ज़रिये से दी थी क्योंकि आप आलिमुल ग़ैब नहीं थे। हाँ अल्लाह पाक की तरफ़ से जो मा'लूम हो जाता वो फ़र्माते और फिर वो हर्फ़ ब हर्फ़ पूरा हो जाता। आलिमुल ग़ैब उसको कहते हैं जो खुद ब खुद बग़ैर किसी के बतलाए ग़ैब की ख़बरें पेश कर सके। ये इल्म ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह तआला को हासिल है और कोई नबी या वली ग़ैबदाँ नहीं हैं। कुआन पाक में अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) की जुबानी ऐलान करा दिया है कि कह दो मैं ग़ैब जानने वाला नहीं हूँ। अगर आप ग़ैबदाँ होते तो जंगे उहुद का अज़ीम ह्रादषा पेश न आता

बाब 13 : हज़रत जुबैर बिन अब्बाम (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि वो नबी करीम (ﷺ) के हवारी थे और उन्हें। (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारीन को) उनके सफ़ेद कपड़ों की वजह से कहते हैं (कुछ लोगों ने उनको धोबी बतलाया है)

आपकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह कुरैशी है। उनकी वालिदा हज़रत सफ़िया (रज़ि.) अब्दुल मुत्तलिब की बेटी और हज़ूर (ﷺ) की फूफी हैं। सोलह साल की उम्र में इस्लाम लाए। उनके चचा ने धुएँ में उनका दम घोंट दिया ताकि ये इस्लाम छोड़ दें। मगर ये प़ाबित क़दम रहे। अशर-ए-मुबशशरह में से हैं। तमाम ग़ज़्वात में शरीक रहे। लम्बे क़द और गोरे रंग के थे। एक ज़ालिम अमर बिन ज़रमूज़ नामी ने बसरा की सरज़मीन पर 36 हिजरी में बइम्र 64 साल उनको शहीद कर दिया। वादी-ए-सबाअ में दफ़न हुए, फिर उनको बसरा में मुंतक़िल किया गया। (रजियल्लाह)

3717. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मिरुहर ने, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मुझे मरवान बिन हक़म ने ख़बर दी कि जिस साल नक्सीर फूटने की बीमारी फूट पड़ी थी उस साल इब्मान (रज़ि.) की इतनी सख़्त नक्सीर फूटी कि आप हज़ के लिये भी न जा सके और (ज़िन्दगी से मायूस होकर) वसिय्यत भी कर दी, फिर उनकी ख़िदमत में कुरैश के एक साहब गये और कहा कि

يَهْيَا، فَسَارَهَا بِشَرِّهِ فَبَكَتْ، ثُمَّ دَعَاها فَسَارَهَا فَضَجَّكَتْ قَالَتْ: «فَسَأَلْتُهَا عَنْ ذَلِكَ». [راجع: 3713]

3716- «لَقَالَتْ: سَأَلَنِي النَّبِيُّ ﷺ فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يُفْتَعَنُ لِي وَجْهِهُ الَّذِي تَوَلَّى بِهِ فَبَكَتْ، ثُمَّ سَأَلَنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِ بَيْتِهِ أَتِيهِ أَتْبَعُهُ فَضَجَّكَتْ».

[راجع: 3714]

13- بَابُ مَنَاقِبِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: «مَوْ حَوَارِيُّ النَّبِيِّ ﷺ». وَسَمَّى الْحَوَارِيُّونَ لِطَاحِ لِبَابِهِمْ.

3717- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَبٍ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَرْوَانُ بْنُ الْحَكَمِ قَالَ: «رَأَيْتُ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَغُفَّ شَدِيدَةً سَنَةَ الرُّعُافِ حَتَّى خَسَهُ عَنِ الْحَجِّ وَأَوْصَى، فَدَعَلَ عَلَيْهِ رَجُلٌ

आप किसी को अपना खलीफ़ा बना दें। इब्मान (रज़ि.) ने दरयाफ्त फ़र्माया, क्या ये सबकी ख़्वाहिश है उन्होंने कहा जी हाँ। आपने पूछा कि किसे बनाऊँ? इस पर वो ख़ामोश हो गये। उसके बाद एक-दूसरे स़ाहब गये। मेरा ख़याल है कि वो हारिष थे। उन्होंने भी यही कहा कि आप किसी को ख़लीफ़ा बना दें। आपने उनसे भी पूछा, लोगों की राय किसके लिये है? इस पर वो भी ख़ामोश हो गये। तो आपने ख़ुद फ़र्माया, ग़ालिबन जुबैर की तरफ़ लोगों का रुज़्हान है? उन्होंने कहा जी हाँ। फिर आपने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है मेरे इल्म के मुताबिक़ भी वो उनमें सबसे बेहतर हैं और बिला शुब्हा वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की नज़रों में भी उनमें सबसे ज़्यादा महबूब थे।

(दीगर मक़ाम : 3718)

ये हज़रत इब्मान (रज़ि.) की राय थी कि वो हज़रत जुबैर (रज़ि.) को अपने ख़लीफ़ा नामज़द कर दें मगर इल्मे इलाही में ये मुक़ाम हज़रत अली (रज़ि.) के लिये मख़सूस था। इसीलिये तक्दीर के तहत चौथे ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत अली (रज़ि.) क़रार पाए। इसी तर्तीब के साथ ये चारों ख़ुलफ़-ए-राशिदीन कहलाते हैं और इसी तर्तीब से उनसे उन सबकी ख़िलाफ़त बरहक़ है।

3718. मुझसे अबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि मैंने मरवान से सुना कि मैं इब्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में मौजूद था कि इतने में एक स़ाहब आए और कहा कि किसी को आप अपना ख़लीफ़ा बना दीजिए। आपने दरयाफ्त फ़र्माया, क्या उसकी ख़्वाहिश की जा रही है? उन्होंने बताया कि जी हाँ हज़रत जुबैर (रज़ि.) की तरफ़ लोगों का रुज़्हान है। आपने उस पर फ़र्माया ठीक है। तुमको भी मा'लूम है कि वो तुममें बेहतर हैं। आपने तीन मर्तबा ये बात दोहराई। (राजेअ : 3717)

3719. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया जो अबू सलमा के स़ाहबज़ादे थे, उनसे मुहम्मद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुक़दिर ने बयान किया और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी जुबैर बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं।

مِنْ قُرْبَى قَال : اسْتَخْلِفْ. قَال : وَقَالُوا ؟
قَال : نَعَمْ. قَال : وَمَنْ ؟ فَسَكَتَ. فَذَخَلَ
عَلَيْهِ رَجُلٌ آخَرُ - أَحْمَبَةُ السَّخَارِثِ -
فَقَالَ : اسْتَخْلِفْ. فَقَالَ خُفَّانٌ : وَقَالُوا ؟
فَقَالَ : نَعَمْ. قَال : وَمَنْ هُوَ ؟ فَسَكَتَ.
قَال : فَلَعَلَّهُمْ قَالُوا الرَّبِيزُ ؟ قَال : نَعَمْ. أَمَّا
وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُ لَخَيْرُهُمْ مَا
خَلِئْتُ، وَإِنْ كَانَ لِأَحَبَّهُمْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ).

[طرقه ب : 3718]

3718 - حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ
حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ أَبِي
سَعِيدٍ مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ ((كَتَبْتُ عِنْدَ
عُثْمَانَ أَنَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ : اسْتَخْلِفْ. قَالَ :
وَقِيلَ ذَاكَ ؟ قَالَ : نَعَمْ، الرَّبِيزُ. قَالَ : أَمَّا
وَاللَّهِ إِنَّكُمْ لَتَعْلَمُونَ أَنَّهُ خَيْرُكُمْ. فَلَا تَأْخُذُوا)).

[راجع : 3717]

3719 - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ
حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ هُوَ ابْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ
مُحَمَّدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرِ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ : ((إِنْ
لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيَاءُ، وَإِنْ حَوَارِيَّ الرَّبِيزِ بْنِ

(राजेअ : 2846)

[राम: २८४६]

हवारी कुर्आन मजीद में हज़रत ईसा (अलैहि.) के फ़िदाइयों को कहा गया है। यूँ तो तमाम सहाबा किराम रिज्जानुल्लाह अजमईन ही आँहज़रत (ﷺ) के फ़िदाई थे मगर कुछ खुसूसियात की बिना पर आपने ये लक़ब हज़रत जुबैर (रज़ि.) को अता फ़र्माया।

3720. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन इर्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे अहज़ाब के मौक़े पर मुझे और अम्म बिन अबी सलमा (रज़ि.) को औरतों में छोड़ दिया गया था (क्योंकि ये दोनों हज़रत बच्चे थे) मैंने अचानक देखा कि हज़रत जुबैर (रज़ि.) (आपके वालिद) अपने घोड़े पर सवार बनी कुरैज़ा (यहूदियों के एक क़बीले की) तरफ़ आ जा रहे हैं। दो या तीन बार ऐसा हुआ। फिर जब वहाँ से वापस आया तो मैंने अर्ज़ किया, अब्बाजान! मैंने आपको कई बार आते-जाते देखा। उन्होंने कहा, बेटे! क्या वाकई तुमने भी देखा था? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि कौन है जो बनू कुरैज़ा की तरफ़ जाकर उनकी (नक़ल व हरकत के बारे में) ख़बर मेरे पास ला सके। उस पर मैं वहाँ गया और जब मैं (ख़बर लेकर) वापस आया तो आँहज़रत (ﷺ) ने (फ़र्तें मुसरत में) अपने वालिदैन का एक साथ ज़िक्र किया कर के फ़र्माया कि, मेरे माँ-बाप तुम पर फिदा हों।

3721. हमसे अली बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन इर्वा ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद ने कि जंगे यरमूक के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) के सहाबा ने हज़रत जुबैर बिन अब्बास (रज़ि.) से कहा आप हमला क्यूँ नहीं करते ताकि हम भी आपके साथ हमला करें। चुनौचे उन्होंने उन पर (रोमियों पर) हमला किया। उस मौक़े पर उन्होंने (रोमियों ने) आपके दो गहरे ज़ख़म शाने पर लगाए। दरम्यान में वो ज़ख़म था जो बद्र के मौक़े पर आपको लगा था। इर्वा ने कहा कि ज़ख़म इतने गहरे थे कि अच्छे हो जाने के बाद) मैं बचपन में उन ज़ख़मों के अंदर अपनी उँगलियाँ डालकर खेला करता था। (दीगर मक़ाम : 3973, 3975)

बाब 14 : हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) का

३७२०- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَنْ أَبِي أَنَسٍ أَنَّهُ سَمِعَ مِنْ عُرْوَةَ بْنِ حُرْثَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَتْ يَوْمَ الْأَحْزَابِ بَجِلْتُ أَنَا وَعُمَرُ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ فِي النِّسَاءِ، فَظَنَرْتُ لِقَاءَ أَنَا بِالزُّبَيْرِ عَلَى قَرِيبٍ مَخْطِلٍ إِلَيَّ لِي لِرِطَّةٍ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا، فَلَمَّا رَجَعْتُ لُفْتُ: يَا أَبَتِ زَائِلَكَ تَحْطِلُ، قَالَ: أَوْ هَلْ زَائِلِي يَا أَبَتِ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِ بِنِي لِرِطَّةٍ فَلْيَأْتِنِي بِغَيْرِهِمْ؟)) فَلَمْ تَلَقَيْتُ، فَلَمَّا رَجَعْتُ جَمَعَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَاهُ فَقَالَ: ((بِذَاكَ أَبِي زَائِلِي)).

३७२१- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا ابْنُ الصَّبَّاحِ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ ((أَنَّ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ قَالُوا لِلزُّبَيْرِ يَوْمَ وَلَقِيَ الزُّمُولُ: أَلَا تَشُدُّ قَسْدًا مَعَكَ؟ فَحَمِلَ عَلَيْهِمْ فَضَرَبَهُ مَرَّتَيْنِ عَلَى عَاقِبِهِ بَيْنَهُمَا مَرَّةٌ ضَرْبَةً جَرَّهَا يَوْمَ بَدْرٍ. قَالَ عُرْوَةُ: فَكَانَتْ أَذْخِلُ أَصَابِعِي فِي بِلَافِ الصُّرَبَاتِ النَّبِ وَأَنَا صَغِيرٌ)).

[طراه: 3, 3973, 3975]

14- بَابُ ذِكْرِ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ

तज्जिरा और हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनके बारे में कहा कि नबी करीम (ﷺ) अपनी वफ़ात तक उनसे राज़ी थे

وَقَالَ عُمَرُ: تَوَفَّى النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ عَنْهُ رَاضٍ

उनकी कुन्नियत अबू मुहम्मद कुरैशी है। अशर-ए-मुबशशरह में से हैं। ग़ज़व-ए-उहुद में उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक की हिफ़ाज़त के लिये अपने हाथों को बतौर ढाल पेश कर दिया। हाथों पर 75 ज़ख़्म आए। उँगलियाँ सुन्न हो गईं मगर आँहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-अनवर की हिफ़ाज़त के लिये डटे रहे। हज़रत तलहा (रज़ि.) हसीन चेहरा गन्दुमी, बहुत ज़्यादा बालों वाले थे। जंगे जमल में बस्र 64 साल शहीद हुए। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

उनका नसब ये था तलहा बिन उबैदुल्लाह बिन इम्मान बिन कअब बिन मुरह। कअब में आँहज़रत (ﷺ) के साथ मिल जाते हैं। जंगे जमल में शरीक हुए। हज़रत अली (रज़ि.) ने बावजूद ये कि तलहा उनके मुखालिफ़ लश्कर या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ शरीक थे, जब उनकी शहादत की ख़बर सुनी तो इतना रोये कि आपकी दाढ़ी तर हो गई। मरवान ने उनको तीर से शहीद किया। (वहीदी)

3722, 23. मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मुकहमी ने बयान किया, उनसे मुअतमिर ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इम्मान (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ उन जंगों में जिनमें रसूलुल्लाह (ﷺ) खुद शरीक हुए थे (उहुद की जंग में) तलहा (रज़ि.) और सअद (रज़ि.) के सिवा और कोई बाकी नहीं रहा था। (दीगर मक़ाम : 4060, 4061)

۳۷۲۲، ۳۷۲۳ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْفُضَيْمِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي غُنْمَانَ قَالَ: ((لَمْ يَتَّقِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي بَعْضِ بِلَاقِ الْأَيَّامِ النَّبِيُّ قَاتِلَ لَيْثِهِمْ رَسُولُ اللَّهِ غَيْرَ طَلْحَةَ وَسَعْدٍ، عَنْ حَدِيثِهِمَا)).

[طرفه في : ۱۰-۱۱]. [طرفه في : ۱۰-۱۱].

3724. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे कैस बिन अबी हाज़िम ने कि मैंने हज़रत तलहा (रज़ि.) का वो हाथ देखा है जिससे उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की (जंगे उहुद में) हिफ़ाज़त की थी कि वो बिलकुल बेकार हो चुका था।

۳۷۲۴ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي خَالِدٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ قَيْسٍ بْنِ أَبِي حَارِثٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ يَدَ طَلْحَةَ النَّبِيِّ وَفِي يَدِهَا النَّبِيُّ ﷺ لَدَ شَلَّتْ)).

[طرفه في : ۱۲-۱۳].

बाब 15 : हज़रत सअद बिन अबी वक्रास अज़् जुहरी (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

۱۵ - بَابُ مَنَاقِبِ سَعْدِ بْنِ أَبِي

وَقَاصِ الزُّهْرِيِّ

बनू जुहुरा नबी करीम (ﷺ) के मामू होते थे। इनका असल नाम सअद बिन अबी मालिक है।

وَبَنُو زُهْرَةَ أَخَوَاتُ النَّبِيِّ ﷺ، وَهُوَ سَعْدٌ بْنُ مَالِكٍ

तशरीह : ये अशर-ए-मुबशशरह में से हैं। कुरैशी जुहरी हैं। सत्तरह साल की उम्र में इस्लाम लाए। अल्लाह तआला के रास्ते में सबसे पहले तीरंदाज़ी करने वाले थे। मुस्तजाबुद्दअवात मशहूर थे। हज़रत इम्मान (रज़ि.) ने इनको कूफ़ा का गवर्नर बनाया था। हुज़ूर (ﷺ) ने इर्मि फ़िदाक उम्मी व उमी तीरंदाज़ी करो तुम पर मेरे माँ-बाप फ़िदा हों, उनके लिये फ़र्माया

था। सत्तर साल की उम्र में 55 हिजरी में वफ़ात पाई। मदीना में दफ़न किये गये। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु। इनका नसबनामा ये है सअद बिन अबी वक्रास बिन वुहैब बिन अब्दे मुनाफ़ बिन जुहरा बिन किलाब बिन मुरह, ये किलाब पर ओहज़रत (ﷺ) से मिल जाते हैं और वुहैब हज़रत आमना ओहज़रत (ﷺ) की वालिदा माजिदा के चचा थे।

3725. मुझसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वट्टहाब ने बयान किया, कहा कि मैंने यहा से सुना, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, कहा कि मैंने हज़रत सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि जंगे उहुद के मौक़े पर मेरे लिये नबी करीम (ﷺ) ने अपने वालिदेन को एक साथ जमा करके यूँ फ़र्माया कि मेरे माँ-बाप तुम पर फ़िदा हों। (दीगर मक़ाम : 4055, 4056, 4057)

3726. हमसे मक़ो बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम ने बयान किया, उनसे आमिर बिन सअद ने और उनसे उनके वालिद (सअद बिन अबी वक्रास रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे ख़ूब याद है। मैंने एक ज़माने में मुसलमानों का तीसरा हिस्सा अपने तई देखा। इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा इस्लाम के तीसरे हिस्से से मुराद है कि रसूले करीम (ﷺ) के साथ सिर्फ़ तीन मुसलमान थे जिनमें तीसरा मुसलमान मैं था। (दीगर मक़ाम : 3727, 3858,)

3727. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने अबी ज़ायदा ने ख़बर दी, कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम बिन इत्बा बिन अबी वक्रास ने बयान किया, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, कहा कि मैंने हज़रत सअद बिन अबी वक्रास से सुना। उन्होंने कहा कि जिस दिन मैं इस्लाम लाया, उसी दिन दूसरे (सबसे पहले इस्लाम में दाख़िल होने वाले हज़राते सहाबा) भी इस्लाम में दाख़िल हुए हैं। और मैं सात दिन तक उसी तौर पर रहा कि मैं इस्लाम का तीसरा फ़र्द था। इब्ने अबी ज़ायदा के साथ इस हदीष को अबू उसामा ने भी रिवायत किया।

(राजेअ : 3726)

तशरीह :

इस पर ये ए' तिराज़ हुआ है कि अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) और कई आदमी सअद से पहले इस्लाम लाए थे। कुछ ने कहा कि सअद ने अपने इल्म की रू से कहा मगर सहीह नहीं क्योंकि इब्ने अब्दुल बर (रह) ने सअद से नक़ल किया कि मैं उन्नीस साल की उम्र में इस्लाम लाया, अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) के हाथ पर। उस वक़्त मैं सातवाँ मुसलमान था। कुछ ने कहा सहीह इस हदीष की यूँ है, मा अस्लम अहदुन फिल्यौमि अल्लज़ी अस्लमतु फीहि या' नी जिस दिन मैं मुसलमान हुआ उस दिन कोई मुसलमान नहीं हुआ। हाफ़िज़ ने कहा इब्ने मुन्दह ने कहा मअरिफ़त में इस हदीष को यूँ ही नक़ल किया है इस सूत में कोई इश्काल न रहेगा। (वहीदी)

٣٧٢٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا يَقُولُ: ((جَمَعَ لِي النَّبِيُّ ﷺ أَهْلَ بَيْتِهِ يَوْمَ أُحُدٍ)).

[أطرافه ب: ٤٠٥٧، ٤٠٥٦، ٤٠٥٥.]

٣٧٢٦- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ عَنْ هَاشِمِ بْنِ عَامِرٍ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((لَقَدْ رَأَيْتُنِي وَإِنَّا كُنَّا الْإِسْلَامَ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ: كُنَّا الْإِسْلَامَ يَقُولُ أَنَا ثَلَاثٌ لَثَلَاثَةٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ.

[أطرافه ب: ٣٧٢٧، ٣٨٥٨.]

٣٧٢٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ عَنْ هَاشِمِ بْنِ هَاشِمٍ عَنْ هَاشِمِ بْنِ عَامِرٍ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ: سَمِعْتُ سَعْدًا بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ: ((مَا أَسْلَمَ أَحَدٌ إِلَّا فِي الْيَوْمِ الَّذِي أَسْلَمْتُ فِيهِ، وَلَقَدْ كُنْتُ مَتَبَعَةً لِّهَامٍ وَإِنِّي كُنْتُ الْإِسْلَامَ)). ثَابِتَةُ أَبُو أَسَمَةَ.

[راجع: ٣٧٢٦.]

3728. हमसे हाशिम ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन औन ने बयान किया, कहा हमसे खालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे कैस ने बयान किया कि मैंने सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि अरब में सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में, मैंने तीरंदाजी की थी। (इब्तिद-ए-इस्लाम में) हम नबी करीम (ﷺ) के साथ इस तरह ग़ज़्वात में शिरकत करते थे कि हमारे साथ पेड़ के पत्तों के सिवा खाने के लिये भी कुछ न होता था। उससे हमें ऊँट और बकरियों की तरह अजाबत होती थी। या'नी मिली हुई नहीं होती थी। लेकिन अब बनी असद का ये हाल है कि इस्लामी अहकाम पर अमल में मेरे अंदर ऐब निकालते हैं (चह ख़ोश) ऐसा हो तो मैं बिलकुल महरूम और बे नज़ीब ही रहा और मेरे सब काम बर्बाद हो गये। हुआ ये था कि बनी असद ने हज़रत उमर (रज़ि.) से सअद (रज़ि.) की चुगली की थी, ये कहा था कि वो अच्छी तरह नमाज़ भी नहीं पढ़ते।

۳۷۲۸- حَدَّثَنَا هَاشِمٌ حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَوْنٍ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ جَدِّهِ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَكَارَةَ يَقُولُ: ((إِنِّي لَأَوَّلُ الْعَرَبِ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، وَكُنَّا نَقْرُو مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا لَنَا طَعَامٌ إِلَّا وَزَقُّ الشَّجَرِ، حَتَّى إِنْ أَخَذْنَا لَيَضَعُ كَمَا يَضَعُ الْبَعِيرُ أَوْ الشَّاةُ مَا لَهُ خِلْطٌ، ثُمَّ أَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ يُعَزِّرُنِي عَلَى الْإِسْلَامِ لَقَدْ خَبْتُ إِذَا وَضِلَّ عَلَيَّ. وَكَانُوا وَشُوا بِهِ إِلَى عُمَرَ قَالُوا: لَا يَحْسُنُ يَصْلَى)).

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) के दामादों का

बयान अबुल आस बिन रबीअ भी उन ही में से हैं

3729. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुज़से अली बिन हुसैन ने बयान किया और उनसे मिस्वर बिन मख्रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि अली (रज़ि.) ने अबू जहल की लड़की को (जो मुसलमान थीं) पैग़ामे निकाह दिया। उसकी ख़बर जब हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को हुई तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आई और अर्ज़ किया कि आपकी क़ौम का ख़याल है कि आपको अपनी बेटियों की ख़ातिर (जब उन्हें कोई तकलीफ़ दे) किसी पर गुस्सा नहीं आता। अब देखिए ये अली अबू जहल की बेटी से निकाह करना चाहते हैं। इस पर आँहुज़ूर (ﷺ) ने सहाबा को ख़िताब फ़र्माया। मैंने आपको खुत्बा पढ़ते सुना, फिर आपने फ़र्माया, अम्मा बअद! मैंने अबुल आस बिन रबीअ से (जैनब रज़ि. की, आपकी सबसे बड़ी बेटी) शादी की तो उन्होंने जो बात भी कही उसमें वो सच्चे उतरे और बिला शुब्हा फ़ातिमा भी मेरे

۱۶- بَابُ ذِكْرِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ

مِنْهُمْ أَبُو الْعَاصِ بْنِ الرَّبِيعِ

۳۷۲۹- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ الْمُسَوِّزَ بْنَ مَخْرَمَةَ قَالَ: ((إِنِّي عَلِيًّا خَطَبَ بِنْتُ أَبِي جَهْلٍ، فَسَمِعْتُ بِذَلِكَ فَاطِمَةَ، فَأَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَوْمَئِذٍ قَوْمُكَ أَنْكَ لَا تَقْضِي لِبَنَاتِكَ، وَهَذَا عَلِيٌّ نَاكِحٌ بِنْتُ أَبِي جَهْلٍ. فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَسَمِعْنَاهُ حِينَ تَشْهَدُ يَقُولُ: ((أَمَّا بَعْدُ أَنْكَحْتُ أَبَا الْعَاصِ بْنِ الرَّبِيعِ فَحَدَّثَنِي وَصَدَّقَنِي، وَإِنَّ فَاطِمَةَ بَضَعَتْ مِنِّي، وَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ يَسُوءَ مَا، وَاللَّهِ لَا تَجْمَعُ بِنْتُ

(जिस्म का) एक टुकड़ा है और मुझे ये पसन्द नहीं कि कोई भी उसे तकलीफ दे। अल्लाह की क्रसम, रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी और अल्लाह तआला के एक दुश्मन की बेटी एक शाख्स के पास जमा नहीं हो सकती। चुनौचे अली (रज़ि.) ने उस शादी का इरादा तर्क कर दिया। मुहम्मद बिन अम्म बिन हल्हला ने इब्ने शिहाब से ये इजाफा किया है। उन्होंने अली बिन हुसैन से और उन्होंने मिस्वर (रज़ि.) से बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने बनी अब्दे शम्स के अपने एक दामाद का ज़िक्र किया और हुकूके दामादी की अदायगी की ता'रीफ़ फ़र्माई। फिर फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जो बात भी कही सच्ची कही और जो वा'दा भी किया पूरा कर दिखाया।

तशरीह : हज़रत अबुल आस मुकसम बिन अर रबीअ हैं। आँहज़रत (ﷺ) की साहबजादी हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) उनके निकाह में थीं। बद्र के दिन इस्लाम कुबूल करके मदीना की तरफ़ हिजरत की। आँहज़रत (ﷺ) से सच्ची मुहब्बत रखते थे। जंगे यमामा में जामे शहादत नोश फ़र्माया। उनकी फ़ज़ीलत के लिये ये काफ़ी है कि खुद आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी वफ़ादारी की ता'रीफ़ फ़र्माई। जब हज़रत अबुल आस (रज़ि.) का ये हाल है तो फिर अली (रज़ि.) से तअज्जुब है कि वो अपना वा'दा क्यों पूरा न करें! हुआ ये था कि अबुल आस (रज़ि.) ने हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) से निकाह होते वक़्त ये शर्त कर ली थी कि उनके रहने तक मैं दूसरी बीवी न करूंगा। इस शर्त को अबुल आस ने पूरा किया। शायद हज़रत अली (रज़ि.) ने भी यही शर्त की हो लेकिन जुवैरिया को पयाम देते वक़्त वो भूल गये थे। जब आँहज़रत (ﷺ) ने इताब (गुस्सा) का ये ख़ुत्बा पढ़ा तो उनको अपनी शर्त याद आ गई और वो इस इरादे से बाज़ आए। कुछ ने कहा कि हज़रत अली (रज़ि.) से ऐसी कोई शर्त नहीं हुई थी लेकिन हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) बड़े रंजों में गिरफ़्तार थीं। वालिदा गुज़र गई, तीनों बहनें गुज़र गई, अकेली बाक़ी रह गई थीं। अब सौकन आने से वो परेशान होकर अंदेशा था कि उनकी जान को नुक़सान पहुँचे। इसलिये आपने हज़रत अली (रज़ि.) पर इताब (गुस्सा) फ़र्माया था। (वहीदी)

बाब 17 : रसूले करीम (ﷺ) के गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिषा के फ़ज़ाइल का बयान और हज़रत बराअ (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत ज़ैद बिन हारिषा से फ़र्माया था, तुम हमारे भाई और हमारे मौला हो.

तशरीह : हज़रत ज़ैद बिन हारिषा की कुत्रियत अबू उसामा है। उनकी वालिदा सुअदा बन्ते प्रअलबा हैं जो बनी मज़न में से थीं आठ साल की उम्र में हज़रत ज़ैद को डाकुओं ने अग़वा करके मक्का में चार सौ दिरहम में बेच डाला। ख़रीदने वाले हकीम बिन हिज़ाम बिन ख़ुवैलिद थे जिन्होंने उनको ख़रीदकर अपनी फूफी हज़रत ख़दीजतुल कुबरा को दे दिया। आँहज़रत (ﷺ) से शादी के बाद हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये हिबा कर दिया। इब्तिदा में उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था और उनका निकाह अपनी आज्ञादकर्दा लौण्डी उम्मे ऐमन से कर दिया था जिनसे उसामा (रज़ि.) पैदा हुए। उसके बाद ज़ैनब बन्ते जहश से उनका निकाह हुआ। आयते कुआनी, फ़लम्मा क़ज़ा ज़ैदुन मिन्हा वतरा (अल अहज़ाब . 37) में इन्ही का नाम मज़कूर है। ग़ज़्व-ए-मौता में बउम्र 55 साल 8 हिजरी में अमीरे लश्कर की हैषियत से शहीद कर दिये गये।

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَبَنَتْ عَدُوًّا لَهُ عِنْدَ رَجُلٍ وَاحِدٍ)). قَوْلُهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ ((مَنْ مَلَكَ مِنْ خَلْقِهِ مِنْ غَيْرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ خَلْفَةَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيٍّ بْنِ مَسُورٍ ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ صِفَتَهُ لَهُ مِنْ أَبِي عَبْدِ شَمْسٍ فَأَنَّى عَلَيْهِ لِي مُصَافَرَتُهُ إِلَيَّ فَأَخْشَنُ، قَالَ: حَدَّثَنِي لَمْدَقِيُّ، وَوَعَدَنِي فَوَفَّى لِي)).

وَزَادَ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو بْنُ خَلْفَةَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيٍّ بْنِ مَسُورٍ ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ صِفَتَهُ لَهُ مِنْ أَبِي عَبْدِ شَمْسٍ فَأَنَّى عَلَيْهِ لِي مُصَافَرَتُهُ إِلَيَّ فَأَخْشَنُ، قَالَ: حَدَّثَنِي لَمْدَقِيُّ، وَوَعَدَنِي فَوَفَّى لِي)).

١٧ - بَابُ مَنَاقِبِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ
مَوْلَى النَّبِيِّ ﷺ
وَقَالَ الْبَرَاءُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنْتَ أَعْوَنُ وَمَوْلَانَا))

3730. हमसे खालिद बिन मुखलद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक फौज भेजी और उसका अमीर उसामा बिन जैद को बनाया। उनके अमीर बनाए जाने पर कुछ लोगों ने ए'तिराज किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर आज तुम इसके अमीर बनाए जाने पर ए'तिराज कर रहे हो तो इससे पहले इसके बाप के अमीर बनाए जाने पर भी तुमने ए'तिराज किया था और अल्लाह की कसम वो (जैद रज़ि.) इमारत के मुस्तहिक थे और मुझे सबसे ज्यादा अज़ीज़ थे। और ये (उसामा रज़ि.) अब उनके बाद मुझे सबसे ज्यादा अज़ीज़ हैं।

(दीगर मक़ाम : 4250, 4467, 4469, 6621, 7187)

۳۷۳۰- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ بَعَثًا وَأَمَرَ عَلَيْهِمْ أَسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، فَطَعَنَ بَعْضُ النَّاسِ فِي إِمَارَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ تَطَعْتُمْ فِي إِمَارَتِهِ فَقَدْ كُنْتُمْ تَطَعُونَ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ. وَإِنَّ اللَّهَ إِنْ كَانَ لَخَلِيفًا لِلْإِمَارَةِ، وَإِنْ كَانَ لَمَنْ أَحَبَّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَإِنْ هَذَا لَمَنْ أَحَبَّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ)).

[أطرافه في : ٤٤٦٧، ٤٤٦٩، ٤٤٥٠]

[٦٦٢٧، ٧١٨٧]

ये लश्कर आँहज़रत (ﷺ) ने मर्जुल मौत में तैयार किया था और हुक्म फ़र्माया था कि फौरन ही खाना हो जाए मगर बाद में जल्दी आपकी वफ़ात हो गई। लश्कर मदीना के करीब ही से वापस लौट आया। फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपनी खिलाफ़त में इसको तैयार करके खाना किया।

3731. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक क़याफ़ा शनास मेरे यहाँ आया। नबी करीम (ﷺ) उस वक़्त वहीं तशरीफ़ रखते थे और उसामा बिन जैद और जैद बिन हारिषा (एक चादर में) लिपटे हुए थे (मुँह और जिस्म का सारा हिस्सा क़दमों के सिवा छुपा हुआ था) इस क़याफ़ा शनास ने कहा कि ये पाँच कुछ, कुछ से निकले हुए मा'लूम होते हैं (या'नी बाप बेटे के हैं) क़याफ़ा शनास ने फिर बताया कि हुज़ूर (ﷺ) उसके इस अंदाज़े पर बहुत खुश हुए और फिर आप (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) से भी ये वाक़िया बयान किया। (राजेअ : 3555)

۳۷۳۱- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَخَلَ عَلَيَّ قَابِئُ النَّبِيِّ ﷺ شَاهِدًا، وَأَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ وَزَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ مُصْطَجِعَانِ فَقَالَ: إِنَّ هَذِهِ الْأَفْدَامَ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ، قَالَ فَسَرَّ بِذَلِكَ النَّبِيُّ ﷺ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَعْجَبَهُ، فَاحْتَرَبَ بِهِ عَائِشَةَ)).

[راجع : ٣٥٥٥]

बाब की मुताबक़त इस तरह से है कि आपको हज़रत जैद (रज़ि.) से बहुत मुहब्बत थी। जब ही तो क़याफ़ा-शनास की इस बात से आप खुश हुए। मुनाफ़िक़ ये ताना दिया करते थे कि उसामा का रंग काला है, वो जैद के बेटे नहीं हैं।

बाब 18 : हज़रत उसामा बिन जैद (रज़ि.) का बयान

۱۸- بَابُ ذِكْرِ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ

तशरीह: उसामा, जैद बिन हारिषा कज़ाई के बेटे हैं। बाप और बेटे दोनों रसूलुल्लाह (ﷺ) के खासुल खास महबूब थे। उनकी वालिदा उम्मे ऐमन हैं। जिनकी गोद में रसूल करीम (ﷺ) की परवरिश हुई। ये हज़ूर (ﷺ) के वालिदे माजिद हज़रत अब्दुल्लाह की लौण्डी थीं जिनको बाद में आँहज़रत (ﷺ) ने आज़ाद कर दिया था। वफ़ाते नबवी के वक़्त हज़रत उसामा (रज़ि.) की उम्र बीस साल की थी। वादीयुल कुरा में बादशहादते उम्मान (रज़ि.) उनकी वफ़ात हुई। रज़ियल्लाह अन्हु व अरज़ाहु।

3732. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे इर्वा ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि कुरैश मख़ज़ूमिया औरत के मामले की वजह से बहुत रंजीदा थे। उन्होंने ये फ़ैसला आपस में किया कि उसामा बिन जैद (रज़ि.) के सिवा, जो रसूलुल्लाह (ﷺ) को इन्तिहाई अज़ीज़ हैं, (उस औरत की सिफ़ारिश के लिये) और कौन जुअत कर सकता है। (राजेअ: 2638)

3733. (दूसरी सनद) और हमसे अली ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जुहरी से मख़ज़ूमिया की हदीष पूछी तो मुझ पर बहुत गुस्सा हो गये। मैंने उस पर सुफ़यान से कहा तो फिर आप किसी और ज़रिये से इस हदीष की रिवायत नहीं करते? उन्होंने बयान किया कि अरयूब बिन मूसा की लिखी हुई एक किताब में, मैंने ये हदीष देखी। वो जुहरी से रिवायत करते थे, वो इर्वा से, वो हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि बनी मख़ज़ूम की एक औरत ने चोरी कर ली थी। कुरैश ने (अपनी मजलिस में) सोचा कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उस औरत की सिफ़ारिश के लिये कौन जा सकता है? कोई उसकी जुअत नहीं कर सकता। आख़िर हज़रत उसामा बिन जैद (रज़ि.) ने सिफ़ारिश की तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल में ये दस्तूर हो गया था कि जब कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर आदमी चोरी करता तो उसका हाथ काटते। अगर आज फ़ातिमा (रज़ि.) ने चोरी की होती तो मैं उसका भी हाथ काटता।

(राजेअ: 2638)

हज़रत उसामा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये यही काफ़ी है कि आमतौर पर कुरैश ने उनको दरबारे नबवी में सिफ़ारिश करने का अहल पाया। (रज़ि.)

3734. मुझसे हसन बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उबादा यह्या बिन अब्बाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे माजिशून ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन दीनार ने

۳۷۳۲- حَدَّثَنَا قَتِيبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ قُرَيْشًا أَهْمُهُمْ شَأْنُ الْمَخْزُومِيَّةِ فَقَالُوا: مَنْ يَجْتَرِئُ عَلَيْهِ إِلَّا أَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حَبُّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

[راجع: ۲۶۳۸]

۳۷۳۳- وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: ذَهَبْتُ أَسْأَلُ الزُّهْرِيَّ عَنْ حَدِيثِ الْمَخْزُومِيَّةِ فَصَاحَ بِي، قُلْتُ لِسُفْيَانَ: فَلَمْ تَحْمِلْهُ عَنْ أَحَدٍ؟ قَالَ وَجَدْتُهُ فِي كِتَابٍ كَانَ كَتَبَهُ أَيُّوبُ بْنُ مُوسَى عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ امْرَأَةً مِنْ بَنِي مَخْزُومٍ سَرَقَتْ، فَقَالُوا: مَنْ يَكْتَلِمُ فِيهَا النَّبِيُّ ﷺ؟ فَلَمْ يَجْتَرِئُ أَحَدٌ أَنْ يَكْتَلِمَ فَكَلَّمَهُ أَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، فَقَالَ: ((إِنَّ نَبِيَّ إِسْرَائِيلَ كَانَ إِذَا سَرَقَ إِلَيْهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكَوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الضَّعِيفُ لَطَعُوهُ. لَوْ كَانَتْ فَاطِمَةُ لَقَطَعْتَ يَدَهَا)).

[راجع: ۲۶۳۸]

۳۷۳۴- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عُبَادَةَ نَحْوِي بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا

खबर दी कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने एक दिन एक शख्स को मस्जिद में देखा कि अपना कपड़ा एक कोने में फैला रहे थे। उन्होंने कहा देखो ये कौन साहब हैं, काश! ये मेरे क़रीब होते। एक शख्स ने कहा ऐ अबू अब्दुर्रहमान! क्या आप उन्हें नहीं पहचानते? ये मुहम्मद बिन उसामा (रज़ि.) हैं। इब्ने दीनार ने बयान किया कि ये सुनते ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपना सर झुका लिया और अपने हाथों से ज़मीन कुरेदने लगे फिर बोले अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) उन्हें देखते तो यकीनन आप (ﷺ) उनसे मुहब्बत फ़र्माते।

3735. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने बाप से सुना, कहा हमसे अबू इब्मन ने बयान किया, और उनसे हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) उन्हें और हज़रत हसन (रज़ि.) को पकड़ लेते और फ़र्माते ऐ अल्लाह! तू उन्हें अपना महबूब बना कि मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 3747, 6003)

3736. और नईम ने इब्नुल मुबारक से बयान किया, उन्हें मअमर ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के एक मौला (हरमला) ने खबर दी कि हज़ाज बिन ऐमन बिन उम्मे ऐमन को अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने देखा कि (नमाज़ में) उन्होंने रुकूअ और सज्दा पूरी तरह नहीं अदा किया। (ऐमन इब्ने उम्मे ऐमन, उसामा (रज़ि.) की माँ की तरफ़ से भाई थे। ऐमन (रज़ि.) क़बीला अंसार के एक फ़र्द थे) तो इब्ने उमर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि (नमाज़) दोबारा पढ़ लो। (दीगर मक़ाम : 3737)

3737. अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने बयान किया और मुझसे सुलैमान बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन नमिर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के मौला हरमला ने बयान किया कि वो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की

السَّاجِدُونَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: نَظَرْتُ ابْنَ عُمَرَ يَوْمًا - وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ - إِلَى رَجُلٍ يَسْعَبُ ثِيَابَهُ فِي نَاحِيَةٍ مِنَ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: أَنْظُرُوا مِنْ هَذَا؟ لَيْتَ هَذَا عِنْدِي. قَالَ لَهُ إِنْسَانٌ: أَمَا تَعْرِفُ هَذَا يَا أَبَا عُبَيْدِ الرَّحْمَنِ؟ هَذَا مُحَمَّدُ بْنُ أُسَامَةَ. فَطَافَ ابْنُ عُمَرَ رَأْسَهُ وَتَفَرَّقَ بَيْنَهُ فِي الْأَرْضِ، ثُمَّ قَالَ: لَوْ رَأَاهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَأَحَبَّهُ.

٣٧٣٥ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا مُعَمَّرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا حَدَّثَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالْحَسَنَ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ احْبِبْهُمَا فَبَنِي أَحِبَّهُمَا)).

[طرفه في : ٣٧٤٧، ٦٠٠٣].

٣٧٣٦ - وَقَالَ نَعِيمٌ عَنْ ابْنِ السَّبَّاحِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي مُوَلَّى أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّ الْخُفَّاجَ بْنَ أَيْمَنَ ابْنَ أُمِّ أَيْمَنَ - وَكَانَ أَيْمَنُ ابْنُ أُمِّ أَيْمَنَ أَخَا أُسَامَةَ لِأُمِّهِ - وَهُوَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ، فَرَأَاهُ ابْنُ عُمَرَ لَمْ يَتِمَّ رُكُوعُهُ وَلَا سُجُودُهُ فَقَالَ: (أَجِدْ). [طرفه في : ٣٧٣٧].

٣٧٣٧ - قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ: وَحَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ نَعِيمٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي حَزْمَةُ مَوْلَى أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّهُ

खिदमत में हाज़िर थे कि हज़ाज बिन ऐमन (मस्जिद के) अंदर आएन उन्होंने रूक़अ पूरी तरह अदा किया था और न सज्दा। इब्ने इमर (रज़ि.) ने उनसे फर्माया कि नमाज़ दोबारा पढ़ लो, फिर जब वो जाने लगे तो उन्होंने मुझसे पूछा कि ये कौन हैं? मैंने अर्ज़ किया हज़ाज बिन ऐमन इब्ने उम्मे ऐमन हैं। इस पर आपने कहा अगर उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) देखते तो बहुत अज़ीज़ रखते। फिर आपने हुज़ूर (ﷺ) की उसामा (रज़ि.) और उम्मे ऐमन (रज़ि.) की तमाम औलाद से मुहब्बत का ज़िक्र किया। इमाम बुखारी (रह) ने बयान किया और मुझसे मेरे कुछ असातिज़ा ने बयान किया और उनसे सुलैमान ने कि उम्मे ऐमन (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) को गोद लिया था। (राजेअ: 3736)

तशरीह:

ऐमन के बाप या'नी उम्मे ऐमन के पहले शौहर का नाम अब्द बिन उमर हब्शी था। ऐमन जंगे हुनैन में शहीद हो चुके थे। उन ही उम्मे ऐमन (रज़ि.) के बेटे हज़रत उसामा (रज़ि.) हैं।

बाब 19 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

तशरीह:

इल्म और जुहद व तक्वा में ये यक्ता-ए-रोज़गार थे। अपनी हयाते तय्यिबा में एक हज़ार से भी ज़ायदा गुलामों को आज़ाद कराया। 73 हिजरी में 84 या 86 साल की उम्र में उनकी शहादत हुई। हज़ाज ने अपने अंदरूनी कपट की बिना पर जहर में बुझे हुए एक नेज़े से शहीद करा दिया। रज़ियल्लाहु अन्हु व अज़ाहि। उनकी कुन्नियत अबू अब्दुर्रहमान थी।

3738. हमसे इस्हाक़ बिन नज़र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे जुहरी ने, उनसे सालिम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब मौजूद थे तो जब भी कोई शख्स कोई ख़्वाब देखता, हुज़ूर (ﷺ) से उसे बयान करता, मेरे दिल में भी ये तमन्ना पैदा हो गई कि मैं भी कोई ख़्वाब देखूँ और हुज़ूर अकरम (ﷺ) से बयान करूँ। मैं उन दिनों कुंवारा था और नौ इम्र भी था, मैं आप (ﷺ) के ज़माने में मस्जिद में सोया करता था तो मैंने ख़्वाब में दो फ़रिश्तों को देखा कि मुझे पकड़कर दोज़ख़ की तरफ़ ले गये। मैंने देखा कि वो बलदार कुँए की तरह पेच दर पेच थी। कुँए ही की तरह उसके भी दो किनारे थे और उसके अंदर कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें मैं पहचानता था, मैं उसे देखते ही कहने लगा, दोज़ख़ से मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ, दोज़ख़ से मैं अल्लाह की पनाह चाहता

جِنْمَا هُوَ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ إِذْ دَخَلَ الْحِجَابُ بْنُ أَيْمَنَ، فَلَمْ يُحْمَ زَكْوَعُهُ وَلَا سُجُودُهُ فَقَالَ: أَعْبُدْ. فَلَمَّا وَلَّى قَالَ لِي ابْنُ عُمَرَ: مَنْ هَذَا؟ قُلْتُ: الْحِجَابُ بْنُ أَيْمَنَ ابْنِ أُمِّ أَيْمَنَ. فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: لَوْ رَأَى هَذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَأَحْبَبَهُ. فَذَكَرَ حُبَّهُ وَمَا وَلَدَتْهُ أُمُّ أَيْمَنَ)). قَالَ: وَخَدَّيْ بَعْضُ أَصْحَابِي عَنْ سُلَيْمَانَ ((وَكُنْتُ خَاصِمَةَ النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: 3736]

19 - بَابُ مَنَالِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ

بَابُ الْخَطَابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

3738 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ الرَّجُلُ فِي حَيَاةِ النَّبِيِّ ﷺ إِذَا رَأَى رُؤْيَا فَصْنَهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، لَقَمْنَيْتُ أَنْ أَرَى رُؤْيَا أَقْصَهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، وَكُنْتُ غَلَامًا أَغْرَبَ، وَكُنْتُ أَتَامُ فِي الْمَسْجِدِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَرَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَن مَلَكَيْنِ أَخَذَانِي فَذَهَبَا بِي إِلَى النَّارِ، فَإِذَا هِيَ مَطْوِيَّةٌ كَطَيِّ النَّبْرِ، وَإِذَا لَهَا قَرْنَانِ كَقَرْنَيْ النَّبْرِ، وَإِذَا

हैं। उसके बाद मुझसे एक-दूसरे फ़रिश्ते की मुलाक़ात हुई, उसने मुझसे कहा कि डर न खा। मैंने अपना ये ख़्वाब हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) से बयान किया। (राजेअ : 440)

3739. हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से मेरा ख़्वाब बयान किया तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब्दुल्लाह बहुत अच्छा लड़का है। काश! रात में वो तहज़ुद की नमाज़ पढ़ा करता। सालिम ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह उसके बाद रात में बहुत कम सोया करते थे। (राजेअ : 1122)

3740, 41. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे जुहरी ने, उनसे सालिम ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने अपनी बहन हफ़्सा (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया था, अब्दुल्लाह सालेह (नेक) आदमी है। (राजेअ : 440, 1122)

बाब 20 : हज़रत अम्मार और हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के फ़जाइल का बयान

तशरीह : हज़रत अम्मार बिन यासिर अनसी हैं। बनू मख़ज़ूम के आज़ादकर्दा और हलीफ़ थे। उनके मुफ़स्सल ह़ालात पीछे बयान हो चुके हैं। जंगे सिफ़फ़ीन में हज़रत अली (रज़ि.) के साथ थे। 37 हिजरी में बइम्न 93 साल वहीं शहीद हुए। रज़ियल्लाहु व अरज़ाहु। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ास राज़दारों में हैं। शहरे मदयन में उनकी वफ़ात हुई। उनकी वफ़ात का बाक़िया हज़रत इब्मरान (रज़ि.) की शहादत के चालीस रात बाद 35 हिजरी में पेश आया।

3742. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे मुगीरह ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने बयान किया कि मैं जब शाम आया तो मैंने दो रकअत नमाज़ पढ़कर ये दुआ की, कि ऐ अल्लाह! मुझे कोई नेक साथी अता फ़र्मा। फिर मैं एक क़ौम के पास आया और उनकी मज्लिस में बैठ गया, थोड़ी ही देर बाद एक बुज़ुर्ग आए

فِيهَا نَأْسٌ قَدْ عَرَفْتُهُمْ. فَجَعَلْتُ أَقُولُ: أَعُوذُ بِاللّهِ مِنَ النَّارِ، أَعُوذُ بِاللّهِ مِنَ النَّارِ. فَلَقِيتُ أَوْ فَلَقِيَنِي مَلَكَ آخَرَ فَقَالَ لِي: لَنْ تُرَآءَ. فَقَصَصْتُهَا عَلَى خَفْصَةَ)).

[راجع : 440]

3739 - ((فَقَصَصْتُهَا خَفْصَةَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: بَعَمَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللَّهِ، لَوْ كَانَ يُصَلِّي بِاللَّيْلِ)). قَالَ سَالِمٌ: فَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ لَا يَنَامُ مِنَ اللَّيْلِ إِلَّا قَلِيلًا)).

[راجع : 1122]

3740, 41 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَلِيمَانَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ أَخِيهِ خَفْصَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: ((إِنَّ عَبْدًا لِلَّهِ رَجُلٌ صَالِحٌ)).

[راجع : 440, 1122]

20 - بَابُ مَنَاقِبِ عَمَّارٍ وَحَدِيقَةَ رَضِيََ اللَّهُ عَنْهُمَا

3742 - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنِ الْمُغِيرَةِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: ((قَدِمْتُ الشَّامَ، فَصَلَّيْتُ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ قُلْتُ: اللَّهُمَّ يَسِّرْ لِي جَلِيسًا صَالِحًا. فَأَتَيْتُ قَوْمًا فَحَلَسْتُ إِلَيْهِمْ، فَإِذَا

और मेरे पास बैठ गये। मैंने पूछा ये कौन बुजुर्ग हैं? लोगों ने बताया कि ये हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) हैं। इस पर मैंने अर्ज किया कि मैंने अल्लाह तआला से दुआ की थी कि कोई नेक साथी मुझे अज्ञात फ़र्मा। तो अल्लाह तआला ने आपको मुझे इनायत फ़र्माया। उन्होंने दरयाफ़्त किया, तुम्हारा वतन कहाँ है? मैंने अर्ज किया कूफ़ा है। उन्होंने कहा क्या तुम्हारे यहाँ इब्ने उम्मे अब्द, साहिबुल नअलन, साहब विसादा, व मुतहहरा (या'नी अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) नहीं हैं? क्या तुम्हारे यहाँ वो नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) की जुबानी शैतान से पनाह दे चुका है कि वो उन्हें कभी ग़लत रास्ते पर नहीं ले जा सकता। (मुराद अम्मार रज़ि. से थी) क्या तुममें वो नहीं हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के बताए हुए बहुत से भेदों के हामिल हैं जिन्हें उनके सिवा और कोई नहीं जानता। (या'नी हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. उसके बाद उन्होंने दरयाफ़्त फ़र्माया अब्दुल्लाह (रज़ि.) आयत वल्लैलि इज़ा यग़शा की तिलावत किस तरह करते हैं? मैंने उन्हें पढ़कर सुनाई कि, वल्लैलि इज़ा यग़शा वन्नहारि इज़ा तजल्ला वमा ख़लक़ ज़क़र वल उन्ना इस पर उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खुद अपनी जुबाने मुबारक से मुझे भी इसी तरह याद कराया था। (राजेअ : 2387)

شَيْخٌ لَمَّا جَاءَهُ خَتَى جَلَسَ إِلَى جَنِي، قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: أَبُو الشَّرْدَاءِ. قُلْتُ: إِنِّي ذَعَوْتُ اللَّهَ أَنْ يُسَرِّ لِي جَلِيسًا صَالِحًا، فَمَسَّرَ لِي. قَالَ: وَمَنْ أَنْتَ؟ قُلْتُ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ. قَالَ أَوَلَيْسَ بَيْنَكُمْ أَنْ أَمَّ عَبْدُ صَاحِبِ الثَّغَلَيْنِ وَالْوَسَامِ وَالْمِطْلَهَةِ؟ أَيْنَ الْبَيْتِ الَّذِي أَجَارَهُ اللَّهُ مِنَ الشَّيْطَانِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ؟ أَوْ لَيْسَ بَيْنَكُمْ صَاحِبُ سِرِّ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي لَا يَغْلُمُ أَحَدٌ غَيْرَهُ؟ ثُمَّ قَالَ: كَيْفَ يَفْرَأُ عَبْدُ اللَّهِ؟ هُوَ اللَّيْلُ إِذَا يَغْشَى فَمَرَأَتُ عَلَيْهِ هُوَ اللَّيْلُ إِذَا يَغْشَى وَالنَّهَارُ إِذَا تَحَلَّى وَ مَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَى؟ قَالَ: وَاللَّهِ لَقَدْ أَفْرَأَيْنَاهَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ فِيهِ إِلَى فِيٍّ)).

[راجع: ٢٣٨٧]

मशहूर रिवायत व मा ख़लक़ ज़क़र वल उन्ना - वज़क़र वल उन्ना ही है। कहते हैं कि पहले ये आयत यूँ उतरी थी, वज़क़र वल उन्ना फिर वमा ख़लक़ का लफ़्ज़ उसमें ज़्यादा हुआ लेकिन अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और अबू दर्दा (रज़ि.) को इसकी ख़बर न हुई वो पहली क़िरात ही पढ़ते रहे।

3743. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुगीरह ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने बयान किया कि अलक़मा (रज़ि.) शाम में तशरीफ़ ले गये और मस्जिद में जाकर ये दुआ की, ऐ अल्लाह! मुझे एक नेक साथी अज्ञात फ़र्मा, चुनौचे आपको हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) की सुहबत नसीब हुई। हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने दरयाफ़्त किया, तुम्हारा ताल्लुक कहाँ से है? अर्ज किया कि कूफ़ा से। इस पर उन्होंने कहा, क्या तुम्हारे यहाँ नबी करीम (ﷺ) के राज़दार नहीं हैं कि जिन्हें उनके सिवा और कोई नहीं जानता।

٣٧٤٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عُيَيْنَةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: ((دَعَبَ عَلْقَمَةُ إِلَى الشَّامِ، فَلَمَّا دَخَلَ الْمَسْجِدَ قَالَ: اللَّهُمَّ يَسِّرْ لِي جَلِيسًا صَالِحًا. فَجَلَسَ إِلَى أَبِي الشَّرْدَاءِ، فَقَالَ: أَبُو الشَّرْدَاءِ: وَمَنْ أَنْتَ؟ قَالَ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ. قَالَ: أَلَيْسَ بَيْنَكُمْ - أَوْ مِنْكُمْ - صَاحِبُ السَّرِّ الَّذِي لَا يَغْلُمُهُ غَيْرُهُ؟ يَعْني

(उनकी मुराद हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि.) से थी) उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ मौजूद हैं। फिर उन्होंने कहा क्या तुममें वो शख्स नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने नबी की जुबानी शौतान से अपनी पनाह दी थी। उनकी मुराद अम्मार (रज़ि.) से थी। मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ वो भी मौजूद हैं। उसके बाद उन्होंने दरयाफ़्त किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) आयत वल्लैलि इज़ा यश़ा वन्नहारि इज़ा तजल्ला की क़िरात किस तरह करते थे? मैंने कहा कि वो (मा ख़लक़ के हज़फ़ के साथ) वज़्र कर वल उन्ना पढ़ा करते थे। इस पर उन्होंने कहा कि ये शाम वाले हमेशा इस कोशिश में रहे कि इस आयत की तिलावत को जिस तरह मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था, इससे मुझे हटा दें।

(राजेअ : 2387)

बाब 21 : हज़रत अबू उबैदह बिन ज़र्राह (रज़ि.)

के फ़ज़ाइल का बयान

तशीह : हज़रत अबू उबैदह आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़र्राह फ़हरी कुरैशी हैं। अशर-ए-मुबशशरह में से हैं। इस उम्मत के अमीन उनका लक़ब है। हब्शा की तरफ़ दो मर्तबा हिजरत की। ग़व्व-ए-उहुद में आँहज़रत (ﷺ) के चेहरा मुबारक में फौलादी टोप की जो दो कड़ियाँ घुस गई थीं, जिनकी वजह से हज़ूर (ﷺ) के दो दांत भी शहीद हो गये, उन कड़ियों को चेहर-ए-मुबारक से उन ही बुजुर्ग ने खींचा था। क़द के लम्बे, खूबसूरत चेहरा वाले, हल्की दाढ़ी वाले थे। अम्वास के ताऊन में 18 हिजरी में बइम्प्र 58 साल शहीद हुए। नमाज़े जनाज़ा हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) ने पढ़ाई थी।

3744. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, हर उम्मत में अमीन होते हैं और इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा बिन ज़र्राह हैं। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाह)

(दीगर मक़ाम : 4382, 7255)

3745. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे सिलह ने और उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अहले नजरान से फ़र्माया, मैं तुम्हारे यहाँ एक अमीन को

خَذِفَتْهُ قَالَ : قُلْتُ بَلَى . قَالَ : أَلَيْسَ بِكُمْ - أَوْ مِنْكُمْ - أَلْبَيْ أَحَاوَهُ اللَّهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ ؟ يَغْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ ، يَغْنِي عَمَارًا ، قُلْتُ : بَلَى . قَالَ : أَلَيْسَ بِكُمْ - أَوْ مِنْكُمْ - صَاحِبُ السُّوْلُو ، وَالْوَسَاوِ وَالسَّرَارِ ؟ قَالَ : بَلَى . قَالَ : كَيْفَ كَانَ عَبْدُ اللَّهِ يَقْرَأُ : ﴿وَاللَّيْلُ إِذَا يَغْشَى وَالنَّهَارُ إِذَا تَجَلَّى﴾ ؟ قُلْتُ : ﴿وَاللَّيْلُ إِذَا تَجَلَّى﴾ . قَالَ : مَا زَالَ بِي هَوْلَاءُ حَتَّى كَادُوا يَسْتَنْزِلُونَنِي عَنْ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ . (راجع : ٢٣٨٧)

٢١ - بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ

الْجَرَّاحِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

٣٧٤٤ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قَلَابَةَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((إِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينًا ، وَإِنَّ أَمِينَنَا أَمِينُهَا الْأَمَةُ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ)).

(طرمه في . ٤٣٨٢ ، ٧٢٥٥)

٣٧٤٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ صِلَةَ عَنْ خَذِيفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ

भेजूंगा जो हक्कीकी मा'नों में अमीन होगा। ये सुनकर तमाम सहाबा किराम (रज़ि.) को शौक हुआ लेकिन आप (ﷺ) ने हज़रत अबू उबैदह (रज़ि.) को भेजा।

(दीगर मक़ाम : 4380, 4381, 7354)

لَأَهْلُ نَجْرَانَ: ((لَأَتَعْنُ - عَلَيْكُمْ، -
أَمِنًا حَقَّ آمِينَ)). فَأَشْرَفَ أَصْحَابُهُ، فَبَعَثَ
أَبَا عُيَيْدَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ.

[أطرافه في : ٤٣٨٠، ٤٣٨١، ٧٣٥٤].

बाब 21 : हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि.) का बयान

بَابُ ذِكْرِ مُصْعَبِ بْنِ عُمَيْرٍ

तशरीह : ये कुरेशी अदबी बुजुर्ग सहाबा में से हैं। इस्लाम से पहले बड़े बाँकपन से रहा करते थे। इम्दातरीन लिबास जैब तन किया करते। इस्लाम लाने के बाद दुनिया से बेनियाज़ हो गये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको पहले ही मुबल्लिग बनाकर मदीना भेज दिया था। जब वहाँ इस्लाम की इशाअत हो गई तो हुज़ूर (ﷺ) की इजाज़त से उन्होंने मदीना में जुम्आ क़ायम कर लिया। जंगे उहूद में बड़भ्र 40 साल शहादत पाई। हज़रत इमाम बुखारी (रह) को अपनी शराइत के मुताबिक कोई हदीष इस बाब के तहत लाने को न मिली होगी। इसलिये खाली बाब मुनअकिद करके हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल की तरफ़ इशारा कर दिया कि उनके भी फ़ज़ाइल मुसल्लम हैं जैसा कि दूसरी अह्दादीष मौजूद हैं।

बाब 22 : हज़रत हसन और हज़रत हुसैन

(रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٢ - بَابُ مَنَاقِبِ الْحَسَنِ

وَالْحُسَيْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

और नाफ़ेअ बिन जुबैर ने हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत हसन (रज़ि.) को गले से लगाया।

قَالَ نَالِعُ بْنُ جَبْرِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ
((عَلَّقَ النَّبِيُّ ﷺ الْحَسَنَ))

हज़रत हसन (रज़ि.) की कुन्नियत अबू मुहम्मद पैदाईश माहे रमज़ान 3 हिजरी में हुई। और वफ़ात 50 हिजरी में हुई। हज़रत हुसैन (रज़ि.) की विलादत शाबान 4 हिजरी में हुई और शहादत 61 हिजरी में हुई। उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह थी।

3746. हमसे सद्काने बयान किया, कहा हमसे इब्ने ड्रययाना ने बयान किया, कहा हमसे अबू मूसा ने बयान किया, उनसे हसन ने, उन्होंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) मियम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा थे और हज़रत हसन (रज़ि.) आप (ﷺ) के पहलू में थे। आप (ﷺ) कभी लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होते और फिर हसन (रज़ि.) की तरफ़ और फ़र्माते, मेरा ये बेटा सरदार है और उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसके ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा। (राजेअ : 2804)

٣٧٤٦- حَدَّثَنَا سَدَقَةُ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ
حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى عَنِ الْحَسَنِ سَمِعَ أَبَا
بَكْرَةَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ
وَالْحَسَنَ إِلَى جَنْبِهِ، يَنْظُرُ إِلَى النَّاسِ مَرَّةً
وَالِثُمَّ مَرَّةً وَيَقُولُ: ((إِنِّي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَقُلُّ
اللَّهُ أَنْ يُصْلِحَ بَيْنَ بَيْنِ فِتْنَتَيْنِ مِنَ
الْمُسْلِمِينَ)). [راجع : ٢٧٠٤]

तशरीह : हज़रत हसन (रज़ि.) के बारे में पेशीनगोई हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में पूरी हुई जबकि हज़रत हसन (रज़ि.) और हज़रत मुआविया (रज़ि.) की सुलह से जंग का एक बड़ा ख़तरा टल गया। अल्लाह वालों की यही निशानी होती है कि वो खुद नुक़सान बर्दाश्त कर लेते हैं मगर फ़िल्ना फ़साद नहीं चाहते।

3747. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअतमिर

٣٧٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ

ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबू इब्मान ने बयान किया और उनसे उसामा बिन जैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उन्हें और हसन (रज़ि.) को पकड़कर ये दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इनसे मुहब्बत है तू भी इनसे मुहब्बत रख। अव कमा क़ाल। (राजेअ: 3735)

3748. मुझसे मुहम्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुसैन बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब हज़रत हुसैन (रज़ि.) का सरे मुबारक अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया और एक त़शत में रख दिया गया तो वो बदबूधत उस पर लकड़ी से मारने लगा और आपके हुस्न और खूबसूरती के बारे में भी कुछ कहा (कि मैंने इससे ज़्यादा खूबसूरत चेहरा नहीं देखा) इस पर हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत हुसैन (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से सबसे ज़्यादा मुशाब थे। उन्होंने वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल कर रखा था।

3749. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अदी ने ख़बर दी, कहा कि मैंने बरा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि हज़रत हसन (रज़ि.) आपके काँधे मुबारक पर थे और आप (ﷺ) ये फ़र्मा रहे थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इससे मुहब्बत है तू भी इससे मुहब्बत रख।

3750. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि मुझे इमर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे इब्बा बिन हारिज़ ने बयान किया कि मैंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को देखा कि आप (रज़ि.) हज़रत हसन (रज़ि.) को उठाए हुए हैं और फ़र्मा रहे हैं, मेरे बाप इन पर फ़िदा हों। ये नबी करीम (ﷺ) से मुशाबेह हैं, अली से नहीं और हज़रत अली (रज़ि.) वहीं मुस्कुरा रहे थे। (राजेअ: 3542)

3751. मुझसे यह्या बिन मुईन और सदक्का ने बयान किया,

قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَفْوَانَ عَنْ أَسَمَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالْحَسَنُ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَحِبُّهُمَا فَاحْبِبْهُمَا. أَوْ كَمَا قَالَ)). (راجع: 3735)

3748 - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَبَى غَبِيْدُ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ بِرَأْسِ الْحُسَيْنِ فَجَعَلَ لَهُ طَسْتًا فَجَعَلَ يَنْكُتُ وَقَالَ فِي حُسْنِهِ شَيْئًا، فَقَالَ أَنَسٌ: كَانَ أَشْبَهُهُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ مَخْضُوبًا بِالْوَسْمَةِ)).

3749 - حَدَّثَنَا حُجَّاجُ بْنُ السِّمْنَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَالْحَسَنَ عَلَى عَاقِبِهِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ! إِنِّي أَحِبُّهُ فَاحْبِبْهُ)).

3750 - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِي حُسَيْنٍ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَحَمَلَ الْحَسَنَ وَهُوَ يَقُولُ: يَا بِي شَيْئًا بِالنَّبِيِّ. وَلَيْسَ شَيْئًا بِعَلِيِّ. وَعَلِيُّ يَضْحَكُ)). (راجع: 3542)

3751 - حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ وَصَدَقَةُ

कहा कि हमें मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें वाकिद बिन मुहम्मद ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) (की ख़ुशनुदी) आप (ﷺ) के अहले बैत के साथ (मुहब्बत व ख़िदमत के ज़रिये) तलाश करो।
(राजेअ: 3713)

3752. मुझसे इब्नाहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें जुहरी ने और उन्हें हज़रत अनस (रज़ि.) ने, और अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया कि हमें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) से ज़्यादा और कोई शख्स नबी करीम (ﷺ) से ज़्यादा मुशाबेह नहीं था।

अब्दुरज़ाक़ की रिवायत को इमाम अहमद और अब्द बिन हुमैद ने रिवायत किया है। इस सनद के बयान करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह) की गर्ज़ ये है कि जुहरी (रह) का सिमाअ हज़रत अनस (रज़ि.) से प्राबित हो जाए।

3753. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी यअकूब ने, उन्होंने इब्ने अबी नुअम से सुना और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना और किसी ने उनसे मुहरिम के बारे में पूछा था, शुअबा ने बयान किया कि मेरे ख़याल में ये पूछा था कि अगर कोई शख्स (एहराम की हालत में) मक्खी मार दे तो उसे क्या कफ़फ़ारा देना पड़ेगा? इस पर अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, इराक़ के लोग मक्खी के बारे में सवाल करते हैं जबकि यही लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के नवासे को क़त्ल कर चुके हैं, जिनके बारे में हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ये दोनों (नवासे हसन व हुसैन रज़ि.) दुनिया में मेरे दो फूल हैं।

(दीगर मक़ाम : 5994)

गुलज़ारे रिसालत के इन दोनों फूलों के मनाकिब बयान करने के लिये दफ़ातिर की ज़रूरत है। अहादीषे मज़कूरा से इनके मनाकिब का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। मसला पूछने वाला एक कूफी था जिन्होंने हज़रत हुसैन (रज़ि.) को शहीद किया था। इसी दिन से ये मिषाल हो गई अल कूफी ला यूफी या'नी कूफ़ा वाले वफ़ादार नहीं होते।

बाब 23 : हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के मौला

۲۳ - بَابُ مَنَاقِبِ بِلَالِ بْنِ رَبَاحٍ

قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ وَالِدِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَالَ أَبُو بَكْرٍ: ارْتَلُوا مُحَمَّدًا ﷺ فِي أَهْلِ بَيْتِهِ)).

[راجع: 3713]

۳۷۵۲ - حَدَّثَنِي إِبرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَنَسٍ. وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَنَسٌ قَالَ: ((لَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَشْبَهَ بِالنَّبِيِّ ﷺ مِنَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ)).

۳۷۵۳ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا عُثْمَرُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي نَعْمٍ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ وَسَأَلَهُ عَنِ الْمَخْرَمِ - قَالَ شُعْبَةُ أَخْبِيئَهُ يَقْتُلُ الذُّبَابَ - فَقَالَ: أَهْلُ الْعِرَاقِ يَسْأَلُونَ عَنِ الذُّبَابِ وَقَدْ قَتَلُوا ابْنَ ابْنَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((هُمَا رِيحَاتَايَ مِنَ الدُّنْيَا)).

[طرفه 3 : 5994]

हज़रत बिलाल बिन रिबाह (रज़ि.) के फ़ज़ाइल और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जन्नत में अपने आगे मैंने तुम्हारे क़दमों की चाप सुनी थी।

مَوَّلَى أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «سَمِعْتُ ذِكْرَ نَفْلِكَ
نَنْ يَذِي فِي السَّحَابِ»

तशरीह: रसूले करीम (ﷺ) के मशहूर मुअज़्ज़िन हैं जिनके हालात बड़ी तफ़्सील चाहते हैं। इस्लाम लाने पर अहले मक्का ने उनको बहुत ही सताया था। खुद उमय्या बिन ख़लफ़ अपने हाथ से उनको इतिहाई अज़ियत देता था। अल्लाह की शान कि जंगे बद्र में ये मलज़ून हज़रत बिलाल (रज़ि.) ही की तलवार से दाखिले जहन्नम हुआ। असलन ये हब्शी थे 20 हिजरी मे दमिशक मे उनका इतिकाल हुआ। रज़ियल्लाह अन्हु अरज़ाहु।

3754. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने कहा हमको जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत उमर (रज़ि.) कहा करते थे कि अबूबक्र (रज़ि.) हमारे सरदार हैं और हमारे सरदार को उन्होंने आज़ाद किया है। उनकी मुराद हज़रत बिलाल हब्शी (रज़ि.) से थी।

۳۷۵۴- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ
الْأَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ
السُّنْكَبَرِ أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «كَانَ عُمَرُ يَقُولُ: أَبُو
بَكْرٍ سَيِّدُنَا، وَأَعْلَى سَيِّدَنَا. يَغْنِي بِلَالًا».

3755. हमसे इब्ने नुमैर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्बैद ने कहा, हमसे इस्माईल ने बयान किया, और उनसे कैस ने कि हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा, अगर आपने मुझे अपने लिये ख़रीदा है तो फिर अपने पास ही रखिए और अगर अल्लाह के लिये ख़रीदा है तो फिर मुझे आज़ाद कर दीजिए और अल्लाह के रास्ते में अमल करने दीजिए।

۳۷۵۵- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ
عَبْدِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ قَيْسٍ ((أَنْ بِلَالًا
قَالَ لِأَبِي بَكْرٍ: إِنْ كُنْتَ اشْتَرَيْتَنِي
لِنَفْسِكَ فَأَمْسِكْنِي، وَإِنْ كُنْتَ إِنَّمَا
اشْتَرَيْتَنِي لِلَّهِ فَذَعْنِي وَعَمَلْ لِلَّهِ)).

तशरीह: हुआ ये था कि बिलाल (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद सज़ा न हो सका, हर वक़्त अज़ान में आप (ﷺ) का नाम आता, आपकी याद से क़ब्रे शरीफ़ को देखकर ज़ख़म ताज़ा होता। इसलिये बिलाल (रज़ि.) मदीना मुनव्वरा से चले गये, छः महीने के बाद आए तो आँहज़रत (ﷺ) को ख़्वाब में देखा, फ़र्माते हैं, बिलाल! क्या जुल्म है, तूने हमको छोड़ दिया। बिलाल ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का हाल पूछा, मा'लूम हुआ कि इतिकाल पा गई। हज़रत हसन (रज़ि.) और हज़रत हुसैन (रज़ि.) को बुलाकर गले लगाया, ख़ूब रोये। लोगों ने हसन (रज़ि.) से कहा आप कहो तो बिलाल अज़ान देंगे। उन्होंने फ़र्माइश की, बिलाल (रज़ि.) अज़ान के लिये खड़े हुए जब अशहदुअन्न मुहम्मद रसूलुल्लाह पर पहुँचे तो रोते रोते बेहोश होकर गिरे, लोग भी रोने लगे। नबी अकरम (ﷺ) की याद से एक कोहराम मच गया। अल्लाहुम्म सल्लि अलैहि व बारिक व सल्लिम हमारे पीर व मुर्शिद शैख़ अहमद मुजहिद (रह) फ़र्माते हैं, बिलाल (रज़ि.) हब्शी थे। अज़ान में अशहदु के बदल अस्हद कहते शीन को सीन कहते मगर उनका अस्हद हम लोगों के हज़ार बार अशहद पर फ़ज़ीलत रखता था। वो आशिके रसूल थे हम गुनाहगार, या अल्लाह! बिलाल (रज़ि.) के कफ़श बरदारों ही में हमको रख ले आमीन या रब्बल आलमीन (वहीदी)

बाब 24 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास
(रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर

۲۴- بَابُ ذِكْرِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمَا

ये हिजरात से तीन साल पहले पैदा हुए थे, बड़े आलिम, तफ़्सीरुल कुर्आन में माहिर, इलूमे ज़ाहिरी और बातिनी में बेनज़ीर थे

68 हिजरी में तार्ईफ़ में इतिक़ाल हुआ। मुहम्मद बिन हनीफ़ा ने उन पर नमाज़ पढ़ाई।

3756. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे इब्किमा ने कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, मुझे नबी करीम (ﷺ) ने सीने से लगाया और फ़र्माया ऐ अल्लाह! इसे हिक्मत का इल्म अता फ़र्मा। (राजेअ : 75)

۳۷۵۶- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ضَمَّنِي النَّبِيُّ إِلَى صَدْرِهِ وَقَالَ ((اللَّهُمَّ عَلِّمْنِي الْحِكْمَةَ)). [راجع: ۷۵]

आँहज़रत (ﷺ) की दुआ की बरकत थी कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) इल्म कुर्आन में सब पर फ़ौकियत ले गए।

बाब 25 : हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.)

के फ़ज़ाइल का बयान

۲۵- بَابُ مَنَاقِبِ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

ये बड़े बहादुर थे। इनका नसबनामा रसूले करीम (ﷺ) के साथ मुरह बिन कअब में मिल जाता है। चालीस साल से कुछ ज़ाइद उम्र पाकर 21 हिजरी में शहरे हिम्स में इतिक़ाल हुआ।

3757. हमसे अहमद बिन वाकिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने किसी इज़िला के पहुँचने से पहले ज़ैद, जा'फ़र और इब्ने रवाहा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर सहाबा को सुना दी थी, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब इस्लामी अलम को ज़ैद (रज़ि.) लिये हुए हैं और वो शहीद कर दिये गये। अब जा'फ़र (रज़ि.) ने अलम उठा लिया और वो भी शहीद कर दिये गये। अब इब्ने रवाहा (रज़ि.) ने अलम उठा लिया और वो भी शहीद कर दिये गये। हज़ूरे अकरम (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, और आख़िर अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार (हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि.) ने अलम उठा लिया और अल्लाह तआला ने उनके हाथ पर मुसलमानों को फ़तह इनायत फ़र्माई। (राजेअ : 1246)

۳۷۵۷- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ وَائِلٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَمَى زَيْدًا وَجَعَفَرًا وَابْنَ رَوَاحَةَ لِلنَّاسِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ خَيْرُهُمْ فَقَالَ: ((أَخَذَ الرَّأْيَةَ زَيْدٌ فَأَصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَ جَعْفَرٌ فَأَصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ فَأَصِيبَ - وَغَيْنَاهُ نَدْرَفَانِ - حَتَّى أَخَذَهَا سَيْفٌ مِنْ سَيَوفِ اللَّهِ - حَتَّى قَتَعَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ)).

[راجع: ۱۲۴۶]

बाब 26 : हज़रत अबू हज़ैफ़ा (रज़ि.) के

मौला सालिम (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

3758. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर बिन मुरह ने, उनसे इब्राहीम ने और उनसे मसरूक ने कि अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) के यहाँ अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) का ज़िक्र हुआ, तो उन्होंने ने कहा

۲۶- بَابُ مَنَاقِبِ سَالِمِ مَوْلَى أَبِي

حَدِيْقَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

۳۷۵۸- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَرْثَةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: ذَكَرَ عَبْدُ اللَّهِ عِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ

मैं उनसे हमेशा मुहब्बत रखूंगा क्योंकि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि चार लोगों से कुआन सीखो, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.), आँहज़रत (ﷺ) ने इब्तिदा अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से ही की और अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के मौला सालिम, उबई बिन कअब और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि मुझे पूरी तरह याद नहीं कि हुज़ूर (ﷺ) ने पहले उबई बिन कअब का ज़िक्र किया या मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) का। (दीगर मक़ाम : 3760, 3806, 3808, 4999)

بْنِ عَمْرٍو فَقَالَ : ذَلِكَ رَجُلٌ لَا أَزَالُ أُحِبُّهُ
بَعْدَ مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ :
((اسْتَفْرِنُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ : مِنْ عَبْدِ
اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَبْدًا بِهِ، وَسَالِمِ مَوْلَى أَبِي
حَدِيفَةَ، وَأَبِي بَنْ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ.
قَالَ : لَا أَذْرِي، بَدَأَ بِأَيِّ أَوْ سَمَاعٍ)).

[أضراره في ٣٧٦٠، ٣٨٠٦، ٣٨٠٨]

[٤٩٩٩]

हज़रत सालिम (रज़ि.) असल में फ़ारसी थे और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) की बीवी के गुलाम थे, बड़े फ़ाज़िल और कुआन के कारी थे।

बाब 27 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٧- بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

ये बनी हुज़ैल में से थे। आँहज़रत (ﷺ) के खादिमे खास, सफ़र और हज़र में हर जगह आप (ﷺ) की खिदमत करते, पस्त क़द और नहीफ़ थे। इल्म के लिहाज़ से बहुत बड़े आलिम, ज़ाहिद और फ़कीह थे। साठ साल से ज़ाइद उम्र पाकर 32 हिजरी में इतिफ़ाक़ किया। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु

3759. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, कहा मैंने अबू वाइल से सुना, कहा कि मैंने मसरूक़ से सुना, उन्होंने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की जुबाने मुबारक पर कोई बुरा कलिमा नहीं आता था और न आप (ﷺ) की ज़ात से ये मुम्किन था और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुममें सबसे ज़्यादा अज़ीज़ मुझे वो शख्स है जिसके आदात व अख़लाक़ सबसे उम्दह हों। (राजेअ : 3559)

٣٧٥٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا
شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ
قَالَ سَمِعْتُ مَسْرُوقًا قَالَ : قَالَ عَبْدُ اللَّهِ
بْنُ عَمْرٍو : أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمْ يَكُنْ
فَاحِشًا وَلَا مُتَفَحِّشًا. وَقَالَ : ((إِنَّ مِنْ
أَحَبِّكُمْ إِلَيَّ أَحْسَنَكُمْ أَخْلَاقًا)).

[راجع : ٣٥٥٩]

3760. और आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुआन मजीद चार आदमियों से सीखो, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.), अबू हुज़ैफ़ा के मौला सालिम, उबई बिन कअब (रज़ि.) और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.)। (राजेअ : 3758)

٣٧٦٠- وَقَالَ : ((اسْتَفْرِنُوا الْقُرْآنَ مِنْ
أَرْبَعَةٍ : مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، وَسَالِمِ
مَوْلَى أَبِي حَدِيفَةَ، وَأَبِي بَنْ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ
بْنِ جَبَلٍ)). [راجع : ٣٧٥٨]

3761. हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे अबू अवाना ने, उनसे मुग़ीरह ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अलक़मा ने कि मैं शाम पहुँचा तो सबसे पहले मैंने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और ये दुआ की कि ऐ

٣٧٦١- حَدَّثَنَا مُوسَى عَنْ أَبِي غَوَانَةَ
عَنْ مُغِيرَةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ
((وَحَلَّتْ الشَّامُ فَصَلَّيْتُ رَكْعَتَيْنِ فَقُلْتُ.

अल्लाह! मुझे किसी (नेक) साथी की मुहबत से फ़ैज़याबी की तौफ़ीक़ अता कर। चुनौचे मैंने देखा कि एक बुजुर्ग आ रहे हैं। जब वो करीब आ गये तो मैंने सोचा कि शायद मेरी दुआ कुबूल हो गई है। उन्होंने दरयाफ़्त किया, आपका वतन कहाँ है? मैंने अर्ज़ किया कि मैं कूफ़ा का रहने वाला हूँ, इस पर उन्होंने फ़र्माया, क्या तुम्हारे यहाँ साहिबे नअलैन, साहिबे विसादा व मुतहहरा (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) नहीं है? क्या तुम्हारे यहाँ वो सहाबी नहीं हैं जिन्हें शैतान से (अल्लाह की) पनाह मिल चुकी है। (या'नी अम्मार बिन यासिर रज़ि.) क्या तुम्हारे यहाँ सबस्ता राज़ों के जानने वाले नहीं हैं कि जिन्हें उनके सिवा और कोई नहीं जानता (फिर पूछा) इब्ने उम्मे अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) आयत वल् लैलि की किरात किस तरह करते हैं? मैंने अर्ज़ किया कि वल् लैलि इज़ा यश्शा वन् नहारि इज़ा तजल्ला वज़ ज़करा वल उन्ना आपने फ़र्माया कि मुझे भी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खुद अपनी जुबाने मुबारक से इसी तरह सिखाया था। लेकिन अब शाम वाले मुझे इस तरह किरात करने से हटाना चाहते हैं।

اللَّهُمَّ بَسِّرْ لِي جَلِيسًا. قَرَأْتُ حَتَّى مَقْبَلًا، فَلَمَّا دَنَا قُلْتُ: أَرْجُو أَنْ يَكُونَ اسْتَحَابَ اللَّهِ. قَالَ: مِنْ أَيْنَ أَنْتَ؟ قُلْتُ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ. قَالَ: أَلَمْ يَكُنْ فِيكُمْ صَاحِبُ النُّعْلَيْنِ وَالْوَسَادِ الْمَوْطَرَةِ؟ أَوْ لَمْ يَكُنْ فِيكُمْ الَّذِي أُجْتَرِبَ مِنَ الشَّيْطَانِ؟ أَوْ لَمْ يَكُنْ فِيكُمْ صَاحِبُ السَّرِّ الَّذِي لَا يَعْلَمُهُ غَيْرُهُ؟ كَيْفَ قَرَأَ ابْنُ أُمِّ عَدْبٍ «وَاللَّيْلُ» فَقَرَأْتُ: «وَاللَّيْلُ إِذَا يَغْشَى، وَالنَّهَارُ إِذَا تَجَلَّى، وَالذِّكْرُ وَالْأُنْثَى» قَالَ: أَفَرَأَيْتَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَهَ إِلَى لَيْلٍ، فَمَا زَالَ يَهْوِي حَتَّى كَادُوا يَرُدُّونِي)).

3762. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद ने बयान किया कि हमने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से पूछा कि सहाबा में नबी करीम (ﷺ) से आदात व अख़लाक़ और तौर व तरीक़ पर सबसे ज़्यादा करीब कौनसे सहाबी थे? ताकि हम उनसे सीखें। उन्होंने कहा कि अख़लाक़, तौर व तरीक़ और सीरत व आदत में इब्ने उम्मे अब्द से ज़्यादा औहज़रत (ﷺ) से करीब और किसी को मैं नहीं समझता। (दीगर मक़ाम : 6097)

٣٧٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ خَدِيفَةَ عَنْ رَجُلٍ قَرِيبٍ الشَّمْتِ وَالْهَذْيِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى نَأْخُذَ عَنْهُ، فَقَالَ: مَا أَعْرِفُ أَحَدًا أَقْرَبَ مِنَّا وَهَذْيًا وَذَلًّا بِالنَّبِيِّ ﷺ مِنْ ابْنِ أُمِّ عَدْبٍ)). [طرفه في : ٦٠٩٧].

इब्ने उम्मे अब्द से मुराद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) हैं।

3763. मुझसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, कहा कि मुझसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं और मेरे भाई यमन से (मदीना तथ्यिबा) हाज़िर हुए और एक

٣٧٦٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَعْلَاءٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُونُسَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْأَسْوَدُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا مُوسَى الْأَشْعَرِيَّ يَقُولُ: ((قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي مِنْ

जमाने तक यहाँ क्रयाम किया। हम उस पूरे अर्से में यही समझते रहे कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के घराने ही के एक फ़र्द हैं, क्योंकि हुजूर (ﷺ) के घर में अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और उनकी वालिदा का (बक़रत) आना जाना हम खुद देखा करते थे। (दीगर मक़ाम : 4384)

बाब 28 : हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़यान (रज़ि.) का बयान

(बड़ों की लज़िश) हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम की ख़िदमात सुनहरी हफ़ों से लिखने के क़ाबिल हैं मगर कोई इंसान भूल-चूक से मा'सूम नहीं है। सिर्फ़ अंबिया (अलैहिस्सलाम) की ज़ात है कि जिनकी हिफ़ाज़त अल्लाह पाक खुद करता है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के ज़िक्र के सिलसिले में मौलाना मरहूम के क़लम से एक नामुनासिब बयान निकल गया है। अल्फ़ाज़ ये हैं, मुतर्जिम कहता है, सहाबियत का अदब हमको इससे मानेअ है कि हम मुआविया (रज़ि.) के बारे में कुछ कहें लेकिन सच्ची बात ये है कि उनके दिल में आँहज़रत (ﷺ) के अहले बैत की मुहब्बत न थी। मुख्तसरन

दिलों का जानने वाला सिर्फ़ बारी तआला है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के हक़ में मरहूम का ये लिखना मुनासिब न था। खुद ही सहाबियत के अदब का ए'तिराफ़ भी है और खुद ही उनके ज़मीर पर हमला भी, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला मरहूम की लज़िश को मुआफ़ करे और हशर के मैदान में सबको आयते करीमा व नज़अना मा फी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन (अल आराफ़ : 43) का मिस्दाक़ बनाए आमीन। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) के बेटे हैं और हज़रत अबू सुफ़यान रसूले करीम (ﷺ) के चचा होते हैं बउम्र 82 साल 60 हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) ने शहरे दमिश्क़ में वफ़ात पाई। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

3764. कहा हमसे हसन बिन बशीर ने बयान किया, उनसे इब्मान बिन अस्वद ने और उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने इशा के बाद बित्र की नमाज़ सिर्फ़ एक रकअत पढ़ी। वहीं हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मौला (कुरैब) भी मौजूद थे। जब वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो (हज़रत अमीर मुआविया रज़ि.) की एक रकअत बित्र का ज़िक्र किया उस पर उन्होंने कहा, कोई हर्ज नहीं है। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत उठाई है। (दीगर मक़ाम : 3765)

यकीनन उनके पास हुजूर (ﷺ) के क़ौल व फ़ैअल से कोई दलील होगी।

3765. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से कहा गया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बारे में आप (रज़ि.) क्या फ़र्माते हैं। उन्होंने बित्र की नमाज़ एक रकअत पढ़ी है? उन्होंने कहा कि वो खुद फ़क़ीह हैं। (राजेअ : 3764)

الْيَمَنِ، فَمَكُنَّا حِينَ مَا نَرَى إِلَّا أَنْ عَبْدَ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ، لَمَّا نَرَى مِنْ دُخُولِهِ وَدُخُولِ أُمِّهِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ)). [طرفه ب : ٤٣٨٤]

٢٨- بَابُ ذِكْرِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ

٣٧٦٤- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ بَشِيرٍ حَدَّثَنَا السُّعَالِيُّ عَنْ غَفَمَانَ بْنِ الْأَسْوَدِ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((أَوْتَرَ مُعَاوِيَةَ بَعْدَ الْعِشَاءِ بِرَكْعَةٍ وَعِنْدَهُ مَوْلَى لَابْنِ عَبَّاسٍ، فَأَتَى ابْنُ عَبَّاسٍ، فَقَالَ: دَعُهُ فَإِنَّهُ صَحِيبُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). [طرفه ب : ٣٧٦٥]

٣٧٦٥- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ قِيلَ لَابْنِ عَبَّاسٍ: هَلْ لَكَ فِي أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ مُعَاوِيَةَ فَإِنَّهُ مَا أَوْتَرَ إِلَّا بِوَاحِدَةٍ، قَالَ: ((إِنَّهُ فَقِيهٌ)). [راجع : ٣٧٦٤]

एक रकअत वित्र खुद रसूलुल्लाह (ﷺ) से प्राबित है। गालिबन इसी हदीष पर हज़रत मुआविया (रज़ि.) का अमल था। जमाअते अहले हदीष का आज भी अक़्बर इसी हदीष पर अमल है। यूँ तो 3-5-7 रकआत वित्र भी जाइज़ हैं मगर वित्र आखिरी एक रकअत ही का नाम है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के जवाब से ज़ाहिर होता है कि वो हज़रत मुआविया (रज़ि.) को फ़कीह जानते थे और उनके अमले शरई को हज़रत मानते थे। इससे भी हज़रत मुआविया (रज़ि.) की मनाक़िबत प्राबित होती है और यही बाब के तर्जुमे से मुताबकत है।

3766. मुझसे अमर बिन अब्बास ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने बयान किया, उन्होंने हमरान बिन अबान से सुना कि मुआविया (रज़ि.) ने कहा कि तुम लोग एक ख़ास नमाज़ पढ़ते हो। हम लोग नबी करीम (ﷺ) की सुहबत में रहे और हमने कभी आप (ﷺ) को इस वक़्त नमाज़ पढ़ते नहीं देखा बल्कि आपने तो इससे मना किया था। हज़रत मुआविया (रज़ि.) की मुराद अमर के बाद दो रकअत नमाज़ से थी। (जिसे उस ज़माने में कुछ लोग पढ़ते थे)। (राजेअ: 587)

बाब 29 : हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान और नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि फ़ातिमा जन्नत की औरतों की सरदार हैं

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) की सबसे छोटी साहबज़ादी और आप (ﷺ) को निहायत अज़ीज़ थीं। उनका निकाह हज़रत अली (रज़ि.) से 2 हिजरी में हुआ। हसन (रज़ि.), हुसैन (रज़ि.) और मुहसिन (रज़ि.) तीन लड़के और तीन लड़कियाँ ज़ैनब, उम्मे कुलसुम और रुक़य्या पैदा हुईं। आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के छः महीने या आठ महीने बाद उनका इतिकाल हुआ। चौबीस, उनतीस या तीस साल की उम्र पाई अला इख़ितलाफ़िल अक्वाल। रज़ियल्लाहु (वहीदी)

3767. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे हज़रत मिस्वर बिन मखरमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़ातिमा (रज़ि.) मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उसे नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया।

इस हदीष को इमाम बुखारी (रह) ने बाब अलामतुन नुबुव्वत में दूसरी सनद से वस्ल किया है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह) ने लिखा है कि ये हदीष क़वी दलील है इस बात पर कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) अपने ज़माने वाली और अपने बाद वाली सब औरतों से अफ़ज़ल हैं।

बाब 30 : हज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

उनकी कुत्रियत उम्मे अब्दुल्लाह थी। हज़रत सिद्दीके अक़बर (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं और रसूले करीम (ﷺ) की ख़ास (प्यारी)

۳۷۶۶- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي السَّيَّاحِ قَالَ : سَمِعْتُ حُمْرَانَ بْنَ أَبَانَ عَنْ مَعَاوِيَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((إِنَّكُمْ لَتَصَلُّونَ صَلَاةً لَقَدْ صَحَّبَنَا النَّبِيُّ ﷺ فَمَا رَأَيْنَاهُ يُصَلِّيَهَا، وَلَقَدْ نَهَى عَنْهَا، يَغْيِي الرُّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْغَضْرِ)). (راجع: ۵۸۷)

۲۹- بَابُ مَنَاقِبِ فَاطِمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((فَاطِمَةُ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ))

۳۷۶۷- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ أَبِي مَلِيكَةَ عَنِ الْمَسْنُونِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي، فَمَنْ أَعْصَبَهَا أَعْصَبَنِي)).

۳۰- بَابُ فَضْلِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

बीवी हैं। बड़ी ही आलिमा, फ़ज़िला, मुज्जहिदा और फ़ज़ीहल बयान थीं। ख़िलाफ़ते मुआविया तक ज़िन्दारहीं। 58 हिजरी में वफ़ात पाई। रमज़ानुल मुबारक की 27 तारीख़ को हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहा।

3768. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमान ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक दिन फ़र्माया, ऐ आइशा! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ रखते हैं और तुम्हें सलाम कहते हैं। मैंने उस पर जवाब दिया व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाह व बरकातुहु, आप (ﷺ) वो चीज़ मुलाहिज़ा फ़र्माते हैं जो मुझको नज़र नहीं आती।

(राजेअ: 3217)

3769. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने बयान किया, कहा (इमाम बुखारी रह ने) और हमसे अमर ने बयान किया, कहा हमको शुअबाने ख़बर दी, उन्हें अमर बिन मुरह ने और उन्हें हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मदों में तो बहुत से कामिल पैदा हुए लेकिन औरतों में मरयम बिनते इमरान, फ़िरओन की बीवी आसिया के सिवा और कोई कामिल पैदा नहीं हुई और आइशा की फ़ज़ीलत औरतों पर ऐसी है जैसे प्रीद की फ़ज़ीलत बक्रिया तमाम खानों पर है।

(राजेअ: 3411)

3770. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से ये फ़र्माते सुना है कि आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत औरतों पर ऐसी है जैसे प्रीद की फ़ज़ीलत और तमाम खानों पर है।

3771. मुहम्मद बिन बशशार (रज़ि.) ने मुझसे बयान किया,

3768- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْرِجٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: إِنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ: ((يَا عَائِشَةُ هَذَا جِبْرِيلُ يُفْرِغُ عَلَيْكَ السَّلَامَ. فَقُلْتُ: وَغَلِيهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ. تَرَى مَا لَا أَرَى. تُرِيدُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ)).

(راجع: 3217)

3769- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: ح وَحَدَّثَنَا غُمَرُو أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ غُمَرُو بْنِ مُوَيْثَةَ عَنْ مُوَيْثَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((كَمُلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيرٌ، وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَرْيَمُ بِنْتُ إِيمَانَ وَآسِيَةُ امْرَأَةِ فِرْعَوْنَ. وَفَضَّلْتُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضَّلْتُ التَّرِيدَ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ)).

(راجع: 3411)

3770- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيِّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((فَضَّلْتُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضَّلْتُ التَّرِيدَ عَلَى الطَّعَامِ)).

3771- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا

कहा हमसे अब्दुल वहाब बिन अब्दुल मजीद ने बयान किया, हमसे इब्ने औन ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने कि हज़रत आइशा (रज़ि.) बीमार पड़ीं तो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) अयादत के लिये आए और अर्ज़ किया, उम्मुल मोमिनीन! आप तो सच्चे जाने वाले के पास जा रही हैं या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र के पास। (आलमे बरज़ख में उनसे मुलाक़ात मुराद थी)। (दीगर मक़ाम : 4753, 4454)

3772. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हक़म ने और उन्होंने अबू वाईल से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब अली (रज़ि.) ने अम्मार और हसन (रज़ि.) को कूफ़ा भेजा था ताकि लोगों को अपनी मदद के लिये तैयार करें तो अम्मार (रज़ि.) ने उनसे ख़िताब करते हुए फ़र्माया था, मुझे भी ख़ूब मा'लूम है कि आइशा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ोजा हैं इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी, लेकिन अल्लाह तआला तुम्हें आजमाना चाहता है कि देखे तुम अली (रज़ि.) का इतिबाज़ करते हो (जो बरहक़ ख़लीफ़ा हैं) या आइशा (रज़ि.) की। (दीगर मक़ाम : 7100, 7101)

तसहीह :

हज़रत आइशा (रज़ि.) लोगों के भड़काने में आ गई और हज़रत अली (रज़ि.) से इस बात पर लड़ने को मुस्तइद हो गई कि वो हज़रत इम्मान (रज़ि.) के क़ातिलों से क़िसास नहीं लेते। हज़रत अली (रज़ि.) ये कहते थे कि पहले सब लोगों को एक हो जाने दो, फिर अच्छी तरह पूछताछ करके जिस पर क़त्ल प्राबित होगा उससे क़िसास लिया जाएगा। अल्लाह के हुक्म से ये आयत मुराद है, व क़र्ना फ़ी बुयूतिकुन्ना (अल अहज़ाब : 33) जो ख़ास आँहज़रत (ﷺ) की बीवियों के लिये उतरी है। यहाँ तक उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा फ़र्माती थीं मैं तो ऊँट पर सवार होकर हरकत करने वाली नहीं जब तक आँहज़रत (ﷺ) से न मिल जाऊँ या'नी मरने तक अपने घर में रहूँगी। हाफ़िज़ ने कहा, हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत तलहा (रज़ि.) और जुबैर (रज़ि.) ये सब हज़रात मुज्ताहिद थे। उनका मतलब ये था कि मुसलमानों में आपस के अंदर इतिफ़ाक़ करा देना ज़रूरी है और ये उस वक़्त तक मुम्किन न था जब तक कि हज़रत इम्मान (रज़ि.) के क़ातिलीन से क़िसास न लिया जाता। (वहीदी)

3773. हमसे इब्बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि (नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ज़वा में जाने के लिये आपने (अपनी बहन) अस्मा (रज़ि.) से एक हार आरियतन ले लिया था, इतिफ़ाक़ से वो रास्ते में कहीं गुम हो गया। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे तलाश करने के लिये चन्द सहाबा को भेजा। इस दौरान उनमें नमाज़ का वक़्त हो गया तो उन हज़रात ने बग़ैर वुज़ू के नमाज़ पढ़ ली फिर जब आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) से सूरेहाल के बारे में अर्ज़

عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ حَدَّثَنَا ابْنُ
عَوْنٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ ((أَنَّ عَائِشَةَ
اِسْتَنْكَتْ، فَجَاءَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ : يَا أُمُّ
الْمُؤْمِنِينَ. تَقْدُمِينَ عَلَى فَرَطٍ صِدْقٍ.
عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَعَلَى أَبِي بَكْرٍ)).
[طرفاه و . ٤٧٥٣ . ٤٤٥٤]

٣٧٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا
غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ سَمِعْتُ أَبَا
وَائِلَ قَالَ ((لَمَّا بَعَثَ عَلِيٌّ عَمَارًا
وَالْحَسَنَ إِلَى الْكُوفَةِ لِيَسْتَنْصِرَهُمَا،
خَطَبَ عَمَارٌ قَالًا : إِنِّي لَأَعْلَمُ أَنَّهَا رَوْحَتُهُ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. وَلَكِنْ اللَّهُ اِتْلَاكُمْ
لِيَتَّبِعُوا أَوَّابَهَا))

[طرفاه و . ٧١٠٠ . ٧١٠١]

٣٧٧٣- حَدَّثَنَا غَيْدٌ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا
أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ ((عَنْ
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا اسْتَعَارَتْ مِنْ
أَسْمَاءَ قِلَادَةً فَهَلَكَتْ. فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ
ﷺ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِهِ فِي طَلَبِهَا.
فَأَذَرَتْهُمْ الصَّلَاةَ. فَصَلُّوا بِغَيْرِ وُضْوءٍ.
فَلَمَّا أَتَوْا النَّبِيَّ ﷺ شَكُوا ذَلِكَ إِلَيْهِ.

किया, उसके बाद तयम्मूम की आयत नाज़िल हुई। इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा, तुम्हें अल्लाह तआला जज़ाए ख़ैर दे। अल्लाह की क़सम तुम पर जब भी कोई मरहला आया तो अल्लाह तआला ने उससे निकलने की सबील तुम्हारे लिये पैदा कर दी और तमाम मुसलमानों के लिये भी उसमें बरकत पैदा फ़र्माई। (राजेअ : 334)

3774. मुझसे अबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने कि रसूले करीम (ﷺ) अपने मर्जुल वफ़ात में भी अज्वाजे मुतहहरात की बारी की पाबन्दी फ़र्माते रहे अल्बत्ता ये दर्याफ़्त फ़र्माते रहे कि कल मुझे किस के यहाँ ठहरना है? क्योंकि आप (ﷺ) हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी के ख़्वाहों थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मेरे यहाँ क़याम का दिन आया तो आप (ﷺ) को सुकून हुआ। (राजेअ : 890)

قَرَأْتُ آيَةَ التَّيْمَةِ، فَقَالَ أُمَيْدُ بْنُ حُطَيْرٍ: جَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا، قَوْلَ اللَّهِ مَا تَزَلْ بِكَ أَمْرٌ قَطُّ إِلَّا جَعَلَ اللَّهُ لَكَ مِنْهُ مَخْرُجًا، وَجَعَلَ لِلْمُسْلِمِينَ فِيهِ بَرَكَةً).

[راجع: ٣٣٤]

٣٧٧٤- حَدَّثَنِي عَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمَّا كَانَ فِي مَرَضِهِ جَعَلَ يَدُورُ فِي بَيْتِهِ وَيَقُولُ: ((أَيُّنَا غَدَاةٌ)) حِرْصًا عَلَى بَيْتِ عَائِشَةَ. قَالَتْ غَائِشَةُ: فَلَمَّا كَانَ يَوْمِي سَكَرَ).

[راجع: ٨٩٠]

तशरीह: अब आपने ये पूछना छोड़ दिया कि कल मैं कहाँ रहूँगा। हाफ़िज़ ने सुबुकी से नक़ल किया कि हमारे नज़दीक पहले हज़रत फ़ातिमा अफ़ज़ल हैं फिर ख़दीजा, फिर आइशा (रज़ि.)। इमाम इब्ने तैमिया (रह) ने ख़दीजा (रज़ि.) और आइशा (रज़ि.) में तवक्कुफ़ किया है। इमाम इब्ने क़थीम ने कहा, अगर फ़ज़ीलत से मुराद क़ब्रते प्रवाब है तब तो अल्लाह ही बेहतर जानता है। अगर इल्म मुराद है तो हज़रत आइशा (रज़ि.) अफ़ज़ल हैं। अगर ख़ानदानी शराफ़त मुराद है तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) अफ़ज़ल हैं।

3775. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वट्टहाब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने कहा, हमसे हिशाम ने, उन्होंने अपने वालिद (इर्वा) से, उन्होंने कहा कि लोग आँहज़रत (ﷺ) को तोहफ़े भेजने में हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी का इंतिज़ार किया करते थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) कहती हैं कि मेरी सौकनें सब उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास गई और उनसे कहा, अल्लाह की क़सम लोग जान-बूझकर अपने तोहफ़े उस दिन भेजते हैं जिस दिन हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी होती है। हम भी हज़रत आइशा (रज़ि.) की तरह अपने लिये फ़ायदा चाहती हैं। इसलिये तुम आँहज़रत (ﷺ) से कहो कि आप (ﷺ) लोगों को फ़र्मा दें कि मैं जिस भी बीवी के पास होऊँ जिसकी भी बारी हो उसी घर में तोहफ़े भेज दिया करो। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ये बात आँहज़रत (ﷺ) के सामने बयान की, आप (ﷺ) ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। उन्होंने दोबारा अर्ज़ किया जब भी जवाब न दिया। फिर तीसरी बार अर्ज़

٣٧٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((كَانَ النَّاسُ يَتَخَرَّوْنَ بِهَذَا يَوْمَ غَائِشَةَ. قَالَتْ غَائِشَةُ: فَاجْتَمَعَ صَوَاحِبِي إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَقُلْنَ: يَا أُمَّ سَلَمَةَ، وَاللَّهِ إِنَّ النَّاسَ يَتَخَرَّوْنَ بِهَذَا يَوْمَ غَائِشَةَ، وَإِنَّا نُرِيدُ الْخَيْرَ كَمَا تُرِيدُهُ غَائِشَةُ، فَمُرِّي رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَأْمُرَ النَّاسَ أَنْ يَهْدُوا إِلَيْهِ حَيْثُمَا كَانَ، أَوْ حَيْثُمَا دَارَ. قَالَتْ: فَذَكَرْتُ ذَلِكَ أُمَّ سَلَمَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، قَالَتْ فَاعْرِضْ عَنِّي فَلَمَّا

किया तो आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उम्मे सलमा (रज़ि.)! आइशा (रज़ि.) के बारे में मुझको न सताओ। अल्लाह की क़सम! तुममें से किसी बीवी के लिहाफ़ में (जो मैं ओढ़ता हूँ सोते वक़्त) मुझ पर वह नाज़िल नहीं होती हों (आइशा का मुक़ाम ये है) उनके लिहाफ़ में वह नाज़िल होती है। (राजेअ: 2574)

غَاذَ إِلَيَّ ذَكَرْتُ لَكَ ذَلِكَ، فَأَعْرَضَ سِرًّا
فَلَمَّا كَانَ فِي الثَّالِثَةِ ذَكَرْتُ لَكَ فَقَالَ: ((يَا
أُمِّ سَلَمَةَ، لَا تُؤْذِينِي فِي عَائِشَةَ، فَإِنَّهُ
وَاللَّهِ مَا نَزَلَ عَلَى الْوَحْيِ وَأَنَا فِي لِحَافِ
امْرَأَةٍ مِنْكُمْ غَيْرَهَا)). [رأى: ١٢٥٧٤]

तशरीह: हाफ़िज़ ने कहा कि इससे आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत ख़दीजा (रज़ि.) पर लाज़िम नहीं आती बल्कि उन बीवियों पर फ़ज़ीलत निकलती है जो आइशा (रज़ि.) के ज़माने में मौजूद थीं और उनके कपड़ों में वह नाज़िल होने की वजह ये मुम्किन है कि उनके वालिदे माजिद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आँहजरत (ﷺ) के ख़ास साथी थे। अल्लाह तआला ने उनकी स़ाहबज़ादी को भी ये बरक़त दी। ये वजह भी हो सकती है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) की ख़ास प्यारी बीवी थीं या ये वजह हो कि वो कपड़ों को बहुत स़ाफ़ रखती होंगी। अल ग़र्ज़ आलिक फ़ज़लुल्लाहि यूतीहि मन्थ्यशाउ दूसरी हदीष में है कि फिर उन बीवियों ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से सिफ़ारिश कराई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेटी अगर तू मुझको चाहती है तो आइशा (रज़ि.) से मुहब्बत कर। उन्होंने कहा कि अब मैं इस बारे में कोई दख़ल न दूँगी। क़स्तलानी (रह) और किरमानी ने कहा है कि अह्मदीय की गिनती की रू से इस मक़ाम पर सहीह बुखारी (रह) का निस्फ़े अव्वल पूरा हो जाता है। गो पारों के लिहाज़ से पन्द्रहवें पारे पर निस्फ़े अव्वल पूरा होता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पन्द्रहवां पारा

63. किताब मनाक़िबुल अन्सार

अन्सार के मनाक़िब

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : अन्सार रिज्वानुल्लाह अलैहिम की

फ़ज़ीलत का बयान

अल्लाह ने फ़र्माया जो लोग पहले ही एक घर में (या'नी मदीना में) जम गए ईमान को भी जमा दिया जो मुसलमान उनके पास हिजरत करके जाते हैं उससे मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को (माले ग़नीमत में से) जो हाथ आए उससे उनका दिल नहीं कुढ़ता बल्कि और खुश होते हैं।

अल्हम्दुलिल्लाह आज 6 ज़ीक़अदा 1391 हिजरी को मस्जिद अहले हदीष दरियाव में पारा नम्बर 15 की तस्वीद का काम शुरू कर रहा हूँ अल्लाह पाक कलम को लज़िश से बचाए और फ़हमे हदीष के लिये दिल व दिमाग़ में रोशनी अता फ़र्माए। मस्जिद अहले हदीष दरियाव में फ़न्ने हदीष व तफ़सीर से बेशतर कुतुब का बेहतरीन ज़ख़ीरा महफूज़ है। अल्लाह पाक उन बुजुर्गों को ष्वाबे अज़ीम बख़्शे जिन्होंने इस पाकीज़ा ज़ख़ीरे को यहाँ जमा फ़र्माया। मौजूदा अकाबिर जमाअते दरियाव को भी अल्लाह पाक जज़ा-ए-ख़ैर दे जो इस ज़ख़ीरे की हिफ़ाज़त कमा इक्क़हु फ़र्माते रहते हैं।

۱- بَابُ مَنَاقِبِ الْأَنْصَارِ

هُوَ الَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ
يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي
صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا [الحشر: 9]

तशरीह : लफ़्ज़े अन्सार नासिर की जमा है जिसके मा'नी मददगार के हैं, मदीना के क़बीले औस और ख़ज़रज जब मुसलमान हुए और नुसरते इस्लाम के लिये आँहज़रत (ﷺ) से अहद किया तो अल्लाह पाक ने अपने रसूले पाक

तरीह: बुआष या बुगाष मदीना से दो मील पर एक मुकाम है वहाँ अंसार के दो कबीलों औस व खज़रज में बड़ी सख्त लड़ाई हुई थी। औस के रईस हज़ैर थे, उसैद के वालिद और खज़रज के रईस अम् बिन नोअमान बियाजी थे। ये

दोनों उसमें मारे गये थे। पहले खज़रज को फ़तह हुई थी फिर हुज़ैर ने औस वालों को मजबूत किया तो औस की फ़तह हुई ये हादसा आँहज़रत (ﷺ) के हिज़रत के वाकिये के चार पाँच साल पहले हो चुका था। आँहज़रत (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी पर ये कबीले मुसलमान हो गये और उखुव्वते इस्लामी से पहले तमाम वाकियात को भूल गये आयते करीमा, फअस्वहतुम बिनिअमतिही इख़वाना (आले इमरान : 103) में इसी तरफ़ इशारा है।

3778. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि फ़तहे मक्का के दिन जब आँहज़रत (ﷺ) ने कुरैश को (ग़ज़व-ए-हुनैन की) ग़नीमत का सारा माल दे दिया तो कुछ नौजवान अंसारियों ने कहा (अल्लाह की क्रसम) ये तो अजीब बात है अभी हमारी तलवारों से कुरैश का खून टपक रहा है और हमारा हाज़िल किया हुआ माले ग़नीमत सिर्फ़ उन्हें दिया जा रहा है। उसकी ख़बर जब आँहज़रत (ﷺ) को मिली तो आप (ﷺ) ने अंसार को बुलाया, अनस (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो ख़बर मुझे मिली है क्या वो सहीह है? अंसार लोग झूठ नहीं बोलते थे उन्होंने अर्ज कर दिया कि आप (ﷺ) को सहीह ख़बर मिली है। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इससे खुश और राजी नहीं हो कि जब सब लोग ग़नीमत का माल लेकर अपने घरों को वापस होंगे तो तुम लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) को साथ लिये अपने घरों को जाओगे? अंसार जिस नाले या घाटी में चलेंगे तो मैं भी उसी नाले या घाटी में चलूँगा। (राजेअ : 3146)

3778 - حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي النَّجَّاحِ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ الْأَنْصَارِ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ - وَأَعْطَى قُرَيْشًا - : وَأَطَى إِنْ هَذَا لَهُوَ الْقَصَبُ، إِنْ شِئْنَا لَنَقَطُرَ مِنْ وَمَاءِ قُرَيْشٍ، وَهَتَمَابِنَا تُرْدُ عَلَيْهِمْ. فَبَغَى ذَلِكَ النَّبِيُّ ﷺ لَذَا الْأَنْصَارِ، قَالَ فَقَالَ : ((مَا الَّذِي يَلْقَى عَنْكُمْ؟)) - وَكَانُوا لَا يَكْذِبُونَ - فَقَالُوا : هُوَ الَّذِي يَلْعَنُ. قَالَ ((أَوْ لَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَرْجِعَ النَّاسُ بِالْعَنَائِمِ إِلَى بُيُوتِهِمْ، وَتَرْجِعُونَ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَى بُيُوتِكُمْ؟ وَلَوْ سَلَكْتُ الْأَنْصَارَ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِي الْأَنْصَارِ أَوْ شِعْبَهُمْ)). [راجع : 3146]

दूसरी रिवायत में है कि अंसार ने मअज़रत की कि कुछ नौजवान कम अक्ल लोगों ने ऐसी बातें कह दी हैं। आप (ﷺ) का इशार्द सुनकर अंसार ने बिल इतिफ़ाक़ कहा कि हम इस फ़ज़ीलत पर सब खुश हैं। नाला या घाटी का मतलब ये कि सफ़र और हज़र मौत और ज़िन्दगी में हर हाल में तुम्हारे साथ हूँ। क्या ये शर्फ़ अंसार को काफ़ी नहीं है?

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि,
अगर मैंने मक्का से हिज़रत न की होती मैं भी
अंसार का एक आदमी होता,

ये क़ौल अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन कअब बिन आसिम ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

3779. मुझसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद

2 - بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ : ((لَوْ لَا الْهَجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الْأَنْصَارِ))
قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3779 - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ

बिन ज़ियाद ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने या (बयान किया कि) अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार जिस नाले या घाटी में चलें तो मैं भी उन्हीं के नाले में चलूंगा, और अगर मैं हिजरत न करता तो मैं अंसार का एक फ़र्द होना पसन्द करता। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा आप (ﷺ) पर मेरे माँ-बाप कुर्बान हों आप (ﷺ) ने ये कोई भी बात नहीं फ़र्माई आप (ﷺ) को अंसार ने अपने यहाँ ठहराया और आप (ﷺ) की मदद की थी या हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने (उसके हम मा'नी) और कोई दूसरा कलिमा कहा। (दीगर मक़ाम : 7344)

मा'लूम हुआ कि अंसार का दर्जा बहुत बड़ा है कि रसूल करीम (ﷺ) ने उस गिरोह में होने की तमन्ना ज़ाहिर फ़र्माई। अंसार की अल्लाह के नज़दीक कुबूलियत का ये खुला हुआ पुबूत है कि इस्लाम और कुर्आन के साथ उनका नाम क़ायामत तक ख़ैर के साथ ज़िन्दा है। आज भी अंसार भाई जहाँ भी हैं दीनी ख़िदमात में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का अंसार और मुहाजिरीन के दरम्यान भाईचारा क़ायम करना

3- بَابُ إِخَاءِ النَّبِيِّ ﷺ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ

तशरीह : जब मुहाजिरीन अपने वतन मक्का को छोड़कर मदीना आए तो बहुत परेशान होने लगे। घर बार, अम्वाल व अक़ारिब के छूटने का ग़म था। आँ हज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर डेढ़-डेढ़ सौ अंसार और मुहाजिरीन में भाईचारा क़ायम करा दिया जिसकी वजह से मुहाजिर और अंसारी दोनों आपस में एक-दूसरे को सगे भाई से ज़्यादा समझने लगे यही वाक़िया मुवाज़ात है जिसकी नज़ीर क़ौमों की तारीख़ में मिलनी नामुमकिन है।

3780. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके व लियद ने, उनसे उनके दादा ने कि जब मुहाजिर लोग मदीना में आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सअद बिन रबीआ के दरम्यान भाईचारा करा दिया। सअद (रज़ि.) ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) से कहा कि मैं अंसार में सबसे ज़्यादा दौलतमन्द हूँ इसलिये आप मेरा आधा माल ले लें और मेरी बीवियाँ हैं, आप उन्हें देख लें जो आपको पसन्द हो उसके बारे में मुझे बताएँ मैं उसे तलाक़ दे दूँगा, इहत पूरी होने के बाद आप उससे निकाह कर लें। इस पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तुम्हारे अहल और माल में बरकत अता फ़र्माए। तुम्हारा बाज़ार किधर है? चुनौचे मैंने बनी क़ैनक़ाअ का बाज़ार उन्हें बता दिया, जब वहाँ से कुछ तिजारत करके लौटे तो उनके साथ कुछ पनीर और घी था फिर वो इसी तरह रोज़ाना सुबह सवेरे बाज़ार

3780- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: ((لَمَّا قَدِمُوا الْمَدِينَةَ أَخَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَسَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ. قَالَ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنِّي أَكْثَرُ الْأَنْصَارِ مَالًا، فَأَقْسِمُ مَالِي بِصَفَيْنِ. وَلِي امْرَأَتَانِ، فَاظْطَرُّ أَعْجِبَهُمَا إِلَيْكَ فَسَمَّاهُ لِي أَطْلَقَهَا، فِذَا انْقَضَتْ عِدَّتُهَا فَتَزَوَّجَهَا. قَالَ: بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ، أَيْنَ سُوقُكُمْ؟ فَذَلُّوهُ عَلَى سُوقِ بَنِي قَيْنَقَاعٍ، فَمَا انْقَلَبَ

में चले जाते और तिजारत करते आखिर एक दिन ख़िदमतते नबवी में आए तो उनके जिस्म पर (खुशबू की) ज़र्दी का निशान था औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये क्या है उन्होंने बताया कि मैंने शादी कर ली है औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, महर कितना अदा किया है? अर्ज़ किया कि सोने की एक गुठली या (ये कहा कि) एक गुठली के पाँच दिरहम वज़न के बराबर सोना अदा किया है। ये शक इब्राहीम रावी को हुआ। (राजेअ: 2048)

3781. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) (मक्का से हिजरत करके मदीना आए तो) रसूले करीम (ﷺ) ने उनके और सअद बिन रबीअ (रज़ि.) के दरम्यान भाईचारा करा दिया, हज़रत सअद (रज़ि.) बहुत दौलतमन्द थे उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) से कहा, अंज़ार को मा'लूम है कि मैं उनमें सबसे ज़्यादा मालदार हूँ इसलिये मैं अपना आधा आधा माल अपने और आपके दरम्यान बांट देना चाहता हूँ और मेरे घर में दो बीवियाँ हैं जो आपको पसन्द हो मैं उसे तलाक़ दे दूँगा उसकी इद्दत गुज़र जाने पर आप उससे निकाह कर लें। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तुम्हारे अहल व माल में बरकत अत्रा करे। (मुझको अपना बाज़ार दिखला दो) फिर वो बाज़ार से उस वक़्त तक वापस नहीं आए जब तक कुछ घी और पनीर बत्तौर नफ़ा बचा नहीं लिया। थोड़े ही दिनों के बाद जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में वो हाज़िर हुए तो जिस्म पर ज़र्दी का निशान था। औहज़रत (ﷺ) ने पूछा ये क्या है? बोले कि मैंने एक अंज़ारी ख़ातून से निकाह कर लिया है। आप (ﷺ) ने पूछा महर क्या दिया है? बोले एक गुठली सोना या (ये कहा कि) सोने की एक गुठली दी है। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा अब वलीमा कर ख़वाह एक बकरी ही से हो। (राजेअ: 2049)

إِلَّا وَمَقَّةً لِّعَنْتٍ مِنَ الْبَطْرِ وَسَمْنٍ. ثُمَّ تَابَعُوا الْغَدُوًّا. ثُمَّ جَاءَ يَوْمًا وَبِهِ أَمْرٌ صَفَرٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَهْتَم؟)) قَالَ: تَزَوَّجْتُ. قَالَ: ((كَمْ سَقْتِ إِلَيْهَا)). قَالَ: نَوَافَةٌ مِنْ ذَهَبٍ - أَوْ وَزْنُ نَوَافَةٍ مِنْ ذَهَبٍ - شَكَتُ إِبْرَاهِيمَ)).

[راجع: ٢٠٤٨]

٣٧٨١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَيْنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ وَأَخَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ تَيْنَةُ وَتَيْنٌ سَعْدُ بْنُ الرَّبِيعِ - وَكَانَ كَثِيرَ الْمَالِ - فَقَالَ سَعْدُ: قَدْ عَلِمْتَ الْأَنْصَارُ أَنِّي مِنْ أَكْثَرِهَا مَالًا، سَأَقْسِمُ مَالِي تَيْنِي وَتَيْنَكَ شَطْرَيْنِ، وَلِي امْرَأَتَانِ فَأَنْظُرُ أَغْنِيَهُمَا إِلَيْكَ فَأُطْلِقَهَا حَتَّى إِذَا حَلَّتْ تَزَوَّجْتُهَا. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ. فَلَمْ يُزَجِّعْ يَوْمَئِذٍ حَتَّى أَفْضَلَ شَيْئًا مِنْ سَمْنٍ وَأَقِطٍ، فَلَمْ يَلْبَثْ إِلَّا يَسِيرًا حَتَّى جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَعَلَيْهِ وَضْرٌ مِنْ صَفَرَةٍ. فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَهْتَم؟)) قَالَ: تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ، فَقَالَ: ((مَا سَقْتِ فِيهَا؟)) قَالَ: وَزْنُ نَوَافَةٍ مِنْ ذَهَبٍ - أَوْ نَوَافَةٌ مِنْ ذَهَبٍ - فَقَالَ: ((أَوَّلُهُمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)).

[راجع: ٢٠٤٩]

तशरीहः

मुज्तिहिदे मुल्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने इस हदीष को बहुत से मुकामात पर नक़ल फ़र्माकर इससे बहुत से मसाइल को निकाला है जो आपके मुज्तिहिदे मुल्लक होने की दलील है। जो हज़रत ऐसे जलीलुल क़द्र इमाम को महज़ नाकिल कहकर आपकी दिरायत का इन्कार करते हैं उनको अपनी इस हरकत पर नादिम होना चाहिये कि वो चाँद पर थूकने की कोशिश कर रहे हैं, हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिमुस्तक़ीम आमीन यहाँ हज़रत इमाम का मत्सुद इस हदीष के लाने से वाक़िया मुवाखात को बयान करना है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत सअद बिन रबीअ को आपस में भाई भाई बना दिया रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

3782. हमसे अबू हम्पाम सुल्लत बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि मैंने मुगीरह बिन अब्दुर्रहमान से सुना, कहा हमसे अबुज्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हरैरह (रज़ि.) ने कि अंसार ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ) खज़ूर के बागात हमारे और मुहाजिरीन के दरम्यान तक्सीम फ़र्मा दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं ऐसा नहीं करूँगा इस पर अंसार ने (मुहाजिरीन से) कहा फिर आप (ﷺ) ऐसा कर लें कि काम हमारी तरफ़ से आप अंजाम दिया करें और खज़ूरों में आप हमारे साथी हो जाएँ, मुहाजिरीन ने कहा हमने आप लोगों की ये बात सुनी और हम ऐसा ही करेंगे। (राजेअ: 2325)

या'नी उसमें मुजायक़ा नहीं बाग़ तुम्हारे ही रहें हम उनमें मेहनत करेंगे उसकी उजरत में आधा फल ले लेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने अंसार और मुहाजिरीन में बाग़ों की तक्सीम मंज़ूर नहीं फ़र्माई, क्योंकि आप (ﷺ) को वल्ले इलाही से मा'लूम हो गया था कि आइन्दा फ़तुह्वात बहुत होंगी बहुत सी जायदादें मुसलमानों के हाथ आएँगी फिर अंसार को मौरूषी जायदाद क्यूँ तक्सीम कराई जाए। स़दक़ रसूलल्लाह (ﷺ)।

बाब 4 : अंसार से मुहब्बत रखने का बयान

3783. हमसे हज़्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, मुझे अदी बिन श़ाबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत बराअ (रज़ि.) से सुना वो कहते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना यूँ बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अंसार से सिर्फ़ मोमिन ही मुहब्बत रखेगा और उनसे सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही बुर्ज़ रखेगा। पस जो शख़्स उनसे मुहब्बत रखे उससे अल्लाह मुहब्बत रखेगा और जो उनसे बुर्ज़ रखेगा उससे अल्लाह तआला बुर्ज़ रखेगा (मा'लूम हुआ कि अंसार की मुहब्बत निशाने ईमान है और उनसे दुश्मनी रखना बेईमान लोगों का काम है)।

3784. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन

۳۷۸۲- حَدَّثَنَا الصُّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَبُو هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْمُفِيرَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَتِ الْأَنْصَارُ: أَلَسِمْ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ النَّخْلُ. قَالَ: لَا. قَالَ: تَكْفُونَا الْمَوْرُوءَةَ وَتَشْرَكُونَا فِي الثَّمَرِ. قَالُوا: سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا.)) (ر. جم. ۲۳۲۵)

۴- بَابُ حُبِّ الْأَنْصَارِ

۳۷۸۳- حَدَّثَنَا خُجَّاجُ بْنُ مِهْهَالٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ - أَوْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْأَنْصَارُ لَا يُحِبُّهُمْ إِلَّا الْمُؤْمِنُ، وَلَا يَبْغِضُهُمْ إِلَّا مُنَافِقٌ. فَمَنْ أَحَبَّهُمْ أَحَبَّهُ اللَّهُ، وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ أَبْغَضَهُ اللَّهُ.))

۳۷۸۴- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

जुबैर ने कहा और उनसे हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ईमान की निशानी अंसार से मुहब्बत रखना है और निफ़ाक़ की निशानी अंसार से बुरज़ रखना है।

(राजेअ: 17)

جُبَيْرٌ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((آيَةُ الْإِيمَانِ حُبُّ
الْأَنْصَارِ، وَآيَةُ النِّفَاقِ بُغْضُ الْأَنْصَارِ)).

[راجع: ١٧]

अंसार इस्लाम के अव्वलीन मददगार हैं इस लिहाज़ से उनका बड़ा दर्जा है पस जो अंसार से मुहब्बत रखेगा उसने इस्लाम की मुहब्बत से नूरे ईमान हासिल कर लिया और जिसने ऐसे बन्दगाने इलाही से बुरज़ रखा उसने इस्लाम से बुरज़ रखा इसलिये कि ऐसी बुरी ख़सलत निफ़ाक़ की अलामत है।

बाब 203 : अंसार से नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तुम लोग मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब हो

3785. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया और उनसे हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) ने (अंसार की) औरतों और बच्चों को मेरे गुमान के मुताबिक़ किसी शादी से वापस आते हुए देखा तो आप खड़े हो गये और फ़र्माया अल्लाह (गवाह है) तुम लोग मुझे सबसे ज़्यादा अज़ीज़ हो, तीन बार आप (ﷺ) ने ऐसा ही फ़र्माया। (दीगर मक़ाम: 5180)

• - بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْأَنْصَارِ:

أَنْتُمْ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ

٣٧٨٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ
الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَأَى النَّبِيُّ ﷺ النِّسَاءَ
وَالصِّبْيَانَ مُقْبِلِينَ - قَالَ: حَبِيبَتْ أَنَّهُ قَالَ
مِنْ عُرْسٍ - فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ مُمْتَلًا فَقَالَ:
اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ. قَالَهَا
ثَلَاثَ مَرَّاتٍ)). [طرفه في: ٥١٨٠].

3786. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम बिन कधीर ने बयान किया, कहा हमसे बहज़ बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे हिशाम बिन ज़ैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा कि अंसार की एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई, उनके साथ एक उनका बच्चा भी था। औहजरत (ﷺ) ने उनसे कलाम किया फिर फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम लोग मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हो दो मर्तबा आपने ये जुम्ला फ़र्माया।

٣٧٨٦- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ
كَثِيرٍ حَدَّثَنَا يَهُزُّ بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ:
أَخْبَرَنِي هِشَامُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ
بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَتْ
امْرَأَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ
وَمَعَهَا صَبِيٌّ لَهَا، فَكَلَّمَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
فَقَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّكُمْ
أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ. مَرَّتَيْنِ)).

[طرفاه في: ٥١٣٤, ٦٦٤٥].

(दीगर मक़ाम: 5234, 6645)

तशरीह: इमाम नववी (रह) फ़र्माते हैं, हाज़िहिल्लिम अतु अम्मा महरिमुन लहू कउम्मि सुलैम व उखितहा व अम्मल्मुरादु बिल्खल्वति अन्नहा सअलतहू सुवालन खफ़िय्यन बिहजिही नासुं वलम तकुन खल्वतुन मुल्लक़तुन व हियल खल्वतु अल्मन्ही अन्हा (नववी) ये आप (ﷺ) से ख़ल्वत में बात करने वाली औरत

ऐसी थी जिसके लिये आप (ﷺ) महरम थे उम्मे सुलैम या उसकी बहन या खल्वत से मुराद ये है कि उसने लोगों की मौजूदगी में आप (ﷺ) से एक बात निहायत आहिस्तगी से की और जिस खल्वत की मुमानअत है वो मुराद नहीं है। मुस्लिम की रिवायत में फ़ख़लाबिहा का लफ़्ज़ है जिसकी वजह से क़ज़ाहत करना ज़रूरी हुआ।

बाब 6 : अंसार के ताबेदार लोगों की फ़ज़ीलत का बयान

٦- بَابُ إِتْبَاعِ الْأَنْصَارِ

इससे उनके हलीफ़ और लौण्डी-गुलाम, हाली-मवाली मुराद हैं।

3787. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुरह ने, उन्होंने अबू हम्ज़ा से सुना, और उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से कि अंसार ने अज़्र किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हर नबी के ताबेदार लोग होते हैं और हमने आप (ﷺ) की ताबेदारी की है। आप (ﷺ) अल्लाह से दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह हमारे ताबेदारों को भी हममें शरीक कर दे। तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी दुआ फ़र्माई। फिर मैंने इस हदीष का ज़िक्र अब्दुर्रहमान इब्ने अबी लैला के सामने किया तो उन्होंने कहा कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने भी ये हदीष बयान की थी।

(दीगर मक़ाम : 3788)

3788. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, कहा हमसे अम्र बिन मुरह ने कि मैंने अंसार के एक आदमी अबू हम्ज़ा से सुना कि अंसार ने अज़्र किया हर क़ौम के ताबेदार (हाली-मवाली) होते हैं। हम तो आप (ﷺ) के ताबेदार बने आप (ﷺ) दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह तआला हमारे ताबेदारों को भी हममें शरीक कर दे। पस नबी करीम (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई, ऐ अल्लाह! उन ताबेदारों को भी उन्हीं में से कर दे। अम्र ने बयान किया कि फिर मैंने इस हदीष का तज़िक़रा अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से किया तो उन्होंने (तअज़ुब के तौर पर) कहा ज़ैद ने ऐसा कहा? शुअबा ने कहा कि मेरा ख़याल है कि ये ज़ैद। ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) हैं (न और कोई ज़ैद जैसे ज़ैद बिन घ़ाबित (रज़ि.) वग़ैरह जैसे इब्ने अबी लैला ने गुमान किया) (राजेअ : 3787)

हाफ़िज़ ने कहा शुअबा का गुमान सहीह है अबू नुऐम ने मुस्ताख़रज़ में इसको अली बिन ज़अदि के तरीक़ से ज़ैद बिन अरक़म से यक्नी तौर पर निकाला है।

बाब अंसार के घरानों की फ़ज़ीलत का बयान

3789. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे

٣٧٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ غَمْرٍو سَمِعْتُ أَبَا حَمْزَةَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ ((قَالَ: الْأَنْصَارُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، لِكُلِّ نَبِيٍّ أَتْبَاعٌ، وَإِنَّا قَدْ اتَّبَعْنَاكَ، فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَ أَتْبَاعَنَا مِنَّا. فَدَعَانَا بِهِ. فَسَمِعْتُ ذَلِكَ إِلَى أَنْ بَلَغَ أَبِي لَيْلَى، فَقَالَ: لَقَدْ زَعَمَ ذَلِكَ زَيْدٌ)).

[طرفه ٣ : ٣٧٨٨]

٣٧٨٨- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا غَمْرٍو بْنُ مُرَّةٍ سَمِعْتُ أَبَا حَمْزَةَ وَجَلَاءَ مِنَ الْأَنْصَارِ : قَالَتْ الْأَنْصَارُ: إِنَّ لِكُلِّ قَوْمٍ أَتْبَاعًا، وَإِنَّا قَدْ اتَّبَعْنَاكَ، فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَ أَتْبَاعَنَا مِنَّا. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((اللَّهُمَّ اجْعَلْ أَتْبَاعَهُمْ مِنْهُمْ)). قَالَ غَمْرٍو: فَذَكَرْتُهُ لِأَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقَدْ زَعَمَ ذَلِكَ زَيْدٌ. قَالَ شُعْبَةُ: أَظُنُّهُ زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ)).

[راجع : ٣٧٨٧]

٧- بَابُ فَضْلِ دُورِ الْأَنْصَارِ

٣٧٨٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا

गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनू नज़्ज़ार का घराना अंसार में से सबसे बेहतर घराना है, फिर बनू अब्दुल अशहल का, फिर बनू अल हारिष बिन ख़ज़रज अकबर और औस दोनों हारिषा के बेटे थे और अंसार का हर घराना उम्दा ही है। सअद बिन उबादा (रज़ि.) ने कहा कि मेरा ख़याल है नबी करीम (ﷺ) ने अंसार के कई क़बीलों को हम पर फ़ज़ीलत दी है। उनसे किसी ने कहा तुझको भी तो बहुत से क़बीलों पर औहज़रत (ﷺ) ने फ़ज़ीलत दी है और अब्दुस् समद ने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना और उनसे अबू उसैद ने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीस बयान की। इस रिवायत में सअद के बाप का नाम उबादा मज़कूर है।

(दीगर मक्राम : 3790, 3808, 6053)

عَنْ غُنْدَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَيْرُ ذَوْرِ الْأَنْصَارِ بَنُو النَّخَارِ. ثُمَّ بَنُو عَبْدِ الْأَشْهَلِ. ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْحَزْرَجِ. ثُمَّ بَنُو سَاعِدَةَ. وَلِي كُلِّ ذَوْرِ الْأَنْصَارِ خَيْرٌ)). فَقَالَ سَعْدٌ: مَا أَرَى النَّبِيَّ ﷺ إِلَّا قَدْ فَضَّلَ عَلَيْنَا. فَقِيلَ: قَدْ فَضَّلَكُمْ عَلَى كَثِيرٍ. وَقَالَ عَبْدُ الصَّمَدِ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ أَبُو أُسَيْدٍ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا وَقَالَ: ((سَعْدُ بْنُ غُبَاةٍ)).

أُصْرَفَ فِي : ٣٧٩٠، ٣٨٠٨، ٦٠٥٣.

जिन्होंने ये कहा था कि औहज़रत (ﷺ) ने औरों को हम पर फ़ज़ीलत दी। जब सअद बिन उबादा ने ये कहा तो उनके भतीजे सहल ने उनसे कहा कि तुम औहज़रत (ﷺ) पर ए'तिराज़ करते हो, आप (ﷺ) ख़ूब जानते हैं। (कि कौन किससे अफ़ज़ल है?)

बनू नज़्ज़ार क़बील-ए-ख़ज़रज से हैं। उनके दादा तैमुल्लाह बिन अलबा बिन अम्र ख़ज़रजी ने एक आदमी पर हमला करके उसे काट दिया था। इस पर उनका लक़ब बनू नज़्ज़ार हो गया। (फ़तहूल बारी) हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं बनू नज़्ज़ार हम इख़वानु ज़हि रसूलिल्लाहि (ﷺ) लिअन्न वालिदत अब्दिलमुत्तलिब मिन्हुम व अलैहिम नज़ल लम्मा क़दिमलमदीनत फलहुम मज़ीदुन अला ग़ैरहिम व कान अनस मिन्हुम फलहु मज़ीदु इनायति तहफ़फ़ुज़ि फ़ज़ाइलिहिम (फ़तहूलबारी) या'नी बनू नज़्ज़ार नबी करीम (ﷺ) के मामू होते हैं इसलिये कि अब्दुल मुत्तलिब आप (ﷺ) के दादा मुहतरम की वालिदा बनू नज़्ज़ार की बेटी थीं इसलिये जनाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो पहले बनू नज़्ज़ार ही के मेहमान हुए, इसलिये उनके लिये मज़ीद फ़ज़ीलत प्राबित हुई। हज़रत अनस (रज़ि.) भी उसी ख़ानदान से थे। इसीलिये उन पर इनायाते नबवी ज़्यादा थीं।

इस रिवायत में यहाँ कुछ इज़माल है जिसे मुस्लिम की रिवायत ने खोल दिया है जो ये है हहय्यना यहयय्यनु यह्या अत्तमीमी अनलमुगीरतुब्नु अब्दिरह्मान अन अबिज़ज़नाद क़ाल शहिद अबू सलमत तसमिअ अब्बा सैद अलअन्सारी यशहदु अन्न रसूलिल्लाहि (ﷺ) क़ाल दुरूलअन्सारि बनू नज़्ज़ार शुम्म बनू अब्दिलअशहल शुम्म बनू हारिषि बिन ख़ज़रज शुम्म बनू साइदत वी दूरिलअन्सारि ख़ैरन क़ाल अबू सलमत क़ाल अबू उसैद अताहुम अना अला रसूलिल्लाहि (ﷺ) लौ कुन्तु काज़िबन लबदअतु क़ौमी बनी साइदत व बलग ज़ालिक सअदुब्नु उबादा फवजद फ़ी नफ़िस्ही व क़ाल ख़ल्फुना फकुन्ना आख़र अलअर्बअ असजू इला हिमारी अता रसूलिल्लाहि (ﷺ) फकल्लमहू इब्न अख़ी सहल फक़ाल अतज़हबु लितरुह अला रसूलिल्लाहि (ﷺ) व रसूलुल्लाहि (ﷺ) आलमु औ लैस हस्बुक अन्तकून राबिअ अर्बइन फरजअ व क़ाल अल्लाहु व रसूलुहु आलमू व अमर बिहिमारिही फहल्ल अन्हु (सहीह मुस्लिम जिल्द 2, पेज 305) खुलासा ये कि जब हज़रत सअद बिन उबादा ने ये सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमारे क़बीला का ज़िक्र चौथे दर्जे पर फ़र्माया है तो ये गुस्सा होकर आप (ﷺ) की ख़िदमत शरीफ़ में अपने गधे पर सवार होकर जाने

लगे मगर उनके भतीजे सहल ने उनसे कहा कि आप रसूले करीम (ﷺ) के फ़र्मान की तर्दीद करने जा रहे हैं हालाँकि रसूले करीम (ﷺ) बहुत ज़्यादा जानने वाले हैं। क्या आपके शर्फ़ के लिये ये काफ़ी नहीं कि रसूले करीम (ﷺ) ने चौथे दर्जे पर बतौर शर्फ़ आपके क़बीले का नाम लेकर ज़िक्र फ़र्माया। जबकि बहुत से और क़बाईले-अंसार के लिये आपने सिर्फ़ इज्मालन ज़िक्रे ख़ैर फ़र्मा दिया है ये सुनकर हज़रत सअद बिन इबादा ने अपने ख़याल से रुजूअ किया और कहने लगे हौं बेशक अल्लाह व रसूल ही ज़्यादा जानते हैं, फ़ौरन अपनी सवारी से ज़ीन को उतारकर रख दिया।

3790. हमसे सअद बिन हफ़्म तलही ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या ने कि अबू सलमा ने बयान किया कि मुझे हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि अंसार में सबसे बेहतर या अंसार के घरानों में से सबसे बेहतर बनू नज़ार, बनू अब्दिल अशहल, बनू हारिष और बनू साएदा के घराने हैं।

(राजेअ : 3789)

3791. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अमर बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अब्बास बिन सहल ने और उनसे अबू हुमैद साअदी ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार का सबसे बेहतरीन घराना बनू नज़ार का घराना है फिर अब्दुल अशहल का, फिर बनी हारिष का, फिर बनी साएदा का और अंसार के तमाम घरानों में ख़ैर है। फिर हमारी मुलाक़ात सअद बिन इबादा (रज़ि.) से हुई तो वो अबू उसैद (रज़ि.) से कहने लगे, अबू उसैद तुमको मा'लूम नहीं आँहज़रत (ﷺ) ने अंसार के बेहतरीन घरानों की ता'रीफ़ की और हमें (बनू साएदा) को सबसे अख़ीर में रखा आख़िर सअद बिन इबादा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अंसार के सबसे बेहतरीन ख़ानदानों का बयान हुआ और हम सबसे अख़ीर में कर दिये गये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम्हारे लिये ये काफ़ी नहीं कि तुम्हारा ख़ानदान भी बेहतरीन ख़ानदान है।

(राजेअ : 1481)

आख़िर में रहे तो क्या और अब्बल मे रहे तो क्या बहरहाल तुम्हारा ख़ानदान भी बेहतरीन ख़ानदान है उस पर तुमको खुश होना चाहिये। एक रिवायत में है कि इस बारे में हज़रत सअद बिन इबादा ने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज करना चाहा था मगर वो अपने भतीजे के कहने पर रुक गये और अपने ख़याल से रुजूअ कर लिया, यहाँ आँहज़रत (ﷺ) से मिलना और इस ख़याल का ज़ाहिर करना मज़कूर है दोनों में तत्बीक़ ये हो सकती है कि उस वक़्त वो इस ख़याल से रुक गये होंगे। बाद में जब मुलाक़ात हुई होगी तो आप (ﷺ) से दरयाफ़्त कर लिया होगा।

٣٧٩٠- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ الطَّلْحِيُّ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى قَالَ أَبُو سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَيْدٍ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: خَيْرُ الْأَنْصَارِ - أَوْ قَالَ: ((خَيْرُ دُورِ الْأَنْصَارِ - بَنُو النَّجَّارِ، وَبَنُو عَبْدِ الْأَشْهَلِ، وَبَنُو الْحَارِثِ، وَبَنُو سَاعِدَةَ)).

[راجع: ٣٧٨٩]

٣٧٩١- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَبٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عَبَّاسِ بْنِ سَيْلٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ خَيْرَ دُورِ الْأَنْصَارِ دَارُ بَنِي النَّجَّارِ، ثُمَّ عَبْدُ الْأَشْهَلِ، ثُمَّ دَارُ بَنِي الْحَارِثِ، ثُمَّ بَنِي سَاعِدَةَ، وَفِي كُلِّ دُورٍ الْأَنْصَارِ خَيْرٌ)). فَلَجِئْنَا سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ، فَقَالَ أَبُو أُسَيْدٍ: أَلَمْ تَرَ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ خَيْرَ الْأَنْصَارِ فَجِئْنَا أَخِيرًا؟ فَأَذْرَكَ سَعْدُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا رَسُولَ اللَّهِ خَيْرُ دُورِ الْأَنْصَارِ فَجِئْنَا أَخِيرًا، فَقَالَ: ((وَأَوَلَيْسَ بِحَسْبِكُمْ أَنْ تَكُونُوا مِنَ الْخَيْرِ؟)).

[راجع: ١٤٨١]

बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) का अंसार से ये फ़र्माना कि तुम सन्न से काम लेना यहाँ तक कि तुम मुझसे हौज़ पर मुलाकात करो. ये क़ौल हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है.

3792. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से और उन्होंने हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) से कि एक अंसारी सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! फ़लाँ शख़्स की तरह मुझे भी आप (ﷺ) हाकिम बना दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे बाद (दुनियावी मुआमलात में) तुम पर दूसरों को तरज़ीह दी जाएगी इसलिये सन्न से काम लेना, यहाँ तक कि मुझसे हौज़ पर आ मिलो। (दीगर मक़ाम : 7057)

۸- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْأَنْصَارِ: ((اصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْخَوْضِ)) قَالَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

۳۷۹۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أُسَيْدِ بْنِ هُزَيْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ: أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَلَا تَسْتَعْمَلُنِي كَمَا اسْتَعْمَلْتَ فَلَانًا؟ قَالَ: ((سَتَلْقَوْنَ بَغْدِي اثْرًا. فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْخَوْضِ)).

[صرفه فی : ۷۰۵۷.]

हाफ़िज़ ने कहा कि ये अर्ज़ करने वाले खुद उसैद बिन हुज़ैर थे और जिनको हुक्मत मिली थी वो अम्र बिन आस थे।

तशरीह : हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व हुब मिन रिवायति सहाबी अन सहाबी ज़ाद मुस्लिम व क़द रवाह यह्या इब्नु सईद व हिशामुब्नु ज़ैद अन अनस बिदुनि ज़िक्रि उसैद बिन हुज़ैर लाकिन इख़ित्तसारिल्किस्मतिल्लती हाहुना व ज़क्र कुल्लुम्मिन्हुमा किस्सतन उख़रा गैर हाज़िही फहदीषु यहयब्नि सईदिन तक्रहम फिल्जिज्यति व हदीषु हिशामिन याती फिल्मगाज़ी व बक्र अलिहाजल्हदीषि किस्मतुन उख़रा मिन वजिह आज़र फअखर ज़शफिइयु मिन रवायति मुहम्मदिनब्नि इब्नाहीम अत्तमीमी अन अबी उसैदिब्नि हुज़ैरिन तलब मिनन्नबिय्यि (ﷺ) लिअहलि बैतैनि मिनलअन्सारि फअमर लक बैतुन बिक्सकिन मिन तमरिन व शतरिमिन शईरिन फ़क़ाल उसैद या रसूलुल्लाहि जज़ाकल्लाहु अन्ना ख़ैरन फ़क़ाल व अन्नुम फज़ज़ाकुमुल्लाहु ख़ैरन या मअशरलअन्सारि व इन्नकुम लाइक़तु सब्बिन व इन्नकुम सतलूक़न बअदी अषरतन (फ़हल बारी) या नी ये रिवायत सहाबी (हज़रत अनस) की सहाबी (हज़रत उसैद) से है और मुस्लिम ने ज़्यादा किया कि इस रिवायत को यह्या बिन सईद और हिशाम बिन ज़ैद ने अनस से रिवायत किया है उसमें उसैद का ज़िक्र नहीं है लेकिन किस्सा इख़ित्तसार से मज़कूर है और उन दोनों ने उसके सिवा दूसरा किस्सा ज़िक्र किया है। यह्या बिन सईद वाली हदीष बाबुल ज़िज्या में मज़कूर हो चुकी है और हिशाम की हदीष मगाज़ी में आणी और इस हदीष के बारे में दूसरे तरीक़ से एक और वाकिया ज़िक्र हुआ है जिसे इमाम शाफ़ई ने मुहम्मद बिन इब्नाहीम तैमी की रिवायत अबू उसैद बिन हुज़ैर से नक़ल किया है कि अबू उसैद ने दो घरानों के लिये अंसार में से आँहज़रत (ﷺ) से इम्दाद तलब की। आँहज़रत (ﷺ) ने हर घराना के लिए एक वस्क खज़ूर और कुछ जो बतौर इम्दाद देने का हुक्म फ़र्माया। इस पर उसैद ने आप (ﷺ) का शुक्रिया अदा करते हुए जज़ाकल्लाह कहा। आँहज़रत (ﷺ) ने जवाब में फ़र्माया कि ऐ अंसारियों! अल्लाह तुमको भी जज़ाए ख़ैर दे। मेरे बाद तुम लोग तलजियाँ चखोगे और देखोगे कि दूसरों को तुम पर तरज़ीह दी जाएगी। पस उस वक़्त तुम सन्न से काम लेना, यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौषर पर आकर मुलाकात करो।

3793. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे

۳۷۹۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: سَمِعْتُ

हिशाम ने कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार से कहा, मेरे बाद तुम देखोगे कि तुम पर दूसरों को फौकियत दी जाएगी। पस तुम सब करना यहाँ तक कि मुझसे आ मिलो और मेरी तुमसे मुलाक़ात हौज़ पर होगी। (राजेअ: 3146)

3794. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ग़ौरी ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना... जब वो अनस (रज़ि.) के साथ खलीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक के यहाँ जाने के लिये निकले.... कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को बुलाया ताकि बह्रैन का मुल्क बतौर जागीर उन्हें अत्ता फ़र्मा दें। अंसार ने कहा जब तक आप (ﷺ) हमारे भाई मुहाजिरीन को भी उसी जैसी जागीर न अत्ता फ़र्माएँ हम इसे कुबूल नहीं करेंगे। ओहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया देखो जब आज तुम कुबूल नहीं करते हो तो फिर मेरे बाद भी सब करना यहाँ तक कि मुझसे आ मिलो, क्योंकि मेरे बाद करीब ही तुम्हारी हक़तलफ़ी होने वाली है। (राजेअ: 2376)

या'नी दूसरे ग़ैर मुस्तहिक लोग ओहदों पर मुकर्र होंगे और तुमको महरूम कर दिया जाएगा, बनी उमय्या के ज़माने में ऐसा ही हुआ और रसूल करीम (ﷺ) की पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हुई, मगर अंसार ने फ़िल वाक़ेअ सब से काम लेकर वसिय्यते नबी पर पूरा अमल किया रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु। ये उस वक़्त की बात है जब हज़रत अनस (रज़ि.) को अब्दुल मलिक बिन मरवान ने सताया था और वो बसरा से दमिश्क जाकर वलीद बिन अब्दुल मलिक के यहाँ अपनी शिकायात लेकर पहुँचे थे। आख़िर वलीद बिन अब्दुल मलिक (हाकिमे वक़्त) ने उनका हक़ दिलाया। (फ़तहूल बारी)

बाब 9 : नबी करीम (ﷺ) का दुआ करना कि (ऐ अल्लाह!) अंसार और मुहाजिरीन पर अपना करम फ़र्मा

3795. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अयास ने बयान किया उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (ख़न्दक़ खोदते वक़्त) फ़र्माया हक़ीक़ी ज़िन्दगी तो सिर्फ़ आख़िरत की ज़िन्दगी है। पस ऐ अल्लाह! अंसार और मुहाजिरीन पर अपना करम फ़र्मा और क़तादा से रिवायत है उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह, और उन्होंने ने बयान किया उसमें यूँ है पस अंसार की मफ़िरत फ़र्मा दे।

أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِلْأَنْصَارِ: ((إِنَّكُمْ سَتَلْقَوْنَ بَعْدِي أُمَّةً، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي، وَتَوْعِدُكُمْ الْخَوْصُ)). (راجع: 3146)

3794- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حِينَ خَرَجَ مَعَهُ إِلَى الْوَلِيدِ قَالَ: ((دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الْأَنْصَارَ إِلَى أَنْ يَقْطَعَ لَهُمُ الْيَحْرُومَ، فَقَالُوا: لَا، إِلَّا أَنْ تَقْطَعَ لِإِخْوَانِنَا مِنَ الْمُهَاجِرِينَ مِثْلَهَا)). قَالَ: ((إِنَّمَا لَا فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي، فَإِنَّهُ سَيُصِيبُكُمْ بَعْدِي أُمَّةٌ)). (راجع: 2376)

9 - بَابُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اصْلَحِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ))

3795- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِيَاسٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا عِشْرَ إِلَّا عِشْرُ الْآخِرَةِ، فَاصْلَحِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ)). (راجع: 2834) وَعَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ. وَقَالَ: ((فَاغْفِرْ لِلْأَنْصَارِ)).

3796. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अंसार ग़ज़्व-ए-खन्दक के मौक़े पर (खन्दक खोदते हुए) ये शेर पढ़ते थे हम वो हैं जिन्होंने हज़रत (ﷺ) से जिहाद पर बेअत की है, जब तक हमारी जान में जान है। औ हज़रत (ﷺ) ने (जब ये सुना तो) उसके जवाब में यूँ फ़र्माया, ऐ अल्लाह! आखिरत की ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी हकीक़ी ज़िन्दगी नहीं है, पस अंसार और मुहाजिरीन पर अपना फ़ज़ल व करम फ़र्मा।

(राजेअ: 2834)

3797. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम खन्दक खोद रहे थे और अपने कैधों पर मिट्टी उठा रहे थे। उस वक़्त आप (ﷺ) ने ये दुआ की, ऐ अल्लाह! आखिरत की ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी हकीक़ी ज़िन्दगी नहीं। पस अंसार और मुहाजिरीन की तू मफ़िरत फ़र्मा।

ये जंगे अहज़ाब का वाक़िया है जिसमें मुसलमानों ने कुफ़ारे अरब के लश्करों की जो ता'दाद में बहुत थे, अंदरूनी शहर से मुदाफ़िअत (रक्षा) की थी और शहर की हिफ़ाज़त के लिये शहर के चारों ओर खन्दक खोदी गई थी। इसीलिये इसे जंगे खन्दक भी कहा गया है। तफ़सीली बयान आगे आएगा। उसमें अंसार और मुहाजिरीन की फ़ज़ीलत है और यही तर्जुमतुल बाब है।

बाब 10 : उस आयत की तफ़सीर में, और अपने नफ़्सों पर वो दूसरों को मुक़द्दम रखते हैं, अगरचे खुद वो फ़ाक़ा ही में मुब्तला हों

3798. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन दाऊद ने बयान किया, उनसे फ़ुज़ैल बिन ग़ज़्वान ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक साहब (खुद अबू हुरैरह रज़ि.) ही मुराद हैं) रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में भूखे हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने उन्हें अज़्वाजे मुतहहरात के यहाँ भेजा। (ताकि उनको खाना खिला दें) अज़्वाज ने कहला भेजा कि हमारे पास पानी के सिवा कुछ भी नहीं है। इस पर औ हज़रत

۳۷۹۶- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حَمِيدِ الطَّوِيلِ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ الْأَنْصَارُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ يَقُولُ:

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا عَلَى الْجِهَادِ مَا خِينَا أَبَدًا فَأَجَابَهُمُ: اللَّهُمَّ لَا عِشَ إِلَّا عِشَ الْآخِرَةِ، فَأَكْرَمَ الْأَنْصَارُ وَالْمُهَاجِرَةَ. (راجع: ۲۸۳۴)

۳۷۹۷- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ غُنْدَرٍ أَنَّ اللَّهَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ قَالَ: ((جَاءَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَنَحْنُ نَخْفِرُ الْخَنْدَقَ وَنَنْقُلُ التُّرَابَ عَلَى أَكْتَادِنَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ لَا عِشَ إِلَّا عِشَ الْآخِرَةِ، فَاغْفِرْ لِلْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ)).

۱۰- بَابُ: «وَيُؤْتِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ

وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ» [الحشر: ۹]

۳۷۹۸- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ

بْنُ دَاوُدَ عَنْ فَصِيلِ بْنِ غَزْوَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَبَعَثَ إِلَى سَابِهِ، فَقُلْنَا: مَا مَعَنَا إِلَّا الْمَاءُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

(ﷺ) ने फ़र्माया इनकी कौन मेहमानी करेगा? एक अंसारी सहाबी बोले मैं करूँगा। चुनाँचे वो उनको अपने घर ले गये और अपनी बीवी से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के मेहमान की खातिर तवाज़ोअ कर, बीवी ने कहा कि घर में बच्चों के खाने के सिवा और कोई चीज़ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि जो कुछ भी है उसे निकाल दो और चराग जला लो और बच्चे अगर खाना मांगते हैं तो उन्हें सुला दो। बीवी ने खाना निकाल दिया और चराग जला दिया और अपने बच्चों को (भूखा) सुला दिया। फिर वो दिखा तो ये रही थीं कि चराग दुरुस्त कर रही हैं लेकिन उन्होंने उसे बुझा दिया। उसके बाद दोनों मियाँ-बीवी मेहमान पर ज़ाहिर करने लगे कि गोया वो भी उनके साथ खा रहे हैं। लेकिन उन दोनों ने (अपने बच्चों समेत रात) फ़ाका से गुज़ार दी, सुबह के वक़्त जब वो सहाबी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुम दोनों मियाँ-बीवी के नेक अमल पर रात को अल्लाह तआला हंस पड़ा या (ये फ़र्माया कि उसे) पसन्द किया। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, और वो (अंसार) तरज़ीह देते हैं अपने नफ़्सों के ऊपर (दूसरे गरीब सहाबा को) अगरचे वो खुद भी फ़ाका ही में हों और जो अपनी तबीअत के बुख़ल से महफूज़ रखा गया, सो ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

(दीगर मक़ाम : 4889)

मज्मूई तौर पर अंसार की फ़ज़ीलत साबित हुई। हदीष और बाब में यही मुताबकत है।

बाब 11 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि, अंसार के नेक लोगों की नेकियों को कुबूल करो और उनके ग़लतकारों से दरगुज़र करो

3799. मुझसे अबू अली मुहम्मद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दान के भाई शाज़ान ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, हमें शुअबा बिन हज़ाज ने ख़बर दी, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र और हज़रत अब्बास (रज़ि.) अंसार की एक मजलिस से गुज़रे। देखा कि तमाम अहले मजलिस रो रहे हैं। पूछा आप लोग क्यों रो

وَسَلَّمَ: ((مَنْ يَحْتُم - أَوْ يَحْتَف - هَذَا؟)) فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ: آه. فَأَنْطَلَقَ بِهِ إِلَى امْرَأَتِهِ فَقَالَ: أَكْرِمِي حَتَفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَتْ: مَا جِئْنَا إِلَّا قَوْتَ صَبَاحِي. فَقَالَ: هَيْبِي طَعَامَكُمْ، وَأَصْبِحِي سِرَاجَكُمْ، وَتَوَمِّي صَبَاحَكَ إِذَا أَرَادُوا عَشَاءً. فَهَيَّاتِ طَعَامَهَا، وَأَصْبَحْتِ سِرَاجَهَا، وَتَوَمَّتِ صَبَاحَهَا، ثُمَّ لَمَسَتْ كَأَنَّهُمَا تَصْلُحُ سِرَاجَهَا فَأَطْفَأَتْهُ، فَجَعَلَا يُرِيَايَهُمَا بَاكِلَيْنِ، فَبَاتَا طَوِيلَيْنِ. فَلَمَّا أَصْبَحَ غَدَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: صَبَحَكَ اللَّهُ اللَّيْلَةَ - أَوْ عَجَب - مِنْ فَعَالِكُمَا. فَأَنْزَلَ اللَّهُ: ﴿وَيُؤْتُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ، وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ﴾.

[طرمه ي : 4889]

११ - بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ، وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ))

3799 - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى أَبُو عَلِيٍّ حَدَّثَنَا شَاذَانُ أَخُو عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبِي أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ بْنُ الْحَجَّاجِ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: مَرَّ أَبُو بَكْرٍ وَالْعَبَّاسُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

रहे हैं? मज्लिस वालों ने कहा कि अभी हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की मज्लिस को याद कर रहे थे जिसमें हम बैठा करते थे (ये औहज़रत (ﷺ) के मर्जुल वफ़ात का वाक़िया है) उसके बाद ये औहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) को वाक़िया की ख़बर दी। बयान किया कि उस पर औहज़रत (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए, सरे मुबारक पर कपड़े की पट्टी बँधी हुई थी। रावी ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और उसके बाद फिर कभी मिम्बर पर आप (ﷺ) तशरीफ़ न ला सके। आपने अल्लाह की हम्दो-घना के बाद फ़र्माया मैं तुम्हें अंसार के बारे में वसियत करता हूँ कि वो मेरे जिस्म व जान हैं उन्होंने अपनी तमाम जिम्मेदारियाँ पूरी की हैं लेकिन उसका बदला जो उन्हें मिलना चाहिये था, वो मिलना अभी बाक़ी है। इसलिये तुम लोग भी उनके नेक लोगों की नेकियों की क़द्र करना और उनके ख़ताकारों से दरगुज़र करते रहना। (दीगर मक़ाम: 3801)

بِمَجْلِسٍ مِنْ مَجَالِسِ الْأَنْصَارِ وَهُمْ يَكُونُ، فَقَالَ: مَا يُبْكِيكُمْ؟ قَالُوا: ذُكِّرْنَا مَجْلِسَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَا. فَدَعَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ بِذَلِكَ، قَالَ فَمَخْرُجُ النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ غَضِبَ عَلَى رَأْسِهِ حَاشِيَةً يُرَدُّ، قَالَ فَصَنَعَ الْجَنُورَ، وَكَمْ يَصْنَعُهُ بَعْدَ ذَلِكَ الْيَوْمَ، فَحَمَدَ اللَّهُ وَأَثَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَوْصِيَكُمْ بِالْأَنْصَارِ فَإِنَّهُمْ كَرَّسِي وَعَيْتِي، وَقَدْ قَضُوا الَّذِي عَلَيْهِمْ وَبَقِيَ الَّذِي لَهُمْ، فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ)).

[طرفه في: 3801]

3800. हमसे अहमद बिन यज़कूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने गुसैल ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने इकिरपा से सुना, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए आप (ﷺ) अपने दोनों शानों पर चादर ओढ़े हुए थे और (सरे मुबारक पर) एक स्याह पट्टी (बँधी हुई थी) आप (ﷺ) मिम्बर पर बैठ गये और अल्लाह तआला की हम्दो-घना के बाद फ़र्माया, अम्मा बअद ऐ लोगों! दूसरों की तो बहुत क़बरत हो जाएगी लेकिन अंसार कम हो जाएँगे और वो ऐसे हो जाएँगे जैसे खाने में नमक होता है। पस तुममें से जो शख्स भी किसी ऐसे महकमे में हाकिम हो जिसके ज़रिये किसी को नुक़सान व नफ़ा पहुँचा सकता हो तो उसे अंसार के नेकोकारों की भलाई करनी चाहिये और उनके ख़ताकारों से दरगुज़र करना चाहिये।

(राजेअ: 927)

3801. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे सुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने बयान किया, कहा कि

٣٨٠٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يَحْيَى عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((أَوْصِيَكُمْ بِالْأَنْصَارِ فَإِنَّهُمْ كَرَّسِي وَعَيْتِي، وَقَدْ قَضُوا الَّذِي عَلَيْهِمْ وَبَقِيَ الَّذِي لَهُمْ، فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ)). [راجع: 927]

٣٨٠١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ

मैंने क़तादा से सुना और उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार मेरे जिस्मो-जान हैं। एक दौर आया कि दूसरे लोग तो बहुत हो जाएंगे, लेकिन अंसार कम रह जाएंगे। इसलिये उनके नेकोकारों की क़द्र किया करना, और ख़ताकारों से दरगुज़र किया करना।

(राजेअ: 3799)

أَنْسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْأَنْصَارُ كُرْشِي وَعُثَيْبِي وَالنَّاسُ سَيَكْتُمُونَ وَيَقْلُونَ، فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ)).

[راجع: 3799]

तरीह: यहाँ तक हज़रत इमाम ने अंसार के फ़ज़ाइल बयान फ़र्माए और आयात व अह्दाय की रोशनी में वाज़ेह करके बतलाया कि अंसार की मुहब्बत जुच्चे ईमान है। इस्लाम पर उन लोगों के बहुत से एहसानात हैं। ये वो खुशानसीब मुसलमान हैं जिन लोगों ने रसूले करीम (ﷺ) की मदीना मे मेज़बानी का शर्फ़ हासिल किया और ये वो लोग हैं कि उन्होंने औहज़रत (ﷺ) से जो अह्द वफ़ा बाँधा था उसे पूरा कर दिखाया। पस उनके लिये दुआ-ए-ख़ैर करना क़यामत तक हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। जो लोग अंसारी कहलाते हैं जो आम तौर पर कपड़ा बुनने का बेहतरीन कारोबार करते हैं, जहाँ तक उनके नसबनामों का ता'ल्लुक है, ये फ़िल् हकीकत अंसारे नबविया ही के ख़ानदानों से ता'ल्लुक रखते हैं, अल्हम्दुलिल्लाह आज भी ये हज़रात नुसरते इस्लाम में बहुत आगे आगे नज़र आते हैं, क़ष्परल्लाहु सवाद्हुम आमीन अब आगे उनके कुछ अफ़रादे खुसूसी के मनाकिब शुरू होते हैं।

बाब 12 : हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.)

के फ़ज़ाइल का बयान

आप अबुन नोअमान बिन इम्रुल कैस बिन अब्दुल अशहल हैं और क़बीला औस के आप बड़े सरदार हैं जैसा कि हज़रत सअद बिन ज़बादा ख़ज़रज के बड़े हैं।

3802. मुझसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा मुझसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने कहा कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास हदिया में एक रेशमी हुल्ला आया तो सहाबा उसे छूने लगे और और उसकी नमी और नज़ाकत पर तअज्जुब करने लगे। आप (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया तुम्हें इसकी नमी पर तअज्जुब है सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के रूमाल (जन्नत में) इससे कहीं बेहतर हैं या (आप ﷺ ने फ़र्माया कि) उससे कहीं ज़्यादा नर्म व नाज़ुक हैं। इस हदीस की रिवायत क़तादा और ज़ुहरी ने भी की है, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ: 3249)

3803. मुझसे मुहम्मद बिन मुन्नान ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना के दामाद फ़ज़ल बिन मसादिर ने बयान किया, कहा हमसे

١٢ - بَابُ مَنَاقِبِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

٣٨٠٢ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((أَمْدِنْتُ لِلنَّبِيِّ حُلَّةً خَرِيرًا، فَجَعَلَ أَصْحَابُهُ يَمْسُونَهَا وَيَعْبَثُونَ مِنْ لَبِئْهَا، فَقَالَ: ((أَتَعْبَثُونَ مِنْ لَبِئٍ هَذِهِ؟ لَمَّا دُرِلَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ خَيْرٌ مِنْهَا، أَوْ أَلَيْنُ)). رَوَاهُ قَتَادَةُ وَالرُّمَيْيُّ سَمِعًا أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: 3249]

٣٨٠٣ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْتَنِي حَدَّثَنَا فَضْلٌ مِنْ مَسَاوِرِ حَتَّى أَبِي عَوَانَةَ

आ'मश ने, उनसे अबू सुफयान ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) की मौत पर अर्श हिल गया और आ'मश से रिवायत है, उनसे अबू सलैह ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया। एक सहाब ने जाबिर (रज़ि.) से कहा कि बराअ (रज़ि.) तो इस तरह बयान करते हैं कि चारपाई जिस पर मुआज़ (रज़ि.) की नअश रखी हुई थी, हिल गई थी। हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा उन दोनों क़बीलों (औस और ख़ज़रज) के बीच (ज़मान-ए-जाहिलियत में) दुश्मनी थी। मैंने खुद नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) की मौत पर अर्श रहमान हिल गया था।

रिवायत में उस अदावत और दुश्मनी की तरफ इशारा है जो अन्सार के दो क़बीलों, औस व ख़ज़रज के दरम्यान ज़माना जाहिलियत में थी लेकिन इस्लाम के बाद उसके अपरात कुछ भी बाक़ी नहीं रह गये थे। हज़रत सअद (रज़ि.) क़बीला औस के सरदार थे और हज़रत बराअ का ता'ल्लुक ख़ज़रज से था। हज़रत जाबिर (रज़ि.) का मक़सद ये है कि इस पुरानी दुश्मनी की वजह से उन्होंने पूरी तरह हदीष नहीं बयान की। बहरहाल अर्श रहमान और सरीर दोनों के हिलने के बारे में हदीष आई है और दोनों सूरतों की मुहदिषीन ने ये तशरीह की है कि उसमें हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) की मौत को एक अज़ीम हादसा बताया गया है आप (रज़ि.) के मर्तबा को घटाना किसी के भी सामने नहीं है।

3804. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू उमामा बिन सहल बिन हनीफ़ ने और उनसे हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक क़ौम (यहूद बनी कु़रैज़ा) ने सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) को प्रालिष मानकर हथियार डाल दिये तो उन्हें बुलाने के लिये आदमी भेजा गया और वो गधे पर सवार होकर आए। जब इस जगह के क़रीब पहुँचे जिसे (नबी करीम ﷺ ने अय्यामे जंग में) नमाज़ पढ़ने के लिये मुंतख़ब किया हुआ था तो आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया कि अपने सबसे बेहतर शख्स के लिये या (आपने ये फ़र्माया) अपने सरदार को लेने के लिये खड़े हो जाओ। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ सअद! उन्होंने तुमको प्रालिष मानकर हथियार डाल दिये हैं। हज़रत सअद (रज़ि.) ने कहा फिर मेरा फ़ैसला ये है कि उनके जो लोग जंग करने वाले हैं उन्हें ख़त्म कर दिया जाए और उनकी औरतों, बच्चों को जंगी क़ैदी बना लिया जाए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुमने अल्लाह के फ़ैसले के मुताबिक़ फ़ैसला किया या (आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि) फ़रिश्ते के हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला किया है।

حَدَّثَنَا أَبُو عَرَاةَ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي سَفْيَانَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : «اهْتَزَّ الْقَرْشُ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ» وَعَنْ الْأَعْمَشِ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مَثَلَهُ فَقَالَ رَجُلٌ لِّجَابِرٍ : لِأَنَّ الْبَرَاءَ يَقُولُ اهْتَزَّ السَّرِيرُ فَقَالَ : إِنَّهُ كَانَ بَيْنَ هَذَيْنِ الْحَتَمَيْنِ صَفَائِنِ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : «اهْتَزَّ غَرْشُ الرَّحْمَنِ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ».

۳۸۰۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرَفَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ خُنَيْفٍ عَنْ أَبِي سَعْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : أَنَّ أَنَسًا نَزَلُوا عَلَى حُكْمِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَبَاءَ عَلَى جَنَابٍ، فَلَمَّا بَلَغَ قَرْيَتَنَا مِنَ الْمَسْجِدِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «فَرُّوا إِلَى خَيْرِكُمْ - أَوْ سَيِّئِكُمْ - فَقَالَ : يَا سَعْدُ، إِنَّ هَؤُلَاءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ» قَالَ : فَإِنِّي أَخْصِمُ فِيهِمْ أَنْ تَقْتُلَ مُقَاتِلَتَهُمْ، وَتَتَى قَرَارِيَهُمْ. قَالَ : «حَكَمْتَ بِحُكْمِ اللَّهِ، أَوْ بِحُكْمِ الْمَلِكِ».

(राजेअ: 4043)

[راجع: ६०६२]

इससे हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) की फ़ज़ीलत प्राबित हुई। उनका ता'ल्लुक अन्सार से था, बड़े दानिशमन्द थे, यहूदी क़बीले बनू कुरैज़ा ने उनको ब्रालिष (मध्यस्थ) तस्लीम किया मगर ये इत्मीनान न दिलाया कि वो अपनी जंगजू फ़ितरत को बदलकर अमनपसन्दी इख़्तियार करेंगे और फ़साद और साज़िश के क़रीब न जाएँगे और बगावत से बाज़ रहेंगे, मुसलमानों के साथ ग़द्दारी नहीं करेंगे। इन हालात का जाइज़ा लेकर हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) ने वही फैसला दिया जो क़यामे अमन के लिये मुनासिबे हाल था, आहज़रत (ﷺ) ने भी उनके फैसले की तहसीन फ़र्माई।

बाब 13 : उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिशर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

۱۳ - بَابُ مَنْقَبَةِ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ وَعَبَادِ بْنِ بَشَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

तशरीह: उसैद बिन हुज़ैर बिन सिमाक बिन अतीक अशहली खज़रजी हैं जो जंगे उहुद में आहज़रत (ﷺ) के साथ प्राबित रहे 20 हिजरी में उनका इतिकाल हुआ।

3805. हमसे अली बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे हब्बान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उन्हें क़तादा ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की मजलिस से उठकर दो सहाबी एक तारीक रात में (अपने घर की तरफ़) जाने लगे तो एक ग़ैबी नूर उनके आगे आगे चल रहा था, फिर जब वो जुदा हुए तो उनके साथ साथ वो नूर भी अलग अलग हो गया और मअमर ने प्राबित से बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) और एक दूसरे अंसारी सहाबी (के साथ ये करामत पेश आई थी) और हम्माम ने बयान किया, उन्हें प्राबित ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिशर (रज़ि.) के साथ ये करामत पेश आई थी। यनबी करीम (ﷺ) के हवाले से नक़ल किया है। (राजेअ: 465)

۳۸۰۵ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا حَبَّانٌ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَجُلَيْنِ خَرَجَا مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ، وَإِذَا نَوَّرَ بَيْنَ أَيْدِيهِمَا حَتَّى تَفَرَّقَا فَفَرَّقَ الدُّرُورُ مَعَهُمَا)). وَقَالَ مَعْمَرٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ ((أَنَّ أُسَيْدَ بْنَ حُضَيْرٍ وَرَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ)). وَقَالَ حَمَّادٌ أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ: ((كَانَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَعَبَادُ بْنُ بَشَرَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ)).

[راجع: ६१०]

बाब 14 : मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

۱۴ - بَابُ مَنَاقِبِ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

ये उन सत्तर बुजुर्गों में से हैं जो बेअते इज़्बा में शरीक हुए थे। अहदे नबवी मे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से उनका भाई चारा क़ायम किया गया था।

3806. मुझसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे मसरूक ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम

۳۸۰۶ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ إِبرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

(ﷺ) से सुना आप (ﷺ) ने फ़र्माया कुआन चार (हज़रत महाबा) अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अबू हुज़ैफ़ह के गुलाम सालिम और उबई बिन कअब और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) से सीखो।

(राजेअ: 3758)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ
«اسْتَفَرُّوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ مِنْ أُمَّةٍ
مُسَوِّدٍ، وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حَذِيفَةَ، وَأَبِي
بْنِ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ».

[راجع: ٣٧٥٨]

आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में ये हज़रत कुआन मजीद के माहिरीने खुसूसी शुमार किये जाते थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनको असातिज़ा कुआन मजीद की हैषियत से नामज़द फ़र्माया। ये जितना बड़ा शर्फ़ है उसे अहले ईमान ही जान सकते हैं।

बाब 15 : हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.)

की फ़ज़ीलत का बयान

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि वो (वाक़िय-ए-इफ़्क से)
पहले ही मर्दे सालेह थे

١٥- بَابُ مَنْقَبَةِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

وَقَالَتْ عَائِشَةُ: «وَكَانَ قَبْلَ ذَلِكَ رَجُلًا
صَالِحًا»

तशरीह: ज़करत आयशतु फीहि मा दार बैन सअदिबि उबादा व उसैद बिन हुज़ैर रजियल्लाहु अन्हुमा
मिनलमक़ालति फअशरत आयशतु इला अन्न सअदन कान कबल तिलकलमक़ालति रजुलन
सालिहन व ला यलज़िमु मिन्हु अंध्यकून खरज मिन हाज़िहिस्सिफति (फत्हुल्बारी) या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.)
का ये ज़िक्र हज़रत सअद बिन उबादा और उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) के दरम्यान एक बाहमी मक़ाला से मुता'ल्लिक़ है जिसमे
हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ये इशारा फ़र्माया है कि इस क़ौल या'नी हादष-ए- इफ़्क से पहले ये सालेह आदमी थे इससे ये लाज़िम
नहीं आता कि बाद में वो इस सिफ़त से महरूम हो गये।

3807. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे
अब्दुस्समद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान
किया कि हमसे क़तादा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने
हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि हज़रत उसैद
(रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार
का बेहतरीन घराना बनू नज़्ज़ार का घराना है, फिर बनू अब्दुल
अशहल का। फिर बनू अब्दुल हारिष का, फिर बनू साअदा का
और ख़ैर अंसार के तमाम घरानों में है, हज़रत सअद बिन उबादा
(रज़ि.) ने कहा और वो इस्लाम कुबूल करने में बड़ी क़दामत रखते
थे कि मेरा ख़याल है, आँहज़रत (ﷺ) ने हम पर दूसरों को फ़ज़ीलत
दे दी है। उनसे कहा गया कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुमको भी तो बहुत
से लोगों पर फ़ज़ीलत दी है। (ए'तिराज़ की क्या क्या बात है?)
(राजेअ: 3789)

٣٨٠٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عِنْدَ
الصَّمَدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ:
سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ
أَبُو أُسَيْدٍ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «خَيْرُ دُورِ
الْأَنْصَارِ بَنِي النَّجَّارِ، ثُمَّ بَنُو عَبْدِ الْأَسْهَلِ،
ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ التَّخَزُوجِ، ثُمَّ بَنُو
سَاعِدَةَ، وَلِي كُلِّ دُورٍ الْأَنْصَارُ خَيْرٌ».
فَقَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَكَانَ ذَا قَدَمٍ فِي
الْإِسْلَامِ -: أَرَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ فَضَّلَ
عَيْنًا. فَقِيلَ لَهُ: قَدْ فَضَّلَكُمْ عَلَى نَاسٍ

كثِيرٍ. [راجع: ٣٧٨٩]

उल्टा तर्जुमा : बड़े अफ़सोस के साथ क़ारेईने किराम की ख़बर के लिये लिख रहा हूँ कि मौजूदा तराजिमे बुखारी शरीफ़ में बहुत

ज्यादा लापरवाही से काम लिया जा रहा है जो बुखारी शरीफ जैसी अहम किताब का तर्जुमा करने वाले के मुनासिब नहीं है, यहाँ हदीष के आखिरी अल्फाज़ ये हैं फ़कील लहू क़द फ़ज़ल कुम अला नासिन क़रीरिन इनका तर्जुमा किताब तफ़हीमुल बुखारी देवबन्दी में यूँ किया गया है, आपसे कहा गया कि आँहज़रत (ﷺ) ने आप पर बहुत से क़बाईल को फ़ज़ीलत दी है, खुद इलमाए किराम ही ग़ौर फ़र्मा सकेंगे कि ये तर्जुमा कहाँ तक सहीह है।

बाब 16 : उबई बिन क़अब (रज़ि.) के

फ़ज़ाइल का बयान

ये अंसारी ख़ज़रजी हैं जो बेअते उक्बा में शरीक और बद्र में भी थे, 30 हिजरी में उनका विसाल हुआ रज़ियल्लाहु।

3808. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर बिन मुरहने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की मज्लिस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) का ज़िक्र आया तो उन्होंने कहा कि उस वक़्त से उनकी मुहब्बत मेरे दिल में बहुत बैठ गई जब से मैंने रसूले करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि कुआन चार आदमियों से सीखो। अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) से, आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हीं के नाम से इब्तिदा की, और अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के गुलाम सालिम से, मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) से और उबई बिन क़अब (रज़ि.) से। (राजेअ: 3758)

3809. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअबा से सुना, उन्होंने क़तादा से सुना और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत उबई बिन क़अब (रज़ि.) से फ़र्माया, अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुमको सूरह लम यकुनिल्लज़ीना कफ़रु सुनाऊँ, हज़रत उबई बिन क़अब (रज़ि.) बोले क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम लिया है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, इस पर हज़रत उबई बिन क़अब (रज़ि.) फ़र्तें मुसरत से रोने लगे। (दीगर मक़ाम: 4959, 4970, 4961)

बाब 17 : हज़रत ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) के

फ़ज़ाइल का बयान

मशहूर कातिबे वद्दा हैं। इनका इंतिकाल 45 हिजरी में हुआ।

3810. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि

١٦- بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي بِنِ كَعْبٍ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

٣٨٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عُمَرُو بْنِ مَرْثَةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ ذَكَرَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ عِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ فَقَالَ: ذَاكَ رَجُلٌ لَا أَزَالُ أَحِبُّهُ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((خُذُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ، مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ - فَبَدَأَ بِهِ - وَسَالِمِ مَوْلَى أَبِي حَذِيفَةَ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، وَأَبِي بِنِ كَعْبٍ)). (راجع: ٣٧٥٨)

٣٨٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ: سَمِعْتُ شُعْبَةَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: النَّبِيُّ ﷺ لَأَبِي: ((إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ: «لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا» قَالَ: وَسَمَانِي؟ قَالَ: نَعَمْ. فَبَكَى)).

[أطرافه في: ٤٩٥٩، ٤٩٧٠، ٤٩٦١].

١٧- بَابُ مَنَاقِبِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ

٣٨١٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى عَهْدِ

नबी करीम (ﷺ) के जमाने में चार आदमी जिन सबका ता'ल्लुक क़बील-ए-अन्सार से था कुर्आन मजीद जमा करने वाले थे, अबू बिन कअब, मुआज़ बिन जबल, अबू ज़ैद और ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.), मैंने पूछा, अबू ज़ैद कौन हैं? उन्होंने फ़र्माया कि वो मेरे एक चचा हैं। (दीगर मक़ाम : 3996, 5003, 5004)

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَرْبَعَةُ كُلُّهُمْ مِنَ الْأَنْصَارِ: أَبِي وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَأَبُو زَيْدٍ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ. قُلْتُ لِأَنْسٍ: مَنْ أَبُو زَيْدٍ؟ قَالَ: أَحَدُ غُمُومَتِيَّ).

[أطرافه في : 3996, 5003, 5004].

हज़रत ज़ैद बिन प्राबित कातिबे वहाय से मशहूर हैं और बड़ा शर्फ़ है जो आपको हासिल है।

बाब 18 : हज़रत अबू तलहा (रज़ि.)

के फ़ज़ाइल का बयान

हज़रत अबू तलहा ज़ैद बिन सहल बिन अस्वद अन्सारी ख़ज़रजी हैं उम्मे अनस (रज़ि.) के शौहर हैं। ग़ालिबन 31 हिजरी में उनका इतिहास हुआ।

3811. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई के मौक़ा पर जब सहाबा नबी करीम (ﷺ) के क़रीब से इधर उधर चलने लगे तो अबू तलहा (रज़ि.) उस वक़्त अपनी एक ढाल से आँहज़रत (ﷺ) की हिफ़ाज़त कर रहे थे हज़रत अबू तलहा बड़े तीर अंदाज़ थे और ख़ूब खींचकर तीर चलाया करते थे। चुनौचे उस दिन दो या तीन कमानें उन्होंने तोड़ दी थीं। उस वक़्त अगर कोई मुसलमान तरकश लिये हुए गुज़रता तो आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते कि उसके तीर अबू तलहा को दे दो। आँहज़रत (ﷺ) हालात मा'लूम करने के लिये उचककर देखने लगते तो अबू तलहा (रज़ि.) अर्ज़ करते या नबियल्लाह! आप पर मेरे मौँ-बाप कुर्बान हों। उचककर मुलाहिज़ा न फ़र्माएँ, कहीं कोई तीर आप (ﷺ) को न लग जाए। मेरा सीना आँहज़रत (ﷺ) के सीने की ढाल बना रहा और मैंने आइशा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) और उम्मे सुलैम (अबू तलहा की बीवी) को देखा कि अपना इज़ार उठाए हुए (ग़ाज़ियों की मदद में) बड़ी तेज़ी के साथ मशगूल थीं (इस ख़िदमत में उनको इन्हिमाक व इस्तिराक़ की वजह से कपड़ों तक का होश न था यहाँ तक कि) मैं उनकी पिण्डलियों के ज़ेवर देख सकता था। इतिहाई जल्दी के साथ मशकीज़े अपनी पीठों पर लिये जाती थीं और मुसलमानों को पिलाकर वापस आती थीं और फिर उन्हें भरकर

18- بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي طَلْحَةَ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

3811- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : (لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ أَتَاهُمُ النَّاسُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَأَبُو طَلْحَةَ بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ ﷺ مُجَوَّبٌ بِهِ عَلَيْهِ بِحِجَافَةٍ لَهُ، وَكَانَ أَبُو طَلْحَةَ رَجُلًا رَامِيًا الْقِدْرَ يُكْسِرُ يَوْمَيْهِ قَوْمَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا، وَكَانَ الْوَجُلُ يَمُرُّ مَعَهُ الْحِجَابَةُ مِنَ النَّبْلِ، فَيَقُولُ: إِنِ اشْرَهْجَا لِأَبِي طَلْحَةَ، فَأَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْظُرُ إِلَى الْقَوْمِ، فَيَقُولُ أَبُو طَلْحَةَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، يَا أَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، لَا تُشْرَفْ يُصِيبُكَ مِنْهُمْ مِنْ سِهَامِ الْقَوْمِ، نَحْرِي دُونَ نَحْرِكَ. وَلَقَدْ رَأَيْتُ عَائِشَةَ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ وَأُمَّ سَلِيمٍ وَإِنَهُمَا لَمُسْتَمْرَتَانِ أَرَى خَدَمَ سَوْفَهُمَا تَنْفِزَانِ الْقِرْبَ عَلَى مُتُونِهِمَا، تُفَرِّغَانِي فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ، ثُمَّ تَرْجِعَانِ قَتَمَلَايَهُمَا، ثُمَّ تَجِئَانِ تُفَرِّغَانِي فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ. وَلَقَدْ وَقَعَ السِّيفُ مِنْ يَدِ أَبِي طَلْحَةَ إِذَا مَرَّتَيْنِ

ले जातीं और उनका पानी मुसलमानों को पिलातीं और अबू तलहा के हाथ से उस दिन दो या तीन मर्तबा तलवार छूट छूटकर गिर पड़ी थी। (राजेअ : 2880)

وَأَمَّا ذَلِكَ))

[راجع : ٢٨٨٠]

ये हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) मशहूर अंसारी मुजाहिद हैं जिन्होंने जंगे उहुद में इस पामर्दी के साथ आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत का हक़ अदा किया कि क़यामत तक के लिये उनकी ये खिदमत तारीख़े इस्लाम में फ़ख़्रिया याद रखी जाएगी। इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि जंग व जिहाद के मौक़े पर मस्तूरात की खिदमात बड़ी अहमियत रखती हैं, ज़ख़िमियों की मरहम पट्टी करना और खाने पानी के लिये मुजाहिदीन को ख़बर लेना ये ख़्वातीन इस्लाम के मुजाहिदाना कारनामे औराके तारीख़ (इतिहास के पन्नों) पर सुनहरी हफ़ों से लिखे जाएँ। मगर ख़्वातीने इस्लाम पूरे हिजाब शरई के साथ ये खिदमात अंजाम दिया करती थीं।

बाब 19 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.)

١٩ - بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

के फ़ज़ाइल का बयान

سَلَامَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

ये बन्ने केनकाअ में से हैं, आले यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) से उनका ता'ल्लुक है। जाहिलियत में उनका नाम हुसैन था। इस्लाम के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने उनका नाम अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) रख दिया 43 हिजरी में उनका इंतिकाल हुआ।

3812. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इमाम मालिक से सुना, वो इमर बिन अब्दुल्लाह के मौला अबू नज़र से बयान करते थे, वो आमिर बिन सअद बिन अबी वक्कास से और उनसे उनके वालिद (हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ि) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) के सिवा और किसी के बारे में ये नहीं सुना कि वो अहले जन्नत में से हैं, बयान किया कि आयत, व शहिदा शाहिदुम् मिम् बनी इस्राईल (अल अहक़ाफ़ : 10) उन्हीं के बारे में नाज़िल हुई थी (रावी हदीष अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने) बयान किया कि आयत के नुज़ूल के बारे में मालिक का क़ौल है या हदीष में इसी तरह था।

٣٨١٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ سَمِعْتُ مَالِكَاً يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِي وَقَّاصٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : ((مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ لِأَحَدٍ يَمْنَحُنِي عَلَى الْأَرْضِ : إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ ، إِلَّا لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ . قَالَ : وَلِيُّهُ تَزَلَّتْ هَذِهِ الْآيَةُ : ﴿ وَشَهِدَ شَاحِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴾ الْآيَةُ)) . قَالَ : لَا أَذْرِي مَالِكََ الْآيَةَ أَوْ فِي الْحَدِيثِ .

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम मशहूर यहूदी आलिम थे जो रसूले करीम (ﷺ) की मदीना में तशरीफ़ आवरी पर आप (ﷺ) की अलामाते नुबुव्वत देखकर मुसलमान हो गये थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये जन्नत की बशारत पेश फ़र्माई। और आयते कुर्आनी व शहिद शाहिदुम्मिम् बनी इस्राईल (अल अहक़ाफ़ : 10) में अल्लाह ने उनका ज़िक़रे ख़ैर फ़र्माया दूसरी हदीष में भी उनकी मनक़बत मौजूद है।

3813. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अज़हर सिमान ने बयान किया, उनसे अबू अवाना ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे कैस बिन अब्बाद ने बयान किया कि मैं मस्जिदे नबवी में बैठा हुआ था कि एक बुज़ुर्ग मस्जिद में दाख़िल हुए जिनके चेहरे पर खुशूअ व खुजूअ के आषार जाहिर थे लोगों

٣٨١٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَزْهَرُ السَّمَّانِ عَنْ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ غَبَاوٍ قَالَ : ((كُنْتُ جَالِساً فِي مَسْجِدِ الْمَدِينَةِ ، فَدَخَلَ رَجُلٌ

ने कहा कि ये बुजुर्ग जन्नती लोगों में हैं, फिर उन्होंने दो रकअत नमाज़ मुश्तमर तरीके पर पढ़ी और बाहर निकल गये। मैं भी उनके पीछे हो लिया और अर्ज किया कि जब आप मस्जिद में दाखिल हुए थे तो लोगों ने कहा कि ये बुजुर्ग जन्नत वालों में से हैं। इस पर उन्होंने कहा अल्लाह की कसम! किसी के लिये ऐसी बात जुबान से निकालना मुनासिब नहीं है जिसे वो न जानता हो और मैं तुम्हें बताऊँगा कि ऐसा क्यों है। नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मैंने एक ख़्वाब देखा और आँहज़रत (ﷺ) से उसे बयान किया। मैंने ख़्वाब ये देखा था कि जैसे मैं एक बाग़ में हूँ, फिर उन्होंने उसकी वुस्तत और उसके सबज़ा ज़ारों का ज़िक्र किया उस बाग़ के बीच में एक लोहे का खम्बा है जिसका निचला हिस्सा ज़मीन में है और ऊपर का आसमान पर और उसकी चोटी पर एक घना पेड़ है। (अल इर्वा) मुझसे कहा गया कि इस पर चढ़ जाओ मैंने कहा कि मुझ में तो इतनी ताक़त नहीं है इतने में एक ख़ादिम आया और पीछे से मेरे कपड़े उसने उठाए तो मैं चढ़ गया और जब मैं उसकी चोटी पर पहुँच गया तो मैंने उस घने पेड़ को पकड़ लिया। मुझसे कहा गया कि उस पेड़ को पूरी मज़बूती के साथ पकड़ ले। अभी मैं उसे अपने हाथ से पकड़े हुए था कि मेरी नींद खुल गई। ये ख़्वाब जब मैंने आँहज़रत (ﷺ) से बयान किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो बाग़ तुमने देखा है, वो तो इस्लाम है और उसमें सुतून इस्लाम का सुतून है और इर्वा (घना पेड़) इर्वतुल वुफ़्फ़ा है इसलिये तुम इस्लाम पर मरते दम तक क़ायम रहोगे। ये बुजुर्ग हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) थे और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया उनसे मुआज़ ने बयान किया उनसे इब्ने औन ने बयान किया उनसे मुहम्मद ने उनसे कैस बिन इबाद ने बयान किया अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) से उन्होंने मिन्सफ़ (ख़ादिम) के बजाय वज़ीफ़ का लफ़्ज़ ज़िक्र किया। (दीगर मक्काम : 7010, 7014)

عَلَى وَجْهِهِ أَرَى الْعُشُوعَ، فَقَالُوا : هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فَصَلَّى وَكَتَبَتْ تَجَوُّزَ لِيَهُمَا، ثُمَّ خَرَجَ وَتَبِعْتُهُ فَقُلْتُ : إِنَّكَ جِئْتَ دَخَلْتَ الْمَسْجِدَ قَالُوا : هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ قَالَ : وَاللَّهِ مَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ أَنْ يَقُولَ مَا لَا يَعْلَمُ. وَسَاحَدْتُكَ لِمَ ذَلِكَ. رَأَيْتُ رُؤْيَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَصَصْتُهَا عَلَيْهِ، وَرَأَيْتُ كَأَنِّي فِي رَوْضَةٍ - ذَكَرَ مِنْ سَعْيِهَا وَخَضِرَتِهَا. وَسَطَهَا عُمُودٌ مِنْ حَدِيدٍ أَسْفَلُهُ فِي الْأَرْضِ وَأَعْلَاهُ فِي السَّمَاءِ، فِي أَعْلَاهُ عُرْوَةٌ، فَقِيلَ لِي : ارْقُفْ. قُلْتُ : لَا أَسْتَطِيعُ. فَأَنَابِي مِصْنَفٌ فَرَفَعَ يَدَايَ مِنْ خَلْفِي فَرَفَعْتُ حَتَّى كُنْتُ فِي أَعْلَاهَا، فَأَخَذْتُ بِالْعُرْوَةِ، فَقِيلَ لَكَ اسْتَمْسِكْ. فَاسْتَيْقِظْتُ وَانْهَبْتُ لِي يَدَايَ. فَقَصَصْتُهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((بَلَدُكَ الرَّوْضَةُ الْإِسْلَامُ، وَذَلِكَ الْعُمُودُ عُمُودُ الْإِسْلَامِ، وَبَلَدُ الْعُرْوَةِ الْوَقْفَى، فَأَنْتَ عَلَى الْإِسْلَامِ حَتَّى تَمُوتَ)). وَذَلِكَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ)). وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا مَعَاذُ حَدَّثَنَا ابْنُ عُزَيْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ عُبَادٍ عَنْ ابْنِ سَلَامٍ قَالَ : ((وَصِيفٌ)) مَكَانٌ ((مِصْنَفٌ)).

[طرفاء 3: 7010, 7014]

3814. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे सईद बिन अबी बुर्दा ने और उनसे उनके वालिद

3814 - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ

ने कि मैं मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुआ तो मैंने अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) से मुलाकात की, उन्होंने कहा, आओ तुम्हें मैं सत्तू और खजूर खिलाऊँगा और तुम एक (बाअज़मत) मकान में दाखिल होगे (कि रसूलुल्लाह ﷺ भी उसमें तशरीफ़ ले गये थे) फिर आप (रज़ि.) ने फ़र्माया तुम्हारा क़याम एक ऐसे मुल्क में है जहाँ सूदी मामलात बहुत आम हैं अगर तुम्हारा किसी शख्स पर कोई हक़ हो और फिर वो तुम्हें एक तिनके या जौ के एक दाने या एक घास के बराबर भी हदिया दे तू उसे कुबूल न करना क्योंकि वो भी सूद है। नज़्र अबू दाऊद और वहब ने (अपनी रिवायतों में) अल्बैत (घर) का ज़िक्र नहीं किया। (दीगर मक़ाम : 7343)

बाब 20 : हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की शादी और उनकी फ़ज़ीलत का बयान

तशरीह : हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) बन्ते खुवेलिद बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा आँहज़रत (ﷺ) से निकाह के वक़्त उनकी उम्र 40 साल की थी और आप (ﷺ) की उम्र 25 साल की थी रसूल (ﷺ) के लिये उनसे औलाद भी हुई। हिज़रत से 4-5 साल पहले उनका इंतिक़ाल हुआ। आँहज़रत (ﷺ) को आपकी जुदाई से सख़्त रंज हुआ था (रज़ि.)।

3815. मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको ख़बर दी अब्दह ने, उन्हें हिशाम बिन उर्वाने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत अली (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप (ﷺ) ने फ़र्माया, (दूसरी सनद) और मुझसे सदका ने बयान किया, कहा हमको अब्दह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से सुना उन्होंने हज़रत अली (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (अपने ज़माने में) हज़रत मरयम (अलैहि.) सबसे अफ़ज़ल और तर्ही और (इस उम्मत में) हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) सबसे अफ़ज़ल औरत हैं।

(राजेअ : 3432)

3816. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने मेरे पास अपने वालिद (उर्वाने) से लिखकर भेजा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा नबी करीम (ﷺ) की किसी बीवी के मामले में, मैंने उतनी ग़ैरत महसूस नहीं की जितनी हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के मामले में, मैं महसूस करती

قَالَ: ((أَتَيْتُ الْمَدِينَةَ فَلَقِيتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ سَلَامٍ فَقَالَ: أَلَا تَجِيءُ فَأَطْعِمَكَ سَوِيًّا وَتَسْمَرُ وَتَدْخُلُ فِي بَيْتِي؟ ثُمَّ قَالَ: إِنَّكَ بِأَرْضِ الرَّبِّ بِهَا فَاشِ، إِذَا كَانَ لَكَ عَلَى رَجُلٍ حَقٌّ فَأَهْدِي إِلَيْكَ حِمْلَ بَنٍ أَوْ حِمْلَ شَعِيرٍ أَوْ حِمْلَ قَتٍّ فَلَا تَأْخُذْهُ فَإِنَّهُ رِبَا)) وَلَمْ يَذْكُرِ النَّضْرُ وَأَبُو دَاوُدَ وَوَهَبٌ عَنْ شُعْبَةَ النَّيْتِ. [طَرَفُهُ 3: 7343].

۲۰- بَابُ تَزْوِيجِ النَّبِيِّ ﷺ خَدِيجَةَ وَفَضْلِهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

۳۸۱۵- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ جَعْفَرٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ. حَدَّثَنِي صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ جَعْفَرٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ، وَخَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ)).

[راجع: ۳۴۳۲]

۳۸۱۶- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ حَدَّثَنَا النَّيْتُ قَالَ: كَتَبَ إِلَيَّ هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَا غُرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ مَا غُرْتُ عَلَى

थी, वो मेरे निकाह से पहले ही वफात पा चुकी थीं लेकिन आँहज़रत (ﷺ) की जुबान से मैं उनका ज़िक्र सुनती रहती थी, और अल्लाह तआला ने आँहज़रत (ﷺ) को हुक्म दिया था कि उन्हें (जन्नत में) मोती के महल की खुशखबरी सुना दें, आँहज़रत (ﷺ) अगर कभी बकरी ज़िबह करते तो उनसे मेल मुहब्बत रखने वाली ख्वातीन को उसमें से इतना हृदिया भेजते जो उनके लिये काफ़ी हो जाता। (दीगर मक़ाम : 3817, 3818, 2559, 2004, 7484)

3817. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ज़वाने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के मामले में जितनी ग़ैरत मैं महसूस करती थी उतनी किसी औरत के मामले में नहीं की क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनका ज़िक्र अक़्शर किया करते थे। उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) से मेरा निकाह उनकी वफात के तीन साल बाद हुआ था और अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया था या ज़िब्रईल (अलैहि) के ज़रिये ये पैग़ाम पहुँचाया था कि आँहज़रत (ﷺ) उन्हें जन्नत में मोतियों के महल की खुशखबरी दें। (राजेअ : 3816)

3818. मुझसे इमर बिन मुहम्मद बिन हसन ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे हफ़्म ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) की तमाम बीवियों में जितनी ग़ैरत मुझे हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से आती थी उतनी किसी और से नहीं आती थी, हालाँकि उन्हें मैंने देखा भी नहीं था। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) उनका ज़िक्र बक़्शरत किया करते थे और अगर कभी कोई बकरी ज़िबह करते तो उसके टुकड़े करके हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की मिलने वालियों को भेजते थे मैंने अक़्शर हुज़ूर (ﷺ) से कहा जैसे दुनिया में हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के सिवा कोई औरत है ही नहीं! इस पर आप (ﷺ) फ़र्माते कि वो ऐसी थीं और ऐसी थीं और उनसे मेरे औलाद है।

(राजेअ : 3816)

خَدِيجَةُ، مَلَكَتْ قَبْلَ أَنْ يَتَزَوَّجَنِي، لَمَّا كُنْتُ أَسْتَعِفُّ يَذْكُرُهَا، وَأَمْرَةُ اللَّهِ أَنْ يَشْرَهَا بَيْتٍ مِنْ قَصَبٍ. وَإِنْ كَانَ لَيَنْبَحُ الشَّاةُ فَيَهْدِي فِي خَلَالِهَا مِنْهَا مَا يَسْمَعُونَ)). [أطرافه في : ٣٨١٧، ٣٨١٨]

[٢٥٥٩، ٢٠٠٤ : ٧٤٨٤]

٣٨١٧ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَا عُرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ مَا عُرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ مِنْ كَثَرَةِ ذِكْرِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِهَا. قَالَتْ: وَتَزَوَّجَنِي بَعْدَهَا بِثَلَاثِ سِنِينَ، وَأَمْرُهُ رَبُّهُ عَزَّوَجَلَّ - أَوْ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ - أَنْ يَشْرَهَا بَيْتٍ فِي الْخَلَةِ مِنْ قَصَبٍ)). [إرجع : ٣٨١٦]

٣٨١٨ - حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ الْحَسَنِ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا حَقِصٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا عُرْتُ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِسَاءِ النَّبِيِّ ﷺ مَا عُرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ وَمَا رَأَيْتُهَا، وَلَكِنْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَكْثُرُ ذِكْرُهَا، وَرَأَيْتُهَا ذَبَحَ الشَّاةَ ثُمَّ يَقْطَعُهَا أَغْضَاءَ ثُمَّ يَبْعَثُهَا فِي صَدَاقِ خَدِيجَةَ. فَرُبَّمَا قُلْتُ لَهُ: كَأَنَّهُ لَمْ يَكُنْ فِي الدُّنْيَا امْرَأَةٌ إِلَّا خَدِيجَةُ؟ فَيَقُولُ: ((إِنَّمَا كَانَتْ وَكَانَتْ. وَكَانَ لِي

مِنْهَا وَلَدٌ)). [راجع : ٣٨١٦]

इससे मा'लूम हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) की निगाहों में हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा (रज़ि.) का दर्जा बहुत ज़्यादा था,

फ़िल वाक़ेअ वो इस्लाम और पैगम्बरे इस्लाम (ﷺ) की अव्वलीन मुहसिना थीं उनके एहसानात का बदला उनको अल्लाह ही देने वाला है (रज़ि.) व अरज़ाहु (आमीन)

3819. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा से पूछा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को बशारत दी थी? उन्होंने फ़र्माया कि हाँ जन्नत में मोतियों के एक महल की बशारत दी थी, जहाँ न कोई शोरो-गुल होगा और न थकन होगी। (राजेअ: 1792)

3820. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फुज़ैल ने बयान किया, उनसे इमारा ने, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ख़दीजा (रज़ि.) आपके पास एक बर्तन लिये आ रही हैं जिसमें सालन या (फ़र्माया) खाना (या फ़र्माया) पीने की चीज़ है। जब वो आपके पास आयें तो उनके रब की जानिब से उन्हें सलाम पहुँचाना और मेरी तरफ़ से भी! और उन्हें जन्नत में मोतियों के एक महल की बशारत दे दीजिएगा। जहाँ न शोर ब हुंगामा होगा और न तकलीफ़ व थकन होगी।

3821. और इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, उन्हें अली बिन मुस्हिर ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़दीजा (रज़ि.) की बहन हाला बिन्ते ख़ुवेलिद (रज़ि.) ने एक बार औहज़रत (ﷺ) से अंदर आने की इजाज़त चाही तो आप (ﷺ) को हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की इजाज़त लेने की अदा याद आ गई, आप (ﷺ) चौंक उठे और फ़र्माया, अल्लाह! ये तो हाला हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मुझे उस पर बड़ी ग़ैरत आई। मैंने कहा आप (ﷺ) कुरैश की किस बूढ़ी का ज़िक्र किया करते हैं जिसके मसूड़ों पर भी दांतों के टूट जाने की वजह से (सिर्फ़ सुखी बाक़ी रह गई थी) और जिसे मरे हुए भी एक ज़माना गुज़र चुका है। अल्लाह तआला ने आपको उससे बेहतर बीवी दे दी है।

۳۸۱۹- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إسماعيلَ قَالَ : قُلْتُ : لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا بَشَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ خَدِيجَةَ؟ قَالَ : نَعَمْ، بَشَرْتُ مِنْ قَعَسٍ، لَا مَخْصَبَ فِيهِ وَلَا نَصَبَ. [راجع: ۱۷۹۲]

۳۸۲۰- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فَعِيلٍ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَى جِبْرِيلُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَذِهِ خَدِيجَةُ قَدْ أَتَتْ مَعَهَا إِنَاءٌ فِيهِ إِدَامٌ أَوْ طَعَامٌ أَوْ شَرَابٌ، فَإِذَا هِيَ أَتَاكَ فَأَلْفَا عَلَيْهَا السَّلَامَ مِنْ رَبِّهَا وَمَنِي، وَبَشَرَهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَعَسٍ، لَا مَخْصَبَ فِيهِ وَلَا نَصَبَ.))

۳۸۲۱- وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اسْتَأْذَنْتُ هَالَةَ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ - أَعْتِ خَدِيجَةَ - عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَعَرَفَ اسْتِئْذَانِ خَدِيجَةَ، فَارْتَاعَ لِلذَّكَاءِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ هَالَةَ)). قَالَتْ : فَعَرَفْتُ فَقُلْتُ: مَا تَذَكَّرُ مِنْ عَجُوزٍ مِنْ عَجَائِزِ قُرَيْشٍ حُمْرَاءِ الشَّدَقَيْنِ هَلَكْتَ فِي الذَّهْرِ، قَدْ أَبْدَلَكَ اللَّهُ خَيْرًا مِنْهَا.))

मुसन्द अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम (ﷺ) आइशा (रज़ि.) की उस बात पर इस क़दर नाराज़ हो गये कि चेहरा मुबारक गुस्से से लाल हो गया और फ़र्माया, उससे बेहतर और क्या चीज़ मुझे मिली है? हज़रत आइशा (रज़ि.) खड़ी हो गई

और अल्लाह के हुजूर तौबा की और फिर कभी इस तरह की बातचीत आँहज़रत (ﷺ) के सामने नहीं की। औरतों की ये फ़ितरत है कि वो अपनी सौकन से ज़रूर रक़ाबत रखती हैं हज़रत हाजरा व हज़रत सारा (अलैहिमस्सलाम) के हालात भी इस पर शाहिद हैं फिर अज़्वाजे मुत्तहहरात भी बनाते हव्वा थीं लिहाज़ा ये महल्ले तअज़ुब नहीं है। अल्लाह पाक उनकी कमज़ोरियों को मुआफ़ करने वाला है।

बाब 21 : जरिर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.)

का बयान

3822. हमसे इस्हाक़ वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे बयान ने कि मैंने क्रैस से सुना, उन्होंने बयान किया कि हज़रत जरिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया, जबसे मैं इस्लाम में दाख़िल हुआ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे (घर के अंदर आने से) नहीं रोका (जब भी मैंने इजाज़त चाही) और जब भी आप (ﷺ) मुझे देखते तो मुस्कुराते। (राजेअ: 3035)

3823. और क्रैस से रिवायत है कि हज़रत जरिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया ज़मान-ए-जाहिलियत में ज़ुल ख़लसा नामी एक बुतकदा था उसे अल का'बतुल यमानिया या अल का'बतुल शामिया भी कहते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, ज़िलख़लसा के वजूद से मैं जिस अज़ियत में मुब्तला हूँ क्या तुम मुझे उससे नजात दिला सकते हो? उन्होंने बयान किया कि फिर क़बीला अहमस के डेढ़ सौ सवारों को मैं लेकर चला, उन्होंने बयान किया और हमने बुतकदे को बहा दिया और उसमें जो थे उनको क़त्ल कर दिया। फिर हम आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) को ख़बर दी तो आप (ﷺ) ने हमारे लिये और क़बीला अहमस के लिये दुआ फ़र्माई।

(राजेअ: 3020)

हज़रत जरिर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) बहुत ही बड़े बहादुर इंसान थे दिल में तौहीद का ज़ब्बा था कि रसूल करीम (ﷺ) की मंशा पाकर ज़िल ख़लसा नामी बुतकदे को क़बीला अहमस के डेढ़ सौ सवारों के साथ मिस्मार कर दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने उन मुजाहिदीन के लिये बहुत बहुत दुआ-ए-ख़ैरो बरकत फ़र्माई। ये बुतकदा मुआनिदीने इस्लाम ने अपना मर्कज़ बना रखा था। इसलिये उसका ख़त्म करना ज़रूरी हुआ।

बाब 22 : हुज़ैफ़ा बिन यमान अब्सी (रज़ि.)

का बयान

3824. मुझसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमसे

۲۱- بَابُ ذِكْرِ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ

الْبَجَلِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

۳۸۲۲- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ بَيَانَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((قَالَ جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: مَا خَجَّنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عِنْدَ أَنْتَلْتُ، وَلَا رَأَيْتُ إِلَّا ضَحِكَ)).

[راجع: ۳۰۳۵]

۳۸۲۳- وَعَنْ قَيْسٍ عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ بَيْتٌ يُقَالُ لَهُ دُو الْخَلَصَةِ وَ كَانَ يُقَالُ لَهُ الْكُتْبَةُ الْيَمَانِيَّةُ أَوْ الْكُتْبَةُ الشَّامِيَّةُ. فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((هَلْ أَنْتَ مُرْجِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) قَالَ: فَفَقَرْتُ إِلَيْهِ فِي خَمْسِينَ وَمِائَةٍ فَارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ، قَالَ: ((فَكَسَرْنَا، وَقَتَلْنَا مِنْ وَجَدْنَا عِنْدَهُ، فَأَتَيْنَاهُ فَأَخْبَرْنَاهُ، فَذَعَا لَنَا وَلَا أَحْمَسَ)).

[راجع: ۳۰۲۰]

۲۲- بَابُ ذِكْرِ حَذِيفَةَ بْنِ الِیْمَانِ

الْقَبَسِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

۳۸۲۴- حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ

सलमा बिन रजा अने, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई में जब मुश्रिकीन हार चुके तो इब्लीस ने चलाकर कहा ऐ अल्लाह के बन्दों! पीछे वालों को (क़त्ल करो) चुनौचे आगे के मुसलमान पीछे वालों पर पिल पड़े और उन्हें क़त्ल करना शुरू कर दिया। हुजैफ़ा (रज़ि.) ने जो देखा तो उनके वालिद (यमान रज़ि.) भी वहीं मौजूद थे उन्होंने पुकार कर कहा ऐ अल्लाह के बन्दों! ये तो मेरे वालिद हैं, मेरे वालिद! आइशा (रज़ि.) ने बयान किया अल्लाह की क़सम! उस वक़्त तक लोग वहाँ से नहीं हटे जब तक उन्हें क़त्ल न कर लिया। हुजैफ़ा (रज़ि.) ने सिर्फ़ इतना कहा अल्लाह तुम्हारी मफ़िरत करे। (हिशाम ने बयान किया कि) अल्लाह की क़सम! हुजैफ़ा (रज़ि.) बराबर ये दुआइया क़लिमा कहते रहे (कि अल्लाह उनके वालिद पर हमला करने वालों को बख़शे जो कि महज़ ग़लत फ़हमी की वजह से ये हरकत कर बैठे) ये दुआ खो मरते दम तक करते रहे। (राजेअ: 3290)

इससे उनके स़न्न व इस्तिक्लाल और फ़हम व फ़िरासत का पता चलता है। ग़लतफ़हमी में इंसान क्या से क्या कर बैठता है। इसलिये अल्लाह का इश्राद है कि हर सुनी सुनाई ख़बर का यक़ीन न कर लिया करो जब तक उसकी तहक़ीक़ न कर लो।

बाब 23 : हिन्द बिनते इत्बा बिन रबीआ (रज़ि.)

का बयान

3825. और अब्दान ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उनसे इर्वा ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, हज़रत हिन्द बिनते इत्बा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में (इस्लाम लाने के बाद) हाज़िर हुई और कहने लगीं या रसूलुल्लाह (ﷺ)! रूए ज़मीन पर किसी घराने की ज़िल्लत आप (ﷺ) के घराने की ज़िल्लत से ज़्यादा मेरे लिये खुशी का बाअिअ नहीं थी लेकिन आज किसी घराने की इज़्जत रूए ज़मीन पर आप (ﷺ) के घराने की इज़्जत से ज़्यादा मेरे लिये खुशी की वजह नहीं है। औ हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उसमें अभी और तरक्की होगी उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। फिर हिन्द ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अबू सुफ़यान बहुत बख़ील हैं तो क्या इसमें कुछ हर्ज है अगर मैं उनके माल में से (उनकी इजाज़त के बग़ैर) बाल-बच्चों को ख़िला दिया और पिला दिया करूँ? आप

حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ رَجَاءٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ غَابِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمَّا كَانَ يَوْمَ أُحُدٍ هَرَمَ الْمُشْرِكُونَ هَرِيمَةً بَيْنَهُ، فَصَاحَ إِبْلِيسُ: أَيُّ عِبَادِ اللَّهِ أَغْرَاكُمْ، فَوُجِعَتْ أَوْلَاهُمْ عَلَى أَغْرَاهُمْ، فَاجْتَلَدَتْ أَغْرَاهُمْ، فَنَظَرَ خَلِيفَةُ قَادًا، هُوَ أَبِيهِ، أَيُّ عِبَادِ اللَّهِ، أَبِي أَبِي. فَقَالَتْ: كَوَّرَ اللَّهُ مَا اخْتَجَزُوا حَتَّى قُتِلُوا. فَقَالَ خَلِيفَةُ: غَفَرَ اللَّهُ لَكُمْ. قَالَ أَبِي: قَوَّاهُ مَا رَأَيْتُ فِي خَلِيفَةٍ مِنْهَا بَقِيَّةٌ غَيْرَ حَتَّى لَقِيَ اللَّهَ غَرْ وَجَلَّ)).

[راجع: 3290]

۲۳- بَابُ ذِكْرِ هِنْدِ بِنْتِ عُبَيْةَ بْنِ

رَبِيعَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

۳۸۲۵- وَقَالَ عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ غَابِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْ هِنْدُ بِنْتُ عُبَيْةَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا كَانَ عَلَى ظَهْرِ الْأَرْضِ مِنْ أَهْلِ خَبَاءٍ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ يَذِلُّوا مِنْ أَهْلِ خَبَابِكَ، ثُمَّ مَا أَصْبَحَ الْيَوْمَ عَلَى ظَهْرِ الْأَرْضِ أَهْلُ خَبَاءٍ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ يُعْزُوا مِنْ أَهْلِ خَبَابِكَ. قَالَ: ((وَأَيْضًا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ)). قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ أَتَا سَفِيَانٌ رَجُلٌ مَسِيكٌ، فَهَلْ عَلَيَّ خَرْجٌ أَنْ

(ﷺ) ने फ़र्माया है लेकिन मैं समझता हूँ कि ये दस्तूर के मुताबिक़ होना चाहिये। (राजेअ: 2211)

طَعِمَ مِنَ اللَّبَنِ لَهُ عَيَّالًا قَالَ : ((لَا أَرَادُ إِلَّا بِالْمَعْرُوفِ)) . [راجع: ٢٢١١]

हज़रत हिन्द अबू सुफ़यान (रज़ि.) की बीवी और हज़रत मुआविया (रज़ि.) की वालिदा जो फ़तहे मक्का के बाद इस्लाम लाई हैं। अबू सुफ़यान (रज़ि.) भी इसी ज़माने में इस्लाम लाए थे, बहुत ज़री और पुख्ताकार औरत थी उनके बारे में बहुत से वाक़ियात कुतुबे तवारीख़ (इतिहास की किताबों) में मौजूद हैं जो उनकी शान व अज़मत पर दलील हैं।

बाब 24 : हज़रत ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल

۲۴ - بَابُ حَدِيثِ زَيْدِ بْنِ عَمْرٍو

का बयान

بن نَفِيل

तशरीह : ये बुजुर्ग़ झग़ाबी अहद इस्लाम से पहले ही तौहीद के अलमबरदार थे। उनके वाक़िया में उन क़ब्रपरस्तों के लिये इब्रत है जो बकरा, मुर्गाबी, मीना बुजुर्गों के मज़ारों की भेंट करते हैं। हज़रत मदार व सालार के नाम के बक़रे जिबह करते हैं। उनको सोचना चाहिये कि उनका ये फ़ैअल इस्लाम से किस क़दर दूर है हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिम्मुस्तक़ीम आमीन

3826. मुझे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे फुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) से (बादी) बलदह के नशीबी इलाक़ा में मुलाक़ात हुई। ये क़िस्सा नुजूले बह्य से पहले का है। फिर औहज़रत (ﷺ) के सामने एक दस्तरख़वान बिछाया गया तो ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल ने खाने से इंकार कर दिया और जिन लोगों ने दस्तरख़वान बिछाया था उनसे कहा कि अपने बुतों के नाम पर जो तुम ज़बीहा करते हो मैं उसे नहीं खाता मैं तो बस वही ज़बीहा खाया करता हूँ जिस पर सिर्फ़ अल्लाह का नाम लिया गया हो। ज़ैद बिन अम्र कुरैश पर उनके ज़बीहे के बारे में ऐब बयान किया करते और कहते थे कि बकरी को पैदा तो क्या है अल्लाह तआला ने, उसी ने उसके लिये आसमान से पानी बरसाया है, उसी ने उसके लिये ज़मीन से घास उगाई, फिर तुम लोग अल्लाह के सिवा दूसरे (बुतों के) नामों पर उसे जिबह करते हो। ज़ैद ने ये कलिमात उनके उन कामों पर ए तिराज़ और उनके उस अमल को बहुत बड़ी ग़लती करार देते हुए कहे थे।

۳۸۲۶ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا قُضَيْلُ بْنُ سَلِيمَانَ حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَقِيَ زَيْدَ بْنَ عَمْرٍو بْنِ نَفِيلٍ بِأَسْفَلِ بَلَدٍ قَبْلَ أَنْ يَنْزِلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ الْوَحْيُ، فَقَدِمَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ صَفْرَةٌ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا. ثُمَّ قَالَ زَيْدٌ: إِنِّي لَسْتُ أَكُلُ مِمَّا تَذْبَحُونَ عَلَى أَنْصَابِكُمْ، وَلَا أَكُلُ إِلَّا مَا ذَكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ. وَأَنَّ زَيْدَ بْنَ عَمْرٍو كَانَ يَجُوبُ عَلَى قُرَيْشٍ ذَبَائِحَهُمْ وَيَقُولُ: الشَّاءُ خَلَقَهَا اللَّهُ، وَالزَّوَلُ لَهَا مِنَ السَّمَاءِ الْمَاءُ، وَأَنْبَتَ لَهَا مِنَ الْأَرْضِ، ثُمَّ تَذْبَحُونَهَا عَلَى غَيْرِ اسْمِ اللَّهِ، إِنْكَارًا لِدَلِيلِكَ وَإِعْظَامًا لَهُ)) .

3827. मूसा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और मुझे यक़ीन है कि उन्होंने ये इब्ने इमर (रज़ि.)

۳۸۲۷ - قَالَ مُوسَى: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ - وَلَا أَغْلَمُهُ إِلَّا تَحَدَّثَ بِهِ عَنْ

से बयान किया था कि जैद बिन अम्र बिन नुफैल शाम गये। दीने (खालिस) की तलाश में निकले। वहाँ वो एक यहूदी आलिम से मिले तो उन्होंने उनके दीन के बारे में पूछा और कहा मुम्किन है मैं तुम्हारा दीन इख्तियार कर लूँ, इसलिये तुम मुझे अपने दीन के बारे में बताओ। यहूदी आलिम ने कहा कि हमारे दीन में तुम उस वक़्त तक दाखिल नहीं हो सकते जब तक तुम अल्लाह के ग़ज़ब के एक हिस्से के लिये तैयार न हो जाओ। इस पर जैद (रज़ि.) ने कहा कि वाह मैं अल्लाह के ग़ज़ब ही से भागकर आया हूँ, फिर अल्लाह के ग़ज़ब को मैं अपने ऊपर कभी न लूँगा और न मुझको उसे उठाने की ताक़त है! क्या तुम मुझे किसी और दूसरे दीन का कुछ पता बता सकते हो? उस आलिम ने कहा मैं नहीं जानता (कोई दीन सच्चा हो तो दीने हनीफ़ हो) जैद (रज़ि.) ने पूछा दीने हनीफ़ क्या है? उस आलिम ने कहा कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का दीन जो न यहूदी थे और न नसरानी और वो अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते थे। जैद वहाँ से चले आए और एक नसरानी पादरी से मिले। उनसे भी अपना ख़याल बयान किया उसने भी यही कहा कि तुम हमारे दीन में आओगे तो अल्लाह तआला की ला'नत में से एक हिस्सा लोगे। जैद (रज़ि.) ने कहा मैं अल्लाह की ला'नत से ही बचने के लिये तो ये सब कुछ कर रहा हूँ। अल्लाह की ला'नत उठाने की मुझमें ताक़त नहीं और न मैं उसका ग़ज़ब किस तरह उठा सकता हूँ! क्या तुम मेरे लिये उसके सिवा कोई और दीन बतला सकते हो। पादरी ने कहा कि मेरी नज़र में हो तो सिर्फ़ एक दीने हनीफ़ सच्चा दीन है जैद ने पूछा दीने हनीफ़ क्या है? कहा कि वो दीने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) है जो न यहूदी थे और न नसरानी और अल्लाह के सिवा वो किसी की पूजा नहीं करते थे। जैद ने जब दीने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में उनकी ये राय सुनी तो वहाँ से ख़ाना हो गये और उस सरज़मीन से बाहर निकलकर अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाए और ये दुआ की, ऐ अल्लाह! मैं गवाही देता हूँ कि मैं दीने इब्राहीम पर हूँ।

ابن عمر - ان زيدا بن عمرو بن لفل
خرج إلى الشام يسأل عن الدين وتبعه،
فلقي عالما من اليهود فسأله عن دينهم
فقال: إني لقلّي أن أدين دينكم فأخبرني.
فقال: لا تكون على ديننا حتى تأخذ
ببصيرك من غضب الله. قال زيدا: ما أفر
إلا من غضب الله، ولا أخيل من غضب
الله شيئا أبداً وأنا أستطيع؟ فهل تدلني
على غيره؟ قال: ما أعلمه إلا أن يكون
حنيفاً. قال زيدا: وما الحنيف؟ قال: دين
إبراهيم؛ لم يكن يهودياً ولا نصرانياً ولا
يعبد إلا الله. فخرج زيدا فلقي عالماً من
النصارى، فذكر مثله فقال: لن تكون
على ديننا حتى تأخذ ببصيرك من لغنة
الله. قال: ما أفر إلا من لغنة الله، ولا
أخيل من لغنة الله ولا من غضبه شيئا
أبداً، وأنا أستطيع؟ فهل تدلني على
غيره؟ قال: ما أعلمه إلا أن يكون حنيفاً.
قال: وما الحنيف؟ قال: دين إبراهيم،
لم يكن يهودياً ولا نصرانياً ولا يعبد إلا
الله. فلما رأى زيدا قولهم في إبراهيم
عليه السلام خرج، فلما برز رفع يديه
فقال: اللهم إني أشهد أنني على دين
إبراهيم)).

3828. और लैज़ बिन सअद ने कहा कि मुझे हिशाम ने लिखा,
अपने वालिद (उर्वा बिन जुबैर) से और उन्होंने कहा कि हमसे

٣٨٢٨ - وَقَالَ اللَّيْثُ: كَتَبَ إِلَيَّ هِشَامٌ
عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ

हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल को का'बा से अपनी पीठ लगाए हुए खड़े होकर ये सुना, ऐ कुरैश के लोगों! अल्लाह की क़सम! मेरे सिवा और कोई तुम्हारे यहाँ दीने इब्राहीम पर नहीं है और ज़ैद बेटीयों को ज़िन्दा नहीं गाड़ते थे और ऐसे शख्स से जो अपनी बेटी को मार डालना चाहता कहते उसकी जान न ले उसके तमाम अख़राजात का ज़िम्मे मैं लेता हूँ। चुनाँचे लड़की को अपनी परवरिश में रख लेते जब वो बड़ी हो जाती तो उसके बाप से कहते अब अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी लड़की को तुम्हारे हवाले कर सकता हूँ और अगर तुम्हारी मर्जी हो तो मैं उसके सब काम पूरे कर दूँगा।

اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَتْ: ((رَأَيْتُ زَيْدَ بْنَ عَمْرٍو
بَنِي نَفِيلٍ قَابِلًا مُشِيدًا ظَهْرَهُ إِلَى الْكَعْبَةِ
يَقُولُ: يَا مُغْتَرِفُ قُرَيْشٍ، وَاللَّهِ مَا مِنْكُمْ
عَلَى دِينِ إِبْرَاهِيمَ غَيْرِي. وَكَانَ يَحْتَضِي
الْمَوْلُودَةَ، يَقُولُ لِلرَّجُلِ إِذَا أَرَادَ أَنْ
يَقْتُلَ ابْنَتَهُ: لَا تَقْتُلْهَا، أَنَا أَكْفَيْتُهَا مَوْلَتَهَا،
فَبَاخِلْهَا، فَإِذَا تَزَوَّجْتَ قَالَ لِابْنَتِهِ: إِنَّ
هِيَ دَلَعَتْهَا إِلَيْكَ، وَإِنْ شِئْتَ كَفَيْتُكَ
مَوْلَتَهَا)).

तस्रीह: बज़ार और तबरानी ने यूँ रिवायत किया है कि ज़ैद और वरक़ा दोनों दीने हक़ की तलाश में शाम के मुल्क को गये। वरक़ा तो वहाँ जाकर ईसाई हो गया और ज़ैद को ये दीन पसन्द नहीं आया। फिर वो मूसिल में आए वहाँ एक पादरी से मिले जिसने दीने नसरानी उन पर पेश किया लेकिन ज़ैद ने न माना। इसी रिवायत में ये है कि सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) और हज़रत उमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से ज़ैद का हाल पूछा आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह ने उसको बख़्श दिया और उस पर रहम किया और वो दीने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर फ़ौत हुआ। ज़ैद का नसबनामा ये है ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल बिन अब्दुल उज्जा बिन बाह्र बिन अब्दुल्लाह अल्ख़ ये बुजुर्ग बिअप्रते नबवी से पहले ही इतिकाल कर गये थे उनके साहबज़ादे सईद नामी ने इस्लाम कुबूल किया जो अशर-ए-मुबशशरह में से हैं। रिवायत में मुसिकीने मक्का का अंसाब पर ज़बीहा का ज़िक्र आया है। वो पत्थर मुराद हैं जो का'बा के आसपास लगे हुए थे और उन पर मुसिकीन अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया करते थे। आँहज़रत (ﷺ) के दस्तरख़वान पर हाज़िरी देने से ज़ैद ने इसलिये इंकार किया कि उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को भी कुरैश का एक फ़र्द समझकर गुमान कर लिया कि शायद दस्तरख़वान पर थानों का ज़बोह पकाया गया हो और वो ग़ैरुल्लाह के मजबूहा जानवर का गोशत नहीं खाया करते थे, जहाँ तक हकीकत का ता'ल्लुक है रसूल करीम (ﷺ) पैदाइश के दिन ही से मा'सूम थे और ये नामुम्किन था कि आप (ﷺ) नुबुव्वत से पहले कुरैश के अफ़्फ़ाले शिकिया में शरीक होते हों। लिहाज़ा ज़ैद का गुमान आँहज़रत (ﷺ) के बारे में सहीह न था। फ़ाकही ने आमिर बिन रबीआ से निकाला, मुझे ज़ैद ने ये कहा कि मैंने अपनी क्रौम के बरख़िलाफ़ इस्माईल और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के दीन की पैरवी की है और मैं उस पैग़म्बर का मुंतज़िर हूँ जो आले इस्माईल में पैदा होगा लेकिन उम्मीद नहीं कि मैं उसका ज़माना पाऊँ मगर मैं इस पर ईमान लाया उसकी तस्दीक़ करता हूँ उसके बरहक़ पैग़म्बर होने की गवाही देता हूँ अगर तू ज़िन्दा रहे और उस रसूल को पाये तो मेरा सलाम पहुँचा दीजियो। आमिर (रज़ि.) कहते हैं कि जब मैं मुसलमान हुआ तो मैंने उनका सलाम आँहज़रत (ﷺ) को पहुँचाया आप (ﷺ) ने जवाब में वअलैहिस्सलाम फ़र्माया और फ़र्माया मैंने उसको बहिश्त में कपड़ा घसीटते हुए देखा है। ज़ैद मरहूम ने अरबों में लड़कियों को ज़िन्दा दर गोर कर देने की रस्म की भी मुख़ालफ़त की जैसा कि रिवायत के आख़िर में दर्ज है।

बाब 25 : कुरैश ने जो का'बा की मरम्मत की थी

उसका बयान

3829. मुज़से महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत जाबिर

٢٥- بَابُ بُيُوتِ الْكَعْبَةِ

٣٨٢٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ حَدَّثَنَا عَبْدُ

الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ:

أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ

बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब का'बा की ता'मीर हो रही थी तो नबी करीम (ﷺ) और हज़रत अब्बास (रज़ि.) उसके लिये पत्थर ढो रहे थे हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से कहा अपना तहबन्द गर्दन पर रख लो इस तरह पत्थर की (ख़राश लगने से) बच जाओगे आप (ﷺ) ने जब ऐसा किया आप (ﷺ) ज़मीन पर गिर पड़े और आप (ﷺ) की नज़र आसमान पर गड़ गई जब होश हुआ तो आप (ﷺ) ने चचा से फ़र्माया मेरा तहबन्द लाओ फिर उन्होंने आपका तहबन्द खूब मज़बूत बाँध दिया। (राजेअ: 364)

3830. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार और अब्दुल्लाह बिन अबी ज़ैद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में बैतुल्लाह के गिर्द अहाज़ा की दीवार न थी लोग का'बा के गिर्द नमाज़ पढ़ते थे फिर जब हज़रत इमर (रज़ि.) का दौर आया तो उन्होंने उसके गिर्द दीवार बनवाई। अब्दुल्लाह ने बयान किया कि ये दीवारें भी नीची थीं अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने उनको बुलन्द किया।

तशरीह:

हाफ़िज़ ने कहा का'बा शरीफ़ दस मर्तबा ता'मीर किया गया है, पहले फ़रिशतों ने बनाया, फिर आदम (अलैहिस्सलाम) ने, फिर उनकी औलाद ने, फिर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने, फिर अमालिकाने, फिर ज़ुरहुम ने, फिर कुसई बिन किलाब ने, फिर कुरैश ने, फिर अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने, फिर हज़ाज बिन यूसुफ़ ने, अब तक हज़ाज ही की बिना पर है। आज की सज़्दी हुकूमत ने मस्जिदुल हुराम की तौसीअ व ता'मीर में बेशबहा ख़िदमात अंजाम दी हैं। अल्लाह पाक उन ख़िदमात को कुबूल फ़र्माए आमीन।

बाब 26 : जाहिलियत के ज़माने का बयान

٢٦ - بَابُ أَيَّامِ الْجَاهِلِيَّةِ

या'नी वो ज़माना जो आँहज़रत (ﷺ) की पैदाइश से पहले आपकी नुबुव्वत तक गुज़रा है। और अह्द जाहिलियत उस ज़माने को भी कहते हैं जो आपके नबी होने से पहले गुज़रा है।

3831. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आशूरा का रोज़ा कुरैश लोग ज़मान-ए-जाहिलियत में रखते थे और नबी करीम (ﷺ) ने भी उसे बाक़ी रखा था। जब आप (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) ने खुद भी उस दिन रोज़ा रखा और सहाबा (रज़ि.) को भी रखने का हुक्म दिया लेकिन जब रमज़ान का रोज़ा 2 हिजरी में फ़र्ज़ हुआ तो उसके बाद आप

عبد الله رضى الله عنهما قال: لما بنيت الكعبة ذهب النبي ﷺ وعباس بن قحطان الحجارة، فقال عباس للنبي ﷺ: اجعل إزارك على رقبتك يقيك من الحجارة، فخر إلى الأرض، وطمخت عيناه إلى السماء، ثم أفاق فقال: (إزاري إزاري، فشدّ عليه إزاره)).

(إجماع: ٣٦٤)

٣٨٣٠ - حدثنا أبو الثّمان حدثنا حماد بن زيد عن عمرو بن دينار وعبد الله بن أبي يزيد قالا: ((لم يكن على عهد النبي ﷺ حول البيت حائط، كانوا يصلون حول البيت، حتى كان عمر قتي حوّة حائطاً. قال عبيد الله: جذرة قصير، فبناه ابن الزبير)).

٣٨٣١ - حدثنا مسدد حدثنا يحيى قال: هشام حدثني أبي عن عائشة رضى الله عنها قالت: ((كان عاشوراء يوماً تصومه قريش في الجاهلية، وكان النبي ﷺ يصومه، فلما قدم المدينة صامه وأمر بصيامه، فلما نزل رمضان كان من شاء

(ﷺ) ने हुक्म दिया कि जिसका जी चाहे आशूरा का रोज़ा रखे और जो न चाहे न रखे। (राजेअ: 1592)

صَانَعَهُ، وَمَنْ شَاءَ لَا يَصْنَعُهُ)).

[راجع: 1092]

3832. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन ताऊस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़मान-ए-जाहिलियत में लोग हज़ के महीनों में इमरह करना बहुत बड़ा गुनाह ख़याल करते थे। वो मुहर्रम को सफ़र कहते। उनके यहाँ ये मसल थी कि ऊँट की पीठ का ज़ख़म जब अच्छा होने लगे और (हाजियों के) निशानाते क़दम मिट चुकें तो अब इमरह करने वालों का इमरह जाइज़ हुआ। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने अम्हाब के साथ ज़िल्हिज की चौथी तारीख़ को हज़ का एहराम बाँधे हुए (मक्का) तशरीफ़ लाए तो आपने सहाबा को हुक्म दिया कि अपने हज़ को इमरह कर डालें (तवाफ़ और सई करके एहराम खोल दें) सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (उस इमरह और हज़ के दौरान में) क्या चीज़ें हलाल होंगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम चीज़ें! जो एहराम की न होने की हालत में हलाल थीं वो सब हलाल हो जाएंगी। (राजेअ: 1075)

۳۸۳۲- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا وَقْتَبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانُوا يَرَوْنَ أَنَّ الْعُمْرَةَ فِي أَشْهُرِ الْحَجِّ مِنَ الْفَحْشَاءِ فِي الْأَرْضِ، وَكَانُوا يُسَمُّونَ الْمُحَرَّمَ صَفْرًا وَيَقُولُونَ: إِذَا بَرَأَ الذَّيْرُ، وَعَقَا الْأَثَرُ، خَلَّتِ الْعُمْرَةُ لِمَنْ اعْتَمَرَ. قَالَ: فَقَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ رَابِعَةَ مِهْلَيْنَ بِالْحَجِّ، أَمَرَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَجْعَلُوهَا عُمْرَةً، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَيُّ الْحَجْلِ؟ قَالَ: «(الْحَجْلُ كُلُّهُ)».

[راجع: 1080]

3833. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने, कहा कि अम्र बिन दीनार बयान करते थे कि हमसे सईद बिन मुसय्यिब ने अपने वालिद से बयान किया, उन्होंने सईद के दादा हज़न से बयान किया कि ज़माना जाहिलियत में एक मर्तबा सैलाब आया कि (मक्का की) दोनों पहाड़ियों के दरम्यान पानी ही पानी हो गया सुफ़यान ने बयान किया कि बयान करते थे कि इस हदीष का एक बहुत बड़ा किस्सा है।

۳۸۳۳- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ: كَانَ عُمَرُو يَقُولُ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسْتَمِرِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: «(جَاءَ سَيْلٌ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَكَسَا مَا بَيْنَ الْجَبَلَيْنِ. قَالَ سُفْيَانٌ وَيَقُولُ: إِنَّ هَذَا الْحَدِيثَ لَهُ شَأْنٌ)».

तशरीह: हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने कहा, मूसा बिन इक्बा ने बयान किया कि का'बा में सैलाब उस पहाड़ की तरफ़ से आया करता था जो बुलन्द जानिब में वाक़ेअ है उनको डर हुआ कहीं पानी का'बा के अन्दर न घुस जाए इसलिये उन्होंने इमारत को ख़ूब मज़बूत करना चाहा और पहले जिसने का'बा ऊँचा किया और उसमें से कुछ गिराया वो बलीद बिन मुगीरह था। फिर का'बा के बनने का वो किस्सा नक़ल किया जो आहज़रत (ﷺ) की नुबुव्वत से पहले हुआ और इमाम शाफ़िई ने किताबुल उम्माल में अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) से नक़ल किया। जब वो का'बा बना रहे थे। क़अब ने उनसे कहा ख़ूब मज़बूत बनाओ क्योंकि हम किताबों में ये पाते हैं कि आख़िर ज़माने में सैलाब बहुत आएँगे तो किस्से से मुराद यही है कि वो इस सैलाब को देखकर जिसके बराबर कभी नहीं आया था ये समझ गये कि आख़िर ज़माने के सैलाबों में ये पहला सैलाब है।

3834. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे बयान ने, उनसे अबू बिस्म ने और उनसे कैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) क़बीला अहमस की एक औरत से मिले उनका नाम ज़ैनब बिन्ते मुहाजिर था, आप (रज़ि.) ने देखा कि वो बात ही नहीं करतीं दरयाफ़्त फ़र्माया क्या बात है ये बात क्यों नहीं करतीं? लोगों ने बताया कि मुकम्मल ख़ामोशी के साथ हज्ज करने की मन्नत मानी है। अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया, बात करो इस तरह हज्ज करना तो जाहिलियत की रस्म है। चुनौचे उसने बात की और पूछा आप कौन हैं? हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि मैं मुहाजिरीन का एक आदमी हूँ। उन्होंने पूछा कि मुहाजिरीन के किस क़बीले से हैं? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि कुरैश से, उन्होंने पूछा कुरैश के किस ख़ानदान से? हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उस पर फ़र्माया तुम बहुत पूछने वाली औरत हो, मैं अबूबक्र (रज़ि.) हूँ। उसके बाद उन्होंने पूछा जाहिलियत के बाद अल्लाह तआला ने जो हमें ये दीने हक़ अता फ़र्माया उस पर तुम्हारा क़याम उस वक़्त तक रहेगा जब तक तुम्हारे इमाम हाकिम सीधे रहेंगे। उस ख़ातून ने पूछा इमाम से क्या मुराद है आपने फ़र्माया क्या तुम्हारी क़ौम में सरदार और अशराफ़ लोग नहीं हैं जो अगर लोगों को कोई हुक्म दें तो वो उसकी इत्ताअत करें? उसने कहा कि क्यों नहीं हैं। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि इमाम से यही मुराद है।

तशरीह: इस्माईली की रिवायत में यूँ है उस औरत ने कहा हममें और हमारी क़ौम में जाहिलियत के ज़माने में कुछ फ़साद हुआ था तो मैंने क़सम खाई थी कि अगर अल्लाह ने मुझको उससे बचा दिया तो मैं जब तक हज्ज न कर लूँगी किसी से बात नहीं करूँगी। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा इस्लाम उन बातों को मिटा देता है तुम बात करो। हाफ़िज़ ने कहा कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इस क़ौल से ये निकला कि ऐसी ग़लत क़सम का तोड़ देना मुस्तहब है। हदीष अबू इसाईल भी ऐसी है जिसने पैदल चलकर हज्ज करने की मन्नत मानी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उसको सवारी पर चलने का हुक्म फ़र्माया और उस मन्नत को तुड़वा दिया।

3835. मुझसे फ़र्वा बिन अबी अल् मगरा ने बयान किया, कहा हमको अली बिन मस्थिर ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक काली औरत जो किसी अरब की बांदी थी, इस्लाम लाई

۳۸۳۴- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ يَمَانِ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: ((دَخَلَ أَبُو بَكْرٍ عَلَى امْرَأَةٍ مِنْ أَحْمَسَ يُقَالُ لَهَا زَيْنَبُ، فَرَأَاهَا لَا تَكَلِّمُ، فَقَالَ: مَا لَهَا لَا تَكَلِّمُ؟ قَالُوا: خَجَتْ مُضْمِنَةً. قَالَ لَهَا: تَكَلَّمِي، فَإِنَّ هَذَا لَا يَجِلُّ، هَذَا مِنْ عَمَلِ الْجَاهِلِيَّةِ. فَتَكَلَّمَتْ فَقَالَتْ: مَنْ أَنْتَ؟ قَالَ: امْرُؤٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ، قَالَتْ: أَيُّ الْمُهَاجِرِينَ؟ قَالَ: مِنْ قُرَيْشٍ. قَالَتْ: مِنْ أَيِّ قُرَيْشٍ أَنْتَ؟ قَالَ: إِنَّكَ لَسَوْوَلٌ، أَنَا أَبُو بَكْرٍ. قَالَتْ: مَا بَقَاؤُنَا عَلَى هَذَا الْأَمْرِ الصَّالِحِ الَّذِي جَاءَ اللَّهُ بِهِ بَعْدَ الْجَاهِلِيَّةِ؟ قَالَ: بَقَاؤُكُمْ عَلَيْهِ مَا اسْتَقَامَتْ بِكُمْ أَيْمَتُكُمْ. قَالَتْ: وَمَا الْأَيْمَةُ؟ قَالَ: أَمَّا كَانَ بِقَوْمِكَ رُؤُوسٌ وَأَشْرَافٌ يَأْمُرُونَهُمْ فَيَطِيعُونَهُمْ؟ قَالَتْ: بَلَى. قَالَ: فَهُمْ أَوْلِيكَ عَلَى النَّاسِ)).

۳۸۳۵- حَدَّثَنِي فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ:

और मस्जिद में उनके रहने के लिये एक कोठरी थी। हजरत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि वो हमारे यहाँ आया करती और बातें किया करती थीं, लेकिन जब बातों से फ़ारिग हो जातीं तो वो ये श'र पढ़ती, और हार वाला दिन भी हमारे रब के अजाइबे कुदरत में से है, कि उसी ने (बफ़ज़िलही) कुफ़्र के शहर से मुझे छुड़ाया। उसने जब कई मर्तबा ये श'र पढ़ा तो आइशा (रज़ि.) ने उससे दरयाफ़्त किया कि हार वाले दिन का किस्सा क्या है? उसने बयान किया कि मेरे मालिकों के घराने की एक लड़की (जो नई दुल्हन थी) लाल चमड़े का एक हार बाँधे हुए थी। वो बाहर निकली तो इत्तिफ़ाक़ से वो गिर गया। एक चील की उस पर नज़र पड़ी और वो गोश्त समझकर उठा कर ले गई। लोगों ने मुझे उसके लिये चोरी की तोहमत लगाई और मुझे सज़ा देनी शुरू कीं। यहाँ तक कि मेरी शर्मगाह की भी तलाशी ली। ख़ैर वो अभी मेरे चारों तरफ़ जमा ही थ और मैं अपनी मुसीबत में मुब्तला थी कि चील आई और हमारे सरों के बिलकुल ऊपर उड़ने लगी। फिर उसने वही हार नीचे गिरा दिया। लोगों ने उसे उठा लिया तो मैंने उनसे कहा इसी के लिये तुम लोग मुझ पर बोहतान लगा रहे थे हालाँकि मैं बेगुनाह थी।

(राजेअ: 439)

((أَسْلَمَتِ امْرَأَةٌ سَوْدَاءَ لِبَغْضِ الْقُرْبِ، وَكَانَ لَهَا حِفْشٌ فِي الْمَسْجِدِ، قَالَتْ لَكَانَتْ تَأْتِينَا فَتَحَدِّثُ عِنْدَنَا، فَإِذَا قَرَعَتْ مِنْ حَدِيثِهَا قَالَتْ:

وَيَوْمَ الْوُشَاحِ مِنْ تَعَاجِيبِ رَبِّنَا

أَلَا إِنَّهُ مِنْ بَلَدَةِ الْكُفْرِ نَجَائِي

فَلَمَّا أَكْثَرَتْ قَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ: وَمَا يَوْمَ الْوُشَاحِ؟ قَالَتْ: خَرَجْتُ جُورِيَّةَ لِبَغْضِ أَهْلِي وَعَلَيْهَا وَشَاحٌ مِنْ آدَمَ، فَسَقَطَ مِنْهَا، فَانْحَطَّتْ عَلَيْهِ الْحَدِيثُ وَهِيَ تَحْشِيهِ لَحْمًا، فَأَخَذَتْ. فَأَتَهُمُونِي بِهِ، فَعَذَّبُونِي، حَتَّى بَلَغَ مِنْ أَمْرِهِمْ أَنَّهُمْ طَلَبُوا فِي قَلْبِي، فَبَيَّنَّا لَهُمْ حَوْلِي وَأَنَا لِي كَرِيمِي إِذْ أَقْبَلْتُ الْحَدِيثَ حَتَّى وَازَتْ بِرُؤُوسِنَا، ثُمَّ أَلْقَتْهُ فَأَخَذُوهُ، فَقُلْتُ لَهُمْ: هَذَا الَّذِي أَتَهُمُونِي بِهِ وَأَنَا مِنْهُ بَرِيئَةٌ)).

[راجع: ٤٣٩]

तशरीह: रिवायत में लफ़्ज़े हिफ़्श ह के कसरा के साथ है जो छोटे तंग घर पर बोला जाता है व वज्हु दुखूलिहा हाहुना मिन जिहतित मा कान अलैहि अहलुल्लाहिलियति मिनलजफ़ा फिलिफ़ अलि वलक़ौलि (फ़तुहल्लबारी) या'नी इस हदीष को यहाँ लाने से ज़मान-ए-जाहिलियत के मज़ालिम (अत्याचारों) का दिखलाना है, जो अहले जाहिलियत अपनी ज़बानों और अपने कामों से ग़रीबों पर ढाया करते थे।

3836. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हौं! अगर किसी को क़सम खानी ही हो तो अल्लाह के सिवा किसी की क़सम न खाए। कुरैश अपने बाप दादा की क़सम खाया करते थे इसलिये आप (ﷺ) ने उन्हें फ़र्माया कि अपने बाप दादा के नाम की क़सम न खाया करो। (राजेअ: 2679)

3837. मुझसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे

٣٨٣٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَلَا مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلَا يَخْلِفُ إِلَّا بِاللَّهِ، لَكَانَتْ قُرَيْشٌ تَخْلِفُ بِآبَائِهَا فَقَالَ: لَا تَخْلِفُوا بِآبَائِكُمْ)). [راجع: ٢٦٧٩]

٣٨٣٧ - حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ:

अब्दुल्लाह बिन वहाब ने बयान किया कि मुझे अमर बिन हारिष ने खबर दी, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया कि क़ासिम बिन मुहम्मद उनके वालिद जनाज़े के आगे आगे चला करते थे और जनाज़े को देखकर खड़े नहीं होते थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) के हवाले से वो बयान करते थे कि ज़मान-ए-जाहिलियत में लोग जनाज़ा के लिये खड़े हो जाया करते थे और उसे देखकर कहते थे कि, ऐ मरने वाले जिस तरह अपनी ज़िन्दगी में तू अपने घरवालों के साथ था अब वैसा ही किसी परिन्दे के भेस में है।

तशरीह: या'नी जाहिलियत वाले दोबारा जन्म के काइल थे वो कहते थे आदमी की रूढ़ मरते ही किसी परिन्दे के भेस में चली जाती है। अगर अच्छा आदमी था तो अच्छे परिन्दे की शक्ल ले लेती है जैसे कबूतर वगैरह और अगर बुरा आदमी था तो बुरे की मसलन उल्लू, कच्चा वगैरह। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया कि तू अपने घर वालों में तो अच्छा शरीफ़ आदमी था अब बतला किस जन्म में है। कुछ ने तर्जुमा यूँ किया है तू अपने घरवालों में था लेकिन दो बार तू उनमें नहीं रह सकता यानी हसर होने वाला नहीं जैसे मुश्रिकों का एतिकाद था कि एक ही ज़िन्दगी है, दुनिया की ज़िन्दगी और वो आखिरत के काइल न थे। कौलुहु कुन्त फ़ी अहलिक मा अन्त मरतैनि अय यकूलून ज़ालिक मरतैनि व मा मौसूलतुन व बअज़ुस्सिलति महजूफ़ुन व त्तक्दीरु अनत फ़ी अहलिकलज़ी कुन्त फ़ीहि अय अलज़ी अन्त फ़ीहि अल्आन कुन्त फिल्हयाति मिस्लुहु लिअन्नुहुम कानू ला यूमिनुन बिल्बअग़ि व लाकिन कानू यअतकिदून रूह इज़ा खरजत ततरीरु तैरन फइ कान मिन अहलिलखैरि कान रूहुह मिन सालिहितैरि व इल्ला बिल्अक्सि मज़मून का खुलासा वही है जो ऊपर गुजर चुका है।

3838. मुझसे अमर बिन अब्बास ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अमर बिन मैमून ने बयान किया कि हज़रत इमर (रज़ि.) ने कहा जब तक धूप प्रबीर पहाड़ी पर न जाती कुरैश (हज्र में) मुज़दलिफ़ा से नहीं निकला करते थे। नबी करीम (ﷺ) ने उनकी मुखालफ़त की और सूरज निकलने से पहले आप (ﷺ) ने वहाँ से कूच किया।

(राजेअ: 1673)

۳۸۳۸- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرُو بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: ((قَالَ عَمْرُو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِنَّ الْمُشْرِكِينَ كَانُوا لَا يَفِطُّونَ مِنْ جَمْعٍ حَتَّى تَشْرِقَ الشَّمْسُ عَلَى نَبِيرٍ، فَخَالَفَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ فَأَفَاضَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ)).

[راجع: ۱۶۸۴]

3839. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा, क्या तुम लोगों से यहा बिन महलब ने ये हदीस बयान की थी कि उनसे हुसैन ने बयान किया, उनसे इकिमा ने (कुर्आन मजीद की आयत में) वकासन दिहाका के बारे में फ़र्माया कि (मा'नी हैं) भरा हुआ प्याला जिसका मुसलसल दौर चले।

۳۸۳۹- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي أَسَمَةَ: حَدَّثَكُمْ بِحَدِيثِ بْنِ الْمُهَلَّبِ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ عِكْرِمَةَ «وَكُنَّا دِفْءًا» قَالَ: مُتَابَعَةٌ.

3840. इकिमा ने बयान किया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन

۳۸۴۰- قَالَ: ((وَلَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ:

अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना, वो कहते थे कि ज़माना जाहिलियत में (ये लफ़्ज़ इस्ते'माल करते थे) अस्किना कासन दिहाका या'नी हमको भरपूर जामे शराब पिलाते रहो।

3841. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक ने, उनसे अबू सलमान ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे सच्ची बात जो कोई शायर कह सकता था वो लुबैद शायर ने कही, हौ अल्लाह के सिवा हर चीज़ बातिल है, और उमय्या बिन अबी सल्लत (जाहिलियत का एक शायर) मुसलमान होने के करीब था। (दीगर मक़ाम : 6147, 6479)

سَمِعْتُ يَقُولُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ: اسْكِنَا كَاسَنَ دِهَاقًا).

٣٨٤١- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَصْدَقُ كَلِمَةٍ قَالَهَا الشَّاعِرُ كَلِمَةُ لُبَيْدٍ: أَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَا عِلَّا اللَّهَ بَاطِلٌ. وَكَأَدَ امْتِنَةُ بْنُ أَبِي الصَّلْتِ أَنْ يُسْلِمَ)). [طرفه ٦: ٦١٤٨, ٦١٤٩].

तशरीह : बातिल से यहाँ मुराद फ़ना होना है या बिल फ़ेअल मअदूम जैसे सूफिया कहते हैं कि ख़ारिज में सिवाय अल्लाह के फ़िलहक़ीक़त कुछ मौजूद नहीं है और ये जो वजूद नज़र आता है ये वजूद मौहूम है जो एक न एक दिन फ़ानी (ख़त्म होने वाला) है। सहीह मुस्लिम में शुरैद से रिवायत है औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे उमय्या बिन अबी सल्लत के शेर सुनाओ। मैंने आप (ﷺ) को सौ बैतों के करीब सुनाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ये तो अपने शेरों में मुसलमान होने के करीब था। उमय्या जाहिलियत के ज़माने में इबादत किया करता था, आख़िरत का काइल था। कुछ ने कहा नसरानी हो गया था उसके शेरों में अक़्बर तौहीद के मज़ामीन है लुबैद का पूरा शेर है :-

अला कुल्लु शैइन मा खलल्लाहि बातिलु

जो अल्लाह के मासिवा है वो फ़ना हो जाएगा

व कुल्लु नईमिन ला महालत जाइलु

एक दिन जो देश है मिट जाएगा।

लुबैद का ज़िक्र किरमानी में है, अश्शाइरू अस्महाबी मिन फुहूलि शुआराइल्लाहिलिय्यति फअस्लम व लम यकुल शिअरन बअदु। या'नी लुबैद जाहिलियत का माना हुआ शायर था जो बाद में मुसलमान हो गया फिर उसने शेर कहना बिलकुल छोड़ दिया।

3842. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन कासिम ने, उनसे कासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का एक गुलाम था जो रोज़ाना उन्हें कुछ कमाई दिया करता था और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उसे अपनी ज़रूरियात में इस्ते'माल किया करते थे। एक दिन वो गुलाम कोई चीज़ लाया और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने भी उसमें से खा लिया। फिर गुलाम ने कहा आप (रज़ि.) को मा'लूम है ये कैसी कमाई से है? आप (रज़ि.) ने दरथाप्त फ़र्माया कैसी कमाई से है? उसने कहा मैंने जाहिलियत

٣٨٤٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ لَأَبِي بَكْرٍ غُلَامٌ يَخْرُجُ لَهُ الْخَرَاجُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَأْكُلُ مِنْ خَرَاجِهِ، فَجَاءَ يَوْمًا بِشَيْءٍ فَأَكَلَ مِنْهُ أَبُو بَكْرٍ، فَقَالَ لَهُ الْغُلَامُ: تَدْرِي مَا هَذَا؟

में एक शख्स के लिये कहानत की थी हालाँकि मुझे कहानत नहीं आती थी, मैंने उसे सिर्फ़ धोखा दिया था लेकिन इतिफ़ाक़ से वो मुझे मिल गया और उसने उसकी उज्रत में मुझको ये चीज़ दी थी, आप खा भी चुके हैं। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने ये सुनते ही अपना हाथ मुँह में डाला और पेट की तमाम चीज़ें क़ै करके निकाल डालीं।

3843. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे यहा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने कहा, मुझको नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़माना जाहिलियत के लोग हब्लुल हब्लनति तक क़्रीमत की अदायगी के वा'दे पर, क़ैट का गोश्त उधार बेचा करते थे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हब्लुल हब्ला का मतलब ये है कि कोई हामिला क़ैटनी अपना बच्चा ज़ने फिर वो नवजात बच्चा (बढ़कर) हामला हो, नबी करीम (ﷺ) ने इस तरह की ख़रीद व फ़रोख़्त मन्फ़ूअ करार दे दी थी। (राजेअ : 2143)

3844. हमसे अबुन नोज़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे महदी ने बयान किया उन्होंने कहा कि ग़ीलान बिन जरिर ने बयान किया कि हम अनस बिन मालिक (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होते थे। वो हमसे अंज़ार के बारे में बयान फ़र्माया करते थे और मुझसे फ़र्माते कि तुम्हारी क़्रीम ने फ़लों मौक़े पर ये कारनामा अंजाम दिया, फ़लों मौक़े पर ये कारनामा अंजाम दिया।

(राजेअ : 3776)

तशरीह : इन तमाम रिवायतों में किसी न किसी पहलू से ज़मान-ए-जाहिलियत के हालात पर रोशनी पड़ती है, हज़रत मुज्ताहिदे मुत्तक़ इमाम बुखारी (रह) चौँकि अहदे जाहिलियत का बयान फ़र्मा रहे हैं, इसीलिये इन तमाम अहदीय़ को यहाँ लाए। ये हालात बेशतर मज़ाशी (कारोबारी), इज़्तिसादी (आर्थिक), सियासी (राजनीतिक), अख़लाकी, मज़हबी क्वाइफ़ के बारे में हैं जिनमें बुरे और अच्छे हर क्रिस्म के हालात का तज़क़िरा हुआ है इस्लाम ने अहदे जाहिलियत की बुराइयों को मिटाया और जो ख़ूबियाँ थीं उनको अपना लिया। इसलिये कि वो सारी ख़ूबियाँ हज़रत इब्राहीम और इस्माईल (अलैहि.) की हिदायात से ली गई थीं। इसलिये इस्लाम ने उनको बाक़ी रखा, बाक़ी उम्मत इस्लाम को उनके लिये राबत दिलाई ऐसा ही एक क़सामत का मामला है जो अहदे जाहिलियत में प्रचलित था और इस्लाम ने उसे बाक़ी रखा वो आगे मज़कूर हो रहा है।

बाब 28 : ज़मान-ए-जाहिलियत की क़सामत का बयान

٢٧- بَابُ الْقِسَامَةِ فِي الْجَاهِلِيَّةِ

तशरीह : किसी मुहल्ले या बस्ती में कोई आदमी मक्तूल (मृतक) मिले मगर किसी भी ज़रिये से उसके क़ातिल का पता न मिल सके तो इस सूत्र में मुहल्ला के पचास आदमियों को इतिखाब करके उनसे क़सम ली जाएगी कि उनके मुहल्ले वालों का उस क़ातिल से कोई ता'ल्लुक नहीं है, उसीको लफ़्ज़े क़सामा से ता'बीर किया गया है। मक्का शरीफ़ में इस्लाम

فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَمَا هُوَ؟ قَالَ : كُنْتُ تَكُنْتُ لِنَسَانٍ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَمَا أُخِيرُ الْكِهَانَةَ، إِلَّا أَنِّي خَدَعْتُهُ فَلَقِيَنِي فَأَعْطَانِي بِذَلِكَ، فَهَذَا الَّذِي أَكَلْتُ مِنْهُ. فَأَذْعَلَ أَبُو بَكْرٍ يَدَهُ فَقَاءَ كُلَّ شَيْءٍ فِي بَطْنِهِ).

٣٨٤٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِهَذَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَتَّخِذُونَ لَحُومَ الْجَزُورِ إِلَى حَتْلِ الْحَتْلَةِ. قَالَ: وَحَتْلُ الْحَتْلَةِ أَنْ تُنْجِ الثَّاقِلَ مَا فِي بَطْنِهَا، ثُمَّ تَحْمِلَ إِلَى بُعْثٍ. فَهَاجَمَهُ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ذَلِكَ)).

[راجع: ٢١٤٣]

٣٨٤٤- حَدَّثَنَا أَبُو السَّعْمَانِ حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ قَالَ: خَلَّانُ بْنُ جَرِيرٍ ((كُنَّا نَأْتِي أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ لِنُحَدِّثَهُ عَنِ الْأَنْصَارِ، وَكَانَ يَقُولُ لِي: فَعَلْ قَوْمُكَ كَذَا وَكَذَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، فَعَلْ قَوْمُكَ كَذَا وَكَذَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا)). [راجع: ٣٧٧٦]

से पहले भी ये दस्तूर था जिसे इस्लाम ने कायम रखा। मक्का वाले ये क़सम का'बा शरीफ़ के पास लिया करते थे। क़ाल फिल्लम् आत अल्किसामतु हिय इस्मु बिमअनल्कसमिव क़ील मस्दरून युक्कालु अक्कसम युक्सिमु क़सामतन व क़द युत्लकु अलल्जमा अतिल्लजीन यक्सिमून व फ़िशरइ इबारतुन अन अयमानिन युक्ससु बिहा औलियाउहमि अला इस्तिहक़ाकि दमि साहिबिहिम औ युक्समून बिहा अहलुल्महल्लतिल्मुत्तहमून अला नफियिल्कत्लि अन्हुम अल्ख व क़ाल कानतिल्कासिमतु फिल्लजाहिलिय्यति फअकरहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) अला मा कानत फिल्लजाहिलिय्यति इन्तिहा मुख्तसर

3845. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा हमसे क़त्तन अबुल हसीम ने कहा, हमसे अबू यज़ीद मदनी ने, उनसे इकिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, जाहिलियत में सबसे पहला क़सामा हमारे ही क़बील बनी हाशिम में हुआ था, बनू हाशिम के एक शख़्स अम्र बिन अल्कमा को कुरैश के किसी दूसरे ख़ानदान के एक शख़्स (खुदाश बिन अब्दुल्लाह आमरी) ने नौकरी पर रखा, अब ये हाशमी नौकर अपने स्राहब के साथ उसके ऊँट लेकर शाम की तरफ़ चला, वहाँ कहीं उस नौकर के पास से एक दूसरा हाशमी शख़्स गुज़रा, उसकी बोरी का बंधन टूट गया था। उसने अपने नौकर भाई से इल्तिजा की मेरी मदद कर ऊँट बाँधने की एक रस्सी दे दे, मैं उससे अपना थैला बाँध अगर रस्सी न होगी तो वो भाग थोड़े जाएगा। उसने एक रस्सी उसे दे दी और उसने अपनी बोरी का मुँह उससे बाँध लिया (और चला गया)। फिर जब उन नौकर और स्राहब ने एक मंज़िल पर पड़ाव किया तो तमाम ऊँट बाँधे गये लेकिन एक ऊँट खुला रहा जिस स्राहब ने हाशमी को नौकरी पर अपने साथ रखा था उसने पूछा सब ऊँट तो बाँधे, ये ऊँट क्यों नहीं बाँधा गया क्या बात है? नौकर ने कहा उसकी रस्सी मौजूद नहीं है। स्राहब ने पूछा कहाँ है उसकी रस्सी? और गुस्स में आकर एक लकड़ी उस पर फेंक मारी उसकी मौत आ पहुँची। उसके (मरने से पहले) वहाँ से एक यमनी शख़्स गुज़र रहा था। हाशमी नौकर ने पूछा क्या हज़ के लिये हर साल तुम मक्का जाते हो? उसने कहा अभी तो इरादा नहीं है लेकिन मैं कभी जाता रहता हूँ। उस नौकर ने कहा जब भी तुम मक्का पहुँचो क्या मेरा एक पैग़ाम पहुँचा दोगे? उसने कहा हाँ पहुँचा दूँगा। उस नौकर ने कहा कि जब भी तुम हज़ के लिये जाओ तो पुकारना ऐ कुरैश के लोगों! जब वो तुम्हारे पास जमा

3845 - حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا قُطَيْبٌ أَبُو الْهَيْثَمِ حَدَّثَنَا أَبُو نَزْرَةَ الْحَنْدِيُّ عَنْ حَكْرَمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((إِنَّ أَوَّلَ نَسَافَةٍ كَانَتْ لِي الْجَاهِلِيَّةَ لَبِئْسَ بَنِي هَاشِمٍ : كَانَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي هَاشِمٍ اسْتَأْجَرَ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ مِنْ قَبِيلٍ أُخْرَى ، فَأَتَقْلَقَ نَعْمَةً لِي إِلَيْهِ ، فَمَرَّ رَجُلٌ بِهِ مِنْ بَنِي هَاشِمٍ فَلَمَّا انْقَلَبَتْ غُرُورَةٌ جَوَالِبِي فَقَالَ : أَجْعَلِي بِمَقَالٍ أَشَدَّ بِهِ غُرُورَةً جَوَالِبِي لَا تَغَيِّرِ الْإِبِلَ ، فَأَغْطَاهُ عِقَالًا فَشَدَّ بِهِ غُرُورَةً جَوَالِبِي . فَلَمَّا نَزَلُوا غُفِلَتْ الْإِبِلُ إِلَّا بَعِيرًا وَاحِدًا ، فَقَالَ الَّذِي اسْتَأْجَرَهُ : مَا شَأْنُ هَذَا الْبَعِيرِ لَمْ يُغْفَلِ مِنْ بَنِي الْإِبِلِ ؟ قَالَ : لَيْسَ لَهُ عِقَالٌ . قَالَ : فَأَيْنَ عِقَالُهُ ؟ قَالَ : لَمَحَذَلُهُ بَعْضًا كَانَ فِيهَا أَجَلُهُ . فَمَرَّ بِهِ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ ، فَقَالَ : أَتَشْهَدُ الْمَوْسِمَ ؟ قَالَ : مَا أَشْهَدُ وَزَيْمًا شَهِدْتُهُ . قَالَ : هَلْ أَنْتَ مُبْلَغٌ عَنِّي رِسَالَةً مَرَّةً مِنَ النَّخْرِ ؟ قَالَ : نَعَمْ . قَالَ فَكُنْتُ : إِذَا أَتَيْتَ شَهِدْتَ الْمَوْسِمَ قَدِيدًا يَا آلَ قُرَيْشٍ ،

हो जाएँ तो पुकारना ऐ बनी हाशिम! जब वो तुम्हारे पास आ जाएँ तो उनसे अबू तालिब पूछना और उन्हें बतलाना कि फ़लों शख़्स ने मुझे एक रस्सी के लिये क़त्ल कर दिया। इस वसिय्यत के बाद वो नौकर मर गया, फिर जब उसका साहब मक्का आया तो अबू तालिब के यहाँ भी गया। जनाब अबू तालिब ने दरयाफ़्त किया हमारे क़बीला के जिस शख़्स को तुम अपने साथ नौकरी के लिये ले गये थे उसका क्या हुआ? उसने कहा कि वो बीमार हो गया था मैंने ख़िदमत करने में कोई कसर नहीं उठा रखी (लेकिन वो मर गया तो) मैंने उसे दफ़न कर दिया। अबू तालिब ने कहा कि उसके लिये तुम्हारी तरफ़ से यही होना चाहिये था। एक मुहल के बाद वही यमनी शख़्स जिसे हाशमी नौकर ने पैग़ाम पहुँचान की वसिय्यत की थी, मौसम हज़ में आया और आवाज़ दी ऐ कुरैश के लोगों! लोगों ने बता दिया कि यहाँ हैं कुरैश! उसने आवाज़ दी, ऐ बनी हाशिम! लोगों ने बताया कि बनी हाशिम ये हैं। उसने पूछा अबू तालिब कहाँ हैं? लोगों ने बता दिया तो उसने कहा कि फ़लों शख़्स ने मुझे एक पैग़ाम पहुँचाने के लिये कहा था कि फ़लों शख़्स ने उसे एक रस्सी की वजह से क़त्ल कर दिया है। अब जनाब अबू तालिब उस साहब के यहाँ आए और कहा कि इन तीन चीज़ों में से कोई चीज़ पसन्द कर लो अगर तुम चाहो तो सौ क़ैट दियत में दे दो क्योंकि तुमने हमारे क़बीले के आदमी को क़त्ल किया है और अगर चाहो तो तुम्हारी क़ौम के पचास आदमी इसकी क़सम खा लें कि तुमने उसे क़त्ल नहीं किया। अगर तुम उस पर तैयार नहीं तो हम तुम्हें उसके बदले में क़त्ल कर देंगे। वो शख़्स अपनी क़ौम के पास आया तो वो उसके लिये तैयार हो गये कि हम क़सम खा लेंगे। फिर बनू हाशिम की एक औरत अबू तालिब के पास आई जो उसी क़बीले के एक शख़्स से ब्याही हुई थी और अपने उस शाहर से उसके बच्चा भी था। उसने कहा ऐ अबू तालिब! आप मेहरबानी करें और मेरे इस लड़के को उन पचास आदमियों में मुआफ़ कर दें और जहाँ क़सम ली जाती है (या'नी रुक्न और मक्कामे इब्राहीम के दरम्यान) उससे वहाँ क़सम न लें। हज़रत अबू तालिब ने उसे मुआफ़ कर दिया। उसके बाद उनमे का एक और शख़्स आया और कहा ऐ अबू तालिब! आपने सौ क़ैटों की जगह पचास आदमियों से क़सम त़लब की है, इस तरह हर

لَئِنْ أَجَابُوا لَقَامُوا يَا آلَ تَيْي هَاجِمٍ،
لَئِنْ أَجَابُوا لَقَامُوا عَنْ أَبِي طَالِبٍ
فَاخْبِرُهُ أَنْ فَلَانًا قَتَلَنِي فِي عَقَالٍ.
وَمَاتَ الْمُسْتَأْجِرُ. فَلَمَّا قَدِمَ الَّذِي
اسْتَأْجَرَهُ أَتَاهُ أَبُو طَالِبٍ فَقَالَ: مَا فَعَلَ
صَاحِبُنَا؟ قَالَ: فَرِحْتُ فَأَخَسَنْتُ الْقَتِيلَ
عَلَيْهِ، فَوَلَّيْتُ دَقْلَهُ. قَالَ: قَدْ كَانَ
أَهْلُ ذَلِكَ يَنْتَهِ. لَمَكْتُ حِينَئِذٍ ثُمَّ إِنَّ
الرَّجُلَ الَّذِي أَوْصَى إِلَيْنَا أَنْ يَتْلَعَ عَنْهُ
وَأَمَّا الْمَوْسِمُ فَقَالَ: يَا آلَ قُرَيْشٍ،
قَالُوا: هَلْوَ قُرَيْشٌ. قَالَ: يَا آلَ تَيْي
هَاجِمٍ، قَالُوا: هَلْوَ بَنُو هَاجِمٍ. قَالَ:
أَيْنَ أَبُو طَالِبٍ؟ قَالُوا: هَذَا أَبُو طَالِبٍ.
قَالَ: أَمْرِي فَلَانٌ أَنْ أُبْلَغَكَ رِسَالَةً أَنْ
فَلَانًا قَتَلَهُ فِي عَقَالٍ. فَأَتَاهُ أَبُو طَالِبٍ
فَقَالَ لَهُ: اخْتَرْنَا مِنْهُ لَثَلَاثَ: إِنْ
خِشْتَ أَنْ تُؤْذِيَ بَانَةً مِنَ الْإِبِلِ فَلَانُكَ
قَتَلْتُ صَاحِبَنَا، وَإِنْ خِشْتَ خَلْفَ
عَشْمُونٍ مِنْ قَوْمِكَ إِنَّكَ لَتَمُتُ نَفْسَهُ،
لَئِنْ أَهْبَتْ قَتْلَنَا بِهِ. فَأَتَى قَوْمَهُ فَقَالُوا
نَخْلِفُ. فَأَتَتْ امْرَأَةً مِنْ تَيْي هَاجِمٍ
كَانَتْ تَحْتَ رَجُلٍ مِنْهُمْ قَدْ وَلَدَتْ لَهُ
فَقَالَتْ: يَا أَبَا طَالِبٍ أَجِبْ أَنْ تُجِزَ
إِلَيْنِي هَذَا بِرَجُلٍ مِنَ الْعَشْمَانِ وَلَا
تُضِرْ بَعِيْنَهُ حَيْثُ تَضَرُّ الْإِيمَانُ،
فَفَعَلَ. فَأَتَاهُ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ: يَا أَبَا
طَالِبٍ أَرَدْتُ عَشْمَانٍ وَرَجُلًا أَنْ

शख्स पर दो कैंट पड़ते हैं। ये कैंट मेरी तरफ से आप कुबूल कर लें और मुझे उस मुकाम पर क़सम के लिये मजबूर न करें जहाँ क़सम ली जाती है। हज़रत अबू तालिब ने उसे भी मंज़ूर कर लिया। उसके बाद बक़िया अड़तालीस जो आदमी आए और उन्होंने क़सम खा ली, इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अभी इस वाक़िये को पूरा साल भी नहीं गुज़रा था कि उन अड़तालीस आदमियों में से एक भी ऐसा नहीं रहा जो आँख हिलाता।

يَخْلُقُوا مَكَانَ مَاءٍ مِنَ الْإِبِلِ، يُصِيبُ كُلَّ رَجُلٍ بَعِيرَانِ، هَذَانِ بَعِيرَانِ فَأَقْبَلَهُمَا عَنِّي وَلَا تُصِيرُ بَعِيرِي حَيْثُ تُصِيرُ الْأَيْمَانَ، فَقَبِلَهُمَا. وَجَاءَ ثَمَانِيَةٌ وَأَرْبَعُونَ فَحَلَفُوا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَوْ أَلْبَيْتُ نَفْسِي بِيَدِهِ مَا خَالَ الْخَوَلُ وَمَنْ الثَّمَانِيَّةُ وَأَرْبَعِينَ عَنِ تَطَرُّفٍ)).

तशरीह: या' नी कोई ज़िन्दा न रहा, सब मर गये। झूठी क़सम खाने की ये सज़ा उनको मिली और वो भी का'बा के पास मआज़अल्लाह। वो दूसरी रिवायत में है कि उन सबकी ज़मीन जायदाद हज़रत तय्यब को मिली जिसकी माँ के कहने से अबू तालिब ने उसको क़सम मुआफ़ कर दी थी, गो इब्ने अब्बास (रज़ि.) उस वक़्त पैदा भी नहीं हुए थे मगर उन्होंने ये वाक़िया मोतबर लोगों से सुना जब ही उस पर क़सम खाई। फ़ाकही ने इब्ने अबी नुजैह के तरीक़ से निकाला कुछ लोगों ने खान-ए-का'बा के पास एक क़समत में झूठी क़समें खाईं। फिर एक पहाड़ के तले जाकर उहरे एक पत्थर उन पर गिरा जिससे दबकर सब मर गये। झूठी क़समें खाना फिर कुछ लोगों का उन क़समों के लिये कुआन पाक और मस्जिदों को इस्ते'माल करना बेहद ख़तरनाक है। कितने लोग आज भी ऐसे देखे गये कि उन्होंने ये हरकत की और नतीजे में वो तबाह व बर्बाद हो गये। लिहाज़ा किसी भी मुसलमान को ऐसी झूठी क़सम खाने से क़ाअन परहेज़ करना लाज़िम है।

3846. मुझसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बुआज़ की लड़ाई अल्लाह तआला ने (मस्लिहत की वजह से) रसूलुल्लाह (ﷺ) से पहले बर्पा करा दी थी, आँ हज़रत (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो यहाँ अंसार की जमाअत में फूट पड़ी हुई थी। उनके सरदार मारे जा चुके थे या ज़ख्मी हो चुके थे, अल्लाह तआला ने उस लड़ाई को इसलिये पहले बरपा किया था कि अंसार इस्लाम में दाखिल हो जाएँ। (रज़ेअ: 3777)

٣٨٤٦- حَدَّثَنِي غَيْثُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ يَوْمَ بُعِثَ يَوْمًا قَدَمَةُ اللَّهِ لِرَسُولِهِ ﷺ، فَقَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَقَدْ انْتَرَقَ مَلَائِكُهُمْ، وَكَلِمَتُ سَرَوَاتِهِمْ وَجُرُوحًا، قَدَمَةُ اللَّهِ لِرَسُولِهِ ﷺ لِي دُخُولِهِمْ لِي الْإِسْلَامِ)).

[راجع: ٣٧٧٧]

3847. और अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्हें अमर ने ख़बर दी, उन्हें बुकैर बिन अशबह ने और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के मौला कुरैब ने उनसे बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बताया मफ़ा और मरवा के दरम्यान नाले के अंदर ज़ोर से दौड़ना सुन्नत नहीं यहाँ जाहिलियत के दौर में लोग

٣٨٤٧- وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنَا عَمْرُو عَنْ يَكْرِ بْنِ الْأَشَجِّ أَنَّ كُرَيْبًا مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ حَدَّثَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: ((لَيْسَ السَّغْيُ بَطْنِ الْوَادِي بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ

तेज़ी के साथ दौड़ा करते थे और कहते थे कि हम तो इस पथरीली जगह से दौड़ ही कर पार होंगे।

سَنَدٌ: إِنَّمَا كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَسْتَوُونَ
وَيَقُولُونَ: لَا نَجْزِي الْبَطْحَاءَ إِلَّا هَذَا.

तशरीह: बुआष बा के पेश के साथ मदीना के करीब एक जगह का नाम है जहाँ रसूले करीम (ﷺ) की हिज्रते मदीना से पाँच साल पहले औस और खज़रज कबीलों में सख्त लड़ाई हुई थी जिसमें उनके बहुत से नामी गिरामी लोग मारे गये क़ालक़स्तलानी फइन कुलत अस्सअयु रुक्नुम्मिन अकानिल्हज्जि व हुव तरीक़तु रसूलिल्लाहि (ﷺ) व सुन्नतुहू फकैफ़ क़ाल लैस बिमुन्नतिन कुलतु अल्मुरादु मिनस्सअयि हाहुना मअनाहू अल्लगवी यहाँ सई-ए-लुवी (कोशिश के रूप में) मुराद है, सई-ए-मस्नूना (हज्ज की एक सुन्नत) मुराद नहीं है।

3848. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअफ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुत्तरफ़ ने ख़बर दी, कहा मैंने अबुस्सफ़र से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा ऐलोगो! मेरी बातें सुनो कि मैं तुमसे बयान करता हूँ और (जो कुछ तुमने समझा है) वो मुझे सुनाओ। ऐसा न हो कि तुम लोग यहाँ से उठकर (बग़ैर समझे) चले जाओ और फिर कहने लगो कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने यूँ कहा और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने यूँ कहा जो शख़्स भी बैतुल्लाह का तवाफ़ करे तो वो हत्तीम के पीछे से तवाफ़ करे और हिज़र को हत्तीम न कहा करो ये जाहिलियत का नाम है उस वक़्त लोगों में जब कोई किसी बात की क़सम खाता तो अपना कोड़ा, जूता या कमान वहाँ फेंक देता।

٣٨٤٨ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ
الْجَفِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَيْمَرُ بْنُ مَطْرُفٍ
سَمِعْتُ أَبَا الشَّغَرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ ابْنَ
عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((بَا أَهْلَ
النَّاسِ، اسْمَعُوا مِنِّي مَا أَقُولُ لَكُمْ،
وَأَسْمَعُوا مِنِّي مَا تَقُولُونَ، وَلَا تَلْغَبُوا
فَقُولُوا: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ:
مَنْ طَافَ بِأَيْتِنَا فَلْيَطُفْ مِنْ وَرَائِهِ
الْحِجْرَ، وَلَا تَقُولُوا الْحَطِيمَ، فَإِنَّ الرَّجُلَ
فِي الْجَاهِلِيَّةِ كَانَ يَحْلِفُ فَيَقُولُ سَوَطَهُ أَوْ
نَعْلَهُ أَوْ قَوْسَهُ)).

इसलिये इसको हत्तीम कहते या'नी खा जाने वाला हज़म कर जाने वाला क्योंकि वो उनकी चीज़ों को हज़म कर जाता, वहाँ पड़े पड़े वो चीज़ें गल-सड़ जाती या कोई उनको उठा ले जाता। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने हत्तीम की उसी मुनासबत के पेशेनज़र उसे हत्तीम कहने से मना किया था लेकिन आम अहले इस्लाम बग़ैर किसी नकीर के इसे अब भी हत्तीम ही कहते चले आ रहे हैं और ये का'बा ही की ज़मीन है जिसे कुरैश ने सरमाया (माल) की कमी की वजह से छोड़ दिया था।

3849. हमसे नईम बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे हश़ीम ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि मैंने ज़मान-ए-जाहिलियत में एक बन्दरिया देखी उसके चारों तरफ़ बहुत से बन्दर जमा हो गये थे, उस बन्दरिया ने ज़िना कराया था इसलिये सभी ने मिलकर उसे रज़म किया और उनके साथ मैं भी पत्थर मारने में शरीक हुआ।

٣٨٤٩ - حَدَّثَنَا نَعِيمُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا
هَشِيمٌ عَنْ خُصَيْنٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ
قَالَ: ((رَأَيْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ قِرْدَةً اجْتَمَعَ
عَلَيْهَا قِرْدَةٌ. قَدْ زَنَتْ فَرَجَعُوهَا، فَرَجَعْتُهَا
مَعَهُمْ)).

तशरीह: पूरी रिवायत इस्माईल ने यूँ निकाली अम्र बिन मैमून कहते हैं कि मैं यमन में था अपने लोगों की बकरियों में एक ऊँची जगह पर मैंने देखा एक बन्दर बन्दरिया को लेकर आया और उसका हाथ अपने सर के नीचे रखकर सो गया

इतने में एक छोटा बन्दर आया और बन्दरिया को इशारा किया उसने आहिस्ता से अपना हाथ बन्दर के सर के नीचे से खींच लिया और छोटे बन्दर के साथ चली गई उसने उससे सुहबत की मैं देख रहा था फिर बन्दरिया लौटी और आहिस्ता से फिर अपना हाथ पहले बन्दर के सर के नीचे डालने लगी लेकिन वो जाग गया और एक चीख मारी तो सब बन्दर जमा हो गये। ये उस बन्दरिया की तरफ इशारा करता और चीखता जाता था। आखिर दूसरे बन्दर इधर उधर गये और उसे छोटे बन्दर को पकड़ लाए। मैं उसे पहचानता था फिर उन्होंने उनके लिये गड्ढा खोदा और दोनों को संगसार कर डाला तो मैंने ये रजम का अमल जानवरों में भी देखा।

3850. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जाहिलियत की आदतों में से ये आदतें हैं नसब के मामले में तज़ाना मारना और मध्यत पर नौहा करना, तीसरी आदत के बारे में (अबुल्लाह रावी) भूल गये थे और सुफयान ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि वो तीसरी बात सितारों को बारिश की इल्लत समझना है।

बाब 28 : नबी करीम (ﷺ) की बेअशत का बयान

आपका नाम मुबारक है मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दुल मुनाफ़ बिन कुसई बिन किलाब बिन मुरह बिन क़अब बिन लुवी बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मदरका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मअद बिन अदनान।

यहाँ तक आप (ﷺ) ने अपना नसब बयान फ़र्माया है, अदनान के बाद रिवायतों में इब्तिस्लाफ़ है हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने तारीख़ में आप (ﷺ) का नसब हज़रत इब्राहीम तक बयान फ़र्माया है।

3851. हमसे अहमद बिन अबी रज़ाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़र ने बयान किया, कहा उनसे हिशाम ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की चालीस साल की उम्र हुई तो आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हुई, उसके बाद आँ हज़रत (ﷺ) तेरह साल मक्का मुकर्रमा में रहे फिर आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) मदीना मुनव्वरा हिजरत करके चले गये, वहाँ दस साल रहे फिर आपने वफ़ात फ़र्माई (ﷺ) इस हिसाब से कुल उम्र शरीफ़ आपकी 63 साल होती है और ये सहीह है।

۳۸۵۰- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ هَاشِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ عَنْهُمَا قَالَ: ((حِلَالٌ مِنْ حِلَالِ الْجَاهِلِيَّةِ: الطُّغْيَانُ فِي الْأَنْسَابِ، وَالنَّهَاجَةُ - وَنَسَبُ الْفَائِئَةِ - قَالَ سُفْيَانُ: وَتَقْوُنْ إِنَّهَا الْإِسْتِغْنَاءُ بِالْأَنْوَاءِ)).

۲۸- بَابُ مَبَشَرَةِ النَّبِيِّ ﷺ

مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ هَاشِمٍ بْنِ عَبْدِ مَنَافٍ بْنِ قُصَيٍّ بْنِ كِلَابٍ بْنِ مُرَّةَ بْنِ كَعْبٍ بْنِ لُؤَيٍّ بْنِ غَالِبٍ بْنِ فِهْرِ بْنِ مَالِكٍ بْنِ النَّضْرِ بْنِ كِسَاةَ بْنِ حَزْزَمَةَ بْنِ مَدْرِكَةَ بْنِ الْيَاسِ بْنِ مَضَرَ بْنِ إِزَارٍ بْنِ مَعَدٍ بْنِ عَدْنَانَ.

۳۸۵۱- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلَاثَ عَشْرَةَ سَنَةً، ثُمَّ أَمَرَ بِالْهِجْرَةِ، فَهَاجَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَكَثَ بِهَا عَشْرَ سِنِينَ، ثُمَّ تَوَفَّى ﷺ)).

(दीगर मक़ाम : 3901, 3903, 4465, 4975)

أطرافه في: ٣٩٠١، ٣٩٠٣، ٤٤٦٥

[٤٩٧٠]

बाब 29 : नबी करीम (ﷺ) और सहाबा किराम (रज़ि.) ने मक्का में मुशिकीन के हाथों जिन मुशिकलात का सामना किया उनका बयान

3852. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे बयान बिन बिशर और इस्माईल बिन अबू ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमने क़ैस बिन अबी हाज़िम से सुना वो बयान करते थे कि मैंने ख़व्बाब बिन अरत से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) का बा के साये तले तकलीफ़ें उठा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला से आप (ﷺ) दुआ क्यों नहीं करते? इस पर आप (ﷺ) सीधे बैठ गये। चेहर-ए-मुबारक गुस्से से लाल हो गया और फ़र्माया तुमसे पहले ऐसे लोग गुज़र चुके हैं कि लोहे के कैंचों को उनके गोश्त और पढ़ों से गुज़ारकर उनकी हड्डियों तक पहुँचा दिया गया और ये मामला भी उन्हें उनके दीन से न फेर सका, किसी के सर पर आरा रखकर उसके दो टुकड़े कर दिये गये और ये भी उन्हें उनके दीन से न फेर सका। इस दीन इस्लाम को तो अल्लाह तआला ख़ुद ही एक दिन तमाम व क़माल तक पहुँचाएगा कि एक सवार सन्नाहा से हज़रे मौत तक (तंहा) जाएगा और (रास्ते में) उसे अल्लाह के सिवा और किसी का डर न होगा। बयान ने अपनी रिवायत में ये ज़्यादा किया कि, सिवाय भेड़िये के कि उससे अपनी बकरियों के मामले में उसे डर होगा। (राजेज़ : 3612)

हज़रे मौत शिमाली (उत्तर) में एक मुल्क है उसमें और सन्नाहा (यमन) में पन्द्रह दिन पैदल चलने वालों का रास्ता है। इससे आम अमन-चैन मुराद है जो बाद में सारे मुल्के अरब में इस्लाम के ग़लबे के बाद हुआ और आज सज़्दी अरब के दौर में ये अमन सारे मुल्क में हासिल है अल्लाह पाक इस हुक्मत को कायम दायम रखे। आमीन।

3853. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसज़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरह नज़्म पढ़ी और सज़्दा किया उस वक़्त आप (ﷺ) के साथ तमाम

٢٩- بَابُ مَا لَقِيَ النَّبِيُّ ﷺ

وَأَصْحَابُهُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ بِمَكَّةَ

٣٨٥٢- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: سَمِعْنَا قَيْسًا

يَقُولُ: سَمِعْتُ خُبَابًا يَقُولُ: ((أَتَيْتُ النَّبِيَّ

ﷺ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً وَهُوَ فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ

- وَلَقَدْ لَقِينَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ شِدَّةً -

فَقُلْتُ: أَلَا تَدْعُو اللَّهَ. فَقَعَدَ وَهُوَ مُخْمَرٌ

وَجْهَهُ فَقَالَ: ((لَقَدْ كَانَ مِنْ قَبْلِكُمْ

لَيْمَشَطٌ بِمِشَاطِ الْخَدِيدِ، مَا دُونَ عِظَامِهِ

مِنْ لَحْمٍ أَوْ غَضَبٍ، مَا يَصْرِفُهُ ذَلِكَ عَنْ

دِينِهِ، وَيُوضَعُ الْمِشْطَارُ عَلَى مَفْرَقِ رَأْسِهِ

لِيُشَقَّ بِأَثْنَيْنِ، مَا يَصْرِفُهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ.

وَلَيَمْنُنَ اللَّهُ هَذَا الْأَمْرَ حَتَّى يَسِيرَ

الرَّوَاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ إِلَى خَضِرَ مَوْتَ مَا

يَخَافُ إِلَّا اللَّهَ)). زَادَ يَزِيدُ ((وَالذَّئِبُ

عَلَى غَنَمِهِ)).

[راجع: ٣٦١٢]

٣٨٥٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا

شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ وَحُصَيْنٍ: أَنَّ اللَّهَ عَنْهُ قَالَ: ((قَرَأَ النَّبِيُّ

लोगों ने सज्दा किया सिर्फ एक शख्स को मैंने देखा कि अपने हाथ में उसने कंकरियाँ उठाकर उस पर अपना सर रख दिया और कहने लगा कि मेरे लिये बस इतना ही काफी है। मैंने फिर उसे देखा कि कुफ़्र की हालत में वो क़त्ल किया गया। (राजेअ: 1067)

لَقَدْ رَأَيْتُهُ بَعْدَ قِيلٍ كَالْهَرَاءِ. [راجع: ١٠٦٧]

तशरीह: ये शख्स उमय्या बिन खलफ़ था। इस हदीस की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से मुश्किल है, कुछ ने कहा जब उमय्या बिन खलफ़ ने सज्दा तक़न किया तो मुसलमानों को रंज गुजरा गोया उनको तकलीफ़ दी यही बाब का तर्जुमा है कुछ ने कहा मुसलमानों को तकलीफ़ यूँ हुई कि मुश्किनी के भी सज्दे में शरीक होने से वो ये समझे कि ये मुश्कि मुसलमान हो गये हैं और जो मुसलमान उनकी तकलीफ़ देने से हब्श की निर्यत से निकल चुके थे वो आपस लौट आए। बाद में मा'लूम हुआ कि वो मुसलमान नहीं हुए हैं तो दोबारा वो मुसलमान हब्श की हिजरत के लिये निकल गये।

3854. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अमर बिन मैमून ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (नमाज़ पढ़ते हुए) सज्दे की हालत में थे, कुरैश के कुछ लोग वहाँ इर्द गिर्द मौजूद थे इतने में इब्नबा बिन अबी मुईत कैंट की ओझड़ी बच्चादानी लाया और हुज़ुरे अकरम (ﷺ) की पीठ मुबारक पर उसे डाल दिया। उसकी वजह से आप (ﷺ) ने अपना सर नहीं उठाया फिर फ़ातिमा (रज़ि.) आई और गंदगी को पीठ मुबारक से हटाया और जिसने ऐसा किया था उसे बद दुआ दी। हुज़ुर (ﷺ) ने भी उनके हक़ में बद दुआ की कि ऐ अल्लाह! कुरैश की उस जमाअत को पकड़ ले। अबू जहल बिन हिशाम, इब्ना बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ और उमय्या बिन खलफ़ या (उमय्या के बजाय आपने बद दुआ) उबय बिन खलफ़ (के हक़ में फ़र्माई) शुब्हा हदीस के रावी शुअबा को था। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैंने देखा कि बद्र की लड़ाई में ये सब लोग क़त्ल कर दिये गये और एक कुँए में उन्हें डाल दिया गया था सिवा उमय्या या उबय के कि उसका हर एक जोड़ अलग हो गया था इसलिये कुँए में नहीं डाला जा सका। (राजेअ: 240)

٣٨٥٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ سَاجِدٌ وَخَوْلَةُ لَاسٍ مِنْ قُرَيْشٍ جَاءَ غَفْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ بَسَلَى جَزُورٍ فَقَذَفَهُ عَلَى ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يَرْفَعْ رَأْسَهُ، فَجَاءَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَامُ فَأَخَذَتْهُ مِنْ ظَهْرِهِ وَدَعَتْ عَلَى مَنْ صَنَعَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ عَلَيكَ الْبَلَاءُ مِنْ قُرَيْشٍ: أَمَا جَهْلِي بْنُ هِشَامٍ وَغَبْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَشَيْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَأُمَيَّةُ بْنُ خَلْفٍ - أَوْ أُمَيَّةُ بْنُ خَلْفٍ)), شُعْبَةُ الشَّامِ - قَرَأْتُهُمْ قَبْلَ أَنْ يَوْمَ بَدْرٍ، فَأَلْقَوْا فِي بَيْتٍ غَيْرِ أُمَيَّةٍ أَوْ أُمَيَّةٍ تَقَطَّعَتْ أَوْصَالُهُ فَلَمْ يَلْقَ فِي الْبَيْتِ)). [راجع: ٢٤٠]

जंगे बद्र में तमाम कुफ़्रार हलाक हो गये और जो कुछ उन्होंने किया उसकी सज़ा पाई।

3855. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरिर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, कहा मुझसे सईद बिन जुबैर

٣٨٥٥ - حَدَّثَنِي غُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ

ने बयान किया था (मंसूर ने) इस तरह बयान किया कि मुझसे हकम ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मुझसे अब्दुर्रहमान बिन अब्बा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से उन दोनों आयतों के बारे में पूछा कि उनमें मुताबकत किस तरह पैदा की जाए। एक आयत, वला तक्तुलुन नफ्सल् लती हरमल्लाहु और दूसरी आयत, व मय्यक्तुलु मोमिना मुतअम्मिदन् है इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मैंने पूछा तो उन्होंने बतलाया कि जब सूरह फुर्कान की आयत नाज़िल हुई तो मुश्रीकीने मक्का ने कहा हमने तो उन जानों का भी खून किया है जिनके क़त्ल को अल्लाह तआला ने हाराम करार दिया था हम अल्लाह के सिवा दूसरे मा'बूदों की इबादत भी करते रहे हैं और बदकारियों का भी हमने इतिहास किया है। इस पर अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फ़र्माई कि इस्लाम मन ताबा व आम-न (वो लोग इस हुक्म से अलग हैं जो तौबा कर लें और ईमान लाएँ) तो ये आयत उनके हक़ में नहीं है लेकिन सूरह निसा की आयत उस शख्स के बाब में है जो इस्लाम और इस्लाम की निशानियों के हुक्मों को जानकर भी किसी को क़त्ल करे तो उसकी सज़ा जहन्नम है। मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के उस इशारा का ज़िक्र मुजाहिद से किया तो उन्होंने ने कहा कि वो लोग इस हुक्म से अलग हैं जो तौबा कर लें।

(दीगर मक़ाम : 4590, 4762, 4763, 4764, 4765, 4766)

جَبْرِ - أَوْ قَالَ: حَدَّثَنِي الْحَكَمُ عَنْ
سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ - قَالَ: ((أَمَرَنِي عَبْدُ
الرَّحْمَنِ بْنُ أَنَسٍ قَالَ: سَلَ ابْنُ عَبَّاسٍ
عَنْ هَاتَيْنِ الْآيَتَيْنِ مَا أَمْرُهُمَا؟ [الأنعام:
١٥١، الإسراء: ٣٣]: «وَلَا تَقْتُلُوا
النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ»، [النساء: ٩٣]:
«وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا» فَسَأَلْتُ ابْنَ
عَبَّاسٍ، فَقَالَ: لَمَّا أُنْزِلَتْ الْآيَةُ فِي
الْفُرْقَانِ [٦٨] قَالَ مُشْرِكُو أَهْلِ مَكَّةَ:
لَقَدْ قَتَلْنَا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ، وَدَعَوْنَا
مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ، وَقَدْ آتَيْنَا الْفَوَاحِشَ،
فَأَنْزَلَ اللَّهُ: «إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ» [وَالْفُرْقَان:
٧٠] الْآيَةَ، فَهَذِهِ لِأَوَّلِكَ، وَأَمَّا
الَّتِي فِي النَّسَاءِ [٩٣] الرَّجُلُ إِذَا عَرَفَ
الْإِسْلَامَ وَشَرَايِعَهُ ثُمَّ قَتَلَ فُجْرًاؤَهُ جَهَنَّمَ،
فَذَكَرْتُهُ لِمُجَاهِدٍ فَقَالَ: (إِلَّا مَنْ تَابَ)).

[أطرافه في: ٤٥٩٠، ٤٧٦٢، ٤٧٦٣]

[٤٧٦٦، ٤٧٦٥، ٤٧٦٤]

तशरीह: सूरह फुर्कान की आयत से ये निकलता है कि जो कोई खून करे लेकिन फिर तौबा करे और नेक आमाल बजा लाए तो अल्लाह उसकी तौबा कुबूल करेगा और सूरह निसा की आयत में ये है कि जो कोई जान-बूझकर किसी मुसलमान को क़त्ल करे तो उसको ज़रूर सज़ा मिलेगी हमेशा दो ज़ख्म में रहेगा अल्लाह का ग़ज़ब और गुस्सा उस पर नाज़िल होगा। इस सूरात में दोनों आयतों के मज़मून में तख़ालुफ़ (टकराव) हुआ तो अब्दुर्रहमान बिन अब्बा (रज़ि.) ने यही अमर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मा'लूम कराया जो यहाँ मज़कूर है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का मतलब ये था कि सूरह फुर्कान की आयत उन लोगों के बारे में है जो कुफ़्र की हालत में नाहक़ खून करें फिर तौबा करें और मुसलमान हो जाएँ तो इस्लाम की वजह से कुफ़्र के नाहक़ खून का उनसे मुवाख़ज़ा न होगा और सूरह निसा की आयत उस शख्स के हक़ में है जो मुसलमान होकर दूसरे मुसलमान को जान-बूझकर नाहक़ मार डाले ऐसे शख्स की सज़ा जहन्नम है उसकी तौबा कुबूल न होगी तो दोनों आयतों में कुछ तख़ालुफ़ न हुआ और हदीष की मुताबकत बाब के तर्जुमे से यँ है कि उससे ये निकलता है कि मुश्रीकों ने मुसलमानों को नाहक़ मारा था, उनको सताया था।

3856. हमसे अयाश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा मुझसे औज़ाई ने बयान

٣٨٥٦- حَدَّثَنَا عِيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ بْنُ
مُسْلِمٍ حَدَّثَنِي الْأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ

किया, उनसे यह्या बिन अबी कबीर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी ने बयान किया कि मुझसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि.) से पूछा मुझे मुशिकीन के सबसे सख्त जुल्म के बारे में बताओ जो मुशिकीन ने नबी करीम (ﷺ) के साथ किया था। उन्होंने ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) हत्ती में नमाज़ पढ़ रहे थे कि इब्बा बिन मुईत आया और ज़ालिम अपना कपड़ा हज़ूरे अकरम (ﷺ) की गर्दन में मुबारक में फंसाकर ज़ोर से आप (ﷺ) का गला घोटने लगा इतने में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आ गये और उन्होंने उस बदख़्त का कंधा पकड़कर आँहज़रत (ﷺ) के पास से हटा दिया और कहा क्या तुम लोग एक शख्स को सिर्फ़ इसलिये मार डालना चाहते हो कि वो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है अल आयति अयाश बिन वलीद के साथ इस रिवायत की मुताबअत इब्ने इस्हाक़ ने की (और बयान किया कि) मुझसे यह्या बिन इर्वा ने बयान किया और उनसे इर्वा ने कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) से पूछा और अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने कि हज़रत अमर बिन आस (रज़ि.) से कहा गया और मुहम्मद बिन अमर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने, उसमें यूँ है कि मुझसे हज़रत अमर बिन आस (रज़ि.) ने बयान किया। (राजेअ: 3678)

أَبِي كَبِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي غُرُورَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ قَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عُمَرَ بْنَ الْغَاصِيِّ قُلْتُ: أَخْبِرْنِي بِأَشَدِّ شَيْءٍ صَنَعَهُ الْمُشْرِكُونَ بِالنَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: بَنَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي لِي حِينَئِذٍ الْكَفَّةِ، إِذْ الْبَلَّ غَفْبَةً بَنِي أَبِي مُعَيْطٍ فَوَضَعَ قُوَّةً لِي حَتَّى لَمَعَتْهُ عَيْنَا شَدِيدًا، فَأَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى أَخَذَ بِمَنْكَبِي وَدَفَعَهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: «أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّي اللَّهُ» (الآية [غافر: 28]). تَابَعَهُ ابْنُ إِسْحَاقَ. حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ غُرُورَةَ عَنْ غُرُورَةَ: قُلْتُ لِعُمَرَ بْنِ الْغَاصِيِّ: وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ: قِيلَ لِعُمَرَ بْنِ الْغَاصِيِّ: وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ الْغَاصِيِّ.

[راجع: 3678]

क़ौले मुहम्मद बिन अमर को हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने ख़ल्के अफ़आलुल इबाद में वस्ल किया है। हाफ़िज़ ने कहा एक रिवायत में यूँ है कि मुशिकीन ने आँहज़रत (ﷺ) को ऐसा मारा कि आप बेहोश हो गये तब हज़रत अबूबक्र खड़े हुए और कहने लगे क्या तुम ऐसे शख्स को मारे डालते हो जो कहता है कि मेरा रब सिर्फ़ अल्लाह है।

۳۰- بَابُ إِسْلَامِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ बाब 30 : हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के इस्लाम कुबूल करने का बयान

तशीह: आपका नाम अब्दुल्लाह (रज़ि.) है। इम्रान अबू क़हाफ़ा के बेटे हैं। सातवीं पुस्त पर उनका नसब रसूले करीम (ﷺ) से मिल जाता है। आपको अतीक़ से भी मौसूम किया गया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ये दो ज़ख की आग से क़तई तौर पर आज़ाद हो चुके हैं। आँहज़रत (ﷺ) के साथ हर ग़ज़्वे में हर मौक़े पर शरीक रहे। आप (रज़ि.) आख़िर उ़ग्र में मेहन्दी का ख़िज़ाब लगाया करते थे।

3857. मुझसे अब्दुल्लाह बिन हम्माद आमली ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन मुईन ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन मुजालिद ने बयान किया, उनसे बयान ने, उनसे

۳۸۵۷- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حَمَّادٍ الْأَمَلِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُجَالِدٍ عَنْ يَحْيَى عَنْ وَبَرَةَ

वबरहने और उनसे हम्माम बिन हारिष ने बयान किया कि अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) ने कहा मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस हालत में भी देखा है जब आँहज़रत (ﷺ) के साथ पाँच गुलाम, दो औरतों और अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) के सिवा और कोई (मुसलमान) नहीं था। (राजेअ: 3660)

عَنْ هَمَامِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: قَالَ عَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَمَا مَعَهُ إِلَّا خَمْسَةٌ أَحَبُّ وَأَمْرَأَتَانِ وَأَبُو بَكْرٍ.

[راجع: 3660]

तशरीह:

हज़रत अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) वाकिया अस्हाबुल फ़ौल से दो साल पहले मक्का में पैदा हुए और जमादिल आखिर 13 हिजरी में 63 साल की उम्र में इतिकाल फ़र्माया। मुदते ख़िलाफ़त दो साल चार माह है। पाँच गुलाम हज़रत बिलाल, हज़रत ज़ैद, हज़रत आमिर और अबू फ़कीहा और इब्बैद थे और दो औरतें हज़रत ख़दीजा और हज़रत उम्मे ऐमन या सुमय्या (रज़ि.)। हज़रत अबूबक्र को सिदीक इसलिये कहा गया कि उन्होंने जाहिलियत के ज़माने में भी न कभी झूठ बोला न कभी बुतपरस्ती की। फ़ाज़ी अबुल हुसैन ने अपनी सनद से रिवायत किया है कि उनके बाप अबू क़हफ़ा एक रोज़ उनको बुतख़ाने (मन्दिर) में ले गये और कहने लगे कि बुत को सज़्दा कर लो। वो कहकर चले गये। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं एक बुत के पास गया और उससे मैंने कहा कि मैं भूखा हूँ मुझको खाना दें। उसने कुछ जवाब न दिया। फिर मैंने कहा कि मैं नंगा हूँ, मुझको कपड़ा पहना दे। उस बुत ने फिर भी कुछ जवाब न दिया। आखिर मैंने एक पत्थर उठाया और कहा कि अगर तू खुदा है तो अपने आपको मेरे हाथ से बचा। ये कहकर मैंने वो पत्थर उस पर मारा और मैं वहीं सो गया। इतने में मेरे बाप आ गए और कहने लगे बेटा ये क्या करते हो? मैंने कहा जो कुछ देख रहे हो। वो मुझको मेरी वालिदा के पास लाए और उनसे सारा हाल बयान किया। उन्होंने कहा कि मेरे बेटे से कुछ मत बोल अल्लाह तआला ने उसकी वजह से मुझसे बात की जब ये पेट में था और मुझको दर्द होने लगा तो मैंने एक हातिफ़ से सुना कि ऐ अल्लाह की बन्दी खुश हो जा। तुझको एक आज़ाद लड़का मिलेगा जिसका नाम आसमान में सिदीक है वो हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का साहिब और रफ़ीक़ होगा।

बाब 31 : हज़रत सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) के इस्लाम कुबूल करने का बयान

۳۱- بَابُ إِسْلَامِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

तशरीह:

हज़रत सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) की कुत्रियत अबू इस्हाक़ है। वालिद अबू वक्रास का नाम मालिक बिन वुहैब है, अशर-ए-मुबशशरा में से हैं। सत्रह साल की उम्र में इस्लाम कुबूल किया। तमाम ग़ज़वात में आँहज़रत (ﷺ) के साथ रहे। बड़े ही मुस्तज़ाबुद्दवात थे। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मक्सद के लिये उनके हक़ में ख़ास दुआ फ़र्माई थी। तीरंदाज़ी में बड़े ही माहिर थे। मुकामे अतीक़ में जो मदीना से करीब था अपने घर में वफ़ात पाई। जनाज़े को लोग काँधों पर रखकर मदीना तय्यिबा लाए और नमाज़े जनाज़ा मरवान बिन हक़म ने पढ़ाई जो उन दिनों मदीना के हाकिम थे। बक़ीअ-गरक़द में दफ़न हुए, वफ़ात का साल 55 हिजरी है रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु आमीन।

3858. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्नाहीम मरवज़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू उसामा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम ने बयान किया, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, कहा कि मैंने अबू इस्हाक़ सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जिस दिन मैं इस्लाम लाया हूँ दूसरे लोग भी उसी दिन इस्लाम लाए और इस्लाम में दाख़िल होने वाले तीसरे आदमी को हैषियत से मुझ

۳۸۵۸- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا أَبُو اسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَاشِمٌ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ: «رَمَّا اسْتَلِمَ أَحَدٌ إِلَّا فِي الْيَوْمِ الَّذِي اسْتَلِمْتُ فِيهِ، وَلَقَدْ مَكُنْتُ سَبْعَةَ أَيَّامٍ وَإِنِّي لَكُنْتُ

पर सात दिन गुजरे। (राजेअ : 3726)

[الإسلام] (راجع: 3726)

सअदने ये अपने इल्म की रू से कहा वरना उनसे पहले हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत खदीजा और अबूबक्र और जैद (रज़ि.) इस्लाम ला चुके थे और शायद ये लोग सब एक ही दिन इस्लाम लाए हों ये शुरू दिन में और सअद आखिर दिन में। रज़ियल्लाह अन्हुम अज्मईन।

बाब 32 : जिन्नों का बयान

और अल्लाह ने सूरह जिन्न में फ़र्माया, ऐनबी! आप कह दीजिए मेरी तरफ़ वह्य की गई है कि जिन्नों की एक जमाअत ने कुआन को कान लगाकर सुना।

लफ़्ज़े जिन्न फ़लम्मा जन्मा अलैहिल लैलि से मुस्तक़ है या'नी रात ने जब उन पर अंधेरी फैलाई। जिन्न एक आग से बनी मख़लूक है जो भौतिक आँखों से छुपी हुई है। उसमें नेक और बद हर किस्म के होते हैं। इंसानों को ये नज़र नहीं आते। इसीलिये लफ़्ज़े जिन्न से मौसूम हुए। कुआन मजीद में सूरह जिन्न उसी क़ौम के नेक जिन्नों से मुता'ल्लिक है जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की जुबाने मुबारक से कुआन शरीफ़ सुना और इस्लाम कुबूल कर लिया था। जिन्नात इंसानी शक़ल में भी ज़ाहिर हो सकते हैं।

3859. मुझसे अब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे मिस्र ने बयान किया, उनसे मअन बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने मसरूक़ से पूछा कि जिस रात में जिन्नों ने कुआन मजीद सुना था उसकी ख़बर नबी करीम (ﷺ) को किसने दी थी? मसरूक़ ने कहा कि मुझसे तुम्हारे वालिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) को जिन्नों की ख़बर एक बबूल के पेड़ ने दी थी।

32- باب ذكر الجن

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿قُلْ أَوْحَىٰ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ﴾

3859- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ حَدَّثَنَا مَسْرُودٌ عَنْ مَعْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: ((سَأَلْتُ مَسْرُودًا: مَنْ أَدْنَى النَّبِيِّ ﷺ بِالْجِنِّ لَلَّهَ اسْتَمَعُوا الْقُرْآنَ؟ فَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبُوكَ - يَعْنِي عَبْدَ اللَّهِ - أَنَّهُ أَدَلَّتْ بِهِمْ شَجَرَةٌ)).

3860- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا غَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّهُ كَانَ يَحْمِلُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِدَاوَةً يَوْضُولِهِ وَحَاجِيهِ. فَبَيْنَمَا هُوَ يَتَبَعُ بِهَا فَقَالَ: ((مَنْ هَذَا؟)) فَقَالَ: أَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ. قَالَ: ((أَتَيْتِي أَخْبَارًا اسْتَفِضُّ بِهَا، وَلَا تَأْتِينِي بِعَظْمٍ وَلَا بِرَوْتَةٍ)). فَاتَيْنَهُ بِأَخْبَارٍ أَحْمِلُهَا إِلَى طَرَفِ قُبُورِي حَتَّى وَضَعْتُهَا إِلَى جَنْبِهِ، ثُمَّ انْصَرَفْتُ، حَتَّى إِذَا فَرَغَ

3860. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अमर बिन यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे दादा ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के वज़ू और क़ज़ाए हाजत के लिये (पानी का) एक बर्तन लिये हुए आप (ﷺ) के पीछे पीछे चल रहे थे कि हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ये कौन साहब हैं? बताया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस्तिंजे के लिये चन्द पत्थर तलाश कर ला और हों हट्टी और लीदन लाना। फिर मैं पत्थर लेकर हाज़िर हुआ। मैं उन्हें अपने कपड़े में रखे हुए था और लाकर आप (ﷺ) के करीब उसे रख दिया और वहाँ से वापस चला आया। आप (ﷺ) जब क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग हो गये तो मैं फिर आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हट्टी और

गोबर में क्या बात है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसलिये कि वो जिन्नों की ख़ुराक हैं। मेरे पास नज़ीबीन के जिन्नों का एक वफ़्द आया था और क्या ही अच्छे वो जिन्न थे। तो उन्होंने मुझसे तौशा (खाना) मांगा मैंने उनके लिये अल्लाह से ये दुआ की कि जब भी हड्डी या गोबर पर उनकी नज़र पड़े तो उनके लिये उस चीज़ से खाना मिले। (राजेअ: 155)

مَشَيْتُ مَعَهُ فَقُلْتُ: مَا بَالُ الْعَظْمِ وَالرُّوْتَةِ؟ قَالَ: ((هَمَّا مِنْ طَعَامِ الْجِنِّ، وَإِنَّهُ آتَانِي وَقَدْ جِنٌّ تَصْنِيئِينَ - وَنَعْمَ الْجِنُّ - فَسَأَلُونِي الرُّادَ، فَذَعَوْتُ اللَّهُ لَهُمْ أَنْ لَا يَمُرُّوا بِعَظْمٍ وَلَا بِرُوْتَةٍ إِلَّا وَجَدُوا عَلَيْهَا طَعْمًا)). [راجع: ١٥٥]

तशरीह: या'नी बकुदरते इलाही हड्डी और गोबर पर उनकी और उनके जानवरों की ख़ुराक पैदा हो जाए। कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) के पास जिन्नात कई बार हाज़िर हुए। एक बार बतने नख़ला में जहाँ आप कुआन पढ़ रहे थे। ये सात जिन्न थे, दूसरी बार हिज़ून में, तीसरी बार बक़ीअ में। उन रातों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) आपके साथ थे। आपने ज़मीन पर उनके बैठने के लिये लकीर खींच दी थी। चौथी बार मदीना के बाहर उसमें जुबैर बिन अब्बास (रज़ि.) मौजूद थे। पाँचवीं बार एक सफ़र में जिसमें बिलाल बिन हारिष आप (ﷺ) के साथ थे। जिन्नों का वजूद कुआन व हदीज़ से प्राबित है जो लोग जिन्नात का इंकार करते हैं वो मुसलमान कहलाने के बावजूद कुआन व हदीज़ का इंकार करते हैं। ऐसे लोगों को अपने ईमान की ख़ैर मनानी चाहिये।

बाब 33 : हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) के इस्लाम कुबूल करने का वाक़िया

3861. मुझसे अमर बिन आस ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरहमान बिन महदी ने, कहा हमसे मुषन्ना ने, उनसे अबू जमर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अबू ज़र (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) की नुबुव्वत के बारे में मा'लूम हुआ तो उन्होंने अपने भाई अनीस से कहा कि मक्का जाने के लिये सवारी तैयार कर और उस शाख़्स के बारे में जो नबी होने का मुद्दई है और कहता है कि उसके पास आसमान से ख़बर आती है, मेरे लिये ख़बरें हासिल करके ला। उसकी बातों को ख़ुदशोर से सुनना और फिर मेरे पास आना। उनके भाई वहाँ से चले और मक्का हाज़िर होकर आँहज़रत (ﷺ) की बातें ख़ुद सुनीं फिर वापस होकर उन्होंने अबू ज़र (रज़ि.) को बताया कि मैंने उन्हें ख़ुद देखा है, वो अच्छे अख़लाक़ का लोगों को हुक्म देते हैं और मैंने उनसे जो कलाम सुना वो शे'र नहीं है। इस पर अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा जिस मक्क़सद के लिये मैंने तुम्हें भेजा था मुझे उस पर पूरी तरह तशक्क़ी नहीं हुई, आख़िर उन्होंने ख़ुद तौशा बाँधा, पानी से भरा हुआ एक पुराना मशकीज़ा साथ लिया और मक्का आए, मस्जिदे हाराम में हाज़िरी

٣٣- بَابُ إِسْلَامِ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

٣٨٦١- حَدَّثَنِي عُمَرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى عَنْ أَبِي جُمُرَةَ عَنْ أَبِي عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا بَلَغَ أَبَا ذَرٍّ مَبْعَثُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِأَخِيهِ: ارْكَبْ إِلَى هَذَا الْوَادِي فَاعْلَمْ لِي عِلْمَ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ يَأْتِيهِ الْخَبَرُ مِنَ السَّمَاءِ، وَاسْمَعْ مِنْ قَوْلِهِ ثُمَّ آتِنِي. فَانْطَلَقَ الْأَخُ حَتَّى قَدِمَهُ وَاسْمَعَ مِنْ قَوْلِهِ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَبِي ذَرٍّ فَقَالَ لَهُ: رَأَيْتَهُ يَأْمُرُ بِمَكَارِمِ الْأَخْلَاقِ، وَكَلَامًا مَا هُوَ بِالشَّعْرِ. فَقَالَ: مَا شَفِيتَنِي مِنْهَا أَرَدْتُ. فَتَرَوَدُ وَحَمَلَتْ شاةٌ لَهُ فِيهَا مَاءٌ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ،

दी और यहाँ नबी करीम (ﷺ) को तलाश किया। अबू ज़र (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) को पहचानते नहीं थे और किसी से आप (ﷺ) के बारे में पूछना भी मुनासिब नहीं समझा, कुछ रात गुज़र गई कि वो लेटे हुए थे। हज़रत अली (रज़ि.) ने उनको इस हालत में देखा और समझ गये कि कोई मुसाफिर है, अली (रज़ि.) ने उनसे कहा कि आप मेरे घर पर चलकर आराम कीजिए। अबू ज़र (रज़ि.) उनके पीछे पीछे चले गये लेकिन किसी ने एक-दूसरे के बारे में बात नहीं की। जब सुबह हुई तो अबू ज़र (रज़ि.) ने अपना मशकीज़ा और तौशा उठाया और मस्जिदुल हुराम में आ गये। ये दिन भी यूँ ही गुज़र गया और वो नबी करीम (ﷺ) को न देख सके। शाम हुई तो सोने की तैयारी करने लगे। अली (रज़ि.) फिर वहाँ से गुज़रे और समझ गये कि अभी अपने ठिकाने जाने का वक़्त उस शख्स पर नहीं आया, वो उन्हें वहाँ से फिर अपने साथ ले आए और आज भी किसी ने एक-दूसरे से बातचीत नहीं की, तीसरा दिन जब हुआ और अली (रज़ि.) ने उनके साथ यही काम किया और अपने साथ ले गये तो उनसे पूछा क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यहाँ आने का बाज़िअ क्या है? अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम मुझसे पुख्ता वा'दा कर लो कि मेरी रहनुमाई करोगे तो मैं तुमको सब कुछ बता दूँगा। अली (रज़ि.) ने वा'दा कर लिया तो उन्होंने उन्हें अपने ख़यालात की ख़बर दी। अली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि बिला शुब्हा वो हक़ पर हैं और अल्लाह के सच्चे रसूल (रज़ि.) हैं अच्छा सुबह को तुम मेरे पीछे पीछे मेरे साथ चलना। अगर मैं (रास्ते में) कोई ऐसी बात देखूँ जिससे मुझे तुम्हारे बारे में कोई ख़तरा हो तो मैं खड़ा हो जाऊँगा। (किसी दीवार के करीब) गोया मुझे पेशाब करना है, उस वक़्त तुम मेरा इंतज़ार न करना और जब मैं फिर चलने लगूँ तो मेरे पीछे आ जाना ताकि कोई समझ न सके कि ये दोनों साथ हैं और इस तरह जिस घर में, मैं दाख़िल होऊँ, तुम भी दाख़िल हो जाना। उन्होंने ऐसा ही किया और पीछे-पीछे चले यहाँ तक कि अली (रज़ि.) के साथ वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँच गये, आपकी बातें सुनीं और वहीं इस्लाम ले आए। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया अब अपनी क़ौम शिफ़ार में वापस जाओ और उन्हें मेरा हाल बताओ यहाँ तक कि जब हमारे ग़लबा का इल्म तुमको हो जाए (तो फिर हमारे पास आ जाना) अबू ज़र (रज़ि.)

فَأَتَى الْمَسْجِدَ. فَاتَّصَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا يَعْرِفُهُ، وَكَرِهَ أَنْ يَسْأَلَ عَنْهُ، حَتَّى أَذْرَكَهُ بَعْضُ اللَّيْلِ اضْطَجَعَ فَرَأَاهُ عَلَى، فَعَرَفَ أَنَّهُ غَرِيبٌ، فَلَمَّا رَأَاهُ نَبِيَّهُ، فَلَمْ يَسْأَلْ وَاحِدًا مِنْهُمَا صَاحِبَةً عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أَصْبَحَ، ثُمَّ احْتَمَلَ قُرْبَتَهُ وَزَادَهُ إِلَى الْمَسْجِدِ، وَظَلَّ ذَلِكَ الْيَوْمَ، وَلَا يَرَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَمْسَى فَعَادَ إِلَى مَضْجِعِهِ، فَمَرَّ بِهِ عَلَى فَقَالَ: أَمَا نَالِ لِلرَّجُلِ أَنْ يَعْلَمَ مَنْزِلَهُ؟ فَأَقَامَهُ، فَذَهَبَ بِهِ مَعَهُ، لَا يَسْأَلُ وَاحِدًا مِنْهُمَا صَاحِبَةً عَنْ شَيْءٍ، حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمَ الثَّلَاثِ فَعَادَ عَلَى مِثْلِ ذَلِكَ، فَأَقَامَ مَعَهُ ثُمَّ قَالَ: أَلَا تُحَدِّثُنِي مَا الَّذِي أَقْدَمَكَ؟ قَالَ: إِنْ أَغْطَيْتَنِي عَهْدًا وَمِثَاقًا لَتُرْسِدَنِي فَقُلْتُ: فَفَعَلَ، فَأَخْبَرَهُ، قَالَ: فَإِنَّهُ حَقٌّ، وَهُوَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا أَصْبَحْتُ فَاتَّبَعْنِي، فَإِنِّي إِنْ رَأَيْتُ شَيْئًا أَخَافُ عَلَيْكَ قُمْتُ كَأَنِّي أَرِيقُ الْمَاءَ، فَإِنْ مَضَيْتُ فَاتَّبَعْنِي حَتَّى تَدْخُلَ مَدْخَلِي، فَفَعَلَ، فَانْطَلَقَ يَقْفُوهُ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَدَخَلَ مَعَهُ فَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ وَأَسْلَمَ مَكَانَهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ارْجِعْ إِلَى قَوْمِكَ فَأَخْبِرْهُمْ حَتَّى يَأْتِيكَ أَمْرِي)). قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَأُضْرَحَنَّ بِهَا بَيْنَ ظَهْرَانِيهِمْ. فَخَرَجَ

ने अर्ज किया उस ज्ञात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं उन कुरैशियों के मज्मअ में पुकारकर कलिम-ए-तौहीद का ऐलान करूँगा। चुनौचे और हज़रत (ﷺ) के यहाँ से वापस वो मस्जिदे हुराम में आए और बुलन्द आवाज़ से कहा कि, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये कि मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। ये सुनते ही सारा मज्मअ टूट पड़ा और इतना मारा कि ज़मीन पर लिटा दिया। इतने में अब्बास (रज़ि.) आ गये और अबू ज़र (रज़ि.) के ऊपर अपने को डालकर कुरैश से कहा अफ़सोस! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि ये शख्स क़बील-ग़िफ़ार से है और शाम जाने वाले तुम्हारे ताजिरीयों का रास्ता उधर ही से पड़ता है। इस तरह से उनसे उनको बचाया। फिर अबू ज़र (रज़ि.) दूसरे दिन मस्जिदुल हुराम में आए और अपने इस्लाम का इज़हार किया। क़ौम बुरी तरह उन पर टूट पड़ी और मारने लगे। उस दिन भी अब्बास (रज़ि.) उन पर औंधे पड़ गये।

(राजेअ: 3522)

حَتَّى أَتَى الْمَسْجِدَ، فَنَادَى بِأَعْلَى صَوْتِهِ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ. ثُمَّ قَامَ الْقَوْمُ فَضَرَبُوهُ حَتَّى اضْجَعُوهُ. وَآتَى النَّبَأُ فَكَتَبَ عَلَيْهِ قَالَ: وَتَلَكُمُ، أَلَسْتُمْ تَقْلَمُونَ أَنَّهُ مِنْ غِفَارٍ، وَأَنَّ طَرِيقَ بَجَارِكُمْ إِلَى الشَّامِ؟ فَأَنْقَذَهُ مِنْهُمْ. ثُمَّ عَادَ مِنَ الْغَدِ لِيُظْلِمَهَا فَضَرَبُوهُ وَلَازَرُوا إِلَيْهِ. فَكَتَبَ النَّبَأُ عَلَيْهِ.

[راجع: 3042]

तशरीह: हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) बुलन्द मर्तबा तारिकुदुनिया मुहाजिरीन किराम में से हैं। उनका नाम जुन्दब हैं। मक्का शरीफ़ में शुरू इस्लाम लाने वालों में उनका पाँचवाँ नम्बर है। फिर ये अपनी क़ौम में चले गये थे और मुदत तक वहाँ रहे, ग़च्च-ए-ख़न्दक़ के मौक़ा पर ख़िदमते नबवी में मदीना तय्यिबा हाज़िर हुए थे और फिर मुक़ामे ज़ब्दा में क़याम किया और 32 हिजरी में ख़िलाफ़ते इम़मानी में उनका ज़ब्द ही में इतिकाल हुआ ये हुजूर (ﷺ) की बअ़वत से पहले भी इबादत करते थे।

बाब 34 : सईद बिन ज़ैद बिन अमर बिन नुफ़ैल

(रज़ि.) का इस्लाम कुबूल करना

۳۴- بَابُ إِسْلَامِ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

ये हज़रत उमर (रज़ि.) के चचाज़ाद भाई और बहनोई थे, उनके वालिद ज़ैद जाहिलियत के ज़माने में दीने हनीफ़ के तालिब और मिल्लते इब्राहीमी पर थे, सिर्फ़ अल्लाह को पूजते थे, शिर्क नहीं करते थे और का'बा की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे। इसी ए'तिक़ाद पर उनका इतिकाल हुआ। उनका वाक़िया पीछे गुजर चुका है।

3862. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने बयान किया कि मैंने कूफ़ा की मस्जिद में सईद बिन ज़ैद बिन अमर बिन नुफ़ैल (रज़ि.) से सुना, वो कहा रहे थे कि एक वक़्त था जब हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस्लाम लाने से पहले मुझे इस वजह से बाँध

۳۸۶۲- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ زَيْدٍ بْنَ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ فِي مَسْجِدِ الْكُوفَةِ يَقُولُ: وَاللَّهِ لَقَدْ

रखा था कि मैं ने इस्लाम क्यों कुबूल किया लेकिन तुम लोगों ने हज़रत उम्मान (रजि.) के साथ जो कुछ किया है उसकी वजह से अगर उहुद पहाड़ भी अपनी जगह से सरक जाए तो उसे ऐसा करना ही चाहिये। (दीगर मकाम : 3867, 6942)

رَأَيْتُمُي وَإِنْ عَمَرَ لَمُوتِي عَلَى الْإِسْلَامِ
قِيلَ أَنْ يُسَلِّمَ عَمْرٌ، وَلَوْ أَنَّ أَحَدًا أَوْفَضَ
لِلَّذِي صَنَعْتُمْ بِعِزِّمَانٍ لَكَانَ.

[طرفاء في : ٣٨٦٧ ، ٦٩٤٢].

तथीह : हजरत सय्यदना इम्रान गनी (रजि.) की शहादत तारीखे इस्लाम का एक बहुत बड़ा अलमिया (दुर्भाग्यपूर्ण घटना) है। हजरत सईद बिन जैद इस पर अफसोस का इन्हार कर रहे हैं और फर्मा रहे हैं कि कुफ्र के जमाने में हजरत उमर (रजि.) ने मुझको इस्लाम कुबूल करने की वजह से बाँध रखा था। एक ज़माना आज है कि खुद मुसलमान ही हजरत इम्रान गनी (रजि.) जैसे जलीलुल क़द्द बुजुर्ग के खूने नाहक़ में अपने हाथ रंग रहे हैं। फ़िलवाक़ेअ ये ह्रादश़ा ऐसा ही है कि उस पर उहुद पहाड़ को अपनी जगह से सरक जाना चाहिये। हजरत इम्रान गनी (रजि.) के ख़िलाफ़ बगावत का झण्डा बुलन्द करने वालों में ज़्यादा तादाद ऐसे लोगों की थी जो नाम के मुसलमान और पदों के पीछे वो मुनाफ़िक़ थे जो मुसलमानों का शीराज़ा मुंतशिर करना चाहते थे। इस गर्ज़ से कुछ बहानों का सहारा लेकर उन लोगों ने बगावत का झण्डा बुलन्द किया। कुछ सीधे साधे दूसरे मुसलमानों को भी बहका कर अपने साथ मिला लिया। आख़िर उन लोगों ने हजरत इम्रान (रजि.) को शहीद करके मुसलमानों में फ़ित्ना-फ़सादों का एक ऐसा दरवाज़ा खोल दिया जो आज तक बन्द नहीं हो रहा है और न बन्द होने की सरदस्ते उम्मीद है। तफ़सीलात के लिये दफ़ातिर की ज़रूरत है मगर इतना ज़रूर याद रखना चाहिये कि सय्यदना इम्रान गनी (रजि.) अल्लाह व रसूलुल्लाह (ﷺ) के सच्चे फ़िदाई, मजबूले बारगाह थे। उनके खूने नाहक़ में हाथ रंगने वाले हर मज़मूत के मुस्तह़िक़ हैं और क़यामत तक उनको मुसलमानों की बेस्तर तादाद बुराई के साथ याद करती रहेगी, चूँकि हदीष में हजरत सईद बिन जैद का ज़िक्र है, इसी मुनासिबत से इस हदीष को इस बाब के तहत नक़ल किया गया। हजरत सईद बिन जैद ही के निकाह में हजरत उमर (रजि.) की बहन थीं जिनका नाम फ़ातिमा है। उन ही की वजह से हजरत उमर (रजि.) ने इस्लाम कुबूल किया। इस ज़माने में कुछ लोग हजरत इम्रान गनी (रजि.) की कमियाँ तलाश करके उम्मत को परेशान कर रहे हैं हालाँकि ये हक़ीक़त है कि हजरत इम्रान (रजि.) मा'सूम नहीं थे अगर उनसे ख़िलाफ़त के ज़माने में कुछ कमज़ोरियाँ सरज़द हो गई हों तो उनको अल्लाह के हवाले करना चाहिये न कि उनको उछालकर न सिर्फ़ हजरत इम्रान (रजि.) से बल्कि जमाअते स़हाबा से मुसलमानों को बद-ज़त्र करना ये कोई नैक काम नहीं है।

बाब 35 : हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.)

के इस्लाम लाने का वाकिया

3863. मुझसे मुहम्मद बिन क़ासीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान घ़ासी ने ख़बरी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उन्हें कैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत इमर (रज़ि.) के इस्लाम लाने के बाद हम लोग हमेशा इज़्जत से रहे। (सजेअः 3684)

3864. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे उमर बिन

۳۵- بَابُ إِسْلَامِ عُمَرَ بْنِ

الخطاب رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

٣٨٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا
سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ
قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ
مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَا زِلْنَا
أَعْزَّةَ مَنْذُ أَسْلَمَ عُمَرُ)). (راجع: ٣٦٨٤)

٣٨٦٤ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ

मुहम्मद ने बयान किया, कहा मुझको मेरे दादा ज़ैद बिन अब्दुल्लाह बिन अमर ने खबर दी, उनसे उनके वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) (इस्लाम लाने के बाद कुरैश से) डरे हुए घर में बैठे हुए थे कि अबू अमर बिन आस बिन वाईल सहमी अंदर आया, एक धारीदार चादर और रेशमी कुर्ता पहने हुए था, आस ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा क्या बात है? उमर (रज़ि.) ने कहा कि तुम्हारी क़ौम बनू सहम वाले कहते हैं अगर मैं मुसलमान हुआ तो वो मुझको मार डालेंगे। आस ने कहा, तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, जब आस ने ये कलिमा कह दिया तो उमर (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैं भी अपने को अमान में समझता हूँ। उसके बाद आस बाहर निकला तो देखा कि मैदान लोगों से भर गया है। आस ने पूछा किधर का रुख है? लोगों ने कहा हम इब्ने खत्ताब की खबर लेने जाते हैं जो बे दीन हो गया है। आस ने कहा उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, ये सुनते ही लोग लौट गए। (दीगर मक़ाम : 3865)

مَحْمَدُ قَالَ: فَأَخْبَرَنِي جَدِّي زَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((يَتِمُّا هُوَ فِي الدَّارِ خَائِفًا إِذْ جَاءَهُ الْعَاصُ بْنُ وَائِلٍ السَّهْمِيُّ أَبُو عُمَرَ وَعَلَيْهِ خُلَّةٌ حَبِيرَةٌ وَقَمِيصٌ مَكْفُوفٌ بِحَرِيرٍ - وَهُوَ مِنْ بَنِي سَهْمٍ وَهُمْ خُلَفَاؤُنَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ - فَقَالَ لَهُ: مَا بِكَ؟ قَالَ: زَعَمَ قَوْمُكَ أَنَّهُمْ سَيَقْتُلُونَنِي إِنْ أَسْلَمْتُ. قَالَ: لَا سَبِيلَ إِلَيْكَ. بَعْدَ أَنْ قَالَهَا أَمِيتُ. فَخَرَجَ الْعَاصُ فَلَقِيَ النَّاسَ قَدْ سَأَلُوا بِهِمُ الْوَادِي، فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُونَ؟ فَقَالُوا: تُرِيدُ هَذَا ابْنُ الْخَطَّابِ الَّذِي صَبَا. قَالَ: لَا سَبِيلَ إِلَيْهِ. فَكَرُّوا النَّاسَ)). [طَرَفُهُ فِي : ٣٨٦٥].

तशरीह :

हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) की कुत्रियत अबू हफ़सा है अदवी और कुरैशी हैं। नुबुव्वत के पाँचवें या छठे साल इस्लाम लाए और उनके इस्लाम कुबूल करने के दिन से इस्लाम नुमायाँ होना शुरू हुआ। इसी वजह से उनका लक़ब फ़ारूक़ हो गया, आप गोरे रंग के थे सुखी ग़ालिब थी, क़द के लम्बे थे। तमाम ग़ज़वाते नबवी में शरीक हुए। हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) के बाद दस साल छः माह ख़लीफ़ा रहे। मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) के गुलाम अबू लूलू ने मदीना में बुध के दिन नमाज़े फ़ज़्र में 26 ज़िलहिज्ज 24 हिजरी को खंजर से आप (रज़ि.) पर हमला किया। आप यक़ुम मुहर्रमुल ह़राम 25 हिजरी को चार दिन बीमार रहकर वासिले बहक़ हुए। 63 साल की उम्र पाई। नमाज़े जनाज़ा हज़रत सुहैब रूमी ने पढ़ाई और हुजर-ए-नबवी में जगह मिली। (रज़ि.)। अमर बिन आस बिन वाईल सहमी कुरैशी हैं बक़ौल कुछ 8 हिजरी में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) और इब्मान बिन तलहा (रज़ि.) के साथ मुसलमान हुए। उनको आँ हज़रत (ﷺ) ने ओमान का हाकिम बना दिया था। वफ़ाते नबवी तक ये ओमान के हाकिम रहे। हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में उन ही के हाथ पर मिस्र फ़तह हुआ। मिस्र ही में 43 हिजरी में बउम्र नब्बे साल वफ़ात पाई (रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु आमीन)।

3865. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा कि मैंने अमर बिन दीनार से सुना, उन्होंने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा जब उमर (रज़ि.) इस्लाम लाए तो लोग उनके घर के पास जमा हो गये और कहने लगे कि उमर बेदीन हो गया है, मैं उन दिनों बच्चा था और उस वक़्त अपने घर की छत पर चढ़ा हुआ था। अचानक एक शख़्स आया जो रेशम की क़बा पहने हुए था, उस शख़्स ने लोगों से कहा ठीक है उमर (रज़ि.) बेदीन हो गया

٣٨٦٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ سَمِعْتُهُ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((لَمَّا أَسْلَمَ عُمَرُ، اجْتَمَعَ النَّاسُ عِنْدَ دَارِهِ وَقَالُوا: صَبَا عُمَرُ - وَأَنَا غُلَامٌ فَوْقَ ظَهْرِ بَنِي - فَجَاءَ رَجُلٌ عَلَيْهِ قَبَاءٌ مِنْ دِينَاجٍ فَقَالَ: قَدْ صَبَا عُمَرُ، فَمَا ذَاكَ؟ فَأَنَا

लेकिन ये मज्मआ कैसा है? देखो मैं उमर को पनाह दे चुका हूँ। इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया मैंने देखा कि उसकी ये बात सुनते ही लोग अलग अलग हो गये। मैंने पूछा ये कौन साहब हैं? उमर (रज़ि.) ने कहा कि ये आस्र बिन वाईल हैं। (राजेअ: 3864)

3866. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अमर बिन मुहम्मद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे सालिम ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब भी हज़रत उमर (रज़ि.) ने किसी चीज़ के बारे में कहा कि मेरा खयाल है कि ये इस तरह है तो वो उसी तरह हुई जैसा वो उसके बारे में अपना खयाल ज़ाहिर करते थे। एक दिन वो बैठे हुए थे कि एक ख़ूबसूरत शख्स वहाँ से गुज़रा। उन्होंने कहा या तो मेरा गुमान ग़लत है या ये शख्स अपने जाहिलियत के दीन पर अब भी क़ायम है या ये ज़माना जाहिलियत में अपनी क़ौम का काहिन रहा है। उस शख्स को मेरे पास बुलाओ। वो शख्स बुलाया गया तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसके सामने भी यही बात दुहराई। इस पर उसने कहा मैंने तो आज के दिन का सामान्य कभी नहीं देखा जो किसी मुसलमान को पेश आया हो। उमर (रज़ि.) ने कहा लेकिन मैं तुम्हारे लिये ज़रूरी क़रार देता हूँ कि तुम मुझे इस सिलसिले में बताओ। उसने इक़रार किया कि ज़मान-ए-जाहिलियत में मैं अपनी क़ौम का काहिन था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा ग़ैब की जो ख़बरें तुम्हारी जिन्नियाँ तुम्हारे पास लाती थी, उसकी सबसे हैरतअंगेज़ कोई बात सुनाओ? शख्स ने मज़कूर ने कहा कि एक दिन मैं बाज़ार में था कि जिन्नियाँ मेरे पास आईं। मैंने देखा कि वो घबराई हुई है, फिर उसने कहा जिन्नियों के बारे में तुम्हें मा'लूम नहीं। जब से उन्हें आसमानी ख़बरों से रोक दिया गया है वो किस दर्जे डरे हुए हैं, मायूस हो रहे हैं और कैंटनियों के पालान की कमलियों से मिल गये हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि तुमने सच कहा। एक मर्तबा मैं भी उन दिनों बुतों के करीब सोया हुआ था। एक शख्स एक बछड़ा लाया और बुत पर उसे ज़िबह कर दिया उसके अंदर से इस क़दर ज़ोर की आवाज़ निकली कि मैंने ऐसी शदीद चीख कभी नहीं सुनी थी। उसने कहा ऐ दुश्मन! एक बात बतलाता हूँ जिससे मुराद मिल जाए एक फ़सीह खुशबयान शख्स यूँ कहता है ला इलाहा इल्लल्लाह ये सुनते ही तमाम लोग (जो वहाँ मौजूद थे)

لَهُ جَارٌ. قَالَ: فَرَأَيْتَ النَّاسَ يَصَدِّقُوا عَنْهُ. فَقُلْتُ مَنْ هَذَا الرَّجُلُ؟ قَالَ: الْغَامِصُ بْنُ وَائِلٍ. (راجع: 3864)

3866- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ سَالِمٍ حَدَّثَنَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: ((مَا سَمِعْتُ عُمَرَ لشيءٍ قَطُّ يَقُولُ إِنِّي لِأُظَنُّ كَذَابًا إِلَّا كَانَ كَمَا يَظُنُّ. يَتِمُّ عُمَرُ جَالِسٌ إِذْ مَرَّ بِهِ رَجُلٌ جَمِيلٌ فَقَالَ عُمَرُ: لَقَدْ أَخْطَأَ ظَنِّي، أَوْ إِنَّ هَذَا عَلَى دِينِهِ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، أَوْ لَقَدْ كَانَ كَاهِنُهُمْ، عَلَى الرَّجُلِ. فَدَعَانِي لَهُ، فَقَالَ لَهُ ذَلِكَ. فَقَالَ: مَا رَأَيْتُ كَأَيُّومٍ اسْتَقْبَلَ بِهِ رَجُلٌ مُسْلِمًا. قَالَ: فَإِنِّي أَغْرَمْتُ عَلَيْكَ إِلَّا مَا أَخْبَرْتَنِي. قَالَ: كُنْتُ كَاهِنُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. قَالَ: لَمَّا أَغْجَبَ مَا جَاءَكَ بِهِ جِئْتُكَ؟ قَالَ: يَتِمُّ أَنَا يَوْمًا فِي السُّوقِ، جَاءَتْنِي أَغْرَفُ لِيهَا الْفَرْعُ فَقَالَ: أَلَمْ تَرَ الْجَنِّ وَابِلَاسَهَا، وَيَأْسَهَا مِنْ بَغْدِ انْكَاسِهَا، وَلَحُوقَهَا بِالْفَلَاصِ وَأَخْلَاسِهَا. قَالَ عُمَرُ: صَدَقَ، يَتِمُّ أَنَا عِنْدَ إِلَهِتِهِمْ، إِذْ جَاءَ رَجُلٌ بِمِجَلٍّ لَذْبَحَهُ، فَصَرَخَ بِهِ صَارِخٌ لَمْ أَسْمَعْ صَارِخًا قَطُّ أَشَدَّ صَوْتًا مِنْهُ يَقُولُ: يَا جَلِيحُ، أَمْرٌ نَجِيحُ، رَجُلٌ فَصِيحُ، يَقُولُ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ. فَوَلَّبَ الْقَوْمُ. قُلْتُ لَا أَبْرَحُ حَتَّى أَغْلَمَ مَا وَرَاءَ هَذَا. ثُمَّ نَادَى: يَا جَلِيحُ، أَمْرٌ نَجِيحُ، رَجُلٌ فَصِيحُ،

चौक पड़े (चल दिये) मैंने कहा मैं तो नहीं जाने का, देखो उसके बाद क्या होता है। फिर यही आवाज़ आई अरे दुश्मन तुझको एक बात बतलाता हूँ जिससे मुराद बर आए एक फ़रीह शख्स यूँ कह रहा है ला इलाहा इल्लल्लाह। उस वक़्त मैं खड़ा हुआ और अभी कुछ देर नहीं गुज़री थी कि लोग कहने लगे ये (हज़रत मुहम्मद ﷺ) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

يَقُولُ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ. فَقُمْتُ، فَمَا نَشِينَا
أَنْ قِيلَ: هَذَا نَبِيُّ.

तशरीह : हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने कयाफ़ा और फ़िरासत की बिना पर उस गुज़रने वाले से कहा कि तू मुसलमान है, या काफ़िर, या काहिन है। अबू अम्र ने कहा ये शख्स जाहिलियत के ज़माने में कहानत किया करता था, हज़रत उमर (रज़ि.) ने एक दिन मज़ाक़ के तौर पर उससे फ़र्माया ऐ सुवाद! तेरी कहानत अब कहाँ गई? इस पर वो गुस्सा हुआ कहने लगा उमर! हम जिस हाल में पहले थे या'नी जाहिलियत व कुफ़्र पर वो कहानत से बदतर था और तुम मुझको ऐसी बात पर मलामत करते हो जिससे मैं तौबा कर चुका हूँ और मुझको उम्मीद है कि अल्लाह ने उसको बख़्श दिया होगा। (वहीदी)

इससे हज़रत उमर (रज़ि.) की कमाले दानाई घाबित हुई और यही इस हदीष को यहाँ लाने का मक़सद है। पुकारने वाला कोई फ़रिश्ता था जो आँहज़रत (ﷺ) के मब्रूफ़ होने की बशारत दे रहा था।

3867. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे क़ैस ने, कहा कि मैंने सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने मुसलमानों को मुख़ातब करके कहा एक वक़्त था कि उमर (रज़ि.) जब इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए थे तो मुझे और अपनी बहन को इसलिये बाँध रखा था कि हम इस्लाम क्यों लाए, और आज तुमने जो कुछ हज़रत इब्मन (रज़ि.) के साथ बर्ताव किया है, अगर इस पर उहूद पहाड़ भी अपनी जगह से सरक जाए तो उसे ऐसा ही करना चाहिये। (राजेज़: 3862)

٣٨٦٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى
حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا قَيْسٌ
قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ زَيْدٍ يَقُولُ لِلْقَوْمِ:
لَوْ رَأَيْتُمُ مَرْثِي عَمْرٍ عَلَى الْإِسْلَامِ أَنَا
وَأَخْتِي، وَمَا اسْلَمَ، وَلَوْ أَنَّ أَحَدًا انْقَضَ
لِمَا صَنَعْتُمْ بِفُتْمَانَ لَكَانَ مَحْقُوقًا أَنْ
يَنْقُضَ. (راجع: ٣٨٦٢)

हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) की जुबानी यहाँ भी हज़रत उमर (रज़ि.) का ज़िक्र है, बाब और हदीष में यही मुताबकत है। हज़रत सईद, सय्यदना हज़रत इब्मन ग़नी की शहादत पर इज़हारे अफ़सोस कर रहे हैं और बतला रहे हैं कि ये हादसा ऐसा ज़बरदस्त है कि उसका अप्रर अगर उहूद पहाड़ भी कुबूल करे तो बजा है, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि रजैऊन। शहादते हज़रत इब्मन (रज़ि.) वाक़ई बहुत बड़ा हादसा है जिससे इस्लाम में दरार पड़ना शुरू हुआ।

हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम लाने का वाक़िया :

सियर की किताबों में तफ़सील के साथ मज़कूर है। खुलासा ये है कि अबू जहल ने ये कहा कि जो कोई मुहम्मद (ﷺ) का सर लाए मैं उसको सौ ऊँट इनाम दूँगा। उमर (रज़ि.) तलवार लटकाकर चले। रास्ते में किसी ने कहा मुहम्मद (ﷺ) को बाद में मारना अपने बहनोई सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) और बहन से तू समझ लो, वो दोनों मुसलमान हो गये हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी बहन के घर पहुँचकर बहनोई और बहन दोनों की मर्के कर्सी, ख़ूब मारा-पीटा, आख़िरकार शर्मिन्दा हुए। अपनी बहन

से कहने लगे ज़रा मुझको वो कलाम तो सुनाओ जो तुम मियाँ-बीवी मेरे आने के वक़्त पढ़ रहे थे। उन्होंने कहा कि तुम बे वुजू हो, वुजू करो। हज़रत उमर (रज़ि.) ने वुजू किया और मुस्हफ़ खोलकर पढ़ने लगे। उसका अक्षर ये हुआ कि जुबान से ये कलिम-ए-पाक निकल पड़ा, अश्हदुअल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदुअन्न मुहम्मदरसुलुल्लाह फिर आँहज़रत (ﷺ) के पास आए आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, ऐ उमर! मुसलमान हो जा। उन्होंने सच्चे दिल से कलिमा पढ़ा सारे मुसलमानों ने खुशी से तक्बीर कही (वह्दीदी)। हज़रत इक़बाल ने हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम कुबूल करने को यूँ बयान किया है।

नमी दानी कि सोज़े क़िरात तू

दिगर गूँ कर्द तक्दीर उमर रा

या'नी कुआनि पाक की क़िरात के सोज़ ने जो उनकी बहन फ़ातिमा (रज़ि.) के लह्न से ज़ाहिर हो रहा था, हज़रत उमर (रज़ि.) की क़िस्मत को बदल दिया और वो इस्लाम कुबूल करने पर आमादा हो गये। अफ़सोस आज वो कुआनि पाक है क़िरात करने वाले बक़रत मौजूद हैं मगर वो सोज़ मफ़कूद है। हज़रत उमर (रज़ि.) के बहनोई का नाम सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ेल है, ये आपके चचाज़ाद भाई भी होते थे। तफ़सील पीछे गुज़र चुकी है।

बाब 36 : चाँद के फट जाने का बयान

۳۶- بَابُ انْشِقَاقِ الْقَمَرِ

शक़ूल क्रमर का बयान पहले भी गुज़र चुका है कि ये आँहज़रत (ﷺ) का एक बहुत बड़ा मुअज्ज़ा था गो हज़रत अनस (रज़ि.) ने ये वाक़िया ख़ुद नहीं देखा, दूसरे सहाबी से सुना मगर सहाबी की मुसल बिल इत्तिफ़ाक़ मक्बूल है।

3867. मुझसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वहहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़ल ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि कुफ़फ़ारे मक्का ने रसूले करीम (ﷺ) से किसी निशानी का मुतालबा किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने चाँद के दो टुकड़े करके दिखा दिये। यहाँ तक कि उन्होंने हिरा पहाड़ को उन दोनों टुकड़ों के बीच में देखा।

(राजेअ : 3637)

۳۸۶۸- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : (رَأَى أَهْلَ مَكَّةَ سَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنْ يُرِيَهُمْ آيَةً، فَأَرَاهُمُ الْقَمَرَ شِقَّتَيْنِ، حَتَّى رَأَوْا حِرَاءَ بَيْنَهُمَا)) : [راجع: ۳۶۳۷]

۳۸۶۹- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي خَمْرَةَ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي مُعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ وَتَخُنَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِسَاقٍ فَقَالَ ((اشْهَدُوا))، وَذَهَبَتْ بَرَقَةً نَحْوَ الْجَبَلِ.

وَقَالَ أَبُو الصُّخْرى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ: ((انْشَقَّ بِمَكَّةَ)) وَتَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمٍ عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ

3869. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हमज़ा मुहम्मद बिन मैमून ने, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख्ई ने, उनसे अबू मअमर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस वक़्त चाँद के दो टुकड़े हुए तो हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मिना के मैदान में मौजूद थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों! गवाह रहना, और चाँद का एक टुकड़ा दूसरे से अलग होकर पहाड़ की तरफ़ चला गया था और अबुज्ज़ुहा ने बयान किया, उनसे मसऊद ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि शक़ूल क्रमर का मुअज्ज़ा मक्का में पेश आया था। इब्राहीम नख्ई के साथ इसकी मुताबअत मुहम्मद बिन मुस्लिम ने की है, उनसे

अबू नुजैह ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अबू मअमर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने। (राजेअ: 3636)

أَبِي مُعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ.

[راجع: 3636]

3870. हमसे इब्मान बिन मालेह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बक्र बिन मुजर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे जा'फर बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे इराक बिन मालिक ने, उनसे अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मसऊद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में बिला शक व शुब्हा चाँद फट गया था। (राजेअ: 3636, 3637)

3870- حَدَّثَنَا عُفْمَانُ بْنُ مَالِحٍ، حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ حِرَالَةَ بْنِ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ الْقَمَرَ انشَقَّ عَلَى زَمَانِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

[راجع: 3636, 3638]

3871. हमसे इमर बिन हफ्स ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम नखई ने बयान किया, उनसे अबू मअमर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि चाँद फट गया था।

3871- حَدَّثَنَا حُمْرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ أَبِي مُعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ وَرَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((انْشَقَّ الْقَمَرُ)).

तशरीह: इससे उन लोगों का रह होता है जो कहते हैं इक़तरबतिस्साअतु वन्शक्कलक़मर (अल क़मर: 1) में इन्शक्क मा'नी यन्शक्कु के है या'नी चाँद फटेगा अब ये ए'तिराज़ कि अगर चाँद फटा होता तो अहले रसद और हियात और दुनिया के मुहन्दिस इस वाकिये को नक़ल करते क्योंकि अजीब वाकिया था, वाही है इसलिये कि ये फटना एक लहज़ा के लिये था मा'लूम नहीं कि और मुल्क वालों को नज़र भी आया या नहीं अन्देशा है कि वो सोते हों या अपने कामों में मशगूल हों और बड़ी दलील इस वाकिया की स़िहत की ये है कि अगर चाँद न फटा होता तो जब कुआन में ये उतरा, इन्शक्कल क़मर तो काफिर और मुखालिफ़ीने इस्लाम सब तक्ज़ीब शुरू कर देते वो तो हक़ बातों में कुआन की मुखालिफ़त किया करते थे वे एक वाकिया न हुआ होता और कुआन में उसका होना बयान किया जाता तो किस क़दर ए'तिराज़ और तक्ज़ीब की बौछार कर देते। (वहीदी)

कुआन मजीद और अहादीषे स़हीहा में चाँद के फट जाने का वाकिया सराहत के साथ मौजूद है। एक मोमिन मुसलमान के लिये उनसे ज़्यादा और किसी दलील की ज़रूरत नहीं है यूँ तारीख़ में ऐसे भी मुख्तलिफ़ मुमालिक के लोगों का ज़िक्र मौजूद है, जिन्होंने उसको देखा और वो तहक़ीके हक़ करने पर मुसलमान हो गये। दूसरे मुक़ाम पर इसकी तप़सील आएगी।

बाब 37 : मुसलमानों का हब्शा की तरफ़

हिजरत करने का बयान

और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह (ख़्वाब में) दिखाई गई है, वहाँ ख़जूरों के बाग़ बहुत हैं वो जगह दो पथरीले पैदानों के दरम्यान है। चुनाँचे जिन्होंने हिजरत कर ली थी वो मदीना हिजरत

37- بَابُ هِجْرَةِ الْحَبَشَةِ

وَقَالَتْ عَائِشَةُ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((أُرِيتُ دَارَ هِجْرَتِكُمْ ذَاتَ نَخْلٍ بَيْنَ لَابَتَيْنِ)).

فَهَاجَرَ مَنْ هَاجَرَ قَبْلَ الْمَدِينَةِ وَرَجَعَ عَائَةً مَنْ كَانَ هَاجِرَ بِلَاضِ الْحَبَشَةِ إِلَى الْمَدِينَةِ. فِيهِ عَنْ أَبِي مُوسَى وَأَسْمَاءَ عَنْ

करके चले गये बल्कि जो मुसलमान हब्शा हिजरत कर गये थे वो भी मदीना वापस चले आए इस बारे में अबू मूसा और अस्मा बिनते ज़मैस की रिवायात नबी करीम (ﷺ) से मरवी हैं।

النَّبِيُّ ﷺ

जब मक्का के काफ़िरों ने मुसलमानों को बेहद सताना शुरू कर दिया और मुसलमानों में मुकाबले की ताकत न रही तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों को मुल्के हब्शा की तरफ़ हिजरत करने की इजाज़त दे दी और हुक्म दिया कि तुम इस्लाम का ग़लबा होने तक वहाँ रहो ये हिजरत दो बार हुई पहले हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने अपनी बीवी हज़रत रुक़य्या (रज़ि.) को लेकर हिजरत की। (इन तीनों हदीषों को खुद इमाम बुखारी रह. ने वस्ल किया है) हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष को बाबुल्हिजरति इलल्मदीनति में और अबू मूसा (रज़ि.) की हदीष को इसी बाब में और हज़रत अस्मा (रज़ि.) की हदीष को ग़ज़्व-ए-हुनैन में।

3872. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने कहा कि हमसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अदी बिन ख़ियार ने ख़बर दी, उन्हें मिस्वर बिन मख़रमा और अब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अब्दे यगूष ने कि उन दोनों ने अब्दुल्लाह बिन अदी बिन ख़ियार से कहा तुम अपने मामू (अमीरुल मोमिनीन) उष्मान (रज़ि.) से उनके भाई वलीद बिन उक्बा बिन अबी मुईत के बाब में बातचीत क्यों नहीं करते, (हुआ ये था कि लोगों ने इस पर बहुत ए'तिराज़ किया था जो हज़रत उष्मान ने वलीद के साथ किया था) अब्दुल्लाह ने बयान किया जब हज़रत उष्मान (रज़ि.) नमाज़ पढ़ने निकले तो मैं उनके रास्ते में खड़ा हो गया और अर्ज़ किया कि मुझे आपसे एक ज़रूरत है, आपको एक ख़ैरख़्वाहाना मश्वरा देना है। इस पर उन्होंने कहा कि भले आदमी! तुमसे तो मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। ये सुनकर मैं वहाँ से वापस चला आया। नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद मैं मिस्वर बिन मख़रमा और इब्ने अब्दे यगूष की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उष्मान (रज़ि.) से जो कुछ मैंने कहा था और उन्होंने उसका जवाब मुझे जो दिया था, सब मैंने बयान कर दिया। उन लोगों ने कहा तुमने अपना हक्क अदा कर दिया। अभी मैं उस मज्लिस में बैठा था कि उष्मान (रज़ि.) का आदमी मेरे पास (बुलाने के लिये) आया। उन लोगों ने मुझसे कहा तुम्हें अल्लाह तआला ने इम्तिहान में डाला है। आख़िर मैं वहाँ चला और हज़रत उष्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने पूछा तुम अभी जिस ख़ैरख़्वाही का ज़िक्र कर रहे थे वो क्या थी? उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने कहा अल्लाह गवाह है फिर मैंने कहा अल्लाह तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को मब्रूज़ फ़र्माया और उन पर अपनी

۳۸۷۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ
الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ
الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا عُرْوَةُ بْنُ الزُّهَيْرِ ((أَنَّ
عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبْدِ بْنِ الْخَيْثَارِ أَخْبَرَهُ
أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَحْمُودَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ
بْنَ الْأَسْوَدِ بْنَ عَبْدِ يَهُوثَ قَالَا لَهُ: مَا
يَمْنَعُكَ أَنْ تُكَلِّمَ خَالَكَ عُثْمَانَ فِي أَخِيهِ
الْوَلِيدِ بْنِ عُقَيْبَةَ، وَكَانَ أَكْثَرُ النَّاسِ فِيمَا
فَعَلَ بِهِ. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَانْتَصَبْتُ
لِعُثْمَانَ حِينَ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ فَقُلْتُ
لَهُ: إِنَّ لِي إِلَيْكَ حَاجَةً، وَهِيَ نَصِيحَةٌ.
فَقَالَ: أَيُّهَا الْمَرْءُ، أَغُوذُ بِاللهِ مِنْكَ.
فَانصَرَفْتُ. فَلَمَّا قَضَيْتُ الصَّلَاةَ
جَلَسْتُ إِلَى الْمِسْوَرِ وَإِلَى ابْنِ عَبْدِ
يَهُوثَ فَحَدَّثْتُهُمَا بِمَا قُلْتُ لِعُثْمَانَ وَقَالَ
لِي: فَقَالَا: قَدْ قَضَيْتَ الَّذِي كَانَتْ
عَلَيْكَ. فَيَسْمَا أَنَا جَالِسٌ مَعَهُمَا إِذْ
جَاءَنِي رَسُولُ عُثْمَانَ، فَقَالَ لِي: قَدْ
ابْتَلَاكَ اللهُ. فَانْطَلَقْتُ حَتَّى دَخَلْتُ
عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَا نَصِيحَتُكَ إِلَيَّ ذَكَرْتُ

किताब नाज़िल फ़र्माई, आप उन लोगों में से थे जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की दा'वत पर लब्बैक कहा था। आप हुज़ूर (ﷺ) पर ईमान लाए दो हिज़रतें कीं (एक हब्शा को और दूसरी मदीना को) आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत से फ़ैज़याब हैं और आँहज़रत (ﷺ) के तरीक़ों को देखा है। बात ये है कि वलीद बिन इब्ज़बा के बारे में लोगों में अब बहुत चर्चा होने लगा है। इसलिये आपके लिये ज़रूरी है कि उस पर (शराबनोशी की) हद कायम करें। इब्मान (रज़ि.) ने फ़र्माया मेरे भतीजे या मेरे भांजे क्या तुमने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा है? मैंने अर्ज़ किया कि नहीं। लेकिन आँहज़ूर (ﷺ) के दीन की बातें इस तरह मैंने हासिल की थीं जो एक कुंवारी लड़की को भी अपने पदे में मा'लूम हो चुकी हैं। उन्होंने बयान किया कि ये सुनकर फिर इब्मान (रज़ि.) ने भी अल्लाह का गवाह करके फ़र्माया बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ मब्रूर किया और आप (ﷺ) पर अपनी किताब नाज़िल की थी और ये भी वाक़िया है कि मैं उन लोगों में था जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की दा'वत पर (इब्तिदा ही में) लब्बैक कहा था। आँहज़रत (ﷺ) जो शरीअत लेकर आए थे मैं उस पर ईमान लाया और जैसा कि तुमने कहा मैंने दो हिज़रतें कीं, मैं आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत से फ़ैज़याब हुआ और आप (ﷺ) से बेअत भी की। अल्लाह की क़सम! कि मैंने आप (ﷺ) की नाफ़रमानी नहीं की और न कभी ख़यानत की। आख़िर अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को वफ़ात दे दी और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा मुंतख़ब हुए। अल्लाह की क़सम! कि मैंने उनकी भी कभी नाफ़रमानी नहीं की और न उनके किसी मामले में कोई ख़यानत की। उनके बाद हज़रत इमर (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए मैंने उनकी भी कभी नाफ़रमानी नहीं की और न कभी ख़यानत की। उसके बाद मैं ख़लीफ़ा हुआ। क्या अब मेरा तुम लोगों पर वही हक़ नहीं है जो उनका मुझ पर था? इब्दुल्लाह ने अर्ज़ किया यक़ीनन आपका हक़ है। फिर उन्होंने कहा फिर उन बातों की क्या हक़ीक़त है जो तुम लोगों की तरफ़ से पहुँच रही हैं? जहाँ तक तुमने वलीद बिन इब्ज़बा के बारे में ज़िक़्र किया है तो हम इशाअल्लाह उस मामले में उसकी गिरफ़्त हक़ के साथ करेंगे। राबी ने बयान किया कि आख़िर (गवाही गुज़रने के बाद) वलीद बिन इब्ज़बा के चालीस

إِبْرَاهِيمَ قَالَ: فَشَهِدْتُ ثُمَّ قُلْتُ: إِنَّ اللَّهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ، وَكُنْتُ مِمَّنِ اسْتَجَابَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمِنْتُ بِهِ، وَهَاجَرْتُ الْمُهَاجِرِينَ الْأَوَّلِينَ، وَصَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَأَيْتُ هَدْيَهُ. وَقَدْ أَكْثَرَ النَّاسُ فِي شَأْنِ الْوَلِيدِ بْنِ عُقْبَةَ، فَحَقُّ عَلَيْكَ أَنْ تُقِيمَ عَلَيْهِ الْحَدَّ. فَقَالَ لِي: يَا ابْنَ أَخِي، أَذَرَكْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَ: قُلْتُ: لَا، وَلَكِنْ قَدْ خَلَصَ إِلَيَّ مِنْ عَلَيْهِ مَا خَلَصَ إِلَى الْفَرَزَاءِ لِي سِغْرًا.

قَالَ: فَشَهِدْتُ عُثْمَانَ فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ مُحَمَّدًا ﷺ بِالْحَقِّ، وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ، وَكُنْتُ مِمَّنِ اسْتَجَابَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ﷺ، وَأَمِنْتُ بِمَا بَعَثَ بِهِ مُحَمَّدٌ ﷺ، وَهَاجَرْتُ الْمُهَاجِرِينَ الْأَوَّلِينَ - كَمَا قُلْتُ - وَصَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَرَأَيْتُ هَدْيَهُ. وَاللَّهِ مَا عَصَيْتُهُ، وَلَا غَشَشْتُهُ حَتَّى تَوَلَّاهُ اللَّهُ. ثُمَّ اسْتَخْلَفَ اللَّهُ ﷻ أَبَا بَكْرٍ، فَوَرَّ اللَّهُ مَا عَصَيْتُهُ وَلَا غَشَشْتُهُ، ثُمَّ اسْتَخْلَفَ عُمَرُ، فَوَرَّ اللَّهُ مَا عَصَيْتُهُ وَلَا غَشَشْتُهُ. ثُمَّ اسْتَخْلَفَ الْفَلَيْسَ لِي عَلَيْكُمْ مِثْلُ الْإِبْرَةِ كَانَ لَهُمْ عَلَيْهِ؟ قَالَ: بَلَى. قَالَ: لَمَّا هَذِهِ الْأَحَادِيثُ إِلَيَّ تَلَفَعْتُ عَنْكُمْ؟

कोड़े लगाए गये और हज़रत अली (रज़ि.) को हुक्म दिया कि कोड़े लगाएँ, हज़रत अली (रज़ि.) ही ने उसको कोड़े मारे थे। इस हदीस को यूनुस और जुहरी के भतीजे ने भी जुहरी से रिवायत किया उसमें इब्मान (रज़ि.) का क़ौल इस तरह बयान किया, क्या तुम लोगों पर मेरा वही हक़ नहीं है जो उन लोगों का तुम पर था।

(राजेअ: 3696)

لَمَّا مَا ذُكِرَتْ مِنْ حَانَ الْوَلِيدِ بْنِ عُقْبَةَ
فَسْتَأْخَذَ لَهُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِالْحَقِّ. قَالَ :
فَجَلَدَ الْوَلِيدَ أَرْبَعِينَ جَلْدَةً، وَأَمَرَ عَلِيًّا
أَنْ يَجْلِدَهُ، وَكَانَ هُوَ يَجْلِدُهُ).

وَقَالَ يُونُسُ وَابْنُ أَبِي الزُّهْرِيِّ عَنْ
الزُّهْرِيِّ: «أَفْلَسَ لِي عَلَيْكُمْ مِنَ
الْحَقِّ بِغُلِّ الْوَلِيِّ كَانَ لَهُمْ».

[راجع: 3696]

तशरीह: हज़रत इब्मान गनी (रज़ि.) ने हज़रत सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) को कूफ़ा की हुक्मत से मअज़ूल करके वलीद को उनकी जगह मुक़रर किया था वलीद ने वहाँ कई नाइन्साफ़ियाँ कीं। शराब के नशे में नमाज़ पढ़ने खड़े हो गये। हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने उसको सज़ा देने में देर की। लोगों को ये नागवार हुआ तो उन्होंने अबैदुल्लाह बिन अदी से जो हज़रत इब्मान के भांजे और आपके मुकर्रब थे इस मुक़दमे में हज़रत इब्मान (रज़ि.) से बातचीत करने के लिये कहा। हज़रत इब्मान (रज़ि.) शुरू में ये समझे कि शायद अबैदुल्लाह कोई ख़िदमत या रुपये का त़लबगार हो और मुझसे वो न दिया जाए तो वो नाराज़ हो और मुफ़्त में ख़राबी फैले। बाद में जब हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने वाक़िये को समझा तो अबैदुल्लाह को बुलाकर बातचीत की जो रिवायत में मज़कूर है। अबैदुल्लाह ने हज़रत इब्मान (रज़ि.) को बतलाया कि मैं महज़ आपकी ख़ैर-ख़वाही में ये बातें कह रहा हूँ बाद में हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने वलीद को हज़रत अली (रज़ि.) के हाथों से शराब की हद में कोड़े लगाए जैसा कि ज़िक्र हो चुका है।

बाब का मतलब हिजरते हब्शा के ज़िक्र से निकलता है गो हब्शा के मुल्क की तरफ़ दोबारा हिजरत हुई थी जैसे इमाम अहमद और इब्ने इस्हाक़ वगैरह ने निकाला इब्ने मसऊद (रज़ि.) से कि पहले आँहज़रत (ﷺ) ने हम लोगों को जो अस्सी आदमियों के करीब थे नज्शाशी के मुल्क में भेज दिया फिर उनको ये ख़बर मिली कि मुशिकों ने सूरह नज्म में आँहज़रत (ﷺ) के साथ सपदा किया और वो मुसलमान हो गये। ये ख़बर सुनकर वो मक्का लौट आए वहाँ पहले से भी ज़्यादा मुशिकों से तकलीफ़ उठाने लगे आख़िर दोबारा हिजरत की उस वक़्त 83 मर्द और 18 औरतें थीं मगर हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने दोबारा ये हिजरत नहीं की इसलिये पहली दो हिजरतों से हब्शा और मदीना की हिजरत मुराद है। हालाँकि मदीना की हिजरत दूसरी हिजरत थी मगर दोनों को त़लीबन अव्वलीन कह दिया जैसे शम्सैन क़मरेन कहते हैं। तीसरी अल् क़ारी के मुवल्लिफ़ ने ग़लती की जो कहा हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने हब्शा को हिजरत नहीं की थी हज़रत इब्मान (रज़ि.) तो सबसे पहले अपनी बीवी हज़रत रुक़य्या (रज़ि.) को लेकर हब्शा की तरफ़ निकले थे और शायद ये त़बअ (प्रकाशन) की ग़लती हो। मुवल्लिफ़ की इबारत यूँ हो कि हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने दोबारा हिजरत नहीं की थी। (वहीदी)

दूसरी रिवायत में अस्सी कोड़ों का ज़िक्र है ये उसके ख़िलाफ़ नहीं है क्योंकि जब अस्सी कोड़े पड़े तो चालीस बतरीके औला पड़ गये या उस कोड़े के दोहरे होंगे तो चालीस मारों के बस अस्सी कोड़े हो गये। वलीद की शराबनोशी की शाहादत देने वाले हम्यान और सअब थे। यूनुस की रिवायत को ख़ुद हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने मनाकिबे इब्मान (रज़ि.) में वस्ल किया है और जुहरी के भतीजे की रिवायत को इब्ने अब्दुल बर ने तम्हीद में वस्ल किया।

3873. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन

۳۸۷۳- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى
حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي

उर्वा ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद (उर्वा बिन जुबैर) ने बयान किया और उनसे आइशा (रजि.) ने बयान किया कि उम्मे हबीबा (रजि.) और उम्मे सलमा (रजि.) ने एक गिरजे का जिक्र किया जिसे उन्होंने हब्शा में देखा था उसके अंदर तस्वीरें थीं उन्होंने उसका जिक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आप (ﷺ) ने फर्माया जब उनमें कोई नेक मर्द होता और उसकी वफात हो जाती तो उसकी क़ब्र को वो लोग मस्जिद बनाते और फिर उसमें उसकी तस्वीरें रखते। ये लोग क़यामत के दिन अल्लाह तआला की बारगाह में बदतरीन मउलूक होंगे।

ये हदीष बाबुल जनाइज़ में गुजर चुकी है यहाँ इमाम बुखारी (रह) इसको इसलिये लाए कि उसमें हब्शा की हिजरात का जिक्र है।

3874. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्हाक़ बिन सईद सईदी ने बयान किया। उनसे उनके वालिद सईद बिन अम्र बिन सईद बिन आज़ ने, उनसे उम्मे ख़ालिद बिनते ख़ालिद (रजि.) ने बयान किया कि मैं जब हब्शा से आई तो बहुत कम उम्र थी। मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक धारीदार चादर इनायत की और फिर आप (ﷺ) ने उसकी धारियों पर अपना हाथ फेरकर फर्माया सनाह सनाह। हुमैदी ने बयान किया कि सनाह सनाह हब्शी जुबान का लफ़्ज़ है या'नी अच्छा अच्छा।

(राजेअ: 3071)

3875. हमसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया कि (इब्तिदा-ए-इस्लाम में) नबी करीम (ﷺ) नमाज़ पढ़ते होते और हम आपको सलाम करते तो आप (ﷺ) नमाज़ ही में जवाब इनायत फ़र्माते थे। लेकिन जब हम नज़ाशी के मुल्क हब्शा से वापस (मदीना) आए और हमने (नमाज़ पढ़ते में) आप (ﷺ) को सलाम किया तो आप (ﷺ) ने जवाब नहीं दिया। नमाज़ के बाद हमने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम पहले आप (ﷺ) को सलाम करते थे तो आप (ﷺ) नमाज़ ही में जवाब इनायत फ़र्माया करते थे? आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया हौं नमाज़ में आदमी

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((إِنَّ أُمَّ خَبِئَةَ وَأُمَّ سَلَمَةَ ذَكَرْنَا كَثِيرَةً وَأَتَيْنَاهَا بِالنَّحْشَةِ فِيهَا تَصَاوِيرُ، فَذَكَرْنَا لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: ((إِنَّ أَوْلَيْكَ إِذَا كَانَ فِيهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ لَمَاتَ بَنُو عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا، وَسَوَّوْا فِيهِ بِئِكَ الصُّوْرَ، أَوْلَيْكَ شِرَازُ الْحَلْقِ، عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

۳۸۷۴- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيدٍ السَّعْدِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أُمِّ خَالِدِ بِنْتِ خَالِدٍ قَالَتْ: ((قَدِمْتُ مِنْ أَرْضِ الْحَبَشَةِ وَأَنَا جَوِيْرَةٌ، فَكَسَانِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خِمِيْصَةً لَهَا أَعْلَامٌ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَمْسَحُ الْأَعْلَامَ بِيَدِهِ وَيَقُولُ: ((سَنَاهَ سَنَاهَ)). قَالَ الْحُمَيْدِيُّ: يَغْنِي حَسَنٌ حَسَنٌ)).

[راجع: ۳۰۷۱]

۳۸۷۵- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبَّادٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَالَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُصَلِّي فَيَرُدُّ عَلَيْنَا، فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ الْحَاشِيِّ سَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدِّ عَلَيْنَا، فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فَتَرُدُّ عَلَيْنَا، قَالَ: إِنَّ فِي الصَّلَاةِ شَغْلًا فَقُلْتُ لِإِبْرَاهِيمَ: كَيْفَ

को दूसरा शुल होता है। सुलैमान आ'मश ने बयान किया कि मैंने इब्राहीम नखई से पूछा ऐसे मौका पर आप किया करते हैं? उन्होंने कहा कि मैं दिल में जवाब दे देता हूँ। (राजेअ: 1199)

ये हदीष किताबुससलात में गुजर चुकी है, इस बाब में उसे हज़रत इमाम बुखारी (रह) इसलिये लाए कि उसमें हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के हब्शा से लौटने का बयान है।

3876. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुरदा ने और उनसे हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) की हिजरत मदीना की इत्तिफाअ मिली तो हम घमन में थे। फिर हम कश्ती पर सवार हुए लेकिन इत्तिफाअ से हवा ने हमारी कश्ती का रुख नज्जाशी के मुल्क हब्श की तरफ कर दिया। हमारी मुलाक़ात वहाँ जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) से हुई (जो हिजरत करके वहाँ मौजूद थे) हम उन्हीं के साथ वहाँ ठहरे रहे, फिर मदीना का रुख किया और आँहज़रत (ﷺ) से उस वक़्त मुलाक़ात हुई जब आप खैबर फ़तह कर चुके थे, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमने ऐ कश्ती वालों! दो हिजरतें की हैं। (राजेअ: 3136)

एक मक्का से हब्श को दूसरी हब्श से मदीना को। मुस्लिम की रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने खैबर के माले ग़नीमत में से उन लोगों को हिस्सा नहीं दिलाया था जो इस लड़ाई में शरीक न थे मगर हमारी कश्ती वालों को हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हिस्सा दिला दिया।

बाब 38 : हब्श के बादशाह नज्जाशी की

वफ़ात का बयान

3877. हमसे अबू रबीआ सुलैमान बिन दाऊद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अत्रा बिन अबी रिबाह ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस दिन नज्जाशी (हब्शा के बादशाह) की वफ़ात हुई तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आज एक नेक मर्द इस दुनिया से चला गया, उठो और अपने भाई अस्हमा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो। (राजेअ: 1317)

तशरीह: मा'लूम हुआ कि नज्जाशी मुसलमान हो गया था। जैसा कि दूसरी रिवायत में मज़कूर है मगर इमाम बुखारी (रह) अपनी शर्त पर न होने की वजह से उस रिवायत को यहाँ नहीं लाए और ये बाब जो कायम किया और इसमें जो हदीष बयान की उससे भी उसका इस्लाम लाना प्राबित हुआ। इस हदीष से नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ना भी प्राबित हुआ। जो लोग नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना के इंकारी हैं उनके पास मना की कोई सरीह सहीह हदीष मौजूद नहीं है। अस्हमा उसका लक़ब था असल नाम अतिया था।

تَصْنَعُ أَنْتَ؟ قَالَ: أَرُدُّ فِي نَفْسِي))

[راجع: 1199]

٣٨٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو اسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بَلَّغْنَا مَخْرَجَ النَّبِيِّ ﷺ وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ، فَرَكِبْنَا سَفِينَةً، فَأَلْفَقْنَا سَفِينَتَنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ، فَأَلْفَقْنَا جَعْفَرُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ، فَأَلْفَقْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا، فَأَلْفَقْنَا النَّبِيَّ ﷺ حِينَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((لَكُمْ أَنْتُمْ يَا أَهْلَ السَّفِينَةِ هِجْرَتَانِ))

[راجع: 3136]

٣٨- بَابُ مَوْتِ النَّجَاشِيِّ

٣٨٧٧- حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ مَاتَ النَّجَاشِيُّ: ((مَاتَ الْيَوْمَ رَجُلٌ صَالِحٌ، فَقومُوا فَصَلُّوا عَلَى أَخِيكُمْ اصْحَمَةَ))

[راجع: 1317]

3878. हमसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन जुरैअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अत्रा बिन अबी रिबाह ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने नज़ाशी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी थी और हम सफ़ बाँधकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए। मैं दूसरी या तीसरी सफ़ में था। (राजेअ: 1317)

3879. मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उनसे सुलैम बिन हय्यान ने, कहा हमसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया, उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अस्हमा नज़ाशी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और चार बार आप (ﷺ) ने नमाज़ में तक्बीर कही। यज़ीद बिन हारून के साथ इस हदीष को अब्दुस्समद बिन अब्दुल वारिष ने भी (सुलैम बिन हय्यान) से रिवायत किया है। (राजेअ: 1317)

3880. हमसे जुबैर बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद (इब्राहीम बिन सअद) ने बयान किया, उनसे सल्लेह बिन कीसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हब्शा के बादशाह नज़ाशी की मौत की ख़बर उसी दिन दे दी थी जिस दिन उनका इंतिक़ाल हुआ था और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अपने भाई की मफ़िरत के लिये दुआ करो। (राजेअ: 1245)

3881. और सल्लेह से रिवायत है कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने (नमाज़े जनाज़ा के लिये) ईदगाह में सहाबा (रज़ि.) को सफ़बस्ता खड़ा किया और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी आप (ﷺ) ने चार मर्तबा तक्बीर कही थी।

३८७८- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ حَمَادٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ قَتَادَةَ أَنَّ عَطَاءَ حَدَّثَهُمْ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ صَلَّى عَلَى النَّجَاشِيِّ، فَصَلَّاهُ وَزَافَهُ، فَكُنْتُ فِي الصَّفِّ الْآخِي أَوْ الْثَالِثِ. [راجع: ١٣١٧]

३८७९- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ عَنْ سُلَيْمِ بْنِ حَيَّانٍ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى عَلَى أَصْحَمَةَ النَّجَاشِيِّ فَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعًا)). تَابِعَهُ عَبْدُ الصَّمَدِ.

[راجع: ١٣١٧]

३८८०- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَابْنُ الْمُسْتَبِيبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَعَى لَهُمُ النَّجَاشِيَّ صَاحِبَ الْحَبَشَةِ فِي الْيَوْمِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ، وَقَالَ: ((اسْتَغْفِرُوا لِأَخِيكُمْ)). [راجع: ١٢٤٥]

३८८१- وَعَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسْتَبِيبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُمْ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَفَّ بِهِمْ فِي الْمُصَلَّى فَصَلَّى عَلَيْهِ وَكَبَّرَ أَرْبَعًا)).

(राजेअ: 1245)

[راجع: 1245]

इन तमाम अहादीष में किसी न किसी तरह हब्शा का जिक्र है इसीलिये हज़रत इमाम बुखारी (रह) इन अहादीष को यहाँ लाए। इन तमाम अहादीष से नज्जाशी का नमाजे जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ा जाना भी प्राबित होते हैं अगरचे कुछ हज़रत ने यहाँ मुख्तलिफ़ तावीलें की हैं मगर उनमें कोई वज़न नहीं है सहीह वही है जो ज़ाहिर रिवायात के मन्कूला अल्फ़ाज़ से प्राबित होता है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब 39 : नबी करीम (ﷺ) के खिलाफ़ मुशिकीन का अहद व पैमान करना

۳۹- بَابُ تَقَاسُمِ الْمُشْرِكِينَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

तशरीह: हुआ ये कि जब कुरैश ने देखा कि आप (ﷺ) के अरूहाब अमन की जगह या'नी मुल्के हब्श पहुँच गये और इधर उमर (रज़ि.) ने इस्लाम कुबूल किया चारों तरफ़ इस्लाम फैलने लगा तो अदावत व हसद के जोश में उन्होंने एक इक्कारनामा तैयार किया जिसका मज़मून ये था कि बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब से निकाह, ख़रीद व फ़रोख़्त कोई मामला उस वक़्त तक न करें जब तक वो आँहज़रत (ﷺ) को हमारे हवाले न कर दें। ये इक्कारनामा लिखकर का'बा के अंदर लटकाया गया। एक मुद्त के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने जो बनी हाशिम के साथ एक दूसरी घाटी में रहते थे और जहाँ पर बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब को सख़्त तकलीफ़ें हो रही थीं अबू तालिब अपने चचा से फ़र्माया कि उस इक्कारनामे को दीमक चाट गई सिर्फ़ अल्लाह का नाम उसमें बाक़ी है। अबू तालिब ने कुरैश के कुपफ़ारों से कहा मेरा भतीजा ये कहता है कि तुम का'बा के अंदर उस इक्कारनामे को देखो अगर उसका बयाँ सच है तो हम मरने तक कभी इसको हवाले नहीं करने के और अगर उसका बयान झूठ निकले तो हम इसको तुम्हारे हवाले कर देंगे। तुम मारो या ज़िन्दा रखो जो चाहो करो। काफ़िरों ने का'बा खोला और उस इक्कारनामे को देखा तो वाक़ई सारे हुरूफ़ को दीमक चाट गई थी सिर्फ़ अल्लाह का नाम बाक़ी था। उस वक़्त क्या कहने लगे अबू तालिब तुम्हारा भतीजा जादूगर है। कहते हैं जब आँहज़रत (ﷺ) ने अबू तालिब को ये किस्सा सुनाया तो उन्होंने पूछा तुमको कहाँ से मा'लूम हुआ। क्या तुमको अल्लाह ने ख़बर दी आपने फ़र्माया हाँ। (वहीदी)

7 नबवी में ये ह्रादषा पेश आया था तीन साल तक ये तर्क मवालात कायम रहा, उसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल करीम (ﷺ) को उससे नजात बख़शी जिसकी मुख्तसर कैफ़ियत ऊपर मज़कूर हुई है।

3882. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब जंगे हुनैन का क़स्द किया तो फ़र्माया इंशाअल्लाह कल हमारा क़याम ख़ैफ़ बनी किनाना में होगा जहाँ मुशिकीन ने काफ़िर रहने के लिये अहदो-पैमान किया था।

(राजेअ: 1579)

۳۸۸۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ أَرَادَ حُنَيْنًا: ((مَنْزِلُنَا غَدًا - إِنْ شَاءَ اللَّهُ - بَيْنَ كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)). [راجع: 1589]

बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है कि मुशिकीन ने ख़ैफ़ बनी किनाना में कुफ़्र पर पुख्तगी का अहद किया था जिसे अल्लाह ने बाद में टुकड़े-टुकड़े करा दिया और उनकी नस्लें इस्लाम में दाख़िल हो गई।

बाब 40 : अबू तालिब का वाक़िया

۴۰- بَابُ قِصَّةِ أَبِي طَالِبٍ

ये आँहजरत (ﷺ) के सगे चचा थे। आप (ﷺ) के वालिद माजिद अब्दुल्लाह के हक्कीकी भाई। ये जब तक ज़िन्दा रहे आप (ﷺ) की पूरी हिमायत और हिफ़ाज़त करते रहे मगर कौमी पासदारी की वजह से इस्लाम कुबूल करना मज़ीब नहीं हुआ।

3883. हमसे मुसहद ने बयान किया। कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान शौरी ने, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन इमैर ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन हारिष ने बयान किया, उनसे हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा आप (ﷺ) अपने चचा (अबू तालिब) के क्या काम आए कि वो आप (ﷺ) की हिमायत किया करते थे और आप (ﷺ) के लिये गुस्सा होते थे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया (इसी वजह से) वो सिर्फ़ टखनों तक जहन्नम में हैं अगर मैं उनकी सिफ़ारिश न करता तो वो दोज़ख़ की तह में बिलकुल नीचे होते। (दीगर मक़ाम : 6208, 6572)

3884. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें उनके वालिद मुसय्यिब बिन हज़न सहाबी (रज़ि.) ने कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त करीब हुआ तो नबी करीम (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ ले गये उस वक़्त वहाँ अबू जहल भी बैठा हुआ था। आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया, चचा! कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह एक मर्तबा कह दीजिए, अल्लाह की बारगाह में (आपकी बख़्शिश के लिये) एक यही दलील मेरे हाथ आ जाएगी, इस पर अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा, ऐ अबू तालिब! क्या अब्दुल मुत्तलिब के दीन से तुम फिर जाओगे! ये दोनों उन ही पर ज़ोर देते रहे और आख़िरी कलिमा जो उनकी जुबान से निकला, वो ये था कि मैं अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर कायम हूँ। फिर आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उनके लिये उस वक़्त तक दुआए मफ़िरत करता रहूँगा जब तक मुझे इससे मना न कर दिया जाएगा। चुनौचे (सूरह बरात में) ये आयत नाज़िल हुई, नबी के लिये और मुसलमानों के लिये मुनासिब नहीं कि मुश्रिकीन के लिये दुआ-ए-मफ़िरत करें ख़वाह उनके नाते वाले ही क्यों न हों जबकि उनके सामने ये बात वाजेह हो गई कि वो दोज़ख़ी हैं, और सूरह क़सस में ये आयत नाज़िल हुई, बेशक जिसे आप चाहे हिदायत नहीं कर सकते।

۳۸۸۳- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ الْخَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَا أَغْنَيْتَ عَنْ عَمَلِكَ، فَوَلَّى اللَّهُ كَانَ يَحُوطُكَ وَيَقْضِي لَكَ، قَالَ: ((هُوَ فِي ضَحْطَاحٍ مِنْ نَارٍ، وَلَوْ لَا أَنَا لَكَانَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ)).

[سرماء في : ۶۲۰۸، ۶۵۷۲.]

۳۸۸۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ ابْنِ الْمُسْتَبِيبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ أَبَا طَالِبٍ لَمَّا خَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ دَخَلَ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ - وَعِنْدَهُ أَبُو جَهْلٍ - فَقَالَ: ((أَيُّ عَمَلٍ قُلْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ كَلِمَةً أَحَاجُ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللَّهِ)). فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ: يَا أَبَا طَالِبٍ، تَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَلْا يَكَلِّمَاهُ حَتَّى قَالَ: أَخِيرَ شَيْءٍ كَلَّمْتُهُمْ بِهِ: عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَسْتَغْفِرُونَ لَكَ، مَا لَمْ أَتِهِ عَنْهُ)). فَتَوَلَّى: ((مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَى قُرْبَى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ)) [التوبة: ۱۱۳]، وَتَوَلَّى: ((إِنَّكَ لَا

(राजेअ : 1360)

3885. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा हमसे यजीद बिन अब्दुल्लाह इब्ने इल्हाद ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन खब्बाब ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) की मज्लिस में आप (ﷺ) के चचा का जिक्र हो रहा था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया शायद क़यामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअत काम आ जाए और उन्हें सिर्फ़ टखनों तक जहन्नम में रखा जाए जिससे उनका दिमाग़ ख़ौलेगा।

रिवायत में अबू तालिब का जिक्र है यही बाब से मुनासबत की वजह है।

हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबू हाजिम और दरावदी ने बयान किया यजीद से इसी मज़कूर हदीष की तरह, अल्बत्ता इस रिवायत में ये भी है कि अबू तालिब के दिमाग़ का भेजा उससे ख़ौलेगा। (दीगर मक़ाम : 6564)

बाब 41 : बैतुल मक्दिस तक जाने का किस्सा

और अल्लाह तआला ने सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया, पाक ज़ात है वो जो अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक ले गया।

3886. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कि मुझसे कहा अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया था कि जब कुरैश ने (मेअराज के वाक़िये के सिलसिले में) मुझको झुठलाया था तो मैं हत्तीम में खड़ा हो गया और अल्लाह तआला ने मेरे लिये बैतुल मक्दिस को रोशन कर दिया और मैंने उसे देखकर कुरैश से उसके पते और निशान बयान करना शुरू कर दिये।

(दीगर मक़ाम : 4710)

تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتُ ﴿[القصص : २६].

[راجع : ١٣٦٠]

٣٨٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنَا ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ خَبَابٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ - وَذَكَرَ عِنْدَهُ عَمَهُ فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ تَفْعُهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَجْعَلُ فِي صَحْصَاحٍ مِنَ النَّارِ يَنْلُغُ كَفَنِيهِ يَغْلِي مِنْهُ دِمَاعُهُ)). حَدَّثَنَا إِسْرَاهِيلُ بْنُ

حَمْزَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ عَنْ يَزِيدَ بِهِذَا وَقَالَ: تَغْلِي مِنْهُ أُمُّ دِمَاعِهِ. [طرمه ي : ٦٥٦٤].

٤١- بَابُ حَدِيثِ الْإِسْرَاءِ، وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿سَبَّحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى﴾ ٣٨٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ نَكِيرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الْحِجْرِ تَحْلِي اللَّهُ لِي نَيْتَ الْمُقَدَّسِ، فَطَفَقْتُ أَخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ)).

[طرمه ي : ٤٧١٠]

तशरीह : मेअराज की रात को आप (ﷺ) उम्मे हानी के घर में थे, तो मस्जिदे हराम से हरम की जमीन मुराद है। आप (ﷺ) का मेअराज मक्का से बैतुल मक्दिदस तक तो क़तई है। जो कुआन पाक से प्राबित है इसका मुंकिर कुआन का मुंकिर है और कुआन का मुंकिर काफिर है और बैतुल मक्दिदस से आसमानों तक जाना सहीह हदीष से प्राबित है इसका मुंकिर गुमराह और बिदअती है। हाफिज़ ने कहा अक़षर उलम-ए-सलफ़ और अहले हदीष का ये क़ौल है कि ये मेअराज जिस्म और रूह दोनों के साथ बेदारी में हुआ। यही अम्मे हक़ है। बैहक्की की रिवायत में यूँ है कि आप (ﷺ) ने जब मेअराज का किस्सा बयान किया तो कुफ़फ़ारे कुरैश ने इंकार किया और अबूबक्र (रज़ि.) के पास आए उन्होंने आप (ﷺ) की तस्दीक़ कर दी उस दिन से उनका लक़ब सिदीक़ (रज़ि.) हो गया। बज़्ज़ार ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है कि बैतुल मक्दिदस की मस्जिद लाई गई और अक़ील के घर के पास रख दी गई। मैं उसको देखता जाता और उसकी सिफ़त बयान करता जाता था। कुछ ने कहा कि इसरा और मेअराज दोनों अलग अलग रातों में हुए हैं क्योंकि हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने दोनों को अलग अलग बाबों में बयान किया है मगर खुद हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने किताबुस्सलात में ये बाब बाँधा है कि लैलतुल इसरा मे नमाज़ किस तरह फ़र्ज़ हुई। मां लूम हुआ कि इसरा और मेअराज एक ही रात में हुए हैं।

बाब 42 : मेअराज का बयान

٤٢ - بَابُ الْمِعْرَاجِ

तशरीह : लफ़्ज़े मेअराज अरज यअरुजु से है जिसके मा'नी चढ़ने के हैं यहाँ आँहज़रत (ﷺ) का आसमानों की तरफ़ चढ़ना मुराद है। ये मुअजिज़ा 27 रजब 10 नबवी में पेश आया जबकि अल्लाह पाक ने रातों रात अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से बैतुल मक्दिदस और बैतुल मक्दिदस से आसमानों की सैर कराई जैसा कि तफ़सील के साथ यहाँ हदीष में वाक़ियात मौजूद हैं। सहीह यही है कि इसरा और मेअराज दोनों हालते बेदारी में जिस्म और रूह दोनों के साथ हुए और ये ऐसा अहम और मुस्तनद वाक़िया है जिसे 28 सहाबियों ने रिवायत किया है और आँहज़रत (ﷺ) का ये वो मुअजिज़ा है जो आप (ﷺ) की सारे अंबिया पर फ़ौक़ियत प्राबित करता है।

3887. हमसे हदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माम बिन य़ह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे हज़रत मालिक बिन स़असआ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उनसे शबे मेअराज का वाक़िया बयान किया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं हत्तीम में लटा हुआ था। कुछ दफ़ा क़तादा ने हत्तीम के बजाय हिज्र बयान किया कि मेरे पास एक साहब (जिब्रईल अलैहि.) आए और मेरा सीना चाक किया, क़तादा ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि यहाँ से यहाँ तक। मैंने जारूद से सुना जो मेरे करीब ही बैठे थे। पूछा कि हज़रत अनस (रज़ि.) की इस लफ़्ज़ से क्या मुराद थी? तो उन्होंने कहा कि हलक़ से नाफ़ तक चाक किया, (क़तादा ने बयान किया कि) मैंने हज़रत अनस से सुना, उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) के सीने के ऊपर से नाफ़ तक चाक किया, फिर मेरा दिल निकाला और एक सोने का त़श्त लाया गया जो ईमान से भरा

٣٨٨٧ - حَدَّثَنَا هُدَيْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هُمَامُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَفْصَغَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ حَدَّثَهُمْ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِهِ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَنَا فِي الْخَلِيمِ - وَرُلْنَا قَالَ فِي الْحَبْرِ - مُعْطَطَجًا، إِذْ أَنَابَنِي آتٍ فَقَدْ - قَالَ: وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: فَشَقَّ - مَا بَيْنَ هَذِهِ إِلَى هَذِهِ)). فَقُلْتُ لِلْجَارُودِ وَهُوَ إِلَى جَنِّبِي: مَا يَعْنِي بِهَذَا؟ قَالَ: مِنْ لُغَةِ نَحْرِهِ إِلَى شِعْرَتِهِ - وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ مِنْ قَصَبِهِ إِلَى شِعْرَتِهِ - ((فَاسْتَخْرَجَ قَلْبِي، ثُمَّ أَتَيْتُ بِطَبْطَبٍ مِنْ ذَهَبٍ مَمْلُوءَةٍ إِيْمَانًا، فَغَسَلَ قَلْبِي، ثُمَّ

हुआ था, उससे मेरा दिल धोया गया और पहले की तरह रख दिया गया। उसके बाद एक जानवर लाया गया जो घोड़े से छोटा और गधे से बड़ा था और सफ़ेद! ज़ारुद ने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा अबू हम्ज़ा! क्या वो बुराक़ था? आपने फ़र्माया कि हाँ। उसका हर क़दम उसके मुँतहा-ए-नज़र पर पड़ता था (और हज़रत ॐ ने फ़र्माया कि) मुझे उस पर सवार किया गया और जिब्रईल मुझे लेकर चले आसमाने दुनिया पर पहुँचे तो दरवाज़ा खुलवाया, पूछा गया कौन साहब हैं? उन्होंने बताया कि जिब्रईल (अलैहि.), पूछा गया और आपके साथ कौन साहब है? आपने बताया कि मुहम्मद (ॐ) पूछा गया, क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ। इस पर आवाज़ आई उन्हें खुश आमदीद! क्या ही मुबारक आने वाले हैं वो, और दरवाज़ा खोल दिया। जब मैं अंदर गया तो मैंने वहाँ आदम (अलैहि.) को देखा, जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया ये आपके जड़े अमजद आदम (अलैहि.) हैं, उन्हें सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद नेक बेटे और नेक नबी! जिब्रईल (अलैहि.) ऊपर चढ़े और दूसरे आसमान पर आए वहाँ भी दरवाज़ा खुलवाया, आवाज़ आई कौन साहब आए हैं? बताया कि जिब्रईल (अलैहि.), पूछा गया क्या आपके साथ और कोई साहब भी हैं? कहा मुहम्मद (ॐ), पूछा गया क्या आपको उन्हें बुलाने के लिये भेजा गया था? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ, फिर आवाज़ आई, उन्हें खुश आमदीद। क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो। फिर दरवाज़ा खुला और मैं अंदर गया तो वहाँ यह्या और ईसा (अलैहि.) मौजूद थे। ये दोनों ख़ालाज़ाद भाई हैं। जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया ये ईसा और यह्या (अलैहि.) हैं, इन्हें सलाम कीजिए मैंने सलाम किया और उन हज़रात ने मेरे सलाम का जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद नेक नबी और नेक भाई! यहाँ से जिब्रइल (अलैहि.) मुझे तीसरे आसमान की तरफ़ लेकर चढ़े और दरवाज़ा खुलवाया। पूछा गया कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि जिब्रइल (अलैहि.)। पूछा गया और आपके साथ कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ॐ) पूछा गया क्या उन्हें लाने के लिये आपको भेजा गया था?

حُشِيَ، ثُمَّ أُتِيَتْ بِدَابَّةٍ دُونَ الْبَقْلِ وَفَوْقَ الْجِمَارِ أَيُّهَا) - فَقَالَ لَهُ الْجَارُودُ : هُوَ الْبَرَاقُ يَا أَبَا حَمْزَةَ؟ قَالَ أَنَسٌ : نَعَمْ - يَصْنَعُ خَطْوَهُ عِنْدَ أَقْصَى طَرَفِهِ، فَحُمِلْتُ عَلَيْهِ، فَانْطَلَقَ بِي جِبْرِيلُ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الدُّنْيَا فَاسْتَفْتَحَ، فَقِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرَحَبًا بِهِ، فَيَعْمُ الْمَسْجِدَ جَاءَ، فَفُتِحَ. فَلَمَّا خَلَعْتُ فِثَاءَ أَبِي آدَمَ، فَقَالَ: هَذَا أَبُوكَ آدَمُ، فَسَلَّمَ عَلَيْهِ. فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ السَّلَامَ ثُمَّ قَالَ: مَرَحَبًا بِالْأَبْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ فَاسْتَفْتَحَ. قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرَحَبًا بِهِ، فَيَعْمُ الْمَسْجِدَ جَاءَ. فَفُتِحَ. فَلَمَّا خَلَعْتُ إِذَا بِحَتَّى وَعِيسَى وَهَمَّا ابْنَا الْخَالَةِ. قَالَ: هَذَا بِحَتَّى وَعِيسَى فَسَلَّمَ عَلَيْهِمَا، فَسَلَّمْتُ، فَرَدَّا، ثُمَّ قَالَ: مَرَحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ الثَّالِثَةِ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرَحَبًا بِهِ فَيَعْمُ الْمَسْجِدَ جَاءَ. فَفُتِحَ، فَلَمَّا خَلَعْتُ إِذَا بِيُوسُفَ، قَالَ: هَذَا

जवाब दिया कि हाँ। इस पर आवाज़ आई उन्हें खुश आमदीद। क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो, दरवाज़ा खुला और जब मैं अंदर दाखिला हुआ तो वहाँ यूसुफ़ (अलैहि.) मौजूद थे। जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया ये यूसुफ़ (अलैहि.) हैं इन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया तो उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद नेक नबी और नेक भाई! फिर जिब्रईल (अलैहि.) मुझे लेकर ऊपर चढ़े और चौथे आसमान पर पहुँचे दरवाज़ा खुलवाया तो पूछा गया कौन साहब हैं? बताया कि जिब्रईल (अलैहि.)! पूछा गया और आपके साथ कौन है? कहा कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा क्या इन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ कहा कि उन्हें खुश आमदीद क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो! अब दरवाज़ा खुला जब मैं वहाँ पहुँचा तो जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया ये इदरीस (अलैहि.) हैं इन्हें सलाम कीजिए, मैंने उन्हें सलाम किया और उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद पाक भाई और नेक नबी। फिर मुझे लेकर पाँचवें आसमान पर आए और दरवाज़ा खुलवाया पूछा गया कौन साहब हैं? जवाब दिया कि जिब्रईल (अलैहि.), पूछा गया आपके साथ कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा गया कि इन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ अब आवाज़ आई खुश आमदीद! क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो, यहाँ तक मैं हारून (अलैहि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो जिब्रईल (अलैहि.) ने बताया कि आप हारून (अलैहि.) हैं, इन्हें सलाम कीजिए, मैंने उन्हें सलाम किया उन्होंने जवाब के बाद फ़र्माया खुश आमदीद नेक नबी और नेक भाई! यहाँ से लेकर मुझे आगे बढ़े और छठे आसमान पर पहुँचे और दरवाज़ा खुलवाया। पूछा गया कौन साहब आए हैं? बताया कि जिब्रईल (अलैहि.), आपके साथ कोई दूसरे साहब भी आए हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा गया क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ। फिर कहा उन्हें खुश आमदीद क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो। मैं जब वहाँ मूसा (अलैहि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया कि ये मूसा (अलैहि.) हैं इन्हें सलाम कीजिए, मैंने सलाम किया और उन्होंने जवाब के बाद फ़र्माया, खुश आमदीद नेक नबी

يُوسُفُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ النَّبِيِّ وَالصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الرَّابِعَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَبِعِمْ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَفَتَحَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ لِإِذَا إِدْرِيسُ، قَالَ: هَذَا إِدْرِيسُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: قَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَبِعِمْ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ لِإِذَا هَارُونُ. قَالَ: هَذَا هَارُونُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ السَّادِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَبِعِمْ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ لِإِذَا مُوسَى، قَالَ: هَذَا مُوسَى فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالْأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. فَلَمَّا تَجَاوَزْتُ بَكَى. قِيلَ لَهُ: مَا يَبْكُكَ؟ قَالَ: أَبْكِي

और नेक भाई! जब मैं आगे बढ़ा तो वो रोने लगे किसी ने पूछा कि आप क्यों रो रहे हैं? तो उन्होंने फ़र्माया कि मैं इस पर रो रहा हूँ कि ये लड़का मेरे बाद नबी बनाकर भेजा गया लेकिन जन्नत में इसकी उम्मत के लोग मेरी उम्मत से ज्यादा होंगे। फिर जिब्रईल (अलैहि.) मुझे लेकर सातवें आसमान की तरफ़ गये और दरवाज़ा खुलवाया। पूछा गया कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि जिब्रईल (अलैहि.)। पूछा गया और आपके साथ कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि जिब्रईल (अलैहि.)। पूछा आपके साथ कौन साहब हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा गया क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ। कहा कि उन्हें खुश आमदीद, क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो, मैं जब अंदर गया तो इब्राहीम (अलैहि.) तशरीफ़ रखते थे। जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया कि ये आपके जड़े अमजद हैं, उन्हें सलाम कीजिए। ओहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उनको सलाम किया तो उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद नेक नबी और नेक बेटे! फिर सिदरतुल मुन्तहा को मेरे सामने कर दिया गया, मैंने देखा कि उसके फल मुक़ाम हिज्र के मटकों की तरह (बड़े बड़े) थे और उसके पत्ते हाथिया के कान की तरह थे। जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया कि ये सिदरतुल मुन्तहा है। वहाँ मैंने चार नहरें देखाँ दो बाज़िनी और दो ज़ाहिरी। मैंने पूछा ऐ जिब्रईल (अलैहि.)! ये क्या हैं? उन्होंने बताया कि जो दो बाज़िनी नहरें हैं वो जन्नत से ता'ल्लुक रखती हैं और दो ज़ाहिरी नहरें नील और फ़रत हैं। फिर मेरे सामने बैतुल मअमूर को लाया गया, वहाँ मेरे सामने एक गिलास में शराब एक में दूध और एक में शहद लाया गया। मैंने दूध का गिलास ले लिया तो जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया यही फ़ितरत है और आप इस पर क़ायम हैं और आपकी उम्मत भी! फिर मुझ पर रोज़ाना पचास नमाज़ें फ़र्ज की गईं मैं वापस हुआ और मूसा (अलैहि.) के पास से गुज़रा तो उन्होंने पूछा किस चीज़ का आप (ﷺ) को हुक्म हुआ? मैंने कहा कि रोज़ाना पचास वक़्त की नमाज़ों का, मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया लेकिन आपकी उम्मत में इतनी त़ाक़त नहीं है। इससे पहले मेरा वास्ता लोगों से पड़ चुका है और बनी इस्राईल का मुझे तलख़ तजुर्बा है। इसलिये आप अपने रब के हुज़ूर में दोबारा जाइये और अपनी उम्मत पर

لَا غَلَامًا يُعِثُّ بَعْدِي يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أَكْثَرِ مِمَّنْ يَدْخُلُهَا مِنْ أَتَمِّي. ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ السَّابِعَةِ، فَاسْتَفْتَحَ جِبْرِيلُ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ بُعِثَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَيُعَمُّ الْمَسْجِدَ جَاءَ. فَلَمَّا خَلَعْتُ لِإِذَا إِبْرَاهِيمُ، قَالَ: هَذَا أَبُوكَ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ. قَالَ: سَلِّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ السَّلَامَ، قَالَ: مَرْحَبًا بِالْإِبْرَاهِيمِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ رَفَعَتْ لِي مِيزَةَ الْمُتَنَهَى، لِإِذَا نَقَعًا مِثْلَ لَبَلٍ هَجَرٍ، وَإِذَا وَرَقَهَا مِثْلَ أَذَانِ الْفَيْلَةِ. قَالَ: هَذِهِ مِيزَةُ الْمُتَنَهَى، وَغَدَا أَرْبَعَةُ أَنْهَارٍ: نَهْرَانِ بَاطِنَانِ، وَنَهْرَانِ ظَاهِرَانِ. فَقُلْتُ: مَا هَذَانِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: أَمَّا الْبَاطِنَانِ فَنَهْرَانِ لِي الْجَنَّةِ، وَأَمَّا الظَّاهِرَانِ فَالنَّيْلُ وَالْفَرَاتُ. ثُمَّ رَفَعَ لِي الْبَيْتَ الْمَعْمُورُ. ثُمَّ أَيْتَ بِنَاءً مِنْ خَمْرٍ وَبِنَاءً مِنْ لَبَنٍ وَبِنَاءً مِنْ عَسَلٍ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ، فَقَالَ: هِيَ الْفَيْطْرَةُ أَنْتَ عَلَيْهَا وَأَمَّا أَنْتَ. ثُمَّ لُفِضْتُ عَلَى الصَّلَوَاتِ خَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ، فَرَجَعْتُ فَمَرَرْتُ عَلَى مُوسَى، فَقَالَ: بَمَا أَمِرتُ؟ قَالَ: أَمِرتُ بِخَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ. قَالَ: إِنْ أَمِنْتَ لَا تَسْتَطِيعُ خَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ، وَإِنِّي وَافِقٌ لَكَ جَرَّبْتُ النَّاسَ قَبْلَكَ، وَعَالَجْتُ نَبِيَّ إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ، فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ

की बिना पर नहीं था आलमे आखिरत में हसद का माहा तो हर मा' मूली मोमिन के दिल से भी दूर कर दिया जाएगा लिहाजा ये कैसे मुम्किन है कि हज़रत मूसा (अलैहि.) जैसा बरगुजीदा नबी हसद कर सके। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने आँहज़रत (ﷺ) को लफ़्जे गुलाम से ता' बीर किया जो आप (ﷺ) की ता' ज़ीम के तौर पर था व क्रद युल्लकुल्लुलामु व युरादु बिहितरियुशबाबु या' नी कभी लफ़्जे गुलाम का इलाक़ा त्राक़तवर नौजवान मर्द पर भी किया जाता है और यहाँ यही मुराद है (लम्मात)। हज़रत शैख़ मुल्ला अली क़ारी (रह) ने फ़र्माया कि हाज़तर्तीबु अल्लज़ी वक्रअ फ़ी हाज़ल्हदीषि हुव अम्हहुरियायति व अर्जहुहा या' नी अबिया किराम की मुलाक़ात जिस तर्तीब के साथ इस ख़ियायत में मज़कूर हुई है यही ज़्यादा सही है और इसी को तरजीह हासिल है। तर्तीब को मुकरर शाऐकीने हदीष याद फ़र्मा लें कि पहले आसमान पर हज़रत आदम (अलैहि.) से मुलाक़ात हुई, दूसरे आसमान पर हज़रत यहा और ईसा (अलैहि.) से, तीसरे आसमान पर हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) से मुलाक़ात हुई, चौथे आसमान पर इदरीस (अलैहि.) से, पाँचवें पर हज़रत हारून (अलैहि.) से और छठे पर हज़रत मूसा (अलैहि.) से, सातवें पर हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) से शफ़े मुलाक़ात हासिल हुआ।

ख़ियायत में लफ़्जे सिरदतुल मुतहा मज़कूर हुआ है। लफ़्जे सिरदत बेरी के पेड़ को कहते हैं, व सुम्मियत बिहा लिअन्न इल्मल्मलाइकति यन्तही इलैहा व लम यताजवज़हा अहदुन इल्ला रसूलुल्लाहि (ﷺ) व हुकिय अन अब्दिल्लाहि इब्नि मस्ऊदिन रज़ि. अन्नहा सुम्मियत बिज़ालिक लिकौनि यन्तही इलैहा मा यहबितु मिन फौक़िहा व मा यस्अदु मिन तहतहा (मिर्कात)। या' नी उसका ये नाम इसलिये हुआ कि फ़रिश्तों की मा' लूमात उस पर ख़त्म हो जाती हैं और उस जगह से आगे किसी का गुजर नहीं हो सका है ये शफ़े सिर्फ़ सय्यदना मुहम्मदुरसूलुल्लाह (ﷺ) को हासिल हुआ कि आप उससे भी आगे गुजर गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि उसका ये नाम इसलिये रखा गया कि ऊपर से नीचे आने वाली और नीचे से ऊपर जाने वाली हर चीज़ इतिहा यहाँ ख़त्म हो जाती है।

ख़ियायत में लफ़्जे बैतुल मअमूर आया है, जो का' बा मुकरमा के मुक़ाबिल सातवें आसमान पर आसमान वालों का क़िब्ला है और जैसी ज़मीन पर का' बा शरीफ़ की हुर्मत है। ऐसे ही आसमानों पर बैतुल मअमूर की हुर्मत है। लफ़्जे फ़ि़तरत से मुराद इस्लाम और उस पर इस्तिफ़ामत है। आप (ﷺ) के सामने नहरों का ज़िक्र आया, व फ़ी शहि मुस्लिम क़ाल इब्नु मुकातिल अल्बातिनानि हुवस्सलसबील वल्कौषर वज़्ज़ाहिर अन्ननील वल्फ़रात यख़रूजानि मिन अस्तिहा धुम्म यसीरानि हैषु अरादल्लाहु तआला धुम्म यख़रूजानि मिनल्अर्ज़ि व यसीरानि फ़ीहा व हाज़ा ला यम्मज़हू शरउन व ला अक्लुन व हुव जाहिरुल्हदीष फवजबल्मसीर इलैहि मिर्कात या' नी दो बातिनी नहरों से मुराद सलसबील और कौषर हैं और दो ज़ाहिरी नहरों से मुराद नील और फ़रात हैं जो उसकी जड़ से निकलती हैं फिर अल्लाह तआला जहाँ चाहता है वहाँ वहाँ वो फैलती हैं फिर वो नील व फ़रात ज़मीन पर ज़ाहिर होकर चलती हैं। येन अज़ल के ख़िलाफ़ हैन शरअ के और हदीष का ज़ाहिर मफ़हूम भी यही है जिसको तस्लीम करना ज़रूरी है। नमाज़ के बारे में आँहज़रत (ﷺ) की बमश्वरा हज़रत मूसा (अलैहि.) बार बार मुराज़िअत तख़रीफ़ के लिये थी। अल्लाह पाक ने शुरू में पचास वक़्त की नमाज़ों का हुक्म फ़र्माया, मगर इस बार बार दरख़वास्त करने पर अल्लाह ने रहम फ़र्माकर सिर्फ़ पाँच वक़्त की नमाज़ों को रखा मगर षवाब के लिये वही पचास का हुक्म कायम रहा इसलिये कि उम्मत मुहम्मदिया की खुसूसियात में से है कि उसको एक नेकी का दस गुना षवाब मिलता है।

वाक़िया मेअराज के बहुत से असरार व हुक्म हैं जिनको हुब्जतुल हिन्द शाह वलीउल्लाह मुहदिष देहलवी (रह) ने अपनी मशहूर किताब हुब्जतिल्लाहिल बालिगा में बड़ी तफ़्सील के साथ बयान किया है। अहले इल्म को उनका मुतालआ ज़रूरी है इस मुख़्तसर मे उस तत्वील की गुंजाइश नहीं है। अल्लाह पाक क़ायमते के दिन मुझ हकीर फ़कीर, सर से पैर तक गुनाहगार खादिम मुतर्जिम को और तमाम क़द्रदाने कलामे हबीब पाक (ﷺ) को अपने दीदार से मुशरफ़ फ़र्माकर अपने हबीब (ﷺ) के लेवा-ए-हन्द के नीचे जमा फ़र्माए आमोन या रब्बल आलमीन।

3888. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम् बिन दीनार ने बयान किया, उनसे इक्दिमा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.)

۳۸۸۸- حَدَّثَنَا الْحَمِيدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

حَدَّثَنَا عَمْرُو عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ

ने अल्लाह तआला के इर्शाद, वमा जअल्नरूयल्लती अरयनाका इल्ला फ़िलतल लिनास (और जो रूइया मैंने आप ﷺ को दिखाया उससे मक्कासद सिर्फ लोगों का इम्तिहान था) फ़र्माया कि इससे रूइया से आँख से देखना ही मुराद है। जो रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस मेअराज की रात में दिखाया गया था जिसमें आप (ﷺ) को बैतुल मक्क़िदस तक ले जाया गया था और कुआन मजीद में अशशजरतुल मल्क़ना का ज़िक्र आया है वो थूहर का पेड़ है। (दीगर मक्क़ाम : 4716, 6613)

ये पेड़ दो ज़ख़ में पैदा होगा अगरचे दुनियावी थूहर की तरह होगा मगर ज़हर और तलख़ी में इस क़दर ख़तरनाक होगा जो अहले दो ज़ख़ के पेट और आँतों को फाड़ देगा, गले में फंस जाएगा। उसके पत्ते अज़गर साँपों के फनों की तरह होंगे। यही मल्क़न पेड़ है जिसका ज़िक्र कुआन मजीद में आया है।

बाब 43 : मक्का में नबी करीम (ﷺ) के पास अंसार के वफ़ूद का आना और बेअते अक़बा का बयान

3889. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैज़ ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद), इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और हमसे अहमद बिन मालेह ने बयान किया, कहा हमसे अम्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन कअब ने जब वो नाबीना हो गये तो वो चलते फिरते वक़्त उनको पकड़कर ले चलते थे, उन्होंने बयान किया कि मैंने कअब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि वो ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक न होने का तवील वाक़िया बयान करते थे इब्ने बुकैर ने अपनी रिवायत में बयान किया कि हज़रत कअब ने कहा कि मैं नबी करीम (ﷺ) के पास अक़बा की रात में हाज़िर था जब हमने इस्लाम पर क़ायम रहने का पुख़्ता अहद किया था, मेरे नज़दीक (लैलतुल अक़बा की बेअत) बद्र की लड़ाई में हाज़री से भी ज़्यादा पसन्द है अगरचे लोगों में बद्र का चर्चा इससे ज़्यादा है।

(राजेअ : 2757)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ﴾ [الإسراء : ٦٠]. قَالَ هِيَ رُؤْيَا هُنَّ أَوْتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ثَلَاثَةُ أَمْوَئٍ بِهِ إِلَى تَمَتُّو الْمَقْدِسِ. قَالَ : ((وَالشَّجَرَةُ الْمَلَكُوتُ فِي الْقُرْآنِ قَالَ هِيَ شَجَرَةُ الرُّقُومِ)).
(صرفه : ٤٧١٦ ، ٦٦١٣).

٤٣- بَابُ وَلُؤْدِ الْأَنْصَارِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِمَكَّةَ، وَبَيْعَةِ الْعَقَبَةِ

٣٨٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ ح. وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَالِكٍ حَدَّثَنَا غُبَسَةُ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ - وَكَانَ لَابِدَ كَعْبٍ حِينَ عَمِيَ - قَالَ : سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزْوَةِ بُؤُوكَ بِطَوْبِهِ. قَالَ ابْنُ بُكَيْرٍ فِي حَدِيثِهِ ((وَلَقَدْ شَهِدْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثَلَاثَةَ الْعَقَبَةِ حِينَ تَوَاقَفْنَا عَلَى الْإِسْلَامِ، وَمَا أَحْبَبُّ أَنْ لِي بِهَا مَشْهَدٌ بَدْرٍ، وَإِنْ كَانَتْ بَدْرٌ أَذْكَرُ لِي النَّاسِ مِنْهَا)). [راجع : ٢٧٥٧]

तशरीह :

जंगे बद्र अव्वल जंग है जो मुसलमानों ने काफ़िरों से की उसमें काफ़िरों के बड़े बड़े सरदार लोग क़त्ल हुए। लैलतुल अक़बा का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। ये वो रात थी जिसमें अंसार ने आँहज़रत (ﷺ) की रिफ़ाक़त (साथ देने का) का क़तई अहद किया था और आप (ﷺ) ने अंसार के बारह नक़ीब मुक़र्रर किये थे। ये एक तारीख़ी रात थी जिसमें कुव्वते इस्लाम की बुनियाद कायम हुई और आँहज़रत (ﷺ) को दिली सकून हासिल हुआ इसीलिये क़अब (रज़ि.) ने उसमें शरीक होना जंगे बद्र में शरीक होने से भी बेहतर समझा।

हदीष में अक़बा का ज़िक्र है। अक़बा घाटी को कहते हैं, ये घाटी मुक़ामुल हिरा और मिना के बीच फैले ऊँचे पहाड़ों के बीच थी, इसी जगह मदीना के बारह लोगों ने 12 वीं नुबुव्वत में रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िरी का शफ़्क़ हासिल किया और मुसलमान हुए, यह पहली बेअते अक़बा कहलाती है। उन लोगों की ता'लीम के लिये आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि.) को उनके साथ मदीना भेज दिया था जो बड़े ही अमीर घराने के लाडले बेटे थे। मगर इस्लाम कुबूल करने के बाद उन्होंने दुनियावी ऐशो-आराम सब भुला दिया, मदीना में उन्होंने बड़ी कामयाबी हासिल की। ये वहाँ असअद बिन जुरारह के घर ठहरे थे। अगले साल 13 नुबुव्वत में 73 मर्द और दो औरतें यज़िब से चलकर मक्का आए और उसी घाटी में उनको दरबारे रिसालत में शफ़्क़ बारयाबी हासिल हुआ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको अपने नूरानी वा'ज़ से मुनव्वर फ़र्माया और उन लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) से मदीना तशरीफ़ लाने की दरख्वास्त की। आप (ﷺ) ने उस दरख्वास्त को कुबूल फ़र्माया जिसे सुनकर ये सब बेहद खुश हुए और आप (ﷺ) के दस्ते मुबारक पर बेअत की। बरा बिन मअरूर (रज़ि.) पहले बुजुर्ग हैं जिन्होंने उस रात सबसे पहले बेअत की थी, यही दूसरी बेअते इक़बा कहलाती है। उन हज़रत में से आँहज़रत (ﷺ) ने बारह अशख़ास को नक़ीब मुक़र्रर फ़र्माया जिस तरह हज़रत ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) ने अपने लिये बारह नक़ीब मुक़र्रर किये थे आँहज़रत (ﷺ) के बारह नक़ीबों के अस्म-ए-गिरामी ये हैं :-

1. असअद बिन जुरारह 2. राफ़ेअ बिन मालिक 3. इबादा बिन सामित 4. सअद बिन रबीआ 5. मुंज़िर बिन अमर 6. अब्दुल्लाह बिन रवाहा 7. बराअ बिन मअरूर 8. अमर बिन हराम 9. सअद बिन इबादा, इन सबका ता'ल्लुक क़बीला ख़ज़रज से था 10. उसैद बिन हुज़ैर 11. सअद बिन ख़ैष्मा 12. अबुल हशीम बिन तैहान ये तीनों क़बीला औस से थे, रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन। या अल्लाह क़यामत के दिन इन सब बुजुर्गों के साथ हम गुनाहगारों का भी हशर फ़र्माइयो आमीन।

3890. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा कि अमर बिन दीनार कहा करते थे कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना उन्होंने बयान किया कि मेरे दो मामू मुझे भी बेअते अक़बा में साथ ले गये थे। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि इब्ने इययना ने बयान किया, उनसे से एक हज़रत बराअ बिन मअरूर (रज़ि.) थे। (दीगर मक़ाम : 3891)

٣٨٩٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: كَانَ عَمْرُو يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((سَمِعْتُ أَبِي خَالَايَ الْعَقْبَةَ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: قَالَ ابْنُ عُثَيْمَةَ: ((أَخَذَهُمَا الْيَرَاءُ بْنُ مَعْرُوفٍ)). [طَرَفُهُ ١: ٣٨٩١]

जो सब अंसार से पहले मुसलमान हुए और सबसे पहले आँहज़रत (ﷺ) से बेअत की।

3891. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उनसे अत्ता ने बयान किया कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा मैं, मेरे वालिद और मेरे दो मामू तीनों बेअते अक़बा करने वालों में शरीक थे। (राजेअ : 3890)

٢٨٩١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ أَبِي جَرِيرٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ عَطَاءٌ قَالَ جَابِرٌ: ((أَنَا وَأَبِي وَخَالَايَ مِنْ أَصْحَابِ الْعَقْبَةَ)). [رَوَاهُ: ١٣٨٩٠]

क़स्तलानी (रह) ने कहा कि जाबिर की माँ का नाम नस्राबा था उनका भाई अलबा और अमर थे। बराअ जाबिर के माम्न थे लेकिन उनकी माँ के अज़ीज़ों में से थे और अरब के लोग माँ के सब अज़ीज़ों को लफ़्जे ख़ाल (माम्न) से याद करते हैं।

3892. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको यअक़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे हमारे भतीजे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उनके चचा ने बयान किया और उन्होंने कहा कि हमें अबू इदरीस आइज़ुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत इबादा बिन स़ामित (रज़ि.) उन स़हाबा में से थे जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बद्र की लड़ाई में शिरक़त की थी और अक़बा की रात आँहज़रत (ﷺ) से अहद किया था, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उस वक़्त आपके पास स़हाबा की एक ज़माअत थी, कि आओ मुझसे इस बात का अहद करो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराओगे, चोरी न करोगे, ज़िना न करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे, अपनी तरफ़ से ग़ढ़कर किसी पर तोहमत न लगाओगे और अच्छी बातों में मेरी नाफ़रमांनी न करोगे, पस जो शख़्स अपने इस अहद पर क़ायम रहेगा उसका अज़्र अल्लाह के ज़िम्मे है और जिस शख़्स ने इसमें कमी की और अल्लाह तआला ने उसे छुपा रहने दिया तो उसका मामला अल्लाह के इख़्तियार में है, चाहे तो उस पर सज़ा दे और चाहे तो माफ़ कर दे। हज़रत इबादा (रज़ि.) ने बयान किया चुनाँचे मैंने आँहज़रत (ﷺ) से उन उमूर पर बेअत की। (राजेअ : 18)

3892- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو إِدْرِيسَ هَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ ((أَنْ عِبَادَةَ بْنَ صَامِتٍ - مِنَ الَّذِينَ هَبَدُوا بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَمِنْ أَصْحَابِهِ لَيْلَةَ الْعَقَبَةِ - أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: وَخَوْلَةُ عَصَانَةُ مِنْ أَصْحَابِهِ: ((تَعَالَوْا يَأْبِغُوا عَلَيَّ أَنْ لَا تُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا، وَلَا تَسْرِقُوا، وَلَا تَزْنُوا، وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ وَلَا تَأْتُونَ بَهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ، وَلَا تَعْصُونِي فِي مَعْرُوفٍ. فَمَنْ وَلِيَ مِنْكُمْ فَأَخْرَجَهُ عَلَى اللَّهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَغَوِّبَ بِهِ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ لَهُ كُفَّارَةٌ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَسَتَرَهُ اللَّهُ فَأَمَرَهُ إِلَى اللَّهِ، إِنْ شَاءَ عَاقِبُهُ، وَإِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ))، قَالَ: فَبَيَّعْنَاهُ عَلَى ذَلِكَ)). (راجع: 18)

3893. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सईद ने, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे अबुल खैर मर्रद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अब्दुरहमान सुनाबिही ने और उनसे इबाद बिन स़ामित (रज़ि.) ने बयान किया, मैं उन नकीबों से था जिन्होंने (अक़बा की रात में) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत की थी। आपने बयान किया कि हमने आँहज़रत (ﷺ) से इसका अहद किया था कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे,

3893- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَنِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنِ الصَّنَابِجِيِّ عَنْ عِبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: ((إِنِّي مِنَ النَّقَبَاءِ الَّذِينَ يَأْبِغُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، وَقَالَ: بَيَّعْنَاهُ عَلَى

चोरी नहीं करेंगे, जिना नहीं करेंगे, किसी ऐसे शख्स को क़त्ल नहीं करेंगे जिसका क़त्ल अल्लाह तआला ने हुराम करार दिया है, लूट मार नहीं करेंगे और न अल्लाह की नाफरमानी करेंगे। जन्नत के बदले में, अगर हम अपने इस अहद में पूरे उतरे। लेकिन अगर हमने उसमें कुछ ख़िलाफ़ किया तो उसका फ़ैसला अल्लाह पर है।

(राजेअ: 18)

أَنْ لَا نُشْرِكَ بِاللَّهِ شَيْئًا، وَلَا نَسْرِقَ، وَلَا نَزْنِيَ، وَلَا نَقْتُلَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ، وَلَا نَنْتَهَبَ، وَلَا نَقْضِيَ بِالْحَبْثَةِ إِنْ لَعَنَّا ذَلِكَ، فَإِنْ غَشِينَا مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا كَانَ فَعَاءُ ذَلِكَ إِلَى اللَّهِ).

[راجع: 18]

बाब 44 : हज़रत आइशा (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) का निकाह करना और आप (ﷺ) का मदीना में तशरीफ़ लाना और हज़रत आयशा (रज़ि.) की रुख़्सती का बयान

٤٤ - بَابُ تَزْوِيجِ النَّبِيِّ ﷺ عَائِشَةَ، وَقُدُومِهِ الْمَدِينَةَ، وَبَيَانِهِ بِهَا

तशरीह: हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं। माँ का नाम उम्मे रूम्मान बिनते आमिर बिन इवैमिर है, हिज्रत से तीन साल पहले 10 नबवी में आँहज़रत (ﷺ) से उनका अक्द हुआ। शव्वाल 2 हिजरी में मदीना तय्यिबा में रुख़्सती अमल में आई, आप (ﷺ) की वफ़ात के वक़्त उनकी उम्र 18 साल की थी, बड़ी ज़बरदस्त आलिमा फ़ाज़िला थीं। 58 हिजरी या 57 हिजरी में रमज़ान 17 बुधवार की रात में वफ़ात पाई हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रात में बक़ीअे गरक़द में दफ़न की गई। इस्लामी तारीख़ में इस ख़ातूने आज़म को बड़ी अहमियत हासिल है रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहु।

3894. मुझसे फ़रवा बिन अबी अल् मुशराने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इवई ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मेरा निकाह जब हुआ तो मेरी उम्र छः साल की थी, फिर हम मदीना (हिज्रत करके) आए और बनी हारिष बिन खज़रज के यहाँ क़याम किया। यहाँ आकर मुझे बुख़ार हो गया और उसकी वजह से मेरे बाल झड़ने लगे। फिर मैंने तब तक ख़ूब बाल हो गये फिर एक दिन मेरी वालिदा उम्मे रूम्मान (रज़ि.) आई, उस वक़्त मैं अपनी चन्द सहेलियों के साथ झूला झूल रही थी उन्होंने मुझे पुकारा तो मैं हाज़िर हो गई। मुझे कुछ मा'लूम नहीं था कि मेरे साथ उनका क्या इरादा है। आख़िर उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर घर के दरवाज़े के पास खड़ा कर दिया और मेरा सांस फूला जा रहा था। थोड़ी देर में जब मुझे कुछ सुकून हुआ तो उन्होंने थोड़ा सा पानी लेकर मेरे मुँह और सर पर फेरा। फिर घर के अंदर मुझे ले गई। वहाँ अंसार की चन्द औरतें मौजूद थीं, जिन्होंने मुझे देखकर दुआ दी कि ख़ैरो-बरकत और अच्छा नसीब लेकर आई हो, मेरी माँ ने मुझे उन्हें सौंप दिया और उन्होंने मेरी आराइश

٣٨٩٤ - حَدَّثَنِي قُرُوءَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((تَزَوَّجَنِي النَّبِيُّ ﷺ وَأَنَا بِنْتُ سِتِّ سِنِينَ فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَتَزَلْنَا فِي بَيْتِ الْحَارِثِ بْنِ خَزْرَجٍ، فَوَعِدْتُ فَمَزَقَ شَعْرِي، فَوَلَّى جُمَيْمَةَ، فَأَتَنِي أُمِّي أُمُّ زُوْمَانَ - وَإِنِّي لَفِي أَرْجُوْحَةٍ وَمَعِيَ صَوَابُ لِي - فَصَرَحَتْ بِي فَأَتَيْتُهَا، لَا أَذْرِي مَا تُرِيدُ بِي، فَأَخَذَتْ يَدَيَّ حَتَّى أَوْفَقْتَنِي عَلَى نَابِ الدَّارِ، وَإِنِّي لَأَتَهَجُّ حَتَّى سَكَنَ بَعْضُ نَفْسِي. ثُمَّ أَخَذَتْ شَيْئًا مِنْ مَاءٍ فَمَسَحَتْ بِهِ وَجْهِي وَرَأْسِي، ثُمَّ أَذْخَلَتْنِي الدَّارَ،

की। उसके बाद दिन चढ़े अचानक रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और हुजूर (ﷺ) ने खुद मुझे सलाम किया मेरी उम्र उस वक़्त नौ साल थी।

(दीगर मक़ाम : 3896, 5133, 5134, 5156, 5160)

فَإِذَا بَسُوهُ مِنَ الْأَنْصَارِ فِي الْيَمِينِ، فَقُلْنَا:
عَلَى الْخَيْرِ وَالْبُرْكَ، وَعَلَى خَيْرِ طَائِرٍ.
فَأَسْلَمْتَنِي إِلَيْهِمْ، فَأَصْلَحُوا مِن شَأْنِي، فَلَمْ
يُرْعَيْنِي إِلَّا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ صَحَى فَأَسْلَمْتَنِي
إِلَيْهِ، وَأَنَا يَوْمَئِذٍ بَنْتُ تِسْعَ سِنِينَ).

[أطرافه 3: 3896, 5133, 5134, 5156, 5160]

[5160, 5158, 5160]

तशरीह: हिजाज़ चूँकि गर्म मुल्क है इसलिये वहाँ कुदरती तौर पर लड़के और लड़कियाँ बहुत कम उम्र में बालिग़ हो जाती हैं। इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) की रुख़सती के वक़्त सिर्फ़ नौ साल की उम्र तअज़ुब ख़ेज़ नहीं है। इमाम अहमद की रिवायत में यूँ है कि मैं घर के अंदर गई तो देखा कि आँहज़रत (ﷺ) एक चारपाई पर बैठे हुए हैं आप (ﷺ) के पास अंसार के कई मर्द और औरतें हैं उन औरतों ने मुझको आँहज़रत (ﷺ) की गोद में बिठा दिया और कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये आप (ﷺ) की बीवी हैं, अल्लाह मुबारक करे। फिर वो सब मकान से चली गई। ये मिलाप शव्वाल 2 हिजरी में हुआ।

3895. हमसे मुअल्ला बिन उसैद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वाने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम मुझे दो मर्तबा ख़वाब में दिखाई गई हो। मैंने देखा कि तुम एक रेशमी कपड़े में लिपटी हुई हो और कहा जा रहा है कि ये आप (ﷺ) की बीवी हैं, उनका चेहरा खोलिये। मैंने चेहरा खोलकर देखा तो तुम थीं, मैंने सोचा कि अगर ये ख़वाब अल्लाह तआला की जानिब से है तो वो खुद इसको पूरा कर देगा।

(दीगर मक़ाम : 5078, 5125, 7011, 7012)

٣٨٩٥- حَدَّثَنَا مُعَلَّى حَدَّثَنَا وَهَبٌ عَنْ
هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهَا، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: أَرَيْتُكَ
فِي الْمَنَامِ مَرَّتَيْنِ، أَرَى أُنْكَ فِي سُرْقَةٍ مِنْ
خَزِيرٍ، وَيُقَالُ هَذِهِ امْرَأَتُكَ فَكَشِفْتُ، فَإِذَا
هِيَ أَنْتَ، فَأَقُولُ: إِنَّ يَكُ هَذَا مِنْ عِندِ
اللَّهِ يَمْضِيهِ).

[أطرافه 3: 5078, 5125, 7011, 7012]

3896. मुझसे अबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद (उर्वाने बिन जुबैर) ने बयान किया कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की वफ़ात नबी करीम (ﷺ) की मदीना हिज़रत से तीन साल पहले हो गई थी। आँहज़रत (ﷺ) ने आप (ﷺ) की वफ़ात के तक्रीबन दो साल बाद हज़रत आयशा (रज़ि.) से निकाह किया उस वक़्त उनकी उम्र छः साल थी जब रुख़सती हुई तो वो नौ साल की थीं। (राजेज़: 3894)

٣٨٩٦- حَدَّثَنِي عُيَيْدٌ بْنُ إِسْمَاعِيلَ
حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ:
(تَوَقَّيْتُ خَدِيجَةَ قَبْلَ مَخْرَجِ النَّبِيِّ ﷺ
إِلَى الْمَدِينَةِ بِثَلَاثِ سِنِينَ، فَلَبِثْتُ مَسْتَنِينَ
أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذَلِكَ، وَنَكَحَ عَائِشَةَ وَهِيَ
بَنْتُ سِتِّ سِنِينَ، ثُمَّ بَنَى بِهَا وَهِيَ بَنْتُ
تِسْعَ سِنِينَ).

[راجع: 3894]

बाब 45 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाबे किराम का मदीना की तरफ हिजरत करना

हजरात अब्दुल्लाह बिन जैद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं अंसार का एक आदमी बनकर रहना पसन्द करता और हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि मैंने ख़्वाब देखा कि मैं मक्का से एक ऐसी ज़मीन की तरफ़ हिजरत करके जा रहा हूँ कि जहाँ खज़ूर के बाग़ात बक़़रत हैं, मेरा ज़हन उससे यमामा या हजर की तरफ़ गया, लेकिन ये ज़मीन शहरे यज़्रिब की थी।

3897. हमसे (अब्दुल्लाह बिन जुबैर) हुमायदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने बयान किया, उनसे अज़मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू वार्दिल शक्कीक़ बिन सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ख़्वाब बिन अरम (रज़ि.) की अयादत के लिये गए तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हमने सिर्फ़ अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के लिये हिजरत की थी, अल्लाह तआला हमें उसका अज़्र देगा। फिर हमारे बहुत से साथी इस दुनिया से उठ गये और उन्होंने (दुनिया में) अपने आमाल का फल नहीं देखा। उन्होंने हिजरत मुसअब बिन ड़यैर (रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद किये गये थे और सिर्फ़ एक धारीदार चादर छोड़ी थी। (कफ़न देते वक़्त) जब हम उनकी चादर से उनका सर ढांकते तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँकते तो सर खुल जाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि उनका सर ढाँक दें और पाँव पर इज़्र ख़र घास डाल दें। (ताकि छुप जाए) और हममें ऐसे भी हैं कि (इस दुनिया में भी) उनके आमाल का मेवा पक गया, पस वो उसको चुन रहे हैं।

(राजेअ : 1286)

मतलब ये है कि कुछ लोग तो ग़नीमत और दुनिया का माल व अस्बाब मिलने से पहले गुज़र चुके हैं और कुछ ज़िन्दा रहे, उनका मेवा ख़ूब फला फूला या 'नी दीन के साथ उन्होंने इस्लामी तरक्की व कुशादगी का दौर भी देखा और वो आराम व राहत की ज़िन्दगी भी पा गये। सच है इन्ना मअल इस्सि युसा बेशक तंगी के बाद आसानी होती है।

3898. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे

45 - بَابُ هِجْرَةِ النَّبِيِّ ﷺ

وَأَصْحَابِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ وَأَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ لَا الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الْأَنْصَارِ)). وَقَالَ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ، فَذَهَبَ وَهَلَى إِلَيَّ أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرَ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ)).

۳۸۹۷- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يَقُولُ: ((عَدْنَا خَبَابًا فَقَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُرِيدُ وَجْهَ اللَّهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللَّهِ، فَبِئْنَا مِنْ مَضَى لَمْ يَأْخُذْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، قِيلَ يَوْمَ أَخَذَ وَتَرَكَ نَمْرَةً، فَكُنَّا إِذَا غَطَيْنَا بِهَا رَأْسَهُ بَدَتْ رِجْلَاهُ، وَإِذَا غَطَيْنَا رِجْلَيْهِ بَدَتْ رَأْسُهُ، فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُغْطِيَ رَأْسَهُ وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ شَيْئًا مِنْ إِذْخَرٍ. وَمِنَّا مَنْ أَبْغَضَ لَهُ نَمْرَتَهُ فَهُوَ يَهْدِيهَا)).

[راجع : ۱۲۷۶]

۳۸۹۸- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ

हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा बिन अबी वक्राअ ने, बयान किया कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि आमाल निर्य्यत पर मौकूफ़ हैं। पस जिसका मक्क़सदे हिज़रत दुनिया कमाना हो वो अपने मक्क़सद को हासिल कर सकेगा या मक्क़सदे हिज़रत किसी औरत से शादी करना हो तो वो भी अपने मक्क़सद तक पहुँच जाएगा, लेकिन जिनका हिज़रत से मक्क़सद अल्लाह और उसके रसूल की रज़ामन्दी होगी तो उसी की हिज़रत अल्लाह और उसके रसूल के लिये समझी जाएगी। (राजेअ : 1)

[راجع : ١]

हदीष में हिज़रत का ज़िक्र है, इसलिये यहाँ लाई गई।

3899. मुझसे इस्हाक़ बिन यज़ीद दमिश़की ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू अम्र औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुह बिन अबी लुबाबा ने बयान किया, उनसे मुजाहिद बिन जबर मक्की ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कहा करते थे कि फ़तहे मक्का के बाद (मक्का से मदीना की तरफ़) हिज़रत बाक़ी न रही।

(दीगर मक्क़ाम : 4309, 4310, 4311)

٣٨٩٩- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَمْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عَمْرٍو الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَبْدِ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ عَنْ مُجَاهِدِ بْنِ جَبْرِ الْمَكِّيِّ (أَنْ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقُولُ: لَا هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ)).

[أطرافه في : ٤٣٠٩، ٤٣١٠، ٤٣١١.]

तर्ज़ुम :

या'नी हिज़रत की वो फ़ज़ीलत बाक़ी नहीं रही जो मक्का फ़तह होने से पहले थी, कुछ ने कहा इसका मतलब ये है कि औहज़रत (ﷺ) की तरफ़ हिज़रत नहीं रही उसका ये मतलब नहीं है कि हिज़रत का मशरूअ होना जाता रहा क्योंकि दारुल कुफ़्र से दारुल इस्लाम की हिज़रत वाजिब है जब दीन में खलल पड़ने का डर हो। ये हुक्म क़यामत तक बाक़ी है और इस्माईली की रिवायत में इब्ने उमर (रज़ि.) से इसकी सराहत मौजूद है।

हाफ़िज़ ने कहा हज़रत आइशा (रज़ि.) के क़ौल से ये निकलता है कि हिज़रत उस मुल्क से वाजिब है जहाँ पर अल्लाह की इबादत आज़ादी के साथ न हो सके वरना वाजिब नहीं। मावदी ने कहा अगर मुसलमान दारुल हरब में अपना दीन ज़ाहिर कर सकता है तो उसका हुक्म दारुल इस्लाम का सा होगा और वहाँ ठहरना हिज़रत करने से अफ़ज़ल होगा क्योंकि वहाँ ठहरने से ये उम्मीद है कि दूसरे लोग भी इस्लाम में दाख़िल हों। (वहीदी)

3900. मुझसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे अता बिन अबी रिबाह ने बयान किया कि उबैद बिन उमैर लैषी के साथ मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हमने उनसे फ़तहे मक्का के बाद हिज़रत के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि एक वक़््त था जब मुसलमान अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये

٣٩٠٠- حَدَّثَنِي الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ قَالَ: رَزَتْ عَائِشَةُ مَعَ غُنَيْدِ بْنِ غَمِيرِ اللَّيْثِيِّ، فَسَأَلْنَاهَا عَنِ الْهِجْرَةِ الْيَوْمَ فَقَالَتْ: كَانَ الْمُؤْمِنُونَ يَفِرُّوْا أَخَذَهُمْ بَدِيْبُهُ

अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ अहद करके आता था, उस खतरे की वजह से कि कहीं वो फ़िल्तायें न पड़ जाए लेकिन अब अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया है और आज (सर ज़मीने अरब में) इंसान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है, अल्बत्ता जिहाद और जिहाद की निय्यत का प्रवाब बाक़ी है। (राजेअ: 3080)

3901. मुझसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने बयान किया कि उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अल्लाह! तू जानता है कि उससे ज़्यादा मुझे और कोई चीज़ पसन्दीदा नहीं कि तेरे रास्ते में, मैं उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें (उनके वतन मक्का से) निकाला, ऐ अल्लाह! लेकिन ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारे और उनके बीच लड़ाई का सिलसिला ख़त्म कर दिया है। और अबान बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (ये अल्फ़ाज़ सअद रज़ि. फ़र्माते थे) मिन क़ौमिन कज़बून बिय्यका व अख़जूहू मिन कुरैश या'नी जिन्होंने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया, बाहर निकाल दिया। इससे कुरैश के काफ़िर मुराद हैं।

(राजेअ: 463)

हज़रत सअद को ये गुमान हुआ कि जंगे अहज़ाब में कुफ़ारे कुरैश की पूरी ताक़त लग चुकी है और आख़िर में वो भाग निकले तो अब कुरैश में लड़ने की ताक़त नहीं रही। शायद अब हममें और उनमें जंग न हो।

3902. हमसे मत्तर बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इकिमा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को चालीस साल की उम्र में रसूल बनाया गया था। फिर आप (ﷺ) पर मक्का मुकर्रमा में तेरह साल तक वहा आती रही उसके बाद आप (ﷺ) को हिजरात का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) ने हिजरात की हालत में दस साल गुज़ारे, (मदीना में) जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

3903. मुझसे मत्तर बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह

إِلَى اللَّهِ تَعَالَى إِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَعَاذَ أَنْ يَفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللَّهُ الْإِسْلَامَ، وَالْيَوْمَ يَبْعُدُ رَبُّهُ حَيْثُ شَاءَ، وَلَكِنْ جِهَادَ وَبَيَّةَ)).

(راجع: 3080)

3901- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: هِشَامُ: فَأَخْبَرَنِي أَبِي ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أَجَاهِدَ مِنْ قَوْمٍ كَذَبُوا رَسُولَكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخْرَجُوهُ، اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَصَفْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ)).

وَقَالَ أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ أَخْبَرَنِي عَائِشَةُ: ((مِنْ قَوْمٍ كَذَبُوا نَبِيَّكَ وَأَخْرَجُوهُ مِنْ قُرَيْشٍ)).

(راجع: 463)

3902- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا رَوْحُ حَدَّثَنَا هِشَامُ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بُعِثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِأَرْبَعِينَ سَنَةً، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلَاثَ عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ فَهَاجَرَ عَشْرَ سِنِينَ، وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ)).

3903- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا

बिन इबादा ने बयान किया, कहा हमसे जकरिया बिन इस्हाक ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बुख़वत के बाद मक्का में 13 साल क़याम किया और जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

3904. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मालिक ने बयान किया, उनसे उमर बिन अब्दुल्लाह के मौला अबुन नज़्ज़ने, उनसे इब्ने हनैन ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर बैठे, फिर फ़र्माया अपने एक नेक बन्दे को अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया कि दुनिया की नेअमतों में से जो वो चाहे उसे अपने लिये पसन्द कर ले या जो अल्लाह तआला के यहाँ है (आख़िरत में) उसे पसन्द कर ले। उस बन्दे ने अल्लाह तआला के यहाँ मिलने वाली चीज़ को पसन्द कर लिया। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) रौने लगे और अर्ज़ किया हमारे माँ-बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हों। (हज़रत अबू सईद रज़ि. कहते हैं) हमें हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के उस रौने पर हैरत हुई, कुछ लोगों ने कहा उन बुज़ुर्ग को देखिये, हज़ूर (ﷺ) तो एक बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे अल्लाह तआला ने दुनिया की नेअमतों और जो अल्लाह के पास है उसमें से किसी के पसन्द करने का इख़्तियार दिया था और ये कह रहे हैं कि हमारे माँ-बाप आप हज़ूर पर फ़िदा हों। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ही को उन दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार दिया गया और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हममें सबसे ज़्यादा इस बात से वाक़िफ़ थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों में सबसे ज़्यादा अपनी सुहबत और माल के ज़रिये मुझ पर सिर्फ़ एक अबूबक्र (रज़ि.) हैं अगर मैंने अपनी उम्मत में से किसी को ख़लील बना सकता तो अबूबक्र को बनाता अल्बत्ता इस्लामी रिश्ते उनके साथ काफ़ी है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा खुला हुआ बाक़ी न रखा जाए सिवाए अबूबक्र (रज़ि.) के घर की तरफ़ खुलने वाले दरवाज़े के।

(राजेअ : 466)

رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: «مَكَثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمَكَّةَ ثَلَاثَ عَشْرَةَ، وَتَوَلَّى وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ».

۳۹۰۴ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَثْبَةَ - يَعْنِي ابْنَ حَنْظَلَةَ - عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: «إِنَّ عَبْدًا خَيْرُهُ اللَّهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زُهْرَةِ الدُّنْيَا مَا شَاءَ وَيَتَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ مَا عِنْدَهُ. فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ: فَذَيْنَاكَ يَا أَبَانَا وَأُمّهَاتِنَا. فَعَجَبْنَا لَهُ. وَقَالَ النَّاسُ: أَنْظَرُوا إِلَى هَذَا الشَّيْخِ، يُخْبِرُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ عَبْدِ خَيْرِهِ اللَّهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زُهْرَةِ الدُّنْيَا وَيَتَيْنَ مَا عِنْدَهُ، وَهُوَ يَقُولُ: فَذَيْنَاكَ يَا أَبَانَا وَأُمّهَاتِنَا، فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيَّرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ هُوَ أَعْلَمُنَا بِهِ. وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَمْنِ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَا إِلَيْهِ أَبَابَكْرُ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا مِنْ أُمَّتِي لَاتَّخَذْتُ أَبَابَكْرَ، إِلَّا خَلَّةَ الْإِسْلَامِ، لَا تَقْبَلُ فِي الْمَسْجِدِ خَوْخَةَ إِلَّا خَوْخَةُ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: 466]

तशीह :

हुआ ये था कि मुसलमानों ने जो मस्जिदे नबवी के आसपास रहते थे अपने अपने घरों में एक एक खिड़की मस्जिद की तरफ़ खोल ली थी ताकि जल्दी से मस्जिद की तरफ़ चले जाएँ या जब चाहें आँ हज़रत (ﷺ) की ज़ियारत अपने

घर ही से कर लें। आप (ﷺ) ने हुक्म दिया ये खिड़कियाँ सब बन्द कर दी जाएँ, सिर्फ अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की खिड़की कायम रहे। कुछ ने ये हदीष हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की खिलाफ़त और मुतलक फ़ज़ीलत की दलील ठहराई है।

3905. हमसे यहूया बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अकील ने कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें इब्ना बिन जुबैर ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आवशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मैंने होश सम्भाला तो मैंने अपने माँ-बाप को दीने इस्लाम ही पर पाया और कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता था जिसमें सलूले करीम (ﷺ) हमारे घर सुबह व शाम दोनों वक़्त तशरीफ़ न लाते हों, फिर जब (मक्का में) मुसलमानों को सताया जाने लगा तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हब्शा की हज़रत का इरादा करके निकले। जब आप मक्कामे बरकुल ग़िमाद पर पहुँचे तो आप (रज़ि.) की मुलाक़ात इब्नुद् दना से हुई जो क़बीला क़ारा का सरदार था। उसने पूछा अबूबक्र (रज़ि.)! कहाँ का इरादा है? उन्होंने कहा कि मेरी क़ौम ने मुझे निकाल दिया है अब मैंने इरादा कर लिया है कि मुल्क की सयाहत करूँ (और आज़ादी के साथ) अपने रब की इबादत करूँगा। इब्नुद्दिना ने कहा लेकिन अबूबक्र! तुम जैसे इंसान को अपने वतन से न खुद निकलना चाहिये और न उसे निकाला जाना चाहिये। तुम मुहताजों की मदद करते हो, सिलारहमी करते हो। बेकसों का बोझ उठाते हो, मेहमान नवाज़ी करते हो और हक़ पर कायम रहने की वजह से किसी पर आने वाली मुसीबतों में उसकी मदद करते हो, मैं तुम्हें पनाह देता हूँ वापस चलो और अपने शहर ही में अपने रब की इबादत करो। चुनौचे वो वापस आ गये और इब्नुद्दिना भी आपके साथ वापस आया। उसके बाद इब्नुद्दिना कुरैश के तमाम सरदारों के यहाँ शाम के वक़्त गया और सबसे उसने कहा कि अबूबक्र (रज़ि.) जैसे शख्स को न खुद निकलना चाहिये और न उसे निकाला जाना चाहिये, क्या तुम ऐसे शख्स को निकाल दोगे जो मुहताजों की इमदाद करता है, सिलारहमी करता है, बेकसों का बोझ उठाता है, मेहमान नवाज़ी करता है और हक़ की वजह से किसी पर आने वाली मुसीबतों में उसकी मदद करता है? कुरैश ने इब्नुद्दिना की पनाह से इन्कार नहीं किया सिर्फ़ इतना

۳۹۰۵ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: ((لَمْ أَغْبِلْ أَبُورِي قطُّ إِلَّا وَهْمًا يَدِينَانِ الدِّينَ، وَلَمْ يَمُرْ عَلَيْنَا يَوْمٌ إِلَّا بِأَيُّنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ طَرَفُو النَّهَارَ: بُكْرَةً وَعَشِيَةً. فَلَمَّا انْطَلَقَ الْمُسْلِمُونَ، خَرَجَ أَبُو بَكْرٍ مُهَاجِرًا نَحْوَ أَرْضِ الْحَبَشَةِ حَتَّى نَلَعَ بَرَكَ الْبَمَادَ لَقِيَهُ ابْنُ الدُّغْنَةِ - وَهُوَ سَيِّدُ الْقَارَةِ - فَقَالَ: أَيْنَ تَوَيْدُ يَا أَبَا بَكْرٍ؟ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَخْرَجَنِي قَوْمِي فَأَرِيدُ أَنْ أَسِيحَ فِي الْأَرْضِ وَأَعْبُدَ رَبِّي، قَالَ ابْنُ الدُّغْنَةِ: فَإِنَّ مِثْلَكَ يَا أَبَا بَكْرٍ لَا يَخْرُجُ وَلَا يَخْرُجُ، إِنَّكَ تَكْسِبُ الْمَغْدُومَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ الْكُلَّ، وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ. فَأَنَا لَكَ جَارٌ. ارْجِعْ وَاعْبُدْ رَبَّكَ بِتِلْكَ، فَرَجِعْ وَارْتَحِلْ مَعَهُ ابْنُ الدُّغْنَةِ، فَطَافَ ابْنُ الدُّغْنَةِ عَشِيَةً فِي أَشْرَافِ قُرَيْشٍ فَقَالَ لَهُمْ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ لَا يَخْرُجُ مِثْلَهُ وَلَا يَخْرُجُ، أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ وَجَلَاءَ يَكْسِبُ الْمَغْدُومَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ الْكُلَّ وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ؟ فَلَمْ تَكْذِبْ قُرَيْشٌ بِخَوَارِ ابْنِ

कहा कि अबूबक्र (रजि.) से कह दो, कि अपने रब की इबादत अपने घर से अंदर ही किया करें, वहीं नमाज़ पढ़ें और जो जी चाहे वहीं पढ़ें, अपनी इबादात से हमें तकलीफ न पहुँचाएँ, उसका इज़हार न करें क्योंकि हमें उसका डर है कि कहीं हमारी औरतें और बच्चे इस फ़ितने में न मुब्तला हो जाएँ ये बातें इब्नुद्गिना ने हज़रत अबूबक्र (रजि.) से भी आकर कह दीं कुछ दिनों तक तो आप इस पर क़ायम रहे और अपने घर के अंदर ही अपने रब की इबादत करते रहे, न नमाज़ बर सरे आम पढ़ते और न अपने घर के सिवा किसी और जगह तिलावते कुआँन करते थे। लेकिन फिर उन्होंने कुछ सोचा और अपने घर के सामने नमाज़ पढ़ने के लिये एक जगह बनाई जहाँ आपने नमाज़ पढ़नी शुरू की और तिलावते कुआँन भी वहीं करने लगे, नतीजा ये हुआ कि वहाँ मुश्किनी की औरतों और बच्चों का मज्मआ होने लगा। वो सब हैरत और पसन्दीदगी के साथ देखते रहा करते थे। हज़रत अबूबक्र (रजि.) बड़े नरम दिल इंसान थे। जब कुआँन मजौद की तिलावत करते तो आंसुओं को रोक न सकते थे। इस मूरते हाल से मुश्किनी कुरैश के सरदार घबरा गये और उन्होंने इब्नुद्गिना को बुला भेजा, जब इब्नुद्गिना गया तो उन्होंने उससे कहा कि हमने अबूबक्र के लिये तुम्हारी पनाह इस शर्त के साथ तस्लीम की थी कि अपने रब की इबादत वो अपने घर के अंदर किया करें लेकिन उन्होंने शर्त की खिलाफ़ वज़ी की है और अपने घर के सामने नमाज़ पढ़ने के लिये एक जगह बनाकर बर सरे आम नमाज़ पढ़ने और तिलावते कुआँन करने लगे हैं। हमे उसका डर है कि कहीं हमारी औरतें और बच्चे फ़ितने में न मुब्तला हो जाएँ इसलिये तुम उन्हें रोक दो। अगर उन्हें ये शर्त मंज़ूर हो कि अपने रब की इबादत सिर्फ़ अपने घर के अंदर ही किया करें तो वो ऐसा कर सकते हैं लेकिन अगर वो इज़हार ही करें तो उनसे कहो कि तुम्हारी पनाह वापस दे दें, क्योंकि हमें ये पसन्द नहीं है कि तुम्हारी दी हुई पनाह में हम दख़ल अंदाज़ी करें। लेकिन अबूबक्र (रजि.) के उस इज़हार को भी हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। हज़रत आइशा (रजि.) ने बयान किया कि फिर इब्नुद्गिना अबूबक्र (रजि.) के यहाँ आया और कहा कि जिस शर्त के साथ मैंने आपके साथ अहद किया था वो आपको मा'लूम

الدُّعْبَةِ، وَقَالُوا لَا بِنِ الدُّعْبَةِ : مَرَّ أَبَا بَكْرٍ فَلْيَعْبُدْ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، فَلْيَصِلْ فِيهَا وَالْفَرَأَ مَا شَاءَ، وَلَا يُلْذِنَا بِذَلِكَ وَلَا يَسْتَعِظِينَ بِهِ، فَإِنَّا نَخْشَى أَنْ يَفْتِنَ بِنَاءَنَا وَأَبْنَاءَنَا. فَقَالَ ذَلِكَ ابْنُ الدُّعْبَةِ لِأَبِي بَكْرٍ، فَلَبِثَ أَبُو بَكْرٍ بِذَلِكَ يَعْبُدُ رَبَّهُ فِي دَارِهِ وَلَا يَسْتَعِظِينَ بِصَلَاتِهِ وَلَا يَقْرَأُ فِي غَيْرِ دَارِهِ ثُمَّ بَدَأَ لِأَبِي بَكْرٍ فَأَبْتَى مَسْجِدًا بِبَيْتِ دَارِهِ وَكَانَ يُصَلِّي فِيهِ وَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَيَنْقُذُ عَلَيْهِ بِنَاءَ الْمُشْرِكِينَ أَهْلَهُمْ وَهُمْ يَعْجَبُونَ بِهِ وَيَنْظُرُونَ إِلَيْهِ. وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَجُلًا بَكَاءَ لَا يَمْلِكُ عَيْنُهُ إِذَا قَرَأَ الْقُرْآنَ! فَافْرَغَ ذَلِكَ أَشْرَافَ قُرَيْشٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، فَارْسَلُوا إِلَى ابْنِ الدُّعْبَةِ، فَقَدِمَ عَلَيْهِمْ، فَقَالُوا: إِنَّا كُنَّا أَجْرْنَا أَبَا بَكْرٍ بِجَوَارِكَ عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، فَقَدْ جَاوَزَ ذَلِكَ فَأَبْتَى مَسْجِدًا بِبَيْتِ دَارِهِ فَأَعْلَنَ بِالصَّلَاةِ وَالْقِرَاءَةِ فِيهِ، وَإِنَّا قَدْ خَشِينَا أَنْ يَفْتِنَ بِنَاءَنَا وَأَبْنَاءَنَا، فَانْهَ؛ فَإِنْ أَحَبَّ أَنْ يَقْتَصِرَ عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ فَقُلْ، وَإِنْ أَيْ إِلَّا أَنْ يُغْلِنَ بِذَلِكَ فَسَلِّهِ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْكَ ذِمَّتُكَ، فَإِنَّا قَدْ كَرِهْنَا أَنْ نُخْفِرَكَ، وَلَسْنَا مُفْرِقِينَ لِأَبِي بَكْرٍ الْإِسْغِلَانِ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَأَتَى ابْنُ الدُّعْبَةِ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ: قَدْ عَلِمْتَ إِلَيَّ عَاقِلْتُ لَكَ عَلَيْهِ، فَإِنَّا أَنْ يَقْتَصِرَ عَلَى ذَلِكَ وَإِنَّا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيَّ ذِمَّتِي، فَإِنِّي لَا

है, अब या आप इस शर्त पर कायम रहिए या फिर मेरे अहद को वापस कीजिए क्योंकि ये मुझे गवारान नहीं कि अरब के कानों तक ये बात पहुँचे कि मैंने एक शख्स को पनाह दी थी लेकिन उसमें (कुरैश की तरफ से) दखल अंदाजी की गई। इस पर हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा मैं तुम्हारी पनाह वापस करता हूँ और अपने रब अज़्ज व जल्ल की पनाह पर राज़ी और खुश हूँ। हुजूर अकरम (ﷺ) उन दिनों मक्का में तशरीफ रखते थे। आप (ﷺ) ने मुसलमानों से फ़र्माया कि तुम्हारी हिजरत की जगह मुझे ख़्वाब में दिखाई गई है वहाँ ख़जूर के बाग़ात हैं और दो पथरीले मैदानों के दरम्यान बाक़ेअ है, चुनौचे जिन्हें हिजरत करना था उन्होंने मदीना की तरफ़ हिजरत की और जो लोग सरज़मीने हब्शा हिजरत करके चले गये थे वो भी मदीना चले आए, हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने भी मदीना हिजरत की तैयारी शुरू कर दी लेकिन हुजूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि कुछ दिनों के लिये ठहरो। मुझे तवक्क़अ है कि हिजरत की इजाज़त मुझे भी मिल जाएगी। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया क्या बाक़ई आप (ﷺ) को भी उसकी तवक्क़अ है, मेरे बाप आप पर फ़िदा हों। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हौं। हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने हुजूर (ﷺ) की रिफ़ाक़ते सफ़र के ख़याल से अपना इरादा मुलतवी कर दिया और दो कैंटनियों को जो उनके पास थीं, कीकर के पत्ते ख़िलाकर तैयार करने लगे चार महीने तक। इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इब्ना ने कि हजरत आइशा (रज़ि.) ने कहा, एक दिन हम अबूबक्र (रज़ि.) के घर बैठे हुए थे भरी दोपहर थी कि किसी ने हजरत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) सर पर रूमाल डाले तशरीफ़ ला रहे हैं, हुजूर (ﷺ) का मा'मूल हमारे यहाँ उस वक़्त आने का नहीं था। हजरत अबूबक्र (रज़ि.) बोले हुजूर पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों। ऐसे वक़्त में आप (ﷺ) किसी ख़ास वजह से ही तशरीफ़ लाए होंगे, उन्होंने बयान किया कि फिर हुजूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए और अंदर आने की इजाज़त चाही, अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को इजाज़त दी तो आप (ﷺ) अंदर दाख़िल हुए फिर हुजूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, इस वक़्त यहाँ से थोड़ी देर के लिये सबको उठा दो। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया यहाँ उस वक़्त तो सब घर के ही आदमी हैं, मेरे बाप

أحب أن تسمع العرب أني أخبرت على رجل عقدت له. فقال أبو بكر: فإني أؤدّ إليك جوازك، وأرخصي بخوار الله عز وجل. والنبي ﷺ يؤمّن بكثرة. فقال النبي ﷺ للمسلمين: ((إني أرى دار هجرتكم ذات نعلين لا يفتن، وهما الحرمين)). لهاجر من هاجر قبل المدينة، ودفع غاة من كان هاجر بأرض الحبشة إلى المدينة، ونهض أبو بكر قبل المدينة فقال له رسول الله ﷺ: ((على رسلك، فإني أرى أن يؤذن لي)). فقال أبو بكر: وهل ترجو ذلك بأبي أنت؟ قال: ((نعم)). فحسن أبو بكر نفسه على رسول الله ﷺ ليصحبته وعلف راحلتين كانتا عنده وركب السمر - وهو الخبط - أربعة أشهر. قال ابن شهاب قال عروة: قالت عائشة: فبينما نحن يوماً جلوس في بيت أبي بكر في نحر الظهيرة قال قائل لأبي بكر هذا رسول الله ﷺ متقماً - في ساعة لم يكن يأتينا فيها - فقال أبو بكر: فداء له أبي وأمي، والله ما جاء به في هذا الساعة إلا أمر. قالت: فجاء رسول الله ﷺ فاستأذن، فأذن له، فدخل. فقال النبي ﷺ لأبي بكر: أخرج من عندك، فقال أبو بكر: إسماء أمك بأبي أنت يا رسول الله، قال: فإني قد أذن لكم في الخروج.

आप (ﷺ) पर फ़िदा हों, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हज़ूर (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि मुझे हिज़रत की इजाज़त दे दी गई है। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ की मेरे बाप आप पर फ़िदा हों या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या मुझे रिफ़ाक़ते सफ़र का शर्फ़ हासिल हो सकेगा? हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हौं उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरे बाप आप पर फ़िदा हों उन दोनों में से एक कैदनी आप (ﷺ) ले लीजिए! हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन क़ीमत से, हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने जल्दी जल्दी उनके लिये तैयारियाँ शुरू कर दीं और कुछ तौशा एक थैले में रख दिया। अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने अपने पटके के टुकड़े करके थैले का मुँह उससे बाँध दिया और इसी वजह से उनका नाम ज़ातुन्नताक़ैन (दो पटके वाली) पड़ गया आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ने जबले ग़ौर के ग़ार में पड़ाव किया और तीन रातें वहीं गुज़ारीं अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र (रज़ि.) रात वहीं जाकर गुज़ारा करते थे, ये नौजवान बहुत समझदार थे और बेहद ज़हीन थे। सहर के वक़्त वहाँ से निकल आते और सुबह सवेरे ही मक्का पहुँच जाते जैसे वहीं रात गुज़री हो। फिर जो कुछ वहाँ सुनते और जिसके ज़रिये उन हज़रत के ख़िलाफ़ कार्रवाई के लिये कोई तदबीर की जाती तो उसे महफूज़ रखते और जब अंधेरा छा जाता तो तमाम इज़्तिलाआत वहाँ आकर पहुँचाते। अबूबक्र (रज़ि.) के गुलाम आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) आप दोनों के लिये क़रीब ही दूध देने वाली बकरी चराया करते थे और जब कुछ रात गुज़र जाती तो उसे ग़ार में लाते थे। आप उसी पर रात गुज़ारते उस दूध को गरम लोहे के ज़रिये गर्म कर लिया जाता था। सुबह मुँह अंधेरे ही आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) ग़ार से निकल आते थे उन तीन रातों में रोज़ाना का उनका यही दस्तूर था। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बनी अददैल जो बनी अब्द बिन अदी की शाख़ थी, के एक शख़्स को रास्ता बताने के लिये उज़रत पर अपने साथ रखा था। ये शख़्स रास्तों का बड़ा माहिर था। आले आस्र बिन वाईल सहमी का ये हलीफ़ भी था और कुफ़फ़ारे कुैश के दीन पर क़ायम था। उन बुजुर्गों ने उस पर ए'तिमाद किया और अपने दोनों कैद उसके हवाले कर दिये। क़ार

فَلَمَّا أَتَى بَكْرٌ: الصَّخْبَةَ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((نَعَمْ)) قَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَخَذَّ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِحْدَى زَاحِلَتَيْ هَاتَيْنِ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((بِالْثَمَنِ)) قَالَتْ عَائِشَةُ: فَجَهَزْنَا مَنَا مَحْتُ الْجَهَارِ، وَصَنَعْنَا لَهُمَا سَفَرَةً فِي جِرَابٍ، فَقَطَعْتَ أَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ قِطْعَةً مِنْ بَطْنِهَا فَوَرَّتْ بِهِيَ عَلَى لَمِ الْجِرَابِ، فَبِذَلِكَ سَمَّيْتَ ذَاتَ النَّطَاقِ. قَالَتْ: ثُمَّ لَحِقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ بِغَارٍ فِي جَبَلِ ثَوْرٍ، فَكُنَّا فِيهِ ثَلَاثَ لَيَالٍ. بَيْنَ عِنْدَهُمَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ وَهُوَ غُلَامٌ شَابٌّ نَقِيفٌ لَقِينِ، فَذَلَّجَ مِنْ عِنْدِهِمَا بِسَحَرٍ، فَيُصْبِحُ مَعَ لُزْزٍ بِمَكَّةَ كَمَا يَتِ، فَلَا يَسْمَعُ أَصْرًا يُكْتَادَانِ بِهِ إِلَّا وَغَاهُ حَتَّى يَأْتِيَهُمَا بِخَبَرٍ ذَلِكَ حِينَ يَحْتَلِطُ الظَّلَامُ، وَيَرْغَى عَلَيْهِمَا غَايِرُ بْنُ لُهَيْرَةَ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ مَنَحَهُ مِنْ عَمِّ قَبْرِسُهَا عَلَيْهِمَا حِينَ تَذْهَبُ سَاعَةٌ مِنَ الْعِشَاءِ فَيَبْتَغَانِ فِي رَسُولٍ - وَهُوَ لَبَنٌ مَسْحُومُهُمَا وَرَضِيَّتُهُمَا - حَتَّى يَنْجُو بِهَا غَايِرُ بْنُ لُهَيْرَةَ بِفَلَسٍ، يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ بَلَكِ اللَّيَالِي الثَّلَاثِ. وَاسْتَأْجَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ رَجُلًا مِنْ بَنِي الدَّيْلِ، وَهُوَ مِنْ بَنِي عَبْدِ بْنِ عَدِيٍّ هَادِيَا غَيْرِيْنَا - وَالْغَيْرِيَّتُ الْمَاهِرُ بِالْهَيْدَايَةِ - فَذَ غَمَسَ حِلْفًا فِي عَالِ الْقَاصِرِ بْنِ وَائِلٍ

ये पाया था कि तीन रातें गुजारकर ये शख्स गारे धौर में उनसे मुलाक़ात करे। चुनौचे तीसरी रात की सुबह को वो दोनों ऊँट ले कर (आ गया) अब आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) और ये रास्ता बताने वाला उन हज़रात को साथ लेकर खाना हुए साहिल के रास्ते से होते हुए। (राजेअ : 476)

3906. इब्ने शिहाब ने बयान किया और मुझे अब्दुरहमान बिन मालिक मुदलिजी ने ख़बर दी, वो सुराक़ा बिन मालिक बिन जअशम के भतीजे हैं कि उनके वालिद ने उन्हें ख़बर दी और उन्होंने सुराक़ा बिन जअशम (रज़ि.) को ये कहते सुना कि हमारे पास कुफ़फ़ारे कुरैश के क़ासिद आए और ये पेशकश की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को अगर कोई शख्स क़त्ल कर दे या क़ैद कर लाए तो उसे हर एक के बदले में एक सौ ऊँट दिये जाएंगे। मैं अपनी क़ौम बनी मुदलिज की एक मज्लिस में बैठा हुआ था कि उनका एक आदमी सामने आया और हमारे करीब खड़ा हो गया। हम अभी बैठे हुए थे। उसने कहा सुराक़ा! साहिल पर मैं अभी चन्द साये देखकर आ रहा हूँ। मेरा ख़याल है कि वो मुहम्मद और उनके साथी ही हैं। सुराक़ा (रज़ि.) ने कहा मैं समझ गया उसका ख़याल सहीह है लेकिन मैंने उससे कहा कि वो लोग नहीं हैं मैंने फ़लों फ़लों आदमी को देखा है हमारे सामने से उसी तरफ़ गये हैं। उसके बाद मैं मज्लिस में थोड़ी देर और बैठा रहा और फिर उठते ही घर गया और अपनी लौण्डी से कहा कि मेरे घोड़े को लेकर टीले के पीछे चली जाए और वहीं मेरा इंतज़ार करे, उसके बाद मैंने अपना नेज़ा उठाया और घर की पुस्त की तरफ़ से बाहर निकल आया मैं नेज़े की नोक से ज़मीन पर लकीर खींचता हुआ चला गया और ऊपर के हिस्से को छुपाए हुए था। (सुराक़ा ये सब कुछ इसलिये कर रहा था कि किसी को ख़बर न हो वरना वो भी मेरे इन्आम में शरीक हो जाएगा)। मैं घोड़े के पास आकर उस पर सवार हुआ और हवा की रफ़्तार के साथ उसे ले चला, जितनी जल्दी के साथ भी मेरे लिये मुम्किन था, आखिर मैंने उनको पा ही

السَّهْمِي، وَهُوَ عَلَى فَنِي كَفَّارٍ قُرَيْشِي، فَأَمْنَاهُ، فَذَفَعَاهُ إِلَيْهِ وَاجْلَيْتَهُمَا، وَوَاعَدَاهُ غَارَ ثَوْرٍ بَعْدَ ثَلَاثِ لَيَالٍ بِرَاجِلَتَيْهِمَا صَبَحَ ثَلَاثَ، وَانْطَلَقَ مَعَهُمَا هَامِرُ بْنُ لَهْمَةَ الدَّيْلُ، فَأَخَذَ بِهِمْ طَرِيقَ السَّوْاحِلِ).

[راجع: ٤٧٦]

٣٩٠٦ - قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَالِكِ السَّجْدِيِّ - وَهُوَ ابْنُ أَخِي سُرَّاقَةَ بْنِ مَالِكٍ بْنِ جُفَشْمٍ - أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ سُرَّاقَةَ بْنَ جُفَشْمٍ يَقُولُ: ((جَاءَنَا رَسُولُ كَفَّارٍ قُرَيْشِي يَجْعَلُونَ فِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ دِيَةً كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مَنْ قَتَلَهُ أَوْ أَسْرَهُ. فَبَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ فِي مَجْلِسٍ مِنْ مَجَالِسِ قَوْمِي بَنِي مُذَلِّجٍ أَقْبَلَ رَجُلٌ مِنْهُمْ حَتَّى قَالَ: عَلَيْنَا وَنَحْنُ جُلُوسٌ فَقَالَ: يَا سُرَّاقَةُ، إِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَبَا أَسْوَدَةَ بِالسَّاحِلِ أَرَاهَا مُحْمَدًا وَأَصْحَابَهُ. قَالَ سُرَّاقَةُ: فَعَرَفْتُ أَنَّهُمْ هُمْ. فَقُلْتُ لَهُ: لَيْسُوا بِهِمْ، وَلَكِنَّكَ رَأَيْتَ فَلَانًا وَفُلَانًا انْطَلَقُوا بِأَعْيُنِنَا. ثُمَّ لَبِيتُ فِي الْمَجْلِسِ سَاعَةً، ثُمَّ قُمْتُ فَدَخَلْتُ فَأَمَرْتُ جَارِيَتِي أَنْ تَخْرُجَ بِقُرْسِي - وَهِيَ مِنْ وَرَاءِ أَلْحَمَةِ - فَتَحْمِسَهَا عَلَيَّ، وَأَخَذْتُ زَمْجِي فَخَرَجْتُ بِهِ مِنْ ظَهْرِ الْبَيْتِ فَخَطَطْتُ بِرُجُو الْأَرْضِ، وَخَفَضْتُ عَالِيَهُ، حَتَّى أَتَيْتُ قُرْسِي قُرَيْشِيَّهَا، فَوَلَعْتُهَا تَقَرَّبَ بِي، حَتَّى ذَنُوتُ مِنْهُمْ، فَعَثَرَتْ بِي

लिया। उसी वक़्त घोड़े ने ठोकर खाई और मुझे ज़मीन पर गिरा दिया। लेकिन मैं खड़ा हो गया और अपना हाथ तरकश की तरफ बढ़ाया उसमें से तीर निकालकर मैंने फ़ाल निकाली कि आया मैं उन्हें नुक़सान पहुँचा सकता हूँ या नहीं। फ़ाल (अब भी) वो निकली जिसे मैं पसन्द नहीं करता था। लेकिन मैं दोबारा अपने घोड़े पर सवार हो गया और तीरों के फ़ाल की परवाह नहीं की। फिर मेरा घोड़ा मुझे तेज़ी के साथ दौड़ाए लिये जा रहा था। आखिर जब मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की किरात सुनी, ओहज़रत (ﷺ) मेरी तरफ़ कोई तवज़ह नहीं कर रहे थे लेकिन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बार बार मुड़कर देखते थे, तो मेरे घोड़े के आगे के दोनों पैर ज़मीन में धंस गये जब वो टख़नों तक धंस गया तो मैं उसके ऊपर गिर पड़ा और उसे उठाने के लिये डांटा मैंने उसे उठाने की कोशिश की लेकिन वो अपने पैर ज़मीन से नहीं निकाल सका। बड़ी मुशकिल से जब उसने पूरी तरह खड़े होने की कोशिश की तो उसके आगे के पैर से मुंताशिर सा गुबार उठकर धुएँ की तरह आसमान की तरफ़ चढ़ने लगा। मैंने तीरों से फ़ाल निकाली लेकिन इस मर्तबा भी वही फ़ाल आई जिसे मैं पसन्द नहीं करता था। उस वक़्त मैंने ओहज़रत (ﷺ) को अमान के लिये पुकारा। मेरी आवाज़ पर वो लोग खड़े हो गये और मैं अपने घोड़े पर सवार होकर उनके पास आया। उन तक बुरे इरादे के साथ पहुँचने से जिस तरह मुझे रोक दिया गया था, उसी से मुझे यक़ीन हो गया था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की दा'वत ग़ालिब आकर रहेगी। इसलिये मैंने हज़ूर (ﷺ) से कहा कि आप (ﷺ) की क़ौम ने आप (ﷺ) के मारने के लिये सौ ऊँटों के इन्ज़ाम का ऐलान किया है। फिर मैंने आप (ﷺ) को कुरैश के इरादों की ख़बर दी। मैंने उन हज़रात की ख़िदमत में कुछ तौशा और सामान पेश किया लेकिन हज़ूर (ﷺ) ने उसे कुबूल न किया मुझसे किसी और चीज़ का भी मुतालबा नहीं किया सिर्फ़ इतना कहा कि हमारे बारे में राज़दारी से काम लेना लेकिन मैंने अर्ज़ किया कि आप (ﷺ) मेरे लिये एक अमन की तहरीर लिख दीजिए। हज़ूर (ﷺ) ने आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) को हुक्म दिया और उन्होंने चमड़े के एक रुक़आ पर तहरीर अमन लिख दी। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ)

فَرَسِي، فَعَزَزْتُ عَنْهَا، فَقُمْتُ فَأَهْوَيْتُ
يَدِي إِلَى كِنَانِي فَاسْتَفْرَجْتُ مِنْهَا
الْأَزْلَامَ، فَاسْتَفْسَمْتُ بِهَا: أَحْرَقُمْ أَمْ لَا؟
فَعَرَجَ الَّذِي أَحْرَقَهُ، فَرَكِبْتُ فَرَسِي -
وَقَضَيْتُ الْأَزْلَامَ - فَقَرَّبَ بِي، حَتَّى إِذَا
سَمِعْتُ قِرَاءَةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ لَا
يَلْقِي، وَأَبُو بَكْرٍ يَكْفُرُ الْإِلْفَاتِ، سَاعَتِ
يَدَا فَرَسِي فِي الْأَرْضِ حَتَّى يَلْقَا
الرَّكْبَتَيْنِ. فَعَزَزْتُ عَنْهَا، ثُمَّ رَجَعْتُهَا،
فَقَهَضْتُ فَلَمْ تَكُذْ تُعْرِجُ يَدَيْهَا، فَلَمَّا
اسْتَوَتْ قَابِمَةً إِذَا لَأِثَرُ يَدَيْهَا هَذَانِ مَاطِعٍ
فِي السَّمَاءِ يَمْلُ الدُّعَانِ، فَاسْتَفْسَمْتُ
بِالْأَزْلَامِ فَعَرَجَ الَّذِي أَحْرَقَهُ. فَادْبَعْتُهُمْ
بِالْأَمَانِ، فَوَلَّوْهُ، فَرَكِبْتُ فَرَسِي حَتَّى
جِئْتُهُمْ. وَوَلَعَ فِي نَفْسِي حِينَ لَقِيتُ مَا
لَقِيتُ مِنَ الْحَسَنِ عَنْهُمْ أَنْ مَيَّظَهُوْهُ أَمْرُ
رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّ قَوْمَكَ قَدْ
جَعَلُوا إِلَيْكَ الدِّينَ. وَأَخْبَرْتُهُمْ اخْتَارَ مَا
يُرِيدُ النَّاسُ بِهِمْ، وَخَرِصْتُ عَلَيْهِمُ الزَّادَ
وَالْمَنَاعَ، فَلَمْ يَرْزَأَيَا، وَلَمْ يَسْأَلَايَا إِلَّا
أَنْ قَالَ: أَحْبَبُوا غَدًا. فَسَأَلْتُهُ أَنْ يَكْتُبَ لِي
كِتَابَ أَمْنٍ، فَأَمَرَ غَابِرَ بْنَ فُهَيْرَةَ فَكَتَبَ
لِي رُقْعَةً مِنْ أَدِيمٍ، ثُمَّ مَضَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ.
(ﷺ). قَالَ ابْنُ جِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ
بْنُ الزُّبَيْرِ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَقِيَ الزُّبَيْرَ
فِي رَكْبِهِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ كَانُوا يَجَارُوا
قَابِلِينَ مِنَ الشَّامِ، فَبَكَسَا الزُّبَيْرَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ

आगे बढ़े। इब्ने शिहाब ने बयान किया और उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुलाकात जुबैर (रज़ि.) से हुई जो मुसलमानों के एक तिजारती क्राफिले के साथ शाम से वापस आ रहे थे। जुबैर (रज़ि.) ने हुजूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) की खिदमत में सफ़ेद पोशाक पेश की। इधर मदीना में भी मुसलमानों को हुजूर (ﷺ) की मक्का से हिजरत की खबर हो चुकी थी और ये लोग रोज़ाना सुबह को मुकामे हरह तक आते और इंतज़ार करते रहते लेकिन दोपहरी की गर्मी की वजह से (दोपहर को) उन्हें वापस जाना पड़ता था एक दिन जब बहुत तबील इंतज़ार के बाद सब लोग वापस आ गये और अपने घर पहुँच गये तो एक यहूदी अपने एक महल पर कुछ देखने चढ़ा। उसने आँहज़रत (ﷺ) और आप (ﷺ) के साथियों को देखा सफ़ेद सफ़ेद चले आ रहे हैं। (या तेज़ी से जल्दी जल्दी आ रहे हैं) जितना आप (ﷺ) नज़दीक हो रहे थे, उतनी ही दूर से पानी की तरह रेती का चमकना कम होता जाता था। यहूदी बेइख़्तियार चिल्ला उठा कि ऐ अरब के लोगों! तुम्हारे ये बुजुर्ग सरदार आ गये जिनका तुम्हें इंतज़ार था। मुसलमान हथियार लेकर दौड़ पड़े और हुजूर (ﷺ) का मक़ामे हरह पर इस्तिक्रबाल किया। आप (ﷺ) ने उनके साथ दाहिनी तरफ़ का रास्ता इख़्तियार किया और बनी अमर बिन अफ़्र के मुहल्ले में क़ायम किया। ये रबीउल अख़ल का महीना और पीर का दिन था। अबूबक्र (रज़ि.) लोगों से मिलने के लिये खड़े हो गये और रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ामोश बैठे रहे। अन्सार के जिन लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उससे पहले नहीं देखा था, वो अबूबक्र (रज़ि.) ही को सलाम कर रहे थे। लेकिन जब हुजूर अकरम (ﷺ) पर धूप पड़ने लगी तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपनी चादर से आँहज़रत (ﷺ) पर साया किया। उस वक़्त सब लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को पहचान लिया। हुजूर अकरम (ﷺ) ने बनी अमर बिन अफ़्र में तक़रीबन दस रातों तक क़ायम किया और वो मस्जिद (कुबा) जिसकी बुनियाद तक्वा पर क़ायम है वो उसी दौरान में ता' मीर हुई और आप (ﷺ) ने उसमें नमाज़ पढ़ी फिर (जुम्आ के दिन) आँहज़रत (ﷺ) अपनी कूँटी पर सवार हुए और

وَأَبَا بَكْرٍ بِبَابِ بَيْتِهِ. وَسَمِعَ الْمُسْلِمُونَ بِالْمَدِينَةِ مَخْرَجَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مِنْ مَكَّةَ، فَكَانُوا يَفْتَدُونَ كُلَّ غَدَاةٍ إِلَى الْحَرَّةِ فَيَنْتَظِرُونَهُ، حَتَّى يَرُدُّهُمْ حَرُّ الطَّيْرِ، فَانْقَلَبُوا يَوْمًا بَعْدَمَا أَطْلَقُوا أَنْيَظَارَهُمْ، فَلَمَّا أَوْوَا إِلَى بُيُوتِهِمْ أَوْفَى رَجُلٌ مِنْ يَهُودٍ عَلَى أَطْمٍ مِنْ أَطْمِيهِمْ لِأَمْرِ يَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَبَصُرَ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَصْحَابِهِ مُبِيعِينَ يَزُولُ بِهِمُ السَّرَابُ، فَلَمْ يَمَلِكِ الْيَهُودِيُّ أَنْ قَالَ بِأَعْلَى صَوْتِهِ: يَا مَعْشَرَ الْقُرْبِ، هَذَا جَدُّكُمْ الَّذِينَ تَنْتَظِرُونَ. فَتَنَزَّلَ الْمُسْلِمُونَ إِلَى السَّلَاحِ، فَطَلَقُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِظَهْرِ الْحَرَّةِ، فَقَدَلُ بِهِمْ ذَاتُ الْيَمِينِ حَتَّى نَزَلَ بِهِمْ فِي بَيْتِ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ، وَذَلِكَ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ مِنْ شَهْرِ رَجَبِ الْأَوَّلِ، فَقَامَ أَبُو بَكْرٍ لِلنَّاسِ وَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ صَامِتًا فَطَفِقَ مَنْ جَاءَ مِنَ الْأَنْصَارِ - مِمَّنْ لَمْ يَرَوْا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ - يُحْتَضِي أَبَا بَكْرٍ، حَتَّى أَصَابَتِ الشَّمْسُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى ظَلَّلَ عَلَيْهِ بِرِدَائِهِ، فَعَرَفَ النَّاسُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عِنْدَ ذَلِكَ، فَلَبَّثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي بَيْتِ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ بِضَعْعَ عَشْرَةِ لَيْلَةٍ، وَأَسَسَ الْمَسْجِدَ الَّذِي أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى، وَصَلَّى فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. ثُمَّ رَكِبَ رَاحِلَتَهُ، فَسَارَ يَمْشِي مَعَ النَّاسِ، حَتَّى بَرَكْتَ عِنْدَ مَسْجِدِ

की जानिब यकुम रबीउल अव्वल रोज दो शंबा 622 ईस्वी को खानगी हुई। मक्का वालों ने आप दोनों की गिरफ्तारी के लिये चारों तरफ से जासूस दौड़ा दिये थे। जिनमें एक सुराका बिन जअशम (रज़ि.) भी थे जो अपनी घोड़ी पर सवार मस्तहरे राबिग से कुछ आगे आँहज़रत (ﷺ) के करीब पहुँच गया था मगर आप (ﷺ) की बददुआ से घोड़ी के पैर ज़मीन में धंस गये और सुराका समझ गया कि एक सच्चे रसूल (ﷺ) पर हमला आसान नहीं है, जिसके साथ अल्लाह की मदद है। आखिर वो अमन का तलबगार हुआ और तहरीरी तौर पर उसे अमान दे दी गई। ग़ार से निकलकर पहले ही दिन आप (ﷺ) का गुज़र उम्मे मअबद के खैमा पर हुआ था जो क़ौमे ख़ुज़ाआ से थी और सरे राह मुसाफ़िर्नों की ख़िदमत के लिये मशहूर थी। अल इस्तिआब में है कि जब सुराका वापस होने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया सुराका उस वक़्त तेरी क्या शान होगी जब किसरा के शाही कंगन तेरे हाथों में पहनाए जाएँगे। सुराका (रज़ि.) उहद के बाद मुसलमान हुए और ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में मदयन फ़तह हुआ और किसरा का ताज और ज़ेवरात दरबारे ख़िलाफ़त में आए तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने सुराका (रज़ि.) को बुलाकर उसके हाथों में किसरा के कंगन पहना दिये और जुबान से फ़र्माया अल्लाहु अक़बर अल्लाह की बड़ी शान है कि किसरा के कंगन सुराका (रज़ि.) अअरबी के हाथों में पहना दिये। खैमा उम्मे मअबद पर आँहज़रत (ﷺ) ने आराम फ़र्माया। वहाँ से खाना होने पर रास्ता में बुरैदा असलमी मिला जो आप (ﷺ) की तलाश में निकला था मगर आप (ﷺ) से हम कलाम होने पर अपने सत्तर साथियों के साथ मुसलमान हो गया। नेज़ रास्ते ही में जुबैर बिन अव्वाम (रज़ि.) भी मिले जो शाम से आ रहे थे और मुसलमानों का तिजारत पेशा गिरोह भी उनके साथ था उन्होंने नबी करीम (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के लिये सफ़ेद लिबास पेश किये।

8 रबीउल अव्वल रोज दो शंबा 13 नबवी मुताबिक 23 सितम्बर 622 ईस्वी को आप (ﷺ) कुबा में पहुँच गये। पंच शंबा तक यहाँ क़याम किया और उस दौरान में मस्जिदे कुबा की भी बुनियाद रखी, उसी जगह शेर ख़ुदा हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि.) भी यहाँ पहुँच गये। 12 रबीउल अव्वल 1 हिजरी मुताबिक 27 सितम्बर 622 ईस्वी बरोज़ जुम्आ आप (ﷺ) कुबा से खाना हुए जुम्आ का वक़्त बनू सालिम के घरों में हो गया। यहाँ आप (ﷺ) ने सौ आदिमियों के साथ जुम्आ पढ़ा और इस्लाम में पहला जुम्आ था। उसके बाद आप (ﷺ) यमिब की जुनूबी जानिब से शहर में दाख़िल हुए और आज ही से शहर का नाम मदीनतुन् नबी हो गया।

आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) जो आप (ﷺ) के साथ में था, ये हज़रत अबूबक्र सिदीक़ (रज़ि.) का गुलाम था। हज़रत अस्मा (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र सिदीक़ (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं उन्होंने तौशा एक चमड़े के थैले में रखा और उसका मुँह बाँधने के लिये अपने कमरबन्द के दो टुकड़े कर दिये और उससे थैले का मुँह बाँधा उस रोज़ से उस ख़ातून का लक़ब ज़ातुन्नताक़रतैन हो गया। अब्दुल्लाह बिन अरीक़त रास्ता का माहिर था और आस्र बिन वाईल सहमी के खानदान का हलीफ़ था। जिसने अरबी क़ायदे के मुताबिक़ एक प्याले में हाथ डुबोकर उसके साथ हलफ़ की थी, ऐसे प्याले में कोई रंग या खून भरा जाता था। सुराका बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने पांसे लिये और फ़ाल खोली कि मुझको आँहज़रत (ﷺ) का पीछा करना चाहिये या नहीं मगर फ़ाल मेरे ख़िलाफ़ निकली कि मैं उनका कुछ नुक़सान न कर सकूँगा। अरब तीरों पर फ़ाल खोला करते थे। एक पर काम करना लिखते दूसरे पर न करना लिखते, फिर तीर निकालने में जो भी तीर निकलता उसके मुताबिक़ अमल करते। सुराका (रज़ि.) ने परवान-ए-अमन हासिल करके अपने तरक़श में रख लिया था। रिवायत में लफ़ज़े यज़ूलु बिहिमिस्सरान के अल्फ़ाज़ हैं। सराब वो रेती जो धूप में पानी की तरह चमकती है। हाफ़िज़ ने कहा कुछ ने इसका मतलब यूँ कहा है कि आँख में उनके आने की हरकत मा'लूम हो रही थी लेकिन नज़दीक़ आ चुके थे। ये यहूदी का ज़िक़्र है जिसने अपने महल के ऊपर से सफ़र में आए हुए नबी करीम (ﷺ) को देखकर अहले मदीना को बशारत दी थी कि तुम्हारे बुजुर्ग सरदार आ गये हैं। शुरू में मदीना वाले रसूले करीम (ﷺ) को न पहचान सके इसलिये हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आप (ﷺ) पर कपड़े का साया करने खड़े हो गये। अबूबक्र (रज़ि.) बूढ़े सफ़ेद रेश थे और आँहज़रत (ﷺ) की मुबारक दाढ़ी स्याह थी। लिहाज़ा लोगों ने अबूबक्र (रज़ि.) ही को पैग़म्बर समझा अबूबक्र (रज़ि.) को जल्दी सफ़ेदी आ गई थी वरना उम्र में वो आँहज़रत (ﷺ) से दो ढाई साल छोटे थे। आख़िरे हदी़त में ज़िक़्र है कि मस्जिदे नबवी की ता'मीर के वक़्त आप (ﷺ) ने एक रजज़ पढ़ा जिसमें ख़ैबर के बोझ का ज़िक़्र है। ख़ैबर से लोग खज़ूर अंगूर वगैरह लादकर लाया करते थे आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ैबर का बोझ इस बोझ के मुक़ाबले पर जो मुसलमान ता'मीरे मस्जिदे नबवी के लिये पत्थर और गारे की शक़ल में उठा रहे थे कुछ भी

नहीं है वो दुनिया में खा पी डालते हैं और बोझ तो ऐसा है जिसका फ़्वाब हमेशा कायम रहेगा। जिस मुसलमान का शेर और हज़रत (ﷺ) ने पढ़ा था वो अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) था, हदीषे हिज़रत के बारे में ये चन्द वज़ाहती नोट लिखे गये हैं वरना तफ़्सीलात बहुत कुछ हैं।

3907. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद और फ़ातिमा बिनते मुज़िर ने और उनसे अस्मा (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मदीना हिज़रत करके जाने लगे तो मैंने आप दोनों के लिये नाश्ता तैयार किया। मैंने अपने वालिद (हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि मेरे पटके के सिवा और कोई चीज़ इस वक़्त मेरे पास ऐसी नहीं जिससे मैं इस नाश्ते को बाँध दूँ। इस पर उन्होंने कहा कि फिर इसके दो टुकड़े कर लो। चुनौचे मैंने ऐसा ही किया और उस वक़्त से मेरा नाम ज़ातुन्नताक़ैन (दो पटकों वाली) हो गया और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने अस्मा को ज़ातुन निताक़ कहा। (राजेज़: 2979)

٣٩٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامُ عَنْ أَبِيهِ وَفَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((صَنَفْتُ سَفْرَةَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي تَكْرٍ حِينَ أَرَادَ الْمَدِينَةَ، فَقُلْتُ لَأَبِي: مَا أَجِدُ شَيْئًا أَرْبِطُهُ إِلَّا نَطَاقِي، قَالَ: فَشَقَّيْهِ، فَقَعَلْتُ، فَسَمَّيْتُ ذَاتَ النُّطَاقَيْنِ)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ((أَسْمَاءُ ذَاتُ النُّطَاقِ)).

[راجع: ٢٩٧٩]

तशरीह: ये हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं इनको ज़ातुन्नताक़ैन कहा जाता है क्योंकि उन्होंने हिज़रत की रात में अपने पटके को फाड़कर दो हिस्से किये थे एक हिस्सा में तौशादान बाँधा और दूसरे को मशकीज़े पर बाँध दिया था। हज़रत आइशा (रज़ि.) से दस साल बड़ी थीं उन ही के फ़रज़न्द हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को हज़ाज ज़ालिम ने क़त्ल कराया था, उस ह्रादषे के कुछ दिन बाद एक सौ साल की उम्र पाकर हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने 73 हिज़री में इतिक़ाल फ़र्माया रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहा आमीन।

3908. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक ने, कहा मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया जब नबी करीम (ﷺ) मदीना के लिये खाना हुए तो सुराक़ा बिन मालिक बिन ज़अशम ने आप (ﷺ) का पीछा किया और हज़रत (ﷺ) ने उसके लिये बद दुआ की तो उसका घोड़ा ज़मीन में धंस गया, उसने अज़्र किया कि मेरे लिये अल्लाह से दुआ कीजिए (कि इस मुस्रीबत से नजात दे) मैं आप (ﷺ) का कोई नुक़्सान नहीं करूँगा, आप (ﷺ) ने उसके लिये दुआ की। (उसका घोड़ा ज़मीन से निकल आया) रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक मर्तबा रास्ते में प्यास मा'लूम हुई इतने में एक चरवाहा गुज़रा। अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने एक प्याला लिया और उसमें (रेवड़ की एक बकरी) का थोड़ा सा दूध दुहा, वो दूध मैंने आप (ﷺ) की ख़िदमत में लाकर पेश किया जिसे आप (ﷺ) ने नोश

٣٩٠٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّزَّاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا أَقْبَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْمَدِينَةِ بَغِيَتْ سَرَّافَةٌ مِنْ مَالِكِ بْنِ جَعْفَرٍ، فَدَعَا عَلَيْهِ النَّبِيُّ فَسَاحَتْ. يَوْمَ قَرَسَتْهُ، قَالَ: إِذْغِ اللَّهُ لِي وَلَا أَصْرُوكَ، فَدَعَا لَهُ، قَالَ: فَطَبِخَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَمَرًا بِرَاحٍ، قَالَ أَبُو تَكْرٍ: فَأَخَذْتُ فَدَخَا فَخَلَّتْ فِيهِ كَنْبَةٌ مِنْ لَبَنٍ، فَاتَيْنَهُ فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيَ)).

[راجع: ٢٤٣٩]

फर्माया कि मुझे खुशी हासिल हुई। (राजेअ: 2439)

हज़रत सुराका बिन मालिक (रज़ि.) बड़े ऊँचे दर्जे के शायर थे उस मौक़े पर भी उन्होंने एक क़स़ीदा पेश किया था 24 हिजरी में उनकी वफ़ात हुई।

3909. मुझसे ज़क़रिया बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) उनके पेट में थे, उन्हीं दिनों जब हमल की मुहत्त भी पूरी हो चुकी थी, मैं मदीना के लिये खाना हुई यहाँ पहुँचकर मैंने कुबा में पड़ाव किया और यहीं अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) पैदा हुए। फिर मैं उन्हें लेकर रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आप (ﷺ) की गोद में उसे रख दिया। आँ हज़रत (ﷺ) ने एक खज़ूर तलब की और उसे चबाकर आप (ﷺ) ने अब्दुल्लाह (रज़ि.) के मुँह में उसे रख दिया। चुनौचे सबसे पहली चीज़ जो अब्दुल्लाह (रज़ि.) के पेट में दाख़िल हुई वो हज़ूर अकरम (ﷺ) का मुबारक लुआब था। उसके बाद आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ फ़र्माई और अल्लाह से उनके लिये बरकत तलब की। अब्दुल्लाह (रज़ि.) सबसे पहला बच्चा हैं जिनकी पैदाइश हिजरात के बाद हुई। ज़क़रिया के साथ इस रिवायत की मुताबअत ख़ालिद बिन मुख़लद ने की है। उनसे अली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होने को निकलीं थीं तो वो हामिला थीं। (दीगर मक़ाम: 5469)

3909- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا حَمَلَتْ بِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَتْ: فَخَرَجْتُ وَأَنَا مَيِّمٌ، فَأَتَيْتُ الْمَدِينَةَ، فَنَزَلْتُ بِقُبَاءَ فَوَلَدَتْهُ بِقُبَاءَ، ثُمَّ أَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَضَعْتُهُ فِي حَجْرِهِ، ثُمَّ دَعَا بِتَمْرَةٍ فَمَضَغَهَا ثُمَّ تَقَلَّ فِي فِيهِ، فَكَانَ أَوَّلَ شَيْءٍ دَخَلَ جَوْفَهُ رِيقُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ حَنَكَهُ بِتَمْرَةٍ، ثُمَّ دَعَا لَهُ وَتَوَلَّاهُ عَلَيْهِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَوْلُودٍ وَلَدَ فِي الْإِسْلَامِ)). تَابَهُ عَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ عَنْ عَلِيٍّ بْنِ مُسْنَبٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّهَا هَاجَرَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهِيَ حَمْلِي)).

[طرنه ن: 5469]

हज़रत अस्मा (रज़ि.) हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) की स़ाहबज़ादी हैं, जिनके बतन से हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) पैदा हुए जिनका तारीख़े इस्लाम में बहुत बड़ा मुक़ाम है।

3910. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि सबसे पहला बच्चा जो इस्लाम में (हिजरात के बाद) पैदा हुआ, अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) हैं, उन्हें लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में लाए तो आँ हज़रत (ﷺ) ने एक खज़ूर लेकर उसे चबाया फिर उसको उनके मुँह में डाल दिया। इसलिये सबसे पहली चीज़ जो उनके पेट में गई वो आँ हज़रत

3910- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((أَوَّلَ مَوْلُودٍ وَلَدَ فِي الْإِسْلَامِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ: أَتَوْا بِهِ النَّبِيَّ ﷺ، فَأَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ تَمْرَةً فَلَاكَهَا، ثُمَّ أَدْخَلَهَا فِي فَمِهِ، فَأَوَّلَ مَا دَخَلَ بَطْنُهُ رِيقُ

(ﷺ) का लुआबे मुबारक था।

النَّبِيُّ ﷺ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये यही काफ़ी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर असद कुरैशी हैं, मदीना में मुहाजिरीन में ये सबसे पहला बच्चा हैं जो 1 हिजरी में पैदा हुए, खुद उनके नानाजान हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उनके कान में अज़ान पढ़ी। ये बिल्कुल साफ़ चेहरे वाले थे एक भी बाल मुँह पर नहीं था न दाढ़ी थी। बड़े रोज़े रखने वाले और बहुत नवाफ़िल पढ़ने वाले थे, मोटे ताज़े बड़े क़वी और बाह्य शस्त्रियत के मालिक थे। हक़ बात मानने वाले, सिलारहमी करने वाले और बहुत सी खूबियों के मालिक थे। उनकी वालिदा हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बेटी थीं। उनके नाना हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) थे उनकी दादी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) औ हज़रत (ﷺ) की फूफी थीं, उनकी खाला हज़रत आइशा (रज़ि.) थीं आठ साल की उम्र में उनको शफ़े बेअत हासिल हुआ। हज़ाज बिन यूसुफ़ ज़ालिम ने इनको बड़ी बेरहमी के साथ मक्का में क़त्ल किया। मंगल के दिन 17 जमादिष्वानी 73 हिजरी को उनको सूली पर लटकाया उनकी शहादत के बाद हज़ाज बिन यूसुफ़ अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हुआ जब भी नौद आती फ़ौरन चोंककर खड़ा हो जाता और कहता अब्दुल्लाह मुझसे इतिक़ाम लेने मेरे सर पर खड़ा हुआ है। इस तरह बिलबिला कर कुछ दिनों बाद ये ज़ालिम भी ख़त्म हो गया। 64 हिजरी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के हाथ पर अहले हज़ाज यमन, इराक़ और ख़ुरासान के मुसलमानों की बड़ी ता'दाद ने बेअते ख़िलाफ़त की थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने आठ हज़्ज भी किये थे। आज उस दौर के ज़ालिम व मज़लूम लोगों की दास्तानें बाक़ी रह गई हैं। काश! आज के ज़ालिमीन उनसे इब्रत हासिल करें और आयते कुआनिया के फ़लसफ़े को समझने पर तवज्जह दें, फ़कुत्ति अदाबिरुल्कौमिल्लिज़ीन ज़लमू वल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिलआलमीन. (अल अन्आम : 45)

3911. मुझसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे बाप अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लए तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) आप (ﷺ) की सवारी पर पीछे बैठे हुए थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बूढ़े हो गये थे और उनको लोग पहचानते भी थे लेकिन हज़ूर अकरम (ﷺ) अभी जवान मा'लूम होते थे और आप (ﷺ) को लोग आम तौर से पहचानते भी न था बयान किया कि अगर रास्ते में कोई मिलता और पूछता कि ऐ अबूबक्र! ये तुम्हारे साथ कौन साहब हैं? तो आप जवाब देते कि ये मेरे हादी हैं, मुझे रास्ता बताते हैं पूछने वाला ये समझता कि मदीना का रास्ता बतलाने वाला है और अबूबक्र (रज़ि.) का मतलब इस कलाम से ये था कि आप (ﷺ) दीन व ईमान का रास्ता बतलाते हैं। एक मर्तबा हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) पीछे मुड़े तो एक सवार नज़र आया जो उनके करीब आ चुका था। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! ये सवार आ गया और अब हमारे करीब ही पहुँचने वाला है नबी करीम (ﷺ) ने भी उसे मुड़कर देखा और दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! इसे गिरा दे चुनौचे घोड़ी ने उसे गिरा

٣٩١١ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَقْبَلَ نَبِيُّ اللَّهِ إِلَى الْمَدِينَةِ وَهُوَ مُرَوِّدٌ أَبَا بَكْرٍ، وَأَبُو بَكْرٍ شَيْخٌ يَعْرِفُ وَنَبِيُّ اللَّهِ شَابٌّ لَا يَعْرِفُ. قَالَ: فَلَقِيَ الرَّجُلُ أَبَا بَكْرٍ فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ مَنْ هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْكَ؟ فَقَالَ: هَذَا الرَّجُلُ يَهْدِينِي السَّبِيلَ، فَخَسِبَ الْحَاسِبُ أَنَّهُ إِنَّمَا يَعْنِي الطَّرِيقَ، وَإِنَّمَا يَعْنِي سَبِيلَ الْخَيْرِ. فَالْتَفَتَ أَبُو بَكْرٍ لَدَا هُوَ بِفَارِسٍ قَدْ لَجِفَهُمْ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَذَا فَارِسٌ قَدْ لَجِقَ بِنَاءً، فَالْتَفَتَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اصْرَعْهُ))، فَصْرَعَهُ

दिया। फिर जब वो हिनहिनाती हुई उठी तो सवार (सराक्रा) ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! आप जो चाहें मुझे हुक्म दें। हुजूर अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया अपनी जगह खड़ा रह और देख किसी को हमारी तरफ़ आने न देना। राबी ने बयान किया कि वही शख्स जो सुबह आप (ﷺ) के खिलाफ़ था शाम जब हुई तो आप (ﷺ) का वो हथियार था दुश्मन को आप (ﷺ) से रोकने लगा। उसके बाद हुजूर अकरम (ﷺ) (मदीना पहुँचकर) हर्ग के करीब उतरे और अंसार को बुला भेजा। अकाबिरे अंसार हुजूर (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए और दोनों को सलाम किया और अर्ज़ किया आप (ﷺ) सवार हो जाएँ आप (ﷺ) की हिफ़ाज़त और फ़र्माबरदारी की जाएगी, चुनौचे हुजूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) सवार हो गये और हथियारबन्द अंसार ने आप दोनों को हल्के में ले लिया। इतने में मदीना में भी सबको मा'लूम हो गया कि हुजूर (ﷺ) तशरीफ़ ला चुके हैं सब लोग आपको देखने के लिये बुलन्दी पर चढ़ गये और कहने लगे कि अल्लाह के नबी आ गये। अल्लाह के नबी आ गये। आँहजरत (ﷺ) मदीना की तरफ़ चलते रहे और (मदीना पहुँचकर) हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) के घर के पास सवारी से उतर गये। अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) (एक यहूदी आलिम ने) अपने घर वालों से हुजूर (ﷺ) का ज़िक्र सुना, वो उस वक़्त अपने एक खजूर के बाग़ में थे और खजूर जमा कर रहे थे उन्होंने (सुनते ही) बड़ी जल्दी के साथ जो कुछ खजूर जमा कर चुके थे उसे रख देना चाहा लेकिन जब आप (ﷺ) की खिदमत में वो हाज़िर हुए तो जमाशुदा खजूरों उनके साथ ही थीं उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की बातें सुनीं और अपने घर वापस चले आए। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमारे (ननिहाली) अक्रारिब में किसी का घर यहाँ से ज़्यादा करीब है? अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि मेरा ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! ये मेरा घर है और ये इसका दरवाज़ा है फ़र्माया (अच्छा तो जाओ) दोपहर का आराम करने की जगह हमारे लिये दुरुस्त करो हम दोपहर को वहीं आराम करेंगे। अबू अय्यूब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया फिर आप (ﷺ) दोनों तशरीफ़ ले चलें, अल्लाह मुबारक करे। हुजूर (ﷺ) अभी उनके घर में दाखिल हुए थे कि अब्दुल्लाह बिन सलाम भी आ गये और कहा कि, मैं गवाही देता हूँ कि आप (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और ये कि आप

الفرس، ثُمَّ قَامَتْ تُحَمِّجُهُمْ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ
اللَّهِ مُرْنِي بِهِمَ شَيْئًا. قَالَ: ((قَبِّفْ
مَكَانَكَ، لَا تَتَرَكَّنْ أَحَدًا يَلْحَقُ بِنَا)).
قَالَ: فَكَانَ أَوَّلَ النَّهَارِ جَاهِدًا عَلَى نَبِيِّ
اللَّهِ، وَكَانَ آخِرَ النَّهَارِ مُسْلِحَةً لَهُ. فَزَلَّ
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَانِبَ
الْحَرَقِ، ثُمَّ بَعَثَ إِلَى الْأَنْصَارِ فَجَاءُوا إِلَى
نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ
فَسَلَّمُوا عَلَيْهِمَا وَقَالُوا: ارْكَبَا آمِنَيْنِ
مُطَاعَيْنِ. فَرَكِبَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ وَخَفُوا ذُونَهُمَا
بِالسَّلَاحِ، فَقِيلَ فِي الْمَدِينَةِ: جَاءَ نَبِيُّ
اللَّهِ، جَاءَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
فَأَشْرَفُوا يَنْظُرُونَ وَ يَقُولُونَ جَاءَ نَبِيُّ اللَّهِ
جَاءَ نَبِيُّ اللَّهِ فَأَقْبَلَ يَسِيرٌ حَتَّى نَزَلَ جَانِبَ
دَارِ أَبِي أَيُّوبَ لِإِنَّهُ لَيَحْدُثُ أَهْلُهُ إِذْ سَمِعَ
بِهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ وَهُوَ فِي نَخْلٍ لِأَهْلِهِ
يَخْتَرِفُ لَهُمْ، فَجَعَلَ أَنْ يَبْغَعَ الَّذِي
يَخْتَرِفُ لَهُمْ فِيهَا، فَجَاءَ وَهِيَ مَعَهُ،
فَسَمِعَ مِنْ نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ، فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ:
((أَيُّ يَتُوتِ أَهْلُنَا أَقْرَبُ؟)). قَالَ أَبُو
أَيُّوبَ: أَنَا يَا نَبِيَّ اللَّهِ، هَذِهِ دَارِي وَهَذَا
بَابِي. قَالَ: ((فَانْطَلِقْ فَهِيَءَ لَنَا مَقِيلًا.
قَالَ: قُلُومًا عَلَى بَرَكَةِ اللَّهِ)). فَلَمَّا جَاءَ
نَبِيُّ اللَّهِ جَاءَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ فَقَالَ:
أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ، وَأَنَّكَ جِئْتَ

(ﷺ) हक़ के साथ मद्बूरुफ़ हुए हैं। और यहूदी मेरे बारे में अच्छी तरह जानते हैं कि मैं उनका सरदार हूँ और उनके सरदार का बेटा हूँ और उनमें सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ और उनके सबसे बड़े आलिम का बेटा हूँ। इसलिये आप (ﷺ) इससे पहले कि मेरा इस्लाम लाने का ख़याल उन्हें मा'लूम हो, बुलाइये और उनसे मेरे बारे में पूछिये, क्योंकि उन्हें अगर मा'लूम हो गया कि मैं इस्लाम ला चुका हूँ तो मेरे बारे में ग़लत बातें कहनी शुरू कर देंगे। चुनौचे आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बुला भेजा और जब वो आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि ऐ यहूदियों! अफ़सोस तुम पर, अल्लाह से डरो, उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुम लोग ख़ूब जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल बरहक़ हूँ और ये भी कि मैं तुम्हारे पास हक़ लेकर आया हूँ, फिर अब इस्लाम में दाख़िल हो जाओ, उन्होंने कहा कि हमें मा'लूम नहीं है, नबी करीम (ﷺ) ने उनसे और उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से इस तरह तीन मर्तबा कहा। फिर आपने फ़र्माया। अच्छा अब्दुल्लाह बिन सलाम तुममें कौन साहब हैं? उन्होंने कहा हमारे सरदार और हमारे सरदार के बेटे, हममें सबसे ज़्यादा जानने वाले और हमारे सबसे बड़े आलिम के बेटे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अगर वो इस्लाम ले आएँ, फिर तुम्हारा क्या ख़याल होगा। कहने लगे अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त करे, वो इस्लाम क्यूँ लाने लगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इब्ने सलाम! अब इनके सामने आ जाओ। अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बाहर आ गये और कहा ऐ गिरोहे यहूद! अल्लाह से डरो उस अल्लाह की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं तुम्हें ख़ूब मा'लूम है कि आप (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और ये कि आप (ﷺ) हक़ के साथ मद्बूरुफ़ हुए हैं। यहूदियों ने कहा तुम झूठे हो। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे बाहर चले जाने के लिये फ़र्माया। (राजेज़: 3329)

بِحَقٍّ، وَقَدْ عَلِمَتْ يَهُودُ أَنِّي سَيِّدُهُمْ وَأَنِّي سَيِّدُهُمْ وَأَعْلَمُهُمْ وَأَنِّي وَأَعْلَمُهُمْ، فَادْعُهُمْ فَاسْأَلُهُمْ عَنِّي قَبْلَ أَنْ يَخْلَعُوا أَنِّي قَدْ اسْلَمْتُ، فَإِنَّهُمْ إِنْ يَخْلَعُوا أَنِّي قَدْ اسْلَمْتُ قَالُوا بَلَىٰ مَا لَيْسَ فِي. فَأَرْسَلَ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ فَاقْبَلُوا فَدَخَلُوا عَلَيْهِ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَا مَعْشَرَ الْيَهُودِ، وَيَلَكُمْ اتَّقُوا اللَّهَ، فَوَ اللَّهِ لَبِئْسَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِنَّكُمْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ حَقًّا، وَأَنِّي جِئْتُكُمْ بِحَقٍّ، فَاسْأَلُوا)). قَالُوا: مَا نَعْلَمُهُ - قَالُوا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ ثَلَاثَ مِرَارٍ - قَالَ: ((يَا رَجُلُ فِيمَ كُمْ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ سَلَامٍ؟)) قَالُوا: ذَاكَ سَيِّدُنَا، وَأَنَّنِي سَيِّدُونَا، وَأَعْلَمُنَا وَأَنَّنِي أَعْلَمُونَا.

قَالَ: ((أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ اسْلَمْتُ؟)) قَالُوا: خَاشَا اللَّهُ مَا كَانَ يُسْلِمُ. قَالَ: أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ اسْلَمْتُ؟)) قَالُوا: خَاشَا اللَّهُ مَا كَانَ يُسْلِمُ. قَالَ: ((يَا ابْنَ سَلَامٍ اخْرُجْ عَلَيْهِمْ)). فَخَرَجَ، فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْيَهُودِ، اتَّقُوا اللَّهَ، فَوَ اللَّهِ الْبَلَىٰ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِنَّكُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ، وَأَنَّهُ جَاءَ بِحَقٍّ. فَقَالُوا: كَذَبْتَ، فَاخْرَجَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[راجع: 3329]

नोट :- हुज़रे अकरम (ﷺ) अबूबक्र (रज़ि.) से दो साल कई महीने उम्र में बड़े थे लेकिन उस वक़्त तक आपके बाल काले

थे, इसलिये मा'लूम होता था कि आप (ﷺ) नौजवान हैं, लेकिन अबूबक्र (रज़ि.) की दाढ़ी के बाल काफी सफ़ेद हो चुके थे। रावी ने इसकी ता'बीर बयान की है अबूबक्र (रज़ि.) चूँकि ताजिर थे अक़्बर अरब के चारों ओर का सफ़र करते रहते थे इसलिये लोग आप (रज़ि.) को पहचानते थे।

तशरीह: हदीसे मज़कूर में हिजरत के वाक़िये के बारे में चन्द उमूर बयान किये गये हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने 27 सफ़र 13 हिजरी नबवी रोज़ पंज शंबा मुताबिक 12 सितम्बर 622 ईस्वी में मक़तुल मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा के लिये सफ़र शुरू फ़र्माया मक्का से चन्द मील दूरी पर कोहे घोर है। इब्तिदा में आप (ﷺ) ने अपने सफ़र में क़याम के लिये उसी पहाड़ के एक ग़ार को मुतख़ब फ़र्माया जहाँ तीन रातों तक आप (ﷺ) ने क़याम किया। उसके बाद यक़ुम रबीउल अव्वल रोज़ दो शंबा मुताबिक 16 सितम्बर 622 ईस्वी में आप मदीना मुनव्वरा के लिये रवाना हुए रास्ते में बहुत से मुवाफ़िक़ और नामुवाफ़िक़ हालात पेश आए मगर आप बफ़ज़िल ही तआला एक हफ़्ता के सफ़र के बाद ख़ैरियत व आफ़ियत के साथ 8 रबीउल अव्वल 13 नबवी रोज़ दो शंबा मुताबिक 23 सितम्बर 622 ईस्वी मदीना से जुड़ी एक बस्ती कुबा नामी में पहुँच गये और पंज शंबा तक यहाँ आराम फ़र्माया। उस दौरान में आप (ﷺ) ने यहाँ मस्जिदे कुबा की बुनियाद डाली 12 रबीउल अव्वल 1 हिजरी जुम्आ के दिन आप (ﷺ) कुबा से रवाना होकर बनू सालिम के घरों तक पहुँचे थे कि जुम्आ का वक़्त हो गया और आप (ﷺ) ने यहाँ सौ मुसलमानों के साथ जुम्आ अदा किया, जो इस्लाम में पहला जुम्आ था, जुम्आ से फ़ारिग़ होकर आप (ﷺ) यस्त्रिब के जुनूबी जानिब से शहर में दाख़िल हुए और आज शहरे यस्त्रिब मदीनतुन नबी के नाम से मौसूम हो गया।

आँहज़रत (ﷺ) ने यहूद से जो कुछ फ़र्माया वो उन पेशीनगोइयों की बिना पर था जो तौरात में मौजूद थीं। चुनौचे हब्कूक नबी की किताब बाब 3 दर्स 3 में लिखा हुआ था कि अल्लाह जुनूब से और वो जो क़ुदूस है कोहे फ़ारों से आया उसकी शौकत से आसमान छुप गया और ज़मीन उसकी इम्द से अमूर हुई, यहाँ मदीना के दाख़िले पर ये इशारे हैं। किताब बसोया 42 बाब 11 में है कि सिलअ के बाशिन्दे एक गीत गाएँगे। ये गीत आँहज़रत (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी पर गाया गया। मदीना का नाम पहले अंबिया की किताबों में सिलअ है। जंगे ख़ंदक में मुसलमानों ने जिस जगह ख़ंदक खोदी थी वहाँ एक पहाड़ी का नाम जबले सिलअ मदीना वालों की जुबान पर आम मुव्वज था। इन ही पेशीनगोइयों की बिना पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने इस्लाम कुबूल कर लिया। तिमिज़ी की रिवायत के मुताबिक़ अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) का कलामे पाक आप (ﷺ) के लफ़्ज़ों में सुना था जिसके सुनते ही वो इस्लाम के शैदाई बन गये। या अय्युहन्नासु अफ़शुसलाम व अत्तुमुत्तआम व सिलुलअर्हाम व मल्लू बिल्लैलि वन्नासु नियाम तदख़ुलुलज़न्नत बिसलाम या नी ऐ लोगो! अमन व सलामती फैलाओ और खाना खिलाओ और सिलारहमी करो और रात में जब लोग सोये हुए हों उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो। उन अमलों के नतीजे में तुम जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे। अब्वलीन मेज़बान रसूले करीम (ﷺ) हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) बड़े ही खुशनसीब हैं जिनको सबसे पहले ये शर्फ़ हासिल हुआ। उम्र में हज़रत रसूले करीम (ﷺ) से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) दो साल छोटे थे मगर उन पर बुढापा ग़ालिब आ गया था। बाल सफ़ेद हो गये थे। वो अक़्बर अत्राफ़े अरब में बसिलसिला तिजारत सफ़र भी किया करते थे, इसलिये लोग उनसे ज़्यादा वाक़िफ़ थे। अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) बनू नज़ार में से थे। आँहज़रत (ﷺ) के दादा की माँ उसी ख़ानदान से थीं इसीलिये ये कबीला आप (ﷺ) का ननिहाल करार पाया। हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) का नाम ख़ालिद बिन ज़ैद बिन कुलैब अंसारी (रज़ि.) कुस्तुन्तुनिया में जिहाद कर रहे थे तो उनके साथ निकले और बीमार हो गये। जब बीमारी ने ज़ोर पकड़ा तो अपने साथियों को वसियत फ़र्माई कि जब मेरा इंतिक़ाल हो जाए तो मेरे जनाज़े को उठा लेना फिर जब तुम दुश्मन के सामने सफ़ बस्ता हो जाओ तो मुझे अपने क़दमों के नीचे दफ़न कर देना। लोगों ने ऐसा ही किया। आपकी क़ब्र कुस्तुन्तुनिया की चार दीवारी के करीब है जो आज तक मशहूर है।

3912. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझे

۳۹۱۲- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي

अब्दुल्लाह बिन उमर ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने या'नी इब्ने उमर (रज़ि.) से और उनसे उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया आपने तमाम मुहाजिरीने अब्वलीन का वज़ीफ़ा (अपने अहदे ख़िलाफ़त में) चार चार हज़ार चार चार क्रिस्तों में मुक़रर कर दिया था, लेकिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का वज़ीफ़ा चार क्रिस्तों में साढ़े तीन हज़ार था इस पर उनसे पूछा गया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) भी मुहाजिरीन में से हैं। फिर आप (रज़ि.) उन्हें चार हज़ार से कम क्यूँ देते हो? तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि उन्हें उनके वालिदैन् हिज़रत करके यहाँ लाए थे। इसलिये वो उन मुहाजिरीन के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने ख़ुद हिज़रत की थी।

मुहाजिरीने अब्वलीन वो सहाबा जिन्होंने दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ पढ़ी हो, जंगे बद्र में शरीक हुए। इससे हज़रत उमर (रज़ि.) का इस्लाम भी ज़ाहिर होता है कि ख़ास अपने बेटे का लिहाज़ किये बग़ैर इस्लाम को मद्दे नज़र रखा। एक रिवायत में यूँ है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के लिये चार हज़ार मुक़रर किया तो सहाबा ने पूछा कि भला आपने अब्दुल्लाह (रज़ि.) को मुहाजिरीने अब्वलीन से तो कम रखा मगर उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से क्यूँ कम न किया? उसामा (रज़ि.) तो अब्दुल्लाह (रज़ि.) से बढ़कर किसी जंग में शरीक नहीं हुए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा हाँ ये सहीह है मगर उसामा (रज़ि.) के बाप को आँहज़रत (ﷺ) अब्दुल्लाह (रज़ि.) के बाप से ज़्यादा चाहते थे। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) की मुहब्बत को मेरी मुहब्बत पर कुछ तरजीह होनी चाहिये।

3913. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबू वाइल शक्कीक़ बिन सलमा ने और उनसे ख़ब्बाब (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हिज़रत की थी। (दूसरी सनद) (राजेअ: 3913)

3914. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा उनसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उन्होंने शक्कीक़ बिन सलमा से सुना, कहा कि हमसे ख़ब्बाब (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हिज़रत की तो हमारा मक़सद सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा थी और अल्लाह तआला हमें उसका अज़्र भी ज़रूर देगा। पस हममें से कुछ तो पहले ही इस दुनिया से उठ गये। और यहाँ अपना कोई बदला उन्होंने नहीं पाया। मुरूअब बिन उमर (रज़ि.) भी उन्हीं में से हैं। उहुद की लड़ाई में उन्होंने शहादत पाई। और उनके कफ़न के लिये हमारे पास एक कम्बल के सिवा और कुछ नहीं था। और वो भी ऐसा कि उससे हम उनका सर छुपाते तो उनके पाँव खुल जाते। और अगर पाँव छुपाते तो सर खुल रह जाता। चुनौचे हज़ूर (ﷺ) ने

عَنْدَ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ - نَعْنِي عَنْ ابْنِ عُمَرَ - عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ وَنَعْنِي اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ قَرَضَنَ لِمُهَاجِرِينَ الْأَوَّلِينَ أَرْبَعَةُ الْأَلْفِ فِي أَرْبَعَةٍ، وَقَرَضَنَ لِابْنِ عُمَرَ ثَلَاثَةَ الْأَلْفِ وَخَمْسَمِائَةٍ لِحَبِيلَ لَهُ: هُوَ مِنْ الْمُهَاجِرِينَ، لِيَمَّ نَقْصَتَهُ مِنْ أَرْبَعَةِ الْأَلْفِ؟ قَالَ: إِنَّمَا هَاجَرَ بِوَأَبَوَاهُ. يَقُولُ: لَيْسَ هُوَ كَمَنْ هَاجَرَ بِنَفْسِهِ)).

۳۹۱۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ خَبَّابٍ قَالَ: ((هَاجَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)). [راجع: ۳۹۱۳]

۳۹۱۴- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ الْأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ حَبِيبَ بْنَ سَلَمَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا خَبَّابٌ قَالَ: ((هَاجَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نَبْغِي وَجْهَ اللَّهِ وَوَجِبَ أَجْرُنَا عَلَى اللَّهِ، فَبِمَا مِنْ مَضَى لَمْ يَأْكُلْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا، مِنْهُمْ مُصَنَّبُ بْنُ عُمَرَ: قِيلَ يَوْمَ أَحْبَدٍ فَلَمْ نَجِدْ شَيْئًا نَكْفِيهِ إِلَّا نَمِرَةَ كُنَّا إِذَا غَطَيْنَا بِهَا رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلَاهُ، فَإِذَا غَطَيْنَا رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ،

हुक्म दिया कि उनका सर छुपा दिया जाए और पाँव को इज़्रखर घास से छुपा दिया जाए। और हममें कुछ वो हैं जिन्होंने अपने अमल का फल इस दुनिया में पुख्ता कर लिया। और अब वो उसको खूब चुन रहे हैं। (राजेअ: 3914)

فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ نُغَطِّيَ رَأْسَهُ بِهَا، وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ مِنْ إِذْخِرٍ. وَمِنَّا مَنْ أَنْشَأَتْ لَهُ لَمَرَّةٌ فَهُوَ يَهْدِيهَا)).

[راجع: 3914]

3915. हमसे यहा बिन बिशर ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे औफ़ ने बयान किया, उनसे मुआविया बिन कुरैह ने बयान किया कि मुझसे अबू बुर्दा बिन मूसा अशअरी ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया। क्या तुमको मा'लूम है, मेरे वालिद उमर (रज़ि.) ने तुम्हारे वालिद अबू मूसा (रज़ि.) को क्या जवाब दिया था। ऐ अबू मूसा! क्या तुम इस पर राजी हो कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हमारा इस्लाम, आपके साथ हमारी हिज्रत, आपके साथ हमारा जिहाद, हमारे तमाम अमल जो हमने आपकी ज़िन्दगी में किये हैं उनके बदले में हम अपने उन आमाल से नजात पा जाएँ जो हमने आपके बाद किये हैं गो वो नेक भी हों बस बराबरी पर मामला ख़त्म हो जाए। इस पर आपके वालिद ने मेरे वालिद से कहा अल्लाह की क़सम! मैं इस पर राजी नहीं हूँ हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद भी जिहाद किया, नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे और बहुत से आमाले ख़ैर किये और हमारे साथ तक मेरा सवाल है तो उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मेरी ख़्वाहिश है कि हज़ूरे अकरम (ﷺ) की ज़िन्दगी में किये हुए हमारे आमाल महफूज़ रहे हों और जितने आमाल हमने आप (ﷺ) के बाद किये हैं उन सबसे उसके बदले में हम नजात पा जाएँ और बराबर पर मामला ख़त्म हो जाए। अबू बुर्दा कहते हैं उस पर मैंने कहा अल्लाह की क़सम आपके वालिद (हज़रत उमर रज़ि) मेरे वालिद (अबू मूसा रज़ि) से बेहतर थे।

3915 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا زَوْجٌ حَدَّثَنَا هُوْتُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو بُرْدَةَ بْنُ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيُّ قَالَ: قَالَ لِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: هَلْ تَذَرِي مَا قَالَ أَبِي لِأَبِيكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَإِنَّ أَبِي قَالَ لِأَبِيكَ: يَا أَبَا مُوسَى، هَلْ يَسْرُكَ إِسْلَامُنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهِجْرَتُنَا مَعَهُ وَجِهَادُنَا مَعَهُ وَعَمَلُنَا كُلُّهُ مَعَهُ بَرَدَ لَنَا، وَإِنْ كُلُّ عَمَلٍ عَمِلْنَاهُ بَعْدَهُ نَجَوْنَا مِنْهُ كَفَالًا رَأْسَ بَرَأْسٍ؟ فَقَالَ أَبِي: لَا وَاللَّهِ، لَقَدْ جَاهَدْنَا بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَلَّيْنَا وَصُمْنَا وَعَمَلْنَا غَيْرًا كَثِيرًا وَأَسْلَمْنَا عَلَى أَيْدِينَا بَشَرًا كَثِيرًا، وَإِنَّا لَنَرَجُو ذَلِكَ. فَقَالَ أَبِي: لَكِنِّي أَنَا وَالَّذِي نَفْسُ عُمَرَ بِيَدِهِ لَوَدِدْتُ أَنْ ذَلِكَ بَرَدَ لَنَا وَإِنْ كُلُّ شَيْءٍ عَمِلْنَاهُ بَعْدَهُ نَجَوْنَا مِنْهُ كَفَاً فَارَأْسَ بَرَأْسٍ. فَقُلْتُ: إِنَّ أَبَاكَ وَاللَّهِ خَيْرٌ مِنْ أَبِي)).

तशरीह: हज़रत उमर (रज़ि.) का ये कौल कि न उनका प्रवाब मिले और न उनकी वजह से अज़ाब हो ये आपकी बेइतिहा अज़ाहतसी और एहतियात थी। उनका मतलब ये था कि आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद जो आमाले ख़ैर हमने किये हैं उन पर हमको पूरा भरोसा नहीं कि वो बारगाहे इलाही में कुबूल हुए या नहीं हमारी निर्यत उनमें ख़ालिस थी या नहीं तो हम इसी को ग़नीमत समझते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) के साथ जो आमाल हमने किये हैं उनका तो प्रवाब हमको मिल जाए नजात के लिये वही आमाल काफ़ी हैं और आपके बाद जो आमाल हैं उनमें हमको कोई मुवाख़िज़ा न हो प्रवाब न सही ये भी ग़नीमत है कि अज़ाब न हो। क्योंकि डर का मक़ाम रजाअ के मुक़ाम से आला है मतलब ये है कि हज़रत उमर (रज़ि.) इस बाब में अबू मूसा (रज़ि.) से अफ़ज़ल थे वरना हज़रत उमर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत मुत्लक़न अबू मूसा (रज़ि.) पर तो बिल इत्तिफ़ाक़ साबित है।

हाफ़िज़ ने कहा कभी मफ़ज़ूल को भी एक खास मुक़दमा में फ़ाज़िल पर अफ़ज़लियत होती है और इसी से अफ़ज़लियते मुत्लका लाज़िम नहीं आती और हज़रत उमर (रज़ि.) का ये फ़र्माना कस्रे नफ़स और तवाज़ाअ और ख़ौफ़े इलाही से था वरना उनका एक एक अमल और एक एक अदल और इंसफ़ हमारे तमाम उम्र के नेक आमाल से कहीं ज़्यादा है। हकीक़त तो ये है अगर कोई मुन्ज़िफ़ आदमी गो वो किसी मज़हब का हो हज़रत उमर (रज़ि.) की सवानेह उमरी पर नज़र डाले तो उसको बिला शुब्हा ये मा'लूम हो जाएगा कि मादर गीती ने ऐसा फ़रज़न्द बहुत ही कम जना है। और मुसलमानों में तो आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद आज तक कोई ऐसा मुदब्बिर, मुंतज़िम, आदिल, हक़मरस्त, अल्लाह वाला, रइयत परवर हाकिम पैदा ही नहीं हुआ। मा'लूम नहीं राफ़िज़ियों की अक्ल कहाँ तशरीफ़ ले गई है कि वो ऐसे जोहर नफीस को जिसकी ज़ात से इस्लाम और मुसलमानों का शफ़ है, मत्ज़न करते हैं। अल्लाह समझे उसका ख़मियाज़ा मरते ही उनको मा'लूम हो जाएगा। (वहीदी)

3916. मुझसे मुहम्मद बिन सबाह ने खुद बयान किया या उनसे किसी और ने नक़ल करके बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अलिया ने, उनसे आसिम अहवल ने, उनसे अबू इम्मान ने बयान किया और उन्होंने कहा कि इब्ने उमर (रज़ि.) से मैंने सुना कि जब उनसे कहा जाता कि तुमने अपने वालिद से पहले हिजरात की तो वो गुस्सा हो जाया करते थे। उन्होंने बयान किया कि मैं उमर (रज़ि.) के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उस वक़्त आप (ﷺ) आराम फ़र्मा रहे थे, इसलिये हम घर वापस आ गये, फिर उमर (रज़ि.) ने मुझे आप (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा और फ़र्माया कि जाकर देख आओ हुज़ूर (ﷺ) अभी बेदार हुआ नहीं चुनाँचे मैं आया (आँहज़रत (ﷺ) बेदार हो चुके थे) इसलिये अंदर चला गया और आप (ﷺ) के हाथ पर बेअत की फिर मैं उमर (रज़ि.) के पास आया और आपको हुज़ुरे अकरम (ﷺ) के बेदार होने की ख़बर दी। उसके बाद हम आप (ﷺ) की ख़िदमत में दौड़ते हुए हाज़िर हुए उमर (रज़ि.) भी अंदर गये और आप (ﷺ) से बेअत की और मैंने भी (दोबारा) बेअत की। (दीगर मक़ाम : 4186, 4187)

गोया अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने लोगों की इस ग़लत गोई का सबब बयान कर दिया कि असल हकीक़त ये थी। इस पर कुछ ने ये समझा कि मैंने अपने वालिद से पहले हिजरात की, ये बिलकुल ग़लत है।

٣٩١٦ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ -
أَبُو بَلْعَيْنٍ عَنْهُ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ
عَاصِمٍ عَنْ أَبِي غُثَمَانَ التَّهْدِيّ قَالَ:
سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِذَا
قِيلَ لَهُ هَاجَرَ قَبْلَ أَبِيهِ يَفْتَضِبُ. قَالَ:
وَقَدِمْتُ أَنَا وَعُمَرُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ
فَوَجَدْنَاهُ قَائِلًا فَوَجَعْنَا إِلَى الْمَنَزَلِ،
فَأَرْسَلَنِي عُمَرُ قَالَ: ائْتِبْ فَانْظُرْ هَلِ
اسْتَيْقَظَ؟ فَأَتَيْتُهُ فَدَخَلْتُ عَلَيْهِ قَائِمًا، ثُمَّ
انْطَلَقْتُ إِلَى عُمَرَ فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّهُ قَدِ
اسْتَيْقَظَ، فَانْطَلَقْنَا إِلَيْهِ نَهْرُولَ نَهْرٍ حَتَّى
دَخَلَ عَلَيْهِ قَائِمًا، ثُمَّ بَاتَ عِنْدَهُ.

[طرفاه ن : ٤١٨٧، ٤١٨٦]

3917. हमसे अहमद बिन इब्मान ने बयान किया, कहा कि उनसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन यूसुफ ने, उनसे उनके वालिद यूसुफ बिन इस्हाक ने, उनसे अबू इस्हाक सबीई ने बयान किया कि मैंने बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से हदीस सुनी वो बयान करते थे कि अबूबक्र (रज़ि.) ने आज़िब (रज़ि.) से एक पालान खरीदा और मैं उनके साथ उठाकर पहचान आया था, उन्होंने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) से आज़िब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सफर हिजरत का हाल पूछा तो उन्होंने बयान किया कि चूँकि हमारी निगरानी हो रही थी (या) नी कुफ़्रार हमारी ताक में थे) इसलिये हम (ग़ार से) रात के वक़्त बाहर आए और पूरी रात और दिन भर बहुत तेज़ी के साथ चलते रहे, जब दोपहर हुई तो हमें एक चट्टान दिखाई दी। हम उसके करीब पहुँचे तो उसकी आड़ में थोड़ा सा साया भी मौजूद था, अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हुज़ूर (ﷺ) के लिये एक चमड़ा बिछा दिया जो मेरे साथ था आप उस पर लेट गये, और मैं आस-पास की रेत झाड़ने लगा। इत्तिफ़ाक़ से एक चरवाहा नज़र आया जो अपनी बकरियों के थोड़े से रेवड़ के साथ उसी चट्टान की तरफ़ आ रहा था उसका भी मक़सद उस चट्टान से वही था जिसके लिये हम यहाँ आए थे (या) नी साया हासिल करना) मैंने उससे पूछा लड़के तू किसका गुलाम है? उसने बताया कि फ़लों का हूँ। मैंने उससे पूछा क्या तुम अपनी बकरियों से कुछ दूध निकाल सकते हो? उसने कहा कि हाँ फिर वो अपने रेवड़ से एक बकरी लाया तो मैंने उससे कहा कि पहले उसका धन झाड़ लो। उन्होंने बयान किया कि फिर उसने कुछ दूध दहा। मेरे साथ पानी का एक छागल था। उसके मुँह पर कपड़ा बँधा हुआ था। ये पानी मैंने हुज़ूर (ﷺ) के लिये साथ ले रखा था। वो पानी मैंने उस दूध पर इतना डाला कि वो नीचे तक ठण्डा हो गया तो मैं उसे हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया दूध नोश फ़र्माइये या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने उसे नोश फ़र्माया जिससे मुझे बहुत खुशी हासिल हुई। उसके बाद हमने फिर कूच शुरू किया और ढूँढ़ने वाले लोग हमारी तलाश में थे।

۳۹۱۷- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْمَانَ حَدَّثَنَا شَرِيعُ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُونُسَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ يُحَدِّثُ قَالَ: إِنَّمَا عَرَبُ بَكْرِ مِنْ عَرَبٍ رَجُلًا)) فَحَمَلْتُهُ مَعَهُ. قَالَ: فَسَأَلَهُ عَرَبٌ مِنْ قَسِيرِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: أَخَذَ عَلَيْنَا بِالرَّصِيدِ، فَعَرَجْنَا لَيْلًا، فَأَخَذْنَا لَيْلَتَنَا وَتَوَضَّأَ حَتَّى قَامَ قَائِمُ الظُّهَيْرِ، ثُمَّ رَفَعَتْ لَنَا صَخْرَةً، فَأَتَيْنَاهَا وَهِيَ مِنْ طِلٍّ. قَالَ: فَفَرَشْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِرَاشَهُ مَعِيَ، ثُمَّ اضْطَجَعْتُ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَنْطَلَقْتُ أَنْفَضُ حَوْلَهُ، لِيُذَا أَنَا بِرَأْسِ لَدَى أَقْبَلُ فِي غَنَمَةٍ يُرِيدُ مِنَ الصَّخْرَةِ مِثْلَ اللَّيْلِ أَرْدَانًا، فَسَأَلْتُهُ: لِمَنْ أَنْتَ يَا غُلَامُ؟ فَقَالَ: أَنَا لِفُلَانٍ. فَقُلْتُ لَهُ: هَلْ فِي غَنَمِكَ مِنْ تَبَنٍ؟ قَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ لَهُ: هَلْ أَنْتَ خَالِبٌ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَأَخَذَ شَاةً مِنْ غَنَمِهِ، فَقُلْتُ لَهُ: انْفَعِي الصَّرْعَ. قَالَ: فَحَلَبْتُ كُنْبَةً مِنْ تَبَنٍ، وَمَعِيَ إِدَاوَةٌ مِنْ مَاءٍ عَلَيْهَا خِيَرَةٌ قَدْ رَوَّاهَا لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَصَبَبْتُ عَلَى اللَّبَنِ حَتَّى بَرَدَ اسْتَفْلُهُ، ثُمَّ أَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَشَرِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى رَحِمَتْ. ثُمَّ ارْتَحَلْنَا وَالتَّلَبُّ فِي إِرْنَا)).

(राजेअ: 2439)

[راجع: 2439]

3918. बराअ ने बयान किया कि जब मैं अबूबक्र (रज़ि.) के साथ उनके घर में दाखिल हुआ था तो आपकी साहबज़ादी आइशा (रज़ि.) लेटी हुई थीं उन्हें बुखार आ रहा था मैंने उनके वालिद को देखा कि उन्होंने उनके रुख़सार पर बोसा दिया और दरयाफ़्त किया बेटी! तबीअत कैसी है?

۳۹۱۸- قَالَ الْبَرَاءُ : لَدَخَلْتُ مَعَ أَبِي بَكْرٍ عَلَى أُخْتِهِ، فَإِذَا عَائِشَةُ ابْنَتُهُ مُسْتَلِجَةً لَقَدْ أَصَابَهَا حُمَّى، فَرَأَيْتُ أَبَاهَا يَقْبَلُ حَذَقًا وَقَالَ: ((كَيْفَ أَنْتَ يَا بَنِيَّةُ)).

तशरीह: हज़रत सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के फ़ज़ाईल व मनाकिब में ये बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है कि सफ़रे हिजरत में आपने रसूले करीम (ﷺ) का फ़िदाकाराना साथ दिया और आप (ﷺ) की मुम्किन ख़िदमत अंजाम दी। जिसके सिलह में क़यामत तक के लिये आपको औहज़रत (ﷺ) का यारे ग़ार कहा गया है, हकीक़त ये कि आप (रज़ि.) को तमाम सहाबा (रज़ि.) पर ऐसी फ़ौक़ियत हासिल है जैसी चाँद को आसमान के तमाम सितारों पर हासिल है। वो नामो-निहाद मुसलमान बड़े ही बदबख़्त हैं जो ऐसे सच्चे, पुख़्ता मोमिन, मुसलमान सहाबी-ए-रसूल को बुरा कहते हैं और तबरीबाज़ी से अपनी जुबानों को गन्दी करते हैं। जब तक इस दुनिया में इस्लाम जिन्दा है हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) का नाम नामी इस्लाम के साथ जिन्दा रहेगा। अल्लाह ने आपकी आला ख़िदमात का ये सिला आप (रज़ि.) को बख़शा कि क़यामत तक के लिये आप रसूले करीम (ﷺ) के पहलू में गुम्बदे ख़जरा में आराम फ़र्मा रहे हैं। अल्लाह पाक हमारी तरफ़ से उनकी पाक रूह पर बेशुमार सलाम और रहमतें नाज़िल फ़र्माएँ और क़यामत के दिन अपने हबीब के साथ आपके तमाम फ़िदाइयों की मुलाक़ात नसीब करे आमीन या रब्बल आलमीन।

3919. हमसे सुलैमान बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन हिम्यर ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन अबी अब्ला ने बयान किया, उनसे इक्ब़ा बिन वसाज ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) के ख़ादिम अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) (मदीना मुनव्वरा) तशरीफ़ लाए तो अबूबक्र (रज़ि.) के सिवा और कोई आप (ﷺ) के अस्हाब में ऐसा नहीं था जिसके बाल सफ़ेद हो रहे हों, इसलिये आपने मेहन्दी और वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल किया था। (दीगर मक़ाम: 3920)

۳۹۱۹- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْرٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ أَبِي عَثَّةٍ أَنَّ عُقْبَةَ بْنَ وَصَّاجٍ حَدَّثَهُ عَنْ أَنَسِ بْنِ خَادِمٍ النَّسِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ وَلَيْسَ فِي أَصْحَابِهِ أَشْمَطُ غَيْرُ أَبِي بَكْرٍ، فَلَقَفَهَا بِالْحِنَاءِ وَالْكَثْمِ)).

[طرنه في: 3920]

3920. और दुहैम ने बयान किया, उनसे वलीद ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा मुझसे अबू उबैद ने बयान किया, उनसे इक्ब़ा बिन वसाज ने उन्होंने कहा कि मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) के अस्हाब में सबसे ज़्यादा उम्र अबूबक्र (रज़ि.) की थी इसलिये उन्होंने मेहन्दी और वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल किया। उससे आपके बालों का रंग लाली लिये हुए काला हो गया था। (राजेअ: 3919)

۳۹۲۰- وَقَالَ دُحَيْمٌ : حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنِي أَبُو عُبَيْدٍ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ وَصَّاجٍ حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ فَكَانَ أَنَسُ أَصْحَابِهِ أَبُو بَكْرٍ، فَلَقَفَهَا بِالْحِنَاءِ وَالْكَثْمِ حَتَّى قَلَا لَوْنُهَا)).

[راجع: 3919]

हृदीष में लफ़ज़ कतम है कतम में इख़ितलाफ़ है। कुछ ने कहा कि वस्मा को कहते हैं कुछ ने कहा वो आस की तरह का एक पत्ता

होता है उसका पेड़ सख्त पत्थरों में उगता है इसकी शाखें बारीक धागों की तरह लटकी होती हैं।

3921. हमसे अबूबक्र बिन फुर्ज ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा बिन जुबैर ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कबीला बनु कल्ब की एक औरत उम्मे बक्र नामी से शादी कर ली थी। फिर जब उन्होंने हिज़रत की तो उसे तलाक़ दे आए। उस औरत से फिर उसके चचाज़ाद भाई (अबूबक्र शहाद बिन अस्वद) ने शादी कर ली थी, ये शख्स शायर था और उसी ने ये मशहूर मर्षिया कुफ़ारे कुरैश के बारे में कहा था, मक्कामे बद्र के कुओं को मैं क्या कहूँ कि उन्होंने हमें पेड़ शीज़ा के बड़े बड़े प्यालों से महरूम कर दिया जो कभी ऊँट के कोहान के गोश्त से भी बेहतर हुआ करते थे, मैं बद्र के कुओं को क्या कहूँ! उन्होंने हमें गाने वाली लौण्डियों और अच्छे शराबियों से महरूम कर दिया उम्मे बक्र तो मुझे सलामती की दुआ देती रही लेकिन मेरी क़ौम की बर्बादी के बाद मेरे लिये सलामती कहाँ है ये रसूल हमें दोबारा ज़िन्दगी की ख़बरें बयान करता है। कहीं उल्लू बन जाने के बाद फिर ज़िन्दगी किस तरह मुम्किन है।

۳۹۲۱- حَدَّثَنَا اَمْتُعُ حَنْظَلَةُ بْنُ وَهَبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ اَبِي هِنَاهٍ عَنْ غُرَوةَ عَنْ جَابِلَةَ: ((اَنَّ اَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تَزَوَّجَ امْرَاةً مِنْ كَلْبٍ يُقَالُ لَهَا اُمُّ بَكْرٍ، فَلَمَّا خَافَ اَبُو بَكْرٍ طَلَقَهَا فَزَوَّجَهَا اَبُو عَمَّهَا هَذَا الشَّاعِرُ الَّذِي لَانَ عَلَيْهِ الْقَمِيذَةُ رَأَى كَفَّارَ لَوْنِي:

وَمَادَا بِالْقَلْبِ قَلْبِي بَنِي
مَنْ الشَّرِي تَرْتَنُّ بِالسَّامِ
وَمَادَا بِالْقَلْبِ قَلْبِي بَنِي
مِنْ الْقِنَاتِ وَالشَّرِبِ الْكِرَامِ
نَحَى بِالسَّلَامَةِ اُمُّ بَكْرٍ
وَهَلْ لِي بَعْدَ قَوْمِي مِنْ سَلَامٍ
يُحَدِّثُنَا الرُّسُولُ بَانَ مَسْحَا
وَكَيْفَ حَيَاةِ اَصْدَاءٍ وَهَامِ

जाहिलियत में अरब के लोग ये समझते थे कि मुर्दे की खोपड़ी से रूह निकलकर उल्लू के क़ालिब में जन्म लेती है और दोस्तों को आवाज़ देती फिरती है।

तशरीह: अबूबक्र शहाद बिन अस्वद ब हालते कुफ़र बद्र के मक्तूलों को कुफ़ार मक्का का मर्षिया कह रहा है, जिसका मतलब ये कि वो लोग बद्र के कुएँ में मरे पड़े हैं जो लोगों के सामने ऊँट के कोहान का गोश्त जो अरबों के नज़दीक निहायत लज़ीज़ होता है पेड़ शीज़ा की लकड़ी के प्यालों में भर भरकर रखा करते थे। शीज़ा एक पेड़ जिसकी लकड़ी के प्याले बनाते हैं यहाँ मुराद वो लोग हैं जो उन प्यालों का इस्तेमाल करते हैं। या'नी बड़े अमीर, सरमायादार लोग, जो रात दिन शराबखोरी और नाच गाने बजाने वालियों की सुहबत में रहा करते थे। मर्षिया में मज़कूर उम्मे बक्र, उसकी बीवी है जो पहले हज़रत सिदीके अकबर (रज़ि.) के निकाह में थी। आखिरी शेर का मतलब ये है कि अरब के लोग जाहिलियत में समझते थे कि मरने के बाद इंसान की रूह उल्लू के जिस्म में जन्म लेती है और उल्लूओं को पुकारती फिरती है। शायर की मुराद ये है कि मरने के बाद दोबारा इंसानी क़ालिब में ज़िन्दा होने के बारे में पैग़म्बर का कहना ग़लत है, हश्श नश्श कुछ नहीं है और रूह उल्लू बनकर दोबारा आदमी के क़ालिब में वकूँकर आ सकती हैं। काफ़िरी का ये क़दीमी अक़ीदा फ़ासिद है जिसकी तर्दीद से सारा कुआन मजीद भरा हुआ है। इस मर्षिये का मन्ज़ूम तर्जुमा मौलाना वहीदुज्जयाँ मरहूम के लफ़्ज़ों में ये है।

गढ़े में बद्र के क्या है अरे ओ सुनने वाले
गढ़े में बद्र के क्या है अरे ओ सुनने वाले
सलामत रह जो कहती है मुझे ये उम्मे बक्र

पड़े हैं ऊँट के कोहान के उम्दह प्याले
शराबी हैं वहाँ गाना बजाना सुनने वाले
कहाँ है सलामत जब मरे सब क़ौम वाले

ये पैगम्बर हमें कहता है तुम मरकर जियोगे कहीं उल्लू भी फिर इंसान हुए आवाज़ वाले

शायर मज्कूर के बारे में मन्कूल है कि वो मुसलमान हो गया था बाद में मूर्तद हो गया। लफ़्ज़े हामा तड़फ़ीफ़े मीम के साथ है अरब जाहिलियत का ए' तिकाद था कि मक्कतूले जंगी (मारे गये योद्धा) का किसान न लिया जाए तो उसकी रूह उल्लू के जिस्म में जन्म लेकर अपनी कब्र पर रोज़ाना आकर ये कहती है कि मेरे क़ातिल का खून मुझको पिलाओ जब उसका किसान ले लिया तो वो उड़ जाती है। (वहीदी)

3922. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे प्राबित ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ार में था। मैंने जो सर उठाया तो क़ौम के चन्द लोगों के क़दम (बाहर) नज़र आए। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! अगर उनमें से किसी ने नीचे झुककर देख लिया तो वो हमें ज़रूर देख लेगा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अबूबक्र! ख़ामोश रहो हम ऐसे दो हैं कि जिनका तीसरा अल्लाह है।

(राजेअ : 3635)

जब अल्लाह किसी के साथ हो तो उसको क्या ग़म है सारी दुनिया उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अल्लाह के साथ होने से उसकी नुसरत व हिफ़ाज़त मुराद है जबकि वो अपनी ज़ाते वाला सिफ़ात से अर्श पर मुस्तवी है रसूले करीम (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया था दुनिया ने देख लिया कि वो किस तरह हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह प्राबित हुआ और सारे कुफ़ारे अरब मिलकर भी इस्लाम और पैगम्बरे इस्लाम (ﷺ) पर ग़ालिब न आ सके।

3923. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम दमिशक़ी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा मुझसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अत्ता बिन यज़ीद लैथी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कहा कि एक आराबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से हिज्रत का हाल पूछने लगा आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुझ पर अफ़सोस! हिज्रत तो बहुत मुश्किल काम है। तुम्हारे पास कुछ ऊँट भी हैं? उन्होंने कहा जी हाँ हैं। फ़र्माया कि तुम उसकी ज़कात भी अदा करते हो उन्होंने अर्ज क्या जी हाँ अदा करता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऊँटनियों का दूध दूसरे (मुहताजों) को भी दूहने के लिये दे दिया करते हो? उन्होंने अर्ज किया कि ऐसा भी करता हूँ आपने फ़र्माया, उन्हें घाट पर ले जाकर (मुहताजों के लिये) दहते हो? उन्होंने अर्ज किया ऐसा भी करता हूँ। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने

۳۹۲۲- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْغَارِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِنَّا آتَا بِالْقَوْمِ الْقَوْمِ، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ لَوْ أَنَّ بَعْضَهُمْ طَاحًا بِصَرَّةٍ رَأَى. قَالَ: «اسْكُتْ يَا أَبَا بَكْرٍ، إِنَّا نَالَهُ الْفِتْنَةَ».

(راجع : ۳۶۰۳)

۳۹۲۳- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ: حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّيْثِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «جَاءَ أَغْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ الْهِجْرَةِ، فَقَالَ: «وَيَحْتَكَ، إِنَّ الْهِجْرَةَ شَأْنُهَا شَدِيدٌ، فَهَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟» قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «فَتُعْطَى صَدَقَتُهَا؟» قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «فَهَلْ تَمْنَحُ بَهَائِمًا؟» قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «فَتُعْطَى يَوْمَ

फ़र्माया कि फिर तुम सात समुन्दर पार अमल करो, अल्लाह तआला किसी अमल का भी प्रवाब कम नहीं करेगा।

وَرَوَيْتُمْ أَنَّ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((لَا تَمَلَّ مِنْ رِوَايَةِ الْبَحَارِ، فَإِنَّ اللَّهَ لَنْ يَغْرِلَ مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا)).

ये हदीष किताबुज्जकात में गुजर चुकी है इसमें हिजरत का जिक्र है यही हदीष और बाब में मुताबकत है।

बाब 46 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के

46 - بَابُ مَقَدِّمِ النَّبِيِّ ﷺ

सहाबा किराम का मदीना में आना

وَأَصْحَابِهِ الْمَدِينَةَ

और हिजरत (ﷺ) पीर के दिन बारह रबीउल अव्वल को मदीना मुनव्वरा में तशरीफ़ लाए और अक़बर सहाबा आप (ﷺ) से पहले मदीना में आ चुके थे।

3924. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमें अबू इस्हाक ने ख़बर दी, उन्होंने बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने यूँ बयान किया कि सबसे पहले (हिजरत करके) हमारे यहाँ मुफ़ अब बिन इमैर (रज़ि.) और इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) आए फिर अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) और बिलाल (रज़ि.) आए।

3924 - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَأَنَا أَبُو إِسْحَاقَ سَمِعَ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَوَّلُ مَنْ قِيمَ عَلَيْنَا مُصَنَّبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ. ثُمَّ قِيمَ عُمَارُ بْنُ يَاسِرٍ وَبِلَالٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ)).

रसूले करीम (ﷺ) ने मुफ़ अब बिन इमैर (रज़ि.) को हिजरत का हुक्म फ़र्माया और मदीना में मुअल्लिम और मुबल्लिग का मनसब उनके हवाले किया।

3925. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया और उन्होंने बराब बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि सबसे पहले हमारे यहाँ मुफ़ अब बिन इमैर (रज़ि.) और इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) (नाबीना) आए। ये दोनों (मदीना के) मुसलमानों को कुर्आन पढ़ाना सिखाते थे। उसके बाद बिलाल, सअद और अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) आए। फिर इमैर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) हुजुरे अकरम (ﷺ) के बीस सहाबा को साथ लेकर आए और नबी करीम (ﷺ) (हज़रत अबूबक्र रज़ि.) और आमिर बिन फ़हैरा को साथ लेकर तशरीफ़ लाए, मदीना के लोगों को जितनी खुशी और मुसरत हुजुरे अकरम (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी से हुई मैंने कभी उन्हें किसी बात पर इस क़दर खुश नहीं देखा। लौण्डिया भी (खुशी में) कहने लगीं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आ गये हुजुरे अकरम (ﷺ) जब तशरीफ़ लाए तो उससे पहले मैं मुफ़स्सल की

3925 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُبَيْرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَوَّلُ مَنْ قِيمَ عَلَيْنَا مُصَنَّبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ وَكَانُوا يَقْرَأَانِ النَّاسَ، فَقِيمَ بِلَالٌ وَمُعَدُّ عُمَارُ بْنُ يَاسِرٍ. ثُمَّ قِيمَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فِي عِشْرِينَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قِيمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَمَا رَأَيْتُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ فَرَحُوا بِشَيْءٍ فَرَحَهُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ حَتَّى جَعَلَ الْإِمَاءُ يَقْلَنُ: قِيمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،

दूसरी कई सूरतों के साथ सबिहिस्मा रब्बिकल आला भी सीख चुका था।

لَمَّا قَلِمَ حَتَّى قَرَأَتْ ﴿سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾ فِي سُورَةٍ مِنَ الْمُفَصَّلِ).

तशरीह: हाकिम की रिवायत में अनस (रज़ि.) से यूँ है जब आप (ﷺ) मदीना के करीब पहुँचे तो बनी नज्जार की लड़कियाँ दफ गाती बजाती निकलीं वो कह रही थीं नहनु जवारुम्मिम बनी नज्जार या हब्बज़ा मुहम्मदमिन जारि दूसरी रिवायत में यूँ है कि अन्सार की लड़कियाँ गाती बजाती आप (ﷺ) की तशरीफ आवरी की खुशी में निकलीं। वो कह रही थीं।

तल अल्बद्दु अलैना मिन षनयातिल्वदाइ वजबशशुरू अलैना मा दआ लिल्लाहि दाइ

औहज़रत (ﷺ) ने फर्माया, इन्नल्लाह युहिबु कुन्न या'नी तुम जान लो कि अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करता है। क़स्तलानी (रह) ने उन बीस सहाबा के अस्मा गिरामी भी पेश किये हैं जो औहज़रत (ﷺ) से पहले हिजरत करके मदीना पहुँच चुके थे। मुफ़स्सलात की सूरतें वो हैं जो सूरह हुजुरात से शुरू होती हैं।

3926. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके वालिद इर्वा बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो अबूबक्र और बिलाल (रज़ि.) को बुखार चढ़ आया, मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज किया वालिद साहब! आपकी नबी अत कैसी है? उन्होंने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को जब बुखार चढ़ा तो ये शे'र पढ़ने लगे।

(तर्जुमा) हर शख्स अपने घरवालों के साथ मुबह करता है और मौत तो ज़ूती के तस्मे से भी ज़्यादा करीब है, और बिलाल (रज़ि.) के बुखार में जब कुछ तख़फ़ीफ़ होती तो ज़ोर ज़ोर से रोते और ये शे'र पढ़ते,

काश मुझे ये मा'लूम हो जाता कि कभी मैं एक रात भी वादी मक्का में गुज़ार सकूँगा,

जबकि मेरे आसपास (खुशबूदार घास) इज़्र और कैंची होंगी, और क्या शामा और तफ़ील की पहाड़ियाँ एक नज़र देख सकूँगा, आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपको इसकी ख़बर दी तो आपने दुआ की, ऐ अल्लाह! मदीना की मुहब्बत हमारे दिल में इतनी पैदाकर जितनी मक्का की थी बल्कि उससे भी ज़्यादा, यहाँ की आबो-हवा को सेहत बख़्श बना। हमारे लिये यहाँ के साअ और

٣٩٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ : ((لَمَّا قَلِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْمَدِينَةَ وَعِكَ أَبُو بَكْرٍ وَبِلَالٌ. قَالَتْ: فَدَخَلْتُ عَلَيْهِمَا فَقُلْتُ : يَا أَبَتِ كَيْفَ تَجِدُكَ؟ وَبِلَالٌ كَيْفَ تَجِدُكَ؟ قَالَتْ: فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ إِذَا أَحَذَّتْهُ الْحُمَى يَقُولُ:

كُلُّ امْرِئٍ فَصَحَّحَ فِي أَهْلِهِ وَالْمَوْتُ أَذْنِي مِنْ حَيْرَالِهِ تَغْلِيهِ وَكَانَ بِلَالٌ إِذَا أَلْقَعَ عَنْهُ الْحُمَى يَقُولُ عَفِيرَتُهُ وَيَقُولُ :

أَلَا لَيْتَ حِمْيَرِي هَلْ أَبِيتُ لَيْلَةً بِوَادٍ وَحَوْلِي إِذْخِرَ وَجَلِيلُ وَهَلْ أُرِدْتُ يَوْمًا مَيَاةً مِجَنَّةً وَهَلْ يَتَكُونُ لِي شَامَةٌ وَطَفِيلُ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَجِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ كَحَبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَمْدًا، وَصَحِّحْنَا،

मुद्द (अनाज नापने के पैमाने) में बरकत इनायत फ़र्मा और यहाँ के बुखार को मक़ामे जुहफ़ा में भेज दे।

(राजेअ: 1889)

وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِهَا وَمُدَّهَا، وَانْقُلْ حُمَاهَا فَاجْعَلْهَا بِالْحَقِيقَةِ).

[راجع: ١٨٨٩]

जुहफ़ा अब मिस्र वालों का मीकात है। उस वक़्त वहाँ यहूदी रहा करते थे। इमाम क़स्तालानी (रह) ने कहा कि इस हदीष से ये निकला कि काफ़िरों के लिये जो इस्लाम और मुसलमानों के हर वक़्त जान के दुश्मन बने रहते हों उनकी हलाकत के लिये बद्दुआ करना जाइज़ है, अमन पसन्द काफ़िरों का यहाँ ज़िक्र नहीं है, मक़ामे जुहफ़ा अपनी ख़राब आबो हवा के लिये अब भी मशहूर है जो यक़ीनन आँहज़रत (ﷺ) की बद्दुआ का अप्रर है।

हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने उन शायरों का मन्ज़ूम तर्जुमा किया है।

ख़ैरियत से अपने घर में सुबह करता है बशर
काश मैं मक्का की वादी में रहूँ फिर एक रात
काश फिर देखूँ मैं शामा काश फिर देखूँ तफ़ील

मौत उसकी जूती के तस्मे से है नज़दीक तर
सब तरफ़ मेरे आगे हों वाँ जलील इज़्ज़र नबात
और पियू पानी मजिन्ना के जो हैं आबे हयात

शामा और तफ़ील मक्का की पहाड़ियों के नाम हैं। रोने में जो आवाज़ निकलती है उसे अक़ीरा कहते हैं।

3927. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, कहा मुझसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया, उन्हें इब्बदुल्लाह बिन अदी ने ख़बर दी कि मैं इब्मान की ख़िदमत में हाज़िर हुआ (दूसरी सनद) और बिशर बिन शुरैब ने बयान किया कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, कहा मुझसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया और उन्हें इब्बदुल्लाह बिन अदी बिन ख़यार ने ख़बर दी कि मैं इब्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने हम्दो शहादत पढ़ने के बाद फ़र्माया, अम्माबअद! कोई शक़ व शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ मबरूज़ किया, मैं भी उन लोगों में था जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की दा'वत पर (इब्तिदा ही मैं) लब्बैक कहा और मैं उन तमाम चीज़ों पर ईमान लाया जिन्ह लेकर आँहज़रत (ﷺ) मबरूज़ हुए थे, फिर मैंने दो हिजरत की और हुज़ुरे अकरम (ﷺ) की दामादी का शफ़ मुझे हासिल हुआ और हुज़ुर (ﷺ) से मैंने बेअत की अल्लाह की क़सम! कि मैंने आपकी न कभी नाफ़रमानी की और न कभी आपसे धोखाबाज़ी की, यहाँ तक कि आपका इंतिकाल हो गया। शुरैब के साथ इस रिवायत की मुताबअत इस्हाक़ कल्बी ने भी की है, उनसे जुहरी ने इस हदीष को इसी तरह बयान किया। (राजेअ: 3696)

٣٩٢٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ أَخْبَرَنَا قَعْمَرُ بْنُ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي غُرُورَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَدِيٍّ أَخْبَرَهُ ((دَخَلْتُ عَلَى عُثْمَانَ)) ح. وَقَالَ بَشَرُ بْنُ شُعْبَةَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي غُرُورَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَدِيٍّ بْنَ الْخَيْثَرِ أَخْبَرَهُ قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى عُثْمَانَ، فَتَشَهَّدَ ثُمَّ قَالَ: أَمَا بَعْدُ فَإِنَّ اللَّهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا بِالْحَقِّ، وَكُنْتُ بِمَنْ اسْتَجَابَ لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ وَأَمَنْ بِمَا بَعَثَ بِهِ مُحَمَّدٌ ﷺ، ثُمَّ هَاجَرْتُ هِجْرَتَيْنِ، وَكُنْتُ صِهْرَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَبَايَعْتُهُ، فَوَرَّ اللَّهُ مَا عَصَيْتُهُ وَلَا عَشَيْتُهُ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللَّهُ تَعَالَى)). تَابَعَهُ إِسْحَاقُ الْكَلْبِيُّ ((حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ)) مِثْلَهُ.

[راجع: ٣٦٩٦]

3928. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझे यूनुस ने खबर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने खबर दी कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) मीना में अपने खैमा की तरफ़ वापस आ रहे थे, ये उमर (रज़ि.) के आखिरी हज्ज का वाक़िया है तो उनकी मुझसे मुलाक़ात हो गई। उन्होंने कहा कि (उमर (रज़ि.) हाजियों को ख़िताब करने वाले थे इसलिये) मैंने अज़ी किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मौसमे हज्ज में मा' मूली सूझ बूझ रखने वाले सब तरह के लोग जमा होते हैं और शोरो-गुल बहुत होता है इसलिये मेरा ख़याल है कि आप अपना इरादा मौकूफ़ कर दें और मदीना पहुँचकर (ख़िताब फ़र्माएँ) क्योंकि वो हिजरत और सुन्नत का घर है और वहाँ समझदार मुअज़्ज़ और साहिबे अक़ल लोग रहते हैं। इस पर उमर (रज़ि.) ने कहा कि तुम ठीक कहते हो, मदीना पहुँचते ही सबसे पहली फ़ुर्मत में लोगों को ख़िताब करने के लिये ज़रूर खड़ा होऊँगा। (राजेज़: 2462)

۳۹۲۸- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ ح. وَأَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ وَهُوَ يَجُوزُ فِي آخِرِ حَجَّةٍ حَجَّهَا عُمَرُ، فَوَجَدَنِي فَقَالَ: عَبْدَ الرَّحْمَنِ. فَقُلْتُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ الْمَوْسِمَ يَفْتَحُ رِجَاحَ النَّاسِ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تُنْهَلَ حَتَّى تَقْدَمَ الْمَدِينَةَ، فَإِنَّهَا دَارُ الْهِجْرَةِ وَالسُّنَّةِ، وَتَعْلَمَنَّ لِأَهْلِ الْفَقْدِ وَأَشْرَافِ النَّاسِ. وَذَوِي رَأْيِهِمْ. قَالَ عُمَرُ: لَا قَوْمَ لِي أَوْلَ مَقَامَ الْقَوْمِ بِالْمَدِينَةِ)). [راجع: ۲۴۶۲]

तशरीह: इस वाक़िया का पसे मंज़र ये है कि किसी नादान ने मीना में ऐन मौसमे हज्ज में ये कहा था कि अगर उमर मर जाएँ तो मैं फ़लाँ शख्स से बेअत करूँगा। अबूबक्र (रज़ि.) से लोगों ने बिन सोचे समझे बेअत कर ली थी। ये बात हज़रत उमर (रज़ि.) तक पहुँच गई जिस पर हज़रत उमर (रज़ि.) को गुस्सा आ गया और उस शख्स को बुलाकर तम्बीह का ख़याल हुआ मगर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने ये सलाह दी कि ये मौसमे हज्ज है हर किसिम के दाना व नादान लोग यहाँ जमा हैं, यहाँ ये मुनासिब न होगा मदीना शरीफ़ पहुँचकर आप जो चाहें करें। हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत अब्दुर्रहमान का ये मशवरा कुबूल फ़र्मा लिया।

3929. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्हें इब्ने शिहाब ने खबर दी, उन्हें खारिजा बिन ज़ैद बिन प्राबित ने कि (उनकी वालिदा उम्मे इलाअ रज़ि. एक अंसारी ख़ातून जिन्होंने नबी करीम ﷺ से बेअत की थी) ने उन्हें खबर दी कि जब अंसार ने मुहाजिरीन की मेज़बानी के लिये कुआँ डाला तो इब्मान बिन मज़ज़न उनके घराने के हिस्से में आए थे। उम्मे इलाअ (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इब्मान (रज़ि.) हमारे यहाँ बीमार पड़ गये। मैंने उनकी पूरी तरह तीमारदारी

۳۹۲۹- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدٍ بْنِ قَابَتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلَاءِ - امْرَأَةً مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ مَطْعُونٍ طَارَ لَهُمْ فِي السُّكْنَى حِينَ اقْتَرَعَتِ الْأَنْصَارُ عَلَى

की लेकिन वो न बच सके। हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया था। इतने में नबी करीम (ﷺ) भी तशरीफ ले आए तो मैंने कहा अबू साइब! (इम्मान रज़ि. की कुन्नियत) तुम पर अल्लाह की रहमतें हों, मेरी तुम्हारे बारे में गवाही है कि अल्लाह तआला ने तुम्हें अपने इकराम से नवाज़ा है। ये सुनकर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपने इकराम से नवाज़ा है? मैंने अर्ज़ किया मुझे तो इस सिलसिले में कुछ ख़बर नहीं है, मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों या रसूलल्लाह (ﷺ)! लेकिन और किसे नवाज़ेगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसमें तो वाकई कोई शक व शुब्हा नहीं कि एक यक़ीनी अमर (मौत) उनको आ चुकी है, अल्लाह की क़सम! कि मैं भी उनके लिये अल्लाह तआला से ख़ैर-ख़्वाही की उम्मीद रखता हूँ लेकिन मैं हालाँकि अल्लाह का रसूल हूँ खुद अपने बारे में नहीं जान सकता कि मेरे साथ क्या मामला होगा। उम्मे अलाअ (रज़ि.) ने अर्ज़ किया फिर अल्लाह की क़सम! इसके बाद मैं अब किसी के बारे में उसकी पाकी नहीं करूँगी। उन्होंने बयान किया कि इस वाक़िया पर मुझे बड़ा रंज हुआ। फिर मैं सो गई तो मैंने ख़्वाब में देखा कि इम्मान बिन मज़ज़न के लिये एक बहता हुआ चश्मा है। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपसे अपना ख़्वाब बयान किया तो आपने फ़र्माया कि ये उनका अमल था। (राजेअ: 1243)

سُكِنَ الْمُهَاجِرِينَ. قَالَتْ أُمُّ الْغَلَاءِ: لَأَشْتَكِيَ عُثْمَانَ عِنْدَنَا، فَمَرَّضْتُهُ حَتَّى تَوَفَّى، وَجَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ. فَدَخَلَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ، فَقُلْتُ: رَحِمَهُ اللَّهُ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ. شَهِدَ لِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللَّهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يَذْرُؤُكَ أَنْ اللَّهُ أَكْرَمُ؟)) قَالَتْ: قُلْتُ: لَا أَذْرِي، يَا نَبِيَّ أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَمَنْ؟ قَالَ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ وَاللَّهُ الْيَقِينُ، وَاللَّهُ إِنِّي لَأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَمَا أَذْرِي وَاللَّهِ - وَأَنَا رَسُولُ اللَّهِ - مَا يُفْعَلُ بِي)). قَالَتْ: فَأَخْبَرْتَنِي ذَلِكَ، فَبِئْتُ. فَرَأَيْتُ لِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ عَيْنًا تَجْرِي. فَجِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((ذَلِكَ عَمَلُهُ)).

[راجع: 1243]

तशरीह: एक रिवायत में यूँ है मैं ये नहीं जानता कि इम्मान (रज़ि.) का हाल क्या होना है। इस रिवायत पर तो कोई अंदेशा नहीं लेकिन महफूज़ यही रिवायत है कि मैं नहीं जानता कि मेरा हाल क्या होना है जैसे कुआन शरीफ में है। व मा अदरी मा युफ़अलु बी व ला बिकुम (अल अहकाफ़: 9) कहते हैं ये आयत और हदीष उस ज़मान की है जब तक ये आयत नहीं उतरी थी लियगफिरहु लकल्लाहु मा तक़दम मिन ज़म्बिक वमा तअख़ख़र (अल फ़तह: 2) और आपको क़त्अन ये नहीं बतलाया गया था कि आप सब अगले पिछले लोगों से अफज़ल हैं। मैं कहता हूँ कि ये तौजोह उम्दा नहीं। असल ये है कि हज़रत तआला की बारगाह अजब मुस्तम्ना बारगाह है आदमी कैसे ही दर्जे पर पहुँच जाए मगर उसके इस्तिम्ना और किन्नियाई से बेडर नहीं हो सकता। वो एक ऐसा शहशाह है जो चाहे वो कर डाले, रत्तो बराबर उसको किसी का अंदेशा नहीं। हज़रत शैख शर्फुद्दीन यह्या मुनीरी अपने मकातोब में फ़र्माते हैं वो ऐसा मुस्तम्ना और बे परवाह है कि अगर चाहे तो सब पैग़म्बरों और नेक बन्दों को दम भर में दोज़खी बना दे और सारे बदकार और कुफ़कार को बहिश्त में ले जावे, कोई दम नहीं मार सकता। आख़िर हदीष में ज़िक्र है कि उनका नेक अमल चश्मा की सूत में उनके लिये ज़ाहिर हुआ। दूसरी हदीष से मा'लूम होता है कि आभाले ज़ालिहा ख़ूबसूरत आदमी की शक्ल में और बुरे अमल बदसूरत आदमी की शक्ल में ज़ाहिर होते हैं, दोनों हदीष बरहक हैं और उनमें नेकों और बंदों के मर्तबे आभाल के मुताबिक कैफ़ियात बयान की गई हैं जो मज़कूरा सूतों में सामने आती हैं। बाक़ी असल हकीकत आख़िरत ही में हर इंसान पर मुक़शिफ़ होगी। जो अल्लाह

और रसूल ने बतला दिया उस पर ईमान लाना चाहिये।

3930. हमसे अबूदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बुआष की लड़ाई को (अंसार के क़बाईल ओस व ख़ज़रज के दरम्यान) अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के मदीना में आने से पहले ही बरपा करा दिया था चुनाँचे जब आप मदीना में तशरीफ़ लाए तो अंसार में फूट पड़ी हुई थी और उनके सरदार क़त्ल हो चुके थे। उसमें अल्लाह की ये हिक़मत मा'लूम होती है कि अंसार इस्लाम क़बूल कर लें। (राजेअ: 3777)

क्योंकि ग़रीब लोग रह गये थे सरदार और अमीर मारे जा चुके थे अगर ये सब ज़िन्दा होते तो शायद ग़ुरूर की वजह से मुसलमान न होते और दूसरों को भी इस्लाम से रोकते। बुआष एक जगह का नाम था जहाँ ये लड़ाई हुई।

3931. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उनके यहाँ आए तो नबी करीम (ﷺ) भी वहीं तशरीफ़ रखते थे ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़हा का दिन था, दो लड़कियाँ यौमे बुआष के बारे में वो अशआर पढ़ रही थीं जो अंसार के शुअरा ने अपने फ़ख़र में कहे थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा ये शैतानी गाने बाजे! (और हज़रत ﷺ के घर में) दो मर्तबा उन्होंने ये जुम्ला दोहराया, लेकिन आपने फ़र्माया अबूबक्र! उन्हें छोड़ दो। हर क़ौम की ईद होती है और हमारी ईद आज का ये दिन है। (राजेअ: 454, 949)

٣٩٣٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ غَابِثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ يَوْمَ بُعَاثٍ يَوْمًا قَدَّمَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لِرَسُولِهِ ﷺ، فَقَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْمَدِينَةَ وَقَدْ افْتَرَقَ مَلَائِكُهُمْ، وَقِيلَتْ سِرَاتُهُمْ فِي دُحُولِهِمْ فِي الْإِسْلَامِ)). (راجع: ٣٧٧٧)

٣٩٣١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْثَرِ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ غَابِثَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ دَخَلَ عَلَيْهَا وَالنَّبِيُّ ﷺ عِنْدَهَا يَوْمَ فِطْرِ - أَوْ أَضْحَى - وَعِنْدَهَا قَتَاتَانِ تَعْمَيَانِ بِمَا تَفَارَقَتْ الْأَنْصَارُ يَوْمَ بُعَاثٍ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَرَمَارُ الشَّيْطَانِ - مَرْتَبِينَ - فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دُعُهُمَا يَا أَبَا بَكْرٍ، إِنَّ لِكُلِّ قَوْمٍ عِيدًا، وَإِنَّ عِيدَنَا هَذَا الْيَوْمَ)).

(راجع: ٩٤٩، ٩٥٤)

तशरीह: इस हदीष की मुनासबत बाब से मुश्किल है, इसमें हिजرات का ज़िक्र नहीं है मगर शायद हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने उसको अगली हदीष की मुनासबत से ज़िक्र किया जिसमें जंगे बुआष का ज़िक्र है (वहीदी)। क़स्तलानी में है व मुताबक़तु हाज़लहदीषि लिच्छुर्जुमति क़ालल्लेनी (रहि.) मिन हैषु अन्नहू मुताबिकुन लिहदीषिस्साबिक़ फी जिब्रि यौमि बुआषिन वलमुताबिकु लिहदीषिस्साबिक़ मुताबिकुन क़ाल व लम अर अहदन जुकिर लहू मुताबक़तन क़ज़ा क़ाल फल्यत अम्मल खुलासा वही है जो मज़कूर हुआ।

3932. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, (दूसरी सनद) और हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने

٣٩٣٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ ح، وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ

बयान किया, कहा हमको अब्दुस्समद ने खबर दी, कहा कि मैंने अपने वालिद अब्दुल कारिष से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबुत तियाह यज़ीद बिन हुमैद जब्ई ने बयान किया, कहा कि मुझसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ लाए तो मदीना के बुलन्द जानिब कुबा के एक मुहल्ला में आपने (सबसे पहले) क़याम किया जिसे बनी अमर बिन औफ़ का मुहल्ला कहा जाता था। रावी ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने वहाँ चौदह रात क़याम किया फिर आपने क़बीला बनी नज़ार के लोगों को बुला भेजा। उन्होंने बयान किया कि अंसारी बनी अन्नज़ार आपकी ख़िदमत में तलवारें लटकाए हुए हाज़िर हुए। रावी ने बयान किया गोया इस वक़्त भी वो मंज़र मेरी नज़रों के सामने है कि ओहज़रत (ﷺ) अपनी सवारी पर सवार हैं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उसी सवारी पर आपके पीछे सवार हैं और बनी नज़ार के अंसार आपके चारों तरफ़ हल्का (घेरा) बनाए हुए हथियारबंद पैदल चले जा रहे हैं। आख़िर आप हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के घर के करीब उतर गये। रावी ने बयान किया कि अभी तक जहाँ भी नमाज़ का वक़्त हो जाता वहाँ आप नमाज़ पढ़ लेते थे। बकरियों के रेवड़ जहाँ रात को बाँधे जाते वहाँ भी नमाज़ पढ़ ली जाती थी। बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) ने मस्जिद की ता'मीर का हुक्म फ़र्माया। आपने उसके लिये क़बीला बनी नज़ार के लोगों को बुला भेजा। वो हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ बनू नज़ार! अपने इस बाग़ की क़ीमत तै कर लो। उन्होंने अर्ज किया नहीं अल्लाह की क़सम हम उसकी क़ीमत अल्लाह के सिवा और किसी से नहीं ले सकते। रावी ने बयान किया कि इस बाग़ में वो चीज़ें थीं जो मैं तुमसे बयान करूँगा। उसमें मुशिकीन की क़ब्रें थीं, कुछ उसमें खण्डहर था और खजूरों के चन्द पेड़ भी थे। ओहज़रत (ﷺ) के हुक्म से मुशिकीन की क़ब्रें उखाड़ दी गईं, जहाँ खण्डहर था उसे बराबर किया गया और खजूरों के पेड़ काट दिये गये। रावी ने बयान किया कि खजूर के तने मस्जिद के क़िब्ला की तरफ़ एक क़तार में बतौर दीवार रख दिये गये दरवाज़े में (चौखट की जगह) पत्थर रख दिये, हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि सहाबा

أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ: حَدَّثَنَا أَبُو التَّيَّاحِ يَزِيدُ بْنُ حُمَيْدٍ الضَّبِّيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ نَزَلَ فِي غُلُوِّ الْمَدِينَةِ، فِي حَيٍّ يُقَالُ لَهُمْ بُو عَمْرُو بْنُ غَوْفٍ، قَالَ: فَأَقَامَ فِيهِمْ أَرْبَعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً، ثُمَّ أُرْسِلَ إِلَى مَلَأِ بَنِي النَّجَّارِ، قَالَ: فَجَاؤُوا مُتَقَلِّدِي سَبُوفِهِمْ. قَالَ: وَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلَى رَاحِلَتِهِ وَأَبُو بَكْرٍ رَذَفَهُ وَمَلَأُ بْنُ النَّجَّارِ حَوْلَهُ حَتَّى أَلْقَى بِفَيْءِ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ: لَكَانَ يُصَلِّي حَيْثُ أَذْرَكَهُ الصَّلَاةُ وَيُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْقَتَمِ. قَالَ: ثُمَّ إِنَّهُ أَمَرَ بَنَاءَ الْمَسْجِدِ، فَأُرْسِلَ إِلَى مَلَأِ بَنِي النَّجَّارِ، فَجَاؤُوا. فَقَالَ: ((يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِسُونِي خَانِطِمَ هَذَا))، فَقَالُوا: لَا وَاللَّهِ لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ. قَالَ: ((لَكَانَ فِيهِ مَا أَقُولُ لَكُمْ: كَانَتْ فِيهِ قُبُورُ الْمُشْرِكِينَ، وَكَانَتْ بِهِ حَرْبٌ، وَكَانَ فِيهِ نَخْلٌ. فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِقُبُورِ الْمُشْرِكِينَ قُبِشَتْ، وَبِالنَّخْلِ قُطِعَتْ، وَبِالنَّخْلِ قُبِلَتْ الْمَسْجِدِ، قَالَ وَجَعَلُوا عَصَادَتِيهِ حِجَارَةً. قَالَ: جَعَلُوا يَنْقُلُونَ ذَلِكَ الصُّخْرَ وَهُمْ يَرْتَجِزُونَ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَعَهُمْ يَقُولُونَ:

जब पत्थर ढो रहे थे तो शेर पड़ते जाते थे औ हजरत (ﷺ) भी उनके साथ खुद पत्थर ढोते और शेर पड़ते। सहाबा ये शेर पड़ते कि ऐ अल्लाह! आखिरत ही की खैर, खैर है, पस तू अंसार और मुहाजिरीन की मदद फर्मा।

اللَّهُمَّ إِنَّهُ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرَ الْأَخِرَةِ
لَانْصُرَ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ

इस हदीस के तर्जुमा में हजरत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने अल्फाज़ व युसल्ली फ़ी मराबिज़िल ग़नम का तर्जुमा छोड़ दिया है ग़ालिबन मरहूम का ये सह (भूल) है। इस हदीस में भी हिजरत का ज़िक्र है, यही बाब से मुनासबत की वजह है।

बाब 47 : हज्ज की अदायगी के बाद मुहाजिर

٤٧- بَابُ إِقَامَةِ الْمُهَاجِرِ بِمَكَّةَ

का मक्का में क़याम करना कैसा है

بَعْدَ قَضَاءِ نُسُكِهِ

तशरीह : हाफ़िज़ ने कहा बाब का मतलब ये कि जिसने फ़तहे मक्का से पहले हिजरत की उसको मक्का में फिर रहना ह़राम था। मगर हज्ज या उमरह के लिये वहाँ ठहर सकता था, उसके बाद तीन दिन से ज्यादा ठहरना दुरुस्त न था। अब जो लोग दूसरे मक़ाम से ब सबब फ़िले वग़ैरह के हिजरत करें तो अल्लाह के वास्ते उन्होंने किसी मुल्क को छोड़ा हो तो फिर वहाँ लौटना दुरुस्त नहीं अगर किसी फ़िले की वजह से छोड़ा हो और उस फ़िले का डर न रहा हो तो फिर वहाँ लौटना और रहना दुरुस्त है। (वहीदी)

3933 मुझसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुमैद जुहरी ने बयान किया, उन्होंने ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से सुना, वो नम्र के भान्जे साईब बिन यज़ीद से दरयाफ़्त कर रहे थे कि तुमने मक्का में (मुहाजिर के) ठहरने के मसला में क्या सुना है? उन्होंने बयान किया मैंने हजरत इलाअ बिन हजरमी (रज़ि.) से सुना। वो बयान करते थे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मुहाजिर को (हज्ज में) तवाफ़े विदाअ के बाद तीन दिन ठहरने की इजाज़त है।

٣٩٣٣- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ خَمِيدٍ الزُّهْرِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ عُثْمَانَ بْنَ عَبْدِ الْقَيْسِ يَسْأَلُ السَّابَّ ابْنَ أَخِي النَّعْرَ مَا سَمِعْتُ فِي سُكْنِي مَكَّةَ؟ قَالَ: سَمِعْتُ الْغَلَاءَ بْنَ الْخَضْرَمِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((ثَلَاثٌ لِلْمُهَاجِرِ بَعْدَ الصَّدْرِ)).

मुहाजिर से मुराद वो मुसलमान जो मक्का से मदीना चले गये थे। हज्ज पर आने के लिये फ़तहे मक्का से पहले उनके लिये ये वक़्ती हुक्म था कि वो हज्ज के बाद मक्का शरीफ़ में तीन रोज़ क़याम करके मदीना वापस हो जाएँ। फ़तहे मक्का के बाद ये सवाल ख़तम हो गया, तफ़्सील के लिये फ़तहूल बारी देखिए।

बाब 48 : इस्लामी तारीख कब से शुरू हुई?

٤٨- بَابُ مَتَى أُرْخُوا التَّارِخَ

तशरीह : फितौशीहि क़ाल बअज़ुहुम मुनासबतु जअलित्तारीखि क़बलल्हिजरति अन्नल्क़ज़ाया अल्लती कान युम्किनु मिन्हा अब्वअतुन मौलिदुहु व मब्अषुहु व हिज्रतुहु व वफ़ातुहु फ़लम युवरख़ मिन्लउलिघैनि लिअन्न कुल्लमिन्हुमा ला यख़लू अन नज़ाइन फ़ी तअईनि सनतिही व ला मिन्लवफ़ाति लिमा युक्रिउ मिलअसफ़ि अलैहि फ़ल्हस्सू फ़िल्हिजरति व जुइल अब्वलतुस्सनति मुहरमुन दून रबीइन लिअन्नहु मुन्सर्फिन्नासि मिन्ल्हज्जि इन्तिहा या' नी बकौल कुछ तारीख़ हिजरत के लिये चार अहम मामलात मद्दे नज़र हो सकते थे आपकी पैदाइश और आपकी बअ़ात और हिजरत और वफ़ात इब्तिदा की दो चीज़ों में तारीख़ तअईन का इख़िलाफ़ मुम्किन था, इसलिये उनको छोड़ दिया गया। वफ़ात को इसलिये नहीं लिया कि उससे हमेशा आपकी वफ़ात पर तासिफ़ ज़ाहिर होता। पस वाक़िया हिजरत से तारीख़

का तअय्यन मुनासिब हुआ हिजरत का सन मुहर्रम में मुकर्रर किया गया था, इसीलिये मुहर्रम उसका पहला महीना करार पाया। खिलाफत फारूकी के 17 हिजरी में तारीख का मसला सामने आया जिस पर अकाबिर सहाबा (रज़ि.) ने हिजरत से उसको मुकर्रर करने का मशवरा दिया जिस पर सबका इत्तिफाक हो गया। अकाबिरे सहाबा ने आयते करीमा लमस्जिदुन उस्सिस अलत्तक्वा मिन अव्वलि यौमिन (अत् तौबा : 108) से हिजरत की तारीख निकाली कि यही वो दिन ह जिनमें इस्लाम की तरक्की का दौर शुरू हुआ और अमन से मुसलमानों को तब्लीगे इस्लाम का मौका मिला और मस्जिद कुबा की बुनियाद रखी गई। मिन अव्वल्लि यौम से इस्लामी तारीख का अव्वल दिन यकम मुहर्रम सन हिजरी करार पाया।

3934. हमसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा क़अम्बी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद सलमा बिन दीनार ने, उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि तारीख का शुमार नबी करीम (ﷺ) की नुबुव्वत के साल से हुआ और न आपकी वफ़ात के साल से बल्कि उसका शुमार मदीना की हिजरत के साल से हुआ।

۳۹۳۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: ((مَا عُدُّوا مِنْ مَنَاقِبِ النَّبِيِّ ﷺ وَلَا مِنْ وَلَدِهِ. مَا عُدُّوا إِلَّا مِنْ مُقَدِّمِهِ الْمَدِينَةِ)).

तशरीह : इब्ने जोज़ी ने कहा जब दुनिया में आबादी ज़्यादा हो गई तो हज़रत आदम के वक़्त से तारीख का शुमार होने लगा अब आदम से लेकर तूफ़ाने नूह तक एक तारीख है और तूफ़ाने नूह से हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) के आग में डाले जाने तक दूसरी और उस वक़्त से हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) तक तीसरी। वहाँ से हज़रत मूसा (अलैहि.) की मिस्र से ख़ाना होने तक चौथी। वहाँ से हज़रत दाऊद तक पाँचवीं। वहाँ से हज़रत सुलैमान (अलैहि.) तक छठी और वहाँ से हज़रत ईसा (अलैहि.) तक सातवीं है और मुसलमानों की तारीख आँहज़रत (ﷺ) की हिजरत से शुरू होती है गो हिजरत रबीउल अव्वल में हुई थी मगर साल का आगाज़ मुहर्रम से रखा। यहूदी बैतुल मक्दिस की वीरानी से और नसारा हज़रत मसीह (अलैहि.) के उठ जाने से तारीख का हिसाब करते हैं।

3935. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (पहले) नमाज़ सिर्फ़ दो रकअत फ़र्ज़ हुई थी फिर नबी करीम (ﷺ) ने हिजरत की तो वो फ़र्ज़ रकअत चार रकअत हो गई। अल्बत्ता सफ़र की हालत में नमाज़ अपनी हालत में बाक़ी रखी गई। इस रिवायत की मुताबअत अब्दुरज़ाक़ ने मअमर से की है। (राजेअ : 350)

۳۹۳۵- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الرُّهْبِيِّ عَنْ غُرُورٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((فَرَضْتُ الصَّلَاةَ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ هَاجَرَ النَّبِيُّ ﷺ فَفَرَضْتُ أَرْبَعًا وَتَرَكْتُ صَلَاةَ السَّفَرِ عَلَى الْأَوَّلَى)). تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ. [راجع: ۳۵۰]

रिवायत में हिजरत का ज़िक्र है बाब से यही मुनासबत की वजह है।

बाब 49 : नबी करीम (ﷺ) की दुआ कि ऐ अल्लाह! मेरे अस्हाब की हिजरत कायम रख और जो मुहाजिर मक्का में इंतिक़ाल कर गये, उनके लिये आपका इज़हारे रंज करना

۴۹- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

((اللَّهُمَّ أَصْحَابِي لِأَصْحَابِي هِجْرَتِهِمْ)) وَمُرْتَبَتُهُ لِمَنْ مَاتَ بِمَكَّةَ

3936. हमसे यह्या बिन कुज़आ ने बयान किया, कहा हमसे

۳۹۳۶- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا

इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे आमिर बिन सअद बिन मालिक ने और उनसे उनके वालिद हजरत सअद बिन अबी वक्राअ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज्जतुल विदाअ 10 हिजरी के मौक़े पर मेरी मिज़ाज पुर्सी के लिये तशरीफ़ लाए। इस मर्ज़ में मेरे बचने की कोई उम्मीद नहीं रही थी। मैंने अज़्र किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मर्ज़ की शिहत आप (ﷺ) खुद मुलाहिज़ा फ़र्मा रहे हैं, मेरे पास माल बहुत है और सिर्फ़ मेरी एक लड़की वारिष है तो क्या मैं अपने दो तिहाई माल का सद्का कर दूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने अज़्र किया फिर आधे का कर दूँ? फ़र्माया कि सअद! बस एक तिहाई का कर दो, ये भी बहुत है। अगर अपनी औलाद को मालदार छोड़कर जाए तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़े औ। दो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें। अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन सअद ने कि, तुम अपनी औलाद को छोड़कर जो कुछ भी खर्च करोगे और उससे अल्लाह तआला की रज़ामन्दी मक्सूद होगी तो अल्लाह तआला तुम्हें इसका प्रवाब देगा, अल्लाह तुम्हें उस लुक़्मे पर भी प्रवाब देगा जो तुम अपनी बीवी के मुँह में डालो। मैंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं अपने साथियों से पीछे मक्का में रह जाऊँगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम पीछे नहीं रहोगे और तुम जो भी अमल करोगे और उससे मक्सूद अल्लाह तआला की रज़ामन्दी होगी तो तुम्हारा मर्तबा उसकी वजह से बुलन्द होता रहेगा और शायद तुम अभी बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहोगे तुमसे बहुत से लोगों (मुसलमानों) को नफ़ा पहुँचेगा और बहुतों को (ग़ैर मुस्लिमों को) नुक़सान होगा। ऐ अल्लाह! मेरे सहाबा की हिजरत पूरी कर दे और उन्हें उलटे पाँव वापस न कर (कि वो हिजरत को छोड़कर अपने घरों को वापस आ जाएँ) अल्बत्ता सअद बिन ख़ौला नुक़सान में पड़ गये और अहमद बिन यूनुस और मूसा बिन इस्माईल ने इस हदीष को इब्राहीम बिन सअद से रिवायत किया उसमें (अपनी औलाद ज़ुरियत को छोड़ो, के बजाय) तुम वारिषों को छोड़ो ये अल्फ़ाज़ मरवी हैं।

إِبْرَاهِيمُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ
بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : عَادَنِي النَّبِيُّ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ
مِنْ مَرَضٍ أَشْفَيْتُ مِنْهُ عَلَى الْمَوْتِ .
فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، بَلَغَ بِي مِنَ الْوَجَعِ
مَا تَرَى ، وَأَنَا ذُو مَالٍ ، وَلَا يَرِيئِي إِلَّا ابْنَةٌ
لِي وَاحِدَةٌ ، أَفَأَتَصَدَّقُ بِبُلْبُلِي مَالِي ؟ قَالَ :
(لَا) . قَالَ : فَأَتَصَدَّقُ بِشَظْرِهِ ؟ قَالَ :
(اللَّيْلُ) ، يَا سَعْدُ وَاللَّيْلُ كَثِيرٌ ، إِنَّكَ أَنْ
تَذَرَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَذَرَهُمْ
عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ - قَالَ أَحْمَدُ بْنُ
يُونُسَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ : أَنْ تَذَرَ ذُرِّيَّتَكَ -
وَلَسْتُ بِبَالِقٍ نَفَقَةً تَنْتَفِي بِهَا وَجْهَ اللَّهِ إِلَّا
أَجْرَكَ بِهَا ، حَتَّى اللَّفْمَةُ تَجْعَلَهَا فِي فَمِي
أَمْرًا لَكَ) . قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، أَتُحَلِّفُ بَعْدَ أَصْحَابِي ؟ قَالَ :
(إِنَّكَ لَنْ تُحَلِّفَ فَتَعْمَلَ عَمَلًا تَنْتَفِي بِهِ
وَجْهَ اللَّهِ إِلَّا أَرْدَدْتَ بِهِ ذَرْجَةً وَرَفَعَةً .
وَلَعَلَّكَ تُحَلِّفُ حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ
وَيُضُرُّ بِكَ آخَرُونَ . اللَّهُمَّ أَفْضِ
لِأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ ، وَلَا تَرُدَّهُمْ عَلَى
أَعْقَابِهِمْ . لَكِنَّ الْبَائِسَ سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ
يَرِيئِي لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ أَنْ تُؤْتِيَ بِمَكَّةَ) . وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ
يُونُسَ وَمُوسَى عَنْ إِبْرَاهِيمَ : (أَنْ تَذَرَ
وَرَثَتَكَ) .

तशरीह :

हज्जतुल विदाअ में हज़रत सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) बीमार हो गये और बीमारी शिद्दत पकड़ गई तो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से ज़िन्दगी से मायूस होकर अपने तर्क के बारे में मसाइल मा'लूम किये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मसाइल समझाए और साथ ही तसल्ली दिलाई कि अभी तुम अर्सा तक ज़िन्दा रहोगे और ऐसा ही हुआ कि हज़रत सअद (रज़ि.) बाद में चालीस साल ज़िन्दा रहे, इराक़ फ़तह किया और बहुत से लोग उनके हाथ पर मुसलमान हुए, उनके बहुत से लड़के भी पैदा हुए। हदीष पर गौर करने से वाज़ेह होता है कि इस्लाम मुसलमानों को तंगदस्त मुफ़्लिस बनने की बजाय ज़्यादा से ज़्यादा हलाल तौर पर कमाकर दौलतमन्द बनने की ता'लीम देता है और रबत दिलाता है कि वो अपने अहल व अयाल को गुर्बत तंगदस्ती की हालत में छोड़कर इतिफ़ाल न करें या'नी पहले से ही मेहनत व मशक़त करके ग़रीबी का मुकाबला करें। ज़रूर ऐसी तरक्की करें कि मरने के बाद उनकी औलाद तंगदस्ती, मुहताजगी, ग़रीबी की शिकार न हो। इसीलिये हज़रत इमाम सईद बिन मुसय्यिब मशहूर मुहदिष फ़र्माते हैं, **لَا خَيْرَ فِى مَالِ يَتَرَكُ يَتَرَكُهُ** ऐसे शख्स में कोई ख़ूबी नहीं है जो हलाल तरीक़े से माल जमा न करे जिसके ज़रिये लोगों से अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करे और खुवेश व अकारिब की ख़बरगीरी करे और उसका हक़ अदा करे। हज़रत इमाम सबीई का क़ौल है, **كَانَ يُرَى رَأْسَ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي بَيْتِ النَّبِيِّ** कानून यरौनस्सिअत औनन अलहीनि बुजुगनि दीन खुशहाली को दीन के लिये मददगार ख़याल करते थे। इमाम सुफ़यान घौरी (रह) फ़र्माते हैं, **أَلْمَالُ فِي زَمَانِنَا هَا جَاءَ سَلَاةُ لَمْ يُمِينِي**, माल हमारे ज़माने में मोमिन का हथियार है (अज़ मिन्हाजुल क़ासिदीन पेज नं. 199) कुर्आन मजीद में ज़कात का बार-बार ज़िक्र ही ये चाहता है कि हर मुसलमान मालदार हो जो सालाना ज़्यादा से ज़्यादा ज़कात अदा कर सके। हाँ माल अगर ह़राम तरीक़े से जमा किया जाए या इंसान को इस्लाम और ईमान से ग़ाफ़िल कर दे तो ऐसा माल अल्लाह की तरफ़ से मौजिबे ला'नत है। **وَكُلُّ فَنٍّ لِّلَّهِ** लिमा युहिब्वु व यज़ा'आमीन (आमीन)

बाब 50 : नबी करीम (ﷺ) ने अपने सहाबा के दरम्यान किस तरह भाईचारा क़ायम कराया था

उसका बयान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब हम मदीना हिजरत करके आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे और सअद बिन रबीआ अंसारी (रज़ि.) के दरम्यान भाईचारा कराया था। हज़रत अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) (वहब बिन अब्दुल्लाह) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत सलमान फ़ारसी और अबू दर्दा के दरम्यान भाईचारा कराया था।

٥٠ - بَابُ كَيْفَ آخَى النَّبِيُّ

ﷺ بَيْنَ أَصْحَابِهِ؟

وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ : ((آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنِي وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ لَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ)). وَقَالَ أَبُو جَحْفَةَ : ((آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ سَلْمَانَ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ)).

तशरीह :

कहते हैं भाई भाई बनाना दो बार हुआ था एक बार मक्का में मुहाजिरीन में उस दफ़ा अबूबक्र, उमर को और हज़ा, ज़ैद बिन हारिषा को और उप्मान, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को और जुबैर, इब्ने मसऊद को और उबैदह, बिलाल को और मुसअब बिन उमेर, सअद बिन अबी वक्कास और अबू उबैदा, सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा को और सईद बिन ज़ैद, तलहा (रज़ि.) को आपने भाई भाई बना दिया था। हज़रत अली (रज़ि.) शिकायत करने आए तो आपने उनको अपना भाई बनाया दूसरी बार मदीना में हुआ मुहाजिरीन और अंसार में। (वहीदी)

इब्तिदा में मवाखात तर्का में मीराष तक पहुँच गई थी या'नी ऐसे मुँह बोले भाइयों को मरने वाले भाई के तर्क में हिस्सा दिया जाने लगा था मगर बद्र के वाकिये के बाद आयते करीमा व उलुलअर्हांमि बअजुहुम औला बअजिन नाज़िल हुई जिससे तर्का में हिस्सा सिर्फ़ हकीक़ी वारिषों के लिये मख़सूस हो गया। मदीना में मवाखात हिजरत के पाँच माह बाद कराई गई थी।

3937. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बेकुन्दी ने बयान किया, उनसे حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ

सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) हिजरत करके आए तो औहज़रत (ﷺ) ने उनका भाईचारा सअद बिन रबीअ अंसारी (रज़ि.) के साथ कराया था सअद (रज़ि.) ने उनसे कहा कि उनके अहल व माल में से आधा वो कुबूल कर लें लेकिन अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआला आपके अहल व माल में बरकत दे। आप तो मुझे बाज़ार का रास्ता बता दें। चुनौचे उन्होंने तिजारत शुरू कर दी और पहले दिन उन्हें कुछ पनीर और धी में नफ़ा मिला। चन्द दिनों के बाद उन्हें नबी करीम (ﷺ) ने देखा कि उनके कपड़ों पर (खुशबू की) ज़र्दी का निशान है तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया अब्दुर्रहमान ये क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ) मैंने एक अंसारी औरत से शादी कर ली है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें महर में तुमने क्या दिया? उन्होंने बताया कि एक गुठली बराबर सोना। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अब वलीमा कर ख़्वाह एक ही बकरी का हो।

(राजेअ: 2049)

इस हदीष से अंसार का ईप्पार और मुहाजिरिन की खुदारी रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है कि वो कैसे पुरख़्ताकार मुसलमान थे। इस हदीष से तिजारत की भी तरगीब ज़ाहिर है। अल्लाह पाक इलमा को खुसूसन तौफ़ीक़ दे कि वो इस पर ग़ौर करके अपने मुस्तज़िबल का फ़िक्र करें। अल्लहुम्म अमीन।

बाब : 51

3938. मुझसे हामिद बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे बिशर बिन मुफ़ज़ल ने, उनसे हुमैद तवील ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि जब अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) के मदीना आने की ख़बर हुई तो वो आपस चन्द सवाल करने के लिये आए। उन्होंने कहा कि मैं आपसे तीन चीज़ों के बारे में पूछूँगा जिन्हें नबी (ﷺ) के सिवा और कोई नहीं जानता। क़यामत की सबसे पहली निशानी क्या होगी? अहले जन्नत की ज़ियाफ़त सबसे पहले किस खाने से की जाएगी? और क्या बात है कि बच्चा कभी बाप पर जाता है और कभी माँ पर? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जवाब अभी हज़रत जिब्रईल (अलैहि) ने आकर बताया है। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि ये मलाइका में यहूदियों के दुश्मन हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत

سَفَيَانُ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ فَأَخْبَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُ وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ الْأَنْصَارِيِّ. فَعَرَضَ عَلَيْهِ أَنْ يَنَاصِفَهُ أَهْلَهُ وَمَالَهُ. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ، ذُلِّي عَلَى السُّوقِ. فَرَبِحَ شَيْئًا مِنْ أَقْطِ وَسَمْنٍ، فَرَأَى النَّبِيُّ ﷺ بَعْدَ أَيَّامٍ وَعَلَيْهِ وَضْرٌ مِنْ صَفْرَةٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْهُمْ يَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ؟)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ. قَالَ: ((لَمَّا سَقَتْ فِيهَا؟)) قَالَ: وَزَنَ نَوَاقِ مِنْ ذَهَبٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوَلَمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)). [راجع: ٢٠٤٩]

باب - ٥١

٣٩٣٨- حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ بَشَرَ بْنِ الْمَفْضَلِ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ حَدَّثَنَا أَنَسٌ ((أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ سَلَامٍ بَلَغَهُ مَقْدَمُ النَّبِيِّ ﷺ الْمَدِينَةَ، فَأَتَاهُ بِسْأَلِهِ عَنْ أَشْيَاءَ فَقَالَ: إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ ثَلَاثٍ لَا يَعْلَمُهُنَّ إِلَّا نَبِيٌّ: مَا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ، وَمَا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ، وَمَا بَالُ الْوَلَدِ يَرْغُ إِلَى أَبِيهِ أَوْ إِلَى أُمِّهِ؟ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي بِهِ جِبْرِيلُ أَتَقَا)). قَالَ ابْنُ سَلَامٍ: ذَلِكَ عَدُوُّ الْيَهُودِ مِنَ الْمَلَائِكَةِ. قَالَ: ((أَمَّا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ فَتَارُ

की पहली निशानी एक आग है जो इंसानों को मशरिक से मरिब की तरफ ले जाएगी। जिस खाने से सबसे पहले अहले जन्नत की जियाफत की जाएगी वो मछली की कलेजी का बड़ा टुकड़ा होगा (जो निहायत लजीज़ और ज़ोद हज़म होता है) और बच्चा बाप की सूरत पर उस वक़्त जाता है जब औरत के पानी पर मर्द का पानी ग़ालिब आ जाए और जब मर्द के पानी पर औरत का पानी ग़ालिब आ जाए तो बच्चा माँ पर जाता है। अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मज़बूद नहीं और गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। फिर उन्होंने अज़्र किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! यहूदी बड़े बोहतान लगाने वाले हैं, इसलिये आप इससे पहले कि मेरे इस्लाम के बारे में उन्हें कुछ मा'लूम हो, उनसे मेरे बारे में दरयाफ़्त करें। चुनौचे चन्द यहूदी आए तो आपने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारी क़ौम में अब्दुल्लाह बिन सलाम कौन हैं? वो कहने लगे कि हममें सबसे बेहतर और सबसे बेहतर के बेटे हैं, हममें सबसे अफ़ज़ल और सबसे अफ़ज़ल के बेटे। आपने फ़र्माया तुम्हारा क्या ख़याल है अगर वो इस्लाम लाएँ? वो कहने लगे इससे अल्लाह तआला उन्हें अपनी पनाह में रखे। हुज़ूर ने दोबारा उनसे यही सवाल किया और उन्होंने यही जवाब दिया। उसके बाद अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बाहर आए और कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। अब वो कहने लगे ये तो हममें सबसे बदतरीन आदमी हैं और सबसे बदतर बाप का बेटा है। फ़ौरन बुराई शुरू कर दी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने अज़्र किया या रसूलल्लाह! इसी का मुझे डर था। (राजेअ: 3329)

تَحْشَرُهُمْ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ. وَأَمَّا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَرِيذَةُ كَبِدِ الْحَوْتِ. وَأَمَّا الْوَلَدُ فَإِذَا سَقَى الرَّجُلُ مَاءَ الْمَرْأَةِ نَزَعَ الْوَلَدَ، وَإِذَا سَقَى الْمَرْأَةُ مَاءَ الرَّجُلِ نَزَعَتِ الْوَلَدَ. قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ. قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ الْيَهُودَ قَوْمٌ بُهَتُوا، فَاسْأَلُهُمْ عَنِّي قَبْلَ أَنْ يَغْلِبُوا بِإِسْلَامِي. فَجَاءَتِ الْيَهُودُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَيُّ رَجُلٍ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ لِيَكُمْ؟)) قَالُوا: خَيْرُنَا وَابْنُ خَيْرِنَا، وَالْفَضْلُ وَابْنُ الْفَضْلِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ؟)) قَالُوا: أَغَاذُهُ اللَّهُ مِنْ ذَلِكَ، فَأَعَاذَ عَلَيْهِمْ فَقَالُوا بِمِثْلِ ذَلِكَ. فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ عَبْدُ اللَّهِ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ. قَالُوا: شَرُّنَا وَابْنُ شَرِّنَا، وَتَقْفُصُوهُ. قَالَ: هَذَا كُنْتُ أَخَافُ يَا رَسُولَ اللَّهِ. (راجع: 3329)

तशरीह: कि यहूदी जब मेरे इस्लाम का हाल सुनेंगे तो पहले ही से बुरा कहेंगे तो आप (ﷺ) ने सुन लिया, उनकी बेईमानी मा'लूम हो गई पहले तो ता'रीफ़ की जब अपने मतलब के खिलाफ़ हुआ तो लगे बुराई करने। बेईमानों का यही शेवा है जो शख्स उनके मशरब के खिलाफ़ हो वो कितना भी आलिम फ़ाज़िल साहिबे हुनर अच्छा शख्स हो लेकिन उसकी बुराई करते हैं। अब तो हर जगह ये आफ़त फैल गई कि अगर कोई आलिम फ़ाज़िल शख्स उलमाए सूअ (झूठे आलिमों) का एक मसले में इख़्तिलाफ़ करे तो बस उसके सारे फ़ज़ाइल और कमालात को एक तरफ़ डालकर उसके दुश्मन बन जाते हैं जो अदबार व तनज़ुल की निशानी है। अक़्बर फ़िक्ही मुतअस्सिब उलमा भी इस मर्ज़ में गिरफ़्तार हैं। इल्ला माशा अल्लाह

कहा हमसे सुफयान बिन जययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उन्होंने अबू मिन्हाल (अब्दुर्रहमान बिन मुतइम) से सुना, अब्दुर्रहमान बिन मुतइम ने बयान किया कि मेरे एक साझी ने बाज़ार में चन्द दिरहम उधार फ़रोख्त किये हैं, मैंने उससे कहा सुब्हानल्लाह! क्या ये जाइज़ है? उन्होंने कहा सुब्हानल्लाह अल्लाह की क़सम कि मैंने बाज़ार में उसे बेचा तो किसी ने भी क़ाबिले ए'तिराज़ नहीं समझा। मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने बयान किया नबी करीम (ﷺ) जब (हिज्रत करके) तशरीफ़ लाए तो इस तरह ख़रीद फ़रोख्त किया करते थे। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़रीद व फ़रोख्त की इस सूरत में अगर मामला दस्त ब दस्त (नक़द) हो तो कोई मुजायज़ा नहीं लेकिन अगर उधार पर मामला किया तो फिर ये सूरत जाइज़ नहीं और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म से भी मिलकर इसके बारे में पूछ लो क्योंकि वो हममे बड़े सौदागर थे। मैंने ज़ैद बिन अरक़म से पूछा तो उन्होंने भी यही कहा कि सुफ़यान ने एक मर्तबा यूँ बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब हमारे यहाँ मदीना तशरीफ़ लाए तो हम (इस तरह की) ख़रीद व फ़रोख्त किया करते थे और बयान किया कि उधार मौसम तक के लिये या (यूँ बयान किया कि) हज़्ज तक के लिये। (राजेअ: 2060, 2061)

اَللّٰهُ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ عَمْرِو مَسْعُ اَبَا
الْمِنْهَالِ عَنِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ:
(بَاعَ شَرِيْكَ لِيْ فَرَاهِيْمَ لِي السُّوْقِ
نَسِيْنَةً، فَقُلْتُ: سَبَّحَانَ اللّٰهِ، اَيُصْلَحُ هَذَا؟
فَقُلْتُ: سَبَّحَانَ اللّٰهِ، وَاللّٰهُ لَقَدْ بَعَثَهَا لِي
السُّوْقِ فَمَا عَاهَدَ اَحَدٌ. فَسَأَلْتُ الرَّاءِ بْنَ
خَازِمٍ فَقَالَ: قَدِيْمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ وَنَحْنُ تَتَابِعُ هَذَا النَّبِيْعَ فَقَالَ: ((مَا
كَانَ يَدَا يَتَوَقَّلْنِ بِوَبَاسٍ، وَمَا كَانَ
نَسِيْنَةً فَلَا يَصْلَحُ. وَالَّذِيْ زَيْدُ بْنُ اَرْقَمَ
لَمَسْأَلِهِ فَبَايَنَهُ كَانَ اعْظَمْنَا بِخَارَةِ)). فَسَأَلْتُ
زَيْدُ بْنُ اَرْقَمَ فَقَالَ مِثْلَهُ. وَقَالَ سُلَيْمَانُ مَرَّةً
فَقَالَ: قَدِيْمُ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ الْمَدِيْنَةَ وَنَحْنُ تَتَابِعُ، وَقَالَ:
(نَسِيْنَةً اِلَى الْمَوْسِمِ اَوْ الْحَجِّ)).

[راجع: ٢٠٦٠، ٢٠٦١]

ये बेअ जाइज़ नहीं है क्योंकि बेअे सर्फ़ में तक्राबुज उसी मजलिस में जरूरी है, जैसे कि किताबुल बुयूअ में गुजर चुका है, आख़िर हदीष में रावी को शक है कि मौसम का लफ़ज़ कहा या हज़्ज का मुताबक़ते बाब इससे निकलता है कि आहज़रत (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए।

बाब 52 : जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपके पास यहूदियों के आने का बयान

सूरह बक़र: में लफ़ज़े हादू के मा'नी हैं कि यहूदी हुए और सूरह आरारफ़ में हुदना तुबना के मा'नी में है (हमने तौबा की) इसी से हाइद के मा'नी ताईब या'नी तौबा करने वाला।

3941. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे कुर्रा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर दस यहूदी (अहबार व उलमा) मुझ पर ईमान ले आएँ तो तमाम यहूद मुसलमान हो जाते।

٥٢- بَابُ اِتِّبَانِ الْيَهُودِ النَّبِيِّ ﷺ

حِينَ قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ

هَاضُوا : حَارُوا يَهُودًا. وَأَمَّا قَوْلُهُ هَاضُوا :
تَبْنَا. هَاضًا : تَابًا

٣٩٤١- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ بْنُ اِبِرَاهِيْمَ
حَدَّثَنَا قُرَّةٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ
النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ اٰمَنَ بِى عَشْرَةٌ مِنَ
الْيَهُودِ لَامَنَ بِى الْيَهُودُ)).

तशरीह : मतलब ये है कि मेरे मदीना में आने के बाद अगर दस यहूदी भी मुसलमान हो जाते तो दूसरे तमाम यहूदी भी उनकी देखा देखी मुसलमान हो जाते। हुआ ये कि जब आप मदीना तशरीफ लाए तो सिर्फ अब्दुल्लाह बिन सलाम मुसलमान हुए बाकी दूसरे सरदार यहूद के जैसे अबू यासिर और हुय्यि बिन अख़्तब और कअब बिन अशरफ़, राफ़ेअ बिन अबी हक़ीक़। बनी नज़ीर में से और अब्दुल्लाह बिन हनीफ़ और क़हास और रफ़ाआ बनी केनकाअ में से जुबैर और कअब और शुवैल बनी कुरैज़ा में से ये सब मुख़ालिफ़ रहे। कहते हैं अबू यासिर आपके पास आया और अपनी क़ौम के पास जाकर उनको समझाया, ये सच्चे पैग़म्बर वही पैग़म्बर हैं जिनका हम इतिज़ार करते थे। उनका कहना मान लो लेकिन उसके भाई ने मुख़ालिफ़त की और क़ौम के लोगों ने भाई की मुख़ालिफ़त की वजह से अबू यासिर का कहना न सुना और मैमून बिन यामीन उन यहूदियों में से मुसलमान हो गया। उसका भी हाल अब्दुल्लाह बिन सलाम का सा गुज़रा। पहले तो यहूदियों ने बड़ी ता'रीफ़ की जब मा'लूम हुआ कि मुसलमान हो गया तो लगे उसकी बुराई करने। (वहीदी)

3942. मुझसे अहमद या मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ग़दानी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन उसामा ने बयान किया कि उन्हें अबू उमैस ने ख़बर दी, उन्हें कैस बिन मुस्लिम ने, उन्हें तारिक़ बिन शिहाब ने और उनसे मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपने देखा कि यहूदी आशूरा के दिन की तअज़ीम करते हैं और उस दिन रोज़ा रखते हैं और अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम इस दिन रोज़ा रखने के ज़्यादा हक़दार हैं। चुनौचे आपने उस दिन के रोज़े का हुक्म दिया।

(राजेअ : 2005)

۳۹۴۲- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ - أَوْ مُحَمَّدُ بْنُ غَيْبٍ، اللَّهُ الْعَدْلِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ أَسَمَةَ أَخْبَرَنَا أَبُو غَمَيْسٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ وَإِذَا أَنَاسٌ مِنَ الْيَهُودِ يُعْظَمُونَ عَاشُورَاءَ وَيَصُومُونَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((نَحْنُ أَحَقُّ بِصَوْمِهِ)). فَأَمَرَ بِصَوْمِهِ)). [راجع: ۲۰۰۵]

इस हदीस में अहज़रत (ﷺ) की मदीना में तशरीफ़ आवरी का ज़िक्र है। बाब का मतलब इसी से निकला। बाद में रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो मुसलमान आशूरा का रोज़ा रखे, उसे चाहिये कि यहूदियों की मुख़ालिफ़त के लिये उसमें नवीं या ग्यारहवीं तारीख़ के दिन या'नी एक रोज़ा और भी रख लें। अब ये रोज़ा रखना सुन्नत है।

3943. हमसे ज़ियाद बिन अब्यूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हश़ीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू बिशर जा'फ़र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) ने देखा कि यहूदी आशूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। उसके बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि ये वो दिन है जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा (अलैहि.) और बनी इस्राईल को फिरआन पर फ़तह इनायत की थी चुनौचे उस दिन की तअज़ीम में रोज़ा रखते हैं। अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम मूसा (अलैहि.) से तुम्हारी निस्बत ज़्यादा करीब हैं और आप (ﷺ) ने उस दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया।

۳۹۴۳- حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَبِي حَبْشَةَ حَدَّثَنَا أَبُو بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ وَجَدَ الْيَهُودَ يَصُومُونَ عَاشُورَاءَ، فَسُئِلُوا عَنْ ذَلِكَ فَقَالُوا: هَذَا الْيَوْمَ الَّذِي أَظْفَرَ اللَّهُ فِيهِ مُوسَى وَبَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى فِرْعَوْنَ، وَنَحْنُ نَصُومُهُ تَعْظِيمًا لَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((نَحْنُ أَوْلَى بِمُوسَى مِنْكُمْ)). ثُمَّ أَمَرَ

(राजेअ: 2004)

3944. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूनस ने, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा मुझको अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने खबर दी, उनसे हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) सर के बाल को पेशानी पर लटका देते थे और मुश्किनी मांग निकालते थे और अहले किताब भी अपने सरों के बाल पेशानी पर लटकाए रहने देते थे। जिन उमूर में नबी करीम (ﷺ) को (वह्य के ज़रिये) कोई हुक्म नहीं होता था आप उनमें अहले किताब की मुवाफ़क़त पसन्द करते थे। फिर बाद में आँहज़रत (ﷺ) भी मांग निकालने लगे थे।

(राजेअ: 3558)

शायद बाद में आपको इसका हुक्म आ गया होगा। पेशानी पर बाल लटकाना आपने छोड़ दिया अब ये नसारा का तरीक़ा रह गया है। मुसलमानों के लिये लाज़िम है कि सिर्फ़ अपने रसूले करीम (ﷺ) का तौर तरीक़ा चाल चलन इख़्तियार करें और दूसरों की ग़लत रस्मों को हर्गिज़ इख़्तियार न करें।

3945. मुझसे ज़ियाद बिन अय्यूब ने बयान किया कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको अबू बिशर (जाबिर बिन अबी वुहैशा) ने खबर दी, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि वो अहले किताब ही तो हैं जिन्होंने आसमानी किताब को टुकड़े टुकड़े कर डाला, कुछ बातों पर ईमान लाए और कुछ बातों का इन्कार किया।

(दीगर मक़ाम: 4705, 4706)

तशरीह: जैसे उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की नबव्वत का इन्कार किया। इस हदीष की मुनासबत बाब से मुश्किल है। ऐनी ने कहा अगली हदीष में अहले किताब का ज़िक्र है, इस मुनासबत से हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का अपर बयान कर दिया। यहूदियों की जिस बुरी ख़सलत का यहाँ ज़िक्र हुआ, यही सब आम मुसलमानों में भी पैदा हो चुकी है कि कुछ आयतों पर अमल करते हैं और अमलन कुछ को झुठलाते हैं कुछ सुन्नतों पर अमल करते हैं कुछ की मुखा़लफ़त करते हैं। आम तौर पर मुसलमानों का यही हाल है आँहज़रत (ﷺ) ने पहले ही फ़र्मा दिया था कि मेरी उम्मत भी यहूदियों के क़दम ब क़दम चलेगी, वही हालत आज हो रही है। रहिमहुमुल्लाह अलैयना

बाब 53 : हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.)

का ईमान लाने का वाक़िया

3946. मुझसे हसन बिन शक़ीक़ ने बयान किया, कहा हमसे

بصومه: (راجع: 2004)

3944 - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَسْدِلُ شَعْرَهُ، وَكَانَ الْمَشْرُكُونَ يَفْرُقُونَ رُؤُوسَهُمْ وَكَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدِلُونَ رُؤُوسَهُمْ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُحِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ لِمَا لَمْ يُؤْمَرْ بِهِ بِشَيْءٍ، ثُمَّ لَوَقَ النَّبِيُّ ﷺ رَأْسَهُ)). (راجع: 3558)

[3558: (راجع: 3558)]

3945 - حَدَّثَنِي زِيَادُ بْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((هُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ جَزَّأُوهُ أَجْزَاءً، فَأَمَنُوا بِبَعْضِهِ وَكَفَرُوا بِبَعْضِهِ)).

[طرفاء: 4705, 4706]

53- بَابُ إِسْلَامِ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

3946 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَمْرٍو

मुअतमिर ने बयान किया कि मेरे वालिद सुलेमान बिन तरखान ने बयान किया (दूसरी सनद) और हमसे अबू इब्मरान नहदी ने बयान किया कहा मैंने सुना सलमान फ़ारसी (रज़ि.) से कि उनको कुछ ऊपर दस आदमियों ने एक मालिक से बदला, दूसरे मालिक से खरीदा।

3947. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बेकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने इययना ने बयान किया, उनसे औफ़ अअराबी ने, उनसे अबू इब्मरान नहदी ने बयान किया, कहा मैंने हज़रत सलमान फ़ारसी से सुना, वो बयान करते थे कि मैं राम हुमुज़ (फ़ारस में एक मक़ाम है) का रहने वाला हूँ।

3948. मुझसे हसन बिन मुदरक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमको अबू इवाना ने ख़बर दी, उन्हें आसिम अहवल ने, उन्हें अबू इब्मरान नहदी ने और उनसे हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने बयान किया, ईसा (अलैहि.) और मुहम्मद (ﷺ) के दरम्यान में फ़ितरत का ज़माना (या) नी जिसमें कोई पैग़म्बर नहीं आया) छः सौ बरस का वक़फ़ा गुज़रा है।

तशरीह: हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) की कुत्रियत अबू अब्दुल्लाह थी। उनको खुद रसूले करीम (ﷺ) ने आज़ाद कराया था। फ़ारस के शहर हुमुज़राम के रहने वाले थे, दीने हक़ की तलब में उन्होंने वतन छोड़ा और पहले ईसाई हुए। उनकी किताबों का मुतालआ किया फिर क़ौमे अरब ने उनको गिरफ़्तार करके यहूदियों के हाथों बेच डाला यहाँ तक कि ये मदीना में पहुँच गये और पहली ही सुहबत में दौलते ईमान से मालामाल हो गये फिर उन्होंने अपने यहूदी मालिक से मुकातबत कर ली जिसकी रक़म आँहज़रत (ﷺ) ने अदा की। मदीना आने तक ये दस जगह गुलाम बनाकर बेचे गये थे। आँहज़रत (ﷺ) उनसे बहुत खुश थे। आपने फ़र्माया कि सलमान हमारे अहले बैत से हैं, ज़न्नत उनके क़दमों की मुंतज़िर है। ढाई सौ साल की लम्बी उम्र पाई। अपने हाथ से रोज़ी कमाते और स़दका ख़ैरात भी करते। 35 हिज़री में शहरे मदायन में उनका इंतिक़ाल हुआ। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु (आमीन)

हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) के मज़ीद हालात

आप इलाक़ा अस्फ़हान के एक देहात के एक किसान के इकलौते बेटे थे। बाप वफ़ूर मुहब्बत में लड़कियों की तरह घर ही में बन्द रखता था। आतिशकदा (अग्नि मन्दिर) की देखभाल सुपुर्द थी। मजूसियत के बड़े पुरुषाकार पुजारी से यकायक पुरुषाकार ईसाई बन गये। इस तरह कि एक रोज़ इतिफ़ाक़न खेत को गये, अफ़्नाए राह में ईसाइयों को नमाज़ पढ़ते देखकर उस तर्ज़े इबादत पर वालिहाना फ़रेफ़ता हो गये। बाप ने क्रैद कर दिया मगर आप किसी तरह भागकर ईसाइयों के साथ शाम के एक शख़्स की ख़िदमत में पहुँच गये जो बहुत बड़ अख़लाक़ था और स़दके का तमाम रुपया लेकर खुद रख लेता था। ज़िन्दगी में तो कुछ कह न सके जब वो मरा और ईसाई उसे शान व शौक़त के साथ दफ़न करने पर तैयार हुए तो आपने उसका सारा पोल खोलकर रख दिया और तस्दीक़ के तौर पर सात मटके सोने चाँदी से लबरेज़ दिखा दिये और सज़ा के तौर पर उसकी लाश सलीब पर आवेज़ाँ कर दी गई। दूसरा आलिम बहुत मुत्तक़ी व आबिद था और आपसे मुहब्बत करता था मगर उसे जल्द पयामे मौत आ गया। आपके इस्तिफ़सार पर फ़र्माया कि अब तो मेरे इल्म में कोई सच्चा ईसाई नहीं। जो थे मर चुके, दीन में बहुत कुछ तहरीफ़ हो चुकी, अल्बत्ता मूसिल में एक शख़्स है, उसके पास चले जाओ। उसके पास पहुँचकर कुछ ही मुद्त रहने पाए थे कि उसका भी वक़्त

شَفِيقٌ حَدَّثَنَا مُقْبِرٌ قَالَ أَبِي ح. وَحَدَّثَنَا أَبُو غَفْمَانَ: ((عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ أَنَّهُ تَدَاوَلَتْ بِضَعْفَةِ عَشْرٍ مِنْ رَبِّ إِلَى رَبِّ)).

3947- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سَلْمَانَ عَنْ عَوْفٍ عَنْ أَبِي غَفْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ سَلْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((أَنَا مِنْ رَامٍ هَرُمُوزَ)).

3948- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُذَرِّكِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَمَادٍ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ غَاصِمِ الْأَخْوَلِ عَنْ أَبِي غَفْمَانَ عَنْ سَلْمَانَ قَالَ: ((فِتْرَةُ بَيْنَ عِيسَى وَمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِمَا وَسَلَّمَ سِتْعِمَائَةِ سَنَةٍ)).

आ गया और वो नसीबा में एक पादरी का पता बता गया, ये सबसे ज्यादा आबिद व जाहिद था। अमूरिया में एक शख्स का पता देकर ये भी राही मुल्क बका हुआ लेकिन जब अस्कफ़ अमूरिया भी जल्द ही बिस्तरे मर्ग पर दराज़ हुआ तो आप परेशान हुए। इस्कफ़ ने कहा बेटा अब तो दुनिया में मुझे कोई भी ऐसा नज़र नहीं आता कि मैं तुझे जिसके पास जाने का मश्वरा दूँ। अन्करीब रेगिस्ताने अरब से पैग़म्बर आखिरुब्बमाँ पैदा होने वाले हैं, जिनके दोनों शानों के दरम्यान मुझे नुबुव्वत होगी और सदाका अपने ऊपर हुराम समझेंगे। आखिरी वसियत यही है कि मुम्किन हो तो उनसे ज़रूर मिलना, एक अर्सा तक आप अमूरिया में ही रहे, बकरियाँ चराते पालते और उसी पर अपना गुज़ारा करते रहे। एक रोज़ अरब ताजिरी के एक काफ़िले को उधर से गुज़रता देखकर उनसे कहा कि अगर तुम मुझे अरब पहुँचा दो तो मैं उसके सिले में अपनी सब बकरियाँ तुम्हारी नज़र कर दूँगा। उन्होंने वादी कुरा पहुँचते ही आपको गुलाम बनाकर फ़रोख्त कर दिया लेकिन इस गुलामी पर जो किसी के अस्ताने नाजुक तक रसाई का ज़रिया बन जाए तो हज़ारों आज़ादियाँ कुर्बान की जा सकती हैं। अलार्ज़ हूज़ूर (ﷺ) की ख़िदमते मुबारका में हाज़िर होकर मुशरफ़ बा इस्लाम हुए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सोलहवां पारा

ऐ अल्लाह! ख़ास तरे ही पाक नाम की बरकत से मैं इस (बुखारी शरीफ़ के पारा 16) को शुरू करता हूँ तू निहायत ही बख़्शिश करने वाला मेहरबान है। पस तू अपने फ़ज़ल से इस पारे को भी ख़ैरियत के साथ पूरा करने वाला है। या अल्लाह! ये दुआ कुबूल कर ले। आमीन।

64. किताबुल मग़ाज़ी

ग़ज़्वात के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1: ग़ज़वतिल इशैरा

या उसैरा का बयान

١ - باب غزوة المُشَيِّرة أو

المُشَيِّرة.

मुहम्मद बिन इस्हाक ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) का सबसे पहला ग़ज़्वा मुक़ामे अब्बा का हुआ, फिर जबले बवात, फिर इशैरा।

وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ أَوَّلُ مَا غَزَا النَّبِيُّ
الْأَبْوَاءَ ثُمَّ بَوَاطُ ثُمَّ الْمُشَيِّرة.

तशरीह: ग़ज़्वा उस जिहाद को कहते हैं जिसमें आँहजरत (ﷺ) अपनी जात से खुद तशरीफ़ ले गये हों और सरिय्या वो जिसमें आप (ﷺ) खुद तशरीफ़ न ले गये। जुहैफ़ा से मदीना की जानिब एक गाँव अब्बाअ और बवाते यम्बूअ के करीब एक पहाड़ी मुक़ाम का नाम है। इशैरा भी एक मुक़ाम है या एक कबीला का नाम है। इन तीनों जिहादों में आँहजरत (ﷺ) बद्र की जंग से पहले तशरीफ़ ले गये थे। कहते हैं अब्बा में मुसलमानों और काफ़िरों में जंग हुई। सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) ने उस पर तीर चलाया। ये पहला तीर था जो अल्लाह की राह में मारा गया। ये तीनों जिहाद हिजरत से एक साल बाद किये गये। लफ़्जे मग़ाज़ी यहाँ पर ग़ज़ा यग़जू का मसदर है या ज़र्फ़ है। लाकिन्न कौनुहू मस्दरन मुतअव्वयनुन हाहुना

(कस्तलानी)। कुछ रावियों ने ग़ज़्वाते नबवी की ता'दाद 21 बयान की हैं जिनमें छोटे ग़ज़्वात को भी शामिल किया है।

3949. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि मैं एक वक़्त हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) के पहलू में बैठा हुआ था। उनसे पूछा गया था कि नबी करीम (ﷺ) ने कितने ग़ज़्वे किये? उन्होंने कहा उन्नीस। मैंने पूछा, आप हज़ूर (ﷺ) के साथ कितने ग़ज़्वात में शरीक रहे? तो उन्होंने कहा कि सत्रह में। मैंने पूछा, आप (ﷺ) का सबसे पहला ग़ज़्वा कौनसा था? कहा कि इसेरा या इशेरा। फिर मैंने उसका ज़िक्र क़तादा (रज़ि.) से किया तो उन्होंने कहा कि (सहीह) इशेरा है।

शीन मअ जम्मा से ही ये लफ़ज़ सहीह है। (दीगर मक़ाम: 4404, 4471)

औँहज़रत (ﷺ) कुफ़फ़रे कुरैश के एक क़ाफ़िले की ख़बर सुनकर तशरीफ़ ले गये थे मगर क़ाफ़िला तो नहीं मिला हाँ जंगे बद्र उसके नतीजे में वक़ूअ में आई।

बाब 2 : बद्र की लड़ाई में फ़लाँ फ़लाँ मारे जाँएँगे, इसके बारे में औँहज़रत (ﷺ) की पेशीनगोई का बयान

۲- باب ذِکْرِ النَّبِيِّ ﷺ مَنْ يُقْتَلُ
بِیَدِهِ

तशरीह : इस बाब में इमाम मुस्लिम ने जो रिवायत की है वो ज़्यादा मुनासिब है कि औँहज़रत (ﷺ) ने जंग शुरू होने से पहले हज़रत इमर (रज़ि.) को बतला दिया था कि उस जगह फ़लाँ काफ़िर मारा जाएगा और उस जगह फ़लाँ। हज़रत इमर (रज़ि.) कहते हैं कि आपने जो जो मुक़ाम जिस काफ़िर के लिये बतलाए थे वो काफ़िर उन ही जगहों पर मारे गये। ये आपका खुला हुआ मुअजिज़ा था और बाब की हदीष में जो पेशीनगोई है वो जंगे बद्र से बहुत पहले की है।

3950. मुझसे अहमद बिन इब्मान ने बयान किया, हमसे शुरैह बिन मस्तमा ने बयान किया, हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मुझसे अम्र बिन मैमून ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से सुना, वो हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) से बयान करते थे, उन्होंने कहा कि वो उमय्या बिन ख़लफ़ के (जाहिलियत के ज़माने से) दोस्त थे और जब भी उमय्या मदीना से गुज़रता तो उनके यहाँ क़याम करता था। इसी तरह हज़रत सअद (रज़ि.) जब मक्का से गुज़रते तो उमय्या के यहाँ क़याम करते। जब नबी करीम (ﷺ) मदीना हिज़रत करके तशरीफ़ लाए तो एक

۳۹۵۰- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ حَفْصَانَ، حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُونُسَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُو بْنُ مَيْمُونٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَ عَنْ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ بْنِ أَنَّهُ قَالَ : كَانَ صَدِيقًا لَأُمَيَّةَ بْنِ خَلْفٍ، وَكَانَ أُمَيَّةٌ إِذَا مَرَّ بِالْمَدِينَةِ نَزَلَ عَلَى سَعْدٍ، وَكَانَ سَعْدٌ إِذَا مَرَّ بِمَكَّةَ نَزَلَ عَلَى أُمَيَّةَ، فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ

मर्तबा हजरत सअद (रज़ि.) उमरा के इरादे से मक्का गये और उमय्या के पास क़याम किया। उन्होंने उमय्या से कहा कि मेरे लिये कोई तन्हाई का वक़्त बताओ ताकि मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ करूँ। चुनाँचे उमय्या उन्हें दोपहर के वक़्त साथ लेकर निकला। उनसे अबू जहल की मुलाक़ात हो गई। उसने पूछा, अबू सप्रवान! ये तुम्हारे साथ कौन हैं? उमय्या ने बताया कि ये सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) हैं। अबू जहल ने कहा, मैं तुम्हें मक्का में अमन के साथ तवाफ़ करवा रहा हूँ। तुम लोगों ने बेदीनों को पनाह दे रखी है और इस इध्याल में हो कि तुम लोग उनकी मदद करोगे। अल्लाह की क़सम! अगर उस वक़्त तुम, अबू सप्रवान! उमय्या के साथ न होते तो अपने घर सलामती से नहीं जा सकते थे। इस पर सअद (रज़ि.) ने कहा, उस वक़्त उनकी आवाज़ बुलन्द हो गई थी कि अल्लाह की क़सम अगर आज तुमने मुझे तवाफ़ से रोका तो मैं भी मदीना की तरफ़ से तुम्हारा रास्ता बन्द कर दूँगा और ये तुम्हारे लिये बहुत सी मुश्किलात का बाज़िब बन जाएगा। उमय्या कहने लगा, सअद! अबुल हक़म (अबू जहल) के सामने बुलन्द आवाज़ से न बोलो। ये वादी का सरदार है। सअद (रज़ि.) ने कहा, उमय्या! इस तरह की बातचीत न करो। अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुन चुका हूँ कि तू उनके हाथों से मारा जाएगा। उमय्या ने पूछा, क्या मक्का में मुझे क़त्ल करेंगे? उन्होंने कहा कि उसका मुझे इल्म नहीं। उमय्या ये सुनकर बहुत घबरा गया और जब अपने घर लौटा तो (अपनी बीवी से) कहा, उम्मे सप्रवान! देखा नहीं सअद (रज़ि.) मेरे बारे में क्या कह रहे हैं। उसने पूछा, क्या कह रहे हैं? उमय्या ने कहा कि वो ये बता रहे थे कि मुहम्मद (ﷺ) ने उन्हें ख़बर दी है कि किसी न किसी दिन वो मुझे क़त्ल कर देंगे। मैंने पूछा क्या मक्का में मुझे क़त्ल करेंगे? तो उन्होंने कहा कि उसकी मुझे ख़बर नहीं। उमय्या कहने लगा अल्लाह की क़सम! अब मक्का से बाहर मैं कभी नहीं जाऊँगा। फिर बद्र की लड़ाई के मौक़ा पर जब अबू जहल ने कुरैश से लड़ाई की तैयारी के लिये कहा और कहा कि अपने क़ाफ़िले की मदद को चलो तो उमय्या ने लड़ाई में शिकत पसन्द नहीं की लेकिन अबू जहल उसके पास आया और कहने लगा ऐ अबू सप्रवान! तुम वादी के सरदार हो। जब लोग देखेंगे कि

اللّٰهُ الْمَدِينَةُ انْطَلَقَ سَعْدٌ مُّقْتَمِرًا، فَلَمَّا نَزَلَ عَلَى أُمَيَّةَ بِمَكَّةَ فَقَالَ لِأُمَيَّةَ انْظُرْ لِي سَاعَةً خَلْوَةً لَعَلِّي أَنْ اطُوفَ بِالنَّبِيِّ، فَخَرَجَ بِهِ قَرِيبًا مِنْ بَصْفِ النَّهَارِ فَلَقِيَهُمَا أَبُو جَهْلٌ فَقَالَ : يَا أَبَا صَفْوَانَ مَنْ هَذَا مَعَكَ؟ فَقَالَ هَذَا سَعْدٌ فَقَالَ لَهُ أَبُو جَهْلٌ : أَلَا أَرَأَكَ تَطُوفُ بِمَكَّةَ آمِنًا وَقَدْ أَوْتِمُّوا الصَّبَاةَ وَزَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ تَصُورُونَهُمْ وَتُؤْمِنُونَهُمْ؟ أَمَّا وَاللّٰهُ لَوْ لَا أَنَّكَ مَعَ أَبِي صَفْوَانَ مَا رَجَعْتَ إِلَى أَهْلِكَ سَالِمًا فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ، وَرَفَعَ صَوْتَهُ عَلَيْهِ : أَمَّا وَاللّٰهُ لَبِنَ مَنَعَنِي هَذَا لِأَسْغَنَكَ مَا هُوَ أَشَدُّ عَلَيْكَ مِنْهُ، طَرِيقَكَ عَلَى الْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ أُمَيَّةُ : لَا تَرْفَعْ صَوْتَكَ يَا سَعْدُ عَلَى أَبِي الْحَكَمِ سَيَذَرُ أَهْلَ الْوَادِي فَقَالَ سَعْدٌ : ذَعْنَا عَلَيْكَ يَا أُمَيَّةُ لَوْ أَنَّ اللَّهَ لَقَدْ سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((إِنَّهُمْ قَاتِلُوكَ)) قَالَ : بِمَكَّةَ قَالَ : لَا أَذْرِي، فَفَرَّغَ لِذَلِكَ أُمَيَّةَ فَرَعَا شَدِيدًا فَلَمَّا رَجَعَ أُمَيَّةَ إِلَى أَهْلِهِ قَالَ : يَا أُمَ صَفْوَانَ أَلَمْ تَرَى مَا قَالَ لِي سَعْدٌ؟ قَالَتْ وَمَا قَالَ لَكَ؟ قَالَ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا أَخْبَرَهُمْ أَنَّهُمْ قَاتِلِي فَقُلْتُ لَهُ : بِمَكَّةَ؟ قَالَ : لَا أَذْرِي فَقَالَ أُمَيَّةُ : وَاللّٰهُ لَا أَخْرُجُ مِنْ مَكَّةَ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمَ بَدْرٍ اسْتَفَرَّ أَبُو جَهْلٌ النَّاسَ قَالَ : أَذْرِكُوا عَيْرَكُمْ فَكَّرَ أُمَيَّةُ أَنْ يَخْرُجَ فَاتَاهُ أَبُو جَهْلٌ فَقَالَ يَا أَبَا صَفْوَانَ إِنَّكَ مَتَى يَرَاكَ النَّاسُ قَدْ تَخَلَّفْتَ

तुम ही लड़ाई में नहीं निकलते हो तो दूसरे लोग भी नहीं निकलेंगे। अबू जहल यूँ ही बराबर उसको समझता रहा। आखिर मजबूर होकर उमय्या ने कहा जब नहीं मानता तो अल्लाह की कसम! (इस लड़ाई के लिये) मैं ऐसा तेज़ रफ़्तार ऊँट खरीदूँगा जिसका श्वानी मक्का में न हो। फिर उमय्या ने (अपनी बीवी से) कहा, उम्मे सप्रवान! मेरा सामान तैयार कर दे। उसने कहा, अबू सप्रवान! अपने यज़िबी भाई की बात भूल गये? उमय्या बोला, मैं भूला नहीं हूँ। उनके साथ सिर्फ़ थोड़ी दूर तक जाऊँगा। जब उमय्या निकला तो रास्ता में जिस मंज़िल पर भी ठहरना होता, ये अपना ऊँट (अपने पास ही) बाँधे रखता। वो बराबर ऐसा ही एहतियात करता रहा यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उसे क़त्ल करा दिया। (राजेज़: 3632)

وَأَنْتَ سَيِّدُ أَهْلِ الْوَادِي فَعَلَلُوا مَعَكَ
فَلَمْ يَزَلْ بِهِ أَبُو جَهْلٍ حَتَّى قَالَ : أَمَا إِذَا
غَلَبَنِي فَأَنَا لَأَشْتَرِيَنَّ أُجُودَ بَعِيرٍ بِمَكَّةَ ،
ثُمَّ قَالَ أُمَيَّةُ : يَا أُمَّ صَفْوَانَ جَهْرِي
فَقَالَتْ لَهُ : يَا أَبَا صَفْوَانَ وَقَدْ نَسِيتَ مَا
قَالَ لَكَ أَخُوكَ الْفَرَبِيُّ ! قَالَ : لَا مَا أُرِيدُ
أَنْ أُجُودَ مَعَهُمْ إِلَّا قَرِيبًا ، فَلَمَّا خَرَجَ أُمَيَّةُ
أَخَذَ لَا يَنْزِلُ مَنَزَلًا إِلَّا عَقَلَ بَعِيرَةً فَلَمْ
يَزَلْ بِذَلِكَ حَتَّى قَعَلَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ يَنْذِرَ .

[راجع: 3632]

तशरीह : बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि ओहज़रत (ﷺ) ने उमय्या के मारे जाने से पहले ही उसके क़त्ल की ख़बर दे दी थी। किरमानी ने अल्फ़ाज़ इन्नहुम क़ातलूक की तफ़सीर ये की है कि अबू जहल और उसके साथी तुझको क़त्ल करायेंगे। उमय्या को इस वजह से तअज़ुब हुआ कि अबू जहल तो मेरा दोस्त है वो मुझको क्योंकर क़त्ल करायेंगा। इस सूरात में क़त्ल कराने का मतलब ये है कि वो तेरे क़त्ल का सबब बनेगा। ऐसा ही हुआ। उमय्या बद्र की लड़ाई में जाने पर राज़ी न था, लेकिन अबू जहल ज़बरदस्ती उसको पकड़ कर ले गया। उमय्या जानता था कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) जो बात कह दें वो होकर रहेगी। अगरचे उसने वापस भागने के लिये तेज़ रफ़्तार ऊँट साथ लिया मगर वो ऊँट कुछ काम न आया और उमय्या भी जंगे बद्र में क़त्ल कर दिया गया। खुद हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने उसे क़त्ल किया जिसे किसी ज़माने में ये सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें दिया करता था। हज़रत सअद (रज़ि.) ने अबू जहल को इससे डराया कि मक्का के लोग शाम की तिजारात के लिये बरास्ता मदीना जाया करते थे और उनकी तिजारात का दारोमदार शाम ही की तिजारात पर था। कुछ शारेहीन ने इन्नहुम क़ातलूक से मुसलमान मुराद लिये हैं और किरमानी के क़ौल को उनका वहम करार दिया है।

बाब 3 : ग़ज़व-ए-बद्र का बयान

3- باب قصة غزوة بدر

मदीना से कुछ मील की दूरी पर बद्र नामी एक गाँव था जो बद्र बिन मुख़लब बिन नज़र बिन किनाना के नाम से आबाद था या बद्र एक कुएँ का नाम था। 2 हिजरी में रमज़ान में मुसलमानों और काफ़िरों की यहाँ मशहूर जंगे बद्र हुई जिसका कुछ ज़िक्र हो रहा है। 17 रमज़ान बरोज़े जुम्आ जंग हुई जिसमें कुफ़ारे कुरैश के सत्तर अकाबिर मारे गये और इतने ही कैद हुए। इस जंग ने कुफ़ार की कमर तोड़ दी और वा'दा-ए-इलाही इन्नल्लाह अला नन्दिहिम लक़दीर सहीह प्रामित हुआ।

और अल्लाह तआला का फ़र्माना, और यक़ीनन अल्लाह तआला ने तुम्हारी मदद की बद्र में जिस वक़्त कि तुम कमज़ोर थे। तो तुम अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ। ऐ नबी! वो वक़्त याद कीजिए, जब आप ईमान वालों से कह रहे थे, क्या ये तुम्हारे लिये काफ़ी नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी मदद के

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ
فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾
﴿إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ

लिये तीन हजार फ़रिश्ते उतार दे, क्यों नहीं, बशर्त कि तुम सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो और अगर वो तुम पर फ़ौस आ पड़े तो तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी मदद पाँच हजार निशान किये हुए फ़रिश्तों से करेगा और ये तो अल्लाह ने इसलिये किया कि तुम खुश हो जाओ और तुम्हें उससे इत्मीनान हासिल हो जाए। वरना फ़तह तो बस अल्लाह ग़ालिब और हिकमत वाले ही की तरफ़ से हुई है और ये नुसरत इस ग़र्जे से थी ताकि काफ़िरों के एक गिरोह को हलाक कर दे या उन्हें ऐसा मज़लूब कर दे कि वो नाकाम होकर वापस लौट जाएँ। (आले इमरान : 123-127)

वहशी (रज़ि.) ने कहा हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ने तईमा बिन अदी बिन ख़य्यार को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था और अल्लाह तआला का फ़र्मान (सूरह अन्फ़ाल में) और वो वक़्त याद करो कि जब अल्लाह तआला तुमसे वा'दा कर रहा था, दो जमाअतों में से एक के लिये कि वो तुम्हारे हाथ आ जाएगी। आख़िर तक।

तशरीह: आयाते मज़कूर में जंगे बद्र की कुछ तफ़्सीलात मज़कूर हुई हैं। इसीलिये हज़रत इमाम ने उनको यहाँ नक़ल किया है। अल्लाह तआला ने बहुत से इक्काइक़ इन आयात में ज़िक्र किये हैं जो अहले इस्लाम के लिये हर ज़माने में मशअले राह बनते रहे हैं। इन्वान में हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) का ज़िक्र ख़ैर है जिन्होंने इस जंग में सहीह ये है कि अदी बिन नौफ़िल बिन अब्दे मुनाफ़ को क़त्ल किया था। कहते हैं कि जुबैर बिन मुतइम ने जो तईमा का भतीजा था अपने गुलाम वहशी से कहा अगर तू हम्ज़ा (रज़ि.) को मार डाले तो मैं तुझको आज़ाद कर दूँगा। इन्वान में मज़कूर है कि हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) के हाथ से तईमा मारा गया जिसके बदले के लिये वहशी को मुक़रर किया गया। यही वो वहशी है जिसने जंगे उहुद में हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) को शहीद किया।

يُبَدِّدُكُمْ رَبُّكُمْ بِفَلَاحَةِ الْآفِ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُزِيلِينَ. بَلَى إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فُورِهِمْ هَذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ. وَمَا جَعَلَ اللَّهُ إِلَّا بَشْرَى لَكُمْ، وَلَتُظْمِنَنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ. لَيَقْطَعَنَّ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْتَسِبُهُمْ فَتَنَابِلُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٧-١٢٣﴾ وَقَالَ وَخَشِيَ: قَتَلَ حَمْرَةَ طُعَيْمَةَ بِنَ عَدِيٍّ بِنِ الْخِثَارِ يَوْمَ بَدْرٍ. وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَإِذْ يُبَدِّدُكُمْ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَهَا لَكُمْ﴾ [الأنفال : ٧]

٣٩٥١- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ يَقُولُ: لَمَّا اتَّخَلَفَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ غَزَاهَا إِلَّا فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ غَيْرَ أَنِّي تَخَلَّفْتُ عَنْ غَزْوَةِ بَدْرٍ وَلَمْ يُعَاتَبْ أَحَدٌ تَخَلَّفَ عَنْهَا إِنَّمَا خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ

3951. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैथ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन कअब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत कअब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जितने ग़ज़वे किये, मैं ग़ज़व-ए-तबूक के सिवा और सब में हाज़िर रहा। अल्बत्ता ग़ज़व-ए-बद्र में शरीक न हो सका था लेकिन जो लोग इस ग़ज़वे में शरीक न हो सके थे, उनमें से किसी पर अल्लाह ने इताब (गुस्सा) नहीं किया क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) कुरैश काफ़िले को तलाश करने के लिये निकले थे। (लड़ने की निय्यत से नहीं गये

थे) मगर अल्लाह तआला ने नागहानी मुसलमानों को उनके दुश्मनों से भिड़ा दिया। (राजेअ: 2757)

يُرِيدُ عِرْقَ قُرَيْشٍ حَتَّىٰ يَجْمَعَ إِلَيْهِمْ وَيَبْنِي عُدُوَّهُمْ عَلَىٰ غَيْرِ مِيعَادٍ.

[راجع: ٢٧٥٧]

हर चन्द हज़रत कअब (रज़ि.) जंगे बद्र में भी शरीक नहीं हुए थे मगर चूँकि बद्र में आँहज़रत (ﷺ) का कस्द जंग का न था इसलिये सब लोगों पर आपने निकलना वाजिब नहीं रखा बरखिलाफ़ जंगे तबूक के। उसमें सब मुसलमानों के साथ जाने का हुक्म था जो लोग नहीं गये उन पर इसलिये इताब (गुस्सा) हुआ।

बाब 4 : और अल्लाह तआला का फ़र्मान

और उस वक़्त को याद करो जब तुम अपने परवरदिगार से फ़रियाद कर रहे थे, फिर उसने तुम्हारी फ़रियाद सुन ली। और फ़र्माया कि तुम्हें लगातार एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा और अल्लाह ने ये बस इसलिये किया कि तुम्हें बशारत हो और ताकि तुम्हारे दिलों को इससे इत्मीनान हासिल हो जाए। वरना फ़तह तो बस अल्लाह ही के पास से है। बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है और वो वक़्त भी याद करो जब अल्लाह ने अपनी तरफ़ से चैन देने को तुम पर नींद को भेज दिया था और आसमान से तुम्हारे लिये पानी उतार रहा था कि उसके ज़रिये से तुम्हें पाक कर दे और तुमसे शैतानी वस्वसा को दूर कर दे और ताकि तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और उसके बाज़िअ तुम्हारे क़दम जमा दे, (और उस वक़्त को याद करो) जब तेरा परवरदिगार वद्व्य कर रहा था फ़रिश्तों की तरफ़ कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। सो ईमान लाने वालों को जमाए रखो मैं अभी काफ़िरीयों के दिलों में डर डाले देता हूँ, सो तुम काफ़िरीयों की गर्दनो पर मारो और उनके जोड़ों पर ज़बल लगाओ। ये इसलिये कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफ़त की है और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफ़त करता है, सो अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है। (अल-अनफ़ाल: -12)

٤- باب قول الله تعالى :

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَبَ لَكُمْ أَنِّي مُبْدئُكُمْ بِالْفِ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرَدِّينَ. وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ. وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ. إِنَّ اللَّهَ غَوِيْرٌ حَكِيْمٌ. إِذْ يُغَشِّيكُمُ الْبَغَاسَ أَمْنَةً مِنْهُ. وَيُنْزِلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهِ. وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ، وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ. إِذْ يُوحَىٰ رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبَّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا، سَالِقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ، فَأَضْرِبُوا قُلُوبَ الْأَغْنَقِ وَأَضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ، ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ. وَمَنْ يُشَاقِلِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيْدٌ الْعِقَابِ﴾ [الأنفال: ٩-١٢].

3952. हमसे अबूनुएम ने बयान किया, हमसे इस्राईल बिन यूनस ने बयान किया, उनसे मख़ारिक बिन अब्दुल्लाह बजली ने, उनसे तारिक बिन शिहाब ने, उन्होंने ने हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने मिक्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) से एक ऐसी बात सुनी कि अगर वो बात मेरी जुबान से अदा हो जाती तो

٣٩٥٢- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيْمٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ مُخَارِقٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ : شَهِدْتُ مِنْ الْمُقَدَّادِ بْنِ الْأَسْوَدِ مَشْهَدًا لَّأَنَ أَكُونَ

मेरे लिये किसी भी चीज के मुकाबले में ज्यादा अजीज होती, वो नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए। हुजूर (ﷺ) उस वक़्त मुश्रीकीन पर बददुआ कर रहे थे, उन्होंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह! हम वो नहीं कहेंगे जो हज़रत मूसा (अलैहि.) की क़ौम ने कहा था कि जाओ, तुम और तुम्हारा रब उनसे जंग करो, बल्कि हम आपके दाएँ बाएँ, आगे और पीछे जमा होकर लड़ेंगे। मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) का चेहरा मुबारक चमकने लगा और आप खुश हो गये।

صَاحِبَةُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا عُدْتُ بِهِ، أَلَيْسَ النَّبِيُّ ﷺ، وَهُوَ يَذْعُو عَلَى الْمُشْرِكِينَ لِقَالٍ: لَا تَقُولُوا كَمَا قَالَ قَوْمُ مُوسَى هَذَا نَبَأٌ آتٍ وَرَبُّكَ لَفَاحٍ وَلَكِنَّا نَقَابِلُ عَنْ يَمِينِكَ وَعَنْ شِمَالِكَ وَتَيْنَ يَدَيْكَ وَخَلْفَكَ فَرَأَيْتَ النَّبِيَّ ﷺ أَشْرَقَ وَجْهُهُ وَسُرَّةُ بَعْضِي قَوْلُهُ.

तशरीह: हुआ ये था कि बद्र के दिन आँहज़रत (ﷺ) कुरैश के एक क़ाफ़िले की ख़बर सुनकर मदीना से निकले थे। वहाँ क़ाफ़िला तो निकल गया फ़ौज से लड़ाई ठन गई, जिसमें खुद कुप्फ़ारे मक्का ज़ारेह की हैषियत से तैयार होकर आए थे। इस नाज़ुक मरहले पर रसूले करीम (ﷺ) ने तमाम सहाबा से जंग के बारे में नज़रिया मा'लूम फ़र्माया। उस वक़्त तमाम मुहाजिरीन व अंसार ने आपको तसल्ली दी और अपनी आमादगी का इज़हार किया। अंसार ने तो यहाँ तक कह दिया कि आप अगर बर्कुल गुमाद नामी दूर दराज़ जगह तक हमको जंग के लिये ले जाएँगे तो भी हम आपके साथ चलने और जान व दिल से लड़ने को हाज़िर हैं। इस पर आप (ﷺ) बेहद खुश हुए। (ﷺ)

3953. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, हमसे अब्दुल वट्टहाब ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे इकिमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई के मौक़े पर फ़र्माया था, ऐ अल्लाह! मैं तेरे अहद और वा'दे का वास्ता देता हूँ, अगर तू चाहे (कि ये क़ाफ़िर ग़ालिब हों तो मुसलमानों के ख़त्म हो जाने के बाद) तेरी इबादत न होगी। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने हुजूर (ﷺ) का हाथ थाम लिया और अर्ज किया, बस कीजिए या रसूलल्लाह! उसके बाद हुजूर (ﷺ) अपने ख़ैमे से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) की जुबाने मुबारक पर ये आयत थी, जल्द ही कुप्फ़ार की जमाअत को हार होगी और ये पीठ फेरकर भाग निकलेंगे। (राजेअ: 2925)

٣٩٥٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَوْشَبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدْرٍ: ((اللَّهُمَّ أَنْشُدْكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ)) فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ يَدَهُ فَقَالَ: حَسْبُكَ. فَخَرَجَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿سَيُهْزَمُ الْجَنْعُ وَيُقْلَوْنَ الدُّبُرُ﴾.

[راجع: ٢٩٢٥]

तशरीह: अल्लाह पाक ने जो वा'दा फ़र्माया था वो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हुआ। बद्र के दिन अल्लाह तआला ने पहली बार एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद नाज़िल की। फिर बढ़ाकर तीन हज़ार कर दिये फिर पाँच हज़ार फ़रिश्तों से मदद फ़र्माई। इसीलिये आयते करीमा अन्नी मुमिहुकुम बिअल्फिम मिनल् मलाईकति (अल् अन्फ़ाल: 9) सूरह आले इमरान की आयत के ख़िलाफ़ नहीं है जिसमें पाँच हज़ार का ज़िक्र है।

बाब : 5

3854. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अब्दुल करीम ने ख़बर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन हारिष के मौला मित्रसम

باب - ٥

٣٩٥٤- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْكَرِيمِ أَنَّهُ سَمِعَ مِقْسَمًا

से सुना, वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से बयान करते थे। उन्होंने बयान किया कि (सूरह निसा की इस आयत से) जिहाद में शिकत करने वाले और उसमें शरीक न होने वाले बराबर नहीं हो सकते। वो लोग मुराद हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए और जो उसमें शरीक नहीं हुए।

बाब 6 : जंगे बद्र में शरीक होने वालों का शुमार

3955. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि (बद्र की लड़ाई के मौक़ा पर) मुझे और इब्ने उमर (रज़ि.) को नाबालिग़ क़रार दे दिया गया था।

3956. (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह) फ़रमाते हैं और मुझसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में मुझे और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को नाबालिग़ क़रार दे दिया गया था और उस लड़ाई में मुहाजिरीन की ता'दाद साठ से कुछ ज़्यादा थी और अंसार दो सौ चालीस से कुछ ज़्यादा थे। (राजेअ : 3955)

कुल मुसलमान तीन सौ दस से तीन सौ उन्नीस के बीच थे।

तशरीह : जंग में भर्ती के लिये सिर्फ़ बालिग़ जवान लिये जाते थे। हज़रत बराअ और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कमसिनी की वजह से भर्ती में नहीं लिये गये। उनकी उम्र 13-14 सालों की थीं। जंगे बद्र में कुफ़रार की ता'दाद एक हज़ार या सात सौ पचास थी और उनके पास हथियार भी काफ़ी थे फिर भी अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह मुबिन अता फ़र्माई। तालूत इस्राईल का एक बादशाह था जिसकी फ़ौज में हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) भी शामिल थे, मुकाबला जालूत नामी काफ़िर से था जिसका लश्कर बड़ा था, मगर अल्लाह ने तालूत को फ़तह इनायत फ़र्माई।

3957. हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे जुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत बराअ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के सहाबा ने जो बद्र में शरीक थे मुझसे बयान किया कि बद्र की लड़ाई में उनकी ता'दाद इतनी ही थी जितनी हज़रत तालूत (अलैहिस्सलाम) के उन अस्थाब की थी जिन्होंने उनके साथ नहरे फ़िलीस्तीन को पार किया था। तक्रीबन तीन सौ दस। हज़रत बराअ (रज़ि.) ने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम! हज़रत तालूत के साथ नहरे फ़िलीस्तीन को सिर्फ़ वही लोग

مَوَّلَى عَنِ اللَّهِ بْنِ الْخَارِثِ يُحَدِّثُ عَنْ
ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: «لَا يَسْتَوِي
الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ» [النساء : 95]
عَنْ بَنِي الْخَارِثِ إِلَى بَنِي بَنِي.

٦- باب عِدَّةِ أَصْحَابِ بَدْرٍ

٣٩٥٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ
أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ : اسْتُصْفِرْتُ
أَنَا وَابْنُ عُمَرَ.

٣٩٥٦- وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا وَهْبٌ
عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ
اسْتُصْفِرْتُ أَنَا وَابْنُ عُمَرَ يَوْمَ بَدْرٍ وَكَانَ
الْمُهَاجِرُونَ يَوْمَ بَدْرٍ ثَلَاثًا عَلَى سِتِّينَ
وَالْأَنْصَارُ ثَلَاثًا وَارْبَعِينَ وَمِائَتَيْنِ.

[راجع : ٣٩٥٥]

٣٩٥٧- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا
زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ
الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : حَدَّثَنِي
أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مِنْ شُهَدَاءِ بَدْرٍ
أَنَّهُمْ كَانُوا عِدَّةَ أَصْحَابِ طَالُوتَ الْبَلْبَلِ
مَعَهُ النَّهْرُ بِعِشْرَةِ عَشْرٍ وَثَلَاثِمِائَةٍ قَالَ
الْبَرَاءُ : لَا وَاللَّهِ مَا جَاوَزَ مَعَهُ النَّهْرَ إِلَّا

पार कर सके थे जो मोमिन थे।

مؤمن.

बेईमान बस नहर का पानी बेसब्री से पी पीकर पेट फुला फुलाकर हिम्मत हार चुके थे।

3958. हमसे अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक ने, उन्होंने बराअ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम अस्हाबे मुहम्मद (ﷺ) आपस में ये बातचीत करते थे कि अस्हाबे बद्र की ता'दाद भी उतनी ही थी जितनी अस्हाबे तालूत की, जिन्होंने आपके साथ नहरे फ़िलिस्तीन पार की थी और उनके साथ नहर को पार करने वाले सिर्फ़ मोमिन ही थे या'नी तीन सौ दस पर और कई आदमी।

(राजेअ: 3957)

3958- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الرَّاءِ قَالَ: كُنَّا أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ نَتَخَذُ أَنْ أَصْحَابَ بَدْرٍ عَلَى عِدَّةِ أَصْحَابِ طَلُوتَ الَّذِينَ جَاوَزُوا مَعَهُ النَّهْرَ وَلَمْ يَجَاوِزْ مَعَهُ إِلَّا مُؤْمِنٌ بِضْعَةَ عَشَرَ وَثَلَاثُمِائَةٍ.

[راجع: 3957]

3959. मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, हमसे यह्या बिन सईद कत्तान ने बयान किया, उनसे सुफयान घौरी ने, उनसे अबू इस्हाक ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और हमसे मुहम्मद बिन क़ध़ीर ने बयान किया, उन्हें सुफयान ने ख़बर दी, उन्हें अबू इस्हाक ने और उनसे बराअ बिन आजिब (रज़ि.) ने बयान किया कि हम आपस में ये बातचीत किया करते थे कि जंगे बद्र में अस्हाबे बद्र की ता'दाद भी कुछ ऊपर तीन सौ दस थी, जितनी उन अस्हाबे तालूत की ता'दाद थी जिन्होंने उनके साथ नहरे फ़िलिस्तीन पार की थी और उसे पार करने वाले सिर्फ़ ईमानदार ही थे। (राजेअ: 3957)

3959- حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الرَّاءِ ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الرَّاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَتَخَذُ أَنْ أَصْحَابَ بَدْرٍ ثَلَاثُمِائَةٍ وَبِضْعَةَ عَشَرَ بَعْدَ أَصْحَابِ طَلُوتَ الَّذِينَ جَاوَزُوا مَعَهُ النَّهْرَ وَمَا جَاوَزَ مَعَهُ إِلَّا مُؤْمِنٌ. [راجع: 3957]

बाब 7 : कुम्फ़ारे कुरैश, शैबा, इत्बा, वलीद और अबू जहल बिन हिशाम के लिये नबी करीम (ﷺ) का बददुआ करना और उनकी हलाकत का बयान

7- بَابُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى كُفَّارِ قُرَيْشٍ: شَيْبَةَ وَغَتَبَةَ وَالْوَلِيدَ وَأَبِي جَهْلٍ بْنِ هِشَامٍ وَهَلَائِكِهِمْ

ये वह बदबख्त लोग हैं जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को सताने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। एक दिन जब आप का'बा में नमाज़ पढ़ रहे थे, उन लोगों ने आप (ﷺ) की कमरे मुबारक पर कूट की ओझड़ी लाकर डाल दी थी। उन हालात से मजबूर होकर रसूले करीम (ﷺ) ने उनके हक़ में बददुआ फ़र्माई। जिसका नतीजा बद्र के दिन ज़ाहिर हो गया। सारे कुम्फ़ार हलाक हो गये। इससे बहालते मजबूरी दुश्मनों के लिये बददुआ करने का जवाज़ प्राबित हुआ। मोमिन बिल्लाह का ये आख़िरी हथियार है जिसे वाक़ियातन इस्ते'माल करने पर उसका वार ख़ाली नहीं जाता। इसलिये कहा गया है कि,

कोई अंदाज़ा कर सकता है उसके ज़ोरे बाज़ू का

निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक्रदीरें

3960. मुझसे अमर बिन ख़ालिद हुरानी ने बयान किया, उन्होंने हमसे जुहैर बिन मुआविया से बयान किया, हमसे अबू इस्हाक

3960- حَدَّثَنَا حَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ عَنْ إِسْحَاقَ، عَنْ حَمْرُو بْنِ

सबीई ने बयान किया, उनसे से अम्र बिन मैमून ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने का'बा की तरफ़ चेहरा करके कुफ़फ़ारे कुरैश के चन्द लोगों शैबा बिन रबीआ, इत्बा बिन रबीआ, वलीद बिन इत्बा, और अबू जहल बिन हिशाम के हक़ में बददुआ की थी, मैं उसके लिये अल्लाह को गवाह बनाता हूँ कि मैंने (बद्र के मैदान में) उनकी लाशें पड़ी हुई पाईं। सूरज ने उनकी लाशों को बदबूदार कर दिया था। उस दिन बड़ी गर्मी थी। (राजेअ : 240)

مَمْنُونٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: اسْتَقْبَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْكُفَّةَ فَدَعَا عَلَى نَفَرٍ مِنْ قُرَيْشٍ عَلَى شَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَعُثْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدَ بْنِ عُثْبَةَ وَأَبِي جَهْلٍ بْنِ هِشَامٍ فَأَشْهَدَ بِاللَّهِ لَقَدْ رَأَيْتُهُمْ مَرَعَى قَدْ غَيَّرَتْهُمْ الشَّمْسُ وَكَانَ يَوْمًا حَارًّا. [راجع: ٢٤٠]

ये उसी दिन का वाक़िया है जिस दिन उन ज़ालिमों ने हज़ूर (ﷺ) की कमरे मुबारक पर बहालते नमाज़ में कूट की ओझड़ी लाकर डाल दी थी और खुश हो होकर हंस रहे थे। अल्लाह तआला ने जल्द ही उनके जुल्मों का बदला उनको दे दिया।

बाब 8 : (बद्र के दिन) अबू जहल का क़त्ल होना

3961. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, हमको कैस बिन अबू हाज़िम ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि बद्र की लड़ाई में वो अबू जहल के करीब से गुज़रे, अभी उसमें थोड़ी सी जान बाक़ी थी, उसने उनसे कहा, इससे बड़ा कोई और शाख़्स है जिसको तुमने मारा है?

٨- باب قتل أبي جهل
٣٩٦١- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ أَخْبَرَنَا قَيْسٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ أَتَى أَبَا جَهْلٍ وَبِهِ رَمَقٌ يَوْمَ بَدْرٍ فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ: هَلْ أَغْنَىٰ مِنْ رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ.

3962. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। (दूसरी सनद) हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने फ़र्माया, मुझसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे जुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, उनसे सुलैमान तैमी ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई है जो मा'लूम करे कि अबू जहल का क्या हशर हुआ? हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) हक़ीक़ते हाल मा'लूम करने आए तो देखा कि इफ़रा के बेटों (मुआज़ और मुअव्वज़ रज़ि.) ने उसे क़त्ल कर दिया है और उसका जिस्म ठण्डा पड़ा है। उन्होंने पूछा, क्या तू ही अबू जहल है? हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने उसकी दाढ़ी पकड़ ली, अबू जहल ने कहा, क्या इससे भी बड़ा कोई आदमी है जिसे तुमने आज क़त्ल कर

٣٩٦٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّمِيمِيُّ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ح وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّمِيمِيِّ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ يَنْظُرُ مَا صَنَعَ أَبُو جَهْلٍ؟)) فَانْطَلَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَوَجَدَهُ قَدْ ضَرَبَهُ ابْنَا غَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ قَالَ: أَنْتَ أَبُو جَهْلٍ قَالَ: فَأَخَذَ بِلِحْيَتِهِ قَالَ: وَهَلْ فَوْقَ

डाला है? या (उसने ये कहा कि क्या इससे भी बड़ा कोई आदमी है जिसे उसकी क्रौम ने क़त्ल कर डाला है?) अहमद बिन यूनुस ने (अपनी रिवायत में) अन्ता अबा जहल के अल्फ़ाज़ बयान किये हैं। या'नी उन्होंने ये पूछा, क्या तू ही अबू जहल है। (दीगर मक़ाम : 3963, 4020)

3963. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे सुलैमान तैमी ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) बद्र की लड़ाई के दिन फ़र्माया, कौन देखकर आएगा कि अबू जहल का क्या हुआ? हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) मा'लूम करने गये तो देखा कि इफ़रा के दोनों लड़कों ने उसे क़त्ल कर दिया था और उसका जिस्म ठण्डा पड़ा है। उन्होंने उसकी दाढ़ी पकड़कर कहा, तू ही अबू जहल है? उसने कहा, क्या उससे भी बड़ा कोई आदमी है जिसे आज उसकी क्रौम ने क़त्ल कर डाला है, या (उसने यूँ कहा कि) तुम लोगों ने उसे क़त्ल कर डाला है? (राजेअ : 3962)

तशरीह : सुलैमान तैमी की दूसरी रिवायत में यूँ है! वो कहने लगा, काश! मुझको किसानों ने न मारा होता। उनसे अंसार को मुराद लिया। उनको ज़लील समझा। एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) उसका सर काटकर लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए फ़र्माया कि इस उम्मत का फिर औन मारा गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने उस मरदूद के हाथों मक्का में सख़्त तकलीफ़ उठाई थी। एक रिवायत के मुताबिक़ जब अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने उसकी गर्दन पर पाँव रखा तो मरदूद कहने लगा। अरे ज़लील बकरियाँ चराने वाले! तू बड़े सख़्त मक़ाम पर चढ़ गया। फिर उन्होंने उसका सर काट लिया।

मुझसे इब्ने मुषन्ना ने बयान किया, हमको मुआज़ बिन मुआज़ ने ख़बर दी, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया और उन्हें हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी, इसी तरह आगे हदीष बयान की।

3964. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने यूसुफ़ बिन माजिशून से ये हदीष लिखी, उन्होंने झालेह बिन इब्राहीम से बयान किया, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने झालेह के दादा (अबदुर्रहमान बिन औफ़ रजि) से, बद्र के बारे में इफ़रा के दोनों बेटों की हदीष मुराद लेते थे।

(राजेअ : 3141)

3965. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह रक्काशी ने बयान किया,

رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ أَوْ رَجُلٍ قَتَلَهُ قَوْمُهُ؟ قَالَ: أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ أَنْتَ أَبُو جَهْلٍ.
[طرفاء 3: 3963-4020.]

3963- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّمِيمِيِّ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ: ((مَنْ يَنْظُرُ مَا فَعَلَ أَبُو جَهْلٍ؟)) فَأَنْطَلَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَوَجَدَهُ قَدْ صَرَبَتْهُ أَبَا عَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ فَأَخَذَ بِلَحْيَتِهِ فَقَالَ: أَنْتَ أَبَا جَهْلٍ؟ قَالَ: وَهَلْ فَوْقَ رَجُلٍ قَتَلَهُ قَوْمُهُ أَوْ قَالَ قَتَلْتُمُوهُ.

[راجع: 3962]

حَدَّثَنِي ابْنُ الْمُثَنَّى أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ أَخْبَرَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ نَحْوَهُ.

3964- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كَتَبْتُ عَنْ يُونُسَ بْنِ الْمَاجِشُونِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ فِي بَدْرٍ يَفْنَى حَدِيثَ ابْنِي عَفْرَاءَ.

[راجع: 3141]

3965- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ

हमसे मुअतमिर ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबु मिजलज़ ने, उनसे कैस बिन अब्बाद ने और उनसे हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि क़यामत के दिन मैं सबसे पहला शख़्स होऊँगा जो अल्लाह के दरबार में झगड़ा चुकाने के लिये दो ज़ानू होकर बैठेगा। कैस बिन अब्बाद ने बयान किया कि उन्हीं हज़रात (हम्ज़ा, अली और उबैदह रज़ि.) के बारे में सूरह हज्ज की ये आयत नाज़िल हुई थी कि, ये दो फ़रीक़ हैं जिन्होंने अल्लाह के बारे में लड़ाई की, बयान किया कि ये वही हैं जो बद्र की लड़ाई में लड़ने के लिये (तंहा-तंहा) निकले थे, मुसलमानों की तरफ़ से हम्ज़ा, अली और उबैदा या अबू उबैदा बिन हारिष रिज़वानुल्लाह अलैहिम (और काफ़िरों की तरफ़ से) शैबा बिन रबीआ, इत्बा और वलीद बिन इत्बा थे। (दीगर मक़ाम: 3967, 4744)

الرّوآثي، حَدَّثَنَا مُعَوِّزٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَبُو مِجَلَزٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ عَنْ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: أَنَا أَوَّلُ مَنْ يَخْشَوْنَ يَدَيِ الرَّحْمَنِ لِلْخُصُومَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَئِنْ قَيْسُ بْنُ عُبَادٍ وَلِيَهُمْ أَنْزَلَتْ: ﴿هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا لِي رَبَّهُمْ﴾ قَالَ: هُمُ الْفَيْنِ تَبَارَزُوا يَوْمَ بَدْرٍ حَمْرَةٌ وَعَلِيٌّ وَعَبِيدَةُ أَوْ أَبُوْعَبِيدَةَ بْنُ الْحَارِثِ وَشَيْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَغُبَّةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدُ بْنُ عُثْبَةَ.

[طرازه في: 3967, 4744].

तर्ज़ुह:

हुआ ये कि बद्र के दिन काफ़िरों की तरफ़ से ये तीन शख़्स मैदान में निकले थे और कहने लगे ऐ मुहम्मद! हमसे लड़ने के लिये लोगों को भेजो। इधर से अंसार मुकाबला को गये तो कहने लगे कि हम तुम से लड़ना नहीं चाहते हम तो अपने बिरादरी वालों से या'नी कुरैश वालों से मुकाबला करना चाहते हैं। उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ हम्ज़ा! उठो! ऐ अली! उठो, ऐ उबैदा! उठो, हज़रत हम्ज़ा शैबा के मुकाबले पर और अली वलीद के मुकाबले पर खड़े हुए। हम्ज़ा ने शैबा को, अली ने वलीद को मार लिया और उबैदा और इत्बा दोनों एक दूसरे पर वार कर रहे थे कि हज़रत अली (रज़ि.) ने जाकर इत्बा को ख़त्म किया और उबैदा को उठा लाए।

3966. हमसे कुबैसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे अबू हाशिम ने, उनसे अबू मिजलज़ ने, उनसे कैस बिन अब्बाद ने और उनसे हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने बयान किया (सूरह हज्ज की) आयते करीमा हाज़ा ख़स्मानिख़ तसमू फ़ी रब्बिहिम (अल हज्ज: 19) (ये दो फ़रीक़ हैं जिन्होंने अल्लाह के बारे में मुकाबला किया) कुरैश के छः शख़्सों के बारे में नाज़िल हुई थी (तीन मुसलमानों की तरफ़ के या'नी) अली, हम्ज़ा और उबैदा बिन हारिष (रज़ि.) और (तीन कुफ़रार की तरफ़ के या'नी) शैबा बिन रबीआ, इत्बा बिन रबीआ, और वलीद बिन इत्बा। (दीगर मक़ाम: 3968, 3969, 4743)

3966- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ عَنْ أَبِي مِجَلَزٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَزَلَتْ ﴿هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا لِي رَبَّهُمْ﴾ فِي سَبْعٍ مِنْ قُرَيْشٍ: عَلِيٌّ وَحَمْرَةٌ وَغُبَّةُ بْنُ الْحَارِثِ وَشَيْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَغُبَّةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدُ بْنُ عُثْبَةَ.

[أطرازه في: 3968, 3969, 4743].

बद्र में कुफ़रार और मुसलमानों का ये मुकाबला हुआ था जिसमें मुसलमान कामयाब रहे, जैसा कि पहले गुज़र चुका है।

3967. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम सव्वाफ़ ने बयान किया, हमसे यूसुफ़ बिन यअकूब ने बयान किया, उनका बनी ज़ैयआ के

3967- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الصَّوْرَانِ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ يَعْقُوبَ كَانَ

यहाँ आना जाना था और वो बनी सदूश के गुलाम थे। कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उनसे अबू मिजलज़ ने और उनसे कैस बिन अब्बाद ने बयान किया कि हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा, ये आयत हमारे ही बारे में नाज़िल हुई थी हाज़ानि ख़म्मनि इख़तसमूफी रब्बिहिम (अल हज़्ज : 19)

(राजेअ : 3965)

يَنْزِلُ فِي نَبِيٍّ مُّسَيِّئَةٍ وَهُوَ مَوْتَى لَيْسَ
مَنْوُومٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّمِيمِيُّ عَنْ أَبِي
مِخْلَمٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ: إِنَّمَا نَزَلَتْ عَلَيْهِ
الْآيَةُ: ﴿هَٰؤُلَاءِ خَصْمَانِ أَخَصَمُوا فِي

رَبِّهِمْ﴾ [راجع: 3965]

तशरीह : क़तादा ने कहा कि इस आयत से अहले किताब और अहले इस्लाम मुराद हैं। जबकि वो दोनों अपने लिये अव्वलियत के मुद्दई हुए। मुजाहिद ने कहा कि मोमिन और काफ़िर मुराद हैं। बक़ौले अस्लामा इब्ने जरीर, आयत सबको शामिल है, जो भी कुफ़्र व इस्लाम का मुकाबले हो नतीजा यही है जो आगे आयत में मज़कूर है फ़ल्लज़ीन कफ़रू कुत्तिअत लहुम बियाबुम्पिन्नार (अल हज़्ज : 19)

3968. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, हमको वकीअ ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ने, उन्हें अबू हाशिम ने, उन्हें अबू मिजलज़ ने, उन्हें कैस बिन अब्बाद ने और उन्होंने हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से सुना, वो क़समिया बयान करते थे कि ये आयत (जो ऊपर गुज़री) उन्हीं छः आदमियों के बारे में, बद्र की लड़ाई के मौक़े पर नाज़िल हुई थी। पहली हदीस की तरह रावी ने उसे भी बयान किया। (राजेअ : 3966)

3968- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنَا
وَكَيْعٌ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ عَنْ أَبِي
مِخْلَمٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ سَمِعْتُ أَنَا ذَرَّ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقْسِمُ لَنَزَلَتْ هَٰؤُلَاءِ
الْآيَاتُ فِي هَٰؤُلَاءِ الرُّطَطِ السَّنَةِ يَوْمَ يَنْزِلُ

نُفُوفُ. [راجع: 3966]

तशरीह : इन रिवायत में हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) रावी का नाम बार बार आया है। ये मशहूर सहाबी हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) हैं जिनका नाम जुन्दब और लक़ब मसीहुल इस्लाम है। क़बीला ग़िफ़ार से हैं। ये अहदे जाहिलियत ही में मुवह्हिद थे। इस्लाम लाने वालों में उनका पाँचवाँ नम्बर है। आँहज़रत (ﷺ) की ख़बर लेने के लिये उन्होंने अपने भाई को भेजा था। बाद में खुद गये और बड़ी मुश्किलात के बाद दरबारे रिसालत में बारयाबी हुई। तफ़सील से उनके हालात पीछे बयान किये जा चुके हैं 31 हिजरी में बमुक़ामे रब्ज़ा उनका इतिक़ाल हुआ, जहाँ ये तंहा रहा करते थे। जब ये क़रीबुल मार्ग हुए तो उनकी ज़ोजा मुहतरमा रौने लगीं और कहने लगीं कि आप एक सेहरा में इस हालत में सफ़रे आख़िरत कर रहे हैं कि आपके कफ़न के लिये यहाँ कोई कपड़ा भी नहीं है। फ़र्माया, रोना मौक़ूफ़ करो और सुनो! रसूले करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया था कि मैं सेहरा में इतिक़ाल करूँगा। मेरी मौत के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअत सेहरा में मेरे पास पहुँच जाएगी। लिहाज़ा तुम रास्ते पर खड़ी होकर अब उस जमाअत का इतिज़ार करो। ये ग़ैबी इमदाद हस्बे इशदि नबवी (ﷺ) ज़रूर आ रही होगी। चुनाँचे उनकी अहलिया साहिबा (रज़ि.) गुज़रगाह पर खड़ी हो गई। थोड़े ही इतिज़ार के बाद दूर से कुछ सवार आते हुए उनको दिखाई दिये। उन्होंने इशारा किया वो उठर गये और मा'लूम होने पर ये सब हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) की इयादत को गये जिनको देखकर हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) को बहुत खुशी हुई और उन्होंने उनको हज़ूर (ﷺ) की मज़कूरा बाला पेशीनगोई सुनाई, फिर वसिय्यत की कि अगर मेरी बीबी के पास या मेरे पास कफ़न के लिये कपड़ा निकले तो उसी कपड़े में मुझको कफ़नाना और क़सम दिलाई की तुममे जो शख़्स हुकूमत का अदना ओहदेदार भी हो वो मुझको न कफ़नाए। चुनाँचे उस जमाअत में सिर्फ़ एक अंसारी नौजवान ऐसा ही निकला और वो बोला कि चचाजान! मेरे पास एक चादर है उसके अलावा दो कपड़े और हैं जो खास मेरी वालिदा के हाथ के कते हुए हैं। उन्हीं में मैं आपको कफ़नाऊँगा। हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने खुश होकर फ़र्माया कि हाँ तुम ही मुझको उन

ही कपड़ों में कफ़न पहनाना। इस वसियत के बाद उनकी रूढ़ पाक आलमे बाला को परवाज़ कर गई। उस जमाअते सहाबा (रज़ि.) ने उनको कफ़नाया दफ़नाया। कफ़न उस अंसारी नौजवान ने पहनाया और जनाज़ा की नमाज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने पढ़ाई। फिर सबने मिलकर उस सेहरा के एक गोशा में उनको सुपुर्दे खाक कर दिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम (मुस्तदरक ह़ाकिम जिल्द : 3 पेज नं. 346)

3969. हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, हमसे हुशैम ने बयान किया, हमको अबू हाशिम ने खबर दी, उन्हें मिजलज ने, उन्हें क्रैस ने, उन्होंने कहा कि मैंने हज्रत अबू जर (रजि.) से सुना, वो क्रसमिया कहते थे कि ये आयत, हाज़ानि खस्मानि ख तम्मू फी रब्बिहिम (अल हज्ज : 19) उनके बारे में उतरी जो बदर की लड़ाई में मुकाबले के लिये निकले थे या'नी हम्मा, अली और इबैदा बिन हारिष (रजि.) मुसलमानों की तरफ से और इत्बा, शैबा रबीआ के बेटे और वलीद बिन इत्बा काफ़िरो की तरफ से। (राजेअ : 3966)

3970. मुझसे अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन सईद ने बयान किया, हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर सलूली ने बयान किया, हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके बाप यूसुफ़ बिन इस्हाक़ ने और उनसे उनके दादा अबू इस्हाक़ सबीई ने कि एक शास्त्र ने हज़रत बरा (रज़ि.) से पूछा और मैं सुन रहा था कि क्या हज़रत अली (रज़ि.) बद्र की जंग में शरीक थे? उन्होंने कहा कि हाँ उन्होंने तो मुबारज़त की थी और ग़ालिब रहे थे। (ऊपर तले वो दो ज़िन्हें पहने हुए थे)

तथ्यः उस शख्स को हज़रत अली (रज़ि.) की कमसिनी की वजह से ये गुमान हुआ होगा कि शायद वो जंगे बद्र में न शरीक हुए हों। बराअ ने उनका ग़लत गुमान दूर कर दिया कि लड़ाई में निकलना क्या मुक़ातला के लिये मैदान में निकले और वलीद बिन इत्बा को क़त्ल किया। मुबारिज़त या 'नी' मैदाने जंग में निकलकर दुश्मनों को ललकारना। जिन लोगों ने हज़रत अली (रज़ि.) पर ख़ुरूज किया था वो उनके किस्म किस्म के ऐब तलाश करते रहते थे जिनकी कोई हक़ीक़त न थी। बराअ ने जो जवाब दिया है गोया मुख़ालिफीन के चेहरे पर तमाचा है।

3971. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि मुझसे यूसुफ़ बिन माज़िशून ने बयान किया, उनसे मालेह बिन इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उनसे उनके वालिद इब्राहीम ने उनके दादा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि उमय्या बिन ख़लफ़ से (हिज़रत के बाद) मेरा अहदनामा हो गया था। फिर बद्र की लड़ाई

٣٩٦٦ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِسْرَافِيلَ
 حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو هَاشِمٍ عَنْ أَبِي
 مِخْلَزٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ سَمِيعٍ أَنَّهُ قَالَ سَمِعْتُ
 قَسَمًا إِنَّ هَذِهِ الْآيَةَ: ﴿وَمَنْ خَصَّصَ
 اخْتَصَّصُوا فِي رَهْمٍ﴾ نَزَلَتْ فِي الَّذِينَ
 بَرَّزُوا يَوْمَ بَدْرٍ حَمْرَةً وَعَلَى وَهْبَةَ بْنِ
 الْحَارِثِ وَهْبَةَ وَهْبَةَ ابْنِ رَيْمَةَ وَالْوَلِيدِ
 بْنِ عُثْبَةَ. [راجع: ٣٩٦٦]

٣٩٧٠- حدثني أحمد بن محمد بن سعيد أبو عبد الله
الله حدثنا إسحاق بن منصور السلولي
حدثنا إبراهيم بن يوسف عن أبيه عن أبي
إسحاق قال: سألت رجلاً البراءة وأنا أسمع قال:
أشهد عليّ بذلك قال: تبارك وظاهر.

٣٩٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي يُونُسُ بْنُ الْمَاجِشُونِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ ابْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ كَانَتْ أُمِّيَّةُ بْنُ خَلْفُو لَمَّا كَانَ يَوْمَ

के मौके पर उन्होंने ने उसके और उसके बेटे (अली) के कत्ल का जिक्र किया, बिलाल ने (जब उसे देख लिया तो) कहा कि अगर आज उमय्या बच निकला तो मैं आखिरत में अज़ाब से बच नहीं सकूँगा। (राजेअ: 2301)

بَنَدْرُ لَدُنْكَ قَتْلُهُ وَقَتْلُ ابْنَيْ قَلَانٍ: بِلَالٌ: لَا نَجَوْتَ إِنْ نَجَا أُمَيَّةٌ.

[راجع: ٢٣٠١]

तशरीह: (अहदनामा ये था) कि उमय्या मक्का में अब्दुर्रहमान की जायदाद महफूज़ रखे। उसके बदले अब्दुर्रहमान उमय्या की जायदाद की मदीना में हिफाज़त करेंगे। जंगे बद्र में उमय्या को बचाने के लिये अब्दुर्रहमान उनके ऊपर गिर पड़े थे मगर मुसलमानों ने तलवारों से उसे छलनी बना दिया।

3972. हमसे अब्दान बिन उम्मान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने खबर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें अबु इस्हाक ने, उन्हें अस्वद ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक मर्तबा मक्का में) सूरह वन नज्म की तिलावत की और सज्दा तिलावत किया तो जितने लोग वहाँ मौजूद थे सब सज्दा में गिर गये। सिवा एक बूढ़े के कि उसने हथेली में मिट्टी लेकर अपनी पेशानी पर उसे लगा लिया और कहने लगा कि मेरे लिये बस इतना ही काफी है। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैंने उसे देखा कि कुफ़्र की हालत में वो कत्ल हुआ। (राजेअ: 1067)

٣٩٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَرَأَ ﴿وَالنَّجْمِ﴾ فَسَجَدَ بِهَا وَسَجَدَ مِنْ مَعَهُ غَيْرُ أَنْ شَيْخًا أَخَذَ كَفًّا مِنْ تَرَابٍ فَرَفَعَهُ إِلَى جَبْهَتِهِ فَقَالَ: يَكْفِيكَ هَذَا، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ بَعْدَ قِيلٍ كَافِرًا.

[راجع: ١٠٦٧]

या'नी उमय्या बिन खलफ़ जिसे जंगे बद्र में खुद हज़रत बिलाल (रज़ि.) ही ने अपने हाथों से कत्ल किया था।

3973. मुझे इब्राहीम बिन मूसा ने खबर दी, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हिशाम ने, उनसे इर्वा ने बयान किया कि जुबैर (रज़ि.) के जिस्म पर तलवार के तीन (गहरे) ज़ख्मों के निशानात थे, एक उनके चेहरे पर था (और इतना गहरा था कि) मैं बचपन में अपनी उँगलियों उनमें दाखिल कर दिया करता था। इर्वा ने बयाना किया कि उनमें से दो ज़ख्म उनको बद्र की लड़ाई में आए थे और एक जंगे यरमूक में। इर्वा ने बयान किया कि जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को (हजाज ज़ालिम के हाथों से) शहीद कर दिया गया तो मुझसे अब्दुल मलिक बिन मरवान ने कहा, ऐ इर्वा! क्या जुबैर (रज़ि.) की तलवार तुम पहचानते हो? मैंने कहा कि हाँ, पहचानता हूँ। उसने पूछा उसकी कोई निशानी बताओ? मैंने कहा कि बद्र की लड़ाई के मौके पर उसकी धार का एक हिस्सा टूट गया था, जो अभी तक उसमें बाक़ी है। अब्दुल मलिक ने कहा कि तुमने सच कहा (फिर उसने नाबिशा शायर का ये मिस्रा पढ़ा) फ़ौजों के साथ लड़ते लड़ते उनकी

٣٩٧٣- أَخْبَرَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُسُفَ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: كَانَ لِي الزُّبَيْرُ ثَلَاثَ صَرَاتٍ بِالسِّيفِ، إِحْدَاهُنَّ فِي عَاقِبَتِهِ، قَالَ: إِنْ كُنْتُ لِأَذْغِلُ أَصَابِي فِيهَا، قَالَ: شَرِبْتُ ثَنَيْنِ يَوْمَ بَدْرٍ وَوَاحِدَةً يَوْمَ الْأُرْمُوكِ، قَالَ عُرْوَةُ وَقَالَ لِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَرْوَانَ حِينَ قِيلَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ: يَا عُرْوَةُ هَلْ تَعْرِفُ سَيْفَ الزُّبَيْرِ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: لِمَا لِي بِهِ؟ قُلْتُ: لِيهِ قَلْدَةٌ فَلَهَا يَوْمَ بَدْرٍ قَالَ: صَدَقْتَ (بِهِنَّ قُلُوبٌ مِنْ قِرَاعِ الْكُتَاتِبِ)، ثُمَّ رَذَتْ عَلَى عُرْوَةَ.

तलवारों की धारें कई जगह से टूट गई हैं। फिर अब्दुल मलिक ने वो तलवार इर्वा को वापस कर दी, हिशाम ने बयान किया कि हमारा अंदाज़ा था कि उस तलवार की कीमत तीन हजार दिरहम थी। वो तलवार हमारे एक अज़ीज़ (इब्मान बिन इर्वा) ने कीमत देकर ले ली थी। मेरी बड़ी आरजू थी कि काश! वो तलवार मेरे हिस्से में आती। (राजेज़: 3721)

तशरीह:

यरमूक मुलके शाम में एक गाँव का नाम था। वहाँ हज़रत उमर (रज़ि.) की खिलाफत में 15 हिजरी में मुसलमानों और ईसाइयों में जंग हुई थी। मुसलमानों के सरदार अबू उबैदा बिन जराह (रज़ि.) थे और ईसाइयों का सरदार बाहान था। उस जंग में ईसाई सत्तर हजार मारे गये। चालीस हजार कैद हुए। मुसलमान भी चार हजार शहीद हुए। उस जंग में एक सौ बंदी सहाबी शरीक थे। (फ़तहूल बारी)

3974. हमसे फ़र्वा बिन अबी अल्मगराअने बयान किया, उनसे अली बिन मिस्र ने, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके वालिद इर्वा ने बयान किया कि हज़रत जुबैर (रज़ि.) की तलवार पर चाँदी का काम था। हिशाम ने कहा कि (मेरे वालिद) इर्वा की तलवार पर चाँदी का काम था।

शायद वही तलवार जुबैर (रज़ि.) की हो।

3975. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने कि रसूले करीम (ﷺ) के सहाबा ने जुबैर (रज़ि.) से यरमूक की जंग में कहा, आप हमला करते तो हम भी आपके साथ हमला करते। उन्होंने कहा कि अगर मैंने उन पर ज़ोर का हमला कर दिया तो फिर तुम लोग पीछे रह जाओगे। सब बोले कि हम ऐसा नहीं करेंगे। चुनाँचे जुबैर (रज़ि.) ने दुश्मन (रुमी फ़ौज) पर हमला किया और उनकी सफ़ों को चीरते हुए आगे निकल गये। उस वक़्त उनके साथ कोई एक भी (मुसलमान) नहीं रहा। फिर (मुसलमान फ़ौज की तरफ़) आने लगे तो रोमियों ने उनके घोड़े की लगाम पकड़ ली और चेहरे पर दो कारी ज़ख़म लगाए, जो ज़ख़म बद्र की लड़ाई के मौक़े पर उनको लगा था वो उन दोनों ज़ख़मों के दरम्यान में पड़ गया था। इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया कि जब मैं छोटा था तो उन ज़ख़मों में अपनी उँगलियाँ डालकर खेला करता था। इर्वा ने बयान किया कि यरमूक की लड़ाई के मौक़े पर अब्दुल्लाह बिन जुबैर भी उनके साथ

قَالَ هِشَامُ: فَالْمَنَاءُ بَيْنَنَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ،
وَأَخَذَهُ بَقَضْنَا وَلَوْدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ أَخَذْتُهُ.

[راجع: 3721]

٣٩٧٤- حَدَّثَنَا قُرُوءَةُ عَنْ عَلِيٍّ عَنْ
هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ سَيْفُ الزُّبَيْرِ
مُحْلَى بِفِضَّةٍ. قَالَ هِشَامُ: وَكَانَ سَيْفُ
عُرْوَةَ مُحْلَى بِفِضَّةٍ.

٣٩٧٥- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا
عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ
عَنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالُوا لِلزُّبَيْرِ
يَوْمَ الْيَوْمِ: أَلَا تَشُدُّ قَسْدُ مَعَكَ؟
فَقَالَ: إِنِّي إِن شَدَدْتُ كَذَبْتُمْ. فَقَالُوا: لَا
تَفْعَلْ فَحَمَلْ عَلَيْهِمْ حَتَّى شَوْ صُفُوفَهُمْ
فَجَاوَزَهُمْ وَمَا مَعَهُ أَحَدٌ ثُمَّ رَجَعَ مُقْبِلًا
فَأَخَذُوا بِلِجَامِهِ فَعَضُّوهُ ضَرْبَتَيْنِ عَلَى
غَائِقِهِ بَيْنَهُمَا ضَرْبَةٌ ضَرْبُهَا يَوْمَ بَدْرٍ. قَالَ
عُرْوَةُ: كُنْتُ أَذْخُلُ أَصَابِي فِي تِلْكَ
الضَّرَبَاتِ الْعَبِّ وَأَنَا صَبِيءٌ، قَالَ عُرْوَةُ:
وَكَانَ مَعَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ يَوْمَئِذٍ وَهُوَ
ابْنُ عَشْرٍ مَبِينٌ فَحَمَلَهُ عَلَى قَوْسٍ وَكَلَّ

गये थे, उस वक़्त उनकी उम्र कुल दस साल की थी। इसलिये उनको एक घोड़े पर सवार करके एक साहब की हिराजत में दे दिया था।

بِهِ رَجُلَانِ.

[راجع: ۳۷۲۱]

3976. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा उन्होंने रौह बिन इब्बादा से सुना, कहा हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा हमसे अबू तलहा (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से कुरैश वे चौबीस मक्कतूल सरदार बद्र के एक बहुत ही अंधेरे और गन्दे कुँए में फेंक दिये गये। आदते मुखारका थी कि जब दुश्मन पर ग़ालिब होते तो मैदाने जंग में तीन दिन तक क्रयाम फ़र्माते। जंगे बद्र के ख़ात्मे के तीसरे दिन आपके हुक्म से आपकी सवारी पर कज़ावा बाँधा गया और आप ख़ाना हुए। आप (ﷺ) के अम्हाब भी आपके साथ थे। सहाबा ने कहा, ग़ालिबन आप किसी ज़रूरत के लिये तशरीफ़ ले जा रहे हैं। आख़िर आप उस कुँए के किनारे आकर खड़े हो गये और कुम्फ़ार कुरैश के मक्कतूलीन सरदारों के नाम उनके बाप के नाम के साथ लेकर आप उन्हें आवाज़ देने लगे कि ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ! ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ! क्या आज तुम्हारे लिये ये बात बेहतर नहीं थी कि तुमने दुनिया में अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की होती? बेशक हमसे हमारे रब ने जो वा'दा किया था वो हमें पूरी तरह हासिल हो गया। तो क्या तुम्हारे रब का तुम्हारे बारे में जो वा'दा (अज़ाब का) था वो भी तुम्हें पूरी तरह मिल गया? अबू तलहा (रज़ि.) ने बयान किया कि इस पर इमर (रज़ि.) बोल पड़े। या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप उन लाशों से क्या ख़िताब फ़र्मा रहे हैं? जिनमें कोई जान नहीं है। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, जो कुछ मैं कह रहा हूँ तुम लोग उनसे ज़्यादा उसे नहीं सुन रहे हो। क़तादा ने बयान किया कि अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया था (उस वक़्त) ताकि हज़ूर (ﷺ) उन्हें अपनी बात सुना दें। उनकी तौबीख़, ज़िल्लत, नामुरादी और हसरत व नदामत के लिये। (राजेअ : 3065)

तशरीह:

जो लोग इस वाकिया से सिमाअे मौता षाबित करते हैं वो सरासर ग़लती पर हैं क्योंकि ये सुनाना रसूले करीम (ﷺ) का एक मुअजिज़ा था।

दूसरी आयत में साफ़ मौजूद है वमा अन्त बिमुस्मिइन मन फिल्कुबूर या'नी तुम क़ब्रवालों को सुनाने से कासिर (असमर्थ) हो, मरने के बाद जुम्ला ता'ल्लुकाते दुनियावी टूटने के साथ दुनियावी ज़िन्दगी के लवाज़मात भी ख़त्म हो जाते हैं। सुनना भी उसी में शामिल है। अगर मुद्दे सुनते हों तो उन पर मुर्दगी का हुक्म लगाना ही ग़लत उहरता है। बहरहाल अक़ल व नक़ल से वही सहीह और हक़ है कि मरने के बाद इंसान के जुम्ला हवासे दुनियावी ख़त्म हो जाते हैं। नेक मुद्दों को अल्लाह तआला आलमे बरज़ख़ में कुछ सुना दे ये बिलकुल अलग चीज़ है। इससे सिमाअे मौता का कोई ता'ल्लुक नहीं है।

3977. हमसे हुमैदी ने बयान किया, हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, उनसे अता ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने, कुआन मजीद की आयत अल्लज़ीना बद्दलू निअमतल्लाहि कुफ़्रा (इब्राहीम: 28) के बारे में आपने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! ये कुफ़्फ़ार कु़रैश थे। अमर ने कहा कि इससे मुराद कु़रैश थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) अल्लाह की नेअमत थे। कुफ़्फ़ारे कु़रैश ने अपनी क़ौम को जंगे बद्र के दिन दारुल बवार या'नी दोज़ख़ में झोंक दिया। (दीगर मक़ाम: 4800)

۳۹۷۷- حَدَّثَنَا الْحَمْدِيُّ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرُو عَنْ غَطَاءٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا هُوَ الَّذِي بَدَّلُوا نِعْمَةَ اللَّهِ كُفْرًا قَالَ: هُمْ وَاللَّهُ كَفَّارٌ قَرِيش. قَالَ عَمْرُو: هُمْ قُرَيْشٌ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ نِعْمَةُ اللَّهِ هُوَ أَخْلَا قَوْمَهُمْ ذَاكَ الْيَوْمَ قَالَ: النَّارَ يَوْمَ بَنِي. [طرفه في: ۴۷۰۰].

नेअमत से मुराद इस्लाम और रसूले करीम (ﷺ) की ज़ाते गिरामी अक्दस है। कु़रैश ने उस नेअमत की क़द्र न की जिसका नतीजा तबाही और हलाकत की शक़ल में हुआ। मदीना वालों ने अल्लाह की इस नेअमत की क़द्र की। दोनों ज़हान की इज़्जत व आबरू से सरफ़राज़ हुए। रज़ियल्लाहु अन्हुम वरजू अन्हु।

3978. मुझसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) के सामने किसी ने उसका ज़िक्र किया कि हज़रत इब्ने इमर (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के हवाले से बयान करते हैं कि मय्यत को क़ब्र में उसके घर वालों के उस पर रोने से भी अज़ाब होता है। इस पर आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) ने तो ये फ़र्माया था कि अज़ाब मय्यत पर उसकी बद अमलियों और गुनाहों की वज़ह से होता है और उसके घर वाले हैं कि अब भी उसकी जुदाई में रोते रहते हैं। (राजेअ: 1288)

۳۹۷۸- حَدَّثَنَا عُثَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ذَكَرَ عِنْدَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ ابْنَ عَمَرَ رَفَعَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ ((إِنَّ الْمَيِّتَ يُعَذَّبُ فِي قَبْرِهِ بِكَاءِ أَهْلِهِ)) فَقَالَتْ: إِنَّمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّهُ لَيُعَذَّبُ بِحَطِيئَتِهِ وَذَنْبِهِ، وَإِنْ أَهْلُهُ لَيَكُونُ عَلَيْهِ الْآلَانُ)). [راجع: ۱۲۸۸]

3979. वज़ाक ने कहा कि उसकी मिषाल बिलकुल ऐसी ही है जैसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र के उस कुँए पर खड़े होकर जिसमें मुश्रीकीन की लाशें डाल दी गई थीं, उनके बारे में फ़र्माया था कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ, ये उसे सुन रहे हैं। तो आपके फ़र्माने का मक़सद ये था कि अब उन्हें मा'लूम हो गया होगा कि उनसे मैं जो कुछ कह रहा था वो हक़ था। फिर उन्होंने उस आयत की तिलावत

۳۹۷۹- قَالَتْ: وَذَلِكَ مِثْلَ قَوْلِهِ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْقَلْبِ وَفِيهِ قَتْلَى بَنِي مِنَ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ لَهُمْ مَا قَالَ: ((إِنَّهُمْ لَيَسْمَعُونَ مَا أَقُولُ إِنَّمَا قَالَ: إِنَّهُمْ الْآنَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّ مَا كُنْتُ أَقُولُ لَهُمْ

की कि, आप मुद्दों को नहीं सुना सकते और जो क़ब्रों में दफन हो चुके हैं उन्हें आप अपनी बात नहीं सुना सकते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि (आप उन मुद्दों को नहीं सुना सकते) जो अपना ठिकाना जहन्नम में बना चुके हैं। (राजेअ: 1381)

3980, 81. मुझसे उम्मान ने बयान किया, हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र के कुँए पर खड़े होकर फ़र्माया, क्या जो कुछ तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिये वा'दा कर रखा था, उसे तुमने सच्चा पा लिया? फिर आपने फ़र्माया, जो कुछ मैं कह रहा हूँ ये अब भी उसे सुन रहे हैं। इस हदीस का ज़िक्र जब हज़रत आइशा (रज़ि.) से किया गया तो उन्होंने कहा कि हज़ूर (ﷺ) ने ये फ़र्माया था कि उन्होंने अब जान लिया होगा कि जो कुछ मैंने उनसे कहा था वो सच था। उसके बाद उन्होंने आयत, बेशक आप उन मुद्दों को नहीं सुना सकते, पूरी पढ़ी।

(राजेअ: 1370, 1371)

तशरीह: कुआनी आयत सरीह दलील है कि आप मुद्दों को नहीं सुना सकते। यही हक़ है। मक़तूलिने बद्र को सुनाना वक़ती तौर पर ख़ुसूसियाते रिसालत में से था। इस पर दूसरे मुद्दों को क़यास नहीं किया जा सकता। हाँ, अल्लाह तआला जब चाहे और जिस क़दर चाहे मुद्दों को सुना सकता है। जैसा कि क़ब्रिस्तान में अस्सलामु अलैयकुम अहलदियार हदीस की मसनून दुआ से ज़ाहिर है। बाक़ी अहले बिदअत का ये ख़याल कि वो जब भी मदफ़ून बाबाओं की क़ब्रें पूजने जाएँ वो बाबा उनकी फ़रियाद सुनते और हाज़ते पूरी करते हैं, सरासर बातिल और काफ़िराना व मुश्रिकाना ख़याल है जिसकी शरअन कोई अज़ल नहीं है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत आइशा (रज़ि.) दोनों के ख़यालात पर मज़ीद तफ़सील के लिये फ़तहूल बारी का मुतालआ किया जाए।

बाब 9: बद्र की लड़ाई में हाज़िर होने वालों की फ़ज़ीलत का बयान

3982. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हारिषा बिन सराका अंसारी (रज़ि.) जो अभी नौ इम्र लड़के थे, बद्र के दिन शहीद हो गये थे (पानी पीने के लिये हौज़ पर आए थे कि एक तीर ने शहीद कर दिया) फिर उनकी वालिदा (रबीअ बिनतुन्नसर, अनस रज़ि.) की फूफी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपको मा'लूम है कि मुझे हारिषा

حَقٌّ) ثُمَّ قُرَأَتْ ﴿إِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْمَوْتَى وَمَا أَنْتَ بِمَسْمُوعٍ مِنْ لِي الْقُبُورِ﴾. تَقُولُ حِينَ تَبْرَأُ مَقَاعِدَهُمْ مِنَ النَّارِ.

[راجع: 1371]

۳۹۸۱، ۳۹۸۰ - حَدَّثَنِي عُثْمَانُ حَدَّثَنَا عُبَيْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: وَقَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى قَلْبِيبٍ يَذَرُ فَقَالَ: «هَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا؟» ثُمَّ قَالَ: «إِنَّهُمْ الْآنَ يَسْمَعُونَ مَا أَقُولُ»، فَذَكَرَ لَعْنَتَهُ فَقَالَتْ: إِنَّمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «إِنَّهُمْ الْآنَ لَيَسْمَعُونَ» إِنْ الَّذِي كُنْتُ أَقُولُ لَهُمْ هُوَ الْحَقُّ، ثُمَّ قُرَأَتْ ﴿إِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْمَوْتَى حَتَّى قُرَأَتْ الْآيَةُ. [راجع: 1370, 1371]

۹- باب فَضْلِ مَنْ شَهِدَ بَدْرًا

۳۹۸۲ - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَصِيبَ حَارِثَةُ يَوْمَ بَدْرٍ وَهُوَ عَلَامٌ فَجَاءَتْ أُمُّهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ عَرَفْتُ مَنَزِلَةَ حَارِثَةَ مِنِّي فَإِنْ يَكُنْ فِي

से कितना प्यार था, अगर वो अब जन्नत में है तो मैं इस पर सब्र करूँगी और अल्लाह तआला से प्रवाब की उम्मीद रखूँगी और अगर कहीं दूसरी जगह है तो आप देख रहे हैं कि मैं किस हाल में हूँ। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तुम पर रहम करे, क्या दीवानी हो रही हो, क्या वहाँ कोई एक जन्नत है? बहुत सी जन्नतें हैं और तुम्हारा बेटा जन्नतुल फ़िरदौस में है। (राजेअ: 2808)

الْجَنَّةِ اصْبِرْ وَاحْصِبْ وَإِنْ تَكَ الْآخَرَى
تَرَى مَا اصْنَعُ فَقَالَ: ((وَتَحْكُ أَوْ
هَبْلَتْ أَوْ جَنَّةً وَاحِدَةً هِيَ؟ إِنَّهَا جَنَّت
كَثِيرَةٌ وَإِنَّهُ لِي جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ)).

[راجع: ٢٨٠٨]

हदीस से बद्र में शरीक होने वालों की फ़ज़ीलत प्राबित हुई कि वो सब जन्नती हैं। ये अल्लाह का कतई फ़ैसला है। ये हारिषा बिन सुराक्का बिन हारिष बिन अदी अंसारी बिन अदी बिन नज्जार हैं। हारिषा के बाप सुराक्का सहाबी (रज़ि.) जंगे हुनैन में शहीद हुए थे। (रज़ियल्लाहु अन्हु)

3983. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, हमको अब्दुल्लाह बिन इदरीस ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हुसैन बिन अब्दुर्रहमान से सुना, उन्होंने सअद बिन अब्बैदा से, उन्होंने अबू अब्दुर्रहमान सुलमी से कि हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा, मुझे, अबू मरूफ़द (रज़ि.) और जुबैर (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मुहिम पर भेजा। हम सब शहसवार थे। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग सीधे चले जाओ। जब रौज़-ए-खाख़ पर पहुँचो तो वहाँ तुम्हें मुशिकीन की एक औरत मिलेगी, वे एक ख़त लिये हुए है जिसे हज़रत हातिब बिन अबी बल्लत्आ (रज़ि.) ने मुशिकीन के नाम भेजा है। चुनाँचे हुजूर (ﷺ) ने जिस जगह का पता दिया था हमने वहीं उस औरत को एक ऊँट पर जाते हुए पा लिया। हमने उससे कहा कि ख़त ला। वो कहने लगी कि मेरे पास तो कोई ख़त नहीं है। हमने उसके ऊँट को बिठाकर उसकी तलाशी ली तो वाकई हमें भी कोई ख़त नहीं मिला। लेकिन हमने कहा कि हुजूर (ﷺ) की बात कभी ग़लत नहीं हो सकती। ख़त निकाल वरना हम तुझे नंगा कर देंगे। जब उसने हमारा ये सख़्त ख़य्या देखा तो इज़ार बाँधने की जगह की तरफ़ अपना हाथ ले गई। वो एक चादर में लिपटी हुई थी और उसने ख़त निकालकर हमको दे दिया। हम उसे लेकर हुजूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि उसने (या'नी हातिब बिन अबी बल्लत्आ ने) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और मुसलमानों से दगा की है। हुजूर (ﷺ) मुझे इजाज़त दें ताकि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। लेकिन हुजूर (ﷺ) ने उनसे पूछा कि तुमने ये काम क्यों किया? हातिब (रज़ि.) बोले अल्लाह

٣٩٨٣- حدثني إسحاق بن إبراهيم
أخبرنا عبد الله بن إدريس قال: سمعت
خصم ابن عبد الرحمن عن سعد بن
عبيدة عن أبي عبد الرحمن السلمي عن
علي رضي الله عنه قال: بعثني رسول
الله صلى الله عليه وسلم وأبا مرثد
والزبير وكلنا فارس قال: انطلقوا حتى
تأتوا روضة خاخ فإن بها امرأة من
المشركين معها كتاب من حاطب بن
أبي بلتعنة إلى المشركين فاذر كتابها تسير
على بعير لها حيث قال رسول الله صلى
الله عليه وسلم، فقلنا الكتاب فقالت: ما
معنا كتاب فانتحناها فالتمسنا فلم نر
كتاباً فقلنا ما كذب رسول الله صلى
الله عليه وسلم، لتخرجن الكتاب أو
لتجردنك فلما رأت الجذأ هوت إلى
حجزتها وهي محتجزة بكساء فأخرجته
فانطلقنا بها إلى رسول الله صلى الله
عليه وسلم فقال غمز: يا رسول

की कसम! ये वजह हर्गिज़ नहीं थी कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर मेरा ईमान बाक़ी नहीं रहा था। मेरा मक़सद तो सिर्फ़ इतना था कि कुरैश पर इस तरह मेरा एक एहसान हो जाए और उसकी वजह से वो (मक्का में बाक़ी रह जाने वाले) मेरे अहल-अयाल की हिफ़ाज़त करें। आपके अस्थाब में जितने भी हज़रात (मुहाजिरीन) हैं, उन सबका क़बीला वहाँ मौजूद है और अल्लाह उनके ज़रिये उनके अहल व माल की हिफ़ाज़त करता है। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्होंने सच्ची बात बता दी है और तुम लोगों को चाहिये कि उनके बारे में अच्छी बात ही कहो। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फिर अज़ किया कि इस शख्स ने अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों से दगा की है। आप मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। हज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि क्या ये बद्र वालों में से नहीं है? आपने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने अहले बद्र के हालात को पहले ही से जानता था और वो खुद फ़र्मा चुका है कि, तुम जो चाहो करो, तुम्हें ज़न्नत ज़रूर मिलेगी। (या आपने ये फ़र्माया कि) मैंने तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दी है। ये सुनकर हज़रत उमर (रज़ि.) की आँखों में आंसू आ गये और अज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है।

(राजेज़: 3007)

اللَّهُ لَقَدْ خَانَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ لَدَغْنِي فَلَا تُحِبُّ غُفَّةً فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا خَمَلْتُكَ عَلَى مَا صَنَعْتُ؟)) قَالَ خَاطِبٌ: وَاللَّهِ مَا بِي إِنْ لَا أَكُونُ مُؤْمِنًا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ﷺ أَوْذْتُ أَنْ يَكُونَ لِي عِنْدَ الْقَوْمِ يَدٌ يَذْفَعُ اللَّهُ بِهَا عَنْ أَهْلِي وَمَالِي وَلَيْسَ أَحَدٌ مِنْ أَسْحَابِكَ إِلَّا لَهُ هَذَا مِنْ غَشِيرَةٍ مَنْ يَذْفَعُ اللَّهُ بِهِ عَنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ وَلَا تَقُولُوا لَهُ إِلَّا غَيْرًا)) فَقَالَ غُمَرٌ: إِنَّهُ لَقَدْ خَانَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ لَدَغْنِي فَلَا تُحِبُّ غُفَّةً فَقَالَ: ((الَّذِينَ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ؟)) فَقَالَ: لَعَلَّ اللَّهَ أَطْلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: ((اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ لَقَدْ وَجَّهْتُ لَكُمْ الْجَنَّةَ أَوْ لَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ)) لَدَغْنَتْ عَيْنَا غُمَرَ وَقَالَ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ.

[راجع: 3007]

तशीह: हज़रत उमर (रज़ि.) की राय मुल्की क़ानून और सियासत पर मब्नी थी कि जो शख्स मुल्क व मिल्लत के साथ बेवफ़ाई करके जंगी राज़ दुश्मन को पहुँचाए वो क़ाबिले मौत मुजरिम है मगर हज़रत हातिब (रज़ि.) के बारे में आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी सहीह निय्यत जानकर और उनके बद्री होने की बिना पर हज़रत उमर (रज़ि.) की उनके बारे में राय से इतिफ़ाक़ नही फ़र्माया बल्कि उनकी उस लज़्जिश को मुआफ़ कर दिया।

3984. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जुअफ़ी ने बयान किया, हमसे अबू अहमद जुबैरी ने बयान किया, हमसे अब्दुर्रहमान बिन ग़सील ने बयान किया, उनसे हमज़ा बिन अब्बी उसैद और जुबैर बिन अब्बी उसैद ने और उनसे हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जंगे बद्र के मौक़े पर हमें हिदायत की थी कि जब कुफ़्रार तुम्हारे क़रीब आ जाएँ तो उन पर तीर चलाना और (जब तक वो दूर रहें) अपने तीरों को बचाए रखना।

3984 - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْقَسِيبِ عَنْ غُمَرَةَ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ وَالزُّبَيْرِ بْنِ الْمُنْبِيرِ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ وَحَنِيَّ اللَّهِ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ: ((إِذَا اسْتَبْرَأْتُمْ فَارْمُوهُمْ وَاسْتَبَقُوا نَبْلَكُمْ)).

(राजेअ: 2900)

[راجع: 2900]

तशरीह: या'नी जल्दी जल्दी सब तीर न चला दो कि लगे या न लगे ये तीरों का ज़ाये (बर्बाद) करना होगा। लायक जनरल ऐसे ही होते हैं जो अपनी फौज का सामाने जंग बहुत मुहतात तरीके पर खर्च करते हैं। आँहज़रत (ﷺ) इस बारे में भी बहुत बड़े फौजी कमाण्डर और माहिर फुनूने हरबिया (युद्ध विशेषज्ञ) थे (ﷺ)। अक्खबूहुम का मा'नी इस हदीष में रावी ने ये कहा है कि बहुत से आ जाँएँ और हुजूम की शक्ल में आँएँ। कुछ ने कहा कि कषब के मा'नी लुगत में नज़दीक होने के आँएँ हैं या'नी जब तक वो हमारे नज़दीक न हों अपने तीरों को महफूज़ रखना ताकि वो वक़्त पर काम आँएँ, उनको बेकार ज़ाये न करना। आज भी जंगी उसूल यही है जो सारी दुनिया में मुसल्लम (सर्वमान्य) है।

3985. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, हमसे अबू अहमद जुबैरी और मुंज़िर बिन अबी उसैद ने और उनसे हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे बद्र में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हिदायत की थी कि जब तुम्हारे क़रीब कुफ़्फ़ार आ जाँएँ या'नी हमला व हुजूम करें (इतने कि तुम्हारे निशाने की ज़द में आ जाँएँ) तो फिर उन पर तीर बरसाने शुरू करना और (जब तक वो तुमसे क़रीब न हों) अपने तीर को महफूज़ रखना।

(राजेअ: 2900)

٣٩٨٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْفَيْسَلِ عَنْ خَمْرَةَ بْنِ أَبِي اسْتَبْرِ وَالْمُنْذِرِ بْنِ أَبِي اسْتَبْرِ عَنْ أَبِي اسْتَبْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ (إِذَا اسْتَبْرَأْتُمْ) يَقْنِي كَلَرُكُمْ لَأَرْمُوهُمْ وَاسْتَبْرَأُوا نَبْلَكُمْ).

[راجع: 2900]

3986. मुझसे अमर बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे जुहैर ने बयान किया, हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने बरा बिन अज़िब (रज़ि.) से सुना, वो बयान कर रहे थे कि नबी करीम (ﷺ) ने उहुद की लड़ाई में तीरंदाज़ों पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को सरदार मुक़र्र किया था। इस लड़ाई में हमारे सत्तर आदमी शहीद हुए थे। नबी करीम (ﷺ) और आपके सहाबियों से बद्र की लड़ाई में एक सौ चालीस मुश्रिकीन को नुक़सान पहुँचा था। सत्तर उनमें से क़त्ल कर दिये गये और सत्तर कैदी बनाकर लाये गये। इस पर अबू सुफ़यान ने कहा कि आज का दिन बद्र के दिन का बदला है और लड़ाई की मिशाल डोल की सी है।

(राजेअ: 3039)

٣٩٨٦- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الرَّمَاةِ يَوْمَ أُحُدٍ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جُبَيْرٍ فَأَصَابُوا مِنَّا سِتِينَ وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ أَصَابُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ بَدْرٍ أَرْبَعِينَ وَبَانَةً وَسِتِينَ أَسِيرًا وَسِتِينَ قَبِيلًا. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: يَوْمَ يَوْمٍ بَدْرٍ وَالْخَرْبُ مِجَالٌ. [راجع: 3039]

तशरीह: जंगे उहुद में आँहज़रत (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को पचास तीरंदाज़ों के साथ उहुद पहाड़ के एक नाके पर इस शर्त के साथ मुक़र्र किया कि हम हारे या जीते हमारे हुक्म बग़ैर ये नाका हर्गिज़ न छोड़ना। शुरू में जब मुसलमानों की फ़तह होने लगी तो अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों ने वो नाका छोड़ दिया जिसका नतीजा जंगे उहुद की शिकस्त की सूरत में सामने आया।

3987. मुझसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे उनके दादाने, उनसे अबू

٣٩٨٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي

बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रजि.) ने, मैं गुमान करता हूँ कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि आपने फर्माया, खैर व भलाई वो है जो अल्लाह तआला ने हमें उहुद की लड़ाई के बाद अता फर्माई और खुलूस अमल का प्रवाब वो है जो अल्लाह तआला ने हमें बद्र की लड़ाई के बाद अता फर्माया। (राजेअ: 3622)

بُرْدَةُ عَنْ أَبِي مُوسَى أَرَاهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((وَأَيُّ الْخَيْرِ مَا جَاءَ اللَّهَ بِهِ مِنَ الْخَيْرِ بَعْدَ وَتَوَابِ الصَّدَقِ الَّذِي آتَانَا بَعْدَ يَوْمِ بَدْرٍ)). [راجع: 3622]

ह्रादष-ए-उहुद के बाद भी मुसलमानों के हौसलों में फर्क नहीं आया और वो दोबारा खैर व भलाई के मालिक बन गये। अल्लाह ने बाद में उनको फतुहात से नवाजा और बद्र में अल्लाह ने जो फतह इनायत की वो उनके खुलूस अमल का धमरा था। मुसलमान बहरहाल खैरो बरकत का मालिक होता है और गाजी और शहीद दोनों खिताब उसके लिये सद इस्बतों का मकाम रखते हैं।

3988. मुझसे यअकूब ने बयान किया, हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनके दादा से कि अब्दुरहमान बिन औफ (रजि.) ने कहा, बद्र की लड़ाई के मौके पर मैं सफ में खड़ा हुआ था। मैंने मुड़कर देखा तो मेरी दाहिनी और बाई तरफ दो नौजवान खड़े थे। अभी मैं उनके बारे में कोई फ़ैसला भी न कर पाया था कि एक ने मुझसे चुपके से पूछा ताकि उसका साथी सुनने न पाए, चचा! मुझे अबू जहल को दिखा दो। मैंने कहा भतीजे! तुम उसे देखकर क्या करोगे? उसने कहा, मैंने अल्लाह तआला के सामने ये अहद किया है कि अगर मैंने उसे देख लिया तो या उसे क़त्ल करके रहूँगा या फिर खुद अपनी जान दे दूँगा। दूसरे नौजवान ने भी अपने साथी से छुपाते हुए मुझसे यही बात पूछी। उन्होंने कहा कि उस वक़्त उन दोनों नौजवानों के बीच मे खड़े होकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने इशारे से उन्हें अबू जहल को दिख दिया। जिसे देखते ही वो दोनों बाज़ की तरह उस पर झपटे और फौरन ही उसे मार गिराया। ये दोनों इफ़रा के बेटे थे।

(राजेअ: 3141)

3988 - حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ إِنِّي لَهِيَ الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ إِذْ تَلَفْتُ قَدْأَ عَنْ يَمِينِي وَعَنْ يَسَارِي قَتَانِ حَدِيثًا سَنًّا فَيَكُنِّي لَمْ آمَنْ بِمَكَانِهِمَا إِذْ قَالَ لِي أَحَدُهُمَا سِرًّا مِنْ صَاحِبِهِ يَا عَمَّ ارْنِي أَنَا جَهْلٌ فَقُلْتُ: يَا ابْنَ أَخِي وَمَا تَصْنَعُ بِهِ؟ قَالَ: غَامَدْتُ اللَّهَ إِنْ رَأَيْتُهُ أَنْ أَقْتُلَهُ أَوْ أَمُوتَ ذُوْنَهُ، فَقَالَ لِي الْآخَرُ سِرًّا مِنْ صَاحِبِهِ مِثْلَهُ، قَالَ: لَمَّا سُرْنِي أَنِّي بَيْنَ رَجُلَيْنِ مَكَانَهُمَا فَأَشْرَفْتُ لَهُمَا إِلَيْهِ فَسَدْنَا عَلَيْهِ مِثْلَ الصَّفْرَيْنِ حَتَّى ضَرَبَاهُ وَهَمَّا إِنَّا غَفَرَاءُ.

[راجع: 3141]

तशरीह: कुछ रिवायतों में है कि ये दोनों मुआज़ इब्ने इफ़रा और मुअव्वज इब्ने इफ़रा बिन जमूह थे। मुआज़ और मुअव्वज की वालिदा का नाम इफ़रा था। उनके बाप का नाम हारिष बिन रफाआ था। उन लड़कों ने पहले ही ये अहद किया था कि अबू जहल हमारे रसूले करीम (ﷺ) को गालियाँ देता है हम उसको ख़त्म करके ही रहेंगे। अल्लाह ने उनका अज़म पूरा कर दिखाया। वो अबू जहल को मा'लूम करके उस पर ऐसे लपके जैसे शिकारी परिन्दे चिड़िया पर लपकता है।

3989. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उन्हे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे उमर बिन उसैद बिन जारिया प्रक़फ़ी ने ख़बर दी जो बनी जुहुरा के हलीफ़ थे और हज़रत अबू हुरैरह (रजि.) के शागिर्दों में शामिल

3989 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ أَسِيدٍ بْنُ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ

थे कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा नबी करीम (ﷺ) ने दस जासूस भेजे और उनका अमीर आसिम बिन प्राबित अंसारी (रज़ि.) को बनाया जो आसिम बिन उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) के नाना होते हैं। जब ये लोग अस्फ़ान और मक्का के दरम्यान मुकामे हद्दा पर पहुँचे तो बनी हुज़ैल के एक क़बीला को उनके आने की ख़बर मिल गई। इस क़बीले का नाम बनी लहयान था। उसके सौ तीरंदाज़ उन सहाबा (रज़ि.) की तलाश में निकले और उनके निशाने क़दम के अंदाज़े पर चलने लगे। आख़िर उस जगह पहुँच गये जहाँ बैठकर उन सहाबा (रज़ि.) ने खज़ूर खाई थी। उन्होंने कहा कि ये यज़्रिब (मदीना) की खज़ूर (की गुठलियाँ) हैं। अब फिर वो उनके निशाने क़दम के अंदाज़े पर चलने लगे। जब हज़रत आसिम बिन प्राबित (रज़ि.) और उनके साथियों ने उनके आने को मा'लूम कर लिया तो एक (महफूज़) जगह पनाह ली। क़बीला वालों ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया और कहा कि नीचे उतर आओ और हमारी पनाह ख़ुद कुबूल कर लो तो तुमसे हम वा'दा करते हैं कि तुम्हारे किसी आदमी को क़त्ल नहीं करेंगे। हज़रत आसिम बिन प्राबित (रज़ि.) ने कहा। मुसलमानों! मैं किसी काफ़िर की पनाह में नहीं उतर सकता। फिर उन्होंने दुआ की, ऐ अल्लाह! हमारे हालात की ख़बर अपने नबी (ﷺ) को कर दे। आख़िर क़बीले वालों ने मुसलमानों पर तीरंदाज़ी की और हज़रत आसिम (रज़ि.) को शहीद कर दिया। बाद में उनके वा'दा पर तीन सहाबा उतर आए। ये हज़रत हज़रत ख़ुबैब, ज़ैद बिन दहना और एक तीसरे सहाबी थे। क़बीले वालों ने जब इन तीनों सहाबियों पर क़ाबू पा लिया तो उनकी कमान से तांत निकालकर उसी से उन्हें बाँध दिया। तीसरे सहाबी ने कहा, ये तुम्हारी पहली दशाबाज़ी है मैं तुम्हारे साथ कभी नहीं जा सकता। मेरे लिये तो उन्हीं की ज़िन्दगी नमूना है। आपका इशारा उन सहाबा की तरफ़ था जो अभी शहीद किये जा चुके थे। कुफ़र ने उन्हें घसीटना शुरू किया और ज़बरदस्ती की लेकिन वो किसी तरह उनके साथ जाने पर तैयार न हुए। (तो उन्होंने उनको भी शहीद कर दिया) और हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) और हज़रत ज़ैद बिन दहना (रज़ि.) को साथ ले गये और (मक्का में ले जाकर) उन्हें बेच दिया। ये बद्र की लड़ाई

خَلِيفَ نَبِيِّ زُهْرَةَ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي
هُرَيْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:
بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
عَشْرَةَ غَنًا وَأَمَرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ بْنَ قَابِطٍ
الْأَنْصَارِيَّ جَدَّ عَاصِمِ بْنِ هَمَزٍ بْنِ
الْغَطَابِ حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَذَةِ تَنَنَ
عَسْفَانٍ وَمَنَكَّةَ ذُكِرُوا لِحَيٍّ مِنْ هَذَلٍ
يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لِحْيَانَ فَنَفَرُوا لَهُمْ بِقَرِيْبٍ
مِنْ مَالَةِ رَجُلٍ رَامٍ فَانْقَصُوا أَلَارَهُمْ حَتَّى
وَجَدُوا مَا كُلُّهُمْ التَّمَرُ فِي مَنْوَلٍ نَزَلُوهُ
فَقَالُوا: تَمَرٌ يُقَرِّبُ فَاتَّبَعُوا أَلَارَهُمْ فَلَمَّا
حَسَّ بِهِمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَزُوا إِلَى
مَوْضِعٍ فَاحْطَطَ بِهِمُ الْقَوْمُ فَقَالُوا لَهُمْ
انْزِلُوا فَاعْطُوا بِأَيْدِيكُمْ وَلَكُمْ الْعَهْدُ
وَالْمِيثَاقُ إِنْ لَا نَقْتُلَ مِنْكُمْ أَحَدًا، فَقَالَ
عَاصِمُ بْنُ قَابِطٍ: أَيُّهَا الْقَوْمُ إِنَّمَا أَنَا فَلَا
أَنْزِلُ فِي ذِمَّةِ كَافِرٍ ثُمَّ قَالَ اللَّهُمَّ اخْبِرْ عَنَّا
نَبِيَّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَمَوْهُمْ
بِالنَّبْلِ فَفَقَتَلُوا عَاصِمًا وَنَزَلَ إِلَيْهِمْ ثَلَاثَةٌ
نَفَرُوا عَلَى الْعَهْدِ وَالْمِيثَاقِ مِنْهُمْ حُيَيْبٌ
وَزَيْدُ بْنُ الدُّثَنَةِ وَرَجُلٌ آخَرٌ فَلَمَّا
اسْتَمَكَّتُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَوْتَارَ قِسْمِهِمْ
فَرَبَطُوهُمْ بِهَا قَالَ الرَّجُلُ الثَّلَاثُ: هَذَا
أَوَّلُ الْغَدْرِ وَاللَّهُ لَا أَصْحَبَكُمْ إِنْ لِي
بِهَذَا أَمْسُؤَةٌ يُرِيدُ الْقَتْلَى فَجَزَّوهُ
وَعَالَجُوهُ فَأَبَى أَنْ يَصْنَحَهُمْ فَانْطَلَقَ
بِحُيَيْبٍ وَزَيْدِ بْنِ الدُّثَنَةِ حَتَّى بَاغَوْهُمَا بَعْدَ

के बाद का वाकिया है। हारिष बिन आमिर बिन नौफ़िल के लड़कों ने हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) को ख़रीद लिया। उन्होंने ही बद्र की लड़ाई में हारिष बिन आमिर को क़त्ल किया था। कुछ दिनों तक तो वो उनके यहाँ कैद रहे, आख़िर उन्होंने उनके क़त्ल का इरादा किया। उन्हीं दिनों हारिष की किसी लड़की से उन्होंने मूएज़े नाफ़ स़ाफ़ करने के लिये उस्तरा मांगा। उसने दे दिया। उस वक़्त उसका एक छोटा सा बच्चा उनके पास (खेलता हुआ) उस औरत की बेख़बरी में चला गया। फिर जब वो उनकी तरफ़ आई तो देखा कि बच्चा उनकी रान पर बैठा हुआ है और उस्तरा उनके हाथ में है। उन्होंने बयान किया कि ये देखते ही वो इस दर्जा घबरा गई कि हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) ने उसकी घबराहट को देख लिया और बोले, क्या तुम्हें इसका डर है कि मैं इस बच्चे को क़त्ल कर दूँगा? यक़ीन रखो कि मैं ऐसा हर्गिज़ नहीं कर सकता। उन ख़ातून ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मैंने कभी कोई कैदी हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) से बेहतर नहीं देखा। अल्लाह की क़सम! मैंने एक दिन अंगूर के एक ख़ोशा से अंगूर खाते देखा जो उनके हाथ में था हालाँकि वो लोहे की जंजीरों में जकड़े हुए थे और मक्का में उस वक़्त कोई फल भी नहीं था। वो बयान करती थीं कि वो तो अल्लाह की तरफ़ से भेजी हुई रोज़ी थी जो उसने हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) के लिये भेजी थी। फिर बनू हारिषा उन्हें क़त्ल करने के लिये हरम से बाहर ले जाने लगे तो ख़ुबेब (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे दो रक़अत नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे दो। उन्होंने उसकी इजाज़त दे दी तो उन्होंने दो रक़अत नमाज़ पढ़ी और फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हें ये ख़याल न होने लगता कि मैं परेशानी की वजह से (देर तक नमाज़ पढ़ रहा हूँ) तो और ज़्यादा देर तक पढ़ता। फिर उन्होंने दुआ की कि ऐ अल्लाह! उनमें से हर एक को अलग अलग हलाक कर और एक को भी बाक़ी न छोड़ और ये अश़्शार पढ़े, जब मैं इस्लाम पर क़त्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे कोई परवाह नहीं कि अल्लाह की राह में मुझे किस पहलू पर पछाड़ा जाएगा ये तो सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये है। अगर वो चाहेगा तो मेरे जिस्म के एक एक जोड़ पर प्रवाब अता करेगा। उसके बाद अबू सरूआ उक्ब़ा बिन हारिष उनकी तरफ़ बढ़ा और उन्हें शहीद

وَلَقَدْ نَزَرِ لَهَا نَاعِ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ حَامِرٍ بْنِ
تَوَلَّى خُبَيْبًا وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ قَتَلَ الْحَارِثَ
بَنَ حَامِرٍ يَوْمَ نَزَرَ فَلَبِثَ خُبَيْبٌ عِنْدَهُمْ
أَسِيرًا حَتَّى أَجْمَعُوا قَتْلَهُ. فَاسْتَعَارَ مِنْ بَعْضِ
بَنَاتِ الْحَارِثِ مُوسَى يَسْتَعِجِدُ بِهَا فَأَحَارَتْهُ
فَنَزَجَ بَنِي لَهَا وَهِيَ حَائِلَةٌ عَنْهُ حَتَّى آتَاهُ
فَوَجَدَتْهُ مُجْلِسَةً عَلَى لَحْيَيْهِ وَالْمُوسَى
بِيَدِهِ. قَالَتْ: فَفَرَعْتُ فَرَاغَةً عَرَفْتُهَا خُبَيْبٌ
لَقَالَ: أَلَمْ تَعْلَمِي أَنْ أَقْتُلَهُ؟ مَا كُنْتُ لِأَفْعَلَ
ذَلِكَ؟ قَالَتْ: وَاللَّهِ مَا رَأَيْتُ أَسِيرًا قَطُّ
خَيْرًا مِنْ خُبَيْبٍ، وَاللَّهِ لَقَدْ وَجَدْتُهُ يَوْمًا
يَأْكُلُ قِطْفًا مِنْ عِنَبٍ فِي يَدِهِ وَإِنَّهُ لَمَوْثِقٌ
بِالْحَبِيدِ وَمَا بِمَكَّةَ مِنْ نَمْرَةٍ وَكَانَتْ
تَقُولُ إِنَّهُ لِرِزْقِ رَزَقَهُ اللَّهُ خُبَيْبًا فَلَمَّا
خَرَجُوا بِهِ مِنَ الْحَرَمِ لِيَقْتُلُوهُ فِي الْحِجْلِ
قَالَ لَهُمْ خُبَيْبٌ: دَعُونِي أَصَلِّي رَكَعَتَيْنِ
فَتَرَكُوهُ فَرَكَعَ رَكَعَتَيْنِ لَقَالَ: وَاللَّهِ لَوْ لَا
أَنْ تَحْسِبُوا أَنَّ مَا بِي جَزَعٌ لَوَدْتُ ثُمَّ
قَالَ: اللَّهُمَّ احْصِهِمْ عَذَابًا، وَأَقْتُلْهُمْ بَذَا
وَلَا تُبْقِ مِنْهُمْ أَحَدًا، ثُمَّ انْتَبَهَ يَقُولُ:
فَلَسْتُ أَبَالِي حِينَ أَقْتُلُ مُسْلِمًا
عَلَى أَيْ جَنْبٍ كَانَ اللَّهُ مُصْرَعِي
وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الْإِلَهِ وَإِنْ يَشَأْ
يُبَارِكْ عَلَى أَوْصَالِ شَيْءٍ مَمْرُوعٍ
ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ أَبُو سُرُوْعَةَ غَفِيَةً بَنُ الْحَارِثِ
فَقَتْلَهُ وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ مَنْ يَكُلُّ مُسْلِمٍ
قَبْلَ صَبْرٍ الصَّلَاةِ وَأَخْبَرَ يَغْيِي النَّبِيُّ صَلَّى

कर दिया। हज़रत खुबेब (रज़ि.) ने अपने अमले हस्ना से हर उस मुसलमान के लिये जिसे कैद करके क़त्ल किया जाए (क़त्ल से पहले दो रक़अत) नमाज़ की सुन्नत क़ायम की है। इधर जिस दिन उन सहाबा (रज़ि.) पर मुसीबत आई थी हुज़ूर (ﷺ) ने अपने सहाबा (रज़ि.) को उसी दिन उसकी ख़बर दे दी थी। कुरैश के कुछ लोगों को जब मा'लूम हुआ कि आसिम बिन प्राबित (रज़ि.) शहीद कर दिये गये हैं तो उनके पास अपने आदमी भेजे ताकि उनके ज़िस्म का कोई ऐसा हिस्सा लाएँ, जिससे उन्हें पहचाना जा सके। क्योंकि उन्होंने (बद्र में) उनके एक सरदार (उक़बा बिन अबी मुईत) को क़त्ल किया था लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी लाश पर बादल की तरह भिड़ों की एक फ़ौज भेज दी और उन्होंने आपकी लाश को कुफ़ारे कुरैश के उन आदमियों से बचा लिया और वो उनके ज़िस्म का कोई हिस्सा भी न काट सके और क़अब बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे सामने लोगों ने मुरारह बिन रबीअ उमरी (रज़ि.) और हिलाल बिन उमय्या वाक़फ़ी (रज़ि.) का ज़िक्र किया। (जो ग़ज़्व-ए-तबूक में नहीं जा सके थे) कि वो सल्लेह सहाबियों में से हैं और बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे। (राजेअ : 3045)

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصْحَابَهُ يَوْمَ أُصْبُوا
خَيْرَهُمْ، وَبَعَثَ نَاسًا مِنْ قُرَيْشٍ إِلَى غَاصِمِ
بْنِ قَابِثٍ حِينَ خَذَلُوا أَنَّهُ قِيلَ أَنْ يَأْتُوا
بَشَرَةٍ مِنْهُ يُعْرَفُ وَكَانَ قَتْلَ رَجُلًا عَظِيمًا
مِنْ عَظَمَائِهِمْ قَبَعَتْ اللَّهُ لِعَاصِمٍ بِقِلِّ الظُّلَّةِ
مِنَ الدَّبْرِ فَحَمَنَهُ مِنْ رَسُولِهِمْ فَلَمْ يَقْبَلُوا
أَنْ يَقْطَعُوا مِنْهُ شَيْئًا. وَقَالَ كَتَبَ بَنُو
مَالِكٍ : ذَكَرُوا مُرَاوَةَ بَنِي الرَّبِيعِ الْقَعْرِيِّ
وَجَلَالَ بْنِ أُمَيَّةِ الْوَاقِئِيِّ وَجَلِينَ صَالِحِينَ
فَلَمْ يَشْهَدَا بَدْرًا.

[راجع : 3045]

तशरीह : इस लम्बी हदीष में जिन दस आदमियों का ज़िक्र है, उनमें सात के नाम ये हैं। मर्सद ग़नवी, ख़ालिद बिन बुकेर, खुबेब बिन अदी, ज़ैद बिन दज़्ना, अब्दुल्लाह बिन तारिक, मुअतब बिन उबैद (रज़ि.) उनके अमीर आसिम बिन प्राबित (रज़ि.) थे। बाकी तीनों के नाम मज़कूर नहीं हैं। रास्ते में कुफ़ार बन् लहयान उनके पीछे लग गये। आखिर उनको पा लिया और उनमें से सरदार समेत सात मुसलमानों को उन काफ़िरों ने शहीद कर दिया और तीन मुसलमानों को गिरफ़्तार कर लिया, जिनके नाम ये हैं। खुबेब बिन अदी, ज़ैद बिन दज़्ना, और अब्दुल्लाह बिन तारिक (रज़ि.)। रास्ते में हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) को भी शहीद कर दिया और पिछले दो को मक्का में ले जाकर गुलाम बनाकर बेच दिया। ज़ैद बिन दज़्ना को सप्तवान बिन उमय्या ने ख़रीदा और खुबेब (रज़ि.) को हारिष बिन आमिर के बेटों ने। खुबेब (रज़ि.) ने बद्र के दिन हारिष मज़कूर को क़त्ल किया था। अब उसके बेटों ने मुफ़्त में बदला लेने की गर्ज से हज़रत खुबेब (रज़ि.) को ख़रीद लिया और हुर्मत के महीने को गुज़ारकर उनको शहीद कर डालने का फैसला कर लिया। उन अय्याम में हज़रत खुबेब (रज़ि.) के करामात को उन लोगों ने देखा कि बेमौसम के फल अल्लाह तआला ग़ेब से उनको खिला रहा है जैसे हज़रत मरयम (अलैहस्सलाम) को बेमौसम के फल मिला करते थे। आखिरी दिनों में शहादत की तैयारी के वास्ते सफ़ाई सुथराई हासिल करने के लिये हज़रत खुबेब (रज़ि.) ने उनकी एक लड़की से उस्तरा मांगा मगर जबकि उनका एक दूध पीता बच्चा हज़रत खुबेब (रज़ि.) के पास जाकर खेलने लगा तो उस औरत को ख़तरा हुआ कि शायद खुबेब (रज़ि.) उस उस्तरे से उस मा'लूम को ज़िन्ह कर डालें जिस पर हज़रत खुबेब (रज़ि.) ने खुद बढकर उस औरत को इत्मीनान दिलाया कि एक सच्चे मुसलमान से ऐसा क़त्ले नाहक होना नामुम्किन है। आखिर में दो रक़अत नमाज़ के बाद जब उनको क़त्लगाह मे लाया गया तो उन्होंने ये अश्आर पढ़े जिनका यहाँ ज़िक्र मौजूद है। हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने उन शेरों का शे'अरों ही में तर्जुमा किया है :

जब मुसलमाँ हो के दुनिया से चलूँ
मेरा मरना है अल्लाह की ज्ञात में
तन जो टुकड़े टुकड़े अब हो जाएगा

मुझको क्या ग़म कौनसी करवट गिरूँ
वो अगर चाहे न होकैगा में ज़बूँ
उसके जोड़ों पर वो बरकत दे फ़ज़ूँ

बैहकी ने रिवायत की है कि खुबेब (रज़ि.) ने मरते वक़्त दुआ की थी कि या अल्लाह! हमारे हाल की ख़बर अपने हबीब (ﷺ) को पहुँचा दे। उसी वक़्त हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आए और सारे हालात की ख़बर दे दी। रिवायत के आख़िर में दो बंदी सहाबियों का ज़िक्र है जिससे दय्याती का रद्द हुआ। जिसने उन दोनों के बंदी होने का इंकार किया है। इस्बात नफ़ी पर मुकद्दम है। ये मज़मून एक हदीष का टुकड़ा है जिसे हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने ग़च्च-ए-तबूक में ज़िक्र किया है।

3990. हमसे कुतैबा ने बयान किया, हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने जुम्आ के दिन ज़िक्र किया कि हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) जो बंदी सहाबी थे, बीमार हैं। दिन चढ़ चुका था। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) सवार होकर उनके पास तशरीफ़ ले गये। इतने में जुम्आ का वक़्त करीब हो गया और वो जुम्आ की नमाज़ (मजबूरन) न पढ़ सके।

۳۹۹۰- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ذَكَرَ لَهُ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ زَيْدٍ ابْنَ عُمَرَ بْنِ لُفْلٍ وَكَانَ مَرِيضًا مَرَضًا فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ فَرَكِبَ إِلَيْهِ بَعْدَ أَنْ تَمَّالَى النَّهَارُ وَاقْرَأَتْ الْجُمُعَةَ وَتَرَكَ الْجُمُعَةَ.

तशरीह: इस हदीष को बयान करने से यहाँ गुर्ज ये है कि सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) बद्र वालों में से थे। गो ये जंग में शरीक न थे क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उनको और तलहा (रज़ि.) को जासूसी का महकमा सुपुर्द कर दिया था। उनकी वापसी से पहले ही लड़ाई शुरू हो गई। जब ये लौटकर आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुजाहिदीन की तरह उनका भी हिस्सा लगाया, इस वजह से ये भी बंदी हुए। ये हज़रत उमर (रज़ि.) के उम्मे ज़ाद भाई और उनके बहनोई भी थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने उनकी अयादत ज़रूरी समझी, वो मरने के करीब हो रहे थे, इसी वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने जुम्आ की नमाज़ को भी मजबूरन तर्क कर दिया।

3991. और लैष बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने बयान किया कि उनके वालिद ने उमर बिन अब्दुल्लाह बिन अरक़म जुहरी को लिखा कि तुम सबीआ बिनते हारिष असलमिया (रज़ि.) के पास जाओ और उनसे उनके वाक़िया के बारे में पूछो कि जब उन्होंने हज़ूर (ﷺ) से मसला पूछा था तो आपने उनको क्या जवाब दिया था? चुनाँचे उन्होंने मेरे वालिद को उसके जवाब में लिखा कि सबीआ बिनते हारिष (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी है कि वो सअद इब्ने ख़ौला (रज़ि.) के निकाह में थीं। उनका रिश्ता बनी आमिर बिन लुई से था और वो बद्र की जंग में शिर्कत करने वालों में थे। फिर हज़तुल विदाअ के

۳۹۹۱- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عُثْمَةَ أَنَّ أَبَاهُ كَتَبَ إِلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَرْقَمِ الزُّهْرِيِّ بِأَمْرِهِ أَنْ يَدْخُلَ عَلَى سَيِّعَةَ بِنْتِ الْخَارِثِ الْأَسْلَمِيَّةِ فَيَسْأَلَهَا عَنْ حَدِيثِهَا وَعَنْ مَا قَالَتْ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، حِينَ اسْتَفْتَتْهُ فَكَتَبَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَرْقَمِ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ يُخْبِرُهُ أَنَّ سَيِّعَةَ بِنْتَ الْخَارِثِ

मौके पर उनकी वफ़ात हो गई थी और उस वक़्त वो हमल से थीं। हज़रत सअद इब्ने ख़ौला (रज़ि.) की वफ़ात के कुछ ही दिन बाद उनके यहाँ बच्चा पैदा हुआ। निफ़ास के दिन जब वो गुज़ार चुकीं तो निकाह का पैग़ाम भेजने वालों के लिये उन्होंने अच्छे कपड़े पहने। उस वक़्त बनू अब्दुहार के एक सहाबी अबुस्सनाबिल बिन बअकक (रज़ि.) उनके यहाँ गये और उनसे कहा, मेरा ख़याल है कि तुमने निकाह का पैग़ाम भेजने वालों के लिये ये ज़ीनत की है। क्या निकाह करने का ख़याल है? लेकिन अल्लाह की क़सम! जब तक (हज़रत सअद रज़ि. की वफ़ात पर) चार महीने और दस दिन न गुज़र जाएँ तुम निकाह के क़ाबिल नहीं हो सकतीं। सबीआ (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अबुल सिनान ने मुझसे ये बात कही तो मैंने शाम होते ही कपड़े पहने और आहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके बारे में मैंने आपसे मसला मा'लूम किया। हज़ूर (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि मैं बच्चा पैदा होने के बाद इदत से निकल चुकी हूँ और अगर मैं चाहूँ तो निकाह कर सकती हूँ। इस रिवायत की मुताबज़त अस्बग ने इब्ने वहाब से की है, उनसे यूनुस ने बयान किया और लैष ने कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, (उन्होंने बयान किया कि) हमने उनसे पूछा तो उन्होंने बयान किया कि मुझे बनू आमिर बिन लूई के गुलाम मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन शौबान ने ख़बर दी कि मुहम्मद बिन अयास बिन बुकैर ने उन्हें ख़बर दी और उनके वालिद अयास बद्र की लड़ाई में शरीक थे।

(दीगर मक़ाम: 5319)

أَخْبَرْتُهُ أَنَّهَا كَانَتْ تَحْتَ مَعْقِدِ بْنِ حَوَالَةَ وَهُوَ مِنْ بَنِي غَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ وَكَانَ مِنْ شَهَدَةِ بَنِي لُؤَيٍّ فَوَلَّى عَنْهَا فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ وَهِيَ حَائِلٌ فَلَمْ تَنْسَبْ أَنْ وَضَعَتْ حَمْلَهَا بَعْدَ وَلَائِهِ فَلَمَّا تَعَلَّتْ مِنْ بِلَاسِهَا تَجَمَّلَتْ لِلْعُطَابِ لَدَخَلَ عَلَيْهَا أَبُو السَّائِلِ بْنُ بَغَكٍ وَجَلَّ مِنْ بَنِي غَدِ الدَّارِ فَلَمَّا لَهَا مَا لِي أَوَالِكَ تَحْمَلُ لِلْعُطَابِ تَرْجِيَنِ النِّكَاحَ لِنَبِيِّكَ وَآلِهِ مَا أَنْتَ بِنَاصِحٍ حَتَّى تَمُرَّ عَلَيْكَ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ وَعَشْرٌ قَالَتْ سَمِعْتُ : فَلَمَّا قَالَتْ لِي ذَلِكَ جَمَعْتُ عَلَى بَنِي إِسَاءِ حِينَ أَمْسَيْتُ وَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ فَأَلْقَانِي بَأَنِّي لَقَدْ خَلَلْتُ حِينَ وَضَعْتُ حَمْلِي وَأَمَرَنِي بِالنِّزُوجِ إِنْ يَكُنْ لِي قَابَقٌ أَصْبَغُ عَنْ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ وَمَسَّالَةَ فَقَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ ثَوْبَانَ مَوْلَى بَنِي غَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ إِسَاءِ بْنِ الْكَكْرِ وَكَانَ أَبُوهُ شَهِيدَ بَنِي أَخْبَرَهُ. [طرفه في: ٥٣١٩].

तशरीह: इस हदीष का बाब से ता'ल्लुक ये है कि उसमें सअद बिन ख़ौला का बद्री होना मज़कूर है। लैष बिन सअद के अफ़र को इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़ मे पूरे तौर पर बयान किया है। यहाँ इतनी ही सनद पर इक्तिफ़ा किया, क्योंकि यहाँ इतना ही बयान मज़कूर है कि अयास (रज़ि.) बद्री थे। इस हदीष से ये भी ज़ाहिर हुआ कि हामिला औरत वज़अे हमल के बाद चाहे तो निकाह कर सकती है।

बाब 11 : जंगे बद्र में फ़रिश्तों का शरीक होना

3992. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्नाहीम ने बयान किया, हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद अंसारी ने, उन्हें मुआज़ बिन रफ़ाआ बिन राफ़ेअ ज़रक़ी ने अपने वालिद (रफ़ाआ बिन राफ़ेअ)

11- باب شهود الملائكة بَدْرًا

3992- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ

से, जो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों में थे, उन्होंने बयान किया कि हजरत जिब्रईल (अलैहि.) नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में आए और आपसे पूछा कि बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों का आपके यहाँ दर्जा क्या है? आपने फ़र्माया कि मुसलमानों में सबसे अफ़ज़ल या हज़ूर (ﷺ) ने इसी तरह का कोई कलिमा इशार्द फ़र्माया। हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) ने कहा कि जो फ़रिश्ते बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे उनका भी दर्जा यही है।

(दीगर मक़ाम : 3994)

तशरीह :

अगरचे फ़रिश्ते और जंगों में भी उतरते थे मगर बद्र में फ़रिश्तों ने लड़ाई की। बैहकी ने रिवायत की है कि फ़रिश्तों की मार पहचानी जाती थी। गर्दन पर चोट और पोरों पर आग का सा दमा। इस्हाक़ की सनद में है जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) से कि बद्र के दिन मैंने काफ़िरों की शिकस्त से पहले आसमान से काली काली चींटियाँ उतरती देखीं। ये फ़रिश्ते थे जिनके उतरने के बाद फ़ौरन काफ़िरों को शिकस्त हुई। एक रिवायत में है कि एक मुसलमान बद्र के दिन एक काफ़िर को मारने जा रहा था इतने में आसमान से एक कोड़े की आवाज़ सुनी। कोई कह रहा था ऐ हैज़ूम! आगे बढ़, फिर वो काफ़िर मरकर गिर पड़ा।

3993. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे मुआज़ बिन रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ ने, हज़रत रेफ़ाआ (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे और (उनके वालिद) हज़रत राफ़ेअ (रज़ि.) बेअते अक़बा में शरीक हुए थे तो आप अपने बेटे (रेफ़ाआ) से कहा करते थे कि बेअते अक़बा के बराबर बद्र की शिकस्त से मुझे ज़्यादा खुशी नहीं है। बयान किया कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने नबी करीम (ﷺ) से इस बाब में पूछा था।

3994. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, हमको यज़ीद बिन हासून ने ख़बर दी, कहा हमको यह्या बिन सईद अंसारी ने ख़बर दी और उन्होंने मुआज़ बिन रिफ़ाआ से सुना कि एक फ़रिश्ते ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा और यह्या बिन सईद अंसारी से रिवायत है कि यज़ीद बिन हाद ने उन्हें ख़बर दी कि जिस दिन मुआज़ बिन रिफ़ाआ ने उनसे ये हदीष बयान की थी तो वो भी उनके साथ थे। यज़ीद ने बयान किया कि मुआज़ ने कहा था कि पूछने वाले हज़रत जिब्रईल (अ) थे। (राजेअ : 3992)

तशरीह :

या'नी बद्र वालों को जैसा कि ऊपर गुज़रा है हज़रत राफ़ेअ (रज़ि.) बेअते अक़बा में शरीक होना बद्र में शरीक होने से अफ़ज़ल जानते थे। क्योंकि बेअते अक़बा ही आँहज़रत (ﷺ) की कामयाबी और हिज़रत का बाअिष बनी तो इस्लाम की बुनियाद यही ठहरी।

مُعَاذُ بْنُ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعِ الرَّزَّازِيِّ عَنْ أَبِيهِ وَكَانَ أَبُوهُ مِنْ أَهْلِ بَنِي لُحَاثٍ: جَاءَهُ جِبْرِيلُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا تَعْمَلُونَ أَهْلَ بَنِي لُحَاثٍ بِكُمْ قَالَ: مِنَ الْعَمَلِ الْمُسْلِمِينَ أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا قَالَ: وَكَذَلِكَ مِنْ هَيْدِ بَنِي لُحَاثٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ)).

[3994: طرہ نی]

۳۹۹۳- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ مُعَاذِ بْنِ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ وَكَانَ رِفَاعَةُ مِنْ أَهْلِ بَنِي لُحَاثٍ وَكَانَ رَافِعٌ مِنْ أَهْلِ الْعَقَبَةِ فَكَانَ يَقُولُ لِأَبِيهِ مَا يَسْرُرُنِي أَنِّي شَهِدْتُ بَنِي لُحَاثٍ بِالْعَقَبَةِ قَالَ: سَأَلَ جِبْرِيلُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَذَا.

۳۹۹۴- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ أَخْبَرَنَا يَحْيَى يَزِيدُ سَمِعَ مُعَاذَ بْنَ رِفَاعَةَ أَنَّ مَلَكًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ وَغَنَ يَحْيَى أَنَّ يَزِيدَ بْنَ الْهَادِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ كَانَ مَعَهُ يَوْمَ حَدَّثَهُ مُعَاذٌ هَذَا الْخَبِيرَ فَقَالَ يَزِيدٌ فَقَالَ مُعَاذٌ: إِنَّ السَّائِلَ هُوَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ. [راجع: ۳۹۹۲]

3995. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, हमको अब्दुल वहसब प्रकफ़ी ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इकिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई में फ़र्माया था, ये हैं हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) अपने घोड़े का सर थामे हुए और हथियार लगाए हुए। (दीगर मक़ाम : 4041)

۳۹۹۵- حدثنی إبراهیم بن موسى أخبرنا عبد الوهاب حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس رضي الله عنهما أن النبي ﷺ قال يوم بدر «هَذَا جِبْرِيلُ آخِذٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ عَلَيْهِ إِذَاةُ الْحَرْبِ».

[طرفه في ۴: ۴۱].

जिनको अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद के लिये और भी बहुत से फ़रिश्तों के साथ मैदाने जंग में भेजा है।

तशरीह : सईद बिन मंसूर की रिवायत में है कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) सुर्ख घोड़े पर सवार थे। उसकी पेशानी के बाल गुंथे हुए थे। इब्ने इस्हाक़ ने अबू वाफ़िद लैषी से निकाला कि मैं बद्र के दिन एक काफ़िर को मारने चला मगर मेरे पहुँचने से पहले ही उसका सर खुद ब खुद तन से जुदा होकर गिर पड़ा। अभी मेरी तलवार उसके करीब पहुँची भी न थी। बहक़ी ने निकाला कि बद्र के दिन एक सख़्त औंधी चली। पहली औंधी हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) की आमद थी। दूसरी हज़रत मीकाईल (अलैहिस्सलाम) की आमद थी। अगरचे अल्लाह का एक ही फ़रिश्ता दुनिया के सारे काफ़िरों को मारने के लिये काफ़ी था मगर परवरदिगार को ये मंज़ूर हुआ कि फ़रिश्तों को बतौर सिपाहियों के भेजे और उनसे आदत और कुव्वते बशरी (इन्सानी ताक़त) के मुवाफ़िक़ काम ले।

बाब 12 :

۱۲- باب

3996. मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू ज़ैद (रज़ि.) वफ़ात पा गये और उन्होंने कोई औलाद नहीं छोड़ी, वो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे। (राजेअ : 3810)

۳۹۹۶- حدثنی خلیفة حدثنا محمد بن عبد الله الأنصاري حدثنا سعيد عن قتادة عن أنس رضي الله عنه قال : مات أبو زيد ولم يترك عقباً وكان بدرياً.

[راجع: ۳۸۱۰]

3997. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, उनसे कासिम बिन मुहम्मद ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कि हज़रत अबू सईद बिन मालिक ख़ुदरी (रज़ि.) सफ़र से वापस आए तो उनके घर वाले कुर्बानी का गोश्त उनके सामने लाए। उन्होंने कहा कि मैं उसे उस वक़्त तक नहीं खाऊँगा जब तक उसका हुक्म न मा'लूम कर लूँ। चुनाँचे वो अपनी वालिदा की तरफ़ से अपने एक भाई के पास मा'लूम करने गये। वो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों में से थे या'नी हज़रत क़तादा बिन नोअमान (रज़ि.)। उन्होंने बताया कि

۳۹۹۷- حدثنا عبد الله بن يوسف حدثنا الليث قال: حدثني يحيى عن سعيد عن القاسم بن محمد عن ابن عباس أن أبا سعيد بن مالك الخدري رضي الله عنه قدم من سفر فقدم إليه أهله لحماً من لحوم الأضحية فقال: ما أنا بكيله حتى أسأل، فأنطلق إلى أبيه لأمره وكان بدرياً قتادة بن النعمان فسأله

बाद में वो हुक्म मंसूख कर दिया गया था जिसमें तीन दिन से ज्यादा कुर्बानी का गोश्त खाने की मुमानअत की गई थी।

(दीगर मक़ाम : 5568)

فَقَالَ : إِنَّهُ حَدَّثَ بِغَدَاكَ أَمْرٌ نَقَضَ لِمَا كَانُوا يَنْهَوْنَ عَنْهُ مِنْ أَكْلِ لَحْمِ الْأَضْحَى بَعْدَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ. [طرفه في : ٥٥٦٨].

रिवायत में हज़रत क़तादा (रज़ि.) का ज़िक्र है जो बद्दी थे। बाब और हदीष में यही मुनासबत है।

3998. मुझे अबू इब्ने इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में मेरी मुठभेड़ अबू दाबिब बिन आस से हो गई, उसका सारा जिस्म लाहे में ग़र्क था और सिर्फ़ आँख दिखाई दे रही थी। उसकी कुन्नियत अबू ज़ातुल कर्श थी। कहने लगा कि मैं अबू ज़ातुल कर्श हूँ। मैंने छोटे बच्चे से उस पर हमला किया और उसकी आँख ही को निशाना बनाया। चुनौचे उस ज़ख़म से वो मर गया। हिशाम ने बयान किया कि मुझे ख़बर दी गई है कि जुबैर (रज़ि.) ने कहा, फिर मैंने अपना पाँव उसके ऊपर रखकर पूरा ज़ोर लगाया और बड़ी दुश्वारी से वो बरछा उसकी आँख से निकाल सका। उसके दोनों किनारे मुड़ गये थे। उर्वा ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुबैर (रज़ि.) का वो बरछा त़लब किया तो उन्होंने वो पेश कर दिया। जब हुज़ुरे अकरम (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो उन्होंने उसे वापस ले लिया। फिर अबू बक्र (रज़ि.) ने त़लब किया तो उन्होंने उन्हें भी दे दिया। अबू बक्र (रज़ि.) की वफ़ात के बाद उमर (रज़ि.) ने त़लब किया। उन्होंने उन्हें भी दे दिया। उमर (रज़ि.) की वफ़ात के बाद उन्होंने उसे ले लिया। फिर उस्मान (रज़ि.) ने त़लब किया तो उन्होंने उन्हें भी दे दिया। उस्मान (रज़ि.) की शहादत के बाद वो बरछा अली (रज़ि.) के पास चला गया और उनके बाद उनकी औलाद के पास और उसके बाद अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने उसे ले लिया और उनके पास ही वो रहा, यहाँ तक कि वो शहीद कर दिये गये।

बाब का मतलब उससे निकला कि हज़रत जुबैर (रज़ि.) ने बद्र के दिन का ये वाक़िया बयान किया। मा'लूम हुआ वो बद्दी थे।

3999. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने कहा कि मुझे इदरीस आईजुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अबू दाबिब बिन आस (रज़ि.) ने, वो बद्र

٣٩٩٨- حَدَّثَنِي عُمَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَالَ الزُّهْرِيُّ لَقِيتُ يَوْمَ بَدْرٍ عُمَيْدَةَ بْنَ سَعِيدٍ بْنِ الْعَاصِ مُدَجَّجٌ لَا يُرَى مِنْهُ إِلَّا عَيْنَاهُ وَهُوَ يُكَلِّمُهَا ذَاتَ الْكُرْشِيِّ فَقَالَ : أَنَا أَبُو ذَاتِ الْكُرْشِيِّ فَحَمَلْتُ عَلَيْهِ بِالْفَرْزَةِ فَطَعَنْتُهُ فِي عَيْنِهِ فَمَاتَ قَالَ هِشَامُ : فَأَخْبَرْتُ أَنَّ الزُّهْرِيَّ قَالَ : لَقَدْ وَضَعْتُ رِجْلِي عَلَيْهِ ثُمَّ تَمَطَّاتُ فَكَانَ الْجَهْدُ أَنْ تَرْغَبَهَا وَقَدْ انْتَشَى طَرَفَاها قَالَ عُرْوَةُ : فَسَأَلَهُ أَيُّهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَاهُ فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَهَا ثُمَّ طَلَبَهَا أَبُو بَكْرٍ فَأَعْطَاهُ، فَلَمَّا قُبِضَ أَبُو بَكْرٍ سَأَلَهَا أَيُّهَا عُمَرُ فَأَعْطَاهُ أَيُّهَا، فَلَمَّا قُبِضَ عُمَرُ أَخَذَهَا ثُمَّ طَلَبَهَا عُثْمَانُ مِنْهُ، فَأَعْطَاهُ أَيُّهَا، فَلَمَّا قُتِلَ عُثْمَانُ وَقَعَتْ عِنْدَ آلِ عَلِيٍّ فَطَلَبَهَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ فَكَانَتْ عِنْدَهُ حَتَّى قُتِلَ.

٣٩٩٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو إِدْرِيسَ

की लड़ाई में शरीक हुए थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया था कि मुझसे बेअत करो।

(राजेअ : 18)

عَائِدَةُ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ - أَنَّ عَائِدَةَ بْنَ
الصَّامِتِ وَكَانَ شَهِيدًا بَذَرًا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ
ﷺ قَالَ: ((بَابُ عَائِدَةَ)) - [راجع: 18]

हदीष में एक बंदी सहाबी हजरत उबादा (रजि.) का जिक्र है। हदीष और बाब में यही मुनासबत है।

4000. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक्लील ने, उन्हें इब्ने शिहाब जुहरी ने खबर दी, उन्हें नबी करीम (ﷺ) की जोजा मुत्तहहरा आयशा (रजि.) ने कि अबू हुजैफा (रजि.) जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों में थे, मैंने सालिम (रजि.) को अपना मुँह बोला बेटा बनाया था और अपनी भतीजी हिन्द बिनत वलीद बिन उत्बा से शादी करा दी थी। सालिम (रजि.) एक अंसारी खातून के गुलाम थे, जैसे नबी करीम (ﷺ) ने ज़ैद बिन हारिषा (रजि.) को अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था। जाहिलियत में ये दस्तूर था कि अगर कोई शख्स किसी को अपना मुँह बोला बेटा बना लेता तो लोग उसी की तरफ उसे मन्सूब करके पुकारते और मुँह बोला बेटा उसकी मीरास का भी वारिष होता। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि, उन्हें उनके बापों की तरफ मन्सूब करके पुकारो तो सहला (रजि.) हुज़ूर (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुई। फिर तफ़्सील से रावी ने हदीष बयान की। (दीगर मक़ाम : 5088)

4000 - حَدَّثَنَا بِحَقِّ بْنِ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا
الْثَّوْبِيُّ عَنْ غُبَيْلِ بْنِ أَبِي هُبَيْرٍ عَنْ
عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا حَدَّثَتْهُ وَكَانَ
مِنْهُمْ شَهِيدًا بَذَرًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ تَبَنَّى
مَالِيًا وَأَتَكَحْتُ بِنْتَ أَرْحَبٍ جِنْدًا بِنْتَ
الْوَلِيدِ بْنِ عُثْبَةَ وَهِيَ مَوْلَى لَأَمْرَأَةٍ مِنَ
الْأَنْصَارِ كَمَا تَبَنَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ زَيْنًا
وَكَانَ مِنْ تَبَنَّى رَجُلًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ دَعَا
النَّاسَ إِلَيْهِ وَوَرِثَ مِنْ مِيرَاثِهِ حَتَّى أَنْزَلَ
اللَّهُ تَعَالَى ﴿ادْعُوهُمْ لِأَنبَائِهِمْ﴾ فَجَاءَتْ
سَهْلَةُ النَّبِيِّ ﷺ فَلَذَكَرَ الْحَدِيثَ.
[الأحزاب: 50] - [طرفه في: 5088]

तशरीह:

हजरत इमाम बुखारी (रह) ने पूरी हदीष नक़ल नहीं की। अबू दाऊद में मज़ीद यूँ है कि सहला (रजि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम तो सालिम (रजि.) को बेटे की तरह समझते थे। उससे पर्दा न था। अब आप क्या फर्माते हैं? आपने फर्माया, ऐसा कर तू सालिम (रजि.) को दूध पिला दे। उसने पाँच बार दूध पिलाया, फिर सालिम (रजि.) उनका ग़ज़ाई बेटा समझा गया। हजरत आयशा (रजि.) का अमल इस हदीष पर था। मज़कूरा वलीद बिन उत्बा जंगे बद्र में हजरत अली (रजि.) के हाथों से मारा गया था। अबू हुजैफा सहाबी (रजि.) उसी के भाई थे। जिन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया था और ये मुहाजिरिने अव्वलीन मे से हैं।

4001. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे बिशर बिन मुग़ाफ़ल ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने, उनसे रबीअ बिनते मुअव्वज़ (रजि.) ने बयान किया कि जिस रात मेरी शादी हुई थी नबी करीम (ﷺ) उसकी सुबह को मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए और बिस्तर पर बैठे, जैसे अब तुम यहाँ मेरे पास बैठे हुए हो। चन्द बच्चियाँ दुफ़ बजा रही थीं और वो अशआर पढ़ रही थीं जिनमें उनके उन ख़ानदान वालों का ज़िक्र था

4001 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَزْمٍ حَدَّثَنَا
الْمُفَضَّلُ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ عَنْ
الرَّبِيعِ بْنِ مَرْثُودٍ قَالَ: دَخَلَ عَلِيٌّ
النَّبِيُّ ﷺ عَدَاةَ بُنَيٍّ عَلِيٍّ فَجَلَسَ عَلَى
لِرَاشِي كَمَا جَلَسَ مِنِّي وَجُودِيَّاتٍ

जो बद्र की लड़ाई में शहीद हो गये थे, उन्हीं में एक लड़की ने ये मिस्त्रा भी पढ़ा कि, हममें नबी (ﷺ) हैं जो कल होने वाली बात को जानते हैं। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ये न पढ़ो, बल्कि जो पहले पढ़ रही थीं वही पढ़ो।

(दीगर मक़ाम : 5148)

يُضْرَبْنَ بِالْأُذُنِ يَنْدُبْنَ مَنْ قِيلَ مِنْ أَهْلِهَا
يَوْمَ يَنْدُبْنَ قَالَتْ جَارِيَةٌ وَلَيْسَ لِي بِغَلَمٍ
مَا فِي غَدٍ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((لَا تَقُولِي
هَكَذَا وَقُولِي مَا كُنْتِ تَقُولِينَ)).

[طرفة ي : ٥١٤٧]

तशरीह : इस शेर से आँहज़रत (ﷺ) का आलिमुल ग़ैब होना ज़ाहिर हो रहा था हालाँकि आलिमुल ग़ैब सिर्फ़ एक अल्लाह तआला ही है इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने इस शेर के गाने से मना फ़र्मा दिया जो लोग आँहज़रत (ﷺ) को आलिमुल ग़ैब जानते हैं वो सरासर झूठे हैं। ये मुहब्बत नहीं बल्कि आप (ﷺ) से अदावत रखना है कि आपकी हदीष को झुठलाया जाए। कुआन को झुठलाया जाए। हदीष में शुद्धा-ए-बद्र का ज़िक्र है। बाब और हदीष में यही मुनासबत है। हदीष से नअतिया अश्आर का सुनाना भी जाइज़ श्राबित हुआ बशर्ते कि उनमें मुबालग़ा न हो।

4002. हमसे इब्राहीम बिन मूसा राज़ी ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर बिन राशिद ने, उन्हें जुहरी ने। (दूसरी सनद) और हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी अतीक ने, उनसे इब्ने शिहाब (जुहरी) ने, उनसे अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा बिन मसऊद ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी अबू तलहा (रज़ि.) ने ख़बर दी, वो हुज़ूर (ﷺ) के साथ बद्र की लड़ाई में शरीक थे कि फ़रिश्ते उस घर में नहीं आते जिसमें तस्वीर या कुत्ता हो। उनकी मुराद जानदार की तस्वीर से थी।

(राजेअ : 3225)

٤٠٠٢ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَفِيٍّ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو طَلْحَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ صَاحِبُ الرَّسُولِ ﷺ ، وَكَانَ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ : ((لَا تَدْخُلُ الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلَا صُورَةٌ)) يُرِيدُ التَّمَاثِيلَ الَّتِي فِيهَا الْأَوْزَاجُ. [راجع : ٣٢٢٥]

मुराद ये कि रहमत के फ़रिश्ते ऐसे घर में नहीं आते बल्कि वो घर इताबे इलाही का मर्कज़ बन जाता है। अबू तलहा (रज़ि.) सहाबी-ए-बद्र हैं जो इस हदीष के रावी हैं। बाब और हदीष में यही मुनासबत है।

4003. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस बिन यज़ीद ने ख़बर दी। (दूसरी सनद) इमाम बुखारी ने कहा हमको अहमद बिन सलालेह ने ख़बर दी, उनसे अम्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे

٤٠٠٣ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ ح. وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا عَبَّاسَةُ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ

यूनुस ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उन्हें अली बिन हुसैन (इमाम जैनुल आबेदीन) ने खबर दी, उन्हें हज़रत हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने खबर दी और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे बद्र की ग़नीमत में से मुझे एक और कैंटनी मिली थी और इसी जंग की ग़नीमत में से अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) का जो खुमुस के तौर पर हिस्सा मुकरर किया था, उसमें से भी हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे एक कैंटनी इनायत फ़र्माई थी। फिर मेरा इरादा हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की रुख़्सती करा लाऊँ। इसलिये बनी केनकाअ के एक सुनार से बातचीत की कि वो मेरे साथ चले और हम इज़्रर घास लाएँ। मेरा इरादा था कि मैं उस घास को सुनारों के हाथ बेच दूँगा और उसकी कीमत वलीमा की दा'वत में लगाऊँगा। मैं अभी अपनी कैंटनी के लिये पालान, टोकरे और रस्सियाँ जमा कर रहा था। कैंटनियों एक अंसारी सहाबी के हुजे के करीब बैठी हुई थीं। मैं जिन इतिज़ामात में था जब वो पूरे हो गये तो (कैंटनियों को लेने आया) वहाँ देखा कि उनके कोहान किसी ने काट दिये हैं और पेट चीरकर अंदर से कलेजी निकाल ली है। ये हालत देखकर मैं अपने आँसुओं को न रोक सका। मैंने पूछा, ये किसने किया है? लोगों ने बताया कि हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने और वो अभी उसी हुजे में अंसार के साथ शराबनोशी की एक मज्लिस में मौजूद हैं। उनके पास एक गाने वाली है और उनके दोस्त अहबाब हैं। गाने वाली गाते हुए जब ये मिस्रा पढ़ा हों ऐ हमज़ा! ये उम्दा और फ़र्बा कैंटनियों हैं तो हमज़ा ने कूद कर अपनी तलवार थामी और उन दोनों कैंटनियों के कोहान काट डाले और उनकी कोख चीरकर अंदर से कलेजी निकाल ली। हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं वहाँ से नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ, ज़ैद बिन हारि़ा भी हुज़ूर की खिदमत में मौजूद थे। हुज़ूर (ﷺ) ने मेरे ग़म को पहले ही जान लिया और फ़र्माया कि क्या बात पेश आई? मैं बोला, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आज जैसी तकलीफ़ की बात कभी पेश नहीं आई थी। हमज़ा (रज़ि.) ने मेरी दोनों कैंटनियों को पकड़कर उनके कोहान काट डाले और उनकी कोख चीर

اُخْرَةً اِنْ هَؤُلَاءِ قَالُوا: كَانَتْ لِي حَارِثٌ مِنْ نَضِيبِي مِنَ الْخَمْسِ يَوْمَ يَذَرُ. وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ اَعْطَانِي مِمَّا اَفَاءَ اللهُ عَلَيْهِ مِنَ الْخُمْسِ يَوْمَئِذٍ: فَلَمَّا ارَادَتْ اَنَّا اُنْتَبِي بِفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ بِنْتُ النَّبِيِّ ﷺ وَاعْدَتْ وَجَلًا صَوَاغًا لِي بِنِي قَيْشِقَاعٍ اَنْ يَرْجِلَ مَعِيَ قَالَتِي يَا ذِخْرٍ فَاَرَدْتُ اَنْ اَبْعَهُ مِنَ الصَّوَاغِينَ فَتَسْتَعِينُ بِهِ لِي وَلِيْمَةٌ غُرَبَى قَيْنَا اَنَا اَجْمَعُ لِشَارِقِي مِنَ الْاَقْبَابِ وَالْقُرَائِرِ وَالْحِيَالِ وَشَارِقَايَ مُنَاخَانَ اِلَى جَنْبِ حُجْرَةٍ رَجُلٍ مِنَ الْاَنْصَارِ حَتَّى جَمَعْتُ مَا جَمَعْتُهُ لِاِذَا اَنَا بِشَارِقِي قَدْ اَجِثْتُ اسْتَمْتُهُمَا وَبَقِرْتُ خَوَاصِرُهُمَا وَاحَدَهُ مِنْ اَكْبَادِهِمَا فَلَمَّ اَمْلِكُ عَنِّي حِينَ رَأَيْتُ الْمَنْظَرَ قُلْتُ مَنْ فَعَلَ هَذَا؟ قَالُوا: فَعَلَهُ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ وَهُوَ فِي هَذَا الْبَيْتِ فِي خَرْبٍ مِنَ الْاَنْصَارِ عِنْدَهُ قَيْنَةٌ وَاصْحَابُهُ فَقَالَتْ لِي غِيَابَهَا: (اَلَا يَا حَمْزُ لِلشُّرَفِ النَّوَاءِ) فَوُتِبَ حَمْزَةُ اِلَى السَّيْفِ فَاجَبَّ اسْتَمْتُهُمَا وَبَقِرَ خَوَاصِرُهُمَا وَاحَدَهُ مِنْ اَكْبَادِهِمَا قَالَ عَلِيٌّ: فَاَنْطَلَقْتُ حَتَّى اَدْخُلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَعِنْدَهُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ وَعَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ الَّذِي لَقِيتُ فَقَالَ: ((مَا لَكَ؟)) قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ غَدًا حَمْزَةُ عَلَى نَاقَتِي فَاجَبَّ اسْتَمْتُهُمَا وَبَقِرَ خَوَاصِرُهُمَا وَمَا هُوَ ذَا لِي

डाली है। वो यहीं एक घर में शराब की मजलिस जमाए बैठे हैं। हजूर (ﷺ) ने अपनी चादर मुबारक मंगवाई और उसे ओढ़कर आप तशरीफ ले चले। मैं और हज़रत ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) भी साथ साथ हो लिये। जब उस घर के करीब आप तशरीफ ले गये और हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ने जो कुछ किया था उस पर उन्हें तम्बीह फ़र्माई। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) शराब के नशे में मस्त थे और उनकी आँखें सुख् थीं। उन्होंने हजूर (ﷺ) की तरफ नज़र उठाई, फिर ज़रा और ऊपर उठाई और आपके घुटनों पर देखने लगे, फिर और नज़र उठाई और आपके चेहरे पर देखने लगे। फिर कहने लगे, तुम सब मेरे बाप के गुलाम हो। हजूर (ﷺ) समझ गये कि वो इस वक़्त मदहोश है, इसलिये आप फ़ौरन डलटे पाँव उस घर से बाहर निकल आए, हम भी आपके साथ थे। (राजेज़: 2089)

بَيْنَ مَعْدَ شَرِبَ لَذَا النَّبِيُّ ﷺ بِرَدَائِهِ
فَارْتَدَى ثُمَّ انْطَلَقَ يَمْشِي وَاتَّبَعَهُ أَنَا وَزَيْدُ
بْنُ حَارِثَةَ حَتَّى جَاءَهُ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْهِ
حَمْزَةً فَاسْتَاذَنَ عَلَيْهِ فَأَذِنَ لَهُ فَطَفِقَ النَّبِيُّ
ﷺ يَلُومُ حَمْزَةً لِيَمَّا قَعَلَ قِيَادًا حَمْزَةً
لِيَمَّا مَحْمَرَةً غِيَاةً فَتَنَظَرَ حَمْزَةً إِلَى النَّبِيِّ
ﷺ ثُمَّ صَعِدَ النَّظَرَ فَتَنَظَرَ إِلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ
صَعِدَ النَّظَرَ فَتَنَظَرَ إِلَى وَجْهِهِ. ثُمَّ قَالَ
حَمْزَةً: وَقُلْ أَنتُمْ إِلَّا عِيْدٌ لَأَيِّ؟ فَعَرَفَ
النَّبِيُّ ﷺ أَنَّهُ تَمَلَّ تَمَلَّكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ
عَلَى عَقْبَيْهِ الْفَقِيرُ فَنَجَّحَ وَخَرَجْنَا مَعَهُ.

[راجع: ٢٠٨٩]

तशरीह: उस वक़्त तक शराब की हुर्यत नाज़िल नहीं हुई थी। हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) ने हालते मदहोशी में ये काम कर दिया और जो कुछ कहा नशे की हालत में कहा। दूसरी रिवायत में है कि हम्ज़ा (रज़ि.) का नशा उतरने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने कैंटनियों की कीमत हज़रत अली (रज़ि.) को दिलवा दी थी। रिवायत में हज़रत अली (रज़ि.) को बदर का हिस्सा मिलने का ज़िक्र है। बाब और हदीष में यही वजह मुनासबत है।

4004. मुझसे मुहम्मद बिन अब्बाद ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन डययना ने ख़बर दी, कहा कि ये रिवायत हमें अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मअक़ल से सुना कि हज़रत अली (रज़ि.) ने सहल बिन हनीफ़ (रज़ि.) के जनाजे पर तक्बीर कही और कहा कि वो बदर की लड़ाई में शरीक थे।

٤٠٠٤ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُبَادٍ أَخْبَرَنَا
ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ : انْقَضَتْ لَنَا ابْنُ الْأَصْبَهَانِيِّ
سَمِعَهُ مِنْ ابْنِ مَقْبِلٍ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُ كَبَّرَ عَلَى سَهْلِ بْنِ خَنيفٍ فَقَالَ : إِنَّهُ
شَهِدَ بَدْرًا.

तशरीह: तक्बीरें तो सब ही के जनाजों पर कही जाती हैं, मगर हज़रत अली (रज़ि.) ने उनके जनाजे पर ज़्यादा तक्बीरें कहीं या'नी पाँच या छः जैसा कि दूसरी रिवायतों में है। गोया हज़रत अली (रज़ि.) ने ज़्यादा तक्बीरें कहने की वजह बयान की कि वो बद्री थे। उनको ख़ास दर्जा हासिल था। अगरचे जनाजे पर 5, 6, 7, तक तक्बीरें कही जाती हैं मगर आँहज़रत (ﷺ) का आखिरी अमल चार तक्बीरों का है इसलिये अब उन ही पर इज्मा'अे उम्मत है।

4005. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से सुना और उन्होंने इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से बयान किया कि जब हफ़्सा बिनते इमर (रज़ि.) के शौहर खुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी

٤٠٠٥ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ
عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ
اللَّهِ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا يُحَدِّثُ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ

(रजि.) की वफात हो गई, वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के अस्थाब में थे और बद्र की लड़ाई में उन्होंने शिकत की थी और मदीना में उनकी वफात हो गई थी। हज़रत उमर (रजि.) ने बयान किया कि मेरी मुलाकात उप्मान बिन अफ़फ़ान (रजि.) से हुई तो मैंने उनसे हप्सा का ज़िक्र किया और कहा कि अगर आप चाहें तो उसका निकाह मैं आपसे कर दूँ। उन्होंने कहा कि मैं सोचूँगा। इसलिये मैं चन्द दिनों के लिये ठहर गया, फिर उन्होंने कहा कि मेरी राय ये हुई है कि अभी मैं निकाह न करूँ। हज़रत उमर (रजि.) ने कहा कि फिर मेरी मुलाकात हज़रत अबूबक्र (रजि.) से हुई और उनसे भी मैंने यही कहा कि अगर आप चाहें तो मैं आपका निकाह हप्सा बन्ते उमर (रजि.) से कर दूँ। अबूबक्र (रजि.) ख़ामोश हो गये और कोई जवाब नहीं दिया। उनका ये तरीक़-ए-अमल उप्मान (रजि.) से भी ज़्यादा मेरे लिये बाज़िबे तकलीफ़ हुआ। कुछ दिनों मैंने और तवक्कुफ़ किया तो नबी करीम (ﷺ) ने खुद हप्सा (रजि.) का पैग़ाम भेजा और मैंने उनका निकाह हज़ूर (ﷺ) से कर दिया। उसके बाद अबूबक्र (रजि.) की मुलाकात मुझसे हुई तो उन्होंने कहा, शायद आपको मेरे इस तर्ज़े अमल से तकलीफ़ हुई होगी कि जब आपकी मुझसे मुलाकात हुई और आपने हप्सा (रजि.) के बारे में मुझसे बात की तो मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने कहा कि हाँ तकलीफ़ हुई थी। उन्होंने बताया कि आपकी बात का मैंने सिर्फ़ इसलिये कोई जवाब नहीं दिया था कि आँहज़रत (ﷺ) ने (मुझसे) हप्सा (रजि.) का ज़िक्र किया था (मुझसे मश्वरा लिया था कि क्या मैं इससे निकाह कर लूँ) और मैं आँहज़रत (ﷺ) का राज़ फ़ाश नहीं कर सकता था। अगर आप हप्सा (रजि.) से निकाह का इरादा छोड़ देते तो बेशक मैं उनसे निकाह कर लेता।

(दीगर मक़ाम : 5122, 5129, 5145)

اللّٰهُ عَنْهُ حِينَ تَأْتَمَّتْ حَفْصَةُ بِنْتُ عُمَرَ
مِنْ عَتَمَةِ بْنِ خَدَافَةَ السَّهْمِيِّ وَكَانَ مِنْ
أَصْحَابِ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ قَدْ جَاهَدَ بَنِي
تَوَلَّى بِالْمَدِينَةِ قَالَ عُمَرُ: فَلَقِيتُ عُثْمَانَ
بْنَ عَفَانَ فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ حَفْصَةَ فَقُلْتُ: إِنْ
شِئْتَ انْكِحْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتُ عُمَرَ قَالَ:
سَأَنْظُرُ فِي أَمْرِي فَلَقِيتُ لُبَّابِي فَقَالَ: لَقَدْ
بَدَأَ لِي إِنْ لَا أَنْزُجُ يَوْمِي هَذَا. قَالَ عُمَرُ
: فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ إِنْ شِئْتَ
الْكِحْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتُ عُمَرَ؟ فَصَمْتُ
أَبُو بَكْرٍ فَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيَّ شَيْئًا فَكُنْتُ عَلَيْهِ
أَوْجَدَ مِنِّي عَلَى عُثْمَانَ فَلَقِيتُ لُبَّابِي ثُمَّ
خَطَبَهَا رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ فَحَبَّهَا لِبَّابُ فَلَقِيتُ
أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: لَعَلَّكَ وَجَدْتَ عَلَيَّ حِينَ
عَرَضْتَ عَلَيَّ حَفْصَةَ فَلَمْ أَرْجِعْ إِلَيْكَ
قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: فَإِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي إِنْ
أَرْجِعْ إِلَيْكَ مِمَّا عَرَضْتَ إِلَّا أَنِّي قَدْ
عَلِمْتُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ قَدْ ذَكَرَهَا، فَلَمْ
أَكُنْ لِأَفْشِي سِرَّ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ وَلَوْ
تَرَكْتُهَا لَفُتِنْتُهَا.

[أطرافه في : 5122, 5129, 5145].

4006. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम क़स्साब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन अबान ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंसारी ने, उन्होंने अबू मसज़द बद्रि (रजि.) इक्बा बिन अमर अंसारी से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने

4006 - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ
عَدِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ سَمِعَ أَبَا
مَسْعُودَ الْبَدْرِيَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نَفَقَةُ
الرَّجُلِ عَلَى أَهْلِهِ صَدَقَةٌ)).

फ़र्माया, इंसान का अपने बाल-बच्चों पर खर्च करना भी बाज़िबे प्रवाब है।

रिवायत में हज़रत अबू मसऊद बद्री (रज़ि.) का ज़िक्र है। हदीष और बाब में यही मुताबक़त है।

4007. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्होंने इब्ना बिन जुबैर से सुना कि अमीरुल मोमिनीन इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) से उन्होंने उनके अहदे ख़िलाफ़त में ये हदीष बयान की कि मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) जब कूफ़ा के अमीर थे, तो उन्होंने एक दिन अमर की नमाज़ में देर की। इस पर ज़ैद बिन हसन के नाना अबू मसऊद उल्लबा बिन अमर अंसारी (रज़ि.) उनके यहाँ गये। वो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले सहाबा में से थे और कहा, आपको मा'लूम है कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) (नमाज़ का तरीक़ा बताने के लिये) आए और आपने नमाज़ पढ़ी और हुज़ूर (ﷺ) ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी, पाँचों वक़्त की नमाज़ें। फिर फ़र्माया कि इसी तरह मुझे हुक्म मिला है। बशीर बिन अबी मसऊद भी ये हदीष अपने वालिद से बयान करते थे। (राजेअ: 521)

तशरीह: अबू मसऊद (रज़ि.) की बेटी उम्मे बशर पहले सईद बिन ज़ैद बिन अमर बिन नुफ़ेल को मन्सूब थीं। बाद में हज़रत हसन (रज़ि.) ने उनसे निकाह कर लिया और उनके बतन से हज़रत ज़ैद बिन हसन (रज़ि.) पैदा हुए। अबू मसऊद (रज़ि.) बद्री थे। यही बाब से वजहे मुताबक़त है।

4008. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद नख़ई ने, उनसे अल्क़मा बिन यस्त्रा ने और उनसे अबू मसऊद बद्री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरह बक्रर: की दो आयतें (आमनरसूल से आख़िर तक) ऐसी हैं कि जो शख़्स रात में इन्हें पढ़ ले वो उसके लिये काफ़ी हो जाती हैं। अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि फिर मैंने अबू मसऊद (रज़ि.) से मुलाक़ात की, वो उस वक़्त बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे थे, मैंने उनसे इस हदीष के बारे में पूछा तो उन्होंने ये हदीष मुझसे बयान की।

4009. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें महमूद बिन रबीअ ने ख़बर दी कि हज़रत इत्बान बिन

4007 - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ سَمِعْتُ غُرُوثَ بْنِ الزُّبَيْرِ يُحَدِّثُ عَمْرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ فِي إِمَارَتِهِ أَخْرَ الْمُعْبِرَةَ بْنُ شُعْبَةَ الْقَضَرَ وَهُوَ أَمِيرُ الْكُوفَةِ فَدَخَلَ أَبُو مَسْعُودٍ غَفَّةَ بْنِ عَمْرِو الْأَنْصَارِيِّ جَدُّ زَيْدِ بْنِ حَسَنِ شَهِدَ بَدْرًا فَقَالَ : لَقَدْ عَلِمْتُ نَزَلَ جِبْرِيلُ عَلَيَّ السَّلَامُ فَصَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خَمْسَ صَلَوَاتٍ ثُمَّ قَالَ : هَكَذَا أَمِرْتُ. كَذَلِكَ كَانَ بَشِيرُ بْنُ أَبِي مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ. [راجع: 521]

4008 - حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عُلَقَمَةَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْبَدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((الْإِنْبَانِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ مَنْ قَرَأَهَا فِي لَيْلَةٍ كَفَّاهُ)) قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَلَقِيتُ أَبَا مَسْعُودٍ وَهُوَ يَطُوفُ بِالنِّبْتِ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِيهِ.

4009 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْظَرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ غَفِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الرَّبِيعِ أَنَّ عِيَّانَ بْنَ مَالِكٍ

मालिक (रज़ि.) जो नबी करीम (ﷺ) के सहाबी थे और वो बद्र में शरीक हुए थे और अंसार में से थे, नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए। (दूसरी सनद) (राजेअ: 424)

وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَمِنْ شُهَدَا بَدْرًا مِنَ الْأَنْصَارِ أَنَّهُ أَمَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ.

[راجع: ٤٢٤]

4010. हमसे अहमद ने बयान किया, जो झालेह के बेटे हैं, कहा हमसे अम्बसा इब्ने खालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया और उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर मैंने हुसैन बिन मुहम्मद अंसारी से जो बनी सालिम के शरीफ लोगों में से थे, महमूद बिन रबीअ की हदीस के बारे में पूछा जिसकी रिवायत उन्होंने इब्ने अब्दुल बिन मालिक (रज़ि.) से की थी तो उन्होंने भी इसकी तस्दीक की। (राजेअ: 424)

٤٠١٠ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ سَهْلٍ عَنْ شِهَابٍ، ثُمَّ سَأَلْتُ الْحُصَيْنَ بْنَ مُحَمَّدٍ وَهُوَ أَخُو بَنِي سَالِمٍ وَهُوَ مِنْ سَرَّابِهِمْ عَنْ حَدِيثِ مَخْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ عَنْ عِيَّانِ بْنِ مَالِكٍ فَصَدَّقَهُ. [راجع: ٤٢٤]

पूरी रिवायत किताबुससलात में गुज़र चुकी है। यहाँ इसका एक टुकड़ा इमाम बुखारी (रह) इसलिये लाए कि इब्ने अब्दुल बिन मालिक (रज़ि.) का बद्री होना प्रामाणिक हो।

4011. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमें शुऐब ने खबर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) ने खबर दी, वो क़बीला बनी अदी के सब लोगों में बड़े थे और उनके वालिद आमिर बिन रबीआ बद्र में नबी करीम (ﷺ) के साथ शरीक थे। (उन्होंने बयान किया कि) हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत कुदामा बिन मज़ऊन (रज़ि.) को बहरीन का आमिल बनाया था, वो कुदामा (रज़ि.) भी बद्र की जंग में शरीक थे और अब्दुल्लाह बिन उमर और हफ़सा (रज़ि.) के मामू थे।

٤٠١١ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ غَامِرٍ بْنُ رَيْعَةَ وَكَانَ مِنْ أَكْبَرِ بَنِي عَدِيٍّ وَكَانَ أَبُوهُ شَهِيدَ بَدْرًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ عُمَرَ اسْتَعْمَلَ قُدَامَةَ بْنَ مَطْعُونٍ عَلَى الْبَحْرَيْنِ وَكَانَ شَهِيدَ بَدْرًا وَهُوَ خَالَ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ وَخَفْصَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ.

तशरीह: अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ गो बनी अदी में से न थे मगर उनके हलीफ़ थे इसलिये उनको बनी अदी कह दिया। कुछ नुस्खों में बनी अदी के बदल बनी आमिर बिन रबीआ। जो सहाबी मशहूर हैं, उनके सब बेटों में अब्दुल्लाह बड़े थे। कहते हैं कि ये आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में पैदा हो चुके थे। अज़ली ने उनको शिका कहा है। हदीस में बद्री बुजुर्गों का ज़िक्र है यही बाब से वजह मुनासबत है।

हज़रत कुदामा बिन मज़ऊन (रज़ि.) जो रिवायत में मज़कूर हैं अहदे फ़ारूकी में बहरीन के हाकिम थे, मगर बाद में हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको मअज़ूल फ़र्माकर हज़रत उम्मान बिन अबुल आस (रज़ि.) को बहरीन का आमिल बना दिया था। हज़रत कुदामा (रज़ि.) की ये शिकायत थी कि वो नशाआवर चीज़ इस्तेमाल करते हैं। ये जुर्म प्रामाणिक होने पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने उन पर हद कायम की और उनको मअज़ूल कर दिया। फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि सफ़रे हज्ज में हज़रत कुदामा हज़रत उमर (रज़ि.) के साथ हो गये। एक शब ये सोकर उज्जलत में उठे और फ़र्माया कि फ़ौरन मेरे पास कुदामा को हाज़िर करो। मेरे पास ख़वाब में अभी एक आने वाला आया और कह गया है कि मैं कुदामा (रज़ि.) से सुलह कर लूँ। आप और वो इस्लामी भाई भाई हैं। चुनाँचे हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनसे सुलह सफ़ाई कर ली और वो पहली ख़लिफ़े दिल से निकाल दी। (क़स्तलानी)

4012, 13. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवेरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह) ने, उनसे जुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी, बयान किया कि हज़रत राफ़ेअ बिन खदीज (रज़ि.) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को खबर दी कि उनके दो चचाओं (जहीर और मज़हर राफ़ेअ बिन अदी बिन ज़ैद अंसारी के बेटों) जिन्होंने बद्र की लड़ाई में शिकस्त की थी, ने उन्हें खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़मीन को किराये पर देने से मना किया था। मैंने सालिम से कहा लेकिन आप तो किराया पर देते हो। उन्होंने कहा कि हाँ, हज़रत राफ़ेअ (रज़ि.) ने अपने ऊपर ज़्यादाती की थी। (राजेअ: 2339)

4012, 13. حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ اسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ أَنَّ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَهُ قَالَ: أَخْبَرَنَا رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ عُمَيْرَ وَكَانَا شَهِدَا بَدْرًا أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ كِرَامِ الْمَزَارِعِ قُلْتُ لِسَالِمٍ: فَكَيْفَ أَنْتَ؟ قَالَ: نَعَمْ. أَنِّي رَافِعًا أَكْثَرَ عَلَى نَفْسِي.

[راجع: 2339]

तशरीह: कि उन्होंने ज़मीन को मुत्लक किराया पर देना मना समझा। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने जिससे मना किया था, वो ज़मीन ही की पैदावार पर किराया को देने से या'नी मखसूस क़िल्आ की बटाई से मना किया था। लेकिन नफ़दा ठहराव से आपने मना नहीं किया वो दुरुस्त है। उसकी बहष किताबुल मज़ारेअ में गुज़र चुकी है। हदीष में बद्री सहाबियों का ज़िक्र है।

अल्लामा क़स्तलानी (रह) लिखते हैं व कानू यक्लूनल अर्ज़ बिमा यम्बुतु फ़ीहा अलल अर्ब आइ व हुवन्न हरूज़्मगीर औ शौउन लियस्त फ़ीहि साहिबुल अर्ज़ि मिनल मज़ारइ लिअजलिही फनहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन ज़ालिक लिमा फ़ीहि मिनल ज़हलि (क़स्तलानी) या'नी अहले अरब ज़मीन को इस तौर से किराया पर देते कि नालियों के पास वाली ज़राअत को या ख़ास ख़ास क़िल्आते अरज़ी को अपने लिये ख़ास कर लेते उसको रसूल करीम (ﷺ) ने मना फ़र्माया।

4014. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुज़ैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन शहाद बिन हाद लैज़ी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत रिफ़ाअ बिन राफ़ेअ अंसारी (रज़ि.) को देखा है। वो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे।

4014. حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ شَدَّادٍ بْنَ الْهَادِ اللَّيْثِيَّ قَالَ: رَأَيْتُ رِفَاعَةَ بْنَ رَافِعٍ الْأَنْصَارِيَّ وَكَانَ شَهِدًا بَدْرًا.

ये एक हदीष का टुकड़ा है जिसको इस्माईल ने पूरा निकाला है। उसमें यूँ है कि रिफ़ाअ ने नमाज़ शुरू करते वक़्त अल्लाहु अकबर कहा। दूसरे तरीक़ में यूँ है अल्लाहु अकबर कबीरा कहा। इमाम बुखारी (रह) ने पूरी हदीष इसलिये बयान नहीं की कि वो इस बाब से ग़ैर मुता'ल्लिक है दूसरे मौकूफ़ है।

4015. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक मख़ज़ी ने खबर दी, कहा हमको मअमर और यूनस दोनों ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने खबर दी, उन्हें हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने खबर दी कि हज़रत अमर बिन औफ़ (रज़ि.) जो बनी आमिर बिन लुअय के हलीफ़ थे और बद्र की लड़ाई में नबी करीम (ﷺ) के साथ शरीक थे।

4015. حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُبَارَكٍ مَخْزُومٍ وَهُوَ يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ الْمُسَوَّرَ بْنَ مَخْرَمَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَوْفٍ وَهُوَ خَلِيفَةُ بَنِي غَامِرٍ بْنِ لُؤَيٍّ وَكَانَ شَهِدًا

(ने बयान किया कि) हुजूर (ﷺ) ने अबू उबैदा बिन जराह (रज़ि.) को बहरीन, वहाँ का जिज़्या लाने के लिये भेजा। हुजूर (ﷺ) ने बहरीन वालों से सुलह की थी और उनपर अलाअ बिन हज़री (रज़ि.) को अमीर बनाया था, फिर हज़रत अबू उबैदा (रज़ि.) बहरीन से माल एक लाख दिरहम लेकर आए। जब अंसार को अबू उबैदा (रज़ि.) के आने की खबर हुई तो उन्होंने फ़ज़्र की नमाज़ हुजूर (ﷺ) के साथ पढ़ी। हुजूर (ﷺ) जब नमाज़ से फ़ारिग हुए तो तमाम अंसार आपके सामने आए। हुजूर (ﷺ) उन्हें देखकर मुस्कुराए और फ़र्माया, मेरा ख़याल है कि तुम्हें ये ख़बर मिल गई है कि अबू उबैदा (रज़ि.) माल लेकर आए हैं। उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर तुम्हें ख़ुशख़बरी हो और जिससे तुम्हें ख़ुशो होगी उसकी उम्मीद रखो। अल्लाह की क़सम! मुझे तुम्हारे बारे में मुहताजी से डर नहीं लगता, मुझे तो इसका डर है कि दुनिया तुम पर भी उसी तरह कुशादा कर दी जाएगी जिस तरह तुमसे पहलों पर कुशादा कर दी गई थी, फिर पहलों की तरह उसके लिये तुम आपस में रश्क करोगे और जिस तरह वो हलाक हो गये थे तुम्हें भी ये चीज़ हलाक करके रहेगी।

بَدَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِجَزْيَتِهِمَا وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ هُوَ صَاحِبَ أَهْلِ الْبَحْرَيْنِ وَأَمَرَ عَلَيْهِمُ الْعَلَاءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَسَمِعَتْ الْأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَأَوَّلُوا صَلَاةَ الْفَجْرِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا انْصَرَفَ تَفَرَّضُوا لَهُ فَتَسَبَّحُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ حِينَ رَأَوْهُ ثُمَّ قَالَ: ((إِطْعَمُوا مَنُومَكُمْ أَنْ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدِمَ بِشَيْءٍ؟)) قَالُوا أَجَلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: ((فَأَبْشِرُوا وَأَكَلُوا مَا نَسَرُّكُمْ فَوَ اللَّهِ مَا الْفَقْرُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ وَلَكِنِّي أَخْشَى أَنْ تُبْسِطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ قَبْلَكُمْ فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا وَتُهْلِكُكُمْ كَمَا أَهْلَكْتَهُمْ)).

ये हदीस बाबुल जिज़्या में गुजर चुकी है। यहाँ सिर्फ़ ये बताना है कि हज़रत अमर बिन अफ़ (रज़ि.) बन्नी सहाबी थे।

4016. हमसे अबुन नोअमान बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) हर तरह के साँप को मार डाला करते थे। (राजेअ : 3297)

٤٠١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الثَّغَمَانِ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ جَارِمٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقْتُلُ الْحَيَّاتِ كُلَّهَا.

[راجع: ٣٢٩٧]

4017. लेकिन जब अबू लुबाबा बशीर बिन अब्दुल मुंज़िर ने जो बद्र की लड़ाई में शरीक थे, उनसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने घर में निकलने वाले साँप के मारने से मना किया था तो उन्होंने भी उसे मारना छोड़ दिया था।

٤٠١٧- حَدَّثَنَا أَبُو لُبَابَةَ الْبَدْرِيُّ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ قَتْلِ جِنَانِ الْبُيُوتِ فَأَمْسَكَ عَنْهَا.

घरवाले साँपों की कुछ किस्में बेज़र होती हैं। फ़र्माने नबवी से वही साँप मुराद है। अबू लुबाबा बन्नी सहाबी का ज़िक्र मक्कसूद है।

4018. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे

٤٠١٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ

मुहम्मद बिन फुलैह ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक्बा ने कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार के चन्द लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इजाज़त चाही और अर्ज़ किया कि आप हमें इजाज़त अता करें तो हम अपने भांजे अब्बास (रज़ि.) का फ़िदया मुआफ़ कर दें लेकिन हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह की क़सम! उनके फ़िदये से एक दिरहम भी न छोड़ना। (राजेअ: 2537)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ عَنْ مُوسَى بْنِ غُفَّةَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ اسْتَأْذَنُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالُوا: إِنَّ لَنَا فَلَترًا لِابْنِ أَخِيْنَا عَبَّاسٍ فَدَاؤُهُ قَالَ: ((وَاللَّهِ لَا تَذَرُون مَنَّهُ دِرْهَمًا)). [راجع: ٢٥٣٧]

तशरीह: हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुहतरम चचा कुबूले इस्लाम से पहले बद्र की लड़ाई में कैद होकर आए थे, वो अंसार के भांजे इस रिस्ते से हुए कि उनकी दादी या'नी हज़रत अब्दुल मुतलिब की वालिदा माजिदा बानू नज्जार के कबीले में से थीं। इसी रिस्ते की बिना पर अंसार ने उनका फ़िदया मुआफ़ करना चाहा। मगर बहुत सो मस्लिहतों की बिना पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं बल्कि उनका फ़िदया पूरे तौर पर वसूल करो। आपने उनसे या'नी अब्बास (रज़ि.) से ये भी फ़र्माया था कि आप न सिर्फ़ अपना बल्कि अपने दोनों भतीजों अक़ील और नौफ़िल और अपने हलीफ़ इब्बा बिन अमर का फ़िदया भी अदा करें क्योंकि आप मालदार हैं। उन्होंने कहा कि मैं तो मुसलमान हूँ मगर मक्का के मुखिया ज़रार बने बिना फ़िदया मुआफ़ कर देगा। ज़ाहिर में तो आप उन मक्का वालों के साथ होकर मुसलमानों से लड़ने आए। कहते हैं कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) को कअब बिन अमर अंसारी (रज़ि.) ने पकड़ा और ज़ोर से मर्के कस दीं। वो इस तकलीफ़ से हाय-हाय करते रहे। उनकी आवाज़ सुनकर आँहज़रत (ﷺ) को रात नींद नहीं आई। आखिर शिहाबा (रज़ि.) ने उनकी मर्के ढीली कर दीं। तब आप आराम से सोये, सुबह को अंसार ने आपको मज़ीद खुश करने के लिये उनका फ़िदया भी मुआफ़ करना चाहा और कहा कि हम खुद अपने पास से इनका फ़िदया अदा कर देंगे लेकिन ये इस्लाम के खिलाफ़ था इसलिये आपने मंज़ूर नहीं किया। इस हदीष से बाब की मुनासबत ये है कि उसमें कई अंसारी आदमियों का जंगे बद्र में शरीक होना मज़कूर है। उनके नाम मज़कूर नहीं है।

4019. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, उनसे जुहरी ने, उनसे अत्ता बिन यज़ीद लैषी ने, उनसे इब्बैदुल्लाह बिन अदी ने और उनसे हज़रत मिक्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) ने। (दूसरी सनद) इमाम बुखारी ने कहा और मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम बिन सअद ने, उनसे इब्ने शिहाब के भतीजे (मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह) ने, अपने चचा (मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन शिहाब) से बयान किया, उन्हें अत्ता बिन यज़ीद लैषी घुमुल जुन्दई ने ख़बर दी, उन्हें इब्बैदुल्लाह बिन अदी बिन ख़य्यार ने ख़बर दी और उन्हें मिक्दाद बिन अमर कुन्दी (रज़ि.) ने, वो बनी जुहरा के हलीफ़ थे और बद्र की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। उन्होंने ख़बर दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया अगर किसी मौक़ा पर मेरी किसी काफ़िर से टक्कर हो जाए और हम दोनों एक-दूसरे को क़त्ल करने की कोशिश में लग जाएँ और वो मेरे एक हाथ पर तलवार मारकर

٤٠١٩- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ الْمِقْدَادِ بْنِ الْأَسْوَدِ حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّيْثِيُّ ثُمَّ الْجَدْعِيُّ أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْخُبَّارِ أَخْبَرَهُ أَنَّ الْمِقْدَادَ بْنَ عَمْرِو الْكِنْدِيَّ وَكَانَ حَلِيفًا لِيْنِي وَهَرَّةً وَكَانَ مِنْ شُهَدَاءِ بَلَدِنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ

उसे काट डाले, फिर वो मुझसे भागकर एक पेड़ की पनाह लेकर कहने लगे, मैं अल्लाह पर ईमान ले आया। तो क्या या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उसके इस इकरार के बाद फिर भी मैं उसे क़त्ल कर दूँ? हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम उसे क़त्ल नहीं करना। उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! वो पहले मेरा एक हाथ भी काट चुका है? और ये इकरार मेरे हाथ काटने के बाद किया है? आपने फिर भी यही फ़र्माया कि उसे क़त्ल न कर, क्योंकि अगर तूने उसे क़त्ल कर डाला तो उसे क़त्ल करने से पहले जो तुम्हारा मक़ाम था अब उसका वो मक़ाम होगा और तुम्हारा मक़ाम वो होगा जो उसका मक़ाम उस वक़्त था जब उसने इस कलिमा का इकरार नहीं किया था। (दीगर मक़ाम: 6865)

أَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَزَانَتْ إِنْ لَقِيتُ رَجُلًا مِنَ الْكُفَّارِ فَاقْتُلْتَنِي فَعَرَبَ أَخَذَنِي بِذِي السِّيفِ فَقَطَعَهَا ثُمَّ لَأَذَ مِنِّي بِشَجَرَةٍ. فَقَالَ: اسْلُمْتُ لَكَ أَقْبَلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ بَعْدَ أَنْ قَالَهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَقْتُلْهُ)) فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ قَطَعَ أَخَذَنِي بِذِي ثُمَّ قَالَ ذَلِكَ بَعْدَ مَا قَطَعَهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَقْتُلْهُ فَإِنْ قَتَلْتَهُ فَإِنَّهُ بِمَنْزِلِكَ قَبْلَ أَنْ تَقْتُلَهُ وَإِنَّكَ بِمَنْزِلَيْهِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ كَلِمَةَ الَّتِي قَالَ)). [طرفه في: ٦٨٦٥].

तू उसके क़त्ल करने से पहले जैसे मुसलमान मा'सूम मरहूम था ऐसे ही इस्लाम का कलिमा पढ़ने से वो मुसलमान मा'सूम मरहूम हो गया। पहले उसका मार डालना दुरुस्त था ऐसे ही अब उसके कि़सास में तेरा मार डालना दुरुस्त हो जाएगा।

4020. मुझसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने इलथ्या ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, कहा हमसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई के दिन फ़र्माया, कौन देखकर आएगा कि अबू जहल के साथ क्या हुआ? अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) उसके लिये खाना हुए और देखा कि उफ़रा के दोनों बेटों ने उसे क़त्ल कर दिया है और उसकी लाश ठण्डी होने वाली है। उन्होंने पूछा, अबू जहल तुम ही हो? इब्ने इलथ्या ने बयान किया कि सुलैमान ने उसी तरह बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने पूछा था कि तू ही अबू जहल है? इस पर उसने कहा, क्या इससे भी बड़ा कोई होगा जिसे तुमने आज क़त्ल कर दिया है? सुलैमान ने बयान किया, कहा कि या उसने यूँ कहा, जिसे उसकी क़ौम ने क़त्ल कर दिया है? (क्या इससे भी बड़ा कोई होगा) कहा कि अबुल मिज़लज़ ने बयान किया कि अबू जहल ने कहा, काश! एक किसान के सिवा किसी और ने मारा होता। (राजेअ: 3962)

٤٠٢٠ - حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْمٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّمِيمِيُّ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ رَضِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ ((مَنْ يَنْظُرُ مَا صَنَعَ أَبُو جَهْلٍ)) فَانْطَلَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَوَجَدَهُ قَدْ ضَرَبَهُ ابْنَا عَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ فَقَالَ أَنْتَ أَبَا جَهْلٍ؟ قَالَ ابْنُ عُثَيْمٍ قَالَ سُلَيْمَانُ: بِكَذَا قَالَهَا أَنَسُ، قَالَ: أَنْتَ أَبَا جَهْلٍ؟ قَالَ وَهَلْ فَوْقَ رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ؟ قَالَ سُلَيْمَانُ: أَوْ قَالَ قَتَلْتَهُ قَوْمُهُ. قَالَ: وَقَالَ أَبُو مِخْلَزٍ قَالَ أَبُو جَهْلٍ: فَلَوْ غَيْرُ أَكْبَرَ قَتَلَنِي. [راجع: ٣٩٦٢]

तशरीह: इस मरदूद को ये रंज हुआ कि मदीना के काश्तकारों के हाथ से क्यूँ मारा गया? काश! किसी रईस के हाथ से मारा जाता। ये क़ौमी ऊँच नीच का तसव्वुर अबू जहल के दिमाग में आखिर वक़्त तक समाया हुआ रहा जो मुसलमान

आज ऐसी क़ौमी ऊँच नीच के तसव्वुरात में गिरफ़्तार हैं उनको सोचना चाहिये कि वो अबू जहल की खूब बद में गिरफ़्तार हैं। इस्लाम ऐसे ही ग़लत तसव्वुरात को ख़त्म करने आया स़द अफ़सोस कि खुद मुसलमान भी ऐसे ग़लत तसव्वुरात में गिरफ़्तार हो गये। अक्कार का तर्जुमा मौलाना वहीदुज्जमाँ (रह) ने लफ़्जे कमीने से किया है। गोया अबू जहल ने काश्तकारों को लफ़्जे कमीने से याद किया।

4021. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो मैंने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा आप हमें साथ लेकर हमारे अंसारी भाइयों के यहाँ चलें, फिर हमारी मुलाक़ात दो नेकतरीन अंसारी सहाबियों से हुई जिन्होंने बद्र की लड़ाई में शिक़त की थी अब्दुल्लाह ने कहा, फिर मैंने इस हदीस का तज़क़िरा इब्ना बिन जुबैर से किया तो उन्होंने बताया कि वो दोनों सहाबी इवेम बिन साअदा और मअन बिन अदी (रज़ि.) थे। (राजेअ: 2462)

4022. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल से सुना, उन्होंने इस्माईल इब्ने अबी ख़ालिद से, उन्होंने क़ैस बिन अबी हज़िम से कि बद्री सहाबी का (सालाना) वज़ीफ़ा पाँच पाँच हज़ार था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं उन्हें (बद्री सहाबा को) उन सहाबियों पर फ़ज़ीलत दूँगा जो उनके बाद ईमान लाए।

तशरीह: मा'लूम हुआ बद्री सहाबा ग़ैर बद्री से अफ़ज़ल हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने मुहाजिरीन के लिये साल में दस हज़ार और अंसार के लिये साल में आठ हज़ार और अज्वाजे मुतहहरा के लिये साल में 24 हज़ार मुकरर किये थे। ये सहीह इस्लामी ख़िलाफ़ते राशिदा की बरक़त थी और उनके बैतुलमाल का सहीह तरीन मसरफ़ था। स़द अफ़सोस कि ये बरक़त इरूजे इस्लाम के साथ ख़ास़ होकर रह गई। आज़ दौर तनज़ुल में ये सब ख़्वाब व ख़याल की बातें मा'लूम होती हैं। कुछ इस्लामी तंज़ीमों में बैतुलमाल का नाम लेकर खड़ी होती हैं। ये तंज़ीमों अगर सहीह तौर पर कायम हों बहरहाल अच्छी है मगर वो बात कहाँ मौलवी मदन की सी।

4023. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मैंने सुना, आप मस्जिद की नमाज़ में सूरह वत़्त्तूर की तिलावत कर रहे थे, ये पहला मौक़ा था जब मेरे दिल में ईमान ने क़रार पकड़ा। और इसी सनद से जुहरी से मरवी है,

٤٠٢١- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنِ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ لَمَّا تَوَلَّى النَّبِيُّ ﷺ قُلْتُ لِأَبِي بَكْرٍ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى إِخْوَانِنَا مِنَ الْأَنْصَارِ فَلَقِينَا مِنْهُمْ رَجُلَانِ صَالِحَانِ شَهِدَا بَدْرًا فَحَدَّثْتُ عُرْوَةَ ابْنَ الزُّبَيْرِ فَقَالَ : هُمَا عُمَرُ بْنُ مَاعِدَةَ وَمَعْنُ بْنُ عَدِيٍّ. [راجع: ٢٤٦٢]

٤٠٢٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ مُحَمَّدَ بْنَ فُضَيْلٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ كَانَ عَطَاءَ الْبَدْرِيِّنَ خُمْسَةَ آلَافٍ وَقَالَ عُمَرُ : لَأُفَضِّلَنَّهُمْ عَلَى مَنْ بَعْدَهُمْ.

٤٠٢٣- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالطُّورِ وَذَلِكَ أَوَّلُ مَا وَقَرَّ الْإِيمَانُ فِي

उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने और उनसे उनके वालिद (जुबैर बिन मुतइम रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र के क़ैदियों के बारे में फ़र्माया था, अगर मुतइम बिन अदी (रज़ि.) ज़िन्दा होते और इन पलीद क़ैदियों के लिये सिफ़ारिश करते तो मैं उन्हें उनके कहने से छोड़ देता। (राजेअ: 765)

4024. और लैज़ ने यहा बिन सईद अंसारी से बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि पहला फ़साद जब बरपा हुआ था'नी हज़रत इब्मान (रज़ि.) की शहादत का तो उसने अम्हाबे बद्र में से किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा, फिर जब दूसरा फ़साद बरपा हुआ था'नी हर्रा का, तो उसने अम्हाबे हुदेबिया में से किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा, फिर तीसरा फ़साद बरपा हुआ तो वो उस वक़्त तक नहीं गया जब तक लोगों में कुछ भी ख़ूबी या अक्ल बाक़ी थी। (राजेअ: 3139)

तशरीह: जब हज़रत जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) बद्र के क़ैदियों में कैद होकर आए और मस्जिदे नबवी के करीब मुकय्यद (बन्दी) हुए तो उन्होंने मस्जिद की नमाज़ में आँहज़रत (ﷺ) से सूरह वत़् तूर की क़िरात सुनी और वो बाद में उससे मुताफ़्फ़िर होते हुए मुसलमान हो गये। इसी से हदीस की मुनासबत बाब से निकल आई। मुतइम बिन अदी (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) पर कुछ एहसान किया था। जब आप ताईफ़ से लौटते तो उसकी पनाह में दाख़िल हो गये थे। मुतइम (रज़ि.) ने आप (ﷺ) की हिफ़ाज़त के लिये अपने चार बेटों को मुसल्लह (हथियारबंद) करके क़अबे के चारो कोनों पर खड़ा कर दिया था। कुरैश ये मंज़र देखकर डर गये और कहने लगे कि हम मुतइम की पनाह नहीं तोड़ सकते। कुछ ने कहा है कि मुतइम (रज़ि.) ने वो अहदनामा ख़त्म कराया था, जो कुरैश ने बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुतलिब के खिलाफ़ किया था। हज़रत इब्मान ग़नी (रज़ि.) की शहादत का वाक़िया इस्लाम में पहला फ़साद है। जो जुम्आ के दिन आठवीं ज़िलहिज्ज को बरपा हुआ। जिसके बारे में हज़रत सईद बिन मुसय्यिब का क़ौल बक़ौल अल्लामा दाऊदी सरीह ग़लत है इस फ़साद के बाद भी बहुत से बद्र सहाबा ज़िन्दा थे। कुछ ने कहा पहले फ़साद से उनकी मुराद हज़रत हुसैन (रज़ि.) की शहादत है और दूसरे से हर्रा का फ़साद, जिसमें यज़ीद की फ़ौज ने मदीना पर हमला किया था। तीसरे फ़साद से अज़ारिका का फ़साद मुराद है। जो इराक़ में हुआ था। कुछ ने यँ जवाब दिया है कि सईद बिन मुसय्यिब का मतलब ये है कि पहले फ़साद था'नी क़त्ले इब्मान (रज़ि.) से लेकर दूसरे फ़साद हर्रा तक कोई बद्र सहाबी बाक़ी नहीं रहा था। ये सहीह है वयूँ कि बद्रियों के आख़िर में सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) का इंतिकाल हुआ है, वो भी हर्रा के वाक़िये से पहले ही गुजर चुके थे। तीसरे फ़साद से कुछ लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की शहादत मुराद ली है। आख़िरी इबारत का मतलब ये है कि इस फ़िले ने तो सहाबा का वजूद बिलकुल ख़त्म कर दिया जिसके बाद कोई सहाबी दुनिया में बाक़ी नहीं रहा।

4025. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन इमर नुमेरी ने बयान किया, कहा हमसे यूनस बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि मैंने जुहरी से सुना, कहा कि मैंने इर्वा बिन जुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अलक़मा बिन वक्कास

قُلَيْبٍ. وَعَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَبْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: لِي أَسَارَى بَنَدَرٍ: ((لَوْ كَانَ الْمُطْعِمُ بْنُ عَبْدِ حَيٍّ لَمْ كَلَعْنِي لِي هَؤُلَاءِ النَّبِيِّ لَتَرَكْتَهُمْ لَه)). [راجع: ٧٦٥]

٤٠٢٤- وَقَالَ اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ الْأُولَى يَغْنِي مَقْتَلُ عُثْمَانَ فَلَمْ تَبْقَ مِنْ أَصْحَابِ بَنَدَرٍ أَحَدٌ ثُمَّ وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ الثَّانِيَةُ يَغْنِي الْحَرَّةَ فَلَمْ تَبْقَ مِنْ أَصْحَابِ الْحُدَيْبِيَةِ أَحَدٌ ثُمَّ وَقَعَتِ الثَّالِثَةُ، فَلَمْ تَرْفَعْ وَلِلنَّاسِ طَبَاحٌ. [راجع: ٣١٣٩]

٤٠٢٥- حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ النَّعْمَرِيُّ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ

और अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) की तोहमत के बारे में सुना, उनमें से हर एक ने मुझसे इस वाकिया का कोई हिस्सा बयान किया। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया था कि मैं और उम्मे मिस्तह बाहर क़ज़ाए हाज़त को जा रहे थे कि उम्मे मिस्तह (रज़ि.) अपनी चादर में उलझकर फिसल पड़ी। इस पर उनकी जुबान से निकला, मिस्तह का बुरा हो। मैंने कहा, आपने अच्छी बात नहीं कही। एक ऐसे शख्स को आप बुरा कहती हैं जो बद्र में शरीक हो चुका है। फिर उन्होंने तोहमत का वाकिया बयान किया।

(राजेअ: 93)

मिस्तह (रज़ि.) जंगे बद्र में शरीक थे इससे बाब का तर्जुमा निकला हज़रत आइशा (रज़ि.) पर मुनाफ़िक़ीन ने जो तोहमत लगाई थी उसकी तरफ़ इशारा है।

4026. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्बा ने और उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया। ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के ग़ज़्वात का बयान था। फिर उन्होंने बयान किया कि जब (बद्र के) कुफ़्रफ़ार मक्कतूलीन कुँएँ में डाले जाने लगे तो रसूल करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुमने इस चीज़ को पा लिया जिसका तुमसे तुम्हारे ख़ब ने वा'दा किया था? मूसा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि इस पर हुज़ूर अकरम (ﷺ) के चन्द सहाबा ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप ऐसे लोगों को आवाज़ दे रहे हैं जो मर चुके हैं? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, जो कुछ मैंने उनसे कहा है उसे ख़ुद तुमने भी उनसे ज़्यादा बेहतर तरीक़े पर नहीं सुना होगा। अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुख़ारी) ने कहा कि कुरैश (सहाबा) के जितने लोग बद्र में शरीक हुए थे और जिनका हिस्सा भी (इस ग़नीमत में) लगा था, उनकी ता'दाद इक्यासी थी। उर्वा बिन जुबैर बयान करते थे कि हज़रत जुबैर (रज़ि.) ने कहा, मैंने (उन मुहाजिरीन के हिस्से) तक्सीम किये थे और उनकी ता'दाद सौ थी और ज़्यादा बेहतर इल्म अल्लाह तआला को है।

(राजेअ: 1370)

तबरानी और बज़ार ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत की है कि बद्र के दिन मुहाजिरीन का शुमार 77 आदमियों का था।

قَالَ: سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ وَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنَ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ كُلُّ حَدَّثِي طَائِفَةٌ مِنَ الْحَدِيثِ قَالَتْ: مَا قَالْتُ أَنَا وَأُمِّ مِسْطَعٍ لَقَرَّتْ أُمِّ مِسْطَعٍ لِي مِرْطَلًا فَقَالَتْ: تَمَسَّ مِسْطَعٌ، فَقُلْتُ: بَسْ مَا قُلْتُ تَسْنِينَ رَجُلًا بَدْرًا فَذَكَرَ حَدِيثَ الْإِفْلَاقِ. [راجع: ٩٣]

٤٠٢٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ أَبِي شِهَابٍ قَالَ : هَذِهِ مُعَاذِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ يُلْقِيهِمْ ((مَلَّ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَكُمْ رَبُّكُمْ حَقًّا)). قَالَ عَوْسَى قَالَ نَافِعٌ : قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: قَالَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ تَنَادَى نَاسًا أَمْوَالًا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا قُلْتُ مِنْهُمْ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ فَجَمِيعٌ مَنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنْ قُرَيْشٍ مِنْ طَرِبٍ لَهُ بِسَهْمِهِ أَحَدٌ وَ قَمَاتُونَ رَجُلًا. وَكَانَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ يَقُولُ: قَالَ الزُّبَيْرُ قَسَمْتُ سَهْمَانَهُمْ فَكَانُوا مِائَةً وَاللَّهُ أَعْلَمُ.

[راجع: ١٣٧٠]

4027. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने खबर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें हिशाम बिन उर्वान ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हजरत जुबेर (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र के दिन मुहाजिरीन के सौ हिस्से लगाए गये थे।

बाब 12 : बतर्तीब हुरूफे तहज्जी, उन अस्हाबे किराम के नाम जिन्होंने जंगे बद्र में शिकत की थी और जिन्हें अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी) अपनी इस जामे अ किताब में जिक्र करते हैं जिसको उन्होंने मुरत्तब किया है (या'नी यही सहीह बुखारी)

(1) अन्नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल हाशमी (ﷺ) (2) अयास बिन बुकैर (रज़ि.) (3) अबूबक्र सिदीक अल कुशी (रज़ि.) के गुलाम बिलाल बिन रिबाह (रज़ि.) (4) हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब अल हाशमी (रज़ि.) (5) कुरैश के हलीफ हातिब बिन अबी बलत्ता (रज़ि.) (6) अबू हुज़ैफा बिन उत्बा बिन रबीआ अल कुशी (रज़ि.) (7) हारिषा बिन रबीआ अंसारी (रज़ि.), उन्होंने बद्र की जंग में शहादत पाई थी। उनको हारिषा बिन सुराक्का भी कहते हैं। ये जंगे बद्र के मैदान में सिर्फ तमाशाई की हैषियत से आए थे (कम उम्री की वजह से, लेकिन बद्र के मैदान में ही उनको एक तीर कुफ़ार की तरफ से आकर लगा और उसी से उन्होंने शहादत पाई) (8) ख़ुबेब बिन अदी अंसारी (रज़ि.) (9) ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा अस्सहमी (रज़ि.) (10) रफ़ाआ बिन राफ़ेअ अंसारी (रज़ि.) (11) रफ़ाआ बिन अब्दुल मुज़िर अबू लबाबा अंसारी (रज़ि.) (12) जुबेर बिन अवाम अल कुशी (रज़ि.) (13) जैद बिन सहल अबू तलहा अंसारी (रज़ि.) (14) अबू जैद अंसारी (रज़ि.) (15) सअद बिन मालिक जुहरी (रज़ि.) (16) सअद बिन ख़ौला अल कुरशी (रज़ि.) (17) सहल बिन हनीफ़ अंसारी (रज़ि.) (19) जुहैर बिन राफ़ेअ अंसारी (रज़ि.) (20) और उनके भाई अब्दुल्लाह बिन इप्मान (रज़ि.) (21) अबूबक्र सिदीक अल कुरशी (रज़ि.) (22) अब्दुल्लाह बिन मसऊद अल हुजली (रज़ि.) (23) इत्बा बिन मसऊद अल हुजली (रज़ि.) (24)

٤٠٢٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَقْمَرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الزُّبَيْرِ قَالَ عُرِيتْ يَوْمَ بَدْرٍ لِلْمُهَاجِرِينَ بِمِائَةِ سَهْمٍ.

١٣- بَابُ تَسْمِيَةِ مَنْ سُمِّيَ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ.

فِي الْجَامِعِ الَّذِي وَصَفَهُ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ عَلَى خُرُوفِ الْمُعْجَمِ النَّبِيِّ مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْهَاشِمِيُّ، إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْبَكْرِ، بِلَالُ بْنُ رِجَاحٍ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ الْفَرَسِيُّ، جُمَرَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ الْهَاشِمِيُّ، حَاطِبُ بْنُ أَبِي بَلْطَةَ خَلِيفَ الْفَرَسِيِّ، أَبُو جَدَلَةَ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَبِيعَةَ الْفَرَسِيُّ، حَارِثَةُ بْنُ الرَّبِيعِ الْأَنْصَارِيُّ قُتِلَ يَوْمَ بَدْرٍ وَهُوَ حَارِثَةُ بْنُ سُرَّاقَةَ كَانَ فِي النَّظَارَةِ، غَسْبَةُ بْنُ عُذَيٍّ الْأَنْصَارِيُّ، غَسْبَةُ بْنُ حَذَافَةَ السَّهْمِيِّ، رِفَاعَةُ بْنُ رَافِعِ الْأَنْصَارِيِّ، رِفَاعَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُتَّلِبِ، أَبُو لُبَابَةَ الْأَنْصَارِيُّ، الزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ الْفَرَسِيُّ، زَيْدُ بْنُ سَهْلٍ، أَبُو طَلْحَةَ الْأَنْصَارِيُّ، أَبُو زَيْدٍ الْأَنْصَارِيُّ، سَعْدُ بْنُ مَالِكٍ الزُّهْرِيُّ، سَعْدُ بْنُ عَوَّلَةَ الْفَرَسِيُّ، سَعِيدُ بْنُ زَيْدِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ نُفَيْلٍ الْفَرَسِيُّ، سَهْلُ بْنُ حَنْفِيٍّ الْأَنْصَارِيُّ، ظَهْرُ بْنُ رَافِعِ الْأَنْصَارِيِّ وَأَخُوهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثْمَانَ أَبُو بَكْرٍ الْفَرَسِيُّ، عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ الْهَذَلِيُّ، عُبَيْدَةُ بْنُ مَسْعُودٍ

अब्दुर्रहमान बिन औफ अजुहरी (रज़ि.) (25) उबैदा बिन हारिष अल कुरशी (रज़ि.) (26) उबादा बिन सामित अंसारी (रज़ि.) (27) इमर बिन खत्ताब अल अदवी (रज़ि.) (28) इप्मान बिन अफ़फ़ान अल कुरशी (रज़ि.) उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी साहबजादी (जो उनके घर में थीं) की तीमारदारी के लिये मदीना मुनव्वरा ही मैं छोड़ा था लेकिन बद्र की ग़नीमत में आपका भी हिस्सा लगाया था। (29) अली बिन अबी तालिब अल हाशमी (रज़ि.) (30) बनी आमिर बिन लूई के हलीफ़ अमर बिन औफ़ (रज़ि.) (31) इक्बाल बिन अमर अंसारी (रज़ि.) (32) आमिर बिन रबीआ अल कुरशी (रज़ि.) (33) आसिम बिन घाबित अंसारी (रज़ि.) (34) इवेम बिन साएदा अंसारी (रज़ि.) (35) इत्वान बिन मालिक अंसारी (रज़ि.) (36) कुदामा बिन मज़ऊन (रज़ि.) (37) क़तादा बिन नोअमान अंसारी (रज़ि.) (38) मुआज़ बिन अमर बिन जमूह (रज़ि.) (39) मुअव्वज़ बिन इफ़रा (रज़ि.) (40) और उनके भाई मुआज़ (रज़ि.) (41) मालिक बिन रबीआ अबू उसेद अंसारी (रज़ि.) (42) मुरारह बिन रबीआ अंसारी (रज़ि.) (43) मअन बिन अदी अंसारी (रज़ि.) (44) मिस्तह बिन उषाषा बिन अब्बाद बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ (रज़ि.) (45) मिक्दाद बिन अमर अल कुन्दी (रज़ि.)। बनी जुहुरा के हलीफ़ (46) और हिलाल बिन अबी उमय्या अंसारी (रज़ि.)।

الْهَذَلِيُّ، عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ الزُّهْرِيُّ، عُبَيْدَةُ بْنُ الْحَارِثِ الْفَرَسِيُّ، عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ الْأَنْصَارِيُّ، عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، غُثَمَانُ بْنُ عُفَانَ الْفَرَسِيُّ، خَلْفَةُ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى الْبَيْتِ وَضَرَّتْ لَهُ بِسَهْمِهِ، عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ الْهَاشِمِيُّ، عَمْرُو بْنُ عَوْفٍ خَلِيفُ بَنِي عَامِرٍ بْنِ لُؤَيٍّ، عُقْبَةُ بْنُ عَمْرِو الْأَنْصَارِيِّ، عَامِرُ بْنُ رَبِيعَةَ الْعَنْزِيُّ، عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ الْأَنْصَارِيُّ، عُوَيْمُ بْنُ سَاعِدَةَ الْأَنْصَارِيِّ، عِثْبَانُ بْنُ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيُّ، قُدَامَةُ بْنُ مَطْفُونٍ، قَتَادَةُ بْنُ النُّعْمَانِ الْأَنْصَارِيُّ، مُعَاذُ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوحِ، مُعَاوِذُ بْنُ عَفْرَاءَ وَأَخُوهُ، مَالِكُ بْنُ رَبِيعَةَ أَبُو أَسِيدٍ الْأَنْصَارِيُّ، مُرَارَةُ بْنُ الرَّبِيعِ الْأَنْصَارِيُّ، مَعْنُ بْنُ عَدِيٍّ الْأَنْصَارِيُّ، مُسْطَحُّ بْنُ أَثَانَةَ بْنِ عُبَادِ بْنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ مَنَافٍ، مُقْدَادُ بْنُ عَمْرِو الْكُنْدِيُّ خَلِيفُ بَنِي زُهْرَةَ، هِلَالُ بْنُ أُمَيَّةَ الْأَنْصَارِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ.

तशरीह: इस बाब का मतलब ये है कि ऊपर के बाब में या इस किताब में और किसी मुक़ाम पर जिन जिन सहाबा को बरी कहा गया है उनके नामों की फ़ेहरिस्त बतर्तीबे हुरूफ़े तहज़ी इस बाब में मज़कूर है क्योंकि बहुत से बरी सहाबियों के नाम इस फ़ेहरिस्त में नहीं हैं न ये गर्ज़ है कि इस किताब में जिन जिन बरी सहाबा से रिवायत है उनकी फ़ेहरिस्त इस बाब में

बयान की गई है क्योंकि अबू उबैदा इब्ने जराह (रज़ि.) बिल इतिफाक बद्री हैं और इस किताब में उनसे रिवायतें भी हैं। मगर उनका नाम फ़ेहरिस्त में शरीक नहीं है क्योंकि अबू उबैदा (रज़ि.) की निस्बत इस किताब में कहीं ये सराहत नहीं आई है कि वो भी बद्र की लड़ाई में शरीक थे। अब इस फ़ेहरिस्त में आँहज़रत (ﷺ) के नाम मुबारक के साथ खुलफ़-ए-अरब आ के नाम भी शुरू में मज़कूर हुए हैं।

आँहज़रत (ﷺ) समेत यहाँ सब 46 आदमी मज़कूर हैं। हाफ़िज़ अबुल फ़तह ने कुरैश में से 94 और ख़ज़रज क़बीले के 95 और ओस क़बीले के 74 कुल 363 आदमियों के नाम लिखे हैं। हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने तर्तीब हुरूफ़े मुअजम से आँहज़रत (ﷺ) और खुलफ़-ए-राशिदीन के अस्माए ग़िरामी उनके शफ़े मरातिब के लिहाज़ से लिख दिये हैं बाद में हुरूफ़े हिजाअ की तर्तीब शुरू फ़र्माई है। ज़ज़ाहुल्लाहु ख़ैरन फ़िल्आख़िरति। मुबारक हैं वो इमान वाले जो इस पाकीज़ा किताब का जोक व शौक के साथ मुतालआ फ़र्माते हैं। हज़रत इल्बा बिन मसरूद हुज़ली का नाम बद्रियों में नहीं है और बुखारी शरीफ़ के अक़्ब़र दूसरे नुस्खों में भी नहीं है लेकिन क़स्तलानी में है जो शायद सहे कातिब (लिखने वाले की भूल) है।

बाब 14 : बनू नज़ीर के यहूदियों के वाक़िये का बयान

और रसूलुल्लाह (ﷺ) का दो मुसलमानों की दियत के सिलसिले में उनके पास जाना और आँहज़रत (ﷺ) के साथ उनका दगाबाज़ी करना। जुहरी ने उर्वा से बयान किया कि ग़ज़्व-ए-बनू नज़ीर, ग़ज़्व-ए-बद्र के छः महीने बाद और ग़ज़्व-ए-उहुद से पहले हुआ था और अल्लाह तआला का इशाद, अल्लाह ही वो है जिसने निकाला उन लोगों को जो काफ़िर हुए अहले किताब से उनके घरों से और ये (जज़ीर-ए-अरब से) उनकी पहली जलावतनी है, इब्ने इस्हाक़ की तहक्कीक में ये ग़ज़वा, ग़ज़्व-ए-बिअरे मरूना और ग़ज़्व-ए-उहुद के बाद हुआ था।

١٤- باب حَدِيثُ بَنِي النَّظِيرِ
وَمَخْرَجِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَيْهِمُ لِي دِيَةِ
الرُّجُلَيْنِ وَمَا أَرَادُوا مِنَ الْفَتْحِ بِرَسُولِ
اللَّهِ ﷺ. قَالَ الزُّهْرِيُّ عَنْ عُرْوَةَ كَانَتْ
عَلَى رَأْسِ مَيْتَةٍ أَشْهَرٍ مِنْ وَقْعَةِ بَنِي قَيْلٍ
أُخْرِجَ وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى هَهُوَ الَّذِي أَخْرَجَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ
لِلْأُولِ الْآخَرِينَ. وَجَعَلَهُ ابْنُ إِسْحَاقَ بَعْدَ
بَنِي مُعَوْنَةَ وَأَخِي.

तशरीह: क़बीला बनू नज़ीर उन काफ़िरों में से थे जिनका आँहज़रत (ﷺ) से अहदो-यैमान (समझौता) था कि न खुद आपसे लड़ेंगे और न आपके दुश्मनों को मदद करेंगे। ऐसा हुआ कि आमिर बिन तुफ़ैल ने जब कारियों को बिअरे मरूना के करीब फ़रेब व दगा से मार डाला था तो अम्र बिन इमय्या ज़मरी को जो मुसलमान थे अपनी माँ की मन्नत में आज़ाद कर दिया। रास्ते में उनको बनू आमिर के दो शख्स मिले उन्होंने सोते में उनको मार डाला और समझे मैंने बनू आमिर से जिनमें का एक आमिर बिन तुफ़ैल था बदला लिया था। आँहज़रत (ﷺ) को मदीना में आकर ख़बर की। उनको ये ख़बर न थी कि आँहज़रत (ﷺ) और उनके मदों से अहदो-यैमान है। आपने अम्र से फ़र्माया, मैं उन दो शख्सों की दियत दूँगा। बनू नज़ीर भी बनू आमिर के साथ अहद रखते थे। आप बनी नज़ीर के पास इस दियत में मदद लेने को तशरीफ़ ले गये। उन बदमाशों ने आपको और आपके अस्हाब को बिठाया और ज़ाहिर में इमदाद का वा'दा किया लेकिन दरपदा ये सलाह की कि आप दीवार के तले बैठे थे दीवार पर से एक पत्थर आप पर फेंककर आपको शहीद कर दें। अल्लाह ने जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) के ज़रिये से आपको आगाह कर दिया। आप वहाँ से एक दम उठकर मदीना खाना हो गये और दीगर सहाबी भी। मौक़ा आने पर उन बदमाशों पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया। इसी वाक़िये की कुछ तफ़सीलात यहाँ मज़कूर हैं।

यहूद का पहला इस्त्राज (निष्कासन) अरब से मुल्के शाम में हुआ, फिर अहदे फ़ारूक़ी में दूसरा निष्कासन ख़ैबर से शाम मुल्क को हुआ। कुछ ने कहा दूसरे इस्त्राज से क़यामत का हूश मुराद है। ये आयत बनी नज़ीर के यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई।

4028. हमसे इस्हाक बिन नसर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रजाक ने बयान किया, कहा हमको इब्ने जुरैज ने खबर दी, उन्हें मूसा बिन इब्बाने, उन्हें नाफेअ ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि बनू नज़ीर और बनू कुरेज़ा ने नबी करीम (ﷺ) से (मुआहदा तोड़कर) लड़ाई मोल ली। इसलिये आपने कबीला बनू नज़ीर को जलावतन कर दिया लेकिन कबीला बनू कुरेज़ा को जलावतन नहीं किया और इस तरह उन पर एहसान किया। फिर बनू कुरेज़ा ने भी जंग मोल ली। इसलिये आपने उनके मदों को क़त्ल करवा दिया और उनकी औरतों, बच्चों और माल को मुसलमानों में बांट दिया। सिर्फ़ कुछ बनी कुरेज़ा इससे अलग करार दिये गये थे क्योंकि वो हज़ूर (ﷺ) की पनाह में आ गये थे। इसलिये आपने उन्हें पनाह दी और उन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया था। हज़ुरे अकरम (ﷺ) ने मदीना में तमाम यहूदियों को जलावतन कर दिया था। बनू केनकाअ को भी जो अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) का कबीला था, यहूद बनी हारिषा को और मदीना के तमाम यहूदियों को।

तशरीह: यहूद ऐसी ग़दार क़ौम का नाम है जिसने खुद अपने ही नबियों और रसूलों के साथ ज़्यादातर मौकों पर बेवफ़ाई की है। आज के यहूदी जो इस्राईली हुकूमत कायम करके फ़लस्तीन की ज़मीन पर गासिबाना क़ब्ज़ा किये बैठे हैं अपनी फ़ित्री ग़दारी व बेवफ़ाई की ज़िन्दा मिशाल हैं। इसी मस्तिहत के तहत अब्दुल्लाह तआला ने हिजाज की ज़मीन को इस ग़दार क़ौम से ख़ाली करा दिया।

4029. मुअज़से हसन बिन मुदरिक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमको अबू अवाना ने खबर दी, उन्हें अबू बिशर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के सामने कहा, सूरह हशर तो उन्होंने कहा कि इसे सूरह नज़ीर कहो (क्योंकि ये सूरत बनू नज़ीर ही के बारे में नाज़िल हुई है) इस रिवायत की मुताबअत हुशैम ने अबू बिशर से की है। (दीगर मक़ाम: 4645, 4882, 4883)

4030. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी अल् अस्वद ने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अंसारी सहाबा नबी करीम (ﷺ) के लिये कुछ खजूर के पेड़ मख़सूस रखते थे (ताकि उसका फल आपकी ख़िदमत में भेज दिया जाए)

٤٠٢٨ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَارَبَتْ النُّضَيْرُ وَتَرْبُطَةُ فَأَجْلَى نَبِيَّ النُّضَيْرِ وَأَقْرُ لَرْبُطَةَ وَمَنْ عَلَيْهِمْ حَتَّى خَارَبَتْ لَرْبُطَةَ فَقَتَلَ رِجَالَهُمْ وَقَسَمَ بِسَاءَتِهِمْ وَأَوْلَادَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَّا بَعْضَهُمْ لِحَقْوَابِ النَّبِيِّ ﷺ فَأَمْنَهُمْ وَاسْلَمُوا وَأَجْلَى يَهُودَ الْمَدِينَةِ كُلَّهُمْ نَبِيَّ قَيْشَاغَ وَهُمْ رَهْطُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ وَيَهُودَ نَبِيَّ خَارِثَةَ وَكُلَّ يَهُودَ الْمَدِينَةِ.

٤٠٢٩ - حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُدْرِكٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَّالَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ سُورَةُ الْحَشْرِ قَالَ: قُلْ سُورَةُ النُّضَيْرِ فَابَعَهُ هُشَيْمٌ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ. [أطرافه في: ٤٦٤٥, ٤٨٨٢, ٤٨٨٣].

٤٠٣٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي الْأَسْوَدِ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: كَانَ الرَّجُلُ يَجْعَلُ لِلنَّبِيِّ ﷺ النَّخْلَاتِ حَتَّى

लेकिन जब अल्लाह तआला ने बनू कुरैज़ा और बनू नज़ीर पर फ़तह अता फ़र्माई तो हज़ूर (ﷺ) उनके फल वापस फ़र्मा दिया करते थे।

4031. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनी नज़ीर की खज़ूरों के बागात जलवा दिये थे और उनके पेड़ों को कटवा दिया था। ये बागात मुक़ामे बुवेरह में थे इस पर ये आयत नाज़िल हुई, जो पेड़ तुमने काट दिये हैं या जिन्हें तुमने छोड़ दिया है कि वो अपनी जड़ों पर खड़े रहे तो ये अल्लाह के हुक्म से हुआ है। (राजेअ: 2326)

4032. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको हब्बान ने ख़बर दी, उन्हें जुवेरिया बिन अस्मान ने, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू नज़ीर के बागात जलवा दिये थे। उन्होंने कहा कि हस्सान बिन घाबित (रज़ि.) ने इसी के बारे में ये शेर कहा था।

(तर्जुमा) बनू लुई (कुरैश) के सरदारों ने बड़ी आसानी के साथ बर्दाश्त कर लिया। मुक़ामे बुवेरा में इस आग को जो फैल रही थी। बयान किया कि फिर उसका जवाब अबू सुफ़यान बिन हारिष ने इन अश्रार में दिया। अल्लाह करे कि मदीना में हमेशा यूँ ही आग लगती रहे और उसके अन्ताफ़ में यूँ ही शोले उठते रहें। तुम्हें जल्द ही मा'लूम हो जाएगा कि हममें से कौन इस मुक़ामे बुवेरा से दूर है और तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि किसकी ज़मीन को नुक़सान पहुँचता है।

(राजेअ: 2326)

الَّتِي لَرَبَطَةِ وَالنَّصِيرِ لَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ يَوْمُ عَلَيْهِمُ.

٤٠٣١ - حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : خَرَقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَخْلَ بَنِي النَّصِيرِ وَقَطَعَ وَهِيَ الْبَوَيْرَةُ قَرَلٌ - وَمَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَبَنَةٍ أَوْ نَزَعْتُمْهَا فَابِئْسَ عَلَى أَصُولِهَا لَبِائِدٌ لِلَّهِ. [راجع: ٢٣٢٦]

٤٠٣٢ - حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا حَبَّانُ أَخْبَرَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَقَ نَخْلَ بَنِي النَّصِيرِ قَالَ : وَلَهَا يَقُولُ حَسَّانُ بْنُ لَابِثٍ :

وَهَانَ عَلَى مِرَاةٍ بَنِي لَوْيَ

حَرِيقٌ بِالْبَوَيْرَةِ مَسْتَعِيرٌ

قَالَ فَاجَابَهُ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ :

أَدَامَ اللَّهُ ذَلِكَ مِنْ صَنِيعٍ

وَخَرَقَ لِي نَوَاحِيهَا السَّعِيرُ

سَتَعْلَمُ إِنَّا مِنْهَا بَتْرَةٌ

وَتَعْلَمُ أَيُّ أَرْضَيْنَا تَضِيرُ

[راجع: ٢٣٢٦]

तशरीह: बुवेरा बनी नज़ीर के बाग़ को कहते थे जो मदीना के करीब वाकेअ था। बनी लुई कुरैश के लोगों को कहते हैं। उनमें और बनी नज़ीर में अहदो-पैमान था। हज़रत हस्सान (रज़ि.) का मतलब कुरैश की हिज्व करना है कि उनके दोस्तों के बाग़ जलते रहे और वो कुरैश उनकी कुछ मदद न कर सके। जवाबी अश्रार में अबू सुफ़यान ने मुसलमानों को बददुआ दी या'नी अल्लाह करे तुम्हारे शहर में हमेशा चारों तरफ़ आग जलती रहे। अबू सुफ़यान की बददुआ मरदूद हो गई और अल्हम्दु लिल्लाह मदीना मुनव्वरा आज भी जन्नत की फ़िज़ा रखता है। मौलाना वहीदुज्जमाँ ने उन अश्रार का उर्दू तर्जुमा यूँ मंज़ूम किया है। हज़रत हस्सान के शेर का तर्जुमा,

बनी लुई के शरीफों पे हो क्या आसान
अबू सुफयान बिन हरिष के अशआर का तर्जुमा :-

अल्लाह करे कि हमेशा रहे वहाँ ये हल

ये जान लोगे तुम अब अन्करीब कौन हम में

ये अबू सुफयान ने मुसलमानों को और उनके शहर मदीना को बददुआ दी थी जो मरदूद हो गई।

लगी हो आग बुवेरा में सब तरफ यरों

मदीना के चारों तरफ रहे आतिश सूजों

रहेगा बचा किसका मुल्क उठाएगा नुकसान

ये अबू सुफयान ने मुसलमानों को और उनके शहर मदीना को बददुआ दी थी जो मरदूद हो गई।

4033. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें मालिक बिन औस बिन हदधान नसरी ने खबर दी कि इमर बिन खत्ताब (रज़ि.) ने उन्हें बुलाया था। (वो अभी अमीरुल मोमिनीन) की खिदमत में मौजूद थे कि अमीरुल मोमिनीन के चौकीदार यरफा आए और अर्ज किया कि इम्रान बिन अफ़फ़ान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़, जुबैर बिन अब्बास और सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) अंदर आना चाहते हैं। क्या आपकी तरफ से उन्हें इजाज़त है? अमीरुल मोमिनीन ने फ़र्माया कि हाँ, उन्हें अंदर बुला लो। थोड़ी देर बाद यरफा फिर आए और अर्ज किया हज़रत अब्बास और अली (रज़ि.) भी इजाज़त चाहते हैं क्या उन्हें भी अंदर आने की इजाज़त है? आपने फ़र्माया कि हाँ, जब ये दोनों बुजुर्ग अंदर तशरीफ़ ले आए तो अब्बास (रज़ि.) ने कहा, अमीरुल मोमिनीन! मेरा और इन (अली रज़ि.) का फ़ैसला कर दीजिए। वो दोनों उस जायदाद के बारे में झगड़ा कर रहे थे जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को माले बनू नज़ीर से फ़ै के तौर पर दी थी। उस मौक़े पर एक-दूसरे पर तन्कीद की तो हाज़िरीन बोले, अमीरुल मोमिनीन! आप उन दोनों बुजुर्गों का फ़ैसला कर दें ताकि दोनों में झगड़ा न रहे। इमर (रज़ि.) ने कहा, जल्दी न कीजिए। मैं आप लोगों से उस अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ जिसके हुक्म से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं, क्या आपको मा'लूम है कि रसूले क़रीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि हम अंबिया की वरासत तक्सीम नहीं होती जो कुछ हम छोड़ जाएँ वो स़दका होता है और इससे हज़ूर (ﷺ) की मुराद खुद अपनी ज़ात से थी? हाज़िरीन बोले कि जी हाँ, हज़ूर (ﷺ) ने ये फ़र्माया

4033 - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَوْسٍ بْنِ الْخَذَّافِ النَّضْرِيُّ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ دَعَاهُ إِذْ جَاءَهُ حَاجِبُهُ يَرْفَا فَقَالَ لَهُ : هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدِ يَسْتَأْذِنُونَ؟ فَقَالَ : نَعَمْ. فَأَدْخَلَهُمْ فَلَبِثَ قَلِيلًا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ : هَلْ لَكَ فِي عَبَّاسٍ وَعَلِيٍّ يَسْتَأْذِنَانِ؟ قَالَ : نَعَمْ. فَلَمَّا دَخَلَ قَالَ : عَبَّاسُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَفْضَى بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا وَهَذَا يَخْتَصِمَانِ لِي الَّذِي آفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ مَالِ بَنِي النَّضِيرِ لَأَسْتَبْ عَلَيْهِ وَعَبَّاسٌ فَقَالَ الرَّهْطُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَفْضَى بَيْنَهُمَا وَارِخْ. أَخَذَهُمَا مِنَ الْآخِرِ فَقَالَ عُمَرُ: اتَّيَدُوا أَنْشُدْكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي يَأْذِيهِ تَقْوَمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَا نُوَرِّثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةً)) يُرِيدُ بِذَلِكَ نَفْسَهُ قَالُوا : قَدْ قَالَ ذَلِكَ، فَأَقْبَلَ عُمَرُ عَلَى عَلِيٍّ

था। फिर इमर (रज़ि.) अब्बास और अली (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उनसे कहा, मैं आप दोनों से भी अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ। क्या आपको भी मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये हदीस इशाद फ़र्माई थी? उन दोनों बुजुर्गों ने भी जवाब हाँ में दिया। उसके बाद इमर (रज़ि.) ने कहा, फिर मैं आप लोगों से इस मामले में बातचीत करता हूँ। अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को उस माले फ़ै में से (जो बनू नजीर से मिला था) आपको ख़ास तौर पर अता फ़र्मा दिया था। अल्लाह तआला ने उसके बारे में फ़र्माया है कि बनू नजीर के मालों से जो अल्लाह ने अपने रसूल को दिया है तो तुमने उसके लिये छोड़े और कैंट नहीं दौड़ाए। (या'नी जंग नहीं की) अल्लाह तआला का इशाद क़दीर तक। तो ये माल ख़ास रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये था लेकिन अल्लाह की क़सम कि हुज़ूर (ﷺ) ने तुम्हें नज़रअंदाज़ करके अपने लिये इसे मइसूस किया था न तुम पर अपनी ज़ात को तरजीह दी थी। पहले इस माल में से तुम्हें दिया और तुममें उसकी तक्सीम की और आख़िर उस फ़ै में से जायदाद बच गई। पस आप अपनी अज़्वाजे मुतहहरात का सालाना ख़र्च भी उसी में से निकालते थे और जो कुछ उसमें से बाक़ी बचता उसे आप अल्लाह तआला के मस्रारिफ़ में ख़र्च करते थे। हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी ज़िन्दगी में ये जायदाद उन्हीं मस्रारिफ़ में ख़र्च की। फिर जब आपकी वफ़ात हो गई तो अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि मुझे आँहज़रत (ﷺ) का ख़लीफ़ा बना दिया गया है। इसलिये उन्होंने उसे अपने क़ब्ज़े में ले लिया और उसे उन्हीं मस्रारिफ़ में ख़र्च करते रहे जिसमें आँहज़रत (ﷺ) ख़र्च किया करते थे और आप लोग यहीं मौजूद थे। उसके बाद इमर (रज़ि.) अली और अब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया। आप लोगों को मा'लूम है कि अबूबक्र (रज़ि.) ने भी वही तरीक़ा इख़्तियार किया, जैसा कि आप लोगों को भी इसका इकरार है और अल्लाह की क़सम! कि वो अपने इस तर्ज़े अमल में सच्चे, मुख़िलस, सहीह रास्ते पर और हक़ की पैरवी करने वाले थे। फिर अल्लाह तआला ने अबूबक्र (रज़ि.) को भी उठा लिया, इसलिये मैंने कहा कि मुझे रसूले करीम (ﷺ) और अबूबक्र

وَعَبَّاسٍ فَقَالَ : اُنْشُدْنِي مَا لَكُمْ مِنْ
تَقْلَمَانِ اِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ قَدْ قَالَ ذَلِكَ؟ قَالَا: نَعَمْ. قَالَ:
فَإِنِّي أُحَدِّثُكُمْ عَنْ هَذَا الْأَمْرِ إِنَّ اللَّهَ
سُبْحَانَهُ كَانَ غَضَبَ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْقَوْمِ بِشَيْءٍ ثُمَّ
يُعْطِيهِمْ أَخْذًا غَيْرَهُ فَقَالَ جُلُ ذِكْرُهُ:
﴿وَمَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا
أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ﴾ إِلَى
قَوْلِهِ ﴿فَلْيَبْرِكْ﴾ فَكَانَتْ هَذِهِ بِخَالِصَةٍ
بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ
وَاللَّهُ مَا اخْتَارَهَا ذُنُوبَكُمْ وَلَا اسْتَثَرَهَا
عَلَيْكُمْ لَقَدْ أَغْطَاكُمْوهَا وَقَسَمَهَا بِكُمْ
حَتَّى بَقِيَ هَذَا الْمَالُ بَيْنَهُ فَكَانَ رَسُولُ
اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنْفِقُ عَلَى
أَهْلِهِ نَفَقَةً سَتِيهِمْ مِنْ هَذَا الْمَالِ ثُمَّ
يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلُ مَالِ اللَّهِ
فَعَمِلَ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ حَيَاتِهِ ثُمَّ تَوَفَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَأَنَا وَلِيُّ
رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
فَقَبَضَهُ أَبُو بَكْرٍ فَعَمِلَ فِيهِ بِمَا عَمِلَ بِهِ
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ،
وَأَنْتُمْ حِينَئِذٍ فَأَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ
وَقَالَ : تَذَكَّرَانِ اِنَّ آبَا بَكْرٍ عَمِلَ فِيهِ
كَمَا تَقُولَانِ وَاللَّهِ يَعْلَمُ إِنَّهُ فِيهِ لَصَادِقٌ
بَارٌّ رَاشِدٌ تَابَعَ لِلْحَقِّ، ثُمَّ تَوَفَّى اللَّهُ عَزَّ

(रज़ि.) का ख़लीफ़ा बनाया गया। चुनौचे मैं उस जायदाद पर अपनी ख़िलाफ़त के दो सालों से क़ाबिज़ हूँ और उसे उन्हीं मस़ारिफ़ में खर्च करता हूँ जिसमें आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने किया था और अल्लाह तआला जानता है कि मैं भी अपने तर्ज़े अमल में सच्चा, मुख़िलस, सहीह रास्ते पर और हक़ की पैरवी करने वाला हूँ। फिर आप दोनों मेरे पास आए हैं। आप दोनों एक ही हैं और आपका मामला भी एक है। फिर आप मेरे पास आए। आपकी मुराद अब्बास (रज़ि.) से थी, तो मैंने आप दोनों के सामने ये बात स़ाफ़ कह दी थी कि रसूले करीम (ﷺ) फ़र्मा गये थे, हमार तर्का तन्नसीम नहीं होता। हम जो कुछ छोड़ जाएँ वो स़दक़ा है। फिर जब वो जायदाद बतौर इन्तिज़ाम मैं आप दोनों को दे दूँ तो मैंने आपसे कहा कि अगर आप चाहें तो मैं ये जायदाद आपको दे सकता हूँ। लेकिन शर्त ये है कि अल्लाह तआला के सामने किये हुए अहद की तमाम ज़िम्मेदारियों को आप पूरा करें। आप लोगों को मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने और खुद मैंने जबसे मैं ख़लीफ़ा बना हूँ, इस जायदाद के मामले में किस तर्ज़े अमल को इख़्तियार किया हुआ है। अगर ये शर्त आपको मंज़ूर न हो तो फिर मुझसे इसके बारे में आप लोग बात न करें। आप लोगों ने इस पर कहा कि ठीक है। आप इसी शर्त पर वो जायदाद हमारे हवाले कर दें। चुनौचे मैंने उसे आप लोगों के हवाले कर दिया। क्या आप हज़रत उसके सिवा कोई और फ़ैसला इस सिलसिले में मुझसे करवाना चाहते हैं? उस अल्लाह की क़सम! जिसके हुक्म से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं, क़यामत तक मैं इसके सिवा कोई और फ़ैसला नहीं कर सकता। अगर आप लोग (शर्त के मुताबिक़ उसके इन्तिज़ाम से) आजिज़ हैं तो वो जायदाद मुझे वापस कर दें मैं खुद उसका इन्तिज़ाम करूँगा। (राजेअ: 2904)

وَجَلَّ أَمْرُكَ، فَقُلْتُ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَبُو بَكْرٍ لَقَبْتُهِ سَتَيْنِ مِنْ إِمَارَتِي أَعْمَلُ فِيهِ بِمَا عَمِلَ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنِّي لِي صَادِقٌ، بَارٌّ، زَاهِدٌ، قَابِغٌ لِلْحَقِّ، ثُمَّ جِئْتُمَنِي بِكَلَامٍ وَكَلِمَتَيْنِ وَاحِدَةٍ وَأَمْرُكُمَا جَمْعٌ فَجِئْتَنِي بَغْيِي عِبَاتٍ فَقُلْتُ لَكُمَا إِنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَا تُوزَنُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةً)) فَلَمَّا بَدَأَ لِي أَنْ أَدْفَعَهُ إِلَيْكُمَا قُلْتُ إِنْ شِئْتُمَا دَفَعْتُهُ إِلَيْكُمَا عَلَى أَنْ عَلَيْكُمَا عَهْدُ اللَّهِ وَمِثْلُهُ لَتَعْمَلَانِ فِيهِ بِمَا عَمِلَ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعَمِلْتُ فِيهِ مَذْ وَلَيْتُ وَإِلَّا فَلَا تُكَلِّمَانِي فَقَلْتُمَا أَدْفَعُهُ إِلَيْنَا بِذَلِكَ فَدَفَعْتُهُ إِلَيْكُمَا أَفَلَتُمَانِ مِنِّي قَضَاءٌ غَيْرَ ذَلِكَ؟ فَوَاللَّهِ الَّذِي يَأْذِيهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ لَا أَقْضِي فِيهِ بِقَضَاءٍ غَيْرَ ذَلِكَ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ فَإِنْ عَجَزْتُمَا عَنْهُ فَادْفَعَا إِلَيَّ فَأَنَا أَكْفِيكُمَا.

[راجع: 2904]

4034. जुहरी ने बयान किया कि फिर मैंने इस हदीष का तज़्किरा उर्वा बिन जुबैर से किया तो उन्होंने कहा मालिक बिन औस ने ये

٤٠٣٤ - قَالَ فَحَدَّثْتُ هَذَا الْحَدِيثَ غُرُورَ بْنِ الزُّبَيْرِ فَقَالَ صَدَقَ مَالِكُ بْنُ

रिवायत तुमसे महीह बयान की है। मैंने नबी करीम (ﷺ) की पाक बीवी आइशा (रज़ि.) से सुना है। उन्होंने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) की अज़्वाज ने इब्मान (रज़ि.) को अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के पास भेजा और उनसे दरख्वास्त की कि अल्लाह तआला ने जो फ़ै अपने रसूल (ﷺ) को दी थी उसमें से उनके हिस्से दिये जाएँ। लेकिन मैंने उन्हें रोका और उनसे कहा तुम अल्लाह से डरती नहीं क्या हुज़ूर (ﷺ) ने खुद नहीं फ़र्माया था कि हमारा तर्का तन्नसीम नहीं होता? हम जो कुछ छोड़ जाएँ वो सद्का होता है। हुज़ूर (ﷺ) का इशारा इस इश्राद में खुद अपनी ज़ात की तरफ़ था। अल्बत्ता आले मुहम्मद (ﷺ) को इस जायदाद में से ता-जिन्दगी (उनकी ज़रूरियात के लिये) मिलता रहेगा। जब मैंने अज़्वाजे मुतस्हरात को ये हदीष सुनाई तो उन्होंने भी अपना ख़याल बदल दिया। इर्वा ने कहा कि यही वो सद्का है जिसका इतिज़ाम पहले अली (रज़ि.) के हाथ में था। अली (रज़ि.) ने अब्बास (रज़ि.) को उसके इतिज़ाम में शरीक नहीं किया था बल्कि खुद उसका इतिज़ाम करते थे (और जिस तरह आँहुज़ूर ﷺ अबूबक्र रज़ि.) और इमर (रज़ि.) ने इसे खर्च किया था, उसी तरह उन्हीं मस़ारिफ़ में वो भी खर्च करते थे)। इसके बाद वो सद्का हसन बिन अली (रज़ि.) के इतिज़ाम में आ गया था। फिर हुसैन बिन अली (रज़ि.) के इतिज़ाम में रहा। फिर जनाबे अली बिन हुसैन और हसन बिन हसन के इतिज़ाम में आ गया था और ये हक़ है कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) का सद्का था।

तपशील: इस हदीष से साफ़ जाहिर है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) फिर हज़रत इमर (रज़ि.) ने वरायते नबवी के बारे में फ़मनि नबवी पर पूरे तौर पर अमल किया कि उसे तन्नसीम नहीं होने दिया। जिन मस़ारिफ़ में आँहुज़रत (ﷺ) ने इसे खर्च किया ये हज़रात भी उन ही मस़ारिफ़ में उसे खर्च करते रहे। हज़रत अली (रज़ि.) को भी इस बारे में इख़ितलाफ़ न था, अगर कुछ इख़ितलाफ़ होता भी तो सिर्फ़ इस बारे में कि इस सद्के की निगरानी कौन करे? उसका मुतवल्ली कौन हो? इस बारे में हज़रत इमर (रज़ि.) ने तफ़्सील से इन हज़रात को मामला समझाकर उस तर्के को उनके हवाले कर दिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम व अरज़ा अन्हु।

4035. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें इर्वा ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) और हज़रत अब्बास (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के पास आए और आँहुज़रत (ﷺ) की ज़मीन जो फ़िदक में थी और जो ख़ैबर

أَوْسٍ أَنَا سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ تَقُولُ: أَرْسَلَ أَزْوَاجَ النَّبِيِّ ﷺ غِفْمَانَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ يَسْأَلُهُ لِمَنْ هُنَّ مِنْ أَلَاءِ اللَّهِ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ فَكُنْتُ أَنَا أَرْفَعُهُنَّ فَقُلْتُ لَهُنَّ: أَلَا تَقِينََنَّ اللَّهُ أَنَّهُ لَمْ تَعْلَمَنَّ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ إِنْ يَقُولُ: ((لَا تُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةً)) يُرِيدُ بِذَلِكَ نَفْسَهُ إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ فِي هَذَا الْمَالِ فَاتَّهَى أَزْوَاجَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى مَا اخْتَرْتُهُنَّ قَالْنَ: فَكَانَتْ هَذِهِ الصَّدَقَةُ بَيْنَ عَلِيٍّ مِنْهَا عَلِيُّ بْنُ عَبَّاسٍ فَلَقَبَهُ عَلَيْهَا ثُمَّ كَانَ بَيْنَ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ ثُمَّ بَيْنَ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ ثُمَّ بَيْنَ عَلِيٍّ ثُمَّ بَيْنَ حُسَيْنِ بْنِ حُسَيْنٍ وَحُسَيْنِ بْنِ حُسَيْنٍ كِلَاهُمَا كَانَ يَتَدَاوَلِيهَا ثُمَّ بَيْنَ زَيْنِ بْنِ حُسَيْنٍ وَهُوَ صَدَقَةُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ حَقًّا.

٤٠٣٥ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ وَالْعَبَّاسَ ابْنِي أَبِي بَكْرٍ يَلْتَمِسَانِ

में आपको हिस्सा मिला था, उसमें से अपने वरषे का मुतालबा किया। (राजेअ: 3092)

4036. इस पर हजरत अबूबक्र (रजि) ने कहा कि मैंने खुद औहजरत (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया था कि हमारा तर्का तक्सीम नहीं होता। जो कुछ हम छोड़ जाएँगे वो सद्का है। अल्बत्ता आले मुहम्मद (ﷺ) को उस जायदाद में से खर्च ज़रूर मिलता रहेगा और अल्लाह की क़सम! रसूले करीम (ﷺ) के क़राबतदारों के साथ इम्दा मामला करना मुझे खुद अपने क़राबतदारों के साथ हुस्न मामलात से ज़्यादा अज़ीज़ है। (राजेअ: 3093)

हजरत झिदीके अकबर (रजि.) ने एक तरफ़ फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) का एहतिराम बाक़ी रखा तो दूसरी तरफ़ हज़रात अहले बैत के बारे में ज़ाफ़ कह दिया कि उनका एहतिराम, उनकी ख़िदमत, उनके साथ हुस्ने बर्ताव मुझको खुद अपने अज़ीज़ों के साथ हुस्ने बर्ताव से ज़्यादा अज़ीज़ है। इससे ज़ाफ़ ज़ाहिर है कि हज़रात फ़ातिमा (रजि.) की दिलजोई करना, उनका अहमतीरान मक़सद था और ता-ह्यात आपने उसको अमली जामा पहनाया और इस हाल में दुनिया से रुख़सत हो गये। अल्लाह तआला सबको क़यामत के दिन फ़िरदौसे बरी में जमा करेगा और सब व नज़अना मा फ़ी सुदूरहिम मिन ग़िल्ल (अल् अज़राफ़: 43) के मिस्दाक़ होंगे।

बाब 15: कअब बिन अशरफ़ यहुदी के क़त्ल का किस्सा - 15 - باب قتل كعب بن الأشرف

इस पर तफ़्सीली नोट मुकद्दमा बुखारी पारा 12 में गुज़र चुका है। मुख़्तसर ये कि ये बड़ा सरमायादार यहूदी था। औहजरत (ﷺ) और मुसलमानों की बुराई किया करता और क़ुरैश के कुफ़र को मुसलमानों के खिलाफ़ उभारता। इसकी शरारतों का ख़ात्मा करने के लिये मजबूरन माहे रबीअल अव्वल सन 3 हिजरी में ये क़दम उठाया गया फ़क़ुतिअ दाबिरुलकौमिल्लज़ीन ज़लमू बल्हम्दु लिहिल्लहि रब्बिलआलमीन (अल् अन्आम: 45)

4037. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने हज़रात जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रजि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कअब बिन अशरफ़ का काम कौन तमाम करेगा? वो अल्लाह और रसूल को बहुत सता रहा है। इस पर मुहम्मद बिन मुस्लिमा अंसारी (रजि.) खड़े हुए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या आप इजाज़त देंगे कि मैं उसे क़त्ल कर आऊँ? आपने फ़र्माया, हाँ मुझको ये पसन्द है। उन्होंने अर्ज किया, फिर आप मुझे इजाज़त इनायत फ़र्माएँ कि मैं उससे कुछ बातें कहूँ। आपने उन्हें इजाज़त दे दी। अब मुहम्मद बिन मुस्लिमा (रजि.) कअब बिन अशरफ़ के पास आए और उससे कहा, ये शख़्स (इशारा हज़ूरे अकरम ﷺ की तरफ़ था) हमसे सद्का मांगता रहता है और उसने

مِرَاتُهُمْ اَرْضُهُ مِنْ فَدَاكَ وَسَهْمُهُ مِنْ عَيْتَرٍ. [راجع: 3092]

4036 - فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَا تُورَثُ مَا تَرَكَتَا صَدَقَةً)) إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ لِي هَذَا الْمَالِ وَاللَّهُ لَفَرَاةُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أُحِيلَ مِنْ لِرَائِي. [راجع: 3093]

हज़रात झिदीके अकबर (रजि.) ने एक तरफ़ फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) का एहतिराम बाक़ी रखा तो दूसरी तरफ़ हज़रात अहले बैत के बारे में ज़ाफ़ कह दिया कि उनका एहतिराम, उनकी ख़िदमत, उनके साथ हुस्ने बर्ताव मुझको खुद अपने अज़ीज़ों के साथ हुस्ने बर्ताव से ज़्यादा अज़ीज़ है। इससे ज़ाफ़ ज़ाहिर है कि हज़रात फ़ातिमा (रजि.) की दिलजोई करना, उनका अहमतीरान मक़सद था और ता-ह्यात आपने उसको अमली जामा पहनाया और इस हाल में दुनिया से रुख़सत हो गये। अल्लाह तआला सबको क़यामत के दिन फ़िरदौसे बरी में जमा करेगा और सब व नज़अना मा फ़ी सुदूरहिम मिन ग़िल्ल (अल् अज़राफ़: 43) के मिस्दाक़ होंगे।

15 - باب قتل كعب بن الأشرف

इस पर तफ़्सीली नोट मुकद्दमा बुखारी पारा 12 में गुज़र चुका है। मुख़्तसर ये कि ये बड़ा सरमायादार यहूदी था। औहजरत (ﷺ) और मुसलमानों की बुराई किया करता और क़ुरैश के कुफ़र को मुसलमानों के खिलाफ़ उभारता। इसकी शरारतों का ख़ात्मा करने के लिये मजबूरन माहे रबीअल अव्वल सन 3 हिजरी में ये क़दम उठाया गया फ़क़ुतिअ दाबिरुलकौमिल्लज़ीन ज़लमू बल्हम्दु लिहिल्लहि रब्बिलआलमीन (अल् अन्आम: 45)

4037 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ لِكَعْبِ بْنِ الْأَشْرَفِ؟ فَإِنَّهُ لَفَدَايَ اللَّهِ وَرَسُولَهُ)) فَقَامَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُحِبُّ أَنْ أَقْتُلَهُ؟ فَقَالَ: ((نَعَمْ)) قَالَ: فَأَنْذَنِي إِنْ أَمَرْتُ شَيْئًا قَالَ: قُلْ فَأَنَاءَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا الرَّجُلَ قَدْ سَأَلَنَا صَدَقَةً وَإِنَّهُ قَدْ عَنَانَا. وَإِنِّي قَدْ أَتَيْتُكَ

हमें थका मारा है। इसलिये मैं तुमसे क़र्ज़ लेने आया हूँ। इस पर कअब ने कहा, अभी आगे देखना, अल्लाह की क़सम! बिलकुल उकता जाओगे। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा, चूँकि हमने भी अब उनकी इत्तिबाअ कर ली है। इसलिये जब तक ये न खुल जाए कि उनका अंजाम क्या होता है, उन्हें छोड़ना भी मुनासिब नहीं। मैं तुमसे एक वस्क्र या (रावी ने बयान किया कि) दो वस्क्र अनाज क़र्ज़ लेने आया हूँ। और हमसे अम्र बिन दीनार ने ये हदीष कई दफ़ा बयान की लेकिन एक वस्क्र या दो वस्क्र ग़ल्ले का कोई ज़िक्र नहीं किया। मैंने उनसे कहा कि हदीष में एक वस्क्र या दो वस्क्र का भी ज़िक्र है? उन्होंने कहा कि मेरा भी ख़याल है कि हदीष में एक या दो वस्क्र का ज़िक्र आया है। कअब बिन अशरफ़ ने कहा, हाँ! मेरे पास कुछ गिरवी रख दो। उन्होंने पूछा, गिरवी में तुम क्या चाहते हो? उसने कहा, अपनी औरतों को रख दो। उन्होंने कहा कि तुम अरब के बहुत ख़ूबसूरत मर्द हो। हम तुम्हारे पास अपनी औरतें किस तरह गिरवी रख सकते हैं? उसने कहा, फिर अपने बच्चों को गिरवी रख दो। उन्होंने कहा, हम बच्चों को किस तरह गिरवी रख सकते हैं कल उन्हें इसी पर गालियाँ दी जाएँगी कि एक या दो वस्क्र ग़ल्ले पर उसे रहन रख दिया गया था, ये तो बड़ी बेग़ैरती होगी। अल्बत्ता हम तुम्हारे पास अपने लुअमा गिरवी रख सकते हैं। सुफ़यान ने कहा कि मुराद उससे हथियार थे। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने इससे दोबारा मिलने का वा'दा किया और रात के वक़्त उसके यहाँ आए। उनके साथ अबू नायला भी मौजूद थे वो कअब बिन अशरफ़ के रज़ाई भाई थे। फिर उसके क़िले के पास जाकर उन्होंने आवाज़ दी। वो बाहर आने लगा तो उसकी बीवी ने कहा कि इस वक़्त (इतनी रात गये) कहाँ बाहर जा रहे हो? उसने कहा, वो तो मुहम्मद बिन मस्लमा और मेरा भाई अबू नायला है। अम्र के सिवा (दूसरे रावी) ने बयान किया कि उसकी बीवी ने उससे कहा था कि मुझे तो ये आवाज़ ऐसी लगती है जैसे उससे खून टपक रहा हो। कअब ने जवाब दिया कि मेरे भाई मुहम्मद बिन मस्लमा और मेरे रज़ाई भाई अबू नायला हैं। शरीफ़ को अगर रात में भी नेज़ाबाज़ी के लिये बुलाया जाए तो वो निकल

اسْتَسْلِفَكَ قَالَ: وَأَيْنَا وَاللَّهِ قَمِيلَةً
قَالَ: إِنَّا قَدِ اتَّبَعْنَا فَلَا نَجِبُ أَنْ نَدْعَهُ
حَتَّى نَنْظُرَ إِلَى أَيْ شَيْءٍ يَصْنَعُ شَأْنَهُ
وَقَدْ ارْتَدْنَا أَنْ تَسْلِفَنَا وَسَقَا أَوْ وَسَقَيْنَ
وَحَدَّثَنَا عَمْرُو غَيْرُ مَرَّةٍ فَلَمْ يَذْكُرْ وَسَقَا
أَوْ وَسَقَيْنَ فَقُلْتُ لَهُ لِمَ وَسَقَا أَوْ
وَسَقَيْنَ فَقَالَ: أَرَى لِمَ وَسَقَا أَوْ
وَسَقَيْنَ فَقَالَ: نَعَمْ. إِرْهُونِي قَالُوا: أَيْ
شَيْءٍ تَرِيدُ قَالَ: إِرْهُونِي بِسَاءِكُمْ؟
قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُكَ بِسَاءِنَا وَأَنْتَ
أَجْمَلُ الْقَرَبِ؟ قَالَ: فَارْهُونِي بِإِنَاءِكُمْ؟
قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُكَ بِإِنَاءِنَا قَسْبُ
أَحَدِهِمْ؟ فَقَالَ: أَرِهْنِ بَوَسْقِي أَوْ وَسَقَيْنَ
هَذَا عَارٌ عَلَيْنَا وَلَكِنَّا نَرْهَنُكَ اللَّامَةَ قَالَ
سُفْيَانُ يَغْيِي السَّلَاحَ فَوَاعِدَهُ أَنْ يَأْتِيَهُ
فَجَاءَهُ لَيْلًا وَمَعَهُ أَبُو نَابِلَةَ وَهُوَ أَخُو
كَعْبٍ مِنَ الرُّضَاعَةِ فَذَعَاهُمْ إِلَى
الْحِصْنِ فَزَلَّ إِلَيْهِمْ فَقَالَتْ لَهُ امْرَأَتُهُ
إِنْ تَخْرُجْ هَذِهِ السَّاعَةَ؟ فَقَالَ: إِنَّمَا هُوَ
مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمَةَ وَأَخِي أَبُو نَابِلَةَ وَقَالَ
غَيْرُ عَمْرُو: قَالَتْ اسْمَعِ صَوْتَنَا كَأَنَّهُ
يَقْطُرُ مِنْهُ الدَّمُ قَالَ: إِنَّمَا هُوَ أَخِي
مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمَةَ وَرَضِيحِي أَبُو نَابِلَةَ إِنَّ
الْكَرِيمَ لَوْ دُعِيَ إِلَى طَفْنَةٍ بِئَلٍ لَأَجَابَ
قَالَ: وَيَدْخُلُ مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمَةَ مَعَهُ
رَجُلَيْنِ قِيلَ لِسُفْيَانَ: سَمَّاهُمْ عَمْرُو
قَالَ: سَمَى بَعْضُهُمْ قَالَ عَمْرُو: جَاءَ

पड़ता है। रावी ने बयान किया कि जब मुहम्मद बिन मस्लमा अंदर गये तो उनके साथ दो आदमी और थे। सुफयान से पूछा गया कि क्या अमर बिन दीनार ने उनके नाम भी लिये थे? उन्होंने बताया कि कुछ का नाम लिया था। अमर ने बयान किया कि वो आए तो उनके साथ दो आदमी और थे और अमर बिन दीनार के सिवा (रावी ने) अबू अब्स बिन जबर, हारिष बिन ओस और अब्बाद बिन बिशर नाम बताए थे। अमर ने बयान किया कि वो अपने साथ दो आदमियों को लाए थे और उन्हें ये हिदायत की थी कि जब कअब आए तो मैं उसके (सर के) बाल हाथ में ले लूंगा और सूँघने लगूंगा जब तुम्हें अंदाज़ा हो जाए कि मैंने उसका सर पूरी तरह अपने कब्जे में ले लिया है तो फिर तुम तैयार हो जाना और उसे क़त्ल कर डालना। अमर ने एक बार बयान किया कि फिर मैं उसका सर सूँघूँगा, आखिर कअब चादर लपेटे हुए बाहर आया। उसके जिस्म से खुशबू फूटी पड़ती थी। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा, आज से ज़्यादा उम्दा खुशबू मैंने कभी नहीं सूँघी थी। अमर के सिवा (दूसरे रावी) ने बयान किया कि कअब इस पर बोला, मेरे पास अरब की वो औरत है जो हर वक़्त इत्र में बसी रहती है और हुस्न व जमाल में भी उसकी कोई नज़ीर नहीं। अमर ने बयान किया कि मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उससे कहा, क्या तुम्हारे सर को सूँघने की मुझे इजाज़त है? उसने कहा, सूँघ सकते हो। रावी ने बयान किया कि मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसका सर सूँघा और उनके बाद उनके साथियों ने भी सूँघा। फिर उन्होंने कहा, क्या दोबारा सूँघने की इजाज़त है? उसने इस बार भी इजाज़त दे दी। फिर जब मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसे पूरी तरह अपने क़ाबू में कर लिया तो अपने साथियों को इशारा किया कि तैयार हो जाओ। चुनाँचे उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया और हज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसकी ख़बर दी।

مَعَهُ بَرَجَلَيْنِ وَقَالَ غَيْرُ غَمْرٍ وَآلٍ
عَبَسَ بْنُ جَبْرِ وَالْخَارِثُ بْنُ أَوْسٍ وَعَبَّادُ
بْنُ بَشِيرٍ قَالَ غَمْرٌ : جَاءَ مَعَهُ بَرَجَلَيْنِ
فَقَالَ : إِذَا مَا جَاءَ فَلَانِي قَابِلٌ بِشَعْرِهِ
فَاشْمُهُ فَإِذَا رَأَيْتُمُونِي اسْتَمَكَنْتُمْ مِنْ
رَأْسِهِ فَذُوقْنَكُمْ فَاضْرِبُوهُ وَقَالَ مَرَّةً : ثُمَّ
أَشْمَكُمْ فَتَزَلْ إِلَيْهِمْ مَتَوَشِّحًا وَهُوَ يَنْفَعُ
مِنْهُ رِيحُ الْعَطِيرِ فَقَالَ : مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ
رِيحًا أَيْ أَطْيَبَ وَقَالَ غَيْرُ غَمْرٍ : قَالَ
عِنْدِي أَغْطُرُ نِسَاءَ الْقَرَبِ وَأَكْمَلُ
الْقَرَبِ، قَالَ غَمْرٌ : فَقَالَ أَتَأْذُنِي إِنْ
أَشْمَ رَأْسَكَ؟ قَالَ : فَشَمَّهُ ثُمَّ أَشْمَ
أَصْحَابَهُ ثُمَّ قَالَ : أَتَأْذُنِي؟ قَالَ : نَعَمْ.
فَلَمَّا اسْتَمَكَنَ مِنْهُ قَالَ : ذُوقْنَكُمْ
فَقَتَلُوهُ، ثُمَّ أَتَوْا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ فَأَخْبَرُوهُ.

तशरीह : कअब बिन अशरफ़ का काम तमाम करने वाले गिरोह के सरदार हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) थे। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से वा'दा तो कर लिया मगर कई दिन तक मुतफ़किर (चिन्तित) रहे। फिर अबू नायला के पास आए जो कअब का रज़ाई भाई था और अब्बाद बिन बिशर और हारिष बिन ओस। अबू अब्स बिन जबर को भी मशिवरा में शरीक किया और ये सब मिलकर आँहज़रत (ﷺ) के पास आए और अर्ज़ किया कि हमको इजाज़त दीजिए कि हम जो मुनासिब

समझें कअब से वैसी बातें करें। आपने उनको बतौर मस्लिहत इजाजत मईमत फर्माई और रात के वक़्त जब ये लोग मदीना से चले तो आँहज़रत (ﷺ) बक़ीअ तक उनके साथ आए। चाँदनी रात थी। आपने फ़र्माया, जाओ अल्लाह तुम्हारी मदद करे।

कअब बिन अशरफ़ मदीना का बहुत बड़ा मुतअस्सिब यहूदी था और बड़ा मालदार आदमी था। इस्लाम से उसे सख़्त नफ़रत और अदावत थी। कुरैश को मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये उभारता रहता था और हमेशा इस टोह में लगा रहता था कि किसी न किसी तरह धोखे से आँहज़रत (ﷺ) को क़त्ल करा दे। फ़तुहल बारी में एक दा'वत का ज़िक्र है जिसमें इस ज़ालिम ने इसी गुर्जे फ़ासिद के तहत आँहज़रत (ﷺ) को मदक़ (आमंत्रित) किया था मगर हज़रत ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने उसकी निय्यते बद से आँहज़रत (ﷺ) को पहले से ही आगाह कर दिया और आप बाल-बाल बच गये। उसकी इन तमाम बुरी हरकतों को देखकर आँहज़रत (ﷺ) ने उसको ख़त्म करने के लिये सहाबा के सामने अपना ख़याल ज़ाहिर किया जिस पर मुहम्मद बिन मस्लमा अंसारी (रज़ि.) ने आमादगी का इन्हार किया। कअब बिन अशरफ़ मुहम्मद बिन मस्लमा का मामू भी होता था। मगर इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम वस्सलाम का रिश्ता दुनियावी सब रिश्तों से बुलन्द व बाला था। बहरहाल अल्लाह तआला ने उस ज़ालिम को बईतौर ख़त्म कराया जिससे फ़िल्लों का दरवाज़ा बन्द होकर अमन कायम हो गया और बहुत से लोग जंग की सूरत पेश आने और क़त्ल होने से बच गये। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, रवा अबू दाऊद वत्तिर्मिज़ी मिन तरीक्किज़्जुहरी अन अब्दिर्हमानिब्नि अब्दिल्लाहिब्नि कअबिब्नि मालिक अन अबीहि अन कअबबन्ल्अशरफ़ कान शाइरन यहजू रसूलुल्लाहि (ﷺ) व युहरिज़्जु अलैहि कुप्फ़ार कुरैशिन व कानन्नबिय्यु (ﷺ) क़दिमल्मदीनत व अहलुहा अख़लातुन फअराद रसूलुल्लाहि (ﷺ) इस्तिस्लाहुम व कानल्यहूदु वल्मुशिकून् यूज़ूनल्मुस्लिमीन अशहल्अज़ा फअमरल्लाहु रसूलुह वल्मुस्लिमीन बिस्मिब्नि फलम्मा अबा कअबुन अय्यन्नज़अ अन अज़ाहु अमर रसूलुल्लाहि सअदबन् मुआज़ अय्यबअष रहतन लियक्तुलूहु व ज़कर इब्नु सअद अन्न क़त्लहु कान फी रबीइल्अव्वलि मिनस्सनतिष्वालिल्प्रति (फ़तुहलबारी) खुलासा ये कि कअब बिन अशरफ़ शायर भी था जो शे'रों में रसूलुल्लाह (ﷺ) की हिज्व (बुराई) करता और कुप्फ़ारे कुरैश को आपके ऊपर हमला करने की तरगीब दिलाता (उकसाता)। आँहज़रत (ﷺ) जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए वहाँ के बाशिन्दे आपस में ख़लत मलत थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी इस्लाह व सुधार का बीड़ा उठाया। यहूदी और मुशिकीन आँहज़रत (ﷺ) को सख़्ततरीन ईज़ाएँ पहुँचाने पर आमादा रहते। पस अल्लाह ने अपने रसूल (ﷺ) और मुसलमानों को सब्र का हुक्म फ़र्माया। जब कअब बिन अशरफ़ की शरारतें हद से ज़्यादा बढ़ने लगीं और वो ईज़ारसानी से बाज़ न आया तो तब आप (ﷺ) ने हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) को हुक्म फ़र्माया कि एक जमाअत को भेजें जो उसका ख़ात्मा करे। इन्ने सअद ने कहा कि कअब बिन अशरफ़ का क़त्ल 3 हिजरी में हुआ।

बाब 16 : अबू राफ़ेअ यहूदी अब्दुल्लाह बिन

अबिल हक़ीक़ के क़त्ल का क़िस्सा

कहते हैं उसका नाम सलाम बिन अबिल हक़ीक़ था। ये ख़ैबर में रहता था। कुछ ने कहा एक क़िला में हिजाज़ के मुल्क में वाक्केअ था। जुहरी ने कहा अबू राफ़ेअ कअब बिन अशरफ़ के बाद क़त्ल हुआ। (रमज़ान 6 हिजरी में)

4038. मुझसे इस्हाक़ बिन नज़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी ज़ायरा ने, उन्होंने अपने वालिद ज़करिया बिन अबी ज़ायदा से, उनसे इस्हाक़ सबीई ने बयान किया, उनसे बरा बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने चंद

١٦ - باب قتل أبي رافع عبد الله

بن أبي الحقيق

وَيَقَالُ سَلَامُ بْنُ أَبِي الْحَقِيقِ كَانَ بِخَيْبَرَ
وَيَقَالُ فِي حِصْنٍ لَهُ بِأَرْضِ الْحِجَازِ وَقَالَ
الزُّهْرِيُّ : هُوَ بَعْدَ كَفِّ بْنِ الْأَشْرَفِ .

٤٠٣٨ - حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا
يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ
أَبِيهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ
عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : بَعَثَ

आदमियों को अबू राफ़ेअ के पास भेजा। (उन तमाम में से) अब्दुल्लाह बिन अतीक रात को उसके घर में घुसे, वो सो रहा था। उसे क़त्ल किया। (रज़िअ : 3022)

4029. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू राफ़ेअ यहूदी (के क़त्ल) के लिये चन्द अंसारी सहाबा को भेजा और अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) को उनका अमीर बनाया। ये अबू राफ़ेअ हुजुरे अकरम (ﷺ) को ईज़ा दिया करता था और आपके दुश्मनों की मदद किया करता था। हिजाज़ में उसका एक क़िला था और वहीं खो रहा करता था। जब उसके क़िले के करीब ये पहुँचे तो सूरज गुरुब हो चुका था। और लोग अपने मवेशी लेकर (अपने घरों को) वापस हो चुके थे। अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि तुम लोग यहीं ठहरे रहो मैं (इस क़िले पर) जा रहा हूँ और दरबान पर कोई तदबीर करूँगा, ताकि मैं अंदर जाने में कामयाब हो जाऊँ। चुनाँचे वो (क़िला के पास) आए और दरवाज़े के करीब पहुँचकर उन्होंने खुद को अपने कपड़ों में इस तरह छुपा लिया जैसे कोई क़ज़ा-ए-हाजत कर रहा हो। क़िले के तमाम आदमी अंदर दाख़िल हो चुके थे। दरबान ने आवाज़ दी, ऐ अल्लाह! के बन्दे अगर आना है तो जल्द आ जा, मैं अब दरवाज़ा बन्द कर दूँगा। (अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ि. ने कहा) चुनाँचे मैं भी अंदर चला गया और छुपकर उसकी कार्रवाई देखने लगा। जब सब लोग अंदर आ गये तो उसने दरवाज़ा बन्द किया और कुँजियों का गुच्छा एक खूँटी पर लटका दिया। उन्होंने बयान किया कि अब मैं उन कुँजियों की तरफ़ बढ़ा और उन्हें ले लिया, फिर मैंने क़िला का दरवाज़ा खोल लिया। अबू राफ़ेअ के पास रात के वक़्त दास्तानें बयान की जा रही थीं और वो अपने ख़ास बालासूखाने में था। जब दास्तान गो उसके यहाँ से उठकर चले गये तो मैं उस कमरे की तरफ़ चढ़ने लगा। इस अंश में, मैं जितने दरवाज़े उस तक पहुँचने के लिये खोलता था उन्हें अंदर से बन्द करता जाता था। मेरा मतलब ये था कि अगर

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رُفِعَ إِلَى أَبِي رَافِعٍ فَدَخَلَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثَيْبٍ بَنِي كَيْلٍ لَيْلًا وَهُوَ نَائِمٌ لَقْنَةً. (راجع: ٣٠٢٢)

٤٠٣٩- حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ بْنِ الْبَرَاءِ قَالَ : بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي رَافِعٍ الْيَهُودِيَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَأَمَرَ عَلَيْهِمْ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثَيْبٍ وَكَانَ أَبُو رَافِعٍ يُؤْذِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُبِينُ عَلَيْهِ وَكَانَ فِي حِمْنٍ لَهُ بِأَرْضِ الْحِجَازِ فَلَمَّا ذَنُوبًا مِنْهُ وَقَدْ غَرَبَتِ الشَّمْسُ وَرَاحَ النَّاسُ بِسَرَحِهِمْ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ لِأَصْحَابِهِ: اجْلِسُوا مَكَانَكُمْ، فَإِنِّي مُنْطَلِقٌ وَمُتَطَلِّفٌ لِلْبُؤَابِ، لَعَلِّي إِنْ ادْخُلْتُ فَأَقْبَلَ حَتَّى دَنَا مِنَ الْبَابِ، ثُمَّ تَفَتَّحَ بِغُورِهِ كَأَنَّهُ يَقْضِي حَاجَةً، وَلَقَدْ دَخَلَ النَّاسُ فَهَتَفَ بِهِ الْبُؤَابُ يَا عَبْدَ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ أَنْ تَدْخُلَ فَادْخُلْ فَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَغْلِقَ الْبَابَ، فَدَخَلْتُ لَكُمْتُ، فَلَمَّا دَخَلَ النَّاسُ أَغْلَقَ الْبَابَ، ثُمَّ عَلِقَ الْأَغْلَاقَ عَلَى وَتَرٍ قَالَ: لَقَنْتُ إِلَى الْأَقَالِيدِ فَأَخَذْتُهَا فَفَتَحْتُ الْبَابَ، وَكَانَ أَبُو رَافِعٍ يُسَمِّرُ عِنْدَهُ، وَكَانَ فِي غَلَالٍ لَهُ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْهُ أَهْلُ سَمَرِهِ صَعِدْتُ إِلَيْهِ فَنَجَلْتُ كُلَّمَا لَقَنْتُ بِهَا أَغْلَقْتُ عَلَيَّ

क्रिले वालों को मेरे बारे में इल्म भी हो जाए तो उस वक़्त तक ये लोग मेरे पास न पहुँच सकें जब तक मैं उसे क़त्ल न कर लूँ। आख़िर मैं उसके करीब पहुँच गया। उस वक़्त वो एक तारीक (अंधेरे) कमरे में अपने बाल बच्चों के साथ (सो रहा) था मुझे कुछ अंदाज़ा नहीं हो सका कि वो कहाँ है। इसलिये मैंने आवाज़ दी, या अबा राफ़ेअ? वो बोला कौन है? अब मैंने आवाज़ की तरफ़ बढ़कर तलवार की एक ज़रब लगाई। उस वक़्त मेरा दिल धक-धक कर रहा था। यही वजह हुई कि मैं उसका काम तमाम नहीं कर सका। वो चीख़ा तो मैं कमरे से बाहर निकल आया और थोड़ी देर तक बाहर ही ठहरा रहा। फिर दोबारा अंदर गया और मैंने आवाज़ बदल कर पूछा, अबू राफ़ेअ! ये आवाज़ कैसी थी? वो बोला तेरी माँ ग़ारत हो। अभी अभी मुझ पर किसी ने तलवार से हमला किया है। उन्होंने बयान किया कि फिर (आवाज़ की तरफ़ बढ़कर) मैंने तलवार की एक ज़रब और लगाई। उन्होंने बयान किया कि अगरचे मैं उसे ज़ख़मी तो बहुत कर चुका था लेकिन वो अभी मरा नहीं था। इसलिये मैंने तलवार की नोक उसके पेट पर रखकर दबाई जो उसकी पीठ तक पहुँच गई। मुझे अब यक़ीन हो गया कि मैं उसे क़त्ल कर चुका हूँ। चुनौचे मैंने दरवाज़े एक एक करके खोलने शुरू किया। आख़िर मैं एक ज़ीने पर पहुँचा मैं ये समझा कि ज़मीन तक पहुँच चुका हूँ (लेकिन अभी मैं पहुँचा न था) इसलिये मैंने उस पर पाँव रख दिया और नीचे गिर पड़ा। चौदनी रात थी। इस तरह गिर पड़ने से मेरी पिण्डली टूट गई। मैंने उसे अपने अमामा से बाँध लिया और आकर दरवाज़े पर बैठ गया। मैंने ये इरादा कर लिया था कि यहाँ से उस वक़्त तक नहीं जाऊँगा जब तक ये न मा'लूम कर लूँ कि आया मैं उसे क़त्ल कर चुका हूँ या नहीं? जब मुर्ग़ ने आवाज़ दी तो उसी वक़्त क्रिले की फ़स्लील पर एक पुकारने वाले ने खड़े होकर पुकारा कि अहले हिजाज़ के ताजिर अबू राफ़ेअ की मौत का ऐलान करता हूँ। मैं अपने साथियों के पास आया और उनसे कहा कि चलने की जल्दी करो। अल्लाह तआला ने अबू राफ़ेअ को क़त्ल करा दिया। चुनौचे मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको उसकी इज़िलाअ दी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपना पाँव फैला। मैंने पाँव फैलाया तो आपने उस

مِنْ ذَاخِلٍ قُلْتُ إِنَّ الْقَوْمَ لَوَ تَلَبَّوْا مِنِّي لَمْ يَخْلَعُوا إِلَيَّ حَتَّى أَتْلُفَهُ فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ فَإِذَا هُوَ فِي بَيْتٍ مُّظْلِمٍ وَسَطٍ عِيَالِهِ لَا أَفْرِقِي أَيْنَ هُوَ مِنْ أَيْنَ؟ فَقُلْتُ : يَا رَافِعُ، قَالَ : مَنْ هَذَا؟ فَأَقْبَضْتُ نَحْوَ الصَّوْتِ فَأَضْرَبُهُ ضَرْبَةً بِالسَّيْفِ وَأَنَا دَمِشْقٌ لَمَّا أَتَيْتُ شَيْئًا، وَصَاحَ لَمَخَرَجْتُ مِنَ الْبَيْتِ فَأَمَكْتُ غَيْرَ بَعِيدٍ، ثُمَّ دَخَلْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ مَا هَذَا الصَّوْتُ يَا أَبَا رَافِعٍ؟ قَالَ : لَأَمَكْتُ الْوَيْلَ إِنَّ رَجُلًا فِي الْبَيْتِ ضَرَبَنِي قَبْلَ بِالسَّيْفِ، قَالَ فَأَضْرَبُهُ ضَرْبَةً أُخْتِنَةً وَتَمَّ أَتْلُفُهُ، ثُمَّ وَضَعْتُ طَبْعَ السَّيْفِ فِي بَطْنِهِ حَتَّى أَخَذَ فِي ظَهْرِهِ فَفَرَّقْتُ أَنِّي قَتَلْتُهُ فَجَعَلْتُ أَفْتَحُ الْأَبْوَابَ يَا يَا حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى دَرَجَةٍ لَهُ فَوَضَعْتُ رِجْلِي وَأَنَا أَرَى أَنِّي لَقِيَ انْتَهَيْتُ إِلَى الْأَرْضِ فَوَقُفْتُ فِي تِلْكَ مَقْبُورَةٍ فَأَنْكَسَرَتْ سَاقِي فَفَعَصْتُهَا بِعِمَامَةٍ ثُمَّ انْطَلَقْتُ حَتَّى جَلَسْتُ عَلَى الْبَابِ، فَقُلْتُ : لَا أَخْرُجُ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَغْلِمَ أَتْلُفُهُ لَمَّا صَاحَ الدِّيكُ قَامَ النَّاسُ عَلَى السُّورِ، فَقَالَ : أَتَيْتُ أَبَا رَافِعٍ فَاجْرُأْ أَمْلَ الْعَجَازِ لَأَنْطَلِقْتُ إِلَى أَصْحَابِي فَقُلْتُ النِّجَاءَ فَقَدْ قَتَلَ اللَّهُ أَبَا رَافِعٍ فَانْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَدَّعْتُهُ فَقَالَ لِي : ((اِسْطُ رَجُلَكَ)) فَبَسَطْتُ رِجْلِي فَمَسَحَهَا

पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और पाँव इतना अच्छा हो गया जैसे कभी उसमें मुझको कोई तकलीफ़ हुई ही न थी। (राजेअ: 3022)

لَكَانَهَا لَمْ اشْكِيهَا قَطُّ.

[راجع: 3022]

4040. हमसे अहमद बिन इब्मान बिन हकीम ने बयान किया, हमसे शुरैह इब्ने मस्लमा ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद यूसुफ़ बिन इस्हाक़ ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन अतीक और अब्दुल्लाह बिन उत्बा (रज़ि.) को चन्द्र म्हाबा के साथ अबू राफ़ेअ (के क़त्ल) के लिये भेजा। ये लोग खाना हुए। जब उसके क़िले के नज़दीक पहुँचे तो अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि तुम लोग यहीं ठहर जाओ पहले मैं जाता हूँ, देखूँ मूरते हाल क्या है। अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) ने बयान किया कि (क़िले के करीब पहुँचकर) मैं अंदर जाने के लिये तदबीरें करने लगा। इत्तिफ़ाक़ से क़िले का एक गधा गुम था। उन्होंने बयान किया कि उस गधे को तलाश करने के लिये क़िले वाले रोशनी लेकर बाहर निकले। बयान किया कि मैं डरा कि कहीं मुझे कोई पहचान न ले। इसलिये मैंने अपना सर ढंक लिया, जैसे कोई क़ज़ा-ए-हाजत कर रहा है। उसके बाद दरबान ने आवाज़ दी कि इससे पहले मैं दरवाज़ा बन्द कर लूँ जिसे क़िले के अंदर दाख़िल होना है वो जल्दी आ जाए। मैंने (मौक़ा ग़नीमत समझा और) अंदर दाख़िल हो गया और क़िले के दरवाज़े के पास ही जहाँ गधे बाँधे जाते थे वहीं छुप गया। क़िले वालों ने अबू राफ़ेअ के साथ खाना खाया और फिर उसे क़िस्से सुनाते रहे। आख़िर कुछ रात गये वो सब क़िले के अंदर ही अपने अपने घरों में वापस आ गये। अब सन्नाटा छा चुका था और कहीं कोई हरकत नहीं होती थी। इसलिये मैं इस तवीला से बाहर निकला। उन्होंने बयान किया कि मैंने पहले ही देख लिया था कि दरबान ने कुँजी एक त़ाक़ में रखी है, मैंने कुँजी अपने क़ब्ज़े में ले ली और फिर सबसे पहले क़िले का दरवाज़ा खोला। बयान किया कि मैंने

4040- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَفْصَانَ حَدَّثَنَا شَرِيحٌ هُوَ ابْنُ مَسْلَمَةَ. حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبَاةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي رَافِعٍ عَبْدَ اللَّهِ بْنِ غِيَاثٍ وَعَبْدَ اللَّهِ بْنُ عَبَّادٍ لِي نَاسٍ مَعَهُمْ فَأَنْطَلَقُوا حَتَّى دَنَوْا مِنَ الْجَيْشِ فَقَالَ لَهُمْ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ غِيَاثٍ : امْكُثُوا أَنْتُمْ حَتَّى أَنْطَلِقَ أَنَا فَأَنْظُرُ قَالَ: فَتَلَقَّيْتُ أَنْ أَدْخُلَ الْجَيْشَ فَفَقَدُوا جِمَارًا لَهُمْ، قَالَ: فَخَرَجُوا بِقَبْصٍ يَطْلُبُونَهُ قَالَ: فَخَشِيتُ أَنْ أُغْرِفَ فَطَطِئْتُ رَأْسِي وَرَجُلِي كَانِي الْقَصِي حَاجَةً ثُمَّ نَادَى صَاحِبُ الْبَابِ مَنْ أَرَادَ أَنْ يَدْخُلَ فَلْيَدْخُلْ قَبْلَ أَنْ أُغْلِقَهُ، فَدَخَلْتُ ثُمَّ اخْتَبَأْتُ لِي مَرْبِطٌ جَمَارِ عَبْدِ بَابِ الْجَيْشِ فَمَشَوْا عِنْدَ أَبِي رَافِعٍ وَتَحَدَّثُوا حَتَّى دَخَلْتُ مَاعَةً مِنَ اللَّيْلِ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى بُيُوتِهِمْ فَلَمَّا خَدَّاتِ الْأَصْوَاتِ وَلَا اسْمَعَ حَرَكَهَ خَرَجْتُ قَالَ: وَرَأَيْتُ صَاحِبَ الْبَابِ حَيْثُ وَضَعَ مِفْتَاحَ الْجَيْشِ فِي كُرْوَةٍ فَأَخَذَتْهُ فَفَتَحَتْ بِهِ بَابَ الْجَيْشِ، قَالَ: قُلْتُ إِنْ تَلَوَّ بِِي الْقَوْمُ

ये सोचा था कि अगर किले वालों को मेरा इल्म हो गया तो मैं बड़ी आसानी के साथ भाग सकूँगा। इसके बाद मैंने उनके कमरों के दरवाजे खोलने शुरू किये और उन्हें अंदर से बन्द करता जाता था। अब मैं ज़ीनों से अबू राफ़ेअ के बालाखानों तक पहुँच चुका था। उसके कमरा में अँधेरा था। उसका चिराग़ गुल कर दिया गया था। मैंने नहीं अंदाज़ा कर पाया था कि अबू राफ़ेअ कहाँ है। इसलिये मैंने आवाज़ दी, या अबू राफ़ेअ! इस पर वो बोला कि कौन है? उन्होंने बयान किया कि फिर आवाज़ की तरफ़ मैं बढ़ा और मैंने तलवार से उस पर हमला किया। वो चिल्लाने लगा लेकिन ये वार ओछा पड़ा था। उन्होंने बयान किया कि फिर दोबारा मैं उसके करीब पहुँचा, गोया मैं उसकी मदद को आया हूँ। मैंने आवाज़ बदलकर पूछा। अबू राफ़ेअ क्या बात पेश आई है? उसने कहा तेरी माँ ग़ारत हो, अभी कोई शख्स मेरे कमरे में आ गया और तलवार से मुझ पर हमला किया है। उन्होंने बयान किया कि इस मर्तबा फिर मैंने उसकी आवाज़ की तरफ़ बढ़कर दोबारा हमला किया। इस हमले में भी वो क़त्ल न हो सका। फिर वो चिल्लाने लगा और उसकी बीवी भी उठ गई (और चिल्लाने लगी) उन्होंने बयान किया कि फिर मैं बज़ाहिर मददगार बनकर पहुँचा और मैंने अपनी आवाज़ बदल ली। उस वक़्त वो चित्त लेटा हुआ था। मैंने अपनी तलवार उसके पेट पर रखकर ज़ोर से उसे दबाया। आख़िर जब मैंने हड्डी टूटने की आवाज़ सुन ली तो मैं वहाँ से निकला, बहुत धबराया हुआ। अब ज़ीना पर आ चुका था। मैं उतरना चाहता था कि नीचे गिर पड़ा। जिससे मेरा पाँव टूट गया। मैंने उस पर पट्टी बाँधी और लंगड़ाते हुए अपने साथियों के पास पहुँचा। मैंने उनसे कहा कि तुम लोग जाओ और रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़ुशख़बरी सुनाओ। मैं तो यहाँ से उस वक़्त तक नहीं हटूँगा जब तक उसकी मौत का ऐलान न सुन लूँ, चुनान्चे सुबह के वक़्त मौत का ऐलान किया कि अबू राफ़ेअ की मौत बाक़ेअ हो गई है। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं चलने के लिये उठा, मुझे (कामयाबी की खुशी में) कोई तकलीफ़ मा'लूम नहीं होती थी। इससे पहले कि मेरे साथी हज़ूर अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे, मैंने अपने साथियों को पालिया। आँहज़रत

انطلقت على مهل، ثم عمدت إلى
ابواب ثوبهم ففتحتها عليهم من
ظاهر، ثم عمدت إلى أبي رافع في
سلم فإذا اثنت مظلمة قد طمى مراحله
فلم أدر أين الرجل؟ فقلت: يا أبا
رافع، قال: من هذا؟ قال: فعمدت
نحو الصوت فأخبرته وصاح فلم تفر
شيئاً؟ قال: ثم جئت كآلى أغيظه فقلت
: ما لك يا أبا رافع؟ وخرت صوتي،
فقال: ألا أفيجك لأمتك الوتل؟ دخل
عليّ رجل فصرّيت بالسيف، قال:
فعمدت له أيضاً فأخبرته أخرى فلم
تفر شيئاً فصاح ولأم أظله، قال: ثم
جئت وخرت صوتي كآلى الميث،
فإذا مستلي على ظهره فأضغ السيف
في بطنه ثم أنكفئ عليه حتى سمعت
صوت العظم، ثم خرجت ذمياً حتى
أثنت السلم أريد أن أنزل فاستقط منه
فانعلقت رجلي فقصبتها ثم أثنت
اصحابي إخبيل فقلت لهم: انطلقوا
فبشروا رسول الله صلى الله عليه
وسلم لأنّي لا أبرح حتى أسمع
النّاعية، فلما كان لي وجوه الصّبح
صعد النّاعية فقال: أنى أبا رافع، قال:
: فقمنا أمشي ما بي قلباً، فأدرجت
اصحابي قبل أن يأتوا النبي صلى الله
عليه وسلم فبشروا.

(ﷺ) को खुशखबरी सुनाई। (राजेअ: 3022)

[راجع: २०२२]

तशरीह: अबू राफ़ेअ यहूदी खैबर में रहता था। रईसुतुज्जार (व्यापारियों का सरदार) और ताजिरुल हिजाज से मशहूर था। इस्लाम का सख्ततरीन दुश्मन, हर वक़्त रसूले करीम (ﷺ) की हिज्व किया करता था। ग़ज़्व-ए-ख़न्दक के मौक़े पर अरब के मशहूर कबीलों को मदीना पर हमला करने के लिये उसने उभारा था। आख़िर चन्द ख़ज़रजी सहाबियों की ख़्वाहिश पर आहज़रत (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन अतीक अंसारी की क़यादत में पाँच आदमियों को उसके क़त्ल पर मामूर फ़र्माया था। साथ में ताकीद फ़र्माई कि औरतों और बच्चों को हर्गिज़ क़त्ल न करना। चुनाँचे वो हुआ जो ऊपर वाली हदीष में तफ़सील के साथ मौजूद है। कुछ दफ़ा क़यामे अमन के लिये ऐसे मुप्सिदों का क़त्ल करना दुनिया के हर क़ानून में ज़रूरी हो जाता है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, अन अब्दिल्लाहि बिन क़अबिब्नि मालिक क़ाल कान मिम्मा सन अल्लाहु लिरसूलिही अन्नलऔस वलख़ज़रज काना यतसावलानि तसावल्फहलैन ला तस्नडलऔसु शैअन इल्ला क़ालतिलख़ज़रजु वल्लाहि ला तज्हबून बिहाज़िही फ़ज़लन अलैना व कज़ालिकलऔसु फ़लम्मा असाबतिलऔसु क़अबबन अशरफ़ तज़ाकरतिलख़ज़रजु मन रज़ुलुन लहू मिनलअदावति लिरसूलिल्लाहि (ﷺ) कमा कान लिक्कअब फज़क़रु इब्न अबिलहक़ीक़ व हुब बि ख़ैबर (फ़हलुबारी) या'नी औस और ख़ज़रज का बाहमी हाल ये था कि वो दोनों क़बीले आपस में इस तरह रस्क करते रहते थे जैसे दो सौंड आपस में रस्क करते हैं। जब क़बीला औस के हाथों कोई अहम काम अंजाम पाता तो ख़ज़रज वाले कहते कि क़सम अल्लाह की इस काम को करके तुम फ़ज़ीलत में हमसे आगे नहीं बढ़ सकते। हम इससे भी बड़ा काम अंजाम देंगे। औस का भी यही ख़याल रहता था। जब क़बीला औस ने क़अब बिन अशरफ़ को ख़त्म किया तो ख़ज़रज ने सोचा कि हम किसी इससे बड़े दुश्मन का ख़ात्मा करेंगे जो रसूले करीम (ﷺ) की अ़दावत में इससे बढ़कर होगा। चुनाँचे उन्होंने इब्ने अबी अल हक़ीक़ का इतिख़ाब किया जो ख़ैबर में रहता था और रसूले करीम (ﷺ) की अ़दावत में ये क़अब बिन अशरफ़ से आगे बढ़ा हुआ था। चुनाँचे ख़ज़रज के जवानों ने इस ज़ालिम का ख़ात्मा किया। जिसकी तफ़सील यहाँ मज़कूर है। रिवायत में अबू राफ़ेअ की बीवी के जागने का ज़िक्र आया है। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में है कि वो जागकर चिल्लाने लगी। अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने उस पर तलवार उठाई लेकिन फ़ौरन मुझको फ़र्माने नबवी याद आ गया और मैंने उसे नहीं मारा। आगे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) की हड्डी सरक जाने का ज़िक्र है। अगली रिवायत में पिण्डली टूट जाने का ज़िक्र है। और इसमें जोड़ खुल जाने का, दोनों बातों में इख़तिलाफ़ नहीं है क्योंकि एहतिमाल है कि पिण्डली की हड्डी टूट गई हो और जोड़ भी किसी जगह से खुल गया हो।

बाब 17 : ग़ज़्व-ए-उहुद का बयान

١٧- باب غزوة أحد

और सूरह आले इमरान में अल्लाह तआला का फ़र्मान, और वो वक़्त याद कीजिए, जब आप सुबह को अपने घरों के पास से निकले, मुसलमानों को लड़ाई के लिये मुनासिब ठिकानों पर ले जाते हुए और अल्लाह बड़ा सुनने वाला है, बड़ा जानने वाला है। और इसी सूरत में अल्लाह अज़ व जल्ल का फ़र्मान, और हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम्ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन होओगे। अगर तुम्हें कोई ज़ख़म पहुँच जाए तो उन लोगों को भी ऐसा ही ज़ख़म पहुँच चुका है और मैं उन दिनों की उलटफेर तो लोगों के दरम्यान करता ही रहता हूँ, ताकि अल्लाह ईमानवालों को जान ले और तुममें से कुछ को शहीद बनाए और अल्लाह तआला ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता और ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को मेल कुचैल से सफ़ा कर दे और काफ़िरो को मिटा दे।

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَأَذِ غَنَوْتُ مِنْ أَهْلِكَ نُبُوءِ الْمُؤْمِنِينَ مُقَابِدَ لِلْفِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَغْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِثْلُهُ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ وَلِيَمَحْضَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ

क्या तुम इस गुमान में हो कि जन्नत में दाखिल हो जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुमसे उन लोगों को नहीं जाना जिन्होंने जिहाद किया और न सन्न करने वालों को जाना और तुम तो मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे पहले कि उसके सामने आओ। सो उसका अब तुमने खूब खुली आँखों से देख लिया। और अल्लाह तआला का फ़र्मान, और यकीनन तुमसे अल्लाह ने सच कर दिखाया अपना वा'दा, जबकि तुम उन्हें उसके हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम खुद ही कमजोर पड़ गये और आपस में झगड़ने लगे। हुक्मे रसूल के बारे में और तुमने नाफ़रमानी की बाद उसके कि अल्लाह ने दिखा दिया था जो कुछ कि तुम चाहते थे। कुछ तुममें वे थे जो दुनिया चाहते थे और कुछ तुममें ऐसे थे जो आखिरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुमको उनमें से फेर दिया ताकि तुम्हारी पूरी आजमाइश करे और अल्लाह ने तुमसे दरगुजर की और अल्लाह ईमान लाने वालों के ह क़ में बड़ा फ़जल वाला है। (और आयत) और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये हैं उन्हें हमिज़ मुर्दा मत ख़याल करो। आख़िर आयत तक।

الْكَافِرِينَ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْمُرُ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَلُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمُ الصَّابِرِينَ وَلَقَدْ كُنتُمْ تَمْنُونَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُلْقَوْنَ لَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ وَقَوْلُهُ: «وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَغَدَهُ إِذْ تُحْسِنُونَهُمْ» «يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا فَتَنَّاكُمْ فِي الْأَمْرِ وَغَضَبْنَا مِنْ بَعْدِ مَا أَرَاكُمْ مَا تُحِبُّونَ مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ثُمَّ صَرَفْنَا عَنْهُمْ غَيْبَهُمْ لِنَبْلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ» «وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْواتًا» الآية.

तस्रीह:

आयाते मज़क़रा में जंगे उहुद के कुछ मुख्तलिफ़ कवाइफ़ पर इशारात हैं। तारीख़ 7 शव्वाल 3 हिजरी में उहुद पहाड़ के करीब ये जंग हुई। औहज़रत (ﷺ) का लश्कर एक हज़ार मर्दों पर मुश्तमिल था जिसमें से तीन सौ मुनाफ़िक़ वापस लौट गये थे। मुश्किनी का लश्कर तीन हज़ार था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पचास सिपाहियों का एक दस्ता हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रजि.) की मातहत में उहुद की एक घाटी की हिफ़ाज़त पर मुक़र्र किया था और ताकीद की थी कि हमारा हुक्म आए बग़ैर हमिज़ ये घाटी न छोड़ें। हमारी जीत हो या हार तुम लोग यहीं जमे रहो। जब शुरू में मुसलमानों को फ़तह होने लगी तो उन लश्करियों में से अक़सर ने फ़तह हो जाने के ख़याल से दर्रा ख़ाली छोड़ दिया जिससे मुश्किनी ने पलटकर मुसलमानों के पीछे से उन पर हमला किया और मुसलमानों को वो नुक़साने अज़ीम पहुँचा जो तारीख़ में मशहूर है। अहादीषे ज़ेल में जंगे उहुद के बारे में कवाइफ़ बयान किये गये हैं। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व क़ाललज़लमाउ व कान फ़ी क़िस्सति उहुद व मा इसीब बिहिलमुस्लिमून मिनल्फ़वाइदि वल्हिकमिर्बबानिय्यति अश्याउ अज़ीमतुन मिन्हा तअरीफ़ुलमुस्लिमीन सुअ आक्रिबतिल्मअसियति व शूम इर्तिकाबिन्हयि लिमा वक़अ मिन तर्किरूमाति मौक्रिफ़ुहुमुल्लज़ीन अमरहुमुर्सूलु अल्लायजू मिन्हु व मिन्हा अन्न आदतरसूलि अन तबत्तल व तकून लहल्आक्रिबतु कमा तक़दम फी क़िस्सति हिरक्ल मअ अबी सुफ़्यान वल्हिकमतु ज़ालिक अन्नहुम लौ इन्तस्रर दाइमन दरख़ल फिल्मूमिनीन मन लैस मिन्हुम व लम यतमय्यज़ अस्सादिकु मिन गैरिही व लो इन्कसरू दाइमन लम यहमुलिल्मसूदु मिनल्बिअप्रति फ़क्तज़तिल्हिकमतु अल्जम्उ बैनल्अमैनि लितमीज़िस्सादिकि मिनल्काज़िब व अन्न ज़ालिक अन्न निफ़ाक़ल्मुनाफ़िक़ीन कान मख़िफ़यन अनिल्मुस्लिमीन फलम्मा ज़रत हाज़िहिल्क़िस्सतु व अज़हर अहलुन्नफ़ाक़ि मा अज़हरूहु मिल्फ़अलि वल्कौलि आदत्तल्वीहु तस्रीहन व अरफ़ल्मुस्लिमून अन्न लहुम अदुल्लुन फी दूरिहिम फस्तअदु लहुम व तर्हज़ू मिन्हुम (फ़तुल्बारी) या नी उलमा ने कहा कि उहुद के वाक़िये में बहुत से फ़वाइद और बहुत सी हिक़मते हैं जो अहमियत के लिहाज़ से बड़ी अज़मत रखती हैं। उनमें से एक ये कि मुसलमानों को मअसियत (नाफ़रमानी) और मन्हियात के इर्तिकाब का बुरा नतीजा दिया जाए ताकि आइन्दा वो ऐसा न करें। कुछ तीरंदाज़ों को

रसूल करीम (ﷺ) ने एक घाटी पर मुकरर फर्माकर सख्त ताकीद फर्माई थी कि हमारी जीत हो या हार हमारा हुक्म आए बगैर तुम उस घाटी से मत हटना, मगर उन्होंने नाफरमानी की और मुसलमानों की अब्बल मरहले पर फतह देखकर वो अम्वाले गनीमत लूटने के ख्याल से घाटी को छोड़कर मैदान में आ गये। इस नाफरमानी का जो खामियाजा सारे मुसलमानों को भुगतना पड़ा वो मा'लूम है। अल्लाह ने बतला दिया कि नाफरमानी और मअसियत के इर्तिकाब का नतीजा ऐसा ही होता है और इन हिकमतों में से एक हिकमत ये भी है कि अल्लाह की तरफ से मुकरर है कि रसूलों को आजमाया जाता है और आखिर अंजाम भी उन ही की फतह होती है जैसा कि हिरकल और अबू सुफयान के किस्से में गुजर चुका है। अगर हमेशा रसूलों के लिये मदद ही होती रहे तो मोमिनों में गैर मोमिन भी दाखिल हो सकते हैं और सादिक और काजिब लोगों में तमीज़ उठ सकती है और अगर वो हमेशा हारते ही रहें तो बिअसत का मकसूद फौत हो जाता है।

पस हिकमते इलाही का तकाज़ा फतह व शिकस्त हर दौर के दरम्यान हुआ ताकि सादिक और काजिब में फर्क होता रहे। मुनाफिकीन का निफाक पहले मुसलमानों पर मखफ़ी (छुपा हुआ) था। इस इम्तिहान ने उनको ज़ाहिर कर दिया और उन्होंने अपने क़ौल और अमल से खुले तौर पर अपने निफाक को ज़ाहिर कर दिया। तब मुसलमानों पर ज़ाहिर हो गया कि उनके घरों ही में उनके दुश्मन छुपे हुए हैं जिनसे परहेज़ करना लाज़िम है। आजकल भी ऐसे नामो निहाद मुसलमान मौजूद हैं जो नमाज़ व रोज़ा करते हैं मगर वक़्त आने पर इस्लाम और मुसलमानों के साथ ग़दारी करते रहते हैं। ऐसे लोगों से हर वक़्त चौकन्ना रहना ज़रूरी है। निफाक बहुत ही बुरा मर्ज है। जिसकी मज़मूत कुआन मजीद में कई जगह बड़े ज़ोरदार लफ़्ज़ों में हुई है और उनके लिये दोज़ख का सबसे नीचे वाला हिस्सा वैल सज़ा के लिये तजवीज़ होना बतलाया है। हर मुसलमान को पाँचों वक़्त ये दुआ पढ़नी चाहिये अल्लाहुम्म अज़्जुबिक मिनन्निफ़ाकि वशिशकाकि व सूइलअख़लाकि, ऐ अल्लाह! मैं निफाक से और आपस की फूट से और बुरे अख़लाक से तेरी पनाह चाहता हूँ। आमीन या रब्बल आलमीन।

4041. हमसे इब्राहीम बिन मूसाने बयान किया, हमको अब्दुल वहहाब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज्व-ए-उहुद के मौक़े पर फर्माया, ये हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) हैं, हथियारबन्द, अपने घोड़े की लगाम थामे हुए। (राजेअ: 3995)

٤٠٤١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ: ((هَذَا جِبْرِيلُ أَخْبَدَ بِرَأْسِ قَوْسِهِ عَلَيْهِ إِدَاءَةُ الْخَرْبِ)). [راجع: ٣٩٩٥]

4042. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमको ज़करिया बिन अदी ने ख़बर दी, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें हैवाने, उन्हें यज़ीद बिन हबीब ने, उन्हें अबुल ख़ैर ने और उनसे हज़रत उक्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ साल बाद या'नी आठवीं बरस में ग़ज्व-ए-उहुद के शुहदा पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे आप ज़िन्दों और मुर्दों सबसे रुख़्सत हो रहे हों। उसके बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फर्माया, मैं तुमसे आगे आगे हूँ, मैं तुम पर गवाह रहूँगा और मुझसे (क़यामत के दिन) तुम्हारी मुलाकात हौज़े (कौषर) पर होगी। इस वक़्त भी मैं अपनी इस जगह से हौज़ (कौषर) को देख रहा हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे

٤٠٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ حَيَوَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ غَامِرٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمَوْدَعِ لِلْأَحْيَاءِ وَالْأَمْوَاتِ ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: ((إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ قَرِطٌ، وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ، وَإِنْ مَوَّعِدْكُمْ الْخَوْضُ وَإِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَيْهِ مِنْ مَقَامِي هَذَا

उसका कोई खतरा नहीं है कि तुम शिर्क करोगे, हाँ मैं तुम्हारे बारे में दुनिया से डरता हूँ कि तुम कहीं दुनिया के लिये आपस में मुकाबला न करने लगो। उम्मा बिन आमिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये आखिरी दीदार था जो मुझको नसीब हुआ। (राजेअ: 1344)

وَأَنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمْ الدُّنْيَا أَنْ تَتَأَلَّسُوا)). قَالَ فَكَانَتْ آخِرَ نَظَرِهِ نَظَرُهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

[راجع: 1344]

तशरीह : उहद की लड़ाई 3 हिजरी शब्वाल के महीने में हुई और 11 हिजरी माहे रबीउल अव्वल में आपकी वफ़ात हो गई। इसलिये राबी का ये कहना कि आठ बरस बाद झहीह नहीं हो सकता। मतलब ये है कि आठवीं बरस जैसा कि हमने तर्जुमा में ज़ाहिर कर दिया है। ज़िन्दों का रुझान करना तो ज़ाहिर है क्योंकि ये वाक़िया आपके हयाते तय्यिबा के आखिरी साल का है और मुदों का विदाअ उसका मा'नी यूँ कर रहे हैं कि अब बदन के साथ उनकी ज़ियारत न हो सकेगी। जैसे दुनिया में हुआ करती थी। हाफ़िज़ साहब ने कहा कि औहज़रत (ﷺ) वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा हैं लेकिन वो उख़बी ज़िन्दगी है जो दुनियावी ज़िन्दगी से मुशाबिहत नहीं रखती। रिवायत में हौज़े कौषर पर शफ़े दीदारे नबवी (ﷺ) का ज़िक्र है। वहाँ हम सब मुसलमान आपसे शफ़े मुलाकात हासिल करेंगे। मुसलमानों! कोशिश करो कि क़यामत के दिन हम अपने पैग़म्बर (ﷺ) के सामने शर्मिन्दा न हों। जहाँ तक हो सके आपके दीन की मदद करो। कुआन व हदीष फैलाओ। जो लोग हदीष शरीफ़ और हदीष वालों से दुश्मनी रखते हैं न मा'लूम वो हौज़े कौषर पर रसूले करीम (ﷺ) को क्या मुँह दिखाएँगे। अल्लाह तआला हम सबको हौज़े कौषर पर हमारे रसूल (ﷺ) की मुलाकात नसीब फ़र्माए, आमीन।

4043. हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे इब्ने इस्हाक़ (अम् बिन अब्दुल्लाह सबीई) ने और उनसे बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे उहद के मौक़े पर जब मुश्रीकीन से मुकाबला के लिये हम पहुँचे तो औहज़रत (ﷺ) ने तीरंदाज़ों का एक दस्ता अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की मातहत में (पहाड़ी पर) मुक़र्रर फ़र्माया था और उन्हें ये हुक्म दिया था कि तुम अपनी जगह से न हटना, उस वक़्त भी जब तुम लोग देख लो कि हम उन पर ग़ालिब आ गये हैं, फिर भी यहाँ से न हटना और उस वक़्त भी जब तुम देख लो कि वो हम पर ग़ालिब आ गये, तुम लोग हमारी मदद के लिये न आना। फिर जब हमारी मुठभेड़ कुफ़्फ़ार से हुई तो उनमें भगदड़ मच गई। मैंने देखा कि उनकी औरतें पहाड़ियों पर बड़ी तेज़ी के साथ भागी जा रही थीं, पिण्डलियों से ऊपर कपड़े उठाए हुए, जिससे उनके पाज़ेब दिखाई दे रहे थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के (तीरंदाज़) साथी कहने लगे कि ग़नीमत ग़नीमत। इस पर अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने ताकीद की थी कि अपनी जगह से न हटना (इसलिये तुम लोग ग़नीमत का माल लूटने न जाओ)

٤٠٤٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَوْسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لَقِينَا الْمُشْرِكِينَ يَوْمَئِذٍ وَاجْتَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جِثًّا مِنَ الرُّمَةِ وَأَمَرَ عَلَيْهِمْ عَبْدُ اللَّهِ وَقَالَ: ((لَا تَبْرَحُوا إِنْ رَأَيْتُمُونَا ظَهَرْنَا عَلَيْهِمْ فَلَا تَبْرَحُوا وَإِنْ رَأَيْتُمُوهُمْ ظَهَرُوا عَلَيْنَا فَلَا تُعَيِّنُونَا)) فَلَمَّا لَقِينَا هَرَبُوا حَتَّى رَأَيْتِ النِّسَاءَ يَشْتَدِدْنَ فِي الْعَجَلِ وَقَعْنَ عَنْ سَوَاقِبِهِنَّ قَدْ بَدَتْ خَلَائِلُهُنَّ فَاتَّخَذُوا يَقُولُونَ: الْغَيْمَةُ الْغَيْمَةُ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جُبَيْرٍ: عَهْدَ إِلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لَا تَبْرَحُوا قَائِمًا فَلَمَّا أَبَوْا صَرَفَ وَجُوهَهُمْ فَأَصَابَ سِتُّونَ قَبِيلًا

लेकिन उनके साथियों ने उनका हुक्म मानने से इंकार कर दिया। उनकी इस हुक्म अदुली के नतीजे में मुसलमानों को हार हुई और सत्तर मुसलमान शहीद हो गये। इसके बाद अबू सुफयान ने पहाड़ी पर से आवाज़ दी, क्या तुम्हारे साथ मुहम्मद (ﷺ) मौजूद हैं? हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई जवाब न दे, फिर उन्होंने पूछा, क्या तुम्हारे साथ इब्ने अबी क़हाफ़ा मौजूद हैं? हुजूर (ﷺ) ने उसके जवाब की भी मुमानत कर दी। उन्होंने पूछा, क्या तुम्हारे साथ इब्ने ख़त्ताब मौजूद हैं? उसके बाद वो कहने लगे कि ये सब क़त्ल कर दिये गये। अगर ज़िन्दा होते तो जवाब देते। इस पर उमर (रज़ि.) बेक्राबू हो गये और फ़र्माया, अल्लाह के दुश्मन! तू झूठा है। अल्लाह ने अभी उन्हें तुम्हें ज़लील करने के लिये बाक़ी रखा है। अबू सुफयान ने कहा, हुबुल (एक बुत) बुलन्द रहे। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसका जवाब दो। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि हम क्या जवाब दें? आपने फ़र्माया कि कहो, अल्लाह सबसे बुलन्द और बुजुर्ग व बरतर है। अबू सुफयान ने कहा, हमारे पास उज़्जा (बुत) है और तुम्हारे पास कोई उज़्जा नहीं। आपने फ़र्माया, उसका जवाब दो। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, क्या जवाब दें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कहो, अल्लाह हमारा हामी और मददगार है और तुम्हारा कोई हामी नहीं। अबू सुफयान ने कहा, आज का दिन बद्र के दिन का बदला है और लड़ाई की मिशाल डोल की होती है। (कभी हमारे हाथ में और कभी तुम्हारे हाथ में) तुम अपने मक्कतूलीन में कुछ लाशों का मुषला किया हुआ पाओगे, मैंने उसका हुक्म नहीं दिया था लेकिन मुझे बुरा नहीं मा'लूम हुआ।

(राजेअ . 3039)

बाद में हज़रत अबू सुफयान मुसलमान हो गये थे और अपनी इस ज़िन्दगी पर नादिम थे मगर इस्लाम पहले के गुनाहों का कफ़ारा बन जाता है।

4044. मुझे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे अमर ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ सहाबा ने ग़ज़्व-ए-उहद की सुबह को शराब पी (जो अभी ह़राम नहीं हुई थी) और फिर शहादत की मौत नसीब हुई। (राजेअ : 2815)

وَأَشْرَفَ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ: أَيُّ الْقَوْمِ مُحَمَّدٌ؟ فَقَالَ: ((لَا تُجِيبُوهُ))، فَقَالَ: أَيُّ الْقَوْمِ ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ؟ قَالَ: ((لَا تُجِيبُوهُ))، فَقَالَ: أَيُّ الْقَوْمِ ابْنُ الْخَطَّابِ؟ فَقَالَ: إِنَّ هَؤُلَاءِ قُتِلُوا فَلَوْ كَانُوا أَحْيَاءَ لَأَجَابُوا فَلَمْ يَمْلِكْ غَمْرٌ نَفْسَهُ، فَقَالَ: كَذَبْتَ يَا غَدُوَّ اللَّهِ أَنْتَ أَهْلِي اللَّهُ عَلَيْكَ مَا يُخْزِيكَ، قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: أَغْلُ هُبَلٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَجِيبُوهُ)) قَالُوا: مَا نَقُولُ؟ قَالَ: ((قُولُوا اللَّهُ أَغْلَى وَأَجَلُ)) قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: لَنَا الْغُرَى وَلَا غُرَى لَكُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَجِيبُوهُ)) قَالُوا: مَا نَقُولُ؟ قَالَ: ((قُولُوا اللَّهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلَى لَكُمْ)) قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: يَوْمَ يَوْمٍ يَدْرُ وَالْخَرْبُ مِجَالٌ وَتَجِدُونَ مِثْلَهُ لَمْ أَمْرُ بِهَا وَلَمْ تَسْؤُنِي.

[راجع: 3039]

4044 - أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ قَالَ اصْطَبَحَ الْغَمْرُ يَوْمَ أَحَدٍ نَاسٌ ثُمَّ قُتِلُوا شَهْدَاءَ. [راجع: 2815]

बाद में शराब हुराम हो गई, फिर किसी भी सहाबी ने शराब को मुँह नहीं लगाया बल्कि शराब के बर्तनों को भी तोड़ डाला था।

4045. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको शुअब ने खबर दी, उन्हें सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे उनके वालिद इब्राहीम ने कि (उनके वालिद) अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के पास खाना लाया गया। उनका रोज़ा था। उन्होंने कहा, मुसअब बिन इमर (रज़ि.) (उहूद की जंग में) शहीद कर दिये गये, वो मुझसे अफ़ज़ल और बेहतर थे लेकिन उन्हें जिस चादर का कफ़न दिया गया (वो इतनी छोटी थी कि) अगर उससे उनका सर छुपाया जाता तो पैर खुल जाते और अगर पैर छुपाए जाते तो सर खुल जाता था। मेरा ख़याल है कि उन्होंने कहा और हमज़ा (रज़ि.) भी (उसी जंग में) शहीद किये गये, वो मुझसे बेहतर और अफ़ज़ल थे फिर जैसा कि तुम देख रहे हो, हमारे लिये दुनिया में कुशादगी दी गई, या उन्होंने ये कहा कि फिर जैसा कि तुम देखते हो, हमें दुनिया दी गई, हमें तो इसका डर है कि कहीं यही हमारी नेकियों का बदला न हो जो इसी दुनिया में हमें दिया जा रहा है। उसके बाद आप इतना रोये कि खाना न खा सके। (राजेअ: 1284)

4045 - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي رَاهِمٍ أَنَّ ابْنَ أَبِي رَاهِمٍ أَنَّ عِنْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أُنْثَى بِطَعْمٍ وَكَانَ صَاحِبًا فَضْلًا : قَتَلَ مَضْعَبُ بْنُ غَمِيرٍ وَهُوَ حَيْرٌ مَنَى كُفْنٌ فِي بُرْدَةٍ إِنَّ عَطِيَّ رَأَسَهُ يَدَتِ رَجُلًا وَإِنْ عَطِيَّ رَجُلًا بَدَأَ رَأْسَهُ وَارَاهُ قَالَ : وَقَتْلَ حَمْرَقَ. وَهُوَ حَيْرٌ مَنَى ثُمَّ نَسَطَ لِي مِنَ الدُّنْيَا مَا نَسَطَ لِي بَسَطَ. أَوْ قَالَ أَعْطَيْنَا مِنَ الدُّنْيَا مَا أَعْطَيْنَا وَفَدَّ حَسْبُ أَنْ يَكُونَ حَسْبُنَا عَجَلَتْ لَنَا نَمَّ حَعْلٌ يَكِي حَتَّى يَرْكُ الطَّعَامُ.

(راجع: 1274)

अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) अशर-ए-मुबशशरा में से थे फिर भी उन्होंने हज़रत मुसअब बिन इमैर (रज़ि.) को कसरे नफ़सी के लिये अपने से बेहतर बताया। मुसअब बिन इमैर (रज़ि.) वो कुरैशी नौजवान थे जो हिज्रत से पहले ही मदीना में बतौर मुबल्लिग़ काम कर रहे थे। जिनकी कोशिशों से मदीना में इस्लाम को फ़रोग़ हुआ। सद् अफ़सोस कि शेर इस्लाम उहूद में शहीद हो गया।

4046. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उसे अमर बिन दीनार ने, उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अम्पारी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक सहाबी ने नबी करीम (ﷺ) से ग़ज़व-ए-उहूद के मौक़ा पर पूछा, या रसूलुल्लाह! अगर मैं क़त्ल कर दिया गया तो मैं कहाँ जाऊँगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में। उन्होंने खज़ूर फेंक दी जो उनके हाथ में थी और लड़ने लगे यहाँ तक कि शहीद हो गये।

4046 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ سَمْعٍ حَاضِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ أَرَأَيْتَ إِنْ قُتِلْتُ فَأَيْنَ أُرَى قَالَ : ((فِي الْجَنَّةِ)) فَأُلْقِيَ نَمْرَاتٍ فِي يَدِهِ ثُمَّ قَاتَلَ حَتَّى قُتِلَ.

4047. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुहेर बिन मुआविया ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक्कोक़ बिन मस्लमा ने और उनसे ख़ब्बाब बिन अल् अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ

4047 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ خَبَابِ بْنِ الْأَرْتِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ :

हिजरत की थी, हमारा मकसद सिर्फ अल्लाह की रज़ा थी। इसका षवाब अल्लाह के ज़िम्मे था। फिर हममें से कुछ लोग तो वो थे जो गुज़र गये और कोई अजर उन्होंने इस दुनिया में नहीं देखा, उन्हीं में से मुअब बिन इमैर (रज़ि.) थी थे। उहूद की लड़ाई में उन्होंने शहादत पाई थी। एक धारीदार चादर के सिवा और कोई चीज़ उनके पास नहीं थी (और वही उनका कफ़न बनी) जब हम उससे उनका सर छुपाते तो पैर खुल जाते और पैर छुपाते तो सर खुल जाता। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि सर चादर से छुपा दो और पैर पर इज़्ज़र घास डाल दो। या हुज़ूर (ﷺ) ने ये अल्फ़ाज़ फ़र्माए थे कि उल्कू अला रिज़िलही मिनल इज़िखारे भजाय इज्जलू अला रिज़िलहिल इज़िखर के और हम में कुछ वो थे जिन्हें उनके इस अमल का बदला (इसी दुनिया में) मिल रहा है और वो इससे फ़ायदा उठा रहे हैं। (राजेज़: 1276)

هاجرنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بنفى وجه الله فوجب اجرنا على الله ومنا من مضى أو ذهب لم يأكل من أجره شي كان منهم فضيل بن عمر فقل يوم أحد لم يتولا إلا نمرقة كنا إذا غطينا بها رأسه خرجت. ورجلاه وإذا غطينا بها رجلاه خرج رأسه فقال لنا النبي صلى الله عليه وسلم: (اعطوا بها رأسه واجعلوا على رجلاه الإذخر) - أو قال - القرا على رجلاه من الإذخر، ومنا من ابتعت له ثمرته فهو يهدنها.

[راجع: 1276]

4048. हमसे हस्सान बिन हस्सान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन तलहा ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद तवील ने बयान किया, और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि उनके चचा (अनस बिन सक्क) बद्र की लड़ाई में शरीकन हो सके थे, फिर उन्होंने कहा कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ पहली हो लड़ाई में ग़ैर हाज़िर रहा। अगर हुज़ूर (ﷺ) के साथ अल्लाह तआला ने मुझे किसी और लड़ाई में शिकत का मौक़ा दिया तो अल्लाह देखेगा कि मैं कितनी बेजिगरी से लड़ता हूँ। फिर ग़ज़व-ए-उहूद के मौक़े पर जब मुसलमानों की जमाअत में अफ़रा तफ़री मच गई तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! मुसलमानों ने आज जो कुछ किया मैं तेरे हुज़ूर में उसके लिये मज़ज़रत चाहता हूँ और मुश्किनी ने जो कुछ किया मैं तेरे हुज़ूर में उससे अपनी बेज़ारो ज़ाहिर करता हूँ। फिर वो अपनी तलवार लेकर आगे बढ़े। रास्ते में हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने उनसे कहा, सअद! कहाँ जा रहे हो? मैं तो उहूद पहाड़ी के दामन में जन्नत की खुशबू सूँघ रहा हूँ। उसके बाद वो आगे बढ़े और शहीद कर दिये गये। उनकी लाश पहचानी नहीं जा रही थी। आख़िर उनकी बहन ने एक तिल या उनकी अँगुलियों के पोरों

4048 - أخرنا حسان بن حسان حدثنا محمد بن طلحة حدثنا حميد عن أنس رضي الله عنه أن عمه عاب عن بدر فقال: كنت عن أول قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لئن أشهدني الله مع النبي صلى الله عليه وسلم ليرين الله ما أجد للقي يوم أخذ فهِرَمَ النَّاسُ فقال: اللهم إني أعوذُ إليك صنع هؤلاء - بنى المسلمين - وأبوا إليك ما جاء به المشركون فقدم بسيفه فلقى سعد بن معاذ فقال: أين يا سعد إني أجِدُ رِيحَ الْجَنَّةِ ذَوْبَ أَحَدٍ فَمَضَى فَمَاتَ فَمَا عَرَفَ حَتَّى عَرَفَتْهُ أُخْتُهُ بِشَامَةَ أَوْ بِنَانَهُ وَبِهِ بَضْعٌ وَثَمَانُونَ مِنْ طَعْنَةٍ وَضَرْبَةٍ وَرُمِيَهُ بِهِمْ.

से उनकी लाश को पहचाना। उनको अस्सी (80) पर कई ज़ख्म

[راجع: 2800]

भाले और तलवार और तीरों के लगे थे। (राजेज़: 2805)

तशरीह: इब्ने शक्वाल ने कहा उस शख्स का नाम इमैर बिन हम्माम (रज़ि.) था। मुस्लिम की रिवायत में है कि इमैर बिन हम्माम (रज़ि.) ने जंगे उहुद के दिन कुछ खजूरें निकालीं, उनको खाने लगा फिर कहने लगा, इन खजूरों के तमाम करने तक अगर मैं जीता रहा तो ये बड़ी लम्बी जिन्दगी होगी और लड़ाई शुरू की मारा गया। उसहुल गाबा में है कि इमैर बद्र के दिन मारा गया और ये सब अंसार में पहला शख्स था जो अल्लाह की राह में जंग में मारा गया। इब्ने इस्हाक ने रिवायत की है कि इमैर बिन हम्माम (रज़ि.) जब काफ़िरों से जंगे बद्र में भिड़ गया तो कहने लगा कि अल्लाह के पास जाता हूँ तोशा-बोशा कुछ नहीं अल्बत्ता अल्लाह का डर और आखिरत में काम आने वाला अमल और जिहाद पर सन्न है बेशक अल्लाह का डर निहायत मज़बूत करने वाला अमर है। अनस बिन नज़र अंसारी (रज़ि.) को इमर बिन खत्ताब (रज़ि.) मिले जो घबराये हुए चले आ रहे थे। उन्होंने कहा बड़ा ग़ज़ब हो गया। आँहज़रत (ﷺ) शहीद हो गये। अनस (रज़ि.) ने कहा फिर अब हम तुम जिन्दा रहकर क्या करेंगे। आँहज़रत (ﷺ) का अल्लाह तो जिन्दा है। इस दिन पर लड़कर मरो जिस पर तुम्हारे पैगम्बर लड़े ये कहकर अनस बिन नज़र (रज़ि.) काफ़िरों की सज़ा में घुस गये और लड़ते रहे यहाँ तक कि शहीद हो गये। कहते हैं उहुद की जंग में काफ़िरों का झण्डा तलहा बिन अबी तलहा ने सम्भाला, उसको हज़रत अली (रज़ि.) ने मारा। फिर इप्मान बिन अबी तलहा ने, उसको अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) ने मारा। फिर अबू सईद बिन अबी तलहा ने, उसको सअद बिन वक्कास (रज़ि.) ने मारा। फिर नाफ़ेअ बिन तलहा बिन अबी तलहा ने, उसको आसिम बिन प्राबित अंसारी (रज़ि.) ने मारा। फिर हारिष बिन तलहा बिन अबी तलहा ने, उसको भी आसिम ने मारा। फिर किलाब बिन अबी तलहा ने, उसको जुबैर (रज़ि.) ने मारा। फिर जलास बिन तलहा ने, फिर अरज़ात बिन शुरहबील ने, उनको हज़रत अली (रज़ि.) ने मारा। फिर शुरैह बिन क़ारिज़ ने वो भी मारा गया। फिर सवाब एक गुलाम ने उसको सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) या हज़रत अली (रज़ि.) या कुज़मान (रज़ि.) ने मारा। उसके बाद काफ़िर भाग निकले। (वहीदी)

इस हदीष के ज़ेल हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम की एक और तफ़रीर दर्ज की जाती है जो तवज्जह से पढ़ने के लायक है। फ़र्माते हैं, मुसलमानों! हमारे बाप-दादा ने ऐसी ऐसी बहादुरियाँ करके खून बहाकर इस्लाम को दुनिया में फैलाया था और इतना बड़ा वसीअ मुल्क हासिल किया था जिसकी हद मस्रिब (पश्चिम) में अरूनीस और उंदलुस या नी स्पेन तक और मस्रिक (पूर्व) में चीन-बर्मा तक और शिमाल (उत्तर) में रूस तक और जुनूब (दक्षिण) में विलायात रूम व ईरान व तुरान व हिन्दुस्तान व अरब व शाम व मिस्र व अफ्रीका उनके ज़ेरे नहीं थीं। हमारी अय्याशी और बेदीनी ने अब ये नौबत पहुँचाई है कि ख़ास अरब के सवाहिल (समुद्र तट) और बिलाद भी काफ़िरों के कब्ज़े में आ रहे हैं और मुल्क तो अब जा चुके हैं अब जितना रह गया है उसको बना लो ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो तो कुआन व हदीष को मज़बूत थामो। व मा अलैना इल्लत्वला। (वहीदी)

4049. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें खारिजा बिन ज़ैद बिन प्राबित ने ख़बर दी और उन्होंने ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि जब हम कुआन मजीद को लिखने लगे तो मुझे सूरह अहज़ाब की एक आयत (लिखी हुई) नहीं मिली। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उसकी तिलावत करते बहुत बार सुना था। फिर जब हमने उसकी तलाश की तो वो आयत ख़ुज़ैमा बिन प्राबित अंसारी (रज़ि.) के पास हमें मिली (आयत ये थी) मिनल् मोमिनीन रिजालुन सदकु मा आहुदुल्लाह अलैहि फ़मिन्हुम मन् कज़ा नहबहु व मिन्हुम मयं यन्तज़िरु

٤٠٤٩ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدٍ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّهُ سَمِعَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: فَقَدْ ثَبَتَ آيَةٌ مِنَ الْأَخْزَابِ حِينَ نَسَخْنَا الْمُصْحَفَ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقْرَأُ بِهَا فَالْتَمَسْنَاهَا، فَوَجَدْنَاهَا مَعَ خَزِيمَةَ بْنِ ثَابِتٍ الْأَنْصَارِيِّ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ وَجَاءَ

(अल् अहज़ाब : 23) फिर हमने इस आयत को उसकी सूरत में कुर्आन मजीद में मिला दिया।

(राजेअ : 2807)

مَذَلُّوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ ۖ فَأَلْهَمَنَّا فِي سُورَتِهَا فِي الْمُنَافِقِينَ.

[راجع: ٢٨٠٧]

तशरीह : इस आयत का तर्जुमा ये है, मुसलमानों में कुछ मर्द तो ऐसे हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो कौल व करार किया था वो सच कर दिखाया। अब उनमें कुछ तो अपना काम पूरा कर चुके, शहीद हो गये (जैसे हमज़ा और मुसअब रज़ि.) और कुछ इतिज़ार कर रहे हैं (जैसे इब्मानी और तलह रज़ि. वगैरह) इस रिवायत का ये मतलब नहीं है कि ये आयत सिर्फ़ खुज़ैमा (रज़ि.) के कहने पर कुर्आन में शरीक कर दी गई बल्कि ये आयत झह्राबा को याद थी और आहज़रत (ﷺ) से बारहा सुन चुके थे मगर भूले से मुस्हफ़ में नहीं लिखी गई थी। जब खुज़ैमा (रज़ि.) के पास लिखी हुई मिली तो उसको शरीक कर दिया।

4050. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन श़ाबित ने, मैंने अब्दुल्लाह बिन यज़ीद से सुना, वो ज़ैद बिन श़ाबित (रज़ि.) से बयान करते थे कि उन्होंने बयान किया, जब नबी करीम (ﷺ) ग़ज़्व-ए-इहुद के लिये निकले तो कुछ लोग जो आपके साथ थे (मुनाफ़िक़ीन, बहाना बनाकर) वापस लौट गये। फिर झह्राबा की उन वापस होने वाले मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो रायें हो गई थी। एक जमाअत तो कहती थी हमें पहले इनसे जंग करनी चाहिये और दूसरी जमाअत कहती थी कि इनसे हमें जंग नहीं करनी चाहिये। इस पर आयत नाज़िल हुई, पस तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ीन के बारे में तुम्हारी दो जमाअतें हो गई हैं, हालाँकि अल्लाह तआला ने उनकी बद आमाली की वजह से उन्हें कुफ़्र की तरफ़ लौटा दिया है। और हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मदीना तय्यिबा है सरकशों को ये इस तरह अपने से दूर कर देता है जैसे आग की भट्टी चाँदी के मेल कुचेल को दूर कर देती है। (राजेअ : 1884)

٤٠٥٠ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ غَدِيٍّ بْنِ قَابِثٍ سَمِعْتُ عُمَةَ ابْنِ يَزِيدٍ يُحَدِّثُ عَنْ زَيْدِ بْنِ قَابِثٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَحُدٍ رَجَعَ نَاسٌ مِنْ خَرَجَ مَعَهُ وَكَانَ اصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُونَ يَدَهُمْ يَقُولُونَ: لَا تُقَابِلُهُمْ فَزَلَّتْ ﴿فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فَيَقْتَنُونَ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا﴾ وَقَالَ: ﴿إِنَّهَا طَيْبَةٌ تَنْفِي الذُّنُوبَ كَمَا تَنْفِي النَّارُ حَبْتَ الْفِضَّةِ﴾.

[راجع: ١٨٨٤]

तशरीह : आयते मज़क़ूरा अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों के बारे में नाज़िल हुई। कुछ ने कहा ये आयत उस वक़्त उतरी जब आहज़रत (ﷺ) ने मम्बर पर फ़र्माया था कि ये बदला उस शख्स से कौन लेता है जिसने मेरी बीवी (हज़रत आइशा रज़ि.) को बदनाम करके मुझे ईज़ा दी है।

बाब 18 : जब तुममें से दो जमाअतें ऐसा इरादा कर बैठी थीं कि हिम्मत हार दें, हालाँकि अल्लाह दोनों का मददगार था और ईमानदारों को तो

١٨ - بَاب
وَإِذْ هَمَّتْ طَافِقَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْتَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये

ये दो जमाअतें बनू सलमा और बनू हारिषा थे जो लौटने का इरादा कर रहे थे मगर अल्लाह ने उनको प्रामाणिक कदम रखा। आयतों में उनका बयान है।

4051. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जययना ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि ये आयत हमारे बारे में नाज़िल हुई थी। इन्हें मप्त ताइफ़ातानि मिन्कुम अन्तफ़शला (आले इमरान : 122) या'नी बनी हारिषा और बनी सलमा के बारे में मेरी ये ख़्वाहिश नहीं है कि ये आयत नाज़िल न होती, जबकि अल्लाह आगे फ़र्मा रहा है कि और अल्लाह उन दोनों जमाअतों का मददगार था। (दीगर मक़ाम : 4558)

٤٠٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ فِيْنَا إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا. سَيِّئُ سَلَمَةٍ وَتَنَبُّي حَارِثَةَ وَمَا أَحَبُّ أَنَّهُمَا لَمْ يَرَوْا اللَّهَ يَفُوتُ. م. وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا.

[अरबि : ६०२८]

तो अल्लाह की विलायत ये कितना बड़ा शर्फ़ है जो हमको हासिल हुआ। जंगे उहुद में जब अब्दुल्लाह बिन उबई तीन सौ साथियों को लेकर लौट आया तो इन अंसारियों के दिल में भी कस्वसा पैदा हुआ। मगर अल्लाह ने उनको सम्भाला तो उन्होंने औहज़रत (ﷺ) का साथ नहीं छोड़ा।

4052. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन जययना ने बयान किया, कहा हमको अमर बिन दीनार ने ख़बर दी, और उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे दरयाप्त फ़र्माया, जाबिर! क्या निकाह कर लिया? मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कुंवारी से या बेवा से? मैंने अर्ज़ किया कि बेवा से। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी कुंवारी लड़की से क्यों न किया? जो तुम्हारे साथ खेला करती। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! मेरे वालिद उहुद की लड़ाई में शहीद हो गये। नौ लड़कियाँ छोड़ीं। पस मेरी नौ बहनें मौजूद हैं। इसीलिये मैंने मुनासिब नहीं ख़याल किया कि उन्हीं जैसी नातजुर्बेकार लड़की उनके पास लाकर बिठा दूँ, बल्कि एक ऐसी औरत लाऊँ जो उनकी देखभाल कर सके और उनकी सफ़ाई व सुथराई का ख़याल रखे। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमने अच्छा किया। (राजेअ : 443)

٤٠٥٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((هَلْ نَكَحْتَ يَا جَابِرُ؟)) قُلْتُ نَعَمْ، قَالَ: ((مَاذَا ابْتَكْرَأْتَ؟)) قُلْتُ: لَا بَلْ ثَيِّبًا قَالَ: ((فَهَلْ حَارِثَةٌ تَلَاعِبُكَ؟)) قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ: إِنَّ أَسَى قَتْلِ يَوْمِ أُحُدٍ أَخَذَ وَتَرَكْتُ نِسَاءً بَنَاتٍ كُنَّ لِي نِسَاءً أَحْوَاتٍ لِكِرْهَتِي أَنْ أَجْمَعَ إِلَيْهِنَّ حَارِثَةً خِرَفَاءَ مِثْلَهُنَّ وَلَكِنْ أَمْرَأَةً تَمُشِطُهُنَّ وَتَقْرَأُ عَلَيْهِنَّ قَالَ: ((أَصَبْتَ)).

[अरबि : ६०३३]

तशीह: हज़रत जाबिर (रज़ि.) की कुत्रियत अबू अब्दुल्लाह है। मशहूर अंसारी सहाबी हैं। जंगे बद्र और उहुद की सब जंगों में रसूल करीम (ﷺ) के साथ हाज़िर हुए। आखिर उमर में नाबीना हो गये थे। 94 साल की उम्र तवील पाकर 74 हिजरी में वफ़ात पाई, मदीना में सबसे आखिरी सहाबी हैं जो फ़ौत हुए। एक बड़ी जमाअत ने आपसे अहादीष रिवायत की हैं।

4053. हमसे अहमद बिन अबी शुरैह ने बयान किया, कहा ٤٠٥٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي شُرَيْحٍ

हमको अब्दुल्लाह बिन मूसा ने खबर दी, उनसे शैबान ने बयान किया, उनसे फ़रास ने, उनसे शअबी ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि उनके वालिद (अब्दुल्लाह रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद हो गये थे और क़र्ज़ छोड़ गये थे और छः लड़कियाँ भी। जब पेड़ों से खजूर उतारे जाने का वक़्त करीब आया तो उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि जैसा कि हुजूर (ﷺ) के इल्म में है, मेरे वालिद साहब उहुद की लड़ाई में शहीद हो गये और क़र्ज़ छोड़ गये हैं, मैं चाहता था कि क़र्ज़ ख़्वाह आपको देख लें (और कुछ नमी बरतें) हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया, जाओ और हर क्रिस्म की खजूर का अलग अलग ढेर लगा लो। मैंने हुक्म के मुताबिक़ अमल किया और फिर आपको बुलाने गया। जब क़र्ज़ ख़्वाहों ने आप (ﷺ) को देखा तो जैसे उस वक़्त मुझ पर और ज़्यादा भड़क उठे। (क्योंकि वो यहूदी थे) हुजूर (ﷺ) ने जब उनका ये तर्ज़ अमल देखा तो आप (ﷺ) पहले सबसे बड़े ढेर के चारों तरफ़ तीन मर्तबा घूमे। उसके बाद उस पर बैठ गये और फ़र्माया, अपने क़र्ज़ ख़्वाहों को बुला लाओ। हुजूर (ﷺ) बराबर उन्हें नाप के देते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरे वालिद की तरफ़ से उनकी सारी अमानत अदा कर दी। मैं इस पर शुक़ा था कि अल्लाह तआला मेरे वालिद की अमानत अदा करा दे, भले ही मैं अपनी बहनोँ के लिये एक खजूर भी न ले जाऊँ लेकिन अल्लाह तआला ने तमाम दूसरे ढेर बचा दिये बल्कि उस ढेर को भी देखा जिस पर हुजूर (ﷺ) बैठे हुए थे कि जैसे उसमें से एक खजूर का दाना भी कम नहीं हुआ।

(राजेअ: 2127)

احبرنا عبد الله بن موسى حدثنا شيبان عن فراس عن الشعبي قال: حدثني جابر بن عبد الله رضي الله عنهما ان اياه استشهد يوم اُخذ وترك عليه ديناً وترك ست مائة مائة حصر حداذ النخل قال: اتيت رسول الله ﷺ فقلت: قد علمت ان والدي قد استشهد يوم اُخذ وترك ديناً كثيراً وابي أحب ان يراك العرماء فقال: ((ادهب فيبذر كل تمر على ناحية)) ففعلت، ثم دعوته فلما بطروا اليه كانتهم أغروا بي تلك الساعة فلما راي ما يصغون اطاف حول اعظمها يندرا ثلاث مرات ثم جلس عليه ثم قال: ادع لك اصحابك فما زال يكيل لهم حتى اذى الله عن والدي امانته وأنا ارضى ان يؤذي الله امانة والدي ولا ارجع الى اخواتي بتمرة فسلم الله اليادر كلها حتى اني انظر الى النخل الذي كان عليه النبي ﷺ كانتها لم يقص تمرة واحدة. [راجع: 2127]

तशरीह: हज़रत जाबिर (रज़ि.) रसूले करीम (ﷺ) को इस ख़्याल से लाये थे कि आपको देखकर क़र्ज़ ख़्वाह कुछ क़र्ज़ छोड़ देंगे लेकिन नतीजा उलटा हुआ। क़र्ज़ ख़्वाह ये समझे कि आहज़रत (ﷺ) की जाबिर (रज़ि.) पर नज़रे इनायत है। अगर जाबिर (रज़ि.) के वालिद का माल काफ़ी न होगा तो बाक़ी क़र्ज़ आहज़रत (ﷺ) खुद अपने पास से अदा कर देंगे। इसलिये उन्होंने और सख़्त तक्राज़ा शुरू किया लेकिन अल्लाह ने अपने रसूल की दुआ कुबूल की और माल में काफ़ी बरक़त हो गई।

4054. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने, उनके दादा से कि सअद बिन अबी यक्रास (रज़ि.) ने बयान

4054 - حدثنا عبد العزيز بن عبد الله حدثنا إبراهيم بن سعد عن أبيه عن جده

किया, ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा और आपके साथ दो और अम्हाब (या'नी जिब्रईल अलैहि. और मीकाईल अलैहि. इंसानी मूरत में) आए हुए थे। वो आपको अपनी हिफ़ाज़त में लेकर कुफ़्रार से बड़ी सज़्ज़ती से लड़ रहे थे। उनके जिस्म पर सफ़ेद कपड़े थे। मैंने उन्हें न उससे पहले कभी देखा था और न उसके बाद कभी देखा। (दीगर मक़ाम: 5826)

عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ وَمَعَهُ رَجُلَانِ يَتَّقِيَانِ عَنَّهُ عَلَيْهِمَا حِجَابٌ بَيْنَ كَأْسِدِ الْقِتَالِ مَا رَأَيْتُهُمَا قَبْلُ وَلَا بَعْدُ.

[طرفه ٣ : ٥٨٢٦.]

4055. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मरवान बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम सअदी ने बयान किया, कहा मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर रसूल करीम (ﷺ) ने अपने तरक़श के तीर मुझे निकाल कर दिये और फ़र्माया ख़ूब तीर बरसाए जा। मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों। (राजेज़: 3825)

٤٠٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عُرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ السَّعْدِيُّ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسْتَبِيرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ: نَقَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ كِنَانَتَهُ يَوْمَ أُحُدٍ فَقَالَ: ((ارْمِ لِفَدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)).

[راجع: ٣٧٢٥]

तशरीह: सअद (रज़ि.) बड़े तीरंदाज़ थे। जंगे उहुद में काफ़िर चढ़े चले आ रहे थे। उन्होंने ऐसे तीर मारे कि एक काफ़िर भी आँहज़रत (ﷺ) के पास न आ सका। कहते हैं कि तीर भी ख़तम हो गये और एक काफ़िर बिलकुल करीब आ पहुँचा तो एक तीर जिसमें सिर्फ़ लकड़ी थी रह गया था। आप (ﷺ) ने सअद (रज़ि.) से फ़र्माया यही तीर मारो। सअद (रज़ि.) ने मारा और वो उस काफ़िर के जिस्म में घुस गया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये ये दुआ फ़र्माई जो रिवायत में मज़कूर है जिसमें इतिहाई हिम्मत अफ़ज़ाई है। (ﷺ)

4056. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़ा पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मेरी हिम्मत अफ़ज़ाई के लिये) अपने वालिद और वालिदा दोनों को जमा फ़र्माया कि मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों। (राजेज़: 3725)

٤٠٥٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسْتَبِيرِ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا يَقُولُ: جَمَعَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ.

[راجع: ٣٧٢٥]

उस शख़्स की किस्मत का क्या ठिकाना है जिसके लिये रसूल करीम (ﷺ) ऐसे शानदार अल्फ़ाज़ फ़र्माएँ। फ़िल वाक़ेअ हज़रत सअद (रज़ि.) इस मुबारक दुआ के मुस्तहिक़ थे।

4057. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन क़प्पीर ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अल मुसय्यिब ने, उन्होंने बयान

٤٠٥٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى عَنْ ابْنِ الْمُسْتَبِيرِ أَنَّهُ قَالَ: قَالَ

किया कि सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने ग़ज्व-ए-उहुद के मौक़ा पर (मेरी हिम्मत बढ़ाने के लिये) अपने वालिद और वालिदा दोनों को जमा फ़र्माया, उनकी मुराद आप (ﷺ) के इस इशार्द से थी जो आप (ﷺ) ने उस वक़्त फ़र्माया था जब वो जंग कर रहे थे कि मेरे माँ बाप तुम पर कुर्बान हों। (राजेअ: 3825)

4058. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे मिस्त्रर ने बयान किया, उनसे सअद ने, उनसे इब्ने शहाद ने बयान किया, उन्होंने हज़रत अली (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि हज़रत सअद (रज़ि.) के सिवा मैंने नबी करीम (ﷺ) से नहीं सुना कि आप (ﷺ) उसके लिये हुआ मैं माँ बाप दोनों को बड़ी तीर पर जमा कर रहे हों। (राजेअ: 2905)

4059. हमसे युस्ना बिन सप्रयान ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन शहाद ने और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि सअद इब्ने मालिक के सिवा मैंने और किसी के लिये नबी करीम (ﷺ) को अपने वालिदैन का एक साथ ज़िक्र करते नहीं। सुना, मैंने खुद सुना कि उहुद के दिन आप फ़र्मा रहे थे, सअद! ख़ूब तीर बरसाओ। मेरे बाप और माँ तुम पर कुर्बान हों। (राजेअ: 2905)

4060, 61. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे मुअतमिर ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि अबू इप्मान बयान करते थे कि उन ग़ज़्वात में से जिनमें नबी करीम (ﷺ) ने कुप्रफ़ार से क़िताल किया। कुछ ग़ज़्वा (उहुद) में एक मौक़े पर आपके साथ त़लहा और सअद के सिवा और कोई बाकी नहीं रह गया था। अबू इप्मान ने ये बात हज़रत त़लहा और सअद (रज़ि.) से रिवायत की थी। (राजेअ: 3722, 3723)

4062. हमसे अब्दुल्लाह बिन उबय अल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे साईब बिन यज़ीद ने कि मैं अब्दुर्रहमान बिन औफ़, त़लहा बिन अब्दुल्लाह, मिस्दाद बिन अस्वद और सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) की मुहबत में रहा

سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، لَقَدْ جَمَعَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ أَبُوتَهُ كُلَّهُمَا يُرِيدُ حِينَ قَالَ: ((لِذَاكَ أَبِي وَأُمِّي)) وَفَوْقَ يُقَاتِلُ.

[راجع: 3725]

4058- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مِصْرَرٌ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي شَدَادٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَجْمَعُ أَبُوتَهُ لِأَخِي خَيْرَ سَعْدٍ.

[راجع: 2905]

4059- حَدَّثَنَا يُسْرَةُ بْنُ صَفْوَانَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَادٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَجْمَعُ أَبُوتَهُ لِأَخِي إِلَّا لِسَعْدِ بْنِ مَالِكٍ، لِأَنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ أُحُدٍ: ((يَا سَعْدُ ارْمِ لِذَاكَ أَبِي وَأُمِّي)).

[راجع: 2905]

4060, 61- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ مُعْتَمِرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: زَعَمَ أَبُو غِفْمَانَ أَنَّهُ لَمْ يَنْقُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَعْضُ بَلَدٍ إِلَّا يَوْمَ أُحُدٍ يُقَاتِلُ فِيهِ غَيْرُ طَلْحَةَ وَسَعْدٍ عَنْ حَدِيثِهِمَا.

[راجع: 3722, 3723]

4062- حَدَّثَنَا خَاتَمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُونُسَ قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ قَالَ: صَحِبْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ،

हूँ लेकिन मैंने उन हज़रत में से किसी को नबी करीम (ﷺ) से कोई हदीष बयान करते नहीं सुना। सिर्फ़ तलहा (रज़ि.) से ग़ज़्व-ए-उहुद के बारे में हदीष सुनी थी। (राजेअ: 2824)

وطلحة بن عبيد الله. والمقداد. وسعد
رضي الله عنهم. فما سمعت أحدا منهم
يحدث عن النبي ﷺ إلا أنني سمعت
طلحة يحدث عن يوم أحد.

[راجع: ٢٨٢٤]

तशरीह: साइब बिन यज़ीद का बयान उनकी अपनी मुसाहबत तक है वरना कुतुबे अहदादीष में उन हज़रत से भी बहुत सी अहदादीष मरवी हैं। ये ज़रूर है कि तमाम सहाब-ए-किराम रसूले करीम (ﷺ) से अहदादीष बयान करने में कमाल एहतियात बरतते थे। इस डर से कि कहीं ग़लत बयानी के मुर्तकिब होकर ज़िन्दा दोज़खी न बन जाएँ क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था, जो शख्स मेरा नाम लेकर ऐसी हदीष बयान करे जो मैंने न कही हो, वो ज़िन्दा दोज़खी है। पस इससे मुकिरीने हदीष का इस्तिदलाल बातिल है। रिवायत में ग़ज़्व-ए-उहुद का ज़िक्र है। बाब से यही वजह मताबक़्त है। कुआन मजीद के बाद सहीह मर्फ़ूअ मुस्तनद हदीष का तस्लीम करना हर मुसलमान के लिये फ़र्ज़ है जो शख्स सहीह हदीष का इकार करे वो कुआन ही का इकारी है और ये किसी मुसलमान का शेवा नहीं है।

4063. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने बयान किया कि मैंने हज़रत तलहा (रज़ि.) का वो हाथ देखा जो सुन्न हो चुका था। उस हाथ से उन्होंने ग़ज़्व-ए-उहुद के दिन नबी करीम (ﷺ) की हिफ़ाज़त की थी। (राजेअ: 3724)

٤٠٦٣- حدثنا عبد الله بن أبي شيبه
حدثنا وكيع عن إسماعيل عن قيس قال
رأيت يده طلحة خلاً وقى بها النبي ﷺ
يوم أحد. [راجع: ٣٧٢٤]

4064. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहुद में जब मुसलमान नबी करीम (ﷺ) के पास से मुंतशिर होकर पस्या हो गये तो हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) हुज़ुरे अकरम (ﷺ) की अपने चमड़े की ढाल से हिफ़ाज़त कर रहे थे। अबू तलहा (रज़ि.) बड़े तीरंदाज़ थे और कमान खूब खींचकर तीर चलाया करते थे। उस दिन उन्होंने दो या तीन कमानें तोड़ दी थीं। मुसलमानों में से कोई अगर तीर का तरकश लिये गुज़रता तो हुज़ूर (ﷺ) उनसे फ़र्माते थे तीर अबू तलहा (रज़ि.) के लिये यहीं रखते जाओ। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ुरे अकरम (ﷺ) मुश्किन को देखने के लिये सर उठाकर झाँकते तो अबू तलहा (रज़ि.) अर्ज़ करते, मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों, सरे मुबारक ऊपर न उठाइये कहीं ऐसा न हो कि उधर से कोई तीर हुज़ूर (ﷺ) को आकर लग जाए। मेरी गर्दन आपसे पहले है और मैंने देखा कि जंग में हज़रत आइशा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) और (अनसर रज़ि. की वालिदा)

٤٠٦٤- حدثنا أبو مَعْمَر حدثنا عبد الوارث حدثنا عبد العزيز عن أنس رضي الله عنه قال. لما كان يوم أحد انهزم الناس عن النبي ﷺ وأبو طلحة بين يدي النبي ﷺ محبوب عليه بحفّة له وكان أبو طلحة رجلاً رامياً شديداً النزع، كسر يومئذ قوسين أو ثلاثاً. وكان الرجل يرمي معه حفّة من النبل فيقول ((انثرها لأبي طلحة)) قال: ويشرف النبي ﷺ ينظر إلى القوم فيقول أبو طلحة يا بني أنت وأمي لا تشرف بصيلك سهم من سهام القوم يخزي ذون فخر ولقد رأيت عائشة

उम्मे सुलेम (रज़ि.) अपने कपड़े उठाए हुए हैं कि उनकी पिण्डलियाँ नज़र आ रही थीं और मशकीज़े अपनी पीठों पर लिये दौड़ रही हैं और उसका पानी ज़ख्मी मुसलमानों को पिला रही हैं फिर (जब उसका पानी ख़त्म हो जाता है) तो वापस आती हैं और मशक भरकर फिर ले जाती हैं और मुसलमानों को पिलाती हैं। उस दिन अबू तलहा (रज़ि.) के हाथ से दो या तीन मर्तबा तलवार गिर गई थी। (राजेअ: 2880)

بنت أبي بكر وأم سليم وإيهما
لمشترتان يري خدم سوقهما تتفران
القرب على متوبهما تفرغانه في افواه
القوم ثم ترجعان فتملأانها ثم تجعان
تفرغانه في افواه القوم، ولقد وقع
السيف من يدي أبي طلحة إنا مرتين
وإنا فلاناً. [راجع: ٢٨٨٠]

मैदाने जंग में ख़वातीने इस्लाम के कारनामे भी रहती दुनिया तक याद रहेंगे। ये भी मा'लूम हुआ कि शदीद ज़रूरत के वक़्त ख़वातीने इस्लाम का घरो से बाहर निकलकर काम करना भी जाइज़ है बशर्ते कि वो शरई पर्दा इख़्तियार किये हुए हों। इस जंग में उनकी पिण्डलियों का नज़र आना ये बदर्जा मजबूरी थी।

6065. मुझसे अब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके वालिद इर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि शुरू जंगे उहुद में पहले मुशिकीन शिकस्त खा गये थे लेकिन इब्लीस, अल्लाह की उस पर ला'नत हो, धोखा देने के लिये पुकारने लगा। ऐ इबादल्लाह! (मुसलमानों!) अपने पीछे वालों से ख़बरदार हो जाओ। इस पर आगे जो मुसलमान थे वो लौट पड़े और अपने पीछे वालों से भिड़ गये। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) ने जो देखा तो उनके वालिद हज़रत यमान (रज़ि.) उन्हीं में हैं (जिन्हें मुसलमान अपना दुश्मन मुशिक समझकर मार रहे थे) वो कहने लगे मुसलमानों! ये तो मेरे हज़रत वालिद हैं। मेरे वालिद, इर्वा ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, पस अल्लाह की क़सम! उन्हीं ने उनको उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक क़त्ल न कर लिया। हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने सिर्फ़ इतना कहा कि अल्लाह मुसलमानों की ग़लती मुआफ़ करे। इर्वा ने बयान किया कि इसके बाद हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बराबर मफ़िरत की दुआ करते रहे यहाँ तक कि वो अल्लाह से जा मिले। बसुर्तु या'नी मैं दिल की आँखों से काम को समझता हूँ और अब्सर्तु आँखों से देखने के लिये इस्ते'माल होता है। ये भी कहा गया है कि बसुर्तु और अब्सत के एक ही मा'नी हैं बस़ीरत दिल की आँखों से देखना और अब्सत ज़ाहिर की आँखों से देखना मुराद है। (राजेअ: 329)

٤٠٦٥ - حدثني عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نَجِيْدٍ
خَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ
أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا
كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ هَرَمَ الْمُشْرِكُونَ فَصَرَخَ
إِبْلِيسُ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ، أَيُّ عِبَادَ اللَّهِ
أَخْرَأَكُمْ. فَرَجَعَتْ أَوْلَاهُمْ فَاجْتَلَدَتْ هِيَ
وَأَخْرَأَهُمْ فَبَصُرَ خَدِيفَةُ فَلَاذًا هُوَ بِأَبِيهِ
الْيَمَانِ، فَقَالَ: أَيُّ عِبَادَ اللَّهِ أَبِي أَبِي قَالَ:
قَالَتْ قَوْلَ اللَّهِ مَا اخْتَجَزُوا حَتَّى قَتَلُوهُ
فَقَالَ خَدِيفَةُ: يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ، قَالَ عُرْوَةُ:
قَوْلَ اللَّهِ مَا زَالَتْ فِي خَدِيفَةَ بَقِيَّةٌ خَيْرٌ حَتَّى
لَقِيَ بِاللَّهِ عِزٌّ وَجَلٌّ، بَصُرْتُ: عَلِمْتُ مِنْ
الْبَصِيرَةِ فِي الْأَمْرِ، وَأَبْصَرْتُ مِنْ بَصَرِ
الْعَيْنِ، وَيُقَالُ بَصُرْتُ وَأَبْصَرْتُ وَاحِدًا.

[راجع: ٣٢٩٠]

तशरीह : बयान की गई इन तमाम अह्दादीष में किसी न किसी तरह से जंगे उहुद के हालात बयान किये गये हैं। जंगे उहुद इस्लामी तारीख (इतिहास) का एक अजीम हादसा है। इनकी तफ़्सीलात के लिये दफ़्तर भी नाकाफ़ी हैं। हर हदीष का ग़ौर से मुतालआ करने वालों को बहुत सारे सबक मिल सकेंगे। अल्लाह तौफ़ीके मुतालआ अज़ा करे। देखा जा रहा है कि कुर्आन व हदीष के हक़ीकी मुतालआ से तबीयतें दूर होती जा रही हैं। ऐसे पुरफ़ितन व इल्हादपरवर दौर में ये तर्जुमा और तशरीहात लिखने में बैठा हुआ हूँ कि क़द्र-दौं उँगलियों पर गिने जा सकते हैं फिर भी पूरी किताब अगर इशाअत पज़ीर (प्रकाशन योग्य) हो गई तो ये सदाक़ते इस्लाम का एक ज़िन्दा मुअजिज़ा होगा। अल्लाहुम्मा आमीन। या अल्लाह! बुखारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू की तक्मील करना तेरा काम है अपने महबूब बन्दों को इस ख़िदमत में शरीक होने की तौफ़ीक़ अज़ा फ़र्मा। आमीन।

बाब 19 : अल्लाह तआला का फ़र्मान, बेशक तुममें

से जो लोग उस दिन वापस लौट गये जिस दिन कि

दोनों जमाअतें आपस में मुक्राबिल हुई थीं तो ये तो बस इस सबब से हुआ कि शैतान ने उन्हें उनके कुछ कामों की वजह से बहका दिया था और बेशक अल्लाह उन्हें मुआफ़ कर चुका है। यक़ीनन अल्लाह बड़ा ही मरिफ़ित वाला, बड़ा हिल्म वाला है

4066. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अबू हम्ज़ा ने ख़बर दी, उनसे इब्मान बिन मौहिब ने बयान किया कि एक साहब बैतुल्लाह के हज के लिये आए थे। देखा कि कुछ लोग बैठे हुए हैं। पूछा कि ये बैठे हुए कौन लोग हैं? लोगों ने बताया कि ये कुरैश हैं। पूछा कि इनमें शौख कौन हैं? बताया कि इब्ने इमर (रज़ि.)। वो साहब इब्ने इमर (रज़ि.) के पास आए और उनसे कहा कि मैं आपसे एक बात पूछता हूँ। आप मुझसे वाक्रियात (सहीह) बयान कर दीजिए। इस घर की हुर्मत की क़सम देकर मैं आपसे पूछता हूँ। क्या आपको मा'लूम है कि इब्मान (रज़ि.) ने ग़ज़व-ए-उहुद के मौक़े पर राहे फ़रार इख़ितयार कर ली थी? उन्होंने कहा कि हाँ सहीह है। उन्होंने पूछा आपको ये भी मा'लूम है कि इब्मान (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं थे? कहा कि हाँ ये भी हुआ था। उन्होंने पूछा और आपको ये भी मा'लूम है कि वो बेअते रिज़्वान (सुलह हुदैबिया) में भी पीछे रह गये थे और हाज़िर न हो सके थे? उन्होने कहा कि हाँ ये भी सहीह है। इस पर उन साहब ने (मारे खुशी के) अल्लाहु अकबर कहा लेकिन इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा। यहाँ आओ मैं तुम्हें बताऊँगा और जो सवालात तुमने किये हैं उनकी

١٩٠- باب قول الله تعالى:

وَإِذِ الَّذِينَ نَوَلُّوا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ.

٤٠٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا أَبُو حُمْرَةَ عَنْ عُفْمَانَ بْنِ مَوْهَبٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ حَجَّ الْبَيْتِ فَرَأَى قَوْمًا جُلُوسًا فَقَالَ: مَنْ هَؤُلَاءِ الْقَوْمُ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ قُرَيْشٌ، قَالَ: مَنْ الشَّيْخُ؟ قَالُوا: ابْنُ عُمَرَ فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ أَتُحَدِّثُنِي قَالَ: أَتَشُدُّكَ بِحُرْمَةِ هَذَا الْبَيْتِ أَتَعْلَمُ أَنَّ عُفْمَانَ بْنَ عَفَانَ قَرَأَ يَوْمَ أُحُدٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَتَعْلَمُهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَدْرٍ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَتَعْلَمُ أَنَّهُ تَخَلَّفَ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ فَكَبِّرْ، قَالَ ابْنُ عُمَرَ: تَعَالَى لِأَخْبَرِكَ وَلَا بَيْنَ لَكَ عَمَّا سَأَلْتَنِي عَنْهُ أَمَّا لَوَارِدُهُ يَوْمَ أُحُدٍ فَاشْهَدْ أَنَّ اللَّهَ عَفَا عَنْهُ، وَأَمَّا تَغْيِيهِ

मैं तुम्हारे सामने तफ़सील बयान कर दूँगा। उहुद की लड़ाई में फ़ार के बारे में जो तुमने कहा तो मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला ने उनकी ग़लती मुआफ़ कर दी है। बद्र की लड़ाई में उनके न होने के बारे में जो तुमने कहा तो उसकी वजह ये थी कि उनके निकाह में रसूलुल्लाह (ﷺ) की सहाबज़ादी (रुक़य्या रज़ि.) थीं और वो बीमार थीं। आपने फ़र्माया था कि तुम्हें उस शख्स के बराबर प़वाब मिलेगा जो बद्र की लड़ाई में शरीक होगा और उसी के बराबर माले गनीमत से हिस्सा भी मिलेगा। बेअते रिज्वांन में उनकी अदमे शिक़त का जहाँ तक सवाल है तो खादी-ए-मक्का में इस्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) से ज्यादा कोई शख्स हरदिल अज़ीज़ होता तो हुज़ूर (ﷺ) उनके बजाय उसी को भेजते। इसलिये हुज़रत इस्मान (रज़ि.) को वहाँ भेजना पड़ा और बेअते रिज्वांन उस वक़्त हुई जब वो मक्का में थे (बेअत लेते हुए) आँहज़रत (ﷺ) ने अपने दाहिने हाथ को उठाकर फ़र्माया किये इस्मान (रज़ि.) का हाथ है और उसे अपने (बाई) हाथ पर मारकर फ़र्माया किये बेअत इस्मान (रज़ि.) की तरफ से है। अब जा सकते हो। अल्बत्ता मेरी बातों को याद रखना। (राजेअ : 3130)

عَنْ بَدْرِ فَإِنَّهُ كَانَ تَحْتَهُ بَيْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَتْ مَرِيضَةً، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِنْ شَهَدَةِ يَوْمِ أُحُدٍ وَسَهْمَهُ)). وَأَمَّا تَقِيَّتُهُ عَنْ بَيْعَةِ الرُّضْوَانِ فَإِنَّهُ لَوْ كَانَ أَحَدٌ أَغْرَى بِبَيْعَتِ مَكَّةَ مِنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ لَبَعَثَهُ بِكَأَنَّهُ، قَبِعَتْ عُثْمَانُ وَكَانَ بَيْعَةُ الرُّضْوَانِ بَعْدَ مَا دَعَبَ عُثْمَانُ إِلَى مَكَّةَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ الْيَمْنَى: ((هَذِهِ عُثْمَانُ)) فَضَرَبَ بِهَا عَلَى يَدِهِ فَقَالَ: ((هَذِهِ لِعُثْمَانَ)) اذْقَبْ بِهَذَا الْآنَ مَعَكَ)).

[راجع : 3130]

तशीह : (हुज़रत सय्यदना इस्मान रज़ि. पर ये ए'तिराज़ात करने वाला कोई ख़ारजी था जो वाक़ियात की ज़ाहिरी सतह को बयान करके उनकी बुराई करना चाहता था मगर जिसे अल्लाह इज्जत अता करे उसकी बुराई करने वाला खुद बुरा है रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु)। ग़ज्व-ए-उहुद के मौक़े पर आम मुसलमानों में कुफ़फ़ार के अचानक हमले की वजह से घबराहट फैल गई थी। हुज़ूर अक़रम (ﷺ) अपनी जगह पर खड़े हुए थे और दो एक सहाबा के साथ कुफ़फ़ार के तमाम हमलों का इतिहाई पामदी से मुकाबला कर रहे थे। थोड़ी देर के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा को आवाज़ दी और फिर तमाम सहाबा जमा हो गये। अल्लाह तआला ने सहाबा की इस ग़लती को मुआफ़ कर दिया और अपनी मुआफ़ी का खुद कुआन मजीद में ऐलान किया। अक़र सहाबा मुंतशिर हो गये थे और उन्हीं में इस्मान (रज़ि.) भी थे। मुसलमानों को इस ग़ज्वे में अगरचे नुक़सान बहुत उठाना पड़ा लेकिन ये नहीं कहा जा सकता कि मुसलमानों ने ग़ज्व-ए-उहुद में शिक़स्त खाई। क्योंकि न मुसलमानों ने हथियार डाले और न आँहज़रत (ﷺ) ने मैदाने जंग छोड़ा था। फ़ौज या'नी सहाबा रिज्वांनुल्लाह अलैहिम अज्मईन में अगरचे थोड़ी देर के लिये इतिशार पैदा हो गया था लेकिन फिर ये सब हुज़रात भी जल्दी ही मैदान में आ गये। ये भी नहीं हुआ कि सहाबा (रज़ि.) ने मैदान छोड़ दिया हो बल्कि गैर मुतवक्का (अविचारणीय) सूरतेहाल से घबराहट और सफ़ों में इतिशार पैदा हो गया था। जब अल्लाह के नबी (ﷺ) ने उन्हें पुकारा तो वो फ़ौरन सम्मिल गये और फिर आकर आपके चारों तरफ़ जमा हो गये और आखिर कुफ़फ़ार को भागने का रास्ता इख़्तियार करना पड़ा। अज़ीम नुक़सानात के बावजूद आखिरी फ़तह मुसलमानों को ही नसीब हुई। ऊपर वाली अह्दादीष में यही मज़ामीन बयान में आ रहे हैं। हुज़रत इस्मान (रज़ि.) के बारे में सवालात करने वाला मुख़ालिफ़ीन में से था। हुज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने उसके सवालात को तफ़सील के साथ हल फ़र्मा दिया। मगर जिन लोगों को किसी से नाहक़ बुज़्र हो जाता है वो किसी भी तौर पर मुतमईन नहीं हो सकते। आज तक ऐसे कज फ़हम (झूठी समझ वाले) लोग मौजूद हैं जो हुज़रत इस्मान (रज़ि.) पर तअन करना ही अपने लिये दलीले फ़ज़ीलत बनाए हुए हैं। सहाबा किराम

(रज़ि.) खुसूसन खुलफ़-ए-राशिदीन हमारे हर एहतिराम के मुस्तहिक हैं। उनकी इन्सानी लज़ि़शें सब अल्लाह के हवाले हैं। अल्लाह तआला यकीनन उनको मुआफ़ कर चुका है। (रजियल्लाहु अन्हुम व लअनल्लाहु मन आदहुमे)

बाब 20 :

अल्लाह तआला का फ़र्मान, वो वक़्त याद करो जब तुम चढ़े जा रहे थे और पीछे मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुमको पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे से। सो अल्लाह ने तुम्हें ग़म दिया, ग़म की पादाश में, ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल गई और न उस मुसीबत से जो तुम पर आ पड़ी और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

4067. मुझसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि ग़ज़व-ए-उहुद के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) ने (तीरंदाज़ों के) पैदल दस्ते का अमीर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को बनाया था लेकिन वो लोग शिकस्त खाकर आए। (आयत यदऊहुर्मुर्सूलु फ़ी उड़राहुम उन ही के बारे में नाज़िल हुई थी) और ये हज़ीमत (शिकस्त) उस वक़्त पेश आई जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनको पीछे से पुकार रहे थे। (राजेअ: 309)

तशरीह : कुछ मौक़े क़ौमों की तारीख़ में ऐसे आ जाते हैं कि चन्द अफ़राद की ग़लती से पूरी क़ौम तबाह हो जाती है और कुछ दफ़ा चन्द अफ़राद की मसाई (कोशिश) से पूरी क़ौम कामयाब हो जाती है। जंगे उहुद में भी ऐसा ही हुआ कि चन्द अफ़राद की ग़लती का खमियाज़ा सारे मुसलमानों को भुगतना पड़ा। अहले इस्लाम की आजमाइश के लिये ऐसा होना भी ज़रूरी था ताकि आइन्दा वो होशियार रहें और दोबारा ऐसी ग़लती न करें। जबले उहुद का मुतअय्यिना (निर्धारित किया हुआ) दर्रा छोड़ देना उनकी सख़्त ग़लती थी हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने सख़्त ताकीद फ़र्माई थी कि वो हमारे हुक्म बग़ैर किसी हाल में ये दर्रा न छोड़ें।

बाब 21 : अल्लाह तआला का फ़र्मान

फिर उसने इस ग़म के बाद तुम्हारे ऊपर राहत या'नी गुनदगी नाज़िल की कि उसका तुममें से एक जमाअत पर ग़लबा हो रहा था और एक जमाअत वो थी कि उसे अपनी जानों की पड़ी हुई थी, ये अल्लाह के बारे में ख़िलाफ़े हक़ और जाहिलियत के ख़्वालात क़ायम कर रहे थे और ये कह रहे थे कि क्या हमको भी

باب - ٢٠

إِذْ تَصْعَدُونَ وَلَا تَلْوُونَ عَلَى أَحَدٍ
وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ إِلَىٰ أُخْرَاكُمْ فَلَأَنبَأَكُمْ
عَمَّا بَعْدَ لَكِیلًا تَخْرُونَا عَلَىٰ مَا فَلَاحَكُمْ وَلَا
مَا أَصَابَكُمْ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ

٤٠٦٧ - حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا
زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ
الرَّءَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ:
حَمَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الرَّجَالَةِ يَوْمَ أُحُدٍ عَبْدَ
اللَّهِ بْنَ خَبِيرٍ وَقَبِلُوا مِنْهُزِمِينَ فَذَلِكَ إِذْ
يَدْعُوهُمْ الرَّسُولُ فِي أُخْرَاهُمْ.

[راجع: ٣٠٩]

باب - ٢١

ثُمَّ أُنْزِلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةٌ نَاصَتْ
بِعَشَى طَائِفَةٍ مِنْكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ
الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ

कुछ इखितयार है? आप कह दीजिए कि इखितयार तो सब अल्लाह का है। ये लोग दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो आप पर ज़ाहिर नहीं करते और कहते हैं कि कुछ भी हमारा इखितयार चलता तो हम यहाँ न मारे जाते। आप कह दीजिए कि अगर तुम घरों में होते तब भी वो लोग जिनके लिये क़त्ल मुक़द्दर हो चुका था, अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल ही पड़ते और ये सब इसलिये हुआ कि अल्लाह तुम्हारे दिलों की आजमाईश करे और ताकि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ़ करे और अल्लाह तआला दिल की बातों को ख़ूब जानता है।

शुद्धा-ए-उहूद पर जो ग़म मुसलमानों को हुवा उसकी तसल्ली के लिये ये आयात नाज़िल हुई जिनमें मुसलमानों के लिये बहुत अस्वाक़ पोशिदा हैं। गहरी नज़र से मुतालआ ज़रूरी है।

4068. और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे अबू तलहा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उन लोगों में था जिन्हें ग़ज़व-ए-उहूद के मौक़े पर क़ैद ने आ घेरा था और उसी हालत में मेरी तलवार कई मर्तबा (हाथ से छूटकर, बेइखितयार) गिर पड़ी थी। मैं उसे उठा लेता, फिर गिर जाती और मैं उसे फिर उठा लेता। (दीगर मक़ाम: 4562)

बाब 22 : अल्लाह तआला का फ़र्मान, आपको उस अम्र में कोई इखितयार नहीं। अल्लाह ख़वाह उनकी तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे, पस बेशक वो ज़ालिम हैं।

हुमैद और श़ाबित बिनानी ने हज़रत अनस (रज़ि.) से बयान किया कि ग़ज़व-ए-उहूद के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) के सरे मुबारक में ज़ख़म आ गये थे तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कैसे फ़लाह पाएंगी जिसने अपने नबी को ज़ख़मी कर दिया। इस पर (आयत) (लयसा लका मिनल अम्रि शैआ) नाज़िल हुई।

4069. हमसे यह्या बिन अब्दुल्लाह असलमी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, अपने वालिद अब्दुल्लाह बिन

سَيء قُل: اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهُ لِلّٰهِ يُخَفُّونَ فِيْ اَنْفُسِهِمْ مَا لَا يَنْدُوْنَ لَكَ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَهْنَا قُل: لَوْ كُنْتُمْ فِيْ سِرِّكُمْ لَبَرَزَ الْاَنۡبِيَاۡ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْمَوْتُ اِذۡ هُمْ اٰمِنُوْنَ وَلِيُخَيِّلَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحۡصِنَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

4068- وَقَالَ لِيْ خَلِيْفَةُ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَّعٍ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ قَتَادَةَ عَنْ اَنَسٍ عَنْ اَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ فِيمَنْ تَعَشَّاهُ النَّعَاسُ يَوْمَ اُخِذَ حَتّٰى سَقَطَ سَيْفِيْ مِنْ يَدَيِّ مَرَارًا يَسْقُطُ وَاُخَذَهُ وَيَسْقُطُ وَاُخَذَهُ. (ص: 4562).

باب ٢٢-

«لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبُهُمْ فَلَاِنَّهُمْ ظَالِمُوْنَ»

قَالَ حُمَيْدٌ وَثَابِتٌ عَنْ اَنَسٍ شَخَّ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ اُخِذَ فَقَالَ: ((كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ شَجُّوا نَبِيَّهُمْ)) فَرَلْتُ «لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ». (آل عمران: ١٢٨)

4069- حَدَّثَنَا يَحْيٰى بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ السُّلَمِيُّ اَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ اَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي سَالِمٌ عَنْ اَبِيهِ اَنَّهُ سَمِعَ

उमर (रज़ि.) से कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, जब आँहज़रत (ﷺ) फ़ज्र की आख़िरी रकअत के रुकूअ से सरे मुबारक उठाते तो ये दुआ करते, ऐ अल्लाह! फ़लाँ, फ़लाँ और फ़लाँ (या'नी सप्रवान बिन उमय्या, सुहैल बिन अमर और हारिष बिन हिशाम) को अपनी रहमत से दूर कर दे। ये दुआ आप (समिअल्लाहुलिमन हमिदह, रब्बना वलकल हम्द) के बाद करते थे। इस पर अल्लाह तआला ने आयत लयस लक मिनल अमि शैउन से फ़इन्नहुम ज़ालिमून (आले इमरान : 128) तक नाज़िल की। (दीगर मक़ाम : 4070, 4559, 7346)

4070. और हंज़ला बिन अबी सुफ़यान से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि मैंने सलाम बिन अब्दुल्लाह से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सप्रवान बिन उमय्या, सुहैल बिन अमर बिन हारिष बिन हिशाम के लिये बद्दुआ करते थे, इस पर ये आयत (लयसा लक मिनल् अमि शैइन) से (फ़इन्नहुम ज़ालिमून) तक नाज़िल हुई। (राजेअ : 4069)

तशरीह : ये तीनों शख्स उस वक़्त काफ़िर थे। बाद में अल्लाह तआला ने उनको इस्लाम की तौफ़ीक़ दी और शायद यही हिकमत थी जो अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर (ﷺ) को उनके लिये बद्दुआ करने से मना किया। कहते हैं जंगे उहुद में इब्बा बिन अबी वक्कास ने आपका नीचे का दांत तोड़ा और नीचे का होंठ ज़ख़मी किया और अब्दुल्लाह बिन शिहाब ने आपका चेहरा ज़ख़मी किया और अब्दुल्लाह बिन कुमय्या ने पत्थर मारकर आपका रुख़सार ज़ख़मी किया। ज़िरह के दो छल्ले आपके मुबारक रुख़सार में घुस गये। आपने फ़र्माया अल्लाह तुझको ज़लील व ख़वार करेगा। ऐसा ही हुआ। एक पहाड़ी बकरी ने सींग मारकर हलाक कर दिया। कुछ ने कहा ये आयत कारियों के किस्से में उतरी जब आप रअल और ज़क़वान और उसय वग़ैरह क़बाईल पर ला'नत करते थे लेकिन अक़्बर का यही क़ौल है कि ये आयत उहुद के बाब में उतरी है। (वहीदी)

बाब 23 : हज़रत उम्मे सलीत (रज़ि.) का तज़िक़रा

उम्मे सलीत का ख़ाविन्द अबू सलीत हिज़रत के पहले ही इंतिक़ाल कर गया था। फिर उनसे मालिक बिन सुफ़यान खुदरी ने निकाह कर लिया और उनसे हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) मशहूर सहाबी पैदा हुए। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

4071. हमसे यह्या बिन बुकेर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि अलब बा बिन अबी मालिक ने बयान किया कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने मदीना की ख़वातीन में चादरें तक्सीम करवाईं। एक इम्दा किस्म की चादर बाक़ी बच गई तो एक साहब ने जो वहीं मौजूद थे, अर्ज किया, या अमीरल

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ مِنَ الرُّكْعَةِ الْآخِرَةِ مِنَ الصَّلَاةِ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ أَنْتَ فَلَانٌ وَفُلَانٌ وَفُلَانٌ) بَعْدَ مَا يَقُولُ: ((سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَكَانَ الْحَمْدُ)) فَأَنْزَلَ اللَّهُ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ إِلَى قَوْلِهِ ﴿لَأَنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾.

[أطرافه ١: ٤٠٧٠، ٤٥٥٩، ٧٣٤٦].

٤٠٧٠- وَعَنْ خُطْلَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ قَالَ: سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْعُو عَلَى صَفْوَانَ بْنِ أُمَيَّةَ وَسُهَيْلِ بْنِ غَزْوٍ وَالْخَارِثِ بْنِ هِشَامٍ فَنَزَلَتْ ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿لَأَنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾. [راجع: ٤٠٦٩]

٢٣- باب ذِكر أم سَلِيطَ

٤٠٧١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ. وَقَالَ ثَعْلَبَةُ بْنُ أَبِي مَالِكٍ: إِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَسَمَ مَرُوطًا بَيْنَ نِسَاءٍ مِنْ نِسَاءِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ فَبَقِيَ مِنْهَا مَرُوطٌ جَدَّ

मोमिनीन! ये चादर रसूलुल्लाह (ﷺ) की नवासी को दे दीजिए जो आपके निकाह में हैं। उनका इशारा हज़रत उम्मे कुलसुम बिनते अली (रज़ि.) की तरफ था। लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) बोले कि हज़रत उम्मे सलीत (रज़ि.) उनसे ज्यादा मुस्तहिक हैं। हज़रत उम्मे सलीत (रज़ि.) का ता'ल्लुक अम्मार कबीले से था और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत की थी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि ग़ज़व-ए-उहुद में वो हमारे लिये पानी की मशक़ भर भरकर लाती थी। (राजेअ: 2881)

فَقَالَ لَهُ بَعْضُ مَنْ عِنْدَهُ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ
أَعْطِ هَذَا بِنْتَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الَّتِي
عِنْدَكَ، يُرِيدُونَ أَمْ كُنْتُمْ بِنْتَ عَلِيٍّ فَقَالَ
عُمَرُ : أُمُّ سَلَيْطٍ أَحَقُّ بِهَا مِنِّي وَأُمُّ سَلَيْطٍ
مِنْ بَنِي الْأَنْصَارِ مِمَّنْ بَايَعَ رَسُولَ اللَّهِ
ﷺ. قَالَ عُمَرُ: وَإِنِّي كَانَتْ تَرْفُزُ لَنَا
الْحَرْبَ يَوْمَ أُحُدٍ. (راجع: ٢٨٨١)

उनके उसी मुबारक अमल को उनके लिये बजहे फ़ज़ीलत करार दिया गया और चादर उन ही को दी गई। हज़रत उमर (रज़ि.) ने जिस नज़रे बज़ीरत का यहाँ पुबूत दिया उसकी जितनी भी ता'रीफ़ की जाए कम है। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु

बाब 24 : हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) की शहादत का बयान

4072. मुझसे अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हुजेन बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन फ़ुज़ेल ने, उनसे सुलैमान बिन यसार ने, उनसे जा'फ़र बिन अम्र बिन उमय्या ज़म्री (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उबैदुल्लाह बिन अदी बिन ख़ैयार (रज़ि.) के साथ खाना हुआ जब हिम्स पहुँचे तो मुझसे उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, आपको वहशी (इब्ने हरब हवशी जिसने ग़ज़व-ए-उहुद में हम्ज़ा रज़ि.) को क़त्ल किया और हिन्दा ज़ोजा अबू सुफ़यान ने उनकी लाश का मुषला किया था) से तआरुफ़ है। हम चल के उनसे हम्ज़ा (रज़ि.) की शहादत के बारे में मा'लूम करते हैं। मैंने कहा कि ठीक है ज़रूर चलो। वहशी हिम्स में मौजूद था। चुनाँचे हमने लोगों से उनके बारे में मा'लूम किया तो हमें बताया गया कि वो अपने मकान के साये में बैठे हुए हैं, जैसे कोई बड़ा सा कुप्पा हो। उन्होंने बयान किया कि फिर हम उनके पास आए और थोड़ी देर उनके पास खड़े रहे, फिर सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया। बयान किया कि उबैदुल्लाह ने अपने अमामा को जिस्म पर इस तरह लपेट रखा था कि वहशी सिर्फ़ उनकी आँखें और पैर देख सकते थे।

٢٤ - باب قتل حمزة رضي الله عنه

٤٠٧٢ - حدثني أبو جعفر محمد بن
عبد الله حدثنا جعفر بن المثنى حدثنا
عبد العزيز بن عبد الله بن أبي سلمة
عن عبد الله بن الفضل عن سليمان بن
يسار عن جعفر بن عمرو بن أمية
الضمري قال خرجت مع غييد الله
بن عدي بن الحيار فلما قدمنا حمص
قال لي غييد الله بن عدي هل لك في
وخشي نسأله عن قتل حمزة؟ قلت:
نعم. وكان وخشي يسكن حمص
فسألنا عنه فبيل لنا هو ذاك في ظل
فصره. كأنه حسب قال فجلنا حتى
وقفنا عليه يسير. فسلمنا فرد السلام
قال وغيد الله ففتجر بعنانه. ما يرى
وخشي إلا عينه ورجليه؟ فقال غييد
الله يا وخشي اتعرفني؟ قال: فظفر إليه

उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने पूछा, ऐ वहशी! क्या तुमने मुझे पहचाना? रावी ने बयान किया कि फिर उसने उबैदुल्लाह को देखा और कहा कि नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्बत्ता मैं इतना जानता हूँ कि अदी बिन ख़ैयार ने एक औरत से निकाह किया था, उसे उम्मे क़िताल बन्ते अबिल ईस कहा जाता था फिर मक्का में उसके यहाँ एक बच्चा पैदा हुआ और मैं उसके लिये किसी अना की तलाश के लिये गया था। फिर मैं उस बच्चे को उसकी (रज़ाई) माँ के पास ले गया और उसकी वालिदा भी साथ थी। ग़ालिबन मैंने तुम्हारे पैर देखे थे। बयान किया कि इस पर उबैदुल्लाह बिन अदी (रज़ि.) ने अपने चेहरे से कपड़ा हटा लिया और कहा, हमें तुम हमज़ा (रज़ि.) की शहादत के वाक़ियात बता सकते हो? उन्होंने कहा कि हाँ, बात ये हुई कि बद्र की लड़ाई में हज़रत हमज़ा (रज़ि.) ने तुएमा बिन अदी बिन ख़ैयार को क़त्ल किया था। मेरे आका जुबैर बिन मुतइम ने मुझसे कहा कि अगर तुमने हमज़ा (रज़ि.) को मेरे चचा (तुएमा) के बदले क़त्ल कर दिया तो तुम आज़ाद हो जाओगे। उन्होंने बताया कि फिर जब कुरैश अयनैन की जंग के लिये निकले। अयनैन उहुद की एक पहाड़ी है और उसके और उहुद के दरम्यान एक वादी हाईल है। तो मैं भी उनके साथ जंग के इरादे से हो लिया। जब (दोनों फ़ौजें आमने सामने) सबाअ बिन अब्दुल उज्जा निकला और उसने आवाज़ दी, है कोई लड़ने वाला? बयान किया कि (उसकी उस दा'वते मुबारिज़त पर) अमीर हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) निकलकर आए और फ़र्माया, ऐ सबाअ! ऐ उम्मे अन्मार के बेटे! जो औरतों के ख़त्ने किया करती थी, तू अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने आया है? बयान किया कि फिर हमज़ा (रज़ि.) ने उस पर हमला किया (और उसे क़त्ल कर दिया) अब वो वाक़िया गुज़रे हुए दिन की तरह हो चुका था। वहशी ने बयान किया कि इधर मैं एक चट्टान के नीचे हमज़ा (रज़ि.) की ताक में था और ज्यों ही वो मुझसे करीब हुए, मैंने उन पर अपना छोटा नेज़ा फेंककर मारा, नेज़ा उनकी नाफ़ के नीचे जाकर लगा और उनकी सुरीन के पार हो गया। बयान किया कि यही उनकी शहादत का सबब बना, फिर जब कुरैश वापस हुए तो मैं भी उनके साथ वापस आ गया और मक्का में मुक़ीम रहा। लेकिन

ثُمَّ قَالَ : لَا وَاللَّهِ إِلَّا أَنِّي أَعْلَمُ أَنَّ عَدِيَّ بْنَ الْخِيَارِ تَزَوَّجَ امْرَأَةً يُقَالُ لَهَا أُمُّ قَتْلَ بِنْتُ أَبِي الْعَبَّاسِ، فَوُلِدَتْ لَهُ غُلَامًا بِمَكَّةَ فَكُنْتُ أَسْتَرْصِغُ لَهُ فَحَمَلْتُ ذَلِكَ الْغُلَامَ مَعَ أُمِّهِ فَأَوَلَّتْهَا إِيَّاهُ فَلَكَنِي مَطْرَتْ إِلَى قَدَمَيْكَ، قَالَ : فَكَشَفَ غَيْظَ اللَّهِ عَنْ وَجْهِهِ، ثُمَّ قَالَ أَلَا نُحْرِبُ بِقَتْلِ حَمْزَةَ؟ قَالَ : نَعَمْ، إِنَّ حَمْزَةَ قَتَلَ طُعَيْمَةَ بِنْتُ عَدِيٍّ بْنِ الْخِيَارِ سِدْرٍ، فَقَالَ لِي مُوَلَّيٌّ جَيْشِيُّ بْنُ مُطْعَمٍ : إِنَّ قَتَلْتُ حَمْزَةَ بَعَمِّي فَأَنْتَ حُرٌّ، قَالَ فَلَمَّا أَنْ حَرَجَ النَّاسُ عَامَ عَيْنَيْنِ وَعَيْنَيْنِ جَبَلٍ بِحِيَالِ أَخِي بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ وَادٍ خَرَجْتُ مَعَ النَّاسِ إِلَى الْقِتَالِ فَلَمَّا أَنْ اضْطَفُّوا لِلْقِتَالِ خَرَجَ مِبَاغٌ، فَقَالَ : هَلْ مِنْ مُبَارِرٍ؟ قَالَ : فَخَرَجَ إِلَيْهِ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ : يَا مِبَاغُ يَا ابْنَ أُمِّ أَنْصَارٍ مُقَطَّعَةِ الْبُطُورِ أَخَذَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ : ثُمَّ شَدَّ عَلَيْهِ فَكَانَ كَأَنَّمَا الدَّاهِبُ، قَالَ : وَكَمَنْتُ لِحَمْزَةَ تَحْتَ صَخْرَةٍ فَلَمَّا دَنَا مِنِّي رَمَيْتُهُ بِخَرَّتِي فَأَضْعَفَهَا فِي قَتْبِي حَتَّى خَرَجْتُ مِنْ بَيْنِ وَرِكَيْهِ قَالَ : فَكَانَ ذَلِكَ الْقَهْدُ بِهِ، فَلَمَّا رَجَعَ النَّاسُ رَجَعْتُ مَعَهُمْ فَأَقَمْتُ بِمَكَّةَ حَتَّى قَتَلْنَا فِيهَا الْإِسْلَامَ ثُمَّ خَرَجْتُ إِلَى الطَّائِفِ فَأَرْسَلُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

जब मक्का भी इस्लामी सल्तनत के तहत आ गया तो मैं त्राइफ़ चला गया। त्राइफ़ वालों ने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में एक क्रासिद भेजा तो मुझे वहाँ के लोगों ने कहा कि अंबिया किसी पर ज़्यादाती नहीं करते (इसलिये तुम मुसलमान हो जाओ इस्लाम कुबूल करने के बाद तुम्हारी पिछली तमाम गलतियाँ मुआफ़ हो जाएँगी) चुनौचे मैं भी उनके साथ खाना हुआ। जब आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में पहुँचा और आप (रज़ि.) ने मुझे देखा तो दरयाफ़्त किया, क्या तुम्हारा ही नाम वहशी है? मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम्हीं ने हम्ज़ा (रज़ि.) को क़त्ल किया था? मैंने अर्ज़ किया, जो आँहज़रत (ﷺ) को इस मामले में मा'लूम है वही सहीह है। हज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, क्या तुम ऐसा कर सकते हो कि अपनी मूरत मुझे कभी न दिखाओ? उन्होंने बयान किया कि फिर मैं वहाँ से निकल गया। फिर हज़ूर (ﷺ) की जब वफ़ात हुई तो मुसैलमा कज़ाब ने ख़ुरूज किया। अब मैंने सोचा कि मुझे मुसैलमा कज़ाब के खिलाफ़ जंग में ज़रूर शिर्कत करनी चाहिये। मुम्किन है मैं उसे क़त्ल कर दूँ और इस तरह हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के क़त्ल का कुछ बदल हो सके। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं भी उसके खिलाफ़ जंग के लिये मुसलमानों के साथ निकला। उससे जंग के वाक़ियात सबको मा'लूम हैं। बयान किया कि (मैदाने जंग में) मैंने देखा कि एक शख़्स (मुसैलमा) एक दीवार की दराज़ से लगा खड़ा है। जैसे गुन्दमी रंग का कोई ऊँट हो। सर के बाल परेशान थे। बयान किया कि मैंने उस पर भी अपना छोटा नेज़ा फेंककर मारा। नेज़ा उसके सीने पर लगा और शानों को पार कर गया। बयान किया कि इतने में एक सहाबी अंसारी झपटे और तलवार से उसकी खोपड़ी पर मारा। (अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने) बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल ने बयान किया कि फिर मुझे सुलैमान बिन यसार ने ख़बर दी और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन ज़मर (रज़ि.) से सुना, वो बयान कर रहे थे कि (मुसैलमा के क़त्ल के बाद) एक लड़की ने छत पर खड़ी होकर ऐलान किया कि अमीरुल मोमिनीन को एक काले गुलाम (या'नी हज़रत वहशी) ने क़त्ल कर दिया।

وَسَلَّمَ رَسُولًا فَبَيَّنَ لِي أَنَّهُ لَا يَهْجُ الرُّسُلَ. قَالَ : فَخَرَجْتُ مَعَهُمْ حَتَّى قَدِمْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمَّا رَأَى قَالَ : ((أَنْتَ وَخَشِي)) ؟ قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ : ((أَنْتَ قَتَلْتَ حَمْزَةً)) ؟ قُلْتُ : قَدْ كَانَ مِنَ الْأَمْرِ مَا قَدْ بَلَغْتَ. قَالَ : ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تُعَيِّبَ وَجْهَكَ عَنِّي)) ؟ قَالَ : فَخَرَجْتُ فَلَمَّا بَقِيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجَ مُسْتَلِمَةُ الْكُذَّابِ قُلْتُ : لَاخْرُجْنِي إِلَى مُسْتَلِمَةَ لَعَلِّي أَقْتُلُهُ فَأَكْفِيءَ بِهِ حَمْزَةً. قَالَ : فَخَرَجْتُ مَعَ النَّاسِ فَكَانَ مِنْ أَمْرِهِ مَا كَانَ لَوَإِذَا رَجُلٌ قَائِمٌ فِي قَلْعَةٍ جِدَارُ كَانَهُ جَمَلٌ أَوْزَقُ نَابِزِ الرَّأْسِ قَالَ : فَرَمَيْتُهُ بِخَرَبَتِي فَأَضَعَهَا بَيْنَ ثَدْيَيْهِ حَتَّى خَرَجَتْ مِنْ بَيْنِ كَيْفِيهِ. قَالَ : وَوَسَّ بِإِلَيْهِ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَضَرَبَهُ بِالسَّيْفِ عَلَى خَافِيَتِهِ. قَالَ : قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْفَضْلِ فَأَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ : فَقَالَتْ جَارِيَةٌ عَلَى ظَهْرِ نَيْتٍ : وَ أَمِيرُ الْمُؤْمِنِينَ قَتَلَهُ الْعَبْدُ الْأَسْوَدُ.

तरीह :

अरब में मर्दों की तरह औरतों का भी खूना होता था और जिस तरह मर्दों के खूने मर्द किया करते थे, औरतों के खूने औरतें किया करती थीं। ये तरीका जाहिलियत में भी राज (प्रचलित) था और इस्लाम ने इसे बाकी रखा क्योंकि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की जो कुछ सुन्नतें अरबों में बाकी रह गई थीं उनमें से एक ये भी थी। चूँकि सबाअ बिन अब्दुल उज्जा की माँ, औरतों के खूने किया करती थीं, इसलिये हम्ज़ा (रज़ि.) ने उसे उसकी माँ के पेशे की आर दिलाई। वहशी मुसलमान हो गया और इस्लाम लाने के बाद उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये गये। लेकिन उन्होंने आप (ﷺ) के मुहतरम चचा हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को क़त्ल किया था, इतनी बेदर्दी से कि जब वो शहीद हो गये तो उनका सीना चाक करके अंदर से दिल निकाला और लाश को बिगाड़ दिया। इसलिये ये एक कुदरती बात थी कि उन्हें देखकर हम्ज़ा (रज़ि.) की ग़मअंगेज़ शहादत आँहज़रत (ﷺ) को याद आ जाती। इसलिये आपने उसको अपने से दूर रहने के लिये फ़र्माया। आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को सय्यदुश्शुहदा क़त्ल दिया। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, क़ाल ख़रज रसूलुल्लाहि (ﷺ) यल्लतमिसु हम्ज़त फवजदह बिबतलिस्वादी क़द मुषिल बिही फ़क़ाल लौ ला अन तहज़न सफ़्या बिन्तु अब्दिलमुत्तलिब व तकूनु सुन्नतन बअदी लतरक्तुहू हत्ता यहशूर मिन बुतूनिस्सबाइ व तवामलुत्तरू जाद इब्नु हिशाम क़ाल व क़ाल लन अज़ाब बिमिष्लिक अबदन व नज़ल जिब्रइलु फ़क़ाल अन हम्ज़त मक्तूबुन फ़िस्समाइ असदुल्लाहि व असदु रसूलिही व खल्बज़ज़ार वज़रानी बिस्नादिन फ़ीहि जुअफ़ुन अन अबी हु़रैरत अनन्नबिह्य (ﷺ) लम्मा राअ हम्ज़त क़द मुषिल बिही क़ाल रहिमहुल्लाहि अलैक़लक़द कुन्तु वसूलन लिर्हमि फ़ुल्लनलिलख़ैर व लौ ला हज़न मिम्बअदिक लसरनी अन अदउकहत्ता तहशूर मिन अज्वाफ़िन शत्ता शुम्म हलफ व हुव मिमकानिही लअम्बलन्न बिसब्ईन मिन्हुम फ़नज़लल्कुआनु व इन आक्रिबुम फ़आक्रिबू बिमिष्लि मा उक्रिबुम (फ़तुल्बारी) या नौ उहुद के मौक़े पर रसूल करीम (ﷺ) हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) की लाश तलाश करने निकले तो उसको एक वादी में पाया जिसका मुषला कर दिया गया था। आपको उसे देखकर इतना ग़म हुआ कि आपने फ़र्माया, अगर ये छयाल न होता कि सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब को अपने भाई की लाश का ये हाल देखकर किस क़दर स़दमा होगा और ये छयाल न होता कि लोग मेरे बाद हर शहीद की लाश के साथ ऐसा ही करना सुन्नत समझ लेंगे तो मैं उस लाश का उसी हालत में छोड़ देता। उसे दरिन्दे और परिन्दे खा जाते और ये क़यामत के दिन उनके पेटों में से निकलकर मैदाने हशर में हाज़िर होते। इब्ने हिशाम ने ये ज़्यादा किया कि आपने फ़र्माया, ऐ हम्ज़ा! ऐसा बताव जैसा तुम्हारे साथ इन काफ़िरों ने किया है किसी के साथ कभी न हुआ होगा। उसी दरम्यान में हज़रत जिब्रइल (अलैहिस्सलाम) नाज़िल हुए और फ़र्माया कि हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) का आसमानों में ये नाम लिख दिया गया है कि ये असदुल्लाह और उसके रसूल के शेर हैं और बज़ार और तबरानी में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जब अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) की लाश को देखा तो फ़र्माया, ऐ हम्ज़ा! अल्लाह पाक तुम पर रहम करे। तुम बहुत ही सिलारहमी करने वाले, बहुत ही नेक काम करने वाले थे और अगर तुम्हारे बाद ये ग़म बाकी रहने का डर न होता तो मेरी खुशी थी कि तुम्हारी लाश इसी हाल में छोड़ देता और तुमको मुख्तलिफ़ जानवर खा जाते और तुम उनके पेटों से निकलकर मैदान महशर में हाज़िरी देते। फिर आपने उसी जगह क़सम खाई कि मैं कुप्फ़ार के सत्तर आदमियों के साथ यही मामला करूँगा। उस मौक़े पर कुआन मजीद की ये आयत नाज़िल हुई और अगर तुम दुश्मनों को तकलीफ़ देना चाहो तो उसी क़द्र दे सकते हो जितनी तुमको उनकी तरफ़ से दी गई है और अगर स़न्न करो और कोई बदला न लो तो स़न्न करने वालों के लिये यही बेहतर है। इस आयत के नाज़िल होने पर रसूल करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि या अल्लाह! मैं अब बिलकुल बदला न लूँगा बल्कि स़न्न ही करूँगा।

बाब 28 : ग़ज़व-ए-उहुद के मौक़े पर नबी करीम

(ﷺ) को जो ज़ख़म पहुँचे थे उनका बयान

4073. हमसे इस्हाक़ बिन नसर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम ने और उन्होंने अबू हु़रैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस क़ौम

٢٥ - باب ما أصاب النبي ﷺ

من الحراح يوم أحد

٤٠٧٣ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَاصِرٍ حَدَّثَنَا

عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ سَمِعَ أَبَا

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ

पर इतिहाई सख्त हुआ जिसने उसके नबी के साथ ये किया। आपका इशारा आगे के दंदाने मुबारक (के टूट जाने) की तरफ था। अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस शख्स (उबई बिन ख़लफ़) पर इतिहाई सख्त हुआ। जिसे उसके नबी (ﷺ) ने अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया।

4074. मुझसे मुखलद बिन मालिक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद उमवी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, उनसे इकिमा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला का उस शख्स पर इतिहाई ग़ज़ब नाज़िल हुआ जिसे अल्लाह के नबी (ﷺ) ने क़त्ल किया था। अल्लाह तआला का इतिहाई ग़ज़ब उस क्रौम पर नाज़िल हुआ जिन्होंने अल्लाह के नबी (ﷺ) के चेहरा मुबारक को (ग़ज़वा के मौक़े पर) ख़ून आलूद कर दिया था। (दीगर मक़ाम: 4076)

बाब

4075. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उन्होंने ने सहल बिन सअद (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) के (ग़ज़व-ए-उहुद के मौक़े पर होने वाले) ज़ख़मों के बारे में पूछा गया। तो उन्होंने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मुझे अच्छी तरह याद है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़ख़मों को किसने धोया था और कौन उन पर पानी डाल रहा था और किस दवा से आपका इलाज किया गया। उन्होंने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की स्राहबज़ादी ख़ून को धो रही थीं। हज़रत अली (रज़ि.) ढाल से पानी डाल रहे थे। जब हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने देखा कि पानी डालने से ख़ून और ज़्यादा निकला आ रहा है तो उन्होंने चटाई का एक टुकड़ा लेकर जलाया और फिर उसे ज़ख़म पर चिपका दिया जिससे ख़ून बन्द हो गया। उसी दिन आँहज़रत (ﷺ) के आगे के दंदाने मुबारक शहीद हुए थे। हुज़ूर (ﷺ) का चेहरा मुबारक भी ज़ख़मी हो गया था और ख़ूद (जंगी टोप या हेलमेट) सरे मुबारक पर टूट गई थी। (राजेअ: 243)

الله ﷻ. ((اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى قَوْمٍ فَعَلُوا بِهِ - يُشِيرُ إِلَى رِيعَتِهِ - اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى رَجُلٍ يَقْتُلُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي سَبِيلِ اللهِ)).

٤٠٧٤ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مَالِكٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْأُمَوِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى مَنْ قَتَلَ النَّبِيَّ ﷺ فِي سَبِيلِ اللهِ اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى قَوْمٍ قَتَلُوا وَجْهَ نَبِيِّ اللهِ ﷻ. [طَرَفَهُ فِي: ٤٠٧٦].

باب

٤٠٧٥ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ. حَدَّثَنَا يَغْفُوبُ عَنْ أَبِي جَازِمٍ. أَنَّهُ سَمِعَ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ وَهُوَ يُسَآلُ عَنْ جُرحِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: وَاللهِ إِنِّي لَا أَعْرِفُ مَنْ كَانَ يَفْسِلُ جُرحَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَنْ كَانَ يَسْكُبُ الْمَاءَ، وَبِمَا ذُووِي. قَالَ: كَانَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَامُ بَثَّتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ تَفْسِلُهُ وَعَلِيٌّ يَسْكُبُ الْمَاءَ بِالْمَجْنِ فَلَمَّا رَأَتْ فَاطِمَةُ أَنَّ الْمَاءَ لَا يَزِيدُ الشَّمَّ إِلَّا كَثْرَةً خَذَتْ قِطْعَةً مِنْ خَصِيرٍ فَأَخْرَقَتْهَا وَأَلْصَقَتْهَا فَاسْتَمْسَكَ الدَّمُ وَكُسِرَتْ رِيعَتُهُ يَوْمَئِذٍ وَجُرحُ وَجْهِهِ وَكُسِرَتْ لَبِيضَةُ عَلَى رَأْسِهِ. [رَاجِع: ٢٤٣]

4076. मुझसे अमर बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे इक्स्माने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला का इतिहाई ग़ज़ब उस शाख्स पर नाज़िल हुआ जिसे अल्लाह के नबी (ﷺ) ने क़त्ल किया था। अल्लाह तआला का इतिहाई ग़ज़ब उस शाख्स पर नाज़िल हुआ जिसने (या'नी अब्दुल्लाह बिन कुमय्याला'न तुल्लाह अलैहि ने) रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक को लहलुहान किया था। (राजेअ: 4074)

तशरीह: इन तमाम अहदादीष में जंगे उहद का इतिहाई ख़तरनाक पहलू दिखलाया गया है। वो ये कि रसूले करीम (ﷺ) का चेहर-ए-मुबारक ज़ख्मी हुआ। आपके चार दांत शहीद हुए जिससे आपको इतिहाई तकलीफ़ हुई। ये हरकत करने वाला एक काफ़िर अब्दुल्लाह बिन कुमय्या था जिस पर क़यामत तक अल्लाह की ला'नत नाज़िल होती रहे। उस जंग में दूसरा ह्रादशा ये हुआ कि खुद रसूले करीम (ﷺ) के दस्ते मुबारक से उबई बिन ख़लफ़ मक्का का मशहूर काफ़िर मारा गया। हालाँकि आप अपने दस्ते मुबारक से किसी को मारना नहीं चाहते थे मगर ये उबई बिन ख़लफ़ की इतिहाई बदबख़ती की दलील है कि वो खुद हज़ूर (ﷺ) के हाथ से जहन्नम-रसीद हुआ।

बाब 26 : वो लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ को अमलन कुबूल किया (या'नी इशादे नबवी ﷺ की ता'मील के लिये फ़ौरन तैयार हो गये)

4077. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू मुआविष ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि (आयत) वो लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा। उन्होंने ड़र्वा से इस आयत के बारे में कहा, मेरे भांजे! तुम्हारे वालिद जुबैर (रज़ि.) और (नाना) अबूबक्र (रज़ि.) भी उन्हीं में से थे। उहद की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) को जो कुछ तकलीफ़ पहुँचनी थी जब वो पहुँची और मुश्किनी वापस जाने लगे तो आँहज़रत (ﷺ) को इसका ख़तरा हुआ कि कहीं वो फिर लौटकर हमला न करें। इसलिये आपने फ़र्माया कि उनका पीछा करने कौन कौन जाएँगे। उसी वक़्त सत्तर सहाबा (रज़ि.) तैयार हो गये। रावी ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत जुबैर (रज़ि.) भी उन्हीं में से थे।

तशरीह: ये तआकुब जंगे उहद के ख़ात्मे पर इसलिये किया गया कि मुश्किनी ये न समझे कि उहद के नुक़सान ने मुसलमानों

४०७६ - حدثني عمرو بن علي حدثنا أبو غاصم حدثنا ابن جريج عن عمرو بن دينار عن عكرمة عن ابن عباس قال: اشتد غضب الله على من قتل نبيًا واشتد غضب الله على من دمي الله وجه رسول الله ﷺ. [راجع: 4074]

۲۶ - باب الذين استجابوا لله والرسول

۴۰۷۷ - حدثنا محمد بن حنفية عن أبيه عن عائشة رضي الله عنها: الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما أصابهم الفرح للذين أحسنوا منهم واتقوا أجر عظيم قال قلت لعروة: يا ابن أختي كان أبوك منهم الزبير وأبو بكر لما أصاب رسول الله ﷺ ما أصاب يوم أحد وانصرف المشركون خائفين يرجعوا. قال: ((من يذهب منهم رجلاً قال: كان فيهم أبو بكر والزبير)).

को निहाल कर दिया है और अगर उन पर दोबारा हमला किया गया तो वो कामयाब हो जाएंगे। मुसलमानों ने प्रामाणिकता दिखाया कि वो उहद के अजीम नुस्खानात के बाद भी कुफ़र के मुकाबले में हर वक्त तैयार हैं। मुसलमानों की तारीख के हर दौर में यही शान रही है कि हादसों से मायूस होकर मैदान से नहीं हटे बल्कि हालात का इस्तिस्लाल से मुकाबला किया और आखिर कामयाबी उन ही को मिली। आज भी दुनिया-ए-इस्लाम का यही हाल है मगर मायूसी कुफ़र है।

बाब 27 : जिन मुसलमानों ने ग़ज़्व-ए-उहद में शहादत पाई उनका बयान

उन ही में हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब, अबू हुज़ैफ़ा अल यमान, अनस बिन नज़्र और मुसअब बिन ज़मैर (रज़ि.) भी थे।

4078. हमसे अमर बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे मुआज़ बिन हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया कि अरब के तमाम क़बीलों में कोई क़बीला अंसार के मुकाबले में इस इज़त को हासिल नहीं कर सका कि उसके सबसे ज़्यादा आदमी शहीद हुए और वो क़बीला क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा इज़त के साथ उठेगा। हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने हमसे बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहद में क़बील-ए-अंसार के सत्तर आदमी शहीद हुए। बीरे मज़ना के हादसे में उसके सत्तर आदमी शहीद हुए और यमामा की लड़ाई में उसके सत्तर आदमी शहीद हुए। रावी ने बयान किया कि बीरे मज़ना का वाक़िया रसूलुल्लाह (ﷺ) के वक़्त में पेश आया था और यमामा की जंग अबूबक्र (रज़ि.) के अहदे ख़िलाफ़त में हुई थी जो मुसैलमा क़जाब से लड़ी गई थी।

तफ़सील: बीरे मज़ना में सत्तर आदमी वो शहीद हुए जो सब अंसारी थी और कुर्आन मजीद के कारी थे। जो महज़ तब्लीगी ख़िदमात के लिये निकले थे मगर षोख़े से कुफ़र ने उनको शहीद कर डाला था। आगे हदीष में उनकी तफ़सील आ रही है और आगे वाली अहदीष में भी कुछ उनके क़वाइफ़ मज़कूर हैं।

4079. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन कअब बिन मालिक ने और उन्हें हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उहद के शहीदों को एक ही कपड़े में दो-दो को कफ़न दिया और आप दरयाफ़्त करते कि उनमें कुर्आन का आलिम सबसे ज़्यादा कौन है? जब किसी एक की तरफ़ इशारा करके आपको बताया जाता तो क़ब्र में आप उन्हीं को आगे फ़र्माते। आपने फ़र्माया कि क़यामत के दिन मैं इन

۲۷- باب من قُتل من المُسلمين يوم أُحُد.

مَنْهُمْ حُمْرَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ وَالْيَمَانُ وَأَنْسَرُ بْنُ النَّضْرِ وَمُضْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ ۴۰۷۸- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: مَا نَعْلَمُ حَيًّا مِنْ أَحْيَاءِ الْقُرْبِ أَكْثَرَ شَهِيدًا أَعْرَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْأَنْصَارِ. قَالَ قَتَادَةُ: وَحَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّهُ قُتِلَ مِنْهُمْ يَوْمَ أُحُدٍ سِتُّونَ وَيَوْمَ بَنِي مُغَوْنَةَ سِتُّونَ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ سِتُّونَ قَالَ: وَكَانَ بَنُو مُغَوْنَةَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ يَوْمَ نَسِيلَةِ الْكَذَّابِ.

۴۰۷۹- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ مَالِكََ بْنَ جَابِرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَخْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مَنْ قُتِلَ أَحَدٌ فِي تَوْبَةٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ يَقُولُ: ((أَيُّهُمَا

सब पर गवाह रहूंगा। फिर आपने तमाम शुहदा को खून समेत दफन करने का हुक्म फर्मा दिया और उनकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी और न उन्हें गुस्ल दिया गया।

(राजेअ: 1343)

4080. और अबुल वलीद ने बयान किया, उनसे शुअबाने, उनसे इब्नुल मुंकदिर ने, उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मेरे वालिद हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो मैं रोने लगा और बार-बार उनके चेहरे से कपड़ा हटाता। सहाबा मुझे रोकते थे लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं रोका। (फ़ातिमा बिनते उमर रज़ि. हज़रत अब्दुल्लाह की बहन भी रोने लगीं) आँहुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि रोओ मत। (आँहुज़ूर ﷺ ने ला तब्कीही फ़र्माया, या मा तब्कीही, राखी को शकह) फ़रिश्ते बराबर उनकी लाश पर अपने परोँ का साया किये हुए थे। यहाँ तक कि उनको उठा लिया गया। (राजेअ: 1244)

तशरीह:

जंगे इहुद के शहीदों के फ़ज़ाइल व मनाक़िब का क्या कहना है। ये इस्लाम के वो नामवर फ़र्जन्द हैं जिन्होंने अपने खून से शजरे इस्लाम को परवान चढ़ाया। इस्लामी तारीख़ क़यामत तक उन पर नाज़ाँ रहेगी। उनमें से दो दो को मिलाकर एक एक क़ब्र में दफ़न किया गया।

हाज़त नहीं है तेरे शहीदों को गुस्ल की।

उनको बग़ैर गुस्ल के क़फ़न दफ़न किया गया ताकि क़यामत के दिन ये मुहब्बते इलाही के क़स्तगान उसी हालत में अदालते आलिया में हाज़िर हों। सच है

बनाकर दंद खुश रस्मे बख़ाक व खून ग़लतीदन, अल्लाह रहमत कन्द ई आशिक़ाना पाक तीनत रा।

मैं इतिहाई खुशी महसूस करता हूँ कि मुझको उम्रे अज़ीज़ में तीन बार इन शुहदा के गंज शहीदों पर दुआ-ए-मसनूना पढ़ने के लिये हाज़िरी का मौक़ा मिला। हर हाज़िरी पर वाक़ियाते माज़ी (गुज़रे हुए दौर के किस्से) याद करके दिल भर आया और आज भी जबकि ये लाइनें लिख रहा हूँ आँखों से आँसुओं का सैलाब रवाँ है। अल्लाह पाक क़यामत के दिन उन क़त्तारों को गुनाहों की नारे-दोज़ख़ बुझाने के लिये दरिया का दर्जा अज़ा फ़र्माए। वमा ज़ालिक अलल्लाह बि अज़ीज़।

4081. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बर्दाने, उनसे उनके दादा अबू बर्दाने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने ख़्वाब में देखा कि मैंने तलवार को हिलाया और उससे उसकी धार टूट गई। उसकी

أَكْثَرَ اخْتِذَاً لِلْقُرْآنِ؟ فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى أَحَدٍ قَدَّمَهُ فِي اللَّحْدِ. وَقَالَ: أَنَا شَهِيدٌ عَلَى هَؤُلَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَمَرَ بِدَفْنِهِمْ بِدِمَائِهِمْ وَلَمْ يُصَلَّ عَلَيْهِمْ وَلَمْ يُغْسَلُوا.

[راجع: ١٣٤٣]

٤٠٨٠- وقال أبو الوليد: عن شعبة عن ابن المنكبر. قال: سمعت جابرًا. قال: لما قُتل أبي جفَلْتُ أبكي واكتُفِفْتُ الثُّوبُ عَنْ وَجْهِهِ فُجِعِلَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ يَنْهَوْنِي وَالنَّبِيُّ ﷺ لَمْ يَنْهَ عَنْهُ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَبْكِيه - أَوْ مَا تَبْكِيه - مَا زَالَتِ الْمَلَائِكَةُ تَطْلُغُ بِأَجْسَحَتِهَا)) حَتَّى رَفَعَ. [راجع: ١٢٤٤]

٤٠٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْغَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ خَدَةَ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَرَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ

ता'बीर मुसलमानों की उस नुक़्तान की शकल में ज़ाहिर हुई जो ग़ज़्व-ए-उहूद में उठाना पड़ा था। फिर मैंने दोबारा उस तलवार को हिलाया, तो फिर वो उससे भी ज़्यादा इम्दह हो गई जैसी पहले थी, उसकी ता'बीर अल्लाह तआला ने फ़तह और मुसलमानों के फिराने सिरे से इज्तिमाअ की सूरत में ज़ाहिर की। मैंने उसी ख़ुबाब में एक गाय देखी थी (जो ज़िह्न हो रही थी) और अल्लाह तआला के तमाम काम ख़ैरो-बरकत लिये हुए होते हैं। उसकी ता'बीर वो मुसलमान थे (जो) उहूद की लड़ाई में (शहीद हुए)। (राजेअ: 3622)

((رَأَيْتُ فِي رُؤْيَايَ أَنِّي هَزَزْتُ سَيْفًا فَأَنْقَطَعَ صَدْرُهُ، فَإِذَا هُوَ مَا أَصِيبَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ، ثُمَّ هَزَزْتُهُ أُخْرَى فَقَادَ أَحْسَنَ مَا كَانَ، فَإِذَا هُوَ مَا جَاءَ بِهِ اللَّهُ عَنِ الْفَتْحِ، وَاجْتِمَاعِ الْمُؤْمِنِينَ وَرَأَيْتُ فِيهَا بَقْرًا وَاللَّهُ خَيْرٌ فَإِذَا هُمْ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ أُحُدٍ)). (راجع: ٣٦٢٢)

बज़ाहिर जंगे उहूद का हादसा बहुत संगीन था मगर बफ़ज़िलही तआला बाद में मुसलमान जल्द ही सम्भल गये और इस्लामी त्राक़्त फिर मुज्तामअ (संगठित) हो गई। गोया उहूद का हादसा मुसलमानों की आइन्दा ज़िन्दगी के लिये नफ़ा बख़्श घाबित हुआ। उहूद के अलमबरदार हज़रात ख़ालिद और हज़रात अबू सुफ़यान (रज़ि.) जैसे हज़रात दाख़िले इस्लाम हो गये। सच है वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्काफ़िरून. (अस्र सफ़फ़: 8)

4082. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे ख़ब्बाब (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ हिजरत की और हमारा मक्क़मद उससे सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल करना था। ज़रूरी था कि अल्लाह तआला हमें उस पर प्रवाब देता। अब कुछ लोग तो वो थे जो अल्लाह से जा मिले और (दुनिया में) उन्होंने अपना कोई प्रवाब नहीं देखा। मुसअब बिन इमैर (रज़ि.) भी उन्हीं में से थे। ग़ज़्व-ए-उहूद में उन्होंने शहादत पाई और एक चादर के सिवा और कोई चीज़ उन्होंने नहीं छोड़ी। उस चादर से (कफ़न देते वक़्त) जब हम उनका सर छुपाते तो पैर खुल जाते और पैर छुपाते तो सर खुल जाता था। आपने हमसे फ़र्माया कि चादर से सर छुपा दो और पैर पर इज़्रख़ घास डाल दो। या आपने यूँ फ़र्माया कि (अल्क़ौ अला रिज़्लैहि मिनल इज़्रिख़) (या) नी उनके पैरों पर इज़्रख़ घास डाल दो। दोनों जुम्लों का मतलब एक ही है और हममें कुछ वो हैं जिन्हें उनके इस अमल का फल (इसी दुनिया में) दे दिया गया और वो उससे ख़ूब फ़ायदा उठा रहे हैं।

(राजेअ: 1276)

٤٠٨٢ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ خُبَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَنَحْنُ نَسْغِي وَجْهَ اللَّهِ لَوْ جَبَّ اجْرُنَا عَلَى اللَّهِ فَمِنَّا مَنْ مَضَى أَوْ دَهَبَ لَمْ يَأْكُلْ مِنْ اجْرِهِ شَيْئًا كَانَ مِنْهُمْ مُضْعَبُ بْنُ غَمَيْرٍ قَبْلَ يَوْمِ أُحُدٍ وَلَمْ يَتْرَكْ إِلَّا نَمْرَةً كَثَا إِذَا غَطَيْنَا بِهَا رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلَاهُ وَإِذَا غَطَيْنَا بِهَا رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ، فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((غَطُّوا بِهَا رَأْسَهُ وَاحْمَلُوا عَلَى رِجْلَيْهِ الْإِذْخِرَ - أَوْ قَالَ - الْقَوَا عَلَى رِجْلَيْهِ مِنَ الْإِذْخِرِ)) وَمِنَّا مَنْ أَتَيْتُ لَهُ نَمْرَةً فَهُوَ يَهْدِيهَا.

(راجع: ١٢٧٦)

तशरीह:

फ़ायदा उठाने वाले वो मज़ाबा किराम (रज़ि.) जो बाद में अक्क़ारे-अर्ज (सत्ता) के वारिष होकर वहाँ के ताज व तख़्त के मालिक हुए और अल्लाह ने उनको दुनिया में भी ख़ूब दिया और आख़िरत में भी अजरे अज़ीम के हक़दार

हुए और जो लोग पहले ही शहीद हो गये, उनका सारा ष्वाब आखिरत के लिये जमा हुआ। दुनिया में उन्होंने इस्लामी तरक्की का दौर नहीं देखा। उन ही में हज़रत मुस्अब बिन उमैर (रज़ि.) जैसे नौजवान इस्लाम के सच्चे फ़िदाई भी थे जिनका ज़िक्र यहाँ किया गया है। ये कुरैशी नौजवान इस्लाम के अव्वलीन मुबल्लिग़ थे जो हिज़रते नबवी से पहले ही मदीना आकर इशाअते इस्लाम का अज़रे अज़ीम हासिल कर रहे थे। उनके तपस्वीली हालात बार-बार मुतालआ के क़ाबिल हैं जो किसी दूसरी जगह तपस्वील से लिखे गये हैं।

बाब 28 : इशादि नबवी (ﷺ) कि उहुद पहाड़

हमसे मुहब्बत रखता है

अब्बास बिन सहल ने रावी अबू हुमैद से नबी करीम (ﷺ) का ये इशादि रिवायत किया है।

4083. हमसे नसर बिन अली ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें कुरैह बिन ख़ालिद ने, उन्हे क़तादा ने, और उन्होंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उहुद पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है और हम उससे मुहब्बत रखते हैं।

4084. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें मुजलिब के गुलाम अम्र बिन अबी अम्र ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को (ख़ैबर से वापस होते हुए) उहुद पहाड़ दिखाई दिया तो आपने फ़र्माया, ये पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है और हम इससे मुहब्बत रखते हैं। ऐ अल्लाह! इब्राहीम (अ) ने मक्का को हर्मत वाला शहर क़रार दिया था और मैं उन दो पथरीले मैदानों के दरम्यान इलाक़े (मदीना मुनव्वरा) को हर्मत वाला शहर क़रार देता हूँ। (राजेअ : 381)

रसूल करीम (ﷺ) ने हिज़रत के बाद मदीना मुनव्वरा का अपना ऐसा वतन क़रार दे लिया था कि उसकी मुहब्बत आपके रग-रग में समा गई थी। वहाँ को हर चीज़ से मुहब्बत का होना आपका फ़ित्री तकाज़ा बन गया था। इसी बिना पर पहाड़ उहुद से भी आपको मुहब्बत थी जिसका यहाँ इज़हार फ़र्माया। वरषा में मदीना मुनव्वरा से उल्फ़त व मुहब्बत हर मुसलमान को मिली है। हदीष से मदीना मुनव्वरा का मक्का के समान हरम होना भी प्राबित हुआ। मगर कुछ लोग हर्मत मदीना के क़ाइल नहीं हैं और वो ऐसी अह्दादीष की मुख़्तलिफ़ तावील करते हैं, जो सहीह नहीं। मदीना भी अब हर मुसलमान के लिये मक्का के समान हरमे मुहतरम है। अल्लाह तआला हर मुसलमान को बार बार इस मुक़द्दस शहर में हाज़िरी की सआदत अता फ़र्माए, आमीन!

4085. मुझसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे हज़रत इब्रबा बिन आमिर (रज़ि.) ने कि

۲۸ - باب أخذ يَحْيَىٰ

قال عمار بن سهل : عن أبي حمزة عن النبي ﷺ.

۴۰۸۳ - حدثني نصر بن علي قال : أخبرني أبي عن قرة بن خالد، عن قتادة سمعت أنساً رضي الله عنه أن النبي ﷺ قال : هذا جبل يحبنا ونحبه.

۴۰۸۴ - حدثنا عبد الله بن يوسف أخبرنا مالك عن عمرو مولى المطلب عن أنس بن مالك رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ طلع له أخذ فقال : ((هذا جبل يحبنا ونحبه. اللهم إن إبراهيم حرم مكة، وإني حرمت المدينة ما بين لابتيها)). [راجع : ۳۷۱]

۴۰۸۵ - حدثنا عمرو بن خالد، حدثنا الليث عن يزيد بن أبي حبيب، عن أبي الخير عن غفّة أن النبي ﷺ خرج يوماً

نबी کریم (ﷺ) ایک دن باہر تشریف لاے اور شہد-ع-ہود پر نماز جنازہ ادا کی، جسے مودوں پر ادا کی جاتی ہے۔ پھر آپ منبر پر تشریف لاے اور فرمایا کہ میں تمہارے آگے جاؤں گا، میں تمہارے ہرک میں گواہ رہوں گا، میں اب بھی اپنے ہونے (کافر) کو دیکھ رہا ہوں۔ مجھے دنیا کے خزانوں کی کونسی آفتا فرمائی گئی ہے یا (آپ نے مجھے فرمایا) مفااتیہ ارض یا نہی زمین کی چابکیاں دی گئی ہیں۔ (دونوں جملوں کا مطلب ایک ہی ہے) اللہ کی قسم! میں تمہارے بارے میں اس سے نہیں ڈرتا کہ تم میرے بعد شریک کرنے لگو گے بلکہ مجھے اس کا ڈر ہے کہ تم دنیا کے لیے ہنس کرنے لگو گے۔ (راجہ: 381)

ریوايات میں کسی نہ کسی طرح سے وہود پھاڑ کا ذکر ہے۔ باب سے یہی وجہ متاثر ہے۔ رسول کریم (ﷺ) نے مکہ سے آنے کے بعد مدینہ منورہ کو اپنا دائمی وطن قرار دے لیا تھا اور اس شہر سے آپ کو اس قدر محبت ہو گئی تھی کہ یہاں کا ہر جہاں آپ کو محبت تھا۔ اسی محبت سے وہود پھاڑ سے بھی محبت ایک فیری چیز تھی۔ آج بھی شہر ہر مسلمان کے لیے جتنا پیارا ہے وہ ہر مسلمان جانتا ہے۔ ہدیہ سے کبستان میں جا کر دوبارہ نماز جنازہ پڑھنا بھی ثابت ہوا۔ کچھ لوگوں نے اسے آپ کے ساتھ ملا کر قرار دیا ہے۔ کچھ لوگ کہتے ہیں کہ نماز سے یہاں دُعا-ع-مفیرت مراد ہے۔ مگر جاحی ہدیہ کے الفاظ ان تاویلات کے خلاف ہیں، واللہ اعلم۔

باب 29 : رَجُلٌ-ع-رَجُلٍ کا بیان

اور رَجُلٌ و رَجُلَانِ اور رَجُلٌ و رَجُلَانِ کے رَجُلٌ کا بیان اور رَجُلٌ اور رَجُلَانِ کا کِسْمٌ اور رَجُلٌ و رَجُلَانِ کا کِسْمٌ اور رَجُلٌ اور رَجُلَانِ کے ساتھیوں کا کِسْمٌ۔ اِسْمٌ اِسْمٌ کے بیان کیا کہ ہم سے رَجُلٌ و رَجُلَانِ نے بیان کیا کہ رَجُلٌ-ع-رَجُلٍ رَجُلٌ-ع-ہود کے بعد پش آیا۔

رَجُلٌ ایک مقام کا نام ہے۔ ہجرت کی بستیوں میں سے یہ رَجُلٌ سفر 4 ہجری میں جہاں وہود کے بعد ہوا تھا۔ رَجُلٌ و رَجُلَانِ کے درمیان ایک مقام ہے۔ وہاں کباری مہاجر اور رَجُلٌ و رَجُلَانِ کبیلوں نے دھوکے سے شہید کر دیا تھا۔ رَجُلٌ اور رَجُلَانِ بھی رَجُلٌ کے دو کبیلوں کے نام ہیں۔ ان کا کِسْمٌ رَجُلٌ-ع-رَجُلٍ میں ہوا۔

4086. مجھے اسے ابراہیم بن موسیٰ نے بیان کیا، کہا ہم کو ہشام بن یوسف نے خبر دی، انہیں مہاجر بن راجد نے، انہیں جہری نے، انہیں ام بن ابی سفیان نے اور ان سے ابو ہریرہ (رَجُلٌ) نے بیان کیا کہ نبی کریم (ﷺ) نے جاسوسی کے لیے ایک جماعت (مکہ، کُریش کی خبر لانے کے لیے) بھیجی اور اس کا امیر رَجُلٌ و رَجُلَانِ کا بنایا، جو رَجُلٌ و رَجُلَانِ کا بنایا ہے۔ یہ جماعت روانہ ہوئی اور جب اسفان اور مکہ کے درمیان پہنچی تو کبیلہ ہجری

فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلَاتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمَنْبَرِ فَقَالَ: ((إِنِّي فَرَطُ لَكُمْ وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ، وَإِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَى خَوَاصِي الْأَنْ، وَإِنِّي أُعْطِيَتْ مَفَاتِيحُ خَوَاصِي الْأَرْضِ - أَوْ مَفَاتِيحُ الْأَرْضِ - وَإِنِّي وَاللَّهِ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي، وَلَكِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَفْسُوا فِيهَا)). (راجع: 371)

باب 29 - باب غَزْوَةِ الرَّجُلِ

وَرَجُلٌ، وَذَكَوَانٌ، وَبَنُو مَعُونَةَ، وَحَدِيثُ غَضَلٍ، وَالْفَارَةِ، وَعَاصِمِ بْنِ قَابَتٍ، وَخَيْبِ وَأَصْحَابِهِ قَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عُمَرَ أَنَّهَا بَعْدَ أُحُدٍ.

4086 - حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي مُثَنَّى النَّخَعِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَرِيَّةَ عَيْنَا وَأَمَرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ بْنَ قَابَتٍ وَهُوَ جَدُّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ

के एक क़बीले को जिसे बनूलहयान कहा जाता था, उनका इल्म हो गया और क़बीला के तक्रीबन सौ तीरंदाज़ों ने उनका पीछा किया और उनके निशानाते क़दम को तलाश करते हुए चले। आखिर एक ऐसी जगह पहुँचने में कामयाब हो गये जहाँ सहाबा की उस जमाअत ने पड़ाव किया था। वहाँ उन खजूरों की गुठलियाँ मिलीं जो सहाबा मदीना से लाए थे। क़बीला वालों ने कहा कि ये तो यज़्रिब की खजूर (की गुठली है) अब उन्होंने फिर तलाश शुरू की और सहाबा को पा लिया। आसिम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब ये सूरतेहाल देखी तो सहाबा की उस जमाअत ने एक टीले पर चढ़कर पनाह ली। क़बीले वालों ने वहाँ पहुँचकर टीला को अपने घेरे में ले लिया और सहाबा से कहा कि हम तुम्हें यक़ीन दिलाते हैं और अहद करते हैं कि अगर तुमने हथियार डाल दिये तो हम तुम में से किसी को भी क़त्ल नहीं करेंगे। उस पर आसिम (रज़ि.) बोले कि मैं तो किसी काफ़िर की हिफ़ाज़त व अमन में अपने को किसी सूरत में भी नहीं दे सकता। ऐ अल्लाह! हमारे साथ पेश आने वाले हालात की ख़बर अपने नबी को पहुँचा दे। चुनाँचे उन सहाबा ने उनसे क़िताल किया और आसिम अपने छः साथियों के साथ उनके तीरों से शहीद हो गये। खुबैब, ज़ैद और एक और सहाबी उनके हमलों से अभी महफूज़ थे। क़बीले वालों ने फिर हिफ़ाज़त व अमान का यक़ीन दिलाया। ये हज़रात उनकी यक़ीन देहानी पर उतर आए। फिर जब क़बीला वालों ने उन्हें पूरी तरह अपने क़ब्ज़े में ले लिया तो उनकी क़यान की तांत उतारकर उन सहाबा को उन्हीं से बाँध दिया। तीसरे सहाबी जो खुबैब और ज़ैद (रज़ि.) के साथ थे, उन्होंने कहा कि ये तुम्हारी पहली ग़द्दारी है। उन्होंने उनके साथ जाने से इंकार कर दिया। पहले तो क़बीले वालों ने उन्हें घसीटा और अपने साथ ले जाने के लिये ज़ोर लगाते रहे लेकिन जब वो किसी तरह तैयार न हुए तो उन्हें वहीं क़त्ल कर दिया और खुबैब और ज़ैद को साथ लेकर ख़ाना हुए, फिर उन्हें मक्का में लाकर बेच दिया। खुबैब (रज़ि.) को तो हारिष बिन आमिर बिन नौफ़िल के बेटों ने ख़रीद लिया क्योंकि खुबैब (रज़ि.) ने बद्र की जंग में हारिष को क़त्ल किया था। वो उनके यहाँ

لَحْطَابٍ فَاَنْطَلَقُوا حَتَّىٰ اِذَا كَانَ بَيْنَ غَسْفَانَ وَمَكَّةَ ذُكِرُوا لِغَنِيٍّ مِنْ هَذَيْلٍ يَقَالَ لَهُمْ بَنُو لَحْيَانَ فَتَبِعُوهُمْ بِقَرِيبٍ مِنْ مَّائَةِ رَاةٍ فَاقْتَصَوْا اَنْزَارَهُمْ حَتَّىٰ اَتَوْا مَرَلًا نَزْلُوهُ فَوَجَدُوا فِيْهِ نَوًى تَمْرٍ تَرَوْدُوهُ مِنَ الْمَدِيْنَةِ فَقَالُوا: هَذَا تَمْرُ يَثْرِبَ فَتَبِعُوا اَنْزَارَهُمْ حَتَّىٰ لَحِقُوهُمْ فَلَمَّا اَنْتَهَىٰ عَاصِمٌ وَاَصْحَابُهُ لِحْزَوْا اِلَى لَذَذٍ وَجَاءَ الْقَوْمُ فَاحْطَطُوا بِهِمْ فَقَالُوا: لَكُمْ اَلْعَهْدُ وَالْمِيثَاقُ اِنْ تَرَكْتُمُ الْيَمَانَا اَنْ لَا نَقْتُلَ مِنْكُمْ رَجُلًا فَقَالَ عَاصِمٌ: اَمَّا اَنَا فَلَا اَنْزَلَ فِيْ ذِمَّةِ كَافِرٍ اَللّٰهُمَّ اخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ فَقَاتَلُوهُمْ حَتَّىٰ قَتَلُوا عَاصِمًا فِيْ سَبْعَةِ نَفَرٍ بِالنَّبْلِ وَفِيْ خَيْبِ وَزَيْدٍ وَرَجُلٍ آخَرَ فَاعْطَوْهُمْ اَلْعَهْدَ وَالْمِيثَاقَ فَلَمَّا اَغْطَوْهُمْ اَلْعَهْدَ وَالْمِيثَاقَ تَرَكُوا اِلَيْهِمْ فَلَمَّا اسْتَمْكَنُوا مِنْهُمْ حَلَّوْا اَنْزَارَ لِسِيهِمْ فَرَبَطُوهُمْ بِهَا فَقَالَ الرَّجُلُ الثَّلَاثُ الَّذِيْ مِنْهُمْ: هَذَا اَوَّلُ الْغَنَرِ فَاَنَّى اِنْ يَصْنَعُوهُمْ فَخَرَّوْهُ وَغَالَجُوْهُ عَلٰى اَنْ يَصْنَعُوهُمْ فَلَمْ يَفْعَلْ فَقَتَلُوْهُ وَاَنْطَلَقُوا بِخَيْبِ وَزَيْدٍ حَتَّىٰ بَاغَوْهُمَا بِمَكَّةَ فَاَشْتَرٰى خَيْبًا بَنُو الْخَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوَّلٍ وَكَانَ خَيْبٌ هُوَ قَتَلَ الْخَارِثَ يَوْمَ بَدْرٍ فَمَكَثَ عَنْدهُمْ اَسْرًا حَتَّىٰ اِذَا اجْمَعُوا قَتَلُوْهُ اسْتَعَارَ مُوسٰى مِنْ

कुछ दिनों तक क़ैदी की हैप्रियत से रहे। जिस वक़्त उन सबका ख़ुबैब (रज़ि.) के क़त्ल पर इत्तिफ़ाक़ हो चुका तो इत्तिफ़ाक़ से उन्हीं दिनों हारिष की एक लड़की (ज़ैनब) से उन्होंने मूएज़रे नाफ़ स़ाफ़ करने के लिये उस्तरा मांगा और उन्होंने उनको उस्तरा भी दे दिया था। उनका बयान था कि मेरा लड़का मेरी ग़फ़लत में ख़ुबैब (रज़ि.) के पास चला गया। उन्होंने उसे अपनी रान पर बिठा लिया। मैंने जो उसे इस हालत में देखा तो बहुत घबराई। उन्होंने मेरी घबराहट को जान लिया, उस्तरा उनके हाथ में था। उन्होंने मुझसे कहा, क्या तुम्हें इसका ख़तरा है कि मैं इस बच्चे को क़त्ल कर दूंगा? ईशाअल्लाह! मैं हर्गिज़ ऐसा नहीं कर सकता। उनका बयान था कि ख़ुबैब (रज़ि.) से बेहतर क़ैदी मैंने कभी नहीं देखा था। मैंने उन्हें अंगूर का ख़ोशा खाते हुए देखा हालाँकि उस वक़्त मक्का में किसी तरह का फल मौजूद नहीं था जबकि वो जंजीरों में जकड़े हुए भी थे, तो वो अल्लाह की भेजी हुई रोज़ी थी। फिर हारिष के बेटे क़त्ल करने के लिये उन्हें लेकर हरम के हुदूद से बाहर गये। ख़ुबैब (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया मुझे दो रकअत नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दो (उन्होंने इजाज़त दे दी और) जब वो नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उनसे फ़र्माया कि अगर तुम ये ख़याल न करने लगते कि मैं मौत से घबरा गया हूँ तो और ज़्यादा नमाज़ पढ़ता। ख़ुबैब (रज़ि.) ही पहले वो शख़्स हैं जिनसे क़त्ल से पहले दो रकअत नमाज़ का तरीक़ा चला है। उसके बाद उन्होंने उनके लिये बददुआ की, ऐ अल्लाह! इन्हें एक एक करके हलाक कर दे और ये अशरार पढ़े, जबकि मैं मुसलमान होने की हालत में क़त्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं कि किस पहलू पर अल्लाह की राह में मुझे क़त्ल किया जाएगा। ये सब कुछ अल्लाह की राह में है और अगर वो चाहेगा तो जिस्म को एक एक कटे हुए टुकड़े में बरकत देगा। फिर उक्ब बािन हारिष ने खड़े होकर उन्हें शहीद कर दिया और कुरैश ने आसिम (रज़ि.) की लाश के लिये आदमी भेजे ताकि उनके जिस्म का कोई भी हिस्सा लाएँ जिससे उन्हें पहचाना जा सके। आसिम (रज़ि.) ने कुरैश के एक बहुत बड़े सरदार को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था लेकिन अल्लाह तआला ने भिड़ों

بغضِ نَبَاتِ الْخَارِثِ لِيَسْتَحِدَّ بِهَا
فَاعَارَتْهُ قَالَتْ : فَفَعَلْتُ عَنْ صَبِيٍّ لِي
فَدَرَجَ إِلَيْهِ حَتَّى آتَاهُ فَوَضَعَهُ عَلَى فَعْدِهِ
فَلَمَّا رَأَيْتُهُ فَرِعْتُ فَرِعَةً عَرَفْتُ ذَلِكَ مِنِّي
وَالِي يَذُو الْمَوْسَى. فَقَالَ: أَنْخَرِشْنِ أَنْ
أَقْتُلَهُ؟ مَا كُنْتُ لَأَفْعَلَ ذَلِكَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
تَعَالَى. وَكُنْتُ تَقُولُ: مَا رَأَيْتُ أَسْرًا
مَطَّ خَيْرًا مِنْ خَيْبٍ. لَقَدْ رَأَيْتُهُ بِأَكْلٍ
مِنْ قَطْفِ عَنَبٍ وَمَا بِمَكَّةَ يَوْمَئِذٍ ثَمَرَةٌ.
وَإِنَّهُ لَمَوْقُوفٌ فِي الْحَدِيدِ وَمَا كَانَ إِلَّا
رَرْقٌ رَزَقَهُ اللَّهُ. فَخَرَجُوا بِهِ مِنَ الْخُرُمِ
لِيَقْتُلُوهُ فَقَالَ: دَعُونِي أَصْلِي رُكْعَتَيْنِ.
ثُمَّ أَنْصَرَفَ إِلَيْهِنَّ فَقَالَ: لَوْ لَا أَنْ تَرَوْا
أَنْ مَا بِي جَزَعٌ مِنَ الْمَوْتِ لَرُدَّتْ فَكَانَ
أَوَّلُ مَنْ سَنَّ الرُّكْعَتَيْنِ عِنْدَ الْقَتْلِ هُوَ.
ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ اخْصِمْهُمُ عِدَدًا ثُمَّ قَالَ:
مَا أَنَا فِي حِينٍ أَقْتُلُ مُسْلِمًا
عَلَى أَيْ شَيْءٍ كَانَ اللَّهُ مُصْطَرِعِي
وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الْإِلَهِ وَإِنْ يَشَأْ
يُبَارِكْ عَلَى أَوْصَالِ شُلُو مُصْرَعٍ
ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ غُبَّةُ بَنِي الْخَارِثِ لِيَقْتُلَهُ.
وَبَعَثَتْ قُرَيْشٌ إِلَى عَاصِمٍ لِيُؤْتُوا بِشَيْءٍ
مِنْ جَسَدِهِ يَغْرُقُونَهُ وَكَانَ عَاصِمٌ قَتَلَ
عَظِيمًا مِنْ عَظْمَانِهِمْ يَوْمَ بَدْرٍ فَبَعَثَ اللَّهُ
عَلَيْهِ بَنِي الظَّلَّةِ مِنَ الذَّنَرِ. فَحَمَلَتْهُ مِنْ
رَأْسِهِمْ فَلَمْ يَقْدِرُوا مِنْهُ عَلَى شَيْءٍ.

की एक फौज को बादल की तरह उनके ऊपर भेजा और उन भिड़ों ने उनकी लाश को कुरैश के आदमियों से महफूज रखा और कुरैश के भेजे हुए ये लोग (उनके पास न फटक सके) कुछ न कर सके।

(राजेअ: 3045)

4087. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन डययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर से सुना कि खुबैब (रज़ि.) को अबू सलूआ (इब्ना बिन हारिष) ने क़त्ल किया था।

4088. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अजीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सत्तर सहाबा की एक जमाअत तब्लीग़े इस्लाम के लिये भेजी थी। उन्हें क़ारी कहा जाता था। रास्ते में बनू सुलैम के दो क़बीले रअल और ज़क्वान ने एक कुँए के क़रीब उनके साथ मुजाहमत की। ये कुँआ बीरे मऊना के नाम से मशहूर था। सहाबा ने उनसे कहा कि अल्लाह की क़सम! हम तुम्हारे इज़लाफ़ यहाँ लड़ने नहीं आए हैं बल्कि हमें तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से एक ज़रूरत पर मामूर किया गया है लेकिन कुफ़्रार के उन क़बीलों ने तमाम सहाबा को शहीद कर दिया। इस वाकिये के बाद हुज़ूर (ﷺ) सुबह की नमाज़ में उनके लिये एक महीना तक बद्दुआ करते रहे। उसी दिन से दुआ-ए-कुनूत की इब्तिदा हुई, वरना इससे पहले हम दुआ-ए-कुनूत नहीं पढ़ा करते थे और अब्दुल अजीज़ बिन सुहैब ने बयान किया कि एक साहब (आसिम अहवल) ने अनस (रज़ि.) से दुआ-ए-कुनूत के बारे में पूछा कि ये दुआ रुकूअ के बाद पढ़ी जाएगी या क़िराते कुआन से फ़ारिग़ होने के बाद? (रुकूअ से पहले) अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नहीं बल्कि क़िराते कुआन से फ़ारिग़ होने के बाद। (रुकूअ से पहले)। (राजेअ: 1001)

तस्रीह: आँहज़रत (ﷺ) ने उन सत्तर क़ारियों को इसलिये भेजा था कि क़बाईले रअल और ज़क्वान और इस्रीया और बनू लहयान के लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) के पास आकर कहा था कि हम मुसलमान हो गये हैं, हमारी मदद के लिये कुछ मुसलमान भेजिए। ये भी मरवी है कि अबू बराअ आमिर बिन मालिक नामी एक शख्स आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आया और कहने लगा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप चन्द मुसलमानों को नज्द की तरफ़ भेज दें तो मुझे उम्मीद है कि नज्द

٤٠٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ يَقُولُ: الَّذِي قُتِلَ خُبَيْبًا هُوَ أَبُو سُرُوْعَةَ.

٤٠٨٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا الْوَارِثُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيْرِ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعِينَ رَجُلًا لِحَاجَةِ يُقَالُ لَهُمْ: الْقُرَاءَةُ، فَمَرَضَ لَهُمْ حَبَانٌ مِنْ نَبِيٍّ سَلَّمَ رِغْلٌ وَذَكَوَاتٌ عِنْدَ بَنِي يُقَالُ لَهُمْ: بَنُو مَعُونَةَ فَقَالَ الْقَوْمُ: وَاللَّهِ مَا إِلَاكُمْ أَوْدُنَا إِنَّمَا نَحْنُ مُجْتَازُونَ فِي حَاجَةِ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَتَلُوهُمْ فَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ شَهْرًا فِي صَلَاةِ الْقَدَاةِ وَذَلِكَ بَدْءُ الْقَنُوتِ، وَمَا كُنَّا نَقْنُتُ. قَالَ عَبْدُ الْغَزِيْرِ: وَسَأَلْتُ رَجُلًا أَنَا عَنْ الْقَنُوتِ أَبْعَدَ الرُّكُوعِ أَوْ عِنْدَ فَرَاغٍ مِنَ الْقَرَاءَةِ؟ قَالَ: لَا بَلْ عِنْدَ فَرَاغٍ مِنَ الْقَرَاءَةِ.

[راجع: ١٠٠١]

वाले मुसलमान हो जाएँगे। आपने फर्माया मैं डरता हूँ नज्द वाले उनको हलाक न कर दें। वो शख्स कहने लगा कि मैं उन लोगों को अपनी पनाह में रखूँगा। उस वक़्त आपने ये सत्तर सहाबी रवाना किये। सिर्फ़ एक सहाबी क़अब बिन ज़ैद (रज़ि.) ज़ख्मी होकर बच निकले थे। जिन्होंने मदीना आकर ख़बर दी थी।

4089. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रकूअ के बाद एक महीना तक कुनूत पढ़ी जिसमें आप अरब के चन्द क़बाईल (रअल और ज़क्वान वग़ैरह) के लिये बददुआ करते थे। (राजेअ : 1001)

फ़क़हा की इस्तिलाह में इस किस्म की कुनूत को कुनूते नाज़ला कहा गया है और ऐसे मौक़ों पर कुनूते नाज़ला आज भी पढ़ना मस्नून है। मगर स़द अफ़सोस कि मुसलमान बहुत सी परेशानियों के बावजूद कुनूते नाज़ला से ग़ाफ़िल हैं।

4090. मुअज़से अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी डरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रअल, ज़क्वान, इस़ैया और बनू लहयान ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने दुश्मनों के मुक़ाबिल मदद चाही, औ हज़रत (ﷺ) ने सत्तर अंसारी सहाबा को उनकी कुमुक के लिये रवाना किया। हम उन हज़रात को क़ारी कहा करते थे। अपनी ज़िन्दगी में मआश के लिए दिन में लकड़ियाँ जमा करते थे और रात में नमाज़ पढ़ा करते थे। जब ये हज़रात बीरे मरूना पर पहुँचे तो उन क़बीले वालों ने उन्हें धोखा दिया और उन्हें शहीद कर दिया। जब हुज़ूर (ﷺ) को उसकी ख़बर मिली तो आपने सुबह की नमाज़ में एक महीने तक बददुआ की। अरब के उन्हीं चन्द क़बीले रअल, ज़क्वान, इस़ैया और बनू लहयान के लिये। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उन सहाबा के बारे में कुआन में (आयत नाज़िल हुई और) हम उसकी तिलावत करते थे। फिर वो आयत मन्सूख़ हो गई (आयत का तर्जुमा) हमारी तरफ़ से हमारी क़ौम (मुसलमानों) को ख़बर पहुँचा दो कि हम अपने रब के पास आ गये हैं। हमारा रब हमसे राज़ी है और हमें भी (अपनी नेअमतों से) उसने खुश रखा है, और क़तादा से रिवायत है उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक महीने तक सुबह की नमाज़ में, अरब के चन्द क़बाईल रअल, ज़क्वान, इस़ैया और बनू लहयान के लिये बददुआ की थी। ख़लीफ़ा बिन ख़यात (इमाम बुखारी के शैख़ ने) ये इज़ाफ़ा किया कि हमसे

٤٠٨٩ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَتَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ شَهْرًا يَغْذِرُ الرُّكُوعَ يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءِ مِنَ الْعَرَبِ، وَذُكُوانَ، وَغَصِيَّةَ، وَتَيْبَةَ لَحْيَانَ، [راجع: ١٠٠١]

٤٠٩٠ - حَدَّثَنِي عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ حَمَادٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رِغْلًا، وَذُكُوانَ، وَغَصِيَّةَ، وَتَيْبَةَ لَحْيَانَ، اسْتَمَدُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى عَدُوِّ قَوْمِهِمْ بَسِيعِينَ مِنَ الْأَنْصَارِ كُنَّا نُسَمِّيهِمُ الْقُرَاءَ فِي زَمَانِهِمْ كَانُوا يَخْطُبُونَ بِالنَّهَارِ، وَيُصَلُّونَ بِاللَّيْلِ، خَتَّى كَانُوا يَبْغِرُ مَقُونَةَ قَتْلَوْهُمْ وَغَدَرُوا بِهِمْ، فَلَبِغَ النَّبِيُّ ﷺ ذَلِكَ فَقَتَّ شَهْرًا يَدْعُو فِي الصُّبْحِ عَلَى أَحْيَاءِ مِنَ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ عَلَى رِغْلٍ، وَذُكُوانَ، وَغَصِيَّةَ، وَتَيْبَةَ لَحْيَانَ، قَالَ أَنَسٌ : فَمَرَّاتًا فِيهِمْ قُرَّانًا ثُمَّ إِنَّ ذَلِكَ رُفِعَ بَلَّغُوا عَنَّا قَوْمَنَا أَنَا لَقِينَا رَمْنَا فَرَضِي عَنَّا وَأَرْضَانَا. وَعَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ حَدَّثَنَا أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ قَتَّ شَهْرًا فِي صَلَاةِ الصُّبْحِ يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءِ مِنَ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ عَلَى رِغْلٍ، وَذُكُوانَ، وَغَصِيَّةَ، وَتَيْبَةَ

यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि हमसे अनस (रज़ि.) ने ये सत्तर सहाबा क़बीला अन्सार से थे और उन्हें बरि मरूना के पास शहीद कर दिया गया था।

(राजेअ : 1001)

इस हदीष में नस्खे-करअना से मुराद किताबुल्लाह है, जैसा कि अब्दुल आला की रिवायत में है। (उन क़ारियों की एक ख़ास सिफ़त ये बयान की गई कि ये हज़रात दिन में रिज़के इलाक़ के लिये लकड़ियाँ बेचा करते थे। आज के क़ारियों जैसे न थे जो फ़त्रे क़िरात को पेट भरने का ज़रिया बनाए हुए हैं और जगह जगह क़िरात पढ़ पढ़कर माँगने के लिये हाथ फैलाते रहते हैं। इल्ला माशाअल्लाह

4091. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके मामू, उम्मे सुलैम (अनस की वालिदा) के भाई को भी उन सत्तर सवारों के साथ भेजा था। उसकी वजह ये हुई थी कि मुश्रिकों के सरदार आमिर बिन तुफैल ने हुजुरे अकरम (ﷺ) के सामने (शरात और तकब्बुर की राह से) तीन सूरतें रखी थीं। उसने कहा कि या तो ये कीजिए कि देहाती आबादी पर आपकी हुकूमत हो और शहरी आबादी पर मेरी हो या फिर मुझे आपका जानशीन मुक़रर किया जाए वरना फिर मैं हज़ारों ग़तफ़ानियों को लेकर आप पर चढ़ाई करूँगा। (इस पर हुजूर (ﷺ) ने उसके लिये बददुआ की) और उम्मे फ़लाँ के घर में वो मर्जे त़ाऊन (प्लेग) में गिरफ़्तार हुआ। कहने लगा कि इस फ़लाँ की औरत के घर के जवान ऊँट की तरह मुझे भी ग़दूद निकल आया है। मेरा घोड़ा लाओ। चुनौचे वो अपने घोड़े की पीठ पर ही मर गया। बहरहाल उम्मे सुलैम के भाई हराम बिन मिल्हान एक और सहाबी जो लंगड़े थे और तीसरे सहाबी जिनका ता'ल्लुक बनी फ़लाँ से था, आगे बढ़े। हराम ने (अपने दोनों साथियों से बनू आमिर तक पहुँचकर पहले ही) कह दिया कि तुम दोनों मेरे करीब ही कहीं रहना। मैं उनके पास पहले जाता हूँ अगर उन्होंने मुझे अमन दे दिया तो तुम लोग करीब ही हो और अगर मुझे उन्होंने क़त्ल कर दिया तो आप हज़रात अपने साथियों के पास चले जाएँ। चुनौचे क़बीला में पहुँचकर उन्होंने उनसे कहा, क्या तुम मुझे अमान देते हो कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का पैग़ाम तुम्हें पहुँचा दूँ? फिर वो हुजूर

لِحَنان. زَادَ خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا ابْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ أُولَئِكَ السَّبْعِينَ مِنَ الْأَنْصَارِ قِيلُوا بَيْنَ مَرْوَةَ قُرَأْنَا كِتَابًا نَحْوَهُ.

[راجع : 1001]

4091 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، قَالَ : حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ خَالَاهُ أَخَاهُ لَأَمِّ سَلِيمٍ فِي سَبْعِينَ رَاكِبًا، وَكَانَ زَيْنُ الْمُشْرِكِينَ عَامِرُ بْنُ الطَّفِيلِ خَيْرَ تَيْنِ ثَلَاثِ خِصَالٍ، فَقَالَ : يَكُونُ لَكَ أَهْلُ السَّهْلِ وَلِي أَهْلُ الْمَدِينَةِ، أَوْ أَكُونُ خَلِيفَتَكَ أَوْ أَغْزُوكَ بِأَهْلِ غَطَفَانَ بِالْفِ وَالْفِ فَطَمَنَ عَامِرٌ فِي بَيْتِ أُمِّ فَلَانٍ فَقَالَ : غَدَاً كَفَدَةُ الْبَكْرِ فِي بَيْتِ أُمِّ أَمْرَأَةٍ مِنْ آلِ فَلَانٍ، أَتُونِي بِفَرَسِي فَمَاتَ عَلَى ظَهْرِ فَرَسِهِ فَانْطَلَقَ حَرَامٌ أَخُو أُمِّ سَلِيمٍ وَهُوَ رَجُلٌ أَغْرَجٌ، وَرَجُلٌ مِنْ بَنِي فَلَانٍ قَالَ : كُونَا قَرِيبًا حَتَّى آتِيَهُمْ فَإِنْ آمَنُونِي كُنْتُمْ قَرِيبًا، وَإِنْ قَتَلُونِي آتَيْتُمْ أَصْحَابَكُمْ، فَقَالَ : أَتُؤْمِنُونِي أَبْلَغَ رِسَالَةٍ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجَعَلَ يُحَدِّثُهُمْ وَأَوْفَرُوا إِلَى رَجُلٍ فَاتَاهُ مِنْ خَلْفِهِ فَطَمَنَهُ. قَالَ

(ﷺ) का पैग़ाम उन्हें पहुँचाने लगे तो क़बीला वालों ने एक शख्स को इशारा किया और उसने पीछे से आकर उन पर नेज़ा से वार किया। हम्माम ने बयान किया, मेरा ख़याल है कि नेज़ा आर-पार हो गया था। हुराम की जुबान से उस वक़्त निकला, अल्लाहु अक़बर, क़अबा के रब की क़सम! मैंने तो अपनी मुराद हासिल कर ली। उसके बाद उनमें से एक सहाबी को भी मुश्किनी ने पकड़ लिया (जो हुराम रज़ि. के साथ थे और उन्हें भी शहीद कर दिया) फिर इस मुहिम के तमाम सहाबा को शहीद कर दिया। सिर्फ़ एक लंगड़े सहाबी बच निकलने में कामयाब हो गये वो पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये थे। उन शुहदा की शान में अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फ़र्माई, बाद में वो आयत मन्सूख हो गई (आयत ये थी) अना क़द लक़ीना रब्बना फ़रज़िया अन्ना व अरज़ाना औहज़रत (ﷺ) ने उन क़बाईल रअल, ज़ख़वान, इम़ैया और बनूलहयान के लिये जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की थी तीस दिन तक सुबह की नमाज़ में बददुआ की। (राजेअ: 1001)

उन क़बाईल का जुर्म इतना संगीन था कि उनके लिये बददुआ करना ज़रूरी था। अल्लाह तआला ने अपने रसूल की बददुआ कुबूल की और ये क़बीले तबाह हो गये। इल्ला माशाअल्लाह

4092. मुझसे हब्बान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उनको मअमर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे सुमामा बिन अब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना वो बयान करते थे कि जब हुराम बिन मिल्हान को जो उनके मामू थे बीरे मज़ना के मौक़े पर ज़ख़मी किया गया तो ज़ख़म को हाथ में लेकर उन्होंने यूँ अपने घेहरा और सर पर लगा लिया और कहा, का'बा के रब की क़सम! मेरी मुराद हासिल हो गई।

(राजेअ: 1001)

هَمَّامٌ : أَخْبَبَهُ حَتَّى انْفَذَهُ بِالرُّمَحِ. قَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ فَرَزْتُ وَرَبَّ الْكَعْبَةِ. فَلَحَقَ الرَّجُلُ فَقَبِلُوا كُلَّهُمْ غَيْرَ الْأَعْرَجِ. كَانَ فِي رَأْسِ جَبَلٍ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْنَا نَمْرَ كَانَ مِنَ الْمَنْسُوعِ إِنَّا قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِي عَنَّا وَأَرْضَانَا قَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ ثَلَاثِينَ صَبَاحًا عَلَى رِجْلِ. وَذُكُورًا. وَبَنِي لِحْيَانٍ. وَغَضَبَةُ الَّذِينَ غَضَوْنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: 1001]

4092 - حَدَّثَنِي حَبَّانٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ قَالَ : حَدَّثَنِي سُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَنَسٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : لَمَّا طَعِنَ خَرَامٌ بْنُ مِلْحَانَ وَكَانَ خَالَهُ يَوْمَ بَرٍّ مَقُونَةَ قَالَ : بِالَّذِمِّ هَكَذَا. فَضَحَّحَهُ عَلَى وَجْهِهِ وَرَأْسِهِ ثُمَّ قَالَ : فَرَزْتُ وَرَبَّ الْكَعْبَةِ.

[راجع: 1001]

तर्गीह: एक हक्कीक़ी मोमिन की दिली मुराद यही होती है कि वो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान कुर्बान कर सके। अगर ये ज़ब्बा नहीं तो ईमान की ख़ैर मनानी चाहिये। हज़रत हुराम बिन मिल्हान (रज़ि.) ने शहादत के वक़्त इस हक्कीक़त का इज़हार फ़र्माया। इशादि बारी है इन्नल्लाह शतरा मिनल् मोमिनीन अन्फुसहुम व अम्वालहुम बि अन्न लहुमुल् जन्ना (अत् तौबा: 111) बेशक अल्लाह तआला ईमानवालों से उनकी जानों और मालों के बदले जन्नत का सौदा कर चुका है।

4093. हमसे अबूदुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबूउसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इव्वाने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मक्का में मुशिक लोग अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) को सख्त तकलीफ़ देने लगे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) से अबूबक्र (रज़ि.) ने भी इजाज़त चाही। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अभी यहीं ठहरे रहो। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या आप भी (अल्लाह तआला से) अपने लिये हिजरत की इजाज़त के उम्मीदवार हैं? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ मुझे उसकी उम्मीद है। आइशा (रज़ि.) कहती हैं कि फिर अबूबक्र (रज़ि.) इंतज़ार करने लगे। आख़िर हुज़ूर (ﷺ) एक दिन जुहर के वक़्त (हमारे घर) तशरीफ़ लाए और अबूबक्र (रज़ि.) को पुकारा और फ़र्माया कि तख़िलिया कर लो। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि सिर्फ़ मेरी दोनों लड़कियाँ यहाँ मौजूद हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया तुमको मा'लूम है मुझे भी हिजरत की इजाज़त दे दी गई है। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या मुझे भी साथ चलने की सआदत हासिल होगी? आपने फ़र्माया कि हाँ तुम भी मेरे साथ चलोगे। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे पास दो कैटनियाँ हैं और मैंने उन्हें हिजरत ही की निव्यत से तैयार कर रखा है। चुनौचे उन्होंने एक कैटनी जिसका नाम अल्जदआ था हुज़ूर (ﷺ) को दे दी। दोनों बुजुर्ग सवार होकर ख़ाना हुए और ये ग़ारे और पहाड़ी का था उसमें जाकर दोनों पोशीदा हो गये। आमिर बिन फुहेरा जो अब्दुल्लाह बिन तुफ़ेल बिन सख़बरा, आइशा (रज़ि.) के वालिदा की तरफ़ से भाई थे, अबूबक्र (रज़ि.) की एक दूध देने वाली कैटनी थी तो आमिर बिन फुहेरा सुबह व शाम (आम मवेशियों के साथ) उसे चराने ले जाते और रात के आख़िरी हिस्से में हुज़ूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) के पास आते थे। (ग़ारे और मे उन हज़रात की ख़ुराक उसी का दूध थी) और फिर उसे चराने के लिये लेकर ख़ाना हो जाते। इस तरह कोई चरवाहा उस पर आगाहन हो सका। फिर जब हुज़ूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ग़ार से निकलकर ख़ाना हुए तो पीछे पीछे आमिर बिन फुहेरा भी पहुँचे थे आख़िर दोनों हज़रात मदीना पहुँच गये। बरि मरूना के हादशा में

٤٠٩٣ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ اسْتَأْذَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ فِي الْخُرُوجِ حِينَ اسْتَدْعَاهُ عَلَيْهِ الْأَذَى فَقَالَ لَهُ: أَقِمَّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ انْطَبَحَ ابْنُ يَزِيدَ لَكَ، فَكَانَ يَقُولُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنِّي لَا رَجُو دَلِكُ)) قَالَتْ: فَانْظُرْهُ أَبُو بَكْرٍ فَاتَّاهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ ظَهْرًا فَادَّاهُ فَقَالَ: ((اخْرُجْ مِنْ عِنْدِكَ)) فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّمَا هُمَا ابْنَتَايَ فَقَالَ: ((أَشْعُرْتُ أَنَّهُ قَدْ أَدْنَى فِي الْخُرُوجِ)) فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الصَّخَّةُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الصَّخَّةُ)) قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ عِنْدِي نَاقَتَانِ قَدْ كُنْتُ أَغْدِدُهُمَا لِلْخُرُوجِ فَأَغْطَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِحْدَاهُمَا وَهُيَ الْجَذْعَاءُ فَرَكِبَا فَانْطَلَقَا حَتَّى أَتَيَا الْغَارَ وَهُوَ بَنُو فِزَارِيَا فِيهِ فَكَانَ غَامِرُ بْنُ قُهَيْرَةَ غُلَامًا لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ الطُّفَيْلِ بْنِ سَحْرَةَ أَخِي عَائِشَةَ لِأُمِّهَا وَكَانَتْ لِأُمِّي بَكْرٌ مِئْخَةٌ فَكَانَ يَرُوحُ بِهَا وَيَغْدُو عَلَيْهِمْ وَيَضْحُ فَيَدْلُجُ إِلَيْهِمْ، ثُمَّ يَسْرُخُ فَلَا يَقْطُرُ مِنْ أَحَدٍ مِنَ الرِّعَاءِ فَلَمَّا

आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) भी शहीद हो गये थे। अबू उसामा से रिवायत है, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने खबर दी, उन्होंने बयान किया कि जब बीरे मऊना के ह्रादषे में क़ारी सहाबा शहीद किये गये और अमर बिन उमय्या ज़मीरी (रज़ि.) कैद किये गये तो आमिर बिन तुफ़ैल ने उनसे पूछा कि ये कौन है? उन्होंने ने एक लाश की तरफ़ इशारा किया। अमर बिन उमय्या (रज़ि.) ने उन्हें बताया कि ये आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) हैं। इस पर आमिर बिन तुफ़ैल (रज़ि.) ने कहा कि मैंने देखा कि शहीद हो जाने के बाद उनकी लाश आसमान की तरफ़ उठा ली गई। मैंने ऊपर नज़र उठाई तो लाश आसमान ज़मीन के दरम्यान लटक रही थी। फिर वो ज़मीन पर रख दी गई। उन शुहदा के बारे में नबी करीम (ﷺ) को हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह के हुक्म से बता दिया था। चुनौचे औहज़रत (ﷺ) ने उनकी शहादत की खबर सहाबा को दी और फ़र्माया कि ये तुम्हारे साथी शहीद कर दिये गये हैं और शहादत के बाद उन्होंने अपने रब के हज़ूर में अर्ज़ की कि ऐ हमारे रब! हमारे (मुसलमान) भाइयों को उसकी खबर दे दे कि हम तेरे पास पहुँचकर किस तरह खुश हैं और तू भी हमसे राज़ी है। चुनौचे अल्लाह तआला ने (कुआन मजीद के ज़रिये) मुसलमानों को उसकी खबर दे दी। इसी ह्रादषे में इब्ने अस्मा बिन मुल्लत (रज़ि.) भी शहीद हुए थे (फिर जुबैर रज़ि. के दूसरे सहाबज़ादे का नाम) मुज़िर उन्हीं के नाम पर रखा गया था। (राजेज़: 476)

خَرَجَ خَرَجَ مَعَهُمَا يُقْبَانِيهِ حَتَّى قَدِمَا
الْمَدِينَةَ فَقَتَلَ عَامِرُ بْنُ فَهَيْرَةَ يَوْمَ بَرْ
مَعُونَةَ. وَعَنْ أَبِي أَسَامَةَ قَالَ : قَالَ لِي
هشامُ بْنُ عُرْوَةَ فَأَخْبَرَنِي أَبِي قَالَ: لَمْ
يَقْتُلِ الَّذِينَ بِبَرْ مَعُونَةَ وَأَسْبَرُ عَمْرُو بْنُ
أُمِيَّةِ الضُّبَيْرِيِّ قَالَ لَهُ عَامِرُ بْنُ الطُّمَيْلِ:
مَنْ هَذَا ؟ فَأَشَارَ إِلَى قَبِيلٍ، فَقَالَ لَهُ
عَمْرُو بْنُ أُمِيَّةٍ: هَذَا عَامِرُ بْنُ فَهَيْرَةَ
فَقَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُهُ بَغْدًا قَبْلَ رُفْعِ إِلَى
السَّمَاءِ حَتَّى إِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَى السَّمَاءِ
بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْأَرْضِ، ثُمَّ وَضَعَ فَأَتَى النَّبِيَّ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَبَرَهُمْ فَنَقَّاهُمْ
فَقَالَ: ((إِنَّ أَصْحَابَكُمْ قَدْ أَصَابُوا وَإِنَّهُمْ
قَدْ سَأَلُوا رَبَّهُمْ. فَقَالُوا: رَبَّنَا أَخْبِرْ عَنَّا
أَخَوَاتَنَا بِمَا رَحِمْنَا عَمَّتْ وَرَضِيَتْ عَنَّا
فَأَخْبَرَهُمْ عَنْهُمْ)). وَأَصِيبُ يَوْمَيْلٍ فِيهِمْ
عُرْوَةُ بْنُ أَسْمَاءِ بْنِ الصَّلْتِ، فَسَمِيَ
عُرْوَةُ بِهِ وَمَنْبُزٌ بِهِ عَمْرُو سُمِّيَ بِهِ
مُنْذُرًا.

[راجع: 476]

तशरीह: इस हदीष में हिजरते नबवी का बयान है। शुरू में आपका ग़ारे ग़ौर में क़याम करना मस्लिहते इलाही के तहत था। अल्लाह तआला ने आपकी वहाँ भी कामिल हिफ़ाज़त फ़र्माई और वहाँ रिज़क भी पहुँचाया। उस मौक़े पर हज़रत आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) ने दोनों बुजुर्गों की अहम ख़िदमात अंजाम दी कि ग़ार में कैंटनी के ताज़ा-ताज़ा दूध से दोनों बुजुर्गों को सैराब रखा। हक्कीक़ी जानिबारी इसी का नाम है। यही आमिर बिन फुहैरा (रज़ि.) हैं जो सत्तर क़ारियों के क़ाफ़िले में शहीद किये गये। अल्लाह तआला ने उनकी लाश का ये इकराम किया कि वो आसमान की तरफ़ उठा ली गई फिर ज़मीन पर रख दी गई। शुहदाए किराम के ये मर्तबे हैं जो हक्कीक़ी शुहदा को मिलते हैं। सच है व ला तकूलु लिमंय्युक्तलु फी सबीलिल्लाहि अम्वातुन बल अहयाउन व ला किल्ला तशरून (अल बक़र: 154)

4094. हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, कहा हमको सुलैमान तैमी ने खबर दी, उन्हें अबू मिज्जज़ (लाहक बिन हुमैद) ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक महीने तक रुकूअ के बाद दुआ-ए-कुनूत पढ़ी। इस दुआ-ए-कुनूत में आपने रअल और ज़बवान नामी क़बीलों के लिये बददुआ की। आप फ़र्माते थे कि क़बील-ए-उमय्या ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की।

(राजेअ: 1001)

4095. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन लोगों के लिये जिन्होंने आपके मुअज़्ज़ अम्हाब (कारियों) को बीरे मज़्ज़ना में शहीद कर दिया था, तीस दिन तक सुबह की नमाज़ में बददुआ की थी। आप क़बाईले रअल, बनू लहयान, और उमय्या के लिये उन नमाज़ों में बददुआ करते थे, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी की थी। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर अल्लाह तअलाला ने अपने नबी (ﷺ) पर उन्हीं अम्हाब के बारे में जो बीरे मज़्ज़ना में शहीद कर दिये गये थे, कुआन मजीद की आयत नाज़िल की। हम उस आयत की तिलावत किया करते थे लेकिन बाद में वो आयत मन्सूख़ हो गई (इस आयत का तर्जुमा ये है) हमारी क़ौम को ख़बर पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं। हमारा रब हमसे राज़ी है और हम भी इससे राज़ी हैं।

(राजेअ: 1001)

4096. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन अहवल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से नमाज़ में कुनूत के बारे में पूछा कि कुनूत रुकूअ से पहले है या रुकूअ के बाद? उन्होंने कहा कि रुकूअ से पहले। मैंने अर्ज किया कि फ़लाँ साहब ने आप ही का नाम लेकर मुझे बताया कि कुनूत रुकूअ के बाद है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने

٤٠٩٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَنْهُ أَنَّ اللَّهَ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانَ التَّيْمِيَّ عَنْ أَبِي مِجْزَزٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَتَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا، يَذْغُو عَلَى رِغْلٍ، وَذَكَوَانٍ وَيَقُولُ ((غُصَّةُ غُصَّةِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ)).

[راجع: ١٠٠١]

٤٠٩٥ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ قَالَ دَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الَّذِينَ قَتَلُوا يَفِييَ أَصْحَابَهُ يَبْنُو مَعُونَةَ فَلَاثِينَ صَبَاحًا حِينَ يَذْغُو عَلَى رِغْلٍ وَلِحْيَانٍ، وَغُصَّةِ غُصَّةِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَنَسٌ: فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى لِنَبِيِّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الَّذِينَ قَتَلُوا أَصْحَابَ بَنِي مَعُونَةَ قُرْآنًا قَرَأْنَاهُ حَتَّى نُسَخَّ بَلَّغُوا قَوْمَنَا فَقَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيْنَا عَنَّْا وَرَضِينَا عَنْهُ.

[راجع: ١٠٠١]

٤٠٩٦ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَّاحِدِ حَدَّثَنَا غَاصِمُ الْأَحْوَلِ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ الْقَنُوتِ فِي الصَّلَاةِ، فَقَالَ: نَعَمْ. فَقُلْتُ: كَانَ قَبْلَ الرُّكُوعِ أَوْ بَعْدَهُ؟ قَالَ: قُلْتُ: قُلْتُ: فَإِنَّ فَلَانًا أَخْبَرَنِي عَنْكَ أَنَّكَ

कहा कि उन्होंने ग़लत कहा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ के बाद सिर्फ़ एक महीने तक कुनूत पढ़ी। आपने सहाबा (रज़ि.) की एक जमाअत को जो कारियों के नाम से मशहूर थी और जो सत्तर की ता'दाद में थे, मुश्रीकीन के कुछ क़बीलों के यहाँ भेजा था। मुश्रीकीन के उन क़बीलों ने हुजूर अकरम (ﷺ) को उन सहाबा के बारे में पहले हिफ़ज़ व अमान का यक़ीन दिलाया था लेकिन बाद में ये लोग सहाबा (रज़ि.) की उस जमाअत पर ग़ालिब आ गये (और ग़दारी की और उन्हें शहीद कर दिया) रसूले करीम (ﷺ) ने उसी मौक़े पर रुकूअ के बाद एक महीने तक कुनूत पढ़ी थी और उसमें उन मुश्रीकीन के लिये बददुआ की थी।

(राजेअ : 1001)

तशरीह : इस हादसे में एक शख्स आमिर बिन तुफ़ैल का बड़ा हाथ था। पहले उसने बन्ू आमिर क़बीले को मुसलमानों के खिलाफ़ भड़काया। उन्होंने उन मुसलमानों से लड़ना मंज़ूर न किया, फिर उस मर्दूद ने रज़ल और इसय्या और ज़क्वान को बन्ू सुलेम के क़बीले में से था, बहकाया हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) से और बन्ू सुलेम से अहद था मगर आमिर के कहने से उन लोगों ने अहदशिकनी की और कारियों को नाहक़ मार डाला। कुछ ने कहा आँहज़रत (ﷺ) और बन्ू आमिर से अहद था। जब आमिर बिन तुफ़ैल ने बन्ू आमिर को उन मुसलमानों से लड़ने के लिये बुलाया तो उन्होंने अहद शिकनी मंज़ूर न की। आख़िर उसने रज़ल और इसय्या और ज़क्वान के क़बीलों को भड़काया जिनसे अहद न था उन्होंने आमिर के बहकाने से उनको क़त्ल किया।

बाब 30 : ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ का बयान जिसका दूसरा नाम ग़ज़्व-ए-अहज़ाब है। मूसा बिन इक्बा ने कहा कि ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ शव्वाल 4 हिजरी में हुआ था

तशरीह : अहज़ाब हिज्ज की जमा है। हिज्ज गिरोह को कहते हैं। इस जंग में अबू सुफ़यान अरब के बहुत से गिरोहों को बहकाकर मुसलमानों पर चढ़ा लाया था इसलिये उसका नाम जंगे अहज़ाब हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने सलमान फ़ारसी (रज़ि.) की राय से मदीना के चारों ओर ख़ंदक़ खुदवाई। उसके खोदने में आप बज़ाते खास भी शरीक रहे। काफ़िरों का लश्कर दस हज़ार का था और मुसलमान कुल तीन हज़ार थे। बीस दिन तक काफ़िर मुसलमानों को घेरे रहे। आख़िर अल्लाह तआला ने उन पर आँधी भेजी, वो भाग खड़े हुए। अबू सुफ़यान को नदामत हुई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अब से काफ़िर हम पर चढ़ाई नहीं करेंगे बल्कि हम ही उन पर चढ़ाई करेंगे। फ़त्हुल बारी में है कि जंगे ख़ंदक़ 5 हिजरी में हुई। 4 हिजरी एक और हिसाब से है जिनकी तफ़्सील फ़त्हुल बारी में देखी जा सकती है।

4097. हमसे यअज़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अबूदुल्लाह इमरी ने, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने अपने आपको उन्होंने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर पेश किया, (ताकि लड़ने वालों में उन्हें भी भर्ती कर

قُلْتُ بَعْدَهُ؟ قَالَ: كَذَبَ إِنَّمَا قَتَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا، أَنَّهُ كَانَ بَعَثَ نَاسًا يَقَالُ لَهُمُ الْقُرَاءُ، وَهُمْ سَبْعُونَ رَجُلًا إِلَى نَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَبَيْنَهُمْ وَبَيْنَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَهْدٌ قَبْلَهُمْ فَظَهَرَ هَؤُلَاءِ الْبَيْنَ كَانَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَهْدٌ فَقَتَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا يَدْعُو عَلَيْهِمْ.

(راجع : 1001)

30- باب غَزْوَةِ الْخَنْدَقِ وَهِيَ

الْأَخْرَابِ

قَالَ مُوسَى بْنُ غَفْصَةَ: كَانَتْ فِي شَوَّالِ سَنَةِ أَرْبَعٍ

٤٠٩٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ غُبَيْدِ اللَّهِ

أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ

عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

लिया जाए) उस वक़्त वो चौदह साल के थे तो हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त नहीं दी। लेकिन ग़ज़व-ए-ख़ंदक के मौक़े पर जब उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) के सामने अपने को पेश किया तो हुज़ूर (ﷺ) ने उनको मंज़ूर फ़र्मा लिया। उस वक़्त वो पन्द्रह साल की उम्र में थे।

(राजेअ: 1264)

मा'लूम हुआ कि पन्द्रह साल की उम्र में मर्द बालिग़ तसव्वुर किया जाता है और उस पर शरई अहक़ाम पूरे तौर पर लागू हो जाते हैं।

4098. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ंदक में थे। सहाबा (रज़ि.) ख़ंदक खोद रहे थे और मिट्टी हम अपने कौंधों पर उठा उठाकर डाल रहे थे। उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! आख़िरत की ज़िन्दगी ही बस आराम की ज़िन्दगी है। पस तू अंसार और मुहाजिरीन की मफ़िरत फ़र्मा।

आपने अंसार और मुहाजिरीन की मौजूदा तकलीफ़ों को देखा तो उनकी तसल्ली के लिये फ़र्माया कि असल आराम आख़िरत है। दुनिया की तकलीफ़ पर सब्र करना मोमिन के लिये ज़रूरी है। जंगे ख़ंदक सख़्त तकलीफ़ के ज़माने में सामने आई थी।

4099. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ फ़ुज़ारी ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने, उन्होंने ने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ंदक की तरफ़ तशरीफ़ ले गये। आपने मुलाहिज़ा फ़र्माया कि मुहाजिरीन और अंसार सर्दियों में सुबह सवेरे ही ख़ंदक खोद रहे हैं। उनके पास गुलाम नहीं थे कि उनके बजाय वो उस काम को अंजाम देते। जब हुज़ूर (ﷺ) ने उनकी इस मशक़त और भूख को देखा तो दुआ की।

ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी तो बस आख़िरत ही की ज़िन्दगी है। पस अंसार और मुहाजिरीन की मफ़िरत फ़र्मा।

सहाबा (रज़ि.) ने उसके जवाब में कहा।

हम ही हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) से जिहाद करने के लिये बेअत की है। जब तक हमारी जान में जान है।

عَرَضَهُ يَوْمَ أُحُدٍ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِ عَشْرَةَ سَنَةً فَلَمْ يُجْزَ وَعَرَضَهُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ. وَهُوَ ابْنُ حَمْسٍ عَشْرَةَ سَنَةً فَأَجَازَهُ.

[راجع: 1264]

4098 - حَدَّثَنِي قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ وَرَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي الْخَنْدَقِ وَهُمْ يَحْفَرُونَ وَنَحْنُ نَنْقُلُ التُّرَابَ عَلَى أَكْتَافِنَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:

اللَّهُمَّ لَا عَيْشَ إِلَّا عَيْشُ الْآخِرَةِ
فَاغْفِرْ لِلْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ

4099 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو. حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ سَمْعَانَ أَنَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَسُولَ جَرَحٍ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى الْخَنْدَقِ إِذَا الْمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ يَحْفَرُونَ فِي عِدَّةٍ بَارِدَةٍ فَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ غِيَّةٌ يَعْمَلُونَ ذَلِكَ لَهُمْ. فَلَمَّا رَأَى مَا بِهِمْ مِنَ النَّصَبِ وَالْجُوعِ قَالَ:

اللَّهُمَّ إِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الْآخِرَةِ
فَاغْفِرْ لِلْمُهَاجِرِينَ وَالْمُهَاجِرَةِ
فَقَالُوا: مُجِيبِينَ لَهُ:

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا
عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِيَْنَا أَبَدًا

(राजेअ : 2834)

4100. हमसे अबू मअमर अब्दुल्लाह बिन उमर अन्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, उनसे अब्दुल अजीज बिन सुहैब ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना के गिर्द मुहाजिरीन व अंसार खंदक खोदने में मसरूफ़ हो गये और मिट्टी अपनी पीठ पर उठाने लगे। उस वक़्त वो ये शेर पढ़ रहे थे।

हमने ही मुहम्मद (ﷺ) से इस्लाम पर बेअत की है जब तक हमारी जान में जान है।

उन्होंने बयान किया कि इस पर नबी करीम (ﷺ) ने दुआ की।

ऐ अल्लाह! ख़ैर तो सिर्फ़ आख़िरत ही की ख़ैर है। पस अंसार और मुहाजिरीन को तू बरकत अता फ़र्मा।

अनस ने बयान किया कि एक मुट्ठी जौ आता और उन सहाबा के लिये ऐसे रोगन (तेल) में जिसका मज़ा भी बिगड़ चुका होता मिलाकर पका दिया जाता। यही खाना उन सहाबा के सामने रख दिया जाता। सहाबा भूखे होते। ये उनके हलक़ में चिपकता और उसमें बदबू होती। गोया उस वक़्त उनकी ख़ुराक का भी ये हाल था। (राजेअ : 2834)

4101. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ऐमन हब्शी ने बयान किया कि मैं जाबिर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने बयान किया कि हम ग़ज़व-ए-खंदक के मौक़े पर खंदक खोद रहे थे कि एक बहुत सख़्त क्रिस्म की चट्टान निकली (जिस पर कुदाल और फावड़े का कोई अघर नहीं होता था, इसलिये खंदक की खुदाई में रुकावट पैदा हो गई) सहाबा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि एक चट्टान ज़ाहिर हो गई है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अंदर उतरता हूँ। चुनौचे आप खड़े हुए। उस वक़्त (भूख की शिहत की वजह से) आपका पेट पत्थर से बँधा हुआ था। तीन दिन से हमें एक दाना खाने के लिये नहीं मिला था। चट्टान (एक ही ज़र्ब में) बालू के ढेर की तरह बह गई। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह!

[راجع: 2834]

٤١٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَعَلَ الْمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ يَحْفَرُونَ الْخَنْدَقَ حَوْلَ الْمَدِينَةِ وَيَنْقُلُونَ التُّرَابَ عَلَى مُقَرَّبِهِمْ وَهُمْ يَقُولُونَ:

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا

عَلَى الْإِسْلَامِ مَا بَقِيَْنَا أَبَدًا

قَالَ: يَقُولُ النَّبِيُّ ﷺ: وَمَوْجِبُهُمْ:

اللَّهُمَّ إِنَّهُ لَا تَغَيَّرُ إِلَّا غَيْرُ الْأَعْبَرَةِ

فَبَارِكْ لِي الْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ

قَالَ: يُؤْتُونَ بِلَهٍ كَفَى مِنَ الشَّعِيرِ

فَيُصْنَعُ لَهُمْ بِإِهَالَةِ سَخِجَةٍ تُوضَعُ بَيْنَ يَدَيْ

الْقَوْمِ وَالْقَوْمُ جِيَاحٌ، وَهِيَ بَشِيعَةٌ فِي الْحَلْقِ

وَلَهَا رِيحٌ مُنْتِنٌ. [راجع: 2834]

٤١٠١- حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا

عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ:

اتَّبَعْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَقَالَ: إِنَّا

يَوْمَ الْخَنْدَقِ نَحْفَرُ فَعَرَضَتْ كَذْبَةٌ

شَدِيدَةٌ فَجَاؤُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ فَقَالُوا: هَذِهِ كَذْبَةٌ عَرَضَتْ لِي

الْخَنْدَقِ، فَقَالَ: (أَنَا نَازِلٌ)، ثُمَّ قَامَ

وَنَطَقَ مَغْصُوبٌ بِحَجَرٍ. وَلَبِثْنَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ

لَا نَذُوقُ ذَوْاقًا، فَأَخَذَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُعْفُونَ، فَضَرَبَ فَعَادَ كَثِيرًا

أَخِيلٌ أَوْ أَهِيمٌ، فَقُلْتُ: رَسُولُ اللَّهِ

أَنْدَنَ لِي إِلَى الْآيَةِ؟ فَقُلْتُ لَا مَرَأَتِي

मुझे घर जाने की इजाजत दीजिए। (घर आकर) मैंने अपनी बीवी से कहा कि आज मैंने हुजूर अकरम (ﷺ) को (फ़ाकों की बजह से) इस हालत में देखा कि सब्र न हो सका। क्या तुम्हारे पास (खाने की) कोई चीज़ है? उन्होंने बताया कि हाँ कुछ जौ हैं और एक बकरी का बच्चा। मैंने बकरी के बच्चे को जिह्म किया और मेरी बीवी ने जौ पीसे। फिर गोश्त को हमने चूल्हे पर हाँडी में रखा और मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ। आटा गूँधा जा चुका था और गोश्त चूल्हे पर पकने के करीब था। आँहज़रत (ﷺ) से मैंने अर्ज़ किया, घर खाने के लिये मुब्तल्लर खाना तैयार है। या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप अपने साथ एक दो आदमियों को लेकर तशरीफ़ ले चलें। हुजूर (ﷺ) ने पूछा कि कितना है? मैंने आपको सब कुछ बता दिया। आपने फ़र्माया कि ये तो बहुत है और निहायत इम्दा व तय्यब है। फिर आपने फ़र्माया कि अपनी बीवी से कह दो कि चूल्हे से हाँडी न उतारें और न तन्नूर से रोटी निकालें, मैं अभी आ रहा हूँ। फिर सहाबा से फ़र्माया कि सब लोग चलें। चुनाँचे तमाम अंसार और मुहाजिरीन तैयार हो गये। जब जाबिर (रज़ि.) घर पहुँचे तो अपनी बीवी से उन्होंने कहा, अब क्या होगा? रसूलुल्लाह (ﷺ) तो तमाम मुहाजिरीन व अंसार को साथ लेकर तशरीफ़ ला रहे हैं। उन्होंने पूछा, हुजूर (ﷺ) ने आपसे कुछ पूछा भी था? जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि हाँ। हुजूर (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया कि अंदर दाख़िल हो जाओ लेकिन इज़्दहाम (भीड़) न होने पाए। उसके बाद आँहज़ूर (ﷺ) रोटी का चूरा करने लगे और गोश्त उस पर डालने लगे। हाँडी और तन्नूर दोनों ढंके हुए थे। आँहज़ूर (ﷺ) ने उसे लिया और सहाबा के करीब कर दिया। फिर आपने गोश्त और रोटी निकाली। इस तरह आप बराबर रोटी चूरा करते जाते और गोश्त उसमें डालते जाते। यहाँ तक कि तमाम सहाबा का पेट भर गया और खाना बच भी गया। आख़िर में आपने (जाबिर रज़ि. की बीवी से) फ़र्माया कि अब ये खाना तुम खुद खाओ और लोगों के यहाँ हदिया में भेजो, क्योंकि लोग आजकल फ़ाका में मुब्तला हैं। (राजेअ: 3070)

رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُبْنًا. مَا كَانَ فِي ذَلِكَ صَبْرٌ فَتَذَكَّرْتُ شَيْئًا؟ قَالَتْ: عِنْدِي شَعِيرٌ وَغَنَاقٌ فَذَبَحْتُ الْغَنَاقَ وَطَخَتِ الشَّعِيرَ حَتَّى جَعَلْنَا اللَّحْمَ فِي الثَّرْمَةِ ثُمَّ جِئْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْعَجِينُ لَدَا انْكَسَرَ وَالثَّرْمَةُ بَيْنَ الْأَثَلِيَّ لَدَا كَادَتْ أَنْ تَنْصَحَ لَقُلْتُ: طَعِمْتُ لِي لَقَمٌ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَزَجَلْتُ أَوْ رَجَلَانِ فَإِنْ ((كَمْ هُوَ؟)) فَذَكَرْتُ لَهُ قَالَ: ((كَثِيرٌ طَيِّبٌ)) قَالَ: ((قُلْ لَهَا لَا تَنْزِعِ الثَّرْمَةَ وَلَا الْخُبْزَ مِنَ الثَّنُورِ حَتَّى آتِي. فَقَالَ: ((قُومُوا)) فَقَامَ الْمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ فَلَمَّا دَخَلَ عَلَى امْرَأَتِهِ فَقَالَ: وَيْحَكَ جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَمِنْ مَعَهُمْ. قَالَتْ: هَلْ سَأَلْتُ؟ فَقُلْتُ: بَعَمْ. فَقَالَ: ((ادْخُلُوا وَلَا تَصَاغَطُوا)) فَجَعَلَ يَكْسِرُ الْخُبْزَ وَيَجْعَلُ عَلَيْهِ اللَّحْمَ وَيَحْمَرُّ الثَّرْمَةَ وَالثَّنُورَ إِذَا أَخَذَ مِنْهُ وَيَقْرُبُ إِلَى أَصْحَابِهِ ثُمَّ يَنْزِعُ فَلَمْ يَزَلْ يَكْسِرُ الْخُبْزَ وَيَقْرُبُ حَتَّى شَبِعُوا وَبَقِيَ بَقِيَّةٌ. قَالَ: ((كُلِّي هَذَا وَأَهْدِي فَإِنَّ النَّاسَ أَصَابَتْهُمْ مَحَاحَةٌ))

तशरीह:

रिवायत में ग़ज़्व-ए-ख़ंदक में ख़ंदक खोदने का ज़िक्र है मगर और भी बहुत से उमूर बयान में आ गये हैं। आँहज़रत (ﷺ) के भूख की शिद्दत से पेट पर पत्थर बाँधने का भी साफ़ लफ़्ज़ों में ज़िक्र है। कुछ लोगों ने पत्थर बाँधने की तावील की है। खाने में बरकत का होना रसूले करीम (ﷺ) का मुअज़िज़ा था जिनका तो आपसे बारहा जुहूर हुआ है। (ﷺ) यही हज़रत जाबिर (रज़ि.) हैं जो अपने वालिद की शहादत के बाद क़र्ज़ ख़्वाहों का क़र्ज़ चुकाने के लिये रसूले करीम (ﷺ) से दुआओं के तालिब हुए थे। इस सिलसिले में जब आप घर तशरीफ़ लाए और वापस जाने लगे तो जाबिर (ﷺ) के मना करने के बावजूद उनकी बीवी ने दरख़्वास्त की थी कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे लिये और मेरे शौहर के लिये दुआ-ए ख़ैर कर जाइये। आपने दोनों के लिये दुआ की थी और उस औरत ने कहा था कि आप हमारे घर में तशरीफ़ लाएँ और और ये क्यूँकर मुम्किन है कि हम आपसे दुआ के तालिब भी न हों। (फ़तह)

4102. मुझसे अम्म बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम जिहाक बिन मुखलद ने बयान किया, कहा हमको हंज़ला बिन अबी सुफ़यान ने ख़बर दी, कहा हमको सईद बिन मीना ने ख़बर दी, कहा मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब ख़ंदक खोदी जा रही थी तो मैंने मा'लूम किया कि नबी करीम (ﷺ) इतिहाई भूख में मुब्तला हैं। मैं फ़ौरन अपनी बीवी के पास आया और कहा, क्या तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है? मेरा ख़याल है कि हुज़ूर अकरम (ﷺ) इतिहाई भूखे हैं। मेरी बीवी एक थैला निकाल कर लाई जिसमें एक झाड़ जौ थे। घर में हमारा एक बकरी का बच्चा भी बँधा हुआ था। मैंने बकरी के बच्चे को ज़िन्ह किया और मेरी बीवी ने पहले ही तम्बीह कर दी थी कि हुज़ुरे अकरम (ﷺ) और आपके सहाबा के सामने मुझे शर्मिन्दा न करना। चुनाँचे मैंने हुज़ुरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपके कान में ये अज़्र किया किया रसूलुल्लाह (ﷺ)! हमने एक छोटा सा बच्चा ज़िन्ह कर लिया है और एक झाड़ जौ पीस लिये हैं जो हमारे पास थे। इसलिये आप दो एक सहाबा को साथ लेकर तशरीफ़ ले चलें। हुज़ुरे अकरम (ﷺ) ने बहुत बुलन्द आवाज़ से फ़र्माया, ऐ अहले ख़ंदक! जाबिर (रज़ि.) ने तुम्हारे लिये खाना तैयार करवाया है। बस अब सारा काम छोड़ दो और जल्दी चले चलो। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तक मैं आन जाऊँ होंडी चूल्हे पर से न उतारना और न आटे की रोटी पकानी शुरू करना। मैं अपने घर आया। इधर हुज़ुरे अकरम (ﷺ) भी सहाबा को साथ लेकर खाना हुए। मैं अपनी बीवी के पास आया तो वो मुझे बराबर बुरा-भला कहने लगीं। मैंने

4102- حَدَّثَنِي عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ أَخْبَرَنَا خُطْلُبَةُ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا حَفَرَ الْخَنْدَقَ رَأَيْتُ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خِمَصًا شَدِيدًا فَانْكَفَأْتُ إِلَى امْرَأَتِي فَقُلْتُ: هَلْ عِنْدَكَ شَيْءٌ فَأَنِي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خِمَصًا شَدِيدًا، فَاخْرَجَتْ إِلَيَّ جِرَابًا فِيهِ صَاعٌ مِنْ شَعِيرٍ وَلَنَا بَهِيمَةٌ دَاجِنٌ قَدِ بَحِثَهَا وَطَخَنَتِ الشَّعِيرَ فَفَرَّغْتُ إِلَى فَرَاغِي وَقَطَعْتُهَا فِي بَرَمَتِهَا ثُمَّ وَلَّيْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: لَا تَفْضُخْنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْ مَعَهُ، فَجِئْتُهُ فَسَازَرْتُهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَبَحْنَا بَهِيمَةً لَنَا وَطَخْنَا صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ كَانَ عِنْدَنَا فَتَعَالَ أَنْتَ وَتَفَرَّ مَعَكَ فَصَاحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((يَا أَهْلَ الْخَنْدَقِ إِنَّ حَابِرًا قَدْ صَنَعَ مَوْرًا فَحَيِّ هَلَا بِكُمْ))، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

कहा कि तुमने जो कुछ मुझसे कहा था मैंने हज़ुरे अकरम (ﷺ) के सामने अर्ज कर दिया था। आखिर मेरी बीबी ने गुँधा हुआ आटा निकाला और हज़ुर (ﷺ) ने उसमें अपने लुआबे दहन की आमेज़िश कर दी और बरकत की दुआ की। हॉडी में भी आपने लुआब की आमेज़िश कर दी और बरकत की दुआ की। उसके बाद आपने फ़र्माया कि अब रोटी पकाने वाली को बुलाओ। वो मेरे सामने रोटी पकाए और गोश्त हॉडी से निकाले लेकिन चूल्हे से हॉडी न उतारना। सहाबा की ता'दाद हज़ार के करीब थी। मैं अल्लाह तआला की क़सम खाता हूँ कि इतने ही खाने को सबने (पेट भर कर) खाया और खाना बच भी गया जब तमाम लोग वापस हो गये तो हमारी हॉडी उसी तरह उबल रही थी, जिस तरह शुरू में थी और आटे की रोटियाँ बराबर पकाई जा रही थीं।

(राजेज़: 3070)

((لَا تَزِلُّنَ بُرْمَتَكُمْ وَلَا تَغَيِّرُنَ عَجِيْنَكُمْ حَتَّىٰ أَجِيْءَ)) فَجِئْتُ وَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْدُمُ النَّاسَ حَتَّىٰ جِئْتُ امْرَأَتِي فَقَالَتْ: بَكَ وَبَكَ فَقُلْتُ لِمَ فَقُلْتُ الَّذِي قُلْتُ فَأَعْرَجْتَ لِمَ فَجِئْنَا فَبَعَثَ فِيهِ وَبَارِلًا ثُمَّ عَمِدَ إِلَىٰ بُرْمَتِنَا فَبَعَثَ وَبَارِلًا ثُمَّ قَالَ: ((ادْعِي خَازِنَةَ اللَّعِيْزِ نَبِيٍّ وَالَّذِي مِنْ بُرْمَتِكُمْ وَلَا تَزِلُّوْهَا)) وَهُمْ الْفَقَاءُ فَالْتَمَسَ بِأَلْفِهِ لَقَدْ أَكَلُوا حَتَّىٰ تَرَكُوْهُ وَانْحَرَلُوا وَإِنْ بُرْمَتَنَا لَتَبْعُ كَمَا هِيَ وَإِنْ خُجِئْنَا لَتُخْبِرُ كَمَا هِيَ.

[راجع: ٣٠٧٠]

4103. मुझसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वाने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि (आयत) जब मुश्रीकीन तुम्हारे बालाई इलाक़े से और तुम्हारे नशीबी इलाक़े से तुम पर चढ़ आए थे और जब मारे डर के आँखें चकाचाँध हो गई थीं और दिल हलक़ तक आ गये थे। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ये आयत ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ के बारे में नाज़िल हुई थी।

٤١٠٣- حَدَّثَنِي عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا إِذْ جَاءُواكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ قَالَتْ: كَانَ ذَاكَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ.

तशरीह: उस जंग के मौक़े पर मुसलमानों के पास न काफ़ी राशन था न सामाने जंग और सख़्त सर्दी का ज़माना भी था। खुद मदीना में यहूदी घात में लगे हुए थे। कुप्फ़ारे अरब एक मुत्तहिदा महाज़ (संयुक्त मोर्चे) की शक्ल में बड़ी ता'दाद में चढ़कर आए हुए थे मगर उस मौक़े पर शहर के अन्दर से मुदाफ़िअत (सुरक्षा) की गई और शहर को खंदक़ खोदकर महफूज़ किया गया। चुनौचे अल्लाह का फ़ज़ल हुआ और कुप्फ़ार अपने नापाक इरादों में कामयाब न हो सके और नाकाम वापस लौट गये और मुस्तज़िबल के लिये उनके नापाक अज़ाइम ख़ाक़ में मिल गये। इस जंग में हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बतौर जासूस कुप्फ़ार की ख़बर लेने गये थे। उन्होंने आकर बतलाया कि आँधी ने कुप्फ़ार के सारे ख़ैमे उलट दिये और उनकी हॉडियाँ भी ओंघे मुँह डाल दी हैं और वो सब भाग गये हैं।

4014. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे

٤١٠٤- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا

शुअबा बिन हज्जाज ने, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ में (ख़ंदक़ की खुदाई के वक़्त) रसूलुल्लाह (ﷺ) मिट्टी उठाकर ला रहे थे। यहाँ तक कि आपका बतन मुबारक गुबार से अट गया था। हज़ूर (ﷺ) की जुबान पर ये कलिमात जारी थे।

अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह न होता तो हमें सीधा रास्ता न मिलता। न हम मदक़ा कर सकते, न नमाज़ पढ़ते, पस तू हमारे दिलों पर सकीनत व तमानियत नाज़िल फ़र्मा और अगर हमारी कुफ़्रान से मुठभेड़ हो जाए तो हमें श्रावित क़दमी इनायत फ़र्मा। जो लोग हमारे ख़िलाफ़ खड़ आए हैं जब ये कोई फ़िल्ता चाहते हैं तो हम उनकी नहीं मानते।

अबयना अबयना (हम उनकी नहीं मानते। हम उनकी नहीं मानते) पर आपकी आवाज़ बुलन्द हो जाती।

(राजेअ: 2836)

4105. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, कहा मुझसे हुकम बिन इतैबा ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पूर्वा हवा के जरिये मेरी मदद की गई और क़ौमे आद पछुवा हवा से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ: 1035)

4106. मुझसे अहमद बिन इम्मान ने बयान किया, कहा हमसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) को मैंने देखा कि ख़ंदक़ खोदते हुए उसके अंदर से आप भी मिट्टी उठा उठाकर ला रहे हैं। आपके बतन मुबारक की खाल मिट्टी से अट गई थी। आपके (सीने से पेट तक) घने बालों (की एकलकीर) थी। मैंने खुद सुना कि हज़ूर (ﷺ) इब्ने ख़ाहा (रज़ि.) के रजज़ ये अज़आर मिट्टी उठाते हुए पढ़ रहे थे।

شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الثَّرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْقُلُ التُّرَابَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ حَتَّى أَغْمَرَ بَطْنُهُ أَوْ أَغْمَرَ بَطْنُهُ يَقُولُ:

وَاللَّهِ لَوْ لَا اللَّهُ مَا أَفْتَدَيْنَا

وَلَا نَعْدُنَا وَلَا صَلَّيْنَا

فَأَنْزَلْنَا سَكِينَةً عَلَيْنَا

وَكُنْتَ الْإِلْدَامُ إِنْ لَأَيْنَا

إِنْ الْإِلَى قَدْ نَهَوْنَا عَلَيْنَا

إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةَ آيُنَا

وَرَفَعَ بِهَا صَوْتَهُ: ((آيُنَا آيُنَا)).

[راجع: 2836]

4105 - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْحَكَمُ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نُفِصْتُ بِالصَّبَا وَأَهْلَكْتُ غَاذَ الْبَلْشُورِ)). [راجع: 1035]

4106 - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ حَدَّثَنَا شَرِيحُ بْنُ مُسْلِمَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الثَّرَاءَ يُحَدِّثُ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ الْأَخْزَابِ، وَخَدَّقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رَأْيَهُ يَنْقُلُ مِنْ تُرَابِ الْخَنْدَقِ حَتَّى وَارَى عَنِ التُّرَابِ جِلْدَةَ بَطْنِهِ وَكَانَ كَثِيرَ الشَّغْرِ، فَسَمِعْتُهُ يَرْجُزُ بِكَلِمَاتِ ابْنِ رَوَاحَةَ وَهُوَ يَنْقُلُ مِنَ التُّرَابِ يَقُولُ:

ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हमें सीधा रास्ता न मिलता, न हम मदक़ा करते न नमाज़ पढ़ते, पस हम पर तू अपनी तरफ से सकीनत नाज़िल फ़र्मा और अगर हमारा आमना सामना हो जाए तू हमें प्राबित क़दमी अता फ़र्मा। ये लोग हमारे ऊपर जुल्म से चढ़ आए हैं। जब ये हमसे कोई फ़िल्ता चाहते हैं तो हम उनकी नहीं सुनते। रावी ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) आख़िरी कलिमात को खींचकर पढ़ते थे।

اللَّهُمَّ لَوْ لَا أَنْتَ مَا مَقْتَدِينَا
وَلَا تَصَلُّنَا وَلَا صَلَّيْنَا
فَلَا نَزَلْنَا سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَلَمْ تَكُنْ الْإِقْدَامَ إِنْ لَأَيْنَا
إِنْ أَلَيْنَا قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا
وَإِنْ أَرَادُوا بَشْنَاءَ آئِنَا
قَالَ : ثُمَّ بَدَأَ صَوْتَهُ بِأَعْيُرْهَا.

तशरीह :

हज़रत मौलाना वहीदुज्जामी मस्तूम ने उन अशआर का मंज़ूम तर्जुमा (काव्यात्मक अनुवाद) किया है,

तू हिदायत गरन करता तो कहाँ मिलती नजात
कैसे पढ़ते हम नमाज़ें कैसे देते हम ज़कात
अब उतार हम पर तसल्ली ए शहे आली सिफ़ात!
पाँव जमवा दे हमारे, दे लड़ाई में प्रबात
बेसबब हम पर ये दुश्मन जुल्म से चढ़ आए हैं
जब वो बहकाएँ हमें सुनते नहीं हम उनकी बात

4107. मुझसे अब्दुलबिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुलसमद बिन अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि सबसे पहला ग़ज़वा जिसमें मैंने शिक़त की वो ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ है।

4108. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअमर बिन राशिद ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया और मअमर बिन राशिद ने बयान किया कि मुझे अब्दुल्लाह बिन ताऊस ने ख़बर दी, उनसे इकिमा बिन ख़ालिद ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हफ़सा (रज़ि.) के यहाँ गया तो उनके सर के बालों से पानी के क़त्तरे टपकर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि तुम देखती हो लोगों ने क्या किया और मुझे तो कुछ भी हुकूमत नहीं मिली। हफ़सा (रज़ि.) ने कहा कि मुसलमानों के मज्मअ में जाओ, लोग तुम्हारा इतिज़ार कर रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा मौक़े पर न पहुँचना मज़ीद फूट का सबब बन जाए।

٤١٠٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا مَا قَالَ : أَوَّلُ يَوْمٍ شَهِدْتُهُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ .

٤١٠٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ . قَالَ : وَأَخْبَرَنِي ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ عِكْرَمَةَ بْنِ خَالِبٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ : دَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ وَنَسَوْتُهَا تَنْطِفُ قُلْتُ : لَقَدْ كَانَ مِنْ أَمْرِ النَّاسِ مَا تَرَيْنَ فَلَمْ يُجْعَلْ لِي مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ فَقَالَتْ : الْحَقُّ لِأَنَّهُمْ يَسْطَرُونَكَ وَأَخْشَى أَنْ يَكُونَ لِي

आखिर हफ्सा (रज़ि.) के इस्तरार पर अब्दुल्लाह (रज़ि.) गये। फिर जब लोग वहाँ से चले गये तो मुआविया (रज़ि.) ने खुत्बा दिया और कहा कि खिलाफत के मसले पर जिसे बातचीत करनी हो वो ज़रा अपना सर तो उठाए। यक़ीनन हम इससे (इशारा इब्ने उमर रज़ि. की तरफ़ था) ज़्यादा खिलाफ़त के हक़दार हैं और उसके बाप से भी ज़्यादा। हबीब बिन मस्लमा (रज़ि.) ने इब्ने उमर (रज़ि.) से इस पर कहा कि आपने वहीं इसका जवाब क्यों नहीं दिया? अब्दुल्लाह बिन आमिर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उसी वक़्त अपनी लुंगी खोली (जवाब देने को तैयार हुआ) और इरादा कर चुका था कि उनसे कहूँ कि तुमसे ज़्यादा खिलाफ़त का हक़दार वो है जिसने तुमसे और तुम्हारे बाप से इस्लाम के लिये जंग की थी। लेकिन फिर मैं डरा कि कहीं मेरी इस बात से मुसलमानों में इख़िलाफ़ बढ़ न जाए और ख़ूँरजी न हो जाए और मेरी बात का मतलब मेरी मंशा के खिलाफ़ न लिया जाने लगे। उसके बजाय मुझे जन्नत की वो नेअमतेँ याद आ गईं जो अल्लाह तआला ने (सब्र करने वालों के लिये) जन्नत में तैयार कर रखी हैं। हबीब इब्ने अबी मुस्लिम ने कहा कि अच्छा हुआ आप महफूज़ रहे और बचा लिये गये, आफ़त में नहीं पड़े। महमूद ने अब्दुरज़ाक़ से (नस्वातुहा के बजाय लफ़ज़) नवसातुहा बयान किया। (जिसके छोटी के मा'नी हैं जो औरतें सर पर बाल गूँथते वक़्त निकालती हैं)

اٰخِيَابِك عَنْهُمْ فُرْقَةٌ، فَلَمْ تَدْعُهُ حَتَّى
ذَهَبَ لَنَا تَفَرُّقُ النَّاسِ خُطْبَ مَعَاوِيَةَ
قَالَ: مَنْ كَانَ يُرِيدُ أَنْ يَتَكَلَّمَ فِي هَذَا
الْأَمْرِ فَلْيُطْلِعْ لَنَا قُرْنَهُ فَلَنَحْنُ أَحَقُّ بِهِ مِنْهُ،
وَمِنْ أَبِيهِ قَالَ حَبِيبُ بْنُ مَسْلَمَةَ: فَهَلَا
أَحْبَنَهُ؟ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَحَلَلْتُ خَوَاتِمِي
وَهَمَمْتُ أَنْ أَقُولَ أَحَقُّ بِهَذَا الْأَمْرِ مِنْكَ
مَنْ قَاتَلَكَ وَأَبَاكَ عَلَى الْإِسْلَامِ فَخَشِيتُ
أَنْ أَقُولَ كَلِمَةً تَفَرِّقُ بَيْنَ الْجَمْعِ وَتَسْفِكُ
الدَّمَ وَيَحْمِلُ عَنِّي غَيْرُ ذَلِكَ، فَلَذَكْرْتُ مَا
أَعَدَّ اللَّهُ فِي الْجَنَّةِ قَالَ حَبِيبٌ: حَفِظْتُ
وَعَصِمْتُ. قَالَ مَحْمُودٌ: عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ
وَنُؤَسَاتِهَا.

तशरीह: हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, मुरादुहू बिज़ालिक मा वक़अ बैन अलिख्यिन व मुआवियत मिनल्लिकतालि फ़ी सिफ़फ़ीन यौम इज्तिमाइन्नासि अलल्हुकूमति बैनहुम फ़ीमा इख़तलफू फ़ीहि फ़रासलू बक्रायः सहाबति मिनल्हमैनि व गैरहुमा व तवाअदू अलल्इज्तिमाइ यन्जुरू फ़ी ज़ालिक फ़शावर इब्नु उमर उख़तहू फ़िस्तवज्जहि इलैहिम औ अदमिही फ़अशारत अलैहि बिल्लिहाक़ बिहिम ख़श्यतन अय्यशामिन गैबतिही इख़ितलाफ़ुन इला इस्तिम्यारिल्फ़ित्ति फ़लम्मा तफ़रक़न्नासु अय बअद अन इख़तलफ़ल्हक़मानि व हुव अबू मूसा अशअरी व कान मिन क़िबलि अलिख्यिन व अम्फ़बु आसिन व कान मिन क़िबलि मुआवियत (फ़ह) या'नी मुराद वो हुकूमत का झगड़ा है जो सिफ़फ़ीन के मुक़ाम पर हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बीच वाक़ेअ हुआ। इसके लिये हरमैन के बक्राया सहाबा (रज़ि.) ने बाहमी मुरासिलत करके उस कज़िये ना मरज़िया (अप्रिय झगड़े) को ख़त्म करने में कोशिश करने के लिये एक मज्लिसे शूरा को बुलाया जिसमे शिक़त के लिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपनी बहन से मश्विरा किया। बहन का मश्विरा यही हुआ कि तुमको भी इस मज्लिस में ज़रूर शरीक होना चाहिये वरना ख़तरा है कि तुम्हारी तरफ़ से लोगों में ख़्वाह मख़्वाह बदगुमानियाँ पैदा हो जाएँगी जिनका नतीजा मौजूदा फ़ित्ने के हमेशा ज़ारी रहने की सूरत में ज़ाहिर हो तो ये अच्छा न होगा। जब मज्लिसे शूरा ख़त्म हुई तो मामला दोनों तरफ़ से एक एक पंच के इतिखाब पर ख़त्म हुआ। चुनाँचे हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) हज़रत अली (रज़ि.) की तरफ़ से और हज़रत अमर बिन आस (रज़ि.) हज़रत मुआविया (रज़ि.) की तरफ़ से पंच करार पाये। बाद में वो हुआ जो मशहूर व मअरूफ़ है।

4109. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने, उनसे सुलैमान बिन सुरद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर (जब कुफ़र का लश्कर नाकाम वापस हो गया) फ़र्माया कि अब हम उनसे लड़ेंगे। आइन्दा वो हम पर चढ़कर कभी न आ सकेंगे।

बुखारी में सुलैमान बिन सुरद (रज़ि.) से सिर्फ़ एक यही हदीस मरवी है। ये उन लोगों सबसे ज़्यादा बूढ़े थे, जो हज़रत हुसैन (रज़ि.) के ख़ून का बदला लेने कूफ़ा से निकले थे। मगर ऐनुल बरदा के मुक़ाम पर ये अपने साथियों समेत मारे गये। ये 65 हिजरी का वाक़िया है। (फ़तह)

4110. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे यहाय बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल बिन यूनस ने बयान किया, उन्होंने अबू इस्हाक़ से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सुलैमान बिन सुरद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, जब अरब के क़बीले (जो ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर मदीना चढ़कर आए थे) नाकाम वापस हो गये तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब हम उनसे जंग करेंगे, वो हम पर चढ़कर न आ सकेंगे बल्कि हम ही उन पर फ़ौजक़शी किया करेंगे।

(राजेअ: 4109)

जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था, वैसा ही हुआ। उसके दूसरे साल सुलहे हुदैबिया हुई जिसमें क़ुरैश ने आपसे मुआहिदा किया फिर ख़ुद ही उसे तोड़ डाला जिसके नतीजे में फ़तहे मक्का का वाक़िया बजूद में आया। (फ़तह)

4111. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उबादा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, उनसे इब्बदा सलमानी ने और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर फ़र्माया। जिस तरह उन कुफ़र ने हमें मलाते घुस्ता (नमाज़े अस्त्र) नहीं पढ़ने दी और सूरज ग़रूब हो गया, अल्लाह तआला भी उनकी क़ब्रों और घरों को आग से भर दे। (राजेअ: 2931)

4112. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे

4109 - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ وَإِنْ أَرَادُوا فِتْنَةَ آئِنَا يَوْمَ الْأَحْزَابِ: ((نَفُوزُهُمْ وَلَا يَفُوزُونَا)).

4110 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ يَقُولُ: سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ صُرَدٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ حِينَ أَجَلَى الْأَحْزَابِ عَنْهُ: ((إِنَّا نَفُوزُهُمْ وَلَا يَفُوزُونَا نَحْنُ نَسِيرُ إِلَيْهِمْ)).

[راجع: 4109]

4111 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا زَوْجٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ غَبِيْدَةَ عَنْ عَلِيٍّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ يَوْمَ الْحُدُودِ ((مَلَأَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ بُيُوتَهُمْ وَقُبُورَهُمْ نَارًا كَمَا سَغَوْنَا عَنِ الصَّلَاةِ الْوُسْطَى)) حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ. [راجع: 2931]

4112 - حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ

हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे जाबिर (रजि.) ने कि हजरत इमर बिन खत्ताब (रजि.) ग़ज़व-ए-ख़ंदक के मौक़े पर सूरज गुरुब होने के बाद (लड़कर) वापस हुए। वो कुफ़्फ़ारे कुरैश को बुरा भला कह रहे थे। उन्होंने अज़्र किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! सूरज गुरुब होने को है और मैं अस्म की नमाज़ अब तक नहीं पढ़ सका। इस पर आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! नमाज़ तो मैं भी न पढ़ सका। आख़िर हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ वादी-ए-बत्हान में उतरे। आँहुज़ूर (ﷺ) ने नमाज़ के लिये बुज़ू किया। हमने भी बुज़ू किया, फिर अस्म की नमाज़ सूरज गुरुब होने के बाद पढ़ी और उसके बाद मरिब की नमाज़ पढ़ी। (राजेअ: 596)

4113. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान शौरी ने ख़बर दी, उनसे मुहम्मद बिन मुकदिर ने बयान किया और उन्होंने जाबिर (रजि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुफ़्फ़ार के लश्कर की ख़बरें कौन लाएगा? जुबैर (रजि.) ने अज़्र किया कि मैं तैयार हूँ। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, कुफ़्फ़ार के लश्कर की ख़बरें कौन लाएगा? इस मर्तबा भी जुबैर (रजि.) ने कहा कि मैं। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने तीसरी मर्तबा पूछा कि कुफ़्फ़ार के लश्कर की ख़बरें कौन लाएगा? जुबैर (रजि.) ने इस बार भी अपने आपको पेश किया। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी जुबैर (रजि.) हैं। (राजेअ: 2847)

4114. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुदैरह (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़र्माया करते थे, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वो अकेला है जिसने अपने लश्कर को फ़तह दी। अपने बन्दे की मदद की (या'नी हुज़ूरे अकरम ﷺ की) और अहज़ाब (या'नी अप्पवाजे कुफ़्फ़ार) को तंहा भगा दिया। पस उसके बाद कोई चीज़ उसके महे मुक़ाबिल नहीं हो सकती।

حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ جَاءَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ جَعَلَ يَسُبُّ كُفَّارَ قُرَيْشٍ وَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَا كَذَبْتُ أَنْ أَصَلِّيَ حَتَّى كَادَتِ الشَّمْسُ أَنْ تَغْرُبَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَاللَّهِ مَا صَلَّيْتُهَا)) فَزَلْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَطْحَانَ فَتَوَضَّأَ لِلصَّلَاةِ وَتَوَضَّأْنَا لَهَا فَصَلَّى الْفَصْرَ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى بَعْدَهَا الْمَغْرِبَ.

[راجع: 596]

٤١١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ ابْنِ الْمَكْدِيرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ الْأَحْزَابِ: ((مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) فَقَالَ الزُّبَيْرُ أَنَا ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) فَقَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) قَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا. ثُمَّ قَالَ: ((إِنْ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًا وَإِنْ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرِ)). [راجع: 2847]

٤١١٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ: ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ اعِزَّ جُنْدَهُ وَنَصْرَ عِبْدَهُ وَعَلَبَ الْأَحْزَابِ وَخُدْفَهُ، فَلَا شَيْءَ بَعْدَهُ)).

तशरीह :

ये वो मुबारक अल्फ़ाज़ हैं जो जंगे अहज़ाब के ख़ात्मे पर बतौर शुक्र जुबाने रिसालत मआब (ﷺ) से अदा हुए। इस बार कुफ़्फ़ारे अरब मुज़हिदा महाज़ बनाकर मदीना पर हमलावर हुए थे मगर अल्लाह तआला ने उनके नापाक इरादों को ख़ाक में मिला दिया और मुसलमानों को उनसे बाल बाल बचा लिया। अब बतौर यादगार उन अल्फ़ाज़ को पढ़ना और याद करना मोज़िबे इ़द ख़ैरो-बरकत है। ख़ास तौर पर हज़ के मक़ामात पर उनको जुबान से अदा करना हर हाजी को बहुत अज़रो-प्रवाब है। अल्लाह तआला हर मुसलमान को दुनिया में शर से महफूज़ रखे आमीन।

4115. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको फ़ुज़ारी और अब्दुह ने ख़बर दी, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अहज़ाब (अप्रवाजे कुफ़्फ़ार) के लिये (ग़ज़्व-ए-ख़ंदक के मौक़े पर) बददुआ की कि ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल करने वाले! जल्दी हिसाब लेने वाले! कुफ़्फ़ार के लश्कर को शिकस्त दे ऐ अल्लाह! उन्हें शिकस्त दे। या अल्लाह! उनकी ताक़त को मुतज़लज़ल कर दे। (राजेअ: 2933)

4116. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर और नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब ग़ज़वे, हज़ या उमरे से वापस आते तो सबसे पहले तीन मर्तबा अल्लाहु अकबर कहते। फिर यूँ फ़र्माते। अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बादशाहत उसी की है, हम्द उसी के लिये है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। (या अल्लाह!) हम वापस हो रहे हैं तौबा करते हुए और अपने रब की हम्द बयान करते हुए। अल्लाह ने अपना वा'दा सच कर दिखाया। अपने बन्दे की मदद की और कुफ़्फ़ार की फ़ौजों को उस अकेले ने शिकस्त दे दी।

(राजेअ: 1797)

तशरीह :

सच है,

नूरे ख़ुदा है कुफ़र की हरकत पे ख़ंद ज़न

बाब 31 : ग़ज़्व-ए-अहज़ाब से नबी करीम (ﷺ) का वापस लौटना और बनू कुरैज़ा पर चढ़ाई करना और उनका मुहासरा करना

4115- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا الْقُرَارِيُّ وَغَدَةُ عَنْ إسماعيل بن أبي خالد، قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : دَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى الْأَخْزَابِ فَقَالَ : ((اللَّهُمَّ مَزِلْ الْكِتَابَ، سَرِّعِ الْجَسَابَ، اهْزِمِ الْأَخْزَابَ، اللَّهُمَّ اهْزِمْنَهُمْ وَزَلِّزْلَهُمْ)). (راجع: 2933)

4116- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ بْنُ مُقَاتِلٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ وَنَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَفَلَ مِنَ الْقُرُوفِ أَوْ الْحُخِّ أَوْ الْقُمُورَةِ يَبْدَأُ فَيَكْبِرُ ثَلَاثَ مِرَارٍ ثُمَّ يَقُولُ : ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. آيُونَ تَائِبُونَ غَائِبُونَ سَاجِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ، صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَخْزَابَ وَحْدَهُ)). (راجع: 1797)

फ़ौकों से ये चिराग़ बुझाया न जाएगा।

31- باب مَرْجِعِ النَّبِيِّ ﷺ مِنَ الْأَخْزَابِ وَمَخْرَجِهِ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ وَمُحَاصَرَتِهِ إِيَّاهُمْ

4117. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमेर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ज्यों ही नबी करीम (ﷺ) जंगे खंदक से मदीना वापस हुए और हथियार उतारकर गुस्ल किया तो जिब्रईल (अलैहि.) आपके पास आए और कहा, आपने अभी हथियार उतार दिये? अल्लाह की कसम! हमने तो अभी हथियार नहीं उतारे हैं। चलिये उन पर हमला कीजिए। हुजूर (ﷺ) ने पूछा किन पर? जिब्रईल (अलैहि.) ने कहा कि उन पर और उन्होंने (यहूद के कबीले) बन्नु कुरैज़ा की तरफ इशारा किया। चुनौचे हुजुरे अकरम (ﷺ) ने बन्नु कुरैज़ा पर चढ़ाई की। (राजेअ: 463)

जंगे खंदक के दिनों में इस कबीले ने शहर के अन्दर बदअम्नी (अशान्ति) फैलाई थी और गद्दारी का पुबूत दिया था। इसलिये उन पर हमला करना ज़रूरी हुआ।

4118. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जैसे अब भी वो गर्द व गुबार में देख रहा हूँ जो जिब्रईल (अलैहि.) के साथ सवार फ़रिश्तों की वजह से कबील-ए-बन्नुगनम की गली में उठा था जब रसूलुल्लाह (ﷺ) बन्नु कुरैज़ा के खिलाफ़ चढ़कर गये थे।

4119. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्माने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्माने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज्व-ए-अहज़ाब (से फ़ारिग होकर) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम मुसलमान अस्त्र की नमाज़ बन्नु कुरैज़ा तक पहुँचने के बाद ही अदा करें। कुछ हज़रत की अस्त्र की नमाज़ का वक़्त रास्ते ही में हो गया। उनमें से कुछ सहाबा (रज़ि.) ने तो कहा कि हम रास्ते में नमाज़ नहीं पढ़ेंगे। (क्योंकि हुजूर ﷺ ने बन्नु कुरैज़ा में नमाज़े अस्त्र पढ़ने के लिये फ़र्माया है) और कुछ सहाब (रज़ि.) ने कहा कि हुजूर (ﷺ) के इश्राद का मंशा ये नहीं था। बाद में हुजूर (ﷺ) के सामने इसका तज़िकरा हुआ तो आपने किसी पर ख़फ़गी (नाराज़गी) नहीं फ़र्माई। (राजेअ: 946)

तशरीह: जब रसूले करीम (ﷺ) ग़ज्व-ए-खंदक से कामयाबी के साथ वापस हुए तो जुहर के वक़्त जिब्रईल (अलैहि.) तशरीफ़ लाकर कहने लगे कि अल्लाह तआला का हुक्म आपके लिये ये है कि आप फ़ौरन बन्नु कुरैज़ा की तरफ़ चलें। आपने हज़रत बिलाल (रज़ि.) को पुकारने के लिये हुक्म फ़र्माया कि, मन काना सामिअन मुत्तीअन फ़ला युसल्लियन्नल्

4117 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ لُثَيْمٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ : لَمَّا رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْخَنْدَقِ وَوَضَعَ السَّلَاحَ وَاقْتَسَلَ آتَاهُ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَقَالَ : لَقَدْ وَضَعْتَ السَّلَاحَ وَاللَّهُ مَا وَضَعَهُ فَأَخْرَجَ إِلَيْهِمْ . قَالَ : ((لَأَنِّي أَنَا)) قَالَ : هُنَا وَأَشَارَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ . فَمَخَّرَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْهِمْ [راجع: 463]

4118 - حَدَّثَنَا مُوسَى . حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَازِمٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى الْغُبَارِ سَاطِعًا فِي رِاقِ بْنِ غَنَمٍ مَوْكِبِ جِبْرِيلَ حِينَ سَارَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ .

4119 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الْأَحْزَابِ : ((لَا يُصَلِّيَنَّ أَحَدٌ الْعَصْرَ إِلَّا فِي بَنِي قُرَيْظَةَ)) فَادْرَكَ بَعْضُهُمُ الْعَصْرَ فِي الطَّرِيقِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ : لَا نُصَلِّي حَتَّى نَأْتِيَهَا وَقَالَ بَعْضُهُمْ : بَلْ نُصَلِّي لَمْ يَرِدْ مَا ذَكَرْ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُعْتَفَ وَاحِدًا مِنْهُمْ .

[راجع: 946]

अस्र इल्ला फ़ी बनी कुरैज़ा या'नी जो भी सुनने वाला फ़र्माबरदार मुसलमान है उसके लिये ज़रूरी है कि अस्र की नमाज़ बनी कुरैज़ा में पहुँचकर पढ़े। व क़ाल इब्नुल्कय्यिम फ़िल्हुदा मा हम्मलहू कुल्लूमिन्लफ़रीक़ैनि माज़ूरुन बिक्कसदिही इल्ला अन्न मन हाज़िलफ़ज़ीलतैनि इम्तिषाललअमि फ़िल्इस्साइ व इम्तिषाललअमि फ़िल्मुहाफ़ज़ति अललवक्ति व ला सय्यिमा मा फ़ी हाज़िहिस्मलाति बिऐनिहा मिनल्हप्पि अललमुहाफ़ज़ति अलैहा व इन्न मन फ़ातहू हबित अमलुहू व इन्नमालम यअनफ़िल्ज़ीन अख़ख़रूहा लिक्कियामि तज़िहिम फ़ित्तमस्सुकि बिज़ाहिरिल्अमि इज्तिहादुहू फ़अख़ख़रु लिइम्तिषालिहिमिल्अम्र लाकिन्नहुम लम यमिलु इला अंय्यकून इज्तिहादुहू अस्वबु मिन इज्तिहादिताइफ़तिलउख़रा (अल्ख़) व क़द इस्तदल्ला बिहिल्जुम्हूर अला अदमि ताषीमि मनिज्तिहाद लिअन्नहू (❦) लम यअनिक अहदमिन्ताइफ़तैनि फ़लौ कान हुनाक इम्पुन लअनफ़ मिन इम्पिन (फ़ह्लुबारी)

मन कान सामिअन मुतीअन फ़ला युसल्लियन्नलअस्र इल्ला फ़ी बनी कुरैज़त खुलासा ये कि आँहज़रत (❦) ने ऐलान कराया कि जो भी मुसलमान सुनने वाला और फ़र्माबरदारी करने वाला है उसका फ़र्ज़ है कि नमाज़े अस्र बन कुरैज़ा ही में पहुँचकर अदा करे। अल्लामा इब्ने कय्यिम (रह) ने ज़ादुल मआद में कहा है कि दोनों फ़रीक़ अण्णो-षवाब के हक़दार हुए। मगर जिसने वक़्त होने पर रास्ते ही में नमाज़ अदा कर ली उसने दोनों फ़ज़ीलतों को हासिल कर लिया। पहली फ़ज़ीलत नमाज़े अस्र की, उसके अब्बल वक़्त में अदा करने की क्योंकि इस नमाज़ को अपने वक़्त पर अदा करने की ख़ास ताकीद है और यहाँ तक है कि जिसकी नमाज़े अस्र फ़ौत हो गई, उसका अमल ज़ाये हो गया। इस तरह इस फ़रीक़ को अब्बल वक़्त नमाज़ पढ़ने और फिर बन कुरैज़ा पहुँच जाने का षवाब हासिल हुआ और दूसरा फ़रीक़ जिसने नमाज़े अस्र में ताख़ीर की और जाहिर फ़र्मानि रसूल पर अमल किया उन पर कोई नुक्ताचीनी नहीं की गई क्योंकि उन्होंने अपने इज्तिहाद से फ़र्मानि रिसालत पर अमल करने के लिये नमाज़ को ताख़ीर से बन कुरैज़ा ही में जाकर अदा किया। उनका इज्तिहाद पहले जमाअत से ज़्यादा षवाब के करीब रहा। इसी से जुम्हूर ने इस्तिदलाल किया है कि इज्तिहाद करने वाला गुनाहगार नहीं है। (अगर वो इज्तिहाद में ग़लती भी कर जाए।) इसलिये कि नबी करीम (❦) ने दोनों किस्म के लोगों में से किसी पर भी नुक्ताचीनी नहीं की। अगर उनमें कोई गुनाहगार करार पाता तो आँहज़रत (❦) ज़रूर उसको तम्बीह फ़र्माते। राकिमुल हरूफ़ (लेखक) कहता है कि इस बिना पर ये उलूल करार पाया कि (अल् मुज्तिहिद क़द युख़्तौ व युम्नीबु) मुज्तिहिद से ख़ता और षवाब दोनों हो सकते हैं और ख़ता पर भी गुनाहगार करार नहीं दिया जा सकता मगर जब उसको कुआन व हदीष से अपनी इज्तिहाद ग़लती की ख़बर हो जाए तो उसको इज्तिहाद का तर्क करना और किताब व सुन्नत पर अमल करना वाजिब हो जाता है। इसीलिये मुज्तिहिदीने उम्मत अहम्मा अब्रआ रहिमहुल्लाह ने वाज़ेह लफ़ज़ों में वसियत कर दी है कि हमारे इज्तिहादी फ़तावा अगर किताब व सुन्नत से किसी जगह टकराएँ तो किताब व सुन्नत को मुक़दम रखो और हमारे इज्तिहादी ग़लत फ़तावों को छोड़ दो। मगर सद अफ़सोस है कि उनके पैरोकारों ने उनकी उसी क़ीमती वसियत को पसे पुश्ट डालकर उनकी तक्लीद पर ऐसा ज़मूद इख़ितयार किया कि आज चारों मज़ाहिब एक अलग अलग दीन अलग अलग उम्मत नज़र आते हैं। इसलिये कहा गया है कि,

दीने हक़ रा चार मज़हब साख़्तन्द

ख़ना दर दीन नबी अंदाख़्तन्द

मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि इन फ़ज़ी ग़िरोहबन्दियों को ख़त्म करके कलिम-ए-तौहीद और कुआन और किब्ला पर इतिहादे उम्मत कायम करें वरना हालात इस क़दर नाजुक हैं कि इस इफ़्तिराक़ व इश्तिकाक़ के नतीजे बद में मुसलमान और भी ज़्यादा हलाक व बर्बाद हो जाएँगे। वमा अलैयना इल्लल बलागुल मुबीन वल हम्दु लिह्लिह रब्बिल आलमीन।

4120. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी अल् अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, (दूसरी सनद इमाम बुखारी रह फ़र्माते हैं) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना और उनसे अनस (रज़ि.) ने

٤١٢٠ - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الْأَسْوَدِ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ وَحَدَّثَنِي خَلِيفَةُ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ الرَّجُلُ يَخْتَلُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى

बयान किया कि बतौर हदिया महाबा (रज़ि.) अपने बाग़ में से नबी करीम (ﷺ) के लिये चन्द खजूर के पेड़ मुकर्रर कर देते थे यहाँ तक कि बनू कुरैजा और बनू नज़ीर के कबीले फ़तह हो गये (तो आँहुज़ूर (ﷺ) ने उन तोहफ़ों को वापस कर दिया)। मेरे घर वालों ने भी मुझे उस खजूर को, तमाम की तमाम या उसका कुछ हिस्सा लेने के लिये हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा। हुज़ूर (ﷺ) ने वो खजूर उम्मे ऐमन (रज़ि.) को दे दी थी। इतने में वो भी आ गई और कपड़ा मेरी गर्दन में डालकर कहने लगीं, क़त्लन नहीं। उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं ये फल तुम्हें नहीं मिलेंगे ये हुज़ूर (ﷺ) मुझे इनायत फ़र्मा चुके हैं। या इसी तरह के अल्फ़ाज़ उन्होंने बयान किये। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम मुझसे इसके बदले में इतने ले लो। (और उनका माल उन्हें वापस कर दो) लेकिन वो अब भी यही कहे जा रही थीं कि क़त्लन नहीं, अल्लाह की क़सम! यहाँ तक कि हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें, मेरा ख़याल है कि अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उसका दस गुना देने का वा'दा किया, (फिर उन्होंने मुझे छोड़ा) या इसी तरह के अल्फ़ाज़ अनस (रज़ि.) ने बयान किये। (राजेज़ : 2630)

4121. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने, उनसे शुअबा ने, उनसे सअद बिन अब्राहीम ने, उन्होंने अबू उमामा से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि बनू कुरैजा ने सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) को ब़ालिग़ मानकर हथियार डाल दिये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बुलाने के लिये आदमी भेजा। वो गधे पर सवार होकर आए। जब उस जगह के क़रीब आए जिसे हुज़ूर (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ने के लिये मुंताख़ब किया था तो हुज़ूर (ﷺ) ने अंज़ार से फ़र्माया कि अपने सरदार के लेने के लिये खड़े हो जाओ या (हुज़ूर (ﷺ) ने यूँ फ़र्माया) अपने से बेहतर लीडर के लिये खड़े हो जाओ। उसके बाद आपने उनसे फ़र्माया कि बनू कुरैजा ने तुमको ब़ालिग़ मानकर हथियार डाल दिये हैं। चुनौचे सअद (रज़ि.) ने ये फ़ैसला किया कि जितने लोग उनमें जंग के क़ाबिल हैं उन्हें क़त्ल कर दिया जाए और उनके बच्चों और औरतों को कैदी बना लिया जाए। हुज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तुमने अल्लाह के फ़ैसले के मुताबिक़

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْخَلَائِصَ حَتَّى الْقَتْلَ
قَرْيَةَ وَالْمَغِيرَ وَإِنَّ أَهْلِيَّ امْرُؤِي أَنْ
أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَا سَأَلَهُ
الَّذِي كَانُوا أَغْطَوْهُ أَوْ يَنْقُضَهُ وَكَانَ
النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَغْطَاهُ
أَمْ أَيْمَنْ فِعَاءً. أَمْ أَيْمَنْ فِجَعَلَتْ
الْقَوْمَ لِيْ غُفِي يَقُولُ: كَلَّا وَالَّذِي لَا
إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَا يُغْطِيْكُمْ وَكَلَّا أَغْطَاهَا أَوْ
كَمَا قَالَتْ: وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((لَكُ كَلَّا)) وَيَقُولُ: كَلَّا
وَاللّٰهُ حَتَّى أَغْطَاهَا حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ:
عَشْرَةَ أَغْطَاهُ أَوْ كَمَا قَالَ.

(راجع: 2630)

4121 - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا
عُندَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ قَالَ: سَمِعْتُ
أَبَا أُمَامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَوْلَ أَهْلِ قَرْيَةَ
عَلَى حُكْمِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ، فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى سَعْدٍ، فَأَتَى
عَلَى جِمَارٍ فَلَمَّا ذُكِرَ مِنَ الْمَسْجِدِ، قَالَ
لِلْأَنْصَارِ: ((قُومُوا إِلَيَّ سَيِّدُكُمْ أَوْ
خَيْرِكُمْ)) فَقَالَ: ((هَؤُلَاءِ نَزَلُوا عَلَى
حُكْمِكُمْ)) فَقَالَ: تَقْتُلُ مَقَاتِلَهُمْ وَتَسْبِي
ذُرَارِيَهُمْ قَالَ: ((قَضَيْتُ بِحُكْمِ اللَّهِ وَرَأَيْتُ
قَالَ: بِحُكْمِ الْمَلِكِ)).

फ़ैसला किया या ये फ़र्माया कि जैसे बादशाह (या'नी अल्लाह) का हुक्म था। (राजेअ: 4043)

[راجع: 4043]

4122. हमसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमेर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़व-ए-ख़ंदक्र के मौक़े पर सअद (रज़ि.) ज़ख़मी हो गये थे। कुरैश के एक काफ़िर शाख़्स, हस्सान बिन इफ़्रा'नामी ने उन पर तीर चलाया था और वो उनके बाजू की रग में आकर लगा था। नबी करीम (ﷺ) ने उनके लिये मस्जिद में एक डेरा लगा दिया था ताकि क़रीब से उनकी अयादत करते रहें। फिर जब आप ग़ज़व-ए-ख़ंदक्र से वापस लौटे और हथियार रखकर गुस्ल किया तो जिब्रईल (अलैहि.) आपके पास आए। वो अपने सर से गुबार झाड़ रहे थे। उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से कहा आपने हथियार रख दिये। अल्लाह की क़सम! अभी मैंने हथियार नहीं उतारे हैं। आपको उन पर फ़ौजकशी करनी है। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा कि किन पर? तो उन्होंने बनू कुरैज़ा की तरफ़ इशारा किया। ओं हुज़ूर (ﷺ) बनू कुरैज़ा तक पहुँचे (और उन्होंने इस्लामी लश्कर के पन्द्रह दिन के सख़्त घेराव के बाद) सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) को प्रालिप्त मानकर हथियार डाल दिये। ओं हुज़ूर (ﷺ) ने सअद (रज़ि.) को फ़ैसला का इख़ितयार दे दिया। सअद (रज़ि.) ने कहा कि मैं उनके बारे में फ़ैसला करता हूँ कि जितने लोग उनके जंग करने के क़ाबिल हैं वो क़त्ल कर दिये जाएँ, उनकी औरतें और बच्चे कैद कर लिये जाएँ और उनका माल तक्सीम कर लिया जाए। हिशाम ने बयान किया कि फिर मुझे मेरे वालिद ने आइशा (रज़ि.) से ख़बर दी कि सअद (रज़ि.) ने ये दुआ की थी, ऐ अल्लाह! तू ख़ूब जानता है कि इससे ज़्यादा मुझे कोई चीज़ अज़ीज़ नहीं कि मैं तेरे रास्ते में उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें उनके वतन से निकाला लेकिन अब ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारी और उनकी लड़ाई अब ख़त्म कर दी है। लेकिन अगर कुरैश से हमारी लड़ाई का कोई भी सिलसिला अभी बाक़ी हो तो मुझे उसके लिये ज़िन्दा रखिये। यहाँ तक कि मैं तेरे रास्ते में उनसे जिहाद करूँ और अगर लड़ाई के सिलसिले को तूने ख़त्म ही कर दिया है तो मेरे ज़ख़मों को फिर से ताज़ा कर दे और उसी में मेरी मौत वाक़ेअ कर दे। इस दुआ के बाद सीने पर उनका ज़ख़म फिर से ताज़ा हो

4122 - حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: أَصِيبَ سَعْدُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ رَمَاهُ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ يُقَالُ لَهُ جَاهَانُ بْنُ الْغُرَفَةِ: رَمَاهُ فِي الْأَكْحَلِ فَضَرَبَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْمَةً فِي الْمَسْجِدِ لِتُقَوِّدَهُ مِنْ قُرَيْبٍ فَلَمَّا رَجَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنَ الْخَنْدَقِ، وَضَعَ السَّلَاحَ وَاسْتَسَنَّ فَأَتَاهُ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَهُوَ يَنْفُضُ رَأْسَهُ مِنَ الْعَبَارِ فَقَالَ: قَدْ وَضَعْتَ السَّلَاحَ، وَاللَّهِ مَا وَضَعْتَهُ أَخْرَجَ إِلَيْهِمْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَالْيَيْنِ؟)) فَأَشَارَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ فَأَتَاهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَتَرَلُّوا عَلَى حُكْمِهِ لَوْذَ الْحُكْمِ إِلَى سَعْدٍ قَالَ: فَإِنِّي أَحْكُمُ فِيهِمْ أَن تَقْتَلَ الْمُقَابِلَةَ وَأَن تُسَبِّي النِّسَاءَ وَالذَّرِيَّةَ وَأَن تُقَسِّمَ أَمْوَالَهُمْ. قَالَ هِشَامُ فَأَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا رَسُولَكَ ﷺ وَأَخْرَجُوهُ اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَضَعْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ، فَإِنْ كَانَ بَقِيَ مِنْ حَرْبِ قُرَيْشٍ شَيْءٌ فَأَبْقِنِي لَهُ، حَتَّى أَجَاهِدَهُمْ فِيكَ وَإِنْ كُنْتَ وَضَعْتَ الْحَرْبَ فَأَلْجُؤَهَا وَاجْعَلْ مَوْتِي

गया। मस्जिद में कबीला बन्नु गिफार के कुछ सहाबा का भी एक डेरा था। खून उनकी तरफ बहकर आया तो वो घबराए और उन्होंने कहा, ऐ डेर वालों! तुम्हारी तरफ से ये खून हमारी तरफ क्यों बहकर आ रहा है? देखा तो सअद (रज़ि.) के ज़ख़म से खून बह रहा था, उनकी वफ़ात उसी में हुई।

فِيهَا فَانْفَجَرَتْ مِنْ لَيْبِهِ لَلَمْ يُرْغَمُ
الْمَسْجِدِ خَيْمَةً مِنْ بَنِي غِفَارٍ إِلَّا الدَّمُ
يَسِيلُ إِلَيْهِمْ. فَقَالُوا: يَا أَهْلَ الْخَيْمَةِ مَا هَذَا
الَّذِي يَأْتِينَا وَلَيْ مِنْ قَبْلِكُمْ فَإِذَا سَعْدٌ يَغْدُو
جُرْحُهُ دَمًا فَمَاتَ مِنْهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ.

[راجع: 463]

तशरीह: हिजरत के बाद आँहजरत (ﷺ) ने यहूदियों के मुख्तलिफ़ कबीलों और आसपास के दूसरे मुश्तरक अरब कबीलों से सुलह कर ली थी। लेकिन यहूदी बराबर इस्लाम के खिलाफ़ साज़िशों में लगे रहते थे। दरपदा तो उनकी तरफ़ से मुआहिदा की खिलाफ़वर्ज़ी बराबर ही होती रहती थी लेकिन ग़च्च-ए-ख़ंदक के मौके पर जो इतिहाई फ़ैसलाकुन ग़च्चा था, उसमें खास तौर से बन्नु कुरैज़ा ने बहुत खुलकर कुरैश का साथ दिया और मुआहिदे की खिलाफ़वर्ज़ी की थी। इसलिये ग़च्च-ए-ख़ंदक के फ़ौरन बाद अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि मदीना को उनसे पाक करना ही ज़रूरी है। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। कुआन पाक की सूरह हशर इसी वाक़िये के बारे में नाज़िल हुई। एक रिवायत में है कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) लेटे हुए थे। इतिफ़ाक़ से एक बकरी आई और उसने सीना पर अपना खुर रख दिया जिससे उनका ज़ख़म फिर से ताज़ा हो गया। जो उनकी वफ़ात का सबब हुआ। (रज़ि.)

4123. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अदी बिन प्राबित ने ख़बर दी, उन्होंने बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हस्सान बिन प्राबित (रज़ि.) से फ़र्माया कि मुशरिकीन की हिज्व कर या (औँहुज़ूर ﷺ ने उसके बजाय) हाजिहिम फ़र्माया जिब्रईल (अ) तुम्हारे साथ हैं। (राजेअ: 3213)

4123- حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ أَخْبَرَنَا
شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ الْبَرَاءَ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِحَسَّانَ يَوْمَ
قُرَيْظَةَ ((اهْجُوهُمْ- أَوْ هَاجِهِمْ- وَجَبْرِيلُ
مَعَكُمْ)). [راجع: 3213]

4124. और इब्राहीम बिन तहमान ने शैबानी से ये ज़्यादा किया है कि उनसे अदी बिन प्राबित ने बयान किया और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़च्च-ए-बन्नु कुरैज़ा के मौक़ा पर हस्सान बिन प्राबित (रज़ि.) से फ़र्माया था कि मुशरिकीन की हिज्व करो जिब्रईल (अलैहि.) तुम्हारी मदद पर हैं। (राजेअ: 3213)

4124- وَزَادَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ تَهْمَانَ عَنْ
الشَّيْبَانِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ
بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ
قُرَيْظَةَ لِحَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ ((اهْجُ الْمُشْرِكِينَ
لَأَن جَبْرِيلَ مَعَكُمْ)). [راجع: 3213]

तशरीह: तमाम अह्दादीप्रे मज़क़ूरा बाला में किसी न किसी तरह से यहूदियाने बन्नु कुरैज़ा से लड़ाई का ज़िक्र है। इसलिये उनको इस बाब के ज़ेल लाया गया। यहूद अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ हर वक़्त मुसलमानों की हार के लिये सोचते रहते थे। इसलिये मदीना को उनसे साफ़ करना ज़रूरी हुआ और ये जंग लड़ी गई जिसमें अल्लाह ने मदीना को उन शरीरुल फ़ितरत यहूदियों से पाक कर दिया।

बाब 32 : ग़च्च-ए-ज़ातुरिक़ाअ का बयान

32- باب غزوة ذات الرقاع

ये जंग मुहारिब कबीले से हुई थी जो ख़स्फा की औलाद थे और ये ख़स्फा बन्नु ब्रअलबा की औलाद में से था। जो ग़त्फान कबीला की एक शाख है। नबी करीम (ﷺ) ने इस ग़ज्वा में मुकामे नख़ल पर पड़ाव किया था। ये ग़ज्ज-ए-ख़ैबर के बाद वाक़ेअ हुआ क्योंकि अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ग़ज्ज-ए-ख़ैबर के बाद हब्शा से मदीना आए थे (और ग़ज्ज-ए-जातुरिकाअ में उनकी शिकत रिवायतों से प्राबित है)

4125. और अब्दुल्लाह बिन रज़ाअ ने कहा, उन्हें इमरान क़त्तान ने ख़बर दी, उन्हे यह्या बिन क़थीर ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने अस्हाब के साथ नमाज़े ख़ौफ़ सातवें (साल या सातवीं ग़ज्वा) में पढ़ी थी। या'नी ग़ज्वा जातुरिकाअ में। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़े ख़ौफ़ ज़ी क़र्द में पढ़ी थी।

(दीगर मक़ाम : 4126, 4127, 4130, 4138)

4126. और बक्र बिन सवा'दा ने बयान किया, उनसे ज़ियाद बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे अबू मूसा ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज्ज-ए-मुहारिब और बनी ब्रअलबा में अपने साथियों को नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई थी। (राजेअ : 4125)

4127. और इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने वहब बिन कैसान से सुना, उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ग़ज्ज-ए-जातुरिकाअ के लिये मक़ामे नख़ल से ख़ाना हुआ लेकिन कोई जंग नहीं हुई और चूँकि मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार के (अचानक हमले का) ख़तरा था, इसलिये हज़ूर (ﷺ) ने दो रकअत नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई। और यज़ीद ने सलमा बिन अल इक़ूअ (रज़ि.) से बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज्ज-ए-जुल क़र्द में शरीक था। (राजेअ : 4125)

وَهِيَ غَزْوَةٌ مُحَارِبٍ خَصْفَةٌ مِنْ بَنِي ثَعْلَبَةَ مِنْ غَطَفَانَ. فَتَزَلْنَا نَخْلًا وَهِيَ بَعْدَ خَيْرٍ لِأَنَّ أَبَا مُوسَى جَاءَ بَعْدَ خَيْرٍ

٤١٢٥- وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ، أَخْبَرَنَا عِمْرَانُ الْقَطَّانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِأَصْحَابِهِ فِي الْخَوْفِ فِي غَزْوَةِ السَّابِقَةِ غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ يَغْنِي صَلَاةَ الْخَوْفِ بِإِدْيِ قُرْبٍ.

[أطرافه في: ٤١٢٦، ٤١٢٧، ٤١٣٠،

٤١٣٧].

٤١٢٦- وَقَالَ بَكْرُ بْنُ سَوَادَةَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ أَبِي مُوسَى، أَنَّ جَابِرًا حَدَّثَهُمْ قَالَ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ بِهِمْ يَوْمَ مُحَارِبٍ وَثَعْلَبَةَ. [راجع: ٤١٢٥]

٤١٢٧- وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: سَمِعْتُ وَثْبَانَ بْنَ كَثِيرٍ، سَمِعْتُ جَابِرًا خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى ذَاتِ الرِّقَاعِ مِنْ نَخْلٍ فَلَقِيَ جَمْعًا مِنْ غَطَفَانَ فَلَمْ يَكُنْ قِتَالٌ وَخَافَ النَّاسُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا، فَصَلَّى النَّبِيُّ ﷺ رَكْعَتَيِ الْخَوْفِ. وَقَالَ يَزِيدُ عَنْ سَلَمَةَ غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْقُرْدِ.

[راجع: ٤١٢٥]

4128. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उमामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ज़वा के लिये निकले। हम छः साथी थे और हम सबके लिये सिर्फ़ एक ऊँट था, जिस पर बारी बारी हम सवार होते थे। (पैदल तवील और पुर मशक़्त सफ़र की वजह से) हमारे पाँव फट गये। मेरे भी पाँव फट गये थे। नाखून भी झड़ गये थे। घुनाँचे हम क़दमों पर कपड़े की पट्टी बाँध बाँधकर चल रहे थे। इसीलिये उसका नाम ग़ज़व-ए-ज़ातुरिकाअ पड़ा, क्योंकि हमने क़दमों को पट्टियों से बाँधा था। अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने ये हदीस तो बयान कर दी, लेकिन फिर उनको उसका इज़हार अच्छा नहीं मा'लूम हुआ। फ़रमाने लगे कि मुझे ये हदीस बयान न करनी चाहिये थी। उनको अपना नेक अमल ज़ाहिर करना बुरा मा'लूम हुआ।

٤١٢٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزَاةٍ وَتَحْنُ سَبْعَةُ نَفَرٍ بَيْنَنَا بَعِيرٌ نَقْتَبُهُ فَنَقِيتُ أَقْدَامَنَا وَنَقِيتُ لَدَعَامِي وَسَقَطَتْ أَخْطَارِي فَكُنَّا نَلْفُ عَلَى أَرْجُلِنَا الْخِرْقَ فُسِمَتْ غَزْوَةٌ ذَاتَ الرَّقَاقِ لِمَا كُنَّا نَغْصِبُ مِنَ الْخِرْقِ عَلَى أَرْجُلِنَا. وَحَدَّثَ أَبُو مُوسَى بِهَذَا الْخَبِيرِ ثُمَّ كَرِهَ ذَلِكَ قَالَ: مَا كُنْتُ أَصْنَعُ بَأَن أَذْكُرَهُ كَأَنَّهُ كَرِهَ أَنْ يَكُونَ شَيْءٌ مِنْ عَمَلِهِ الْمَشَاهِيرِ.

चूँकि उस जंग में पैदल चलने की तकलीफ़ से क़दमों पर चिथड़े लपेटने की नौबत आ गई थी। इसीलिये उसे ग़ज़व-ए-जातुरिकाअ के नाम से मौसूम किया गया।

4129. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे यज़ीद बिन रुमान ने, उनसे झालेह बिन इब्न ख्वात ने, एक ऐसे सहाबी से बयान किया जो नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़व-ए-ज़ातुरिकाअ में शरीक थे कि नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ी थी। उसकी मूरत ये हुई थी कि पहले एक जमाअत ने आपकी इत्तिदा में नमाज़ पढ़ी। उस वक़्त दूसरी जमाअत (मुसलमानों की) दुश्मन के मुकाबले पर खड़ी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उस जमाअत को जो आपके पीछे सफ़ में खड़ी थी, एक रकअत नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई और उसके बाद आप खड़े रहे। उस जमाअत ने इस अर्से में अपनी नमाज़ पूरी कर ली और वापस आकर दुश्मन के मुकाबले में खड़े हो गये। उसके बाद दूसरी जमाअत आई तो हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें नमाज़ की दूसरी रकअत पढ़ाई जो बाक़ी रह गई थी और (रुकूअ व सज्दा के बाद) आप कायदा में बैठे रहे। फिर उन लोगों ने जब अपनी नमाज़ (जो बाक़ी रह गई थी) पूरी कर ली तो आपने उनके साथ सलाम फेरा।

٤١٢٩ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ رُؤْمَانَ، عَنْ صَالِحِ بْنِ خَوَاتٍ، عَنْ عُمَرَ شَهْدٍ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ ذَاتِ الرَّقَاقِ صَلَّى صَلَاةَ الْخَوْفِ، أَنَّ طَائِفَةً صَفَّتْ مَعَهُ وَطَائِفَةٌ وَجَّاهَ الْعَدُوَّ، فَصَلَّى بِأَلْيِي مَعَهُ رَكْعَةً ثُمَّ ثَبَتَ لَنَا مَا وَاتَمُّوا لِأَنْفُسِهِمْ ثُمَّ انْصَرَفُوا فَصَفُّوا وَجَّاهَ الْعَدُوَّ، وَجَاءَتْ الطَّائِفَةُ الْأُخْرَى فَصَلَّى بِهِمُ الرُّكْعَةَ الَّتِي نَقِيتُ مِنْ صَلَاتِهِ، ثُمَّ ثَبَتَ جَالِسًا وَاتَمُّوا لِأَنْفُسِهِمْ ثُمَّ سَلَّمَ بِهِمْ.

4130. और मुआज़ ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे अबू जुबैर ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मुक़ामे नख़्ला में थे। फिर उन्होंने नमाज़े ख़ौफ़ का ज़िक्र किया। इमाम मालिक ने बयान किया कि नमाज़े ख़ौफ़ के सिलसिले में जितनी रिवायात मैंने सुनी हैं ये रिवायत उन सब में ज़्यादा बेहतर है। मुआज़ बिन हिशाम के साथ इस हदीस को लैस बिन सअद ने भी हिशाम बिन सअद मदनी से, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से रिवायत किया और उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-बनी अन्मार में (नमाज़े ख़ौफ़) पढ़ी थी। (राजेअ: 4125)

4131. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने, उनसे झालेह बिन ख़व्वात ने, उनसे सहल बिन अबी हज़्मा ने बयान किया कि (नमाज़े ख़ौफ़ में) इमाम क़िब्ला रू होकर खड़ा होगा और मुसलमानों की एक जमाअत उसके साथ नमाज़ में शरीक होगी। उस अंश में मुसलमानों की दूसरी जमाअत दुश्मन के मुक़ाबले पर होगी। उन्हीं की तरफ़ मुँह किये हुए। इमाम अपने साथ वाली जमाअत को पहले एक रकअत नमाज़ पढ़ाएगा (एक रकअत के बाद फिर) ये जमाअत खड़ी हो जाएगी और ख़ुद (इमाम के बग़ैर) उसी जगह एक रुकूअ और दो सज्दे करके दुश्मन के मुक़ाबले पर जाकर खड़ी हो जाएगी। जहाँ दूसरी जमाअत को एक रकअत नमाज़ पढ़ाएगा। इस तरह इमाम की दो रकअत पूरी हो जाएँगी और ये दूसरी जमाअत एक रुकूअ और दो सज्दा ख़ुद करेगी।

हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उनसे शुअबा ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने, उनसे झालेह बिन ख़व्वात ने और उनसे सहल बिन अबी हज़्मा (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

٤١٣٠- وَقَالَ مُعَاذٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَنَحْلٍ فَذَكَرَ صَلَاةَ الْخَوْفِ قَالَ مَالِكٌ : وَذَلِكَ أَحْسَنُ مَا سَمِعْتُ فِي صَلَاةِ الْخَوْفِ. تَابَعَهُ اللَّيْثُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ حَدَّثَهُ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فِي غَزْوَةِ بَنِي أَنْمَارٍ.

[راجع: ٤١٢٥]

٤١٣١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الْأَنْصَارِيِّ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ خُوَاتٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَنْمَةَ، قَالَ : يَقُومُ الْإِمَامُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ وَطَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَهُ، وَطَائِفَةٌ مِنْ قِبَلِ الْعَدُوِّ وَجُوهُهُمْ إِلَى الْعَدُوِّ، فَيُصَلِّي بِاللَّيْنِ مَعَهُ رُكْعَةً ثُمَّ يَقُومُونَ فَيَرْتَكِعُونَ لِأَنْفُسِهِمْ رُكْعَةً وَيَسْجُدُونَ سَجْدَتَيْنِ فِي مَكَانِهِمْ ثُمَّ يَذْهَبُ هَؤُلَاءِ إِلَى مَقَامِ أُولَئِكَ، فَيَجِئُ أُولَئِكَ فَيَرْتَكِعُ بِهِمْ رُكْعَةً، فَلَهُ إِيَّتَانِ ثُمَّ يَرْتَكِعُونَ وَيَسْجُدُونَ سَجْدَتَيْنِ.

..... حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ صَالِحِ بْنِ خُوَاتٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَنْمَةَ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ.

..... حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ

قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ يَحْيَى

मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने हाज़िम ने बयान किया, उनसे यज़्ज़ा ने, उन्होंने क़ासिम से सुना, उन्हें स़ालेह बिन ख़व्वात ने ख़बर दी, उन्होंने सहल बिन अबी हज़्ज़ा (रज़ि.) से उनका क़ौल बयान किया।

سَمِعَ الْقَاسِمَ أَخْبَرَنِي صَالِحُ بْنُ خُوَاتٍ عَنْ سَهْلِ حَدَّثَهُ قَوْلَهُ.

4132. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अत्राफ़े नज्द में नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़वा के लिये गया था वहाँ हम दुश्मन के आमने सामने हुए और उनके मुक़ाबले में सफ़बन्दी की।

٤١٣٢ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَبْلَ نَجْدٍ مُوَاظِنًا الْعَدُوَّ فَصَافَنَّا لَهُمْ.

(राजेअ: 942)

[راجع: ٩٤٢]

4133. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे मज़अमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने और उनसे उनके बालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक जमाअत के साथ नमाज़े (ख़ाफ़) पढ़ी और दूसरी जमाअत इस अर्से में दुश्मन के मुक़ाबले पर खड़ी थी। फिर ये जमाअत जब अपने दूसरे साथियों की जगह (नमाज़ पढ़कर) चली गई तो दूसरी जमाअत आई और हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें भी एक रकअत नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद आपने उस जमाअत के साथ सलाम फेरा। आख़िर उस जमाअत ने खड़े होकर अपनी एक रकअत पूरी की और पहली जमाअत ने भी खड़े होकर अपनी एक रकअत पूरी की।

٤١٣٣ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى بِأَحَدِي الطَّائِفَتَيْنِ، وَالطَّائِفَةُ الْأُخْرَى مُوَاجِهَةً الْعَدُوَّ ثُمَّ انْصَرَفُوا فِي مَقَامِ اصْتِحَابِهِمْ فَجَاءَ أَوَّلُكَ لَصَلَّى بِهِمْ رَكْعَةً، ثُمَّ سَلَّمَ عَلَيْهِمْ، ثُمَّ قَامَ هَؤُلَاءِ فَقَضَوْا رَكْعَتَهُمْ، وَقَامَ هَؤُلَاءِ فَقَضَوْا رَكْعَتَهُمْ.

(राजेअ: 942)

[راجع: ٩٤٢]

4134. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे सिनान और अबू सलमान ने बयान किया और उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ अत्राफ़े नज्द में लड़ाई के लिये गये थे। (राजेअ: 2910)

٤١٣٤ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنِي شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي سِنَانٌ وَأَبُو سَلَمَةَ أَنَّ جَابِرًا أَخْبَرَهُ أَنَّ غَزَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَبْلَ نَجْدٍ. [راجع: ٢٩١٠]

4135. हमसे इस्माईल बिन अबी उवेस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी अतीक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सिनान बिन सिनान दौली ने, उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने

٤١٣٥ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سِنَانِ بْنِ أَبِي سِنَانٍ

खबर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ अत्राफे नज्द में गज्वा के लिये गये थे। फिर जब आँहजरत (ﷺ) वापस हुए तो वो भी वापस हुए। कैलूला का वक्त एक वादी में आया, जहाँ बबूल के पेड़ बहुत थे। चुनौचे हजूर अकरम (ﷺ) वहीं उतर गये और सहाबा (रज़ि.) पेड़ों के साथे केलिये पूरी वादी में फैल गये। हजूर (ﷺ) ने भी एक बबूल के पेड़ के नीचे क्रयाप किया और अपनी तलवार उस पेड़ पर लटका दी। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि अभी थोड़ी देर हमें सोये हुए हुई थी कि आँहजरत (ﷺ) ने हमें पुकारा। हम जब खिदमत में हाज़िर हुए तो आपके पास एक बट्ट बैठा हुआ था। हजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस शख्स ने मेरी तलवार (मुझ पर) खींच ली थी, मैं उस वक्त सोया हुआ था, मेरी आँख खुली तो मेरी नंगी तलवार उसके हाथ में थी। इसने मुझसे कहा, तुम्हें मेरे हाथ से आज कौन बचाएगा? मैंने कहा कि अल्लाह! अब देखो ये बैठा हुआ है। हजूर अकरम (ﷺ) ने उसे फिर कोई सज़ा नहीं दी। (दूसरी सनद) (राजेज़: 2910)

4136. और अबान ने कहा कि हमसे यह्या बिन अबी कज़ीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ज़ातुरिकाअ में थे। फिर हम एक ऐसी जगह आए जहाँ बहुत घने साया का पेड़ था। वो पेड़ हमने आँहजरत (ﷺ) के लिये मखसूस कर दिया कि आप वहाँ आराम फ़र्माएँ। बाद में मुश्रीकीन में से एक शख्स आया, हजूर (ﷺ) की तलवार पेड़ से लटक रही थी। उसने वो तलवार हजूर (ﷺ) पर खींच ली और पूछा, तुम मुझसे डरते हो? हजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। इस पर उसने पूछा, आज मेरे हाथ से तुम्हें कौन बचाएगा? हजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह! फिर सहाबा (रज़ि.) ने उसे डाँटा धमकाया और नमाज़ की तक्बीर कही गई। तो हजूर (ﷺ) ने पहले एक जमाअत को दो रकअत नमाज़ ख़ौफ़ पढ़ाई जब वो जमाअत (आँहजूर ﷺ के पीछे से) हट गई तो आपने दूसरी जमाअत को भी दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। इस तरह नबी करीम (ﷺ) की चार रकअत नमाज़ हुई। लेकिन मुक्तदियों की सिर्फ़ दो

الدُّوَلِي، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَبْلَ نَجْدٍ فَلَمَّا قَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَعْلًا مَعَهُ فَأَذْرَكَهُمْ الْقَابِلَةُ فِي وَادٍ كَثِيرِ الْعِصَاءِ، فَنَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَتَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الْعِصَاءِ يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ، وَنَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ تَحْتَ شَجَرَةٍ، فَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ قَالَ جَابِرٌ، فِيمَنَّا نَوْمَةٌ ثُمَّ إِذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْعُونَا فَنَجْتَنَاهُ، فَإِذَا عِنْدَهُ أَعْرَابِيٌّ جَالِسٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ هَذَا اخْتَرَطَ سَيْفِي وَأَنَا نَائِمٌ فَاسْتَفْطَيْتُ وَهُوَ فِي يَدِي صُلْبًا فَقَالَ لِي: مِنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ قُلْتُ: اللَّهُ)) فَهَا هُوَ ذَا جَالِسٌ ثُمَّ لَمْ يُعَاقِبْهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ.

[راجع: ٢٩١٠]

٤١٣٦ - وَقَالَ أَبَانُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذَاتِ الرِّقَاعِ فَإِذَا آتَيْنَا عَلَى شَجَرَةٍ ظَلِيلَةٍ تَرَكْنَاهَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَسَيْفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُعْلَقٌ بِالشَّجَرَةِ فَاخْتَرَطَهُ قَالَ لَهُ: تَخَافُنِي. فَقَالَ: ((لَا)) قَالَ: ((فَمَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟)) قَالَ: اللَّهُ فَنَهَذَهُ اصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاقِمْتَ الصَّلَاةَ فَصَلَّى بِطَائِفَةٍ رَكَعَتَيْنِ، ثُمَّ تَأَخَّرُوا وَصَلَّى بِالطَّائِفَةِ

दो रकअत और मुसहद ने बयान किया, उनसे अबू अवाना ने, उनसे अबू बसर ने कि उस शख्स का नाम (जिसने आप पर तलवार खींची थी) गोरष बिन हारिष था और औहज़रत (ﷺ) ने उस ग़ज़्वा में क़बील-ए-मुहारिब ख़प्सा से जंग की थी।

(राजेअ: 2910)

4137. और अबुज़ जुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मुक़ामे नख़ला में थे तो आपने नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़े ख़ौफ़ ग़ज़्व-ए-नज्द में पढ़ी थी। ये याद रहे कि अबू हुरैरह (रज़ि.) हुजुरे अक़रम (ﷺ) की शिद्दमत में (सबसे पहले) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर हाज़िर हुए थे।

(राजेअ: 4125)

तशरीह: इस हदीस की शरह में हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं व कज़ालिक अख़रजहा इब्नाही मुल्हबी फी किताबि गरीबिल्हदीसि अन जाबिरिन क़ाल गज़ा रसूलुल्लाहि मुहारिब ख़प्सत बिनखिलन फराक़मिनल्मुस्लिमीन ग़ज़ज़तन फजाअ रजुलुम्मिन्हुम युक्रालु लहु गोरष बिन अल्हारिष हत्ता काम अला रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिस्सैफ़ि फज़करहु व फीहि फ़क़ाललआराबी गैर अन्नी उआहिदुक अल्ला उक्रातिलक व ला अकूनु मअ क़ौमिन युक्रातिलूनक फख़ल्ल सबीलहु फजाअ इला अस्हाबिही फ़क़ाल जितुकुम मिन इन्दि ख़ैरिन्नासि व क़द ज़क्ररल्वाक़िदी फ़ी नहबि हाज़िहिलिक्क़िन्सति अन्नहु अस्लम व रज़अ इला क़ौमिही फहतदा बिही खल्लुक़न क़बीर (फ़तुहबूरी)। ख़ुलासा ये कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक खज़ूरों के इलाक़ा में हज़्रता नामी क़बीले पर जिहद किया और वापसी में मुसलमान एक जगह दोपहर में आराम लेने के लिए मुतफ़रिक् होकर जगह जगह पेड़ों के नीचे सो गये। उस वक़्त उस क़बीला का एक आदमी गोरष बिन हारिष नामी नंगी तलवार लेकर रसूले करीम (ﷺ) के सिरहाने खड़ा हो गया। पस ये सारा माजरा हुआ और उसमें ये भी है बाद में जब वो देहाती नाकाम हो गया तो उसने कहा कि मैं आपसे तर्क जंग का मुआहिदा करता हूँ और इस बात का भी कि मैं आपसे लड़ने वाली क़ौम का साथ नहीं दूँगा। औहज़रत (ﷺ) ने उसका रास्ता छोड़ दिया और वो अपने साथियों के पास आया और उनसे कहा कि ऐसे बुजुर्ग शख्स के पास से आया हूँ कि जो बेहतरीन क्रिस्म का आदमी है। वाक़दी ने ऐसे ही क्रिस्सा में ये भी ज़िक़्र किया है कि बाद में वो शख्स मुसलमान हो गया और अपनी क़ौम में वापस आया और उसके ज़रिये बहुत सी मख़लूक ने हिदायत हासिल की।

बाब 33 : ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलिक् का बयान
जो क़बीला बनू ख़ुज़ाअ से हुआ था उसका दूसरा नाम ग़ज़्व-ए-मरयसीअ है

इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया कि ये ग़ज़्वा 6 हिजरी में हुआ था और मूसा बिन इज़बा ने बयान किया कि 4 हिजरी में और नोअमान बिन राशिद ने जुहरी से बयान किया कि वाक़िया इफ़्क़ ग़ज़्व-ए-मरयसीअ में पेश आया था।

الْأَخَرَى رَكْعَتَيْنِ وَكَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَرْبَعٌ وَلِلْقَوْمِ رَكْعَتَيْنِ. وَقَالَ مُسَدَّدٌ عَنْ أَبِي عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ اسْمُ الرَّجُلِ غَوَزْتُ بَنِي الْحَارِثِ، وَقَاتَلَ فِيهَا مُحَارِبٌ خَصَفَةً.

(راجع: 2910)

4137- وَقَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَنَجْلٍ فَصَلَّى الْغُفُوفَ، وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَزْوَةَ نَجْلٍ صَلَاةَ الْغُفُوفِ وَأَمَّا جَاءَ أَبُو هُرَيْرَةَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَيَّامَ خَيْبَرَ.

(راجع: 4125)

٣٣- بَابُ غَزْوَةِ بَنِي الْمُصْطَلِقِ مِنْ خَزَاعَةَ وَهِيَ غَزْوَةُ الْمُرَيْسِيِّينَ قَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ : وَذَلِكَ سَنَةَ سِتٍّ، وَقَالَ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ: سَنَةُ أَرْبَعٍ. وَقَالَ التَّمَمَانُ بْنُ رَاشِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ : كَانَ حَدِيثُ الْإِفْكِ فِي غَزْوَةِ الْمُرَيْسِيِّينَ.

इसीलिये उसके बारे में हदीष इफ्क का बयान हो रहा है। हाफ़िज़ साहब की तहकीक़ ये है कि ये ग़ज़वा 5 हिजरी में हुआ। व क़ाल मूसा बिन उक्बत सनत अर्बइन् कज़ा ज़करहुल बुख़ारी व कअन्नहू सबक फलम्मा अराद अय्यक्तुब सनत खमसिन फ कतब सनत अर्बइन् (फ़तुहल बारी)

4138. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें रबी'आ बिन अबी अब्दुर्रहमान ने, उन्हें मुहम्मद बिन यह्या बिन हब्बान ने और उनसे अबू मुहैरिज़ ने बयान किया कि मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) अंदर मौजूद थे। मैं उनके पास बैठ गया और अज़ल के बारे में उनसे सवाल किया। उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़वा बनी अल् मुस्तलिक़ के लिये निकले। इस ग़ज़वे में हमें कुछ अरब के क़ैदी मिले (जिनमें औरतें भी थीं) फिर उस सफ़र में हमें औरतों की ख़्वाहिश हुई और औरत के बिना रहना हम पर मुश्किल हो गया। दूसरी तरफ़ हम अज़ल करना चाहते थे (इस डर से कि बच्चा पैदा न हो) हमारा इरादा यही था कि अज़ल कर लें लेकिन फिर हमने सोचा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मौजूद हैं। आपसे पूछे बग़ैर अज़ल करना मुनासिब न होगा। चुनौचे हमने आपसे इसके बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि अगर तुम अज़ल न करो फिर भी कोई हर्ज नहीं क्योंकि क़यामत तक जो जान पैदा होने वाली है वो ज़रूर पैदा होकर रहेगी। (राजेअ: 2229)

अज़ल का मफ़हूम ये है कि मर्द अपनी बीवी के साथ हमबिस्तरी करे और जब इज़ाल का वक़्त करीब हो तो आल-ए-तनासुल को निकाल ले ताकि बच्चा पैदा न हो। क़ढ़अे नस्ल की ये भी एक सूरत थी जिसे ओहज़रत (ﷺ) ने पसन्द नहीं फ़र्माया आज तरह तरह से क़ढ़अे नस्ल की दुनिया के बेशतर मुमालिक में कोशिश जारी है जो इस्लाम की रू से क़ढ़अेन नाजाइज़ है। व क़द ज़कर हाज़िहिल्किस्मत इब्नु सअद नहव मा ज़कर इब्नु इस्हाक़ व अन्नल्हारिष कान जमअ जुमुअन व अर्सल ऐनन तातीहि बिखबिल्मुस्लिमीन फज़फ़रुबिही फ़क़तलूहु फलम्मा बलगहू ज़ालिक़ बलग व तफ़रक़ल्जम्ड वन्तहन्नबियु (ﷺ) इलल्माइ व हुवलमुरैसीअ फसफ़अ अस्हाबुल्किताल व रमूहुम बिन्नब्लि घुम्म इन्सानुन बल कुतिल भिन्हुम अशरतुन व उर्सिलबाकून रिजालन व निसाअन (फ़तुहलबारी) खुलासा ये कि ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलिक़ में मुसलमानों ने दस आदमियों को क़त्ल किया और बाक़ी को कैद कर लिया।

4139. हमसे महमूद बिन शीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक्र ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सलमाने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ नज्द की तरफ़ ग़ज़वा के लिये गये। दोपहर का वक़्त हुआ तो आप एक जंगल में पहुँचे जहाँ बबूल के पेड़ बहुत थे। आपने घने पेड़ के नीचे साया

٤١٣٨ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ مَعْبُدٍ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ رِبْعَةَ بْنِ أَبِي عَدٍ الرَّحْمَنِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَانَ عَنْ ابْنِ مَعْبُودٍ أَنَّهُ قَالَ: دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَرَأَيْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ فَجَلَسْتُ إِلَيْهِ فَسَأَلْتُهُ عَنِ الْمَزْلِ قَالَ أَبُو سَعِيدٍ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ نَبِيِّ الْمُصْطَلِقِ فَأَصَبْنَا مَتًّا مِنْ سَبِي الْغَرْبِ فَاشْتَهَيْنَا النِّسَاءَ وَاشْتَدَّتْ عَلَيْنَا الْغَرَبَةُ وَاحْتَبْنَا الْغَزْنَ فَأَرَدْنَا أَنْ نَغْزِلَ، وَلَقْنَا نَغْزِلَ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ تَمَنَّا أَنْ أَطْهَرَنَا قَبْلَ أَنْ نَسْأَلَهُ فَسَأَلَنَاهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: ((مَا عَلَيْكُمْ أَنْ لَا تَفْعَلُوا مَا مِنْ نَسَمَةٍ كَاتِبَةٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلَّا وَهِيَ كَاتِبَةٌ)).

[راجع: ٢٢٢٩]

٤١٣٩ - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ حَدَّثَنَا عَدِي الرَّزَاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرُ بْنُ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلَى وَسْطِ غَزْوَةٍ لَنَجِدَ فَلَمَّا أَذْرَكْتَهُ الْقَبِيلَةَ

के लिये कयाम किया और पेड़ से अपनी तलवार लटका दी। सहाबा (रजि.) भी पेड़ों के नीचे साया हासिल करने के लिये फैल गये। अभी हम उसी कैफ़ियत में थे कि हुजूर (ﷺ) ने हमें पुकारा। हम हाज़िर हुए तो एक बदवी आपके सामने बैठा हुआ था। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शरइस मेरे पास आया तो मैं सो रहा था। इतने में उसने मेरी तलवार खींच ली और मैं भी बेदार हो गया। ये मेरी नंगी तलवार खींचे हुए मेरे सर पर खड़ा था। मुझसे कहने लगा कि आज मुझसे तुम्हें कौन बचाएगा? मैंने कहा कि अल्लाह! (वो शरइस सिर्फ़ एक लफ़्ज़ से इतना डर गया कि) तलवार को नियाम में रखकर बैठ गया और देख लो। ये बैठा हुआ है। हुजूर (ﷺ) ने उसे कोई सज़ा नहीं दी।

बाब 34 : ग़ज़्व-ए-अन्मार का बयान

4140. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे उम्मान बिन अब्दुल्लाह बिन सराक्रा ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रजि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ग़ज़वा अन्मार में देखा कि नफ़्थन नमाज़ आप अपनी सवारी पर मशिक़ की तरफ़ मुँह किये हुए पढ़ रहे थे। (राजेअ: 400)

तशरीह: इब्ने अबी इस्हाक़ ने ज़िक्र किया है कि ये ग़ज़वा माहे सफ़र में हुआ और इब्ने सअद का बयान है कि एक आदमी हलब से आया और उसने ख़बर दी कि बनू अन्मार और बनू षअलबा मुसलमानों से जंग के लिये जमा हो रहे हैं तो आप सफ़र की 10 तारीख़ को निकले और उनकी जगह में जातुरिकाअ के मौके पर आए। ये भी कहा गया है कि ग़ज़्व-ए-अन्मार ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलिक के आख़िर में 27 सफ़र में वाक़ेअ हुआ। इसलिये कि अबुजुबैर ने जाबिर (रजि.) से रिवायत किया है कि आप ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलिक के लिये जा रहे थे। मैं हाज़िरे खिदमत हुआ और मैंने देखा कि आप कँट के ऊपर नमाज़ पढ़ रहे थे। लैष की रिवायत से भी इसकी ताईद होती है जिसमें ज़िक्र है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-बनी अन्मार में सलातुल ख़ौफ़ को अदा किया। ये भी एहतिमाल है कि मुतअहिद वाक़ियात हों। (फ़तहल बारी)

बाब 35 : वाक्रिय-ए-इफ़्क का बयान

लफ़्ज़ इफ़्क। नज़्स और नजस की तरह है। बोलते हैं इफ़्कुहुम (सूरह अहकाफ़ में) आया है व जालिका इफ़कुहुम वो बकस-ए-हम्ज़ा है और ये बफ़्तेह हम्ज़ा बसकूने फ़ाअ और इफ़कुहुम ये बफ़्ता हम्ज़ा व फ़ाअ भी है व काफ़ पढ़ा है तो तर्जुमा यूँ होगा उसने

وَفُوْا فِيْ وَادٍ كَبِيْرٍ اَلْبَعَاءُ فَنَزَلَ تَحْتِ شَجَرَةٍ وَاسْتَظَلَّ بِهَا وَعَلَّقَ سَيْفَهُ فَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الشَّجَرِ يَسْتَظِلُّوْنَ وَتَبْنَا نَحْنُ كَذَلِكَ اِذْ دَعَانَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَجِنًا لِّاِذَا اَغْرَابِيْ قَاعِلٌ يَنْ يَنْتَوِيْ فَقَالَ: ((اِنَّ هَذَا اَقْلَبِيْ وَاَنَا لَابِمٍ لِّاسْتَرْطَ سَيْفِيْ لَاسْتَهْطَلْتُ وَفُوْا قَالِمٌ عَلٰى رَاسِيْ مُعْطَرِطٌ سَيْفِيْ صَلْعًا قَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّيْ؟ قُلْتُ اللّٰهُ، فَنَاشَأَهُ كَمْ قَعْدًا لَّهُوَ هَذَا)). قَالَ: وَلَمْ يَغَابَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ.

34- باب غَزْوَةِ اَنْمَارٍ

4140- حَدَّثَنَا اَدَمُ حَدَّثَنَا اَبْنُ اَبِيْ ذُنَبِرٍ حَدَّثَنَا عُفْمَانُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ سُرَّاقَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ الْاَنْصَارِيِّ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِيْ غَزْوَةِ اَنْمَارٍ يُصَلِّيْ عَلٰى رَاحِلَتِهِ مُتَوَجِّهًا لِّبِلِ الْمَشْرِقِ مُتَطَوِّعًا.

[راجع: 400]

35- باب حَدِيثِ الْاِفْكِ

وَالْاِفْكِ بِمَنْزِلَةِ النِّجْسِ، وَالنِّجْسِ يُقَالُ: اِفْكُهُمْ: صَرَفُهُمْ عَنِ الْاِيْمَانِ وَكَذِبُهُمْ، كَمَا قَالَ ﴿يُؤْفِكُ عَنْهُ مِنَ الْاِفْكِ﴾ يُصْرِفُ

उनको ईमान से फेर दिया और छोटा बनाया जैसे सूरह वज्र ज़ारियात में (यूफ़कू अन्हु मन उफ़िका) है या'नी कुआन से वही मुन्हरिफ़ होता है जो अल्लाह के इल्म में मुन्हरिफ़ करार पा चुका है।

عَنْ بِنِ مَرْثٍ.

इस बाब में उस झूठे इल्ज़ाम का तफ़्सीली बयान है जो मुनाफ़िक़ीन ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) के ऊपर लगाया था जिसकी बराअत के लिये अल्लाह तआला ने सूरह नूर में तफ़्सील के साथ आयात का नुज़ूल किया।

4141. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ना बिन जुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अल्क्रमा बिन वक्कास और अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन मसऊद ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोआ मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि जब अहले इफ़क़ या'नी तोहमत लगाने वालों ने उनके बारे में वो सब कुछ कहा जो उन्हें कहना था (इब्ने शिहाब ने बयान किया कि) तमाम हज़रात ने (जिन चार हज़रात के नाम उन्होंने रिवायत के सिलसिले में लिये हैं) मुझसे आइशा (रज़ि.) की हदीस का एक एक टुकड़ा बयान किया। ये भी था कि उनमें से कुछ को ये फ़िस्सा ज़्यादा बेहतर तरीक़ा पर याद था और इम्दगी से ये फ़िस्सा बयान करता था और मैंने उनमें से हर एक की रिवायत याद रखी जो उसने आइशा (रज़ि.) से याद रखी थी। अगरचे कुछ लोगों को दूसरे लोगों के मुकाबले में रिवायत ज़्यादा बेहतर तरीक़े पर याद थी। फिर भी उनमें बाह्य एक की रिवायत दूसरे की रिवायत की तस्दीक़ करती है। उन लोगों ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र का इरादा करते तो अज़वाजे मुतहहरात (रज़ि.) के दरम्यान कुआं डाला करते थे और जिसका नाम आता तो हुजूर (ﷺ) उन्हें अपने साथ सफ़र में ले जाते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ग़ज़वा के मौक़े पर जब आपने कुआं डाला तो मेरा नाम निकला और मैं हुजूर (ﷺ) के साथ सफ़र में ख़ाना हुई। ये वाक़िया पदों के हुक्म के नाज़िल होने के बाद का है। चुनाँचे मुझे होदज समेत उठाकर सवार कर दिया जाता और उसी के साथ उतारा जाता। इस तरह हम ख़ाना हुए। फिर जब हुजुरे अकरम (ﷺ) अपने उस ग़ज़वे से फ़ारिग़ हो गये तो वापस हुए। वापसी में अब हम मदीना के करीब थे (और एक

4141 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ أَبِي شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَنُسَيْدُ بْنُ الْمُسْتَبِيرِ وَخَلْقَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَعَبِيدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الْإِفْكِ مَا قَالُوا وَكَلَّمَهُمْ حَدَّثَنِي طَائِفَةٌ مِنْ خَدِيثِهَا، وَبَعْضُهُمْ كَانَ أَوْعَى لِخَدِيثِهَا مِنْ بَعْضٍ وَاثْبَتَ لَهُ الْفِصَاصَ، وَقَدْ وَعَيْتُ عَنْ كُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ الْحَدِيثَ الَّذِي حَدَّثَنِي عَنْ عَائِشَةَ وَبَعْضُ خَدِيثِهِمْ يَصْدُقُ بَعْضًا وَإِنْ كَانَ بَعْضُهُمْ أَوْعَى لَهُ مِنْ بَعْضٍ قَالُوا: قَالَتْ عَائِشَةُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا ارْتَدَّ سَفَرًا أَفْرَغَ بَيْنَ أَزْوَاجِهِ قَائِلِينَ خَرَجَ مِنْهَا خَرَجَ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَأَفْرَغَ بَيْنَنَا فِي غَزْوَةِ حَزَاةَ فَخَرَجَ فِيهَا مِنْهُنَّ فَخَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ فَكُنْتُ أَحْمَلُ فِي

मक़ाम पर पड़ाव था) जहाँ से हुजूर (ﷺ) ने कूच का रात में ऐलान किया। कूच का ऐलान हो चुका था तो मैं खड़ी हुई और थोड़ी दूर चलकर लश्कर के हुदूद से आगे निकल गई। फिर क़ज़ा-ए-हाजत से फ़ारिग होकर मैं अपनी सवारी के पास पहुँची। वहाँ पहुँचकर जो मैंने अपना सीना टटोला तो ज़फ़ार (यमन का एक शहर) के मुह्रा का बना हुआ मेरा हार ग़ायब था। अब मैं फिर वापस हुई और अपना हार तलाश करने लगी। इस तलाश में देर हो गई। उन्होंने बयान किया कि जो लोग मुझे सवार किया करते थे वो आए और मेरे होदज को उठाकर उन्होंने मेरे कैंट पर रख दिया। जिस पर मैं सवार हुआ करती थी। उन्होंने समझा कि मैं होदज के अंदर ही मौजूद हूँ। उन दिनों औरतें बहुत हल्की फुल्की हुआ करती थीं। उनके जिस्म में ज़्यादा गोश्त नहीं हुआ करता था क्योंकि बहुत मा' मूली ख़ूराक उन्हें मिलती थी। इसलिये उठाने वालों ने जब उठाया तो होदज के हल्केपन में उन्हें कोई फ़र्क़ मा' लूम नहीं हुआ। यूँ भी उस वक़्त मैं एक कम उम्र लड़की थी। ग़ज़ कैंट को उठाकर वो भी ख़ाना हो गये। जब लश्कर गुज़र गया तो मुझे भी अपना हार मिल गया। मैं डेरे पर आई तो वहाँ कोई भी न था। न पुकारने वाला न जवाब देने वाला। इसलिये मैं वहाँ आई जहाँ मेरा असल डेरा था। मुझे यक़ीन था कि जल्दी ही मेरे न होने का उन्हें इल्म हो जाएगा और मुझे लेने के लिये वो वापस लौट आएँगे। अपनी जगह पर बैठे बैठे मेरी आँख लग गई और मैं सो गई। सफ़वान बिन मुअत्तल सुल्मी घुमज़ ज़क्वानी (रज़ि.) लश्कर के पीछे पीछे आ रहे थे। (ताकि लश्कर की कोई चीज़ गुम हो गई हो तो वो उठा लें) उन्होंने एक सोये इंसान का साया देखा और जब (क़रीब आकर) मुझे देखा तो पहचान गये। पदों से पहले वो मुझे देख चुके थे। मुझे जब वो पहचान गये तो इब्राहिल्लाह पढ़ना शुरू कर दिया और उनकी आवाज़ से मैं जाग उठी और फ़ौस अपनी चादर से मैंने अपना चेहरा ढाँक लिया। अल्लाह की क़सम! मैंने उनसे एक लफ़ज़ भी नहीं कहा और न सिवा इब्राहिल्लाह के मैंने उनकी जुबान से कोई लफ़ज़ सुना। वो सवारी से उतर गये और उसे उन्होंने बिठाकर उसकी अगली टाँग को मोड़ दिया (ताकि बग़ैर किसी मदद के उम्मुल मोमिनीन उस पर सवार हो सकें) मैं उठी और उस पर सवार हो गई। अब वो सवारी को आगे से पकड़े हुए लेकर चले। जब हम

هُودَجِي وَأَنْزَلَ فِيهِ فَبَرْنَا حَتَّى إِذَا
فَرَّغَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
مِنْ غَزْوَتِهِ بَلَكَ وَقَفَلَ دَنَوْنَا مِنَ
الْمَدِينَةِ قَالِيلِينَ، أَذِنَ لَيْلَةً بِالرَّحِيلِ
فَقُمْتُ حِينَ أَذْنَوْنَا بِالرَّحِيلِ فَمَشَيْتُ
حَتَّى جَاوَزْتُ الْجَيْشَ، فَلَمَّا قَضَيْتُ
شَأْنِي أَقْبَلْتُ إِلَى رَحْلِي فَلَمَسْتُ
صَدْرِي فَإِذَا عَقْدٌ لِي مِنْ جَزَعٍ فَفَارِقْتُ
انْفُطَحَ فَرَجَعْتُ فَلَتَمَسْتُ عَقْدِي
فَحَبَسَنِي ابْتِغَاؤُهُ قَالَتْ: وَأَقْبَلَ الرَّهْطُ
الَّذِينَ كَانُوا يُرَحِّلُونِي فَاحْتَمَلُوا
هُودَجِي فَرَحَلُوهُ عَلَى بَعِيرِي الَّذِي
كُنْتُ أَرْكَبُ عَلَيْهِ وَهُمْ يَحْسِبُونَ أَنِّي
فِيهِ وَكَانَ النَّسَاءُ إِذْ ذَلِكَ خِفَافًا لَمْ
يَهْتَلُنَّ وَلَمْ يَغْشَهُنَّ اللَّحْمُ إِنَّمَا يَأْكُلْنَ
الْعُلُقَةَ مِنَ الطَّعَامِ فَلَمْ يَسْتَكْبِرِ الْقَوْمُ
خِيفَةَ الْهُودَجِ حِينَ رَفَعُوهُ وَحَمَلُوهُ
وَكُنْتُ جَارِيَةً حَبِيَّةَ السَّنِّ فَبَعَثُوا
الْحَمَلَ فَسَارَوْا وَوَجَدْتُ عَقْدِي،
بَعْدَمَا اسْتَمَرَّ الْجَيْشُ فَجِئْتُ مَنَازِلَهُمْ
وَلَيْسَ بِهَا مِنْهُمْ دَاعٍ وَلَا مُجِيبٌ
فَتَيَمَّمْتُ مَنَزِلِي الَّذِي كُنْتُ بِهِ وَطَنْتُ
أَنَّهُمْ سَيَفْقِدُونِي فَيَرْجِعُونَ إِلَيَّ قَبِيلًا أَنَا
جَالِسَةٌ فِي مَنَزِلِي غَلَبَنِي عَيْفِي فَيَمْتُ
وَكَانَ صَفْوَانُ بْنُ الْمَعْطَلِ السُّلَمِيُّ،
ثُمَّ الدُّكْوَانِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْجَيْشِ فَأَصْبَحَ
عِنْدَ مَنَزِلِي فَرَأَى سَوَادَ إِنْسَانٍ نَائِمٍ

लश्कर के करीब पहुँचे तो ठीक दोपहर का वक़्त था। लश्कर पड़ाव किये हुए था। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जिसे हलाक होना था वो हलाक हुआ। असल में तो हमत का बेटा अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल (मुनाफ़िक्) ने उठा रखा था। उर्वाने ने बयान किया कि मुझे मा'लूम हुआ है कि वो इस तोहमत का चर्चा करता और उसकी मज्लिसों में इसका तज़्किरा हुआ करता। वो इसकी तस्दीक करता, ख़ूब ग़ौर और तवज्जह से सुनता और फैलाने के लिये ख़ूब ख़ोद कुरेद करता। उर्वाने पहली सनद के हवाले से ये भी कहा कि हस्सान बिन प्राबित, मिस्तह बिन अम्राशा और हम्ना बिन्ते जहश के सिवा तोहमत लगाने में शरीक किसी का भी नाम नहीं लिया कि मुझे उनका इल्म होता अगरचे उसमें शरीक होने वाले बहुत से थे। जैसा कि अल्लाह तआला ने इशार्द फ़र्माया, (कि जिन लोगों ने तोहमत लगाई है वो बहुत से हैं) लेकिन इस मामले में सबसे बड़ चढ़कर हिस्सा लेने वाला अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल था। उर्वाने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) उस पर बड़ी ख़फ़मी का इज़हार करती थीं। अगर उनके सामने हस्सान बिन प्राबित (रज़ि.) को बुरा भला कहा जाता, आप फ़र्मातीं कि ये शेर हस्सान ही ने कहा है कि मेरे वालिद और मेरे वालिद के वालिद और मेरी इज्जत, मुहम्मद (ﷺ) की इज्जत की हिफ़ाज़त के लिये तुम्हारे सामने ढाल बनी रहेंगी। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हम मदीना पहुँच गये और वहाँ पहुँचते ही मैं जो बीमार हुई तो एक महीने तक बीमार ही रही। इस अम्में में लोगों में तोहमत लगाने वालों की अफ़वाहों का बड़ा चर्चा रहा लेकिन मैं एक बात भी नहीं समझ रही थी अल्बत्ता अपने मर्ज़ के दौरान एक चीज़ से मुझे बड़ा शुब्हा होता कि रसूले करीम (ﷺ) की वो मुहब्बत व इनायत मैं नहीं महसूस करती थी जिसको पहले जब भी बीमार होती थी देख चुकी थी। आप मेरे पास तशरीफ़ लाते, सलाम करते और पूछते कैसी तबीअत है? सिर्फ़ इतना पूछकर वापस तशरीफ़ ले जाते। हुज़ूर (ﷺ) के इस तर्ज़े अमल से मुझे शुब्हा होता था लेकिन शर (जो फैल चुका था) उसका मुझे कोई एहसास नहीं था। मर्ज़ से जब आराम हुआ तो मैं उम्मे मिस्तह के साथ मनास्रेह की तरफ़ गई। मनास्रेह (मदीना की आबादी से

فَعَرَفْنِي حِينَ رَأَيْتِي وَكَانَ رَأْيِي قَبْلَ الْحِجَابِ فَاسْتَنْقَضْتُ بِاسْتِزْجَاعِهِ حِينَ عَرَفْنِي فَخَعَمَزْتُ وَجْهِي بِحِجَابِي، وَرَأَاهُ مَا تَكَلَّمْنَا وَلَا تَسَمِعْتُ مِنْهُ كَلِمَةً غَيْرَ اسْتِزْجَاعِهِ وَهُوَ حَتَّى أَنَاخَ رَاجِلَتَهُ لَوَطِيءَ عَلَى يَدَيْهَا فَقُمْتُ إِلَيْهَا فَرَكِبْتُهَا فَأَنْطَلَقَ يَقُودُ بِي الرَّاحِلَةَ حَتَّى أَتَيْنَا الْجَنَّةَ مُؤْغِرِينَ فِي نَحْرِ الظُّهَيْرِ، وَهُمْ لَزُؤُونَ قَالَتْ: فَهَلْكَ مَنْ هَلَكَ وَكَانَ الَّذِي تَوَلَّى كَيْفَ الْإِفْكِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ مَسْلُومٌ. قَالَ غُرُورَةٌ: أَخْبَرْتُ أَنَّهُ كَانَ يُشَاغُ وَيَتَحَدَّثُ بِهِ عِنْدَهُ فَيَقْرُؤُ وَيَسْتَمِعُهُ وَيَسْتَوْشِيهِ وَقَالَ غُرُورَةٌ أَيْضًا: لَمْ يُسَمَّ مِنْ أَهْلِ الْإِفْكِ أَيْضًا إِلَّا خَسَانُ بْنُ قَابَسٍ، وَمِنْطَحُ بْنُ أَلْفَاةٍ، وَخَمْنَةُ بِنْتُ جَعْفَرٍ، فِي نَاسٍ آخَرِينَ لَا عِلْمَ لِي بِهِمْ غَيْرَ أَنَّهُمْ عُصْبَةٌ، كَمَا قَالَ اللَّهُ تَعَالَى وَإِنْ كَثُرَ ذَلِكَ يَقَالُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ مَسْلُومٌ قَالَ غُرُورَةٌ: كَانَتْ عَائِشَةُ تَكْذُرُهُ أَنْ يُسَبَّ عِنْدَهَا خَسَانُ وَتَقُولُ إِنَّهُ الَّذِي قَالَ:

فَإِنْ أَبِي وَوَالِدُهُ وَعِرْضِي

لِعِرْضِي مُحَمَّدٌ مِنْكُمْ وَقَاءُ

قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَاشْتَكَيْتُ حِينَ قَدِمْتُ شَهْرًا وَالنَّاسُ يُفِيضُونَ فِي قَوْلِ أَصْحَابِ الْإِفْكِ، لَا

बाहर) हमारे रफ़ाए हाजत की जगह थी। हम यहीं सिर्फ रात के वक़्त जाते थे। ये उससे पहले की बात है, जब बैतुल ख़ला हमारे घरों से करीब बन गये थे। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि अभी हम अरब क़दीम के तरीक़े पर अमल करते और मैदान में रफ़ाए हाजत के लिये जाया करते थे और हमें इससे तकलीफ़ होती थी कि बैतुल ख़ला हमारे घरों के करीब बनाए जाएँ। उन्होंने बयान किया कि अल ग़र्ज़ में और उम्मे मिस्तह (रफ़ाए हाजत के लिये) गये। उम्मे मिस्तह सख़र बिन आभिर की बेटी हैं और वो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़ाला होती हैं। उन्हीं के बेटे मिस्तह बिन अफ़ाफ़ा बिन अब्बाद बिन मुत्तलिब (रज़ि.) हैं। फिर मैं और उम्मे मिस्तह अपनी चादर में उलझ गई और उनकी जुबान से निकला कि मिस्तह ज़लील हो। मैंने कहा, आपने बुरी बात जुबान से निकाली, एक ऐसे शख्स को आप बुरा कह रही हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हो चुका है। उन्होंने उस पर कहा क्यों मिस्तह की बातें तुमने नहीं सुनीं? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने पूछा कि उन्होंने क्या कहा है? बयान किया, फिर उन्होंने तोहमत लगाने वालों की बातें सुनाईं। बयान किया कि इन बातों को सुनकर मेरा मर्ज़ और बढ़ गया। जब मैं अपने घर वापस आई तो हुज़ूर अकरम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और सलाम के बाद पूछा कि कैसी तबीअत है? मैंने हुज़ूर (ﷺ) से अर्ज़ किया कि क्या मुझे अपने वालिदैन के घर जाने की इजाज़त मईमत फ़र्माएंगे? उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि मेरा इरादा ये था कि उनसे इस ख़बर की तस्दीक़ करूंगी। उन्होंने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे इजाज़त दे दी। मैंने अपनी वालिदा से (घर जाकर) पूछा कि आख़िर लोगों में किस तरह की अफ़वाहें फैल रही हैं? उन्होंने फ़र्माया कि बेटी! फ़िक्र न कर, अल्लाह की क़सम! ऐसा शायद ही कहीं हुआ हो कि एक ख़ूबसूरत औरत किसी ऐसे शौहर के साथ हो जो उससे मुहब्बत भी रखता हो और उसकी सौकर्ने भी हों और फिर उस पर तोहमतें न लगाई गई हों। उसकी ऐबजोई न की गई हो। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि मैंने उस पर कहा कि सुब्हानल्लाह (मेरी सौकर्नों से इसका क्या ता'ल्लुक) उसका तो आम लोगों में चर्चा है। उन्होंने बयान किया कि इधर फिर जो मैंने रोना शुरू किया तो रात भर रोती रही इसी तरह सुबह हो गई और

اشْعُرُ بِشَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ وَهُوَ يَرِيْنِي فِي وَجْهِ أَنِّي لَا أَعْرِفُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ اللَّطْفَ الَّذِي كُنْتُ أَرَى مِنْهُ حِينَ اشْتَكِي إِنَّمَا يَدْخُلُ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ثُمَّ يَقُولُ: كَيْفَ يَكُمُ؟ ثُمَّ يَنْصَرِفُ فَذَلِكَ يُرِيْنِي وَلَا اشْعُرُ بِالشَّرِّ حَتَّى خَرَجْتُ حِينَ نَفَعْتُ فَخَرَجْتُ مَعَ أُمِّ مِسْطَعٍ قِيلَ الْمَنَاصِعُ، وَكَانَ مُبَرِّزًا وَكُنَّا لَا نَخْرُجُ إِلَّا لَيْلًا إِلَى لَيْلٍ وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ تَتَّخِذَ الْكُفَّ قَرِيْبًا مِنْ يَتِيْمَتِنَا قَالَتْ: وَأَمَرْنَا أَمْرَ الْعَرَبِ الْأَوَّلِ فِي الْبَرِّيَّةِ قِيلَ الْمَنَاصِعُ كُنَّا نَنَادِي بِالْكُفْرِ أَنْ تَتَّخِذَهَا عِنْدَ يَتِيْمَتِنَا قَالَتْ: فَأَنْطَلَقْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَعٍ وَهِيَ ابْنَةُ أَبِي رُحْمٍ بِنِ الْمَطْلِبِ بْنِ عَبْدِ مَنَافٍ وَأُمُّهَا بِنْتُ صَخْرِ بْنِ غَامِرٍ خَالَةُ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ وَأَبْنَاهُ مِسْطَعُ بْنُ أَلَانَةَ بْنِ عُبَادِ بْنِ الْمَطْلِبِ فَأَبْلَيْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَعٍ قِيلَ يَتِيْ حِينَ فَرَعْنَا مِنْ شَأْنِنَا، فَعَرَفْتُ أُمَّ مِسْطَعٍ فِي مَرْطُهَا، فَقَالَتْ: تَعَسَّ مِسْطَعٌ فَقُلْتُ لَهَا، بِئْسَ مَا قُلْتُ، اتَّبَعْنِي رَجُلًا شَهِدَ بَذْرًا، فَقَالَتْ أَيْ هَتَاهُ وَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالَ؟ قَالَتْ: وَقُلْتُ مَا قَالَ؟ فَأَخْبَرْتَنِي يَقُولُ أَهْلُ الْإِفْلَاقِ قَالَتْ: فَازْدَدْتُ مَرَضًا عَلَى مَرَضِي فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى يَتِيْ دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: كَيْفَ يَكُمُ؟ فَقُلْتُ: لَوْ أَنَاذَنُ لِي أَنْ آتِيَ أَبَوَيْ؟ قَالَتْ: وَأَرِيدُ أَنْ أَسْتَبْقِيَ الْخَيْرَ مِنْ قِبَلِهِمَا،

मेरे आंसू किसी तरह न थमते थे और न रींद ही आती थी। बयान किया कि इधर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अलैहदा करने के बारे में मश्वरा करने के लिये बुलाया क्योंकि इस सिलसिले में अब तक आप पर कोई वह्य नाज़िल नहीं हुई थी। बयान किया कि उसामा (रज़ि.) ने तो हज़ूरे अकरम (ﷺ) को उसी के मुताबिक मश्वरा दिया जो वो हज़ूर (ﷺ) की बीवी (मुराद खुद अपनी ज़ात से है) की पाकीज़गी और हज़ूर (ﷺ) की उनसे मुहब्बत के बारे में जानते थे। चुनौचे उन्होंने कहा कि आपकी बीवी में मुझे खैरो-भलाई के सिवा और कुछ मा'लूम नहीं है लेकिन अली (रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने आप पर कोई तंगी नहीं रखी है और औरतें भी उनके अलावा बहुत हैं। आप उनकी बांदी (बरीरह (रज़ि.) से भी पूछ लें वो हकीकते हाल बयान करे देंगी। बयान किया कि फिर हज़ूर (ﷺ) ने बरीरह (रज़ि.) को बुलाया और उनसे पूछा फ़र्माया कि क्या तुमने कोई ऐसी बात देखी है जिससे तुम्हें (आइशा पर) शुब्हा हुआ हो। हज़रत बरीरह (रज़ि.) ने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मबरूज़ किया। मैंने उनके अंदर कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी जो बुरी हो। इतनी बात ज़रूर है कि वो एक नौउम्र लड़की हैं, आटा गूथकर सो जाती हैं और बकरी आकर उसे खा जाती है। उन्होंने बयान किया कि उस दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को ख़िज़ाब किया और मिम्बर पर खड़े होकर अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक) का मामला रखा। आपने फ़र्माया। ऐ गिरोहे मुस्लिमीन! उस शख्स के बारे में मेरी कौन मदद करेगा जिसकी अज़ियतें अब मेरी बीवी के मामले तक पहुँच गई हैं। अल्लाह की क़सम! कि मैंने अपनी बीवी में ख़ैर के सिवा और कोई चीज़ नहीं देखी और नाम भी इन लोगों ने एक ऐसे शख्स (सफ़्वान बिन मुअत्तल रज़ि. जो उम्मुल मोमिनीन रज़ि. को अपने ऊँट पर लाए थे) का लिया है जिसके बारे में भी मैं ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानता। वो जब भी मेरे घर आए तो मेरे साथ ही आए। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि इस पर सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) क़बीला बनी अस्थल के हम रिश्ता खड़े हुए और अर्ज़ किया मैं या रसूलुल्लाह! आपकी मदद करूँगा। अगर वो शख्स क़बीला बनूँ औस का हुआ

قَالَتْ : فَأَذِنَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ، فَقُلْتُ : لَأُمِّي يَا امْتَنَاءُ مَاذَا يَتَخَذُ النَّاسُ؟ قَالَتْ يَا بَيْتَةَ . هُوَ بِيْكَ فَوَ اللَّهِ قَلَمًا كَانَتْ امْرَأَةً قَطُ وَصِيَّةٌ عِنْدَ رَجُلٍ يُجِبُّهَا لَهَا صَرَائِرُ إِلَّا كَثُرْنَ عَلَيْهَا ، قَالَتْ : فَقُلْتُ : سَنَحَانِ اللَّهُ أَوْ لَقَدْ تَحَدَّثَ النَّاسُ بِهَذَا ، قَالَتْ : فَكَيْفَ تِلْكَ اللَّيْلَةُ حَتَّى أَصْبَحْتُ لَا يَرَقًا لِي دَفْعَ وَلَا أَكْتَجَلَ بَنُوْمٌ ثُمَّ أَصْبَحْتُ أَبْكِي ، قَالَتْ : وَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَاسْمَاءُ بِنَ زَيْدٍ حِينَ اسْتَلَيْتُ الْوَحْيَ يَسْأَلُهُمَا وَيَسْتَشِيرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ قَالَتْ : فَأَمَّا اسْمَاءُ فَأَشَارَ عَلِيٌّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِالَّذِي يَعْلَمُ مِنْ بَرَاءَةِ أَهْلِهِ وَبِالَّذِي يَعْلَمُ لَهُمْ فِي نَفْسِهِ ، فَقَالَتْ اسْمَاءُ : أَهْلُكَ وَلَا نَعْلَمُ إِلَّا خَيْرًا ، وَأَمَّا عَلِيٌّ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ لَمْ يُصَيِّقِ اللَّهُ عَلَيْكَ وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ ، وَنَسَلِ الْخَارِجَةُ تَصُدُّكَ قَالَتْ : فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَرِيرَةَ فَقَالَ : ((أَيُّ بَرِيرَةَ هَلْ رَأَيْتِ مِنْ شَيْءٍ يَرِيْكَ؟)) قَالَتْ لَهُ بَرِيرَةُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا رَأَيْتُ عَلَيْهَا امْرَأَةً قَطُ اغْصِيْهُ غَيْرَ أَنَّهَُا خَارِجَةُ حَدِيْثَةُ السَّنِّ تَامَ عَنْ عَجِيْنِ أَهْلِهَا ، فَتَأْتِي الدَّاجِرَ فَتَأْكُلُهُ ، قَالَتْ : فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ يَوْمِهِ فَاسْتَعْدَرَ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ ابْنِ أَبِي وَهُوَ عَلَى الْمَنِيرِ فَقَالَ : ((يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ مَنْ يَغْدِرُنِي مِنْ رَجُلٍ قَدْ لَغَيْتِ

तो मैं उसकी गर्दन मार दूँगा और अगर वो हमारे कबीले का हुआ तो आपका उसके बारे में जो हुक्म होगा हम बजा लाएँगे। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि उस पर कबीला खज़रज के एक सहाबी खड़े हुए। हस्सान की वालिदा उनकी चचाज़ाद बहन थीं या'नी सअद बिन ज़बादा (रज़ि.) वो कबीला खज़रज के सरदार थे और उससे पहले बड़े सालेह और मुख्लिमीन में थे लेकिन आज कबीले की हमिय्यत उन पर ग़ालिब आ गई। उन्होंने सअद (रज़ि.) को मुखातब करके कहा अल्लाह की क़सम! तुम झूठे हो, तुम उसे क़त्ल नहीं कर सकते और न तुम्हारे अंदर इतनी ताक़त है। अगर वो तुम्हारे कबीले का होता तो तुम उसके क़त्ल का नाम न लेते। उसके बाद उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) जो सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के घचोरे भाई थे, खड़े हुए और सअद बिन ज़बादा (रज़ि.) को मुखातब करके कहा, अल्लाह की क़सम! तुम झूठे हो, हम उसे ज़रूर क़त्ल करेंगे। अब उसमें शुब्हा नहीं रहा कि तुम भी मुनाफ़ि़क़ हो, तुम मुनाफ़ि़कों की तरफ़ से मुदाफ़ि़अत करते हो। इतने में औस व खज़रज अंसार के दोनों कबीले भड़क उठे और ऐसा मा'लूम होता था कि आपस ही में लड़ पड़ेंगे। उस वक़्त तक रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्वर पर ही तशरीफ़ रखते थे। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) सबको ख़ामोश करने कराने लगे। सब हज़रात चुप हो गये और आँहुज़ूर (ﷺ) भी ख़ामोश हो गये। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उस रोज़ पूरे दिन रोती रही। न मेरा आंसू थमता था और न आँख़ लगती थी। बयान किया कि सुबह के वक़्त मेरे वालिदेन मेरे पास आए। दो रातें और एक दिन मेरा रोते हुए गुज़र गया था। इस पूरे अज़्में में न मेरा आंसू रुका और न नौद आई। ऐसा मा'लूम होता था कि रोते रोते मेरा कलेजा फट जाएगा। अभी मेरे वालिदेन मेरे पास ही बैठे हुए थे और मैं रोये जा रही थी कि कबीला अंसार की एक ख़ातून ने अंदर आने की इजाज़त चाही। मैंने उन्हें इजाज़त दे दी और वो भी मेरे साथ बैठकर रोने लगीं। बयान किया कि हम अभी उसी हालत में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। आपने सलाम किया और बैठ गये। बयान किया कि जबसे मुझ पर तोहमत लगाई गई थी, आँहुज़ूर (ﷺ) मेरे पास नहीं बैठे थे। एक महीना गुज़र गया था और मेरे बारे में आपको वहा

عَنْهُ إِذَا هِيَ فِي أَهْلِهَا وَاللَّهُ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِهَا إِلَّا خَيْرًا وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلًا مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلَّا خَيْرًا وَمَا يَدْخُلُ عَلَى أَهْلِهَا إِلَّا مَعِي) فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ أَخُو بَنِي عَبْدِ الْأَشْهَلِ فَقَالَ: أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغْلِبُكَ فَإِنْ كَانَ مِنَ الْأَوْسِ ضَرَبْتُ عُنُقَهُ، وَإِنْ كَانَ مِنَ الْخَزْرَجِ مِنْ إِخْوَانِنَا مِنَ الْخَزْرَجِ أَمَرْنَا فَفَعَلْنَا أَمْرًا قَالَتْ: فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْخَزْرَجِ وَكَانَتْ أُمُّ حَسَّانَ بِنْتُ عَمِّهِ مِنْ لُحَدٍ، وَهُوَ سَعْدُ بْنُ عَبَادَةَ وَهُوَ سَيِّدُ الْخَزْرَجِ، قَالَتْ: وَكَانَ قَبْلَ ذَلِكَ رَجُلًا صَالِحًا وَلَكِنْ احْتَمَلْنَاهُ الْخَمِيَّةَ، فَقَالَ: لِسَعْدٍ: كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللَّهِ لَا تَقْتُلُهُ، وَلَا تَقْدِرُ عَلَى قَتْلِهِ، وَلَوْ كَانَ مِنْ رَهْطِكَ مَا أَحْبَبْتَ أَنْ يُقْتَلَ، فَقَامَ أُسَيْدُ بْنُ حَضِرٍ وَهُوَ ابْنُ عَمِّ سَعْدٍ، فَقَالَ لِسَعْدٍ بِنِ عَبَادَةَ: كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللَّهِ لِنَقْلَتُهُ فَإِنَّكَ مُنَافِقٌ تُجَادِلُ عَنِ الْمُنَافِقِينَ: فَقَارَ الْحَيَّانِ الْأَوْسُ وَالْخَزْرَجُ حَتَّى هَمُّوا أَنْ يَقْتُلُوا وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَائِمٌ عَلَى الْمَنَبَةِ، قَالَتْ: فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحْفَظُهُمْ حَتَّى سَكَتُوا وَسَكَتْ قَالَتْ: فَبَكَيْتُ يَوْمِي ذَلِكَ كُلَّهُ لَا يَرْفَأُ لِي دَمْعٌ وَلَا أَكْتَجِلُ يَوْمًا، قَالَتْ: وَاصْبَحَ أَبَوَايَ عِنْدِي وَقَدْ بَكَيتُ لَيْلَتَيْنِ وَيَوْمًا لَا يَرْفَأُ لِي دَمْعٌ وَلَا أَكْتَجِلُ يَوْمًا حَتَّى إِنِّي لَأُظَنُّ أَنَّ الْبُكَاءَ فَالِقٌ كَبْدِي فَبَيْنَا

के जरिये कोई खबर नहीं दी गई थी। बयान किया कि बैठने के बाद हुजूर (ﷺ) ने कलिम-ए-शहादत पढ़ा फिर फ़र्माया, अम्मा बअद! ऐ आइशा (रज़ि.)! मुझे तुम्हारे बारे में इस इस तरह की खबरें मिली हैं, अगर तुम वाकई इस मामले में पाक व सफ़ा हो तो अल्लाह तआला तुम्हारी पाकी खुद बयान कर देगा लेकिन अगर तुमने किसी गुनाह का क़स्द किया था तो अल्लाह की मफ़िरत चाहो और उसके हुजूर मैं तौबा करो क्योंकि बन्दा जब (अपने गुनाहों का) ए'तिराफ़ कर लेता है और फिर अल्लाह की बारागाह में तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबा कुबूल कर लेता है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हुजूर अकरम (ﷺ) अपना कलाम पूरा कर चुके तो मेरे आंसू इस तरह खुश्क हो गये कि एक क़तरा भी महसूस नहीं होता था। मैंने पहले अपने वालिद से कहा कि मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह (ﷺ) को आपके कलाम का जवाब दें। वालिद ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! मैं कुछ नहीं जानता कि हुजूर (ﷺ) से मुझे क्या कहना चाहिये। फिर मैंने अपनी वालिदा से कहा कि हुजूर अकरम (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया है वो उसका जवाब दें। वालिदा ने भी यही कहा अल्लाह की क़सम! मुझे कुछ नहीं मा'लूम कि ओ'हुजूर (ﷺ) से मुझे क्या कहना चाहिये। इसलिये मैंने खुद ही अर्ज़ किया। हालाँकि मैं बहुत कम इम्र लड़की थी और कुआन मजीद भी मैंने ज़्यादा नहीं पढ़ा था कि अल्लाह की क़सम! मुझे भी मा'लूम हुआ है कि आप लोगों ने इस तरह की अफ़वाहों पर कान धरा और बात आप लोगों के दिलों में उतर गई और आप लोगों ने उसकी तस्दीक़ की अब अगर मैं ये कहूँ कि मैं उस तोहमत से बरी हूँ तो आप लोग मेरी तस्दीक़ नहीं करेंगे और अगर इस गुनाह का इक़रार कर लूँ और अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मैं इससे बरी हूँ तो आप लोग इसकी तस्दीक़ करने लग जाएँगे। पस अल्लाह की क़सम! मेरी और आप लोगों की मिशाल हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के वालिद जैसी है। जब उन्होंने कहा था। फ़सब्रन जमीलुन वल्लाहुल मुस्तआनु अला मा तसिफून (यूसुफ़: 18) (पस सब्रे जमील बेहतर है और अल्लाह ही की मदद दाकार है इस बारे में जो कुछ तुम कह रहे हो) फिर मैंने अपना रुख़ दूसरी तरफ़ कर लिया और अपने बिस्तर पर लेट गई। अल्लाह ख़ूब जानता था कि मैं इस मामले में

اتّوأي جالسان عني وأنا ابكي فاستأذنت علي امرأة من الأنصار فأذنت لها فجئلت تبكي معي قالت : فبينما نحن على ذلك دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم فسلم، ثم جلس قالت: ولم يجلس عني منذ قيل ما قيل قبلها وقد لبث شهراً لا يوحى إليّ في شيء بشيء قالت: فشهد رسول الله صلى الله عليه وسلم حين جلس ثم قال: ((أما بعد يا غابضة إنه بلغني عنك كذا وكذا لأن كنت برينة فسبّرتك الله وإن كنت ألممت بذنّب فاستغفري الله وتوبي إليّ لأن العبد إذا اعترف ثم تاب تاب الله عليه)) قالت: فلما قضى رسول الله صلى الله عليه وسلم مقالته قلص دمي حتى ما أحس منه فطرة، فقلت لأبي: أجب رسول الله صلى الله عليه وسلم عني فيما قال: فقال أبي والله ما أذري ما أقول لرسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت لأمي: أجب رسول الله صلى الله عليه وسلم فيما قال: قالت أُمّي والله ما أذري ما أقول لرسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت وأنا جارية خديجة السن لا أفرا من القرآن كثيراً أنّي والله لقد علمت لقد سمعتم هذا الحديث حتى استقر في أنفسكم وصدقتكم به فلئن قلت لكم إنّني برينة لا تصدقوني ولئن اعترفت لكم بأمر

क़त्लन बरी थी और वो खुद मेरी बराअत ज़ाहिर करेगा क्योंकि मैं वाकई बरी थी लेकिन अल्लाह की क़सम! मुझे इसका कोई वहम व गुमान भी न था कि अल्लाह तआला वहा के ज़रिये कुआन मजीद में मेरे मामले की सफ़ाई उतारेगा क्योंकि मैं अपने को इससे बहुत कमतर समझती थी कि अल्लाह तआला मेरे मामले में खुद कोई कलाम फ़र्माए, मुझे तो सिर्फ़ इतनी उम्मीद थी कि हुज़ूर (ﷺ) कोई ख़्वाब देखेंगे जिसके ज़रिये अल्लाह तआला मेरी बराअत कर देगा लेकिन अल्लाह की क़सम! अभी हुज़ुरे अकरम (ﷺ) इस मजलिस से उठे भी नहीं थे और न और कोई घर का आदमी वहाँ से उठा था कि हुज़ूर (ﷺ) पर वहा नाज़िल होनी शुरू हुई और आप पर वो कैफ़ियत तारी हुई जो वहा की शिद्दत में तारी होती थी। मोतियों की तरह पसीने के क़त्तरे आपके चेहरे से गिरने लगे। हालाँकि सर्दी का मौसम था। ये इस वहा की वजह से था जो आप पर नाज़िल हो रही थी। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आपन्हीं वो कैफ़ियत ख़त्म हुई तो आप तबस्सुम फ़र्मा रहे थे। सबसे पहला कलिमा जो आपकी जुबाने मुबारक से निकला वो ये था। आपने फ़र्माया ऐ आइशा (रज़ि.)! अल्लाह ने तुम्हारी बराअत नाज़िल कर दी है। उन्होंने बयान किया कि इस पर मेरी वालिदा ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) के सामने खड़ी हो जाओ। मैंने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम! मैं आपके सामने नहीं खड़ी होऊँगी। मैं अल्लाह अज़्ज व जल्ल के सिवा और किसी की हम्दो-पना नहीं करूँगी (कि उसी ने मेरी बराअत नाज़िल की है) बयान किया कि अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़र्माया, इन्नल्लज़ीन जाऊ बिल इफ़्कि (जो लोग तोहमत तराशी में शरीक हुए हैं) दस आयतें इस सिलसिले में नाज़िल फ़र्माईं। जब अल्लाह तआला ने (सूरह नूर में) ये आयतें मेरी बराअत के लिये नाज़िल फ़र्माईं तो अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) (जो मिस्तह बिन अषाषा के खर्चे, उनसे क़राबत और मुहताजी की वजह से खुद उठाते थे) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मिस्तह (रज़ि.) ने जब आइशा (रज़ि.) के बारे में इस तरह की तोहमत तराशी में हिस्सा लिया तो मैं इस पर अब कभी कुछ खर्च नहीं करूँगा। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। वला यातलि ऊलुल फ़ज़िल मिन्कुम या'नी अहले फ़ज़ल और अहले हिम्मत क़सम न खाएँ) से ग़फ़ूरुर्हीम तक (क्योंकि मिस्तह

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَنِّيْ مِنْهُ بِرَبِّئَةٍ تَصَدَّقْتَنِيْ فَوَاللّٰهِ لَا اُجِدُ لِيْ وَلَكُمْ مَثَلًا اِلَّا اَبَا يُوسُفَ حِيْنَ قَالَ: ﴿لَمَسْتَرَجِمًا جَمِيْلًا وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوْنَ﴾ ثُمَّ نَحَوْتُ وَاصْطَفَعْتُ عَلٰی يَرَاشِي وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَنِّيْ حَبِيْبَةٌ بِرَبِّئَةٍ، وَانَ اللّٰهُ مُرَبِّيْ بِرَءَائِيْ وَلَكِنْ وَاللّٰهُ مَا كُنْتُ اُظُنُّ اَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی مُنْزِلٌ لِّىْ شَأْنِيْ وَحَتّٰى يُعْطٰى لِّشَأْنِيْ فِىْ نَفْسِيْ كَانَ اَخْفَرُ مِنْ اَنْ يَنْكَلِمَ اللّٰهُ فِىْ بَآئِرٍ، وَلَكِنْ كُنْتُ اَزْجُو اَنْ يَّرٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِى النَّوْمِ رُؤْيَا يَرٰئِيْ اللّٰهُ بِهَا فَوَاللّٰهُ مَا رَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَجْلِسَةً وَلَا خَرَجَ اَخَذَ مِنْ اَهْلِ الْبَيْتِ حَتّٰى اُنْزِلَ عَلَيْهِ فَاَخَذَهُ مَا كَانَ يَأْخُذُهُ مِنَ الْبِرْحَاءِ حَتّٰى اِنَّهُ لَيَتَحَدَّثُ مِنْهُ الْفَرَقُ مِثْلُ الْجُمَانِ وَهُوَ لِيْ يَوْمَ شَابٍ مِنْ بَقْلِ الْقَوْلِ الَّذِيْ اُنْزِلَ عَلَيْهِ، قَالَتْ: فَسُرِّيْ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَضْحَكُ فَكَانَتْ اَوَّلَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمُ بِهَا اِنْ قَالَ: ﴿يَا غَاسِقَةُ فَقَدْ بَرَأْتُكَ﴾ قَالَتْ: فَقَالَتْ لِيْ اُمِّيْ فُؤْمِيْ اِلَيْهِ فَقُلْتُ: لَا وَاللّٰهِ لَا اَقْرُبُ اِلَيْهِ فَاِنِّيْ لَا اُحْمَدُ اِلَّا اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ قَالَتْ وَانْزَلَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَإِنَّ الدِّينَ جَاؤَا بِالْإِفْلَاقِ الْمَشْرِ الْآيَاتِ ثُمَّ اُنْزَلَ اللّٰهُ تَعَالٰى هٰذَا لِيْ بِرَءَائِيْ قَالَ أَبُو بَكْرٍ الصَّدِيقُ: وَكَانَ يُنْفِقُ عَلٰى مِسْطَحَ بْنِ أَنَاثَةَ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ وَلَقَرَّهُ وَاللّٰهُ لَا أَتَفِقُ عَلٰى مِسْطَحَ شَيْئًا

(रज़ि.) या दूसरे मोमिनीन की उसमें शिकंटा महज़ ग़लतफ़हमी की बिना पर थी) चुनाँचे अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मेरी तमन्ना है कि अल्लाह तआला मुझे इस कहने पर मुआफ़ कर दे और मिस्तह को जो कुछ वो दिया करते थे, उसे फिर देने लगे और कहा कि अल्लाह की क़सम! अब इस वज़ीफ़े को मैं कभी बन्द नहीं करूँगा। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे मामले में हुज़ूर (ﷺ) ने उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिनते जहश (रज़ि.) से भी मशवरा किया था। आपने उनसे पूछा कि आइशा (रज़ि.) के बारे में क्या मा'लूम है? तुम्हें या उनमें तुमने क्या चीज़ देखी है? उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अपनी आँखों और कानों को महफूज़ रखती हूँ (कि उनकी तरफ़ ख़िलाफ़े वाक़िया निस्बत करूँ) अल्लाह की क़सम! मैं उनके बारे में ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानती। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़ैनब ही माम अज़्वाजे मुतह़रात में मेरे मुकाबिल की थीं लेकिन अल्लाह तआला ने उनके तक्रवा और पाकबाज़ी की वजह से उन्हें महफूज़ रखा। बयान किया कि अल्बत्ता उनकी बहन हम्ना ने ग़लत रास्ता इख़ितयार किया और हलाक होने वालों के साथ वो भी हलाक हुई थीं। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि यही थी वो तफ़्सील इस हदीष की जो उन अकाबिर की तरफ़ से पहुँची थी। फिर इब्ना ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! जिन सहाबी के साथ ये तोहमत लगाई गई थी वो (अपने पर इस तोहमत को सुनकर) कहते, सुबहानल्लाह, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैंने आज तक किसी औरत का पर्दा नहीं खोला। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इस वाक़िये के बाद वो अल्लाह के रास्ते में शहीद हो गये थे। (राजेअ: 2593)

4142. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हिशाम बिन यूसुफ़ ने अपनी याद से मुझे हदीष लिखवाई। उन्होंने बयान किया कि हमें मअमर ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा ख़लीद बिन अब्दुल मलिक ने पूछा, क्या तुमको मा'लूम है कि हज़रत अली (रज़ि.) भी आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने वालों में थे? मैंने कहा कि नहीं, अल्बत्ता तुम्हारी क़ौम (कु़रैश) के दो आदमियों अबू सलमा

अब्दा बन्द अली قال لعائشة ما قال : فانزل الله تعالى: ﴿وَلَا يَأْتِلِ أَوْلُوا الْقَعْلَ مِنْكُمْ - إِلَى قَوْلِهِ - غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ قال أبو بكر الصديق: بلى والله إنني لأجيب أن يغفر الله لي، فوجع إلى منطج النقة التي كان يلقى عليه وقال: والله لا أنزعها منه ابداً. قالت عائشة: وكان رسول الله ﷺ سأل زينب بنت جحش عن امرئ فقال يؤنب : ((ماذا علمت - أو رأيت-؟)) فقالت يا رسول الله أخبى سمى وبصرى والله ما علمت إلا خيراً قالت عائشة : وبى أئبى كانت تسامني من أزواج النبي ﷺ ففصنها الله بالوزع قالت: وطبقت أختها خنثى تحارب لها فهلكت فيمن هلك. قال ابن شهاب فهذا الذي بلغني من حديث هؤلاء الرهط ثم قال غروة: قالت عائشة: والله إن الرجل الذي قيل له ما قيل، ليقول سخان الله فوالذي نفسي بيده ما كشفت من كنف أنفى قط، قالت: ثم قيل بعد ذلك في سبيل الله. [راجع: ٢٥٩٣]

4142 - حدثني عبد الله بن محمد قال أئبى عليّ هشام بن يوسف من حفظه أخبرنا معمر بن الزهري قال : قال لي الوليد بن عبد الملك أبغلك أن علياً كان فيمن قذف عائشة، قلت : لا ولكن قد أخبرني رجلان من قَوْمِكَ أبو سلمة

बिन अब्दुर्रहमान और अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष ने मुझे खबर दी कि आइशा (रजि.) ने उनसे कहा कि अली (रजि.) उनके मामले में खामोश थे। फिर लोगों ने हिशाम बिन यूसुफ़ (या जुहरी) से दोबारा पूछा। उन्होंने यही कहा मसल्लमा इसमें शकन किया मसीआ इसका लफ़्ज़ नहीं कहा और अलैहि का लफ़्ज़ ज़्यादा किया (या'नी जुहरी ने वलीद को और कुछ जवाब नहीं दिया और पुराने नुस्खा में मुसल्लमन का लफ़्ज़ था)।

4143. हमसे पूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अबाना ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे अबू वाईल शक्कीक़ बिन सलमा ने बयान किया, उनसे मसरूक़ बिन अज्दआ ने बयान किया, कहा कि मुझसे उम्मे रूमान (रजि.) ने बयान किया, वो आइशा (रजि.) की वालिदा हैं। उन्होंने बयान किया कि मैं और आइशा (रजि.) बैठी हुई थीं कि एक अंज़ारी ख़ातून आई और कहने लगीं कि अल्लाह फ़लाँ फ़लाँ को तबाह करे। उम्मे रूमान ने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने कहा कि मेरा लड़का भी उन लोगों के साथ शरीक हो गया है, जिन्होंने इस तरह की बात की है। उम्मे रूमान (रजि.) ने पूछा कि आख़िर बात क्या है? इस पर उन्होंने तोहमत लगाने वालों की बातें नक़ल कर दीं। आइशा (रजि.) ने पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी ये बातें सुनीं हैं? उन्होंने बयान किया कि हाँ। उन्होंने पूछा और अबूबक्र (रजि.) ने भी? उन्होंने कहा कि हाँ, उन्होंने भी। ये सुनते ही वो ग़श खाकर गिर पड़ी और जब होश आया तो जाड़े के साथ बुखार चढ़ा हुआ था। मैंने उन पर उनके कपड़े डाल दिये और अच्छी तरह ढंक दिया। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए और पूछा कि इन्हें क्या हुआ है? मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! जाड़े के साथ बुखार चढ़ गया है। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ग़ालिबन उसने इस तूफ़ान की बात सुन पाई है। उम्मे रूमान (रजि.) ने कहा कि जी हाँ। फिर आइशा (रजि.) ने बैठकर कहा कि अल्लाह की क़सम! अगर मैं क़सम खाऊँ कि मैं बेगुनाह हूँ तो आप लोग मेरी तज़दीक़ नहीं करेंगे और अगर कुछ कहूँ तब भी मेरा उज़र नहीं सुनेंगे। मेरी और आप लोगों की य़अकूब (अलैहिस्सलाम) और उनकी बेटों जैसी कहावत है कि उन्होंने कहा था, वल्लाहुल मुस्तज़ान अला मा तसिफून् या'नी अल्लाह उन

بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَأَبُو بَكْرٍ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ لَهُمَا : كَانَ عَلِيٌّ مُسْلِمًا لِي شَاهِبًا فَرَأَوْهُ فَلَمْ يَزَجِعْ، وَقَالَ مُسْلِمًا : بَلَا شَكُّ فِيهِ وَعَلَيْهِ كَانَ لِي أَصْلُ الْعَبْقِ كَذَلِكَ.

4143 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ حَدَّثَنِي مَسْرُوقُ بْنُ الْأَجْدَعِ قَالَ : حَدَّثَنِي أُمُّ رُؤْمَانَ وَهِيَ أُمُّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : بَيْنَا أَنَا قَاعِدَةٌ أَنَا وَعَائِشَةُ إِذْ وَلَجَتْ امْرَأَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَتْ : فَعَلَّ اللَّهُ بِفُلَانٍ وَفَعَلَ بِفُلَانٍ فَقَالَتْ : أُمُّ رُؤْمَانَ وَمَا ذَلِكَ؟ قَالَتْ : إِنِّي لِمِمَّنْ حَدَّثَ الْخَبِيثُ؟ قَالَتْ : وَمَا ذَلِكَ؟ قَالَتْ : كَذَا وَكَذَا، قَالَتْ عَائِشَةُ : سَمِعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ : نَعَمْ، قَالَتْ : وَأَبُو بَكْرٍ؟ قَالَتْ : نَعَمْ فَخَرَّتْ مَغْشِيًا عَلَيْهَا فَمَا أَفَافَتْ إِلَّا وَعَلَيْهَا حُمَى بِنَافِضٍ فَطَرَحَتْ عَلَيْهَا بِنَانَهَا فَطَطَّيْهَا فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ ((مَا شَأْنُ هَذِهِ؟)) قَالَتْ : يَا رَسُولَ اللَّهِ أَخَذَتْهَا الْحُمَى بِنَافِضٍ، قَالَ : ((فَلْعَلَّ فِي حَدِيثٍ تُحَدِّثُ)) قَالَتْ : نَعَمْ، فَقَعَدَتْ عَائِشَةُ فَقَالَتْ : وَاللَّهِ لَبِنٌ خَلَقْتُ لَا تُصَدِّقُونِي وَلَنْ قُلْتُ لَا تُعَذِّبُونِي مِثْلِي وَمِثْلَكُمْ كَيْفَ قُرْبَ وَبَيْنَهُ هُوَ اللَّهُ الْمُسْتَعَانُ

बातों पर जो तुम बनाते हो, मेरी मदद करने वाला है। उम्मे रूमान (रज़ि.) ने कहा आइशा (रज़ि.) की ये तकरीर सुनकर लौट गये, कुछ जवाब नहीं दिया। चुनौचे अल्लाह तआला ने खुद उनकी तलाफ़ी नाज़िल की। वो आइशा (रज़ि.) से कहने लगी बस मैं अल्लाह ही का शुक्र अदा करती हूँ न तुम्हारा न किसी और का। (राजेअ: 3388)

4144. मुझसे यहा बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे बकीअ ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ बिन उमर ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि आइशा (रज़ि.) (सूरह नूर की आयत) किरात, तल्कूनहु बिअल सिनतिकुम, करती थीं और (उसकी तप्सीर में) फ़र्माती थीं कि अल् वल्कु झूठ के पा'नी में है। इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) इन आयतों को औरों से ज़्यादा जानती थीं क्योंकि वो ख़ास उन ही के बाब में उतरी थीं। (दीगर मक़ाम: 4752)

4145. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दु बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं आइशा (रज़ि.) के सामने हस्सान बिन प्राबित (रज़ि.) को बुरा कहने लगा तो उन्होंने कहा कि उन्हें बुरा न कहो, क्योंकि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से कुफ़्फ़ार को जवाब देते थे और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने हुजुरे अकरम (ﷺ) से मुश्किने कुरैश की हिज्व कहने की इजाज़त चाही तो आपने फ़र्माया कि फिर मेरे नसब का क्या होगा? हस्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं आपको उनसे इस तरह अलग कर लूँगा जैसे बाल गुँधे हुए आटे से खींच लिया जाता है। और मुहम्मद बिन इब्न्बा (इमाम बुखारी के शैख) ने बयान किया, हमसे इब्मान बिन फ़र्क़द ने बयान किया, कहा मैंने हिशाम से सुना, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने बयान किया कि मैंने हस्सान बिन प्राबित (रज़ि.) को बुरा भला कहा क्योंकि उन्होंने भी हज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने में बहुत हिस्सा लिया था। (राजेअ: 3531)

4146. मुझसे हज़रत बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमको

عَلَى مَا تَصِفُونَ ۖ قَالَتْ : وَانصَرَفَ وَلَمْ يَقُلْ شَيْئًا فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَذْرَاهَا قَالَتْ : بِحَمْدِ اللَّهِ لَا بِحَمْدِ أَحَدٍ وَلَا بِحَمْدِكَ. [راجع: 3388]

4144 - حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ نَافِعِ بْنِ عُمَرَ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا كَانَتْ تَقْرَأُ ﴿إِذَا تَلَّوْنَهُ بِالسَّبْكِ﴾ وَتَقُولُ الْوَلِيُّ: الْكُتُوبُ. قَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ وَكَانَتْ أَغْلَمَ مِنْ غَيْرِهَا بِذَلِكَ لِأَنَّهُ نَزَلَ فِيهَا. [طريقه ي: 4752]

4145 - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَتْ : ذَهَبْتُ أَسْبُ حَسَّانَ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَتْ : لَا تَسُبَّهُ فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِخُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَالَتْ عَائِشَةُ : اسْتَأْذَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هِجَاءِ الْمُشْرِكِينَ قَالَ : قَالَ كَيْفَ يَنْسَبِي؟ لَأَسْأَلَنَّ مِنْهُمْ كَمَا تَسْأَلُ الشَّجَرَةَ مِنَ الْعَجِينِ. وَقَالَ مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ لُقَطَةَ سَمِعْتُ هِشَامًا عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَتَيْتُ حَسَّانَ وَكَانَ مِنْ كَثَرِ عَلَيْهَا.

[راجع: 3531]

4146 - حَدَّثَنِي بَشَرُ بْنُ خَالِدٍ أَخْبَرَنَا

मुहम्मद बिन जा'फर ने खबर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें सुलैमान ने, उन्हें अबुज्जुहा ने और उनसे मसरूक ने बयान किया कि हम आइशा (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुए तो उनके हाँ हस्सान बिन प्राबित (रज़ि.) मौजूद थे और उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) को अपने अशआर सुना रहे थे। एक शे'र था जिसका तर्जुमा ये है। वो संजीदा और पाकदामन हैं जिस पर कभी तोहमत नहीं लगाई गई, वो हर सुबह भूखी होकर नादान बहनों का गोशत नहीं खाती। इस पर आइशा (रज़ि.) ने कहा लेकिन तुम तो ऐसे नहीं प्राबित हुए। मसरूक ने बयान किया कि फिर मैंने आइशा (रज़ि.) से अर्ज किया, आप उन्हें अपने यहाँ आने की इजाज़त क्यों देती हैं। जबकि अल्लाह अ तआला उनके बारे में फ़र्मा चुका है कि, और उनमें वो शख्स जो तोहमत लगाने में सबसे ज्यादा ज़िम्मेदार है उसके लिये बड़ा अज़ाब होगा, इस पर उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नाबीना हो जाने से सख़्त और क्या अज़ाब होगा (हस्सान रज़ि. की बस्तरत आख़िर इम्र में चली गई थी) आइशा (रज़ि.) ने उनसे कहा कि हस्सान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की हिमायत किया करते थे। (दीगर मकाम : 4755, 4756)

مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي الصُّخْرِى عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ : دَخَلْنَا عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَعِنْدَهَا حَسَنٌ بْنُ ثَابِتٍ يُنْشِدُهَا شِعْرًا يُشَبِّهُ بِأَبَاتِهِ لَهُ وَقَالَ :

حَسَنٌ رَزَانٌ مَا تَوْنُ بَرِيَّةٍ وَتُصْنِيعُ غُرْمَى مِنْ لُحُومِ الْفَوَائِلِ فَقَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ : لَكِنَّكَ لَسْتَ كَذَلِكَ قَالَ مَسْرُوقٌ : فَقُلْتُ لَهَا : لِمَ تَأْذَنِي لَهُ أَنْ يَدْخُلَ عَلَيْكَ؟ وَقَدْ قَالَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ فَقَالَتْ : وَأَيُّ عَذَابٍ أَشَدُّ مِنَ الْقَمَى؟ قَالَتْ لَهُ : إِنَّهُ كَانَ يَنْالُحُ أَوْ يَهَاجِي عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

[طرفاء ي: ٤٧٥٥، ٤٧٥٦.]

तस्रीह: ये आयत अब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में नाज़िल हुई थी जैसा कि मा'लूम है। हज़रत आइशा (रज़ि.) हस्सान (रज़ि.) की शान में किसी बुरे कलामे को गवारा नहीं करती थीं। हस्सान (रज़ि.) से तोहमत में तोहमत की गलती ज़रूर हुई थी लेकिन जिन सहाबा (रज़ि.) ने भी उसमें गलती से शिकत की थी, वो सब ताइब हो गये थे और उनकी तौबा कुबूल हो गई थी। और बहरहाल हज़रत आइशा (रज़ि.) का दिल गलती से शरीक होने वाले सहाबा (रज़ि.) की तरफ से साफ़ हो गया था लेकिन जब इस तरह का ज़िक्र आ जाता तो दिल का रंजीदा हो जाना एक कुदरती बात थी। यहाँ भी हज़रत आइशा (रज़ि.) ने दो एक चुभते हुए जुम्ले ग़ालिबन इसी अम्र में हज़रत हस्सान (रज़ि.) के बारे में कह दिये हैं। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व फ़ी तर्जुमतिज्जुहरी अनहिल्यति अबी नुऐम मिन तरीक्लिब्नि डययनत अनिज्जुहरी कुन्तु इन्दल्वलीद इब्नि अब्दिल्मलिक फतला हाज़िहिल्आयत वल्लज़ी तवल्ला किबहु मिन्हुम लहु अज़ाबुन अज़ीम फ़काल नज़लत फी अलिथ्यिब्नि अबी त़ालिबिन कालज्जुहरी अस्तहल्लाहुल्अमीर लैसल्अम्क कज़ालिक अखबरनी उर्वतु अन आयशत क़ाल व कैफ़ उखिब्रुक कुलतु अखबरनी उर्वतु अन आयशत अन्नहा नज़लत फी अब्दिल्लाहि बिन उबय निक सलूल व कान बअज़ु मन ला खैर फीहि मिनत्रासिबति तक्ररब इला बनी उमैय्यत बिहाज़िहिल्कज़िबति फहरूफू कौल आयशत इला गैर वजिहही लिइल्मिहिम बिल्हरा फहुम अन अलिथ्यिन फज़न्नू सिहत्तहा हत्ता बय्यनज्जुहरी लिल्वलीद अन्नल्हक्क ख़िलाफ़ ज़ालिक फज़ज़ाहुल्लाहु तआला खैरन व क़द जाअ अनिज्जुहरी अन्न हिशामब्न अब्दिल्मलिक कान यअतकिदु ज़ालिक अयज़न फअख़ज यअकुबुनु शैबत फी मुस्नदिही अनिल्हसनि बिन अलिथ्यिल्हल्वानी अनिशशाफ़िइ क़ाल हदप्ना अम्मी क़ाल दखल सुलैमानु बनु यसार अला हिशामि बिन अब्दिल्मलिक फकाल लहु या सुलैमालज़ी तवल्ला किबहु मन हुव क़ाल अब्दुल्लाहिब्नि उबय क़ाल कज़िब्त बल हुव अली क़ाल अमीरुल्मुमिनीन आलमु बिमा यकूलु फदखलज्जुहरी फकाल या इब्न शिहाब मनिल्लज़ी तवल्ला किबहु क़ाल इब्नु उबय क़ाल कज़िब्त हुव अली क़ाल अना माज़िब ला उबालुक वल्लाहि

लौ नादा मुनादिम्पिनस्समाइ अन्नल्लाह अहल्लल्लकजिब मा कजिब्तु कालल्किर्मानि वअलम अन्न बरात आयशत कतइय्यतुन बिनस्सिल्कुर्आनि व लौ शक्क फ़ीहा अहदुनस्मार काफ़िरन इन्तिहा व ज़ाद फि खैरिल्जारी व हुव मज्हबुशिशअतिल्इमामिय्यति मअ बुगज़िहिम बिहा इन्तिहा (फतहुल्बारी)

खुलासा ये है कि आयत वल्लज्जी तवल्ला किबरहू से मुराद अब्दुल्लाह बिन उबय है, हज़रत अली (रज़ि.) नहीं

बाब 36 : ग़ज़्वा हुदैबिया का बयान

۳۶- باب غزوة الحديبية

हुदैबिया मक्का के करीब एक कुआँ था। आँहज़रत (ﷺ) 6 हिजरी में माहे ज़िलहिज्ज में वहाँ जाकर उतरे थे, वहीं एक कीकर के पेड़ के नीचे बेअतुरिज्वान हुई थी। ये वाक़िया सुलह हुदैबिया से मशहूर है।

और अल्लाह तआला का (सूरह फ़तह में) इश्राद कि,

बेशक अल्लाह तआला मोमिनीन से राज़ी हो गया जब उन्होंने आपसे पेड़ के नीचे बेअत की।

4147. हमसे ख़ालिद बिन मुखलद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा कि मुझसे झालेह बिन कैसान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि हुदैबिया के साल हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले तो एक दिन, रात में बारिश हुई। हुज़ूर (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद हमसे ख़िताब किया और दर्याफ़्त फ़र्माया, मा'लूम है तुम्हारे रब ने क्या कहा? हमने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है, सुबह हुई तो मेरे कुछ बन्दों ने इस हालत में सुबह की कि उनका ईमान मुझ पर था और कुछ ने इस हालत में सुबह की कि वो मेरा इन्कार किये हुए थे, तो जिसने कहा कि हम पर ये बारिश अल्लाह के रिज़्क, अल्लाह की रहमत और अल्लाह के फ़ज़ल से हुई है तो वो मुझ पर ईमान लाने वाला है और सितारों का इन्कार करने वाला है और जो शाख़्स ये कहता है कि ये बारिश फ़लाँ सितारे की ताज़ीर से हुई है तो वो सितारों पर ईमान लाने वाला और मेरे साथ कुफ़र करने वाला है। (राजेअ: 846)

4148. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यज़्हा ने बयान किया, उनसे क़तादाने बयान किया, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने चार उमरे किये और सिवा इस उमरे के जो आपने हज्ज के साथ किया, तमाम उमरे ज़ीक़्रअदा के महीने में किये। हुदैबिया का उमरह भी आप ज़ीक़्रअदा के महीने में करने तशरीफ़ ले गये फिर

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ﴾ الآية.

4147- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ قَالَ : حَدَّثَنِي صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ غَامَ الْحَدِيبَةِ فَأَصَابَنَا مَطَرٌ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَصَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الصُّبْحَ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا فَقَالَ: ((أَتَذَرُونَ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟)) قُلْنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ فَقَالَ: ((قَالَ اللَّهُ أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ بِي، فَأَمَّا مَنْ قَالَ: مَطَرُنَا بِرَحْمَةِ اللَّهِ وَبِرِزْقِ اللَّهِ وَبِفَضْلِ اللَّهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ بِي كَافِرٌ بِالْكُتُوبِ، وَأَمَّا مَنْ قَالَ: مَطَرُنَا يَنْجِمُ كَذَا فَهُوَ مُؤْمِنٌ بِالْكُتُوبِ كَافِرٌ بِي)). [راجع: 846]

4148- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ قَالَ: اغْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَرْبَعَ غُمَرٍ كُلُّهُنَّ فِي ذِي الْقَعْدَةِ إِلَّا الَّتِي كَانَتْ مَعَ حِجَّتِهِ، غُمَرَةٌ مِنَ الْحَدِيبَةِ فِي ذِي

दूसरे साल (उसकी क़ज़ा में) आपने ज़ी क़अदा में उमरह किया और एक उमरह जिअराना से आपने किया था, जहाँ ग़ज्व-ए-हुनैन की ग़नीमत आपने तक्सीम की थी। ये भी ज़ीक़अदा में किया था और एक उमरह हज्ज के साथ किया (जो ज़िल्हिज्ज में किया था) (राजेअ: 1779)

4149. हमसे सईद बिन ख़ीअ ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यहाा बिन अबी कषीर ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सुलह हुदैबिया के साल रवाना हुए, तमाम सहाबा (रज़ि.) ने एहराम बाँध लिया था लेकिन मैंने अभी एहराम नहीं बाँधा था। (राजेअ: 1821)

4150. हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इसाईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने कहा, तुम लोग, सूरह इन्ना फ़तहना में, फ़तह से मुराद मक्का की फ़तह कहते हो। फ़तहे मक्का तो बहरहाल फ़तह थी ही लेकिन हम ग़ज्व-ए-हुदैबिया की बेअते रिज़वान को हकीक़ी फ़तह समझते हैं। उस दिन हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चौदह सौ आदमी थे। हुदैबिया नामी एक कुआँ वहाँ पर था, हमने उसमें से इतना पानी खींचा कि उसके अंदर एक क़तरा भी पानी के नाम पर न रहा। हुज़ूर (ﷺ) को जब ये ख़बर हुई (कि पानी ख़त्म हो गया है) तो आप कुएँ पर तशरीफ़ लाए और उसके किनारे पर बैठकर किसी एक बर्तन में पानी त़लब फ़र्माया। उससे आपने वुजू किया और मज़्मज़ा (कुल्ली) की और दुआ फ़र्माई। फिर सारा पानी उस कुँए में डाल दिया। थोड़ी देर के लिये हमने कुएँ को यूँ ही रहने दिया और उसके बाद जितना हमने चाहा उसमें से पानी पिया और अपनी सवारियों को पिलाया। (राजेअ: 3577)

الْفَقْدَةِ وَغُمْرَةَ مِنَ الْقَامِ الْمُقْبِلِ فِي ذِي الْقَعْدَةِ، وَغُمْرَةَ مِنَ الْجَعْفَرَانِ حَتَّى لَسَمَ غَنَائِمَ خُنَيْنٍ فِي ذِي الْقَعْدَةِ، وَغُمْرَةَ مَعَ خَجَبِهِ. [راجع: 1779]

4149 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ، قَالَ: انْطَلَقْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَامَ الْخُدَيْبِيَّةِ فَأَحْرَمَ اصْحَابُهُ وَلَمْ أَحْرَمِ. [راجع: 1821]

4150 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: تَعْدُونَ أَنَّ الْفَتْحَ فَتْحُ مَكَّةَ وَقَدْ كَانَ فَتْحُ مَكَّةَ فَتْحًا وَنَحْنُ نَعُدُّ الْفَتْحَ بَيْعَةَ الرُّضْوَانِ يَوْمَ الْخُدَيْبِيَّةِ، كَمَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً وَالْخُدَيْبِيَّةُ بَرٌّ فَتَرَحُّنَا فَلَمْ تَتْرَكْ فِيهَا فُطْرَةٌ فَلَبَّغَ ذَلِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَنَابَا فَبَجَلَسَ عَلَى شَفِيرِهَا ثُمَّ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ مَاءٍ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ مَضْمَضَ وَدَعَا ثُمَّ صَبَّ فِيهَا فَتَرَكْنَاهَا غَيْرَ بَعِيدٍ ثُمَّ إِنَّا أَصْدَرْنَا مَا شَبَّنا نَحْنُ وَرِكَابُنَا.

[راجع: 3577]

4151. मुझसे फ़ज़ल बिन यअकूब ने बयान किया, कहा हमसे हसन बिन आयन अबू अलथय्य हरानी ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ यस्ई ने बयान किया कि हमें बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो लोग ग़ज्वा हुदैबिया के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक हज़ार चार सौ की ता'दाद में थे या इससे भी ज़्यादा। एक कुँए

4151 - حَدَّثَنِي فَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ أَعْيَنَ أَبُو عَلِيٍّ الْخَرَّابِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: أَنْبَأَنَا الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

पर पड़ाव हुआ लश्कर ने उसका (सारा) पानी खींच लिया और नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर (ﷺ) कुएँ के पास तशरीफ़ लाए और उसकी मुँडेर पर बैठ गये। फिर फ़र्माया कि एक डोल में इसी कुएँ का पानी लाओ। पानी लाया गया तो आपने उसमें कुल्लनी की और दुआ फ़र्माई। फिर फ़र्माया कि कुएँ को वूँ ही थोड़ी देर के लिये रहने दो। उसके बाद सारा लश्कर खुद भी सैराब होता रहा और अपनी सवारियों को भी पिलाता रहा। यहाँ तक कि वहाँ से उन्होंने कूच किया। (राजेअ: 3577)

4152. हमसे यूसुफ़ बिन ईसाने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फुज़ैल ने, कहा हमसे हुसैन बिन अब्दुरहमान ने, उनसे सालिम बिन अबी अल जअदि ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्वा हुदैबिया के मौक़े पर सारा ही लश्कर प्यासा हो चुका था। रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने एक छागल था, उसके पानी से आपने वुजू किया। फिर सहाबा आपकी खिदमत में हाज़िर हुए तो आपने दरयास्त किया कि क्या बात है? सहाबा बोले कि या रसूलुल्लाह! हमारे पास अब पानी नहीं रहा, न वुजू करने के लिये और न पीने के लिये। सिवा उस पानी के जो आपके बर्तन में मौजूद है। बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) ने अपना हाथ उस बर्तन पर रखा और पानी आपकी उँगलियों के दरम्यान से चश्मे की तरह फूट फूटकर उबलने लगा। रावी ने बयान किया कि फिर हमने पानी पिया भी और वुजू भी किया। (सालिम कहते हैं कि) मैंने जाबिर (रज़ि.) से पूछा कि आप लोग कितनी ता'दाद में थे? उन्होंने बतलाया कि अगर हम एक लाख भी होते तो भी वो पानी काफ़ी हो जाता। वैसे उस वक़्त हमारी ता'दाद पन्द्रह सौ थी।

(राजेअ: 3576)

4153. हमसे सल्लत बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी इरुबा ने, उनसे क़तादा ने कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से पूछा, मुझे मा'लूम हुआ है कि जाबिर (रज़ि.) कहा करते थे कि (हुदैबिया की सुलह के मौक़े पर) सहाबा की ता'दाद चौदह सौ थी। इस पर हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि मुझसे जाबिर

يَوْمَ الْخُدَيْبَةِ أَلْفًا وَارْبَعِينَ أَوْ أَكْثَرَ فَنَزَلُوا عَلَى بَنِي قُرَيْظَةَ فَأَتَوْا النَّبِيَّ ﷺ فَأَتَى الْبَيْتَ وَقَعَدَ عَلَى حُجَيْرِهَا ثُمَّ قَالَ : ((الْعَرَبُ يَذَلُّونَ مِنِّي مَالِيَا)) فَأَيُّ بِهِ قَبَضَ فِدَعًا ثُمَّ قَالَ : ((دَعُوهُمَا سَاعَةً)) فَأَرْوَوْا أَنْفُسَهُمْ وَرِكَابَهُمْ حَتَّى ارْتَحَلُوا.

[راجع: ٣٥٧٧]

٤١٥٢ - حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا ابْنُ لُصَيْبٍ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سَالِمِ بْنِ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ : عَطِشَ النَّاسُ يَوْمَ الْخُدَيْبَةِ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَنَبَّهٌ بِدَيْبِ رَكْوَةٍ قَبْرًا مِنْهَا ثُمَّ أَقْبَلَ النَّاسُ نَحْوَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَا لَكُمْ؟)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَيْسَ عِنْدَنَا مَاءٌ تَعَوُّثًا بِهِ وَلَا لَشَرَبٍ إِلَّا مَا فِي رَكْوَتِكَ قَالَ فَوَضَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَهُ فِي الرُّكْوَةِ فَمَجَلَّ الْمَاءَ يَقُورُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ كَأَمْثَالِ الْمُنُونِ قَالَ: لَشَرِبْنَا وَتَعَوَّثْنَا فَقُلْتُ لِجَابِرٍ: كَمْ كُنْتُمْ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ : لَوْ كُنَّا بِمِائَةِ أَلْفٍ لَكَفَانَا كَمَا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً.

[راجع: ٣٥٧٦]

٤١٥٣ - حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَادَةَ قُلْتُ لِسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: بَلَّغْنِي أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ كَانَ يَقُولُ: كَانُوا أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً فَقَالَ لِي سَعِيدٌ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ

(रज़ि.) ने कहा था कि इस मौके पर पन्द्रह सौ सहाबा (रज़ि.) मौजूद थे। जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से हुदैबिया में बेअत की थी। अबू दाऊद त्रियालिसी ने बयान किया, हमसे कुरैह बिन खालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और मुहम्मद बिन बश्शार ने भी अबू दाऊद त्रियालिसी के साथ इसको रिवायत किया है। (रज़ेअ: 3576)

4154. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़व-ए-हुदैबिया के मौका पर फ़र्माया था कि तुम लोग तमाम ज़मीन वालों में सबसे बेहतर हो। हमारी ता'दाद उस मौके पर चौदह सौ थी। अगर आज मेरी आँखों में बीनाई होती तो मैं उस पेड़ का मुक़ाम बताता। इस रिवायत की मुताबअत आ'मश ने की। उनसे सालिम ने सुना और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना कि चौदह सौ सहाबा ग़ज़व-ए-हुदैबिया में थे। (रज़ेअ: 3576)

4155. और अब्दुल्लाह बिन मुआज़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुरह ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि पेड़ वालों (बेअते रिज़्वान करने वालों) की ता'दाद तेरह सौ थी। क़बीला असलम मुहाजिरीन का आठवाँ हिस्सा थे।

इस रिवायत की मुताबअत मुहम्मद बिन बश्शार ने की, उनसे अबू दाऊद त्रियालिसी ने बयान किया और उनसे शुअबा ने।

4156. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनस ने ख़बर दी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उन्हें कैस बिन अबी हाज़िम ने और उन्होंने मिरदास असलमी (रज़ि.) से सुना, वो अस्हाबे शजरह (ग़ज़व-ए-हुदैबिया में शरीक होने वालों) में से थे, वो बयान करते थे कि पहले झालेहीन क़ब्ज़ किये जाएँगे। जो ज़्यादा झालेह होगा उसकी रूह सबसे पहले और जो उसके बाद के दर्जे का होगा उसकी उसके बाद फिर रही और बेकार खज़ूर और जौ की तरह बेकार लोग बाक़ी रह जाएँगे जिनकी अल्लाह के नज़दीक कोई क़द्र नहीं होगी। (दीगर मक़ाम: 6434)

كَانُوا عَمَسَ عَشْرَةَ مِائَةِ أَلْفَيْنِ بَاقِيَا
النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْخُدَيْبِيَّةِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ:
حَدَّثَنَا قُرَّةٌ عَنْ قَتَادَةَ. تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ
بَشَّارٍ. [رَاجِع: ٣٥٧٦]

٤١٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَزْزَانَ قَالَ
عَمْرُو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
يَوْمَ الْخُدَيْبِيَّةِ: ((أَنْتُمْ خَيْرُ أَهْلِ الْأَرْضِ))
وَكُنَّا أَلْفًا وَارْبَعِينَ وَتَوَرَّعْتُ أَنْصُرُ الْيَوْمَ
لَأَرْبَعَكُمْ مَكَانَ الشَّجَرَةِ. تَابَعَهُ الْأَعْمَشُ
سَمِعَ سَالِمًا سَمِعَ جَابِرًا أَلْفًا وَارْبَعِينَ.

[رَاجِع: ٣٥٧٦]

٤١٥٥- وَلَقَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا
أَبِي حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرُو بْنِ مُرَّةٍ
حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا كَانَ أَصْحَابُ الشَّجَرَةِ أَلْفًا
وَأَرْبَعِينَ وَكَانَتْ أَسْلَمُ ثَمَنُ الْمُهَاجِرِينَ.
تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ
حَدَّثَنَا شُعْبَةُ.

٤١٥٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى
أَخْبَرَنَا عِيسَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ، أَنَّهُ
سَمِعَ مِرْدَاسًا الْأَسْلَمِيَّ يَقُولُ: وَكَانَ مِنْ
أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ يَقْبِضُ الصَّالِحُونَ
الْأَوَّلَ فَلَا أَوَّلَ وَتَبَقِيَ حَفَاةٌ كَحَفَاةِ التَّمْرِ
وَالشَّعِيرِ لَا يَتَبَا اللَّهُ بِهِمْ شَيْئًا.

[طَرَفُهُ فِي: ٦٤٣٤]

4157, 58. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे इब्ना ने, उनसे खलीफा मरवान और मिस्वर बिन मखरमा ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर तक्रीबन एक हज़ार सहाबा (रज़ि.) को साथ लेकर खाना हुए। जब आप जुल हुलैफ़ा पहुँचे तो आपने कुर्बानी के जानवर को हार पहनाया और उन पर निशान लगाया और इमरह का एहराम बाँधा। मैं नहीं शुमार कर सकता कि मैंने ये हदीष सुफयान बिन यसार से कितनी दफ़ा सुनी और एक बार ये भी सुना कि वो बयान कर रहे थे कि मुझे जुहरी से निशान लगाने और क़लादा पहनाने के बारे में याद नहीं रहा। इसलिये मैं नहीं जानता, उससे उनकी मुराद सिर्फ़ निशान लगाने और क़लादा पहनने से थी या पूरी हदीष से थी।

(राजेअ: 1694, 1695)

इस हदीष में सुलहे हुदैबिया का ज़िक्र है। हदीष और बाब में यही मुताबक़त है।

4159. हमसे हसन बिन ख़लफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे इस्हाक़ बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र वरक़ा अबिन इमर ने, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने बयान किया और उनसे कअब बिन इज़रह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें देखा कि जूएँ उनके चेहरे पर गिर रही हैं तो आपने दरयाफ़्त किया कि क्या इससे तुम्हें तकलीफ़ होती है? वो बोले कि जी हाँ। इस पर हज़ूर (ﷺ) ने उन्हें सर मुँडवाने का हुक्म दिया। आप उस वक़्त हुदैबिया में थे (इमरह के लिये एहराम बाँधे हुए) और उनको ये मा'लूम नहीं हुआ था कि वो इमरह से रोके जाएँगे। हुदैबिया ही में उनको एहराम खोल देना पड़ेगा। बल्कि उनकी तो ये आरज़ू थी कि मक्का में किसी तरह दाख़िल हो जाए। फिर अल्लाह तआला ने फ़िदया का हुक्म नाज़िल फ़र्माया (था'नी एहराम की हालत में) सर मुँडवाने वग़ैरह पर, उस वक़्त हज़ूर (ﷺ) ने कअब को हुक्म दिया कि एक फ़िर्क़ अनाज छ: मिस्कीनों को खिला दें या एक बकरी कुर्बानी करें या तीन दिन रोज़े रखें।

(राजेअ: 1814)

4157, 58 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرُورَةَ، عَنْ مَرْوَانَ وَالْمُسَوِّرِ بْنِ مَعْرُومَةَ قَالَا: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ عَامَ الْخُدَيْبَةِ فِي بَضْعِ عَشْرَةِ بَائَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَلَمَّا كَانَ بِبَيْدِ الْخُلَيْفَةِ قُلْدَ الْهَذِيِّ وَالْشَّعْرَةِ وَآخِرَمَ مِنْهَا لَا أَحْصِي كَمَّ مَسَعَتِهِ مِنْ سُفْيَانَ، حَتَّى سَمِعْتُهُ يَقُولُ: لَا أَحْفَظُ مِنَ الزُّهْرِيِّ الْإِشْعَارَ وَالْتَقْلِيدَ، فَلَا أَذْرِي يَعْْنِي مَوْضِعَ الْإِشْعَارِ وَالْتَقْلِيدِ أَوْ الْخُدَيْبِ كُلَّهُ.

(راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥)

4159 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ خَلْفٍ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُونُسَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ وَرَقَاءَ عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي لَيْلَى عَنْ كُثَيْبِ بْنِ عُجْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَأَى وَقَمَلَهُ يَسْقُطُ عَلَى وَجْهِهِ فَقَالَ: (أَيُّ ذِيكَ هَؤُلَاءُ؟) قَالَ: نَعَمْ. فَأَمَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَخْلُقَ. وَهُوَ بِالْخُدَيْبَةِ وَلَمْ يَمَيِّنْ لَهُمْ أَنَّهُمْ يَجْلُونَ بِهَا وَهُمْ عَلَى طَمَعٍ أَنْ يَدْخُلُوا مَكَّةَ فَكَرَزَ اللَّهُ الْفَيْدَةَ، فَأَمَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ - أَنْ يُطْعِمَ لَوْحًا بَيْنَ سِتَةِ مَسَاكِينَ أَوْ يُهْدِيَ شَاةً أَوْ يَصُومَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ.

[راجع: ١٨١٤]

4161, 62. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह) ने बयान किया, उनसे जैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) के साथ बाज़ार गया। हज़रत उमर (रज़ि.) से एक नौजवान औरत ने मुलाक़ात की और अर्ज़ की कि या अमीरल मोमिनीन! मेरे शौहर की वफ़ात हो गई है और चन्द छोटी-छोटी बच्चियाँ छोड़ गये हैं। अल्लाह की क़सम! कि अब न उनके पास बकरी के पाये हैं कि उनको पका लें, न खेती है, न दूध के जानवर हैं। मुझे डर है कि वो फ़क्कर व फ़ाका से हलाक न हो जाएँ। मैं खुफ़ाफ़ बिन ऐमाअ शिफ़ारी की बेटी हूँ। मेरे वालिद अहज़रत (ﷺ) के साथ ग़ज्व-ए-हुदैबिया में शरीक थे। ये सुनकर हज़रत उमर (रज़ि.) उनके पास थोड़ी देर के लिये खड़े हो गये, आगे नहीं बढ़े। फिर फ़र्माया, भरहबा, तुम्हारा ख़ानदानी ता'ल्लुक तो बहुत क़रीबी है। फिर आप एक बहुत क़वी ऊँट की तरफ़ मुड़े जो घर में बँधा हुआ था और उस पर दो बोरे ग़ल्ले से भरे हुए रख दिये। उन दोनों बोरो के दरम्यान रुपया और दूसरी ज़रूरत की चीज़ें और कपड़े रख दिये और उसकी मकेल उनके हाथ में थमाकर फ़र्माया कि उसे ले जा, ये ख़तम न होगा इससे पहले ही अल्लाह तआला तुम्हें फिर इससे बेहतर देगा। एक साहब ने उस पर कहा, या अमीरल मोमिनीन! आपने उसे बहुत दे दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, तेरी माँ तुझे रोये, अल्लाह की क़सम! इस औरत के वालिद और इसके भाई जैसे अब भी मेरी नज़रों के सामने हैं कि एक मुहत तक एक क़िले के मुहासिरे में वो शरीक रहे, आख़िर उसे फ़तह कर लिया। फिर हम सुबह को उन दोनों का हिस्सा माले ग़नीमत से वसूल कर रहे थे।

٤١٦١، ٤١٦٢ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : خَرَجْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِلَى السُّوقِ فَلَحِقَتْ عُمَرَ امْرَأَةٌ شَابَةٌ فَقَالَتْ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ هَلْكَ زَوْجِي وَتَرَكَ صِيتَهُ صِفَارًا وَاللَّهِ مَا يَنْطَبِحُونَ كَرَاهًا، وَلَا لَهُمْ زَرْعٌ وَلَا حَرْثٌ، وَخَشِيتُ أَنْ تَأْكُلَهُمُ الصُّبُعُ، وَأَنَا بِنْتُ خُفَّافِ بْنِ إِسْمَاءَ الْفُقَارِيِّ وَقَدْ شَهِدَ أَبِي الْخُدَيْبِيَّةَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَفَ مَعَهَا عُمَرُ وَلَمْ يَمْضِ، ثُمَّ قَالَ : مَرْحَبًا بِنَسَبِ قُرَيْبٍ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى بَيْتِهِ ظَهِيرٌ كَانَ مَرْبُوطًا فِي الدَّارِ فَحَمَلَ عَلَيْهِ غَرَارَتَيْنِ مَلَأَمَا طَعَامًا وَحَمَلَ بَيْنَهُمَا نَفَقَةً وَنِيَابًا، ثُمَّ تَوَلَّاهَا بِخَطَامِهِ. ثُمَّ قَالَ : اقْتَادِيهِ فَلَنْ يَقْنَى حَتَّى يَأْتِيَكُمْ اللَّهُ بِخَيْرٍ، فَقَالَ رَجُلٌ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اكْتَوَزَتْ لَهَا، قَالَ عُمَرُ : فَكَيْفَ تَكُنْ لَكَ أُمُّكَ وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَى أَبَا هَذِهِ وَأَخَاهَا قَدْ حَاصَرَا حِمًى زَمَانًا فَلَفَّتَحَاهُ ثُمَّ أَصْبَحْنَا نَسْتَفِيءُ سَهْمَانَهُمَا فِيهِ.

4162. मुझसे मुहम्मद बिन राफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू अमर शबाबा बिन सवार फ़ज़ारी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने, और उनसे उनके वालिद (मुसय्यिब ने हज़रत रज़ि.) से बयान किया कि मैंने वो पेड़ देखा था लेकिन फिर बाद मैं जब आया तो मैं उसे नहीं पहचान सका। महमूद ने बयान किया कि फिर

٤١٦٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانَةُ بْنُ سَوَّارٍ أَبُو عُمَرَ الْفُقَارِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ : لَقَدْ رَأَيْتُ الشَّحْرَةَ ثُمَّ نَبَّهَا بَعْدَ فَلَمْ أَعْرِفْهَا قَالَ مَخْمُودٌ : ثُمَّ

बाद में वो पेड़ मुझे याद न रहा।

(दीगर मक़ाम : 4163, 4164, 4165)

4163. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे इसाईल ने, उनसे तारिक बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि हज्र के इरादे से जाते हुए मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जो नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने पूछा कि ये कौनसी मस्जिद है? उन्होंने बताया कि ये वही पेड़ है जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बेअतुरिज्जान ली थी। फिर मैं सईद बिन मुसय्यिब के पास आया और उन्हें उसकी ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद मुसय्यिब बिन हज़न ने बयान किया, वो उन लोगों में थे जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से इस पेड़ के तले बेअत की थी। कहते थे जब मैं दूसरे साल वहाँ गया तो उस पेड़ की जगह को भूल गया। सईद ने कहा आँहज़रत (ﷺ) के अस्हाब तो उस पेड़ को पहचान न सके। तुम लोगों ने कैसे पहचान लिया (उसके तले मस्जिद बना ली) तुम उनसे ज़्यादा इल्म वाले ठहरे। (राजेअ : 4162)

4164. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने, कहा हमसे तारिक बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे उनके वालिद ने कि उन्होंने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस पेड़ के तले बेअत की थी। कहते थे कि जब हम दूसरे साल उधर गये तो हमें पता ही नहीं चला कि वो कौनसा पेड़ था। (राजेअ : 4162)

बहरहाल बाद में हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पेड़ को कटवा दिया ताकि वो परस्तिशगाह (पूजाघर) न बन जाए।

4165. हमसे कुबैसा बिन उक्रबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान घौरी ने बयान किया, उनसे तारिक बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि सईद बिन मुसय्यिब की मजलिस में अशशज़र का ज़िक्र हुआ तो वो हंसे और कहा कि मेरे वालिद ने मुझे बताया कि वो भी उस पेड़ के तले बेअत में शरीक थे। (राजेअ : 4162)

4166. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा

أَبُو عَمْرٍو

(أطرافه في : ٤١٦٣، ٤١٦٤، ٤١٦٥).

٤١٦٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ طَارِقِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: انْطَلَقْتُ حَاجًّا فَمَرَرْتُ بِقَوْمٍ يُصَلُّونَ، قُلْتُ: مَا هَذِهِ الْمَسْجِدُ؟ قَالُوا: هَذِهِ الشَّجَرَةُ حَيْثُ بَاتَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْعَةَ الرُّضْوَانِ، فَاتَيْتُ سَعِيدَ بْنِ الْمُسَيَّبِ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ سَعِيدٌ: حَدَّثَنِي أَبِي أَنَّهُ كَانَ يَمْنُنُ بَاتَعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، قَالَ: فَلَمَّا خَرَجْنَا مِنَ الْغَامِ الْمُقْبِلِ نَسِينَاهَا فَلَمْ نَقْلِبْ عَلَيْهَا فَقَالَ سَعِيدٌ: إِنَّ اصْخَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ لَمْ يَعْلَمُوهَا وَعَلِمْتُمُوهَا أَنْتُمْ فَأَنْتُمْ أَكْثَرُ.

[راجع: ٤١٦٢].

٤١٦٤ - حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا طَارِقٌ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ كَانَ يَمْنُنُ بَاتَعَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَرَجَعْنَا إِلَيْهَا الْغَامِ الْمُقْبِلِ فَغَيِبَتْ عَنْنَا.

[راجع: ٤١٦٢]

٤١٦٥ - حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ طَارِقٍ قَالَ: ذُكِرَتْ عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ الشَّجَرَةُ فَضَحِكَ فَقَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي وَكَانَ شَهِيدًا. [راجع: ٤١٦٢].

٤١٦٦ - حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ

हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर बिन मुरहने, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफा (रज़ि.) से सुना, वो बेअते रिज़वान में शरीक थे। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में जब कोई सदका लेकर हाज़िर होता तो आप दुआ करते कि ऐ अल्लाह! इस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा। चुनौचे मेरे वालिद भी अपना सदका लेकर हाज़िर हुए तो हुज़ूर (ﷺ) ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! आले अबी औफा (रज़ि.) पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा। (राजेअ : 1497)

4167. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे उनके भाई अब्दुल हमीद ने, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे अमर बिन यह्या ने और उनसे अब्बाद बिन तमीम ने बयान किया कि हर्रा की लड़ाई में लोग अब्दुल्लाह बिन हंज़ला (रज़ि.) के हाथ पर (यज़ीद के खिलाफ़) बेअत कर रहे थे। अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने पूछा कि इब्ने हंज़ला से किस बात पर बेअत की जा रही है? तो लोगों ने बताया कि मौत पर। इब्ने ज़ैद ने कहा कि रसूल करीम (ﷺ) के बाद अब मैं किसी से भी मौत पर बेअत नहीं करूँगा। वो हुज़ूर अक़रम (ﷺ) के साथ ग़ज़व-ए-हुदबिया में शरीक थे। (राजेअ : 2959)

जहाँ आँदुज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से मौत पर बेअत ली थी।

4168. हमसे यह्या बिन यअला मुहारिबी ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अयास बिन सलमा बिन अक्रवा ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, वो अस्हाबे शजरह में से थे, उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जुम्आ की नमाज़ पढ़कर वापस हुए तो दीवारों का साया अभी इतना नहीं हुआ था कि हम उसमें आराम कर सकें।

4169. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया कि हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया कि मैंने सलमा बिन अक्रवा (रज़ि.) से पूछा कि सुलह हुदैबिया के मौके पर आप लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से किस चीज़ पर बेअत की थी? उन्होंने बतलाया कि मौत पर। (राजेअ : 2960)

4170. मुझसे अहमद बिन इश्काब ने बयान किया, कहा हमसे

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةٍ قَالَ: سَمِعْتُ عِنْدَ اللَّهِ تَنْ أَبِي أَوْفَى وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا آتَاهُ قَوْمٌ بِصَدَقَةٍ قَالَ: اللَّهُمَّ عَلِّمْهُمْ. فَاتَاهُ أَبِي بِصَدَقَةٍ فَقَالَ: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي أَوْفَى. [راجع: 1497]

4167- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَحْمَدَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَمْرٍو بْنِ يَحْيَى عَنْ عِيَادِ بْنِ تَمِيمٍ قَالَ لَمَّا كَانَ يَوْمُ الْحَرَّةِ وَالنَّاسُ يَأْبِغُونَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَنْظَلَةَ فَقَالَ ابْنُ رُبَيْدٍ: عَلَى مَا يَأْبِغُ ابْنُ حَنْظَلَةَ النَّاسَ؟ قِيلَ لَهُ: عَلَى الْمَوْتِ، قَالُوا: لَا يَأْبِغُ عَلَى ذَلِكَ أَحَدًا بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَكَانَ شَهِيدَ مَعْدِنِ الْحُدَيْبِيَةِ [راجع: 2959]

4168- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَعْلَى الْمُخَارِبِيُّ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا إِيَّاسُ بْنُ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ، قَالَ: كُنَّا نَصَلِّيُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْخُتْمَةَ ثُمَّ تَنْصَرِفُ وَلَيْسَ لِلْحَبِطَانِ ظِلٌّ نَسْتَقِلُّ فِيهِ.

4169- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ بَرِيدِ بْنِ أَبِي غَنْدٍ قَالَ: قُلْتُ لِسَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ بَايَعْتُمْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ؟ قَالَ: عَلَى الْمَوْتِ [راجع: 2960]

4170- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِشْكَابٍ

मुहम्मद बिन फुजैल ने बयान किया, उनसे अला बिन मुसय्यिब ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, मुबारक हो! आपको नबी करीम (ﷺ) की खिदमत नसीब हुई और हुजूर (ﷺ) से आपने शजर (पेड़) के नीचे बैअत की। उन्होंने कहा बेटे! तुम्हें मा'लूम नहीं कि हमने हुजूर (ﷺ) के बाद क्या क्या काम किये हैं।

4171. हमसे इस्हाक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सल्लेह ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया ने बयान किया, वो सलाम के बेटे हैं, उनसे यह्या ने, उनसे अबू किलाबा ने और उन्हें श्राबित बिन ज़ह्हाक (रज़ि.) ने खबर दी कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पेड़ के नीचे बैअत की थी। (राजेअ: 1363)

4172. मुझसे अहमद बिन इस्हाक ने बयान किया, कहा हमसे इब्मान बिन उमर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने खबर दी, उन्हें क़तादा ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि (आयत) बेशक हमने तुम्हें खुली हुई फ़तह दी, ये फ़तह मुलहे हुई बिया थी। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया हुजूर (ﷺ) के लिये तो मरहला आसान है (कि आपकी तमाम अगली और पिछली लज़ि़शें मुआफ़ हो चुकी हैं) लेकिन हमारा क्या होगा? इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, इसलिये कि मोमिन मर्द और मोमिन औरतें जन्नत में दाखिल की जाएंगी जिसके नीचे नहरें जारी होंगी। शुअबा ने बयान किया कि फिर मैं कूफ़ा आया और क़तादा से पूरा वाकिया बयान किया, फिर मैं दोबारा क़तादा की खिदमत में हाज़िर हुआ और उनके सामने उसका ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि, बेशक मैंने तुम्हें खुली फ़तह दी है, की तफ़सीर तो अनस (रज़ि.) से रिवायत है लेकिन उसके बाद हनीअम मरीआ (या'नी हुजूर ﷺ के लिये तो हर मरहले आसान है) ये तफ़सीर इकिमा से मन्कूल है। (दीगर मक़ाम: 4834)

4173. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर अक्दी ने बयान किया, कहा हमसे इम्राईल बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे मिजज़ा बिन ज़ाहिर

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ قُسَيْبٍ، عَنْ الْقَلَاءِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ : لَقِيتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَارِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقُلْتُ: طَوْبِي لَكَ صَاحِبَتِ النَّبِيِّ ﷺ وَبَايَعْتَهُ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي إِنَّكَ لَا تَذَرِي مَا أَخَذْنَا بَعْدَهُ.

4171 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّ نَابِتَ الصَّخَاوِي أَخْبَرَهُ أَنَّهُ بَايَعَ النَّبِيَّ ﷺ تَحْتَ الشَّجَرَةِ.

[راجع: 1363]

4172 - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ «إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا» قَالَ الْحَذِيثُ: قَالَ أَصْحَابُهُ: هَيْبًا مَرِينَا لِمَا لَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ ﷻ الْيُدْخِلُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ قَالَ شُعْبَةُ: فَقَدِمْتُ الْكُوفَةَ فَخَدْتُ بِهِذَا كُلَّهُ عَنْ قَتَادَةَ ثُمَّ رَجَعْتُ فَذَكَرْتُ لَهُ فَقَالَ: أَمَا «إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ» فَعَنْ أَنَسٍ: وَأَمَا هَيْبًا مَرِينَا فَعَنْ عِكْرِمَةَ.

[طرفة: 4834]

4173 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو غَامِرٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ مَخْزُومَةَ بِنِ زَاهِرِ الْأَسْلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ، وَكَانَ

असलमी ने और उनसे उनके वालिद ज़ाहिर इब्ने अस्वद (रज़ि.) ने बयान किया, वो बेअते रिज़्वान में शरीक थे। उन्होंने बयान किया कि हौंडी में मैं गधे का गोशत उबाल रहा था कि एक मुनादी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ से ऐलान किया कि आहज़रत (ﷺ) तुम्हें गधे के गोशत के खाने से मना फ़र्माते हैं।

4174. और मिज़्ज़ात ने अपने ही क़बीले के एक सहाबी के बारे में जो बेअते रिज़्वान में शरीक थे और जिनका नाम अहबान बिन औस (रज़ि.) था, नक़ल किया कि उनके एक घुटने में तकलीफ़ थी, इसलिये जब वो सज़्दा करते तो उस घुटने के नीचे कोई नरम तकिया रख लेते थे।

हज़रत ज़ाहिर बिन अस्वद (रज़ि.) बेअते रिज़्वान वालों में से हैं। कूफ़ा में सुकूनत पज़ीर (निवासी) हो गये थे। इसलिये उनको कूफ़ियों में गिना गया है। उनसे बुखारी में यही एक हदीष मरवी है।

4175. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अदी ने, उनसे शुअबा ने, उनसे यहाा बिन सईद ने, उनसे बशीर बिन यसार ने और उनसे सुवेद बिन नोअमान (रज़ि.) ने बयान किया, वो बेअते रिज़्वान में शरीक थे कि गोया अब भी वो मंज़र मेरी आँखों के सामने है जब रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके सहाबा (रज़ि.) के सामने सत्तू लाया गया, जिसे उन हज़रात ने पिया। इस रिवायत की मुताबअत मुआज़ ने शुअबा से की है। (राजेअ: 209)

4176. हमसे मुहम्मद बिन हातिम बिन बज़ीअ ने बयान किया, कहा हमसे शाज़ान (अस्वद बिन आभिर) ने, उनसे शुअबा ने, उनसे अबू हम्ज़ा ने बयान किया कि उन्होंने आइज़ बिन अम्र (रज़ि.) से पूछा, वो नबी करीम (ﷺ) के सहाबी थे और बेअते रिज़्वान में शरीक थे कि क्या वित्र की नमाज़ (एक रकअत और पढ़कर) तोड़ी जा सकती है? उन्होंने कहा कि अगर शुरू रात में तू ने वित्र पढ़ लिया हो तो आख़िर रात में न पढ़ो।

مِمَّنْ شَهِدَ الشَّجَرَةَ قَالَ: إِنِّي لَأَوَقِدُ تَحْتَ الْقَيْزِرِ بِلُحُومِ الْخُمُرِ إِذَا نَادَى مُنَادِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَنْهَاكُمُ عَنْ لُحُومِ الْخُمُرِ.

٤١٧٤- وَعَنْ مَجْزَأَةَ عَنْ رَجُلٍ مِنْهُمْ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ اسْمُهُ أَقْيَانُ بْنُ أَوْسٍ، وَكَانَ أَشْتَكَى رُكْبَتَهُ وَكَانَ إِذَا سَجَدَ جَعَلَ تَحْتَ رُكْبَتِهِ وَمَادَّةً.

٤١٧٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ يُثَيْرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ الثُّعْمَانِ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ، كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ أَتَوْا بِسَوِيقٍ فَلَاكُوهَ. تَابَعَهُ مُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ.

[راجع: ٢٠٩]

٤١٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ بْنُ بَرْيَعٍ حَدَّثَنَا شَاذَانٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ قَالَ: سَأَلْتُ غَابِدَ بْنَ عَمْرٍو، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ هَلْ يُنْقَضُ الْوُتْرُ؟ قَالَ: إِذَا أَوْتَرْتَ مِنْ أَوَّلِهِ فَلَا تُوتِرَ مِنْ آخِرِهِ.

तशरीह:

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, इज़ा औतरलमर्त बुम्म नाम अराद अंग्यततव्वअ सल्ला युसल्ली रकअतन लियुमीरल्वित्क शफ़अन बुम्म यततव्वअ मा शाअ बुम्म यूतिर मुहाफ़ज़तन अला क़ौलिही इज़अलू आख़िर सल्लातिकुम बिल्लैलि वित्कन व युसल्ली ततव्वअन मा शाअ व ला यन्कुज़ वित्क व यक्तफी बिल्लज़ी तक्रहम फअज़ाब बिइखितयारिस्सिफतिष्षानियति फ़क़ाल इज़ा औतर्त मिन औव्वलिही फ़ला वूतिर मिन आख़िरिही व हाज़िहिलमसअलतु फ़ौहा अस्सलफु फकान इब्नु उमर थरा नक्ज़ल्विति वस्सहीह इन्दशाफ़िइ अन्नहू ला यन्कुज़ कमा फ़ी हदीथिलबाबि व हुव क़ौलुलमलिकिय्य (फ़त्ह) या'नी मतलब ये कि जब आदमी सोने

से पहले वित्र पढ़ ले और फिर रात को उठकर नफ़ल पढ़ना चाहे तो क्या वो एक रकअत पढ़कर पहले वित्र को शुफअ (जोड़ा) बना सकता है फिर उसके बाद जिस क़दर चाहे नफ़ल पढ़े और आखिर में फिर वित्र पढ़ ले। इस हदीष की ता'मील के लिये जिसमें इर्शाद है कि रात की आखिरी नमाज़े वित्र होनी चाहिये या दूसरी सूरत ये कि वित्र को शुफअ बनाकर न तोड़े बल्कि जिस क़दर चाहे रात को उठकर नफ़ल नमाज़ पढ़ ले और वित्र के लिये पहले ही पढ़ी हुई रकअत को काफ़ी समझे पस दूसरी सूरत के इख़्तियार करने का जवाब दिया है और कहा कि जब तुम पहले वित्र पढ़ चुके तो अब दोबारा ज़रूरत नहीं है। इस मसले में सलफ़ का इख़्तिलाफ़ है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) वित्र को दोबारा तोड़कर पढ़ने के काइल थे और शाफ़िइया का क़ौल सहीह यही है कि इसे न तोड़ा जाए जैसा कि हदीषे बाब में है। मालिकिया का भी यही क़ौल है। वल्लाहु आलम।

हज़रत आइज़ बिन अमर मदनी (रज़ि.) बेअते रिज़्वान वालों में से हैं। आखिर में बसरा में सकूनत कर ली थी। उनसे रिवायत करने वाले ज़्यादा बसरी हैं।

4177. मुझसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने और उन्हें उनके वालिद असलम ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी सफ़र या'नी (सफ़रे हुदैबिया) में थे, रात का वक़्त था और उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) आपके साथ साथ थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने आपसे कुछ पूछा लेकिन (उस वक़्त आप वह्य में मशगूल थे, हज़रत उमर रज़ि. को ख़बर न थी) आपने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने फिर पूछा, आपने फिर कोई जवाब नहीं दिया, उन्होंने फिर पूछा, आपने उस मर्तबा भी कोई जवाब नहीं दिया। इस पर उमर (रज़ि.) ने (अपने दिल में) कहा, उमर! तेरी मौँ तुझ पर रोये, रसूलुल्लाह (ﷺ) से तुमने तीन बार सवाल किया, हज़ूर (ﷺ) ने तुम्हें एक बार भी जवाब नहीं दिया। उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने अपने ऊँट को ऐड़ लगाई और मुसलमानों से आगे निकल गया। मुझे डर था कि कहीं मेरे बारे में कोई वह्य न नाज़िल हो जाए। अभी थोड़ी देर हुई थी कि मैंने सुना, एक शख्स मुझे आवाज़ दे रहा था। उन्होंने बयान किया कि मैंने सोचा कि मैं तो पहले ही डर रहा था कि मेरे बारे में कहीं कोई वह्य नाज़िल न हो जाए, फिर मैं हज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको सलाम किया। आपने फ़र्माया कि रात मुझ पर एक सूरत नाज़िल हुई है और वो मुझे तमाम कायनात से ज़्यादा अज़ीज़ है जिस पर सूरज तुलूअ होता है, फिर आपने सूरह, इन्ना फ़तहना लका फ़तहम् मुबीना, (बेशक मैंने आपको खुली हुई फ़तह दी है) की तिलावत फ़र्माई।

(दीगर मक़ाम: 4833, 5012)

4177- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ اسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَسِيرُ فِي بَعْضِ اسْفَارِهِ وَكَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسِيرُ مَعَهُ لَيْلًا فَسَأَلَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَنْ شَيْءٍ فَلَمْ يُجِبْهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، وَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: تَكَلَّفْتَ أَمْلَكَ يَا عُمَرُ فَوَرَّتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، كُلُّ ذَلِكَ لَا يُجِيبُكَ قَالَ عُمَرُ: فَخَرْتُكَ بِعَبْرِي ثُمَّ تَقَدَّمْتُ أَمَامَ الْمُسْلِمِينَ وَخَشِيتُ أَنْ يَنْزَلَ فِي قُرْآنٍ فَمَا تَبَيَّنْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ بِي قَالَ: فَقُلْتُ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ نَزْلٌ فِي قُرْآنٍ وَجِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: ((لَقَدْ أَنْزَلْتُ عَلَيْكَ اللَّيْلَةَ سُورَةً لَهَا أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ))، ثُمَّ قَرَأَ: ((إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا))

[اصروءى . ٤٨٣٣ . ١٢ - ٥]

तशरीह: आँहजरत (ﷺ) पर सूरह इन्ना फतहना का नुजूल हो रहा था। हजरत उमर (रज़ि.) को ये मा'लूम हुआ, इसलिये वो बार बार पूछते रहे मगर आँहजरत (ﷺ) खामोश रहे जिसको हजरत उमर (रज़ि.) ने आँहजरत (ﷺ) की नाराज़गी पर महमूल किया। बाद में हक़ीक़त हाल के खुलने पर सहीह कैफ़ियत मा'लूम हुई। सूरह इन्ना फतहना का उस मौक़े पर नुजूल इशाअते इस्लाम के लिये बड़ी बशारत थी इसलिये आँहजरत (ﷺ) ने इस सूत को सारी कायनात से अज़ीज़तरीन बतलाया।

4178, 79. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन जययान ने बयान किया, कहा कि जब जुहरी ने ये हदीस बयान की (जो आगे मज़कूर हुई है) तो उसमें से कुछ मैंने याद रखी और मअमर ने उसको अच्छी तरह याद दिलाया। उनसे इर्वा बिन जुबैर ने, उनसे मिस्वर बिन मख्रमा (रज़ि.) और मरवान बिन हकम ने बयान किया, उनमें से हर एक दूसरे से कुछ बड़ाता है। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) सुलह हुदैबिया के मौक़े पर तक्रीबन एक हजार सहाबा को साथ लेकर खाना हुआ। फिर जब जुल हुलैफ़ा पहुँचे तो आपने कुर्बानी के जानवर को क़लादा पहनाया और उस पर निशान लगाया और वहीं से उमरह का एहराम बाँधा। फिर आपने क़बीला ख़ुज़ाआ के एक सहाबी को जासूसी के लिये भेजा और ख़ुद भी सफ़र जारी रखा। जब आप ग़दीरुल अज़तात पर पहुँचे तो आपके जासूस भी ख़बरें लेकर आ गये, जिन्होंने बताया कि क़ुरैश ने आपके मुक़ाबले के लिये बहुत बड़ा लश्कर तैयार कर रखा है और बहुत से क़बाईल को बुलाया है। वो आपसे जंग करने पर तुले हुए हैं और आपको बैतुल्लाह से रोकेंगे। इस पर आँहजरत (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया, मुझे मश्वरा दो क्या तुम्हारे ख़याल में ये मुनासिब होगा कि मैं उन कुपफ़ार की औरतों और बच्चों पर हमला कर दूँ जो हमारे बैतुल्लाह तक पहुँचने में रुकावट बनना चाहते हैं? अगर उन्होंने हमारा मुक़ाबला किया तो अल्लाह अज़ व जल्ल ने मुश्किन से हमारे जासूस को महफूज़ रखा है और अगर वो हमारे मुक़ाबले पर नहीं आते तो हम उन्हें एक हारी हुई क़ौम जानकर छोड़ देंगे। हजरत अबूबक्र (रज़ि) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप तो सिर्फ़ बैतुल्लाह के उमरे के लिये निकले हैं न आपका इरादा किसी को क़त्ल करने का है और न किसी से लड़ाई का। इसलिये आप बैतुल्लाह तशरीफ़ ले चलें। अगर हमें फिर भी कोई बैतुल्लाह से

٤١٧٨-٤١٧٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ جِئَ حَدَّثَ هَذَا الْحَدِيثَ حَفَظْتُ بَعْضَهُ وَرَأَيْتُ مَعْمَرًا عَنْ عُرْوَةَ بْنِ زُرَيْرٍ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ بْنِ أَنَسٍ يَزِيدُ أَخَذَهُمَا عَلَى صَاحِبِهِ قَالَا: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَامَ الْخُدَيْبِيَّةِ فِي بَضْعِ عَشْرَةِ مِائَةٍ مَّا أَصْحَابِهِ فَلَمَّا أَتَى ذَا الْخُلَيْفَةِ قُلْدَ الْهَدْيِ وَأَشْعَرَةَ وَأَحْرَمَ مِنْهَا بِعُمَرَةَ وَبَعَثَ عَيْنًا لَهُ مِنْ خَزَاعَةَ وَسَارَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَ بِقَدِيرِ الْأَشْطَاطِ أَنَاهُ عَيْنُهُ قَالَ: إِنَّ قُرَيْشًا جَمَعُوا لَكَ جُمُوعًا وَقَدْ حَمَعُوا لَكَ الْأَخَابِشَ. وَهُمْ مُقَابِلُوكَ وَصَادُوكَ عَنْ النَّبِيِّ وَمَاتَبُوكَ. فَقَالَ: (أَشِيرُوا إِلَيَّ النَّاسُ عَلَى أَنْتَرُونَ أَنْ أَمِيلَ إِلَى عِيَالِهِمْ وَذُرَارِي هَؤُلَاءِ الَّذِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَصُدُّوْنَا عَنِ النَّبِيِّ؟ فَإِنْ يَأْتُونَا كَانَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ قَدْ قَطَعَ عَيْنًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَإِلَّا تَرَكْنَاهُمْ مَخْرُوبِينَ.) قَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ خَرَجْتَ عَامِدًا لِهَذَا النَّبِيِّ لَا تُرِيدُ قَتْلَ أَحَدٍ وَلَا حَرْبَ أَحَدٍ فَتَوَجَّهَ لَهُ لَمَنْ صَدَّنَا عَنْهُ فَاتَّلَنَّا قَالَ: امْضُوا عَلَى

रोकेगा तो हम उससे जंग करेंगे। आपने फ़र्माया कि फिर अल्लाह का नाम लेकर सफ़र जारी रखो। (राजेअ: 1694, 1695)

اسم الله.

[راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥]

4180, 81. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको यज़कूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे मेरे भतीजे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उनके चचा मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन शिहाब ने कहा कि मुझको इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्होंने ने मरवान बिन हुकम और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से सुना, दोनों रावियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इमरह हदैबिया के बारे में बयान किया तो इर्वा ने मुझे उसमें जो कुछ ख़बर दी थी, उसमें ये भी था कि जब हज़ूर अकरम (ﷺ) और (कुरैश का नुमाइन्दा) सुहैल बिन अम्र हदैबिया में एक मुकररा मुद्दत तक के लिये सुलह की दस्तावेज़ लिख रहे थे और उसमें सुहैल ने ये शर्त भी रखी थी कि हमारा अगर कोई आदमी आपके यहाँ पनाह ले ख्वाह वो आपके दीन पर ही क्यों न हो जाए तो आपको उसे हमारे हवाले करना ही होगा ताकि हम उसके साथ जो चाहें करें। सुहैल इस शर्त पर अड़ गया और कहने लगा कि हज़ूर अकरम (ﷺ) इस शर्त को कुबूल कर लें और मुसलमान इस शर्त पर किसी तरह राज़ी न थे, मजबूरन उन्होंने इस पर बातचीत की (कहा ये क्यों कर हो सकता है कि मुसलमान काफ़िर के सुपुर्द कर दें) सुहैल ने कहा कि ये नहीं हो सकता तो सुलह भी नहीं हो सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने ये शर्त भी तस्लीम कर ली और अबू जन्दल बिन सुहैल (रज़ि.) को उनके वालिद सुहैल बिन अम्र के सुपुर्द कर दिया (जो उसी वक़्त मक्का से फ़रार होकर बेड़ी को घसीटते हुए मुसलमानों के पास पहुँचे थे) (शर्त के मुताबिक़ मुद्दते सुलह में मक्का से फ़रार होकर) जो भी आता हज़ूर (ﷺ) उसे वापस कर देते, ख्वाह वो मुसलमान ही क्यों न होता। इस मुद्दत में कुछ मोमिन औरतें भी हिजरत करके मक्का से आईं, उम्मे कुल्थुम बन्ते इब्न अबी इब्ने मुईत्त भी उनमें से हैं जो इस मुद्दत में हज़ूर अकरम (ﷺ) के पास आई थीं, वो उस वक़्त नौजवान थीं, उनके घरवाले हज़ूर अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुतालबा किया कि इन्हें वापस कर दें। इस पर अल्लाह तआला ने मोमिन औरतों के बारे में वो आयत नाज़िल की

٤١٨٠، ٤١٨١ - حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَغْفَرُ بْنُ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ أَخْبَرَنِي غُرُوزَةُ بْنُ الزَّائِرِ أَنَّهُ سَمِعَ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ وَالْمِسْوَرُ بْنَ مَعْرُومَةَ يُخْبِرَانِ خَبْرًا مِنْ عَمْرِو رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَمْرَةِ الْخُدَيْيَةِ لَكَانَ فِيهَا أَخْبَرَنِي غُرُوزَةُ عَنْهُمَا أَنَّهُ لَمَّا كَاتَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَهْلَ بْنَ عَمْرِو يَوْمَ الْخُدَيْيَةِ عَلَى قَضِيَّةِ الْمُدَّةِ وَكَانَ فِيهَا اشْتَرَطَ سَهْلُ بْنُ عَمْرِو أَنَّهُ قَالَ: لَا يَأْتِيكَ مِنَّا أَحَدٌ وَإِنْ كَانَ عَلَى دِينِكَ إِلَّا رَدَدْتَهُ إِلَيْنَا وَخَلَّيْتُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ وَأَمِّي سَهْلُ بْنُ أَن يَقَاضِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَّا عَلَى ذَلِكَ وَامْتَعَضُوا فَتَكَلَّمُوا فِيهِ فَلَمَّا أَمِّي سَهْلُ بْنُ يَقَاضِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَّا عَلَى ذَلِكَ كَاتَبَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَرَدَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَبَا جَنْدَلٍ بْنُ سَهْلٍ يَوْمَئِذٍ إِلَى أَبِي سَهْلٍ بْنُ عَمْرِو وَلَمْ يَأْتِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَحَدٌ مِنَ الرِّجَالِ إِلَّا رَدَّهُ فِي بِلَاقِ الْمُدَّةِ وَإِنْ كَانَ مُسْلِمًا وَجَاءَتْ الْمُؤْمِنَاتُ مِنْهَا جَرَاتٍ فَكَانَتْ أُمُّ كَلْثُومٍ بِنْتُ عَقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَيْطٍ مِنْ خَرَجٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهِيَ غَائِقٌ لِفَجَاءِ أَهْلِهَا يَسْأَلُونَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَرْجِعَهَا إِلَيْهِمْ حَتَّى أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى فِي الْمُؤْمِنَاتِ مَا أَنْزَلَ.

जो शर्त के मुनासिब थी। (राजेअ : 1694, 1695)

4182. इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे उर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत, या अय्युहन् नबिय्यु इज़ा जाअकल् मुअमिनात, के नाज़िल होने के बाद आँहुज़ूर (ﷺ) हिज़रत करके आने वाली औरतों को पहले आज़माते थे और उनके चचा से सिवायत है कि हमें वो हदीष भी मा'लूम है जब आँहुज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि जो मुसलमान औरतें हिज़रत करके चली आती हैं उनके शौहरों को वो सब कुछ वापस कर दिया जाए जो अपनी बीवियों को वो दे चुके हैं और हमें ये भी मा'लूम हुआ है कि अबू बसीर, फिर उन्होंने तप्सलील के साथ हदीष बयान की। (राजेअ : 2713)

[راجع: ١٦٩٤, ١٦٩٥]

٤١٨٢- قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَآخِرُنِي غَزْوَةُ بَنِي الزُّبَيْرِ ابْنِ عَابِثَةَ وَطَيْبٍ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجُ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَمْتَحِنُ مَنْ هَاجَرَ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ بِهَذِهِ الْآيَةِ: ﴿وَمَا أَلَيْهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ﴾ وَعَنْ: قَالَ: بَلَّغْنَا حِينَ أَمَرَ اللَّهُ رَسُولَهُ ﷺ أَنْ يَرُدَّ إِلَى الْمُشْرِكِينَ مَا أَنْفَقُوا مِنْ هَاجَرَ مِنْ أَزْوَاجِهِمْ وَبَلَّغْنَا أَنْ أَبَا بَصِيرٍ فَلَذِكْرُهُ بِطَوْلِهِ.

[راجع: ٢٧١٣]

चूँकि मुआहिदा की शर्त में औरतों का कोई ज़िक्र न था, इसलिये जब औरतों का मसला सामने आया तो खुद कुआन मजीद में हुक्म नाज़िल हुआ कि औरतों को मुश्रिकीन के इवालेन किया जाए कि इससे मुआहिदा की खिलाफ़वर्जी लाज़िम नहीं आती बशर्त कि तुमको यक़ीन हो जाए कि वो औरतें महज़ ईमान व इस्लाम की खातिर पूरे ईमान के साथ घर छोड़कर आई हैं।

4183. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक (रह) ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़िल्ने के ज़माने में उमरह के इरादे से निकले। फिर उन्होंने कहा कि अगर बैतुल्लाह जाने से मुझे रोक दिया गया तो मैं वही काम करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था। चुनाँचे आपने सिर्फ़ उमरह का एहराम बाँधा क्योंकि आँहुज़रत (ﷺ) ने भी सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर सिर्फ़ उमरह का एहराम बाँधा था। (राजेअ : 1639)

٤١٨٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا خَرَجَ مُغْتَمِرًا فِي الْفَيْتَةِ فَقَالَ: إِنَّ صَدِذْتُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ صَنَعْنَا كَمَا صَنَعْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَأَهْلُ بَعْمُرَةَ مِنْ أَجْلِ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ أَهْلًا بِبَعْمُرَةَ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ.

[راجع: ١٦٣٩]

4184. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने एहराम बाँधा और कहा कि अगर मुझे बैतुल्लाह जाने से रोका गया तो मैं भी वही काम करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था। जब आपको कुफ़फ़ारे कुरैश ने बैतुल्लाह जाने से रोका तो इस आयत की तिलावत की कि, यक़ीनन तुम लोगों के लिये रसूल करीम (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है।

٤١٨٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ أَهْلًا وَقَالَ: إِنَّ حَيْلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ لَفَعَلْتُ كَمَا فَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ خَالَتُ كُفَّارَ قُرَيْشٍ بَيْنَهُ وَتَلَا: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾.

(राजेअ: 1639)

4185. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने, उनको अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह और सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि उन दोनों ने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से बातचीत की (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे जुवैरिया ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के किसी लड़के ने उनसे कहा, अगर इस साल आप (इमरह करने) न जाते तो बेहतर था, क्योंकि मुझे डर है कि आप बैतुल्लाह तक नहीं पहुँच सकेंगे। इस पर उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले थे तो कुफ़्रारे कुरैश ने बैतुल्लाह पहुँचने से रोक दिया था। चुनौचे हज़ूर (ﷺ) ने अपनी कुर्बानी वहीं (हुदैबिया में) ज़िबह कर दी और सर के बाल मुँडवा दिये। सहाबा (रज़ि.) ने भी बाल छोटे करवा लिये, हज़ूर (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने ऊपर एक इमरह वाजिब कर लिया है (और इसी तरह तमाम सहाबा रज़ि. पर भी वो वाजिब हो गया) इसलिये अगर आज मुझे बैतुल्लाह तक जाने दिया गया तो मैं भी तवाफ़ कर लूँगा और अगर मुझे भी रोक दिया गया तो मैं भी वहीं करूँगा जो हज़ूर (ﷺ) ने किया था। फिर थोड़ी दूर चले और कहा कि मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने ऊपर इमरह के साथ हज़्ज को भी ज़रूरी करार दे लिया है और कहा मेरी नज़र में तो हज़्ज और इमरह दोनों एक ही जैसे हैं, फिर उन्होंने एक तवाफ़ किया और एक सई की (जिस दिन मक्का पहुँचे) और आख़िर दोनों ही को पूरा किया। (राजेअ: 1639)

4186. मुझसे शुजाअ बिन वलीद ने बयान किया, उन्होंने नज़र बिन मुहम्मद से सुना, कहा हमसे सख़र बिन जुवैरिया ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि अब्दुल्लाह हज़रत इमर (रज़ि.) से पहले इस्लाम में दाख़िल हुए थे, हालाँकि ये ग़लत है। अलबत्ता इमर (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) को अपना एक घोड़ा लाने के लिये भेजा था, जो एक अंसारी सहाबी के पास था ताकि उसी पर सवार होकर जंग

[राजेअ: 1639]

4185- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَسْمَاءَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ ابْنَ عَبْدِ اللَّهِ وَسَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَاهُ أَنَّهُمَا كَلَّمَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ ح. وَحَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ بَعْضَ نَبِيِّ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ لَهُ: لَوَاقُمْتُ الْعَامَ لِنَبِيِّ أَخَاكَ إِنْ لَا نَصِلَ إِلَى النَّبِيِّ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَالَ كَفَارٌ فَرَوَيْشُ ذَوْنُ النَّبِيِّ فَخَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذَانِيهِ وَحَلَقَ وَقَصَّرَ اصْطَبَاهُ وَقَالَ: أَشْهَدُكُمْ أَنِّي أَوْحِشْتُ غُمْرَةً. فَإِنْ خَلَى بَنِي وَتَيْنِ النَّبِيِّ طُمْتُ وَإِنْ حِيلَ بَنِي وَتَيْنِ النَّبِيِّ صَنَعْتُ كَمَا صَنَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَسَارَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ: مَا أَرَى شَأْنَهُمَا إِلَّا وَاحِدًا أَشْهَدُكُمْ أَنِّي قَدْ أَوْحِشْتُ خُحْفَةً مَعَ غُمْرَتِي فَطَافَ طَوَافًا وَاحِدًا وَسَفِيًّا وَاحِدًا حَتَّى خَلَّ مِنْهُمَا جَمِيعًا.

[राजेअ: 1639]

4186- حَدَّثَنِي شُعَاغُ بْنُ الْوَلِيدِ سَمِعَ النَّصْرَ بْنَ مُحَمَّدٍ. حَدَّثَنَا صَخْرٌ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: إِنَّ النَّاسَ يَتَحَدَّثُونَ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ اسْلَمَ قَبْلَ عُمَرَ وَلَيْسَ كَذَلِكَ وَلَكِنْ عُمَرَ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ أَرْسَلَ عَبْدَ اللَّهِ إِلَى فَرَسٍ لَهُ عِنْدَ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ يَأْتِي بِهِ لِتَقَابُلِ عَلَيْهِ

में शरीक हों। उसी दौरान रसूलुल्लाह (ﷺ) पेड़ के नीचे बैठकर बेअत ले रहे थे। इमर (रज़ि.) को अभी इसकी खबर नहीं हुई थी। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने पहले बेअत की फिर घोड़ा लेने गये। जिस वक़्त वो उसे लेकर इमर (रज़ि.) के पास आए तो वो जंग के लिये अपनी ज़िरह पहन रहे थे। उन्होंने उस वक़्त हज़रत इमर (रज़ि.) को बताया कि हुज़ुरे अकरम (ﷺ) पेड़ के नीचे बेअत ले रहे हैं। बयान किया कि फिर आप अपने लड़के को साथ लेकर गये और बेअत की। इतनी सी बात थी जिस पर लोग अब कहते हैं कि इमर (रज़ि.) से पहले इब्ने इमर (रज़ि.) इस्लाम लाए थे। (राजेअ: 3916)

4187. और हिशाम बिन अम्मार ने बयान किया, उनसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे इमर बिन मुहम्मद इमरी ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने खबर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि सुलह हुदैबिया के मौक़ा पर सहाबा (रज़ि.) जो हुज़ुर अकरम (ﷺ) के साथ थे, मुख्तलिफ़ पेड़ों के साथे में फैल गये थे। फिर अचानक बहुत से सहाबा आपके चारों तरफ़ जमा हो गये। इमर (रज़ि.) ने कहा बैटा अब्दुल्लाह! देखो तो सही लोग आँहज़रत (ﷺ) के पास जमा क्यूँ हो गये हैं? उन्होंने देखा तो सहाबा बेअत कर रहे थे। चुनौचे पहले उन्होंने खुद बेअत कर ली। फिर हज़रत इमर (रज़ि.) को आकर खबर दी फिर वो भी गये और बेअत की। (राजेअ: 3916)

यहाँ बेअत करने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने हज़रत इमर (रज़ि.) से पहले बेअत की जो खास वजह से थी।

4188. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमेर ने बयान किया, कहा हमसे यअला बिन इब्दैद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने उमरह (क्रज़ा) किया तो हम भी आपके साथ थे, आँहज़ुर (ﷺ) ने तवाफ़ किया तो हमने भी तवाफ़ किया। हुज़ुर (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी तो हमने भी नमाज़ पढ़ी और हुज़ुर (ﷺ) ने सफ़ा व मरवा की सई की तो हमने भी की, हम आपकी अहले मक्का से हिफ़ाज़त करते रहते थे ताकि कोई तकलीफ़ की बात न पेश आ जाए। (राजेअ: 1600)

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَبِيعُ عِنْدَ الشَّجَرَةِ، وَعُمَرُ لَا يَذَرِي بِذَلِكَ قَبَائِمَهُ عِنْدَ اللَّهِ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَى الْفُرْسِ فَجَاءَ بِهِ إِلَى عُمَرَ، وَعَدُ بِسَتْلِيمٍ لِلْقِتَالِ فَأَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَبِيعُ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، قَالَ: فَأَنْطَلِقُ لَذَهَبَ مَعَهُ حَتَّى بَاتَعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِهَيْ أَيْبَى يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ اسْلَمَ قَبْلَ عُمَرَ. [راجع: 3916]

4187- وَقَالَ هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْقُمَرِيُّ، أَخْبَرَنِي قَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، أَنَّ النَّاسَ كَانُوا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ، تَفَرَّقُوا فِي ظِلَالِ الشَّجَرِ فَإِذَا النَّاسُ مُخْبِقُونَ بِالنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ يَا عَبْدَ اللَّهِ أَنْظِرْ مَا شَاءَ النَّاسُ فَمَا أَخَذُوا بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَوَجَدْنَاهُمْ يَبِيعُونَ قَبَائِمَهُمْ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى عُمَرَ فَخَرَجَ قَبَائِمَهُ. [راجع: 3916]

4188- حَدَّثَنَا ابْنُ تَعْيَرَ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ اعْتَمَرَ قَطَافَ فَطَقْنَا مَعَهُ وَصَلَّى وَصَلَّيْنَا مَعَهُ وَتَقَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَكُنَّا نَسْتَوِيهِ مِنَ أَهْلِ مَكَّةَ لَا يُصِيبُهُ أَحَدٌ بِشَيْءٍ.

[راجع: 1600]

4189. हमसे हसन बिन इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग्दल ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुसैन से सुना, उनसे अबू वाईल ने बयान किया कि सहल बिन हनीफ़ (रज़ि.) जब जंगे सिफ़्फ़ीन (जो हज़रत अली रज़ि. और हज़रत मुआविया रज़ि. में हुई थी) से वापस आए तो हम उनकी ख़िदमत में हालात मा'लूम करने के लिये हाज़िर हुए। उन्होंने कहा कि इस जंग के बारे में तुम लोग अपनी राय और फ़िक्र पर नाज़ी मत हो, मैं यौमे अबू जन्दल (सुलहे हुदैबिया) में भी मौजूद था। अगर मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म को मानने से इंकार मुम्किन होता तो मैं इस दिन ज़रूर हुक्म अदुली करता। अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ख़ूब जानते हैं कि जब हमने किसी मुश्किल काम के लिये अपनी तलवारों को अपने काँधों पर रखा तो मूरतेहाल आसान हो गई और हमने मुश्किल हल कर ली। लेकिन इस जंग का कुछ अजीब हाल है, इसमें हम (फ़ित्ने के) एक कोने को बन्द करते हैं तो दूसरा कोना खुल जाता है। हम नहीं जानते कि हमको क्या तदबीर करनी चाहिये। (राजेअ: 3181)

अल्लामा इब्ने हज़र (रह) हसन बिन इस्हाक़ उस्ताद इमाम बुखारी (रह) के बारे में फ़रमाते हैं, कान मिन अस्हाबि इब्निमुबारक व मात सनत इहदव्व अर्बईन व मालहू फिलबुखारी सिवा हाज़लहदीषि (फत्ह)। या'नी ये हज़रत अबुल्लाह बिन मुबारक के शशिर्दों में से हैं। उनका इतिक्ाल 141 हिजरी में हुआ। सहीह बुखारी में उनसे सिर्फ़ यही एक हदीष मरवी है।

4190. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने, उनसे कअब बिन ज़रह (रज़ि.) ने बयान किया कि वो ड्रमरह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो जूएँ उनके चेहरे पर गिर रही थी। हुज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि ये जूएँ जो तुम्हारे सर से गिर रही हैं, तकलीफ़ दे रही हैं? उन्होंने अर्ज़ किया कि जी हाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर सर मुँडवा लो और तीन दिन रोज़ा रखो या मिस्कीनों को खाना खिला दो या फिर कोई कुर्बानी कर डालो। (सर मुँडवाने का फ़िदया होगा) अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया कि मुझे मा'लूम नहीं कि इन तीनों उमूर में से पहले हुज़ूर (ﷺ) ने कौनसी बात इर्शाद फ़र्माई थी।

4189 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ، حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْدَلٍ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا حَصِينٍ قَالَ : قَالَ أَبُو وَائِلٍ لَمَّا قَدِمَ سَهْلُ بْنُ خَنْتَمٍ مِنْ صِفِّينَ أَنَّهُ نَسَخِبَرُهُ فَقَالَ : أَتَيْتُمُ الرَّأْيَ فَلَقَدْ رَأَيْتُ يَوْمَ أَبِي جَنْدَلٍ وَلَوْ اسْتَطِيعَ أَنْ أَرُدَّ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ امْرَأَةً لَوَدِدْتُ وَاللَّهِ وَرَسُولُهُ أَهْلَهُ، وَمَا وَضَعْنَا أَسْبَاقًا عَلَى غَوَاقِبِنَا لِأَمْرِ يُفْطِنُنَا إِلَّا اسْتَهْلَنَ بِنَا إِلَى أَمْرِ نَعْرِفُهُ قَبْلَ هَذَا الْأَمْرِ مَا نَسَدُ مِنْهَا خُصْمًا إِلَّا انْفَجَرَ عَلَيْنَا خُصْمٌ مَا نَدْرِي كَيْفَ نَأْتِي لَهُ.

[راجع: 3181]

4190 - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : أَتَى عَلِيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَمَنَ الْحَذْيِيَّةِ، وَالْقَمَلُ يَتَنَافَرُ عَلَى وَجْهِهِ فَقَالَ : ((أَيُّ ذَلِكَ هَوَاءُ رَأْسِكَ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ : ((لَا خَلْقَ وَصَمَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ أَوْ أَطْعَمَ مِئَةَ مَسَاكِينٍ أَوْ أَنْسَلَكَ نَسِيكَةً)). قَالَ أَيُّوبُ لَا أَدْرِي بِأَيِّ هَذَا بَدَأَ.

(राजेअ : 1814)

[راجع: 4814]

4191. मुझसे अबू अब्दुल्लाह बिन हिशाम ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने और उनसे कअब बिन इजह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुलह्ने हुदै बिया के मौक़े पर हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे और एहराम बाँधे हुए थे। उधर मुश्किनी हमें बैतुल्लाह तक जाने नहीं देना चाहते थे। उन्होंने बयान किया कि मेरे सर पर बाल बड़े बड़े थे जिनसे जूँ मेरे चेहरे पर गिरने लगीं। हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे देखकर दरयाप्त किया, क्या ये जूँ तकलीफ़ दे रही हैं? मैंने कहा जी हाँ। उन्होंने बयान किया कि फिर ये आयत नाज़िल हुई, पस अगर तुममें कोई मरीज़ हो या उसके सरमें कोई तकलीफ़ देने वाली चीज़ हो तो उसे (बाल मुँडवा लेने चाहिये और) तीन दिन के रोज़े या स़दका या कुर्बानी का फ़िदया देना चाहिये। (राजेअ : 1814)

٤١٩١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ وَثَّابٍ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ أَنَسٍ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُرَيْبَةَ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِالْمَدِينَةِ وَلَحْنُ مَحْرُومُونَ، وَلَدُ خَصْرًا الْمُشْرُكُونَ، قَالَ: وَكَانَتْ لِي وَلَرَةٌ لَفَجَعَلْتُ الْهَوَامَ تَسْلُطُ عَلَى وَجْهِهِ لَمَرَّ بِي النَّبِيُّ ﷺ. فَقَالَ: «أَبْذُوكَ هَوَامَ رَأْسِكَ؟» قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: «وَأَتَوَلَّتْ عَلَيْهِ الْآيَةُ» وَلَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ آدَى مِنْ رَأْسِهِ فَلْيَدِّبْهُ مِنْ صَبَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ»۔ [راجع: 1814]

इन तमाम रिवायतों में किसी न किसी तरह से वाकिय-ए-हुदैबिया के बारे में कुछ न कुछ ज़िक्र है। यही अह्दादीष और बाब में वजहे मुताबक़त है। हालते एहराम में ऐसी बीमारी से सर मुँडवा देना जाइज़ है। मगर उसके फ़िदये में ये कफ़ारा अदा करना होगा।

बाब 37 : क़बाइले इक्ल और इरैयना का बयान

4192. मुझसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बाइल इक्ल व इरैयना के कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मदीना आए और इस्लाम में दाख़िल हो गये, फिर उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! हम लोग मवेशी रखते थे, खेत बग़ैरह हमारे पास नहीं थे, (इसलिये हम सिर्फ़ दूध पर बसरे औ क़ात किया करते थे) और उन्हें मदीना की आबोहवा ना मुवाफ़िक़ आई तो औहज़स्त (ﷺ) ने कुछ ऊँट और एक चरवाहा उनके साथ कर दिया और फ़र्माया कि इन्हें ऊँटों का दूध और पेशाब पियो (तो तुम्हें सेहत हासिल हो जाएगी) वो लोग (चरागाह की तरफ़) गये, लेकिन मुक़ामे हर्मा के किनारे पहुँचते ही वो इस्लाम से फिर गये और हुज़ूर अकरम (ﷺ) के चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊँटों को लेकर भागने लगे। उसकी ख़बर जब

37- باب قصة عكّل وعُرينة

٤١٩٢- حَدَّثَنِي عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ خَمَادٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَاسًا مِنْ عَكْلٍ وَعُرَيْنَةَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَكَلَّمُوا بِالإِسْلَامِ فَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّا كُنَّا أَهْلَ ضَرْعٍ وَلَمْ نَكُنْ أَهْلَ رِيْفٍ وَاسْتَوْعَمُوا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذُودٍ وَزَاعٍ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَخْرُجُوا إِلَيْهِ فَيَشْرَبُوا مِنَ الْبَاقِيَا وَأَهْوَالِهَا فَنَظَلُّوا حَتَّى إِذَا كَانُوا نَاحِيَةَ الْحَرَّةِ

हुजुरे अकरम (ﷺ) को मिली तो आपने चन्द सहाबा को उनके पीछे दौड़ाया। (वो पकड़कर मदीना लाए गये) तो हुजुर (ﷺ) के हुक्म से उनकी आँखों में गर्म सलाइयों फेर दी गई (क्योंकि उन्होंने भी ऐसा ही किया था) और उन्हें हरा के किनारे छोड़ दिया गया। आखिर वो इसी हालत में मर गये। क़तादा ने बयान किया कि हमे ये रिवायत पहुँची है कि हुजुरे अकरम (ﷺ) ने उसके बाद सहाबा को सदका का हुक्म दिया और मुसल्ला (मक्तूल की लाश बिगाड़ना या ईजा देकर उसे क़त्ल करना) से मना फ़र्माया और शुअबा, अबान और हम्माद ने क़तादा से बयान किया कि (ये लोग) ड़रैयना के क़बीले के थे (इक्ल का नाम नहीं लिया) और यह या बिन अबी क़बीर और अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि क़बीला इक्ल के कुछ लोग आए। (राजेअ: 233)

كَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَقَتَلُوا رَاعِي النَّبِيِّ ﷺ وَاسْتَأْفُوا اللُّؤْلُؤَ قَبْلَ الْنَبِيِّ ﷺ، فَبَعَثَ الطَّلَبَ فِي أَثَارِهِمْ، فَأَمَرَ بِهِمْ فَسَمَرُوا أَغْنِيَهُمْ وَقَطَعُوا أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَفَرَكُوا فِي نَاحِيَةِ الْخَمْرَةِ حَتَّى مَاتُوا عَلَى حَالِهِمْ، قَالَ قَتَادَةُ بَلَقْنَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعْدَ ذَلِكَ كَانَ يَحُثُّ عَلَى الصَّدَقَةِ وَتَنَهَى عَنِ الْمُنْطَلَةِ. وَقَالَ شُعْبَةُ وَابْنُ وَحْمَادٍ عَنْ قَتَادَةَ مِنْ غُرَيْبَةٍ وَقَالَ يَحْتَسِبُ مِنْ أَبِي خَبِيرٍ وَالْيُؤُوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ: قَدِمَ تَفَرَّ مِنْ عَكْلٍ. (راجع: ١٢٣)

तरीह:

चरवाहे का नाम यसारूजूबी (रज़ि.) था, जब क़बीले वाले मुर्तद होकर ऊँट लेकर भागने लगे तो उस चरवाहे ने मुजाहमत की। इस पर उन्होंने उसके हाथ-पैर काट दिये और उसकी जुबान और आँख में कटि गाड़ दिये जिससे उन्होंने शहादत पाई। (रज़ि.) इसी किस्सास में उन डाकूओं के साथ वो किया गया जो रिवायत में मज़कूर है। ये डाकू दोनों क़बाइले इक्ल और ड़रैयना से ता'ल्लुक रखते थे। हरा वो पथरीला मैदान है जो मदीना से बाहर है। वो डाकू मज़े इस्तिस्का के मरीज़ थे इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनके वास्ते ये नुस्खा तजवीज़ फ़र्माया।

4193. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू उमर हफ़्स बिन उमर अल् हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब और हज़ाज सख्वाफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू क़िलाबा के मौला अबूरजाअ ने बयान किया, वो अबू क़िलाबा के साथ शाम में थे कि खलीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने एक दिन लोगो से मश्विरा किया कि इस क़सामा के बारे में तुम्हारी क्या राय है? लोगो ने कहा कि ये हक़ है। उसका फ़ैमला रसूलुल्लाह (ﷺ) और फिर ख़ुल्फ़-ए-राशिदीन आपसे पहले करते रहे हैं। अबूरजाअ ने बयान किया कि उस वक़्त अबू क़िलाबा, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह) के तख़्त के पीछे थे। इतने में अम्बसा बिन सईद ने कहा कि फिर क़बीला ड़रैयना के लोगो के बारे में हज़रत अनस (रज़ि.) की हदीप्प कहाँ गई? इस पर अबू क़िलाबा ने कहा कि अनस (रज़ि.) ने खुद मुझसे ये बयान किया। अब्दुल इज़ज़ा बिन सुहैब ने (अपनी रिवायत में) अनस (रज़ि.) के हवाले से सिर्फ़

٤١٩٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ أَبُو غُمَرَ الْخَوْضِيُّ حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنَا يُؤُوبُ وَالْحِجَااجُ الصَّوَّافُ. قَالَا حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ مَوْلَى أَبِي قِلَابَةَ وَكَانَ مَعَ الشَّامِ أَنَّ غُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ اسْتَشِيرَ النَّاسَ يَوْمًا قَالَ: مَا تَقُولُونَ فِي هَذِهِ الْقِسَامَةِ؟ فَقَالُوا: حَقٌّ فَضَى بِهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَقَضَى بِهَا الْخُلَفَاءُ قَبْلَكَ. قَالَ وَابُو قِلَابَةَ خَلَفَ سَبْرَهُ. فَقَالَ غُنْسَةُ بْنُ سَعِيدٍ: فَأَيْنَ حَبِيبُ أَنَسٍ فِي الْغُرَيْبِ؟

इरैयना का नाम लिया और अबू किलाबा ने अपनी रिवायत में अनस (रज़ि.) के हवाले से सिर्फ़ इबल का नाम लिया है फिर यही किस्सा बयान किया। (रज़ेअ : 233)

قَالَ: أَبُو قِلَابَةَ : إِنِّي حَدَّثْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ مِنْ غُرَيْبَةٍ، وَقَالَ أَبُو قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ مِنْ عُكَلٍ : ذَكَرَ الْقِصَّةَ. [راجع: ٢٣٣]

तशरीह : जब क़त्ल के गवाह न हों और लाश किसी मुहल्ला या गाँव में मिले, उन लोगों पर क़त्ल का शुब्हा हो तो उनमें से पचास आदमी चुनकर उनसे हलफ़ लिया जाता है, उसको क़सामा कहते हैं। अम्बसा का ख़याल ये था कि आपने उन लोगों के लिये क़सामा का हुक्म नहीं दिया था बल्कि उनसे किस्सा लिया। अम्बसा का ये ए' तिराज़ सहीह न था क्योंकि इरैयना वालो पर खून प्राबित हो चुका था और क़सामत वहाँ होती है जहाँ पुबूत न हो, सिर्फ़ इश्तिबाह हो। हदीष में क़बीला इरैयना का ज़िक्र है बाब और हदीष में यही मुताबक़त है।

रिवायत में हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) का नाम नामी ज़िक्र हुआ है जो ख़लीफ़-ए-आदिल के नाम से मशहूर हैं। आपकी इमामत व इज्तिहाद मअरिफ़ते अह्मदीष व आषार पर उम्मत का इतिफ़ाक़ है बल्कि आपको अपने वक़्त का मुजद्दिदे इस्लाम तस्लीम किया गया है। आपके इस्लामी कारनामों में बड़ा अहमतरीन कारनामा ये है कि आपको तदवीने हदीष और किताबते हदीष की मुनज़ज़म कोशिश का एहसास हुआ। चुनौचे आपने अपने नाइब वाली मदीना अबूबक्र हज़मी को फ़र्मान भेजा कि रसूले अकरम (ﷺ) की अह्मदीषे सहीहा को मुदव्वन करो क्योंकि मुझे इल्म और अहले इल्म के ज़ाये होने का अदेशा है। लिहाज़ा अह्मदीष की मुस्तनद किताबें जमा करके मुझको भेजो। अबूबक्र हज़मी ने आपके फ़र्मान की तक्मील में अह्मदीष के कई ज़ख़ीरे जमा कराये, मगर वो उनको हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की हयात में उन तक न पहुँचा सके, हाँ ख़लीफ़ा आदिल ने हज़रत इब्ने शिहाब जुहरी को भी इस ख़िदमत पर पामूर फ़र्माया था और उनको जम्मे हदीष का हुक्म दिया था। चुनौचे उन्होंने दफ़्तर के दफ़्तर जमा किये और उनको ख़लीफ़-ए-वक़्त तक पहुँचाया। आपने उनकी मुतअद्दिद नक़लें अपनी क़लम रू में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर भिजवाईं। हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह) को ख़िलाफ़ते राशिदा का ख़लीफ़-ए-ख़ामिस क़रार दिया गया है, रहिमहुल्लाहु रहमतन वासिआ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सतरहवाँ पारा

बाब 38 : ज्ञाते क़र्द की लड़ाई का बयान

ये वही ग़ज़्वा है जिसमें मुश्किनीन ग़त्फ़ान ग़ज़्ज-ए-ख़ैबर से
तीन दिन पहले नबी अकरम (ﷺ) की

20 दूधेल ऊँटनियों को भगाकर ले जा रहे थे। ये ख़ैबर को लड़ाई से तीन रात पहले का वाक़िया है। ज़ातुल क़र्द या ज़ीक़र्द एक
चश्मा का नाम है जो ग़त्फ़ान क़बीले के करीब है।

4194. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे
हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी
उबैद ने बयान किया, कहा मैंने सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.)
से सुना, वो बयान करते थे कि फ़ज़्र की अज़ान से पहले मैं (मदीना
से बाहर ग़ाबा की तरफ़ निकला) रसूलुल्लाह (ﷺ) की दूध देने
वाली ऊँटनियाँ ज़ातुल क़र्द में चरा करती थीं। उन्होंने बयान किया
कि रास्ते में मुझे अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के गुलाम मिले
और कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ऊँटनियाँ पकड़ ली गई हैं। मैंने
पूछा कि किसने पकड़ा है? उन्होंने बताया कि क़बीला ग़त्फ़ान
वालों ने। उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने तीन बार बड़ी ज़ोर-
ज़ोर से पुकारा, या सबाहाह! उन्होंने बयान किया कि अपनी
आवाज़ मैंने मदीना के दोनों किनारों तक पहुँचा दी और उसके बाद
मैं सीधा तेज़ी के साथ दौड़ता हुआ आगे बढ़ा और आख़िर उन्हें
जा लिया। उस वक़्त वो जानवरों को पानी पिलाने के लिये उतरे
थे। मैंने उन पर तीर बरसाने शुरू कर दिये। मैं तीरंदाज़ी में माहिर था
और ये शेर कहता जाता था, मैं इब्नुल अक्वा हूँ, आज ज़लीलों
की बर्बादी का दिन है, मैं यही रजज़ पढ़ता रहा और आख़िर
ऊँटनियाँ उनसे छुड़ा लीं बल्कि तीस चादरें उनकी मेरे क़ब्ज़े में
आ गई। सलमा ने बयान किया कि उसके बाद हज़ुरे अकरम (ﷺ)

۳۸- باب غزوة ذات القرد

وَهُيَ الْغَزْوَةُ الَّتِي اغَارُوا عَلَى لِقَاحِ النَّبِيِّ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ خَيْبَرَ بِثَلَاثَ

٤١٩٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا
خَابِثٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ
سَلَمَةَ بْنَ الْأَكْوَعِ يَقُولُ: غَوَّجْتُ قَبْلَ أَنْ
يُؤْذَنَ بِالْأَوَّلَى وَكَانَتْ لِقَاحُ رَسُولِ اللَّهِ
ﷺ تُرْعَى بِذِي قُرْدٍ قَالَ: فَلَقِيتُ غُلَامًا
لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ فَقَالَ: أَخَذْتُ
لِقَاحَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، قُلْتُ: مَنْ أَخَذَهَا؟
قَالَ: غُلَفَانٌ. قَالَ: فَصَرَخْتُ ثَلَاثَ
صَرَخَاتٍ يَا صَبَاحَةَ. قَالَ: فَاسْتَمَعْتُ مَا
يَنْتَنُ لِأَيَّتِي الْمَدِينَةِ ثُمَّ انْدَفَعْتُ عَلَى
وَجْهِي حَتَّى أَذْرَكْتَهُمْ وَقَدْ اخْتَدَوْا
يَسْتَقُونَ مِنَ الْمَاءِ فَجَعَلْتُ أَرْمِيهِمْ بِبَنِي
وَكُنْتُ رَامِيًا وَأَقُولُ

أَنَا ابْنُ الْأَكْوَعِ

भी सहाबा (रज़ि.) को साथ लेकर आ गये। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने तीर मार मारकर उनको पानी नहीं पीने दिया और वो अभी प्यासे हैं। आप फ़ौरन उनके तआकुब के लिये फ़ौज भेज दीजिए। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ इब्नुल अक्वबा! जब तूने किसी पर काबू पा लिया तो फिर नमी इख़्तियार किया कर। सलमा (रज़ि.) ने बयान किया, फिर हम वापस आ गये और हुज़ुरे अकरम (ﷺ) मुझे अपनी कैंटनी पर पीछे बिठाकर लाए यहाँ तक कि हम मदीना वापस आ गये। (सजेअ : 3041)

الْيَوْمَ يَوْمَ الرُّحْصَةِ
وَارْتَحِزْ حَتَّى اسْتَفْذَتْ اللِّقَاحَ مِنْهُمْ
وَاسْتَلْبِثَتْ مِنْهُمْ ثَلَاثِينَ بُرْدَةً قَالَ: وَجَاءَ
النَّبِيُّ ﷺ وَالنَّاسُ، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ قَدْ
حَمَيْتِ الْقَوْمَ الْمَاءَ وَهُمْ عِطَاشٌ فَأَبْعَثْ
إِلَيْهِمُ السَّاعَةَ، فَقَالَ: ((يَا ابْنَ الْاَكْوَعِ
مَلَكَتِ فَاسْجِحِ)) قَالَ: ثُمَّ رَجَعْنَا وَتَرَدُّوْهُنَّ
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى نَاقِيَةٍ حَتَّى دَخَلْنَا
الْمَدِينَةَ. [راجع: ٣٠٤١]

तशरीह : मुसलमानों का ये डाकुओं से मुकाबला था जो बीस अदद दूध देने वाली कैंटनियों अहले इस्लाम की पकड़कर ले जा रहे थे। हज़रत सलमा बिन इक्वबा (रज़ि.) की बहादुरी ने उसमें मुसलमानों को कामयाबी बख़शी और जानवर डाकुओं से हासिल कर लिये गये। एक रिवायत में उनको फ़ुज़ारह के लोग बतलाया गया है। ये भी रातफ़ान क़बीले की शाख़ है। सलमा (रज़ि.) का बयान एक रिवायत में यूँ है कि मैं सल्आ पहाड़ी पर चढ़ गया और मैंने ऐसे मुक्क़के कालफ़ज़ या सबाहाह इस ज़ोर से निकाला कि पूरे शहरे मदीना में इसकी ख़बर हो गई। चार शम्बा का दिन था, आवाज़ पर नबी करीम (ﷺ) पाँच सात सौ आदमियों समेत निकलकर बाहर आ गये। इस मौक़े पर हज़रत सलमा (रज़ि.) ने कहा हुज़ूर अकरम (ﷺ) सौ जवान मेरे साथ कर दें तो जिस क़दर भी उनके पास जानवर हैं सबको छीनकर उनको गिरफ़्तार करके ले आता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मौक़े पर क्या ज़री इशाद फ़र्माया कि दुश्मन काबू में आ जाए तब इस पर नमी ही करना मुनासिब है।

बाब 39 : ग़ज़्व-ए-ख़ैबर का बयान

۳۹- باب غزوة خيبر

ख़ैबर एक बस्ती का नाम है, मदीना से आठ बरीद पर शाम की तरफ़। ये लड़ाई सन 7 हिजरी में हुई। वहाँ पर यहूद आबाद थे। उनके क़िले बने हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनका मुहासरा किया, आख़िर मुसलमानों की फ़तह हुई।

4195. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह) ने, उनसे यहाबिन सईद ने, उनसे बशीर बिन यसार ने और उन्हें सुवैद बिन नोअमान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के लिये वो भी रसूले करीम (ﷺ) के साथ निकले थे, (बयान किया) जब हम मुक़ामे सहाबा में पहुँचे जो ख़ैबर के नशीब में बाक़ेअ है तो आँहज़रत (ﷺ) ने अस्त्र की नमाज़ पढ़ी फिर आपने तौश-ए-सफ़र मंगवाया। सत्तू के सिवा और कोई चीज़ आपकी ख़िदमत में नहीं लाई गई। वो सत्तू आपके हुक्म से भिगोया गया और वही आपने भी खाया और हमने भी खाया, उसके बाद मरिब की नमाज़ के लिये आप खड़े हुए (चूँकि वुजू पहले से मौजूद था) इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने भी सिर्फ़ कुल्ली

٤١٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ
عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ بَشِيرِ
بْنِ يَسَارٍ أَنَّ سُوَيْدَ بْنَ الثُّعْمَانَ أَخْبَرَهُ
أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ غَاِمَ خَيْبَرَ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالصُّهْبَاءِ
وَهِيَ مِنْ أَدْنَى خَيْبَرَ صَلَّى الْفَصْرَ ثُمَّ
دَعَا بِالْأَزْوَاجِ فَلَمْ يُؤْتِ إِلَّا بِالسُّوْقِ
فَأَمَرَ بِهِ فَنُزِيَ فَأَكَلَ وَأَكَلْنَا ثُمَّ قَامَ إِلَى
الْمَغْرِبِ فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا ثُمَّ صَلَّى

की और हमने भी, फिर नमाज़ पढ़ी और इस नमाज़ के लिये नये सिरे से वुजू नहीं किया। (राजेअ : 209)

وَلَمْ يَتَوَضَّأْ

[راجع: ٢٠٩]

4196. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमाने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने और उनसे सलमा बिन अब्बा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ खैबर की तरफ निकले। रात के वक़्त हमारा सफ़र जारी था कि एक स़ाहब (उसैद बिन हुज़ैर) ने आमिर से कहा, आमिर! अपने कुछ शेर सुनाओ, आमिर शायर था। इस फ़र्माइश पर वो सवारी से उतरकर हुदी ख़वानी करने लगे। कहा, ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हमें सीधा रास्ता न मिलता, न हम स़दक़ा कर सकते और न हम नमाज़ पढ़ सकते। पस हमारी ज़ल्दी मश्फ़िरत कर, जब तक हम ज़िन्दा हैं हमारी जानें तेरे रास्ते में फ़िदा हैं और अगर हमारी मुठभेड़ हो जाए तो हमें श्रावित रख हम पर सकीनत नाज़िल फ़र्मा, हमें जब (बातिल की तरफ़) बुलाया जाता है तो हम इंकार कर देते हैं, आज घला-घलाकर वो हमारे ख़िलाफ़ मैदान में आए हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह उस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माए। स़हाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आपने तो उन्हें शहादत का मुस्तहिक़ करार दे दिया, काश! अभी और हमें उनसे फ़ायदा उठाने देते। फिर हम खैबर आए और क़िले का मुहाम्मरा किया। उसके दौरान हमें सज़त तकलीफ़ों और फ़ाक्रों से गुज़रना पड़ा। आख़िर अल्लाह तआला ने हमें फ़तह अता फ़र्माई, जिस दिन क़िला फ़तह होना था, उसकी रात जब हुई तो लश्कर में जगह जगह आग जल रही थी। औहज़रत (ﷺ) ने पूछा ये आग कैसी है, किस चीज़ के लिये उसे जगह जगह जला रखा है? स़हाबा (रज़ि.) बोले कि गोश्त पकाने के लिये, आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि किस जानवर का गोश्त है? स़हाबा (रज़ि.) ने बताया कि पालतू गधों का। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम गोश्त फेंक दो और हॉडियों को तोड़ दो। एक स़हाबी (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! ऐसा क्यूँ न कर लें कि गोश्त तो फेंक दें और हॉडियों को धो लें? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ ही कर लो फिर (दिन में जब स़हाबा रज़ि. ने जंग के लिये स़फ़ बन्दी की तो चूँकि हज़रत आमिर (रज़ि.) की तलवार छोटी थी, इसलिये उन्होंने जब एक यहूदी की पिण्डली पर (झुककर) वार

٤١٩٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ فَمَرَرْنَا لَيْلًا إِنَّ رَجُلًا مِنَ الْقَوْمِ لِعَامِرٍ: يَا عَامِرُ! أَلَا تَسْمِعُنَا مِنْ هُنْهَاهُكَ؟ وَكَانَ عَامِرٌ رَجُلًا شَاعِرًا فَتَوَلَّى يَحْدُو بِالْقَوْمِ يَقُولُ:

اللَّهُمَّ لَوْ لَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا
وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا
فَاغْفِرْ لِفَدَاءِ لَكَ مَا أَبْقَيْنَا
وَكَبَرِ الْأَقْدَامِ إِنَّ لَأَقَيْنَا
وَالْقَيْنِ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَبِالصَّبَاحِ غَوَّوْنَا عَلَيْنَا
إِنَّا إِذَا صَبَحَ بِنَا آتَيْنَا

فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ هَذَا السَّائِلُ؟)) قَالُوا: عَامِرُ بْنُ الْأَكْوَعِ قَالَ: ((يُرَحِّمُهُ اللَّهُ)) قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: وَجَبَتْ يَا نَبِيَّ اللَّهِ لَوْ لَا ائْتَفَقْنَا بِهِ فَأَتَيْنَا خَيْبَرَ فَخَاصَرْنَاهُمْ حَتَّى أَصَابَتْهُ مَخْمَصَةٌ شَدِيدَةٌ، ثُمَّ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى فَتَحَهَا عَلَيْهِمْ فَلَمَّا أَصْبَحَ النَّاسُ مَسَاءَ الْيَوْمِ الَّذِي فَتَحَتْ عَلَيْهِمْ أَوْقَدُوا بِيرَانًا كَبِيرَةً فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا هَذِهِ الْبِيرَانُ؟ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ تَوْفِدُونُ؟)) قَالُوا: عَلَى لَحْمٍ. قَالَ:

करना चाहा तो खुद उन्हीं की तलवार की धार से उनके घुटने का ऊपर का हिस्सा ज़ख्मी हो गया और उनकी शहादत उसी में हो गई। बयान किया कि फिर जब लश्कर वापस हो रहा था तो सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) का बयान है कि मुझे हुज़ूर (ﷺ) ने देखा और मेरा हाथ पकड़कर फ़र्माया, क्या बात है? मैंने अर्ज़ किया, मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हों, कुछ लोगों का ख़याल है कि आमिर (रज़ि.) का सारा अमल इकारत होगया (क्योंकि खुद अपनी ही तलवार से उनकी वफ़ात हुई) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया झूठा है वो शख्स जो इस तरह की बातें करता है, उन्हें तो दोहरा अज़र मिलेगा फिर आपने अपनी दोनों उँगलियों को एक साथ मिलाया, उन्होंने तकलीफ़ और मशक्कत भी उठाई और अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी किया, शायद ही कोई अरबी हो, जिसने उन जैसी मिशाल क़ायम की हो, हमसे कुतैबा ने बयान किया, उनसे हातिम ने (बजाय मशाबिहा के) नशाबिहा नक़ल किया या'नी कोई अरब मदीना में आमिर (रज़ि.) जैसा पैदा नहीं हुआ।

(राजेअ: 2477)

तशरीह:

हदीष में जंगे ख़ैबर के कुछ नाज़िरीन बयान हुए हैं यही बाब से वजहे मुताबक़त है। आमिर (रज़ि.) शहीद जिनका ज़िक्र हुआ है। रईसे ख़ैबर महब नामी के मुकाबले के लिये निकले थे। उनकी तलवार खुद उन्हीं के हाथ उनके घुटने में लगी और वो शहीद हो गये। कुछ लोगों को उनके बारे में खुदकुशी का शुब्हा हुआ, जिसकी इस्लाह के लिये रसूले करीम (ﷺ) को आमिर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का इज़हार ज़रूरी हुआ।

4197. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह) ने ख़बर दी, उन्हें हुयैद तवील ने और उन्हें अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ैबर रात के वक़्त पहुँचे। आप (ﷺ) का क़ायदा था कि जब किसी क़ौम पर हमला करने के लिये रात के वक़्त मौक़े पर पहुँचते तो फ़ौस ही हमला नहीं करते बल्कि सुबह हो जाती जब करते। चुनौचे सुबह के वक़्त यहूदी अपने कुल्हाड़े और टोकरे लेकर बाहर निकले लेकिन जब उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) को देखा तो शोर करने लगे कि मुहम्मद, अल्लाह की क्रसम! मुहम्मद लश्कर लेकर आ गया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़ैबर बर्बाद हुआ, हम जब किसी क़ौम के पैदान में उतर जाते हैं तो डराए हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है।

((عَلَىٰ أَيْ لَحْمٍ؟)) قَالُوا: لَحْمٌ خُمْرِ الْإِنْسِيَةِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمْرِي قُومًا وَاتَّكَبَرُوا)) فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَوْ نُهُ رَيْفَهَا وَنَفْسَهَا قَالَ: ((أَوْ ذَاكَ)) فَلَمَّا تَصَافَّ الْقَوْمُ كَانَ سَيْفٌ غَامِرٌ قَصِيرًا فَتَنَازَلُوا بِهِ سَاقُ يَهُودِيٍّ لِيَضْرِبَهُ وَيَرْجِعَ دُبَابٌ مَتَيْهِ فَأَصَابَ عَيْنَ رَكْبَةٍ غَامِرٍ لَمَاتَ مِنْهُ قَالَ: فَلَمَّا قَفَلُوا قَالَ سَلَمَةُ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِي قَالَ ((مَا لَكَ؟)) قُلْتُ لَهُ: فَذَاكَ أَبِي وَأُمِّي زَعَمُوا أَنَّ غَامِرًا خَطَّ عَمَلُهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((كَذَبَ مَنْ قَالَ إِنَّهُ لَا جَوْرَيْنِ - وَجَمَعَ بَيْنَ اصْنَعِيدِ - إِنَّهُ لَجَاهِدٌ مُّجَاهِدٌ قُلْ غَرِبَ مَنْ شَىٰ بِهَا مَثَلٌ)) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا خَاتَمٌ قَالَ: سَأَلْتُهَا. [راجع: 2477]

4197 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ حَمِيدِ الطَّوِيلِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَتَى خَيْبَرَ لَيْلًا وَكَانَ إِذَا أَتَى قَوْمًا بَلِيلٌ لَمْ يَغْرُ بِهِمْ حَتَّى يُصْبِحَ فَلَمَّا أَصْبَحَ خَرَجَتْ الْيَهُودُ بِمَسَاحِيهِمْ وَمَكَاتِلِهِمْ فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَاللَّهِ مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا

(राजेअ: 371)

نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَنَاءَ صَبَاحِ

الْمُنْذَرِينَ)). [راجع: 371]

तरीह: वाक्रदी ने नक़ल किया है कि ख़ैबर वालों को पहले ही मुसलमानों के हमले की ख़बर मिली थी। वो हर रात मुसल्लह (हथियारबंद) होकर निकला करते थे। मगर इस रात को ऐसे गाफ़िल हुए कि उनका न कोई जानवर हरकत में आया न मुर्ग़ा ने बांग दी, यहाँ तक कि वो सुबह के वक़्त खेती के आलात (कृषि यंत्र) लेकर निकले और अचानक इस्लामी फौज पर उनकी नज़र पड़ी जिससे वो धबरा गये। अल्लाह के रसूल (ﷺ) इससे नेक फ़ाली लेते हुए ख़रिबत ख़ैबर के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल फ़र्माए जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह श्रावित हुए। इदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)

4198. हमें इदक़ा बिन फ़ज़ल ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने उययना ने ख़बर दी, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर सुबह के वक़्त पहुँचे, यहूदी अपने फावड़े वगैरह लेकर बाहर आए लेकिन जब उन्होंने हुज़ुर अकरम (ﷺ) को देखा तो चिल्लाने लगे मुहम्मद! अल्लाह की क़सम मुहम्मद (ﷺ) लश्कर लेकर आ गये। आपने फ़र्माया कि अल्लाह की ज़ात सबसे बुलन्द व बरतर है। यक़ीनन जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतर जाएँ तो फिर डराये हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है। फिर हमें वहाँ गधे का गोश्त मिला लेकिन हुज़ुर (ﷺ) की तरफ़ से ऐलान करने वाले ने ऐलान किया कि अल्लाह और उसके रसूल तुम्हें गधे का गोश्त खाने से मना करते हैं कि ये नापाक है।

अभी इससे पहले की रिवायत में है कि रात के वक़्त इस्लामी लश्कर ख़ैबर पहुँचा था, मुम्किन है रात के वक़्त ही लश्कर वहाँ पहुँचा हो, लेकिन रात मौक़े से कुछ दूरी पर गुज़ारी हो फिर जब सुबह हुई तो लश्कर मैदान में आया हो और इस रिवायत में सुबह के वक़्त पहुँचने का ज़िक्र ग़ालिबन इसी वजह से है।

4199. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वहाब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक आने वाले ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि गधे का गोश्त खाया जा रहा है। इस पर आप (ﷺ) ने खामोशी इख़्तियार की फिर दोबारा वो हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि गधे का गोश्त खाया जा रहा है। औहज़रत (ﷺ) इस बार भी खामोश रहे, फिर वो तीसरी बार आए और अर्ज़ किया कि गधे ख़त्म हो गये। उसके बाद हुज़ुर (ﷺ) ने एक मुनादी से ऐलान कराया कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) तुम्हें पालतू

٤١٩٨- أَخْبَرَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: صَبَحْنَا خَيْبَرَ بُكْرَةً فَخَرَجَ أَهْلُهَا بِالْمَسَاجِي فَلَمَّا بَصُرُوا بِالنَّبِيِّ ﷺ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَاللَّهِ مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ اللَّهَ أَخْبَرْتُ خَيْرَ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَنَاءَ صَبَاحِ الْمُنْذَرِينَ)) فَاصْتَبْنَا مِنْ لَحُومِ الْخُمُرِ قَنَادَى مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَنْهَيَانَكُمْ عَنْ لَحُومِ الْخُمُرِ فَإِنَّهَا رَجَسٌ)).

٤١٩٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ جَاءَهُ جَاءَ فَقَالَ أَكَلْتِ الْخُمُرَ؟ فَسَكَتَ. ثُمَّ أَنَاهُ الثَّانِيَةَ فَقَالَ: أَكَلْتِ الْخُمُرَ؟ فَسَكَتَ. ثُمَّ أَنَاهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ أَفْيَيْتِ الْخُمُرَ؟ فَأَمَرَ مُنَادِيًا قَنَادَى فِي النَّاسِ: ((إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ

गधों के गोश्त के खाने से मना करते हैं। चुनोंचे तमाम हॉडियाँ उलट दी गईं हालाँकि वो गोश्त के साथ जोश मार रही थीं।

(राजेअ: 371)

4200. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे प्राबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ खैबर के करीब पहुँचकर अदा की, अभी अंधेरा था फिर फर्माया, अल्लाह की ज़ात सबसे बुलन्द व बरतर है, खैबर बर्बाद हुआ, यक़ीनन जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतर जाते हैं तो डरावे हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है। फिर यहूदी गलियों में डरते हुए निकले। आख़िर हज़ुरे अकरम (ﷺ) ने उनके जंग करने वाले लोगों को क़त्ल करा दिया और औरतों और बच्चों को कैद कर लिया। क़ैदियों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रजि.) भी थीं जो दहिया कल्बी (रजि.) के हिस्से में आई थीं। फिर वो हज़ुरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में आ गईं। चुनोंचे आपने उनसे निकाह कर लिया और उनके महर में उन्हें आज़ाद कर दिया। अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने प्राबित से पूछा अबू मुहम्मद! क्या तुमने ये पूछा था कि हज़ुर (ﷺ) ने सफ़िया (रजि.) को महर में क्या दिया था? प्राबित (रजि.) ने इज़्बात में सर हिलाया। (राजेअ: 371)

4201. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन हज़ाज ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रजि.) से सुना, उन्होंने बयान किया सफ़िया (रजि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़ैदियों में थीं लेकिन आपने उन्हें आज़ाद करके उनसे निकाह कर लिया था। प्राबित (रजि.) ने अनस (रजि.) से पूछा हज़ुर (ﷺ) ने उन्हें महर क्या दिया था? उन्होंने कहा कि खुद उन्हीं को उनके महर में दिया था या'नी उन्हें आज़ाद कर दिया था। (राजेअ: 371)

तशरीह:

हज़रत सफ़िया (रजि.) खैबर के यहूदियों में बड़ी ख़ानदानी ख़ातून थीं। उन्होंने जंग से पहले ही ख़्वाब देखा था कि एक चाँद उनकी गोद में आ गया है। जंग में सुलह के बाद उनके ख़ानदानी वक़ार और बहुत सी ख़ानदानी मज़ालेह के पेशेनज़र आँ हज़रत (ﷺ) ने उनको आज़ाद करके खुद अपने हरम में ले लिया। इस तरह उनका ख़्वाब पूरा हुआ और उनका एहतिराम भी बाक़ी रहा। तफ़्सीली हालात पीछे बयान हो चुके हैं।

بَيْنَاكُمْ عَنْ لُحُومِ الْخَمْرِ (الْأَهْلِيَّةِ)
فَأَكْفَيْتِ الْقُدُورَ وَابْتِهَافُورَ بِاللَّحْمِ.

[راجع: 371]

4200 - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا
حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ
الله عَنْهُ قَالَ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الصُّبْحَ
قَرِيبًا مِنْ خَيْبَرٍ بِفُلَسٍّ ثُمَّ قَالَ: ((الله أَكْبَرُ
خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ
لَسَاءَ صَبَاحٍ الْمُنْذِرِينَ)) فَخَرَجُوا يَسْعَوْنَ
فِي السَّكَلَةِ فَقَتَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَقَابِلَةَ
وَمَسَى الدُّرَيْئَةَ. وَكَانَ فِي السَّيِّ صَفِيَّةُ
فَصَارَتْ إِلَى وَحْيَةِ الْكَلْبِيِّ، ثُمَّ صَارَتْ
إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَجَعَلَ عَقْفَهَا صَدَاقَهَا،
فَقَالَ عَبْدُ الْقَرِيرِ بْنُ صُهَيْبٍ لثَابِتٍ: يَا
أَبَا مُحَمَّدٍ أَنْتَ قُلْتَ لَأَنَسٍ مَا أَصْدَقَهَا؟
فَعَرَفْتُ ثَابِتَ رَأْسَهُ تَصْدِيقًا لَهُ.

[راجع: 371]

4201 - حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ
عَبْدِ الْقَرِيرِ بْنِ صُهَيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ
بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ
النَّبِيَّ ﷺ عَلَى غَلَبِهِ وَسَلَّمَ صَفِيَّةَ فَأَعْتَقَهَا
وَنَزَّوَجَهَا، فَقَالَ ثَابِتٌ لَأَنَسٍ: مَا أَصْدَقَهَا؟
ثَالَ: أَصْدَقَهَا نَفْسَهَا فَأَعْتَقَهَا

[راجع: 371]

4202. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (अपने लश्कर के साथ) मुश्रीकीन (या'नी) यहूदे खैबर का मुकाबला किया, दोनों तरफ से लोगों ने जंग की, फिर जब आप (ﷺ) अपने खैमे की तरफ वापस हुए और यहूदी भी अपने खैमों में वापस चले गये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के एक सहाबी के बारे में किसी ने ज़िक्र किया कि यहूदियों का कोई भी आदमी अगर उन्हें मिल जाए तो वो उसका पीछा करके उसे क़त्ल किये बग़ैर नहीं रहते। कहा गया कि आज फ़लों शख़्स हमारी तरफ से जितनी बहादुरी और हिम्मत से लड़ा है है शायद उतनी बहादुरी से कोई भी नहीं लड़ा होगा लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने उनके बारे में फ़र्माया कि वो अहले दोज़ख़ में से है। एक सहाबी (रज़ि.) ने उस पर कहा कि फिर मैं उनके साथ साथ रहूँगा, बयान किया कि फिर वो उनके पीछे हो लिये जहाँ वो ठहर जाते वो भी ठहर जाते और जहाँ वो दौड़कर चलते थे भी दौड़ने लगते। बयान किया कि फिर वो साहब ज़ख़मी हो गये, इतिहाज़ शदीद तौर पर और चाहा कि जल्दी मौत आ जाए। इसलिये उन्होंने अपनी तलवार ज़मीन में गाड़ दी और उसकी नोक सीना के मुकाबिल करके उस पर गिर पड़े और इस तरह ख़ुदकुशी कर ली। अब दूसरे सहाबी (जो उनकी जुस्तजू में लगे हुए थे) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अज़्र किया मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं। पूछा क्या बात है? उन सहाबी (रज़ि.) ने अज़्र किया कि जिनके बारे में अभी हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि वो अहले दोज़ख़ में से हैं तो लोगों पर आपका ये फ़र्माना बड़ा शाक़ गुज़रा था, मैंने उनसे कहा कि मैं तुम्हारे लिये उनके पीछे-पीछे जाता हूँ। चुनौचे मैं उनके साथ-साथ रहा। एक मौक़े पर जब वो शदीद ज़ख़मी हो गये तो इस ख़्वाहिश में कि मौत जल्दी आ जाए अपनी तलवार उन्होंने ज़मीन में गाड़ दी और उसकी नोक को अपने सीने के सामने करके उस पर गिर पड़े और इस तरह उन्होंने ख़ुद अपनी जान को हलाक कर दिया। इसी मौक़े पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंसान ज़िन्दगी भर जन्नत वालों के

٤٢٠٢ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ التَّقَى هُوَ وَالْمُشْرِكُونَ فَاقْتَتَلُوا، فَلَمَّا مَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى عَسْكَرِهِ، وَمَالَ الْآخَرُونَ إِلَى عَسْكَرِهِمْ وَلِيَ اصْخَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ رَجُلٌ لَا يَدْعُ لَهُمْ شَاذَةً وَلَا فَاذَةً إِلَّا اتَّبَعَهَا يَضْرِبُهَا بِسَيْفِهِ، فَقِيلَ مَا اجْزَأَ فُلَانٌ مِنَّا الْيَوْمَ أَحَدًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَمَا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أَنَا صَاحِبُهُ، قَالَ: فَخَرَجَ مَعَهُ كُلَّمَا وَقَفَ وَقَفَ مَعَهُ وَإِذَا اسْتَرْعَ اسْتَرْعَ مَعَهُ، قَالَ: فَخَرَجَ الرَّجُلُ جُرْحًا شَدِيدًا فَاسْتَفْجَلَ الْمَوْتَ فَوَضَعَ سَيْفَهُ بِالْأَرْضِ فَوَضَعَ سَيْفَهُ بِأُذُنِهِ بَيْنَ نَدْيَيْهِ ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَى سَيْفِهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَخَرَجَ الرَّجُلُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((وَمَا ذَٰلِكَ؟)) قَالَ: الرَّجُلُ الَّذِي ذَكَرْتَ آيِفًا أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَأَعْظَمَ النَّاسُ ذَٰلِكَ فَقُلْتُ أَنَا لَكُمْ بِهِ، فَخَرَجْتُ فِي طَلَبِهِ ثُمَّ جُرِحَ جُرْحًا شَدِيدًا فَاسْتَفْجَلَ الْمَوْتَ فَوَضَعَ نَصْلَ سَيْفِهِ فِي الْأَرْضِ وَذَبَابَهُ بَيْنَ نَدْيَيْهِ، ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَيْهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ غَدَ ذَٰلِكَ: ((إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلِ أَهْلِ النَّجَى فِيمَا يَتَدَوَّى لِلنَّاسِ

अमल करता है, हालाँकि वो अहले दोज़ख में से होता है। इसी तरह दूसरा शख्स ज़िन्दगी भर अहले दोज़ख के अमल करता है, हालाँकि वो जन्नती होता है। (राजेज़: 2992)

وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ فِيمَا يَتَدَوَّى لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)).

[راجع: ٢٩٩٢]

तशीह: आँहज़रत (ﷺ) को वज़रिये वद्दा उस शख्स का अंजाम मा'लूम हो चुका था। जैसा आपने फ़र्माया वैसा ही हुआ कि वो शख्स खुदकुशी करके ह़राम मौत मर गया और दोज़ख में दाखिल हुआ। इसीलिये अंजाम का फ़िक्र ज़रूरी है कि फ़ैसला अंजाम ही के मुताबिक़ होता है। अल्लाह तआला ख़ात्मा बिल ख़ैर नज़ीब करे, आमीन। इस हदोष में जंगे ख़ैबर का ज़िक्र है, यही बाब से मुताबक़त है।

4203. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर की जंग में शरीक थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक स़ाहब के बारे में जो आपके साथ थे और ख़ुद को मुसलमान कहते थे फ़र्माया कि ये शख्स अहले दोज़ख में से है। फिर जब लड़ाई शुरू हुई तो वो स़ाहब बड़ी पा-मर्दी से लड़े और बहुत ज़्यादा ज़ख़मी हो गये। मुम्किन था कि कुछ लोग शुब्हा में पड़ जाते लेकिन उन स़ाहब के लिये ज़ख़मों की तकलीफ़ नाफ़ाबिले बर्दाश्त थी। चुनौचे उन्होंने अपने तरकश में से तीर निकाला और अपने सीने में चुभो दिया। ये मंज़र देखकर मुसलमान दौड़ते हुए हुज़ुरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने आपका फ़र्मान सच कर दिखाया। उस शख्स ने ख़ुद अपने सीने में तीर चुभोकर ख़ुदकुशी कर ली है। इस पर हुज़ुर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ फ़लौ! जा और ऐलान कर दे कि जन्नत में सिर्फ़ मोमिन ही दाख़िल होंगे। यूँ अल्लाह तआला अपने दीन की मदद फ़ाज़िर शख्स से भी ले लेता है। इस रिवायत की मुताबक़त मअमर ने जुहरी से की। (राजेज़: 2898)

٤٢٠٣ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسْتَيْبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْنَا خَيْبَرَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِرَجُلٍ مِمَّنْ مَعَهُ يَذْعِي الْإِسْلَامَ: ((هَذَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) فَلَمَّا خَضَرَ الْقِتَالُ قَاتَلَ الرَّجُلُ أَشَدَّ الْقِتَالِ حَتَّى كَثُرَتْ بِهِ الْجِرَاحَةُ فَكَادَ يَفْضُئُ النَّاسَ يَرْتَابُ فَوَجَدَ الرَّجُلُ أَلَمَ الْجِرَاحَةِ فَأَهْوَى يَدِيهِ إِلَى كَتَانِيهِ فَاسْتَخْرَجَ مِنْهَا سَهْمًا فَخَرَّ بِهَا نَفْسَهُ فَاشْتَدَّ رَجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ صَدَقَ اللَّهُ خَدِيثَكَ انْتَحَرَ فَلَانٌ لَقِئَ نَفْسَهُ، فَقَالَ: ((قُمْ يَا فَلَانُ قَاذِنَ أَنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا مُؤْمِنٌ، إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ الْدِّينَ بِالرَّجُلِ الْقَاجِرِ)). تَابَعَهُ

مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ. [راجع: ٢٨٩٨]

4204. और शबीब ने यूनुस से बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब जुहरी से, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब और अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़व-ए-ख़ैबर में मौजूद थे और इब्नुल मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनुस ने,

٤٢٠٤ - وَقَالَ شُعَيْبٌ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسْتَيْبِ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: شَهِدْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ خَيْبَرَ

उनसे जुहरी ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। इस रिवायत की मुताबअत मालेह ने जुहरी से की और जुबैदी ने बयान किया, उन्हें जुहरी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन कअब ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन कअब ने ख़बर दी कि मुझे उन सहाबी ने ख़बर दी जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़व-ए-ख़ैबर में मौजूद थे। जुहरी ने बयान किया और मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह और सईद बिन मुसय्यिब (रज़ि.) ने ख़बर दी रसूलुल्लाह (ﷺ) से।

(राजेअ : 3062)

وَقَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ۱. تَابَعَهُ صَالِحٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ. وَقَالَ الزُّهْرِيُّ أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ كَعْبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَيْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ شَهِدَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ خَيْرَ قَالَ الزُّهْرِيُّ وَأَخْبَرَنِي عُمَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ وَسَعِيدُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: 3062]

तशरीह: तबरानी की रिवायत में है कि जब आपने उसको दोज़खी फ़र्माया, लोगों को बहुत गर्रां गुजरा। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! जब ऐसी मेहनत और कोशिश करने वाला दोज़खी है तो फिर हमारा हाल क्या होना है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शख्स दोज़खी है, अपना निफ़ाक़ छुपाता है। मा'लूम हुआ कि जाहिरी आ'माल पर हुक्म नहीं लगाया जा सकता, जब तक अंदरूनी हालात की दुरुस्तगी न हो। अल्लाह सबको निफ़ाक़ से बचाए। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का क़ौल जो शबीब अन यूनुस से रिवायत किया गया है, असल ये है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के पास उस वक़्त आए थे जब जंगे ख़ैबर ख़त्म हो चुकी थी। इसलिये शबीब और मअमर की रिवायत में जो ख़ैबर का लफ़ज़ है उसमें शुब्हा रहता है तो इमाम बुखारी (रह) ने शबीब और इब्ने मुबारक की रिवायतों से ये प़ाबित किया कि उनमें बजाय ख़ैबर के हुनैन का लफ़ज़ मज़कूर है। सहीह बुखारी के कुछ नुस्खों में यहाँ ख़ैबर का लफ़ज़ मज़कूर है, कुछ ने कहा वही सहीह है।

4205. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे आसिम ने, उनसे अबू इब्मामन ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ैबर पर लश्कर कशी की या यूँ बयान किया जब रसूलुल्लाह (ﷺ) (ख़ैबर की तरफ) ख़ाना हुए तो (रास्ते में) लोग एक वादी में पहुँचे और बुलन्द आवाज़ के साथ तक्बीर कहने लगे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह ही बड़ा है, अल्लाह ही बड़ा है, नहीं है कोई मा'बूद सिवाय अल्लाह के)। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अपनी जानों पर रहम करो, तुम किसी बहरे को या ऐसे शख्स को नहीं पुकार रहे हो, जो तुमसे दूर हो, जिसे तुम पुकार रहे हो वो सबसे ज़्यादा सुनने वाला और तुम्हारे बहुत नज़दीक है बल्कि वो तुम्हारे साथ है। मैं हज़ूर अकरम (ﷺ) की सवारी के पीछे था। मैंने जब ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहा तो हज़ूर (ﷺ) ने सुन लिया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब्दुल्लाह बिन क्रैस! मैंने कहा लब्बैक या रसूलुल्लाह! आपने फ़र्माया, क्या मैं तुम्हें एक ऐसा

٤٢٠٥ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي غُثْمَانَ عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ : لَمَّا غَزَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ أَوْ قَالَ لَمَّا تَوَجَّهَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَشْرَفَ النَّاسُ عَلَى وَادٍ فَرَفَعُوا أَصْوَاتَهُمْ بِالْكَبِيرِ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((ارْتَفِعُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّكُمْ لَا تَدْعُونَ اصْمَ وَلَا غَايَا، إِنَّكُمْ تَدْعُونَ سَمِيْعًا قَرِيْبًا، وَهَوَ مَعَكُمْ)). وَأَنَا خَلْفَ ذَايَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَسَمِعَنِي وَأَنَا أَقُولُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ فَقَالَ

कलिमा न बता दूँ जो जन्नत के खज़ानों में से एक खज़ाना है? मैंने अर्ज किया ज़रूर बताइए, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ बाप आप (ﷺ) पर कुर्बान हों। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो कलिमा यही है। ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह या'नी गुनाहों से बचना और नेकी करना ये उसी वक़्त मुम्किन है, जब अल्लाह की मदद शामिले हाल हो।

يُ: ((بَا عِنْدَ اللَّهِ بِنَ قَيْسٍ)) قُلْتُ لَيْتَ رَسُولُ اللَّهِ قَالَ: ((أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ مِنْ كَثَرٍ مِنْ كُتُوبِ الْحَيَاةِ)) قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ بِذَاكَ أَبِي وَأُمِّي قَالَ: ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ)).

जंगे ख़ैबर के लिये इस्लामी फ़ौज की रवानगी का एक मंज़ूर इस रिवायत में पेश किया गया है और बाब और हदीष में यही मुताबक़त है। ये भी ग़ाबित हुआ कि ज़िक्रे इलाही के लिये चीखने की ज़रूरत नहीं है। नामोनिहाद सूफ़ियों में ज़िक्र बिल जबर का एक वज़ीफ़ा मुरव्वज (बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना) है, जोर जोर से कलिमा की ज़ब लगाते हैं। इस क़दर चीखकर कि सुनने वालों के कान खड़े हो जाते हैं। इस हदीष से उनकी भी मज़म्मत ग़ाबित हुई। जिस जगह शारेअ (अलैहिस्सलाम) ने जहर की इजाज़त दी है, वहाँ जहर ही अफ़ज़ल है जैसे अज़ान पंजवक़ता जहर ही के साथ मतलूब है या जहरी नमाज़ों में सूरह फ़ातिहा के बाद मुक़तदी और इमाम दोनों के लिये आमीन बिल जहर कहना। ये रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नत है ग़र्ज़ हर जगह ता'लीमात मुहम्मदी को मद्देनज़र रखना ज़रूरी है।

4206. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने बयान किया, कहा कि मैंने सलमा बिन अक्व़ा (रज़ि.) की पिण्डली में एक ज़ख़म का निशान देखकर उनसे पूछा ऐ अबू मुस्लिम! ये ज़ख़म क्या है उन्होंने बताया कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में मुझे ये ज़ख़म लगा था, लोग कहने लगे कि सलमा ज़ख़मी हो गया। चुनौचे मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) ने तीन मर्तबा उस पर दम किया, उसकी बरक़त से आज तक मुझे उस ज़ख़म से कोई तकलीफ़ नहीं हुई।

٤٢٠٦ - حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي غَيْثٍ قَالَ: رَأَيْتُ أُنْزَ صَرْبَةً فِي سَاقِ سَلْمَةَ فَقُلْتُ يَا أَبَا مُسْلِمٍ مَا هَذِهِ الصَّرْبَةُ؟ قَالَ: هَذِهِ صَرْبَةٌ أَصَابَتْنِي يَوْمَ حَيْبَرٍ، فَقَالَ النَّاسُ: أَصِيبَ سَلْمَةُ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَفُتِّ فِيهِ ثَلَاثَ نَفَثَاتٍ فَمَا اشْتَكَيْتُهَا حَتَّى السَّاعَةِ.

4207. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमाने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी हाज़िम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ग़ज़्वा (ख़ैबर) में नबी करीम (ﷺ) और मुशिकीन का मुक़ाबला हुआ और ख़ूब जमकर जंग हुई आख़िर दोनों लश्कर अपने अपने ख़ैमों की तरफ़ वापस हुए और मुसलमानों में एक आदमी था जिन्हें मुशिकीन की तरफ़ का कोई शख़्स कहीं मिल जाता तो उसका पीछा करके क़त्ल किये बग़ैर न रहते। कहा गया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! जितनी बहादुरी से आज फ़र्लौ शख़्स लड़ा है, इतनी बहादुरी से तो कोई न लड़ा होगा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो अहले दोज़ख़ में

٤٢٠٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ قَالَ: الْقَى النَّبِيُّ ﷺ وَالْمُشْرِكُونَ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ فَاقْتُلُوا فَمَالَ كُلُّ قَوْمٍ إِلَى عَسْكَرِهِمْ وَفِي الْمُسْلِمِينَ رَجُلٌ لَا يَدْعُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ شَاذَةً وَلَا فَاذَةً إِلَّا اتَّبَعَهَا فَضَرَبَهَا بِسَيْفِهِ فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَجْزَأُ أَحَدًا مَا أَجْزَأُ فَلَانَ فَقَالَ: ((إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) فَقَالُوا: أَيُّنَا مِنْ أَهْلِ الْحَيَاةِ إِنَّ

से है। सहाबा (रज़ि.) ने कहा, अगर ये भी दोज़खी है तो फिर हम जैसे लोग किस तरह जन्नत वाले हो सकते हैं? इस पर एक सहाबी बोले कि मैं उनके पीछे पीछे रहूँगा। चुनौचे जब वो दौड़ते या आहिस्ता चलते तो मैं उनके साथ होता। आखिर वो ज़खमी हुए और चाहा कि मौत जल्दी आ जाए। इसलिये वो तलवार का क़ब्ज़ा ज़मीन में गाड़कर उसकी नोक सीने के मुक़ाबिल करके उस पर गिर पड़े। इस तरह से उसने खुदकुशी कर ली। अब वो सहाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। आपने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने तफ़्सील बताई तो आपने फ़र्माया कि एक शख्स बज़ाहिर जन्नतियों जैसे अमल करता रहता है हालाँकि वो अहले दोज़ख में से होता है। इसी तरह एक दूसरा शख्स बज़ाहिर दोज़खियों के से अमल करता रहता है हालाँकि वो जन्नती होता है। (राज़ेअ: 2898)

كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ. فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ لَا تَبْعُهُ فَإِذَا أَسْرَعَ وَأَبْطَأَ كُنْتُ مَعَهُ حَتَّى جُرِحَ فَاسْتَفْخَلَ الْمَوْتَ فَوَضَعَ نَصَابَ سَيْفِهِ بِالْأَرْضِ وَذُبَابُهُ بَيْنَ نَدْتَيْهِ ثُمَّ تَخَامَلَ عَلَيْهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَجَاءَ الرَّجُلُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((وَمَا ذَٰلِكَ؟)) فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ: ((إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فِيمَا يَنْدُو لِلنَّاسِ، وَإِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فِيمَا يَنْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)). (راجع: ٢٨٩٨)

तशरीह: इसलिये तो फ़र्माया कि असल ए'तिबार ख़ात्मा का है। जन्नती लोगों का ख़ात्मा जन्नत के आ'माल पर और जहन्नमियों का ख़ात्मा जहन्नम के आ'माल पर होता है। खुदकुशी करना शरीअत में सख़्त जुर्म क़रार दिया गया है। ये ह़राम मौत मरना है। रिवायत में जंगे ख़ैबर का ज़िक्र है। यही रिवायत और बाब में मुताबक़त है। ये नोट आज शाबान सन 1392 हिजरी को मस्जिद अहले हदीष हिन्दूपुर में लिख रहा हूँ। अल्लाह तआला इस मस्जिद को कायम व दायम रखे, आमीन।

4208. हमसे मुहम्मद बिन सईद ख़ुज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे ज़ियाद बिन रबीअ ने बयान किया, उनसे अबू इमरान ने बयान किया कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने (बग़दा की मस्जिद में) जुम्अे के दिन लोगों को देखा कि (उनके सिरों पर) चादरें हैं जिन पर फूल कढ़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि ये लोग इस वक़्त ख़ैबर के यहूदियों की तरह मा'लूम होते हैं।

٤٢٠٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيدٍ الْخَزَاعِيُّ حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَبِي الرِّبِيعِ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ قَالَ: نَظَرْتُ أَنَسَ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحُمْقَةِ فَرَأَى طَائِلَةَ فَقَالَ: كَانَتْهُمْ السَّاعَةُ يَهُودَ خَيْبَرٍ

तशरीह: हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़मति हैं कि ये लोग अक़़र चादरें ओढ़ते होंगे और दूसरे लोग जिनको हज़रत अनस (रज़ि.) ने देखा था वो इस क़दर क़रत से चादरें न ओढ़ते होंगे। इसलिये उनको यहूदियों से मुशाबिहत दी। उससे चादर ओढ़ने की क़राहियत नहीं निकलती। कुछ ने कहा अनस (रज़ि.) ने दो रंग की चादरों के ओढ़ने पर इंकार किया मगर तब्रानी ने उम्मे सलमा (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) अक़़र अपनी चादर और इज़ार को ज़ा'फ़रान या विस' से रंगते। कुछ ने कहा ये लोग चादरें इस तरह ओढ़ते थे जैसे यहूदी ओढ़ते हैं कि पीठ और मूँढ़ों पर डालकर दोनों किनारे लटके रहने देते हैं, उलटते नहीं। अनस (रज़ि.) ने इस पर इंकार किया। एक दूसरी हदीष में है कि यहूद की मुखात्फ़त करो।

4209. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमाने बयान किया, कहा हमसे

٤٢٠٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ

हातिम ने बयान किया, उनसे यजीद बिन अबी उबैद ने और उनसे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि अली (रज़ि.) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ न जा सके थे क्योंकि आशूबे चश्म (आँख दुखने की बीमारी) में मुब्तला थे। (जब आँहज़ूर (ﷺ) जा चुके) तो उन्होंने सोचा, अब मैं हज़ुरे अकरम (ﷺ) के साथ ग़ज़वा में भी शरीक न होऊँगा? चुनौचे वो भी आ गये। जिस दिन ख़ैबर फ़तह होना था, जब उसकी रात आई तो आँहज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि कल मैं (इस्लामी) अलम (झण्डा) उस शस्त्र को दूँगा या फ़र्माया कि अलम वो शस्त्र लेगा जिसे अल्लाह और उसके रसूल अज़ीज़ रखते हैं और जिसके हाथ पर फ़तह हासिल होगी। हम सब ही इस सज़ादत के उम्मादवार थे लेकिन कहा गया कि ये हैं अली (रज़ि.) और हज़ूर (ﷺ) ने उन्हीं को झण्डा दिया और उन्हीं के हाथ पर ख़ैबर फ़तह हुआ। (राजेअ: 2976)

4210. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि कल मैं झण्डा उसको दूँगा जिसके हाथों पर अल्लाह तआला फ़तह अता करेगा और जो अल्लाह और उसके रसूल से ज़्यादा मुहब्बत रखता है और अल्लाह और उसके रसूल भी उसको अज़ीज़ रखते हैं। रावी ने बयान किया कि वो रात सबकी इतना फ़िक्र में गुज़र गई कि देखें, हज़ुरे अकरम (ﷺ) अलम किसे अता करते हैं। सुबह हुई तो सब ख़िदमते नबवी (ﷺ) में हाज़िर हुए और इस उम्मीद के साथ कि अलम उन्हीं को मिलेगा लेकिन हज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, अली बिन अबी तालिब कहाँ है? अर्ज़ किया गया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वो तो आँखों की तकलीफ़ में मुब्तला हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें बुला लाओ। जब वो लाए गये तो हज़ूर (ﷺ) ने अपना थूक उनकी आँखों में लगा दिया और उनके लिये दुआ की। इस दुआ की बरकत से उनकी आँखें इतनी अच्छी हो गईं जैसे पहले कोई बीमारी ही नहीं थी। हज़रत अली (रज़ि.) ने अलम सम्भालकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं उनसे उस वक़्त तक जंग करूँगा जब तक वो हमारे ही जैसे न हो जाएँ। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, यूँ ही चले जाओ, उनके

حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلْمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَتْ: كَانَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَيْبَرَ وَكَانَ زَمِيذًا فَقَالَ: أَنَا أَتَخَلَّفُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَلَجِقَ بِهِ فَلَمَّا بَقِيَ اللَّيْلَةُ الَّتِي لَبِثْتُ قَالَتْ: ((لَأُعْطِينَ الرَّايَةَ غَدًا - أَوْ لَأُخَذَتِ الرَّايَةُ غَدًا - رَجُلٌ يُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ، يُفْتَحُ عَلَيْهِ)) فَخَنُ تَرَجَوْهَا فَقِيلَ: هَذَا عَلِيٌّ فَأَعْلَمَهُ لَفُتِحَ عَلَيْهِ.

[راجع: 2976]

4210 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي جَازِمٍ قَالَتْ: أَخْبَرَنِي سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ يَوْمَ خَيْبَرَ: ((لَأُعْطِينَ هَذِهِ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلًا يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَى يَدَيْهِ، يُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ، وَيُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ)) قَالَتْ: فَبَاتَ النَّاسُ يَدُوكُمُ لَيْلَتَهُمْ أَيُّهُمْ يُعْطَاهَا فَلَمَّا صَبَحَ النَّاسُ غَدَوْا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كُلُّهُمْ يَرْجُوا أَنْ يُعْطَاهَا فَقَالَ: ((إِنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ؟)) فَقِيلَ: هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ قَالَتْ: ((فَارْسِلُوا إِلَيْهِ)) فَأَتِي بِهِ فَصَقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَيْنَيْهِ وَدَعَا لَهُ قَبْرًا حَتَّى كَانَ لَمْ يَكُنْ بِهِ وَجَعٌ فَأُعْطَاهُ الرَّايَةَ فَقَالَ عَلِيٌّ يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَقْبَلْتَهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِنِّي. فَقَالَ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ: ((انْفُذْ عَلَيَّ رِسَالِكَ حَتَّى تَنَزِلَ

मैदान में उतरकर पहले उन्हें इस्लाम की दा'वत देना और बताओ कि अल्लाह का उन पर क्या हक है। अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारे ज़रिये एक शख्स को भी हिदायत मिल जाए तो ये तुम्हारे लिये सुर्ख ऊँटों से बेहतर है।

(राजेअ : 2942)

मा'लूम हुआ कि जंग इस्लाम का मकसूद अव्वल नहीं है। इस्लाम का मकसूद हकीकी इशाअते इस्लाम है जो अगर तबलीगे इस्लाम से हो जाए तो लड़ने की हर्गिज़ इजाज़त नहीं है। अल्लाह तआला ने कुआन मजीद में साफ़ फ़र्माया है कि अल्लाह पाक फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता, वो तो अदल व इंसाफ़ और सुलह व अमन व अमान का चाहने वाला है। हज़रत अली (रज़ि.) को फ़ातेहे-ख़ैबर इसलिये कहा जाता है कि उन्होंने आख़िर में झण्डा सम्भाला और अल्लाह ने उनके हाथ पर ख़ैबर फ़तह करवाया। लाल ऊँट अरब के मुल्क में बहुत कीमती होते हैं।

4211. हमसे अब्दुल ग़फ़ार बिन दाऊद ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुझसे अहमद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान जुहरी ने ख़बर दी, उन्हें मुत्तलिब के मौला अमर ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर आए फिर जब अल्लाह तआला ने आँहुज़ूर (ﷺ) को ख़ैबर की फ़तह इनायत फ़र्माई तो आपके सामने सफ़िया बिनते हुय़िय बिन अख़्तब (रज़ि.) की ख़ूबसूरती का किसी ने ज़िक्र किया, उनके शौहर क़त्ल हो गये थे और उनकी शादी अभी नई हुई थी। इसलिये हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें अपने लिये ले लिया और उन्हें साथ लेकर हुज़ूर (ﷺ) रवाना हुए। आख़िर जब हम मुक़ामे सदस सहबाअ में पहुँचे तो उम्मुल मोमिनीन सफ़िया (रज़ि.) हैज़ से पाक हुई और हुज़ूर (ﷺ) ने उनके साथ ख़ल्वत फ़र्माई। फिर आपने हैस बनवाया। (जो खज़ूर के साथ घी और पनीर वगैरह मिलाकर बनाया जाता है) और उसे छोटे से एक दस्तरख़वान पर रखकर मुझको हुक्म फ़र्माया कि जो लोग तुम्हारे करीब हैं उन्हें बुला लो। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रज़ि.) का आँहुज़रत (ﷺ) की तरफ़ से यही वलीमा था। फिर हम मदीना के लिये रवाना हुए तो मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के लिये अब्बा ऊँट की कोहान

بَسَاخِيهِمْ ثُمَّ اَذْغَمَهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ
وَاجْبَرَهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللَّهِ
لِيُوَفَّى اللَّهُ لَأَن يَهْدِيَ اللَّهُ بِكَ رَجُلًا
وَاحِدًا خَيْرٌ لَّكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ خُمْرُ
النَّعَمِ)). (راجع: ٢٩٤٢)

٤٢١١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَفَّارِ بْنُ دَاوُدَ،
حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ح
وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ
أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الزُّهْرِيُّ
عَنْ عَمْرِو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ عَنْ أَنَسِ بْنِ
مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ : قَدِمْنَا خَيْبَرَ
فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَيْشَ ذَكَرَ لَهُ
جَمَالُ صَفِيَّةَ بِنْتِ حِمْيَرٍ أَخْطَبَ وَقَدْ
قِيلَ زَوْجُهَا وَكَانَتْ غُرُوسًا فَاصْطَفَاهَا
النَّبِيُّ ﷺ لِنَفْسِهِ فَخَرَجَ بِهَا حَتَّى بَلَغْنَا مَدَنَ
الصُّهْبَاءِ حَلَّتْ قَبْلِي بِهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ثُمَّ
صَنَعَ حَسْبًا لِي يَطْعُ صَغِيرٌ ثُمَّ قَالَ لِي :
(«إِذَا مِنْ حَوْلِكَ») فَكَانَتْ تِلْكَ وَلِيمَتُهُ
عَلَى صَفِيَّةَ ثُمَّ خَرَجْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ فَرَأَيْتُ
النَّبِيَّ ﷺ يُحَوِّي لَهَا وَرَاءَهُ بَقَاءَةً ثُمَّ
يَجْلِسُ عِنْدَ بَعِيرِهِ فَيَضَعُ رُكْبَتَهُ وَتَضَعُ
صَفِيَّةُ رِجْلَهَا عَلَى رُكْبَتِهِ حَتَّى تَرْتَكِبَ.

(راجع: ٢٧١)

में बाँध दी ताकि पीछे से वो उसे पकड़े रहें और अपने कैंट के पास बैठकर अपना घुटना उस पर रखा और सफ़िया (रज़ि.) अपना पैर आँहज़ूर (ﷺ) के घुटने पर रखकर सवार हुई। (राजेज़: 371)

4212. हमसे इस्माईल बिन अबू उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे यह या बिन सईद अंसारी ने, उनसे हुमैद ततवील ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने सफ़िया बिनते हथिय (रज़ि.) के लिये ख़बर के रास्ते में तीन दिन तक क़याम फ़र्माया और आख़िरी दिन उनसे ख़ल्वत फ़र्माई और वो भी उम्महातुल मोमिनीन में शामिल हो गई। (राजेज़: 371)

4213. हमसे सईद बिन अबी मसयम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र बिन अबी कषीर ने ख़बर दी, कहा कि मुझे हुमैद ने ख़बर दी और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना और ख़बर के दरम्यान (मक्का मे सहस सहबा में) तीन दिन तक क़याम फ़र्माया और वहीं सफ़िया (रज़ि.) से ख़ल्वत की थी फिर मैंने हज़ूर (ﷺ) की तरफ़ से मुसलमानों को वलीमा की दा'वत दी। आपके वलीमे में न रोटी थी, न गोश्त था सिर्फ़ इतना हुआ कि आपने बिलाल (रज़ि.) को दस्तरख़वान बिछाने का हुक्म दिया और वो बिछा दिया गया, फिर उस पर खज़ूर, पनीर और घी (का मलीदा) रख दिया। मुसलमानों ने कहा कि सफ़िया (रज़ि.) उम्महातुल मोमिनीन में से हैं या बांदी हैं? कुछ लोगों ने कहा कि अगर आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें पदों में रखा तो वो उम्महातुल मोमिनीन में से होंगी लेकिन अगर आप (ﷺ) ने उन्हें पदों में नहीं रखा तो फिर ये उसकी अलामत होगी कि वो बांदी हैं। आख़िर जब कूच का वक़्त हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये अपनी सवारी पर पीछे बैठने की जगह बनाई और उनके लिये पर्दा किया। (राजेज़: 371)

4214. हमसे अबुल वलीद बिन अब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन हज़ाज ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यहब बिन जरीर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल

४२१२ - حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَحْيَى عَنْ حُمَيْدِ الطُّوَيْلِ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَقَامَ عَلَى صَفِيَّةَ بِنْتُ حُصَيْنٍ بِطَرِيقِ خَيْبَرَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ حَتَّى أَغْرَمَ بِهَا وَكَانَتْ لِيَمَنَ شَرِبَ عَلَيْهَا الْحِجَابُ.

[راجع: 371]

४२१३ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ أَنَّ سَمْعَ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ ثَلَاثِينَ خَيْرًا وَالْمَدِينَةَ ثَلَاثَ لَيَالٍ يُتَى عَلَيْهِ بِصَفِيَّةَ، فَدَعَوَتْ الْمُسْلِمِينَ إِلَى وَلِيمَتِهِ، وَمَا كَانَ فِيهَا مِنْ خَبْزٍ وَلَا لَحْمٍ وَمَا كَانَ فِيهَا إِلَّا أَنْ أَمَرَ بِلَالًا بِالْأَنْطَاعِ فَبَسِطَتْ فَالْقَى عَلَيْهَا التَّمْرَ وَالْأَقِطَ وَالسَّمْنَ فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ: إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ أَوْ مَا مَلَكَتْ يَمِينُهُ قَالُوا: إِنَّ حَجَّتَهَا لَهِيَ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، وَإِنْ لَمْ يَحْجَّهَا فَهِيَ مِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهُ، فَلَمَّا ارْتَحَلَ وَطَأَ لَهَا خَلْفَهُ وَمَدَّ الْحِجَابَ. [راجع: 371]

४२१४ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حَوِيْدٍ بْنِ هِلَالٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغْفَلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

(रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर का मुह्रासरा किये हुए थे कि किसी शख्स ने चमड़े की एक कुप्पी फेंकी जिसमें चर्बी थी, मैं उसे उठाने के लिये दौड़ा लेकिन मैंने जो मुड़कर देखा तो हुजुरे अकरम (ﷺ) मौजूद थे, मैं शर्म से पानी-पानी हो गया।

قَالَ: كُنَّا مُحَاصِرِي خَيْبَرَ فَرَمَى إِنْسَانٌ بِحِرَابٍ فِيهِ شَحْمٌ فَتَرَوْتُ لَأَخْذَهُ فَالْتَفَتُ فَإِذَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَحْيَيْتُ.

4215. मुझसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबूदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ और सालिम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़व-ए-ख़ैबर के मौक़ा पर नबी करीम (ﷺ) ने लहसुन और पालतू गधों के खाने से मना किया था। लहसुन खाने की मुमानअत का ज़िक्र सिर्फ़ नाफ़ेअ से मन्कूल है और पालतू गधों के खाने की मुमानअत सिर्फ़ सालिम से मन्कूल है। (राजेअ: 853)

٤٢١٥- حَدَّثَنِي عُثَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ أَبِي أَسَامَةَ عَنْ عُثَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ وَسَالِمٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ أَكْلِ الْقَوْمِ وَالْعَوْمِ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ. نَهَى عَنْ أَكْلِ الْقَوْمِ. هُوَ عَنْ نَافِعٍ وَخُذَهُ وَالْعَوْمِ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ عَنْ سَالِمٍ. [راجع: ٨٥٣]

4216. मुझसे यह्या बिन कज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन हसन ने जो दोनों मुहम्मद बिन अली के साहबज़ादे हैं, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने किरसूले करीम (ﷺ) ने ग़ज़व-ए-ख़ैबर के मौक़ा पर औरतों से मुत्तआ का मुमानअत की थी और पालतू गधों के खाने की भी।

٤٢١٦- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ وَالْحَسَنِ ابْنَيْ مُحَمَّدٍ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ أَبِيهِمَا عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ مُتْعَةِ النِّسَاءِ يَوْمَ خَيْبَرَ وَعَنْ أَكْلِ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ.

(दीगर मक़ाम: 5115, 5523, 6961)

[أطرافه في: ٥١١٥, ٥٥٢٣, ٦٩٦١.]

तशरीह: इससे पहले मुत्तआ करना जाइज़ था, मगर उस दिन से मुत्तआ क़ायमत तक के लिये ह़राम करार दिया गया। रवाफ़िज़ मुत्तआ के क़ाइल हैं जो सरासर बातिल ख़याल हैं। इस्लाम जैसे बावुसूल मज़हब में मुत्तआ जैसे नाजाइज़ फ़ैअल की कोई गुंजाइश क़तइन नहीं है। कुछ रिवायतों के मुताबिक़ हज़रत विदाअ में मुत्तआ ह़राम हुआ और क़ायमत तक इसकी ह़र्मत क़ायम रही। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बरसरे मिम्बर इसकी ह़र्मत बयान की और दूसरे सहाबा (रज़ि.) ने सुकूत (चुप्पी इख़्तियार) किया तो इसकी ह़र्मत पर इज़्माअ षाबित हो गया।

4217. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उनसे अबूदुल्लाह बिन उमर ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर गधे का गोश्त खाने की मुमानअत की थी।

٤٢١٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقْبَلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ حَدَّثَنَا عُثَيْدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ.

(राजेअ: 853)

[راجع: ٨٥٣]

4218. मुझसे इस्हाक़ बिन नसर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन अब्द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ और सालिम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पालतू गधों के गोश्त की मुमानअत की थी। (राजेअ: 853)

4219. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अमर ने, उनसे मुहम्मद बिन अली ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर गधे के गोश्त खाने की मुमानअत की थी और घोड़ों के गोश्त को खाने की इजाज़त दी थी। (दीगर मक़ाम: 5520, 5524)

इमाम शाफ़िई (रह) ने भी इस हदीस की बिना पर घोड़े को हलाल करार दिया है।

4220. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अब्बाद ने बयान किया, उनसे शैबानी ने बयान किया और उन्होंने इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना कि ग़ज्व-ए-ख़ैबर में एक मौक़े पर हम बहुत भूखे थे, इधर हाँडियों में उबाल आ रहा था (गधे का गोश्त पकाया जा रहा था) और कुछ पक भी गई थीं कि नबी करीम (ﷺ) के मुनादी ने ऐलान किया कि गधे के गोश्त का एक ज़रा भी न खाओ और उसे फेंक दो। इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर कुछ लोगों ने कहा कि औहज़रत (ﷺ) ने इसकी मुमानअत इसलिये की है कि अभी इसमें से ख़ुमस नहीं निकाला गया था और कुछ लोगों का ख़याल था कि आपने इसकी बाक़ई मुमानअत (हमेशा के लिये) कर दी है, क्योंकि ये गंदगी खाता है। (राजेअ: 3155)

4221, 22. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा मुझको अदी बिन प्राबित ने ख़बर दी और उन्हे बराअ और अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने कि वो लोग नबी करीम (ﷺ) के साथ थे, फिर उन्हें गधे मिले तो उन्होंने उनका गोश्त पकाया लेकिन हज़ूर (ﷺ) के मुनादी

٤٢١٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ وَسَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ أَكْلِ لُحُومِ الْخُمُرِ الْأَخْضَةِ. [راجع: ٨٥٣]

٤٢١٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عُمَرَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْخُمُرِ وَرَخَصَ فِي الْخَيْلِ. [طرفاء في: ٥٥٢٠, ٥٥٢٤.]

٤٢٢٠- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا عَبَادُ بْنُ الشَّيْبَانِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، أَصَابَنَا مَجَاعَةٌ يَوْمَ خَيْبَرَ فَإِنَّ الْقُدُورَ لَتَقْلُبُ، قَالَ وَبَعْضُهَا نَضِجَتْ فَجَاءَ مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا تَأْكُلُوا مِنْ لُحُومِ الْخُمُرِ شَيْئًا وَاهْرِقُوهَا)). قَالَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى فَتَحَدَّثَنَا أَنَّهُ إِنَّمَا نَهَى عَنْهَا لِأَنَّهَا لَمْ تَخْمَسْ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: نَهَى عَنْهَا لِأَنَّهَا كَانَتْ تَأْكُلُ الْعِلْوَةَ. [راجع: ٣١٥٥]

٤٢٢١، ٢٢- حَدَّثَنَا حُجَّاجُ بْنُ مِثَالٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنِي عَبْدِيُّ بْنُ نَاسِرٍ عَنِ الْبَرَاءِ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَأَصَابُوا خُمُرًا فَطَبَخُوهَا فَنَادَى مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ:

ने ऐलान किया कि हॉडियाँ उण्डेल दो।

(दीगर मक्काम: 4223, 4225, 4226, 5525)

4223, 24. मुझसे इस्हाक ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुस्समद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन ब्राबित ने बयान किया, उन्होंने बराअ बिन आजिब और अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना। ये हज़रात नबी करीम (ﷺ) से बयान करते थे कि हज़ूर (ﷺ) ने ग़ज्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर फ़र्माया था कि हॉडियो का गोश्त फेंक दो, उस वक़्त हॉडियाँ चूल्हे पर रखी जा चुकी थीं। (राजेज़: 3153, 4221)

4225. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन ब्राबित ने और उनसे बराअ बिन आजिब (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज्वा में शरीक थे फिर पहली हदीष की तरह रिवायत नक़ल की। (राजेज़: 4221)

4226. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने अबी ज़ाइदा ने ख़बर दी, कहा हमको आसिम ने ख़बर दी, उन्हें आमिर ने और उनसे बराअ बिन आजिब (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया कि पालतू गधों का गोश्त हम फेंक दें, कच्चा भी और पका हुआ भी, फिर हमें उसके खाने का कभी आपने हुक्म नहीं दिया।

(राजेज़: 4221)

4227. मुझसे मुहम्मद बिन अबी अल हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने, उनसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे आमिर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे मा'लूम नहीं कि आया आँहज़रत (ﷺ) ने गधे का गोश्त खाने से इसलिये मना किया था कि इससे बोझ ढोने का काम लिया जाता है और आपने पसन्द नहीं फ़र्माया कि बोझ ढोने वाले जानवर ख़त्म हो जाएँ, या आपने सिर्फ़ ग़ज्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर पालतू गधों का गोश्त खाने से मना किया था।

((أَخْبَرُوا الْقُدُورَ)). [أطرافه ن: ٤٢٢٣]

[٤٢٢٥, ٤٢٢٦, ٥٥٢٥]

٤٢٢٣-٤٢٢٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَدِيُّ بْنُ قَابَتٍ: سَمِعْتُ التَّوَّاءَ وَابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ يُحَدِّثَانِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ يَوْمَ خَيْبَرَ: وَلَقَدْ نَعَبْنَا الْقُدُورَ ((أَخْبَرُوا الْقُدُورَ)).

[راجع: ٣١٥٣, ٤٢٢٦]

٤٢٢٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ قَابَتٍ عَنِ التَّوَّاءِ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ.

[راجع: ٤٢٢٦]

٤٢٢٦- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي وَائِلَةَ أَخْبَرَنَا غَاصِمٌ عَنْ غَابِرٍ عَنِ التَّوَّاءِ بْنِ غَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ فِي غَزْوَةِ خَيْبَرَ أَنْ نُلْقِيَ الْحُمْرَ الْأَهْلِيَّةَ نَيْتَةً وَنَطْبِخَةً، ثُمَّ لَمْ يَأْمُرْنَا بِأَكْلِهَا بَعْدَ.

[راجع: ٤٢٢٦]

٤٢٢٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي الْحُسَيْنِ حَدَّثَنَا غَمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ غَاصِمٍ عَنْ غَابِرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَا أَذْرِي أَنَّهُى عَنْهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ كَانَ حَمُولَةً النَّاسِ لِكَرِهَةِ أَنْ تَذْهَبَ حَمُولَتُهُمْ، أَوْ حَرَمَهُ فِي يَوْمِ خَيْبَرَ لَحْمَ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ.

4228. हमसे हसन बिन इस्हाक ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक ने बयान किया, कहा हमसे ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज्व-ए-ख़ैबर में (माले ग़नीमत से) सवारों को दो हिस्से दिये थे और पैदल फौजियों को एक हिस्सा, इसकी तफ़सीर नाफ़ेअ ने इस तरह की है कि अगर किसी शस्त्र के साथ घोड़ा होता तो उसे तीन हिस्से मिलते थे और अगर घोड़ा न होता तो सिर्फ़ एक हिस्सा मिलता था। (राजेअ: 2863)

4229. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैथ बिन सअद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि मैं और इब्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हमने अर्ज किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने बन्नु मुत्तलिब को तो ख़ैबर के खुमुस में से इनायत फ़र्माया है और हमें नज़रअंदाज़ कर दिया है हालाँकि आपसे क़राबत में हम और वो बराबर थे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया यक़ीनन बन्नु हाशिम और बन्नु मुत्तलिब एक हैं। जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने बन्नु अब्दे शम्स और बन्नु नौफ़िल को (खुमुस में से) कुछ नहीं दिया था। (राजेअ: 3140)

तशरीह:

क्योंकि अब्दे मुनाफ़ के चार बेटे थे, हाशिम, मुत्तलिब, अब्दे शम्स और नौफ़िल। हाशिम की औलाद में औहज़रत (ﷺ) थे और नौफ़िल की औलाद में जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.), अब्दे शम्स की औलाद में हज़रत इब्मान ग़नी (रज़ि.)।

4230. मुझसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हमें नबी करीम (ﷺ) की हिजरत के बारे में ख़बर मिली तो हम यमन में थे। इसलिये हम भी औहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हिजरत की निध्यत से निकल पड़े। मैं और मेरे दो भाई, मैं दोनों से छोटा था। मेरे एक भाई का नाम अबू बुर्दा (रज़ि.) था और दूसरे का अबू रहम। उन्होंने कहा कि कुछ

٤٢٢٨ - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ لِلْفَرَسِ سَهْمَيْنِ وَلِلرَّاجِلِ سَهْمًا. فَسَرَهُ نَافِعٌ فَقَالَ: إِذَا كَانَ مَعَ الرَّجُلِ فَرَسٌ فَلَهُ ثَلَاثَةُ أَشْهُمٍ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ فَرَسٌ فَلَهُ سَهْمٌ. [راجع: ٢٨٦٣]

٤٢٢٩ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ قَالَ : مَشَيْتُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَانَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقُلْنَا اغْطَيْتَ بَنِي الْمُطَّلِبِ مِنْ خُمْسِ خَيْبَرَ، وَتَوَكَّلْنَا وَنَحْنُ بِمَنْزِلَةِ وَاحِدَةٍ مِنْكَ، فَقَالَ: ((إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو الْمُطَّلِبِ شَيْءٌ وَاحِدٌ)) قَالَ جُبَيْرُ : وَلَمْ يَقْسِمِ النَّبِيُّ ﷺ لِبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ وَبَنِي نَوْفَلٍ شَيْئًا. [راجع: ٣١٤٠]

٤٢٣٠ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَلَّغْنَا مَخْرَجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ فَخَرَجْنَا مَعَاجِرِينَ إِلَيْهِ أَنَا وَأَخَوَانِ لِي أَنَا أَصْغَرُهُمَا أَحَدُهُمَا أَبُو بُرَيْدَةَ وَالْآخَرُ أَبُو رَهْمٍ إِنَّمَا قَالَ: بِضْعٌ،

ऊपर पचास या उन्होंने यूँ बयान किया कि 53 या 52 मेरी कौम के लोग साथ थे। हम कश्ती पर सवार हुए लेकिन हमारी कश्ती ने हमें नज्जाशी के मुल्क हब्शा में ला डाला। वहाँ हमारी मुलाक़ात जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) से हो गई, जो पहले ही मक्का से हिजरत करके वहाँ पहुँच चुके थे। हमने वहाँ उन्हीं के साथ क्रयाम किया, फिर हम सब मदीना साथ खाना हुए। यहाँ हम हुजुरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में उस वक़्त पहुँचे जब आप (ﷺ) ख़ैबर फ़तह कर चुके थे। कुछ लोग हमसे या'नी कश्तीवालों से कहने लगे कि हमने तुमसे पहले हिजरत की है और अस्मा बन्ते इमैस (रज़ि.) जो हमारे साथ मदीना आई थीं, उम्मुल मोमिनीन हप्स्रा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, उनसे मुलाक़ात के लिये वो भी नज्जाशी के मुल्क में हिजरत करने वालों के साथ हिजरत करके चली गई थीं। इमर (रज़ि.) भी हप्स्रा (रज़ि.) के घर पहुँचे उस वक़्त अस्मा बन्ते इमैस (रज़ि.) वहीं थीं। जब इमर (रज़ि.) ने उन्हें देखा तो पूछा कि ये कौन हैं? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बताया कि अस्मा बन्ते इमैस (रज़ि.)। इमर (रज़ि.) ने इस पर कहा अच्छा वही जो हब्शा से बहरी (समन्दरी) सफ़र करके आई हैं। अस्मा (रज़ि.) ने कहा कि जी हाँ! इमर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि हम तुम लोगों से हिजरत में आगे हैं। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) से हम तुम्हारे मुक़ाबले में ज्यादा करीब हैं। अस्मा (रज़ि.) इस पर बहुत गुस्सा हो गई और कहा हर्गिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! तुम लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रहे हो, तुम में जो भूखे होते थे उसे आँहुज़ूर (ﷺ) खाना खिलाते थे और जो नावाक़िफ़ होते उसे आँहुज़ूर (ﷺ) नसीहत व मवज़हत किया करते थे। लेकिन हम बहुत दूर हब्शा में ग़ैरों और दुश्मनों के मुल्क में रहते थे, ये सब कुछ हमने अल्लाह और उसके रसूल के रास्ते ही में तो किया और अल्लाह की क़सम! मैं उस वक़्त तक न खाना खाऊँगी और न पानी पियूँगी जब तक तुम्हारी बात रसूलुल्लाह (ﷺ) से न कह लूँ। हमें अज़ियत दी जाती थी, धमकाया जाता था, मैं आँहुज़ूर (ﷺ) से इसका ज़िक्र करूँगी और आपसे इसके बारे में पूछूँगी। अल्लाह की क़सम कि न झूठ बोलूँगी, न कजरवी इख़ितयार करूँगी और न

وَأَمَّا قَالَ : فِي ثَلَاثَةِ وَخَمْسِينَ أَوْ اثْنَيْنِ وَخَمْسِينَ رَجُلًا مِنْ قَوْمِي فَكَانَتْ سَلِيمَةً فَأَلْفَقْنَا سَلِيمَتَنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ، فَوَالْفَقْنَا جَفَقَرُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فَأَقَمْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا جَمِيعًا فَوَالْفَقْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ التَّبَعِ خَيْبَرُ وَكَانَ أُنَاسٌ مِنَ النَّاسِ يَقُولُونَ لَنَا يَغْنِي لِأَهْلِ السُّلَيْمَةِ سَبَقْنَاكُمْ بِالْهَجْرَةِ، وَدَخَلَتْ اسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ وَهِيَ مِنْ قَدِيمٍ مَعَنَا عَلَى حَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَالْبُورَةُ وَلَقَدْ كَانَتْ هَاجَرَتْ إِلَى النَّجَاشِيِّ فِيمَنْ هَاجَرَ فَدَخَلَ عُمَرُ عَلَى حَفْصَةَ وَاسْمَاءَ عِنْدَهَا فَقَالَ عُمَرُ حِينَ رَأَى اسْمَاءَ: مَنْ هَذِهِ؟ قَالَتْ اسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ، قَالَ عُمَرُ: الْحَبَشِيَّةُ هَذِهِ، الْبَحْرِيَّةُ هَذِهِ، قَالَتْ اسْمَاءُ نَعَمْ، قَالَ: سَبَقْنَاكُمْ بِالْهَجْرَةِ فَتَحْنُ أَحَقُّ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْكُمْ، لَفَضِيَّتْ. وَقَالَتْ: كَلَّا وَاللَّهِ كُنْتُمْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُطْعِمُونَ جَائِعَكُمْ وَتُعْطِي جَائِلَكُمْ، وَكُنَّا فِي دَارٍ أَوْ فِي أَرْضٍ الْبُعْدَاءِ بِالْبُعْضَاءِ بِالْحَبَشَةِ وَذَلِكَ فِي اللَّهِ وَلِي رَهْطِي. صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَانِمْ اللَّهُ لَا أَطْعَمُ طَعَامًا وَلَا أَشْرَبُ شَرَابًا حَتَّى أَذْكَرَ مَا قُلْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَنَحْنُ كُنَّا نُوَدِّي وَنُحَافُ وَنَأْذُكُرُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاسْأَلَهُ وَاللَّهُ لَا أَكْذِبُ وَلَا

किसी (खिलाफे वाकिया बात का) इज़ाफा करूंगी। (राजेअः 3136)

أَزِيعٌ وَلَا أَرِيدُ عَلَيْهِ.

[راجع: 3136]

4231. चुनाँचे जब हुजुरे अकरम (ﷺ) तशरीफ लाए तो उन्होंने अर्ज किया या नबीयल्लाह! इमर इस तरह की बातें करते हैं। हुजुर (ﷺ) ने पूछा कि फिर तुमने उन्हें क्या जवाब दिया? उन्होंने अर्ज किया कि मैंने उन्हें ये जवाब दिया था। औहजरत (ﷺ) ने इसपर फर्माया कि वो तुमसे ज्यादा मुझसे क़रीब नहीं हैं। उन्हें और उनके साथियों को सिर्फ एक हिजरत हासिल हुई और तुम कश्तीवालों ने दो हिजरतों का शर्फ हासिल किया। उन्होंने बयान किया कि इस वाकिया के बाद अबू मूसा (रज़ि.) और तमाम कश्तीवाले मेरे पास गिरोह दर गिरोह आने लगे और मुझसे इस हदीष के बारे में पूछने लगे। उनके लिये दुनिया में हुजुरे अकरम (ﷺ) के उनके बारे में इस इशार्द से ज्यादा खुशकुन और बाअिअे फ़ख़र और कोई चीज़ नहीं थी।

٤٢٣١- فَلَمَّا جَاءَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّ عَمَرَ قَالَ: كَذَا وَكَذَا، قَالَ: ((لَمَّا قُلْتِ لَهُ؟)) قَالَتْ: قُلْتِ لَهُ كَذَا وَكَذَا. قَالَ: ((لَيْسَ بِأَخٍ بِي مِنْكُمْ وَلَهُ وَأَصْحَابِهِ هِجْرَةٌ وَاحِدَةٌ، وَلَكُمْ أَنْتُمْ أَهْلُ السَّيْفَةِ هِجْرَتَانِ)) قَالَتْ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ أَبَا مُوسَى وَأَصْحَابَ السَّيْفَةِ يَأْتُونِي أَرْسَالًا يَسْأَلُونِي عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ مَا مِنَ الدُّنْيَا شَيْءٌ هُمْ أَفْرَحُ وَلَا أَغْظَمُ فِي أَنْفُسِهِمْ، مِمَّا قَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

4232. अबू बुर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू मूसा (रज़ि.) मुझसे इस हदीष को बार-बार सुनते थे। अबू बुर्दा ने बयान किया कि और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि औहजरत (ﷺ) ने फर्माया जब मेरे अशअरी अहबाब रात में आते हैं तो मैं उनकी कुर्आन की तिलावत की आवाज़ पहचान जाता हूँ। अगरचे दिन में, मैंने उनकी इक्कामतगाहों को न देखा हो लेकिन जब रात में वो कुर्आन पढ़ते हैं तो उनकी आवाज़ से मैं उनकी इक्कामतगाहों को पहचान लेता हूँ। मेरे उन ही अशअरी अहबाब में एक मर्द दाना भी है कि जब कहीं उसकी सवारों से मुठभेड़ हो जाती है, या आपने फर्माया कि दुश्मन से, तो उनसे कहता है कि मेरे दोस्तों ने कहा कि तुम थोड़ी देर के लिए उनका इंतज़ार कर लो।

٤٢٣٢- قَالَ أَبُو بُرْدَةَ قَالَتْ أَسْمَاءُ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ أَبَا مُوسَى وَإِنَّهُ لَيَسْتَعِيدُ هَذَا الْحَدِيثَ مِنِّي، قَالَ أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لِأَعْرِفُ أَصْوَاتَ رُفَقَةِ الْأَشْقَرَيْنِ بِالْقُرْآنِ حِينَ يَدْخُلُونَ بِاللَّيْلِ، وَأَعْرِفُ مَنَازِلَهُمْ مِنْ أَصْوَاتِهِمْ بِالْقُرْآنِ بِاللَّيْلِ، وَإِنْ كُنْتُ لَمْ أَرِ مَنَازِلَهُمْ حِينَ تَزُولُوا بِالنَّهَارِ، وَمِنْهُمْ حَكِيمٌ إِذَا لَقِيَ الْخَيْلَ - أَوْ قَالَ الْعَدُوَّ - قَالَ لَهُمْ: إِنَّ أَصْحَابِي يَأْمُرُونَكُمْ أَنْ تَنْظُرُوهُمْ)).

तशरीह: रिवायत के आखिर में एक अशअरी हकीम का ज़िक्र है, हकीम उसका नाम है या वो हिकमत जानने वाला है। रिवायत के आखिर में उस हकीम के क़ौल का मतलब ये है कि हमारे साथ लड़ने को तैयार हैं। मतलब ये है कि ये हकीम बड़ा बहादुर है, दुश्मनों के मुकाबले से भागता नहीं है बल्कि ये कहता है कि ज़रा सब्र करो हम तुमसे लड़ने के लिये

हाज़िर हैं या ये मतलब है कि वो बड़ी हिक्मत और दानाई वाला है। दुश्मनों को इस तरह डराकर अपने तई उनसे बचा लेता है। वो ये समझते हैं कि ये अकेला नहीं है, उसके साथी और आ रहे हैं। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है जब वो मुसलमान सवारों से मिलता है तो कहता है ज़रा ठहरिये या'नी हमारे साथियों को जो पैदल हैं आ जाने दो, हम तुम सब मिलकर काफ़िरों से लड़ेंगे।

4233. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमने हज़म बिन गयास से सुना, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़ैबर की फ़तह के बाद हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने (माले ग़नीमत में) हमारा भी हिस्सा लगाया। आपने हमारे सिवा किसी भी ऐसे शख्स का हिस्सा माले ग़नीमत में नहीं लगाया जो फ़तह के वक़्त (इस्लामी लश्कर के साथ) मौजूद न रहा हो। (राजेअ: 3136)

4234. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे झ़ौर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने मुत्तीअ के मौला सालिम ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हुआ तो माले ग़नीमत में सोना और चाँदी नहीं मिला था बल्कि गाय, ऊँट, सामान और बागात मिले थे फिर हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ वादीयुल कुरा की तरफ़ लौटे। आँहज़रत (ﷺ) के साथ एक मिदअम नामी गुलाम था जो बनी जिबाब के एक मूहाबी ने आपको हृदिये में दिया था। वो आँहज़रत (ﷺ) का कजावा उतार रहा था कि किसी नामा'लूम सिम्त से एक तीर आकर उनके लगा। लोगों ने कहा मुबारक हो, शहादत! लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है जो चादर उसने ख़ैबर में तक्सीम से पहले माले ग़नीमत में से चुराई थी वो इस पर आग का शोला बनकर भड़क रही है। ये सुनकर एक दूसरे मूहाबी एक या दो तस्मे लेकर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया

٤٢٣٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ حَفْصَ بْنَ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ أَنْ افْتَتَحَ خَيْبَرَ فَقَسَمَ لَنَا وَلَمْ يَقْسِمْ لِأَحَدٍ لَمْ يَشْهَدْ الْفَتْحَ غَيْرَنَا.

[راجع: ٣١٣٦]

٤٢٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ثَوْرٌ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ مَوْلَى أَبِي مُطْعِمٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ افْتَتَحْنَا خَيْبَرَ وَلَمْ نَقْسِمْ دَفْعًا وَلَا بَعْضًا إِنَّمَا غَنِمْنَا الْبَقَرِ وَالْإِبِلَ، وَالْمَتَاعَ، وَالْخَوَابِطَ، ثُمَّ انْصَرَفْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَى وَادِي الْفُرَى، وَمَعَهُ عَبْدُ اللَّهِ يَقُولُ لَهُ مَذْغَمٌ هَذَا لَهُ أَحَدُ بَنِي الصَّبَابِ قَبَيْنَا هُوَ يَخْطُ رَحَلَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِذْ جَاءَهُ مِنْهُمْ عَائِرٌ حَتَّى اصَابَ ذَلِكَ الْعَبْدَ. فَقَالَ النَّاسُ هَيْبًا لَهُ الشَّهَادَةُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:

((بلى، والذي نفسي بيده إن الشملة التي أصابها يوم خيبر من المغنم لم تُصِنها المقاسم، لئن شعل عليه ناراً))
فَجَاءَ رَجُلٌ حِينَ سَمِعَ ذَلِكَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ

कि ये मैंने उठा लिये थे, और हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये भी जहन्नम का तस्मा बनता। (दीगर मक्काम: 6707)

بَشِيرًا أَوْ بَشِيرًا كَيْنٍ لَقَالَ: هَذَا شَيْءٌ كُنْتُ أَحْبَبْتُهُ لَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((بَشِيرًا أَوْ شِرَاكَانٍ مِنْ نَارٍ)).

[طرفه بی: ۶۷۰۷]

रिवायत में फ़तह ख़ैबर का ज़िक्र है, इसीलिये उसे यहाँ दर्ज किया गया इससे अमानत में ख़यानत की भी इतिहाई मुज़म्मत प्राबित हुई।

4235. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा हौ उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर उसका ख़तरा न होता कि बाद की नस्लें बे जायदाद रह जाएँगी और उनके पास कुछ न होगा तो जो भी बस्ती मेरे ज़माने ख़िलाफ़त में फ़तह होती, मैं उसे इस तरह तक्सीम कर देता जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की तक्सीम की थी। मैं उन मफ़तूहा अराज़ी को बाद में आने वाले मुसलमानों के लिये महफूज़ छोड़े जा रहा हूँ ताकि वो उसे तक्सीम करते रहें। (राजेअ: 2234)

4235- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدٌ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَمَا وَاللَّيْلِ نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ لَا أَنْ أتركَ الْآخِرَ النَّاسَ بَيَانًا لِنَسْرِ لَهُمْ شَيْءٌ مَا لُحِثْتُ عَلَيْهِ قَرِيَةً إِلَّا قَسَمْتُهَا كَمَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ، وَلَكِنِّي أَتْرَكُهَا خَزَانَةً لَهُمْ يَقْتَسِمُونَهَا.

[راجع: ۲۲۳۴]

हज़रत उमर (रज़ि.) ने जो फ़र्माया था वही हुआ बाद के ज़मानों में मुसलमान बहुत बढ़े और अतराफ़े आलम में फैले। चुनाँचे जीती हुई ज़मीनको उन्होंने क़वाइदे शरइया के तहत इसी तरह तक्सीम किया और हज़रत उमर (रज़ि.) का फ़र्माना सहीह प्राबित हुआ। हदीष में बब्बान का लफ़्ज़ आया है दो बाए मुवहिद्द से दूसरी बाअ मुशहद है। अबू उबैदह (रज़ि.) कहते हैं मैं समझता हूँ ये लफ़्ज़ अरबी जुबान का नहीं है। जुहरी कहते हैं ये यमन की जुबान का एक लफ़्ज़ है जो अरबों में मशहूर नहीं हुआ। बब्बान के मअानी यक़्सौ एक तरीक़ और एक रविश पर और कुछ ने कहा नादर मुहताज के मा'नी में है। (वहीदी)

4236. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने महदी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा अगर बाद में आने वाले मुसलमानों का ख़याल न होता तो जो बस्ती भी मेरे दौर में फ़तह होती, मैं उसे उसी तरह तक्सीम कर देता जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की तक्सीम कर दी थी। (राजेअ: 2334)

4236- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَوْ لَا آخِرُ الْمُسْلِمِينَ مَا لُحِثْتُ عَلَيْهِمْ قَرِيَةً إِلَّا قَسَمْتُهَا كَمَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ.

[راجع: ۲۲۳۴]

तशरीह: हज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल का मतलब ये है कि अगर मुझको उन लोगों का ख़याल न होता जो आइन्दा मुसलमान होंगे और वो महज़ मुफ़्लिस होंगे तो मैं जिस क़दर मुल्क फ़तह होता जाता वो सबका सब मुसलमानों को जागीरों के तौर पर बांट देता और ख़ालिस कुछ न रखता जिसका रुपया बैतुलमाल में जमा होता है मगर मुझको उन

लोगों का खयाल है जो आइन्दा मुसलमान होंगे और अगर नादार हुए तो उनकी गुजर औकात के लिये कुछ न रहेगा। इसलिये खज़ान में मुल्क की तफ़्सील जमा रखता हूँ कि आइन्दा ऐसे मुसलमानों के काम आए।

4237. मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने जुहरी से सुना और उनसे इस्माईल बिन उमय्या ने सवाल किया था तो उन्होंने बयान किया कि मुझे अम्बसा बिन सईद ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे (ख़ैबर की ग़नीमत में से) हिस्सा मांगा। सईद बिन आस के एक लड़के (अबान बिन सईद रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इन्हें न दीजिए। इस पर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि ये शख्स तो इब्ने कौक़ल का क्रातिल है। अबान (रज़ि.) इस पर बोले हैरत है इस वब (बिल्ली से छोटा एक जानवर) पर जो कुदूमल ज़ान पहाड़ी से उतर आया है। (राजेअ : 2827)

4238. और जुबैदी से रिवायत है कि उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें अम्बसा बिन सईद ने ख़बर दी, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो सईद बिन आस (रज़ि.) को ख़बर दे रहे थे कि अबान (रज़ि.) को हज़ुरे अकरम (ﷺ) ने किसी सरय्या पर मदीना से नजद की तरफ़ भेजा था। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर अबान (रज़ि.) और उनके साथी आँहुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, ख़ैबर फ़तह हो चुका था। उन लोगों के घोड़े तंग छाल ही के थे, (या) 'नी उन्होंने मुहिम में कोई कामयाबी हासिल नहीं की थी) अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अज़ा किया या रसूलल्लाह! ग़नीमत में इनका हिस्सा न लगाईए। इस पर अबान (रज़ि.) बोले ऐ वब! तेरी हैषियत तो सिर्फ़ ये है कि कुदूमल ज़ान की चोटी से उतर आया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अबान! बैठ जा! आँहज़रत (ﷺ) ने उन लोगों का हिस्सा नहीं लगाया।

(राजेअ : 2827)

٤٢٣٧ - حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ وَسَأَلَهُ إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ، قَالَ لَهُ بَعْضُ نَحْوِ سَعِيدِ بْنِ الْقَاصِ: لَا تُعْطِهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: هَذَا قَابِلُ ابْنِ قَوْثَانَ، فَقَالَ: وَاعْجَبَاهُ لَوْ بَرَّ تَذَلُّي مِنْ قُدُومِ الضَّانِ.

[راجع: ٢٨٢٧]

٤٢٣٨ - وَذَكَرَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يُخْبِرُ سَعِيدَ بْنِ الْقَاصِ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَبَانَ عَلَى سَرِيَّةٍ مِنَ الْمَدِينَةِ قَبْلَ نَجْدٍ، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَقَدِمَ أَبَانٌ وَأَصْحَابُهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِخَيْمٍ بَعْدَ ظَهْرِ النَّصْحَةِ وَإِنْ خَوْفٌ خِيَلَهُمْ لَيْلَفَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَا تَقْسِمَ لَهُمْ قَالَ أَبَانُ: وَأَنْتَ بِهَذَا يَا وَبَرُ تَحْذَرُ مِنْ رَأْسِ ضَانٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَانُ اجْلِسْ)) فَلَمْ يَقْسِمْ لَهُمْ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: الضَّانُ السُّدْرُ.

[راجع: ٢٨٢٧]

तशरीह: इब्ने कौक़ल (रज़ि.) सहाबी हैं अबान बिन सईद (रज़ि.) अभी इस्लाम नहीं लाए थे और उसी हालत में उन्होंने इब्ने कौक़ल (रज़ि.) को शहीद किया था। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का इशारा उस वाकिये की तरफ़ था मगर अबान बिन सईद (रज़ि.) को उनकी ये बात पसन्द नहीं आई और उनकी ज़ात पर ये नुक्ताचीनी की। (ग़फ़रल्लाह लहुम अज्मईन)

वब एक जानवर बिल्ली के बराबर होता है। ज़ान उस पहाड़ का नाम है जो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के मुल्क दौस में था। कुछ नुस्खों में लफ़ज़ फ़लम युक्सिम लहुम के आगे ये अल्फ़ाज़ और हैं, क़ाल अबू अब्दुल्लाह अल ज़ाल अस्सदर

या'नी इमाम बुखारी (रह) ने कहा ज़ाल जंगली बेरी को कहते हैं। ये तफ़्सीर उसी नुस्खे की बिना पर है, जिनमें बजाय रास ज़ान के रासे ज़ाल है।

4239. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे दादा ने ख़बर दी और उन्हें अबान बिन सईद (रज़ि.) ने कि वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सलाम किया। अबू हुरैरह (रज़ि.) बोले कि या रसूलल्लाह! ये तो इब्ने कौक़ल का क़ातिल है और अबान (रज़ि.) ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कहा हैरत है उस वक़्त पर जो कुदूमल ज़ान से अभी उतरा है और मुझ पर ऐब लगाता है एक ऐसे शज़्स पर कि जिसके हाथ से अल्लाह तज़ाला ने उन्हें (इब्ने कौक़ल रज़ि. को) इज़त दी और ऐसा न होने दिया कि उनके हाथ से मुझे ज़लील करता। (राजेअ : 2827)

4239- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ أَخْبَرَنِي جَدِّي أَنَّ أَبَانَ بْنَ سَعِيدٍ أَقْبَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ عَلَيْهِ لَقَابَانِ أَبُو مُرَّةَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقِلٍ وَقَالَ أَبَانُ لَأَبِي مُرَّةَ: وَاعْتَبَا لَكَ وَتَرَّ تَدَاوًا مِنْ قُدُومِ صَنَانٍ يَنْهَى عَلَيَّ امْرَأَ امْرَأَةِ اللَّهِ بِئْسَ وَمَنْعَةً أَنْ يَهْتَنِي بِئْسَ.

[راجع: 2827]

तशरीह: हज़रत अबान बिन सईद (रज़ि.) के कहने का मतलब ये था कि मैंने इब्ने कौक़ल (रज़ि.) को शहीद किया तो वो मेरे कुफ़्र का ज़माना था और शहादत से अल्लाह की बारगाह में इज़त हासिल होती है जो मेरे हाथों उन्हें हासिल हुई। दूसरी तरफ़ अल्लाह तज़ाला का ये भी फ़ज़ल हुआ कि कुफ़्र की हालत में उनके हाथ से मुझे क़त्ल नहीं करवाया जो मेरी उख़रबी ज़िल्लत का सबब बनता और अब मैं मुसलमान हूँ और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता हूँ। लिहाज़ा अब ऐसी बातों का ज़िक्र न करना बेहतर है। आँहज़रत (ﷺ) हज़रत अबान (रज़ि.) के उस बयान को सुनकर ख़ामोश हो गये।

4240, 41. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने अइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की साहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) ने अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के पास किसी को भेजा और अपनी मीराष का मुतालबा किया आँहज़ूर (ﷺ) के उस माल से जो आपको अल्लाह तज़ाला ने मदीना और फ़िदक में इनायत फ़र्माया था और ख़ैबर का जो पाँचवाँ हिस्सा रह गया था। अबूबक्र (रज़ि.) ने ये जवाब दिया कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद ही इश्राद फ़र्माया था कि हम पैग़म्बरों का कोई वारिष नहीं होता, हम जो कुछ छोड़ जाएँ वो सब सदका होता है, अल्बत्ता आले मुहम्मद (ﷺ) इसी माल से खाती रहेगी और मैं अल्लाह की क़सम! जो सदका हज़ूरे अकरम (ﷺ) छोड़ गये हैं उसमें किसी क्रिस्म का तग़य्युर नहीं करूँगा, जिस हाल में वो आँहज़ूर (ﷺ) के ज़माने में था अब भी इसी तरह रहेगा और उसमें (उसकी तक्रसीम वग़ैरह) में, मैं भी वही तज़े अमल इख़्तियार

4240, 41- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مُرَّةَ عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ بَنَتْ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْسَلَتْ إِلَى أَبِي بَكْرٍ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّا أَلْفَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ بِالْمَدِينَةِ وَلَفْدِكُ وَمَا بَقِيَ مِنْ خُمْسٍ خَيْرٍ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَا نُورِثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةً))، إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْمَالِ وَإِنِّي وَاللَّهِ لَا أُغَيِّرُ شَيْئًا مِنْ صَدَقَةِ

करूंगा जो आँहुजूर (ﷺ) का अपनी ज़िन्दगी में था। गर्ज़ अबूबक्र ने फ़ातिमा (रज़ि.) को कुछ भी देना मंज़ूर न किया। इस पर फ़ातिमा (रज़ि.) अबूबक्र (रज़ि.) की तरफ़ से ख़फ़ा हो गई और उनसे तर्क मुलाक़ात कर लिया और उसके बाद वफ़ात तक उनसे कोई बातचीत नहीं की। फ़ातिमा (रज़ि.) आँहुजूर (ﷺ) के बाद छः महीने तक ज़िन्दा रहीं जब उनकी वफ़ात हुई तो उनके शौहर अली (रज़ि.) ने उन्हें रात में दफ़न कर दिया और अबूबक्र (रज़ि.) को इसकी ख़बर नहीं दी और खुद उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ ली। फ़ातिमा (रज़ि.) जब तक ज़िन्दा रहीं, अली (रज़ि.) पर लोग बहुत तवज्जह रखते रहे लेकिन उनकी वफ़ात के बाद उन्होंने देखा कि अब लोगों के मुँह उनकी तरफ़ से फिरे हुए हैं। उस वक़्त उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) से सुलह कर लेना और उनसे बेअत कर लेना चाहा। इससे पहले छः माह तक उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) से बेअत नहीं की थी फिर उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) को बुला भेजा और कहला भेजा कि आप सिर्फ़ तन्हा आएँ और किसी को अपने साथ न लाएँ उनको ये मंज़ूर न था कि इमर (रज़ि.) उनके साथ आएँ। इमर (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि अल्लाह की क़सम! आप तन्हा उनके पास न जाना। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा क्यूँ वो मेरे साथ क्या करेंगे मैं तो अल्लाह की क़सम ज़रूर उनके पास जाऊँगा। आखिर आप अली (रज़ि.) के यहाँ गये। अली (रज़ि.) ने अल्लाह को गवाह किया, उसके बाद फ़र्माया, हमें आपके फ़ज़ल व क़माल और जो कुछ अल्लाह तआला ने आपको बख़्शा है, सबका हमें इकरार है जो ख़ैर व इम्तियाज़ आपको अल्लाह तआला ने दिया था हमने उसमें कोई रिस भी नहीं की लेकिन आपने हमारे साथ ज़्यादती की (कि ख़िलाफ़त के मामले में हमसे कोई मश्वरा नहीं लिया) हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ अपनी क़राबत की वजह से अपना हक़ समझते थे (कि आप हमसे मश्वरा करते) अबूबक्र (रज़ि.) पर उन बातों से गिरया त़ारी हो गया और जब बात करने के क़ाबिल हुए तो फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है रसूलुल्लाह (ﷺ) की क़राबत के साथ सिलारहमी मुझे अपनी क़राबत से ज़्यादा अज़ीज़ है। लेकिन मेरे और आप लोगों के बीच उन अम्बाल के सिलसिले में जो इख़ितलाफ़ हुआ है, तो मैं उसमें हक़ और ख़ैर से नहीं हटा हूँ और

رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ خَالَتِهَا أُمِّی كَانَتْ عَلَيْهَا فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلَا غَمَلَنُ فِيهَا بِمَا عَمِلَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَّا أَبُو بَكْرٍ أَنْ يَدْفَعُ إِلَى فَاطِمَةَ بِنْتِهَا شَيْئًا فَوَجَدَتْ فَاطِمَةَ عَلَى أَبِي بَكْرٍ فِي ذَلِكَ فَهَجَرَتْهُ فَلَمْ تَكَلِّمْهُ حَتَّى تُوُفِّيَتْ وَغَاسَتْ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِتَّةَ أَشْهُرٍ، فَلَمَّا تُوُفِّيَتْ دَفَنَهَا زَوْجُهَا عَلِيٌّ لَيْلًا وَلَمْ يُؤْذِنْ بِهَا أَبَا بَكْرٍ وَصَلَّى عَلَيْهَا، وَكَانَ لِعَلِيٍّ مِنَ النَّاسِ وَجْهٌ حَيَاةَ فَاطِمَةَ، فَلَمَّا تُوُفِّيَتْ اسْتَشْكَرَ عَلِيٌّ وَجْهَ النَّاسِ فَاتَّخَمَسَ مُصَاحَبَهُ أَبِي بَكْرٍ وَمُبَایَعَتَهُ، وَلَمْ يَكُنْ يَبَایِعُ بِلَاكِ الْأَشْهُرِ، فَأَرْسَلَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ أَنْ إِنِّي وَلَا يَأْتَانِي أَحَدٌ مَعَكَ كَرَاهِيَةً لِمَخْضَرِ عُمَرَ فَقَالَ عُمَرُ: لَا وَاللَّهِ لَا تَدْخُلُ عَلَيْهِمْ وَحَدَكَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَمَا عَسَيْتُهُمْ أَنْ يَفْعَلُوا بِي وَاللَّهِ لَا يَنْتَهُمُ، فَدَخَلَ عَلَيْهِمْ أَبُو بَكْرٍ فَتَشَهَّدَ عَلِيٌّ فَقَالَ: إِنَّا قَدْ عَرَفْنَا فَضْلَكَ وَمَا أَعْطَاكَ اللَّهُ وَلَمْ نَنْفَسْ عَلَيْكَ خَيْرًا سَأَلَهُ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَكِنَّكَ اسْتَبَدَدْتَ عَلَيْنَا بِالْأَمْرِ وَكُنَّا نَرَى لِقَرَابَتِنَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَصِيبًا حَتَّى فَاضَتْ عَيْنَا أَبِي بَكْرٍ، فَلَمَّا تَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لِقَرَابَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ

इस सिलसिले में जो रास्ता मैंने हुजुरे अकरम (ﷺ) का देखा खुद मैंने भी उसी को इख्तियार किया। अली (रज़ि.) ने उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि दोपहर के बाद मैं आपसे बेअत करूँगा। चुनौचे जुहर की नमाज़ से फ़ारिग होकर अबूबक्र (रज़ि.) मिम्वर पर आए और खुत्बा के बाद अली (रज़ि.) के मामले का और उनके अब तक बेअत न करने का ज़िक्र किया और वो उज़्र भी बयान किया जो अली (रज़ि.) ने पेश किया था फिर अली (रज़ि.) ने इस्तिफ़ार और शहादत के बाद अबूबक्र (रज़ि.) का हक़ और उनकी बुजुर्गी बयान की और फ़र्माया कि जो कुछ उन्होंने किया है उसका बाज़िअ अबूबक्र (रज़ि.) से हसद नहीं था और न उनके इस अफ़ज़ल व कमाल का इंकार मक्मूद था जो अल्लाह तआला ने उन्हें इनायत किया ये बात ज़रूर थी कि हम इस मुआमल-ए-ख़िलाफ़त में अपना हक़ समझते थे (कि हमसे मश्वरा लिया जाता) हमारे साथ यही ज़्यादती हुई थी जिससे हमें रंज पहुँचा। मुसलमान इस वाकिये पर बहुत खुश हुए और कहा कि आपने दुरुस्त फ़र्माया। जब अली (रज़ि.) ने इस मामले में ये मुनासिब रास्ता इख्तियार कर लिया तो मुसलमान उनसे खुश हो गये और अली (रज़ि.) से और ज़्यादा मुहब्बत करने लगे जब देखा कि उन्होंने अच्छी बात इख्तियार कर ली है। (राजेज़: 3092, 3093)

أَمِلَ مِنْ قَرَانِي وَأَمَّا الَّذِي شَجَرَ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ مِنْ هَذِهِ الْأَمْوَالِ فَلَمْ أَلِ يَهَا عَنْ الْخَيْرِ وَلَمْ أَتْرُكْ أَمْرًا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْنَعُهُ لِيَهَا إِلَّا صَنَعْتُهُ فَقَالَ عَلِيٌّ لَأَبِي بَكْرٍ: مُؤَعِّدَكَ الْغَشِيَةَ لِلْبَيْعَةِ فَلَمَّا صَلَّى أَبُو بَكْرٍ الطُّهْرَ رَأَيْتُ عَلَى الْمِنْبَرِ قَسْمَهُ وَذَكَرَ شَأْنَ عَلِيٍّ وَتَعَلَّفَهُ عَنِ الْبَيْعَةِ وَغَدْرَهُ بِاللَّبِي أَعْلَزَ إِلَيْهِ ثُمَّ اسْتَغْفَرَ وَتَشَهَّدَ عَلِيٌّ فَقَطَمَ حَقَّ أَبِي بَكْرٍ وَحَدَّثَ أَنَّهُ لَمْ يَحْمِلْهُ عَلَى الَّذِي صَنَعَ نَفَاسَةً عَلَى أَبِي بَكْرٍ، وَلَا إِنكَارًا لِلَّذِي فَضَّلَهُ اللَّهُ بِهِ وَلَكِنَّا نَرَى نَا فِي هَذَا الْأَمْرِ نَصِيًّا فَاسْتَبَدَّ عَلَيْنَا فَوَجَدْنَا فِي أَنْفُسِنَا فَسْرَ بِذَلِكَ الْمُسْلِمُونَ وَقَالُوا أَصَبَتْ وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ إِلَى عَلِيٍّ قَرِيًّا حِينَ رَاجَعَ الْأُمُورَ بِالْمَعْرُوفِ.

[راجع: ٣٠٩٢، ٣٠٩٣]

तशरीह: मुस्लिम की रिवायत में है कि हज़रत अली (रज़ि.) अपने खुत्बे के बाद उठे और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ पर बेअत कर ली। उनके बेअत करते ही सब बनू हाशिम ने बेअत कर ली और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िलाफ़त पर तमाम सहाबा (रज़ि.) का इज्माअ हो गया। अब जो उनकी ख़िलाफ़त को सहीह न समझे वो तमाम सहाबा (रज़ि.) का मुखालिफ़ है और वो इस आयत की वईद शदीद में दाख़िल है। वयत्तबिअ ग़ैरा सबीलिल मुमिनीना नुवल्लिही मा तवल्ला (निसा: 115) इन्ने हब्बान ने अबू सईद से रिवायत किया है कि हज़रत अली (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ पर शुरू ही में बेअत कर ली थी। बैहकी ने इसी रिवायत को सहीह कहा है तो अब मुकरर बेअत ताकीद के लिये होगी।

4242. मुझे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हरमी ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अम्पारा ने ख़बर दी, उन्हें इकिमा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हो चुका तो हमने कहा कि अब खजूरों से हमारा जी भर जाएगा।

٤٢٤٢ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا حَرْمِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي عُمَارَةُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا فُيْحَتْ خَيْبَرُ قُلْنَا الْآنَ نَشْتَعِ مِنَ التَّمْرِ.

खजूरों की पैदावार के लिये ख़ैबर मशहूर था। इसीलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) को खुशी हुई कि फ़तहे ख़ैबर की वजह से मदीना में खजूरें बक़रत आने लगेंगी।

4243. हमसे हसन ने बयान किया, कहा हमसे कुरैह बिन हबीब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह इब्ने दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब तक खैबर फ़तह नहीं हुआ था हम तंगी में थे।

फ़तहे खैबर के बाद मुसलमानों को कुशादगी नसीब हुई वहाँ से बक़रत खजूरें आने लगीं। खैबर की ज़मीन खजूरों की पैदावार के लिये मशहूर थी।

बाब 40 : नबी करीम (ﷺ) का खैबर वालों पर तहसीलदार मुकर्रर फ़र्माना

4244, 45. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुल मजीद बिन सुहैल ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक सहाबी (सवाद बिन ग़ज़िया रज़ि.) को खैबर का आमिल मुकर्रर किया। वो वहाँ से उम्दा क्रिस्म की खजूरें लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा कि क्या खैबर की तमाम खजूरें ऐसी हैं? उन्होंने अर्ज़ किया नहीं अल्लाह की क्रसम या रसूलल्लाह! हम इस तरह की एक स़ाअ खजूर (उससे ख़राब) दो या तीन स़ाअ खजूर के बदले में उनसे लेते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस तरह न किया करो, बल्कि (अगर अच्छी खजूर लानी हो तो) सारी खजूर पहले दिरहम के बदले बेच डाला करो, फिर उन दिरहम से अच्छी खजूर ख़रीद लिया करो। (राजेअ: 2201, 2202)

4246, 47. और अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे अब्दुल मजीद ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया और उनसे अबू सईद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार के ख़ानदान बनी अदी के भाई को खैबर भेजा और उन्हें वहाँ का आमिल मुकर्रर किया और अब्दुल मजीद से रिवायत है कि उनसे अबू स़ालेह सिमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और अबू सईद (रज़ि.) ने इसी तरह नक़ल किया है। (राजेअ: 2201, 2202)

4243- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ جَبْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : مَا شَبَعْنَا حَتَّى قَبَحْنَا خَيْرَ

40- باب استعمار النبي

ﷺ عَلَى أَهْلِ خَيْبَرَ

4244, 45- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ وَأَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اسْتَعْمَلَ رَجُلًا عَلَى خَيْبَرَ فَجَاءَهُ بِشَمْرٍ جَبِيبٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((كُلُّ شَمْرٍ خَيْرٌ مَكَدًا)) فَقَالَ لَا وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا لَنَأْخُذُ الصَّاعَ مِنْ هَذَا بِالصَّاعَيْنِ بِالثَّلَاثَةِ فَقَالَ : ((لَا تَفْعَلْ بَعِ الْجَمْعَ بِاللِّزَامِ ثُمَّ انْبِعْ بِاللِّزَامِ جَبِيبًا)).

[راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

4246, 47- وَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَاهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ أَخَا بَنِي غَدِيٍّ مِنَ الْأَنْصَارِ إِلَى خَيْبَرَ فَآمَرَهُ عَلَيْهَا وَعَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَأَبِي سَعِيدٍ مَقْلَةً. [راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

खैबर के पहले आमिल हज़रत सवाद बिन ग़ज़िया नामी अंसारी (रज़ि.) मुकर्रर किये गये थे। यही वहाँ की खजूरें बतौर तोहफ़ा

लाए थे जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने उनको ऊपर बयान की गई हिदायत फ़र्माई।

बाब 41 : ख़ैबर वालों के साथ नबी करीम (ﷺ)

का मामला तै करना

4248. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर (की ज़मीन व बाग़ात वहाँ के) यहूदियों के पास ही रहने दिये थे कि वो उनमें काम करें और बोएं जोतें और उन्हें उनकी पैदावार का आधा हिस्सा मिलेगा। (राजेअ : 2285)

आधे-आधे (फ़िफ्टी-फ़िफ्टी) पर मामला करना इस हदीष से दुरुस्त करार पाया।

बाब 42 : एक बकरी का गोश्त जिसमें नबी करीम (ﷺ) को ख़ैबर में ज़हर दिया गया था। उसको उर्वा ने आइशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है

4249. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़ैबर की फ़तह के बाद नबी करीम (ﷺ) को (एक यहूदी औरत की तरफ़ से) बकरी के गोश्त का हदिया पेश किया गया जिसमें ज़हर मिला हुआ था। (राजेअ : 3169)

41- باب مُعَامَلَةِ النَّبِيِّ ﷺ

أَهْلَ خَيْبَرَ

4248- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ أَطْعَمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ الْيَهُودَ أَنْ يَغْتُلُّوْهَا وَيَزْرَعُوْهَا وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا. [راجع: 2285]

42- باب الشاةِ الّتي سُمِّتَ لِلنَّبِيِّ ﷺ

بِخَيْبَرَ رَوَاهُ عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ

عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

4249- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنِي سَعِيدٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لَمَّا فَخِصَتْ خَيْبَرَ أَهْلَيْتَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ شاةً فِيهَا سُمٌّ.

[راجع: 3169]

तशरीह : ज़हर भेजने वाली ज़ैनब बिनते हारिष सलाम बिन मुश्कम यहूदी की औरत थी। उसने ये मा'लूम कर लिया था कि आँहज़रत (ﷺ) को दस्त का गोश्त बहुत पसन्द है। उसने उसी में ख़ूब ज़हर मिलाया। आपने एक निवाला चखकर थूक दिया। बिश्र बिन बराअ (रज़ि.) खा गये वो मर गये, दूसरे सहाबा (रज़ि.) को आपने मना किया और बतला दिया कि उसमें ज़हर मिला हुआ है। बैहक़ी की रिवायत में है कि आपने उस औरत को बुलाकर पूछा। वो कहने लगी मैंने ये इसलिये किया कि अगर आप सच्चे रसूल हैं तो अल्लाह आपको ख़बर कर देगा अगर आप झूठे हैं तो आपका मरना बेहतर है। इब्ने सअद की रिवायत में है जब बिश्र बिन बराअ (रज़ि.) ज़हर के अप्रर से मर गये तो आपने उस औरत को बिश्र (रज़ि.) के वारिषों के हवाले कर दिया और उन्होंने उसको क़त्ल कर दिया (इस हदीष से ये भी निकला कि ज़हर देकर मार डालना भी इरादतन क़त्ल है और उसमें कि़सास लाज़िम आता है और हन्फ़िया का रद्द हुआ जो उसे क़त्ल बिस्सबब कहते हैं और कि़सास को उसमें साक़ित करते हैं। (वहीदी)

बाब 43 : ग़ज़्व-ए-ज़ैद बिन हारिषा का बयान

43- باب غَزْوَةِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ

तशरीह : हज़रत ज़ैद बिन हारिष (रज़ि.) को आप (ﷺ) ने कई लड़ाइयों में सरदार बनाकर भेजा। सलमान ने कहा कि हमने सात लड़ाइयाँ उनके साथ कीं। पहले नजद की तरफ़, फिर बनू सुलैम की तरफ़, फिर कुरैश के काफ़िलों की तरफ़ जिसमें अबुल आस बिन रबीअ (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के दामाद कैद होकर आए थे। फिर बनू अलबा की तरफ़, फिर

हस्मी की तरफ, फिर वादी अल कुरा की तरफ, फिर बनी फुजारा की तरफ। हाफिज़ ने कहा इमाम बुखारी (रह) की मुराद यहाँ यही आखिरी गज़वा है। इसमें बड़े बड़े मुहाजिरीन और अंसार शरीक थे। जैसे हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, अबू उबैदह, सअद, सईद और क़तादा वगैरह वगैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

4250. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शौरी (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक जमाअत का अमीर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बनाया। उनकी इमारत पर कुछ लोगों को ए'तिराज़ हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आज तुमको इसकी इमारत पर ए'तिराज़ है तुम ही कुछ दिन पहले इसके बाप की इमारत पर ए'तिराज़ कर चुके हो। हालाँकि अब्दुल्लाह की फ़सम वो इमारत के मुस्तहिक और अहल थे इसके अलावा वो मुझे सबसे ज़्यादा अज़ीज़ थे जिस तरह ये उसामा (रज़ि.) उनके बाद मुझे सबसे ज़्यादा अज़ीज़ हैं। (राजेअ : 373)

٤٢٥٠ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَانُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عُمرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَصَابَةً عَلَى قَوْمٍ لَطَعُوا فِي إِمَارَتِهِ فَقَالَ: (وَأَنْ لَطَعُوا فِي إِمَارَتِهِ فَقَدْ طَعَنَ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلِهِ، وَإِنَّهُمْ اللَّهُ لَقَدْ كَانَ خَلِيفًا لِلْإِمَارَةِ وَإِنْ كَانَ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ وَإِنْ هَذَا لَمَنْ أَحَبَّ النَّاسُ إِلَيَّ بَعْدَهُ).

[راجع: ٣٧٣]

तशरीह: इन ता'ना करने वालों का सरदार अयाश बिन अबी रबीआ था वो कहने लगा कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक लड़के को मुहाजिरीन का अफ़सर बना दिया है। इस पर दूसरे लोग भी बातचीत करने लगे। ये ख़बर हज़रत उमर (रज़ि.) को पहुँची। उन्होंने उन लोगों का रद्द किया और आँहज़रत (ﷺ) को ख़बर दी। आप बहुत नाराज़ हुए और ये बयान किया गया ख़ुल्बा सुनाया। उसी को जैशे उसामा कहते हैं। मज़ुल वफ़ात में आपने वसियत की कि उसामा का लश्कर ख़ाना कर देना। उसामा (रज़ि.) के सरदार मुकर्रर करने में ये मस्तिहत थी कि उनके वालिद उन काफ़िरों के हाथों से मारे गये थे। उसामा की दिलजोई के अलावा ये भी ख़याल था कि वो अपने वालिद की शहादत याद करके उन काफ़िरों से दिल खोलकर लड़ेंगे। (इस हदीस से ये भी निकलता है कि अफ़ज़ल के होते हुए मफ़ज़ूल की सरदारी जाइज़ है क्योंकि अबूबक्र और उमर (रज़ि.) यक़ीनन उसामा (रज़ि.) से अफ़ज़ल थे।

बाब 44 : उमरह-ए-क़ज़ा का बयान

٤٤ - باب عُمرَةَ الْقَضَاءِ

तशरीह: इसको उमरह-ए-क़ज़ा इसलिये कहते हैं कि ये उमरह उस क़ज़ा या'नी फ़ैसले के मुताबिक़ किया गया था जो आपने कुरैश के कुफ़्रारों के साथ किया था। उसका ये मा'नी नहीं है कि अगले उमरे की क़ज़ा का उमरह था क्योंकि अगला उमरह भी आपका पूरा हो गया था गो काफ़िरों की मुजाहमत की वजह से उसके अरकान बजा नहीं ला सके थे। हज़रत अनस (रज़ि.) वाली रिवायत को अब्दुर्रज़ाक़ और इब्ने हब्बान ने वस्ल किया है। इस उमरह में अब्दुल्लाह बिन ख़ाव्वा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के सामने शे'र पढ़ते जाते थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा अब्दुल्लाह तुम आँहज़रत (ﷺ) के सामने शे'र पढ़ते हो? आपने फ़र्माया उमर उसको शे'र पढ़ने दो ये काफ़िरों पर तीरों से भी ज़्यादा सख़्त हैं। वो अशआर ये थे,

खल्लो बनिल्कुफ़्रारि अन सबीलिलही
बिअन्न ख़ैरल्क़त्लि फ़ी सबीलिलही
कमा क़तल्नाकुम अला तन्ज़ीलिलही

क्रद अन्ज़लरहमानु फ़ी तन्ज़ीलिलही
नहनु क़तल्नाकुम अला तावीलिलही
च तज्हलुल्खलीलु मिन खलीलिलही

या रब्बि इन्न मूमिनुन बिकौलिही

तर्जुमा : ऐ काफिरों की ओलाद! आँहजरत (ﷺ) का रास्ता छोड़ दो। अल्लाह ने उन पर अपना पाक कलाम उतारा है और हम तुमको उस पाक कलाम के मुवाफिक कत्ल करते हैं। ये कत्ल अल्लाह की राह में बहुत ही इम्दह कत्ल है। अब उस कत्ल की वजह से एक दोस्त अपने दोस्त से जुदा हो जाएगा। या अल्लाह! मैं नबी करीम (ﷺ) के फरमूदा पर ईमान लाया हूँ।

अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से उसका जिक्र किया है

4251. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जीक़अदा में इमरह का एहराम बाँधा। मक्का वाले आपके मक्का में दाखिल होने से मानेअ आए। आखिर मुआहिदा इस पर हुआ कि (आइन्दा साल) मक्का में तीन दिन आप क्रयाम कर सकते हैं, मुआहिदा यूँ लिखा जाने लगा, ये वो मुआहिदा है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया, कुफ़ारे कुरैश कहने लगे कि हम ये तस्लीम नहीं करते। अगर हम आपको अल्लाह का रसूल मानते तो रोकते ही क्यों, आप तो बस मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं। हजरत ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह का रसूल भी हूँ और मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी हूँ, फिर अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि (रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ मिटा दो) उन्होंने कहा कि हरिज नहीं अल्लाह की क्रसम! मैं ये लफ़्ज़ नहीं मिटा सकता। आँहजरत (ﷺ) ने वो तहरीर अपने हाथ में ले ली। आप लिखना नहीं जानते थे लेकिन आपने उसके अल्फ़ाज़ इस तरह कर दिये, ये वो मुआहिदा है जो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने किया कि वो हथियार लेकर मक्का में नही आएँगे। अल्बत्ता ऐसी तलवार जो नियाम में हो साथ ला सकते हैं और ये कि अगर मक्का वालों में से कोई उनके साथ जाना चाहेगा तो वो उसे अपने साथ नहीं ले जाएँगे। लेकिन अगर उनके साथियों में से कोई मक्का में रहना चाहेगा तो वो उसे न रोकेँगे, फिर जब (आइन्दा साल) आप इस मुआहिदे के मुताबिक मक्का में दाखिल हुए (और तीन दिन की) मुदत पूरी हो गई तो मक्का वाले अली (रज़ि.) के पास आए और कहा कि अपने साथी से कहो कि अब यहाँ से चले जाएँ, क्योंकि मुदत पूरी हो गई है। जब आँहजरत (ﷺ) मक्का से निकले तो आपके

4251- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَوْسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا احْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ لِي فِي ذِي الْقَعْدَةِ فَأَتَى أَهْلَ مَكَّةَ أَنْ يَدْخُلُوا يَدْخُلُ مَكَّةَ حَتَّى قَامُواهُمْ عَلَى أَنْ يقيمَ بِهَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، فَلَمَّا كَتَبُوا الْكِتَابَ كَتَبُوا هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ قَالُوا: لَا نَقْرُ بِهَذَا لَوْ نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ مَا مَنَعَنَا هَذَا وَلَكِنْ أَنْتَ مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ: ((أَنَا رَسُولُ اللَّهِ، وَأَنَا مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ))، ثُمَّ قَالَ لِغُلَامٍ ((امْنَحْ رَسُولَ اللَّهِ)) قَالَ عَلَيْهِ: لَا وَاللَّهِ لَا أَمْنُوكَ أَبَدًا فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْكِتَابَ وَتَمَسَّ بِخِصْيَيْهِ يَكْتُبُ فَكُتِبَ ((هَذَا مَا قَاضَى مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ لَا يَدْخُلُ مَكَّةَ السَّلَاحَ إِلَّا السَّيْفَ لِي الْقَرَابِ، وَإِنْ لَا يَخْرُجُ مِنْ أَهْلِهَا بِأَخِيذٍ إِنْ أَرَادَ أَنْ يَتَّعَهُ وَإِنْ لَا يَمْنَعُ مِنْ أَصْحَابِهِ أَحَدًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يَمْنَعُ مِنْهُمْ))، فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الْأَجَلَ اتُّوا عَلَيْهِ فَقَالُوا: قُلْ لِصَاحِبِكَ أَخْرُجْ عَنَّا

पीछे हमज़ा (रज़ि.) की बेटी चचा चचा कहती हुई आई। अली (रज़ि.) ने उन्हें ले लिया और हाथ पकड़कर फ़ातिमा (रज़ि.) के पास लाए और कहा कि अपने चचा की बेटी को ले लो मैं उसे लेता आया हूँ। अली, ज़ैद, जा'फ़र का इख़ितलाफ़ हुआ। अली (रज़ि.) ने कहा कि मैं उसे अपने साथ लाया हूँ और ये मेरे चचा की लड़की है। जा'फ़र (रज़ि.) ने कहा कि ये मेरे चचा की लड़की है और इसकी ख़ाला मेरे निकाह में हैं। ज़ैद (रज़ि.) ने कहा ये मेरे भाई की लड़की है। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी ख़ाला के हक़ में फैसला किया (जो जा'फ़र रज़ि. के निकाह में थीं) और फ़र्माया ख़ाला माँ के दर्जे में होती है और अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ, जा'फ़र (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम मूरत व शक्ल और आदात व अख़लाक़ दोनों में मुझसे मुशाबेह हो और ज़ैद (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम हमारे भाई और हमारे मौला हो। अली (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि हमज़ा (रज़ि.) की माहबज़ादी को आप अपने निकाह में ले लें लेकिन आपने फ़र्माया कि वो मेरे रज़ाई भाई की लड़की है। (राजेअ: 1781)

فَقَدْ مَضَى الْأَجَلَ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ قَبْعَةً ابْنَةُ خُمَزَةَ تَنَادِي يَا عَمُّ يَا عَمُّ فَسَأَلَهَا عَلِيٌّ فَأَخَذَ بِبَيْعَتِهَا وَقَالَ لِلطَّائِفَةِ عَلَيْهَا السَّلَامُ : ذُوْنِكُ ابْنَةُ عَمِّكَو، حَمَلَتْهَا فَاسْتَعَمَّ لَهَا عَلِيٌّ وَزَيْدٌ وَجَعَفَرٌ قَالُوا عَلِيٌّ: أَنَا أَخَذْتُهَا وَهِيَ بِنْتُ عَمِّي وَقَالَ جَعْفَرٌ: هِيَ ابْنَةُ عَمِّي وَخَالَتُهَا فَخَبِي وَقَالَ زَيْدٌ ابْنَةُ أُمِّي فَقَعْنِي بِهَا النَّبِيُّ ﷺ لِخَالَيَتِهَا وَقَالَ: ((الْعَالَةُ بِمَنْزِلَةِ الْأُمِّ)) وَقَالَ لِعَلِيٍّ ((أَنْتَ بَنِي وَأَنَا مَبْنِي)) وَقَالَ لِيَحْفَرُوا: ((أَشْهَتُ خَلْفِي وَخَلْفِي)) وَقَالَ لِيَزْنُوا: ((أَنْتَ أَعْوَنَ وَمَوْلَانَا)) وَقَالَ عَلِيٌّ الْآ تَزَوُّجُ بِنْتُ خُمَزَةَ قَالُوا: ((لَهَا ابْنَةُ أُمِّي مِنْ الرُّضَاعَةِ)). [رَاسِع: ١٧٨١]

तशरीह:

हमज़ा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के रज़ाई भाई और हक्कीकी चचा था, इसलिये वो आपके लिये हलाल न थी। रिवायत में उमरह कज़ा का ज़िक्र है बाब से यही वजह मुताबकत है।

इमाम अबुल वलीद बाजी ने इस हदीष का मतलब यही बयान किया है कि गो आप लिखना नहीं जानते थे मगर आपने मुअजिज़ा के तौर पर उस वक़्त लिख दिया। क़स्तलानी (रह) ने कहा कि हदीष का तर्जुमा यँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उनके हाथ से कागज़ ले लिया और आप अच्छी तरह लिखना नहीं जानते थे। आपने हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया रसूलल्लाह का लफ़्ज़ कहाँ है? उन्होंने बतला दिया। आपने अपने हाथ से उसे मिटा दिया फिर वो कागज़ हज़रत अली (रज़ि.) को दे दिया, उन्होंने फिर पूरा सुलहनामा लिखा इस तक्रीर पर कोई इश्काल बाकी न रहेगा। हाफ़िज़ ने कहा इस हदीष से हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत निकली। ख़ुस्राइल और सीरत में आप रसूलल्लाह (ﷺ) से मुशाबिहते ताम्मा रखते थे। ये लड़की हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) की ज़िन्दगी तक उनके पास रही, जब वो शहीद हुए तो उनकी वसियत के मुताबिक़ हज़रत अली (रज़ि.) के पास रही और उन्हीं के पास जवान हुई। उस वक़्त हज़रत अली (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से निकाह के लिये कहा तो आपने ये फ़र्माया जो रिवायत में मौजूद है।

4252. मुझसे मुहम्मद बिन राफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमसे सुरैज ने बयान किया, कहा हमसे फुलैह ने बयान किया। (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे फुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर

٤٢٥٢ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا سُرَيْجٌ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ

(रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) इमरह के इरादे से निकले, लेकिन कुफ़ारे कुरैश ने बैतुल्लाह पहुँचने से आपको रोका। चुनौचे आँहज़रत (ﷺ) ने अपना कुर्बानी का जानवर हदैबिया में ही जिब्ह कर दिया और वहीं सर भी मुँडवाया और उनसे मुआहिदा किया कि आप आइन्दा साल इमरह कर सकते हैं लेकिन (नियाम में तलवारों के सिवा और) कोई हथियार साथ नहीं ला सकते और जितने दिनों मक्का वाले चाहेंगे, उससे ज़्यादा आप वहाँ ठहर नहीं सकेंगे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने आइन्दा साल इमरह किया और मुआहिदे के मुताबिक़ मक्का में दाख़िल हुए। तीन दिन वहाँ मुक़ीम रहे। फिर कुरैश ने आपसे जाने के लिये कहा और आप मक्का से चले आए।

तशरीह: ईफ़ा-ए-अहद (वादा निभाने) का तक्काज़ा भी यही था जो आँहज़रत (ﷺ) ने पूरे तौर पर अदा फ़र्माया और आप सिर्फ़ तीन दिन क़याम फ़र्माकर अपने प्यारे अक्दस शहर मक्का को छोड़कर वापस आ गये। काश! आज भी मुसलमान अपने वादों की ऐसी ही पाबन्दी करें तो दुनिया में उनकी क़द्रो-मंज़िलत बहुत बढ़ सकती है।

4253. मुझसे इम्रान बिन अबी शैबाने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, कहा उनसे मंसूर इब्ने मुअतमिर ने, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि मैं और इर्वा बिन जुबैर दोनों मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए तो हज़रत इब्ने इमर (रज़ि.) हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज़रे के नज़दीक बैठे हुए थे। इर्वा ने सवाल किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कुल कितने इमरे किये थे? हज़रत इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा कि चार। और एक उनमें से रजब में किया था। (राजेअ: 1775)

4254. फिर हमने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) के (अपने घर में) मिस्वाक करने की आवाज़ सुनी तो इर्वा ने उनसे पूछा, ऐ ईमान वालों की माँ! आपने सुना है या नहीं, अबू अब्दुर्रहमान (अब्दुल्लाह बिन इमर रज़ि.) कहते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने चार इमरे किये थे? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने जब भी इमरह किया तो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) आपके साथ थे लेकिन आपने रजब में कोई इमरह नहीं किया। (राजेअ: 1776)

तशरीह: हज़रत आइशा (रज़ि.) की ये बात सुनकर हज़रत इब्ने इमर (रज़ि.) ख़ामोश हो गये। इससे हज़रत आइशा (रज़ि.) की बात का सहीह होना साबित हुआ। (कस्तलानी)

اعتمر رضي الله عنهما ان رسول الله ﷺ خرج مقيمًا فحال كفار قريش بينه وبين البيت فجزّ هديّة وخلق رأسه بالحديّة وقاضاهم على ان يقيم العام المقبل ولا يعمل ميلاحة عليهم إلا سيولًا ولا يقيم بها إلا ما احتوا فاعتمر من العام المقبل فدخلها كما كان صالحهم، فلما ان اقام بها ثلاثا امروه ان يخرج فخرج.

٤٢٥٣- حدثنا عثمان بن أبي شيبة حدثنا جريز عن منصور عن مجاهد قال: دخلت أنا وغرورة بن الزبير المسجدة فإذا عند الله بن عمر رضي الله عنهما جالس إلى حجرة عائشة ثم قال: كم اعتمر النبي ﷺ؟ قال اربعًا إحداهن في رجب. [راجع: ١٧٧٥]

٤٢٥٤- ثم سمعنا عثمان بن عفان قال: غرورة: يا أم المؤمنين ألا تسمعين ما يقول أبو عبد الرحمن إن النبي ﷺ اعتمر أربع عمر إحداهن في رجب؟ فقلت ما اعتمر النبي ﷺ غمرة إلا وهو شاهد وما اعتمر في رجب قط.

[راجع: ١٧٧٦]

4255. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी खालिद ने, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफा (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उमरह किया तो हम आप पर आड़ किये हुए मुशिकीन के लड़कों और मुशिकीन से आपकी हिफ़ाज़त करते रहते थे ताकि वो आपको कोई ईज़ा न दे सकें। (राजेअ: 1600)

٤٢٥٥ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ سَمِعَ ابْنَ أَبِي أُوَيْسٍ يَقُولُ : لَمَّا اغْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَرْتَاهُ مِنْ عِلْمَانِ الْمُشْرِكِينَ وَمِنْهُمْ أَنْ يُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ.

[راجع: ١٦٠٠]

सुलहे हुदैबिया के बाद ये उमरह दूसरे साल किया गया था, कुफ़ारे मक्का के कुलूब (दिल) इस्लाम और पैगम्बरे इस्लाम की तरफ से साफ नहीं थे, मुसलमानों को खतरात बराबर लाइक थे। खास तौर पर हुजूर (ﷺ) की हिफ़ाज़त मुसलमानों के लिये ज़रूरी थी। रिवायत में इसी तरफ इशारा है। ये हदीष ग़ज़व-ए-हुदैबिया में भी गुजर चुकी है।

4256. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुडितयानी ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) सहाबा के साथ (उमरह के लिये मक्का) तशरीफ लाये तो मुशिकीन ने कहा कि तुम्हारे यहाँ वो लोग आ रहे हैं जिन्हें यज़िब (मदीना) के बुखार ने कमज़ोर कर दिया है। इसलिये हुजूर (ﷺ) ने हुक्म दिया कि तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में अकड़कर चला जाए और रुकने यमानी और हज़रे अस्वद के बीच हस्बे मा'मूल चलें। तमाम चक्करों में अकड़कर चलने का हुक्म आपने इसलिये नहीं दिया कि कहीं ये (उम्मत पर) दुश्वार न हो जाए और हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से इस हदीष को रिवायत करके ये इज़ाफ़ा किया है। उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब औहज़रत (ﷺ) उस साल उमरह करने आए जिसमें मुशिकीन ने आपको अमन दिया था तो आपने फ़र्माया कि अकड़कर चलो ताकि मुशिकीन तुम्हारी कुव्वत देखें। मुशिकीन जबले क़अक़आन की तरफ़ खड़े देख रहे थे। (राजेअ: 1602)

٤٢٥٦ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ: إِنَّهُ يَقْدِمُ عَلَيْكُمْ وَقَدْ وَهَنْتَهُمْ حُمَى يَغْرِبُ وَأَمْرُهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَرْمُلُوا الْأَشْوَاطَ الْثَلَاثَةَ، وَأَنْ يَمْشُوا مَا بَيْنَ الرُّسْتَيْنِ وَلَمْ يَنْفَعَهُ أَنْ يَأْمُرَهُمْ أَنْ يَرْمُلُوا الْأَشْوَاطَ كُلَّهَا، إِلَّا الْإِنْفَاءَ عَنْهُمْ. وَزَادَ ابْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ لِغَايَةِ الَّذِي اسْتَأْمَنَ قَالَ: ((أُرْمِلُوا)) لِيَرَى الْمُشْرِكِينَ قُوَّتَهُمْ، وَالْمُشْرِكُونَ مِنْ قَبْلِ قُرَيْشٍ.

[راجع: ١٦٠٢]

कुऐक़ेआन एक पहाड़ है वहाँ से शामी दोनों रुक्न इक्बा के नज़र पड़ते हैं यमानी रुक्न नज़र नहीं आते।

4257. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उनसे

٤٢٥٧ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ عَنْ

सुफयान बिन डययना ने, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उनसे अता इब्ने अबी रिबाह ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बैतुल्लाह के तवाफ़ में रमल और सफ़ा और मरवा के बीच दौड़, मुश्किनी के सामने अपनी ताक़त दिखाने के लिये की थी।

मूँढ़े हिलाते हुए अकड़कर चलना इसको रमल कहते हैं जो अब भी मस्तून है।

4258. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इकिमाने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ि.) से निकाह किया तो आप मुहरिम थे और जब उनसे ख़ल्वत की तो आप एहराम खोल चुके थे। मैमूना (रज़ि.) का इतिक़ाल भी इसी मक़ामे सरिफ़ में हुआ। (राजेज़: 1837)

4259. इमाम बुखारी (रह) ने और इब्ने इस्हाक़ ने अपनी रिवायत में ये इज़ाफ़ा किया है कि मुझसे इब्ने अबी नुजैह और अबान बिन सल्लेह ने बयान किया, उनसे अता और मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत मैमूना (रज़ि.) से उमरह क़ज़ा में निकाह किया था।

عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّمَا سَقَى النَّبِيُّ ﷺ بِالْيَمِينِ وَتَيْنِ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ لِيُرِيَ الْمُشْرِكِينَ قُوَّتَهُ. [راجع: 1449]

4258 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ مَيْمُونَةَ وَهُوَ مُحَرَّمٌ وَتَنَى بِهَا وَهُوَ خَلَالٌ وَمَاتَتْ بِسَرَفٍ.

[راجع: 1837]

4259 - وَزَادَ ابْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ، وَأَبَانُ بْنُ صَالِحٍ عَنْ عَطَاءٍ وَمُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ مَيْمُونَةَ فِي غَزْوَةِ الْقُضَاءِ.

[راجع: 1837]

तशरीह: हज़रत मैमूना (रज़ि.) इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़ाला थीं जिनकी बहन उम्मुल फ़ज़ल हज़रत अब्बास (रज़ि.) की बीवी थीं। हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने ही मैमूना (रज़ि.) का निकाह आँ हज़रत (ﷺ) से किया। सरिफ़ मक्का से दस मील की दूरी पर एक मौज़़ा है। सन 51 हिजरी में हज़रत मैमूना (रज़ि.) ने उसी जगह इतिक़ाल किया। ऊपर बयान की गई अह्दादीश में किसी न किसी पहलू से उमरह क़ज़ा का ज़िक्र हुआ है। बाब से यही वजह मुताबक़त है। रमल वग़ैरह वक़ती आ'माल थे मगर बाद में उनको बतौर सुन्नत बरक़रार रखा गया ताकि उस (वक़्त के हालात मुसलमानों के ज़हन में ताज़ा रहें और इस्लाम के ग़ालिब आने पर वो अल्लाह का शुक्र अदा करते रहें। उमरह क़ज़ा का बयान पीछे मुफ़रसल गुज़र चुका है।

बाब 45 : ग़ज़्व-ए-मूता का बयान जो सरज़मीने

शाम में सन 8 हिजरी में हुआ था

45 - باب غَزْوَةِ مَوْتَةَ مِنْ أَرْضِ

الشَّامِ

मौता बैतुल मन्दिस् से दो मंज़िल के फ़ासले पर बल्काअ के करीब एक जगह का नाम था। यहाँ शाम में शूरहबील इब्ने अम्र ग़स्सानी कैसर के हाकिम ने रसूले करीम (ﷺ) के एक क़ासिद हरत बिन उमैर (रज़ि.) नामी को क़त्ल कर दिया था। ये सन 8 हिजरी माह जमादिल अब्बल का वाक़िया है कि रसूले करीम (ﷺ) ने उस पर चढ़ाई के लिये फ़ौज रवाना की जो तीन हज़ार मुसलमानों पर मुश्तमिल (आधारित) थी। (फ़तहुल बारी)

4260. हमसे अहमद बिन सल्लेह ने बयान किया, कहा हमसे

4260 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ

अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे अम्र बिन हारिष अंसारी ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने बयान किया और कहा कि मुझको नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि इस ग़ज़व-ए-मूता में हज़रत जा'फ़र तय्यार (रज़ि.) की लाश पर खड़े होकर मैंने शुमार किया तो नेज़ों और तलवारों के पचास ज़ख़म उनके जिस्म पर थे लेकिन पीछे या'नी पीठ पर एक ज़ख़म भी नहीं था। (दीगर मक़ाम : 4261)

तरीह : हज़रत जा'फ़र तय्यार (रज़ि.) इस्लाम के उन बहादुरों में से हैं जिन पर उम्मत मुस्लिमा हमेशा नाज़ा रहेगी। पुस्त पर किसी ज़ख़म का न होना इसका मज़लब ये कि जंग में वो आख़िर तक सीना सिपर रहे, भागकर पीठ दिखलाने का दिल में ख़याल तक भी नहीं आया। आप अबू तालिब के बेटे हैं, शहादत के बाद अल्लाह ने उनको जन्नत में दो बाज़ू अत्ता किये जिनसे ये जन्नत में आज़ादी के साथ उड़ते फिरते हैं, इसलिये उनका लक़ब तय्यार हुआ। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु। मूता मुल्के शाम में एक जगह का नाम था।

4261. हमें अहमद बिन अबीबक्र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे मुगीरह बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन सअद ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़व-ए-मूता के लश्कर का अमीर ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) को बनाया था। हुज़ूर (ﷺ) ने ये भी फ़र्मा दिया था कि अगर ज़ैद (रज़ि.) शहीद हो जाएँ तो जा'फ़र (रज़ि.) अमीर हों और अगर जा'फ़र (रज़ि.) शहीद हो जाएँ तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) अमीर हों। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि इस ग़ज़वे में मैं भी शरीक था। बाद में जब हमने जा'फ़र को तलाश किया तो उनकी लाश हमें शुहदा म मिली और उनके जिस्म पर कुछ ऊपर नब्ब ज़ख़म नेज़ों और तीरों के थे।

(रज़ि.अ : 4260)

तरीह : इस हदीस से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि रसूल करीम (ﷺ) अगर ग़ैबदों होते तो हर्मिज़ ये नुक़सान न होने देते और पहले ही शुहदा-ए-किराम को अमीर बनने से रोक देते मगर ग़ैबदों सिर्फ़ अल्लाह ही है।

4262. हमसे अहमद बिन वाक्रिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख्तियानी ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैद, जा'फ़र और

عَنْ غَمْرٍو، عَنْ ابْنِ أَبِي هِلَالٍ قَالَ: وَأَخْبَرَنِي نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ وَقَفَ عَلَى جَنْفَرٍ يَوْمَئِذٍ، وَهُوَ قَبِيلٌ فَهَذَتْ بِهِ خَمْسِينَ تَمَنَ طُعْنَةً وَحَرَبَةً لَيْسَ مِنْهَا شَيْءٌ فِي ذَنْبِهِ يَغْنَى فِي ظَهْرِهِ.

[طرفه في : ٤٢٦١]

٤٢٦١- أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا مُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ مَوْتَةَ زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنْ قُتِلَ زَيْدٌ فَجَنْفَرُ، وَإِنْ قُتِلَ جَنْفَرُ فَتَيْدُ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ)) قَالَ عَبْدُ اللَّهِ ﷺ: كُنْتُ فِيهِمْ فِي تِلْكَ الْغَزْوَةِ فَانْتَمَسْنَا جَنْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَوَجَدْنَاهُ فِي الْقَتْلِ وَوَجَدْنَا مَا فِي جَسَدِهِ بَضْعًا وَتِسْعِينَ مِنْ طُعْنَةٍ وَرَمِيَةٍ.

[راجع : ٤٢٦٠]

٤٢٦٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ وَاقِدٍ حَدَّثَنَا حُمَادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ

अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर उस वक़्त सहाबा (रज़ि.) को दे दी थी जब अभी उनके बारे में कोई ख़बर नहीं आई थी। आप फ़र्माते जा रहे थे कि अब ज़ैद (रज़ि.) झण्डा उठाए हुए हैं, अब वो शहीद कर दिये गये, अब जा'फ़र (रज़ि.) ने झण्डा उठा लिया, वो भी शहीद कर दिये गये। अब इब्ने रवाहा (रज़ि.) ने झण्डा उठा लिया, वो भी शहीद कर दिये गये। आँहज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे। आख़िर अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने झण्डा अपने हाथ में ले लिया और अल्लाह ने उनके हाथ पर फ़तह इनायत फ़र्माई। (राजेअ: 1246)

لَقَدْ نَفَى زَيْنًا وَجَعَفَرًا وَابْنَ رَوَاحَةَ لِلنَّاسِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ خَبَرُهُمْ فَقَالَ: أَخَذَ الرَّايَّةَ زَيْنًا، فَأَصِيبَ ثُمَّ أَخَذَ جَعْفَرٌ فَأَصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ فَأَصِيبَ، وَعَيْنَاهُ تَلْرَفَانِ حَتَّى أَخَذَ الرَّايَّةَ سَيِّفٌ مِنْ سَيِّفِ اللَّهِ حَتَّى قَطَعَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ.

[راجع: ١٢٤٦]

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) इस ग़ज़्वे में शरीक न थे। आप ये सब ख़बरें मदीना में बैठकर सहाबा (रज़ि.) को दे रहे थे और आपको बज़रिये वहाय़ ये सारे हालात मा'लूम हो गये थे। आप ग़ैबदों नहीं थे। वाक़िया की तफ़सील ये है कि हज़रत जा'फ़र (ﷺ) उस जंग में दाएँ हाथ में झण्डा धामे हुए थे। दुश्मनों ने वो हाथ काट डाला तो उन्होंने बाएँ हाथ में झण्डा ले लिया, दुश्मनों ने उसको भी काटा डाला, वो शहीद हो गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने उनको जन्नत में दो बाज़ू परिन्दे की तरह के बख़्श दिये हैं, वो उनसे जन्नत में जहाँ चाहें उड़ते फिरते हैं। लफ़ज़ तय्यार के मा'नी उड़ने वाले के हैं। इसी से आपको जा'फ़र तय्यार (रज़ि.) के नाम से पुकारा गया, रज़ियल्लाहु व अरज़ाहु। हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के दो बेटे अब्दुल्लाह व मुहम्मद नामी थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उन पर बड़ी शफ़क़त फ़र्माई। मूसा बिन इक्बा ने मग़ाज़ी में ज़िक्र किया है कि यअला बिन उमय्या अहले मूता की ख़बर लेकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि अगर तुम चाहो तो मूता वालों का हाल मुझको सुनाओ वरना मैं खुद ही तुमको उनका पूरा हाल सुना देता हूँ। (जो अल्लाह ने तुम्हारे आने से पहले मुझको वहाय़ के ज़रिये बतला दिया है)। चुनौचे खुद आपने उनका पूरा हाल बयान फ़र्मा दिया जिसे सुनकर यअला बिन उमय्या कहने लगे कि क़िसम है उस ज़ात की जिसने आपको नबी बनाकर भेजा है कि आपने अहले मूता के हालात सुनाने में एक हफ़ की भी कमी नहीं छोड़ी है। आपका बयान हफ़ ब हफ़ सहीह है। (कस्तलानी)

4263. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहासब बिन अब्दुल मजीद ने बयान किया, कहा कि मैंने यह्या बिन सईद से सुना, कहा कि मुझे अम्मा बिनते अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया ज़ैद बिन हारिषा, जअफ़र बिन अबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर आई थी, आँहज़रत (ﷺ) बैठे हुए थे और आपके चेहरे से ग़म ज़ाहिर हो रहा था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं दरवाज़े की दरार से झाँककर देख रही थी। इतने में एक आदमी ने आकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! जा'फ़र (रज़ि.) के घर की औरतें चिल्ला कर रो रही हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया कि उन्हें रोक दो। बयान

٤٢٦٣ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي هَمْرَةُ قَالَتْ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: لَمَّا جَاءَ قَتْلُ ابْنِ حَارِثَةَ وَجَعَفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ جَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُعْرِفُ فِيهِ الْحُزْنَ قَالَتْ عَائِشَةُ: وَأَنَا أَطْلُعُ مِنْ صَانِرِ الْبَابِ تَغْنِي مِنْ شَقِّ الْبَابِ فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: أَيُّ رَسُولِ اللَّهِ إِنَّ نِسَاءَ

किया कि वो झाहब गये और फिर वापस आकर कहा कि मैंने उन्हें रोका और ये भी कह दिया कि उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, फिर उसने बयान किया कि हुजूर (ﷺ) ने फिर मना करने के लिये फ़र्माया। वो झाहब फिर जाकर वापस आए और क्रसम अल्लाह की वो तो हम पर ग़ालिब आ गई हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती थीं कि हुजूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि फिर उनके चेहरे में मिट्टी झोंक दो। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने कहा, अल्लाह तेरी नाक गुबार आलूद करे न तो तू औरतों को रोक सका न तूने रसूलुल्लाह (ﷺ) को तकलीफ़ देना ही छोड़ा। (नौहा करने की इतिहाई बुराई इस हदीष से प्राबित हुई)।

(राजेअ: 1299)

4264. मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे उमर बिन अली ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे आमिर शअबी ने बयान किया कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) जब जा'फ़र बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) के बेटे के लिये सलाम भेजते तो अस्सलामुअलैका या इब्ने ज़िल जनाहैन कहते। (राजेअ: 3809)

ऐ दो परों वाले के बेटे! तुम पर सलाम हो जियो, हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के बेटे का नाम अब्दुल्लाह था।

तशरीह: हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, फलमुआदु बिल्जनाहैन सिफ़तुन मलकिय्यतुन व कुव्वतुन रुहानिय्यतुन उअतीहा जा'फ़र या'नी सुहैली ने कहा कि जनाहैन से मुराद वो सिफ़ाते मल्की व कुव्वते रुहानी है जो हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) को दी गई। मगर व इज़ा लम यष्बुत ख़ब्रून फी बयानि कैफ़ियतिहा फनूमिनु बिहा मिन गैरि बहषिन अन हक़ीक़तिहा (फल्हुलबारी) या'नी जब उन परों की कैफ़ियत के बारे में कोई ख़बर प्राबित नहीं तो हम उनकी हक़ीक़त की बहष में नहीं पड़ते बल्कि जैसा हदीष में वारिद हुआ, उस पर ईमान लाते हैं।

4265. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन इययना ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे कैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया कि मैंने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि ग़ज्व-ए-मूता में मेरे हाथ से नौ तलवारें टूटी थीं। सिर्फ़ एक यमन का बना हुआ चौड़े फल का तैगा बाक़ी रह गया था। (दीगर मक़ाम: 4266)

4266. मुझसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी

جَعْفَرُ قَالَ: وَذَكَرَ بُكَاءَهُنَّ فَأَمَرَهُ أَنْ يَنْهَاهُنَّ قَالَ: فَذَهَبَ الرَّجُلُ ثُمَّ أَتَى فَقَالَ: قَدْ نَهَيْتُهُنَّ وَذَكَرَ أَنَّهُ لَمْ يُطِغْنَهُ قَالَ: فَأَمَرَ أَيْضًا فَذَهَبَ ثُمَّ أَتَى فَقَالَ: وَاللَّهِ لَقَدْ غَلَبْنَا فَرَعَمَتْ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((فَاخْتُ فِي أَفْوَاهِهِنَّ مِنَ التُّرَابِ)) قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ أَرْغَمَ اللَّهُ أَنْفَكَ فَوَ اللَّهِ مَا أَنْتَ تَفْعَلُ وَمَا تَرَكْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنَ الْعِيَاءِ. [راجع: ١٢٩٩]

٤٢٦٤ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ غَامِرٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا حَيَّا ابْنَ جَعْفَرٍ قَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ ذِي الْجَنَاحَيْنِ. [راجع: ٣٧٠٩]

٤٢٦٥ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ يَقُولُ: لَقَدْ انْقَطَعَتْ فِي يَدِي يَوْمَ مَوْتِهِ سَبْعَةُ أَسْيَافٍ فَمَا بَقِيَ فِي يَدِي إِلَّا صَفِيحَةٌ يَمَانِيَّةٌ. [طروه في: ٤٢٦٦]

٤٢٦٦ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ،

खालिद ने बयान किया, उनसे कैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, कहा कि मैं ने खालिद बिन वलीद (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-मूता में मेरे हाथ से नौ तलवारें टूटी थीं, सिर्फ़ एक यमनी तैगा मेरे हाथ में बाक़ी रह गया था। (राजेअ : 4265)

قَالَ: سَمِعْتُ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ يَقُولُ: لَقَدْ دُقُّ فِي يَدَيَّ يَوْمَ مُوتَةٍ سِنَةٌ أَسْيَافٍ وَصَبْرَتْ فِي يَدَيَّ صَفِيحَةٌ لِي يَمَانِيَّةٌ.
[راجع: ٤٢٦٥]

ये हज़रत खालिद (रज़ि.) की कमाले बहादुरी दिलेरी और जुअत की दलील है।

4267. मुझसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फुज़ैल ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे आमिर शअबी ने और उनसे नोअमान बिन बशीर ने कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) पर (एक मर्तबा किसी मर्ज़ में) बेहोशी त्तारी हुई तो उनकी बहन अम्मा वालिदा नोअमान बिन बशीर ये समझकर कि कोई हादसा पेश आ गया, अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) के लिये पुकारकर रोने लगीं। हाथ मेरे भाई हाथ, मेरे ऐसे और वैसे। उनके महासिन इस तरह एक एक करके गिनाने लगीं लेकिन जब अब्दुल्लाह (रज़ि.) को होश आया तो उन्होंने कहा कि तुम जब मेरी किसी ख़ूबी का बयान करती थीं तो मुझसे पूछा जाता था कि क्या तुम वाकई ऐसे ही थे। (दीगर मक़ाम : 4268)

٤٢٦٧- حَدَّثَنِي عِمْرَانُ بْنُ مَسْرَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ حُصَيْنِ بْنِ غَامِرٍ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَغْمِيَ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ، فَجَعَلَتْ أُمُّهُ عُمَرُؤَ تَبْكِي وَاجْتِلَاءً وَكَذَا وَكَذَا، تُعَدُّ عَلَيْهِ فَقَالَ حِينَئِذٍ: مَا قُلْتَ شَيْئًا إِلَّا قِيلَ لِي أَنْتَ كَذَلِكَ. [طرفه ب: ٤٢٦٨]

एक रिवायत में है कि फ़रिश्ते लोहे का गुर्ज़ उठाते और अब्दुल्लाह (रज़ि.) से पूछते क्या तू ऐसा ही है। मा'लूम हुआ कि कुछ बीमारियों में मरने से पहले ही फ़रिश्ते नज़र पड़ जाया करते हैं गो आदमी न मरे। चुनाँचे अब्दुल्लाह (रज़ि.) उस बीमारी से अच्छे हो गये थे यही अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) हैं जो ग़ज़्व-ए-मूता में शहीद हुए। इस मुनासबत से इस हदीष को इस बाब के ज़ेल में लाया गया है। मज़ीद तफ़्सीलात हदीषे ज़ेल में आ रही है।

4268. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे शअबी ने और उनसे नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) को बेहोशी हो गई थी, फिर ऊपर की हदीष की तरह बयान किया। चुनाँचे जब (ग़ज़्व-ए-मूता) में वो शहीद हुए तो उनकी बहन उन पर नहीं रोई। (राजेअ : 4267)

٤٢٦٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حُصَيْنٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: أَغْمِيَ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ بِهَذَا فَلَمَّا مَاتَ لَمْ تَبْكِ عَلَيْهِ.
[راجع: ٤٢٦٧]

उनको मा'लूम हो गया था कि मय्यत पर नौहा करना खुद मय्यत के लिये बाअिषे अज़ाब है। इसलिये उन्होंने इस हरकत से परहेज़ इख़्तियार किया, ख़ाली आंसू अगर जारी हों तो ये मना नहीं है, चिल्लाकर रोना और मय्यत के औसाफ़ बयान करना मना है।

बाब 46 : नबी करीम (ﷺ) का उसामा बिन ज़ैद

٤٦- باب بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ أَمَةً بِن

(रज़ि.) को हरक़ात के मुकाबला पर भेजना

زَيْدٌ إِلَى الْحَرَكَاتِ مِنْ جُهَيْنَةَ

लफ़्ज़ हरक़ात हरक़ति की तरफ़ मन्सूब है। उसका नाम जुहैश बिन आभिर बिन प्रअलबा बिन मौदआ बिन जुहैना था, उसने एक लड़ाई में एक क़ौम को आग में जला दिया था। इसलिये हरक़ा नाम से मौसूम हुआ।

4269. मुझसे अम्र बिन मुहम्मद बग़दादी ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उन्हें हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें अबू ज़िब्यान हुसैन बिन जुन्दब ने, कहा कि मैंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़बीला हरक़ा की तरफ़ भेजा। हमने सुबह के वक़्त उन पर हमला किया और उन्हें शिकस्त दे दी, फिर मैं और एक और अंसारी सहाबी उस क़बीला के एक शख्स (मिरदास बिन अम्र नामी) से भिड़ गये। जब हमने उस पर ग़लबा पा लिया तो वो ला इलाहा इल्लल्लाहु कहने लगा। अंसारी तो फ़ौरन ही रुक गया लेकिन मैंने उसे अपने बरछे से क़त्ल कर दिया। जब हम लौटे तो आँहज़रत (ﷺ) को भी इसकी ख़बर हुई। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया। उसामा (रज़ि.)! क्या उसके ला इलाहा इल्लल्लाहु कहने के बावजूद तुमने उसे क़त्ल कर दिया? मैंने अर्ज किया कि वो क़त्ल से बचना चाहते थे (उसने कलिमा दिल से नहीं पढ़ा था) आप बार बार यही फ़रमति रहे (क्या तुमने उसके ला इलाहा इल्लल्लाहु कहने पर भी उसे क़त्ल कर दिया) कि मेरे दिल में ये आरज़ू पैदा हुई कि काश मैं आज से पहले इस्लाम न लाता। (दीगर मक़ाम: 6872)

٤٢٦٩ - حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ أَخْبَرَنَا أَبُو ظَبْيَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى الْحَرَكَةِ لَمْصَحِّحِ الْقَوْمِ فَهَرَمْنَاهُمْ، وَلَجَعْتُ أَنَا وَرَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ رَجُلًا مِنْهُمْ، فَلَمَّا غَشِيَنَاهُ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ فَكَفَّ الْأَنْصَارِيُّ، فَطَعَنَنِي بِرُمْحِي حَتَّى قَلَعَنِي، فَلَمَّا قَدِمْنَا بَلَغَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((يَا أُسَامَةُ أَقْلَعْتَ بَعْدَ مَا قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ؟)) قُلْتُ كَانَ مَعُونًا لِمَا زَالَ يُكْرِرُهَا حَتَّى تَمَنَيْتُ أَنِّي لَمْ أَكُنْ اسْتَمْتُ قَبْلَ ذَلِكَ الْيَوْمِ.

[طهره في: ٦٨٧٢]

तशरीह:

कलिमा पढ़ने के बावजूद उसे क़त्ल करना हज़रत उसामा (रज़ि.) का काम था जिस पर आँहज़रत (ﷺ) को इतिहाई रंज हुआ और आपने बार बार ये कलाम दोहराकर ख़फ़ी का इज़हार फ़र्माया। उसामा (रज़ि.) के दिल में तमन्ना पैदा हुई कि काश मैं आज से पहले मुसलमान न होता और मुझसे ये ग़लती सरज़द न होती और आज जब इस्लाम लाता तो मेरे पिछले सारे गुनाह मुआफ़ हो चुके होते क्योंकि इस्लाम कुफ़्र की ज़िन्दगी के तमाम गुनाहों को मुआफ़ करा देता है। इसीलिये किसी कलिमा-गो की तक्फ़ीर करना वो बदतरीन हरक़त है जिसने मुसलमानों की मिल्ली ताक़त को पाश पाश करके रख दिया है। मज़ीद अफ़सोस उन इलमा पर है जो ज़रा ज़रा सी बातों पर तीरे तक्फ़ीर चलाते रहते हैं। ऐसे इलमा को भी सोचना चाहिये कि वो कलिमा पढ़ने वालों को काफ़िर बना बनाकर अल्लाह को क्या चेहरा दिखलाएँगे। हाँ अगर कोई कलिमा गो अफ़आले कुफ़्र का इतिहास करे और तौबा न करे तो उन अफ़आले कुफ़्रिया में उसकी तरफ़ लफ़्ज़े कुफ़्र की निस्बत की जा सकती है। जो कुफ़्र दूना कुफ़्र के तहत है। बहरहाला इफ़रात तफ़रीत से बचना लाज़िम है। ला नुक़फ़िरू अहलल क़िबलति तमाम मसालिके अहले सुन्नत का मुतफ़का उसूल है।

4270. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इबैद ने बयान किया और उन्होंने सलमा बिन अब्रवा (रज़ि.) से

٤٢٧٠ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَلَمَةَ بْنَ الْأَكْوَعِ يَقُولُ: غَزَوْتُ

सुना, वो बयान करते थे कि मैं नबी करीम (ﷺ) के हमराह मान ग़ज़्वों में शरीक रहा हूँ और नौ ऐसे लश्करों में शरीक हुआ हूँ जो आपने रवाना किये थे। (मगर आप खुद उनमें नहीं गये) कभी हम पर अबूबक्र (रज़ि) अमीर हुए और किसी फ़ौज के अमीर उसामा (रज़ि.) हुए। (दीगर मक़ाम : 4271, 4272, 4273)

4271. और उमर बिन हफ़्स बिन गयाज़ ने (जो इमाम बुखारी (रह) के शौख हैं) बयान किया कहा कि हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने बयान किया और उन्होंने सलमा बिन अक्व़ा (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ सात ग़ज़्वों में शरीक रहा हूँ और नौ ऐसी लड़ाइयों में गया हूँ जिनको खुद हुज़ुरे अकरम (ﷺ) ने भेजा था। कभी हमारे अमीर अबूबक्र होते और कभी उसामा (रज़ि.) होते। (राजेअ : 4270)

तशरीह : रावी का मतसूद ये है कि तमाम ग़ज़्वात में रसूले करीम (ﷺ) ने कभी अमीर लश्कर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) जैसे अकाबिर को बनाया और कभी उसामा (रज़ि.) जैसे नौजवानों को, मगर हम लोगों ने कभी इस बारे में अमीर लश्कर के बड़े छोटे होने का ख़याल नहीं किया बल्कि फ़मनि रिसालत के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दिया। आपने बार बार फ़र्मा दिया था कि अगर कोई हब्शी गुलाम भी तुम पर अमीर बना दिया जाए तो उसकी इत्ताअत तुम्हारा फ़र्ज़ है।

4272. हमसे अबू आसिम अज़ जिहाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अक्व़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ सात ग़ज़्वों में शरीक रहा हूँ और मैंने इब्ने हारिषा (या'नी उसामा रज़ि) के साथ भी ग़ज़्वा किया है। हुज़ुरे अकरम (ﷺ) ने उन्हें हम पर अमीर बनाया था। (राजेअ : 4270)

مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سِتْعَ غَزَوَاتٍ وَخَرَجْتُ لِمَا يَبْعَثُ مِنَ الْبُحُوثِ سِتْعَ غَزَوَاتٍ مَرَّةً عَلَيْنَا أَبُو بَكْرٍ وَمَرَّةً عَلَيْنَا أَسَامَةُ.

[أطرافه ل: ٤٢٧١، ٤٢٧٢، ٤٢٧٣].

٤٢٧١- وَقَالَ عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَلَمَةَ يَقُولُ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سِتْعَ غَزَوَاتٍ، وَخَرَجْتُ لِمَا يَبْعَثُ مِنَ الْبُحُوثِ سِتْعَ غَزَوَاتٍ مَرَّةً عَلَيْنَا أَبُو بَكْرٍ وَمَرَّةً أَسَامَةُ. [راجع: ٤٢٧٠]

٤٢٧٢- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضُّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ وَصِيَّ اللَّهِ عَنْهُ، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سِتْعَ غَزَوَاتٍ، وَغَزَوْتُ مَعَ ابْنِ خَارِثَةَ اسْتَعْمَلَهُ عَلَيْنَا.

[راجع: ٤٢٧٠]

तशरीह : ये इस रिवायत के खिलाफ़ नहीं जिसमें आँहज़रत (ﷺ) के साथ नौ जिहाद मज़कूर हैं। शायद सलमा ने वादी अल कुरा और उमरह क़ज़ा का सफ़र भी जिहाद समझ लिया इस तरह नौ हो गये। क़स्तलानी ने कहा ये हदीष इमाम बुखारी (रह) को पन्द्रहवीं प़लाप़ी हदीष है। हारिषा हज़रत उसामा के दादा का नाम है। (वहीदी)

4273: हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन मुसअदह ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने और उनसे सलमा बिन अक्व़ा (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ सात ग़ज़्वे किये। इस सिलसिले में उन्होंने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर, हूदैबिया, ग़ज़्व-ए-हुनैन और ग़ज़्व-ए-ज़ातुल क़र्द का ज़िक्र किया। यज़ीद ने कहा कि बाक़ी ग़ज़्वों

٤٢٧٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ مَسْعَدَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سِتْعَ غَزَوَاتٍ، فَذَكَرَ خَيْبَرَ وَالْحُدَيْبِيَّةَ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ وَيَوْمَ الْقُرْدِ،

के नाम में भूल गया।

(राजेअ: 4270)

قَالَ يَزِيدُ: وَلَسِيْتُ بِقِيَّتِهِمْ.

[راجع: ٤٢٧٠]

इन तमाम गज्वात का बयान इसी पारे में जगह जगह मजकूर हुआ है। जातुल कर्द का वाकिया पारे के शुरू में मुलाहिजा किया जाए। ये उन डाकुओं के खिलाफ गज्वा था जो आहज़रत (ﷺ) की बीस अदद दूध देने वाली ऊँटनियों को भगाकर ले जा रहे थे। जंगे खैबर से चन्द रोज़ बेशतर ये ह्दाषा पेश आया था। मज़ीद जिन गज्वात के नाम भूल गये, उनसे मुराद गज्व-ए-फ़तहे मक्का, गज्व-ए-ताइफ़ और गज्व-ए-तबूक हैं। (फ़तह)

बाब 47 : गज्व-ए-फ़तहे मक्का का बयान

٤٧ - باب غزوة الفتح

इसका सबब ये हुआ कि सुलहे हूदैबिया की एक शर्त ये थी कि फ़रीक़ेन के हलीफ़ कबीले भी आपस में जंग न करेंगे। बन्ू बक्र कुरैश के हलीफ़ थे और बन्ू खुज़ाआ रसूले करीम (ﷺ) के मगर बन्ू बक्र ने अचानक बन्ू खुज़ाआ पर हमला कर दिया और कुरैश ने अपने हलीफ़ बन्ू बक्र का साथ दिया। इस पर बन्ू खुज़ाआ ने दरबारे रिसालत में जाकर फ़रियाद की। उसके नतीजे में गज्व-ए-फ़तहे मक्का वजूद में आया। कान सबबु ज़ालिक अन्न कुरैशन नक्रज़ुल अहदल्लज़ी बक्र अ बिल्हुदैबियति फफ़हिम ज़ालिकन्न बिद्यु (ﷺ) फ़ग़ज़ाहुम. (फ़तह)

और जो ख़त हातिब बिन अबी बलत्ता ने अहले मक्का को नबी करीम (ﷺ) के गज्वा के इरादे से आगाह करने के लिये भेजा था उसका भी बयान।

4273. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अम्म बिन दीनार ने बयान किया, उन्हें हसन बिन मुहम्मद बिन अली ने ख़बर दी और उन्होंने इब्बदुल्लाह बिन राफ़ेअ से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत अली (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे और जुबैर और मिक्दाद (रज़ि.) को रसूले करीम (ﷺ) ने ख़ाना किया और हिदायत की कि (मक्का के रास्ते पर) चले जाना जब तुम मक्कामे रौज़-ए-खाख़ पर पहुँचो तो वहाँ तुम्हें हौदज में सवार एक औरत मिलेगी। वो एक ख़त लिये हुए है, तुम उससे वो ले लेना। उन्होंने कहा कि हम ख़ाना हुए। हमारे घोड़े हमें तेज़ी के साथ लिये जा रहे थे। जब हम रौज़-ए-खाख़ पर पहुँचे तो वाक़ई वहाँ हमें एक औरत हौदज में सवार मिली (जिसका नाम सारा या कनूद है) हमने उससे कहा कि ख़त निकाल। वो कहने लगी कि मेरे पास कोई ख़त नहीं है लेकिन जब हमने उससे ये कहा कि अगर तूने ख़ुद से ख़त निकालकर हमें नहीं दिया तो हम तेरा कपड़ा उतारकर (तलाशी लेंगे) तब उसने अपनी चोटी में से वो ख़त निकाला। हम वो ख़त लेकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में वापस हुए। उसमें ये लिखा था कि हातिब बिन अबी बलत्ता (रज़ि.) की तरफ़ से चन्द

وَمَا بَعَثَ بِهِ خَاطِبٌ مِنْ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى أَهْلِ مَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِغَزْوِ النَّبِيِّ ﷺ

٤٢٧٤ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُمَرُو بْنِ دِينَارٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي رَافِعٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَالزُّبَيْرُ وَالْمِقْدَادُ فَقَالَ: انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاحٍ، فَإِنَّ بِهَا طَمِينَةً مَعَهَا كِتَابٌ فَخُذُوا مِنْهَا، قَالَ: فَانْطَلَقْنَا تَعَادَى بَيْنَا خَيْلُنَا حَتَّى أَتَيْنَا الرُّوضَةَ فَإِذَا نَحْنُ بِالطَّمِينَةِ قُلْنَا لَهَا اخْرُجِي الْكِتَابَ قَالَتْ: مَا مَعِيَ كِتَابٌ فَقُلْنَا لَنُخْرِجَنَّ الْكِتَابَ أَوْ لَنَلْقَيْنَ النَّبِيَّ، قَالَ: فَأَخْرَجْتُهُ مِنْ عِقَاصِهَا، فَأَتَيْنَا بِهِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا بِهِ مِنْ خَاطِبٍ مِنْ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى نَاسٍ

मुशिकीन मक्का के नाम (सफ़वान बिन उमय्या और सुहैल बिन अमर और इकिमा बिन अबू जहल) फिर उन्होंने उसमें मुशिकीन को हुजुरे अकरम (ﷺ) के कुछ भेदों की खबर दी थी। (आप फौज लेकर आना चाहते हैं) हुजूर (ﷺ) ने पूछा, ऐ हातिब! तूने ये क्या किया? उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे बारे में फैसला करने में आप जल्दी न फ़र्माएँ, मैं उसकी वजह अर्ज करता हूँ। बात ये है कि मैं दूसरे मुहाजिरीन की तरह कुरैश के ख़ानदान से नहीं हूँ, सिर्फ़ उनका हलीफ़ बनकर उनसे जुड़ गया हूँ और दूसरे मुहाजिरीन के वहाँ अज़ीज़ व अक्रबा हैं जो उनके घर बार माल अस्बाब की निगरानी करते हैं। मैंने चाहा कि ख़ैर जब मैं ख़ानदान की रू से उनका शरीक नहीं हूँ तो कुछ एहसान ही उन पर ऐसा कर दूँ जिसके ख़याल से वो मेरे कुम्बे वालों को न सताएँ। मैंने ये काम अपने दीन से फिरकर नहीं किया और न इस्लाम लाने के बाद मेरे दिल में कुफ़्र की हिमायत का ज़ुब्बा है। इस पर हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाक़ई इन्होंने तुम्हारे सामने सच्ची बात कह दी है। हज़रत इमर (रज़ि.) ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! इज़ाज़त हो तो मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ लेकिन आँ हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक रहे हैं और तुम्हें क्या मा'लूम अल्लाह तआला जो ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक होने वालों के काम से वाकिफ़ है।... सूरह मुम्तहिना में उसने उनके बारे में खुद फ़र्मा दिया है कि, जो चाहो करो मैं तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर दिये। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, ऐ वो लोगों जो इमान ला चुके हो! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ कि उनसे तुम अपनी मुहब्बत का इज़हार करते रहो। आयत फ़क्रद ज़ल्ला सवाअस्सबील तक।

(राजेअ: 3007)

بِمَكَّةَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ أَمْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((يَا حَاطِبُ مَا هَذَا؟)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَعْجَلْ عَلَيَّ إِنِّي كُنْتُ امْرَأًا مُلْتَصِقًا فِي قُرَيْشٍ يَقُولُ : كُنْتُ خَلِيفًا وَلَمْ أَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ، وَكَانَ مِنْ مَعَكَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ مَنْ لَهُمْ قَرَابَاتٌ يَحْمُونَ أَهْلِيهِمْ وَأَمْوَالَهُمْ، فَأَخْبَيْتُ إِذْ فَاتَنِي ذَلِكَ مِنَ النَّسَبِ فِيهِمْ إِنْ أَتَيْتُ عِيْلَتَهُمْ يَذَّاءُ يَحْمُونَ قَرَابَتِي وَلَمْ أَفْعَلْهُ أَوْ لَئِنْ أَذَا عَنْ دِينِي وَلَا رِضًا بِالْكَفْرِ بَعْدَ الْإِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: أَمَّا ((إِنَّهُ لَفِي صِدْقِكُمْ)) فَقَالَ عُمَرُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَغِي أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ فَقَالَ : ((إِنَّهُ لَفِي شَهَدٍ بَذَرًا، وَمَا يَذْرِيكَ لَعَلَّ اللَّهَ أَطْلَعَ عَلَى مَنْ شَهِدَ بَذَرًا؟ قَالَ : اْعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ السُّورَةَ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمُ بِالْمَوَدَّةِ - إِلَى قَوْلِهِ - فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ﴾)).

[راجع: 3007]

तशरीह: हज़रत हातिब बिन अबी बल्लआ (रज़ि.) ने मुशिकीने मक्का को लिखा था कि रसूले करीम (ﷺ) मक्का पर फौज लेकर आना चाहते हैं, तुम अपना इतिज़ाम कर लो। हज़रत इमर (रज़ि.) ने जो कुछ कहा वो ज़ाहिरी क़ानूनी सियासत के मुताबिक़ था। मगर आँ हज़रत (ﷺ) को उनकी सच्चाई व ह्य से मा'लूम हो गई। लिहाज़ा आपने उनकी ग़लती से दरगुजर फ़र्मा दिया। मा'लूम हुआ कि कुछ उमूर में महज़ ज़ाहिरी वजूह की बिना पर फ़त्वा ठोक देना दुरुस्त नहीं है। मुफ़्ती को लाज़िम है कि ज़ाहिर व बातिन के तमाम उमूर व हालात पर ख़ूब ग़ौरी-ख़ोज़ करके फ़त्वा नवेसी करे। रिवायत में ग़ज़्व-ए-

फ़तहे मक्का के अज़म का ज़िक्र है, यही बाब से वजहे मुताबक़त है।

फ़तहूल बारी में हज़रत हातिब (रज़ि.) के ख़त के ये अल्फ़ाज़ मन्कूल हुए हैं, या मअशर कुरैशिन फइन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) जाअ कम बि जैशिन कल्लैलि यसीरू कस्सैल फवल्लाहि लो जाअकुम वहदहू लनसरहुल्लाहु व अन्जज लहू वअदहू फन्ज़ुर व इल्ला नप्सकुम वस्सलाम वाक़दी ने ये लफ़ज़ नक़ल किये हैं। इन्न हातिब कतब इला सुहैलिब्नि अम्निन व सप्वानिब्नि असद व अकरमा अन्न रसूलल्लाहि अज़ज़न फिन्नासि बिल्गाज़िब व ला इरादुहू युरीदु गैरकुम व क़द अहबबु अय्यकून ली इन्दकुम यदुन उनका खुलासा ये है कि रसूले करीम (ﷺ) एक लश्करे ज़रार लेकर तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करने वाले हैं तुम लोग होशियार हो जाओ। मैंने तुम्हारे साथ एहसान करने के लिये ऐसा लिखा है।

बाब 48 : ग़ज़व-ए-फ़तहे मक्का का बयान जो रमज़ान सन 8 हिजरी में हुआ था

4275. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैज़ बिन मसऊद ने, कहा कि मुझसे अक्कील बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़व-ए-फ़तहे मक्का रमज़ान में किया था। जुहरी ने इब्ने सअद से बयान किया कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना कि वो भी उसी तरह बयान करते थे। जुहरी ने अब्दुल्लाह से रिवायत किया, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि (ग़ज़व-ए-फ़तह के सफ़र में जाते हुए) रसूलुल्लाह (ﷺ) रोज़े से थे लेकिन जब आप मक्कामे कदीद पर पहुँचे, जो कदीद और अस्फ़ान के दरम्यान एक चश्मा है तो आपने रोज़ा तोड़ दिया। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने रोज़ा नहीं रखा यहाँ तक कि रमज़ान का महीना ख़त्म हो गया। (राजेअ: 1944)

तशरीह: रोज़े से इंसान कमज़ोर हो जाता है। जो ख़ास तौर से जिहाद के लिये नुक्क़ान देता है। यही वजह थी कि आँहज़रत (ﷺ) ने खुद भी रोज़े नहीं रखे और न ही सहाबा (रज़ि.) ने और आम सफ़र के लिये भी यही हुक्म करार पाया है जैसा कि कुआन मजीद में है, फमन कान मिन्कुम मरीज़न औ अला सफ़रिन फइहतुम्मिन अय्यामिन इख़र या नी जो मरीज़ हो वो सेहत के बाद और जो मुसाफ़िर हो वो वापसी के बाद रोज़ा रख ले।

4276. मुझे महमूद बिन गीलान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुरज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, कहा मुझे जुहरी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) (फ़तहे मक्का के लिये) मदीना से खाना हुआ। आपके साथ (दस या बारह हज़ार का) लश्कर था। उस वक़्त आपको मदीना में तशरीफ़ लाकर साढ़े आठ साल पूरे होने वाले थे। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ)

48- بَابُ غَزْوَةِ الْفَتْحِ فِي رَمَضَانَ

4275- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُيَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتَيْبَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ غَزَا غَزْوَةَ الْفَتْحِ فِي رَمَضَانَ. قَالَ: وَسَمِعْتُ ابْنَ الْمُسَّبِّبِ يَقُولُ: مِثْلَ ذَلِكَ. وَعَنْ عُتَيْبَةَ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَتَّى إِذَا بَلَغَ الْكَدِيدَ الْمَاءَ الَّذِي بَيْنَ قُدَيْدٍ وَعُسْفَانَ الْفَرْ فَلَمْ يَزَلْ مَقْطِرًا حَتَّى انْسَلَخَ الشَّهْرُ. [راجع: 1944]

4276- حَدَّثَنِي مَعْمُودٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ

الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَقْمَرٌ، أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ عُيَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ فِي رَمَضَانَ مِنَ الْمَدِينَةِ، وَمَعَهُ عَشْرَةُ آلَافٍ وَذَلِكَ عَلَى

और आपके साथ जो मुसलमान थे मक्का के लिये खाना हुआ। हजूर (ﷺ) भी रोज़े से थे और तमाम मुसलमान भी, लेकिन जब आप मुकामे कदीद पर पहुँचे जो कदीद और अस्फ़ान के बीच एक चश्मा है तो आपने रोज़ा तोड़ दिया और आपके साथ मुसलमानों ने भी रोज़ा तोड़ दिया। जुहरी ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के सबसे आखिरी अमल पर ही अमल किया जाएगा।

رَأَى لَمَانَ سَبِيْنٍ وَلَصَفُو مِنْ مَقْدِيْمِ
الْمَدِيْنَةِ فَسَارَ هُوَ وَمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
إِلَى مَكَّةَ، يَصُومُونَ وَيَصُومُونَ حَتَّى نَلَّغَ
الْكَبِيْدَ وَهُوَ مَاءٌ تَيْنَ غُسْفَانَ وَقُدَيْدِ الْفَطْرِ
وَالْفَطْرَا. قَالَ الرَّضَوِيُّ: وَالْمَاءُ يُؤَخَّرُ مِنْ
أَمْرِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْآخِرُ لَا الْأَوَّلُ.

[راجع: 1944]

कुर्आन मजीद में भी मुसाफिर के लिये खास इजाज़त है कि मुसाफिर न चाहे तो रोज़ा सफ़र में न रखे या सफ़र पूरा करके छूटे हुए रोज़ों को पूरा कर ले।

4277. मुझसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे खालिद ने बयान किया, उनसे इकिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) रमज़ान में हुनैन की तरफ़ तशरीफ़ ले गये। मुसलमानों में कुछ हज़रात तो रोज़े से थे और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा था लेकिन जब हजूर (ﷺ) अपनी सवारी पर पूरी तरह बैठ गये तो आपने बर्तन में दूध या पानी तलब फ़र्माया और उसे अपनी कैंटनी पर या अपनी हथेली पर रखा (और फिर पी लिया) फिर आपने लोगों को देखा जिन लोगों ने पहले से रोज़ा नहीं रखा था, उन्होंने रोज़ादारों से कहा कि अब रोज़ा तोड़ लो।

(राजेअ: 1944)

٤٢٧٧- حَدَّثَنِي عِيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا
عَبْدُ الْأَعْلَى حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ
ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي رَمَضَانَ
إِلَى خَتَيْنِ وَالنَّاسُ مُخْتَلِفُونَ فَصَالِمٌ
وَمُفْطِرٌ، فَلَمَّا اسْتَوَى عَلَى رَاحِلَتِهِ دَعَا
بِإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ أَوْ مَاءٍ فَوَضَعَهُ عَلَى رَاحَتِهِ
أَوْ عَلَى رَاحِلَتِهِ ثُمَّ نَظَرَ إِلَى النَّاسِ فَقَالَ
الْمُفْطِرُونَ لِلصَّوْمِ: أَفْطَرُوا.

[راجع: 1944]

4278. और अब्दुरज़ाक़ ने कहा हमको मज़मर ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें इकिमा ने और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया। और हम्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब से रिवायत किया, उन्होंने इकिमा से, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया।

(राजेअ: 1944)

٤٢٧٨- وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: أَخْبَرَنَا
مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ
عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ
غَامَ الْفَتْحِ. وَقَالَ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ: عَنْ
أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ
النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: 1944]

तशरीह:

मशहूर रिवायतों में है कि आँहज़रत (ﷺ) ग़ज़्व-ए-हुनैन के लिये शव्वाल में फ़तहे मक्का के बाद तशरीफ़ ले गये थे। इस रिवायत में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने रमज़ान ही में ग़ज़्व-ए-हुनैन का सफ़र किया था। लिहाज़ा तत्बोक्क ये है कि सफ़र रमज़ान में शुरू हुआ। शव्वाल में इसकी तक्मील हुई। ग़ज़्व-ए-हुनैन का वकूअ शव्वाल ही में सहीह है। (कस्तलानी)

4279. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे जरिर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताऊस ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ान में (फ़तहे-मक्का का) सफ़र शुरू किया। आप रोज़े से थे लेकिन जब मुक़ामे इस्फ़ान पर पहुँचे तो पानी तलब किया। दिन का वक़्त था और आपने दो पानी पिया ताकिलोगों को दिखला सकें फिर आपने रोज़ा नहीं रखा और मक्का में दाख़िल हुए। बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहा करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने सफ़र में बाज़ औक़ात रोज़ा भी रखा था और कुछ औक़ात रोज़ा नहीं भी रखा। इसलिये (सफ़र में) जिसका जी चाहे रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे। मुसाफ़िर के लिये रोज़ा न रखने की इजाज़त है। (रिवायत में फ़तहे-मक्का के लिये सफ़र करने का ज़िक्र है। यही बाब से मुताबक़त है।) (राजेअ: 1944)

तशरीह: कुरैश की बदअहदी पर (वादा तोड़ने के कारण) मजबूरन मुसलमानों को सन् 8 हिजरी में बमाहे रमज़ान मक्का शरीफ़ पर लश्कर कशी करनी पड़ी। कुरैश ने सन् 6 हिजरी के मुआहदा को तोड़कर नू खुज़ाअ पर हमला कर दिया जो आँहज़रत (ﷺ) के हलीफ़ (साथी) थे और जिन पर हमला न करने का अहद व पैमान था मगर कुरैश ने इस अहद को इस बुरी तरह तोड़ा कि सारे बनी खुज़ाआ का सफ़ाया कर दिया। उन बेचारों ने भागकर का'बा शरीफ़ में पनाह मांगी और अलहक्क अलहक्क कहकर पनाह मांगते थे कि अपने अल्लाह के वास्ते हमको क़त्ल न करो। मुश्रीकीन उनको जवाब देते ला इलाहल् यौम आज अल्लाह कोई चीज़ नहीं। उन मज़्लूमों के बचे हुए चालीस आदमियों ने दरबारे रिसालत में जाकर अपनी बर्बादी की सारी दास्तान सुनाई। आँहज़रत (ﷺ) मुआहिदे की पाबन्दी, फ़रीक़े मज़्लूम की दादरसी, दोस्त क़बीलों की आइन्दा हिफ़ाज़त की गर्ज़ से दस हज़ार की जमीअत के साथ बजानिब मक्का आज़िमे सफ़र हुए। दो मंज़िला सफ़र हुआ था कि रास्ते में अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अब्दुल मुतलिब और अब्दुल्लाह बिन उमय्या मुलाक़ी हुए और इस्लाम कुबूल किया। उस मौक़े पर अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने अज़ब जोश व निशात के साथ नीचे लिखे अश्रार पढ़े।

लिउम्रिक इन्नी हीन अहमिलु रायहु
लितगलिब खैलुल्लाति खैलु मुहम्मदिन
लकल्मुदलजुल्हिरानु अज़्लमु लैलतिन
फ़हाज़ा अवानी हीन हदा फहतदा
हदानी हादिन गैर नफ़िस व दल्लनी
इलल्लाहि मन तरत्तुहु कुल्ल मुतरदिन

तर्जुमा: क़सम है कि मैं जिन दिनों लड़ाई का झण्डा इस नापाक ख़याल से उठाया करता था कि लात बुत के पूजने वालों की फ़ौज हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की फ़ौज पर ग़ालिब आ जाए। उन दिनों में उस ख़ारे पुश्त जैसा था जो अंधेरी रात में टुकड़े खाता हो। अब वक़्त आ गया है कि मैं हिदायत पाऊँ और सीधे रास्ते (इस्लाम पर) ग़ामज़न हो जाऊँ। मुझे सच्चे हादी-ए-बरहक़ ने हिदायत फ़र्मा दी है (न कि मेरे नफ़स ने) और अल्लाह का रास्ता मुझे उस हादी-ए-बरहक़ ने दिखला दिया है जिसे मैंने (अपनी ग़लती से) हमेशा धुत्कार रखा था।

आख़िर 20 रमज़ान सन् 8 हिजरी को आप मक्का में फ़ातिहाना दाख़िल हुए और तमाम दुश्मनाने इस्लाम को आम

٤٢٧٩ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا
جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ
طَاوُسٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَافَرَ رَسُولُ
اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَمَضَانَ
فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ عُثْمَانَ، ثُمَّ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ
مَاءٍ فَشَرِبَ نَهَارًا يُبْرِئُهُ النَّاسَ فَأَفْطَرَ حَتَّى
قَبِمَ مَكَّةَ. قَالَ: وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ:
صَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي السَّفَرِ، وَأَفْطَرَ
لَمَنْ شَاءَ صَامَ وَمَنْ شَاءَ أَفْطَرَ. [راجع:]

[١٩٤٤]

मुआफ़ी का ऐलान करा दिया गया। इस मौके पर आपने ये खुल्बा पेश फ़र्माया।

या मअशर कुरैशिन इन्नल्लाह क़द अज़हब मिन्कुम नुखुव्वतल्जाहिलिय्यति व तअज़्जुमिहा बिल्आबाइ अन्नासु मिन आदम व आदमु ख़लक़ मिन तुराब धुम्म तला रसूलुल्लाहि या अय्युहन्नासु इन्न ख़लक्नाकुम मिन ज़करिव्वं उन्था व जअल्नाकुम शुक्रबव्वं क़बाइल लितआरफु इन्न अक्मकुम इन्दल्लाहि अत्क्राकुम इज़हबू अन्तुमुत्तुलक्राइ ला तषीब अलैकुमुल्योम (तबी)

(तर्जुमा) : ऐ ख़ानदाने कुरैश! अल्लाह ने तुम्हें जाहिलाना नुखुव्वत और बाप दादों पर इतराने का गुरूर आज ख़त्म कर दिया। सुन लो! सब लोग आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से पैदा हुए फिर आपने इस आयत को पढ़ा, ऐ लोगों! मैंने तुमको एक ही मर्द औरत से पैदा किया है और कुम्बे और क़बीले सब तुम्हारी आपस की पहचान के लिये बना दिये हैं और अल्लाह के यहाँ तो सिर्फ़ तब्रया वाले की इज़्जत है। फिर फ़र्माया, ऐ कुरैशियों! जाओ आज तुम सब आज़ाद हो तुम पर आज कोई मुवाख़ाज़ा नहीं है। इस जंग के जस्ता-जस्ता हालात हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने नीचे दर्ज किये गये अब्बाब में बयान किये हैं।

बाब 49 : फ़तहे-मक्का के दिन नबी करीम (ﷺ)

ने झण्डा कहाँ गाड़ा था?

4280. हमसे अब्द बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इव्वान ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे-मक्का के लिये खाना हुए तो कुरैश को उसकी ख़बर मिल गई थी। घुनाँचे अबू सुफ़यान बिन हर्ब, हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक्काअ नबी करीम (ﷺ) के बारे में मा'लूमत के लिये मक्का से निकले। ये लोग चलते चलते मुक़ामे मरज़ ज़ह्य़ान पर जब पहुँचे तो उन्हें जगह जगह आग जलती हुई दिखाई दी। ऐसा मा'लूम होता था कि मक्कामे अरफ़ात की आग है। अबू सुफ़यान ने कहा कि ये आग कैसी है? ये तो अरफ़ात की आग की तरह दिखाई देती है। उस पर बुदैल बिन वरक्काअ ने कहा कि ये बनी अमर (या'नी कुबा के क़बीले) की आग है। अबू सुफ़यान ने कहा कि बनी अमर की ता'दाद इससे बहुत कम है। इतने में हज़ूर (ﷺ) के मुहाफ़िज़ दस्ते ने उन्हें देख लिया और उनको पकड़कर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में लाए, फिर अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने इस्लाम कुबूल किया। उसके बाद जब आँहज़रत (ﷺ) आगे (मक्का की तरफ़) बढ़े तो अब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया कि अबू सुफ़यान (रज़ि.) को ऐसी जगह पर रोके रखो जहाँ घोड़ों का जाते वक़्त हुज़ूम हो ताकि

49 - باب أين ركز النبي ﷺ

الرأية يوم الفتح؟

4280 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ جِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: لَمَّا سَارَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ قَبْلَ ذَلِكَ قُرَيْشًا، خَرَجَ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ، وَحَكِيمُ بْنُ حِزَامٍ، وَبُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ، يَلْعَمُونَ الْخَبَرَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَقْبَلُوا يَسِيرُونَ حَتَّى أَتَوْا مَوْضِعَ الْهُزَانِ فَإِذَا هُمْ بِبَيْرَانَ كَانَتْهَا بَيْرَانُ عُرْفَةَ: فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: مَا هَذِهِ؟ لَكَانَتْ بَيْرَانُ عُرْفَةَ؟ فَقَالَ بُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ: بَيْرَانُ بَنِي عَمْرٍو، فَقَالَ: أَبُو سُفْيَانَ: عَمْرٍو أَقَلُّ مِنْ ذَلِكَ، فَأَرَاهُمْ نَاسًا مِنْ حَرَسِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَذَرَكُوهُمْ فَأَخَذُوهُمْ فَأَتَوْا بِهِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَأَسْلَمَ أَبُو سُفْيَانَ، فَلَمَّا سَارَ قَالَ لِلْعَبَّاسِ: ((اخْبِسْ أَبَا سُفْيَانَ عِنْدَ

वो मुसलमानों की फ़ौजी कुव्वत को देख लें। चुनौचे अब्बास (रज़ि.) उन्हें ऐसे ही मुक़ाम पर रोककर खड़े हो गये और हुज़ूर (ﷺ) के साथ क़बीला के दस्ते एक एक करके अबू सुफ़यान (रज़ि.) के सामने से गुज़रने लगे। एक दस्ता गुज़रा तो उन्होंने पूछा, अब्बास! ये कौन हैं? उन्होंने बताया कि ये क़बीला ग़िफ़ार है। अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने कहा कि मुझे ग़िफ़ार से क्या सरोकार, फिर क़बीला जुहैना गुज़रा तो उनके बारे में भी उन्होंने यही कहा, क़बीला सुलैम गुज़रा तो उनके बारे में भी यही कहा। आख़िर एक दस्ता सामने आया। उस जैसा फ़ौजी दस्ता नहीं देखा गया। अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने पूछा ये कौन लोग हैं? अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ये अंज़ार का दस्ता है। सअद बिन इबादा (रज़ि.) उसके अमीर हैं और उन्हीं के हाथ में (अंज़ार का झण्डा है)। सअद बिन इबादा (रज़ि.) ने कहा अबू सुफ़यान! आज का दिन क़त्ले-आम का है। आज का'बा में भी लड़ना दुरुस्त कर दिया गया है। अबू सुफ़यान (रज़ि.) इस पर बोले, ऐ अब्बास! (कुरैश की हलाकत व बर्बादी का दिन अच्छा आ लगा है। फिर एक और दस्ता आया ये सबसे छोटा दस्ता था। उसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके सहाबा (रज़ि.) थे। आँहज़रत (ﷺ) का अलम जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) उठाए हुए थे। जब हुज़ूर (ﷺ) अबू सुफ़यान (रज़ि.) के करीब से गुज़रे तो उन्होंने कहा आपको मा'लूम नहीं, सअद बिन इबादा (रज़ि.) क्या कह गये हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा कि उन्होंने क्या कहा है? तो अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने बताया कि ये-ये कह गये हैं कि आप कुरैश का काम तमाम कर देंगे (सबको क़त्ल कर डालेंगे)। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया किस अद (रज़ि.) ने ग़लत कहा है बल्कि आज का दिन वो है जिसमें अल्लाह का'बा की अज़मत और ज़्यादा कर देगा। आज का'बा को ग़िलाफ़ पहनाया जाएगा। इर्वा ने बयान किया फिर हुज़ूर (ﷺ) ने हुक्म दिया कि आपका अलम (झण्डा) मुक़ामे जहून में गाड़ दिया जाए। इर्वा ने बयान किया और मुझे नाफ़ेअ बिन जुबैर बिन मुतइम ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) से कहा, (फ़तहे-मक्का के बाद) कि हुज़ूर (ﷺ) ने उनको यहीं झण्डा गाड़ने के लिये हुक्म फ़र्माया था। रावी ने बयान किया कि उस दिन हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ालिद बिन वलीद

حَطَمَ الْخَنْبِلَ حَتَّى يَنْظُرَ إِلَى الْمُسْلِمِينَ) لَحِمَتِ الْمَنَاسُ فَجَعَلَتْ الْقَبَائِلَ تَمُرُّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تَمُرُّ كَحَيْةٍ كَحَيْةٍ عَلَى أَبِي سُفْيَانَ فَمَرَّتْ كَحَيْةٍ قَالَ: يَا عَبَّاسُ مَنْ هَذِهِ؟ قَالَ: هَذِهِ غِفَارٌ قَالَ: مَا لِي وَلِغِفَارٍ؟ ثُمَّ مَرَّتْ جُهَيْنَةُ، قَالَ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ مَرَّتْ سُلَيْمٌ فَتَمُرُّ فَتَمُرُّ مِثْلَ ذَلِكَ، وَفَمَرَّتْ سُلَيْمٌ فَتَمُرُّ مِثْلَ ذَلِكَ، حَتَّى أَتَيْتُ كَحَيْةٍ لَمْ يَرِ مِثْلَهَا قَالِ مَنْ هَذِهِ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ الْأَنْصَارُ عَلَيْهِمْ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ مَعَ الرَّايَةِ، فَقَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: يَا أَبَا سُفْيَانَ الْيَوْمَ يَوْمُ الْمَلْحَمَةِ الْيَوْمَ تَسْتَحِلُّ الْكَعْبَةَ، فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: يَا عَبَّاسُ حَتَّى يَوْمَ اللَّعَارِ ثُمَّ جَاءَتْ كَحَيْةٍ وَهِيَ أَقْلُ الْكُتَابِ فِيهِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ وَرَايَةُ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ الرَّيْثِ بْنِ الْعَوَامِ، فَلَمَّا مَرَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِأَبِي سُفْيَانَ قَالَ: أَلَمْ تَعْلَمْ مَا قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ؟ قَالَ: ((مَا قَالَ؟)) قَالَ: قَالَ: كَذَا وَكَذَا، فَقَالَ: ((كَذَبَ سَعْدُ وَلَكِنْ هَذَا يَوْمٌ يُعْظَمُ اللَّهُ فِي الْكَعْبَةِ وَيَوْمٌ تُكْسَى فِيهِ الْكَعْبَةُ)) قَالَ: وَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ تُرَكِّزَ رَايَتُهُ بِالْجَحُونِ. قَالَ غُرُورٌ: وَأَخْبَرَنِي نَافِعُ بْنُ جَعْفَرٍ بْنُ مُطْعِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْعَبَّاسَ يَقُولُ لِلرَّيْثِ بْنِ الْعَوَامِ: يَا أَبَا عَبْدِ اللَّهِ هَهُنَا أَمْرُكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ تُرَكِّزَ الرَّايَةَ، قَالَ: وَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَئِذٍ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ أَنْ يَدْخُلَ

(रज़ि.) को हुक्म दिया था कि मक्का के बालाई इलाके कदा की तरफ से दाखिल हों और खुद हुजुरे अकरम (ﷺ) कदा के (नशीबी इलाके) की तरफ से दाखिल हुए। उस दिन खालिद (रज़ि.) के दस्ता के दो सहाबी, हुबैश बिन अशअर और कुर्ज बिन जाबिर फिहरी (रज़ि.) शहीद हुए थे।

مِنْ أَغْلَى مَكَّةَ مِنْ كَدَاءَ وَدَخَلَ النَّبِيُّ
ﷺ مِنْ كَدَاءٍ فَقِيلَ مِنْ خَلِّ خَالِدٍ يَوْمَئِذٍ
رَجُلَانِ خَيْشُ بْنُ الْأَشْعَرِ وَكُرْزُ بْنُ جَابِرٍ
الْفِهْرِيُّ.

तशीह: रिवायत में मर्रज जहरान एक मकाम का नाम है मक्का से एक मंज़िल पर। अब उसको वादी-ए-फ़ातिमा कहते हैं। अरफ़ात में हाजियों की आदत थी कि हर एक आग सुलगाता। कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को अलग अलग आग जलाने का हुक्म दिया। चुनाँचे हज़ारों जगह आग रोशन की गई। रिवायत के आख़िर में लफ़ज़ हब्बज़ा यौमुज़ ज़िमार का तर्जुमा कुछ ने यूँ किया है। वो दिन अच्छा है जब तुमको मुझे बचाना चाहिये। कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) सामने से गुज़रे तो अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने आपको क़सम देकर पूछा क्या आपने अपनी क़ौम के क़त्ल करने का हुक्म दिया है? आपने फ़र्माया नहीं। अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने सअद बिन इबादा (रज़ि.) का कहना बयान किया। आपने फ़र्माया नहीं आज तो रहमत और करम का दिन है। आज अल्लाह कुरैश को इज़्जत देगा और सअद (रज़ि.) से झण्डा लेकर उनकी बजाय कैस को दिया। फ़तहे-मक्का के दिन अलमे नबवी मुकामे जहून में गाड़ा गया था। कुद आ बिल मद और कुदाअ बिल क़सर दोनों मुकामों के नाम हैं। पहला मुकाम मक्का के बालाई जानिब में है और दूसरा नशीबी जानिब में। जब खालिद बिन वलीद (रज़ि.) फ़ौज के साथ मक्का में दाखिल हुए तो सफ़वान बिन उमय्या और सुहेल बिन अमर ने कुछ आदमियों के साथ मुसलमानों का मुकाबला किया। काफ़िर 12-13 मारे गये और मुसलमान दो शहीद हुए।

रिवायत में मज़कूर शुदा हज़रत अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) हैं जो रसूले करीम (ﷺ) के चचेरे भाई होते हैं। ये शायर भी थे और एक दफ़ा आँहज़रत (ﷺ) की हिज्व में उन्होंने एक क़सीदा कहा था। जिसका जवाब हस्सान (रज़ि.) ने बड़े शानदार शेरों में दिया था। फ़तह के दिन इस्लाम लाने का इरादा कर रहे थे मगर पिछले हालात याद करके शर्म के मारे सर नहीं उठा रहे थे। आख़िर हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा कि आप आँहज़रत (ﷺ) के चेहरे मुबारक की तरफ़ चेहरे करके वो अल्फ़ाज़ कह दीजिए जो हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सामने उनके ख़ताकार भाइयों ने कहे थे। तल्लाहि लक़द आप्रकल्लाहु अलैना व इन कुन्ना लख़ातिर्इन (यूसुफ़: 91) या नी अल्लाह की क़सम! आपको अल्लाह ने हमारे ऊपर बड़ी फ़ज़ीलत बख़शी और हम बिला शक़ ख़ताकार हैं। आप ये अल्फ़ाज़ कहेंगे तो रसूले करीम (ﷺ) के अल्फ़ाज़ भी जवाब में वही होंगे जो हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के थे, ला तश्रीब अलैकुमुल्थौम यग़फ़िरल्लाहु लकुम व हुब अहमुराहिमीन (यूसुफ़: 92) ऐ भाइयों! आज के दिन तुम पर कोई मलामत नहीं है। अल्लाह तुमको बख़शे वो बहुत बड़ा रहम करने वाला है। वे आख़िर मुसलमान हुए और अच्छा पुरखुलूस इस्लाम लाए। आख़िर उम्र में हब्ब कर रहे थे जब हुज्जाज ने सर मूँडा तो सर में एक रसौली (गाँठ) थी उसे भी काट दिया, यही उनकी मौत की वजह का सबब बना। सन् 20 हिजरी में वफ़ात पाई।

4281. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुआविया बिन कुरैह ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मुगफ़फल (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे-मक्का के मौके पर अपने कैंट पर सवार हैं और खुश इल्हानी के साथ सूरह फतह की तिलावत फ़र्मा रहे हैं। मुआविया बिन कुरैह (रज़ि.) ने कहा कि अगर उसका ख़तरा न होता कि लोग मुझे घेर लेंगे तो मैं भी उसी तरह तिलावत करके दिखाता जैसे अब्दुल्लाह बिन

٤٢٨١ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ
عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، قَالَ : سَمِعْتُ عَدَدَ
اللَّهِ بْنِ مَفْقَلٍ يَقُولُ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ
ﷺ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ عَلَى نَاقَتِهِ وَهُوَ يَقْرَأُ
سُورَةَ الْفَتْحِ يَرْجِعُ، وَقَالَ: لَوْ لَا أَن
يَجْمَعُ النَّاسُ حَوْلِي لَوَجَعْتُ كَمَا رَجَعُ.

मुग़फ़ल (रज़ि.) ने पढ़कर सुनाया था।

(दीगर मक़ाम : 4835, 5034, 5047, 7540)

4282. हमसे सुलैमान बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमसे सअदान बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी हफ़सा ने बयान किया, कहा उनसे जुहरी ने, उनसे ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन ने, उनसे अमर बिन इब्मान ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के सफ़र में उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा या रसूलुल्लाह! कल (मक्का में) आप कहाँ क़याम करेंगे? औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हमारे लिये अक़ील ने कोई घर ही कहाँ छोड़ा है।

(राजेअ : 1588)

4283. फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मोमिन, काफ़िर का वारिष नहीं हो सकता और न काफ़िर मोमिन का वारिष हो सकता है। जुहरी से पूछा गया कि फिर अबू तालिब की विरासत किसे मिली थी? उन्होंने बताया कि उनके वारिष अक़ील और तालिब हुए थे। अमर ने जुहरी से (उसामा रज़ि. का सवाल यूँ नक़ल किया है कि) आप अपने हज़ के दौरान कहाँ क़याम करेंगे? और यूनुस ने (अपनी रिवायत में) न हज़ का ज़िक्र किया है और न फ़तहे-मक्का का।

अक़ील और तालिब उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे। इसलिये अबू तालिब के वो वारिष हुए और अली और जा'फ़र (रज़ि.) को कुछ तर्का नहीं मिला क्योंकि ये दोनों मुसलमान हो गये थे।

4284. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान ने और उनसे अबू हुसैह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया इंशाअल्लाह हमारी क़यामगाह अगर अल्लाह तआला ने फ़तह इनायत की तो ख़ैफ़े बनी किनाना में होगी। जहाँ क़ुरैश ने कुफ़्र की हिमायत के लिये क़सम खाई थी। (राजेअ : 1589)

तशरीह : ख़ैफ़ उस जगह को कहते हैं जो मा' मूली ज़मीन से ऊँची और पहाड़ से कुछ नीची हो। मस्जिदे ख़ैफ़ उसी जगह वाक़ेअ है। किसी वक़्त कुफ़ारे मक्का ने इस्लाम दुश्मनी पर यहीं क़सम खाई थी। अल्लाह ने उनका ग़ुरुर ख़ाक में मिला दिया और इस्लाम को अज़मत अज़ा फ़र्माई। क़ुरैश ने क़समें खाई थीं कि वो रसूले करीम (ﷺ) को आपके पूरे ख़ानदान बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब को मक्का से निकालकर ही दम लेंगे आख़िर वो दिन आया कि वो खुद ही नेस्त व नाबूद हो गये

[أطرافه في : ٤٨٣٥، ٥٠٣٤، ٥٠٤٧]

[٧٥٤٠]

٤٢٨٢ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سَعْدَانُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي حَفْصَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّهُ قَالَ زَمَنَ الْفَتْحَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي نَزِلُ غَدًا؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((وَهَلْ تَرَكَ لَنَا عَقِيلٌ مِنْ مَنَزِلٍ؟))

[راجع : ١٥٨٨]

٤٢٨٣ - ثُمَّ قَالَ : ((لَا يَوِثُ الْمُؤْمِنُ الْكَافِرَ، وَلَا يَوِثُ الْكَافِرُ الْمُؤْمِنَ)). قِيلَ لِلزُّهْرِيِّ وَمَنْ وَرِثَ أَبَا طَالِبٍ؟ قَالَ : وَرِثَهُ عَقِيلٌ، وَطَالِبٌ. قَالَ مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ : إِنِّي نَزِلُ غَدًا فِي حَجَّتِهِ؟ وَلَمْ يَقُلْ يُونُسُ حَجَّتِهِ وَلَا زَمَنَ الْفَتْحِ.

٤٢٨٤ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَنْزِلُنَا إِنْ شَاءَ اللَّهُ إِذَا فَتَحَ اللَّهُ الْخَيْفَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)). [راجع : ١٥٨٩]

और इस्लाम का झण्डा मक्का पर लहराया। सच है, जाअल्हक्कु व जहकल्बातिलु इन्नल्बातिल कान ज़हुका (बनी इस्राईल : 81) मुसलमान अगर आज भी सच्चे मुसलमान बन जाएँ तो अल्लाह की मदद उनके लिये ज़रूरी है।

4285. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलमाने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब हुनैन का इरादा किया तो फ़र्माया, इश्शाअल्लाह कल हमारा क़याम ख़ैफ़े बनी किनाना होगा जहाँ कुरैश ने कुफ़्र के लिये क़सम खाई थी। (राजेअ : 1589)

٤٢٨٥ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ جِئْنَا أَرَادَ حُنَيْنًا : ((مَنْ لَنَا غَدًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِحَنْفٍ)) نَبِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ).

[راجع : ١٥٨٩]

तशरीह : यहाँ आप इसलिये उतरे कि अल्लाह का एहसान ज़ाहिर हो कि एक दिन तो वो था कि बन्ू हाशिम कुरैश के काफ़िरों से ऐसे मग़लूब और मरज़ूब थे या एक दिन अल्लाह ने वो दिन दिखलाया कि सारे कुरैश के काफ़िर मग़लूब हो गये और अल्लाह ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया। इससे अहमतरिन तारीख़ी मक़ामात को याद रखना भी बाबित हुआ।

4286. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के मौक़े पर जब नबी करीम (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए तो सरे मुबारक पर मिग़फ़र थी। आपने उसे उतारा ही था कि एक सहाबी ने आकर अज़्र किया कि इब्ने ख़तल का'बा के पर्दे से चिमटा हुआ है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे (वहीं) क़त्ल कर दो। इमाम (रह.) ने कहा जैसा कि हम समझते हैं आगे अल्लाह जाने, नबी करीम (ﷺ) उस दिन एहराम बाँधे हुए नहीं थे।

٤٢٨٦ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ لَقَاءَ: ابْنِ خَطْلٍ مَعْلُومٍ بِاسْمِهِ الْكُفْرَةِ، فَقَالَ: ((اقْتُلْ)) قَالَ مَالِكٌ: وَلَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ لِيَمَّا نَزَى وَاللَّهُ أَعْلَمُ يَوْمَئِذٍ مَخْرَمًا. [راجع : ١٨٤٦]

(राजेअ : 1846)

तशरीह : इब्ने ख़तल इस्लाम से फिरकर मुर्तद हो गया था। एक आदमी का क़ातिल भी था और रसूले करीम (ﷺ) की हिज्ज के गीत गाया करता था। चुनाँचे उस मौक़े पर वो का'बा के पर्दे से बाहर निकाला गया और ज़मज़म और मुकामे इब्राहीम के बीच उसकी गर्दन मारी गई। आँहज़रत (ﷺ) ने आइन्दा के लिये इस तरह करने से मना कर दिया कि अब कुरैश का आदमी इस तरह बेबस करके न मारा जाए। मिग़फ़र लोहे का कनटोप जिसे जंग में सर की हिफ़ाज़त के लिये ओढ़ लिया जाता था।

4287. हमसे स़दक्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको सुलैमान बिन ड़ययना ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी नुजैह ने, उन्हें मुजाहिद ने, उन्हें अबू मअमर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के दिन जब नबी करीम (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए तो बैतुल्लाह के चारों तरफ़

٤٢٨٧ - حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ، وَحَوْلَ النَّبِيِّ

तीन सौ साठ बुत थे। हज़रे अकरम (ﷺ) एक छड़ी से जो दस्ते मुबारक में थी, मारते जाते थे और इस आयत की तिलावत करते जाते कि, हक़ क़ायम हो गया और बातिल मग़लूब हो गया, हक़ क़ायम हो गया और बातिल से न शुरू में कुछ हो सका है न आइन्दा कुछ हो सकता है। (राजेज़: 2478)

سُتِرْنَ وَلَلْغَمَانَةُ نُصِيبُ، فَجَعَلَ يَطْمَعُهَا
يُعْرِدُ فِي يَدِهِ وَيَقُولُ : ((جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ
الْبَاطِلُ، جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِيهِ الْبَاطِلُ وَمَا
يُعِيدُ)). [راجع: ٢٤٧٨]

तशरीह:

पहली आयत सूरह बनी इस्राईल में और दूसरी आयत सूरह सबा में है। हक़ से मुराद देने इस्लाम और बातिल से बुत और शैतान मुराद है। बातिल का आगाज़ और अंजाम सब ख़राब ही ख़राब है।

4288. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुस स़मद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे इकिरमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मक्का आए तो आप बैतुल्लाह में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हुए जब तक उसमें बुत मौजूद रहे बल्कि आपने हुक्म दिया और बुतों को बाहर निकाल दिया गया। उन्हीं में एक तख़वीर हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिमस्सलाम) की भी थी और उनके हाथों में (पांसे) के तीर थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह इन मुश्रिकीन का नास करे, उन्हें ख़ूब मा'लूम था कि उन बुजुर्गों ने कभी पांसा नहीं फेंका। फिर आप बैतुल्लाह में दाख़िल हुए और अंदर चारों तरफ़ तक्बीर कही फिर बाहर तशरीफ़ लाए, आपने अंदर नमाज़ नहीं पढ़ी थी। अब्दुस स़मद के साथ इस हदीष को मअमर ने भी अय्यूब से रिवायत किया और वुहैब बिन ख़ालिद ने यूँ कहा, हमसे अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने इकिरमा से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से। (राजेज़: 398)

٤٢٨٨ - حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عَبْدُ
الصَّمَدِ حَدَّثَنِي أَبِي حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ
عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
لَمَّا قَدِمَ مَكَّةَ أَتَى أَنْ يَدْخُلَ الْبَيْتَ، وَفِيهِ
الْأَلِهَةُ، فَأَمَرَ بِهَا فَأُخْرِجَتْ فَأُخْرِجَ صُورَةُ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ فِي أَيْدِيهِمَا مِنَ
الْأَزْلَامِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قَاتَلَهُمُ اللَّهُ،
لَقَدْ غَلَبُوا مَا انْسَضَمَا بِهَا قَطُّ)) ثُمَّ
دَخَلَ الْبَيْتَ فَكَبَّرَ فِي نَوَاحِي الْبَيْتِ
وَخَرَجَ وَلَمْ يُصَلِّ فِيهِ. ثَابِتَةُ مَعْمَرٍ عَنْ
أَيُّوبَ وَقَالَ وَهَيْبٌ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ
عِكْرِمَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٣٩٨]

बाब 50 : नबी करीम (ﷺ) का शहर के

बालाई जानिब से मक्का में दाख़िल होना

4289. और लैष ने बयान किया कि मुझसे यूनस ने बयान किया, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी सवारी पर फ़तहे-मक्का के दिन मक्का के बालाई इलाक़ा की तरफ़ से शहर में दाख़िल हुए। उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) आप (ﷺ) की सवारी पर आपके पीछे

٥٠ - باب دُخُولِ النَّبِيِّ ﷺ

مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ

٤٢٨٩ - وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي يُونُسُ
أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَقْبَلَ يَوْمَ
الْفَتْحِ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ عَلَى رَاحِلَتِهِ مُرِدِّفًا
أَسْمَةَ بْنَ زَيْدٍ، وَمَعَهُ بِلَالٌ وَمَعَهُ عُثْمَانُ

बैठे हुए थे। आपके साथ बिलाल (रज़ि.) और का'बा के हाजिब इम्रान बिन तलहा (रज़ि.) भी थे। आखिर अपने कैंट को आपने मस्जिद (के करीब बाहर) बिठाया और बैतुल्लाह की चाबी लाने का हुक्म दिया फिर आप बैतुल्लाह के अंदर तशरीफ़ ले गये। आपके साथ उसामा बिन ज़ैद, बिलाल और इम्रान बिन तलहा (रज़ि.) भी थे। आप अंदर काफी देर तक ठहरे, जब बाहर तशरीफ़ लाए तो लोग जल्दी से आगे बढ़े। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) सबसे पहले अंदर जाने वालों में थे। उन्होंने बैतुल्लाह के दरवाज़े के पीछे हज़रत बिलाल (रज़ि.) को खड़े हुए देखा और उनसे पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) ने कहाँ नमाज़ पढ़ी थी। उन्होंने वो जगह बतलाई जहाँ आपने नमाज़ पढ़ी थी। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि ये पूछना भूल गया कि आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ में कितनी रक़अतें पढ़ी थीं। (राजेअ: 397)

بُنْ طَلْحَةَ مِنَ الْحَجَبَةِ حَتَّىٰ آتَاخَ لِي الْمَسْجِدِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَأْتِيَ بِمِفْتَاحِ الْبَيْتِ، فَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ أَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ وَبِلَالٌ وَغُثْمَانُ بْنُ طَلْحَةَ، فَمَكَثَ فِيهِ نَهَارًا طَوِيلًا ثُمَّ خَرَجَ فَاسْتَبَقَ النَّاسُ فَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ أَوَّلَ مَنْ دَخَلَ، فَوَجَدَ بِلَالًا وَرَاءَ الْبَابِ قَائِمًا، فَسَأَلَهُ أَيْنَ صَلَّي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ فَأَشَارَ لَهُ إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي صَلَّي فِيهِ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَسَيِّئٌ أَنْ أَسْأَلَ كَمْ صَلَّي مِنْ مَسْجِدَةٍ.

[راجع: ٣٩٧]

इब्ने अब्बास (रज़ि.) की रिवायत में है कि आपने का'बा के अंदर नमाज़ नहीं पढ़ी लेकिन बिलाल (रज़ि.) की रिवायत में नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र है और यही सहीह है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) बाहर हों उनको आपके नमाज़ पढ़ने का इल्म न हुआ हो, आपने फ़रागत के बाद का'बा की चाबी फिर इम्रान (रज़ि.) के हवाले कर दी और फ़र्माया कि ये हमेशा तेरे ही ख़ानदान में रहेगी। ये मैंने तुझको नहीं दी बल्कि अल्लाह तआला ने दी है और जो कोई ज़ालिम होगा वो ये कुँजी तुझसे छीनेगा। आज तक ये चाबी उसी ख़ानदाने शैबी के अंदर महफूज़ है और का'बा शरीफ़ जब भी खोला जाता है, वही लोग आकर खोलते हैं। सदक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)। सन् 1952 के हज्ज में मैं का'बा शरीफ़ में दाख़िल हुआ था और दरवाज़ा पर शैबी ख़ानदान के बुजुर्ग को मैंने देखा था जो बहुत ही सफ़ेद रीश बुजुर्ग थे, ग़फ़रल्लाहु लहू।

4290. हमसे हैषम बिन ख़ारिजा ने बयान किया, कहा हमसे हफ़्स बिन मैसरह ने बयान किया, उनसे हिशाम इब्ने इवार्ने, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे-मक्का के दिन मक्का के बालाई इलाक़े कदा से शहर में दाख़िल हुए थे। इस रिवायत की मुताबअत अबू उसामा और वुहैब ने कदा के ज़िक्र के साथ की है।

(राजेअ: 1577)

٤٢٩٠- حَدَّثَنَا الْهَيْثَمُ بْنُ خَارِجَةَ حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ مِنْ كَدَاءِ الْيَمَنِ بِأَعْلَى مَكَّةَ. تَابَعَهُ أَبُو أَسَامَةَ وَوُهَيْبٌ لِي

كَدَاءِ. [راجع: ١٥٧٧]

तशरीह: कदा बिल मद और कदा बिल क़सर दोनों मुक़ामों के नाम हैं। पहला मुक़ाम मक्का के बालाई जानिब में है और दूसरा नशीबी जानिब में और ये रिवायत उन सहीह रिवायतों के खिलाफ़ है जिनमें है कि आँहज़रत (ﷺ) कदा या'नी बालाई जानिब से दाख़िल हुए और ख़ालिद (रज़ि.) को कदा या'नी नशीबी जानिब से दाख़िल होने का हुक्म दिया। जब ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) सिपाहगिराँ लिये हुए मक्का में दाख़िल हुए तो मुश्रिकों ने ज़रा सा मुकाबला किया। कुप्फ़ार को सप्रवान बिन इमय्या और सुहैल बिन अमर ने इकट्ठा किया था। मुसलमानों में से दो शख़्स शहीद हुए और काफ़िर बारह तरह मारे गये, बाक़ी सब भाग निकले, ये पहले भी मज़कूर हो चुका है।

4291. हमसे अबू दबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे-मक्का के दिन मक्का के बालाई इलाक़ा कदा की तरफ़ से दाख़िल हुए थे। (राजेअ: 1577)

बाब 51 : फ़तहे-मक्का के दिन क़यामे नबवी का बयान

4292. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने कि उम्मे हानी (रज़ि.) के सिवा हमें किसी ने ये ख़बर नहीं दी कि नबी करीम (ﷺ) ने चाश्त की नमाज़ पढ़ी, उन्हीं ने कहा कि जब मक्का फ़तह हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनके घर गुस्ल किया और आठ रक़अत नमाज़ पढ़ी। उन्हीं ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को मैंने इतनी हल्की नमाज़ पढ़ते कभी नहीं देखा था। फिर भी उसमें आप रुक़ूअ और सज्दा पूरी तरह करते थे। (राजेअ: 1103)

तशरीह :

हल्की पढ़ने का मतलब ये है कि उस नमाज़ में आपने क़िरात बहुत मुख़्तसर की थी हदी़स से मज़सूद यहाँ ये प्राबित करना है कि फ़तहे-मक्का के दिन आँहज़रत (ﷺ) का क़याम उम्मे हानी (रज़ि.) के घर में था।

हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) के यहाँ आपने जो नमाज़ अदा की उस बाबत हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह) अपनी मशहूर किताब ज़ादुल मआद में लिखते हैं, मुम्म दाख़ल रसूलुल्लाहि (ﷺ) दार उम्मि हानी बिनतु अबी तालिब फ़ातसल व सल्ला प्रमान रक़आतिन फ़ी बैतिहा व कान जुहन फ़जन्नहा मन ज़न्नहा सलातुज्जुहा व इन्नमा हाज़िही सलातुल्फ़तिह व कान उम्माउल्इस्लामि इज़ा फ़तह हसनन औ बलदन सल्लू अक्बीबल्फ़तिह हाज़िहिस्सलातु इज़्तिदाउम्बिरसूलिल्लाहि (ﷺ) व फ़िल्किस्सति मा यदुल्लु अला अन्नहा बिसबबिल्फ़तिह शकरल्लाहु अलैहि फ़इन्न उम्म हानी कालत मा रायतुह सल्लाहा क़ब्लहा व ला बअदहा (ज़ादुल्मआद) या'नी फिर रसूले करीम (ﷺ) उम्मे हानी (रज़ि.) के घर में दाख़िल हुए और आपने वहाँ गुस्ल फ़र्माकर आठ रक़आत नमाज़ उनके घर में अदा की और ये जुहा का वक़्त था। पस जिसने गुमान किया उसने कहा कि ये जुहा की नमाज़ थी हालाँकि ये फ़तह के शुक्राने की नमाज़ थी। बाद में इस्लामी अमीरों का भी यही क़ायदा रहा कि सुन्नते नबवी पर अमल करते हुए जब भी कोई शहर या क़िला फ़तह करते इस नमाज़ को अदा करते थे और किस्से में ऐसी दलील भी मौजूद है जो उसे नमाज़े शुक्राना ही प्राबित करती है। वो हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) का ये क़ौल है कि मैंने नहीं देखा कि आपने कभी पहले या पीछे इस नमाज़ को पढ़ा हो। इससे भी प्राबित हुआ ये फ़तह की खुशी में शुक्राना की नमाज़ थी।

बाब 52 :

4293. मुइज़से मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे

٤٢٩١ - حَدَّثَنَا عُثَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِي، دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ غَامَ الْفَتْحِ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ مِنْ كَدَاءٍ. [راجع: ١٥٧٧]

٥١ - بَابُ مَنْزِلِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْفَتْحِ

٤٢٩٢ - حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو عَنْ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، قَالَ: مَا أَخْبَرْنَا أَحَدًا أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي الصُّحَى غَيْرَ أَمْ هَانِيٍّ، لِأَنَّهَا ذَكَرَتْ أَنَّهُ يَوْمَ فَتَحَ مَكَّةَ اغْتَسَلَ فِي بَيْتِهَا، ثُمَّ صَلَّى ثَمَانِيَّ رَكَعَاتٍ، قَالَتْ: لَمْ أَرَهُ صَلَّيْ صَلَاةً أَحْفَ مِنْهَا غَيْرَ أَنَّهُ يُنِمُّ الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ. [راجع: ١١٠٣]

٥٢ - بَاب

٤٢٩٣ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي

मंसूर ने, उनसे अबुज्जुहा ने, उनसे मसरूक ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अपने रूकूअ और सज्दा में ये दुआ पढ़ते थे (दुआ ये है)

सुब्हान कल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिका अल्लाहुम्मः फ़िली (राजेअ: 794)

الطُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ غَابِثَةَ رَضِيَ
الله عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي
رُكُوعِهِ وَمُسْجُودِهِ: «سُبْحَانَكَ اللهُمَّ رَبَّنَا
وَبِحَمْدِكَ اللهُمَّ اغْفِرْ لِي».

[راجع: 794]

तशरीह: या'नी तूपाक है ऐ अल्लाह! हमारे मालिक तेरी ता'रीफ़ करते हैं हम, या अल्लाह मुझको बख़्शा दे। हदीष से ये निकला कि रूकूअ या सज्दे में दुआ करना मना नहीं है। इस हदीष का ता'ल्लुक बाब से यूँ है कि इस हदीष के दूसरे तरीक में यूँ मज़कूर है कि जब आप पर सूरह इजा जाआ नस्रुल्लाहि वल फ़तह नाज़िल हुई या'नी फ़तहे-मक्का के बाद तो आप हर नमाज़ में रूकूअ और सज्दे में यूँ ही फ़रमाने लगे। इस सूरत में अल्लाह ने ये हुक्म दिया फ़सबिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग़फ़िहु (अन नस्र: 3) पस सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्मः फ़िली इसी की ता'लीम है। आँहज़रत (ﷺ) का आखिरी अमल यही था कि आप रूकूअ और सज्दे में बक़रत उसको पढ़ा करते थे। लिहाज़ा और दुआओं पर इसको फ़ौक़ियत हासिल है। ज़िम्नी तौर पर उसमें भी फ़तहे मक्का का ज़िक्र है और हदीष और बाब में यही मुताबकत है।

4294. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उमर (रज़ि.) मुझे अपनी मज्लिस में उस वक़्त भी बुला लेते जब वहाँ बद्र की जंग में शरीक होने वाले बुजुर्ग सहाबा (रज़ि.) बैठे होते। उस पर कुछ लोग कहने लगे कि उस जवान को आप हमारी मज्लिस में क्यों बुलाते हैं? इसके जैसे तो हमारे बच्चे भी हैं। इस पर उमर (रज़ि.) ने कहा वो तो उन लोगों में से हैं जिनका इल्म व फ़ज़ल तुम जानते हो। उन्होंने बयान किया कि फिर उन बुजुर्ग सहाबियों को एक दिन उमर (रज़ि.) ने बुलाया और मुझे भी बुलाया। बयान किया कि मैं समझता था कि मुझे उस दिन आपने इसलिये बुलाया था ताकि आप मेरा इल्म बता सकें। फिर आपने दरयाफ़्त किया इजा जाआ नस्रुल्लाहि वल फ़तह व रअयतन्नासा यदख़ुलूना, ख़त्म सूरत तक, के बारे में तुम लोगों का क्या ख़याल है? किसी ने कहा कि हमें इस आयत में हुक्म दिया गया है कि हम अल्लाह की हम्दो-प्रना बयान करें और इससे इस्तिफ़ार करें कि उसने हमारी मदद की और हमें फ़तह इनायत की। कुछ ने कहा कि हमें उसके बारे में कुछ मा'लूम नहीं है और कुछ ने कोई जवाब नहीं दिया फिर उन्होंने मुझसे दरयाफ़्त किया, इब्ने अब्बास! क्या तुम्हारा भी यही ख़याल है? मैंने जवाब दिया कि नहीं, पूछा, फिर तुम क्या कहते हो? मैंने कहा कि इसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात की तरफ़ इशारा है कि जब

٤٢٩٤ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو
عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ،
عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ:
كَانَ عُمَرُ يُدْخِلُنِي مَعَ اشْيَاحِ بَدْرٍ، فَقَالَ
بَعْضُهُمْ، لِمَ تُدْخِلُ هَذَا الْفَتَى مَعَنَا وَلَنَا
أَبْنَاءُ مِثْلِهِ؟ فَقَالَ إِنَّهُ مِمَّنْ قَدْ عَلِمْتُمْ،
قَالَ: فَدَعَانَهُ ذَاتَ يَوْمٍ وَدَعَانِي مَعَهُمْ
قَالَ: وَمَا أَرَيْتُهُ دَعَانِي يَوْمَئِذٍ إِلَّا لِيُرِيَهُمْ
مَنِي، فَقَالَ مَا تَقُولُونَ: لِي إِذَا جَاءَ
نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ وَرَأَيْتَ النَّاسَ
يُدْخِلُونَ؟ حَتَّى خَتَمَ السُّورَةَ فَقَالَ
بَعْضُهُمْ: أَمَرْنَا أَنْ نَحْمَدَ اللهَ وَنَسْتَغْفِرَهُ،
إِذَا نَصَرْنَا وَلَفَّحَ عَلَيْنَا وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَا
نَدْرِي وَلَمْ يَقُلْ بَعْضُهُمْ شَيْئًا فَقَالَ لِي: يَا
ابْنَ عَبَّاسٍ أَكْذَاكَ تَقُولُ؟ قُلْتُ: لَا، فَمَا
تَقُولُ؟ قُلْتُ: هُوَ أَجَلٌ رَمَسَ اللهُ

अल्लाह तआला की मदद और फ़तह हासिल हो गई या'नी फ़तहे-मक्का तो आपकी वफ़ात की निशानी है। इसलिये आप अपने रब की हम्दो-प्रना और तस्बीह करें और उसकी मफ़िरत तलब करें कि वो तौबा कुबूल करने वाला है। उमर (रज़ि.) ने कहा कि जो कुछ तुमने कहा वही मैं भी समझता हूँ।

(राजेअ: 3627)

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَغْلَمَهُ اللَّهُ لَهُ إِذَا
جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ فَفُتِحَ مَكَّةَ فَذَاكَ
غَلَامَةٌ أَجْلَبْتَ بِهَا لَسَعَ بِحَمْدِ رَبِّكَ
وَأَسْتَغْفِرُكَ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا قَالَ عُمَرُ : مَا
ابْنُ غُلَمٍ مِنْهَا إِلَّا مَا نَعْلَمُ.

[راجع: 3627]

तशरीह: हज़रत उमर (रज़ि.) ने दीन की एक बात पूछकर इब्ने अब्बास (रज़ि.) की फ़ज़ीलत बूढ़ों पर ज़ाहिर कर दी जैसे अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को इल्म देकर बड़ी-बड़ी उम्र वाले फ़रिश्तों पर उनकी फ़ज़ीलत प्राबित कर दी और उन फ़रिश्तों से फ़र्माया कि आदम को सच्चा करो। हदीष में वफ़ाते नबवी पर इशारा है। उसका यहाँ दर्ज करने का यही मक़सद है। सूरह शरीफ़ा में इशारा था कि हर कमाले रा ज़वाले। हर ज़वाले रा कमाले। इस हदीष के ज़ैल मौलाना वहीदुज़्जमाँ की तफ़रीर दिल को छूने वाली ये है कि उमर (रज़ि.) का अमल उस पर था बुजुर्गी बअज़क़ल अस्त न ब साल। इब्ने अब्बास (रज़ि.) उस वक़्त के बड़े आलिम थे और आलिम चाहे जवान हो मगर इल्म की फ़ज़ीलत से वो बूढ़ों के बराबर बल्कि उनसे भी अफ़ज़ल समझा जाता है। हमारे पेशवा खुलफ़-ए-राशिदीन और दूसरे शाहाने इस्लाम ने इल्म की ऐसी क़द्रदानी की है जब मुसलमान इल्म हासिल करने में कोशिश करते थे। मगर अफ़सोस कि हमारे ज़माने के मुसलमान बादशाह ऐसे नालायक हैं जिनके एक भी आलिम, फ़ाज़िल या हकीम, दार्शनिक नहीं होता न उनको दीनी इलूम की क़द्र है न दुनियावी इलूम की बल्कि सच पूछा तो इल्म व लियाक़त के दुश्मन हैं। उनके मुल्क में कोई शाज़ो नादिर दीन का आलिम पैदा हो गया तो उसको सताने, बेइज़्जत करने और निकालने के फ़ि़क़्र में रहते हैं। ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि अगर यही लैल व नहार (रात व दिन) रहे तो ऐसे बादशाहों की हुकूमत को भी चिरागे सेहरी समझना चाहिये। (वहीदी) ये पुरानी बातें हैं अब तो दौरे सरमायादारी गया। दिखाकर तमाशा मदारी गया।

4295. हमसे सईद बिन शुरहबील ने बयान किया, कहा हमसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे मक्बरी ने कि अबू शुरह अदवी (रज़ि.) ने (मदीना के अमीर) अमर बिन सईद से कहा जबकि अमर बिन सईद (अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि. के ख़िलाफ़) मक्का की तरफ़ लश्कर भेज रहे थे कि ऐ अमीर! मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं आपसे एक हदीष बयान करूँ जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के दूसरे दिन इश्राद फ़र्माई थी। उस हदीष को मेरे दोनों कानों ने सुना, मेरे क़ल्ब ने उसको याद रखा और जब हज़ूरे अकरम (ﷺ) इश्राद फ़र्मा रहे थे तो मैं अपनी आँखों से आप (ﷺ) को देख रहा था। हज़ूरे अकरम (ﷺ) ने पहले अल्लाह की हम्दो-प्रना बयान की और फिर फ़र्माया, बिला शुब्हा मक्का को अल्लाह तआला ने हर्मत वाला शहर करार दिया है, किसी इंसान ने उसे

٤٢٩٥ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ شُرَيْبٍ حَدَّثَنَا
الْأَيْبِيُّ عَنْ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِي شُرَيْبٍ
الْقُدَوِيِّ أَنَّهُ قَالَ لَقِيتُ بَنِي سَعِيدٍ وَهُوَ
يَبْعَثُ الْهَوَثَ إِلَى مَكَّةَ: أَتَذَن لِي أَتِيهَا
الْأَمِيرُ أَحَدُتْكَ قَوْلًا قَامَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْفَتْحُ مِنْ يَوْمِ الْفَتْحِ
مَكَّةَ سَمِعْتُهُ أَذْنًايَ وَوَعَاهُ قَلْبِي وَابْتَصَرْتُهُ
عَيْنَايَ حِينَ تَكَلَّمَ بِهِ، إِنَّهُ حَمْدُ اللَّهِ وَأَنَّى
عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ مَكَّةَ حَرَمَهَا اللَّهُ وَلَمْ
يُحَرِّمْهَا النَّاسَ، لَا يَجِلُّ لِأَمْرِيءٍ يُؤْمِنُ

अपनी तरफ से हर्मत वाला करार नहीं दिया। इसलिये किसी शस्त्र के लिये भी जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो, जाइज नहीं कि इसमें किसी का खून बहाये और न कोई इस सरज़मीन का कोई पेड़ काटे और अगर कोई शस्त्र रसूलुल्लाह (ﷺ) के (फतहे-मक्का के मौक़े पर) जंग से अपने लिये भी रुख़सत निकाले तो तुम उससे कह देना कि अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अपने रसूल को (थोड़ी देर के लिये) उसकी इजाज़त दी थी। तुम्हारे लिये बिल्कुल इजाज़त नहीं है और मुझे भी इसकी इजाज़त दिन के थोड़े से हिस्से के लिये मिली थी और आज फिर इसकी हर्मत उसी तरह लौट आई है जिस तरह कल ये शहर हर्मत वाला था। पस जो लोग यहाँ मौजूद हैं वो (इनको मेरा कलाम) पहुँचा दें जो मौजूद नहीं। अबू शुरैह से पूछा गया कि अम्र बिन सईद ने आपको फिर जवाब किया दिया था? तो उन्होंने बताया कि उसने कहा कि मैं ये मसाइल तुमसे ज़्यादा जानता हूँ, हरम किसी गुनाहगार को पनाह नहीं देता, न किसी का खून कर के भागने वाले को पनाह देता है, मुप्सिद को भी पनाह नहीं देता। (राजेअ: 104)

तशरीह: हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने यज़ीद की बेअत नहीं की थी। इसलिये यज़ीद ने उनको ज़ेर (अपने अधीन) करने के लिये गवर्नर अम्र बिन सईद को मामूर किया जिस पर अबू शुरैह ने उनको ये हदीष सुनाई और मक्का पर हमलावर होने से रोका मगर अम्र बिन सईद ताक़त के नशे में चूर था। उसने हदीषे नबवी को नहीं सुना और मक्का पर चढ़ाई कर दी और साथ ही ये बहाने बनाए जो यहाँ मज़कूर हैं। इस तरह तारीख़ में हमेशा के लिये बदनामी को इख़्तियार किया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के खूने नाहक़ का बोझ अपनी गर्दन पर रखा और हदीष में फ़तहे-मक्का व हर्मेत मक्का पर इशारा है, यही मज़सूद बाब है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) असदी कुरैशी हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के नवासे हैं। मदीना में मुहाजिरीन में ये पहले बच्चे हैं जो सन् 1 हिजरी में पैदा हुए। मुहतरम नाना हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उनके कानों में अज़ान कही, उनकी वालिदा हज़रत अस्मा बिनते अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) हैं। मुक़ामे कुबा में उनको जनाब आँहज़रत (ﷺ) ने छुहारा चबाकर अपने लुआबे दहन के साथ उनके मुँह में डाला और बरक़त की दुआ की। बहुत ही बारूअब साफ़ चेहरे वाले मोटे ताज़े बड़े क़वी बहादुर थे। उनकी दादी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की फूफी थीं। उनकी खाला हज़रत आइशा (रज़ि.) थीं। आठ साल की उम्र में हज़ूर (ﷺ) से बेअत की और उन्होंने आठ हज्ज किये और हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उनको मक्का में मंगल के दिन 17 जमादिष्शानी सन् 73 हिजरी को शहीद कर डाला। ऐसी ही ज़ालिमाना हरक़तों से अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार होकर हज्जाज बिन यूसुफ़ बड़ी ज़िल्लत की मौत मरा। उसने जिस बुजुर्ग को आखिर में जुलम से क़त्ल किया, वो हज़रत सईद बिन जुबैर (रज़ि.) हैं। जब भी हज्जाज बिन यूसुफ़ सोता, हज़रत सईद ख़्वाब में आकर उसका पाँव पकड़कर हिला देते और अपने खूने नाहक़ की याद दिलाते। इज़ फ़ी ज़ालिक ल इब्रतल् लि क़लिल् अब्मर (आले इमरान: 13)

بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ إِنْ نَسِيتُكَ ذَمًّا وَلَا يَغْضِبُهَا شَجَرًا، فَإِنْ أَحَدٌ تَوَخَّصَ لِقَتَالِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهَا، فَقُولُوا لَهُ: إِنَّ اللَّهَ إِذِنْ لِرَسُولِهِ وَلَمْ يَأْذِنْ لَكُمْ، وَإِنَّمَا إِذِنْ لِي فِيهَا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، وَلَقَدْ عَادَتْ حُرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالْأَمْسِ، وَلَيَبْلُغُ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ)) فَقِيلَ لِأَبِي شُرَيْحٍ مَاذَا قَالَ لَكَ عَمْرُو؟ قَالَ: قَالَ أَنَا أَغْلَمُ بِذَلِكَ مِنْكَ يَا أَبَا شُرَيْحٍ إِنَّ الْحَرَمَ لَا يُعِيدُ عَاصِيًا وَلَا قَارًا بِدَمٍ وَلَا قَارًا بِخَوْبَةٍ.

[راجع: 104]

4296. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ

किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे अत्ता बिन अबी रिबाह ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़तहे-मक्का के मौक़े पर मक्का मुकर्रमा में फ़र्माया था कि अल्लाह और उसके रसूल ने शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त मुत्तलक़ ह़राम करार दे दी है। (राजेअ : 2236)

يَزِيدُ بْنُ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ غَطَاءِ بْنِ أَبِي رَاحٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ حَرَّمَ بَيْعَ الْخَمْرِ». [راجع: ٢٢٣٦]

तशरीह : या'नी अल्लाह ने जैसे शराब पीना ह़राम किया है वैसे ही शराब की तिजारात भी ह़राम कर दी है। जो लोग मुसलमान कहलाने के बावजूद ये घंघा करते हैं वो इन्द्ल्लाह सख़्ततरीन मुज़्रिम हैं।

बाब 53 : फ़तहे-मक्का के ज़माने में नबी करीम (ﷺ) का मक्का में क़याम करना

٥٣- باب مقام النبي ﷺ بمكة زمن الفتح

4297. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया (दूसरी सनद) और हमसे कुबैसा बिन उक्ब़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी इस्हाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के साथ (मक्का में) दस दिन ठहरे थे और उस मुह़त में हम नमाज़ क़स्र करते थे। (राजेअ : 1081)

٤٢٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ح. - وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي اسحاق، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : أَقَامَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَشْرًا نَقَصُ الصَّلَاةِ. [راجع: ١٠٨١]

यहाँ रावी ने सिर्फ़ क़यामे मक्का के दिन शुमार किये वरना सहीह यही है कि आपने 19 दिन क़याम किया था और मिना व अरफ़ात के दिन छोड़ दिये हैं।

4298. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको आसिम ने ख़बर दी, उन्हें इकिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मक्का में उन्नीस दिन क़याम फ़र्माया था और उस मुह़त में सिर्फ़ नमाज़ दो रक़अतें (क़स्र) पढ़ते थे। (राजेअ : 1080)

٤٢٩٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ : أَخْبَرَنَا غَاصِمٌ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ بِمَكَّةَ ثَمِنَةَ عَشَرَ يَوْمًا يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ. [راجع: ١٠٨٠]

तशरीह : रिवायत में साफ़ मज़कूर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने बहालते सफ़र उन्नीस दिन के क़याम में नमाज़े क़स्र अदा की थी, अहले हदीष का यही मसलक है। फ़तहे-मक्का की तफ़सीलात लिखते हुए अल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह.) फ़र्माते हैं कि फ़तहे-मक्का के बाद रसूले करीम (ﷺ) ने अमने-आम का ऐलान फ़र्मा दिया मगर नौ आदमी ऐसे थे जिनके क़त्ल का हुक्म सादिर फ़र्माया। अगरचे वो का'बा के पदों में छुपे हुए पाए जाएँ। वो ये थे, अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सुरह, इकिमा बिन अबी जहल, अब्दुल उज्जा बिन ख़तल, हारिष बिन नुफ़ैल, मुक़ैस बिन साबा, हिबार बिन अस्वद और इब्ने ख़तल की दौ लौण्डियाँ जो रसूले करीम (ﷺ) की हिज्व के गीत गाया करती थीं और सारा नामी एक (कुछ के नज़दीक) बनी अब्दुल मुत्तलिब की लौण्डी। क़यामे अमन के लिये उन फ़सादियों का ख़ात्मा ज़रूरी थी। जब उन लोगों ने ख़बर सुनी तो इकिमा बिन अबी जहल सुनते ही फ़रार हो गया मगर उसकी औरत ने उसके लिये अमन त़लब किया और आप (ﷺ) ने अमन दे दिया, वो मुसलमान हो गया, बाद में उनका इस्लाम बहुत बेहतर साबित हुआ। जंगे यरमूक में सन 13 हिजरी में बउम्र 62 साल शहीद

हुए। बाकी उनमें सिर्फ इब्ने खतल, हारिष, मुकैस और हारिष की वो दो लौण्डियाँ क़त्ल की गईं, बाकी इस्लाम कुबूल करके बच गये। उन ही अय्याम फ़तहे-मक्का में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने उज़्ज़ा बुत का ख़ात्मा किया था जिसमें एक औरत (चुड़ैल किस्म की) निकली और उसे भी क़त्ल किया। उज़्ज़ा कुरैश और बनू किनाना का सबसे बड़ा बुत था। हज़रत अमर बिन आस (रज़ि.) ने सुवाअ नामी बुत को ख़त्म किया और सअद बिन ज़ैद अशहली (रज़ि.) के हाथों मनात बुत को ख़त्म कराया गया। उसमें से भी एक चुड़ैल निकली थी जो क़त्ल कर दी गई। (मुख्तसर ज़ादुल मअ़ाद)

4299. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबू शिहाब ने बयान किया, उनसे आसिम ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ सफ़र में (फ़तहे-मक्का के बाद) उन्नीस दिन तक मुक़ीम रहे और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि हम (सफ़र में) उन्नीस दिन तक तो नमाज़े क़र्र पढ़ते थे, लेकिन जब उससे ज़्यादा मुहत्त गुज़र जाती तो फिर पूरी नमाज़ पढ़ते थे। (राजेज़: 1080)

4299 -- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شَيْهَابٍ عَنْ غَاثِمِ بْنِ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَلَمْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ بَنَعَ عَشْرَةَ، نَقَصُرُ الصَّلَاةَ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : وَنَحْنُ نَقْصُرُ مَا بَيْنَنَا وَبَيْنَ بَنَعَ عَشْرَةَ فَإِذَا رَدْنَا أَلَمْنَا.

[راجع: 1080]

तशरीह: इसी हदीष की बिना पर सफ़र में नमाज़ उन्नीस दिन तक क़र्र की जा सकती है, ये आखिरी मुहत्त है। इससे ज़्यादा क़याम का इरादा हो तो पूरी नमाज़ पढ़नी चाहिये। जमाअते अहले हदीष का अमल यही है।

बाब 54 :

باب 54

4300. और लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको अब्दुल्लाह बिन अलबा बिन सईद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के दिन उनके चेहरे पर (शफ़क़त की राह से) हाथ फेरा था। (दीगर मक़ाम: 6256)

4300 -- وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شَيْهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ ثَعْلَبَةَ بْنُ صَعْنٍ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ مَسَحَ وَجْهَهُ غَامَ الْفَتَحِ. [طَرَفُهُ فِي 6256].

इमाम बुखारी (रह) ने इब्तिस्मर के लिये असल हदीष बयान नहीं की। सिर्फ़ इसी जुम्ला (बात) पर इक्तिफ़ा की कि औहज़रत (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के साल उनके चेहरे पर हाथ फेरा था।

4301. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने और उन्हें जुहरी ने, उन्हें सुफ़यान ने, उन्हें अबू जमीला ने, जुहरी ने बयान किया कि जब हमसे अबू जमीला (रज़ि.) ने हदीष बयान की तो हम सईद बिन मुसय्यिब के साथ थे। बयान किया कि अबू जमीला (रज़ि.) ने कहा कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की सुहबत पाई और वो आपके साथ ग़ज़व-ए-फ़तहे-मक्का के लिये निकले थे।

4301 -- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ مَعْمَرٍ، عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ جَبَلَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا وَنَحْنُ مَعَ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، قَالَ، وَزَعَمَ أَبُو جَبَلَةَ أَنَّهُ أَدْرَكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَخَرَجَ مَعَهُ غَامَ الْفَتَحِ.

इब्ने मन्दह और अबू नुऐम और इब्ने अब्दुल बर ने भी उन अबू जमीला (रज़ि.) को सहाबा में ज़िक्र किया है और ये कहा है कि हज़तुल विदाअ में ये जनाब नबी करीम (ﷺ) के साथ थे।

4302. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख्तियानी ने और उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अमर बिन सलमा (रज़ि.) ने, अय्यूब ने कहा कि मुझे अबू क़िलाबा ने कहा, अमर बिन सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर ये किस्सा क्यों नहीं पूछते? अबू क़िलाबा ने कहा कि फिर मैं उनकी ख़िदमत में गया और उनसे सवाल किया, उन्होंने कहा कि जाहिलियत में हमारा क़याम एक चश्मा पर था जहाँ आम रास्ता था। सवार हमारे क़रीब से गुज़रते तो हम उनसे पूछते, लोगों का क्या ख़याल है, उस शख्स का क्या मामला है? (ये इशारा नबी करीम (ﷺ) की तरफ़ होता था।) लोग बताते कि वो कहते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपना रसूल बनाकर भेजा है और अल्लाह उन पर वह नाज़िल करता है, या अल्लाह ने उन पर वह नाज़िल की है (वो कुआन की कोई आयत सुनाते) मैं वो फ़ौरन याद कर लेता, उसकी बातें मेरे दिल को लगती थीं। इधर सारे अरब वाले फ़तहे-मक्का पर अपने इस्लाम को मौक़ूफ़ किये हुए थे। उनका कहना ये था कि इस नबी को और उसकी क़ौम (कुरैश) को निमटने दो, अगर वो उन पर ग़ालिब आ गये तो फिर वाक़ई वो सच्चे नबी हैं। चुनाँचे जब मक्का फ़तह हो गया तो हर क़ौम ने इस्लाम लाने में पहल की और मेरे वालिद ने भी मेरी क़ौम के इस्लाम में जल्दी की। फिर जब वो (मदीना) से वापस आए तो कहा कि मैं अल्लाह की क़सम एक सच्चे नबी के पास से आ रहा हूँ। उन्होंने फ़र्माया कि फ़लाँ नमाज़ इस तरह फ़लाँ वक़्त पढ़ा करो और जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो तुममें से कोई एक शख्स अज़ान दे और इमामत वो करे जिसे कुआन सबसे ज़्यादा याद हो लोगों ने अंदाज़ा किया कि किसे कुआन सबसे ज़्यादा याद है तो कोई शख्स (उनके क़बीले में) मुझे ज़्यादा कुआन याद करने वाला नहीं मिला। क्योंकि मैं आने जाने वाले सवारों से सुनकर कुआन मज़ीद याद कर लिया करता था। इसलिये मुझे लोगों ने इमाम बनाया। हालाँकि उस वक़्त मेरी उम्र छः या सात साल की थी और मेरे पास एक ही चादर थी, जब मैं (उसे लपेटकर) सज्दा करता तो ऊपर हो जाती (और पीछे की जगह) खुल जाती। उस क़बीले की एक औरत ने कहा, तुम अपने क़ारी का कूल्हा तो पहले छुपा दो।

٤٣٠٢ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سَلَمَةَ قَالَ : قَالَ لِي أَبُو قِلَابَةَ الْإِسْلَامَ تَلْقَاهُ قَسَالَةً، قَالَ: فَلَقِيَنَهُ قَسَالَتَهُ، فَقَالَ: كُنَّا بِمَاءِ مَعْرِ النَّاسِ وَكَانَ يَمُرُّ بِنَا الرُّكْبَانُ فَنَسْأَلُهُمْ مَا لِلنَّاسِ، مَا لِلنَّاسِ مَا هَذَا الرَّجُلُ؟ فَيَقُولُونَ : يَزْعُمُ أَنَّ اللَّهَ أَرْسَلَهُ أَوْحَى إِلَيْهِ أَوْ أَوْحَى اللَّهُ بِكَذَا، فَكُنْتُ أَخْفِظُ ذَلِكَ الْكَلَامَ، وَكَانَمَا يُفَرِّقِي فِي صَنْدُوقِي وَكَانَتْ الْعَرَبُ تَلُومُ بِإِسْلَامِهِمُ الْفَتْحَ، فَيَقُولُونَ : أَتُرْكُوهُ وَقَوْمَهُ فَإِنَّهُ إِنْ ظَهَرَ عَلَيْهِمْ فَهُوَ نَبِيٌّ صَادِقٌ فَلَمَّا كَانَتْ وَقَعَةُ أَهْلُ الْفَتْحِ بِأَذَى كُلِّ قَوْمٍ بِإِسْلَامِهِمْ وَيَمُرُّ أَبِي قُوصِي بِإِسْلَامِهِمْ، فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ: جِئْتُكُمْ وَاللَّهِ مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقًّا فَقَالَ: ((صَلُّوا صَلَاةَ كَذَا، فِي حِينَ كَذَا وَصَلُّوا كَذَا فِي حِينَ كَذَا فَإِذَا خَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَلْيُؤَذِّنْ أَحَدُكُمْ وَلْيُؤْمِكُمْ أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا)) فَظَرُّوا فَلَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَكْثَرَ قُرْآنًا مِنِّي لِمَا كُنْتُ أُنَلِّقِي مِنَ الرُّكْبَانِ، فَذَمُّوْنِي بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَأَنَا ابْنُ سِتٍّ أَوْ سِتِّينَ سَبْعِينَ وَكَانَتْ عَلَيَّ بُرْدَةٌ كُنْتُ إِذَا سَجَدْتُ تَقَلَّصْتُ عَنِّْي فَقَالَتْ امْرَأَةٌ مِنَ الْخَثِي : أَلَا تَقَطُّوا عَنَّا اسْتَقَارِئَكُمْ؟ فَاشْتَرَوْا فَقَطُّوا لِي قَمِيصًا لَمَّا فَرَحْتُ بِشَيْءٍ فَرَحِي بِذَلِكَ الْقَمِيصِ.

आखिर उन्होंने कपड़ा खरीदा और मेरे लिये एक कमीस बनाई,
मैं जितना खुश उस कमीस से हुआ उतना किसी और चीज़ से नहीं
हुआ था।

तरीह: इससे अहले हदीस और शाफ़िइया का मज़हब प्रभावित होता है कि नाबालिग लड़के की इमामत दुरुस्त है और जब वो तमीज़दार हो फ़राइज़ और नवाफ़िल सब में और उसमें हन्फ़िया ने ख़िलाफ़ किया है। फ़राइज़ में इमामत जाइज़ नहीं रखी (वहीदी)। रिवायत में लफ़ज़, फ़कुन्तु अहफ़जु ज़ालिकल्कलामा व कअन्नामा युगरी फ़ी स़दरी। पस मैं उस कलामे कुआन को याद कर लेता जैसे कोई मेरे सीने में उतार देता। कुछ लोग तर्जुमा यूँ करते हैं जैसे कोई मेरे सीने में चिपका देता या कूट कर भर देता। ये कई तर्जुमे इस बिना पर हैं कि कुछ नुस्खों में युगरी फ़ी स़दरी है कुछ में युकरू फ़ी स़दरी है, कुछ में युकरउ फ़ी स़दरी है। अरबों की कमीस साथ ही तहबन्द का काम भी दे देती है। इसीलिये कि रिवायत में सिर्फ़ कमीस बनाने का ज़िक्र है। या'नी वो टख़नों तक लम्बी होती है जिसके बाद तहबन्द न हो तब भी जिस्म छुप जाता है।

4303. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा क़अम्बी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) और लैस बिन सअद ने कहा मुझसे यूनस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि इत्बा बिन अबी वक्रास ने (परते वक्रत ज़मान-ए-जाहिलियत में) अपने भाई (सअद बिन अबी वक्रास रज़ि.) को वसियत की थी कि वो ज़म्आ बिन लैसी की बांदी से पैदा होने वाले बच्चे को अपने क़ब्जे में ले लें। इत्बा ने कहा कि वो मेरा लड़का होगा। चुनाँचे जब फ़तहे-मक्का के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए तो सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) उस बच्चे को लेकर हज़रे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनके साथ अब्द बिन ज़म्आ भी आए। सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) ने तो ये कहा ये मेरे भाई का लड़का है। भाई ने वसियत की थी कि उसी का लड़का है। लेकिन अब्द बिन ज़म्आ ने कहा कि या रसूलुल्लाह! ये मेरा भाई है (मेरे वालिद) ज़म्आ का बेटा है क्योंकि उन्हीं के बिस्तर पर पैदा हुआ है। आँहज़रत (ﷺ) ने ज़म्आ की बांदी के लड़के को देखा तो वो वाक़ई (सअद का भाई) इत्बा बिन अबी वक्रास की शक्ल पर था लेकिन हज़ूर (ﷺ) ने (क़ानूने शरीअत के मुताबिक़) फ़ैसला ये किया कि ऐ अब्द बिन ज़म्आ! तुम्हीं इस बच्चे को रखो, ये तुम्हारा भाई है, क्योंकि ये तुम्हारे वालिद के फ़राश पर (उसकी बांदी के बतन से पैदा हुआ है। लेकिन दूसरी तरफ़ उम्पुल मोमिनीन सौदा (रज़ि.) से जो

4303- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ : أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ : كَانَ عُتْبَةُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ عَهْدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدٍ أَنْ يَقْبِضَ ابْنَ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ، وَقَالَ عُتْبَةُ : إِنَّهُ ابْنِي، فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَكَّةَ لِيِ الْفَتْحِ أَخَذَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ ابْنَ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ، فَأَقْبَلَ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَأَقْبَلَ مَعَهُ عُتْبَةُ بْنُ زَمْعَةَ، فَقَالَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ: هَذَا ابْنُ أَخِي عَهْدَ إِلَيَّ أَنَّهُ ابْنُهُ. قَالَ عُتْبَةُ بْنُ زَمْعَةَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا أَخِي هَذَا ابْنُ زَمْعَةَ وَلَدَ عَلَى فِرَاشِهِ فَظَنَرُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى ابْنِ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ فَإِذَا أَشْبَهَ النَّاسُ بِعُتْبَةَ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((هُوَ لَكَ هُوَ أَخُوكَ يَا عُتْبَةُ بْنُ زَمْعَةَ)) مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ

ज़म्आ की बेटी थीं फ़र्माया सौदा! उस लड़के से पर्दा किया करना क्योंकि आपने उस लड़के में उतबा बिन अबी वक्कास (रज़ि.) की शबाहत पाई थी। इब्ने शिहाब ने कहा उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, लड़का उसका होता है जिसकी बीवी या लौण्डी के पेट से पैदा हुआ हो और ज़िना करने वाले के हिस्से में पत्थर ही हैं। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) इस हदीस को पुकार पुकारकर बयान किया करते थे।

(राजेअ: 2053)

وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَخْبِي بِنْتِي يَا سَوْدَةُ)) لِمَا رَأَى مِنْ شَبِّهِ غُثَّةِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَالْتِ غَالِشَةُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَامِرِ الْحَجَرِ)). وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَمْنَحُ بِذَلِكَ.

[راجع: 2053]

तशरीह: हदीस में एक मौके पर रसूले करीम (ﷺ) के फ़तहे मक्का में मक्का में दाखिले का जिक्र है। बाब से मुताबकत यही है कि हदीस से एक इस्लामी क़ानून का भी इश्बात हुआ कि बच्चा जिस बिस्तर पर पैदा हो बिस्तर वाले का माना जाएगा, ज़ानी के लिये संगसारी है और बच्चा बिस्तर वाले का है। इस क़ानून की वुस्अत पर ग़ौर करने से मा'लूम होगा कि इससे कितनी बुराइयों का सद्दे-बाब (निराकरण) हो गया है। बिस्तर का मतलब ये भी है कि जिसकी बीवी या लौण्डी के बदन से वो बच्चा पैदा हुआ है वो उसका माना जाएगा। हज़रत सौदा नामी ख़ातून बिनते ज़म्आ उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) हैं। ये अपने चचा के बेटे सकरान बिन उमर (रज़ि.) के निकाह में थीं। उनके इतिक्काल पर आँहज़रत (ﷺ) के हरम में दाखिल हुई। आपका निकाह हज़रत खदीजा (रज़ि.) की वफ़ात के बाद हज़रत आइशा (रज़ि.) के निकाह से पहले हुआ। माहे शव्वाल सन् 54 हिजरी में मदीना में उनका इतिक्काल हुआ। रज़ियल्लाहु अन्हा।

4304. हमसे मुहम्मद बिन मुक्कातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, कहा कि मुझे उर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी कि ग़ज़्वा-ए-फ़तहे (मक्का) के मौके पर एक औरत ने नबी करीम (ﷺ) के अहद में चोरी कर ली थी। उस औरत की क़ौम घबराई हुई उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के पास आई ताकि वो हुज़ूर (ﷺ) से इसकी सिफ़ारिश कर दें (कि उसका हाथ चोरी के जुर्म में न काटा जाए) उर्वा ने बयान किया कि जब उसामा (रज़ि.) ने उसके बारे में आँहज़ूर (ﷺ) से बातचीत की तो आप (ﷺ) के चेहरे मुबारक का रंग बदल गया और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम मुझसे अल्लाह की क़ायम की हुई एक हद के बारे में सिफ़ारिश करने आए हो। उसामा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, मेरे लिये दुआ-ए-मफ़िरत कीजिए, या रसूलल्लाह! फिर दोपहर बाद आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को ख़िताब किया, अल्लाह तआला की उसके शान के मुताबिक़ ता'रीफ़ करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअ़द! तुममें से पहले लोग इसलिये हलाक हो गये कि अगर उनमें से कोई

٤٣٠٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنْ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي غُرُوةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ امْرَأَةً سَرَقَتْ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غُرُوةِ الْفَتْحِ، فَفَزِعَ قَوْمُهَا إِلَى أَسَافَةَ بْنِ زَيْدٍ يَسْتَشْفِعُونَهُ قَالَ غُرُوةُ: فَلَمَّا كَلِمَةُ أَسَافَةَ فِيهَا تَلَوْنُ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَتَكَلِّمُنِي فِي حَدٍّ مِنْ خُلُودِ اللَّهِ؟)) قَالَ أَسَافَةُ: اسْتَغْفِرُ لِي يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلَمَّا كَانَ الْغَشِيُّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خَطِيبًا فَأَتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ النَّاسُ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ لِيَهُمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا

मुअज्जज शख्स चोरी करता तो उसे छोड़ देते लेकिन अगर कोई कमजोर चोरी कर लेता तो उस पर हद कायम करते और उस ज्ञात की कसम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है अगर फ़ातिमा बिनते मुहम्मद (रज़ि.) भी चोरी कर ले तो मैं उसका हाथ काटूंगा। उसके बाद हुजूर (ﷺ) ने उस औरत के लिये हुक्म दिया और उनका हाथ काट दिया गया। फिर उस औरत ने सिद्क (सच्चे) दिल से तौबा कर ली और शादी भी कर ली। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बाद में वो मेरे यहाँ आती थीं। उनको और कोई ज़रूरत होती तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने पेश कर देती। (राजेअ : 2648)

سرقَ لِيَهُمُ الضَّعِيفُ أَفَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ، وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا، ثُمَّ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِبَيْتِ الْمَرْأَةِ لَقَطَعْتُ يَدَهَا فَخَسُنَتْ تَوْبَتُهَا بَعْدَ ذَلِكَ، وَتَزَوَّجَتْ فَالْتِ غَائِبَةً فَكَانَتْ تَأْتِينِي بَعْدَ ذَلِكَ فَارْتَفَعُ حَاجَتُهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. [راجع: ٢٦٤٨]

तशरीह: इमाम अहमद की रिवायत में है कि उस औरत ने खुद आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया था कि हुजूर (ﷺ) क्या मेरी तौबा कुबूल हो सकती है? आपने फ़र्माया आज तो तू ऐसी है जैसे उस दिन थी जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुई थी। हुदूदे इस्लामी का पसेमंज़र ही ये है उनके कायम होने के बाद मुजरिम गुनाह से बिलकुल पाक साफ़ होकर मक्बूले इलाही हो जाता है और हुदूदे के कायम होने से जराइम का सदे-बाब भी हो जाता है। जैसा कि मल्लक्ते सकुदिया अय्यदल्लाहु बि नस्रिही में मौजूद है, जहाँ हुदूदे शर्इ कायम होते हैं। इसलिये जराइम (अपराध) बहुत कम पाए जाते हैं। आयते शरीफ़ा फिल्किस्मासि हयातुय्याउलिलल्अल्बाब (अल बकर : 179) में इसी तरफ़ इशारा है। रिवायत में जिस औरत का मुकद्दमा मज़कूर है उसका नाम फ़ातिमा मख़जूमिया था, बाद में बनू सुलैम के एक शख्स से उसने शादी भी कर ली थी।

4305, 4306. हमसे अमर बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे जुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू इम्मान नहदी ने बयान किया और उनसे मुजाशेअ बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के बाद मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने भाई (मुजालिद) को लेकर हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं उसे इसलिये लेकर हाज़िर हुआ हूँ ताकि आप हिजरत पर उससे बेअत ले लें। हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया हिजरत करने वाले उसकी फ़ज़ीलत व फ़वाब को हासिल कर चुके (या) नी अब हिजरत करने का ज़माना तो गुजर चुका। मैंने अर्ज़ किया, फिर आप उससे किस चीज़ पर बेअत लेंगे? हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ईमान, इस्लाम और जिहाद पर। अबी इम्मान नहदी ने कहा कि फिर मैं (मुजाशेअ के भाई) अबू सईद मुजालिद से मिला वो दोनों भाईयों से बड़े थे, मैंने उनसे भी इस हदीष के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मुजाशेअ ने हदीष ठीक तरह बयान की है। (राजेअ : 2962, 2963)

٤٣٠٥، ٤٣٠٦ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا غَاصِمٌ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ حَدَّثَنِي مُجَاشِعٌ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَخِي بَعْدَ الْفَتْحِ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ جِئْتُكَ بِأَخِي لِتُبَايَعَهُ عَلَى الْهِجْرَةِ قَالَ: ((وَدَعَبَ أَهْلُ الْهِجْرَةِ بِمَا فِيهَا)) فَقُلْتُ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ تُبَايَعُهُ؟ قَالَ: ((أُبَايَعُهُ عَلَى الْإِسْلَامِ، وَالْإِيمَانِ وَالْجِهَادِ)) فَلَقِيتُ أَبَا مُقَبَّرٍ بَعْدَ وَكَانَ أَكْبَرَهُمَا فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: صَدَقَ مُجَاشِعٌ.

[راجع: ٢٩٦٢، ٢٩٦٣]

तशरीह: मा'लूम हुआ कि सहाबा व ताबेईन के पाक ज़मानों में अहादीषे नबवी के मुजाकरात मुसलमानों में जारी रहा करते थे और वो अपने अकाबिर से अहादीष की तस्दीक कराया भी करते थे। इस तरह से अहादीषे नबवी का ज़खीरा सहीह हालत में कयामत तक के वास्ते महफूज हो गया जिस तरह कुर्आन मजीद महफूज है और ये सदाकत मुहम्मदी का एक बड़ा धुबूत है। जो लोग अहादीषे सहीहा का इंकार करते हैं, दरहक्रीकत इस्लाम के नादान दोस्त हैं और वो इस तरह पैगम्बरे इस्लाम (ﷺ) के पाकीज़ा हालाते ज़िन्दगी को मिटा देना चाहते हैं मगर उनकी ये नापाक कोशिश कभी कामयाब न होगी। इस्लाम और कुर्आन के साथ अहादीषे मुहम्मदी का पाक ज़खीरा भी हमेशा महफूज रहेगा। इसी तरह बुखारी शरीफ के साथ ख़ादिम का ये आम फ़हम तर्जुमा भी कितने पाक नुफूस (पवित्र लोगों) के लिये ज़रिय-ए-हिदायत बनता रहेगा। इंशाअल्लाहुल् अजीज़।

4307, 4308. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे फुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू इब्म्यान नहदी ने और उनसे मुजाशेअ बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि मैं अपने भाई (अबू मअबद रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आपसे हिजरत पर बेअत कराने के लिये ले गया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हिजरत का प्रबाब तो हिजरत करने वालों के साथ ख़त्म हो चुका। अल्बत्ता मैं उससे इस्लाम और जिहाद पर बेअत लेता हूँ। अबू इब्म्यान ने कहा कि फिर मैंने अबू सईद (रज़ि.) से मिलकर उनसे इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मुजाशेअ (रज़ि.) ने ठीक बयान किया और ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने भी अबू इब्म्यान से बयान किया, उनसे मुजाशेअ (रज़ि.) ने कि वो अपने भाई मुजालिद (रज़ि.) को लेकर आए थे, (फिर हदीष को आखिर तक बयान किया। उसको इस्माईल ने वस्ल किया है)

(राजेअ: 2962, 2963)

4309. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू बिशर ने और उनसे मुजाहिद ने कि मैंने इब्ने इमर (रज़ि.) से अर्ज़ किया कि मेरा इरादा है कि मुल्के शाम को हिजरत कर जाऊँ। फ़र्माया, अब हिजरत बाक़ी नहीं रही, जिहाद ही बाक़ी रह गया है। इसलिये जाओ और खुद को पेश करो। अगर तुमने कुछ पा लिया तो बेहतर वरना वापस आ जाना।

(राजेअ: 3899)

4310. नज़र ने बयान किया कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अबू बिशर ने ख़बर दी, उन्होंने मुजाहिद से सुना कि जब मैंने अब्दुल्लाह

۴۳۰۸، ۴۳۰۷ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ عَنْ أَبِي عُفْمَانَ التَّهْدِي عَنْ مُجَاشِعِ بْنِ مَسْفُودٍ انْطَلَقْتُ بِأَبِي مَعْبُدٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ لِيُيَاغِدَهُ عَلَى الْهِجْرَةِ قَالَ: ((مَنْصَرُ الْهِجْرَةِ لَاهْلِهَا أَبَايَعُهُ عَلَى الْإِسْلَامِ، وَالْجِهَادِ)) فَلَقِيَتْ أَبَا مَعْبُدٍ فَسَأَلَتْهُ فَقَالَ: صَدَقَ مُجَاشِعٌ. وَقَالَ عَالِدٌ عَنْ أَبِي عُفْمَانَ عَنْ مُجَاشِعٍ: إِنَّهُ جَاءَ بِأَخِيهِ مُجَالِدٍ.

[راجع: ۲۹۶۲، ۲۹۶۳]

۴۳۰۹ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بَشْرٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قُلْتُ لَابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَهَاجِرَ إِلَى الشَّامِ، قَالَ: لَا هِجْرَةَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ، فَانْطَلِقْ فَأَعْرِضْ نَفْسَكَ فَإِنْ وَجَدْتَ شَيْئًا وَإِلَّا رَجَعْتَ.

[راجع: ۳۸۹۹]

۴۳۱۰ - وَقَالَ النَّصْرُ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا أَبُو بَشْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا،

बिन उमर (रज़ि.) से अर्ज किया तो उन्होंने कहा कि अब हिजरत बाक़ी नहीं रही या (फ़र्माया कि) रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद फिर हिजरत कहाँ रही। (अगली रिवायत की तरह बयान किया)

(राजेअ: 3899)

4311. मुझसे इस्हाक़ बिन यज़ीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन हमज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू अमर औज़ाई ने बयान किया, उनसे अब्दुह बिन अबी लुबाबा ने, उनसे मुजाहिद बिन जबर मक्की ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कहा करते थे कि फ़तहे-मक्का के बाद हिजरत बाक़ी नहीं रही। (राजेअ: 3899)

قُلْتُ لِأَبِي عُمَرَ: فَقَالَ: لَا هِجْرَةَ الْيَوْمَ أَوْ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مَثَلَةٌ.

[راجع: 3899]

٤٣١١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عَمْرٍو الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَبْدِ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ عَنْ مُجَاهِدِ بْنِ جَبْرِ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقُولُ: لَا هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ. [راجع: 3899]

नशीह: ये हुक्मे मदीनी हिजरत की बाबत है। अगर अहले इस्लाम के लिये किसी भी इलाके में मक्का में जैसे हालात पैदा हो जाएँ तो दारुल अमन की तरफ़ वो अब भी हिजरत कर सकते हैं। जिससे उनको यक़ीनन हिजरत का प्रवाब मिल सकता है। मगर इन्नमल आ' मालु बिन्नायात को सामने रखना ज़रूरी है।

4312. हमसे इस्हाक़ बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हमज़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन अबी रिबाह ने बयान किया कि मैं इब्नेद बिन उमैर के साथ हज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इब्नेद ने उनसे हिजरत का मसला पूछा तो उन्होंने कहा कि अब हिजरत बाक़ी नहीं रही, पहले मुसलमान अपना दीन बचाने के लिये अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ पनाह लेने के लिये आते थे, इस डर से कि कहीं दीन की वजह से फ़िला में न पड़ जाएँ। इसलिये अब जबकि अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया तो मुसलमान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है। अब तो सिर्फ़ जिहाद और जिहाद की निव्यत का प्रवाब बाक़ी है। (राजेअ: 3080)

٤٣١٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنِي الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ غَطَاءِ بْنِ أَبِي رِيَاحٍ، قَالَ: رَزَتْ عَائِشَةُ مَعَ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ فَسَأَلَهَا عَنْ الْهِجْرَةِ، فَقَالَتْ: لَا هِجْرَةَ الْيَوْمَ، كَانَ الْمُؤْمِنُ يَقْرَأُ أَحَدُهُمْ بِدِينِهِ إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَخَافَةً أَنْ يَفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللَّهُ الْإِسْلَامَ فَالْمُؤْمِنُ يَعْبُدُ رَبَّهُ حَيْثُ شَاءَ وَلَكِنْ جِهَادَ وَبَيَّةَ.

[راجع: 3080]

ये सवाल फ़तहे-मक्का के बाद मदीना शरीफ़ ही की तरफ़ हिजरत करने के बारे में था जिसका जवाब वो दिया गया जो रिवायत में मज़कूर है, बाक़ी आम ह़ैशियत से हालात के तहत दारुल कुफ़्र से दारुल इस्लाम की तरफ़ हिजरत करना बवज़ते ज़रूरत अब भी जाइज़ है। बशर्त कि ऐसे हालात पाएँ जो उसके लिये ज़रूरी हैं। ऊपर बयान की गई रिवायत में किसी न किसी पहलू से फ़तहे-मक्का का ज़िक्र हुआ है, इसीलिये उनको इस बाब के तहत लाया गया है।

4313. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम नबील ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया,

٤٣١٣- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا أَبُو غَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي حَسَنُ بْنُ

कहा मुझको हसन बिन मुस्लिम ने खबर दी और उन्हें मुजाहिद ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे-मक्का के दिन खुल्बा सुनाने खड़े हुए और फ़र्माया जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया था, उसी दिन उसने मक्का को हर्मत वाला शहर करार दे दिया था। पस ये शहर अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ क़ायामत तक के लिये हर्मत वाला रहेगा। जो मुझसे पहले कभी किसी के लिये हलाल नहीं हुआ और न मेरे बाद किसी के लिये हलाल होगा और मेरे लिये भी सिर्फ़ एक घड़ी के लिये हलाल हुआ था। यहाँ हद्दूद हरम में शिकार के क़ाबिल जानवर न छेड़े जाएँ। यहाँ के काटेदार पेड़ न काटे जाएँ न यहाँ की घास उखाड़ी जाए और यहाँ पर गिरी पड़ी चीज़ उस शख्स के सिवा जो ऐलान करने का इरादा रखता हो और किसी के लिये उठानी जाइज़ नहीं। इस पर हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुजलिब (रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इज़्रर (घास) की इजाज़त दीजिए क्योंकि सुनारों के लिये और मकानात (की ता'बीर वग़ैरह) के लिये ये ज़रूरी है। आप ख़ामोश हो गये फिर फ़र्माया इज़्रर इस हुक्म से अलग है। उसका (कांटा) हलाल है। दूसरी रिवायत इब्ने जुरैज से (इसी सनद से) ऐसी ही है। उन्होंने अब्दुल करीम बिन मालिक से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने भी आँहज़रत (ﷺ) से ऐसी ही रिवायत की है। (राजेज़: 1349)

तशरीह: मुजाहिद ताबेई हैं तो ये हदीस मुर्सल हुई मगर हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने उसको किताबुल हद्दूद किताबुल जिहाद में वस्ल किया है। मुजाहिद से, उन्होंने त्राउस से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से। सदाक़ते मुहम्मदी इससे ज़ाहिर है कि मक़तुल मुकर्रमा आज तक भी हरम है और क़ायामत तक हर्मत वाला रहेगा। आज तक किसी ग़ैर मुस्लिम हुकूमत का वहाँ क़ायम नहीं हुआ और न क़ायामत तक हो सकेगा। हुकूमते सऊदिया ने भी उस मुक़द्दस शहर की हर्मत व इज़त का बहुत कुछ तहफ़ुज़ किया है। अल्लाह तआला उस हुकूमत को क़ायम दायम रखे। आमीन।

हज़रत अल्लामा इब्ने क़य्थिम (रह) ने फ़तहे-मक्का को फ़तहे आज़म से ता'बीर करते हुए लिखा है, फसल फ़िल्फ़तहिल आज़मि अल्लज़ी अअजज़ल्लाहु बिही दीनहू व रसूलहू व जुन्दहू व हरमहुल अमीन वस्तं कज़ बिही बलदहू व बैतहू अल्लज़ी जअलहू हुदल्लिल आलमीन मिन अयदिल्कुफ़्रकारि वल्मुश्रीकीन व हुवलफ़तहुल्लज़ी इस्तब्शर बिही अहलुस्समाइ व ज़रिबत इत्नाबु इज़ज़तिन अला मनाकिबिल्जौज़ार व दख़लन्नासु बिही फी दीनिल्लाहि अप्वाज व अशरक़ बिही वजहुल् अर्ज़ि ज़ियाउन व इब्तिहाजन (ज़ादुल्मआद) या'नी अल्लाह तबारक व तआला ने फ़तहे-मक्का से अपने दीन को अपने रसूल को अपनी फ़ौज को अपने अमन वाले शहर को बहुत बहुत इज़त अज़ा फ़र्माई और शहर मक्का और ख़ाना का'बा को जो सारे ज़हानों के लिये ज़रिया हिदायत है उसको कुफ़्र और मुश्रीकीन के हाथों से आज़ादी नसीब की। ये वो फ़तह है जिसकी खुशी आसमानी मख़लूक ने मनाई और जिसकी इज़त के झण्डे जोज़ा सितारे पर लहराये और लोग जूक दर जूक जिसकी वजह से अल्लाह के दीन में दाख़िल हो गये जिसकी बरकत से सारी ज़मीन मुनव्वर होकर रोशनी

مُسْلِمٌ عَنْ مُجَاهِدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ يَوْمَ الْفَتْحِ فَقَالَ : ((إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ مَكَّةَ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ، فِيهِ حَرَامٌ بِحَرَامِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، لَمْ تَحِلْ لِأَخِي قَبْلِي وَلَا تَحِلْ لِأَخِي بَعْدِي، وَلَمْ تَحِلْ لِي إِلَّا صَاعَةٌ مِنَ النَّهْرِ، لَا يَنْفَرُ صَيْدُهَا، وَلَا يُغْنَدُ شَوْكُهَا، وَلَا يُخْتَلَى غَلَاةَا، وَلَا تَحِلْ لِقَطْعَتِهَا إِلَّا بِمَنْشِدٍ)) فَقَالَ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ: إِلَّا الْإِذْخِرَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنَّهُ لَا بُدَّ مِنْهُ لِلْفَقِينِ وَالْثَيِّبِ، فَسَكَتَ ثُمَّ قَالَ : ((إِلَّا الْإِذْخِرَ فَإِنَّهُ حَلَالٌ)). وَعَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْكَرِيمِ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، بِحِلِّ هَذَا أَوْ نَحْوِ هَذَا. رَوَاهُ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ .

[راجع: ١٣٤٩]

और मसरत से भरपूर हो गई। ग़ज़्व-ए-मक्का का ज़िक्र मज़ीद तफ़्सील के साथ यूँ है। ग़ज़्वाते नबवी के सिलसिले में फ़तहे-मक्का का कारनामा (गो सहीह मा'नी में ग़ज़्वा वो भी नहीं) कहना चाहिये कि सबसे बड़ा कारनामा है और लड़ाइयाँ छोटी बड़ी जितनी भी हुई सबका मर्कज़ी नुक़्ता यही था। सुलह हुदैबिया का ज़माना फ़तहे-मक्का से कोई दो साल पहले का है। कुआन मजीद ने पेशख़बरी उसी वक़्त तअय्युन के साथ कर दी थी, इन्ना फ़तहना लक़ फ़तहम्मुबीना (अल् फ़तह: 1) बेशक मैंने ऐ पैग़म्बर! आपको एक फ़तह दे दी खुली हुई, फ़तह आयत में गो इशार-ए-क़रीब सुलह हुदैबिया की जानिब है लेकिन सब जानते हैं कि इशार-ए-बईद फ़तहे-मक्का की जानिब है। अरब अब ज़ूक़ दर ज़ूक़ ईमान ला रहे थे और क़बीले पर क़बीले इस्लाम में दाख़िल होते जा रहे थे। फ़तहे-मक्का चीज़ ही ऐसी थी। कुआन मजीद ने उसकी अपनी जुबाने बलीग़ में यूँ नक्शा-क़शी की है, इज़ा जाअ नरुल्लाहि वल्फ़तहु व राअयतन्नास यदख़ुलून फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा (अन् नस्र: 1-2) जब आ गई अल्लाह की मदद और फ़तहे-मक्का और आपने लोगों को देख लिया कि फ़ौज की फ़ौज अल्लाह की दीन में दाख़िल हो रहे हैं और ख़ैर ये सूत तो फ़तहे-मक्का के बाद वाक़ेअ हुई खुद फ़तह इस तरह हासिल हुई कि गो आहुज़ूर (ﷺ) के साथ दस हज़ार सहाबियों का लश्कर था और अरब के बड़े बड़े पुर कुव्वत क़बीले अपने अलग अलग जैश बनाते हुए और अपने अपने परचम उड़ाते हुए जुलूस में थे लेकिन ख़ूँ रेंजी दुश्मन के उस शहर बल्कि दारुल हुकूमत में बराय नाम ही होने पाई और शहर पर क़ब्ज़ा बग़ैर ख़ून की नदियाँ बहे गोया चुपचाप हो गया। हुवलज़्ज़ी क़फ़ अयदीहिम अन्कुम व अयदीकुम अन्हुम बिबत्नि मक्कत मिम्बअदि अन अज़फ़रकुम अलैहिम (अल् फ़तह: 24) वो अल्लाह वही है जिसने रोक दिये उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे शहरे मक्का में बाद उसके कि तुमको उसने उन पर फ़तह मन्द कर दिया था। इस आयत में इशारा जहाँ बक़ौले शारेहीन के हुदैबिया की तरफ़ है वहीं ये कौल कुछ दूसरे शारेहीन के ग़ैर ख़ून पर फ़तहे-मक्का की जानिब है। फ़तहे-मक्का का ये अज़ीमुश्शान और दुनिया की तारीख़ के लिये नादिर और यादगार वाक़िया रमज़ान सन् 8 हिजरी मुताबिक़ जनवरी सन् 630 ईस्वी में पेश आया। (कुआनी सीरते नबवी)

बाब 55 : जंगे हुनैन का बयान

सूरह तौबा मे है कि याद करो तुमको अपनी क़सरते ता'दाद पर घमण्ड हो गया था फिर वो क़सरत तुम्हारे कुछ काम न आई और तुम पर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंग होने लगी, फिर तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए, उसके बाद अल्लाह ने तुम पर अपनी तरफ़ से तसल्ली नाज़िल की ग़फ़ूररहीम तक।

तशरीह: हुनैन एक वादी का नाम है जो मक्का और त्राइफ़ के बीच में वाक़ेअ है, वहाँ आप फ़तह के बाद छठी शव्वाल को तशरीफ़ ले गये थे। आपको ये ख़बर पहुँची थी कि मालिक बिन औफ़ ने कई क़बीले के लोग मुसलमानों से लड़ने के लिये जमा किये हैं जैसे हवाज़िन और ब़क़ीफ़ वग़ैरह। उस जंग में मुसलमानों की ता'दाद बारह हज़ार और काफ़िरों की चार हज़ार थी। मुसलमानों को अपनी क़सरते ता'दाद पर कुछ ग़ुरूर हो गया था। अल्लाह तआला ने उस ग़ुरूर को तोड़ने के लिये पहले मुसलमानों के अंदर काफ़िरों का डर व हिरास पैदा कर दिया बाद में आख़िरी फ़तह मुसलमानों को ही नसीब हुई।

4314. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) के हाथ में ज़ख़म का निशान देखा फिर उन्होंने बतलाया कि मुझे ये ज़ख़म उस वक़्त आया था जब मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-हुनैन में

٥٥- باب قول الله تعالى:

﴿يَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبْتَكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمْ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ، ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ قَوْلِهِ ﴿غُفُورٌ رَحِيمٌ﴾﴾

٤٣١٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، قَالَ: ضَرَبْتُهَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ حُنَيْنٍ، قُلْتُ: شَهِدْتُ حُنَيْنًا؟

शरीक था। मैंने कहा कि आप हुनैन में शरीक थे? उन्होंने कहा कि उससे भी पहले मैं कई ग़ज़्वे में शरीक हो चुका हूँ।

قَالَ: ذَلِكَ.

4315. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफियान ब़ारी ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, कहा कि मैंने बराअ (रज़ि.) से सुना, उनके यहाँ एक शख्स आया और उनसे कहने लगा कि ऐ अबू अम्मार! क्या तुमने हुनैन की लड़ाई में पीठ फेर ली थी? उन्होंने कहा, मैं इसकी गवाही देता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) अपनी जगह से नहीं हटे थे। अल्बत्ता जो लोग क़ौम में जल्दबाज़ थे, उन्होंने अपनी जल्दबाज़ी का धुबूत दिया था, पस क़बीला हवाज़िन वालों ने उन पर तीर बरसाए। अबू सुफ़यान बिन हारिष (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर की लगाम थामे हुए थे और हुज़ूर (ﷺ) फ़र्मा रहे थे, मैं नबी हूँ इसमें बिलकुल झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ।

(राजेअ: 2864)

٤٣١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا أَبَا عُمَارَةَ اتَّوَلَّيْتُ يَوْمَ حُنَيْنٍ؟ فَقَالَ: أَمَا أَنَا فَاشْهَدْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ لَمْ يُؤَلَّ وَلَكِنْ عَجَلَ سَرْعًا الْقَوْمَ فَرَضَقْتَهُمْ هَوَازِثَ. وَأَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ أَخْبَدَ بِرَأْسِهِ بَعْلِيهِ الْبَيْضَاءَ يَقُولُ:

أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ

أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ

[راجع: ٢٨٦٤]

तशरीह: हाफिज़ साहब फ़र्माते हैं, व अबू सुफ़यान बिन हारिष इब्नि अब्दिलमुत्तलिब बिन हाशिम व हुव इब्नु अम्मिन्नबिय्यि (ﷺ) व कान इस्लामुहू कबूल फत्हि मक्कत लिअन्नहू खरज इलन्नबिय्यि (ﷺ) फलक्रियहू फित्तीरिक्कि व हुव साइरू इला फत्हि मक्कत फअस्लम व हसुन इस्लामुहू व खरज इला ग़ज्वति हुनैन फ़कान फ़ीमन षबत (फ़त्ह) या'नी हज़रत अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के चचा के बेटे थे। ये मक्का फ़तह होने से पहले ही से निकल कर रास्ते में आँहज़रत (ﷺ) से जाकर मिले और इस्लाम कुबूल कर लिया और ये ग़ज़्व-ए-हुनैन में प्राबित क़दम रहे थे।

4316. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से पूछा गया, मैं सुन रहा था कि तुम लोगों ने नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-हुनैन में पीठ फेर ली थी? उन्होंने कहा जहाँ तक हुज़ुरे अकरम (ﷺ) का ता'ल्लुक है तो आपने पीठ नहीं फेरी थी। हुआ ये था कि हवाज़िन वाले बड़े तीरंदाज़ थे हुज़ूर (ﷺ) ने उस मौक़े पर फ़र्माया था मैं नबी हूँ, इसमें झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। (राजेअ: 2864)

٤٣١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَنَا سَمِعْتُ أَوْلَيْتُم مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ حُنَيْنٍ؟ فَقَالَ: أَمَا النَّبِيُّ ﷺ فَلَا، كَانُوا رُمَاةً فَقَالَ:

أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ

أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ

[راجع: ٢٨٦٤]

तशरीह: आपने उस नाज़ुक मौक़े पर दुआ फ़र्माई या अल्लाह! अपनी मदद उतार। मुस्लिम की रिवायत में है कि काफ़िरों ने आपको घेर लिया आप ख़च्चर पर से उतर पड़े फिर खाक की एक मुट्ठी ली और काफ़िरों के चेहरे पर मारी फ़र्माया शाहतिल वुजूह कोई काफ़िर बाक़ी न रहा, जिसकी आँख में मिट्टी न घुसी हो। आख़िर शिकस्त पाकर सब भाग निकले।

शाहतिल वुजूह का मा'नी उनके चेहरे बुरे हुए। कस्तलानी (रह) ने कहा ये आपका एक बड़ा मोअजजा है। चार हजार काफ़िरी की आँखों पर एक मुट्ठी खाक का ऐसा अण्डर पड़ना बिलकुल आदत के खिलाफ़ है (मौलाना वहीदुज्जमाँ)। मुतजिम कहता है आँहज़रत (ﷺ) की शुजाअत और बहादुरी को इस मा'नी से दरयाफ़्त कर लेना चाहिये कि सारे साथी भाग निकले, तीरों की बौछार हो रही है और आप ख़च्चर पर मैदान में जमे हुए हैं। ऐसे मौकों पर बड़े बड़े बहादुरों के पाँच उखड़ जाते हैं। अगर आपका हम कोई मुअजज़ा न देखें सिर्फ़ आपके सिफ़ाते इसना और अख़लाके हमीदा पर गौर कर लें तब भी आपकी पैग़म्बरी में कोई शक नहीं रहता। शुजाअत ऐसी, सखावत ऐसी कि किसी साइल को महरूम न करते। लाख रुपया आया तो सबका सब उसी वक़्त बांट दिया। एक रुपया भी अपने लिये नहीं रखा। एक दफ़ा घर में ज़रा सा सोना रह गया था तो नमाज़ का सलाम फेरते ही तशरीफ़ ले गये उसको बांट दिया फिर सुन्नतें पढ़ीं। कुव्वत और ताक़त ऐसी कि नौ बीवियों से एक ही रात में सुहबत कर आए। सब और तहम्मूल इतना कि एक गंवार ने तलवार खींचकर मार डालना चाहा मगर आपने उस पर काबू पाकर उसे मुआफ़ कर दिया। एक यहूदी औरत ने ज़हर दे दिया मगर उसको सज़ा न दी, इफ़फ़त और पाकदामनी ऐसी कि किसी ग़ैर औरत पर आँख तक न उठाई। क्या ये सिफ़ात किसी ऐसे शख्स में जमा हो सकती हैं जो मुअय्यिद मिनल्लाह और पैग़म्बर और वली न हो और बड़ा बेवकूफ़ है वो शख्स जो आँहज़रत (ﷺ) की सीरते तय्यिबा को पढ़कर फिर आपकी नुबुव्वत में शक करे। मा'लूम हुआ कि उसको अक़ल से कोई वास्ता नहीं है। एक जाहिल ग़ैर तर्बियतयाफ़ता (असम्य) क़ौम में ऐसे जामेअ कमालात और मुहज़ज़ब और साहिबे इल्म व मअरिफ़त का वजूद बग़ैर ताइद इलाही और ता'लीमे खुदावन्दी के नामुमकिन है फिर क्या वजह है कि हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत दाऊद (अलैहिमुस्सलाम) तो पैग़म्बर हों और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पैग़म्बर न हों। अल्लाह तआला अहले किताब को इस्माफ़ और समझ दे। (वहीदी)

4317. मुझसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअब्बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्होंने बराअ (रज़ि.) से सुना और उनसे क़बीला कैस के एक आदमी ने पूछा कि क्या तुम लोग नबी करीम (ﷺ) को ग़ज्व-ए-हुनैन में छोड़कर भाग निकले थे? उन्होंने कहा लेकिन हज़ुरे अकरम (ﷺ) अपनी जगह से नहीं हटे थे। क़बीला हवाज़िन के लोग तीरंदाज़ थे, जब उन पर हमने हमला किया तो वो पसपा हो गये फिर हम लोग माले ग़नीमत में लग गये। आख़िर हमें उनके तीरों का सामना करना पड़ा। मैंने खुद देखा था कि हज़ुरे अकरम (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे और हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) उसकी लगाम थामे हुए थे। हज़ुर (ﷺ) फ़र्मा रहे थे, मैं नबी हूँ, इसमें झूठ नहीं। इस्राईल और जुहैर ने बयान किया कि बाद में हज़ुर (ﷺ) अपने ख़च्चर से उतर गये।

٤٣١٧ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعَ الْبَرَاءَ وَسَأَلَهُ رَجُلٌ مِنْ قَيْسِ الْأُرْطُمِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ خَيْبَةٍ؟ فَقَالَ: لَكِنْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَمْ يَفِرْ، كَانَتْ هَوَازِلُ رُمَاةٍ وَإِنَّا لَمَّا حَمَلْنَا عَلَيْهِمُ انْكَشَفُوا، فَكَبَيْتْنَا عَلَى الْقَنَائِمِ فَاسْتَقْبَلَنَا بِالسَّهْمِ، وَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى بَغْلِيهِ الْيَتْمَاءِ، وَإِنَّا أَبَا سَفْيَانَ أَخِيذَ بِرِمَاقِهَا وَهُوَ يَقُولُ: أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ. قَالَ إِسْرَائِيلُ وَزُهَيْرٌ: نَزَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَغْلِيهِ.

[راجع: ٢٨٦٤]

तशरीह: मैदाने जंग में आँहज़रत (ﷺ) श़ाबित क़दम रहे और चार आदमी आपके साथ जमे रहे। तीन बनू हाशिम के एक हज़रत अब्बास (रज़ि.) आपके सामने थे और अबू सुफ़यान (रज़ि.) आपके ख़च्चर की बाग थामे हुए थे, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) आपके दूसरी तरफ़ थे। तिमिज़ी की रिवायत में है कि सौ आदमी भी आपके साथ न रहे और इमाम अहमद और हाकिम की रिवायत में है, इब्ने मसऊद (रज़ि.) से कि सब लोग भाग निकले सिर्फ़ 80 आदमी मुहाजिरीन

और अंसार में से आपके साथ रह गये। मुस्लिम की रिवायत में है कि काफ़िरो ने आपको घेर लिया आप खच्चर से उतर पड़े फिर खाक की एक मुट्ठी ली और काफ़िरो के चेहरे पर मारी, कोई काफ़िर बाक़ी न रहा जिसकी आँख में मिट्टी न घुसी हो। आखिर में काफ़िर हारकर सब भाग गये। आपने फ़र्माया शाहितिल वुजूह या'नी उनके चेहरे काले हों। ये भी आँहज़रत (ﷺ) के बड़े मुअज्ज़ात में से है।

4318, 4319. हमसे सईद बिन इफ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) और मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब के भतीजे (मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शिहाब ने) बयान किया कि मुहम्मद बिन शिहाब ने कहा कि उनसे इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया कि उन्हें मरवान बिन हक़म और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब क़बीला हवाज़िन का वफ़द मुसलमान होकर हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) रुज़सत देने खड़े हुए, उन्होंने आपसे ये दरख़वास्त की कि उनका माल और उनके (क़बीले के क़ैदी) उन्हें वापस कर दिये जाएँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जैसा कि तुम लोग देख रहे हो, मेरे साथ कितने और लोग भी हैं और देखो सच्ची बात मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है। इसलिये तुम लोग एक ही चीज़ पसन्द कर लो या तो अपने क़ैदी ले लो या माल ले लो। मैंने तुम ही लोगों के ख़याल से (क़ैदियों की तब़सीम में) देरी की थी। हुज़ुरे अकरम (ﷺ) ने ताइफ़ से वापस होकर तब़रीबन दस दिन उनका इंतज़ार किया था। आख़िर जब उन पर वाज़ेह हो गया कि आँहज़रत (ﷺ) उन्हें सिर्फ़ एक ही चीज़ वापस करेंगे तो उन्होंने कहा कि फिर हम अपने (क़बीले के) क़ैदियों की वापसी चाहते हैं। चुनौचे आप (ﷺ) ने मुसलमानों को ख़िताब किया, अल्लाह तआला की उसकी शान के मुताबिक़ घना करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअद! तुम्हारे भाई (क़बीला हवाज़िन के लोग) तौबा करके हमारे पास आए हैं, मुसलमान होकर और मेरी राय ये है कि उनके क़ैदी उन्हें वापस कर दिये जाएँ। इसलिये जो शख़्स (बिला किसी दुनियावी मिलाहके) अपनी खुशी से वापस करना चाहे वो वापस कर दे ये बेहतर है और जो लोग अपना हिस्सा न छोड़ना चाहते हों, उनका हक़ कायम रहेगा। वो यूँ कर लें कि उसके बाद जो सबसे पहले ग़नीमत अल्लाह तआला हमें इनायत करेगा उसमें से हम उन्हें उसके बदले में दे देंगे तो वो उनके क़ैदी

4318, 4319 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ حَدَّثَنِي لَيْثٌ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ ح وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي شِهَابٍ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ شِهَابٍ : وَزَعَمَ غُرُوقُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ مُرْوَانَ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ حِينَ جَاءَهُ وَقَدْ هَوَّازَنَ مُسْلِمِينَ، فَسَأَلُوهُ أَنْ يُرَدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالُهُمْ وَسَبْيُهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَنْ نَرَوْنُ وَأَحَبُّ الْخَبِيثِ إِلَى أَصْدَقِهِ فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ إِمَّا السَّبْيَ وَإِمَّا الْمَالَ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِكُمْ))، وَكَانَ أَنْظَرَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِضَعِّ عَشْرَةِ ثَلَاثَةٍ حِينَ قَفَلَ مِنَ الطَّائِفَةِ، فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَيْرَ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلَّا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتَارُ سَبْيَنَا فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيِ الْمُسْلِمِينَ فَآتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ : ((إِنَّمَا بَعْدُ فَإِنْ إِخْوَانَكُمْ قَدْ جَاؤُونَا تَالِيَيْنَ، وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أُرَدَّ إِلَيْهِمْ سَبْيُهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطِيبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ

वापस कर दें। तमाम महाबा (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! हम खुशी से (बिला किसी बदले के) वापस करना चाहते हैं लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया इस तरह हमें इसका इल्म नहीं हुआ कि किसने अपनी खुशी से वापस किया है और किसने नहीं, इसलिये सब लोग जाएँ और तुम्हारे चौधरी लोग तुम्हारा फ़ैसला हमारे पास लाएँ। चुनौचे सब वापस आ गये और उनके चौधरियों ने उनसे बातचीत की फिर वो हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि सबने खुशी और फ़राख़दिली के साथ इजाज़त दे दी है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा यही है वो हदीस जो मुझे क़बील-ए-हवाज़िन के क़ैदियों के बारे में पहुँची है।

(राजेज़: 2307, 2308)

عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نَغْطِيَهُ إِثَاءً مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ : قَدْ طَيَّنَّا ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّا لَا نَذَرِي مَنْ إِذْنٍ مِنْكُمْ فِي ذَلِكَ، بَعَثَ لَمْ يَأْذَنَ فَأَرْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرْضَاؤُكُمْ أَمْوَالُكُمْ)). فَرَجَعَ النَّاسُ فَكَلَّمَهُمْ عُرْضَاءُهُمْ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ قَدْ طَيَّنُوا وَادَّبُوا. هَذَا الَّذِي يُلْقِي عَنْ سَتِي هَوَازِنَ.

[راجع: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

तशरीह: हवाज़िन के वफ़द में 24 आदमी आए थे जिनमें अबू बरक़ान सअदी भी था, उसने कहा या रसूलल्लाह! उन क़ैदियों में आपके दूध के रिश्ते से आपकी कई माएँ और ख़ाला हैं और दूध की बहनें भी हैं। आप हम पर करम फ़र्माएँ और उन सबको आज़ाद फ़र्मा दें। आप पर अल्लाह बहुत करम करेगा। आपने जो जवाब दिया वो रिवायत में यहाँ तफ़सील से बयान हुआ है। आपने सारे क़ैदियों को आज़ाद फ़र्मा दिया।

4320. हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि इमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद इब्ने मुक्कातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि अब हम ग़ज़व-ए-हुनैन से वापस हो रहे तो इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अपनी एक नज़र के बारे में पूछा जो उन्होंने ज़मान-ए-जाहिलियत में ए'तिकाफ़ की मानी थी और आँहुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें उसे पूरी करने का हुक्म दिया और कुछ (अहमद बिन अब्दहज़बी) ने हम्माद से बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने। और इस रिवायत को जरीर बिन हाज़िम और हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने, नबी करीम (ﷺ) से।

٤٣٢٠ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ عُمَرَ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُقَابِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ وَصَحِيحَ اللَّهِ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا قَفَلْنَا مِنْ خَيْبِ سَأَلَ عُمَرُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ نَذْرِ كَانَ نَذْرَهُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ اغْتِكَافًا فَأَمَرَهُ النَّبِيُّ ﷺ بِوَفَائِهِ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ حَمَّادُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ، وَزَوَّاهُ جَرِيرُ بْنُ حَارِثٍ وَحَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तशरीह:

हज़रत नाफ़ेअ बिन समर जलीस हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के आज्ञाद कर्दा हैं। हदीष के फ़न में सनद और हुज्जत हैं। इमाम मालिक फ़र्माते हैं कि जब भी नाफ़ेअ से इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष सुन लेता हूँ तो फिर किसी और रावी से सुनने की ज़रूरत नहीं रहती। सन् 117 हिजरी में वफ़ात पाई।

4321. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह) ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद ने, उन्हें अम्र बिन क़सीर बिन अफ़लह ने, उन्हें क़तादा के मौला अबू मुहम्मद ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़व-ए-हुनैन के लिये हम नबी करीम (ﷺ) के साथ निकले। जब जंग हुई तो मुसलमान जरा डगमगा गये (या'नी आगे पीछे हो गये) मैंने देखा कि एक मुश्रिक एक मुसलमान के ऊपर ग़ालिब हो रहा है, मैंने पीछे से उनकी गर्दन पर तलवार मारी और उसकी जिरह काट डाली। अब वो मुझ पर पलट पड़ा और मुझे इतनी ज़ोर से भींचा कि मौत की तस्वीर मेरी आँखों में फिर गई, आख़िर वो मर गया और मुझे छोड़ दिया। फिर मेरी मुलाक़ात उमर (रज़ि.) से हुई। मैंने पूछा लोगों को क्या हो गया है? उन्होंने फ़र्माया, यही अल्लाह अज़्ज व जल्ल का हुक्म है फिर मुसलमान पलटे और (जंग ख़त्म होने के बाद) हुज़ूर अकरम (ﷺ) तशरीफ़ फ़र्मा हुए और फ़र्माया जिसने किसी को क़त्ल किया हो और उसके लिये कोई गवाह भी रखता हो तो उसका तमाम सामान व हथियार उसे ही मिलेगा। मैंने अपने दिल में कहा कि मेरे लिये कौन गवाही देगा? फिर मैं बैठ गया। बयान किया कि फिर आपने दोबारा यही फ़र्माया। इस बार फिर मैंने दिल में कहा कि मेरे लिये कौन गवाही देगा? और फिर बैठ गया। हुज़ूर (ﷺ) ने फिर अपना फ़र्मान दोहराया तो मैं इस बार खड़ा हो गया। हुज़ूर (ﷺ) ने इस बार फ़र्माया क्या बात है ऐ अबू क़तादा! मैंने आपको बताया तो एक साहब (अस्वद बिन ख़ुज़ाई असलमी) ने कहा कि ये सच कहते हैं और उनके मक्तूल का सामान मेरे पास है। आप मेरे हक़ में उन्हें राज़ी कर दें (कि सामान मुझसे न लें) इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया नहीं अल्लाह की क़सम! अल्लाह के शेरों में से एक शेर, जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ से लड़ता है फिर हुज़ूर (ﷺ) उसका हक़ तुम्हें हर्गिज़ नहीं दे सकते। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि सच कहा, तुम सामान

٤٣٢١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ تَكَيْفٍ بْنِ الْلَحْ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَاِمَ حَتَبٍ فَلَمَّا التَقَيْنَا كَانَتْ لِلْمُسْلِمِينَ جَوْلَةٌ فَرَأَيْتُ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَدْ عَلَا رَجُلًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَضَرَبْتُهُ مِنْ وَرَائِهِ عَلَى حَبْلِ عَائِقِهِ بِالسَّيْفِ لَقَطَعْتُ الذَّرْعَ وَأَقْبَلَ عَلَيَّ لَضَمِّي ضَمَّةً وَجَدْتُ مِثْلَهَا رِيحَ الْمَوْتِ، ثُمَّ أَذْرَكَةُ الْمَوْتِ، فَأَرْسَلَنِي فَلَجَعْتُ عُمَرَ فَقُلْتُ: مَا بَالُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَمَرَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَنْ تَرْجَعُوا وَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ قَتَلَ قَبِيلًا لَهُ عَلَيْهِ بَيْتَةٌ فَلَهُ سَلْبَةٌ))، فَقُلْتُ مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مِثْلُهُ قَالَ: ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مِثْلُهُ فَقُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ، قَالَ: ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مِثْلُهُ، فَقُلْتُ فَقَالَ: ((مَا لَكَ يَا أَبَا قَتَادَةَ؟)) فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ رَجُلٌ: صَدَقَ وَسَلْبَةُ عِنْدِي فَأَرْسَلَنِي فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: لَا هَا اللَّهُ إِذَا لَا يَفْعِدُ إِلَى اسْمٍ مِنْ أَسْمَاءِ اللَّهِ، يُقَابِلُ عَنْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ﷺ لِيُغْطِيكَ سَلْبَةُ فَقَالَ

अबू क़तादा (रज़ि.) को दे दो। उन्होंने सामान मुझे दे दिया। मैंने उस सामान से क़बीला सलमा के मुहल्ले में एक बाग़ ख़रीदा। इस्लाम के बाद ये मेरा पहला माल था। जिसे मैंने हासिल किया था। (रजेअ: 2100)

النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ فَأَعْطَاهُ)) فَأَتَيْتُهُ بِهِ مَخْرُوفًا فِي بَنِي سَلَمَةَ، فَإِنَّهُ لَأَوَّلُ مَالٍ تَأْتَلَتْهُ فِي الْإِسْلَامِ.

[راجع: 2100]

٤٣٢٢- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ كَيْسٍ بْنِ الْقَلْحِ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ أَبَا قَتَادَةَ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ حُنَيْنٍ نَظَرْتُ إِلَى رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ يُقَاتِلُ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، وَآخَرُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، يَخْلَعُهُ مِنْ وَرَائِهِ لِيَقْتُلَهُ فَأَسْرَعْتُ إِلَى الَّذِي يَخْلَعُهُ فَرَفَعُ يَدَهُ لِيَضْرِبَنِي وَأَضْرِبُ يَدَهُ فَنَقَطْتَهَا، ثُمَّ أَخَذَنِي فَصَنَعَنِي صَنَاعًا شَدِيدًا حَتَّى تَحَوَّرْتُ ثُمَّ تَرَكَ فَخَلَّلَ وَدَقَّقَهُ، ثُمَّ قَتَلَهُ، وَانْهَزَمَ الْمُسْلِمُونَ وَانْهَزَمْتُ مَعَهُمْ، فَإِذَا بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فِي النَّاسِ، فَقُلْتُ لَهُ: مَا شَأْنُ النَّاسِ، قَالَ: أَمَرَ اللَّهُ ثُمَّ تَرَأَّجَعَ النَّاسُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ أَقَامَ بَيْنَهُ عَلَى قَبْلِ قَتْلِهِ، فَلَهُ سَلْبُهُ))، فَقُمْتُ لِأَتَبَسَّ بَيْنَهُ عَلَى قَبْلِي فَلَمْ أَرَ أَحَدًا يَشْهَدُ لِي، فَجَلَسْتُ ثُمَّ بَدَأَ لِي فَلَذَكَّرْتُ أَمْرَهُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: مِلَاحُ هَذَا الْقَبِيلِ الَّذِي يَذْكُرُ عِنْدِي، فَأَرَضِيهِ مِنْهُ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: كَلَّا، لَا يُعْطِيهِ أَصْبَغُ مِنْ لُرَيْشٍ وَيَذْغُ اسْتَدَا مِنْ أَسَدِ اللَّهِ يُقَاتِلُ عَنْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ﷺ، قَالَ: فَقَامَ رَسُولُ

4322. और लैथ बिन सअद ने बयान किया, मुझसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया था कि उनसे इमर बिन क़बीर बिन अफ़्लह ने, उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) के मौला अबू मुहम्मद ने कि अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया, ग़ज़्व-ए-हुनैन के दिन मैंने एक मुसलमान को देखा कि एक मुश्रिक से लड़ रहा था और एक दूसरा मुश्रिक पीछे से मुसलमान को क़त्ल करने की घात में था, पहले तो मैं उसी की तरफ़ बढ़ा, उसने अपना हाथ मुझे मारने के लिये उठाया तो मैंने उसके हाथ पर चार करके काट दिया। उसके बाद वो मुझसे चिमट गया और इतनी ज़ोर से मुझे पींचा कि मैं डर गया। आख़िर उसने मुझे छोड़ दिया और ढीला पड़ गया। मैंने उसे धक्का देकर क़त्ल कर दिया और मुसलमान भाग निकले और मैं भी उनके साथ भाग पड़ा। लोगों में इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) नज़र आए तो मैंने उनसे पूछा, लोग भाग क्यों रहे हैं? उन्होंने फ़र्माया कि अल्लाह तआला का यही हुक्म है, फिर लोग आँहुज़ूर (ﷺ) के पास आकर जमा हो गये। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स इस पर गवाह कायम कर देगा कि किसी मक्तूल को उसी ने क़त्ल किया है तो उसका सारा सामान उसे मिलेगा। मैं अपने मक्तूल पर गवाह के लिये उठा लेकिन मुझे कोई गवाह नहीं दिखाई दिया। आख़िर मैं बैठ गया फिर मेरे सामने एक सूरत आई। मैंने अपने मामले की ख़बर हुज़ुरे अकरम (ﷺ) को दी। आपके पास बैठे हुए एक साहब (अस्वद बिन खुज़ाई असलमी रज़ि.) ने कहा कि उनके मक्तूल का हथियार मेरे पास है, आप मेरे हक्क में इन्हें राजी कर दें। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा हर्गिज़ नहीं, अल्लाह के शेरों में से एक शेर को छोड़कर जो अल्लाह और उसके रसूल के लिये जंग करता है, उसका हक्क क़ुरैश के एक बुजदिल को आँहुज़रत (ﷺ) नहीं दे सकते। अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया चुनौचे हुज़ूर

(ﷺ) खड़े हुए और मुझे वो सामान अता फ़र्माया। मैंने उससे एक बाग़ ख़रीदा और ये सबसे पहला माल था जिसे मैंने इस्लाम लाने के बाद हासिल किया था। (राजेअ : 2100)

اللَّهُ فَادَاهُ إِلَيَّ فَاشْتَرَيْتُ مِنْهُ خِرَافًا
فَكَانَ أَوَّلَ مَالٍ تَأْتَلَنِي فِي الْإِسْلَامِ.

[راجع: ٢١٠٠]

तशरीह : ग़ज़्व-ए-हुनैन के बारे में मज़ीद मा'लूमात नीचे दर्ज की गई हैं। ग़ज़्व-ए-बद्र के बाद दूसरा ग़ज़वा जिसका तज़क़ि़रा इशारा नहीं बल्कि नाम की स़राहत के साथ कुर्आन मज़ीद में आया है वो ग़ज़्व-ए-हुनैन है। हुनैन एक वादी का नाम है जो शहर त्राइफ़ से 30-40 मील उत्तर और पूर्व में जबले औतास में वाक़ेअ है। ये अरब के मशहूर जंगल व जंगबाज़ कबीला हवाज़िन का मस्कन (ठिकाना) था और इस कबीला के मल्क-ए-तीरंदाज़ी की शुरुत दूर दूर थी। उन्होंने फ़तह-ए-मक्का की ख़बर पाकर दिल में कहा कि जब कु़रेश मुक़ाबला में न ठहर सके तो अब हमारी भी ख़ैर नहीं और खुद ही जंग व क़िताल का सामान शुरू कर दिया और चाहा कि मुसलमानों पर जो अभी मक्का ही में यकज़ा था, अचानक आ पड़ और इसी मंसूबे में एक दूसरा पुर कुव्वत और जंगल कबीला बनी प्रक़ीफ़ भी उनका शरीक हो गया और हवाज़िन और प्रक़ीफ़ के इतिहाद ने दुश्मन की जंगी कुव्वत को बहुत ही बढ़ा दिया। हुज़ूर (ﷺ) को जब उसकी मो'तबर ख़बर मिल गई तो एक अच्छे जनरल की तरह आप खुद ही पेशक़दमी करके बाहर निकल आए और मुक़ामे हुनैन पर ग़नीम के सामने स़फ़ अराई कर ली। आपके लश्कर की ता'दाद बारह हज़ार थी। उनमें दस हज़ार तो वही फ़िदाई जो मदीना से हम-रकाब आए थे। दो हज़ार आदमी मक्का के भी शामिल हो गये मगर उनमें सब मुसलमान न थे कुछ तो अभी बदस्तूर मुश्किनी ही थे और कुछ नौ मुस्लिम की बजाय, नाम के मुस्लिम थे। बहरहाल मुजाहिदीन की इस जमइयते क़रीर पर मुसलमानों को नाज़ हो चला कि जब हम ता'दादे क़लील में रहकर बराबर फ़तह पाते आए तो अब की तो ता'दाद इतनी बढ़ी है, अब फ़तह में क्या शक हो सकता है। लेकिन जब जंग शुरू हुई तो उसके कुछ दौर इस्लामी लश्कर पर बहुत ही सख़्त गुज़रे और मुसलमानों का अपनी क़रत ता'दाद पर फ़ख़्र करना ज़रा भी उनके काम न आया। एक मौक़े ऐसा भी पेश आया कि इस्लामी फ़ौज को एक तंग नशीबी वादी में उतरना पड़ा और दुश्मन ने क़मीनगाह (घात की जगह) से अचानक उन पर तीरों की बारिश शुरू कर दी। ख़ैर फिर ग़ैबी इम्दाद का नुज़ूल हुआ और आखिरी फ़तह मुसलमानों ही के हिस्से में रही। कुर्आन मज़ीद ने इस सारे नशीब व फ़राज़ की नक़शाक़शी अपने अल्फ़ाज़ में कर दी है, लक़द नसरकुमुल्लाहु फ़ी मवातिन क़रीरतिन व यौम हुनैनिन इज़ अज़बतकुम क़स्रतुकुम फ़लम तुग़नि अन्कुम शैअव्व ज़ाक़त अलैकुमुल्अर्जु बिमा रहुबत शुम्म बल्लैतुम मुदबिरीन शुम्म अन्जलल्लाहु सकीनतहु अला रसूलिही व अललमूमिनीन व अन्जल जुनूदल्लम तरौहा व अज़बल्लज़ीन क़फ़र व ज़ालिक ज़ाउल्काफ़िरीन (अत्तीबा : 25) अल्लाह ने यकीनन बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जबकि तुमको अपनी क़रत ता'दाद पर ग़ुरूर हो गया था तो वो तुम्हारे कुछ काम न आई और तुम पर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राखी के तंग करने लगी फिर तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए। उसके बाद अल्लाह ने अपनी तरफ़ से अपने रसूल और मोमिनीन पर तसल्ली नाज़िल फ़र्माई और उसने ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुम देख न सके और अल्लाह ने काफ़ि़रों को अज़ाब में पकड़ा। यही बदला है काफ़ि़रों के लिये। ग़ज़्व-ए-हुनैन का ज़माना शव्वाल सन् 8 हिज़री मुताबिक़ जनवरी सन् 663 ईस्वी का है। (कुर्आनी सीरते नबवी) हदीषे हाज़ा के ज़ेल अल्लामा क़स्तलानी (रह) लिखते हैं, क़ालल्हाफ़िज़ अबू अब्दिल्लाहि अल्हुमैदी अल्उन्दुलुसी समिअतु बअज़ अलिलइल्मि यक़ूलु बअद ज़िक्कि हाज़ल्हदीषिलौ लम यकुन मिन फ़ज़ीलतिस्मिदीकि (रज़ि.) इल्ला हाज़ा फ़इनहू बिषाक्रिबि अमलिही व शिहति तौफीकिही व सिदकि तहक्कीकिही बाद इलल्क़ौलिल्हक्कि फ़ज़ज़र व अप़ता व हक़म व अम्ज़ा व अख़बारनी अश्शरीअत अन्हू (ﷺ) बिहज़तिही व बैन यदैहि बिमा सहक़त फ़ीहि व अज़ाहू अला कुव्वतिही व हाज़ा मिन ख़स्राइसिहिल्कुब्बा इला मा ला युहस्रा मिन फ़ज़ाइलिहिल्उख़्रा (क़स्तलानी) या'नी हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह उन्दलसी ने कहा कि मैंने इस हदीष के ज़िक्क में कुछ अहले इल्म से सुना कि अगर हज़रत सिदीक़े अक़बर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल में और कोई हदीष न होती सिर्फ़ यही एक होती तो भी उनके फ़ज़ाइल के लिये यही काफ़ी थी जिससे उनका इल्म उनकी पुख़्तगी कुव्वते इस्लाम और इम्दद तौफीक़ और तहक्कीके हक़ वग़ैरह औसफ़ हमीदा ज़ाहिर हैं। उन्होंने हक़ बात कहने में किस क़दर दिलेरी से काम लिया और फ़त्वा देने के साथ ग़लत कहने वाले को डांटा और सबसे बड़ी ख़ूबी ये कि आँहज़रत (ﷺ) के दरबारे आली में आवाज़े हक़ को बुलन्द किया, जिसकी आँहज़रत (ﷺ) ने भी तस्दीक़ की और हूबहू उसे जारी फ़र्मा दिया। ये

उमूर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ख़साइस में बड़ी अहमियत रखते हैं। अल्लाह तआला हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की रू पर बेशुमार सलाम और रहमत नाज़िल फ़र्माए। आमीन (रज़ि.)

बाब 56 : गज़्व-ए-औतास का बयान

٥٦ - باب غزاة أوطاس

तशरीह: औतास कबीला हवाज़िन के मुल्क में एक वादी का नाम है। ये जंगे हुनैन के बाद हुई क्योंकि हवाज़िन के कुछ लोग भागकर औतास की तरफ़ तो औतास पर आपने अबू आमिर अश्अरी (रज़ि.) को सरदार बना करके लश्कर भेजा और ताइफ़ की तरफ़ बजाते ख़ास तशरीफ़ ले गये। औतास में दुरैद बिन सिम्मा सरदार औतास को खबीआ बिन रफ़ीअ या जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) ने क़त्ल किया था।

4323. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) गज़्व-ए-हुनैन से फ़ारिश हो गये तो आपने एक दस्ते के साथ अबू आमिर (रज़ि.) को वादिये औतास की तरफ़ भेजा। इस मअरका में दुरैद इब्नुल सिम्मा से मुकाबला हुआ। दुरैद क़त्ल कर दिया गया और अल्लाह तआला ने उसके लश्कर को शिकस्त दे दी। अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू आमिर (रज़ि.) के साथ औहज़रत (ﷺ) ने मुझे भी भेजा था। अबू आमिर (रज़ि.) के घुटने में तीर आकर लगा। बनी ज़अशम के एक शख्स ने उन पर तीर मारा था और उनके घुटने में उतार दिया था। मैं उनके पास पहुँचा और कहा चचा! ये तीर आप पर किसने फेंका है? उन्होंने अबू मूसा (रज़ि.) को इशारे से बताया कि वो ज़अशमी मेरा क़ातिल है जिसने मुझे निशाना बनाया है। मैं उसकी तरफ़ लपका और उसके करीब पहुँच गया लेकिन जब उसने मुझे देखा तो वो भाग पड़ा मैंने उसका पीछा किया और मैं ये कहता जाता था, तुझे शर्म नहीं आती, तुझसे मुकाबला नहीं किया जाता। आखिर वो रुक गया और हमने एक-दूसरे पर तलवार से वार किया। मैंने उसे क़त्ल कर दिया और अबू आमिर (रज़ि.) से जाकर कहा कि अल्लाह ने आपके क़ातिल को क़त्ल करवा दिया। उन्होंने फ़र्माया कि मेरे (घुटने में से) तीर निकाल ले, मैंने निकाल दिया तो उससे पानी जारी हो गया फिर उन्होंने फ़र्माया भतीजे! हुजुरे अकरम (ﷺ) को मेरा सलाम पहुँचाना और अर्ज़ करना कि मेरे लिये मफ़िरत की दुआ फ़र्माएँ। अबू आमिर (रज़ि.) ने लोगों पर मुझे अपना नाइब बना दिया। उसके बाद वो थोड़ी देर और ज़िन्दा रहे और शहादत पाई। मैं वापस हुआ और हुजुरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचा। आप अपने घर में बान की एक चारपाई पर तशरीफ़ रखते

٤٣٢٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى وَحُصَيْنٍ قَالَ: لَمَّا فَرَّغَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ حُنَيْنٍ بَعَثَ أَبَا عَامِرٍ عَلَى جَيْشٍ إِلَى أَوْطَاسٍ، فَلَقِيَ دُرَيْدَ بْنَ الصَّمَةِ فَقَتَلَ دُرَيْدًا وَهَزَمَ اللَّهُ أَصْحَابَهُ، قَالَ أَبُو مُوسَى: وَبَعَثَنِي مَعَ أَبِي عَامِرٍ قَرُمِي أَبُو عَامِرٍ فِي رُكْبَتِهِ، وَمَا جُشِمِي بِهِمْ فَأَتَيْتُهُ فِي رُكْبَتِهِ فَأَتَيْتُهُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ: يَا عَمَّ مَنْ رَمَاكَ؟ فَأَشَارَ إِلَيَّ أَبُو مُوسَى، فَقَالَ: ذَلِكَ قَائِلِي الْإِذِي رَمَانِي، فَقَصَدْتُ لَهُ فَلَجَقْتُهُ، فَلَمَّا رَأَيْتُ وَلِيَّ فَأَتَيْتُهُ وَجَعَلْتُ أَقُولُ لَهُ أَلَا تَسْتَحْيِي أَلَا تَتُبْتُ فَكُفْ فَاسْتَخْلَفْنَا ضَرْبَتَيْنِ بِالسَّيْفِ فَقَتَلْتُهُ، ثُمَّ قُلْتُ لِأَبِي عَامِرٍ: قَتَلَ اللَّهُ صَاحِبَكَ، قَالَ فَأَنْزَعُ هَذَا السَّهْمَ، فَنَزَعْتُهُ فَنَزَا مِنْهُ الْمَاءُ، قَالَ: يَا ابْنَ أَخِي أَفَرَى النَّبِيَّ السَّلَامَ وَقُلْ لَهُ اسْتَغْفِرْ لِي، وَاسْتَخْلَفَنِي أَبُو عَامِرٍ عَلَى النَّاسِ لَمَكَثَ يَسِيرًا ثُمَّ مَاتَ فَرَجَعْتُ فَلَدَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

थे। इस पर कोई बिस्तर बिछा हुआ नहीं था और बान के निशानात आपकी पीठ और पहलू पर पड़ गये थे। मैंने आपसे अपने और अबू आमिर (रज़ि.) के वाक़ियात बयान किये और ये कि उन्होंने दुआ-ए-कुनूत मग़्फ़िरत के लिये दरख़वास्त की है, और हज़रत (ﷺ) ने पानी त़लब फ़र्माया और वुजू किया फिर हाथ उठाकर दुआ की, ऐ अल्लाह! इबैद अबू आमिर (रज़ि.) की मग़्फ़िरत फ़र्मा। मैंने आपकी बग़ल में सफ़ेदी (जब आप दुआ कर रहे थे) देखी फिर हज़ूर (ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! क़यामत के दिन अबू आमिर (रज़ि.) को अपनी बहुत सी मख़लूक से बुलन्दतर दर्जा अता फ़र्माइयो। मैंने अर्ज़ किया और मेरे लिये भी अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआ फ़र्मा दीजिए। हज़ूर (ﷺ) ने दुआ की ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह इब्ने क़ैस अबू मूसा के गुनाहों को भी मुआफ़ कर और क़यामत के दिन अच्छा मुक़ाम अता फ़र्माइयो। अबू बुर्दा ने बयान किया कि एक दुआ अबू आमिर (रज़ि.) के लिये थी और दूसरी अबू मूसा (रज़ि.) के लिये। (राजेअ: 2884)

لِي تَنِيَّ عَلَى سَرِيرٍ مُّزَقَّلٍ وَخَلَّيَ فِرَاشَ قَدْ
اَنَزَّ وَمَا السَّرِيرُ لِي ظَهْرِي وَجَنَنِي،
فَاغْتَرَبْتُ بِغَيْرِنَا وَغَتَرَ أَبِي غَامِرٌ وَقَالَ: قُلْ
لَهُ اسْتَغْفِرْ لِي فَذَعَا بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ رَفَعَ
يَدَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِكَ أَبِي
غَامِرٍ)) وَرَأَيْتُ تَيَاضَ ابْنَيْهِ ثُمَّ قَالَ :
((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَوْقَ نَكِيرٍ مِنْ
خَلْقِكَ مِنَ النَّاسِ)) فَقُلْتُ وَلِي فَاسْتَغْفِرُ
فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِكَ اللَّهِ بْنِ قَيْسٍ
ذُنْبَهُ، وَادْخُلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَدْخَلًا
كَرِيمًا)). قَالَ أَبُو بُرْدَةَ: اخْتَدَاهُمَا لِأَبِي
غَامِرٍ وَالْأُخْرَى لِأَبِي مُوسَى.

[راجع: ٢٨٨٤]

तशरीह: हदीष में एक जगह लफ़्ज़ व अलैहि फुरूश आया है। यहाँ (मा) नाफ़िया रावी की भूल से रह गया है। इसीलिये तर्जुमा ये किया गया है कि जिस चारपाई पर आप बैठे हुए थे। इस पर कोई बिस्तर बिछा हुआ नहीं था। इस हदीष में दुआ करने के लिये रसूले करीम (ﷺ) के हाथ उठाने का ज़िक्र है जिसमें उन लोगों के क़ौल की तर्दीद है जो दुआ में हाथ उठाना सिर्फ़ दुआ-ए-इस्तिस्क्रा के साथ ख़ास करते हैं। (क़स्तलानी)

बाब 57: ग़ज़्व-ए-ताइफ़ का बयान जो शव्वाल सन 8 हिजरी में हुआ. ये मूसा बिन इब्बा ने बयान किया

٥٧- باب غَزْوَةِ الطَّائِفِ فِي شَوَّالٍ
سَنَةِ ثَمَانٍ قَالَ: مُوسَى بْنُ عَقَبَةَ:

तशरीह: ताइफ़ मक्का से तीस मील के फ़ासले पर एक बस्ती का नाम है। उसको ताइफ़ इसलिये कहते हैं कि ये तूफ़ान नूह में पानी के ऊपर तैरती रही थी या हज़रत जिब्रैल (अलैहिस्सलाम) ने उसे मुल्के शाम से लाकर का'बा के गिर्द तवाफ़ कराया। कुछ ने कहा उसके गिर्द एक दीवार बनाई गई थी इसलिये उसका नाम ताइफ़ हुआ। ये दीवार क़बीला स़दफ़ के एक शाख़्स ने बनवाई थी जो हज़रे मौत से ख़ून करके यहाँ चला आया था। बड़ी ज़रख़ैज़ जगह है यहाँ की ज़मीन में तमाम अक्सास के मेवे फल, ग़ल्ले पैदा होते हैं। मौसम बहुत खुशग्वार मुअतदिल रहता है। गर्मा में रूस-ए-मक्का बेशतर ताइफ़ चले जाते हैं।

4324. हमसे अब्दुल्लाह बिन जुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमने सुफ़यान बिन इययना से सुना, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे ज़ैनब बन्ते अबी

٤٣٢٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ سَمِعَ سُفْيَانَ،
حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ زَيْنَبِ ابْنَةِ أَبِي

सलमाने और उनसे उनकी वालिदा उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए तो मेरे पास एक मुखन्नब (हिजड़ा) बैठा हुआ था फिर आँहज़रत (ﷺ) ने सुना कि वो अब्दुल्लाह बिन उमय्या से कह रहा था कि ऐ अब्दुल्लाह! देखो अगर कल अल्लाह तआला ने त्राइफ़ की फ़तह तुम्हें इनायत की तो ग़ीलान बिन सलमा की बेटी (बादिया नामी) को ले लेना वो जब सामने आती है तो पेट पर चार बल और पीठ मोड़कर जाती है तो आठ बल दिखाई देते हैं (या'नी बहुत मोटी ताज़ी औरत है) इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये शख्स अब तुम्हारे घर में न आया करे। इब्ने उययना ने बयान किया कि इब्ने जुरैज ने कहा, उस मुखन्नब का नाम हीत था। हमसे महमूद ने कहा, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने इसी तरह बयान किया और ये इज़ाफ़ा किया है कि हुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त त्राइफ़ का मुहासरा किये हुए थे। (राजेअ: 5235, 5778)

4325. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्म बिन दीनार ने, उनसे अबुल अब्बास नाबीना शायर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने त्राइफ़ का मुहासरा किया तो दुश्मन का कुछ भी नुक़सान नहीं किया। आख़िर आपने फ़र्माया कि अब इंशाअल्लाह! हम वापस हो जाएँगे। मुसलमानों के लिये नाकाम लौटना बड़ा श्राक़ गुज़रा। उन्होंने कहा कि वाह, बग़ैर फ़तह के हम वापस चले जाएँ (रावी ने) एक बार (नज़्हुबु) के बजाय (नक्फ़ुलु) का लफ़ज़ इस्ते'माल किया या'नी हम लौट जाएँ और त्राइफ़ को फ़तह न करें (ये क्यूँकर हो सकता है) इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर सुबह सवेरे मैदान में जंग के लिये आ जाओ। सहाबा सुबह सवेरे ही आ गये लेकिन उनकी बड़ी ता'दाद ज़ख़मी हो गई। अब फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंशाअल्लाह हम कल वापस चलेंगे। सहाबा ने उसे बहुत पसन्द किया। आँहज़ूर (ﷺ) इस पर हंस पड़े। और सुफ़यान (रज़ि.) ने एक बार बयान किया कि आँहज़ूर (ﷺ) मुस्कुरा दिये। बयान किया कि हमैदी ने कहा कि हमसे सुफ़यान ने ये पूरी ख़बर बयान की। (दीगर मक़ाम: 6076, 7480)

سَلَمَةُ عَنْ أُمِّهَا أُمِّ سَلَمَةَ، دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدِي مَخْتٌ فَسَمِعَهُ يَقُولُ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُمِّةٍ: يَا عَبْدَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الطَّائِفَ هَذَا، لَعَلَّكَ بَأْتِيهِ غِلَانٌ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ بِأَرْبَعٍ وَتُدْبِرُ بِثَمَانٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَا يَدْخُلُنَّ هَؤُلَاءُ عَلَيْكُمْ)) قَالَ ابْنُ عُثَيْمَةَ وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ الْمَخْتُ هِيتُ.

[طرفاء في: ٥٢٣٥، ٥٨٨٧].

..... - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ بِهَذَا وَزَادَ وَهُوَ مُحَاصِرُ الطَّائِفِ يَوْمَئِذٍ.

٤٣٢٥ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ الشَّاعِرِ الْأَعْمَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: لَمَّا حَاصَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الطَّائِفَ فَلَمْ يَنْلُ مِنْهُمْ شَيْئًا قَالَ: ((إِنَّا قَائِلُونَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ)) فَتَقَلَّ عَلَيْهِمْ وَقَالُوا: نَذْهَبُ وَلَا نَفْتَحُهُ، وَقَالَ مَرَّةً نَقْلُ فَقَالَ: ((اغْدُوا عَلَى الْقِتَالِ)) فَغَدَوْا فَأَصَابَهُمْ جَرَّاحٌ فَقَالَ: ((إِنَّا قَائِلُونَ غَدًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ)) فَأَعْجَبَهُمْ فَضْحِكُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً: فَتَبَسَّمَ قَالَ: قَالَ الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الْخَبَرُ كُلُّهُ.

[طرفاء في: ٦٠٨٦، ٧٤٨٠].

तर्ज़ीह : उस जंग में उलटा मुसलमानों ही का नुक़सान हुआ क्योंकि त्राइफ़ वाले क़िले के अंदर थे और एक बरस का ज़ख़ीरा उन्होंने उसके अंदर रख लिया था। आँहज़रत (ﷺ) अठारह दिन या पच्चीस दिन या और कम व बेश उसका मुहासरा (घेराव) किये रहे। काफ़िर क़िला के अंदर से मुसलमानों पर तीर बरसाते रहे, लोहे के टुकड़े गर्म कर करके फेंकते जिससे कई मुसलमान शहीद हो गये। आपने नौफ़िल बिन मुआविया (रज़ि.) से मश्वरा किया, उन्होंने कहा ये लोग लोमड़ी की तरह हैं जो अपने बिल में घुस गये हैं। अगर आप यहाँ ठहरे रहेंगे तो लोमड़ी पकड़ पाएँगे अगर छोड़ देंगे तो लोमड़ी आपका कुछ नुक़सान नहीं कर सकती। (वहीदी)

4326, 4327. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर (मुहम्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने अबू उम्मान नहदी से सुना, कहा मैंने सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) से सुना, जिन्होंने सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया था और अबूबकरा (रज़ि.) से जो त्राइफ़ के क़िले पर चन्द मुसलमानों के साथ चढ़े थे और इस तरह नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे। उन दोनों सहाबियों ने बयान किया कि हमने हुज़ुरे अकरम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि जो शख़्स जानते हुए अपने बाप के सिवा किसी दूसरे की तरफ़ अपने आपको मन्सूब करे तो उस पर ज़न्नत हाराम है। और हिशाम ने बयान किया और उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें आसिम ने, उन्हें अबुल आलिया या अबू उम्मान नहदी ने, कहा कि मैंने सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) और अबूबकरा (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आसिम ने बयान किया कि मैंने (अबुल आलिया या अबू उम्मान नहदी रज़ि.) से कहा आपसे ये रिवायत ऐसे दो अस्थाब (सअद और अबूबकरा रज़ि.) ने बयान की है कि यक्कीन के लिये उनका नाम काफ़ी हैं। उन्होंने कहा यक्कीन उनमें से एक (सअद बिन अबी वक्कास रज़ि. तो वो हैं जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में सबसे पहले तीर चलाया था और दूसरे (अबूबकरा रज़ि.) वो हैं जो तीसवें आदमी थे उन लोगों में जो त्राइफ़ के क़िले से उतरकर आँहज़रत (ﷺ) के पास आए थे।

(दीगर मक़ाम : 6767)

तर्ज़ीह : हाफ़िज़ ने कहा ये हिशाम की तअलीक़ मुझे मौसूलन नहीं मिली और इस सनद के बयान करने से इमाम बुखारी (रह) की गर्ज़ ये है कि अगली रिवायत की तफ़्सील हो जाए, उसमें मुज्मलन ये मज़कूर था कि कई आदमियों के साथ क़िले पर चढ़े थे, इसमें बयान है कि वो तीस आदमी थे।

4328. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे

— ٤٣٢٧، ٤٣٢٦ — حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَاصِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا غُثَمَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا وَهُوَ أَوَّلُ مَنْ رَمَى بِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَبَا بَكْرَةَ، وَكَانَ تَسْوَرُ حِصْنَ الطَّائِفِ فِي أَنَسٍ فَجَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: سَمِعْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((مَنْ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ وَهُوَ يَعْلَمُ، فَالْجَنَّةُ عَلَيْهِ حَرَامٌ)). وَقَالَ هِشَامٌ: وَأَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، أَوْ أَبِي بَنِ غُثَمَانَ التَّهْدِي قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا وَأَبَا بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ عَاصِمٌ: قُلْتُ لَقَدْ شَهِدَ عِنْدَكَ رَجُلَانِ حَسْبَكَ بِهِمَا قَالَ: أَجَلٌ أَمَا أَحَدُهُمَا فَأَوَّلُ مَنْ رَمَى بِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَمَّا الْآخَرُ فَنَزَلَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَأَيْتَ ثَلَاثَةً وَعِشْرِينَ مِنَ الطَّائِفِ. [طَرَفُهُ فِي: ٦٧٦٧].

— ٤٣٢٨ — حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا

दी, उन्हें सप्रधान बिन यअला बिन उमय्या ने खबर दी कि यअला ने कहा काश! मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस वक्त देख सकता जब आप पर वहा नाजिल होती है। बयान किया कि हुजुरे अकरम (ﷺ) जिअराना में ठहरे हुए थे। आपके लिये एक कपड़े से साया कर दिया गया था और उसमें चन्द सहाबा (रजि.) भी आपके साथ मौजूद थे। इतने में एक अअराबी आए वो एक जुब्बा पहने हुए थे, खुशबू में बसा हुआ। उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! एक ऐसे शख्स के बारे में आपका क्या हुक्म है जो अपने जुब्बा में खुशबू लगाने के बाद उमरह का एहराम बाँधे? फ़ौरन ही उमर (रजि.) ने यअला (रजि.) को आने के लिये हाथ से इशारा किया। यअला (रजि.) हाज़िर हो गये और अपना सर (औहज़रत ﷺ को देखने के लिये) अंदर किया (नुज़ुले वहा की कैफ़ियत से) औहज़ुर (ﷺ) का बेहर-ए-मुबारक सुर्ख हो रहा था और ज़ोर ज़ोर से सांस चल रही थी। थोड़ी देर तक यही कैफ़ियत रही फिर ख़त्म हो गई तो आपने पूछा कि अभी उमरह के बारे में जिसने सवाल किया था वो कहाँ है? उन्हें तलाश करके लाया गया तो आपने फ़र्माया कि जो खुशबू तुमने लगा रखी है उसे तीन मर्तबा धो लो और जुब्बा उतार दो और फिर उमरह में वही काम करो जो हज्ज में करते हो।

(राजेअ: 1536)

أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ، أَنَّ جَبْرِانَ بْنَ يَغْلَى بْنَ أُمَيَّةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ يَغْلَى كَانَ يَقُولُ : كَتَبَنِي أَرَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، حِينَ يُنَزَّلُ عَلَيْهِ قَالَ قَتَلْنَا النَّبِيَّ ﷺ بِالْجَمْرَةِ وَعَلَيْهِ قَوْلُ قَدْ أَهْلَ بِهِ مَقْعٌ لِيَوْمِ نَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ إِذْ جَاءَهُ أَغْرَابِيٌّ عَلَيْهِ جَبَّةٌ مَتَمَتِّعٌ بِطِبْرِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَرَى لِي وَجْهِي أَحْرَمَ بِعُمْرَةٍ لِي جَبَّةٌ بِمَتَمَتِّعٍ بِالطَّبِيرِ؟ فَأَشَارَ عُمَرُ إِلَى يَغْلَى بِدُخَانِ أَنْ تَعَالَ فَجَاءَهُ يَغْلَى فَأَدْخَلَ رَأْسَهُ لِإِذَا النَّبِيُّ ﷺ مُخْمَرٌ الْوَجْهَ يَغْطِي كَذَلِكَ سَاعَةً، ثُمَّ سُرِّي عَنْهُ فَقَالَ : ((أَنْتَ الَّذِي يَسْأَلُنِي عَنْ الْعُمْرَةِ أَيُّهَا؟)) فَاتَّخَذَ الرَّجُلُ قَائِمِي بِهِ، فَقَالَ : ((أَنَا الطَّبِيرُ الَّذِي بَكَ فَاطْبِئْهُ فَلَا تُثَرِّمَاتٍ، وَأَنَا الْجَبَّةُ فَاتَّوَعَّظْهَا ثُمَّ اصْنَعْ لِي عُمْرَتَكَ كَمَا تَصْنَعُ لِي حَبْلَكَ)).

[راجع: ١٥٣٦]

तर्ज़ुह:

इस हदीष की बहस किताबुल हज्ज में गुजर चुकी है। क़स्तलानी (रह) ने कहा हज्जतुल विदाअ की हदीष इसकी नासिख है और ये हदीष मन्सूख है। हज्जतुल विदाअ की हदीष में मन्कूर है कि हज़रत आइशा (रजि.) ने एहराम बाँधते वक्त औहज़रत (ﷺ) के खुशबू लगाई थी। लिहाज़ा खुशबू का इस्तेमाल जाइज़ है।

4330. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अमर बिन यह्या ने, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम (रजि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-हुनैन के मौके पर अल्लाह तअला ने अपने रसूल को जो ग़नीमत दी थी आपने उसकी तक्सीम कमज़ोर ईमान के लोगों में (जो फ़तहे-मक्का के बाद ईमान लाए थे) कर दी और अंसार को उसमें से कुछ नहीं दिया। उसका उन्हें कुछ मलाल हुआ कि वो माल जो औहज़रत (ﷺ) ने दूसरों को दिया उन्हें क्या नहीं दिया। आपने उसके बाद

٤٣٣٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ، حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عُبَادِ بْنِ قُيُومٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ بْنِ عَاصِمٍ، قَالَ: لَمَّا آتَاكَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ حُنَيْنٍ قَسَمَ فِي النَّاسِ فِي الْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ، وَلَمْ يُعْطِ الْأَنْصَارَ شَيْئًا

उन्हें खिन्नाब किया और फ़र्माया ऐ अंसारियों! क्या मैंने तुम्हें गुमराह नहीं पाया था फिर तुमको मेरे ज़रिये अल्लाह तआला ने हिदायत नसीब की और तुम में आपस में दुश्मनी और ना इत्तिफ़ाकी थी तो अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिये तुममें बाहम उल्फ़त पैदा की और तुम मुहताज थे अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिये ग़नी किया। आपके एक एक जुम्ले पर अंसार कहते जाते थे कि अल्लाह और रसूल के हम सबसे ज़्यादा एहसानमद हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी बातों का जवाब देने से तुम्हें क्या चीज़ मानेअ रही? बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) के हर इशारा पर अंसार अर्ज़ करते जाते कि अल्लाह और उसके रसूल के हम सबसे ज़्यादा एहसानमद हैं फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम चाहते तो मुझे इस इस तरह भी कह सकते थे (कि आप आए तो लोग आपको झुठला रहे थे, लेकिन हमने आपकी तज़्दीक़ की वग़ैरह) क्या तुम उस पर खुश नहीं हो कि जब लोग ऊँट और बकरियाँ ले जा रहे होंगे तो तुम अपने घरों की तरफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) को साथ लिये जा रहे होंगे? अगर हिज़रत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं भी अंसार का एक आदमी बन जाता। लोग ख़्वाह किसी घाटी या वादी में चलें, मैं तो अंसार की वादी और घाटी में चलूँगा। अंसार उस कपड़े की तरह हैं या'नी अस्तर जो हमेशा जिस्म से लगा रहता है और दूसरे लोग ऊपर के कपड़े की तरह हैं या'नी अब्रह। तुम लोग (अंसार) देखोगे कि मेरे बाद तुम पर दूसरों को तरज़ीह दी जाएगी। तुम ऐसे वक़्त में सन्न करना यहाँ तक कि मुझे हौज़े कौषर पर आ मिलो।

(दीगर मक़ाम : 7245)

فَكَانَهُمْ رَجُلًا إِذْ لَمْ يُعْنِهِمْ مَا
اَصَابَ النَّاسَ فَعَطَبَهُمْ، فَقَالَ : ((يَا
مَنْشَرُ الْاَنْصَارِ اَلَمْ اَجِدْكُمْ حُلَاةً
فَهَذَاكُمْ اَللّٰهُ يٰى، وَكُنْتُمْ مُتَفَرِّقِينَ
فَالْفُكْمُ اَللّٰهُ يٰى، وَعَالَةٌ فَالْحَاكُمُ اَللّٰهُ
يٰى)) كَلَّمَا قَالَ شَيْئًا قَالُوا : اَللّٰهُ
وَرَسُولُهُ اَمِنْ قَالَ : ((مَا يَمْنَعُكُمْ اَنْ
تُجِيبُوا رَسُولَ اَللّٰهِ صَلَّى اَللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ؟)) قَالَ : كَلَّمَا قَالَ شَيْئًا قَالُوا :
اَللّٰهُ وَرَسُولُهُ اَمِنْ قَالَ : ((لَوْ جِئْتُمْ قُلْتُمْ
جِئْتَنَا كَذًا وَكَذًا اِلَّا قَوْمُونَ اَنْ يَلْغِبَ
النَّاسُ بِالشَّافِ وَالْبَجِيرِ، وَكَلَفُونِ بِالنَّبِيِّ
صَلَّى اَللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِلَى رِجَالِكُمْ؟ لَوْ
لَا الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ اَمْرًا مِنَ الْاَنْصَارِ،
وَلَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَحِقَّتْهَا،
لَسَلَكَتْ وَادِيَّ الْاَنْصَارِ وَحِقَّتْهَا،
الْاَنْصَارُ شِعَارٌ، وَالنَّاسُ دَلَارٌ، اِنْكُمْ
سَتَلْقَوْنَ بَغْدِي اَثَرَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى
تَلْقَوْنِي عَلَى الْخَوْضِ))

[طرفة في : 7245]

तशरीह : इस हदीष की सनद में हिज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम ज़मानी का ज़िक्र है जो मशहूर सहाबी हैं। कहते हैं मुसैलमा कज़ाब को उन्होंने ही मारा था। हज़ा सन् 63 हिज़री में यज़ीद की फ़ौज के हाथ से शहीद हुए। रिवायत में आँहिज़रत (ﷺ) के माल तक्सीम करने का ज़िक्र है। आपने ये माल कुरैश के उन लोगों को दिया था जो नौ मुस्लिम थे, अभी उनका इस्लाम मज़बूत नहीं हुआ था, जैसे अबू सुफ़यान, सुहैल, हुवैतिब, हकीम बिन हिज़ाम, अबुस्सनाबिल, सफ़वान बिन उमय्या, अब्दुर्रहमान बिन यरबूअ वग़ैरह। शिआर से मुराद या अस्तर में से नीचे का कपड़ा और दिशार से अब्रह या'नी ऊपर का कपड़ा मुराद है। अंसार के लिये आपने ये शर्फ़ अज़ा किया कि उनको हर वक़्त अपने जिस्मे मुबारक से लगा हुआ कपड़ा की मिशाल क़रार दिया। फ़िल वाक़ेअ क़यामत तक के लिये ये शर्फ़ अंसारे मदीना को हासिल है कि आप उनके शहर में आराम फ़र्मा रहे हैं। (ﷺ)

4331. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उन्हें मअमर ने खबर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने खबर दी, बयान किया कि जब क़बीला हवाज़िन के माल में से अल्लाह तआला अपने रसूल को जो देना था वो दिया तो अंसार के कुछ लोगों को रंज हुआ क्योंकि आँहज़ूर (ﷺ) ने कुछ लोगों को सौ सौ कैंट दे दिये थे कुछ लोगों ने कहा कि अल्लाह अपने रसूल (ﷺ) की मज़फ़िरत करे, कुरैश को तो आप इनायत कर रहे हैं और हमको छोड़ दिया है हालाँकि अभी हमारी तलवारों से उनका खून टपक रहा है। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार की ये बात हज़ुरे अकरम (ﷺ) के कान में आई तो आपने उन्हें बुला भेजा और चमड़े के एक ख़ैमे में उन्हें जमा किया, उनके साथ उनके अलावा किसी को भी आपने नहीं बुलाया था, जब सब लोग जमा होगये तो आप (ﷺ) खड़े हुए और फ़र्माया तुम्हारी जो बात मुझे मा'लूम हुई है क्या वो सहीह है? अंसार के जो समझदार लोग थे, उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! जो लोग हमारे मुअज़्ज़ और सरदार हैं, उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही है। अल्बत्ता हमारे कुछ लोग जो अभी नौ द्रम हैं, उन्होंने कहा है कि अल्लाह रसूलल्लाह (ﷺ) की मज़फ़िरत करे, कुरैश को आप दे रहे हैं और हमें छोड़ दिया है हालाँकि अभी हमारी तलवारों से उनका खून टपक रहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि मैं ऐसे लोगों को देता हूँ। जो अभी नए-नए इस्लाम में दाख़िल हुए हैं, इस तरह में उनकी दिलजोई करता हूँ। क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि दूसरे लोग तो माल व दौलत साथ ले जाएँ और तुम नबी (ﷺ) को अपने साथ अपने घर ले जाओ। अल्लाह की क़सम! कि जो चीज़ तुम अपने साथ ले जाओगे वो उससे बेहतर है जो वो ले जा रहे हैं। अंसार ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम इस पर राज़ी हैं। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे बाद तुम देखोगे कि तुम पर दूसरों को तरजीह दी जाएगी। उस वक़्त मज़्र करना, यहाँ तक कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से आ मिलो। मैं हौज़े कौषर पर मिलूँगा। अनस (रज़ि.) ने कहा लेकिन अंसार ने नहीं किया। (राजेज़: 3146)

٤٣٣١- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ نَاسٌ مِنَ الْأَنْصَارِ حِينَ آتَى اللَّهَ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ مَا آتَى مِنْ أَثْوَالِ هَوَازِنَ، فَطَفِقَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْطِي رِجَالًا أَلْيَانَةً مِنَ الْإِبِلِ . فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللَّهُ- لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَتْرُكُنَا، وَسَيُؤَلِّفُنَا نَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ، قَالَ أَنَسٌ: فَخَدَّثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمَقَالَتِهِمْ فَأَرْسَلَ إِلَى الْأَنْصَارِ فَجَمَعَهُمْ لِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ وَلَمْ يَدْخُ مَعَهُمْ غَيْرُهُمْ فَلَمَّا اجْتَمَعُوا قَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ؟)) فَقَالَ فَقِيهَاءُ الْأَنْصَارِ: أَمَا رَسُولُنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلَمْ يَقُولُوا شَيْئًا، وَأَمَا نَاسٌ مِمَّنَا حَدِيثُهُ اسْتَأْنَاهُمْ فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَتْرُكُنَا، وَسَيُؤَلِّفُنَا نَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَإِنِّي أُعْطِي رِجَالًا حَدِيثِي عَهْدٍ بِكُفْرٍ، أَتَأْلَفُهُمْ أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالْأَمْوَالِ وَتَذْهَبُونَ بِالنَّبِيِّ ﷺ إِلَى رِجَالِكُمْ؟ فَوَ اللَّهِ لَمَّا تَقْلِبُونَ بِهِ خَيْرٌ مِمَّا يَنْقَلِبُونَ بِهِ)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ رَضِينَا، فَقَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ: ((سَتَجِدُونَ أَثَرَهُ شَدِيدَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنِّي عَلَى الْخَوْضِ)). قَالَ أَنَسٌ: فَلَمْ يَصْبِرُوا.

हज़रत अनस (रज़ि.) का इशारा ग़ालिबन सरदारों अंसार हज़रत उबादा बिन स़ामित (रज़ि.) की तरफ़ था, जिन्होंने वफ़ाते नबवी के बाद मित्रा अमीर व मिन्कुम अमीर की आवाज़ उठाई थी, मगर जुम्हूरे अंसार ने उससे मुवाफ़क़त नहीं की और खुलफ़-ए-कुरैश को तस्लीम कर लिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु।

तशरीह : सनद में हज़रत हिशाम बिन उर्व़ा का नाम आया है। ये मदीना के मशहूर ताबेईन में से हैं जिनका शुमार अकाबिर उलमा में होता है। सन् 61 हिजरी में पैदा हुए और सन् 146 हिजरी में बमुक़ामे बग़दाद इतिक़ाल हुआ। इमाम जुहरी भी मदीना के मशहूर ज़लीलुल क़द्र ताबेई हैं। जुहरा बिन किलाब की तरफ़ मन्सूब हैं क़नियत अबूबक्र नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शिहाब है, वक़्त के बहुत बड़े आलिम बिल्लाह थे। माहे रमज़ान सन् 124 हिजरी में वफ़ात पाई।

4332. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत् तियाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के ज़माने में आँहज़रत (ﷺ) ने कुरैश में (हुनैन की) ग़नीमत की तक्सीम कर दी। अंसार (रज़ि.) इससे और रंजीदा हुए। आपने फ़र्माया क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि दूसरे लोग दुनिया अपने साथ ले जाएँ और तुम अपने साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) को ले जाओ। अंसार ने अर्ज़ किया कि हम इस पर खुश हैं। हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि लोग दूसरे किसी वादी या घाटी में चलें तो मैं अंसार की वादी या घाटी में चलूँगा। (राजेअ : 3146)

٤٣٣٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي النَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ قَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ غَنَائِمَ بَيْنَ قُرَيْشٍ فَقَضَيْتِ الْأَنْصَارُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((أَمَّا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالذِّنْبِ وَتَذْهَبُونَ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ)) قَالُوا بَلَى قَالَ ((كُلُّ سَلَكٍ النَّاسُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِي الْأَنْصَارِ أَوْ شِعْبَهُمْ)).

[راجع: ٣١٤٦]

तशरीह : हज़रत सुलैमान बिन हर्ब बसरी मक्का के काज़ी हैं। तक़रीबन दस हज़ार अहदादीष उनसे मरवी हैं। बग़दाद में उनकी मज्लिसे दर्स में शुरक-ए-दरस की ता'दाद चालीस हज़ार होती थी। सन् 140 हिजरी में पैदा हुए और सन् 158 हिजरी तक त़लबे हदीष में सरगर्दा रहे। उन्नीस साल हम्माद बिन ज़ैद नामी उस्ताद की ख़िदमत में गुज़ारे। सन् 224 हिजरी में इनका इतिक़ाल हुआ। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) के बुजुर्गतरीन उस्ताज़ हैं, रहिमहुमुल्लाह अज्मईन

4333. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे अज़हर बिन सअद सिमान ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह इब्ने औन ने, उन्हें हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस ने ख़बर दी और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-हुनैन में जब क़बीला हवाज़िन से जंग शुरू हुई तो नबी करीम (ﷺ) के साथ दस हज़ार फ़ौज़ थी। कुरैश के वो लोग भी साथ थे जिन्हें फ़तहे-मक्का के बाद आँहज़ूर (ﷺ) ने छोड़ दिया था फिर सबने पीठ फेर ली। हज़ूर (ﷺ) ने पुकारा, ऐ अंसारियों! उन्होंने जवाब दिया कि हम हाज़िर हैं, या रसूलुल्लाह! आपके हर हुक्म की ता'मील के लिये हम हाज़िर हैं। हम आपके सामने हैं। फिर हज़ूर (ﷺ) अपनी सवारी से उतर गये और फ़र्माया कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका

٤٣٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا زُهْرُ عَنْ ابْنِ عَوْنٍ أَنَّ أَبَا هِشَامَ بْنَ زَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمَ حُنَيْنِ التَّقَى هَوَازِنُ وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشْرَةُ آلَافٍ وَالطُّلَقَاءُ فَأَذْبَرُوا قَالَ : ((يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ؟)) قَالُوا : لَيْتَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَتَسْغِدُكَ لَيْتَكَ نَحْنُ بَيْنَ يَدَيْكَ فَتَزَلَّ

रसूल हैं फिर मुशिकीन को हार हो गई। जिन लोगों को हज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के बाद छोड़ दिया था और मुहाजिरीन को आँहज़रत (ﷺ) ने दिया लेकिन अंसार को कुछ नहीं दिया। इस पर अंसार (रज़ि.) ने अपने ग़म का इज़हार किया तो आपने उन्हें बुलाया और एक ख़ैमा में जमा किया फिर फ़र्माया कि तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि दूसरे लोग बकरी और ऊँट अपने साथ ले जाएँ और तुम अपने साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) को ले जाओ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर लोग किसी वादी या घाटी में चलें और अंसार दूसरी घाटी में चलें तो मैं अंसार की घाटी में चलना पसन्द करूँगा।

(राजेअ: 3146)

النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((أَنَا عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ)) فَأَنْهَزَمَ الْمُشْرِكُونَ فَأَعْطَى الطَّلَافَةَ وَالْمُهَاجِرِينَ وَلَمْ يُعْطِ الْأَنْصَارَ شَيْئًا فَقَالُوا: فَدَعَاؤُهُمْ فَأَذْعَلَهُمْ فِي قَبَةِ فَقَالَ: ((أَمَّا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالشَّوَةِ وَالْبُعِيرِ وَتَذْهَبُونَ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ)) فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيَا، وَسَلَكَ الْأَنْصَارُ شِعْبًا، لَأَخْتَرْتُ شِعْبَ الْأَنْصَارِ)).

[راجع: 3146]

रिवायत में तुलक्का से मुराद वो लोग हैं जिनको आपने फ़तहे-मक्का के दिन छोड़ दिया (एहसानन) उनके पहले जराइम (अपराधों) पर उनसे कोई गिरफ़्त नहीं की जैसे अबू सुफ़यान, उनके बेटे मुआविया बिन हज़ाम (रज़ि.) वगैरह। उन लोगों को आम मुआफ़ी दे दी गई और उनको बहुत नवाज़ा भी गया। बाद में ये हज़रत इस्लाम के सच्चे जानिघार मददगार प्रामित हुए और कअन्नहु वलिय्युन् हमीम का नमूना बन गये। अंसार के लिये आपने जो शर्फ़ अता फ़र्माया दुनिया का माल व दौलत उसके मुकाबले पर एक बाल बराबर भी वज़न नहीं रखता था। चुनौचे अंसार ने भी उसको समझा और उस शर्फ़ की क़द्र की और अव्वल से आख़िर तक आपके साथ पूरी वफ़ादारी से बर्ताव किया, रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्ह। उसी का नतीजा था कि वफ़ाते नबवी के बाद तमाम अंसार ने बख़ुशी व रबबत ख़ुलफ़-ए-कुरैश की इत्ताअत को कुबूल किया और अपने लिये कोई मन्ज़ब नहीं चाहा। इदकू मा आहदुल्लाह अलैहि, जंगे हुनैन में हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की सवारी की लगाम थामे हुए थे।

4334. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने फ़तादा से सुना और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार के कुछ लोगों को जमा किया और फ़र्माया कि कुरैश के कुफ़्र का और उनकी बर्बादियों का ज़माना करीब का है। मेरा मक्सद सिर्फ़ उनकी दिलजोई और तालीफ़े क़ल्ब था क्या तुम इस पर राज़ी और ख़ुश नहीं हो कि लोग दुनिया लेकर अपने साथ जाएँ और तुम अल्लाह के रसूल (ﷺ) को अपने घर ले जाओ। सब अंसारी बोले, क्यों नहीं (हम इसी पर राज़ी हैं) हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अगर दूसरे लोग किसी वादी में चलें और अंसार किसी और घाटी में चलें तो मैं अंसार की वादी या घाटी में चलूँगा।

٤٣٣٤ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ فَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَمَعَ النَّبِيُّ ﷺ نَاسًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: ((إِنْ قُرَيْشًا حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ وَمُصِيبَةٍ وَإِنِّي أَرَدْتُ أَنْ أَجْبِرَهُمْ وَأَتَأَلَّفَهُمْ، أَمَّا تَرْضَوْنَ أَنْ يَرْجِعَ النَّاسُ بِالدُّنْيَا، وَتَرْجِعُونَ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَى بُيُوتِكُمْ)) قَالَوا: بَلَى، قَالَ: ((لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيَا، وَسَلَكَ الْأَنْصَارُ شِعْبًا، لَسَلَكَتُ وَادِي الْأَنْصَارِ - أَوْ شِعْبَ الْأَنْصَارِ)).

(राजेअ: 3146)

[راجع: 3146]

4335. हमसे कुबैसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़ियान घ़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) हुनैन के माले गनीमत की तक्सीम कर रहे थे, तो अंसार के एक शख्स ने (जो मुनाफ़िक़ था) कहा कि इस तक्सीम में अल्लाह की खुशनुदी का कोई खयाल नहीं रखा गया है। मैंने रसूले अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको इस बद गो की ख़बर दी तो आपके चेहरा मुबारक का रंग बदल गया फिर आपने फ़र्माया, अल्लाह तआला मूसा (अलैहिस्सलाम) पर रहम फ़र्माए उन्हें इससे भी ज़्यादा दुख पहुँचाया गया था, पस उन्होंने सब्र किया। (राजेअ: 3150)

4335 - حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: لَمَّا قَسَمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِسْمَةَ حُنَيْنٍ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ: مَا أَرَادَ بِهَا وَجْهَ اللَّهِ؟ فَأَنْتَبِهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ فَغَيَّرَ وَجْهَهُ ثُمَّ قَالَ: ((رَحِمَهُ اللَّهُ عَلَى مُوسَى لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرٍ مِنْ هَذَا فَصَبْرًا)).

[راجع: 3150]

तशरीह: हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के मिज़ाज में शर्म और हया बहुत थी। वो छुपकर तंहाई में नहाया करते थे। बनी इस्राईल को ये शगूफ़ा हाथ आया। किसी ने कहा कि उनके खुसिये बढ़ गये हैं। किसी ने कहा, उनको बरस हो गया है। इस किस्म के बोहتان लगाने शुरू किये। आखिर अल्लाह तआला ने उनकी पाकी और बेऐबी ज़ाहिर कर दी। ये क्रिस्ता कुआन शरीफ़ में मज़कूर है या अय्युहल्लज़ीन आमनू ला तकून कलज़ीन आजौ मूसा (अल अहज़ाब: 69) आखिर तक। रिवायत में जिस मुनाफ़िक़ का ज़िक्र मज़कूर है। इस कमबख़्त ने इतना ग़ौर नहीं किया कि दुनिया का माल व दौलत अस्बाब सब परवरदिगार की मिल्क हैं जिस पैग़म्बर को अल्लाह तआला ने अपना रसूल बनाकर दुनिया में भेज दिया उसको पूरा इख़्तियार है कि जैसी मस्लिहत हो उसी तरह दुनिया का माल तक्सीम करे। अल्लाह की रज़ामन्दी का खयाल जितना उसके पैग़म्बर को होगा, इसका अशरे अशीर भी ओरों को नहीं हो सकता। बद बात़िन किस्म के लोगों का शेवा ही ये रहा है कि खाह मखाह दूसरों पर इल्ज़ाम बाज़ी करते रहते हैं और अपने इयूब पर कभी उनकी नज़र नहीं जाती। सनद में हज़रत सुफ़ियान घ़ौरी का नाम आया है। ये कुफ़ी हैं अपने ज़माना में फ़िक़ह और इज्तिहाद के जामेअ थे। खुसूसन इल्मे हदीष में मर्ज़अ थे। उनका फ़िक़ह और ज़ाहिद आबिद होना मुसल्लम है। उनको इस्लाम का कुतुब कहा गया है। अइम्म-ए-मुज्ताहिदीन में उनका शुमार है। सन् 99 हिजरी में पैदा हुए और सन् 161 हिजरी में बसरा में वफ़ात पाई, हशरनल्लाहु मअहुम आमीन

4336. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि ग़ज़्व-ए-हुनैन के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द लोगों को बहुत बहुत जानवर दिये। चुनौचे अक्वआ बिन हाबिस को जिनका दिल बहलाना मंज़ूर था, सौ ऊँट दिये। उययना बिन हसन फुज़ारी को भी इतने ही दिये और इसी तरह दूसरे अशराफ़े अरब को दिया। इस पर एक शख्स ने कहा कि इस तक्सीम में अल्लाह की रज़ा का कोई खयाल नहीं किया गया। (इब्ने मसऊद रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने कहा कि मैं इसकी ख़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को करूँगा। जब आँहज़रत (ﷺ) ने ये कलिमा

4336 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ حُنَيْنٍ أَنْزَلَ النَّبِيُّ ﷺ نَاسًا أَغْطَى الْأَفْرَغَ مِائَةً مِنَ الْإِبِلِ وَأَغْطَى عُيَيْنَةَ مِثْلَ ذَلِكَ، وَأَغْطَى نَاسًا فَقَالَ رَجُلٌ: مَا أَرِيدَ بِهِمْوُ الْقِسْمَةَ وَجْهَ اللَّهِ. فَقُلْتُ لِأَخْبَرَنَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((رَحِمَ اللَّهُ مُوسَى قَدْ أُوذِيَ

सुना तो फर्माया अल्लाह मूसा पर रहम फर्माए कि उन्हें इससे भी ज्यादा दुख दिया गया था लेकिन उन्होंने सब्र किया। (राजेअ: 3150)

بَاكَرٌ مِنْ هَذَا فَصَرَّ).

[راجع: 3150]

सब्र अजीब नेअमत है पैगम्बरों की खसलत है। जिसने सब्र किया वो कामयाब हुआ, आखिर में उसका दुश्मन ज़लील व ख़्वार हुआ। अल्लाह का लाख बार शुक्र है कि मुझ नाचीज़ को भी अपनी ज़िन्दगी में बहुत से ख़बीधून नफ़्स दुश्मनों से पाला पड़ा। मगर सब्र से काम लिया, आखिर वो दुश्मन ही ज़लील व ख़्वार हुए। ख़िदमत बुखारी के दौरान भी बहुत से हासिदीन की हफ़्वात पर सब्र किया। आखिर अल्लाह का लाखों लाख शुक्र जिसने इस ख़िदमत के लिये मुझको हिम्मत अता फ़र्माई, वल हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक।

4337. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा हमसे मुआज़ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन औन ने, उनसे हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस बिन मालिक ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हुनैन का दिन हुआ तो क़बीला हवाज़िन और ग़त्फ़ान अपने मवेशी और बाल-बच्चों को साथ लेकर जंग के लिये निकले। उस वक़्त औहज़रत (ﷺ) के साथ दस हजार का लश्कर था। उनमें कुछ लोग वो भी थे, जिन्हें औहज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के बाद एहसान रखकर छोड़ दिया था, फिर उन सबने पीठ फेर ली और हुज़ुरे अकरम (ﷺ) तन्हा रह गये। उस दिन हुज़ूर (ﷺ) ने दो बार पुकारा दोनों पुकार एक-दूसरे से अलग अलग थीं, आपने दाएँ तरफ़ मुतवज्जह होकर पुकारा, ऐ अंसारियो! उन्होंने जवाब दिया हम हाज़िर हैं या रसूलल्लाह! आपको बशारत हो, हम आपके साथ हैं, लड़ने को तैयार हैं। फिर आप बाएँ तरफ़ मुतवज्जह हुए और आवाज़ दी ऐ अंसारियो! उन्होंने उधर से जवाब दिया कि हम हाज़िर हैं या रसूलल्लाह! बशारत हो, हम आपके साथ हैं। हुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त एक सफ़ेद खच्चर पर सवार थे फिर आप उतर गये और फ़र्माया मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। अंजाम कार काफ़िरों को हार हुई और इस लड़ाई में बहुत ज़्यादा ग़नीमत हासिल हुई। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे मुहाजिरीन में और कुरैशियों में तक्सीम कर दिया (जिन्हें फ़तहे-मक्का के मौक़े पर एहसान रखकर छोड़ दिया था) अंसार को उसमें से कुछ अता नहीं किया। अंसार (के कुछ नौजवानों) ने कहा कि जब सख़्त वक़्त आता है तो हमें बुलाया जाता है और ग़नीमत दूसरों को बांट दी जाती है। ये बात हुज़ुरे अकरम (ﷺ) तक पहुँची तो आपने अंसार को एक ख़ैमे में जमा किया और फ़र्माया ऐ अंसारियो! क्या वो बात सहीह है जो

٤٣٣٧ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثْمَانَ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمُ حُنَيْنٍ أَقْبَلْتُ هَوَازِنَ وَغُفَفَانَ وَغَيْرَهُمْ بَنِيهِمْ وَذُرَارِيَهُمْ وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشْرَةَ آلَافٍ وَمِنْ الطُّلَقَاءِ فَأَذْبَرُوا عَنْهُ حَتَّى بَقِيَ وَحْدَهُ فَنَادَى يَوْمئِذٍ نَدَاءَيْنِ لَمْ يَخْلُطْ بَيْنَهُمَا التَّفْتُ عَنْ يَمِينِهِ فَقَالَ: ((يَا مُعْشَرَ الْأَنْصَارِ)) قَالُوا: لَيْتَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَبَشَّرَ نَحْنُ مَعَكَ، ثُمَّ التَّفْتُ عَنْ يَسَارِهِ فَقَالَ: ((يَا مُعْشَرَ الْأَنْصَارِ)) قَالُوا: لَيْتَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَبَشَّرَ نَحْنُ مَعَكَ وَهُوَ عَلَى بَغْلَةٍ بَيْضَاءٍ فَنَزَلَ فَقَالَ: ((أَنَا عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ)) فَانْهَزَمَ الْمُشْرِكُونَ فَاصَابَ يَوْمئِذٍ غَنَائِمَ كَثِيرَةً فَقَسَمَ فِي الْمُهَاجِرِينَ وَالطُّلَقَاءِ وَلَمْ يُعْطِ الْأَنْصَارَ شَيْئًا فَقَالَتِ الْأَنْصَارُ: إِذَا كَانَتْ شَدِيدَةً فَحُزِنَ نُدْعَى وَيُعْطَى الْغَنِيمَةُ غَيْرَنَا فَلَبَّغَهُ ذَلِكَ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ فَقَالَ: ((يَا مُعْشَرَ الْأَنْصَارِ مَا حَدِيثَ بَلَّغَنِي عَنْكُمْ؟)) فَسَكَتُوا فَقَالَ:

तुम्हारे बारे में मुझे मा'लूम हुई है? इस पर वो खामोश हो गये फिर आँहजूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अंसारियो! क्या तुम इस पर खुश नहीं हो कि लोग दुनिया अपने साथ ले जाएँगे और तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को अपने घर ले जाओगे। अंसारियों ने अर्ज़ किया हम इसी पर खुश हैं। उसके बाद हजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर लोग किसी वादी में चलें और अंसार किसी घाटी में चलें तो मैं अंसार ही की घाटी में चलना पसन्द करूँगा। इस पर हिशाम ने पूछा, ऐ अबू हम्ज़ा! क्या आप वहाँ मौजूद थे? उन्होंने कहा कि मैं हजूर (ﷺ) से गायब ही कब होता था। (राजेअ : 3146)

((يَا مُعْتَصِرَ الْأَنْصَارِ الْآ تَرْضَوْنَ أَنْ يَلْقَبَ النَّاسُ بِالدُّنْيَا وَيَذْهَبُونَ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحْوَ ذَوْنَهُ إِلَى يَتْرُوكُكُمْ؟))
قَالُوا: بَلَى، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَسَلَكْتِ الْأَنْصَارُ حِقْبًا لَأَخَذْتُ حِقْبَ الْأَنْصَارِ))
فَقَالَ هِشَامُ: يَا أَبَا حَمْزَةَ وَأَنْتَ شَهِدَ ذَلِكَ قَالَ: وَآيْنُ أَبِي عَنْهُ؟

[راجع: 3146]

तशरीह: मुस्लिम की रिवायत में है आपने हज़रत अब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया शज़रे रिश्वान वालों को आवाज़ दो। उनकी आवाज़ बुलन्द थी। उन्होंने पुकारा ऐ शज़र-ए-रिश्वान वालों! तुम कहीं चले गये हो, उनकी पुकार सुनते ही ये लोग ऐसे लपके जैसे गाएँ शफ़क़त से अपने बच्चों की तरफ़ दौड़ती हैं। सब कहने लगे हम हाज़िर हैं, हम हाज़िर हैं।

बाब 58 : नज्द की तरफ़ जो लश्कर आँहजूरत

(ﷺ) ने खाना किया था, उसका बयान

58- باب السَّيْرِ الَّتِي قَبْلَ نَجْدٍ.

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी ने इसको जंगे ताइफ़ के बाद ज़िक्र किया है लेकिन अहले मग़ाज़ी ने कहा है कि ये लश्कर फ़तहे-मक्का को जाने से पहले आपने खाना किया था। इन्ने सअद ने कहा किये आठवीं सन् हिजरी के माहे शाबान का वाक़िया है। कुछ ने कहा माहे रमज़ान में ये लश्कर खाना किया था। इसके सरदार अबू क़तादा (रज़ि.) थे। इसमें सिर्फ़ 25 आदमी थे, जिन्होंने ग़फ़ान से मुक़ाबला में दो सौ ऊँट और दो हज़ार बकरियाँ हासिल कीं।

4338. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुज़ितयानी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने नज्द की तरफ़ एक लश्कर खाना किया था, मैं भी उसमें शरीक था। उसमें हमारा हिस्सा (माले ग़नीमत में) बारह बारह ऊँट पड़े और एक एक ऊँट हमें और फ़ालतू दिया गया। इस तरह हम तेरह-तेरह ऊँट साथ लेकर वापस आए। (राजेअ : 3134)

4338- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَعْدَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي عَمْرِو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً قَبْلَ نَجْدٍ فَكَانَتْ فِيهَا قَلْبَتٌ سِبْهَامًا اثْنِي عَشَرَ بَعِيرًا وَثَلَاثًا بَعِيرًا لِرَجُلٍ فَرَجَعْنَا بِثَلَاثَةِ عَشَرَ بَعِيرًا. [راجع: 3134]

बाब 59 : नबी करीम (ﷺ) का ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को बनी जज़ीमा क़बीले की तरफ़ भेजना

59- باب بَعَثِ النَّبِيِّ ﷺ

خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى بَنِي خَلِيمَةَ

तशरीह: ये बाद फ़तहे-मक्का के था बइतिफ़ाक़ मग़ाज़ी आपने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को तीन सौ 50 आदमी साथ देकर इसलिये खाना किया था कि बनू जज़ीमा को इस्लाम की दा'वत दें। लड़ाई के लिये नहीं भेजा था।

4339. मुझसे महमूद बिन गीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रजाक ने बयान किया, उन्हें मअमर ने खबर दी।

(दूसरी सनद) और मुझसे नईम बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने और उनसे उनके वालिद अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने खालिद बिन वलीद (रज़ि.) को बनी जज़ीमा की तरफ भेजा। खालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी लेकिन उन्हें अस्लाम्ना (हम इस्लाम लाए) कहना नहीं आता था, उसके बजाय वो सबाना सबाना (हम बेदीन हो गये या'नी अपने आबाई दीन से हट गये) कहने लगे। खालिद (रज़ि.) ने उन्हें क्रतल करना और क़ैद करना शुरू कर दिया और फिर हममें से हर शख्स को इसका क़ैदी हिफ़ाज़त के लिये दे दिया फिर जब एक दिन खालिद (रज़ि.) ने हम सबको हुक्म दिया कि हम अपने क़ैदियों को क्रतल कर दें। मैंने कहा अल्लाह की क़सम मैं अपने क़ैदी को क्रतल नहीं करूँगा और न मेरे साथियों में कोई अपने क़ैदी क्रतल करेगा आखिर जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे मूरते हाल का बयान किया तो आपने हाथ उठाकर दुआ की। ऐ अल्लाह! मैं इस काम से बेज़ारी का ऐलान करता हूँ, जो खालिद ने किया, दो मतलबा आपने यही फ़र्माया (दीगर मक़ाम : 7189)

٤٣٣٩- حَدَّثَنِي مَحْمُودُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرُ ح.

..... وَحَدَّثَنِي نَعِيمٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى بَنِي جَدِيسَةَ فَدَعَاهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ فَلَمْ يُخْسِنُوا أَنْ يَقُولُوا: اسْلَمْنَا فَيَقْتُلُوا يَقُولُونَ: صَبَّأْنَا صَبَّأْنَا، فَجَعَلَ خَالِدٌ يَقْتُلُ مِنْهُمْ وَيَأْسِرُ وَدَفَعَ إِلَى كُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ أَسِيرَةً حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ أَمْرِ خَالِدٍ أَنْ يَقْتُلَ كُلَّ رَجُلٍ مِنْهُمْ أَسِيرَةً، فَقُلْتُ: وَاللَّهِ لَا أَقْتُلُ أَسِيرَةً، وَلَا يَقْتُلُ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِي أَسِيرَةً، حَتَّى قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَلَدَّكْرَنَاهُ فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَهُ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ بِمَا صَنَعَ خَالِدٌ)).
[طرحه في : ٧١٨٩].

तशरीह: खालिद बिन वलीद (रज़ि.) फौज के सरदार थे मगर अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने इस हुक्म में उनकी इताअत नहीं की क्योंकि उनका ये हुक्म शरअ के खिलाफ़ था। जब बनी जज़ीमा के लोगों ने लफ़्ज़ सबाना से मुसलमान होना मुराद लिया तो हज़रत खालिद (रज़ि.) को उनके क्रतल करने से रुक जाना ज़रूरी था और यही वजह कि आँहज़रत (ﷺ) ने खालिद (रज़ि.) के काम से अपनी बराअत ज़ाहिर फ़र्माई। उनकी ख़ता इज्तिहादी थी। वो सबाना का मा'नी अस्बलना न समझे और उन्होंने ज़ाहिर हुक्म पर अमल किया कि जब तक वो इस्लाम न लाएँ, उनसे लड़ो। हज़रत खालिद (रज़ि.) बिन वलीद कुरैशी के बेटे हैं जो मखज़ूमि हैं। उनकी वालिदा लुबाबतुस्सुरा नामी उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) की बहन हैं। ये अशराफ़े कुरैश से थे आँहज़रत (ﷺ) ने उनको सैफुल्लाह का खिताब दिया था। सन् 21 हिजरी में वफ़ात पाई, रज़ियल्लाहु अन्हु

इस सरिय्या के कुछ हालात अल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह) के लफ़ज़ों में ये हैं, क़ाल इब्नु सअद व मिम्मा खालिद अब्दुल्वलीद मन हदमलउज्ज़ा व रसूलुल्लाहि (ﷺ) मुक़ीमुन बिमवक़त बअषहू इला बनी जुज़ैमा दाइयन इललइस्लाम व लम यबअहू मुक़ातिलन फखरज फ़ी ग़लाषि मिअतिव्वं खम्सीन रज़ुलमिन्नलमुहाजिरीन वलअन्सारि व बनी सुलैम फन्तहा इलैहिम फ़क़ाल मा अन्तुम क़ालू मुस्लिमून कद सल्लैना व सदक्ना बिमुहम्मदिन व बनैनल्मसाजिद फ़ी साहतिना व अज़्ज़न्ना फ़ीहा क़ाल फमा बालुस्सलाहि अलैकुम क़ालू अन्न बैनना व बैन कौमिम्मिन्नलअरबि अदावतुन फखिप्ना अन तकूनू हुम व कद क़ील अन्नहुम क़ालू सबाना व लम युहसिन् अन्यकूलू अस्लाम्ना क़ाल फज़िस्सलाह फवज़ऊहू फक़ाल लहुम इस्तासिरू फस्तासरल्कौमु फअमर

फकतफ बअज़न व फ़रक़हुम फ़ी अस्हाबिही फलम्मा कान फिस्मिहरि नाद ख़ालिद बिन वलीद कान मअहुम असीरून फल्यज़िब उनुकहू फअम्मा बनू सुलैम फक़तलू मन कान फ़ी अयदीहिम व अम्मल्मुहाजिरून वल्अन्सारू फअर्सलु उसाराहुम फबलगन्नबिय्य (ﷺ) मा सनअ ख़ालिद फक़ाल अल्लाहुम्म इन्नी अब्द मिम्मा सनअ ख़ालिद व बअज़ अलिय्यन युअदी कतलाहुम मा ज़हब मिन्हुम (ज़ादुल्मआद) या'नी जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) इज़्जा को ख़त्म करके लौटे उस वक़्त रसूले करीम (ﷺ) मक्का ही में मौजूद थे। आपने उनको बनी जज़ीमा की तरफ़ तब्लीग़ की गर्ज से भेजा और लड़ाई के लिये नहीं भेजा था। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) साढ़े तीन सौ मुहाजिर और अंसार सहाबियों के साथ निकले। कुछ बनू सुलैम के लोग भी उनके साथ थे। जब वो बनू जज़ीमा के यहाँ पहुँचे तो उन्होंने उनसे पूछा कि तुम कौन लोग हो? वो बोले हम मुसलमान हैं, नमाज़ी हैं, हमने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का कलिमा पढ़ा हुआ है और हमने अपने दालानों में मसाजिद भी बना रखी हैं और हम वहाँ अज़ान भी देते हैं, वो सब हथियारबंद थे। हज़रत ख़ालिद ने पूछा कि तुम्हारे जिस्मों पर ये हथियार क्यों हैं? वो बोले कि एक अरब क़ौम के और हमारे दरम्यान अदावत चल रही है। हमारा गुमान हुआ कि शायद तुम वही लोग हो। ये भी मन्कूल है कि उन लोगों ने बजाये अस्लम्ना के सबाना सबाना कहा कि हम अपने पुराने दीन से हट गये हैं। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनको हुक्म दिया कि हथियार उतार दो। उन्होंने हथियार उतार दिये और ख़ालिद (रज़ि.) ने उनकी गिरफ़्तारी का हुक्म दे दिया। पस हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के साथियों ने उन सबको कैद कर लिया और उनके हाथ बाँध दिये। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनको अपने साथियों में हिफ़ाज़त के लिये तक्सीम कर दिया। सुबह के वक़्त उन्होंने पुकारा कि जिनके पास जिस क़द्र भी कैदी हों वो उनको क़त्ल कर दें। बनू सुलैम ने तो अपने कैदी क़त्ल कर दिये मगर अंसार और मुहाजिरिन ने हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के इस हुक्म को नहीं माना और उन कैदियों को आज़ाद कर दिया। जब इस वाक़िये की ख़बर रसूले करीम (ﷺ) को हुई तो आपने हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के इस काम से इज़्हारे बेज़ारी फ़र्माया और हज़रत अली (रज़ि.) को वहाँ भेजा ताकि जो लोग क़त्ल हुए हैं उनका फ़िदया अदा किया जाए और उनके नुक़सान की तलाफ़ी की जाए।

बाब 60 : अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी (रज़ि.) और अल्क़मा बिन मुजज़िज़ मुदलिजी (रज़ि.) की एक लश्कर में ख़ानगी जिसे अंसार का लश्कर कहा जाता था

4340. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे अअ मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे सअद बिन अब्दह ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान असलमी ने और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मुख़्तसर लश्कर ख़ाना किया और उसका अमीर एक अंसारी सहाबी (अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि.) को बनाया और लश्करियों को हुक्म दिया कि सब अपने अमीर की इताअत करें फिर अमीर किसी वजह से ग़ुस्सा हो गये और अपने फ़ौजियों से पूछा कि क्या तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी इताअत करने का हुक्म नहीं फ़र्माया है?

٦٠- باب سَرِيَّةِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ وَعَلْقَمَةَ بْنِ مُجَزَّرِ الْمَذَلِجِيِّ وَيَقَالُ : إِنَّهَا سَرِيَّةُ الْأَنْصَارِ ٤٣٤٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّاحِدِ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنِي قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَرِيَّةً فَاسْتَعْمَلَ عَلَيْهَا رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ فَغَضِبَ فَقَالَ: أَلَيْسَ أَمَرَكُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُطِيعُونِي؟ قَالُوا: بَلَى قَالَ : فَاجْمَعُوا لِي خَطْبًا فَجَمَعُوا فَقَالَ: أَوْقِدُوا

सबने कहा कि हाँ फर्माया है। उन्होंने कहा फिर तुम सब लकड़ियाँ जमा करो। उन्होंने लकड़ियाँ जमा कीं तो अमीर ने हुक्म दिया कि उसमें आग लगाओ और उन्होंने आग लगा दी। अब उन्होंने हुक्म दिया कि सब उसमें कूद जाओ। फौजी कूद जाना ही चाहते थे कि उन्हीं में कुछ ने कुछ को रोका और कहा कि हम तो इस आग ही के डर से रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ आए हैं! इन बातों में वक़्त गुज़र गया और आग भी बुझ गई। उसके बाद अमीर का गुस्सा भी ठण्डा हो गया। जब इसकी ख़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को पहुँची तो आपने फ़र्माया कि अगर ये लोग उसमें कूद जाते तो फिर क़यामत तक उसमें से न निकलते। इत्ताअत का हुक्म सिर्फ़ नेक कामों के लिये है। (दीगर मक़ाम : 7145, 7257)

तशरीह : इमाम, ख़लीफ़ा, पीर, मुशिंद की इत्ताअत सिर्फ़ कुआन व हदीष के मुताबिक़ अहक़ाम के अंदर है। अगर वो ख़िलाफ़ बात कहें तो फिर उनकी इत्ताअत करना जाइज़ नहीं है। इसीलिये हमारे इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने फ़र्माया कि इज़ा सहहलहदीषु फ़हुव मज़बही जब सहीह हदीष मिल जाए तो वही मेरा मज़हब है। ऐसे मौक़ा पर मेरे फ़त्वा को छोड़कर सहीह हदीष पर अमल करना। हज़रत इमाम की वसियत के बावजूद कितने लोग हैं जो क़ौले इमाम के आगे सहीह अह्दादीष को ठुकरा देते हैं। अल्लाह तआला उनको समझ अता करे। बक़ौल हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) मरहूम ऐसे लोग क़यामत के दिन अल्लाह की अदालत में किया जवाब दे सकेंगे। मुरव्वजा तक्लीदे शख़सी के ख़िलाफ़ ये हदीष एक मशअले हिदायत है। बशर्त कि आँख खोलकर उससे रोशनी हासिल की जाए। अइम्म-ए-किराम का हर्गिज़ ये मंशा न था कि उनके नामों पर अलग अलग मज़ाहिब बनाए जाएँ कि वो इस्लामी व हदत को पारा पारा करके रख दें। मदक़ल्लाहु इन्नल्लज़ीन फ़रक़क़ दीनहुम व कानू शियअन लस्त मिन्हुम फ़ी शैइन व अमरहुम इलल्लाहि

बाब 61 : हज्जतुल विदाअ से पहले आँहज़रत (ﷺ) का हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन भेजना

4341, 42. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन इमैर ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू मूसा अशअरी और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन का हाकिम बनाकर भेजा। रावी ने बयान किया कि दोनों सहाबियों को उसके एक एक सूबे में भेजा। रावी ने बयान किया कि यमन के दो सूबे थे फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया देखो लोगों के लिये आसानियाँ पैदा करना, दुश्वारियाँ न पैदा करना, उन्हें खुश करने की कोशिश करना, दीन से नफ़रत न दिलाना। ये दोनों बुजुर्ग अपने अपने कामों पर ख़ाना हो गये। दोनों

نَارًا فَلَوْذَوْهَا فَقَالَ: ادْخُلُوهَا فَهَمُّوا
وَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يُنْسِكُ بَعْضًا وَيَقُولُونَ
فَرَزْنَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
مِنَ النَّارِ، فَمَا زَالُوا حَتَّى خَمَدَتِ النَّارُ
فَسَكَنَ غَضَبُهُ فَنَلَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالًا: ((لَوْ دَخَلُوهَا مَا
خَرَجُوا مِنْهَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ الطَّاعَةُ لِي
الْمَغْرُوبِ)).

[طراه في : ٧١٤٥، ٧٢٥٧].

٦١ - باب بَعَثَ أَبِي مُوسَى وَمُعَاذٍ

إِلَى الْيَمَنِ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ

٤٣٤٢، ٤٣٤١ - حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا

أَبُو عَوَّالَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ أَبِي
بُرْدَةَ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَا مُوسَى وَمُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ
إِلَى الْيَمَنِ قَالًا: وَبَعَثَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا
عَلَى مِخْلَافٍ، قَالَ: وَالْيَمَنُ مِخْلَافَانِ ثُمَّ
قَالَ: ((يَسْرًا وَلَا تَعَسْرًا، وَبَشْرًا وَلَا
تَقَرًّا))، فَانْطَلَقَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا إِلَى
عَمَلِهِ، وَكَانَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا إِذَا سَارَ

में से जब कोई अपने इलाके का दौरा करते करते अपने दूसरे साथी के करीब पहुँच जाता तो उनसे ताज़ी (मुलाक़ात) के लिये आता और सलाम करता। एक मर्तबा हज़रत मुआज़ (रज़ि.) अपने इलाके में अपने झाहब अबू मूसा (रज़ि.) के करीब पहुँच गये और अपने खच्चर पर उनसे मुलाक़ात के लिये चले। जब उनके करीब पहुँचे तो देखा कि वो बैठे हुए हैं और उनके पास कुछ लोग जमा हैं और एक शख्स उनके सामने है जिसकी मशकें कसी हुई हैं। मुआज़ (रज़ि.) ने उनसे पूछा ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस! ये क्या वाकिया है? अबू मूसा (रज़ि.) ने बतलाया कि ये शख्स इस्लाम लाने के बाद मूर्तद हो गया है। उन्होंने कहा कि फिर जब तक उसे क़त्ल न कर दिया जाए मैं अपनी सवारी से नहीं उतरूँगा। अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि क़त्ल करने ही के लिये उसे यहाँ लाया गया है। आप उतर जाएँ लेकिन उन्होंने अब भी यही कहा कि जब तक उसे क़त्ल न किया जाएगा मैं न उतरूँगा। आखिर मूसा (रज़ि.) ने हुक्म दिया और उसे क़त्ल कर दिया गया। तब वो अपनी सवारी से उतरे और पूछा, अब्दुल्लाह! आप कुआन किस तरह पढ़ते हैं? उन्होंने कहा मैं तो थोड़ा थोड़ा हर वक़्त पढ़ता रहता हूँ फिर उन्होंने मुआज़ (रज़ि.) से पूछा कि मुआज़! आप कुआन मजीद किस तरह पढ़ते हैं? मुआज़ (रज़ि.) ने कहा मैं तो रात के शुरू में सोता हूँ फिर अपनी नींद का एक हिस्सा पूरा करके मैं उठ बैठता हूँ और जो कुछ अल्लाह तआला ने मेरे लिये मुक़द्दर कर रखा है उसमें कुआन मजीद पढ़ता हूँ। इस तरह बेदारी में जिस प्रवाब की उम्मीद अल्लाह तआला से रखता हूँ सोने की हालत के प्रवाब का भी उससे इसी तरह उम्मीदवार रहता हूँ। (दीगर मक़ाम : 4345)

فِي أَرْضِهِ وَكَانَ قَرِيبًا مِنْ صَاحِبِهِ أَخَذَتْ بِهِ عَهْدًا فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَسَارَ مُعَاذٌ فِي أَرْضِهِ قَرِيبًا مِنْ صَاحِبِهِ أَبِي مُوسَى، فَبَجَاءَ يَسِيرٌ عَلَى بَغْلَتَيْهِ حَتَّى انْتَهَى إِلَيْهِ وَإِذَا هُوَ جَالِسٌ وَلَقَدْ اجْتَمَعَ إِلَيْهِ النَّاسُ وَإِذَا رَجُلٌ عِنْدَهُ لَقَدْ جُمِعَتْ يَدَاؤُهُ إِلَى عُنُقِهِ، فَقَالَ لَهُ مُعَاذٌ : يَا عَبْدَ اللَّهِ هَذَا رَجُلٌ كَفَرَ بَعْدَ إِسْلَامِهِ؟ قَالَ : لَا أَنْزِلَ حَتَّى يُقْتَلَ، قَالَ : إِنَّمَا جِيءَ بِهِ لِذَلِكَ، فَأَنْزِلْ، قَالَ : مَا أَنْزِلَ حَتَّى يُقْتَلَ، فَأَمَرَ بِهِ فَقُتِلَ ثُمَّ نَزَلَ فَقَالَ : يَا عَبْدَ اللَّهِ كَيْفَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَالَ : اتَّفَقْتُ تَقْوًا، قَالَ : فَكَيْفَ تَقْرَأُ أَنْتَ يَا مُعَاذُ قَالَ : أَنَامُ أَوَّلَ اللَّيْلِ، فَأَقُومُ وَقَدْ قَضَيْتُ جُزْئِي مِنَ النُّومِ فَأَقْرَأُ مَا كَتَبَ اللَّهُ لِي فَأَحْسِبُ نَوْمِي كَمَا أَحْسِبُ قَوْمِي.

[طرمه في : 4345]

तशरीह : हज़रत मुआज़ (रज़ि.) का ये कमाले जोशे ईमान था कि मूर्तद को देखकर फ़ौरन उनको वो हदीष याद आ गई जिसमें आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है कि जो कोई इस्लाम से फिर जाए उसको क़त्ल कर दो। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने जब तक शरीअत की हद जारी न हुई, उस वक़्त अबू मूसा (रज़ि.) के पास उतरना और ठहरना भी मुनासिब न समझा। यमन के बुलन्द हिस्से पर मुआज़ (रज़ि.) को हाकिम बनाया गया था और नशीबी इलाक़ा अबू मूसा (रज़ि.) को दिया गया था। रसूल करीम (ﷺ) ने मुल्के यमन की बहुत ता'रीफ़ फ़र्माई। जिसकी बरकत है कि वहाँ बड़े बड़े आलिम फ़ाज़िल मुहद्दिष पैदा हुए। हज़रत अल्लामा शौकानी यमनी मशहूर अहले हदीष आलिम यमनी हैं जिनकी हदीष की शरह की किताब नैलुल औतार मशहूर है। या अल्लाह! मैं उन बुजुर्गों से ख़ास अक़ीदत मुहब्बत रखता हूँ, उनके साथ मुझको जमा फ़र्माईयो, आमीन। या रब्बल आलमीन। (राज़)

4343. मुझसे इस्हाक ने बयान किया, कहा हमसे खालिद ने, उनसे शैबानी ने, उनसे सईद बिन अबी बुर्दा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें यमन भेजा। अबू मूसा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से उन शराबतों का मसला पूछा जो यमन में बनाये जाते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि वो क्या हैं? अबू मूसा (रज़ि.) ने बताया कि अत् बित्अ और अल मिज़ (सईद बिन अबी बुर्दा ने कहा कि) मैंने अबू बुर्दा (अपने वालिद) से पूछा अल बित्अ क्या चीज़ है? उन्होंने बताया कि शहद से तैयार की हुई शराब और अल मिज़ जो से तैयार की हुई शराब है। आँहज़रत (ﷺ) ने जवाब में फ़र्माया कि हर नशाआवर पीना हुराम है। इसकी रिवायत जरीर और अब्दुल वाहिद ने शैबानी से की है और उन्होंने अबू बुर्दा से की है। (राजेअ: 2261)

जो चीज़ें खाने की हों या पीने की नशाआवर हों उनका इस्ते'माल हुराम है। अफ़्फ़ून मुदक चन्दू शराब वगैरह ये सब इसी में दाख़िल हैं।

4344, 45. हमसे मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी बुर्दा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके दादा हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन का हाकिम बनाकर भेजा और फ़र्माया कि लोगों के लिये आसानी पैदा करना, उनको दुश्वारियों में न डालना। लोगों को खुशख़बरियाँ देना, दीन से नफ़रत न दिलाना और तुम दोनों आपस में मुवाफ़क़त रखना। इस पर अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने अज़्र किया ऐ अल्लाह के नबी! हमारे मुल्क में जो से एक शराब तैयार होती है। जिसका नाम अल मिज़ है और शहद से एक शराब तैयार होती है जिसका नाम अल् बित्अ कहलाती है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नशा लाने वाली चीज़ हुराम है। फिर दोनों बुजुर्ग़ रवाना हुए। मुआज़ (रज़ि.) ने अबू मूसा (रज़ि.) से पूछा आप कुआन किस तरह पढ़ते हैं? उन्होंने बताया कि खड़े होकर भी, बैठकर भी और अपनी सवारी पर भी और मैं थोड़े थोड़े अर्से के बाद पढ़ता ही रहता हूँ। मुआज़ (रज़ि.) ने कहा लेकिन मेरा मा'मूल ये है कि शुरू रात में, मैं सो जाता हूँ और फिर बेदार हो जाता हूँ। इस तरह मैं अपनी नींद पर भी प्रवाब का उम्मीदवार हूँ जिस तरह बेदार होकर (इबादत करने पर) प्रवाब की मुझे उम्मीद

4343- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ
الشَّيْبَانِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ
عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَغَى إِلَى الْيَمَنِ فَسَأَلَهُ عَنْ
الشَّرْبَةِ تَصْنَعُ بِهَا لَقَالُ : «وَمَا هِيَ؟» قَالَ
الْبَيْعُ وَالْمِزُّ فَقُلْتُ لِأَبِي بُرْدَةَ : مَا الْبَيْعُ؟
قَالَ نَبِيْدُ الْعَسَلِ، وَالْمِزُّ نَبِيْدُ الشَّعِيرِ،
فَقَالَ «كُلُّ مَسْكِرٍ حَرَامٌ» رَوَاهُ جَمْعُ
وَعَبْدُ الْوَاجِدِ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ.
[راجع: ٢٢٦١]

4344, 45- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا
شُعْبَةُ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ
قَالَ: بَغَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
جَدَّهُ أَبَا مُوسَى وَمُعَاذًا، إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ:
«يَسِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا، وَتَسِّرُوا وَلَا تُنْفِرُوا،
وَتَطَاوَعُوا» فَقَالَ أَبُو مُوسَى : يَا نَبِيَّ اللَّهِ
إِنْ أَرْضُنَا بِهَا شَرَابٌ مِنَ الشَّعِيرِ الْمِزُّ
وَشَرَابٌ مِنَ الْعَسَلِ الْبَيْعُ فَقَالَ : «كُلُّ
مَسْكِرٍ حَرَامٌ» فَانْطَلَقَا فَقَالَ مُعَاذٌ لِأَبِي
مُوسَى: كَيْفَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ؟ قَالَ : قَائِمًا
وَقَاعِدًا، وَعَلَى رَاحِلَتِي وَأَتَفَوَّقُهُ تَفَوُّقًا، قَالَ
أَمَا أَنَا فَأَنَا وَمِ الْقَوْمِ فَأَحْتَسِبُ نَوْمَتِي كَمَا
أَحْتَسِبُ قَوْمَتِي، وَضَرَبَ لُسْطَاطًا لَجَعَلًا
يَنْزَاوِرَانِ فَوَارَ مُعَاذُ أَبَا مُوسَى لَمَّا رَجَلَ
مُوتِقٌ فَقَالَ: مَا هَذَا؟ أَبُو مُوسَى: يَهُودِيٌّ

है और उन्होंने एक खेमा लगा लिया और एक दूसरे से मुलाक़त बराबर होती रहती। एक बार मुआज़ (रज़ि.) अबू मूसा (रज़ि.) से मिलने के लिये आए, देखा एक शख्स बैधा हुआ है। पूछा ये क्या बात है? अबू मूसा (रज़ि.) ने बतलाया कि ये एक यहूदी है, पहले ख़ुद इस्लाम लाया और अब ये मुर्तद हो गया है। मुआज़ (रज़ि.) ने कहा कि मैं इसे क़त्ल किये बग़ैर हर्गिज़ न रहूँगा। मुस्लिम बिन इब्राहीम के साथ इस हदीष को अब्दुल मलिक बिन अमर अक्दी और वहब बिन जऱीर ने शुअबा से रिवायत किया है और वक्कीअ और नज़र और अबू दाऊद ने उसको शुअबा से, उन्होंने अपने बाप बुर्दा से, उन्होंने सईद के दादा अबू मूसा (रज़ि.) से, उन्होंने औहज़रत (ﷺ) से रिवायत किया और जऱीर बिन अब्दुल हमीद ने उसको शैबानी से रिवायत किया, उन्होंने अबू बुर्दा से। (राजेअ: 2261, 4342)

तशरीह: अक्दी की रिवायत को इمام बुखारी (रह.) ने अहकाम में और वहब की रिवायत को इस्हाक बिन राहवै ने वस्ल किया है। वक्कीअ की रिवायत को इمام बुखारी (रह.) ने जिहाद में और अबू दाऊद तियालिसी की रिवायत को इمام निसाई ने और नज़र की रिवायत को इمام बुखारी (रह.) ने अदब में वस्ल किया है। मत्तलब इمام बुखारी (रह.) का ये है कि वक्कीअ और नज़र और अबू दाऊद ने इस हदीष को शुअबा से मौसूलन रिवायत किया और मुस्लिम बिन इब्राहीम और अक्दी और वहब बिन जऱीर ने मुरसलन रिवायत किया। उसमें मुबल्लिगीन के लिये ख़ास हिदायात हैं कि लोगों को नफ़रत न दिलाएँ, दुश्वार बातें उनके सामने न रखें, आपस में मिल जुलकर काम करें। अल्लाह यही तौफ़ीक़ दे, आमीन या रब्बल आलमीना मगर आजकल ऐसे मुबल्लिगीन बहुत कम हैं। इल्ला माशाअल्लाह।

4346. मुझसे अब्बास बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अय्यूब बिन आइज़ ने, उनसे क्रैस बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा मैंने तारिक बिन शिहाब से सुना, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी क्रोम के वतन (यमन) में भेजा। फिर मैं आया तो औहज़रत (ﷺ) (मक्का की) वादी अब्जह में पड़ाव किये हुए थे। आपने पूछा, अब्दुल्लाह बिन क्रैस! तुमने हज़ का एहराम बाँध लिया? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ या रसूलुल्लाह! आपने पूछा कलिमाते एहराम किस तरह कहे? बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया (कि यूँ कलिमात अदा किये हैं), ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, और जिस तरह आप (ﷺ) ने एहराम बाँधा

4346 - حَدَّثَنِي عَبَّاسُ بْنُ وَلِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنْ أَيُّوبَ بْنِ عَابِدٍ، حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ طَارِقَ بْنَ شِهَابٍ يَقُولُ: حَدَّثَنِي أَبُو مُوسَى الْأَشْعَرِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَرْضِ قَوْصٍ فَجِئْتُ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ مُبِيعٌ بِالْأَنْطَاحِ فَقَالَ: «أَحْبَبْتُ يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ قَيْسٍ» قُلْتُ: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ:

है, मैंने भी उसी तरह बाँधा है। फ़र्माया तुम अपने साथ कुर्बानी का जानवर भी लाए हो? मैंने कहा कि कोई जानवर तो मैं अपने साथ नहीं लाया। फ़र्माया तुम फिर पहले बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा और मरवा की सई कर लो। उन रुक्नों की अदायगी के बाद हलाल हो जाना। मैंने इसी तरह किया और बनू कैस की खातून ने मेरे सर में कँघा किया और इसी कायदे पर हम उस वक़्त तक चलते रहे जब तक हज़रत उमर (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए। (इसी को हज़्जे तमत्तोअ कहते हैं और ये भी सुन्नत है)

(राजेअ: 1559)

4347. मुझसे हब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया बिन इस्हाक ने, उन्हें यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन सैफ़ी ने, उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) के गुलाम अबू मअबद नाफ़िज़ ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन का (हाकिम बनाकर भेजते वक़्त उन्हें) हिदायत फ़र्माई थी कि तुम एक ऐसी क़ौम की तरफ़ भेजे जा रहे हो- जो अहले किताब यहूदी नसरानी वग़ैरह में से हैं, इसलिये जब तुम वहाँ पहुँचा तो पहले उन्हें इसकी दा'वत दो कि वो गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अगर उसमें वो तुम्हारी बात मान लें तो फिर उन्हें बताओ कि अल्लाह तआला ने रोज़ाना उन पर पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, जब ये भी मान लें तो उन्हें बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर ज़कात को भी फ़र्ज़ किया है, जो उनके मालदार लोगों से ली जाएगी और उन्हीं के ग़रीबों में बांट दी जाएगी। जब ये भी मान जाएँ तो (फिर ज़कात वसूल करते वक़्त) उनका सबसे उम्दह माल लेने से परहेज़ करना और मज़लूम की आह से हर वक़्त डरत रहना कि उसक और अल्लाह के बीच कोई रुकावट नहीं होती है। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि सूरह माइदह में जो तव्वअत का लफ़ज़ आया है उसका वही मा'नी है जो ताअत और इताअत का है। जैसे कहते हैं तिअत व तुअत व अतअतु सबका मा'नी एक ही है। (राजेअ: 1359)

((كيف قلت؟)) قَالَ قُلْتُ لَيْتَكَ إِهْلًا
كَإِهْلَالِكَ، قَالَ : ((فَهَلْ سَفَتْ مَعَكَ
هَذِهِ؟)) قُلْتُ: لَمْ أَسْ، قَالَ: ((فَطُفْ
بِالنِّسَاءِ وَاسْعَ بَيْنَ الصُّفَا وَالْمَرْوَةِ، ثُمَّ
جَلِّ)) فَفَعَلْتُ حَتَّى مَشَطَّتْ لِي امْرَأَةٌ مِنْ
بَنَاءِ بَنِي قَيْسٍ وَاسْتَمْتًا بِذَلِكَ حَتَّى
اسْتَحْبَلَفَ عُمَرُ.

[راجع: 1559]

4347- حَدَّثَنِي حَبَّانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ،
عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ إِسْحَاقَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ
اللَّهِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ أَبِي مَعْبُدٍ مَوْلَى ابْنِ
عَبَّاسٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ
حِينَ بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ : ((إِنَّكَ سَتَأْتِي قَوْمًا
مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ، فَإِذَا جِئْتَهُمْ فَادْعُهُمْ إِلَى
أَنْ يَشْهَدُوا أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَنْ
يُحَمَّدًا رَسُولَ اللَّهِ، فَإِنْ هُمْ طَاعُوا لَكَ
بِذَلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ
خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، فَإِنْ
هُمْ طَاعُوا لَكَ بِذَلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ
فَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً تُؤْخَذُ مِنْ أَغْيَالِهِمْ،
فَقَرُّوا عَلَى فُقَرَائِهِمْ، فَإِنْ هُمْ طَاعُوا لَكَ
بِذَلِكَ فَلْيَايِكَ وَكَرَائِمَ أَقْوَابِهِمْ، وَآتِي دَعْوَةَ
الْمَظْلُومِ فَإِنَّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ اللَّهِ
حِجَابٌ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: طَوَّعَتْ
طَاعَتْ وَطَاعَتْ لَعْنَةً، طِفَتْ وَطُفَتْ
وَاطُفَتْ. [راجع: 1359]

तशरीह:

हदीष में अताऊ या ताऊ का लफ्ज़ आया था। हज़रत इमाम बुखारी (रह) ने अपनी आदत के मुताबिक़ कुर्आन के लफ्ज़ तव्वअत की तफ़्सीर कर दी क्यों कि दोनों का मादा एक ही है और गर्ज ये है कि उसमें तीन लुग़त आए हैं तव्वअ ताअ अताअ मा'नी एक ही हैं या'नी राज़ी हुआ, मान लिया। मज़लूम की बददुआ से बचना इसका मतलब ये कि किसी को न सताओ कि वो मज़लूम बनकर बददुआ कर बैठे।

4348. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हबीब बिन अबी स़ाबित ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया, उनसे अमर बिन मैमून ने और उनसे मुआज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि जब वो यमन पहुँचे तो यमन वालों को सुबह की नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ में आयत (यत्तरख़ज़ल्लाह इब्राहीमा ख़लीला) की क़िरात की तो उनमें से एक साहब (नमाज़ ही में) बोले कि इब्राहीम की वालिदा की आँख ठण्डी हो गई होगी। मुआज़ बिन मुआज़ बग़दी ने शुअबा से, उन्होंने हबीब से, उन्होंने सईद से, उन्होंने अमर बिन मैमून से इस हदीष में सिर्फ़ इतना बढ़ाया है कि नबी करीम (ﷺ) ने मुआज़ (रज़ि.) को यमन भेजा वहाँ उन्होंने सुबह की नमाज़ में सूरह निसा पढ़ी जब इस आयत पर पहुँचे (यत्तरख़ज़ल्लाह इब्राहीमा ख़लीला) तो एक साहब जो उनमें खड़े हुए थे कहा कि इब्राहीम की वालिदा की आँख ठण्डी हो गई होगी।

٤٣٤٨ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَرْثُومٍ أَنَّ مُعَاذًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَمَّا قَدِمَ الْيَمَنَ صَلَّى بِهِمُ الصُّبْحَ فَقَرَأَ: ﴿وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا﴾ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: لَقَدْ قُرِئَتْ عَيْنُ أُمِّ إِبْرَاهِيمَ، زَادَ مُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ حَبِيبٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ النَّبِيِّ ﷺ بَعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ، فَقَرَأَ مُعَاذٌ فِي صَلَاةِ الصُّبْحِ سُورَةَ النَّسَاءِ، فَلَمَّا قَالِ: ﴿وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا﴾ [النساء: ١٢٥] قَالَ رَجُلٌ خَلْفَهُ قُرِئَتْ عَيْنُ أُمِّ إِبْرَاهِيمَ.

या'नी उनको तो बड़ी खुशी और मुबारकबादी है कि उनका बेटा अल्लाह का ख़लील हुआ। उस शख़्स ने मसला न जानकर नमाज़ में बात कर ली ऐसी नादानी की हालत में नमाज़ फ़ासिद नहीं होती।

बाब 62 : हज्जतुल विदाअ से पहले अली बिन अबी त़ालिब और ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को यमन भेजना

4349. मुझसे अहमद बिन उप्मान बिन हकीम ने बयान किया, कहा हमसे शुहैब बिन मसलमा ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ बिन इस्हाक़ बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने कहा कि मैंने बरा बिन अज़िब (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) के साथ यमन भेजा, बयान किया कि फिर उसके बाद उनकी जगह अली (रज़ि.) को भेजा और आपने उन्हें हिदायत की कि ख़ालिद (रज़ि.) के साथियों से कहो

٦٢ - بَابُ بَعَثِ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، وَخَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِلَى الْيَمَنِ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْمَانَ، حَدَّثَنَا شَرِيحُ بْنُ مُسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُونُسَ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَعَ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ إِلَى الْيَمَنِ، قَالَ:

कि जो उनमें से तुम्हारे साथ यमन में रहना चाहे वो तुम्हारे साथ फिर यमन को लौट जाए और जो वहाँ से वापस आना चाहे वो चला आए। बरा (रज़ि.) कहते हैं कि मैं उन लोगों में से था जो यमन को लौट गये। उन्होंने बयान किया कि मुझे गनीमत में कई औकिया चौदी के मिले थे।

فَمَ بَعَثَ عَلِيًّا بَعْدَ ذَلِكَ مَكَانَهُ فَقَالَ : مَرَّ اصْحَابُ عَلِيٍّ مِنْ شَاءَ مِنْهُمْ اِنْ يُعْطَى مِنْكَ فَلْيُعْطَ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُتْبَلِ، فَكُنْتُ مِنْ عَظْمَى مَعَهُ، قَالَ: فَتَبِعْتُ اَوَاقِ ذَوَاتِ عَدُوٍّ.

तशरीह: इस्माईल की रिवायत में है कि जब हम हज़रत अली (रज़ि.) के साथ फिर यमन को लौट गये तो काफ़िरो की एक क्रौम हम्दान से मुकाबला हुआ। हज़रत अली (रज़ि.) ने उनको आँहज़रत (ﷺ) का ख़त सुनाया। वो सब मुसलमान हो गये। हज़रत अली (रज़ि.) ने ये हाल आँहज़रत (ﷺ) को लिखा। आपने सज्द-ए-शुक्र अदा किया और फ़र्माया हम्दान सलामत रहे।

4350. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन इबादा ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन सुवैद बिन मन्ज़ूफ़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने और उनसे उनके वालिद (बुरैदह बिन हसीब) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) की जगह हज़रत अली (रज़ि.) को (यमन) भेजा ताकि गनीमत के खुमुस (पाँचवाँ हिस्सा) को उनसे ले आएँ। मुझे हज़रत अली (रज़ि.) से बहुत बुज़ था और मैंने उन्हें गुस्ल करते देखा था। मैंने हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) से कहा तुम देखते हो अली (रज़ि.) ने क्या किया (और एक लौण्डी से सुहबत की) फिर जब हम आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो मैंने आपसे भी इसका ज़िक्र किया। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया (बुरैदह) क्या तुम्हें अली (रज़ि.) की तरफ़ से बुज़ है? मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ, फ़र्माया अली (रज़ि.) से दुश्मनी न रखना क्योंकि खुमुस (गनीमत के पाँचवें हिस्से) में इसका इससे भी ज़्यादा हक़ है।

٤٣٥٠ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سُوَيْدٍ بْنُ مَنجُوفٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا إِلَى خَالِدِ بْنِ لَيْثِ بْنِ الْخُمُسِ، وَكُنْتُ أُنْبِضُ عَلِيًّا وَقَدْ اغْتَسَلَ، فَقُلْتُ لِخَالِدٍ: أَلَا تَرَى إِلَى هَذَا؟ فَلَمَّا قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: ((يَا بُرَيْدَةُ أُنْبِضُ عَلِيًّا؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((لَا تُبْعِضْهُ فَإِنَّ لَهُ فِي الْخُمُسِ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ)).

तशरीह: दूसरी रिवायत में है कि बुरैदा (रज़ि.) ने कहा तो मैं हज़रत अली (रज़ि.) से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करने लगा। इमाम अहमद की रिवायत में है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अली (रज़ि.) से दुश्मनी मत रख, वो मेरा है मैं उसका हूँ और मेरे बाद वही तुम्हारा वली है। एक रिवायत में है कि जब मैंने शिकायत की तो आपका चेहरा लाल हो गया। फ़र्माया कि मैं जिसका वली हूँ अली भी उसका वली है, रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु। असल मामला ये था कि हज़रत अली (रज़ि.) ने खुमुस में से एक लौण्डी ले ली जो सब कैदियों में उम्दह थी और उससे सुहबत की। बुरैदह (रज़ि.) को ये गुमान हुआ कि हज़रत अली (रज़ि.) ने माले गनीमत में ख़यानत की है। इस वजह से उनको बुरा समझा। हालाँकि ये ख़यानत न थी क्योंकि खुमुस अल्लाह और रसूल का हिस्सा था और हज़रत अली (रज़ि.) उसके बड़े हकदार थे और शायद आँहज़रत (ﷺ) ने उनको तक्सीम के लिये इख़्तियार भी दिया होगा। अब इस्तिबरा से पहले लौण्डी से जिमाज़ करना तो वो इस वजह से होगा कि वो लौण्डी कुआँरी होगी और कुआँरी के लिये कुछ के नज़दीक इस्तिबरा लाज़िम नहीं है। ये भी मुम्किन है कि वो उस दिन हैज़ से पाक हो

गई हो (वहीदी)। बहरहाल हजरत अली (रज़ि.) से बुज़ रखना अहले ईमान की शान नहीं है, अल्लाहुम्म इन्नी उहिब्बु अलिय्यन कमा अमर रसूलुल्लाहि (ﷺ)

4351. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अम्मार बिन क़अक्काअ बिन शुबरमा ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन नईम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना वो कहते थे कि यमन से अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बेरी के पत्तों से दबागत दिये हुए चमड़े के एक थैले में सोने के घन्द डल्ले भेजे। उनसे (कान की) मिट्टी भी अभी झाफ़ नहीं की गई थी। रावी ने बयान किया कि फिर औहज़रत (ﷺ) ने वो सोना चार आदमियों में बांट दिया। ड़ययना बिन बद़, अक्क़अ बिन हाबिस, जैद बिन ख़ैल और चौथे अल्क़मा (रज़ि.) थे या आमिर बिन तुफ़ैल (रज़ि.)। आपके अस्हाब में से एक साहब ने उस पर कहा कि उन लोगों से ज़्यादा हम उस सोने के मुस्तहिक़ थे। रावी ने बयान किया कि जब औहज़रत (ﷺ) को मा'लूम हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम मुझ पर ए'तिबार नहीं करते हालाँकि उस अल्लाह ने मुझ पर ए'तिबार किया जो आसमान पर है और उसकी जो आसमान पर है वहा मेरे पास सुबह व शाम आती है। रावी ने बयान किया कि फिर एक शख़्स जिसकी ओखे धंसी हुई थीं, दोनों रुख़सार फूले हुए थे, पेशानी भी उभरी हुई थी, घनी दाढ़ी और सर मुण्डा हुआ, तहबन्द उठाए हुए था, खड़ा हुआ और कहने लगा या रसूलुल्लाह अल्लाह से डरिये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! तुझ पर क्या मैं इस रूए ज़मीन पर अल्लाह से डरने का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ नहीं हूँ। रावी ने बयान किया फिर वो शख़्स चला गया। ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं बयूँन उस शख़्स की गर्दन मार दूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया नहीं शायद वो नमाज़ पढ़ता हो। इस पर ख़ालिद (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि बहुत से नमाज़ पढ़ने वाले ऐसे हैं जो जुबान से इस्लाम का दा'वा करते हैं और उनके दिल में वो नहीं होता। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसका हुक्म नहीं हुआ है कि लोगों के दिलों की खोज लगाऊँ और न इसका हुक्म हुआ है कि उनके पेट चाक करूँ। रावी ने कहा फिर औहज़रत (ﷺ) ने उस (मुनाफ़िक़) की तरफ़ देखा तो वो पीठ फेरकर जा रहा था। आपने फ़र्माया कि उसकी नस्ल से एक ऐसी क़ौम निकलेगी जो

4351 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقُقَعَاءِ بْنِ شِرْمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي نُعْمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ يَقُولُ: بَعَثَ عَلَيَّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْيَمَنِ بِذَهَبِيَّةٍ فِي أَدِيمٍ مَقْرُوظٍ لَمْ تُحْصَلْ مِنْ ثَوَابِهَا، قَالَ: فَفَسَّمَهَا بَيْنَ أَرْبَعَةِ نَفَرٍ بَيْنَ غَيْثَةَ بْنِ بَذْرٍ وَأَفْرَغَ بْنِ حَابِسٍ وَزَيْدِ الْخَيْلِ، وَالرَّابِعِ إِمَّا عَلْمَقَةَ وَإِمَّا غَامِرُ بْنُ الْعُفَيْلِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ: كُنَّا نَحْنُ أَحَقُّ بِهَذَا مِنْ هَؤُلَاءِ قَالَ: قَبِلْتُ ذَلِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((أَلَا تَأْمَنُونِي، وَأَنَا أَمِينٌ مَنْ فِي السَّمَاءِ، يَأْتِيهِ خَيْرُ السَّمَاءِ صَبَاحًا وَمَسَاءً)) قَالَ: فَقَامَ رَجُلٌ غَابِرُ الْعَيْنَيْنِ مُشْرِفُ الْوَجْهَيْنِ نَاشِئُ الْجَنَّةِ كَثُ اللَّحْيَةِ مَخْلُوقُ الرَّأْسِ مُشْمَرُ الْإِزَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي اللَّهُ قَالَ: ((وَبَلَّغْتَ أَوَّلْتَ أَحَقُّ أَهْلِ الْأَرْضِ أَنْ يَنْقِي اللَّهَ)) قَالَ: ثُمَّ وَلَّى الرَّجُلُ قَالَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا أَضْرِبُ عُنُقَهُ؟ قَالَ: ((لَا لَعَلَّهُ أَنْ يَكُونَ يُصَلِّي)) فَقَالَ خَالِدٌ: وَكَمْ مِنْ مُضَلٍّ يَقُولُ بِلِسَانِهِ مَا لَيْسَ فِي قَلْبِهِ؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنِّي

किताबुल्लाह की तिलावत बड़ी बेहतरीन आवाज़ के साथ करेगी लेकिन वो उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। दीन से वो लोग इस तरह निकल चुके होंगे जैसे तीर जानवर के पार निकल जाता है और मेरा खयाल है कि आप (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया, अगर मैं उनके दौर में हुआ तो षमूद की क़ौम की तरह उनको बिलकुल क़त्ल कर डालूँगा।

(राजेअ: 3344)

لَمْ أُوْمَرْ أَنْ أَنْقُبَ قُلُوبَ النَّاسِ، وَلَا أَتَقَبَّ بِطُونِهِمْ)) قَالَ: ثُمَّ نَظَرَ إِلَيْهِ وَقَوَّ مَقْفًا فَقَالَ: ((إِنَّهُ يَخْرُجُ مِنْ مِصْرِي هَذَا قَوْمٌ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ رَطْبًا لَا يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السُّهْمُ مِنَ الرُّمِيَةِ - وَأَطْنَهُ قَالَ - لَئِنْ أَدْرَكْتَهُمْ لَأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ مُوَدَّ)).

[راجع: 3344]

तशरीह: एक रिवायत में इतना ज़्यादा है कि ये लोग मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और बुतपरस्तों को छोड़ देंगे। ये पेशगोई आपकी पूरी हुई। ख़ारजी जिनके यही तेवर थे, हज़रत अली (रज़ि.) की खिलाफ़त में ज़ाहिर हुए। आपने उनको ख़ूब क़त्ल किया। हमारे ज़माने में भी उन ख़ारजियों के पीर मौजूद हैं। सरमुंडे, दाढ़ी नीची, इज़ार ऊँची, ज़ाहिर में बड़े मुत्तकी परहेज़गार ग़रीब मुसलमानों ख़ुसूसन अहले हदीष को ला मज़हब और वहाबी क़रार देकर उन पर हमले करते हैं और यहूद व नसारा और मुश्रिकों से बराबर का मेलजोल रखते हैं। उनसे कुछ मुतअरिज़ नहीं होते। हाय अफ़सोस मुसलमानों को क्या ख़ब्त हो गया है अपने भाइयों में हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का कलिमा पढ़ने वालों को तो एक एक मसले पर सताएँ और ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती रखें। ऐसे मुसलमान क़यामत के दिन नबी करीम (ﷺ) को मुँह क्या दिखलाएँगे। हदीष के आख़िरी लफ़्ज़ों का मतलब ये कि उनके दिलों पर कुआँन का ज़र्रा बराबर भी अषर न होगा। हमारे ज़माने में यही हाल है। कुआँन पढ़ने को तो सैकड़ों आदमी पढ़ते हैं लेकिन उसके मा'नी और मतलब में ग़ौर करने वाले बहुत थोड़े हैं और कुछ शयातीन का तो ये हाल है कि वो कुआँनो हदीष का तर्जुमा पढ़ने पढ़ाने ही से मना करते हैं। उलाइकल्लज़ीन लअनहुमुल्लाहु फअसम्महुम व आमा अबसारहुम (मुहम्मद: 23)

4352. हमसे मक्का बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने कि अत्ता बिन अबी रिबाह ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से (जब वो यमन से मक्का आए) फ़र्माया था कि वो अपने एहराम पर बाक़ी रहें। मुहम्मद बिन बक्र ने इब्ने जुरैज से इतना बढ़ाया कि उनसे अत्ता ने बयान किया कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा हज़रत अली (रज़ि.) अपनी विलायत (यमन) से आए तो आप (ﷺ) ने उनसे दरथाफ़्त किया, अली! तुमने एहराम किस तरह बाँधा है? अर्ज़ किया कि जिस तरह एहराम आप (ﷺ) ने बाँधा हो। फ़र्माया फिर कुर्बानी का जानवर भेज दो और जिस तरह एहराम बाँधा है, उसी के मुताबिक़ अमल करो। बयान किया कि हज़रत अली (रज़ि.) ओहज़रत (ﷺ) के लिये कुर्बानी के जानवर लाए थे। (राजेअ: 1557)

4353, 54. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा

٤٣٥٢ - حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ غَطَاءٌ : قَالَ جَابِرٌ أَمْرُ النَّبِيِّ ﷺ عَلِيًّا أَنْ يُقِيمَ بِنَاحِيَةِ إِخْرَامِهِ، زَادَ مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ غَطَاءٌ : قَالَ جَابِرٌ فَقِيمَ عَلِيٌّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِسَفَائِيهِ، قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((بِمَ أَهْلَلْتُ يَا عَلِيُّ؟)) قَالَ: بِمَا أَهْلُ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فَأَهْلِدْ وَأَمْكُثْ حَرَامًا كَمَا أَنْتَ)). قَالَ: وَأَهْدِي لِي عَلِيٌّ هَدِيًّا. [راجع: 1557]

٤٣٥٣، ٤٣٥٤ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ:

हमसे बिशर बिन मुफज़ल ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने, कहा हमसे बक्र बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से ज़िक्र किया था कि अनस (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उमरह और हज्ज दोनों का एहराम बाँधा था और हमने भी आपके साथ हज्ज ही का एहराम बाँधा था और हमने भी आपके साथ हज्ज ही का एहराम बाँधा था फिर हम जब मक्का आए तो आपने फ़र्माया कि जिसके साथ कुर्बानी का जानवर न हो वो अपने हज्ज के एहराम को उमरह का कर ले (और तवाफ़ और सई करके एहराम खोल दे) और नबी करीम (ﷺ) के साथ कुर्बानी का जानवर था, फिर अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) यमन से लौटकर हज्ज का एहराम बाँधकर आए आपने उनसे दर्याफ़्त फ़र्माया कि किस तरह एहराम बाँधा है? हमारे साथ तुम्हारी ज़ोज़ा फ़ातिमा (रज़ि.) भी हैं। उन्होने अर्ज किया कि मैंने इस तरह एहराम बाँधा है जिस तरह आप (ﷺ) ने बाँधा हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर अपने एहराम पर क़ायम रहो, क्योंकि हमारे साथ कुर्बानी का जानवर है।

حَدَّثَنَا يَشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ حُمَيْدِ الطَّوِيلِ، حَدَّثَنَا بَكْرٌ أَنَّهُ ذَكَرَ لِابْنِ عُمَرَ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهَلَ بِغُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ، فَقَالَ: أَهْلُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْحَجِّ، وَأَهْلَلْنَا بِهِ مَعَهُ فَلَمَّا قَدِمْنَا مَكَّةَ قَالَ: ((مَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَذِي فَلْيَجْعَلْهَا غُمْرَةً)) وَكَانَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذِي فَقَدِمَ عَلَيْنَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ مِنَ الْيَمَنِ حَاجًّا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((بِمِ أَهَلَلْتُ فَإِنْ مَعَنَا أَهَلَلْتُ؟)) قَالَ: أَهَلَلْتُ بِمَا أَهَلُّ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((فَأَمْسِكْ فَإِنْ مَعَنَا هَذِي)).

इन तमाम अह्दादीष में किसी न किसी पहलू से हज़रत अली (रज़ि.) का यमन जाना मज़कूर है। बाब से यही वजह मुताबकत है और इसीलिये उन रिवायात को यहाँ लाया गया है। बाक़ी हज्ज के दीगर मसाइल भी उनसे प्राबित होते हैं जैसा कि किताबुल हज्ज में गुज़र चुका है।

बाब 63 : ग़ज़व-ए-ज़िल ख़लसा का बयान

१३- باب غزوة ذي الخلصة

तशरीह : ये एक बुतख़ाना था जो यमन में मुश्रिकों ने तैयार किया था। उसको का'बा यमानिया भी कहते हैं और का'बा शामिया भी कि उसका दरवाज़ा मुल्के शाम के मुकाबिल में बनाया गया था।

4355. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह तिहान ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिशर ने बयान किया, उनसे फ़ैस ने और उनसे जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि जाहिलियत में एक बुतख़ाना जुल ख़लसा नामी था। उसे का'बा यमानिया और का'बा शामिया भी कहा जाता था। औहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया जुल ख़लसा की तकलीफ़ से मुझे क्यूँ नही नजात दिलाते? चुनौचे मैंने डेढ़ सौ सवारों के साथ सफ़र किया, फिर हमने उसको मिस्मार कर दिया और उसमें हमने जिसको भी पाया क़त्ल कर दिया फिर मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको उसकी ख़बर दी तो आपने हमारे और क़बीला अहमस के लिये बहुत दुआ की। (राजेअ: 3020)

4355 - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ، حَدَّثَنَا يَتَانٌ عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ قَالَ: كَانَ يَتُّ فِي الْجَاهِلِيَّةِ يَقَالُ لَهُ ذُو الْخَلْصَةِ، وَالْكَفَّةِ الْيَمَانِيَّةِ، وَالْكَفَّةِ الشَّامِيَّةِ، فَقَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِلَّا تُرِيحَنِي مِنْ ذِي الْخَلْصَةِ؟)) فَفَرَرْتُ فِي مِائَةٍ وَخَمْسِينَ رَاكِبًا فَكَسَرْنَاهُ وَقَتَلْنَا مَنْ وَجَدْنَا عِنْدَهُ فَأَنْبَتَ النَّبِيُّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَدَعَا لَنَا وَلِأَحْمَسَ. [راجع: 3020]

तशरीह : एक रिवायत में यूँ है कि रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) के सर पर हाथ रखा और मुँह और सीने पर ज़ेरे नाफ़ तक फेर दिया फिर सर पर हाथ रखा और पीठ पर सुरीन तक फेरा या सीने पर खास तौर से हाथ फेरा। उन पाकीज़ा दुआओं का ये अंश हुआ कि हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) एक बेहतरीन शहसवार बनकर उस मुहिम पर रवाना हुए और कामयाबी से वापस आए। आपने उस बुतख़ाने के बारे में जो फ़र्माया उसकी वजह ये थी कि वहाँ कुफ़्फ़ार व मुश्रीकीन इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करते, रसूले करीम (ﷺ) की ईज़ारसानी की तदबीरें सोचते और मुकद्दस का'बा की तन्क़ीस करते और हर तरह से इस्लाम दुश्मनी का मुज़ाहि़रा करते, लिहाज़ा क़यामे अमन के लिये उसका ख़त्म करना ज़रूरी हुआ। हालांते अमन में किसी क़ौम व मज़हब की इबादतगाह को इस्लाम ने मिस्मार करने का हुक्म न दिया है। हज़रत इमर (रज़ि.) ने अपने अह्ददे ख़िलाफ़त में ज़िम्मी यहूद और अंगार के गिरजाओं को महफूज़ रखा और हिन्दुस्तान में मुसलमान बादशाहों ने इस मुल्क की इबादतगाहों की हिफ़ाज़त की और उनके लिये जागीरें वक़फ़ की हैं जैसा कि इतिहास गवाह है।

4356. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे कैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, कहा मुझसे जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया तुम मुझे जुल ख़लसा से क्यों नहीं बेफ़िक्र करते? ये क़बीला ख़ज़अम का एक बुतख़ाना था। उसे का'बा यमानिया भी कहते थे। चुनौचे मैं डेढ़ सौ क़बीला अहमस के सवारों को साथ लेकर रवाना हुआ। ये सब अच्छे सवार थे। मगर मैं घोड़े की सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता था। आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे सीने पर हाथ मारा यहाँ तक कि मैंने आपकी उँगलियों का अंश अपने सीने में पाया, फिर आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! इसे घोड़े का अच्छा सवार बना दे और उसे रास्ता बतलाने वाला और खुद रास्ता पाया हुआ बना दे, फिर वो उस बुतख़ाने की तरफ़ रवाना हुए और उसे ढाकर उसमें आग लगा दी फिर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ख़बर भेजी। जरीर के ऐलची ने आकर अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मब्रूक़ किया, मैं उस वक़्त तक आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये नहीं चला जब तक वो ख़ारिश ज़दा कूँट की तरह जलकर (स्याह) नहीं हो गया। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने क़बीला अहमस के घोड़ों और लोगों के लिये पाँच मर्तबा बरक़त की दुआ की।

(राजेअ: 3020)

٤٣٥٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا قَيْسٌ، قَالَ: قَالَ لِي جَرِيرٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلَا تُرِيدُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) وَكَانَ بَيْنَا فِي عَقَمٍ يُسَمَّى الْكَفَّةَ الْيَمَانِيَةَ، فَأَنْطَلَقْتُ فِي عَمْسِينَ وَمِائَةٍ فَارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ وَكَانُوا اصْخَابَ خَيْلٍ، وَكُنْتُ لَا أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَضَرَبَ لِي صَنْدَرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ اصْبَاحِهِ فِي صَنْدَرِي وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ بِنُتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مُهْدِيًا)) فَأَنْطَلَقَ إِلَيْهَا فَكَسَرَهَا وَخَرَقَهَا ثُمَّ بَعَثَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ جَرِيرٍ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْخَيْلِ مَا جِئْتُكَ حَتَّى تَرَكْتُهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ اجْرَبُ قَالَ: ((فَبَارَكَ فِي خَيْلِ أَحْمَسَ وَرِجَالِهَا)) عُمَسَ مَرَّتَ.

[راجع: ٣٠٢٠]

ख़ारिशज़दा (खुजली वाले) कूँट पर डामर वगैरह मलते हैं तो उस पर काले काले धब्बे पड़ जाते हैं; जल भुनकर, बिलकुल यही हाल ज़िल ख़लसा का हो गया। ज़िल ख़लसा वाले इस्लाम के हरीक़ बनकर हर वक़्त मुख़ालिफ़ाना साज़िशें करते रहते थे।

4357. हमसे यूसुफ बिन मूसाने बयान किया, कहा हमको खबर दी अबू उसामा ने, उन्हें इस्माईल बिन खालिद ने, उन्हें कैस बिन अबी हाजिम ने और उनसे जरिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जुल खलसा से मुझे क्यों नहीं बेफ़िक्री दिलाते! मैंने अर्ज़ किया मैं हुक्म की ता'मील करूँगा। चुनौचे क़बीला अहमस के डेढ़ सौ सवारों को साथ लेकर मैं खाना हुआ। ये सब अच्छे सवार थे, लेकिन मैं सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता था। मैंने इसके बारे में आँहज़रत (ﷺ) से ज़िक्र किया तो आपने अपना हाथ मेरे सीने पर मारा जिसका अक्षर मैंने अपने सीने में देखा और आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ की ऐ अल्लाह! इसे अच्छा सवार बना दे और इसे हिदायत करने वाला और खुद हिदायत पाया बना दे। रावी ने बयान किया कि फिर उसके बाद मैं कभी किसी घोड़े से नहीं गिरा। रावी ने बयान किया कि जुल खलसा एक (बुतखाना) था, यमन में क़बीला ख़ाज़िम और बजीला का, उसमें बुत थे, जिनकी पूजा की जाती थी और उसे का'बा भी कहते थे। बयान किया कि फिर जरिर वहाँ पहुँचे और उसे आग लगा दी और मुन्हदिम कर दिया। बयान किया कि जब जरिर (रज़ि.) यमन पहुँचे तो वहाँ एक शख्स था जो तीरों से फ़ाल निकाला करता था। उससे किसी ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ऐलची यहाँ आ गये हैं। अगर उन्होंने तुम्हें पालिया तो तुम्हारी गर्दन मार देंगे। बयान किया कि अभी वो फ़ाल निकाल ही रहे थे कि हज़रत जरिर (रज़ि.) वहाँ पहुँच गये। आपने उससे फ़र्माया कि अभी ये फ़ाल के पतर तोड़कर कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ ले वरना मैं तेरी गर्दन मार दूँगा। रावी ने बयान किया कि उस शख्स ने तीर वगैरह तोड़ डाले और कलिमा ईमान की गवाही दी। उसके बाद जरिर (रज़ि.) ने क़बीला अहमस के एक सहाबी अबू अस्तात (रज़ि.) नामी को आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आपको खुशख़बरी सुनाने के लिये भेजा। जब वो ख़िदमत नबवी में हाज़िर हुआ तो अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मब़रूफ़ किया है। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये उस वक़्त तक नहीं चला जब तक वो बुत कदा

٤٣٥٧ - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسٍ عَنْ جَرِيرٍ قَالَ : قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلَا تُرِيدُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) فَقُلْتُ : بَلَى، فَأَنْطَلَقْتُ فِي خَمْسِينَ وَمِائَةِ فَارِسٍ مِنْ أَخْمَسٍ وَكَانُوا أَصْحَابَ خَيْلٍ، وَكُنْتُ لَا أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ فَضَرَبَ يَدَهُ عَلَى صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ يَدِهِ فِي صَدْرِي فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مُهْدِيًا)) قَالَ: فَمَا وَقَعْتُ عَنْ فَرَسٍ بَعْدَ، قَالَ وَكَانَ ذُو الْخَلَصَةِ بَيْتًا بِالْيَمَنِ لِحَتَمٍ وَبَجِيلَةٍ، فِيهِ نَصَبٌ يُعَذِّبُ قَالَ لَهُ: الْكَعْبَةُ، قَالَ: فَأَتَاهَا فَخَرَّقَهَا بِالنَّارِ وَكَسَرَهَا، قَالَ وَلَمَّا قَدِمَ جَرِيرُ الْيَمَنِ كَانَ بِهَا رَجُلٌ يَسْتَفْسِمُ بِالْأَلَامِ فَقِيلَ لَهُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَهُنَا فَإِنْ قَدَرَ عَلَيْكَ ضَرْبٌ عُقُفَكَ قَالَ: فَيِنَّمَا هُوَ يَضْرِبُ بِهَا إِذْ وَقَفَ عَلَيْهِ جَرِيرٌ، فَقَالَ: لَتَكْسِرَنَّهَا وَلَتَشْهَدَنَّ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَوْ لِأَضْرِبَنَّ عُقُفَكَ، قَالَ: فَكَسَرَهَا وَشَهِدَتْ بِفَتْ جَرِيرٌ رَجُلًا مِنْ أَخْمَسٍ يُكْنَى أَبَا ارْطَاةَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشْرُوهُ بِذَلِكَ فَلَمَّا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا جِئْتُ حَتَّى تَرَكْتُهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ أَجْرَبُ

को खारिश ज़दा कैंट की तरह जलाकर स्याह नहीं कर दिया। बयान किया कि फिर औहज़रत (ﷺ) ने क़बीला अहमस के घोड़ों और सवारों के लिये पाँच मर्तबा बरकत की दुआ की। (राजेअ: 3020)

فَقَالَ: قَبْرُكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى خَيْلٍ أَحْمَسَ وَرِجَالِهَا خَمْسَ

مَرَّاتٍ. [راجع: ٣٠٢٠]

तशरीह : हाफिज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं व फिलहदीयि मशरूइय्यतु इज़ालतिम्मा युफत्तिनु बिहिन्नासु मिम्बनाइन व गैरूहू सवाअन कान इन्सानन औ हैवानन औ जिमादन व फीहि इस्तिअमालतु नफूसिलकौमि बितामीरमिन हुव मिन्हुम बलइस्तिजाबतु बिहुआइ वष्वनाइ वल्बशारति फिलफुतूहि व फज़लु रूकूबिलखैलि फिलहर्बि व कुबूल खबिल्लाहिदि वल्मुबालगतु फी निकायतिलअदुव्वि व मनाकिबु लिजरीरिन व लिक्ौमिही व बर्कतु यदिन्नबिथ्यि (ﷺ) व दुआउहु व अन्नहू कान यदक्र वित्न व क्रद युजाजिप्पलाष (अल्ख फतुल्बारी) या'नी हदीये हाज़ा से प्राबित हुआ कि जो चीज़ें लोगों की गुमराही का सबब बनें वो मकान हों या कोई इंसान हो या हैवान हो या कोई जमादात से हो, शरई तौर पर उनका ज़ाइल कर देना जाइज़ है। और ये भी प्राबित हुआ कि किसी क़ौम की दिलजोई के लिये अमीरे क़ौम खुद उन ही में से बनाना बेहतर है और फुतूहात के नतीजे में दुआ करना, बशारत देना और मुजाहिदीन की ता'रीफ़ करना भी जाइज़ है और जंग में घोड़े की सवारी की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई और ख़बरे वाहिद का कुबूल करना भी प्राबित हुआ और दुश्मन को सज़ा देने में मुबालगा भी प्राबित हुआ और हज़रत जरीर (रज़ि.) और उनकी क़ौमी फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई और रसूल करीम (ﷺ) के दस्ते मुबारक और आपको दुआओं की बरकत भी प्राबित हुई और ये भी कि आप दुआओं में भी वित्र का ख़याल रखते और कभी तीन से ज़्यादा बार भी दुआ फ़र्माया करते थे।

बाब 64 : ग़ज़्वा ज़ातुस्सलासिल का बयान

ये वो ग़ज़्वा है जो क़बाइले लख़म और जुज़ाम के साथ पेश आया था। इब्ने इस्हाक़ ने यज़ीद से, और उन्होंने इर्वा से कि जातुस सलासिल, क़बाइले बल्ली, उज़र और बनी अलकैन को कहते हैं।

तशरीह : ये ग़ज़्वा सन 8 हिजरी में बमाहे जमादिल आखिर बमुकाम वादी कुरा मे हुआ था ये जगह मदीना से पूरे दस दिन की राह पर है। उसको ज़ातुस्सलासिल इसलिये कहते हैं कि काफ़िरों ने उसमें जमकर लड़ने के लिये अपने जिस्मों को जंजीरों से बाँध लिया था। कुछ ने कहा कि सिलसिला वहाँ पानी का एक चश्मा था। लख़म और जुज़ाम दोनों क़बीलों के नाम हैं ये भी उस जंग में शरीक थे।

4358. हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन ने बयान किया, कहा हमको ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद हज़्ज़ा ने, उन्हें अबू इम्मान नहदी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अम्र बिन आस (रज़ि.) को ग़ज़्वा ज़ातस सलासिल के लिये अमीर लश्कर बनाकर भेजा। अम्र बिन आस (रज़ि.) ने बयान किया कि (ग़ज़्वा से वापस आकर) मैं हज़ूरे अकरम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और आपसे पूछा कि आपको सबसे ज़्यादा अज़ीज़ कौन शख्स है? फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.), मैंने पूछा मर्दों में? फ़र्माया कि उसके वालिद, मैंने पूछा, उसके बाद कौन हैं? फ़र्माया कि उमर (रज़ि.)। इस तरह आपने कई आदमियों के नाम लिये बस मैं ख़ामोश हो गया

٦٤- باب غَزْوَةِ ذَاتِ السَّلَاسِلِ وَهِيَ غَزْوَةُ لَخْمٍ وَجَذَامَ قَالَ: إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَالِدٍ، وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ عَنْ غَزْوَةِ هِيَ بِلَادَ بَلِيٍّ، وَغُدْرَةَ، وَبَنِي الْقَيْنِ.

٤٣٥٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ، عَنْ أَبِي عُمَانَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَقِيَ عُمَرُ بْنُ الْفَاصِ عَلَى جَيْشِ ذَاتِ السَّلَاسِلِ قَالَ: فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: أَيُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: «عَائِشَةُ» قُلْتُ: مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَ: «أَبُوهَا» قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: «عُمَرُ»، فَقَدْ رَجُلًا فَسَكَتُ مَعَاذَ أَنْ يَخْفَلَنِي فِي آخِرِهِمْ.

कि कहीं आप मुझे सबसे बाद में न कर दें। (राजेज़: 3662)

[راجع: 3662]

तशरीह: इस लड़ाई में तीन सौ मुहाजिरीन और अंसार मज़तीस घोड़े आपने भेजे थे। अमर बिन आस (रज़ि.) को उनका सरदार बनाया था। जब अमर (रज़ि.) दुश्मन के मुल्क के करीब पहुँचे तो उन्होंने और मज़ीद फ़ौज तलब की। आप (ﷺ) ने अबू उबैदह बिन ज़र्राह (रज़ि.) को सरदार मुक़र्रर करके दो सौ आदमी और भेजे। उनमें हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) भी थे। अबू उबैदह (रज़ि.) जब अमर (रज़ि.) से मिले तो उन्होंने इमाम बनना चाहा लेकिन अमर बिन आस (रज़ि.) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने आपको मेरी मदद के लिये भेजा है, सरदार तो मैं ही रहूँगा। अबू उबैदह (रज़ि.) ने इस मा'कूल बात को मान लिया और अमर बिन आस (रज़ि.) इमामत करते रहे। हाकिम की रिवायत में है कि अमर बिन आस (रज़ि.) ने लश्कर में अंगार रोशन करने से मना किया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पर इंकार किया तो हज़रत अबूबक्र सिदीक़ (रज़ि.) ने कहा चुप रहो, आँहज़रत (ﷺ) ने जो अमर (रज़ि.) को सरदार मुक़र्रर किया है तो इस वजह से कि वो लड़ाई के फ़न से ख़ूब वाकिफ़ कार है। बैहक्की की रिवायत में है कि अमर बिन आस (रज़ि.) जब लौटकर आए तो अपने दिल में ये समझे कि मैं हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर (रज़ि.) से ज़्यादा दर्जा रखता हूँ। इसीलिये उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से सवाल किया, जिसका रिवायत में तज़्किरा है। जिसको सुनकर उनको हक्कीक़ते हाल का इल्म हो गया। इस हदीस से ये भी निकला कि मफ़ज़ूल की इमामत भी अफ़ज़ल के लिये जाइज़ है क्योंकि हज़रत शौबेन और अबू उबैदह (रज़ि.) हज़रत अमर (रज़ि.) से अफ़ज़ल थे।

बाब 65 : हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) का यमन की तरफ़ जाना

4359. मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा अब्सी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन इदरीस ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि (यमन से वापसी पर मदीना आने के लिये) मैं दरिया के रास्ते से सफ़र कर रहा था। उस वक़्त यमन के दो आदमियों ज़ू कलाअ और ज़ू अमर से मेरी मुलाक़ात हुई मैं उनसे हज़रे अकरम (ﷺ) की बातें करने लगा उस पर ज़ू अमर ने कहा अगर तुम्हारे साहब (या) नी हज़रे अकरम (ﷺ) वही हैं जिनका ज़िक़र तुम कर रहे हो तो उनकी वफ़ात को भी तीन दिन गुज़र चुके। ये दोनों मेरे साथ ही (मदीना) की तरफ़ चल रहे थे। रास्ते में हमें मदीना की तरफ़ से आते हुए कुछ सवार दिखाई दिये, हमने उनसे पूछा तो उन्होंने इसकी तम्दीक़ की कि आँहज़रत (ﷺ) वफ़ात पा गये हैं। आपके ख़लीफ़ा अबूबक्र (रज़ि.) मुंतख़ब हुए हैं और लोग अब भी सब ख़ैरियत से हैं। उन दोनों ने मुझसे कहा कि अपने साहब (अबूबक्र रज़ि.) से कहना कि हम आए थे और इंशाअल्लाह फिर मदीना आएँगे ये कहकर दोनों यमन की तरफ़ वापस चले गये। फिर मैंने अबूबक्र (रज़ि.) को उनकी बातों की ख़बर दी तो आपने फ़र्माया कि फिर उन्हें अपने

٦٥- باب ذهاب جرير إلى اليمن

٤٣٥٩- حدثني عبد الله بن أبي شبة

الغسبي حدثنا ابن إدريس عن إسماعيل

بن أبي خالب عن قيس عن جرير، قال :

كنت بالبحر للقيث رجلاً من أهل

اليمن ذا سلاح، وذا عمرو، فمضت

أخذلهم عن رسول الله صلى الله عليه

وسلم فقال له ذو عمرو: لئن كان

الذي تذكر من صاحبك لقد مرّ على

أجلي منذ ثلاث، وأقبلتني حتى إذا كنا

في بغض الطريق رفع لنا ركب من قبل

المنبئة فسألناهم فقالوا : قبض رسول

الله صلى الله عليه وسلم استخلف

أبو بكر والناس صالحون، فقالا : أخير

صاحبك أنا قد جئنا ولما سنعود إن

شاء الله، ورجعنا إلى اليمن فأخبرت أبا

بكر بحديثهم قال : أفلا جئت بهم؟ فلما

साथ लाए क्यों नहीं? बहुत दिनों बाद ख़िलाफ़ते इमरी में जू अम्र ने एक मर्तबा मुझसे कहा कि जरीर! तुम्हारा मुझ पर एहसान है और तुम्हें मैं एक बात बताऊँगा कि तुम अहले अरब उस वक़्त तक ख़ैरो-भलाई के साथ रहोगे जब तक तुम्हारा तज़े अमल ये होगा कि जब तुम्हारा कोई अमीर वफ़ात पा जाएगा तो तुम अपना कोई दूसरा अमीर मुंतख़ब कर लिया करोगे। लेकिन जब (इमारत के लिये) तलवार तक बात पहुँच जाए तो तुम्हारे अमीर बादशाह बन जाएँगे। बादशाहों की तरह गुस्सा हुआ करेंगे और उन्हीं की तरह खुश हुआ करेंगे।

तशरीह: हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) का ये सफ़र यमन में दा'वत इस्लाम के लिये था। जुल ख़लसा के ढाने का सफ़र दूसरा है। रास्ता में जू अम्र आपको मिला और उसने वफ़ाते नबवी की ख़बर सुनाई जिस पर तीन दिन गुजर चुके थे। जू अम्र को ये ख़बर किसी ज़रिये से मिल चुकी होगी।

देवबन्दी तर्जुमा बुखारी में यहाँ वफ़ाते नबवी पर तीन साल गुजरने का जिक्र लिखा गया है। जो अक्लन भी बिलकुल ग़लत है। इसलिये कि तीन साल तो ख़िलाफ़ते सिद्दीकी की मुद्त भी नहीं है। हज़रत मौलाना वहीदुज्जमा मरहूम ने तीन दिन का तर्जुमा किया है, वही हमने नक़ल किया है और यही सहीह है।

जू अम्र की आख़िरी नज़ीहत जो यहाँ मज़कूर है वो बिलकुल ठीक षाबित हुई। ख़ुलफ़-ए-राशिदीन के ज़माने तक ख़िलाफ़त मुसलमानों के मश्वरे और सलाह से होती रही। उस दौर के बाद किसरा और कैसर की तरह लोग त़ाक़त के बल पर बादशाह बनने लगे और मुसलमानों का शीराज़ा मुंतशिर हो गया। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) ने जब ख़िलाफ़ते यज़ीद का ऐलान किया तो कई बा-बसीरत (समझ-बूझ वाले) मुसलमानों ने स़ाफ़ कह दिया था कि आप सुन्नते रसूल (ﷺ) को छोड़कर अब किसरा और कैसर की सुन्नत को ज़िन्दा कर रहे हैं। बहरहाल इस्लामी ख़िलाफ़त की बुनियाद अम्म्तुहुम शूरा बैनहुम पर है जिसको तरक्की देकर आज की जुम्हूरियत लाई गई है। अगरचे उसमें बहुत सी ख़राबियाँ हैं, ताहम शूरा की एक अदना झलक है।

बाब 66 : ग़ज़्व-ए-सैफ़ुल बहर का बयान

ये दस्ता क़ुरैश के त़िज़ारती क़ाफ़िले की घात में था। उसके सरदार हज़रत अबू उबैदह बिन ज़र्राह (रज़ि.) थे।

तशरीह: उसमे ये शुब्हा होता है कि ये वाक़िया रजब सन् 8 हिजरी का है मगर उन दिनों क़ुरैश से सुलह थी। इसलिये कुछ ने कहा कि ये ग़ज़वा जुहैना की क़ौम से हुआ था जो समुन्दर के पास रहती थी। यही सहीह मा'लूम होता है।

4360. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे वहब बिन कैसान ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने साहिले समुन्दर की तरफ़ एक लश्कर भेजा और उसका अमीर अबू उबैदह बिन ज़र्राह

كَانَ بَعْدُ قَالَ لِي دُو غَمْرُو : يَا جَرِيرُ إِنَّ
بِكَ عَلَيَّ كَرَامَةً وَإِنِّي مُخْبِرُكَ خَبْرًا إِنَّكُمْ
مَعْتَصِرُ الْغَرَبِ لَنْ تَزَالُوا بِخَيْرٍ مَا كُنْتُمْ إِذَا
هَلَكَ أَمِيرٌ تَأَمَّرْتُمْ لِي آخَرٌ فَإِذَا كَانَتْ
بِالسَّيْفِ كَانُوا مُلُوكًا يَفْضُونَ غَضَبَ
الْمُلُوكِ وَيَرْضَوْنَ رِضَا الْمُلُوكِ.

٦٦- باب غَزْوَةِ سَيْفِ الْبَحْرِ

وَهُمْ يَنْطَفِقُونَ عِوَا لِقُرَيْشٍ وَأَمِيرُهُمْ أَبُو
عُبَيْدَةَ

٤٣٦٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي

مَالِكٌ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ
عُبَيْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: بَعَثَ
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْثًا

(रज़ि.) को बनाया। उसमें तीन सौ आदमी शरीक थे। खैर हम मदीना से खाना हुए और अभी रास्ते ही में थे कि राशन खत्म हो गया, जो कुछ बच रहा था वो अबू उबैदह (रज़ि.) के हुक्म से जमा किया गया तो दो थैले खजूरों के जमा हो गये। अब अबू उबैदह (रज़ि.) हमें रोज़ाना थोड़ा थोड़ा उसी में से खाने को देते रहे। आखिर जब ये भी खत्म के करीब पर पहुँच गया तो हमारे हिस्से में सिर्फ़ एक-एक खजूर आती थी। यहब ने कहा मैंने जाबिर (रज़ि.) से पूछा कि एक खजूर से क्या होता रहा होगा? जाबिर (रज़ि.) ने कहा वो एक खजूर ही गनीमत थी। जब वो भी न रही तो हमको उसकी क़द्र मा'लूम हुई थी, आखिर हम समुन्दर के किनारे पहुँच गये। वहाँ क्या देखते हैं बड़े टीले की तरह एक मछली निकल कर पड़ी है। उस मछली को सारा लश्कर अठारह दिन तक खाता रहा। बाद में अबू उबैदह (रज़ि.) के हुक्म से उसकी पसली की दो हड्डियाँ खड़ी की गईं वो इतनी ऊँची थीं कि ऊँट पर कजावा कसा गया वो उनके तले से निकल गया और हड्डियों को बिलकुल नहीं लगा। (राजेअ: 2473)

[راجع: 2483]

अल्लाह ने इस तरह अपने प्यारे मुजाहिदीन बन्दों के रिज़क का सामान मुहय्या फ़र्माया। सच है यजुक्हु मिन हैषु ला यहतसिब

4361. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन डययना ने बयान किया, कहा कि हमने अम्र बिन दीनार से जो याद किया वो ये है कि उन्होंने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तीन सौ सवारों के साथ भेजा और हमारा अमीर अबू उबैदह इब्नुल जराह (रज़ि.) को बनाया। ताकि हम कुरैश के क़ाफ़िल-ए-तिजारत की तलाश में रहें। साहिले समुन्दर पर हम पन्द्रह दिन तक पड़ाव डाले रहे। हमें (उस सफ़र में) बड़ी सख़्त भूख और फ़ाक़े का सामना करना पड़ा, यहाँ तक नौबत पहुँची कि हमने बबूल के पत्ते खाकर व़क्त गुज़ारा। इसीलिये इस फ़ौज का लक़ब पत्तों की फ़ौज हो गया। फिर इत्तिफ़ाक़ से समुन्दर ने हमारे लिये एक मछली जैसा जानवर साहिल पर फेंक दिया, उसका नाम अम्बर था, हमने उसको पन्द्रह दिन तक खाया और उसकी चर्बी को तैल के तौर पर (अपने जिस्मों पर) मला। इससे हमारे बदन की त़ाक़त व कुव्वत फिर लौट आई। बाद में अबू उबैदह (रज़ि.) ने उसकी एक पसली

4361- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: الَّذِي خِطْبَتُهُ مِنْ غُرَرِ بْنِ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْفَمَانَةِ وَاجِبِ، أَمِيرَنَا أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ نَزَعْنَا مِنْ قُرَيْشٍ فَأَقَمْنَا بِالسَّاحِلِ يَصِفُ شَهْرٍ فَأَصَابَنَا جُوعٌ شَدِيدٌ حَتَّى أَكَلْنَا الْخَبْطَ فَسُمِّيَ ذَلِكَ الْجَيْشُ جَيْشَ الْخَبْطِ فَالْقَى لَنَا الْبَحْرُ فَاتَتْهُ يَقَالُ لَهَا: الْعَبْرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ يَصِفُ شَهْرٍ، وَأَقَمْنَا مِنْ وَدُكِهِ حَتَّى قَاتَتْ إِلَيْنَا أَجْسَامَنَا فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ صِلْعًا مِنْ أَصْلَاعِهِ، فَنَصَبَتْهُ فَعَمَدًا إِلَى اطْوَلِ رَجُلٍ مَعَهُ قَالَ سُفْيَانُ

निकालकर खड़ी करवाई और जो लश्कर में सबसे लम्बे आदमी थे। उन्हें उसके नीचे से गुजारा। सुफयान बिन डययना ने एक बार इस तरह बयान किया कि एक पसली निकालकर खड़ी की और एक शङ्ख को ऊँट पर सवार कराया वो उसके नीचे से निकल गया। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि लश्कर के एक आदमी ने पहले तीन ऊँट ज़िबह किये, फिर तीन ऊँट ज़िबह किये और जब तीसरी बार तीन ऊँट ज़िबह किये तो अबू डबैदह (रज़ि.) ने उन्हें रोक दिया क्योंकि सब ऊँट ज़िबह कर दिये जाते तो सफ़र कैसे होता और अमर बिन दीनार ने बयान किया कि हमको अबू सालेह ज़ब्रवान ने ख़बर दी कि कैस बिन सअद (रज़ि.) ने (वापस आकर) अपने वालिद (सअद बिन इब्बाद रज़ि) से कहा कि मैं भी लश्कर में था जब लोगों को भूख लगी तो अबू डबैदह (रज़ि.) ने कहा कि ऊँट ज़िबह करो, कैस बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ज़िबह कर दिया कहा कि फिर भूखे हुए तो उन्होंने कहा कि ऊँट ज़िबह करो, मैंने ज़िबह किया, बयान किया कि जब फिर भूखे हुए तो कहा कि ऊँट ज़िबह करो, मैंने ज़िबह किया, फिर भूखे हुए तो कहा कि ऊँट ज़िबह करो, मैंने ज़िबह किया, फिर भूखे हुए तो कहा कि ऊँट ज़िबह करो, फिर कैस (रज़ि.) ने बयान किया कि इस मर्तबा मुझे अमीर लश्कर की तरफ़ से मना कर दिया गया। (राजेअ: 2473)

बाद में ये सोचा गया कि अगर ऊँट सारे इस तरह ज़िबह कर दिये गये तो फिर सफ़र कैसे होगा। लिहाज़ा ऊँटों का ज़िबह बन्द कर दिया गया मगर अल्लाह ने मछली के ज़रिये लश्कर की ख़ुराक का इतिज़ाम कर दिया। ज़ालिक फ़ज़लुल्लाहि यूतीहि मन्च्यशाउ वल्लाहु जुल्फ़ज़िल्लुअज़ीम

4362. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्हें अमर बिन दीनार ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम पत्तों की फ़ौज में शरीक थे। अबू डबैदह (रज़ि.) हमारे अमीर थे। फिर हमें शिहत से भूख लगी, आख़िर समुन्दर ने एक ऐसी मुर्दा मछली बाहर फेंकी कि हमने वैसी मछली पहले कभी नहीं देखी थी उसे अम्बर कहते थे। वो मछली हमने पन्द्रह दिन तक खाई। फिर अबू डबैदह (रज़ि.) ने उसकी हड्डी खड़ी करवा दी तो ऊँट का सवार उसके नीचे से गुजर गया। (इब्ने जुरैज ने बयान किया कि) फिर मुझे अबुज्जुबैर ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू डबैदह (रज़ि.) ने कहा उस मछली को खाओ, फिर जब हम मदीना लौटकर आए तो हमने उसका

مَرَّةً : حَبْلًا مِنْ أَصْلَاحِهِ قَصَبَةً وَآخَذَ رَحْلًا وَبَعِيرًا فَمَرَّ تَحْتَهُ، قَالَ جَابِرٌ: وَكَانَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ نَحَرَ ثَلَاثَ جَزَائِرَ ثُمَّ نَحَرَ ثَلَاثَ جَزَائِرَ، ثُمَّ نَحَرَ ثَلَاثَ جَزَائِرَ ثُمَّ إِنَّهَا غَبِيْدَةٌ نَهَاةً. وَكَانَ هَمْرٌ يَقُولُ: أَخْبَرَنَا أَبُو صَالِحٍ أَنَّ قَيْسَ بْنَ مَعْبُدٍ قَالَ لِأَبِيهِ: كُنْتُ فِي الْجَيْشِ فَجَاهُوا، قَالَ: انْحَرُوا قَالَ: نَحَرْتُ قَالَ: ثُمَّ جَاهُوا قَالَ: انْحَرُوا قَالَ: نَحَرْتُ، قَالَ: ثُمَّ جَاهُوا، قَالَ: انْحَرُوا، قَالَ: نَحَرْتُ ثُمَّ جَاهُوا قَالَ: انْحَرُوا قَالَ: نَهَيْتُ.

[راجع: ٢٤٨٣]

٤٣٦٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي هَمْرٌ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: غَزَوْنَا جَيْشَ الْخَبَطِ، وَأَمَرَ أَبُو غَبِيْدَةَ فَجَفْنَا جَوْعًا شَدِيدًا، فَالْقَى الْبَحْرُ حَوْثًا مِثْلًا لَمْ نَرْ مِثْلَهُ، يُقَالُ لَهُ: الْعَثَرُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ بَصْفَ شَهْرٍ، فَأَخَذَ أَبُو غَبِيْدَةَ عَظْمًا مِنْ عِظَامِهِ، فَمَرَّ الرَّاجِبُ تَحْتَهُ فَأَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ: قَالَ أَبُو غَبِيْدَةَ كُلُوا فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِيْنَةَ ذَكَرْنَا ذَلِكَ

ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया, आपने फ़र्माया कि वो रोज़ी खाओ जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये भेजी है। अगर तुम्हारे पास उसमें से कुछ बची हो तो मुझे भी खिलाओ। चूनोंचे एक आदमी ने उसका गोश्त लाकर आपकी ख़िदमत में पेश किया और आपने भी उसे तनावुल फ़र्माया। (राजेअ : 2473)

لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «كُلُوا رِزْقًا أَخْرَجَهُ اللَّهُ أَطْعَمُونَا إِنْ كَانَ مِنْكُمْ» فَأَنَّهُ بَعْضُهُمْ لَأَكَلَهُ.

[راجع: ٢٤٨٣]

तशरीह : इस हदीष से ये निकला कि समुन्दर की मुर्दा मछली का खाना दुस्त है और हफ़िया ने जो तावील की है कि लश्कर वाले मुज़्तर थे उनके लिये दुस्त थी वो तावील इस रिवायत से ग़लत ठहरती है चूँकि यहाँ उस मछली का गोश्त आँहज़रत (ﷺ) का भी खाना मज़कूर है जो यक़ीनन मुज़्तर नहीं थे।

बाब 67 : हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का लोगों

के साथ सन 9 हिजरी में हज्ज करना

4363. हमसे सुलैमान बिन दाऊद अबु अर रबीअ ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया कि उनसे जुस्री ने, उनसे हुमैद बिन अब्दुरहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को हज्जतुल विदाअ से पहले जिस हज्ज का अमीर बनाकर भेजा था, उसमें हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे कई आदमियों के साथ कुर्बानी के दिन (मिना) में ये ऐलान करने के लिये भेजा था कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक (बैतुल्लाह) का हज्ज करने न आए और न कोई शख्स बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे होकर करे।

(दीगर मक़ाम : 4605, 4645, 6744)

٦٧- باب خَجَّ أَبِي بَكْرٍ بِالنَّاسِ فِي

سَنَةِ بَسْمِ

٤٣٦٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصَّدِيقَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بَعَثَهُ فِي الْحَجَّةِ الْيُمَى أَمْرَةَ النَّبِيِّ ﷺ قَبْلَ خَجَّةِ الْوُدَاعِ يَوْمَ النَّحْرِ فِي زَهْطٍ يُؤَدِّنُ فِي النَّاسِ «لَا يَخُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكًا، وَلَا يَطُوفُ بِأَيْتَمَتِ غُرَيَّانَ».

[أطرافه في : ٤٦٠٥، ٤٦٥٤، ٦٧٤٤].

तशरीह : ये वाक़िया सन् 9 हिजरी का है। सन 10 हिजरी में हज्जतुल विदाअ हुआ। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) माहे ज़ी क़अदा सन् 9 हिजरी में मदीना से निकले थे। उनके साथ तीन सौ अस्हाब थे और आँहज़रत (ﷺ) ने बीस ऊँट उनके साथ भेजे थे। उस हज्ज में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने ये सरकारी ऐलान किया जो रिवायत में मज़कूर है कि आइन्दा साल से का'बा मुश्रिकीन से बिलकुल पाक हो गया और नंग घड़ंग होकर हज्ज करने की बातिल रस्म भी ख़त्म हो गई, जो अर्सा से जारी थी।

4364. मुझसे अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि सबसे आख़िरी सूरह जो पूरी उतरी वो सूरह बरात (तौबा) थी और

٤٣٦٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: آخِرُ سُورَةٍ نَزَلَتْ كَامِلَةً بِرَاءَةٌ وَآخِرُ سُورَةٍ نَزَلَتْ

आखिरी आयत जो उतरी वो सूरह निसा की ये आयत है। व
यस्तफ़्तूनका कुलिह्लाहु युफ़्तीकुम फ़िल कलालति.

خَاتِمَةُ سُورَةِ النَّسَاءِ ﴿يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ
يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ﴾ [النساء : 176].

मसाइले मीराष के बारे में आखिरी आयत मुराद है करना हुजूर (ﷺ) की वफ़ात से चन्द दिन पहले आखिरी आयत नाज़िल हुई
वो आयत, वक्तकू यौम तुरजक्रन फ़ीहि इलल्लाह (अल् बकर: 281) वाली है।

बाब 68 : बनी तमीम के वफ़द का बयान

٦٨- باب وفد بني تميم

तशरीह : ये सन 8 हिजरी के आखिर में आए थे। जब आँहज़रत (ﷺ) जिअराना से वापस लौटकर आए थे। उन ऐलचियों
में अतारद, अकरज़, ज़बरकान, अमर, खब्बाब, नईम, कैस और इययना बिन हसन थे।

4365. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने
बयान किया, उनसे अबू सख़रह ने, उनसे सप्रवान इब्ने मुहरिज
माज़िनी ने और उनसे इमरान बिन हुसैन ने बयान किया कि बन्
तमीम के चन्द लोगों का (एक वफ़द) नबी करीम (ﷺ) की
ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया ऐ बन्
तमीम! बशारत कुबूल करो। वो कहने लगे कि बशारत तो आप
हमें दे चुके, कुछ माल भी दीजिए। उनके इस जवाब पर हुजूर
अकरम (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर नागवारी का अग्रर देखा
गया, फिर यमन के चन्द लोगों का एक (वफ़द) आँहज़रत (ﷺ)
की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि बन्
तमीम ने बशारत नहीं कुबूल की, तुम कुबूल कर लो। उन्होंने अर्ज
किया या रसूलल्लाह! हमको बशारत कुबूल है। (राजेअ: 3190)

٤٣٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سَفْوَانُ
عَنْ أَبِي سَخْرَةَ، عَنْ سَفْوَانِ بْنِ مُخَرِّزٍ
الْمَدَنِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَى نَفَرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ
النَّبِيَّ ﷺ فَقَالُوا: «اقْبَلُوا الْبَشْرَى يَا نَبِيَّ
تَمِيمٍ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ بَشَّرْتَنَا
فَأَغْطَيْنَا لِرَبِّكَ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ فَجَاءَ نَفَرٌ
مِنَ الْيَمَنِ فَقَالُوا: «اقْبَلُوا الْبَشْرَى إِذْ لَمْ
يَقْبَلَهَا بَنُو تَمِيمٍ» قَالُوا: قَدْ قَبِلْنَا يَا
رَسُولَ اللَّهِ. [راجع: ٣١٩٠]

आँहज़रत (ﷺ) की नाराज़गी की वजह ये थी कि उन्होंने जन्नत की दाइमी नेअमतों की बशारत को कुबूल न किया और दुनियाए
फ़ानी के तालिब हुए। हालाँकि वो अगर बशारते नबवी को कुबूल कर लेते तो कुछ न कुछ दुनिया भी मिल ही जाती ख़सिरदुनिया
वल्आखिरति के मिस्दाक हुए, यमन की खुशकिस्मती है कि वहाँ वालों ने बशारते नबवी को कुबूल कर लिया। उससे यमन
की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई, मगर आजकल की खानाजंगी (गृहयुद्ध) ने यमन को दारादार कर दिया है। अल्लाहुम्म अल्लिफ़
बैन कुलुबिल्मुस्लिमीन, अमीन। बन्तमीम सारे ही ऐसे न थे ये चन्द लोग थे जिनसे ये ग़लती हुई बाकी बन्तमीम के फ़ज़ाइल
भी हैं जैसा कि आगे ज़िक्र आ रहा है।

बाब 69 : मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि इययना
बिन हसन बिन हुज़ैफ़ा बिन बद्र को रसूलुल्लाह
(ﷺ) ने बनी तमीम की शाख़ बन् अम्बर की तरफ़
भेजा था, उसने उनको लूटा और कई आदमियों को
क़त्ल किया और उनकी कई औरतों को कैद किया

٦٩- باب قال ابن إسحاق عَزَوَ
عَيْنَةُ بْنُ حُصَيْنٍ بْنِ حَدِيفَةَ بْنِ بَدْرِ
بَنِي الْغَتَرِ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ بَعَثَهُ النَّبِيُّ
ﷺ إِلَيْهِمْ فَأَغَارَ وَأَصَابَ مِنْهُمْ
نَاسًا وَسَتَى مِنْهُمْ نِسَاءً.

तशरीह : इस लड़ाई का सबब ये था कि बनी अम्बर ने खुजाआ की कौम पर ज्यादाती की। आप (ﷺ) ने डययना को पचास आदमियों के साथ उन पर भेजा। कोई अंज़ारी या मुहाजिर उस लड़ाई में शरीक न था। कहते हैं डययना ने उस थोड़ी सी फ़ौज से बनी अम्बर की ग्यारह औरतों को और ग्यारह मर्दों को और तीस बच्चों को कैदी बना लिया।

4366. मुझसे जुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे जरिर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे अम्मारा इब्ने क़अक्राअ ने, उनसे अबू जरआ ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उस वक़्त से हमेशा बनू तमीम से मुहब्बत रखता हूँ जबसे नबी करीम (ﷺ) की जुबानी उनकी तीन ख़ूबियाँ मैंने सुनी हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके बारे में फ़र्माया था कि बनू तमीम दज्जाल के हक़ में मेरी उम्मत के सबसे ज्यादा सख़्त लोग वाबित होंगे और बनू तमीम की एक कैदी खातून आइशा (रज़ि.) के पास थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे आज़ाद कर दो क्योंकि ये इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से है और उनके यहाँ से ज़कात वसूल होकर आई तो आपने फ़र्माया कि ये एक क़ौम की या (ये फ़र्माया कि) ये मेरी क़ौम की ज़कात है।

(राजेअ: 2543)

क्योंकि बनू तमीम इल्यास बिन मुजर में जाकर आँहज़रत (ﷺ) से मिल जाते हैं।

4367. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि बनू तमीम के चन्द सवार नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि आप हमारा कोई अमीर मुंतख़ब कर दीजिए। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि क़अक्राअ बिन मअबद बिन ज़ुरारह (रज़ि.) को अमीर मुंतख़ब कर दीजिए। उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! बल्कि आप अन्नरअ बिन हाबिस (रज़ि.) को उनका अमीर मुंतख़ब फ़र्मा दीजिए। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने उमर (रज़ि.) से कहा कि तुम्हारा मक्सद सिर्फ़ मुझसे इख़ितलाफ़ करना है। उमर (रज़ि.) ने कहा कि नहीं मेरी गर्ज़ मुख़ालफ़त नहीं है। दोनों इतना झगड़े कि आवाज़ बुलन्द हो गई। इसी पर सूरह हुजरात की ये आयत नाज़िल हुई। या अय्युहल्लज़ीना आमनू ला तुक्रहिमू, आख़िर आयत तक।

٤٣٦٦ - حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقُعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : لَا أَزَالُ أَحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ بَعْدَ ثَلَاثٍ، سَمِعْتُهُمْ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُهَا فِيهِمْ ((هُمْ أَشَدُّ أَمْنِي عَلَى الدُّجَالِ)) وَكَانَتْ فِيهِمْ سَيِّئَةٌ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَتْ : ((اغْتَبِهَا فَإِنَّهَا مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ)) وَجَاءَتْ صَدَقَاتُهُمْ فَقَالَ : ((عَلَيْهِ صَدَقَاتُ قَوْمٍ أَوْ قَوْمِي)) .

[راجع: ٢٥٤٣]

٤٣٦٧ - حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُمْ أَنَّهُ قَدِمَ رَكَبٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمْرُ الْقُعْقَاعِ بْنُ مَعْبُدٍ بْنِ زُرَّارَةَ، قَالَ عُمَرُ: بَلْ أَمْرُ الْأَفْرَغِ بْنِ حَابِسٍ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا أَرَدْتُ إِلَّا خِلَافِي قَالَ عُمَرُ: مَا أَرَدْتُ خِلَافَكَ فَخَمَارِيَا حَتَّى ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا فَتَنَزَلْتُ ذَلِكَ: هَيَّا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ [الحجرات : ١] . حَتَّى انْقَضَتْ .

(दीगर मक़ाम : 4745, 4847, 7302)

[أطرافه ن: ٤٨٤٧, ٤٨٤٨, ٧٣٠٢]

तशरीह : एक ख़तरनाक ग़लती : हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के जवाब में कहा, मा अरतु तर्जुमा, साहिब तफ़हीमुल बुखारी ने यूँ किया है उमर (रज़ि.) ने कहा कि ठीक है मेरा मक़सद सिर्फ़ तुम्हारी राय से इख़्तिलाफ़ करना ही है। ये ऐसा ख़तरनाक तर्जुमा है कि हज़रत शैख़ेन की शाने अक़दस में इससे बड़ा धब्बा लगता है जबकि हज़रत शैख़ेन में बाहमी तौर पर बहुत ही खुलूस था। अगर कभी कोई मौक़ा बाहमी इख़्तिलाफ़ात का आ भी गया तो वो उसको फ़ौरन दूर कर लिया करते थे। ख़ास तौर पर हज़रत उमर (रज़ि.) हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) का बहुत ज़्यादा एहतिराम करते थे और हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) का भी यही हाल था।

बाब 70 : वफ़दे अब्दुल क़ैस का बयान

٧٠- باب وَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ

अब्दुल क़ैस एक मशहूर क़बीला था जो बहरीन में रहता था। सबसे पहले मदीना मुनव्वरा के बाद एक गाँव में वहीं जुम्आ की नमाज़ कायम की गई जिस गाँव का नाम जवाज़ी था। मज़ीद तफ़सील आगे मुलाहिजा हो।

4368. मुझसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा कि हमको अबू आमिर अक़दी ने ख़बर दी, कहा हमसे कुरैह इब्ने ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अबू जमह ने कि मैं ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा कि मेरे पास एक घड़ा है जिसमें मेरे लिये नबीज़ या'नी ख़जूर का शर्बत बनाया जाता है। मैं वो पीने तक पिया करता हूँ। कुछ वक़्त बहुत पी लेता हूँ और लोगों के पास देर तक बैठा रहता हूँ तो डरता हूँ कि कहीं फ़ज़ीहत न हो। (लोग कहने लगे कि ये नशाबाज़ है) इस पर इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़द नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने फ़र्माया अच्छे आए, न ज़लील हुए न शर्मिन्दा (ख़ुशी से मुसलमान हो गये न होते तो ज़िल्लत और शर्मिन्दगी हासिल होती।) उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारे और आपके दरम्यान में मुश्रीकीन के क़बीले पड़ते हैं। इसलिये हम आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ हुर्मत वाले महीनों में ही हाज़िर हो सकते हैं। आप (ﷺ) हमें वो अहक़ाम व हिदायात सुना दें कि अगर हम उन पर अमल करते रहें तो जन्नत में दाख़िल हों और जो लोग हमारे साथ नहीं आ सके हैं उन्हें भी वो हिदायात पहुँचा दें। अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार चीज़ों का हुक्म देता हूँ और चार चीज़ों से रोकता हूँ। मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ अल्लाह पर ईमान लाने का, तुम्हें मा'लूम है अल्लाह पर ईमान लाना किसे कहते हैं? उसकी गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, नमाज़ कायम

٤٣٦٨- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا أَبُو عَامِرٍ الْقَدِيدِيُّ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، قُلْتُ لَأَبْنِ عَبَّاسٍ: إِنَّ لِي جَرَّةً يُتَبَدَّلُ لِي فِيهَا نَبِيذٌ فَأَشْرَبُهُ خُلُوعًا فِي جَرٍّ إِنَّ أَكْثَرُ مِنْهُ فَجَالَسْتُ الْقَوْمَ فَأَطَلْتُ الْجُلُوسَ حَتَّى إِذَا انْقَضَ فَقَالَ: قِيمْ وَفَدَّ عَبْدُ الْقَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَرْحَبًا بِالْقَوْمِ غَيْرِ غَرَابَا وَلَا نَدَامَا)) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ الْمُشْرِكِينَ مِنْ مُضَرَ وَإِنَّا لَا نَصِلُ إِلَيْكَ إِلَّا فِي أَشْهُرِ الْحَرَمِ، حَدَّثَنَا بِحَمَلٍ مِنَ الْأَمْرِ إِنْ عَمِلْنَا بِهِ دَخَلْنَا الْجَنَّةَ وَلَنَدْعُو بِهِ مِنْ وَرَاءَنَا، قَالَ: ((أَمَرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الْإِيمَانُ بِاللَّهِ هَلْ تَذَرُونَ مَا الْإِيمَانُ بِاللَّهِ؟ شَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَإِقَامُ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ، وَصَوْمُ رَمَضَانَ، وَإِنْ تَعْمَلُوا مِنَ الْمَغَائِمِ الْعُمُسَ، وَأَنْهَاكُمْ

करने का, ज़कात देने का, रमज़ान के रोज़े रखने और माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा (बैतुलमाल को) अदा करने का हुक्म देता हूँ और मैं तुम्हें चार चीज़ों से रोकता हूँ या'नी कहूँ के तूम्बे में और कुरैदी हुई लकड़ी के बर्तन में और सबज़ लाखी बर्तन में और रोगनी बर्तन में नबीज़ भिगोने से मना करता हूँ। (राजेज़ : 53)

عَنْ أَرْبَعٍ : مَا اتَّيِدَ فِي الدُّهَاءِ، وَالنَّعِيرِ، وَالْحَتَمِ، أَوْ الْمُرْقَتِ)).

[راجع: ٥٣]

तशरीह : ये ऐलची दो बार आए थे। पहली बार बारह तेरह आदमी थे और दूसरी बार में चालीस थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके प हुँचने से पहले सहाबा (रज़ि.) को उनके आने की खुशख़बरी बज़रिये यहा सुना दी थी। उन बर्तनों से इसलिये मना किया कि उनमें नबीज़ को डाला जाता और वो जल्द सड़कर शराब बन जाया करती थी। इससे शराब की इतिहाई बुराई प्राबित हुई कि उसके बर्तन भी घरों में न रखे जाएँ। अफ़सोस उन मुसलमानों पर जो शराब पीते बल्कि उसका धंधा करते हैं। अल्लाह उनको तौबा करने की तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

4369. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना कि वो बयान करते थे कि जब क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़द हज़ुरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने अज़्र किया या रसूलुल्लाह! हम क़बीला रबीआ की एक शाख़ हैं और हमारे और आपके दरम्यान कुफ़ारे मुज़र के क़बाइल पड़ते हैं। हम हज़ुर (ﷺ) की ख़िदमत में सिर्फ़ हुर्मत वाले महीनों में ही हाज़िर हो सकते हैं। इसलिये आप (ﷺ) चन्द ऐसी बातें बतला दीजिए कि हम भी उन पर अमल करें और जो लोग हमारे साथ नहीं आ सके हैं, उन्हें भी उसकी दा'वत दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार चीज़ों से रोकता हूँ (मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ) अल्लाह पर ईमान लाने का या'नी उसकी गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, फिर आप (ﷺ) ने (अपनी उँगली से) एक इशारा किया, और नमाज़ क़ायम करने का, ज़कात देने का और उसका कि माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा (बैतुलमाल को) अदा करते रहना और मैं तुम्हें दुब्बाअ, नक़ीर, मुज़फ़फ़त और हन्तुम के बर्तनों के इस्ते'माल से रोकता हूँ। (राजेज़ : 53)

٤٣٦٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: قَدِمَ وَقَدْ غَدَبَ النَّبِيُّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا هَذَا الْحَيَّ مِنْ رِيبَةٍ، وَقَدْ خَالَتْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كَفَّارَ مَضْرُ فَلَسْنَا نَحْلُسُ إِلَيْكَ إِلَّا فِي شَهْرِ حَرَامٍ، فَمَرْنَا بِأَشْيَاءَ نَأْخُذُ بِهَا وَنَدْعُو إِلَيْهَا مَنْ وَرَاءَنَا قَالَ: ((أَمْرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الْإِيمَانِ بِاللَّهِ، شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَغُلْدَ وَاحِدَةٍ، وَأَقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَإِنْ تَوَدُّوا اللَّهُ حُمُسَ مَا حَبِطَتْ، وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الدُّهَاءِ، وَالنَّعِيرِ، وَالْحَتَمِ، وَالْمُرْقَتِ)).

[راجع: ٥٣]

4370. हमसे यहा बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने, कहा मुझको अम्प बिन हारिष ने ख़बर दी

٤٣٧٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي عَمْرُو، وَقَالَ

और बक्र बिन मुजर ने बूँ बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन वहब ने अम्र बिन हारिष से रिवायत किया, उनसे बुकैर ने और उनसे कुरैब, (इब्ने अब्बास रज़ि. के गुलाम) ने बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.), अब्दुर्रहमान बिन अज़हर और मिस्वर बिन मखरमा ने उन्हें आइशा (रज़ि.) की खिदमत में भेजा और कहा कि उम्मुल मोमिनीन से हमारा सबका सलाप कहना और अम्र के बाद दो रकअतों के बारे में उनसे पूछना और ये कि हमें मा' लूम हुआ है कि आप उन्हें पढ़ती हैं और हमे ये भी मा' लूम हुआ है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें पढ़ने से रोका था। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मैं उन दो रकअतों के पढ़ने पर इमर (रज़ि.) के साथ (उनके दौरे ख़िलाफ़त में) लोगों को मारा करता था। कुरैब ने बयान किया कि फिर मैं उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और उनका पैगाम पहुँचाया। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इसके बारे में उम्मे सलमा (रज़ि.) से पूछो, मैंने उन हज़रात को आकर उसकी ख़बर दी तो उन्होंने मुझको उम्मे सलमा (रज़ि.) की खिदमत में भेजा, वो बातें पूछने के लिये जो आइशा (रज़ि.) से उन्होंने पुछवाई थीं। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने खुद भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि आप अम्र के बाद दो रकअतों से मना करते थे लेकिन एक बार आप (ﷺ) ने अम्र की नमाज़ पढ़ी फिर मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए, मेरे पास उस वक़्त क़बीला बनु हराम की कुछ औरतें बैठी हुई थीं और आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ी। ये देखकर मैंने ख़ादिमा को आपकी खिदमत में भेजा और उसे हिदायत कर दी कि हुज़ूर (ﷺ) के पहलू में खड़ी हो जाना और अर्ज करना कि उम्मे सलमा (रज़ि.) ने पूछा है या रसूलुल्लाह! मैंने तो आपसे ही सुना था और आपने अम्र के बाद उन रकअतों के पढ़ने से मना किया था लेकिन आज मैं खुद आपको दो रकअत पढ़ते देख रही हूँ। अगर आँहज़रत (ﷺ) हाथ से इशारा करें तो फिर पीछे हट जाना। ख़ादिमा ने मेरी हिदायत के मुताबिक़ किया और हुज़ूर (ﷺ) ने हाथ से इशारा किया तो वो पीछे हट गई। फिर जब फ़ारिग हुए तो फ़र्माया, ऐ अबू उमर्या की बेटी! अम्र के बाद की दो रकअतों के बारे में तुमने सवाल किया है, वजह ये हुई थी कि

بَكَرُ بْنُ مُجَرٍّ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْخَدْرِ عَنْ بُكَيْرٍ أَنَّ كُرَيْبًا مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ حَدَّثَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ وَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنَ أَزْهَرَ وَالْمُسَوِّزَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَرْسَلُوا إِلَى عَائِشَةَ فَقَالُوا : اقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلَامَ مِنَّا جَمِيعًا وَسَلِّمْ عَلَيْهَا مِنَ الرُّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْفَصْرِ، وَإِنَّا أَخْبَرْنَا أَنَّكَ تُصَلِّيَهَا وَقَدْ بَلَّغْنَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْهَا قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : وَكُنْتُ احْتَرَبْتُ مَعَ عُمَرَ النَّاسَ عَنْهَا، قَالَ كُرَيْبٌ : فَدَخَلْتُ عَلَيْهَا وَبَلَّغْتُهَا مَا أُرْسَلُوهَا فَقَالَتْ : مَتَى أُمِّ سَلَمَةَ، فَأَخْبَرْتُهُمْ فَرَدُّوا إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ بِعِيْلٍ مَا أُرْسَلُوهَا إِلَى عَائِشَةَ، فَقَالَتْ أُمِّ سَلَمَةَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنْهَا وَإِنَّهُ صَلَّى الْفَصْرَ ثُمَّ دَخَلَ عَلَى وَعَبْدِي بِسُوءَةٍ مِنْ بَنِي حَرَامٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَصَلَّاهُمَا فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ الْخَدَوِمَ فَقُلْتُ قُومِي إِلَى جَنِبِ فَقُولِي قُولُ أُمِّ سَلَمَةَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَمْ أَسْمَعْكَ تَنْهَى عَنْ هَاتَيْنِ الرُّكْعَتَيْنِ فَأَرَأَيْتَ تُصَلِّيَهُمَا لِأَنَّ أَشَارَ بِيَدِهِ فَاسْتَخَرِي فَعَمِلْتُ الْحَاوِيَةَ فَأَشَارَ بِيَدِهِ فَاسْتَخَرْتُ عَنْهُ، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ : ((يَا بِنْتُ أَبِي أُمَيَّةَ سَأَلْتُ عَنْ الرُّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْفَصْرِ؟ إِنَّهُ أَنَا أَنَا مِنْ عَبْدِ الْقَيْسِ بِالْإِسْلَامِ مِنْ قَوْمِهِمْ فَسَلُّوا عَنِ الرُّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ لَهُمَا هَاتَانِ)).

क्रबीला अब्दुल क्रैस के कुछ लोग मेरे यहाँ अपनी क्रौम का इस्लाम लेकर आए थे और उनकी वजह से जुहर के बाद की दो रकअतें मैं नहीं पढ़ सका था ये वही दो रकअतें हैं। (राजेअ: 1233)

[راجع: 1233]

तशरीह: बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आखिर हदीष में वपद अब्दुल क्रैस के आने का जिक्र है जिस दोगाना का जिक्र है ये असर का दोगाना न था बल्कि जुहर का दोगाना था। तहावी की रिवायत में यही है कि मेरे पास जकात के कूँट आए थे, मैं उनको देखने में ये दोगाना पढ़ना भूल गया था। फिर मुझे याद आया तो घर आकर हमारे पास उनको पढ़ लिया। अबू उमय्या उम्मुल मोमिनीन हजरत उम्मे सलमा (रजि.) के वालिद थे।

4371. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल जुअफी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आमिर अब्दुल मलिक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, (ये तहमान के बेटे हैं) उनसे अबू जम्ह ने बयान किया और उनसे हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की मस्जिद या'नी मस्जिदे नबवी के बाद सबसे पहला जुम्आ जवाषी की मस्जिद अब्दुल क्रैस में कायम हुआ। जवाषी बहरीन का एक गाँव था। (राजेअ: 892)

٤٣٧١- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو غَامِرٍ عَبْدُ الْمَلِكِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَوَّلُ جُمُعَةٍ جُمِعَتْ بَعْدَ جُمُعَةِ جُمُعَةٍ فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فِي مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجَوَاشِي يَغْنِي قَرْنَةً مِنَ الْبَحْرَيْنِ. [راجع: ٨٩٢]

तशरीह: हजरत इमाम बुखारी (रह) इस हदीष को यहाँ सिर्फ वपदे अब्दुल क्रैस के तआरुफ के सिलसिले में लाए हैं और बतलाया है कि यही वो लोग हैं जिन्होंने अपने गाँव जवाषी नामी में जुम्आ कायम किया था। ये दूसरा जुम्आ है जो मस्जिदे नबवी के बाद दुनिय-ए-इस्लाम में कायम किया गया। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि गाँव में भी क़यामे जमाअत के साथ क़यामे जुम्आ भी जाइज़ है। मगर सद अफ़सोस कि ग़ाली उलम-ए-अहनाफ़ ने इक़ामते जुम्आ फ़िल् कुरा की शदीद मुखालफ़त की है। मेरे सामने तजल्ली बाबत अप्रैल सन् 1957 ईस्वी का पर्चा रखा हुआ है जिसके पेज नं. पर हजरत मौलाना सैफ़ुल्लाह साहब मुबल्लिग़ देवबन्द का जिक़रे ख़ैर लिखा है कि उन्होंने फ़र्माया कि देहात में जो जुम्आ पढ़ते हैं मुझसे लिखा लो वो दोज़खी हैं। ये हजरत मौलाना सैफ़ुल्लाह साहब ही का ख़याल नहीं बल्कि बेशतर अकाबिर देवबन्द ऐसा ही कहते चले आ रहे हैं। इस मसले के बारे में हम किताबुल जुम्आ में काफ़ी लिख चुके हैं। मज़ीद ज़रूरत नहीं है। हाँ एक बड़े ज़बरदस्त हनफ़ी आलिम मुतर्जिम व शारेह बुखारी शरीफ़ की तक्ररीर यहाँ नक़ल कर देते हैं जिससे मा'लूम होगा कि अहनाफ़ की आइदक़र्दा शराइते जुम्आ का वज़न क्या है और गाँव में जुम्आ जाइज़ है या नाजाइज़। इन्साफ़ के लिये ये तक्ररीर दिल पज़ीर काफ़ी है।

एक मुअतबर हनफ़ी आलिम की तक्ररीर: जवाषी बहरीन के मुता'ल्लिकात से एक गांव है। नमाज़े जुम्आ मिश्ल और नमाज़ों फ़रीज़ा के है जो शुरूत और नमाज़ों के वास्ते मिश्ल तहारत बदन और जामा और सिवाए उसके मुकरर हैं वही उसके वास्ते हैं, सिवाय मशरूइयत दो ख़ुत्बा के और कोई दलील क़ाबिले इस्तिदलाल ऐसी प्राबित नहीं हुई जिससे और नमाज़ों से इसकी मुखालफ़त पाई जाए। पस इससे मा'लूम हुआ कि इस नमाज़ के वास्ते शुरूत प्राबित करने के वास्ते मिश्ले इमामे आजम और मिस्र जामेअ और अददे मख़सूस की सनद सहीह पाई नहीं जाती बल्कि उनसे प्राबित भी नहीं होता अगर दो शख्स नमाज़े जुम्आ की भी पढ़ लें तो उनके जिम्मा साकित हो जाएगी और अकेले आदमी का जुम्आ पढ़ना अबू दाऊद की इस रिवायत के ख़िलाफ़ है। अल्जुम्अति हक्कन वाजिबुन अला कुल्लि मुस्लिमिन फ़ी जमाअतिन और न आहज़रत (ﷺ) ने सिवाय जमाअत के जुम्आ पढ़ा है और अददे मख़सूस की बाबत शौकानी ने नैलुल औतार में लिखा है जैसा कि एक शख्स अकेला

नमाज़ पढ़ने के वास्ते कोई दलील नहीं पाई है। ऐसा ही 80 या 30 या 20 या 9 या 7 आदमियों के वास्ते भी कोई दलील नहीं पाई गई और जिसने कम आदमियों की शर्त करार दी है दलील उसकी ये है, इम्माअ और हदीष से वुजुब का अदद प्राबित है और अदमे शुबूत दलील का वास्ते इश्तिरात अददे मख्सूस के और सिहत नमाज़ दो आदमियों के बाकी नमाज़ों में और अदम फ़र्क दरम्यान जुम्आ और जमाअत के शीख अब्दुल हक़ ने फ़र्माया है। अदद जुम्आ की बाबत कोई दलील प्राबित नहीं और ऐसा ही सियूती ने कहा है और जो रिवायतें जिनसे अदद मख्सूस प्राबित होता है वो सबकी ज़ईफ़ क़ाबिले इस्तिदलाल के उनसे कोई नहीं और शर्त इमामे आजम या'नी सुल्तान की जो फ़क़त हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) से मरवी है दलील उनकी ये है, अब्बअतुन इलस्सुल्तान वफ़ी रिवायतिन इलल्अइम्मति अल्लजुमुअतु वल्हुदुद वज़ज़कातु वल्फैउ अखरजहू इब्नु अबी शैबत लेकिन ये रिवायत आँहज़रत (रज़ि) से प्राबित नहीं है बल्कि ये चन्द ताबइयों का क़ौल है उनमें से हसन बज़री हैं और अब्दुल्लाह बिन महरिज़ और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और अता और मुस्लिम बिन यसार, पस इससे हुज्जते ख़सम प्राबित नहीं हो सकती और ये रिवायत जो बज़ार ने जाबिर (रज़ि.) से, त़िबरानी ने अबू सईद (रज़ि.) से और बैहक़ी ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से इन लफ़्ज़ों से इब्नल्लाह इफ़तरज़ अलैकुम मुल्जुमुअत फ़ी शहरिकुम हाज़ा फ़मन तरक़हा व लहू इमामुन आदिलुन औ जाबिरुन निकाली है अफ़अफ़ है बल्कि मौज़ूअ और इब्ने माजा से जो रिवायत में व लहू इमामुन आदिलुन का लफ़्ज़ नहीं और यही लफ़्ज़े महल हुज्जत के है। बज़ार की रिवायत में अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद सहमी है, बक़ीअ ने कहा है कि वो वज़ाअ है और बुखारी ने कहा है कि वो मुक़िल्ल हदीष है और इब्ने हब्बान ने कहा है इससे हुज्जत पक़ड़ी दुरुस्त नहीं और बैहक़ी की रिवायत ज़करिया से है उसको झालेह और इब्ने अदी और मुनी ने किज़ब और वज़अ से मुतहम किया है। (फ़ज्जुल बारी तर्जुमा सहीह बुखारी तर्जुमा मौलाना फ़ज़ले अहमद शाये कर्दा शफ़ूहीन व फ़ख़रुद्दीन हनफ़ी अल मज़हब लाहौर दर सन् 1886 ईस्वी पारा नम्बर 3, पेज नं. 301)

बाब 71 : वफ़द बनू हनीफ़ा और शुमामा बिन

उषाल के वाक्रियात का बयान

٧١ - باب وَفْدِ بَنِي حَنِيْفَةَ

وَحَدِيثِ ثُمَامَةَ بْنِ أَثَالٍ

तशरीह : बनू हनीफ़ा यमामा का एक मशहूर क़बीला है ये वफ़द सन् 9 हिजरी में आया था। जिसमें ब रिवायत वाक़दी सत्रह आदमी थे और उनमें मुसैलमा कज़ाब भी था। शुमामा बिन उषाल (रज़ि.) फ़ाज़िल सहाबा में से हैं, उनका क़िस्सा बनी हनीफ़ा के क़ासिदों के आने से पहले का है।

4372. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने नजद की तरफ़ कुछ सवार भेजे वो क़बीला बनू हनीफ़ा के (सरदारों में से) एक शख़्स शुमामा बिन उषाल नामी को पकड़कर लाए और मस्जिदे नबवी के एक सुतून से बाँध दिया। हुज़ुरे अकरम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और पूछा शुमामा तू क्या समझता है? (मैं तेरे साथ क्या करूँगा?) उन्होंने कहा मुहम्मद! मेरे पास ख़ैर है (उसके बावजूद) अगर आप मुझे क़त्ल कर दें तो आप एक शख़्स को क़त्ल करेंगे जो ख़ूनी है, उसने जंग में मुसलमानों को मारा है और अगर आप मुझ पर एहसान करेंगे तो एक ऐसे शख़्स पर एहसान करेंगे जो (एहसान करने वाले

٤٣٧٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غِيَاثَ بْنَ نَجْدٍ فَبَجَاءَتْ بِرَجُلٍ مِنْ بَنِي حَنِيْفَةَ يُقَالُ لَهُ: ثُمَامَةُ بْنُ أَثَالٍ فَرَبَطُوهُ بِسَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟)) فَقَالَ: عِنْدِي خَيْرٌ يَا مُحَمَّدُ إِنْ تَقَتَّلَنِي تَقْتُلْ ذَا دِمٍ وَإِنْ تَعِمَّ

का) शुक्र अदा करता है लेकिन अगर आपको माल मल्लूब है तो जितना चाहें मुझसे माल तलब कर सकते हैं। हज़ूर अकरम (ﷺ) वहाँ से चले आए, दूसरे दिन आपने फिर पूछा घुमामा अब तू क्या समझता है? उन्होंने कहा, वही जो मैं पहले कह चुका हूँ, कि अगर आपने एहसान किया तो एक ऐसे शख्स पर एहसान करेंगे जो शुक्र अदा करता है। औहज़रत (ﷺ) फिर चले गये, तीसरे दिन फिर आपने उनसे पूछा अब तू क्या समझता है घुमामा? उन्होंने कहा कि वही जो मैं आपसे पहले कह चुका हूँ। औहज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया कि घुमामा को छोड़ दो (रस्सी खोल दी गई) तो वो मस्जिदे नबवी से करीब एक बाग़ में गये और गुस्ल करके मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए और पढ़ा, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदरसूलुल्लाह और कहा ऐ मुहम्मद! अल्लाह की क़सम! रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आपके चेहरे से ज़्यादा मेरे लिये बुरा नहीं था लेकिन आज आपके चेहरे से ज़्यादा मुझे कोई चेहरा महबूब नहीं। अल्लाह की क़सम कोई दीन आपके दीन से ज़्यादा मुझे बुरा नहीं लगता था लेकिन आज आपका दीन मुझे सबसे ज़्यादा पसन्दीदा और अज़ीज़ है। अल्लाह की क़सम! कोई शहर आपके शहर से ज़्यादा मुझे बुरा नहीं लगता था लेकिन आज आपका शहर मेरा सबसे ज़्यादा महबूब शहर है। आपके सवारों ने मुझे पकड़ा तो मैं डमरह का इरादा कर चुका था। अब आपका क्या हुक्म है? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बशारत दी और डमरह अदा करने का हुक्म दिया। जब वो मक्का पहुँचे तो किसी ने कहा कि वो बेदीन हो गये हैं। उन्होंने जवाब दिया कि नहीं बल्कि मैं मुहम्मद (ﷺ) के साथ ईमान ले आया हूँ और अल्लाह की क़सम! अब तुम्हारे यहाँ यमामा से गेहूँ का एक दाना भी उस वक़्त तक नहीं आएगा जब तक नबी करीम (ﷺ) इजाज़त न दें। (रज़ि.)

(राजेअ : 462)

تَعِمُّ عَلَى شَاكِرٍ، وَإِنْ كُنْتَ تُرِيدُ الْمَالَ فَسَلْ مِنْهُ مَا حِبْتُ حَتَّى كَانَ الْقَدُّ ثُمَّ قَالَ لَهُ: ((مَا عِنْدَكَ يَا ثِمَامَةُ؟)) فَقَالَ: مَا قُلْتُ لَكَ إِنْ تَعِمُّ تَعِمُّ عَلَى شَاكِرٍ قَرَسَكُ، حَتَّى كَانَ الْقَدُّ الْقَدُّ فَقَالَ: ((مَا عِنْدَكَ يَا ثِمَامَةُ؟)) قَالَ: عِنْدِي مَا قُلْتُ لَكَ: فَقَالَ: ((أَطْلِقُوا ثِمَامَةَ)) فَانْطَلَقَ إِلَى نَخْلٍ قَرِيبٍ مِنَ الْمَسْجِدِ فَاعْتَسَلَ ثُمَّ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، يَا مُحَمَّدُ وَاللَّهِ مَا كَانَ عَلَى الْأَرْضِ وَجْهٌ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ وَجْهِكَ، فَقَدْ اصْبَحَ وَجْهُكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنَ الْوُجُوهِ إِلَيَّ وَاللَّهِ مَا كَانَ مِنْ دِينٍ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ دِينِكَ، فَاصْبَحَ دِينُكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنَ الْدِينِ إِلَيَّ وَاللَّهِ مَا كَانَ مِنْ بَلَدٍ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ بَلَدٍ فَاصْبَحَ بَلَدُكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنَ الْبِلَادِ إِلَيَّ وَإِنْ غَيَّرْتُكَ اغْدَتْنِي وَأَنَا أُرِيدُ الْفُتْرَةَ، فَمَاذَا تَرَى؟ فَبَشَّرَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَهُ أَنْ يَغْتَمِرَ فَلَمَّا قَدِمَ مَكَّةَ قَالَ قَائِلٌ: صَبَوْتَ قَالَ: لَا وَلَكِنْ اسْتَمَنْتُ مَعَ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا وَاللَّهِ لَا يَأْيِكُمْ مِنَ الثِّمَامَةِ حَبَّةٌ جَنْطَةٌ حَتَّى يَأْذَنَ بِهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع : ٤٦٢]

तशरीह : मक्का के काफ़िरों ने घुमामा से पूछा तूने अपना दीन बदल दिया? तो घुमामा ने ये जवाब दिया, मैंने नहीं बदला बल्कि अल्लाह का ताबेदार बन गया हूँ। कहते हैं घुमामा ने यमामा जाकर ये हुक्म दिया कि मक्का के काफ़िरों को अनाज न भेजा जाए। आखिर मक्का वालों ने मजबूर होकर औहज़रत (ﷺ) को लिख भेजा कि आप अकरबा की परवरिश करते हैं, सिलारहमी का हुक्म देते हैं, घुमामा ने हमारा अनाज क्यों रोक दिया है। उसी वक़्त आपने घुमामा को इजाज़त दी कि मक्का

अनाज भोजना हो तो ज़रूर भेजो। व इन तन्नूल तन्नूल ज़ा दमिन का कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है अगर आप मुझको मार डालें तो एक ऐसे शख्स को मारेंगे जिसका खून बेकार न जाएगा या' नी मेरी क्रौम वाले मेरा बदला ले लेंगे।

हाफिज़ साहब फ़रमते हैं व फ़ी किस्सति धुमायत मिनल फ़वाइदि रब्तुल काफ़िर फिल मस्जिद वल्मनि अलल असीरिल काफ़िर व तअजीमि अमिल अप्पि अनिल मसीइ लिअन्न धुमामत अक्कसम अन्न बुग्ज़हु इन्कलब हुब्बन फ़ी साअतिन वाहिदतिन लिमा अस्वाहुन्नबिय्यु (ﷺ) इलैहि मिनल अप्पि वल्मनि बिगैरि मुक्राबिलिन व फ़ीहिल इग़तिसालु इन्दल इस्लामि व अन्नल इहसान युज़ीलुबुज़्ज व युब्बितुल हुब्ब व अन्नल काफ़िर इज़ा अराद अमल ख़ैसि धुम्म अस्लम शरअ लहु अय्यसतमिरि फ़ी अमलि ज़ालिकलख़ैरि व फ़ीहिल मुलातफ़त बिमन यर्जा अला इस्लामिहिल अददल क़शीर मिन क़ौमिही व फ़ीहि बअप्पस्सराया इला बिलादिल कुप्फ़ारि व असर मन वजद मिन्हुम वत्तख़ईर बअद ज़ालिक फ़ी क़त्लिही अविल इब्काइ अलैहि (फ़त्हुल बारी) या' नी धुमामा के किस्से में बहुत से फ़वाइद हैं। इससे काफ़िर का मस्जिद में कैद करना भी प्राबित हुआ (ताकि वो मुसलमानों की नमाज़ वगैरह देखकर इस्लाम की राबत कर सके) और काफ़िर कैदी पर एहसान करना भी प्राबित हुआ और बुराई करने वाले के साथ भलाई करना एक बड़ी नेकी के तौर पर प्राबित हुआ। इसलिये कि धुमामा ने नबी करीम (ﷺ) के एहसान व क्रम को देखकर कहा था कि एक ही घड़ी में उसके दिल का बुज़्ज जो आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ से उसके दिल में था, वो मुहब्बत से बदल गया। इससे ये भी प्राबित हुआ कि इस्लाम कुबूल करते वक़््त गुस्ल करना चाहिये और ये भी कि एहसान बुज़्ज को ज़ादिल (नष्ट) कर देता और मुहब्बत को क़ायम करता है और ये भी प्राबित हुआ कि काफ़िर अगर कोई नेक काम करता हुआ मुसलमान हो जाए तो इस्लाम कुबूल करने के बाद भी उसे वो नेक अमल जारी रखना चाहिये और उससे ये भी प्राबित हुआ कि जिस कैदी से इस्लाम लाने की उम्मीद हो उसके साथ हर मुम्किन नमी बरतना मुनासिब है। ख़ास तौर पर ऐसा आदमी जिसके इस्लाम से उसकी क्रौम के बहुत से लोगों के मुसलमान होने की उम्मीद हो, उसके साथ हर मुम्किन नमी बरतना ज़रूरी है। जैसा धुमामा (रज़ि.) के साथ किया गया और उससे कुप्फ़ार के इलाकों की तरफ़ ब-वक़््ते ज़रूरत लश्कर भेजना भी प्राबित हुआ और ये भी कि जो उनमें पाए जाएँ वो कैद कर लिये जाएँ बाद में हस्बे मस्लिहत उनके साथ मामला किया जाए।

4373. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी हुसैन ने, कहा हमको नाफ़ेअ बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के अहद में मुसैलमा कज़ाब आया, इस दावे के साथ कि अगर मुहम्मद (ﷺ) मुझे अपने बाद (अपना नाइब व ख़लीफ़ा) बना दें तो मैं उनकी इत्तिबाअ कर लूँ। उसके साथ उसकी क्रौम (बनू हनीफ़ा) का बहुत बड़ा लश्कर था। हुज़ूर (ﷺ) उसकी तरफ़ तल्लीग़ के लिये तशरीफ़ ले गये। आप (ﷺ) के साथ प्राबित बिन कैस बिन शम्मास (रज़ि.) भी थे। आपके हाथ में ख़ज़ूर की एक टहनी थी। जहाँ मुसैलमा अपनी फ़ौज के साथ पड़ाव किये हुए था, आप वहीं जाकर ठहर गये और आपने उससे फ़र्माया अगर तू मुझसे ये टहनी मांगेगा तो मैं तुझे ये भी नहीं दूँगा और तू अल्लाह के फ़ैसले से आगे नहीं बढ़ सकता जो तेरे बारे में पहले ही हो चुका है। तूने अगर मेरी इत्ताअत से रूग़्दानी की तो अल्लाह तआला तुझे हलाक कर देगा। मेरा तो ख़याल है कि तू वही है जो मुझे ख़्वाब में दिखाया गया था। अब तेरी बातों का जवाब

٤٣٧٣ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي خُسَيْبٍ، حَدَّثَنَا نَافِعٌ بْنُ جَبْرِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَجَمَلَ يَقُولُ: إِنْ جَعَلَ لِي مُحَمَّدٌ مِنْ بَعْدِهِ تَبِعْتُهُ وَقَدِمْتُهَا فِي بَشَرٍ كَثِيرٍ مِنْ قَوْمِي فَأَقْبَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ بْنُ شَمَّاسٍ وَلِيَ يَدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قِطْعَةً جَرِيدٍ حَتَّى وَقَفَ عَلَى مُسَيْلِمَةَ فِي اصْحَابِهِ فَقَالَ: لَوْ سَأَلْتَنِي هَذِهِ الْقِطْعَةَ مَا اعْطَيْتُكَهَا وَلَنْ تَعْدُوَ أَمْرَ اللَّهِ فَبَكَ، وَلَئِنْ أَتَيْتَ لَيَغْفِرَنَّكَ اللَّهُ، وَإِنِّي لَأَرَاكَ

मेरी तरफ से ग़ाबित बिन कैस (रज़ि.) देंगे, फिर आप (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए। (राजेअ: 593)

الَّذِي أُرِيتُ فِيهِ مَا رَأَيْتُ، وَهَذَا قَابِتٌ يُجِيبُكَ عَنِّي ثُمَّ انْصَرَفَ عَنْهُ.

[راجع: 3620]

4374. इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के उस इश्राद के बारे में पूछा कि, मेरा ख़याल तो ये है कि तू वही है जो मुझे ख़्वाब में दिखाया गया था, तो अबू हुरैरह (रज़ि.) ने मुझे बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं सोया हुआ था कि मैंने अपने हाथों में सोने के दो कंगन देखे, मुझे उन्हें देखकर बड़ा दुख हुआ फिर ख़्वाब ही में मुझ पर वह्य की गई कि मैं उनमें फूँक मार दूँ। चुनौचे मैंने उनमें फूँका तो वो उड़ गए। मैंने उसकी ता'बीर दो झूठों से ली जो मेरे बाद निकलेंगे। एक अस्वद अनसी था और दूसरा मुसैलमा कज़ाब, जिन दोनों को अल्लाह ने फूँक की तरह ख़त्म कर दिया।

(राजेअ: 3621)

4374- قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَسَأَلْتُ عَنْ قَوْلِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّكَ أَرَى الَّذِي أُرِيتُ فِيهِ مَا رَأَيْتُ)) فَأَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ فِي يَدَيَّ سَوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ، فَأَقْبَمْنِي شَأْنُهُمَا فَأَوْحَى إِلَيَّ فِي النَّامِ أَنْ أَنْفُخَهُمَا فَنُفِخَتْهُمَا فَطَارَا، فَأَوْتَتْهُمَا كَذَابَيْنِ يَخْرُجَانِ بَعْدِي أَحَدُهُمَا الْفُتَيُّ وَالْآخَرُ مُسَيْلِمَةُ)). [راجع: 3621]

तशरीह: अस्वद अनसी तो आँहज़रत (ﷺ) ही के ज़माने में मारा गया और मुसैलमा कज़ाब हज़रत सिद्दीके अकबर (रज़ि.) की खिलाफ़त में ख़त्म हुआ। सच आख़िर सच होता है और झूठ चन्द रोज़ चलता है फिर मिट जाता है। आज अस्वद और मुसैलमा का एक मानने वाला बाक़ी नहीं और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के ताबेदार क़यामत तक बाक़ी रहेंगे। ईसाई मिशनरियाँ किस क्रदर जाँफ़िशानी (जी-तोड़ कोशिश) से काम कर रही हैं फिर वो नाकाम हैं इस्लाम अपनी बरकतों के नतीजे में खुद ब खुद फैलता ही जा रहा है। सच है

नुरे खुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्दाज़न

फूँकों से ये चिराग़ बुझाया न जाएगा

4375. हमसे इस्हाक़ बिन नज़र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़्वाब में मेरे पास ज़मीन के ख़ज़ाने लाए गये और मेरे हाथों में सोने के दो कंगन रख दिये गये। ये मुझ पर बड़ा शाक़्र गुज़रा। इसके बाद मुझे वह्य की गई कि मैं उनमें फूँक मार दूँ। मैंने फूँका तो वो उड़ गये। मैंने उसकी ता'बीर दो झूठों से ली जिनके दरम्यान में, मैं हूँ। (उन दो झूठों से मुराद हैं) साहिबे सन्नआ (अस्वद अनसी) और साहिबे यमामा (मुसैलमा कज़ाब)

(राजेअ: 3621)

4375- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُرِيتُ بِخَزَائِنِ الْأَرْضِ فَوُضِعَ فِي كَفِّي سَوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ، فَكَبَّرَا عَلَيَّ فَأَوْحَى إِلَيَّ أَنْ أَنْفُخَهُمَا فَنُفِخَتْهُمَا فَذَهَبَا فَأَوْتَتْهُمَا الْكَذَابَيْنِ اللَّذَيْنِ أَنَا بَيْنَهُمَا صَاحِبٌ صَنَعَاءُ وَصَاحِبَةٌ يَمَامَةٌ)). [راجع: 3621]

4376. हमसे सल्लत बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने महेदी बिन मैमून से सुना कि मैंने अबूरजाअ अत्तारदी (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे हम पहले पत्थर की पूजा करते थे और अगर कोई पत्थर हमें इससे अच्छा मिल जाता तो उसे फेंक देते और उस दूसरे की पूजा शुरू कर देते। अगर हमें पत्थर न मिलता तो मिट्टी का एक टीला बना लेते और बकरी लाकर उस पर दूहते और उसके गिर्द तवाफ़ करते। जब रजब का महीना आ जाता तो हम कहते कि ये महीने नेज़ों को दूर रखने का है। चुनोंचे हमारे पास लोहे से बने हुए जितने भी नेज़े या तीर होते हम रजब के महीने में उन्हें अपने से दूर रखते और उन्हें किसी तरफ़ फेंक देते।

4377. और मैंने अबूरजाअ से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मक़ज़ज़ हुए तो मैं अभी कम उम्र था और अपने घर के ऊँट चराया करता था फिर जब हमने आपकी फ़तहे (मक्का की ख़बर सुनी) तो हम आपको छोड़कर दोज़ख़ में चले गये, या'नी मुसैलमा कज़़ाब के ताबेदार बन गये।

हज़रत अबूरजाअ पहले मुसैलमा कज़़ाब के ताबेदार बन गये थे फिर अल्लाह ने उनको इस्लाम की तौफ़ीक़ दी, मगर उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को नहीं देखा।

बाब 72 : अस्वद अनसी का किस्सा

4378. हमसे सईद बिन मुहम्मद जर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यज़कूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा मुझसे उनके वालिद इब्राहीम बिन सअद ने, उनसे झालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने इबैदा ने, दूसरे मौके पर (इब्ने इबैदह रज़ि.) के नाम की तसरीह है या'नी अब्दुल्लाह और उनसे इबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा ने बयान किया कि हमें मा'लूम है कि जब मुसैलमा कज़़ाब मदीना आया तो बिन्ते हारिष के घर उसने क़याम किया, क्योंकि बिन्ते हारिष बिन कुरैज़ उसकी बीवी थी। यही अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन आमिर की भी माँ है, फिर हुज़ुर अकरम (ﷺ) उसके यहाँ तशरीफ़ लाए (तब्लीग़ के लिये) आपके साथ प्राबित बिन कैस बिन शम्मास (रज़ि.) भी थे। प्राबित (रज़ि.) वही हैं जो हुज़ुरे अकरम (ﷺ) के ख़त्तीब के नाम से मशहूर थे। हुज़ुर अकरम (ﷺ) के हाथ में एक छड़ी थी। हुज़ुर (ﷺ) उसके पास आकर ठहर गये

٤٣٧٦- حَدَّثَنَا الصُّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: سَمِعْتُ مَهْدِيَّ بْنَ مَيْمُونٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ الْفَطَارِدِيَّ يَقُولُ: كُنَّا نَعْبُدُ الْحَجَرَ فَإِذَا وَجَدْنَا حَجَرًا هُوَ خَيْرُ الْقِيَامَةِ وَآخِذْنَا الْآخَرَ، فَإِذَا لَمْ نَجِدْ حَجَرًا جَلَفْنَا جَنُورَةً مِنْ تَرَابٍ ثُمَّ جِئْنَا بِالشَّاةِ، فَحَلَبْنَاهُ عَلَيْهِ ثُمَّ طَفْنَا بِهِ فَإِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَجَبٍ، قُلْنَا مُنْصَلِّ الْأَسْبَةَ فَلَا نَدْخُلُ رَمَحًا فِيهِ خَبِيذَةً وَلَا سَهْمًا فِيهِ خَبِيذَةً إِلَّا تَزَعْنَاهُ وَالْقِيَامَةَ شَهْرَ رَجَبٍ.

٤٣٧٧- وَسَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ يَقُولُ: كُنْتُ يَوْمَ بَيْعِ النَّبِيِّ ﷺ، غُلَامًا أَرْغَى الْإِبِلَ عَلَى أَهْلِي فَلَمَّا سَمِعْنَا بِخُرُوجِهِ قَرَرْنَا إِلَى النَّارِ إِلَى مُسَيْلِمَةَ الْكَلَابِ.

٧٢- بَابُ قِصَّةِ الْأَسْوَدِ الْقَنْسِيِّ

٤٣٧٨- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجَرَمِيُّ، حَدَّثَنَا يَفْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ، عَنْ ابْنِ عُثَيْبَةَ بْنِ نَشِيطٍ، وَكَانَ فِي مَوْضِعٍ آخَرَ اسْمُهُ عُبَيْدُ اللَّهِ أَنْ عُبَيْدَةَ اللَّهِ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُثَيْبَةَ قَالَ: بَلَّغْنَا أَنَّ مُسَيْلِمَةَ الْكَلَابِ قِيمَ الْمَدِينَةِ، فَنَزَلْنَا فِي دَارِ بَنِي الْحَارِثِ وَكَانَ تَحْتَهُ بَنْتُ الْحَارِثِ بِنْتُ كُرَيْبٍ، وَهِيَ أُمُّ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَامِرٍ، فَأَنَاءَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ بْنُ شَمَّاسٍ، وَهُوَ

और उससे बातचीत की, इस्लाम की दा'वत दी। मुसैलमाने कहा कि मैं इस शर्त पर मुसलमान होता हूँ कि आपके बाद मुझे हुकूमत मिले। हुजूर अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम मुझसे ये छड़ी मांगोगे तो मैं तुम्हें ये भी नहीं दे सकता और मैं समझता हूँ कि तुम वही हो जो मुझे ख़्वाब में दिखाए गये थे। ये प्राबित बिन कैस (रज़ि.) हैं और मेरी तरफ़ से तुम्हारी बातों का यही जवाब देंगे, फिर हुजूर (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए।

(राजेअ: 3620)

الَّذِي يَقَالُ لَهُ خَطِيبٌ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَلِي يَدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَضِيبٌ، لَوَقَفَ عَلَيْهِ لَكَلَّمَهُ فَقَالَ لَهُ مُسَيْلَمَةُ: إِنْ شِئْتَ خَلَيْتَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْأَمْرِ ثُمَّ جَعَلْتَهُ لَنَا بَعْدَكَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ سَأَلْتَنِي هَذَا الْفَضِيبُ مَا أَغْنَيْتُكَ وَإِنِّي لَأَرَاكَ الَّذِي أُرِيتَ لِيهِ مَا أُرِيتَ وَهَذَا ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ وَسُجَيْتُ بْنُ غَنِيٍّ)) فَأَنْصَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ.

[راجع: 3620]

4379. इब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से हुजूर अकरम (ﷺ) के उस ख़्वाब के बारे में पूछा जिसका ज़िक्र आप (ﷺ) ने फ़र्माया था तो उन्होंने बताया कि मुझे मा'लूम हुआ है कि हुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया था, मुझे ख़्वाब में दिखाया गया था कि मेरे हाथों पर सोने के दो कंगन रख दिये गये हैं। मैं उससे बहुत घबराया और उन कंगनों से मुझे तश्वीश (फ़िक्र) हुई, फिर मुझे हुक्म हुआ और मैंने उन्हें फूँक मारी तो दोनों कंगन उड़ गये। मैंने उसकी ता'बीर दो झूठों से ली जो ख़ुरूज करने वाले हैं। इब्दुल्लाह ने बयान किया कि उनमें से एक अस्वद अनसी था, जिसे फ़ैरूज़ ने यमन में क़त्ल किया और दूसरा मुसैलमा कज़ाब था। (राजेअ: 3621)

٤٣٧٩- قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ اللَّهِ: سَأَلْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ عَنْ رُؤْيَا رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الَّتِي ذَكَرَ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ذَكَرَ لِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَنَا أَمَّا ثَابِتٌ أُرِيتَ أَنَّهُ وَضَعَ لِي يَدَيَّ سِوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ لَفِظَتُهُمَا وَكَرِهْتُهُمَا، فَأَذِنَ لِي فَتَخَفْتُهُمَا لَطَارًا فَأَوَّلَتْهُمَا كَذَابَيْنِ يَخْرُجَانِ)) فَقَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ: أَخَذَهُمَا الْفَتْسِيُّ الَّذِي قَتَلَهُ فَيُرَوُّ بِالْيَمَنِ، وَالْآخَرُ مُسَيْلَمَةُ الْكَذَّابُ. [راجع: 3621]

तशरीह:

मुसैलमा कज़ाब की बीवी का नाम कीसा बिनते हारिष बिन कुरैज़ था। मुसैलमा के क़त्ल के बाद अब्दुल्लाह बिन आमिर ने उसे निकाह कर लिया था। उसके पेट से अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन आमिर पैदा हुए। रावी ने ग़लती से एक अब्दुल्लाह का लफ़्ज़ छोड़ दिया लेकिन हमने तर्जुमा में बढ़ा दिया। कुछ नुस्ख़ों में यूँ है कि वो अब्दुल्लाह बिन आमिर की औलाद की माँ थी। मुसैलमा कज़ाब को वहशी (रज़ि.) ने क़त्ल किया और अस्वद अनसी को यमन में फ़ैरूज़ ने मार डाला। अस्वद के क़त्ल की ख़बर वहा से आँहज़रत (ﷺ) को वफ़ात से एक दिन पहले हो गई थी जो आप (ﷺ) ने अपने सहाबा (रज़ि.) को सुना दी थी। बाद में उसके आदमियों के ज़रिये से ये ख़बर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की खिलाफ़त के ज़माने में आई। ये अस्वद सन्नाअ (यमन) में ज़ाहिर हुआ था और नुबुव्वत का दा'वा करके आँहज़रत (ﷺ) के आमिल मुहाजिर बिन उमय्या पर ग़ालिब आ गया था। कुछ ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ से बाज़ान वहाँ का आमिल था तो अस्वद ने उसकी बीवी मरज़बाना से निकाह कर लिया और यमन का हाकिम बन बैठा। आख़िर फ़ैरूज़ एक रोज़ रात में नक़ब लगाकर उसके घर में घुस गये। दरवाज़े पर एक हज़ार चौकीदारों का पहरा था इसलिये नक़ब लगाया गया। आख़िर फ़ैरूज़ ने उसका सर काट लिया और बाज़ान की औरत को माल व अस्बाब समेत निकाल लाए। इसी रात को बाज़ान की औरत ने उसको ख़ूब

शराब पिलाई थी और वो नशे में मदहोश था। अल्लाह ने इस तरह से अस्वद अनसी के फ़िल्ने को ख़त्म कराया, फ़क़ुतिआ दाबिरुल क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू वल हम्दुलिह्ल्लाहि रब्बिल आलमीन (अल् अन्आम : 45) ये प्राबित बिन केस अंसारी (रज़ि.) ख़ज़रजी हैं। ग़ज़्वा-ए-उहूद और बाद के सब ग़ज़्वात में शरीक हुए। अंसार के बड़े उलमा में से थे। रसूले करीम (ﷺ) के ख़तीब थे। आपने उनको ज़न्नत की बशारत दी। सन् 12 हिजरी में यमामा की जंग में शहीद हुए।

बाब 73 : नजरान के नसारा का किस्सा

۷۳- باب قصة أهل نجران

नजरान एक बड़ा शहर था मक्का से सात मंज़िल वहाँ नसारा आबाद थे।

4380. मुझसे अब्बास बिन हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे सिला बिन ज़फ़र ने और उनसे हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नजरान के दो सरदार आक्रिब और सय्यद, रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुबाहला करने के लिये आए थे लेकिन एक ने अपने दूसरे साथी से कहा कि ऐसा न करो क्योंकि अल्लाह की क़सम! अगर ये नबी हुए और फिर भी हमने उनसे मुबाहला किया तो हम पनप नहीं सकते और न हमारे बाद हमारी नस्लें रह सकेंगी, फिर उन दोनों ने आँहज़रत (ﷺ) से कहा कि जो कुछ आप माँगें हम जिज़्या देने के लिये तैयार हैं। आप हमारे साथ कोई अमीन भेज दीजिए, जो भी आदमी हमारे साथ भेजें वो अमीन होना ज़रूरी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारे साथ एक ऐसा आदमी भेजूँगा जो अमानतदार हो बल्कि पूरा पूरा अमानतदार होगा। झहाबा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के मुतज़िर थे, आप (ﷺ) ने फ़र्माया अबू उबैद बिन अल ज़र्राह! उठो, जब वो खड़े हुए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये इस उम्मत के अमीन हैं। (रज़ेअ : 3745)

۴۳۸۰- حَدَّثَنِي عَبَّاسُ بْنُ هُثَيْلٍ، قَالَ سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ آدَمَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ صِلَةَ بْنِ زُفَرٍ، عَنْ حَذِيفَةَ قَالَ: جَاءَ الْعَاقِبُ وَالسَّيِّدُ صَاحِبَا نَجْرَانَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يُرِيدَانِ أَنْ يُلَاحِظَاهُ قَالَ: فَقَالَ اخْذَاهُمَا لِصَاحِبِهِ لَا تَفْعَلْ، فَوَ اللَّهِ لَئِنْ كَانَ نَبِيًّا فَلَاَعَنَّا لَا نَفْلِحَ نَحْنُ وَلَا أَهْلُنَا مِنْ بَعْدِنَا، قَالَ: إِنَّا نُعْطِيكَ مَا سَأَلْتَنَا وَابْتِغْنَا رَجُلًا أَمِينًا، وَلَا تَبْتَغِ مَعَنَا إِلَّا أَمِينًا، فَقَالَ: ((لَا تَبْتَغِ مَعَكُمْ رَجُلًا أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ)) فَاسْتَشْرَفَ لَهُ اصْغَابُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((قُمْ يَا أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ)) فَلَمَّا قَامَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((هَذَا أَمِينٌ هَدَيْهِ الْأُمَّةُ)).

[راجع: ۳۷۴۵]

तशरीह:

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह) फ़र्माते हैं, व फ़्री किस्सति अहलि नज़रान मिनल फ़वाइदि अन्न इक्करारल काफ़िरी बिन्नुबुव्वति फ़ला यदख़ुलु फ़िल इस्लामि हत्ता यलत्तज़ि अहकामल इस्लाम व फ़्रीहा जवाज़ुन मुजादलतु अहलिल किताबि व क़द तजिबु इज़ा तअय्यनत मस्लहतुन व फ़्रीहा मशरूइयतु मुबाहलतिल मुख़ालिफ़ि इज़ा अमर बअद जुहूरिल हुज्जति व क़द दआ इब्नु अब्बास इला ज़ालिक षुम्मल औज़ाई व क़द अज़ालिक लिजमा अतिमिनल क़ला औ मिम्मा उरिफ़ बिताज्जिबति अन्न मन बाहल व कान मुब्तिलन रहन तम्ज़ी अलैहि सुन्नतुन मिन यौमिल मुबाहलति व क़द अली ज़ालिक मअ शख़िस्न लिब अज़िल मुलाहदति फ़लम यकुम बअददहा ग़ैर शहरैनि व फ़्रीहा मुसालहतुन अहलिज़िम्मति अला मा यराहुल इमामु मिन असनाफ़िल मालि व फ़्रीहा बअधुल इमामि अरज़ुलल आलिमल अमीन इला अहलिज़िम्मति फ़्री मस्लहतिल इस्लामि व फ़्रीहा मन्क़बतुन ज़ाहिरतुन लिअबी उबैदतब्नल ज़र्राह किस्सतु अबी उबैदत लिअन्न अब उबैदत तवज्जह मअहुम फ़क़बज़ मालस्सुल्हि व रज़अ व अलियुन

असलहुन्नबिय्यु (ﷺ) बअद ज़ालिक यन्बिजु मिन्हुम मस्तहक्क अलैहिम मिनल जिज्यति व यारुजु मिम्मन अस्लम मिन्हुम मा वजब अलैहि मिनस्सदकति वल्लाहु आलमु (फतुल बारी) हाफिज़ इब्ने हज़र (रह) फ़मति हैं कि अहले नजरान के क्रिस्ते में बहुत से फ़वाइद हैं। जिनमें ये कि काफ़िर अगर नुबुव्वत का इकरार करे तो ये इसको इस्लाम में दाखिल नहीं करेगा जब तक तमाम अहकामे इस्लाम का इल्तिज़ाम न करे और ये कि अहले किताब से मज़हबी उमूर में मुनाज़रा करना जाइज़ है बल्कि कुछ दफ़ा वाजिब, जब उसमें कोई मस्लिहत मदेनज़र हो और ये कि मुख़ालिफ़ से मुबाहिला करना भी मशरूअ है जब वो दलाइल के जुहूर के बाद भी मुबाहिला का क़स्द करे। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने भी एक हरीफ़ को मुबाहला की दा'वत दी थी और इमाम औज़ाई को भी एक जमाअते इलमा के साथ मुबाहिला का मौक़ा पेश आया था और ये तजुर्बा किया गया है कि मुबाहिला करने वाला बातिल फ़रीक़ एक साल के अंदर अंदर अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हो जाता है और मेरे (अल्लामा इब्ने हज़र के) साथ भी एक मुल्हिद ने मुबाहिला किया वो दो माह के अंदर ही हलाक हो गया और ये कि उससे इमाम के लिये मस्लिहतन इख़्तियार प्रबित हुआ, वो ज़िम्मी लोगों के ऊपर माल की क्रिस्में में से हस्बे मस्लिहत जिज्या लगाए और ये कि इमाम ज़िम्मियों के पास जिस आदमी को बतौर तहज़ीलदार मुकर्रर करे वो आलिम और अमानतदार हो और उसमें हज़रत अबू उबैदह इब्ने ज़र्राह (रज़ि.) की मनक़बत भी है और इब्ने इस्हाक़ ने ज़िक्र किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नजरान वालों के यहाँ तहज़ीले ज़कात और अम्वाले जिज्या के लिये हज़रत अली (रज़ि.) को भेजा था। ये मौक़ा दूसरा है। हज़रत अबू उबैदह (रज़ि.) को उनके साथ सिफ़ि सुलहनामा के वक्त तै शुदा रक़म की वसूली के लिये भेजा था, बाद में अली (रज़ि.) को उनसे मुकर्रर जिज्या सालाना वसूल करने और जो मुसलमान हो गये थे, उनसे अम्वाले ज़कात हासिल करने के लिये भेजा था।

यही नजरानी थे जिनके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने मस्जिदे नबवी का आधा हिस्सा उनकी अपने मज़हब के मुताबिक़ इबादत के लिये ख़ाली फ़र्मा दिया था। रसूले करीम (ﷺ) की अहले मज़ाहिब के साथ ये रवादारी हमेशा सुनहरी हफ़ों से लिखी जाती रहेगी। स़द अफ़सोस कि आज ख़ुद इस्लामी फ़िक्कों में ये रवादारी मफ़कूद है। एक सुन्नी शिया मस्जिद में अजनबी निगाहों से देखा जाता है। एक वहाबी को देखकर एक बरेलवी की आँखें लाल हो जाती हैं। फ़लब्वैक़ अलल इस्लामि मन काना।

4381. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू इस्हाक़ से सुना, उन्होंने स़िला बिन ज़फ़र से और उनसे अबू हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि अहले नज़रान नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमारे साथ कोई अमानतदार आदमी भेजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारे साथ ऐसा आदमी भेजूंगा जो हर हैबियत से अमानतदार होगा। स़हाबा (रज़ि.) मुंतज़िर थे, आख़िर हुज़ूर (ﷺ) ने अबू उबैदह इब्नुल ज़र्राह (रज़ि.) को भेजा। (राजेअः 3745)

٤٣٨١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ عَنْ صَبْلَةَ بْنِ زُفَرٍ، عَنْ خَلِيفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ أَهْلَ نَجْرَانَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: ابْعَثْ لَنَا رَجُلًا آمِنًا فَقَالَ: ((لَا بُعَثُ إِلَيْكُمْ رَجُلًا آمِنًا حَقَّ آمِينٍ)) فَاسْتَشْرَفَ لَهُ النَّاسُ فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ.

[راجع: ٣٧٤٥]

तशरीह: हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़र्राह (रज़ि.) फ़हरी कुरेशी हैं। अशर-ए-मुबशशरा में से हैं और इस उम्मत के अमीन कहलाते हैं। हज़रत उम्मान बिन मज़ऊन (रज़ि.) के साथ इस्लाम लाए। हब्शा की तरफ़ दूसरी बार हिज़रत की। तमाम ग़ज़्वात में हाज़िर रहे। जंगे उहुद में उन्होंने ख़ुद की उन दो कड़ियों को जो आँहज़रत (ﷺ) के चेहरे मुबारक में घुस गई थीं खींचा था जिनकी वजह से आपके आगे के दांत शहीद हो गये थे। ये लम्बे क़द वाले खूबसूरत चेहरे वाले, हल्की दाढ़ी वाले थे। ताऊने अम्वास में 18 हिजरी में बमुकामे उर्दुन (जॉर्डन) इतिक़ाल हुआ और बैसान में दफ़न हुए। उम्र 58 साल की थी। उनका नसबनामा रसूले करीम (ﷺ) से फ़ह्र बिन मालिक पर मिल जाता है। (रज़ि.)

4382. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे खालिद ने, उनसे अबू किलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर उम्मत में अमीन (अमानतदार) होते हैं और इस उम्मत के अमीन अबू इब्बैदह इब्नुल जराह (रज़ि.) हैं। (राजेअ: 6744)

٤٣٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ،
عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ
النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «رِئَاسَةُ أُمِّهِ أَيْمُنٌ وَأَيْمُنُ
هَذِهِ الْأُمَّةِ، أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ».

तशीह: आँहज़रत (ﷺ) ने उनको इस्लाम की दा'वत दी, सुनाया फिर उन्होंने नहीं माना आखिर आपने फ़र्माया कि आओ हम तुम मुबाहिला कर लें या'नी दोनों फ़रीक़ मिलकर अल्लाह से तुआ करें कि या अल्लाह! जो हममें नाहक़ पर हो उस पर अपना अज़ाब नाज़िल कर। वो मुबाहिला के लिये भी तैयार नहीं हुए बल्कि इस शर्त पर सुलह कर ली कि वो हज़ार जोड़े कपड़े रजब में और हज़ार जोड़े सफ़र में दिया करेंगे और हर जोड़े के साथ एक औक़िया चाँदी भी देंगे। क़र्आन की आयत इन ही के बारे में नाज़िल हुई थी।

बाब 74 : ओमान और बहरीन का किस्सा

ओमान और बहरीन दो शहरों के नाम हैं।

4383. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया कि उन्होंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि जब मेरे पास बहरीन से रुपया आएगा तो मैं तुम्हें इतना इतना तीन लप भरकर रुपया दूँगा, लेकिन बहरीन से जिस वक़्त रुपया आया तो हज़ुरे अकरम (ﷺ) की वफ़ात हो चुकी थी। इसलिये वो रुपया अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आया और उन्होंने ऐलान करवा दिया कि अगर किसी का हज़ुरे अकरम (ﷺ) पर क़र्ज़ या किसी से हज़ुरे अकरम (ﷺ) का कोई बा'दा हो तो वो मेरे पास आए। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उनके यहाँ आ गया और उन्हें बताया कि हज़ुरे अकरम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि अगर बहरीन से मेरे पास रुपया आया तो मैं तुम्हें इतना-इतना तीन लप भरकर दूँगा। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उनसे मुलाक़ात की और उनसे उसके बारे में कहा लेकिन उन्होंने इस बार मुझे नहीं दिया। मैं फिर उनके यहाँ आ गया इस बार भी उन्होंने नहीं दिया। मैं तीसरी बार गया, इस बार भी उन्होंने नहीं दिया। इसलिये मैंने उनसे कहा कि मैं आपके यहाँ एक बार आया। आपने नहीं दिया, फिर आया और आपने नहीं दिया। फिर तीसरी बार आया हूँ और आप इस बार भी नहीं दे रहे हैं। अगर आपको

٧٤- باب قصة عُثْمَانَ وَالْبُحْرَيْنِ

٤٣٨٣ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ سَمِعَ ابْنَ الْمُثَنَّبِ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَوْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَقَدْ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا فَلَا تُقْبَلُ)). فَلَمْ يَقْدَمْ مَالُ الْبَحْرَيْنِ حَتَّى قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَلَمَّا قِيمَ عَلَى أَبِي بَكْرٍ أَمَرَ مُنَادِيًا فَنَادَى مَنْ كَانَ لَهُ عِدَّةُ النَّبِيِّ ﷺ ذَهَبْ أَوْ حِجْدَةٌ فَلْيَأْتِي قَالَ جَابِرٌ: فَجِئْتُ أَبَا بَكْرٍ فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا فَلَا تُقْبَلُ)). قَالَ: فَأَعْطَانِي قَالَ جَابِرٌ: فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ بَعْدَ ذَلِكَ فَسَأَلْتُهُ، فَلَمْ يُعْطِنِي ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَلَمْ يُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُهُ الثَّلَاثَةَ، فَلَمْ يُعْطِنِي فَقُلْتُ لَهُ قَدْ أَتَيْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، فَمَاذَا أَنْ تُعْطِنِي وَإِنَّمَا

मुझे देना है तो दे दीजिए वरना साफ़ कह दीजिए कि मेरा दिल देने को नहीं चाहता, मैं बख़ील हूँ। इस पर अबूबक्र (रज़ि) ने फ़र्माया तुमने कहा है कि मेरे मामले में बुख़ल कर लो, भला बुख़ल से बढ़कर और क्या ऐब हो सकता है। तीन बार उन्होंने ये बात दोहराई और कहा मैंने तुम्हें जब भी टाला तो मेरा इरादा यही था कि बहरहाल तुम्हें देना है। और इसी सनद से अम्र बिन दीनार से रिवायत है, उनसे मुहम्मद बिन अली बाकिर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं हाज़िर हुआ तो अबूबक्र (रज़ि) ने मुझे एक लप भरकर रुपया दिया और कहा कि इसे गिन लो। मैंने गिना तो 500 था। फ़र्माया कि दो बार इतना ही और ले लो। (राजेअ : 2296)

हज़रत सिदीके अकबर (रज़ि.) के फ़र्मान का ये मतलब था कि मैं अपने हिस्से या'नी खुमस में से देना चाहता हूँ। खुमस खास खलीफ-ए-इस्लाम को मिलता है फिर वो मुख्तार हैं जिसे चाहें दें।

बाब 75 : कबीला अशअर और अहले यमन

की आमद का बयान

(येलोग वफ़द की मूरत में 7 हिजरी में खैबर के फ़तह होने पर हाज़िरे ख़िदमत हुए थे) और अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि अशअरी लोग मुझसे हैं और मैं उनमें से हूँ 4384. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद और इस्हाक़ बिन नसर ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू इस्हाक़ अम्र बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि मैं और मेरे भाई अबू रहम या अबू बुर्दा यमन से आए तो हम (इब्तिदा में) बहुत दिनों तक ये समझते रहे कि इब्ने मसरूद (रज़ि.) और उनकी वालिदा उम्मे अब्दुल्लाह (रज़ि.) दोनों आँहज़रत (ﷺ) के अहले बैत में से हैं क्योंकि ये आँहज़रत (ﷺ) के घर में रात दिन बहुत आया जाया करते थे और हर वक़्त हज़ूर (ﷺ) के साथ रहा करते थे। (राजेअ : 3763)

हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) दूसरे यमन वालों के साथ पहले हब्श पहुँच गये थे। वहाँ से जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) के साथ होकर ख़िदमते नबी में तशरीफ़ लाए।

ان تَبْعَلْ عَنِّي، فَقَالَ: أَفَلَتِ تَبْعَلْ عَنِّي وَأَمَّا ذَاكَ أَذْوًا مِّنَ الْبَغْلِ قَالَتْهَا فَلَقَا، مَا مَنَعَكَ مِّنْ مَّرَّةٍ إِلَّا وَأَنَا أُرِيدُ انْ أَهْطِكَ. وَعَنْ عَمْرِو عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ عَلِيٍّ سَوَفْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ: جِئْتُ فَقَالَ لِي أَبُو بَكْرٍ عُدْنَا لَمَذَذْنَاهَا فَوَجَدْنَاهَا عَسَمَةَ فَقَالَ: عُدْ مِثْلَهَا مَرَّتَيْنِ. [راجع: ٢٢٩٦]

٧٥- باب قُدُومِ الْأَشْعَرِيِّينَ وَأَهْلِ

الْيَمَنِ

وَقَالَ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ مَعِيَ وَأَنَا مِنْهُمْ)).

٤٣٨٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَا: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي مِنَ الْيَمَنِ لَمَكُنَّا حِينَ مَا نَرَى ابْنَ مَسْرُودٍ وَأُمَّهُ إِلَّا مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ مِنْ كَثْرَةِ دُخُولِهِمْ وَلَزُومِهِمْ لَهُ. [راجع: ٢٢٩٦]

4385. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुस्सलाम बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे ज़हदम ने कि जब अबू मूसा (रज़ि.) (कूफ़ा के अमीर बनकर इज़्माम रज़ि. के अहदे ख़िलाफ़त में) आए तो उस क़बील-ए-जरम का उन्होंने बहुत ऐजाज़ किया। ज़हदम कहते हैं हम आपकी ख़िदमत में बैठे हुए थे और वो मुर्ग का नाशता कर रहे थे। हाज़िरीन में एक और साहब भी बैठे हुए थे। अबू मूसा (रज़ि.) ने उन्हें भी खाने पर बुलाया तो उन साहब ने कहा कि जबसे मैंने मुर्गियों को कुछ (गंदी) चीज़ें खाते देखा है, उसी वक़्त से मुझे इसके गोश्त से घिन आने लगी है। अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि आओ भई मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसका गोश्त खाते देखा है। उन साहब ने कहा लेकिन मैंने इसका गोश्त न खाने की क़सम खा रखी है। उन्होंने कहा तुम आ तो जाओ मैं तुम्हें तुम्हारी क़सम के बारे में भी इलाज़ बता दूंगा। हम क़बीला अश़र के चन्द लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपने (ग़ज्ज-ए-तबूक के लिये) जानवर मांगे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि सवारी नहीं है। हमने फिर आपसे मांगा तो आपने इस बार क़सम खाई कि आप हमको सवारी नहीं देंगे लेकिन अभी कुछ ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि ग़नीमत में कुछ कैंट आए और आँहज़ूर (ﷺ) ने उनमें से पाँच कैंट हमको दिलाए। जब हमने उन्हें ले लिया तो फिर हमने कहा कि ये तो हमने आँहज़रत (ﷺ) को धोखा दिया। आपको ग़फलत में रखा, क़सम याद नहीं दिलाई। ऐसी हालत में हमारी भलाई कभी नहीं होगी। आख़िर मैं आपके पास आया और मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने तो क़सम खा ली थी कि आप हमको सवारी नहीं देंगे फिर आपने सवारी दे दी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ठीक है लेकिन जब भी मैं कोई क़सम खाता हूँ और फिर उसके सिवा दूसरी मूरत मुझे इससे बेहतर नज़र आती है तो मैं वही करता हूँ जो बेहतर होता है (और क़सम का क़फ़ारा दे देता हूँ)।

(राजेअ: 3133)

٤٣٨٥ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا السَّلَامُ عَنْ أَبِي الْيُؤُبِ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ زُهْدَمٍ قَالَ : لَمَّا قَدِمَ أَبُو مُوسَى الْأَحْمَرُ هَذَا الْخَرَمَ مِنْ جَرَمٍ وَإِنَّا لَجُلُوسٌ عِنْدَهُ، وَهُوَ يَفْعَلُ ذِجَاجًا وَلِي الْقَوْمِ رَجُلٌ جَالِسٌ لَدَعَاهُ إِلَى الْقَدَاءِ، فَقَالَ : إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا فَلَقَبْتُهُ، فَقَالَ : هَلُمَّ فَإِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُهُ فَقَالَ : إِنِّي خَلَفْتُ لَا أَكُلُهُ، فَقَالَ : هَلُمَّ أُخْبِرَنَّ عَنْ نَبِيِّكَ، إِنَّا إِنَّا النَّبِيَّ ﷺ نَفَرْنَا مِنَ الْأَشْعَرِيِّينَ فَاسْتَحْمَلْنَاهُ فَإِنِّي إِذَا نَحْمِلُنَا فَاسْتَحْمَلْنَاهُ فَخَلَفْتُ إِنْ لَا نَحْمِلُنَا ثُمَّ لَمْ يَلْبَسِ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا نَبِيٍّ بَنِي إِبِلَ فَأَمَرَ لَنَا بِخَمْسِ ذَوْدٍ فَلَمَّا قَبَضْنَاهَا قُلْنَا تَغْفُلُ النَّبِيُّ ﷺ بِمِثْلِهِ لَا نَفْلِحُ بِغَدَا فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ خَلَفْتَ إِنْ لَا نَحْمِلُنَا وَلَقَدْ حَمَلْنَا فَقَالَ : ((رَجُلٌ وَلَكِنْ لَا أَحْلِفُ عَلَى نَبِيٍّ فَإِذَا غَيَّرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلَّا أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ مِنْهَا)). [راجع: ٣١٣٣]

4386. मुझे अब्ब बिन अली ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम नबील ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान शौरी ने बयान किया, कहा हमसे अबू सख्ह जामेअ बिन शहाद ने बयान किया, हमसे सफवान बिन मुहरिज माजिनी ने बयान किया, कहा हमसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि बनू तमीम रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाजिर हुए तो आपने फ़र्माया ऐ बनू तमीम! बशारत कुबूल करो। उन्होंने कहा कि जब आपने हमें बशारत दी है तो कुछ रुपये भी इनायत कर दीजिए। इस पर हज़ूर (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया, फिर यमन के कुछ अशअरी लोग आए, आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि बनू तमीम ने बशारत कुबूल नहीं की, यमन वालों! तुम कुबूल कर लो। वो बोले कि हमने कुबूल की या रसूलुल्लाह! (राजेअ: 3190)

ये हदीष ऊपर गुजर चुकी है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र कहते हैं कि उसमें ये इश्काल पैदा होता है कि बनू तमीम के लोग तो 9 हिजरी में आए थे और अशअरी इससे पहले 7 हिजरी में, इसका जवाब य़ू दिया है कि कुछ अशअरी लोग बनू तमीम के बाद भी आए होंगे।

4387. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जुअफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क्रैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे अबू मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ईमान तो इधर है और आपने अपने हाथ से यमन की तरफ़ इशारा किया और बेरहमी और सख़्त दिली ऊँट की दुम के पीछे-पीछे चलने वालों में है, जिधर से शैतान के दोनों सींग निकलते हैं (या'नी मशिक़) क़बीला खबीआ और मुज़र के लोगों में। (राजेअ: 4302)

तुलूअे शम्स के वक़्त सूरज की किरणें दाएँ बाएँ फैल जाती हैं, मुस्किनी उस वक़्त सूरज की पूजा करते हैं जो शैतानी काम है, हदीष में इशारा उसी तरफ़ है।

4388. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे सुलैमान ने, उनसे ज़क्वान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे यहाँ अहले यमन आ गये हैं, उनके दिल के पदें बारीक, दिल नरम होते हैं, ईमान यमन वालों का है और हिक्मत भी यमन की अच्छी है। और फ़ख़र तकब्बुर ऊँट

٤٣٨٦ - حَدَّثَنَا عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: إِذَا بَشَّرْنَا فَاطِمَةَ، فَقَبِّرْ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَجَاءَ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «اتَّبِعُوا الشَّيْطَانَ إِذْ لَمْ يَبْشُرْ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ» قَالُوا: لَقَدْ لَبِئْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ. [رأبع: ٣١٩٠]

٤٣٨٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قُتَيْبِ بْنِ أَبِي جَارِمٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «الْإِيمَانُ هَهُنَا - وَأَشَارَ بِإِصْبِهِ إِلَى الْيَمَنِ - وَالْجَفَاءُ وَغَلَطُ الْقُلُوبِ فِي الْفُتَايَيْنِ عِنْدَ أَصُولِ أَذْنَابِ الْإِبِلِ مِنْ حَيْثُ يُطْلَعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ، رُبْعَةً، وَمَضْنٌ». [رأبع: ٤٣٠٢]

٤٣٨٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ ذَكَرَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «اتَّكُمُ أَهْلُ الْيَمَنِ هُمْ أَرْقُ أَفِيدَةً وَأَتَيْنَ قُلُوبًا، الْإِيمَانُ

वालों में होता है और इत्पीनान और सहूलत बकरी वालों में। और गुन्दर ने बयान किया इस हदीष को शुअबा से, उनसे सुलैमान ने, उन्होंने जक्वान से सुना, उन्होंने अबू हुरैरह (रजि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ: 3301)

गुन्दर की रिवायत को इमाम अहमद ने वस्ल किया है, इस सनद के बयान करने से गर्ज ये है कि आ'मश का सिमाअ जक्वान से बसराहत मा'लूम हो जाए।

4389. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे इब्ने बिलाल ने, उनसे और बिन ज़ैद ने, उनसे अबुल ग़ैस (सालिम) ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इमान यमन का है और फ़िल्ना (दीन की ख़राबी) उधर से है और उधर ही से शैतान के सर का नमूदा होगा।

(राजेअ: 3301)

4390. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज्जिनाद ने बयान किया, उनसे अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हारे यहाँ अहले यमन आए हैं जो नरम दिल रफ़ीकुल क़ल्ब हैं, दीन की समझ यमन वालों है में और हिकमत भी यमन की है। (राजेअ: 3301)

तशरीह:

इस हदीष से यमनवालों की बड़ी फ़ज़ीलत निकलती है। इल्मे हदीष का जैसा यमन में रिवाज है वैसा दूसरे मुल्कों में नहीं है और यमन में तक्लीदे शरूसी का तअस्सुब नहीं है, दिल का पर्दा नरम और बारीक होने का मतलब ये है कि वो हक़ बात को जल्द कुबूल कर लेते हैं जो इमान की अलामत है।

4391. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा मुहम्मद बिन मैमून ने, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और अल्लक़माने बयान किया कि हम अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजि.) के पास बैठे हुए थे। इतने में ख़ब्बाब बिन अरत (रजि.) मशहूर सहाबी तशरीफ़ लाए और कहा, अबू अब्दुर्रहमान! क्या ये नौजवान लोग (जो तुम्हारे शागिर्द हैं) इसी तरह कुआन पढ़ सकते हैं जैसे आप पढ़ते हैं? इब्ने मसऊद (रजि.) ने कहा कि अगर आप चाहें तो मैं किसी से तिलावत के लिये कहूँ? उन्होंने फ़र्माया कि ज़रूर। इस पर इब्ने मसऊद (रजि.) ने कहा, अल्लक़मा! तुम पढ़ो,

بَيَانِيَّةً، وَالْفَقْرُ وَالْعِلَالَةُ لِي أَصْحَابِ الْإِبِلِ، وَالسَّكِينَةُ وَالْوَقَارُ لِي أَهْلِ الْقَيْمِ)). وَلَئِنْ قُنْتُ عَنْ شَقِيَّةٍ، عَنْ سَلَامَانَ سَمِعْتُ ذَكَوَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: 3301]

٤٣٨٩ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ سَلَامَانَ عَنْ نُوَيْرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الْفَتْحِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((الْإِيمَانُ يَمَانٌ، وَالْيَقِينَةُ هَهُنَا هَهُنَا يَطْلُعُ قُرْنُ الشَّيْطَانِ)). [راجع: 3301]

٤٣٩٠ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْجَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَتَاكُمْ أَهْلُ الْيَمَنِ اصْغَفُ قُلُوبًا، وَارِقُ الْفِدَةِ، الْيَقِينَةُ يَمَانٌ، وَالْحِكْمَةُ يَمَانِيَّةٌ)). [راجع: 3301]

٤٣٩١ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا مَعَ ابْنِ مَسْعُودٍ لَمَجَاءِ خَبَابٍ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا عَتِيدُ الرَّحْمَنِ، أَيْسَطِيعُ هَؤُلَاءِ الشَّبَابُ أَنْ يَفْرُؤُوا كَمَا تَفْرَأُ؟ قَالَ: أَمَّا إِنَّكَ لَوْ جِئْتَ امْرَأَتَ بَعْضِهِمْ يَفْرَأُ عَلَيْكَ؟ قَالَ: اجْعَلْ. قَالَ:

जैद बिन हुदैर, ज़ियाद बिन हुदैर के भाई, बोले आप अल्कमा से तिलावते कुआन के लिये फ़र्माते हैं हालाँकि वो हम सबसे अच्छे क़ारी नहीं हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने कहा अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें वो हदीस सुना दूँ जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम्हारी क़ौम के हक़ में फ़र्माई थी। ख़ैर अल्कमा कहते हैं कि मैंने सूरह मरयम की पचास आयतें पढ़कर सुनाई। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने ख़ब्बाब (रज़ि.) से पूछा कहो कैसा पढ़ता है? ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कहा बहुत ख़ूब पढ़ा। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि जो आयत भी मैं जिस तरह पढ़ता हूँ अल्कमा भी उसी तरह पढ़ता है, फिर उन्होंने ख़ब्बाब (रज़ि.) को देखा, उनके हाथ में सोने की अंगूठी थी, तो कहा क्या अभी वक्रत नहीं आया कि ये अंगूठी फेंक दी जाए। ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कहा आज के बाद आप ये अंगूठी मेरे हाथ में नहीं देखेंगे। चुनाँचे उन्होंने अंगूठी उतार दी। इसी हदीस को गुन्दर ने शुअबा से रिवायत किया है।

الْأُتَى بِهَا خَلْقَةُ فَقَالَ زَيْدُ بْنُ جَبْرِ أَخُو زِيَادِ بْنِ خَدْبَرٍ: أَمَرُ خَلْقَةَ أَنْ يَقْرَأَ وَلَيْسَ بِالْقُرْآنِ؟ قَالَ: أَمَا إِنَّكَ إِنْ جِئْتَ أَخْبَرْتُكَ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِي قَوْلِكَ وَقَوْلِي فَقَرَأْتُ عَمْسِينَ آيَةً مِنْ سُورَةِ مَرْيَمَ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: كَيْفَ تَرَى؟ قَالَ: لَدَى أَحْسَنَ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ مَا الرَّأْيُ حَتَّى إِذَا وَفَوْ بِقُرْآنِهِ، ثُمَّ بَلَغَتْ إِلَى عَمْسٍ وَخَلْفِهِ خَاتَمٌ مِنْ ذَهَبٍ فَقَالَ: أَلَمْ يَأْنِ لِهَذَا الْعَلَامِ أَنْ يُلْقَى؟ قَالَ: أَمَا إِنَّكَ لَمْ تَرَاهُ عَلَى بَعْدِ الْيَوْمِ فَالْقَاهُ، وَوَاهُ حُطَّرَ عَنْ شُبَّةٍ.

जैद बिन हुदैर बनू असद में से थे, आँहज़रत (ﷺ) ने जुहैना को बनू असद और ग़तफ़ान से बतलाया और अल्कमा नख़अ कबीले के थे। इमाम अहमद और बज़ार ने इब्ने मसऊद (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) नख़अ कबीले के लिये दुआ फ़र्माया करते थे, उसकी तारीफ़ करते यहाँ तक कि मैंने तमन्ना की कि काश! मैं भी उस कबीले से होता। गुन्दर की रिवायत को अबू नुऐम ने मुस्तख़ज में वस्ल किया है। शायद ख़ब्बाब सोना पहनने को मकरूहे तज़वीही समझते हों। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की तम्बीह पर कि सोना ह़राम है, उन्होंने उस अंगूठी को निकाल फेंका।

बाब 76 : कबीला दौस और तुफ़ैल बिन अम्र दौसी (रज़ि.) का बयान

٧٦-بابُ بَيْعَةِ دَوْسٍ وَالطُّفَيْلِ بْنِ عَمْرِو النَّوْمِيِّ

तशरीह: दौस यमन में एक क़ौम है। तुफ़ैल बिन अम्र इसी क़ौम से थे। उनको जुन्नूर भी कहते थे। वो आकर मुसलमान हो गये तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनको उनकी क़ौम की तरफ़ मुबल्लिग़ बनाकर भेजा। उनका बाप मुसलमान हो गया लेकिन माँ मुसलमान नहीं हुई और क़ौम वालों ने भी उनका कहना न माना, सिर्फ़ हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने इस्लाम कुबूल किया। आँहज़रत (ﷺ) ने तुफ़ैल (रज़ि.) की दरख्वास्त पर दौस की हिदायत के लिये दुआ की, वो मुसलमान हो गये। कहते हैं तुफ़ैल बिन अम्र (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से कुछ निशानी चाही। आप (ﷺ) ने दुआ की या अल्लाह! तुफ़ैल को नूर दे, उनकी दोनों आँखों के बीच में से नूर निकलता जो रात को रोशन हो जाता। इब्ने कल्बी ने कहा हबीब बिन अम्र दौस का हाकिम था, उसकी उम्र तीन सौ बरस की थी, वो 75 आदिमियों के साथ आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और मुसलमान हो गया। इसके साथी भी सब मुसलमान हो गये।

4392. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन ज़क्वान ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान अउरज ने और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.)

٤٣٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، عَنْ ابْنِ ذَكْوَانَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

ने बयान किया कि तुफैल बिन अमर (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि क़बीला दौस तो तबाह हुआ। नाफ़रमानी और इंकार किया (इस्लाम कुबूल नहीं किया) आप अल्लाह से उनके लिये दुआ कीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! क़बीला दौस को हिदायत दे और उन्हें मेरे यहाँ ले आ। (राजेअ: 2937)

الْأَخْرَجَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ الطُّفَيْلُ بْنُ عَمْرٍو إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ دَوْسًا لَدُنْكَ تَكُنْتَ غَضَتْ، وَأَنْتَ لَدَاكَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَالَا: ((اللَّهُمَّ اِهْدِ دَوْسًا وَانْتِ بِهِمْ)). [راجع: ٢٩٣٧]

4393. मुझसे मुहम्मद बिन अला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे कैस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि कि जब मैं अपने वतन से नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर होने के लिये चला तो रास्ते में, मैंने ये शेर पढ़ा (तर्जुमा) कैसी है तकलीफ़ की लम्बी ये रात, ख़ैर उसने कुफ़्र से दी है नजात। और गुलाम रास्ते में भाग गया था फिर मैं आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से बेअत की। अभी आप (ﷺ) के पास में बैठा ही हुआ था कि वो गुलाम दिखाई दिया। आपने मुझसे फ़र्माया अबू हुरैरह! ये है तुम्हारा गुलाम! मैंने कहा अल्लाह के लिये मैंने इसको अब आज़ाद कर दिया। (राजेअ: 253)

٤٣٩٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَلَاءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أَسَانَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: لَمَّا لَبِيتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قُلْتُ فِي الطَّرِيقِ يَا لَيْلَةَ مِنْ طَوْلِهَا وَعَنَاءِهَا عَلَى أَنْهَا مِنْ دَاوَةِ الْكُفْرِ تَجْتَرِي وَأَبْنَى غَلَامٌ لِي فِي الطَّرِيقِ فَلَمَّا لَبِيتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ لِي أَنَا عِنْدَهُ إِذْ طَلَعَ الْغَلَامُ فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ هَذَا غُلَامُكَ؟)) فَقُلْتُ: هُوَ يُوَجِّهُهُ اللَّهُ فَأَغْفِقَهُ. [راجع: ٢٥٣٠]

तशरीह: हज़रत तुफैल बिन अमर (रज़ि.) की तब्लीग़ से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) मुसलमान हुए। बाद में अल्लाह ने उनको ऐसा फ़िदाए रसूल (ﷺ) बनाया कि ये हज़ारों अह्दादीष के हाफ़िज़ करार पाए। आज कुतुबे अह्दादीष में जगह जगह ज़्यादातर इन ही की रिवायात पाई जाती हैं। ता-ह्यात एक दिन के लिये भी आँहज़रत (ﷺ) के दारुल इलूम से ग़ैर हाज़िरी नहीं की। भूखे-प्यासे चौबीस घण्टे खिदमते नबी में मौजूद रहे, रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

बाब 77 : क़बीला तै के वफ़द और अदी बिन हातिम (रज़ि.) का किस्सा

बनी तै एक क़बीला है उसका नाम तै इसलिये हुआ कि सबसे पहले गोल कुँआ उसी ने बनवाया था।

4394. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक इब्ने उमैर ने बयान किया, उनसे अमर बिन हुरैरह ने और उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि हम हज़रत उमर (रज़ि.) की खिदमत में (उनके दौरे ख़िलाफ़त में) एक वफ़द की शक्ल में

٧٧- باب لَيْسَةَ وَوَلَدِ طَيْءٍ وَخَدِيبِ عَبْدِ بْنِ حَاتِمٍ

٤٣٩٤ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَوَاثَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ خُرَيْثٍ، عَنْ عَبْدِ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: أَتَيْنَا عُمَرَ فِي وَقْدٍ فَبَحَلْ يَذْغُو رَحْلاً وَرَجُلًا وَيَسْمِيهِمْ فَقُلْتُ: أَمَا تَعْرِفُنِي

आए। वो एक एक शख्स को नाम ले लेकर बुलाते जाते थे। मैंने उनसे कहा क्या आप मुझे पहचानते नहीं? या अमीरल मोमिनीन! फ़र्माया क्या तुम्हें भी नहीं पहचानूँगा, तुम उस वक़्त इस्लाम लाए जब ये सब कुफ़्र पर कायम थे। तुमने उस वक़्त तवज्जह की जब ये सब मुँह मोड़ रहे थे। तुमने उस वक़्त वफ़ा की जब ये सब बेवफ़ाई कर रहे थे और उस वक़्त पहचाना जब उन सबने इंकार किया था। अदी (रज़ि.) ने कहा बस अब मुझे कोई परवाह नहीं।

يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: بَلَى، اسَلَّمْتُ إِذْ
كَفَرُوا وَأَقْبَلْتُ إِذْ ادْبَرُوا، وَوَقَّيْتُ إِذْ
غَدَرُوا، وَعَرَفْتُ إِذْ أَنْكَرُوا، لَقَالَ عَدِيٌّ :
فَلَا أَبَالِي إِذَا.

तशरीह: अदी बिन हातिम (रज़ि.) क़बीले तै में से थे। उनके बाप वही हातिम त़ाई हैं जिनका नाम सखावत में दुनिया में मशहूर है। हज़रत उमर (रज़ि.) से अदी (रज़ि.) ने अपना तआरुफ़ कराया जिसका जवाब हज़रत उमर (रज़ि.) ने वो दिया जो रिवायत में मज़कूर है। इस पर अदी (रज़ि.) ने कहा कि जब आप मेरा हाल जानते हैं और मेरी क़द्र पहचानते हैं तो अब मुझको उसका कोई रंज नहीं है कि पहले और लोगों को बुलाया मुझको नहीं बुलाया। अदी बिन हातिम (रज़ि.) पहले नसरानी थे, उनकी बहन को आँहज़रत (ﷺ) के सवार पकड़ लाए। आपने उनको ख़ानदानी ए'ज़ाज़ की बिना पर मुफ़्त आज़ाद कर दिया। उसके बाद बहन के कहने पर अदी बिन हातिम (रज़ि.) ख़िदमते नबवी (ﷺ) में हाज़िर हुए और मुसलमान हो गये।

हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रज़ि.) ने अदी बिन हातिम (रज़ि.) का नसबनामा सबा तक पहुँचाया है जो किसी ज़माने में यमन की मल्का थी। आगे हाफ़िज़ ज़ाहब फ़रमते हैं। अख़रज मिन वज्हीन आख़र अन अदी बिन हातिम क़ाल अतैतु उमर फ़क़ाल इन्न अव्वल सदक़तिन बय्यज़त वज्हु रसूलिल्लाहि (ﷺ) व वुजूहु अस्हाबिहि सदक़तु तै जिअतु बिहा इलन्नबिय्यि (ﷺ) व ज़ाद अहमद फ़ी अव्वलिही अतैतु उमर फ़ी उनासिन मिन क़ौमी फ़जअल युअरिजु अन्नी फ़स्तक्बलतुहु फ़ कुलतु अ तअरिफ़ुनी फ़ज़कर मा औरदहुल बुख़ारी व नहव मा औरदहु मुस्लिम ज़मीअन (फ़तह) या'नी हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि सबसे पहला स़दक़ा जिसे देखकर आँहज़रत (ﷺ) और सहाबा किराम (रज़ि.) का चेहरा खुशी से चमकने लग गया वो क़बीला तै का पेश कर्दा स़दक़ा था जिसे मैं खुद लेकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ था। इमाम अहमद ने उसके अव्वल में ये ज़्यादा किया है कि मैं अपनी क़ौम में हज़रत उमर (रज़ि.) के पास आया तो आपने मुझसे मुँह फेर लिया फिर मैं आपके सामने हो गया और मैंने वो कहा जो रिवायत में मज़कूर है। जिसे बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने वारिद किया है। हज़रत उमर (रज़ि.) का मुँह फेरना सिर्फ़ इसलिये था कि ये हज़रत तो मेरे जाने पहचाने हैं। उस वक़्त नौ वारिदों की तरफ़ तवज्जह ज़रूरी है। इससे हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि.) की हज़रत उमर (रज़ि.) की निगाहों में बड़ी वक़़त प्राबित हुई। (रजियल्लाहु अन्हुम अज्मईन) हज़रत अदी बिन हातिम शाबान 7 हिजरी में ख़िदमते नबवी में आए और बाद में कूफ़ा में सकूनत इख़्तियार की। जंगे जमल में हज़रत अली (रज़ि.) के साथ थे। 67 हिजरी में कूफ़ा में बउम्र एक सौ बीस साल इतिक़ाल फ़र्माया। उनका बाप हातिम त़ाई सखावत के लिये मशहूर ज़माना गुज़रा है। लफ़्ज़े त़ाई क़बीला तै की निस्बत है।

खात्मा: बिऔनिही तआला पिछले साल श्रीनगर में 25-8-1972 को इस पारे की तस्वीद के लिये क़लम हाथ में ली थी साल भर सफ़र हज़र में इस ख़िदमत को अंजाम दिया गया और आज ग़रीबख़ाने पर क़याम की हालत में उसकी तस्वीद का काम मुक़म्मल कर रहा हूँ। बिला मुबालागा तर्जुमा व मतन व तशरीहात को बड़े ग़ौरो-फ़िक़्र के बाद कैदे किताबत में लाया गया है और बाद में बार-बार उन पर नज़र डाली गई है फिर भी सहव और लज़्जिश का इम्कान है। जिसके लिये मैं उलमा माहिरीने फ़न की तरफ़ से इस्लाह के लिये बसद शुक्रिया मुंतज़िर रहूँगा। क़ारिईन किराम व हमददीन इज़ाम से अदब के साथ गुज़ारिश है कि वो बवक़ते मुतालआ मुझ नाचीज़ को अपनी दुआओं में याद रखें ताकि ये ख़िदमत मुक़म्मल हो सके जो मेरी ज़िन्दगी का मक़सदे वाहिद है। जिसे मैंने अपना ओढ़ना बिछौना बना रखा है। ज़िन हज़रात की हमदर्दियाँ और दुआएँ मेरे शामिल हाल हैं, उन सबका बहुत बहुत मशकूर हूँ और उन सबके लिये दुआ करता हूँ कि अल्लाह पाक अपने हबीब (ﷺ) के पाकीज़ा कलाम की बरक़त से हम सबको दोनों ज़हानों की बरक़तों से नवाज़े। ख़ास तौर पर इस दुनिया से जाने के बाद इसे स़दक़-ए-जारिया को हम सबके लिये बाअिअ नज़ात बनाए और क़यामत के दिन आँहज़रत (ﷺ) की शिफ़ाअते कुबरा हम सबको नसीब करे।

या अल्लाह! जिस तरह यहाँ तक तूने मुझको पहुँचाया है। उसी तरह से आखिर तक तू हमको इस ख़िदमत की तकमील की तौफ़ीक़ दीजियो और क़लम को लज़िश से बचाइयो कि सब कुछ तेरे ही इख़्तियार में है।

वमा तौफ़ीकी इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम व मल्लल्लाहु अला खैरि खल्किही मुहम्मदं व्व अला आलिही अस्हाबिही अज्मईन बि रहमतिका या अरहमर्राहिमीन।

खादिम हदीसे नबवी

मुहम्मद दाऊद राज वल्द अब्दुल्लाह अस्सलफ़ी

मौज़अ रहपुआ डाकखाना पुंगवौ ज़िला गुड़गाँव (हरियाणा)

30-12-1973

अर्ज-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुजारिशत)

क्राइने किराम! अल्लाह रब्बुल-इब्जत के फ़ज़ल व एहसानो-करम से सहीह बुखारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की तीसरी जिल्द आपके हाथों में सौंपी जा रही है। पहली व दूसरी जिल्द से यकीनन आपने फ़ैज़ हासिल किया होगा। इस तीसरी जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी हासिल करेंगे, जिनकी हमारी जिन्दगी में बड़ी अहमियत है। पहली जिल्द के पेज नं. 23-24 पर इसी कॉलम में काफी-कुछ वज़ाहत की जा चुकी है चन्द अहम व ज़रूरी बातें इसलिये दोहराई जा रही है ताकि शुरूआती दो जिल्द पढ़ चुके क्राइने व मुअतरिज़ीन के सवालात के तसल्लीबख़्श जवाब मिल सके।

01. बेहद सावधानी के साथ इसकी तस्हीह व नज़रे-घानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अरबी के माहिर आलिम मौलाना जमशेद आलम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अरबी हर्फ़ (ث) के लिये हिन्दी अक्षर 'ष' इस्ते'माल पर ए'तिराज़ जताया है, सहीह बुखारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर हदीष 'इन्नमल अअमालु बिन्नियात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अमल का दारोमदार निर्यत पर है।' हमारी निर्यत यह है कि अरबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुज़ारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालाआ करें।

02. इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास हर्फ़ों को अलग तरह से लिखा गया हमिषाल के तौर पर:- (1) केलिये अ, (ع) केलिये अ; (ث) केलिये ष, (س) केलिये स, (ش) केलिये श, (ص) केलिये स; (ح) केलिये ह, (ه) केलिये ह, (خ) केलिये ख़, (غ) केलिये ग, (ف) केलिये फ़, (ك) केलिये क, (ق) केलिये क़ लिखा गया है। (ج) केलिये ज़ का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ذ) ज़े (ز) ज़ाद (ض) ज़ोय (ظ) केलिये मजबूरी में एक ही हुरूफ़ ज़ का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हर्फ़ों के लिये सहीह विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; असीर, अलिफ़ (1) सीन (س) ये (ع) रे (ر) जिसका मतलब होता है क़ैदी। असीर, अलिफ़ (1) षे (ث) ये (ع) रे (ر) जिसका मतलब होता है ख़ालिफ़। असीर अैन (ع) सीन (س) ये (ع) रे (ر), जिसका मतलब होता है मुश्किल। असीर अैन (ع) साद (ص) ये (ع) रे (ر), जिसका मतलब होता है अंगूर की चाशनी (शीरा)। असीर अैन (ع) षे (ث) ये (ع) रे (ر), जिसका मतलब होता है धूल। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में सहीह तलफ़ुज़ (उच्चारण) के लिये हद-दर्ज़ा कोशिश की गई है।

03. मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मैटर की एडिटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस्हीह (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाइनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी है, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। ऐ अल्लाह! मेरे वालिद-वालदा को अपने अर्श के साये तले, अपनी रहमत की पनाह नसीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने-इस्लाम का फ़हम अता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़ताओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअमतें अता फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है। आमीन! तक्ब्बल या रब्बल आलमीन!!

व सल्लल्लहु तआला अला नबियिना व अला आलिही व असल्लल्लि व अत्वाइहि व बारिक व सल्लिम.

सलीम ख़िलजी.

मुनाजात (दुआएं)

हकीम मुहम्मद सिद्दीक गौरी

रखे-आज़म अर्थ-आज़म पर है तेरा इस्तता,
तू है आली, तू है आला, तू ही है रबुलउला।

हमद, पाकी किबरियाई मेरे सुखानो-हमीद
सिर्फ है तेरे लिये जितनी तू चाहे किबरिया।

लामका, बेखानमा, तू है नही हरगिज़ एमीअ
अर्थ पर है तू यकीनन, है पता मुझको तेरा।

अर्थ पर होकर भी तू मेरी रने-जा से करीब
इतना मेरे पास है मैं कह नहीं सकता ज़रा।

अर्थ पर है ज़ात तेरी, इल्मो-कुदरत से करीब
तू हमारे पास है ऐ हमारे-नाज़िर खुदा।

अर्थ पर है तू यकीनन और वह 'मकतूब' भी
'तेरी रहमत है फ़ज़्र तेरे ग़ज़ब से ऐ खुदा।

अरबो खरबो रहमते हो, बरकते लाखो सलाम,
उन पर उनकी आल पर जो है मुहम्मद मुस्ताफ़।

फ़ाबिले-तारीफ़ तू है मेरे रबुल आलमीन
तू है रहमानो-रहीमो-मालिक-यौमे-जज़ा॥

हम तुझी को पूजते हैं तू ही इक माबूद है
हम मदद चाहते नही, हरगिज़ कभी तेरे सिवा।

तू है ज़ाहिर, तू है बातिन, अव्वलो-आखिर है तू
फ़कर भी तू दूर कर दे क़र्ज़ भी या रब मेरा।

मैं ज़मीनो-आसमां पर डालता हूँ जब नज़र
कोई भी पाता नहीं हूँ मैं 'खुदा' तेरे सिवा।

चौद-तारे दे रहे हैं अपने सानेअ की खबर
तेरी कुदरत से अया है बिलयकीन होना तेरा।

मैं तुझे कुछ जानता हूँ, तेरे कुछ औसाफ़ भी
तू कयामत में भी होगा जाना-पहचाना मेरा।

तू मेरा ज़ाकिर रहे मैं भी रहूँ ज़ाकिर तेरा
हो ज़मी पर ज़िक्र तेरा आसमां में हो मेरा।

कल्बे-मुज्तर को सुकू मिल जाए तेरी याद से
और तेरे ज़िक्र से हो मुत्माइन ये दिल मेरा।

रोज़ो-शब, सुह्र मसा, आठो पहर, चौसठ घड़ी
तू ही तू दिल में रहे कोई न हो तेरे सिवा।

मैं हमेशा याद रखूँ अपनी मजलिस में तुझे
तू भी मुझको याद रखे अपनी मजलिस में सदा।

बन्द तेरी याद से मेरी जुबां या रब न हो
मरते दम तक, मरते दम भी ज़िक्र हो लब पर तेरा।

ज़िन्दगी दुखवार हो तेरी मुहब्बत के बग़ैर
माही-ए-बेआब हो बेज़िक्रिये बन्दा तेरा।

मैं दुआ के वक़्त तुझ से इतना हो जाऊँ करीब
गोया तहतुल अर्थ में हूँ तेरे क़दमों में पड़ा।

हालते सद-यास में भी ऐ खुदा तेरी क़सम
जी न हारूँ और मैं करता रहूँ तुझसे दुआ।

बह रही हो मेरी आँखें मेरी गर्दन हो झुकी
नाक रगड़े, पस्त होकर, तुझसे मैं माँगू दुआ।

तेरे आगे आजिगाना, दस्त बस्ता, सर नगूँ
मैं रहूँ या रब खड़ा भी तेरे क़दमों में पड़ा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो तेरी नेअमत की क़सम
जैसे कोई तीर हो अपने निशाने पे लगा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो जिस से टल जाए पहाड़
ग़ार वालों से भी बढ़कर तेरी रहमत से खुदा।

हर मेरी तौबा हो ऐसी जो अगर तक्सीन हो
तेरे बन्दे पर तो बरहो जाए लाखो बे-सज़ा।

नेकियों में तू बदल दे और उनको बरहो दे
उम्र भर के अमले पिछले सब मुनासे को खुदा।

हज़ मेरे मबरूर हो सब कोशिशें मशकूर हो
दे तिज़ारत तू भी वह जिसमें न हो घाटा ज़रा।

तेरी मर्जी के मुवाफ़िक़ हो मेरी कुल ज़िन्दगी
खाना पीना, चलना फिरना, बैठना उठना मेरा।

जो क़सम खाई या खाऊँ तुझ पे करके ऐतमाद
मअ फ़लाहे दोहज़ के साथ पूरी हो खुदा।